सूचीपत्र ॥

सुखसागर बारहों स्कन्ध का ॥

जिस किसीको जिस स्कन्धकीकथा पढ़नी व सुननी हो वहमनुष्य इससूचीपत्रके देखने से उसकथाको बड़ी सुगमतासे पायजायगा ॥

	नाम कथा व स्कन्धका	पृष्ठसे	पृष्ठतक
भागवत माहात्म्य—	कथा भक्ति व ज्ञान व बैराग्य व गोकर्ण व धुन्धकारी की ॥	१	२०
स्कन्ध पहिला—	कथा परमेश्वर के अवतार धारण करनेकी और वेदव्यासने चारश्लोक नारदजीसे सुनकर बनाना पोथी श्रीमद्भागवत की व शापदेना शृंगीऋषिका राजापरीक्षित को और सुनाना श्रीमद्भागवत शुकदेवजी को राजा को ॥	२१	७२
स्कन्ध दूसरा—	कथा परमेश्वरके चौबीसों अवतारोंकी ॥	७३	९१
स्कन्ध तीसरा—	भेटहोना विदुरजीका उद्धवभक्त से रास्ते में व मिलना बिदुरका मैत्रेय ऋषीश्वर से यमुना किनारे व कथा जयबिजय व कपिलदेव अवतारकी ॥	९२	१३९

अपने भक्त व सेवक बसुदेव व देवकी के यहां मथुरानगरी में सगुण अवतार लेकर अनेक लीला जगत् में इस इच्छा से की कि उस लीला की कथा व वार्त्ता संसारी लोग आपस में कहि व सुनकर भवसागर पार उतरजावें व विष्णु भगवान्के चरणों को दण्डवत् करताहूं जो सबजीवों की उत्पत्ति व पालन करते हैं व श्रीमहादेव जी के पांव पर मस्तक रखता हूं जो आयुर्बल बीतने के उपरांत सब जीवों का नाश करते हैं व बाबा जवाहिरलाल सारस्वत ब्राह्मण रहनेवाले काशीपुरी अपने गुरूके चरणकमल को साष्टांगदण्डवत् करताहूं जिनकी कृपासे श्रीराधाकृष्ण के चरणारविंद में इस दासको प्रेम उत्पन्न हुआ व श्रीशारदादेवी व शेषनाग व नारदजी के चरणों पर शिर रखताहूं जो आठों पहर उस मुरलीमनोहर का गुणानुवाद गाते हैं व बसुदेव व देवकी व नन्द व यशोदाजी के चरणों की धूर अपने मस्तक पर चढ़ाताहूं जिनके तप करनेसे श्रीपरब्रह्म नारायण ने मर्त्यलोक में नरतन धारण करके अपने भक्तों को दर्शन दिया व श्रीवेदव्यास व शुकदेव जी के शरण होता हूं जिन्होंने इस अमृतरूपी कथा श्रीमद्भागवत को जगत् में प्रकट किया व इन्द्रादि देवता व सनकादिक ऋषीश्वर व श्रीबलराम व राधिका व रोहिणी जी के चरणोंपर गिरकर ब्रज गोकुल व मथुरादेशपर न्यवछावर होता हूं जिस नगरी में श्रीपरब्रह्म नारायण ने अवतार लेकर बालचरित्र व रासलीला करके अपने भक्तोंको सुखदिया व जितने ग्वाल बाल व गोपियां व ब्रजबासी व गौ बछड़े व कीट व पतङ्ग व हिरण आदिक बनचर जलचर व नभचर जीव मथुरा व गोकुल के हैं सबको दण्डवत् करता हूं व श्री यमुनाजी के चरणों को जिसमें मुरली मनोहर जलक्रीड़ा करते थे व गोबर्द्धन पहाड़ जिसको नन्दलाल जी ने अपनी अंगुली पर उठाया था व उस बनको जहांपर मुरलीमनोहर गौचराते थे व यमुना किनारे की रेतको जहांपर बांकेबिहारी ने रासलीला कियाथा व उस कदमके वृक्षको जिसपर श्यामसुन्दर चढ़ कर बैठते थे और सब सन्त व हरिभक्तों के चरणों पर अपना शिर रखकर श्रीकृष्ण दासानुदास मक्खनलाल बेटा गंजनलाल खत्री पंजाबी रहनेवाला काशीपुरी मुहल्ला ब्रह्मनाल नायब कोतवाल थाने कालभैरव यह इच्छा रखता है कि उल्था श्री मद्भागवत बारहोंस्कन्ध का जो पहिले के महात्मा व हरिभक्तों ने भाषा दोहा चौपाई में बनाया है बीचबोली उर्दू के लिखूं कि सब स्त्री व पुरुष लड़का व बूढ़ा छोटा व बड़ा व ज्ञानी व अज्ञानी उसके अर्थ को समझकर परमेश्वर के चरणों में प्रीति लगावें दोहा व चौपाई कि वह बोली ब्रजकी है सबलोग अर्थ कहे बिना समझ नहीं सक्ते जो उसे बूझकर परमेश्वर के चरणों में प्रेम लगावें और यह दास महाअज्ञानी संसारी मोह में फँसा हुआ इतनी बुद्धि कहां रखता है जो उस परब्रह्म परमेश्वर का चरित्र जिसके वर्णन करने में शेषनाग व गणेशजी व शारदा देवी

थकित हैं व उनके अन्तको पहुंचने नहीं सक्ते बारहोंस्कन्ध का उल्था करनेसकूं इसलिये आप सब देवता व ऋषीश्वर व महात्माओं के चरणोंपर जिनके नाम ऊपर लिखे हैं शिर अपना धरकर बड़ी अधीनताई से यह वरदान मांगताहूं कि आपलोग दयाकरके ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें यह पोथी श्रीमद्भागवत बीच बोली उर्दू जिसतरह इस दास की इच्छा है सम्पूर्ण होजावे यह पुराण सब वेदों का सार वास्ते पार उतारने सब जीवों के संसाररूपी समुद्रसे श्री शुकदेवजी ने मर्त्यलोक में जहाज बनाया है बिना पढ़ने व सुनने उसके जन्मलेना व जीना आदमीका कि यह चैतन्य चोला है संसारमें अकार्थ समझना चाहिये कलियुगवासियों को संसारी माया मोह स्त्री व पुत्र द्रव्य व सुखमें फँसे रहने से किसी समय जैसा चाहिये वैसा सावकाश नहीं रहता जो मन अपना बीच भजन व स्मरण परमेश्वरके लगावें व कलियुगमें आयुर्बल आदमी का बहुत कमहोकर मरने का ठिकाना नहीं रहता जिसपर भी रात दिन कमाने खाने की चिन्तामें रहकर अपने मरने व परलोक का डर नहीं रखता इसलिये मनुष्य तन पाकर पहिले वह काम करना चाहिये जिसमें श्रीकृष्णजी महाराज त्रिभुवनपति जिन्हों ने आदमी को अपनी महिमा से उत्पन्न किया है प्रसन्न होवें व अपना परलोक बनै मनुष्य तन पानेका यही फल है कि आठपहर में किसी बेला परमेश्वर को अपने मनसे न भुलावै आदमी का चोला कलियुग में अनेक अपराध व पापों से भरा रहकर सिवाय बुराई के कोई भलाई इससे जल्दी नहीं होती इसी वास्ते परब्रह्म नारायण ने वेदव्यासजी का अवतार लेकर पोथी श्रीमद्भागवत को सब वेदों का सार निर्माण किया और श्रीशुकदेवजी महाराज ने यह अमृतरूपी कथा संसारी जीवों के पाप छूटने व भवसागर पार उतरने के वास्ते जगत् में प्रकट किया है जिसतरह अमृत पीने से जीव अमर होकर नहीं मरता उसीतरह जो कोई इस कथा को प्रीतिसे सुने वह आवागमन से छूटकर मुक्ति पदवीपर पहुंचता है इसलिये दास मक्खनलालने उल्था इस पोथी का सब छोटे बड़ों के समझने के वास्ते उर्दू बोली में संवत् १९०३ काशीपुरी में लिखकर सुखसागर नाम रक्खा व कहीं २ दोहा चौपाई सोरठा व कवित्त ब्रजकी बोली में जो बहुत प्यारी मालूम होती है जहां जैसा उचित देखा वहां वैसा लिखा और कुछ कथा ब्रजविलास की जिसमें रासक्रीड़ा बहुधा है सिवाय कथा श्रीमद्भागवत के इस पोथी में लिखीगई अब थोड़ासा समाचार अपना जिसतरह मुझे श्रीनारायणजी के चरणकमल में प्रेम उत्पन्न हुआ वर्णन करताहूं मैंने काशीपुरी में जन्मलेकर यामिनी विद्या पढ़ी और बीसवर्ष की अवस्था में मुंशी वृन्दावन सरिश्तेदार अदालत फौजदारी मिर्जापुर के उपकारसे कि जो मेरे बाप के मामा थे मैं उसी ज़िले में बओहदे मुहर्रिरी थानेपर नौकरहुआ और तेईस वर्ष की अवस्था में दारोगाहोकर ऊपर थाने गोपीगंज परगने भदोई जमींदारी श्री

महाराजाधिराज ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह बहादुर काशीनरेश जो चौदहगुण निधानहैं बदलआया और बत्तीसवर्ष की अवस्थातक काम क्रोध मोह और लोभ संसारीजाल में ऐसा फँसारहा कि गुरुमुख भी नहीं हुआ सो गोपीगंज काशी और प्रयाग के मध्य रास्तेपर है इसलिये बहुत से साधु और महात्माजन तीर्थयात्रा करने के वास्ते उसी मार्ग से आया जाया करते हैं सो मुझे उन सन्तों और महात्माओं के चरणों का दर्शन पाने व सत्संगसे यह अभिलाषाहुई कि गुरुमुख हूजिये जिससे अन्तकाल सुधरे तब ऐसा शोचकर काशीजी में चलाआया और श्रीबाबा जवाहिरलालजी सारस्वत ब्राह्मण छत्तीसगुणनिधान साक्षात् ईश्वर के अवतारका शिष्यहुआ सो उन गुरुनारायणने मुझे बारह अक्षरका मंत्र उपदेश दिया जब उस मंत्र जपने और गुरूके आशीर्वाद से मेरा हृदय शुद्धहुआ और हरिचरणों में प्रेम उत्पन्नहुआ तब मैंने पोथी श्रीमद्भागवतका जो फ़ैज़ीने फ़ारसीमें उल्था की है पढ़ना आरम्भकिया जब उसके पढ़ने से मेरा प्रेम बढ़ा तब मुझे यह इच्छाहुई कि इसको उर्दूभाषा में जिसे सबकोई समझसकैं लिखूं सो मैंने पोथी श्रीमद्भागवतको महाराज फणीन्द्राचारी रहनेवाले गोपीगंज और पं. गोबिन्दराम व मदनमोहनजी ओझा काशीवासी से जो छःशास्त्र और अठारहपुराणके जाननेवाले हैं मिलानकरके उर्दू में उल्थाकिया सो श्यामसुन्दर व विश्वनाथजी और सब देवता काशीवासी की कृपा और दयासे उल्था सम्पूर्ण हुआ और इस दासको यह ग्रन्थ लिखने पढ़ने का अभ्यास रखने से जैसा सुख मिला उसका हाल क्या कहूं इन्द्रलोक का भी सुख सत्संग के सामने कुछ वस्तु नहीं है आदमी इस अमृतरूपी कथाको नित्यपढ़े व सुनाकरै तब उसको मालूम होगा कि इसमें क्यागुण और लाभहै जबतक आदमी इस कथाको नहीं पढ़ता व सुनता तबतक उसका सुख नहीं पाता ॥

दो० एकघड़ी आधीघड़ी और आधकी आध ।
तुलसी संगति साधुसे कोटि कटैं अपराध ॥

और यह दास कुछ संस्कृत व शास्त्र नहीं पढ़ाहै कदाचित् इस उल्था में कोई बात भूलगई हो तो आप लोग दयाकरके अपराध मेरा क्षमाकरैं भूल व चूकमें महात्मा लोग सदासे छोटोंपर दया करते आये हैं ॥

स० श्रीभागवत कठोर बड़ी कछु बूझिपरै नहिं अर्थकी रीती। बूझे बिना नहिं प्रेमजगै बिन प्रेम जगे उपजै नहिं प्रीती ॥ प्रीति बिना नहिं कामसरै बिन काम सरे न सरै जगनीती । याही से बूझिबे हेत कहूं उर्दू में खुलासे से गोविंदगीती ॥

दो० व्यासदेव शुकदेवको बिनयकरौं करजोरि।
छठ बथा उर्दू करतहौं छमौ ढिठाई मोरि॥
अपने चितके चैनको उर्दू बैन बनाय।
भवसागर उतरनचहौं गोविंदको गुणगाय॥

उल्था भागवत माहात्म्य छः अध्याय जिसको गोकर्ण माहात्म्य कहते हैं॥

पहिला अध्याय॥

भक्ति व ज्ञान व वैराग्य की कथा॥

शौनकादिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरों ने बीचस्थान नैमिषारण्य तीर्थ के सूत पौराणिक शिष्य वेदव्यासजी से कहा कि तुम कोई कथा व लीलापरमेश्वरकी ऐसी वर्णनकरो जिसमें भक्ति व ज्ञान वैराग्य अधिकहो इस घोर कलियुगमें ज्ञानसंसारी आदमियोंका राक्षसके समान होगयाहै इसलिये कोई सुखसे न रहकर सब किसीको ऐसा क्रोध व मोह व लोभ उत्पन्न हुआहै कि आठोंपहर उसी दुःख में व्याकुल रहते हैं कि कोई ऐसा चरित्र भगवान् का वर्णन कीजिये कि कलियुगवासियों को हरिचरणों में भक्ति व प्रीति उत्पन्न होकर सुख मिले यह बात सुनकर सूतजी बोले तुमलोगों ने बहुत अच्छी बात कलियुगवासियों के उद्धार करने वास्ते पूंछी जो कालरूपी सांप के मुंह में पड़े हैं सो वह कथा श्रीमद्भागवतहै जो शुकदेवजी महाराजने राजापरीक्षितसे कही थी जिससमय राजाको श्रृंगीऋषि के शापदेने के उपरान्त ऋषीश्वर व मुनीश्वरों की सभामें शुकदेवजी ने गंगाकिनारे आनकर कथा श्रीमद्भागवत सुनाना आरम्भ किया उससमय देवताओं ने अमृतका कलश वहां लाकर शुकदेवजी से कहा महाराज यह अमृतका घड़ा आपलीजिये व हमलोगों को कथारूपी अमृत पिलाइये यह बात सुनकर शुकदेवजी बोले तुम्हारा अमृत हमारे कामका नहीं है इस अमृत पीने से आयुर्दा आदमी की देवताके बराबर होती है और ब्रह्माके एकदिन में चौदह इन्द्र बदलजाते हैं तुम्हारे अमृतसे उत्तम यह कथारूपी अमृत भगवान्का चरित्रहै जिसके सप्ताह पढ़ने व सुननेसे जीव अमरहोकर कभी नहीं मरता व मुक्ति पदवीपर पहुँचकर आवागमनसे छूटिजाताहै इसलिये राजा परीक्षित तुम्हारे अमृत पीने की इच्छा न रखकर भागवतरूपी अमृत पिया चाहता है इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने कहा नारदमुनिको सनकादिकने सप्ताह पारायण श्रीमद्भागवतका सुनाकर उस कथा सुननेकी बिधि भी बतलाई है यह बात सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरों ने सूतजी से पूंछा कि

नारदमुनि दो घड़ी से अधिक कहीं नहीं ठहरतेथे वह सातदिन किसतरह एकजगह रहे जो उन्हों ने सप्ताह पारायण सुना व सनकादिक का दर्शन भी जल्दी किसी को नहीं मिलता वह नारदमुनिको कैसे मिले और यह सप्ताह यज्ञ कहांपर हुआथा इस का हाल बतलाइये यह बचन सुनकर सूतजी बोले एक समय सनक सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारोंभाई घूमतेहुये बदरिकाश्रममें आये सो उन्हों ने नारदजी को पहिले से वहां उदास बैठे देखकर पूंछा हे नारदमुनि आज तुम मलीन स्वरूप चिन्ता में किस वास्ते बैठेहो और कौन बातका शोच तुमको है नारदजी ने चारों ऋषीश्वरों को प्रणामकरके कहा हमैं जिस बातकी चिन्ता है सो सुनिये हमने सब तीर्थ काशी व गोदावरी व गया आदि में जाकर देखा तो उन तीर्थोंपर कलियुगने सब जीवों को संसारी माया में ऐसा फँसा रक्खाहै कि सत्य व तप व आचार व दया व दान कलियुगमें सब जाता रहा केवल अपने पेटपालनेकी चिन्तामें सब मनुष्य बिकल रहकर झूंठ बोलते हैं व अभागी व पाखंडी होकर माता व पिताकी सेवा नहीं करते स्त्री व साले व श्वशुरे की आज्ञामें रहकर द्रव्यके लालच से अपनी बेटी नीचकुल में बेचते हैं जहां देखो वहांपर म्लेच्छ व शूद्रों की बढ़ती दिखलाई देकर ब्राह्मण व क्षत्री अपने कर्म्म व धर्म से रहित देख पड़ते हैं मैं किसीको अपने धर्मपर स्थिर न देखकर जब चारोंतरफसे फिरताहुआ मथुरा में यमुना किनारे पहुँचा तब वहांपर यह आश्चर्य की बात दिखलाईदी कि एक स्त्री युवती बैठी रोती है और दो मनुष्य बूढ़े उसके पास अचेत पड़े हैं और वह स्त्री चारोंतरफ इस इच्छासे देखरहीथी कि कोई आदमी मेरी सहायता करनेवाला आनकर प्राप्तहो जैसे उसने मुझे वहांपर देखा वैसे खड़ी होकर बोली महाराज आप एकक्षण ठहरकर मेरा दुःख सुनलीजिये मेरे बड़े भाग्यथे जो आपने मुझे दर्शनदिया जब मैंने उस स्त्रीसे पूंछा तू कौनहै और यह दोनों पुरुष जो अचेत पड़े हैं इनका हाल बतलाओ तो उसने कहा कि मैं भक्ति हूं और यह दोनों मेरे बेटे ज्ञान व वैराग्यहैं व इन पांच सात स्त्रियों को जो यहां बैठी देखते हो यह सब गंगा व यमुना व सरस्वती आदि नदियां स्त्रियों का रूप धरकर मेरी टहल करनेके वास्ते आई हैं मैंने द्रविड़देशमें जन्मलिया व करनाटकदेशमें सयानी होकर थोड़ेदिन दक्षिणमें रही व गुजरातमें जाकर बूढ़ीहुई थी अब बृन्दावनमें आनेसे तरुण होगई हूं पर मेरे दोनों बेटे कलियुग वासियों के घोर पाप करने से ऐसे बूढ़ व अचेत होकर पड़े हैं कि सामर्थ्य बोलने की नहीं रखते इनके दुःख से मैं बहुत उदास रहती हूं यह बड़ी लज्जाकी बातहै कि मेरे पुत्र बूढ़े होवें और मैं तरुणरहूं यह हाल देखकर संसारी लोग मेरी हँसी करते हैं इसका कारण बतलाइये जब स्त्री रूप भक्तिने मुझसे यह हाल पूंछा तब मैंने अपनी बुद्धिसे बिचारकर कहा अब घोर कलियुगके आवने से तेरी व ज्ञान और वैराग्यकी कुछ मर्याद नहीं रही केवल बृन्दावन आवने से तू

तरुण होगई है पर तेरे बेटोंको कलियुगमें कोई नहीं जानता इस कारण वह ज्यों के त्यों बूढ़े व निर्बल बने हैं यह बात सुनकर उसने कहा जो कलियुग ऐसा दुष्टहै तो राजा परीक्षितने किसवास्ते दयाकरके प्राण उसका छोड़ा जिसपर दया करने से सब लोगों का कर्म व धर्म जातारहा उसे मार क्यों नहीं डाला तब मैंने उसको उत्तर दिया कि परीक्षितने कलियुग में बड़ा गुण देखकर उसे नहीं मारा कि दूसरे युगों में हजारों बर्षतक यज्ञ व तप व दान व धर्म करने से भी परमेश्वरका दर्शन जल्दी नहीं मिलताथा सो कलियुगमें केवल भजन व कीर्त्तन करने से नारायणजी तुरन्त प्रसन्न होकर दर्शन अपना देते हैं पर कलियुगवासियों से सहज बात भी नहीं बन पड़ती इसलिये कलियुगने सब आदमियों का कर्म धर्म खोदियाहै तीर्थ में ब्राह्मण प्रतिग्रहदान लेकर प्रायश्चित्त उसका नहीं करते व सब कोई काम व क्रोध व लोभ व अहंकारमें भरे रहते हैं कलियुगका यही धर्म है इसमें केवल परमेश्वर का भजन व स्मरण उत्तम समझना चाहिये यह बात सुनकर भक्ति ने कहा तुम धन्यहो बड़े भाग्यसे तुम्हारे दर्शन मुझे प्राप्तहुये आप सब किसी का दुःख छुड़ाने के योग्यहैं सो कोई उपायकरके ज्ञान व वैराग्यको तरुण करदीजिये जिसमें मेरा दुःख छूटजावे मैं तुमको बारम्बार दंडवत् करती हूं ॥

दूसरा अध्याय ॥

नारदजी को भक्तिका बोधकरना और भक्तिके दुःख छुड़ाने वास्ते किसी साधुको ढूंढ़ना ॥

नारदजी ने स्त्रीरूप भक्तिसे कहा अब तू अपनी चिन्ता छोड़कर श्रीकृष्णजी के चरणोंमें ध्यान लगा उनका स्मरण व ध्यान करने से सब दुःख तेरा छूट जायगा जिससमय राजा दुर्योधनकी सभामें दुश्शासनने द्रौपदीका चीर खींचकर नंगी करना चाहा था उस समय द्रौपदी के ध्यान करने से नारायणजीने चीर बढ़ाकर उसकी लज्जा रक्खी और जब गजेन्द्रका पैर ग्राहने पकड़ा और उसका प्राण बचानेवाला कोई नहीं रहा तब हाथी के स्मरण करतेही विष्णु भगवान्ने पहुँचकर गजेन्द्रका प्राण ग्राहसे बचाया हे भक्ति तू बैकुंठनाथको प्राणसे भी अधिक प्यारी है वह तेरे वास्ते नीच जातिमें भी जहां तेरा बास रहता है वहां आनकर उसका उद्धार कर देते हैं सतयुग और त्रेता और द्वापर में सज्जन लोग बहुतसा यज्ञ व तप व दान व धर्म्म करनेसे मुक्तिपाते थे कलियुग में केवल तेरी कृपासे सब जीवोंका उद्धार होजाता है ज्ञान व वैराग्यको कोई नहीं पूंछता इसलिये तेरा दुःख छुड़ाने वास्ते बहुत अच्छा उपायकरके जगत्में तेरी महिमा प्रकट करदेताहूं जिनके हृदय में तेरा बास रहेगा वह लोग पापी होनेपर भी यमराजका कुछ डर न रखकर तेरी दया से बैकुंठ

धामको चलें जावेंगे परमेश्वरका दर्शन यज्ञ और तप व व्रत व दान करनेसे जल्दी प्राप्त नहीं होता वह भक्ति करने से सहज में मिलता है जिन्होंने हजारों वर्ष नारायणजी का तपकियाथा उन्होंने भक्ति पाई है परमेश्वर बहुत प्रसन्न होनेसे अपनी भक्तिदेते हैं इसलिये बैकुंठनाथने सब बातोंपर भक्तिको श्रेष्ठ रक्खा है यहबात सुनकर भक्तिने कहा हे नारदजी तुम धन्यहो जिसतरह आपने मुझे धीर्य दिया उसीतरह मेरे बेटों को जो अचेत पड़े हैं जगावो जब मेरे उठाने व पुकारने से ज्ञान व वैराग्यने आंख भी नहीं खोली तब मैंने वेदका वचन व गीता पाठ पढ़ना आरम्भ किया उसके सुननेसे उन्होंने अपनी आंख खोलकर उठने के वास्तेचाहा पर निर्बलतासे फिर अचेत होगये जब यह हाल देखकर मैं बहुत चिन्ता करनेलगा कि ज्ञान व वैराग्य किसकारण नहीं उठते तब यह आकाशवाणी हुई कि हे नारद क्यों इतना शोच करतेहो बिना सत्संग नहीं जागेंगे इनकी संगति करने के वास्ते साधुलोगो यह वचन सुनतेही यहांसे साधु ढूंढ़ताहुआ यहांतक पहुंचा पर कलियुग होनेसे कोई साधु इच्छा पूर्व्वक नहीं मिला उसी चिन्ता में बैठाथा कि आपका दर्शन प्राप्तहुआ सो आपलोग ब्रह्माके पुत्र बड़े योगी व ज्ञानी सदा बाल अवस्था रहकर केवल कथारूपी धन अपने पास रखतेहो और तुम्हारी तपस्याका फल कोई वर्णन नहीं करसक्ता किसवास्ते कि आपने जय और विजय बैकुंठ के द्वारपालकों को पृथ्वीपर गिरादिया ऐसी सामर्थ्य सिवाय तुम्हारे दूसरेमें नहीं है जिसतरह आपने दयाकरके अपना दर्शन मुझे दिया उसीतरह भक्ति व ज्ञान व वैराग्यका दुःख छुड़ाकर उनको सुख दीजिये जिसमें चारों वर्ण के आदमी तुम्हारा यश गावें व कलियुग वासियों का मन शुद्ध व पवित्र होजावे यह बात सुनकर सनत्कुमार बोले हे नारदजी तुम उदासी छोड़कर कुछ चिन्ता मतकरो जितने श्याम सुन्दरके दासहैं उनसबोंमें तुम श्रेष्ठहो आपको भक्तिका दुःख छुड़ावने के वास्ते उपाय करना उचितहै पिछले समयके महात्मा व ऋषीश्वरोंने ज्ञान व धर्म्म के अनेक संसारी मार्ग आदमियों को बैकुंठ पहुंचाने के वास्ते बनाये हैं पर उन कठिन मार्गोंपर किसी से चला नहीं जाता और वह राह बतावनेवाला गुरुभी जल्दी नहीं मिलता इसलिये जो कोई श्रीमद्भागवत सच्चेमनसे सुने उसको वह राह मिलसक्ती है जो कथा शुकदेवजीने राजा परीक्षितको सुनाई थी वही कथा सुनने से भक्ति व ज्ञान व वैराग्यको भी सामर्थ्य होकर दुःख उनका छूट जायगा परमेश्वर के चरणों में प्रेम बढ़ने के वास्ते इससे उत्तम कोई दूसरी राह नहीं है यह बात सुनकर नारदजी बोले महाराज मैंने वेद व गीताका पाठ पढ़कर ज्ञान व वैराग्यको बहुत जगाया पर उन्हें उठनेकी सामर्थ्य नहीं हुई श्रीमद्भागवत कहने से किसतरह जागेंगे सनत्कुमारजीने कहा हे नारद सब वेदोंका सार श्रीमद्भागवत समझना चाहिये उसके एक २ श्लोक व पदमें वेदोंका अर्थ इसतरह भरा है जिसतरह दूधमें घी रहकर जब

तक उसको उपायके साथ दूधसे नहीं निकालते तबतक घीका स्वाद दूधमें नहीं मिलता उसी तरह सब वेद व पुराणको व्यासजीने मथनकरके उसका तत्त्व श्रीमद्भागवतमें लिखा है और नारदजी तुम जानबूझकर क्यों भूलतेहो चार श्लोक मूल श्रीमद्भागवत के नारायणजीने ब्रह्माको उपदेश किये और तुमने उनसे सुनकर वेदव्याससे कहा वेदव्यासजीने उसे विस्तारपूर्वक लिखकर भागवत पुराण बनाया वही कथा सब किसीका दुःख छुड़ाने व संसाररूपी समुद्रसे पार उतारनेवाली है यह वचन सुनतेही नारदजी हाथजोड़कर बोले आपने बड़ी दयाकरके यह हाल कहा व हमारे भाग्य थे जो आपका दर्शन मिला बिना भाग्यके सत्संग नहीं मिलता अब यह बतलाइये इस भागवतरूपी ज्ञानयज्ञको किसतरहसे कहांपर करना चाहिये और कितने दिनमें यह यज्ञ सम्पूर्ण होता है ॥

तीसरा अध्याय ॥

सनत्कुमारजी को श्रीमद्भागवतकी सप्ताह विधि व उसके सुनने से जो फल मिलता, वर्णन करना ॥

सनत्कुमारजी बोले हे नारदमुनि तुमने बहुत अच्छी बात पूंछी हरद्वार में गंगा किनारे यह यज्ञकरने के वास्ते अच्छा स्थान है वहांपर वृक्षोंकी छाया घनी होकर बहुतसे ऋषीश्वर व मुनीश्वर ज्ञानयज्ञके चाहनेवाले रहते हैं उसजगह तुम्हारे कथारूपी यज्ञ करने से ज्ञान व वैराग्यभी तरुणहोकर जागउठेंगे व भक्तिका सब दुःख छूट जायगा यह बात सुनकर नारदजी बोले महाराज विना तुम्हारे चले वह यज्ञनहीं होसक्ता इसलिये आपभी हमारे साथ वहां चलिये यह वचन सुनतेही सनकादिक चारों भाई व नारदजी बदरिकाश्रमसे चलकर हरद्वारमें गंगा किनारे आनपहुँचे उन्होंने ऋषीश्वरों व मुनीश्वरों से जो वहांपरथे कहा हम इस स्थानपर भागवतरूपी यज्ञ करते हैं जिसको कथारूपी अमृत पीनाहो वह आनकर सुने यह समाचार सुनतेही भृगु व वशिष्ठ व च्यवन व मेधातिथि व गौतम व परशुराम व विश्वामित्र व मार्कण्डेय व वेदव्यास व पराशरआदि जितने ऋषीश्वर व मुनीश्वर उसतीर्थपर रहते थे वहां सब आये और सिवाय ऋषीश्वरों के वेद जो मूर्त्तिमान् हैं व गंगाजी इत्यादि नदियां व गन्धर्व व किन्नर व यक्ष व नागआदिक चौदहों भुवनके लोग कथारूपी अमृत पीनेवास्ते उस ज्ञानयज्ञ में आकर इकट्ठेहुये जब नारदजीने सब किसीको बड़े आदर भावसे बैठाला तब वैष्णव व विरक्तों व महापुरुषोंने जयशब्द व शंखध्वनि करना आरम्भ किया देवतालोग अपने २ बिमानोंपर चढ़कर वहां कथा सुनने के वास्ते आपहुंचे व ज्ञानरूपी यज्ञपर फूल बर्षनेलगे व सब श्रोता इस बिचार में चित्तलगाकर बैठे कि देखैं सनकादिक व नारदजी कौनलीला व कथा परमेश्वरकी कहते हैं

उससमय सनत्कुमारने नारदजी से कहा हम तुमको वह कथा सुनाते हैं जो शुकदेव जीने राजापरीक्षितसे कही थी वह पुराण अठारह हज़ार श्लोक होकर उनके पढ़ने और सुनने से मुक्ति हाथमें खड़ी रहती है श्रीमद्भागवत सुनने के बराबर दूसरे पुराणके सुनने व हज़ारों अश्वमेध व बाजपेययज्ञ करने से फल नहीं मिलता काशी व गया व प्रयाग व कुरुक्षेत्र व पुष्करादि किसी तीर्थका स्नान कथा सुनने के बराबर फल नहीं रखता जबतक संसारी लोग यह कथानहीं सुनते तबतक उनके अनेक जन्मका पाप गर्जता है अमृतरूपी भागवत सुनतेही उनके पाप इसतरह छूटकर भाग जाते हैं जिसतरह सूर्य्य निकलने से कुहिरा नहीं रहता जो मनुष्य प्रतिदिन एक या आधा श्लोक भागवतका पढ़ाकरै उसकी भी मुक्ति होजाती है व जो लोग नित्य भागवत पढ़कर औरोंको सुनाते हैं उनके करोड़ों जन्मका पाप जलकर भस्म होजाता है जो कोई पोथी श्रीमद्भागवत सोनेके सिंहासनपर धरकर वैष्णव व साधूको दान देता है उसे परमेश्वर अपनी ज्योतिमें मिला लेतेहैं जिसने मनुष्यका तन पाकर भागवत कथा नहीं सुना उसे धिक्कार होकर चांडाल के बराबर समझना चाहिये ऐसा पूतजनने से उसकी माता बांझ रहती तो अच्छाथा कलियुग में यज्ञ व तप व दानव धर्म्म आदमी से कुछ न होकर उसका मन एकतरफ़ नहीं लगता इसवास्ते परब्रह्म नारायण ने वेदव्यासजी का अवतार लेकर यह कथा बनाई है जो कोई सात दिनतक चित्त लगाकर इसपुराणका सप्ताह सुनै उसको यज्ञ व तपव ब्रत व दान सबका फल प्राप्त होकर मुक्त पदार्थ मिलता है जब उद्धवने एकादश स्कन्धमें सब ज्ञान श्रीकृष्ण जीसे सुनकर कलियुगका लक्षणजाना तब श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यानधरकर मुरली-मनोहर से पूंछा हे दीनानाथ आप तो वैकुण्ठ धामको जातेहैं संसारी लोगों का उद्धार किसतरह होगा तब त्रिभुवनपति बोले हे उद्धव तुम बदरिकाश्रम में जाकर तप करो तुम्हारी मुक्ति होजावैगी मेरेजाने उपरान्त एक भागवतरूपी मूर्त्ति हमारी जगत् में रहैगी जो मनुष्य सप्ताह भागवत सच्चे मनसे सुनैगा उसको हमारा दर्शन हृदय में होजावेगा संसारी लोगों का दुःख छुड़ानेवाला यह पारायण समझना चाहिये सिवाय इसके और कोई दूसरी वस्तु आदमी को मायारूपी जाल से छूटने वास्ते उत्तम नहीं है इतनी कथा सुनाकर सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब सनत्कुमार ने सप्ताह पारायण श्रीमद्भागवत का सुनाना आरम्भ किया व सब कोई सुनने लगे तब उस अमृतरूपी कथाके प्रतापसे वह दोनों बूढ़े ज्ञान व वैराग्य जो अचेत पड़े थे तरुण होकर उठ बैठे व भक्ति का दुःख छूटगया व उनका दर्शन सब सभावाले पाकर गोविन्द व हरे व मुरारे कहने लगे व भक्ति व ज्ञान व वैराग्य का दर्शन मिलने से उनको भक्ति उत्पन्न होकर कलियुग का दुःख जातारहा व सब किसी का मन सप्ताहकथा सुनकर शुद्ध व एकचित्त होगया ॥

चौथा अध्याय ॥

नारायण जी का सब आदमी सप्ताह सुननेवालों को दर्शन देना व आत्मदेव ब्राह्मण का इतिहास बर्णन करना कि जिसकी स्त्री बड़ी कर्कशा थी ॥

सूतजी ने शौनकादिक से कहा जब सब वैष्णव व ऋषीश्वर सप्ताह सुनकर एकचित्त होगये तब श्रीबृन्दाबनबिहारी सांवली सूरति मोहनी मूरति ने पीताम्बर ओढ़े व कद्धनी व मुकुट व कुण्डल जड़ाऊ पहिने केसर व चन्दन का खौर माथे पर लगाये उद्धव आदिक बैकुण्ठबासी भक्तों को साथ लिये उस ज्ञानयज्ञमें आन- कर सबको दर्शन दिया अमृतरूपी कथा सुनकर पहिले से साधु व वैष्णवके हृदय में श्याम मूर्त्ति दिखलाई देनेलगी थी सो प्रकट में भी सब किसी ने उस का दर्शन करके अपना २ जन्म सुफल जाना व बैकुण्ठनाथ को देखतेही जितने वैष्णव व ऋषीश्वर उस सभामें बैठे थे जय २ बोलकर उठ खड़े हुये व मलयागिरि चन्दन व फूलों की वर्षा उनपर करने लगे व धूप दीप नैवेद्य से पूजा करने उपरान्त शङ्खादिक बजाकर साष्टांग दण्डवत् किया यह सब आनन्द देखकर नारदमुनि बोले हे सनत्कुमार जी आपने जो सप्ताह यज्ञ किया इस में जिसने २ यह कथा सुनी वह सब पवित्र होकर मुक्ति पदवी पर पहुँचे अब और कौन कौन लोग यह अमृत- रूपी कथा सुनकर भवसागर पार उतरैंगे उनका हाल वर्णन कीजिये सनत्कुमार ने कहा जो कलियुग के मनुष्य बड़े पापी व दुष्ट व लालची व झूंठे व चुगुल व कामी उत्पन्न होकर अपने क्रोध से आप जले मरते हैं वह लोग भी इस सप्ताह यज्ञ सुनने से पवित्र होकर मुक्ति पदवी को पहुँचैंगे और जो कोई कलियुग में माता व पिता की सेवा व अपने कर्म्म व धर्म्म से रहित व लोभ में डूबा रहकर झूंठा व चोर व ठग होगा वह भी यह कथा सुनने से भवसागर पार उतर जावेगा अब हम एक कथा पुरानी तुम से कहते हैं सुनो दक्षिणदिशा में तुंगभद्रानाम एक नदी है उस के किनारे एक नगर में आत्मदेव नाम ब्राह्मण बड़ा पण्डित व तेजवान् व धर्मात्मा रहता था उस ब्राह्मण की स्त्री धुन्धुली नाम बड़ी कर्कशा दिन राति संसारी माया में फँसी रहकर अपने पति को सबतरह का दुःख देती थी पर वह ब्राह्मण ज्ञानी परमेश्वर की इच्छा इसीतरह समझकर उसी के साथ अपने दिन काटता था जब उस ब्राह्मण के पुत्र न होकर बुढ़ाई आई तब उसने सन्तान होने के वास्ते व्रत और नेम रखना आरम्भ करके बहुत गाय व सोना ब्राह्मणों को दान दिया तिस पर भी उसकी इच्छा नहीं पूर्ण हुई तब वह ब्राह्मण अपने मनमें बहुत उदास होकर घर से निकला और अपना शरीर त्याग करने की इच्छा रखकर वनमें चला गया जब दोपहर को प्यास से बहुत व्याकुल होकर तालाब के किनारे स्नान करके

पानी पिया व उसी जगह बैठकर सन्तान होने वास्ते चिन्ता करने लगा तब परमेश्वर की इच्छा से एक संन्यासी महापुरुष उस तालाब पर आन पहुंचा जब ब्राह्मण ने उसका तेज देखकर बड़े आदरभाव से अपने पास बैठाला तब उस महापुरुष ने पूछा कहो ब्राह्मण देवता तुम इस बनमें किसवास्ते उदास बैठेहो अपने शोच का हाल हमें बताओ यह बचन सुनतेही ब्राह्मण आंशू भरने उपरान्त हाथ जोड़ कर बोला महाराज मैंने पिछले जन्म बड़े पाप किये थे इसलिये मेरे सन्तान नहीं हुई बेटा न होने से पितरलोग नरक में जाते हैं यही दुःख समझकर अपना प्राण देने यहां आयाहूं जगत् में जिसके पुत्र न हो उसका जन्म लेना व जीना अकार्थ है व उसके धन व कुल पर धिक्कार समझना चाहिये व मैं ऐसा अभागी हूं कि मेरी पाली हुई गौ भी बांझ है व मेरा लगाया हुआ वृक्ष भी नहीं फलता जो फल बाज़ार से मोल लाता हूं वह भी सूख जाता है जब वह ब्राह्मण यह सब बात उस महापुरुष से कहकर बड़ा बिलाप करने लगा तब वह संन्यासी ब्राह्मण को बहुत धीर्य देकर बोला मैं तेरे पुत्र होने के वास्ते बिचार करताहूं तू उदास मतहो फिर उस महापुरुष ने ब्राह्मण की कर्म्मरेखा देखकर कहा हे ब्राह्मण तेरे भाग्य में सन्तान नहीं लिखी है इसलिये सात जन्म तक तेरे पुत्र उत्पन्न न होगा किस वास्ते इतना रोकर अपना प्राण देता है संसारी माया सब झूंठी होकर जगत् में सिवाय दुःख के सुख नहीं मिलता व कलियुग में पुत्र से सबको सुख प्राप्त न होकर बेटा माता पिता की सेवा नहीं करता अपनी स्त्री व साले व श्वशुर की आज्ञा में रहकर माता पिता को दुःख देताहै स्त्री व पुत्र व भाई आदि सब अपने मतलब के साथी होते हैं तिस पर भी माया का ऐसा हाल है कि अन्त समय संसारी लोग अपना मन स्त्री व पुत्रों में लगाये रहकर परमेश्वर का स्मरण नहीं करते इसलिये उनको नरक में जाकर दुःख भोगना पड़ता है हे ब्राह्मण तू पुत्र की इच्छा छोड़कर हरिचरणों का ध्यान कर इस में तुझे बड़ा सुख मिलेगा यह बात सुनकर वह ब्राह्मण बोला महाराज मुझे पुत्र उत्पन्न होने के सिवाय कुछ ध्यान व ज्ञान नहीं सूझता आप कृपा करके एक बेटा मुझको दीजिये नहीं तो तुम्हारे ऊपर प्राण देताहूं जब संन्यासी ने ब्राह्मण की यह दशा देखी तब फिर उसे समझाकर कहा हे ब्राह्मण सन्तान वास्ते राजा चित्रकेतु ने दश हजार रानी से बिवाह किया तिसपर भी बेटे का सुख नहीं पाया इसीतरह पर बहुत से राजा पुत्र की चाहना में मरगये व मनोरथ उनका सिद्ध नहीं हुआ जो लोग भाग्यहीन हैं उनका उद्यम भी निष्फल होता है इसलिये सन्तानकी चिन्ता छोड़दे यह बात सुनकर ब्राह्मणने कहा आप जितनी बात ज्ञानकी कहते हैं मेरे चित्तमें एक नहीं धसती दयाकरके कोई ऐसा उपाय कीजिये जिसमें मेरेपुत्रहो इसतरहकी हठदेख के संन्यासी ने एक फल उस ब्राह्मणको देकर कहा तू

यह फल लेजाकर अपनी स्त्री को खिलादे परमेश्वर की कृपासे तेरेपुत्र होगा जब वह महापुरुष फल देकर किसी तरफ चलागया तब आत्मदेव घर पहुंचने उपरान्त वह फल अपनी स्त्री को देकर बोला इसके खाने से तेरे लड़का होगा यह बात कहकर ब्राह्मण देवता कहीं बाहर चलेगये इतने में एकसखी उसके पास आन पहुँची तब ब्राह्मणी ने उससे कहा यह फल मेरे स्वामी ने पुत्रहोने के वास्ते कहीं से लाकर मुझे दिया है पर मैं गर्भ रहने के डरसे न खाऊंगी गर्भवती स्त्रीका जी मतलाकर उससे भोजन नहीं खायाजाता गर्भ रहने से मुझे चलने फिरने में दुःखहोकर घरके भीतर बैठना पड़ेगा व सखी सहेलियों की भेंट छूटकर गाने बजाने में विघ्न होगा व जनते समय बहुत दुःखहोकर कदाचित् लड़का पेटमें टेढ़ा होजावे तो मेराप्राण जाता रहेगा व मेरा शरीर कोमल है दुःख कैसे सहूंगी यद्यपि कुशल से लड़का भी हुआ तो उसके पालने में बड़ा कष्टहोगा बालक कपड़े व बिछौने को मल व मूत्रसे भ्रष्ट कर देता है उस दुर्गन्धिमें मुझसे किसतरह रहाजायगा इन सब दुःखों के उठाने से बांझ व विधवा अच्छी होती हैं जिनको गर्भका दुःख उठावना नहीं पड़ता ऐसी २ अनेक बातें उस ब्राह्मणी ने अपनी सखी से कहकर वह फल नहीं खाया उठाकर रखछोड़ा व अपने पतिसे झूंठ कह दिया कि मैंने फल खालिया थोड़े दिन उपरान्त उस ब्राह्मणीकी बहिनने वहां आकर पूंछा हे बहिन तुम इनदिनों में बहुत दुबली व उदास मालूम होतीहो इसका क्या कारणहै तब उसने अपनी बहिनसे कहा कि मेरे स्वामीने एक फल पुत्र होनेके वास्ते कहीं से लाकर मुझे दियाथा सो मैंने गर्भ रहने के दुःखसे वह फल नहीं खाया व अपने पतिसे फल खानेका हाल झूंठ कहदिया व गर्भ मेरे नहीं है इसबातका उत्तर क्या देऊंगी इसकारण मैं उदास रहतीहूं यह बात सुनकर उसकी बहिन बोली तू कुछ चिन्तामतकर मेरे एक महीने का गर्भ है सो तू अपने पतिसे कहदे कि मेरे गर्भ रहा जब मेरे लड़का होगा तब मैं यह बालक तुझे देकर उसको तेरा बेटा प्रकटकरके दूध पिलाया करूंगी इसबात की खबर तेरे पतिको न होगी और जो फल तेरा स्वामी लाया है वह तू अपनी गायको खिलादे यह बात सुनतेही उस ब्राह्मणी ने प्रसन्नहोकर वह फल गायको खिलादिया व अपनी बहिन को आत्मदेव से छिपाकर घरमें रक्खा जब दशवें महीने उसके बेटा हुआ तब उस ब्राह्मणीने अपने पतिसे कहला भेजा कि मेरे लड़का हुआहै यह हाल सुनतेही आत्मदेव ने मंगलाचार मनाकर ब्राह्मण व याचकों को बहुतसा दान व दक्षिणा दिया व ब्राह्मणीने अपने पतिसे कहा कि मेरे दूध नहीं उतरता व मेरी बहिन के दूध होता है उसका बालक छःमहीने का होके जातारहा तुमकहो तो उसे दूध पिलाने वास्ते बुला- कर यहां रक्खूं ब्राह्मणने कहा बहुत अच्छा बालकको किसीतरह पालना चाहिये जब इतनी बात ब्राह्मणने कही तब ब्राह्मणी की बहिन प्रकट होकर लड़के को दूध

पिलाने लगी व ब्राह्मणने उस बालक का नाम धुन्धकारी रक्खा जब दो महीने का धुन्धकारी हुआ तब गौके भी उसफल के प्रताप से एक लड़का बहुत सुन्दर मनुष्यरूपी जन्मा पर उस बालक के दोनोंकान गौके समान थे उसको देखकर ब्राह्मण ने बड़ी प्रसन्नतासे गोकर्ण नामरक्खा व दोनों लड़कों को अपना समझ अच्छीतरह पालन करने लगा जब वह दोनों बालक सयानेहुये तब गोकर्ण पढ़ लिखकर बड़ा पण्डित व बुद्धिमान् व धर्मात्मा हुआ व धुन्धकारी महामूर्ख अधर्मी व चोर व जुआरी होकर कुकर्म करने लगा जब वेश्यागमन करने में सब धन घरका खर्च करडाला तब धुन्धकारी अपने माता पिता को मार पीट के सब कपड़ा व बरतन घरसे लेगया व उसको भी बेचकर सब द्रव्य वेश्या को देडाला जब यह दशा अपने बेटे की ब्राह्मणदेवताने देखी तब रोकर कहने लगे कि ऐसे अधर्मी पुत्र होने से जो मुझे दुःख होताहै मैं बिना सन्तान के बहुत अच्छा था इस जीने से मेरा मरना अच्छा है जिसमें महाकष्ट व दुःखसे छूट जाऊं यह हाल आत्मदेवका देखकर गोकर्णने कहा हे पिता संसार में सिवाय दुःख के सुख किसी को नहीं होता तुम किसवास्ते इतनी चिन्ता करतेहो जगत्में राजा व प्रजा धनी व कंगाल जितने आदमी हैं सबको एक दुःख लगा रहताहै जिसने संसारी माया छोड़कर परमेश्वर में ध्यान लगाया उसको सुख होता है इसलिये तुम अज्ञान तजकर स्त्री व पुत्र का मोह मनसे तोड़ डालो व बनमें जाकर परमेश्वर का भजन करो तब तुमको सुख मिलैगा संसारी माया मोह में फँसे रहने से आदमी नरक भोग करता है जब यह बात गोकर्णकी सुनकर ब्राह्मणदेवता को कुछ ज्ञान हुआ तब उसने गोकर्ण से कहा तुमने बहुत अच्छा सम्मत हमको बतलाया पर बिना ज्ञान सीखे बनमें जाकर क्या करूं जो मेरे उद्धार का उपायहो सो भी बतलादे यह वचन सुनकर गोकर्ण बोला हे पिता यह मन तुम्हारा संसार की माया मोहके बीचमें लगा है इस मनको तुम उनकी तरफ़ से खींचकर हरिचरणों में लगाओ बन में अकेले बैठकर परमेश्वर का ध्यान करो व संसारी माया व तृष्णा को छोड़देव यह बात साधन करने से बहुत सुख पाकर मुक्त पदवी पर पहुँचोगे यह ज्ञान सुनतेही आत्मदेवने प्रसन्न होकर संसारी माया छोड़दी व बनमें जाकर परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करने लगा कुछ दिन बीते तन अपना त्याग कर मुक्त पदवी पर पहुँचा ॥

पांचवां अध्याय ॥

वेश्याके फांसी लगाने से धुन्धकारी का मरना व उसका सप्ताह सुनकर मुक्त होना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा कि जब वह ब्राह्मण बनमें चला गया तब धुन्धकारीने अपनी माता को मार पीट करके कहा द्रव्य घर में कहां गड़ा है

हमको बतलादे नहीं तो तुझको मारडालूंगा उसने मारने के डरसे कहा कल बतला-दूंगी उस समय यह बात कहकर ब्राह्मणीने बेटाके हाथ से अपना प्राण बचाया पर उसके घरमें कुछ द्रव्य नहीं था जो बेटे को बतलाती इसलिये मारपीट के डर से वह रात को कुएं में गिरकर मरगई जब गोकर्णने धुन्धकारी का यह हाल देखा तब अपना रहना वहां उचित न जानकर वह तीर्थयात्रा करने बाहर चलागया व गोकर्ण ऐसा महात्मा व ज्ञानी हुआ कि दुःख व सुख शत्रु व मित्र को एकसा समझकर दिन रात्रि सिवाय भजन व स्मरण परमेश्वर के कुछ दूसरा उद्यम नहीं रखता था व गोकर्ण के जाने के उपरान्त धुन्धकारी अकेला घर में रहकर चोरी व ठगी करके वेश्या को धन देने लगा एक दिन वह कहीं से बहुतसा रुपया व गहना चुरालाया सो अपनी वेश्या को देकर उसके साथ सोया जब रात को धुन्धकारी नींद में अचेत हुआ तब उस वेश्या के घरवालोंने आपस में सम्मत किया कि यह सदा चोरी व ठगी करके दूसरे का धन लाकर हमको देता है कहीं पकड़ा जायगा तो उसके साथ हमलोग भी दण्ड पावेंगे और ऐसा उद्यम रखने से यह अवश्य मारा जायगा इस लिये उत्तम है कि हमलोग इसको मारडालें उन्होंने आपस में यह विचार करके धुन्धकारी को फांसी लगाकर अपने घरमें लटका दिया जब फांसी लगाने से उसका प्राण नहीं निकला तब जलती २ लकड़ियों से उसका मुंह जलाकर मारडाला व घरके भीतर गड़हा खोदकर उसे गाड़ दिया जब उस वेश्या के अड़ोसी पड़ोसियोंने पूंछा कि धुन्धकारी जो तुम्हारे घर पर आता था इन दिनों दिखलाई नहीं देता क्या हुआ तब उस वेश्याने कहा कहीं रोजगार करनेवास्ते गया है यह बात सच समझना चाहिये कि वेश्या किसी की मित्र नहीं होती पहिले द्रव्य लेकर पीछे प्राण मारती हैं ऊपर से उनकी जिह्वा अमृतरूपी रहकर पेटमें विष भरा रहता है व द्रव्य लेने से काम रखकर किसी की प्रीति नहीं करती जब धुन्धकारी इसतरह मरकर प्रेत हुआ व गरमी बरसात व भूख प्यास व जाड़ा उसको बहुत सताने लगा व गोकर्णने कहीं तीर्थ में किसी से सुना कि धुन्धकारी भाई तुम्हारा मरगया व उसकी क्रिया कुछ नहीं हुई तब गोकर्णने गयाजी में जाकर श्राद्ध उसका करादिया व जिस २ तीर्थ पर गोकर्णका जाना होता वहां २ श्राद्ध धुन्धकारी का करदेते थे जब तीर्थ करने उपरान्त गोकर्ण अपने स्थान पर आनकर रात्रिको सोये तब उन्हों ने धुन्धकारी को प्रेतयोनि में इसतरह देखा कि कभी वह बैल कभी हाथी कभी बकरा कभी भैंसा कभी मनुष्य कभी बड़ासारूप कभी छोटारूप बनजाता था जब गोकर्ण ने उसको प्रेत जानकर मन में धैर्य्य धरने उपरान्त उससे पूंछा तू भूत या प्रेत या राक्षस कौन होकर कहां से आयाहै अपना हाल हमसे बतला तब गोकर्ण की बात सुनकर धुन्धकारी बहुतरोया पर उसे बोलने की सामर्थ्य नहीं थी जो अपना हाल कहे जब गोकर्ण ने देखा कि

यह सिवाय रोने के कुछ नहीं बोलता तब दयाकी राह मन्त्र पढ़कर जलका छीटा उसपर मारा तब वह बोला मैं तेरा भाई धुन्धकारी हूं अपने पापसे ब्रह्म तेज खोकर मैंने ऐसे भारी अधर्म्म किये हैं कि जिन पापों की गिनती नहीं होसक्ती मुझको वेश्याने फांसी लगाकर मारडालाथा इसलिये मुझे दाना पानी कुछ नहीं मिलता हवा खाकर जीताहूं अब तुम आये हो जिसतरह बन पड़े मेरा उद्धारकरो यह बात सुनकर गोकर्ण ने कहा मैंने तेरे उद्धार के वास्ते गयाजी में व सब तीर्थोंपर श्राद्ध किया तिसपर तू प्रेतयोनिसे नहीं छूटा तब धुन्धकारी बोला हजारों गया श्राद्धकरो पर महा पाप करने से मेरी मुक्ति नहीं होसक्ती कोई ऐसा उपायकरो जिसमें अपने पापों से छूटकर भवसागर पार उतरजाऊं यह बचन सुनकर गोकर्ण ने धुन्धकारी से कहा तू थोड़ेदिन सन्तोषकर मैं तेरे उद्धारका उपाय करूंगा गोकर्ण यह बात धुन्धकारी से कहकर सो रहा जब दूसरे दिन उस नगरके मनुष्य गोकर्ण से भेंट करनेके वास्ते आये तब उसने यथा उचित सबका सन्मान किया फिर कई दिन उपरान्त गोकर्ण ने योगीश्वर व महापुरुष व पंडितों को अपने स्थानपर बुलाकर सभाकरके उन लोगों से पूंछा कि इसतरह मेरा भाई मरकर प्रेतयोनि में पड़ाहै उसकी मुक्ति होनेके वास्ते कोई उपाय बतलाइये यह बात सुनकर सब महापुरुष व पंडितों ने विचारकर गोकर्ण से कहा कि तुम सूर्य भगवान् की पूजा व ध्यानकरके उनसे इसका उपाय पूंछो जैसी वह आज्ञादेवैं वैसा करो यह बचन सुनकर गोकर्ण ने सब पंडित व महात्माओं को बिदाकिया व सूर्य भगवान्का मंत्र पढ़कर व स्तुतिकरके यह वरदान मांगा हे महाराज धुन्धकारी की जिसमें मुक्तिहो वह उपाय बतलाइये सूर्य्य भगवान्ने उस मंत्रके प्रताप से गोकर्ण को दर्शन देकर कहा कि सप्ताह पारायण श्रीमद्भागवतका धुन्धकारी को सुनाओ तब उसकी मुक्ति होवेगी यह बात सुनकर गोकर्ण बहुत प्रसन्नहुआ व सब पंडित व योगीश्वर व महापुरुषों को बुलाकर गोकर्ण ने सप्ताहयज्ञ श्रीमद्भागवतका आरम्भ किया सो उस नगर के बहुत से मनुष्य बूढ़े लड़के व तरुण स्त्री पुरुष वास्ते सुनने कथाके वहां आये व धुन्धकारी भी एक बांसके ऊपर कि वह सात गांठका था बैठकर सुनने लगा व एक वैष्णव व महापुरुषको श्रोता ठहराकर गोकर्णजी अमृत रूपी कथा बांचनेलगे जब पहिले दिन सन्ध्यासमय कथा सुननेवाले उठे तब एक गांठ उस बांसकी जिसपर धुन्धकारी बैठाथा फटकर उसमें बड़ा शब्दहुआ उसे सुनकर सब किसी ने बड़ा आश्चर्य किया फिर दूसरेदिन कथा होने से दूसरी गांठ टूटकर इसी तरह सातदिनमें सातों गांठैं उस बांसकी फटगईं बारहोंस्कन्ध कथा सुनने के प्रतापसे धुन्धकारी प्रेतयोनि छोड़कर दिव्यरूप चतुर्भुजीमूर्त्ति श्यामसुन्दरके समान होगया व पीताम्बर पहिनेहुये गोकर्ण के पास जाकर नमस्कारकरके बोला महाराज आपने मुझे बड़े पापों से छुड़ाकर कृतार्थ किया सिवाय श्रीमद्भागवत के कोई दूसरा

उपाय इन पापों से छुड़ाने व मुक्ति देनेवाला नहीं है जो लोग संसाररूपी कीचड़में फँसे हैं वह इस कथारूपी तीर्थ में स्नान करने से पवित्रहोकर भवसागर पार उतर जाते हैं जिससमय धुन्धकारी यह गोकर्ण से कहरहाथा उसीसमय एक बिमान बहुत अच्छा आकाशसे वहां पर उतरा व धुन्धकारी उस बिमानपर चढ़कर वैकुंठको चला गया यह हाल देखकर दूसरे ऋषीश्वर व पंडितों ने जो उस सभामें बैठे थे गोकर्ण से पूंछा महाराज हमारे मनमें यह सन्देह हुआहै उसे आप छुड़ादीजिये कि हम लोग बहुत आदमियों ने यह सप्ताह पारायण सुना इसलिये उचितथा कि कथा सुनने के प्रताप से सबके वास्ते बिमान आता व हमलोग भी बैकुंठको चलेजाते यह क्याकारण है कि एक मनुष्य बिमानपर चढ़कर बैकुंठमें चलागया और सबलोग यहां बैठेरहे यह बात सुनकर गोकर्ण ने कहा कथा सुनने में इतना भेदहै जो मनुष्य मन लगा-कर कथा सुनते हैं उनको सम्पूर्ण फल प्राप्त होताहै जो लोग कथामें बैठकर चित्त अपना बीच मोह स्त्री व पुत्र संसारी काम के लगाये रहते हैं उनको वैसा फल कथा सुननेका नहीं मिलता एक चित्तहोकर सुनने से मुक्ति पाताहै यह वचन सुनतेही श्रोता लोगों ने लज्जितहोकर गोकर्ण से कहा महाराज आप दयाकरके एक सप्ताह और सुनाइये जिसमें तुम्हारी कृपासे हमलोग भी भवसागर पार उतरजावैं गोकर्ण ने उन लोगों के कल्याण वास्ते श्रावण के महीने से दूसरा पारायण आरम्भ किया उस कथाको बहुत लोगों ने मन लगाकर सुना तब बहुत बिमान आकाश से आनकर वहां उपस्थितहुये और सब श्रोतालोग गोकर्ण को धन्य २ कहिकर बोले महाराज तुम्हारी कृपासे हम लोगों का उद्धार हुआ और कथा सम्पूर्ण होने उपरान्त श्रीकृष्ण जी महाराज बैकुण्ठ से वहां पधारे व गोकर्ण को अपने पास बिमान पर बैठाकर गो-लोक में लेगये सब श्रोता भी इसीतरह बिमानों पर चढ़कर उसी तन से बैकुण्ठ को चलेगये जिसतरह सब अयोध्याबासी रामचन्द्रजी के साथ सदेह बैकुण्ठ में गये जिस स्थान पर सूर्य व चन्द्रमा पहुँच नहीं सक्ते उस जगह संसारी मनुष्य इस भागवत कथाके प्रताप से पहुँच जाता है जितना श्रीमद्भागवत सुनने और पढ़ने का माहात्म्य व पुण्य है तितना फल यज्ञ व तप व व्रत व तीर्थ व दानादि का नहीं होता सबसे इसका माहात्म्य अधिक समझना चाहिये॥

छठवां अध्याय॥

नारदमुनि का सनत्कुमारजी से श्रीमद्भागवत की सप्ताहयज्ञ विधि पूंछना और सनत्कुमारजी का कहना॥

नारदजीने सनत्कुमार से पूंछा हे महाराज इस सप्ताहयज्ञ भागवतपुराण सुनने की विधि बतलाइये कि कौन २ बस्तु इसमें चाहिये और किसतरह से यह करना होता

है सनत्कुमारजी बोले यह बात तुमने बहुत अच्छी पूंछी सुनो इस सप्ताहयज्ञ को बीच महीने भादों व क्वार व कार्तिक व अगहन के सुनना बड़ा पुण्य है सिवाय इसके जब इच्छा हो और कोई पण्डित व्यासजी अच्छे मिलजावैं तब सुनै शुभकर्म करना किसी समय मना नहीं है पर जो कोई सप्ताह सुनने की इच्छा करै उसे चाहिये कि अच्छा मुहूर्त पूंछकर अपने इष्ट मित्रों को कहला भेजे कि हमारे यहां सप्ताहयज्ञ होगा आप लोग भी सुननेवास्ते आना व जो लोग कि विरक्त होवैं उनको भी इस यज्ञ में बुलाना उचित है व जो स्थान घरमें या बाग या तीर्थ पर अच्छा हो वह कथा सुननेवास्ते ठहरावे और वह जगह चांदनी व केला व बन्दनवार आदि से अच्छीतरह अलंकृत करावे जिसतरह बिवाहादिक व यज्ञ में तैयार कराते हैं और व्यासजी के बैठने को बहुत अच्छा ऊंचा सिंहासन रखवादे व वैष्णव लोगों को जो कथा सुनने आवें उनकेवास्ते पृथक् पृथक् आसन बिछवादे व प्रात समय से व्यासजी कथा बांचना आरम्भकरें व श्रोता लोग स्नान व सन्ध्या करके कथा होने से पहिले वहां आवें व चित्त लगाकर कथा सुनैं व पहिले दिन मुख्य मालिक कथा सुननेवाले को गणेशजी की पूजा करना चाहिये जिसमें बीच सप्ताह यज्ञ के कोई विघ्न न हो व एक ब्राह्मण विद्वान् को विष्णुसहस्रनाम का बरण सात दिनवास्ते देकर बैठाल देना उचित है कि वह ब्राह्मण शालग्राम की पूजा व विष्णुसहस्रनाम का पाठ करके एक२ नाम लेकर ठाकुरजी पर तुलसीदल चढ़ावे व मुख्य श्रोता पहिले दिन पूजा व्यासजी व पोथी श्रीमद्भागवत की सच्चेमन से करके यथाशक्ति भेंट रखने उपरान्त हाथजोड़ कर कहै हे व्यासजी आप साक्षात् श्रीकृष्णजी महाराज व शुकदेवजी का रूप हैं मुझे अपना दास समझकर श्रीमद्भागवत यज्ञ आरम्भ करके मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये जब व्यासजी कथा कहैं तब मन अपना संसारी काममें न लगावे और कथा सुनने उपरान्त परमेश्वरका भजन भी उस सभामें करना चाहिये व चार घड़ी दिन रहे तक कथा सप्ताह की सुनाकरे व व्यासजी को भी उचित है कि जल्दी न करके अच्छीतरह समझाकर कहें जिसमें सब किसी को समझाई देवे दोपहर को दो घड़ीवास्ते सप्ताह कथा सुनना बन्द करके कुछ दूध या फल व्यासजी व श्रोता लोगों को खालेना चाहिये व सात दिन जब तक सप्ताहयज्ञ सम्पूर्ण न होवे तब तक श्रोता लोगों को एकबार सन्ध्या समय भोजन करना चाहिये कदाचित् केवल फल या दूध व घी खाकर सात रोज तक रहजावे तो और अधिक पुण्य है निराहार न रहकर कुछ खालेना चाहिये सिवाय इसके सात दिन तक ब्रह्मचर्य्य रहना व स्त्री से भोग न करना व पृथ्वी पर सोना व पत्तल में खाना श्रोता लोगों को उचित है और सात दिन तक दाल व शहद व बासी अन्न व बैंगन व तरबूज व मसूर व मोथी व उड़द व पिआज व लहसुन व मूली व गाजर व कोहड़ा न खाकर अधिक भोजन न करें जिसमें आलस्य

आवे व जब तक सप्ताह कथा सुनैं तब तक क्रोध झगड़ा या किसी की चुगली व निन्दा न करना चाहिये इस सात दिन में कोई स्त्री रजस्वला होजावे तो वह कथा न सुने व म्लेच्छादिक अशुद्धजात बीच सभा कथाके आनकर न बैठें उनको सुनने की इच्छा होय तो दूर बैठकर सुनैं व श्रोता लोगों को सत्य बोलना व दया रखना उचित होकर बीच कथाके शोर करना न चाहिये इसतरह सप्ताह कथा सुनने से बड़ा फल होता है कोई स्त्री निष्केवल बांझ होकर या ऐसी होवे कि एक बार उसका लड़का होकर दूसरा बालक न हो या जिसका गर्भपात होजाता है वह चित्त लगा कर इस सप्ताहयज्ञ को सुने तो उसके सन्तान होवे और इस कथा सुनने के प्रताप से सबका मनोरथ पूर्ण होता है व प्रतिदिन कथा सुनने उपरान्त तुलसीदल व प्रसाद सब श्रोताओं को देना चाहिये जब कथा सम्पूर्ण होजावे तब आठवें रोज सप्ताह होने का होम दशमस्कन्ध के श्लोक या गायत्रीमन्त्र से आहुति देकर करे व अच्छे २ पदार्थ ब्राह्मणों को भोजन करावे व अपने सामर्थ्य भर द्रव्य व वस्त्र व भूषण व गऊ व पृथ्वी व बर्त्तन आदिक व्यासजी को देकर सच्चे मन से पूजा करके उनको बिदा करना चाहिये इस कथाके सुनने से अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंपदार्थ मिलते हैं इतनी बात कहकर सनत्कुमारजी बोले हे नारदमुनि तुमको सुनने की इच्छाहो तो हम दूसरा पारायण कहैं नारदमुनिने कहा धन्य मेरे भाग्य इससे क्या उत्तम है जब सनत्कुमार ने दूसरा पारायण आरम्भ किया और वहां सब ऋषीश्वर आनकर बैठे तब शुकदेव जी महाराज भी तीर्थयात्रा करतेहुये वहां पर आये सो सनत्कुमार आदिकने शुकदेव जी को देखकर बड़े आदर भाव से आसन पर बैठाला उस समय शुकदेवजी सप्ताह-यज्ञ की तैयारी देखकर सब श्रोताओं से बोले तुम लोग इस कथा को चित्त लगाकर सुनो यह कथा वेदरूपी वृक्षका फल है संसार में दूसरे फल जो होते हैं उनमें गुठली व छिलका रहकर इस फलमें अमृतरूपी रस भरा है इसलिये यह अमृत बारम्बार पीना चाहिये इस कथा को श्रीनारायणजीने ब्रह्मासे कहा और ब्रह्माने नारदमुनि को बतलाया नारदजीने वेदव्यास हमारे पिता से कहा व व्यासजीने मुझे पढ़ाया और मैंने राजापरीक्षित को सुनाया सो यह श्रीमद्भागवत अठारहों पुराण में उत्तम होकर साधु वैष्णव का परम धन यही है स्वर्गलोक में तपस्वियों व ब्रह्मलोक में ब्रह्मा व कैलास में महादेव व वैकुण्ठ में लक्ष्मीजी इस कथा को गावती हैं जिस समय शुक-देवजी श्रोता लोगों से यह बात कहरहे थे उसी समय बैकुण्ठनाथ ब्रह्मा व वरुण व कुबेरदेवता प्रह्लादादिक भक्तों को साथ लिये सप्ताहयज्ञ में आये उनको देखकर जि-तने लोग उस सभा में बैठे थे सबोंने उठकर दण्डवत् व जय जयकार किया और नारदमुनि मारे हर्ष के नाचने और गाने और प्रह्लादजी करताल व उद्धव भक्त मंजीरा और राजा इन्द्र मृदंग बजाने लगे उस समय नारायणजी त्रिलोकीनाथने सब किसी

को अपने प्रेममें लीन देखकर उनसे कहा जिसके मनमें जो इच्छाहो सो बरदान मांगो तब नारदादिक हाथ जोड़कर बोले आपके दर्शन हमको प्राप्तहुये इससे अधिक कौन बस्तु है जो मांगैं अपने चरणों की भक्ति हम लोगों को दीजिये श्यामसुन्दर यही बरदान सबको देकर वहां से अन्तर्द्धान होगये और सप्ताह यज्ञ दूसरा सम्पूर्ण हुआ इतनी कथा सुनकर शौनकादिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरोंने सूतजी से पूंछा कि शुकदेव महाराजने यह कथा राजापरीक्षित को कब सुनाई व गोकर्ण और सनत्कुमार जीने कब कही थी इसका हाल बतलाइये सूतपौराणिकने कहा जब श्रीकृष्णजी महाराज द्वारकापुरी से बैकुण्ठ को पधारे उसके तीनसौ वर्ष उपरान्त भादों महीना नवमी के दिन शुकदेव महाराजने यह कथा राजा परीक्षित को सुनाना आरम्भ किया और सात दिनमें वह पारायण सम्पूर्ण हुआ उसके दोसौ वर्ष पीछे गोकर्णने सप्ताह कथा कही थी उसके तीनसौ छः वर्ष बीते सनत्कुमारजीने नारद को सुनाया सो कथा हमने तुमसे वर्णन किया यह अमृतरूपी कथा आदर व प्रेम करके जो सुनै व पढ़ै उसको सब फल मिलते हैं ॥

इतिश्रीगोकर्णमाहात्म्यंसम्पूर्णम् ॥

पहिला स्कन्ध ॥

श्रीपरब्रह्मपरमेश्वर को अवतार लेना व वेदव्यास को नारदमुनिसे चार श्लोकसुन श्रीमद्भागवतबनाना और शृंगीऋषि से राजापरीक्षित को शापमिलना जिससे यह अमृतरूपी कथा जगत् में प्रकटहुई ॥

क०—कासीको निवासी मक्खनलालहौं गोपालजी को लीला व्यासबानीको जबानीकहाचाहतहौं। विद्याको विचार नाहिं कथाको शुमारनाहिं उर्दूजबानी कहत हिये लाज लावत हौं ॥ जाकी कृपा पायके पहाड़चढ़ैं पंगुल और गूंगे वेदभाषैं सोई कृपा नित्य ध्यावतहौं। कहैं गुणवन्त हरिनाम टेढ़ो सूधो भलो तासों सुनहियेमें गुण नेकही सराहतहौं ॥

दो०—गंग यमुन गोदावरी सिन्धु सरस्वति संग।
सकलतीर्थ तहँ बसतहैं जहँ हरिकथा प्रसंग ॥
नरनारायण गिरा अरु व्यास मुनिहिं परणाम।
आशा मेरी पूजिहैं सब गुण पूरणधाम ॥
गूंगवेदको उच्चरै पंगु लांघि गिरिजाय।
जासुकृपाबन्दौंतिन्हैं माधव होयँ सहाय ॥
गुरुपदपंकज हृदयधरि सप्तऋषिनशिरनाय।
कहौं कथा श्रीभागवत यदुपतिहोयँसहाय ॥
गुणावाद गोविंदके काटत सब जंजाल।
यातेभाषा भागवत विरचत माखनलाल ॥

पहिला अध्याय ॥

श्रीनारायणजी महाराज की स्तुति वर्णन करना व शौनकादिकों करके श्रीमद्भागवत कथाका पूंछना व सूतजी करके इस अमृतरूपी कथाका प्रारम्भकरना ॥

सूतपौराणिक शिष्य वेदव्यासने कथा श्रीमद्भागवत व्यासजी के मुखसे जिससमय वह शुकदेव अपने पुत्रको पढ़ाते थे और शुकदेवजी ने राजापरीक्षित से कही थी

सुनाथा उसके थोड़े दिन उपरान्त सूतपौराणिक नैमिषारण्य तीर्थ में जहां शौनकादिक अट्ठासी हजार ऋषीश्वर इकट्ठे हुये थे गये और कारण इकट्ठे होने उन ऋषीश्वरों का वहांपर यहथा कि उस जगह सुदर्शनचक्र भगवान्का गिरा है इसलिये वह स्थान बहुत पवित्र रहकर कलियुग अपना प्रवेश वहां नहीं करने सत्ताथा सो उन ऋषी-श्वरोंने सूतपौराणिक से कहा आपने वेदव्यासजी के पास रहकर सब पुराण पढ़े व सुने हैं सो कृपाकरके हमको भी सुनावो जिसमें उसका पुण्यहो तब सूतजीने उन ऋषीश्वरों से कहा जो आदि निरंकार चौदहो भुवन रचकर सब जीवोंका पालन करते हैं और महाप्रलय के समय चैतन्य आत्मा सब जीवोंका फिर उन्हीं त्रिभुवन पतिके ज्योति में समाजाता है और वह परब्रह्म अपने तेजसे प्रकाशित रहकर ब्रह्मा और महादेव आदिक सब देवताओं को ज्ञान देते हैं और जिनकी माया में जगत्का सब व्यवहार होता है उन्हीं आदि ज्योतिका ध्यान धरकर व्यासजी कहते हैं कि संसारी व्यवहार सब झूठाहोकर परमेश्वरकी माया ऐसी बलवान् है जिसको कोई भुलावने नहीं सक्ता और श्रीमद्भागवत में ऐसा परमधर्म वर्णन किया है कि जिसमें कुछ कपट व लोभ न रहकर ऐसे निर्गुण धर्म लिखे हैं जिसके करने से तीनों दुःख और पाप संसारी मनुष्यका जो देवता और नवग्रह और शत्रु और मनके संकल्प विकल्पसे होता है छूटकर नहीं रहता दूसरे युगों में पूजा यज्ञ और तप ध्यान और पूजा बहुत दिन करने में बड़े परिश्रम से श्यामसुन्दरकी प्रीति उत्पन्न होती थी कलियुग में केवल इस अमृतरूपी कथा पढ़ने और सुनने से तुरन्त परमेश्वर के चरणों का बास हृदय में होता है इसलिये श्री मद्भागवत को सब वेदों का सार कल्पवृक्ष के समान समझकर शुकदेवजीने यह कथा जो राजा परीक्षितको सुनाई थी वही अमृतरूपी फल उस वृक्षका शुकदेवजी महाराज के मुखसे टपककर संसार में प्रकट हुआ है सो सूतपौराणिक शौनकादि ऋषीश्वर और व्यासजी अपने चेलों से कहते हैं कि तुम लोग इस अमृतरूपी फलको जिसमें कुछ छिलका व गुठली नहीं है बारम्बार कानों के राह पियाकरो जिसतरह संसार में मीठे फलको सुवा काटकर खालेता है उसी तरह शुकदेवजी ने इस अमृतरूपी कथाको जो वैकुण्ठ का सुख देनेवाली है बहुत मीठी समझकर खालिया और अपने मुखसे निकालकर जगत् में प्रकट किया यह बात सुनकर एक दिन शौनकादिक ऋषीश्वरोंने जब प्रात समय स्नान व पूजाकर चुके तब सूतजी को बड़े आदरभाव से बीचमें बैठालकर कहा आप सब वेद और पुराण जानते हैं इसलिये हमें अपना चेला समझकर जो पुराण सब वेद और शास्त्रका तत्त्व संसारी जीवों के भवसागर पार उतरने वास्ते उत्तमहो उसे अपने मुखारविंद से वर्णन कीजिये जिसे सुनकर जल्दी हम लोगों की मुक्तिहो व थोड़ा परिश्रम करने से फल अधिक प्राप्त हो और यह बतलाइये कि जिन परब्रह्म परमेश्वर के नाम लेने से

संसारी जीवों का उद्धार होजाता है उन्हों ने कौन काम करनेवास्ते मर्त्यलोकमें देवकी जी के गर्भ से श्रीकृष्ण अवतारलिया और सगुणरूप धरकर बलरामजी के साथ जगत् में कौन लीला की थी और जब कलियुग के आदि में श्यामसुन्दर बैकुंठ को पधारे तब धर्म्म किसके शरण रहा और किसे सौंप गये थे उसका हाल वर्णन कीजिये परब्रह्म परमेश्वर की लीला और कथा सुनने से आदमी चौरासी लाख योनि में जन्म नहीं पाता और आवागमनसे छूटकर भवसागर पार उतर जाता है ॥

दूसरा अध्याय ॥

शुकदेवजी का बन में तप करने के वास्ते चले जाना व फिर नारदमुनि के उपदेश से अपने स्थान पर आना ॥

सूतजी ने जब यह प्रश्न शौनकादिक ऋषीश्वरों का सुना तब मन में बहुत प्रसन्न होकर पहिले शुकदेवजीके चरणोंका ध्यानकिया जिनके सत्संगसे उन्होंने श्रीमद्भागवत सुना था फिर वेदव्यासजी अपने गुरूके पद कमल को हृदय में रखकर श्यामसुन्दर चतुर्भुजी मूर्त्ति को दंडवत् करके शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा तुमने बहुत अच्छी बात पूंछी हम तुमको श्रीमद्भागवत कथा जिसमें सब लीला नारायणजीकी लिखी हैं सुनाते हैं चित्त लगाकर सुनो जिस समय शुकदेवजी ने माता के पेट से जन्म लिया उसी समय मुरलीमनोहर का तप करनेवास्ते नार बिवार समेत घरसे निकलकर बनका रस्ता लिया व उन्होंने मनमें बिचारा कि यहां रहने से हमारा बिवाह सब लोग करेंगे इसलिये अभीसे बनमें जाकर हरिभजन करना उचित है जिससे संसारी माया न लपटै जब व्यासजीने यह हाल पुत्रका देखा तब प्रेमवश होकर उसे फेरलाने वास्ते पीछे दौड़े और शुकदेवजी को बहुतसा पुकारकर कहा हे बेटा खड़े होकर हमारी बात सुनलो पर शुकदेवजी महाराज इसतरह संसार से विरक्त होकर हरिचरणों में प्रीति रखते थे कि उन्होंने खड़े होकर व्यासजी को उत्तर देना उचित न जानकर मनमें कहा देखो हमारे पिता को बुढ़ाई आवने पर भी संसारी माया लगी है ऐसा विचारकर शुकदेव जीने बनान्तरी वृक्षों में प्रवेश करके कहा कोई किसीका पुत्र व पिता न होकर संसार की गति सदासे इसीतरह पर चली आती है और यह शरीर बारम्बार आवागमन में फँसा रहकर जीवात्मा कभी नहीं मरता यह बात सुनकर व्यासजी को सन्तोष हुआ जिस समय शुकदेवजी बन को चलेजाते थे उसी समय राह में एक तालाब पर देवताओं की स्त्रियां नंगी होकर नहाती थीं उन्होंने शुकदेवजी को देखकर कुछ लज्जा नहीं किया उसीतरह नंगी खड़ी रहीं जब पीछे से व्यासजी वृद्ध मनुष्य वहां पर पहुंचे तब उन स्त्रियोंने लज्जित होकर अपना २ वस्त्र पहिन लिया यह हाल देखकर व्यासजीनें मनमें बिचारा देखो शुकदेव हमारे बेटा को इन स्त्रियोंने देखकर

परदा नहीं किया और हम बूढ़े मनुष्य को कि आंखों से कम दिखलाई देता है देख-कर इन्होंने कपड़ा पहिन लिया इसका क्या भेद है उन स्त्रियोंने दिव्यदृष्टि से वेद-व्यासके मनका हाल जानकर कहा हे व्यासजी आप को स्त्री व पुरुष का ज्ञान है और शुकदेव महाराज परमहंस होकर कुछ स्त्री व पुरुष में भेद नहीं जानते इसलिये हम लोगोंने उनसे कुछ लज्जा न करके तुम्हें देखकर कपड़े पहिन लिये यह बात सुनकर व्यासजी के मनका सन्देह मिटगया शुकदेव महाराज ऐसे तरण व तारण महात्मा हैं शौनकादि ऋषीश्वरोंने यह स्तुति उनकी सुनकर मनमें कहा देखो सूत पौराणिक हम सब बूढ़े २ ऋषीश्वरों व मुनीश्वरों की कुछ उपमा न कहकर शुकदेव जी छोटे बालक की इतनी बड़ाई करते हैं जब यह बात समझकर ऋषीश्वरों का मुख मलीन होगया तब सूतपौराणिक उनके मनका हाल अपने ज्ञानसे जानकर बोले कि शुकदेवजी वास्ते भवसागर पार उतारने ऋषीश्वरों व मुनीश्वरों के यह भागवत कथा जगत् में प्रकट किया इसलिये वह योगी और मुनि के भी गुरू हैं जब यह वचन सुनकर सबको बोध हुआ तब सूतजीने ऋषीश्वरों से कहा कि कदाचित् कोई इस बातका सन्देह करै कि जब शुकदेवजी जन्मतेही परमेश्वर का तप करनेवास्ते वनमें चलेगये थे तो उन्होंने भागवतपुराण व्यासजी से किसतरह पढ़ा उसका उत्तर यह है कि जब शुकदेवजीने ऋषीश्वर और मुनीश्वरों से ज्ञानचर्चा किया तब उनको यह हाल मालूम हुआ कि जिसके साधन करने से हरिचरणों में प्रीतिहो वही परमधर्म है इसलिये शुकदेवने नारदमुनि से मिलकर पूंछा महाराज हमको कोई ऐसा ज्ञान बत-लाइये जिसमें बीच चरण परमेश्वर के हमारा मन लगै तब नारदजी बोले इस बात का हाल तुम्हारे पिता अच्छा जानते हैं हमने उनको बतला दिया है यह बात सुन-कर शुकदेवजी बनसे अपने पिता के पास चलेआये और उनके चरणों पर गिरकर बोले आप मुझे कोई ऐसी विद्या पढ़ाइये जिसमें हरिचरणों की प्रीतिहो तब व्यासजी ने कहा सिवाय पढ़ने भागवत और कोई दूसरा उपाय इसका नहीं है यह बात सुन-कर शुकदेवजीने भागवतपुराण पढ़ना आरम्भ किया इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले जब शुकदेवजी भागवत कथा वेदव्यास हमारे गुरूसे पढ़ते थे तब मैं भी वहां था जो शुकदेव महाविरक्त रहकर एक क्षण कहीं २ ठहरते थे वह भागवत पढ़ने के लोभ से बहुत दिन तक व्यासजी की सेवामें रहे व उन्होंने भागवत को बड़े प्रेमसे पढ़ा और शुकदेवजी को संग परमहंस व ऋषीश्वरों का बहुत प्यारा होकर उनके पास कुछ द्रव्य नहीं था जो देने के लोभ से किसी को अपने पास बुलाते इसलिये उन्हों ने भागवत पढ़ा कि इस अमृतरूपी कथा सुनने की इच्छा से योगीश्वर और मुनीश्वर और ऋषीश्वर लोग हमारे पास रहैंगे और इसी कथा का सदावर्त्त मैं दूंगा इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वरो इस कथाके सुनने से निष्काम भक्ति प्राप्त

होती है व निष्कपट भक्ति होने से लोग विरक्त और ज्ञानी होकर मुक्त पदवी पर पहुँचते हैं इसलिये मनुष्य को चाहिये जो काम यज्ञ व तप पूजा और व्रत शुभकर्म करे उसमें कुछ चाहना न रक्खै तो उसकेवास्ते यहां सुख होकर मरने उपरान्त पर-लोक बनता है व किसी बातकी कामना रखने से यह जीव आवागमन में फँसा रह कर भवसागर पार नहीं उतरता और भक्तिकी बराबर दूसरा धर्म नहीं है यज्ञ और तप व दान व तीर्थ दूसरा धर्म्म जो मनुष्य लोग करते हैं उस धर्म करने में बड़े परिश्रम से बीच चरण परमेश्वर के प्रेम उत्पन्न होता है इसलिये इतना दुःख उठाना उचित न होकर मनुष्य को चाहिये कि सच्चे मनसे यह अमृतरूपी कथा सुने और मन अपना माया मोह स्त्री व पुत्र झूठे व्यवहार से विरक्त रखकर नारायणजी के चरणों में ध्यान और प्रीति लगावैं जो कोई मन अपना उस ज्योतिस्वरूप के चर-णों में लगाकर परमेश्वरकी लीला और कथा सुनता है उसके हृदयमें काम और क्रोध मोह व लोभका जो मैल जमाहै वह छूटकर मन उसका इसतरह शुद्ध होजाता है जिसतरह सिकल करने से लोहे में मुर्चा नहीं रहता तब उसके हृदय में हरिच-रणों का बास होजाताहै इसलिये मनुष्य को अपनी मुक्ति बनाने वास्ते पहिले यह कथा सुनने का अभ्यास करना चाहिये परमेश्वर की बड़ी कृपाहोनेसे मनुष्यका मन उनकी कथा व कीर्त्तन में लगताहै विना भक्ति किये कीर्तन व कथा परमेश्वरकी सुने मन शुद्ध नहीं होता और मनुष्यका स्वभाव भी राजसी व तामसी व सात्त्विकी होताहै देवताकी पूजा भी तीन तरहपर होती है राजसी व तामसी व सात्त्विकी व शास्त्रमें तामसको काठ से और राजसको धुवां से व सात्त्विकी को आगसे दृष्टान्त देते हैं जो अर्थ आगसे निकलता है वह बात काठ व धूमसे नहीं प्राप्तहोती इस लिये सात्त्विकी भक्ति व पूजा करनेवाले मुक्तिपदवीपर पहुंचते हैं व संसारमें जितना धर्म्मयज्ञ व तप व व्रतादिकका है वह सब इसतरह परमेश्वरके रूपमें गत होजाते हैं जिसतरह बरसात में नदी नालेका पानी बहकर समुद्रके बीच मिलजाता है ॥

तीसरा अध्याय ॥

बीचहाल अवतारों के जो जो अवतार श्रीपरब्रह्म परमेश्वर ने वास्ते सुख देने हरिभक्त व मारने दैत्यों के धारण किये हैं ॥

सूतजी ने शौनकादि ऋषीश्वरों से कहा कि आदि निरंकार जगत् में अवतार धारण करने वाले पुरुष का रूप है सबके पहिले वही थे और वही मध्य में रहकर महाप्रलय होने उपरान्त भी स्थिर रहैंगे वह अपने तेज से आप प्रकाशित हैं और सब तेज को उसी ज्योति की परछाहीं समझना चाहिये जब महाप्रलय होने उपरान्त उसी आदि निरंकार ज्योति नारायणजी को संसार रचने की इच्छा होती है

तब यह अपनी माया संयुक्त पुरुषका अवतार लेकर शेषनागकी छातीपर शयन करते हैं उन्हीं को विराट् रूप कहा जाता है जिनके हज़ार शिर हज़ार नाक हज़ार कान हज़ार भुजा और हज़ार चरण होते हैं उनकी नाभी से कमल का फूल निकलता है और उस फूल से ब्रह्माजी उत्पन्न होकर चौदहों लोक की रचना करते हैं उन्हीं को सब अवतारों का हेतु समझना चाहिये और उस परब्रह्म परमेश्वर के अवतारों का हाल इस तरह पर है पहिला अवतार सनक सनन्दन सनातन सनत्कुमार का धारण करिकै सदा पंचवर्ष की अवस्था ब्रह्मचारी रहे दूसरा अवतार वाराहजी का लेकर पाताल से पृथ्वी को लाये तीसरा अवतार यज्ञ पुरुष का चतुर्भुजी धारण करिकै सब राजों को यज्ञ करने की राह बतलाकर कृतार्थ किया चौथा हयग्रीव अवतार शरीर आदमी व शिर घोड़े का धारण करिकै ब्रह्मा को वेद पढ़ाया पांचवां अवतार नरनारायण का लेकर बदरी केदारमें वास्ते राह दिखलाने तपस्या के संसारी जीवों को तप करते हैं छठवां अवतार कपिलदेव मुनि का धरकर सांख्ययोगज्ञान अपनी माता को उपदेश किया सातवां अवतार दत्तात्रेयजी का अत्रिमुनि से हुआ जिसने राजाअलर्क और प्रह्लादभक्तको वेदान्त पढ़ाया आठवां अवतार ऋषभदेव जीका चित्रदेवी नाम इन्द्रकी कन्यासे प्रकटहोकर जड़चर्य्या दिखलाया और उनके बेटे जयनदेवने सरावगियों का धर्म संसार में फैलाया नवांअवतार राजापृथुका वेणु के शरीर मथने से उत्पन्न हुआ जिसने गऊरूपी पृथ्वी दुहकर सब औषधी व अन्ना-दिक जो उसने अपने भीतर छिपायाथा बाहर निकाला दशवांमत्स्य अवतार लेकर राजासत्यव्रतको सप्तऋषियों समेत नौकापर बैठालके ज्ञान उपदेश किया और उसे अपनी मायाका कौतुक दिखलाया ग्यारहवां कच्छप अवतार लेकर समुद्र मथने के समय मन्दराचल पर्वत अपनी पीठपर लिया बारहवां अवतार धन्वन्तरिका एक क-लशा अमृतका हाथमें लिये समुद्रसे बाहर निकले और तेरहवां अवतार मोहनामूर्त्ति का धरकर दैत्योंको अपनी सुन्दरताई पर मोहितकिया और अमृतका कलशा उनसे लेकर वह सब अमृत देवतोंको पिलाया और चौदहवां अवतार नृसिंहजी का लेकर हिरण्यकशिपु दैत्यको मारके प्रह्लाद अपनेभक्तकी रक्षाकी पन्द्रहवां वामन अवतार धारणकरके तीनपग पृथ्वी राजाबलिसे दान लेकर देवतोंको दी मांगनेसे मनुष्य छोटा होजाता है इसीवास्ते परमेश्वरने भी मांगने के समय अपना छोटारूप बनाया था सोलहवां अवतार हंसका लेकर सनत्कुमारको ज्ञान उपदेशकरके उनका गर्वतोड़ा सत्रहवां अवतार नारदजी का लेकर पञ्चरात्र वेद बनाया जिसमें सब वैष्णव धर्म लिखाहै अठारहवां अवतार हरिनाम लेकर गजेन्द्रको ग्राहके मुखसे छुड़ाया उ-न्नीसवां अवतार परशुरामजी का लेकर इक्कीसबार सब क्षत्री राजाओंको मारा और पृथ्वी उनसे छीनकर ब्राह्मणों को दानदी और बीसवां रामचन्द्र अवतार धारणकरके

समुद्रका अभिमान तोड़कर रावणको मारा इक्कीसवां वेदव्यास अवतार लेकर सब वेदोंका भागकरके अठारहपुराण और महाभारत बनाया बाईसवां श्रीकृष्णावतार धारणकरके कंस और कालयवन और जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारा और पृथ्वी का बोझ उतारकर वास्ते भवसागर पार उतरने कलियुग बासियों के जगत् में लीलाकी तेईसवां बौद्ध अवतार लेनेका यह कारणहै कि जब दैत्योंने शुक्र अपने पुरोहित से पूंछा कि देवता सदा इन्द्रासनका राज्य करते हैं कोई ऐसा उपाय बनाओ जिसमें हमारा राज्य सर्वदा बनारहै शुक्रजीने कहा यज्ञकरने से देवतोंका राज्य रहता है सो तुमलोगभी यज्ञकरो जब दैत्योंने शुक्राचार्य्य के उपदेश से वास्ते मिलने राज्य देवलोकके यज्ञकरना आरम्भकिया तब देवता घबराकर नारायणजी के पास चलेगये व बहुत स्तुति करनेके उपरान्त हाथ जोड़कर बोले हे बैकुंठनाथ दैत्यलोग इसीतरह हमसे बलवान् हैं जब यज्ञकरनेसे उनको और अधिक बलहोगा तब हमलोग उनको किसीतरह नहीं जीतसकेंगे जिसमें हमारे वास्ते भलाहो वह उपाय आप कीजिये यह वचन सुनतेही आदि पुरुष भगवान् ने बौद्ध अवतार धरकर सेवड़े का रूप बना-लिया व मैला कपड़ा पहिरने के उपरान्त चौंरी रस्सी को हाथमें लेकर जहां दैत्य लोग यज्ञ करते थे वहांपर गये दैत्यों ने उनको देखतेही सन्मान करके पूंछा तुम्हारे हाथमें कौन वस्तुहै बौद्धजी ने कहा जिस जगह मनुष्य बैठताहै वहां छोटे २ जीव उसके नीचे दबकर मरजाते हैं सो इस चौंरी से जगह झाड़कर बैठना चाहिये फिर दैत्यों ने पूंछा तुम्हारा कपड़ा किसवास्ते मैलाहै बौद्धजी ने कहा कपड़ा धोने से भी बहुत जीव मरते हैं जब इसतरह की बातैं सुनने से दैत्यों को मोह प्राप्तहोकर मन उनका यज्ञ करने से फिरगया तब उन्हों ने आपस में कहा कि यज्ञ करने से जीव हिंसा होगी तो यज्ञ करना हमारा निष्फलहोकर उसमें और अधिक पापहोगा यह बात समझकर दैत्यों ने परमेश्वर की इच्छा से यज्ञ करना बन्दकिया तब उनके धर्म का बल जातारहा और देवतालोग उनसे प्रबलहुये और कलियुगके अन्त में चौबी-सवां कलंकी अवतार लेकर धर्मकी वृद्धि व म्लेच्छ और अधर्मियों का नाश करेंगे सो इन चौबीसों अवतार में रामचन्द्र और श्रीकृष्णजी का अवतार पूर्णकला से है और संसारी जीवों को उद्धार करने वास्ते यह सब अवतार नारायणजी ने धारण किये हैं और जितने संसारमें ऋषीश्वर और मुनि और देवता व मनुष्य जीवधारी व जड़ व चैतन्यहैं सब में उन्हीं परब्रह्मका प्रकाश समझना चाहिये इसलिये कोई उनके अवतारों की गिनती नहीं करसक्ता और परमेश्वर अपनी माया से जगत् को उत्पन्न करते हैं परन्तु उसके वश नहीं होते इस लिये संसारी जीवों के दुःखी होनेसे कुछ दुःख उनको नहीं पहुंचता और नारायणजी की लीला और नाम व चरित्रको कोई नहीं जानसक्ता वही मनुष्य उनको कुछ पहिंचानता है जो परमेश्वरके भजन में

लीनरहकर उनके सिवाय दूसरेका भरोसा नहीं रखता उसी को परमेश्वरके जानने वास्ते इच्छा रहकर संसारी मोह छोड़ने से परमेश्वर का प्रकाश शरीर में आता है और बीच श्रीमद्भागवत के सब वेदों का सार और परमेश्वरकी लीला व्यासजी ने वास्ते भवसागर पार उतरने संसारी जीवों के वर्णन कियाहै और शुकदेवजी अपने पुत्रको हरद्वारमें गंगाकिनारे ब्राह्मण और ऋषीश्वरों के बीचमें बैठकर पढ़ायाथा व जब श्रीकृष्णजी महाराज द्वारकासे बैकुंठको पधारे उससमय धर्म का सूर्य डूबकर संसारसे सब शुभकर्म जातारहा तब व्यासजी ने इस भागवत को बनाकर धर्मरूपी सूर्य जगत्में प्रकटकिया और जिससमय वेदव्यास जी ने यह कथा शुकदेवजी को पढ़ायाथा उससमय वहां हम भी थे सो गुरुकी दया व कृपा से हमको भी यह अमृतरूपी कथा यादहोगई जो तुमलोगों को सुनाते हैं ॥

चौथा अध्याय ॥

व्यासजी का महाभारत और सत्रहपुराण सब वेदों का तत्त्व बनाना ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरों ने सूतजी से कहा आपकी आयुष परमेश्वर बहुत बड़ी करें अवतारों के हाल सुननेसे मन हमलोगों का बहुत प्रसन्नहुआ अब चाहते हैं कि जो भागवत व्यासजी से आपने सुनाथा और उसमें सब लीला और महिमा श्यामसुन्दर की लिखी हैं वह हमको सुनाओ और कौनसे युग में किसस्थानपर शुकदेवजी ने वह कथा राजापरीक्षित को सुनाई थी उसका हाल कहो किस वास्ते कि राजापरीक्षित को सांपके काटने का डरथा व हम लोग कालरूपी संसार से जिसमें मृत्यु की अवधि नहीं होती डरते हैं और एक बातका हमको बड़ा सन्देह है जो शुकदेवजी इतने विरक्त रहकर एक क्षण कहीं नहीं ठहरते थे वह किस तरह सात दिन राजापरीक्षित के पास कथा सुनाने के वास्ते रहे और शुकदेव महाराज कोपीन पहिने विभूति लगाये अवधूत बने रहते थे उनको राजापरीक्षितने किस तरह पहिंचाना कि यही शुकदेव हैं यह बात सुनकर सूतपौराणिकने कहा कि द्वापरके अन्तमें वेदव्यास हमारे गुरू नारायणरूपने यह विचारकर पराशरमुनि और सत्यवती से अवतार लिया कि सतयुग में आयुर्बल मनुष्य की लाख वर्ष व त्रेतामें दशहज़ार व द्वापर में हज़ार वर्ष होकर जब तक आयुर्बल पूर्ण नहीं होती थी तब तक वह नहीं मरता था सो कलियुग में आयुर्बल मनुष्य की एकसौ बीस वर्ष की होकर सब लोग पाप करने से उसके भीतर मरजावेंगे दूसरे युगों में मनुष्य लोग आयुर्बल अपनी बीच वेद पढ़ने और यज्ञ और तप करने में बिताते थे सो दीर्घायु होने और शुभ कर्म करने से वह काम अच्छी तरह सम्पूर्ण होकर उनको मुक्ति पदार्थ मिलता था और कलियुगवासी थोड़ी आयुष होने से तप करने और वेद पढ़ने नहीं सक्ते और इतना धन भी नहीं रखते जो यज्ञ

व दानादिक करके भवसागर पार उतर जावें और कलियुगबासी जीव संसारी सुखमें डूबे रहकर परलोक का शोच नहीं करते व स्त्री और द्रव्य के मोह से मनुष्य मुक्ति पदवी न पाकर केवल हरिभजन से उद्धार होता है इसलिये परब्रह्म परमेश्वरने कलियुगबासियों के सुखपाने और भवसागर पार उतरने के वास्ते वेदव्यासका अवतार लिया सो एक दिन व्यासजीने सरस्वती किनारे स्नान करने उपरान्त अकेले बीच ध्यान परमेश्वर के बैठकर बिचार किया कि देखो कलियुगबासी प्रारब्धहीन व मूर्ख होकर ऐसी संगति नहीं करते जिसमें ज्ञानी होकर परमेश्वर को पहिंचानें जो बात ज्ञानकी सुनते हैं वह भी धारण नहीं करते और सदा आलस्य में भरे रहकर संसारी तृष्णा नहीं छोड़ते यह बात विचार कर हमारे गुरूने ऋग्वेद और यजुर्वेद और साम और अथर्वणवेद इस इच्छा से बनाया कि कदाचित् संसारी मनुष्य थोड़ी आयुष होने से सब वेद न पढ़ सकें तो केवल एक वेद पढ़कर भवसागर पार उतर जावें जब व्यासजी ने चारों वेद बनाकर शूद्र व स्त्री को वेद पढ़ना उचित नहीं जाना तब उन्हों ने उन चारों वेद का सार निकाल कर महाभारत और सत्रहपुराण निर्माण किये जिनका पढ़ना और समझना सहज होकर सब छोटे बड़े शूद्र व स्त्री आदि उसके सुनने से भवसागर पार उतर जावें सो ऋग्वेद के बांचनेवाले पैल ऋषीश्वर और सामवेद के पढ़नेवाले जैमिनि ऋषीश्वर और यजुर्वेद के बांचनेवाले वैशम्पायन और अथर्वण वेद के पढ़नेवाले अंगिराऋषीश्वर हुये और महाभारतपुराण को रोमहर्षण मेरे पिता ने पढ़ा है और इन ऋषीश्वरों ने अपने २ चेलों को जो वेद पढ़ाया था वही वेद की शाखा समझना चाहिये महाभारत पुराण एक लाख श्लोक का पढ़ना और सुनना बड़ा पुण्य है सो महाभारत और सत्रहपुराण बनाने पर भी व्यासजी के मनको बोध न होकर ऐसा बिचार में आता था कि अभी हमको और बनाना चाहिये पर कोई बात पक्की नहीं ठहरती थी कि अब हम कौनसी कथा बनावें कि जिसमें हमारे मनको धैर्य्य हो इसी चिन्ता में व्यासजी सरस्वती के किनारे बैठेहुये बिचार रहे थे कि नारदजी बीन बजाते और हरिगुण गातेहुये वहां आये सो व्यासजी ने नारदमुनिको बड़े आदरभाव से बैठाला ॥

पांचवां अध्याय ॥

नारदमुनि का वेदव्यास को यह बात समझाना कि तुम निष्केवल हरिचरित्रका एक पुराण बनाओ और व्यासजी से अपने पिछले जन्म का हाल कहना ॥

नारदमुनि ने व्यासजी को चिन्ता में देखकर कहा इस समय तुम बड़े शोच में दिखाई देते हो जिसतरह किसी मनुष्य को कोई कठिन कार्य्य आनपड़े और वह बात उस से न होसके तो हार मानकर उसकी चिन्ता करै सो तुमने एक वेद

के चार वेद बनाकर महाभारत व सत्रहपुराण तैयार किये तिसपर भी तुम्हारा बोध नहीं हुआ यह बचन सुनकर वेदव्यास बहुत प्रसन्न हुये कि इन्हों ने हमारे मन की बात को जान लिया फिर व्यासजी अपनी चिन्ता का हाल नारदमुनि से कहकर बोले आप दिनरात परमेश्वर के भजन में लीन रहते हैं सो दया करके कोई ऐसा उपाय बतलाइये कि जिसमें हमारा चित्त शुद्ध हो जावे यह बात सुनकर नारदमुनि बोले हे व्यासजी जिस तरह तुमने महाभारत और सत्रहपुराण में परमेश्वर का गुणानुवाद थोड़ासा लिखकर यज्ञ और तप व तीर्थ और दान ब्रत और नेम व लड़ाई देवता और संसारी मनुष्यों का हाल वर्णन किया है उस तरह कोई पुराण निर्मल लीला और यश आदि पुरुष भगवान् का मन लगाकर नहीं बनाया इस कारण तुम्हारे चित्त को सन्तोष नहीं हुआ परमेश्वर की लीला के सिवाय दूसरे पुराणों के पढ़ने और सुनने में परिश्रम बहुत व लाभ थोड़ा होकर उसका फल सदा स्थिर नहीं रहता वह सुख थोड़े दिन भोगकर फिर जन्म लेना पड़ता है और श्री परमेश्वर की कथा में चित्त लगजाने से जितना फल व सुख प्राप्त होता है वह हाल वर्णन नहीं होसक्ता और जिन लोगों को संसार में अनेक तरह के डर व दुःख लगे रहते हैं वह सब बज्ररूपी हरिकथा सुनने और पढ़ने से छूटजाते हैं इसलिये जिस पुराण और भजन में परमेश्वर की लीला और नाम लिखा हो उसी को उत्तम समझना चाहिये जिस तरह नौका इच्छापूर्वक पवन चलने से अपने स्थानपर जल्दी पहुंचती है उसी तरह संसारी मनुष्य परमेश्वर का भजन और स्मरण करने से संसार में बांछित फल पाकर मरने उपरांत भवसागर पार उतर जाते हैं जैसा सुख भगवद्भजन व हरिचरणों में ध्यान लगाने से प्राप्त होता है वैसा आनन्द इन्द्र और कुबेर आदिक देवताओं को भी नहीं मिलता इसलिये मनुष्यों को उचित है कि अपने मनमें सन्तोष रखकर किसी प्रयोजन के बिना चाहे परमेश्वर का भजन व स्मरण किया करैं संसार में सब तरह का सुख व दुःख पिछले जन्म के कर्मों से प्राप्त होकर हरिभजन करने में शूली का कांटा होजाता है और हरिचरणों का ध्यान मन में रखने से संसारी माया छूटकर फिर उस मनुष्य को यज्ञ और तप व ब्रत और दानादिक करने का कुछ प्रयोजन नहीं रहता और जो लोग हरिभक्ति न रखकर केवल यज्ञ और तप और ब्रत व तीर्थ करते हैं वह आवागमन से रहित नहीं होते शुभकर्म करने से थोड़े दिन उसका सुख भोगकर फिर जन्म लेते हैं और बाजी बात वेद व पुराणों में तुमने इस तरह पर लिखी है जिसको मूर्ख नहीं समझेंगे जैसे आपने पितरों का श्राद्ध करना मांस से लिखा है इसलिये मांस खाने वाले तुम्हारे बचन का प्रमाण मानकर मांस भोजन करके यह न समझेंगे कि व्यासजी का अभिप्राय मांस से यज्ञ और श्राद्ध करने वास्ते है इस तरह की बात

साधु व तपस्वी अच्छी न मानैंगे जो लोग हंसरूपी परमेश्वर के भक्त हैं वह बैकुंठ-नाथ के भजन व स्मरण और हरिचरणों के ध्यान में मग्न रहकर दूसरी बात नहीं चाहते जिसतरह हंस मानसरोवर किनारे रहकर दाने की जगह मोती चुगते हैं और कौआ अशुद्ध जगह बैठकर विष्ठा आदिक अशुद्ध वस्तु खाता है और अपनी बोली बोलकर मारे अभिमान के दूसरे पक्षी को अपने बराबर नहीं समझता और उसकी बोली हंस प्रिय नहीं करते उसीतरह हंसरूपी साधु और वैष्णवको परमेश्वर का गुण और चरित्र सुनना प्यारा लगता है और जो पुराण श्यामसुन्दर के नाम की स्तुति से रहित हैं वह उनको अच्छे नहीं लगते और काकरूपी मनुष्य उन बातों का सुनना जिनमें केलि व क्रीड़ा संसारी सुख रहता है अच्छा जानते हैं इसलिये तुम्हारे मनको सन्तोष नहीं हुआ अब तुम्हें चाहिये कि एक पुराण ऐसा बनाओ जिसमें सब लीला और गुण परमेश्वर का लिखाहो और उसके पढ़ने और सुनने से मनुष्यों को पुण्य प्राप्त होकर मरनेउपरान्त मुक्तिपदवी मिले व तुम्हारी चिन्तना छूटकर सन्तोष हो हे व्यासजी कदाचित् तुमको हमारे कहने का विश्वास न हो तो हम अपने पिछले जन्म का हाल कहते हैं सुनो उस जन्म में हम एक दासी के पुत्र थे और मेरी माता एक ब्राह्मणके यहां काम काज करती थी और वह ब्राह्मण साधु और सन्त की सेवा किया करता था सो बर्सात के दिनों में उस ब्राह्मण के स्थानपर साधुलोग आनकर टिके और उस ब्राह्मण ने साधुओं के चौका और बरतन करनेवास्ते हमारी माता को रखदिया सो मैं भी बालक होने से अपनी माता के साथ उन साधुओं के आसनपर रहकर आठों पहर उनका दर्शन किया करता था जिस समय साधुलोग आपस में बैठकर परमेश्वर की कथा और वार्त्ता कहते थे उस समय मैं भी उनके पास बैठा रहताथा और मुझ बालक अज्ञानको वह बातें कथाकी बहुतप्यारी लगती थीं इसलिये मैं बड़े प्रेमसे उनको सुनता था और साधु लोग भोजन करके जो अपना २ जूठन मुझको अपने हाथ से देते थे उसको मैं बड़े प्रेमसे खाताथा जब वह साधु बर्सात बीते अपने २ स्थानको जानेलगे तब मैं बहुतसा रोया और मुझको यह इच्छा हुई कि मैं भी इनके साथ जाऊं तब उन्हों ने मेरे ऊपर कृपाकरके कहा हम तुझे मंत्र पढ़ाये देते हैं उसको तू जपाकर फिर वह लोग मुझे बारह अक्षरका मंत्र उपदेश करके अपने स्थानको चलेगये व मैं उस मंत्र को जपकर उन साधुओं की आज्ञा प्रमाण श्रीकृष्ण और बलराम और प्रद्युम्न और अनिरुद्ध के चरणों का ध्यान करने लगा जब उन साधुओं का जूठनखाने और मन्त्र जपने के प्रताप से मुझे ज्ञान उत्पन्न हुआ तब मनमें यह बात विचार किया कि बनमें जाकर परमेश्वर का भजनकरूं यहां किसवास्ते पड़ारहूं पर मेरीमाता मुझ से बड़ा स्नेह रखकर एक क्षणभर भी मेरा साथ नहीं छोड़ती थी इसलिये मैं उस

को अकेले छोड़कर कहीं जाने नहीं सक्ताथा सो परमेश्वर ने मेरेचित्त का हाल जानकर ऐसा संयोग किया कि हमारी माता सांप काटने से जो उसी ब्राह्मण का दूध दुहावने जातीथी राह में मरगई जब लड़कों ने आनकर हमसे यह हाल कहा तब मैंने बहुत प्रसन्नहोकर मनमें बिचार किया कि देखो परमेश्वर ने संसारी माया मोह से मुझे छुड़ाया यह बिचारकर मैं उसी समय कि पांचबर्ष का था वहांसे उत्तर दिशाको बड़ी २ नदी और नाले व पहाड़ नांघता हुआ एक बनमें चलागया सो बहुतसे सिंह व भालू और हाथी आदिक पशु मुझको बनमें दिखलाई दिये पर भगवान् की कृपा से मैं कुछ नहीं डरा और मेराध्यान परमेश्वर के चरणों में लगाथा इससे मुझे कुछभूख और प्यास भी नहीं लगी जब मैं बहुतदूर एक बनमें जहांपर मनुष्यादिक का आवागमन नहींथा पहुंचा तब वहां एक वृक्ष पीपलका नदी किनारे देखा जब मैंने उस वृक्षके नीचे जड़पर बैठकर परमेश्वरके स्वरूपका ध्यान किया तब भगवान्का दिव्यरूप मुझको ध्यान में ऐसा देखपड़ा कि एक मनुष्य सुन्दर जिसके मुखारविन्दका प्रकाश सूर्यसे भी अधिकथा चतुर्भुजी मूर्ति शंख व चक्र व गदा और पद्म अपने हाथों में लिये पीताम्बर और बैजयन्ती माला धारण किये किरीट और कुंडल और मुकुट कानों में पहिने श्यामस्वरूप कमल नयन लम्बी भुजा घूंघरवाले बाल तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते और बिजुली की तरह चमकते हुये मुझको दिखलाई दिये उस रूप को देखते ही मैंने बहुत प्रसन्नहोकर चाहा कि इसी रूपको देखतारहूं जब वह स्वरूप मेरे ध्यानसे गुप्तहोगया और मैं बड़ा शोचकरके रोनेलगा तब यह आकाशवाणी हुई तू चिन्ता छोड़कर मेरे भजनमें लीनरह तेरेमनमें अधिक प्रीति उत्पन्न होनेवास्ते हमने एकबेर अपना दर्शन तुझे दिया है दूसरे जन्ममें फिर हमारा दर्शन पावेगा और तू मेरे निजभक्तों में होकर मेरी कृपासे तुझको अपने पिछले जन्मों का यादरहैगा ॥

छठवां अध्याय ॥

नारदजी का अपने पिछले जन्मका हाल कहना कि हरिभजनके प्रताप से हमको दर्शन श्यामसुन्दर का हुआ और मैंने जिसतरह शूद्रका तन छोड़कर ब्रह्माके यहां जन्म पाया ॥

नारदमुनिने व्यासजीसे कहा कि आकाशवाणी होने उपरांत एक बाजा बीणाका नारायणजी ने मुझको दिया वह बीणा लेकर हम परमेश्वरका भजन करनेलगे जब मैं प्रेमसे उस बीणाको बजाकर बीच भजन और ध्यान परमेश्वरके लवलीन होजाता तब बैकुंठनाथके प्रेममें डूबकर मुझे यह इच्छा होतीथी कि नारायणजी ने दूसरे जन्म में दर्शन देने को कहाहै कब यह तन मेरा छूटै और दूसरा जन्मलेकर परमेश्वरका

दर्शन पाऊं जब इसीतरह इच्छाकरते २ वह तन अपना छोड़दिया तब त्रिभुवनपति की कृपासे ब्रह्माजीका बेटाहुआ और उनके अंगूठेसे उत्पन्नहोकर पिछले जन्मका सब हाल मुझको यादरहा इसलिये मेरे मनमें यह इच्छाहुई कि नारायणजी का भजनकरूं जिसमें फिर मुझे जल्दी बैकुंठनाथका दर्शन होवे इसवास्ते संसारी मायामोह और गृहस्थी के जालमें नहीं फँसा अब उस भजनके प्रभावसे यह हाल मेराहै कि जिस समय परमेश्वरका ध्यान करताहूं उसी क्षण बांकेबिहारी मुझको इसतरह दर्शनदेते हैं जिसतरह कोई किसीका नेवताहुआ आजावै सो अब जहां इच्छा करताहूं वहां दर्शन उस सांवली मूरतके मुझे होजाते हैं और जिसजगह तीनोंलोकमें मेरी इच्छा चाहती है वहां चला जाताहूं किसीजगह मुझको जानेवास्ते मनहाई नहीं रहती सो हे व्यास जी तुमभी परमेश्वरकी लीला और गुणों को वर्णन करो जिसमें तुमको भी परब्रह्म भगवान् के चरणोंका दर्शन होवै और तुम्हारा चित्त उनके चरणोंका ध्यान छोड़कर दूसरी तरफ न जावै ॥

सातवां अध्याय ॥

नारदमुनिका व्यासजी से चार श्लोकका हाल कहना और वेदव्यासका बदरी केदार में जाकर तप करना और श्रीमद्भागवत पुराणका बनाना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा कि नारदमुनि अपने पिछले जन्मका हाल वेदव्यासजी से कहकर बोले हे व्यासजी हमने चार श्लोक ब्रह्मासे और ब्रह्माने नारायणजी से सुने हैं सो तुमको चाहिये कि उन्हीं चार श्लोकों की कथा विस्तार पूर्वक वर्णनकरो परमेश्वरकी महिमा केवल मनुष्य तनमें मालूम होकर पशु पक्षी आदि को सिवाय खाने और भोग करने के दूसरा काम नहीं रहता जो कोई मनुष्य का तनपाकर परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके मायारूपी भवसागर से पार उतर गया उसीका जन्मलेना सुफलहै और जिसने यह तनपाकर नारायणजी का स्मरण और ध्यान नहीं किया वह मनुष्य चौरासीलाख योनिमें जन्मलेकर बड़ा दुःखपाता है फिर नारदमुनिने वेदव्यासजी को चार श्लोकका अर्थ अच्छीतरह समझाकर कहा हे व्यासजी तुमको चाहिये कि पहिले परब्रह्म परमेश्वरके चरणों का ध्यानकरो जब तुम्हारा अन्तःकरण पवित्र होकर बैकुंठनाथका चमत्कार तुम्हारे हृदयमें आवै तब तुम गुण व स्तुति नारायणजी की वर्णनकरना यह बात कहकर नारदमुनि वहां से बिदाहुये इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वरो नारदजी धन्य हैं जिन्हों ने संसारी जीवों के कल्याण वास्ते वेदव्यासको उपदेश दिया जब नारदमुनिकी शिक्षासे व्यासजी सरस्वती नदी में स्नानकरने उपरान्त बद्रिकाश्रमको जो श्रीनगर पहाड़की तरफहै जाकर बीच ध्यान परमेश्वरके लीनहुये तब उन्होंने इसबातकी चिन्तनाकी

कि मुझ अज्ञानकी क्या सामर्थ्य है जो थोड़ीसी महिमा उस परब्रह्म परमेश्वरकी वर्णन करने सकूं उसीसमय एक तेज आदि ज्योतिका उनके हृदयमें चमका तब व्यासजी ने परमेश्वरकी कृपासे स्तुति करनेकी सामर्थ्यपाकर उन चार श्लोकों को जो नारदमुनिसे सुनाथा विस्तारपूर्वक लिखा और उसका नाम श्रीमद्भागवत रखकर अपने पुत्र शुकदेवजी को पढ़ाया और शुकदेवजी महाराजने राजा परीक्षितसे कहा जिसके पढ़ने और सुननेसे संसारीमाया छूटजाती है पीछेसे उसका हाल कहाजायगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब कुरुक्षेत्रमें अठारह अक्षौहिणीदल पांडव और कौरवोंका इकट्ठा होकर अठारह दिनतक बड़ा युद्धहुआ और बहुत मनुष्य शूरवीर हाथी घोड़े सन्मुख मारे जाकर वीरलोकमें पहुँचे और भीमसेनने अपनी गदासे धृतराष्ट्रके सब पुत्रों को मारने उपरान्त राजादुर्योधनकी जंघा तोड़कर उसको पृथ्वीपर गिराया और महाभारत होने के पहिले जिससमय दुर्योधनने राजा युधिष्ठिर से सब धन और द्रौपदी उनकी स्त्रीको छलकरके जुवेमें जीतलिया और उसने द्रौपदी के शिरकेबाल खींचतेहुये बड़ी सांसत और अनीतिसे अपनी सभामें बुलाकर उससे कहा कि तू हमारी जंघापर आनकर बैठ उसीसमय भीमसेनने मनमें प्रणकियाथा कि श्यामसुन्दर की कृपाहोगी तो मैं तेरी जंघा अपनी गदासे तोडूंगा सो श्रीकृष्णजी की अनुग्रहसे भीमसेनने अपना प्रण पूराकिया जिससमय दुर्योधन पैर टूटाहुआ घायल और अकेला रणभूमिमें पड़ाथा उससमय अश्वत्थामा द्रोणाचार्य का पुत्र उसके पास आनकर बोला कि हमव तुम लड़कपनमें एकसाथ रहकर खेलतेथे सो तुमको शत्रुओं ने यह दिन दिखलाकर इस दुर्दशाको पहुंचाया हमको जो आज्ञादेव सो करें दुर्योधन यह बात सुनकर अश्वत्थामासे बोला मैं अपने जंघा टूटने और सबभाई और बेटा और सेनापतियों के मारे जानेकी कुछ चिन्ता नहीं करता जितना खेद मुझे पाण्डवों के जीते रहने और राज्य करनेका है सो तुम्हारे रहते हमारे शत्रु राज्यकरें इस बात में तुमको भी बड़ी लज्जा समझना चाहिये यह बात सुनकर अश्वत्थामा बोला आप कहैं तो आज रातको मैं जाके सोते समय पांचोंभाई पांडवों का शिर काटकर तुम्हारे पास लादूं यद्यपि सोयेहुये मनुष्यको मारना बड़ा पाप है परन्तु तुम्हारी प्रसन्नताके वास्ते हम ऐसा करेंगे दुर्योधनने कहा जो तुम उनका शिर काटलाओ तो तुम्हारा बड़ा उपकार मानेंगे यह बात सुनकर अश्वत्थामा वहांसे चला व उसके पहुँचने से पहिले श्रीकृष्णजी अन्तर्यामी ने जाना कि आज रातको अश्वत्थामा पांडवों के शिर काटनेवास्ते आवेगा इसवास्ते बैकुंठनाथने सन्ध्यासमय पांडवोंसे कहा कि आजरातको तुम पांचों भाई अपने डेरे में न रहकर सरस्वती किनारे दूसरा डेरा खड़ाकरके सोवो और सब लोगोंको इसी डेरेमें रहनेदेव इसीलिये पांचोंभाई उस रातको दूसरे डेरेमें जाकर सोये थे और अश्वत्थामाने उसीदिन अँधियारीरात में पांडवों के शिरकाटने

की इच्छा रखकर कृपाचार्य्य से सम्मतपूंछा उन्होंने इस अधर्मकरनेको बहुत मना किया पर अश्वत्थामा महादेवजीके वरदानका घमंड रखने से कृपाचार्य्य का कहना न मानकर पहररात रहे कृत्याको साथ लियेहुये पांडवों की सेना में चलागया और उसी वरदानके प्रतापसे रुद्रस्तोत्र पढ़कर उसने सेनाके चारोंतरफ आग लगादिया और पांडवों के पहिले डेरे में जाकर द्रौपदी के पांचों पुत्रोंका शिर काटलिया जो उसी डेरे में युधिष्ठिर आदि पांडवों की शय्या के ऊपर सोये थे और प्रातसमय दुर्योधन के पास लाकर कहा कि हम पांचों भाई पांडवों का शिर काटलाये राजा दुर्योधन यहबात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और एक २ का शिर अपने हाथ में लेकर दबाने लगा जब भीमसेन का शिर बतलाकर अश्वत्थामाने दुर्योधनके हाथ में दिया तब दुर्योधन ने उससे कहा कि यह शिर भीमसेन का न होगा उसका शिर ऐसा नहीं है जो मेरे दबाने से टूटजावे इसलिये मुझको मालूम हुआ कि तू द्रौपदी के पांचोंपुत्रों का शिर काटलाया है जो पांडवों के रूपके समान थे इन बिचारे लड़कोंको तैंने वृथा मारकर हमारे वंशका नाशकिया जब यह बात समझकर दुर्यो- धनको हर्ष होने के उपरान्त विस्मय प्राप्तहुआ तब वह उसीक्षण मरगया उसके जन्मपत्र में लिखा था कि उसका मरना हर्ष व विषाद के मध्य में होगा वही बात आगे आई सो अश्वत्थामा दुर्योधन का मरना देखतेही अर्जुन और श्रीकृष्णजी के डरसे इसतरह अपनाप्राण लेकर वहांसे भागा जिसतरह सूर्यदेवता महादेव के डरसे भागेथे उसकाहाल विष्णुपुराणमें इसतरह लिखाहै कि शिवजीने सुमाली दैत्यको एकरथ बहुत उत्तम और वेगसे चलनेवाला तेजमान् दियाथा जब सुमाली दैत्यने सूर्य्य के पीछे अपनारथ चलाया तब उस रथके प्रकाशसे जहां सूर्य रात करते थे वहां दिन बना रहता था जब सूर्य ने यह हाल देखकर बड़े क्रोध से उसे मार गिराया तब सुमाली ने महादेवजीकी शरण पुकारा उससमय भोलानाथने सुमालीकी सहायता करके सूर्य का पीछाकिया जब सूर्यदेवता महादेवके डरसे भागे तब शिवशंकर ने त्रिशूल मारकर सूर्यका रथ काशीजी में गिरादिया उसीजगहपर लोलार्क तीर्थहुआ जब द्रौपदी ने अपने बेटोंके शिरकाटने का हालसुना तब उसने अतिविलाप करके यह सौगन्दखाई कि जबतक अश्वत्थामा नहीं माराजावेगा मैं अन्न जल नहीं करूंगी जब राजायुधिष्ठिर और अर्जुनादि पांचोंभाई यह हाल सुनकर बहुत रोनेलगे तब द्रौपदी ने अर्जुन से कहा कि अश्वत्थामा का मारना अपनेआधीन समझो मैंने यह सौगन्द केवल तुम्हारे भरोसे पर खाई है जैसा उचित जानो वैसाकरो यह वचन सुनकर अर्जुनने द्रौपदीसे कहा तू धीर्यरख मैं अश्वत्थामाका शिरकाटकर तुझे लादेताहूं तुम उसी शिरपर खड़ीहोकर स्नान करना तब तेरे कलेजे की दाहमिटैगी इसतरह द्रौपदीको समझाकर तुरन्त अर्जुनने गाण्डीव धनुष हाथ में उठालिया और रथपर

चढ़कर श्रीकृष्णजीसे कहा जल्दी रथको चलाइये श्यामसुन्दरने ऐसे वेग से अर्जुनका रथहांका कि अश्वत्थामाके निकट जापहुंचा जब अश्वत्थामाने रथको देखकर ब्रह्मास्त्र जो ब्रह्माने उसको दियाथा अर्जुनपर छोड़ा और वह ब्रह्मास्त्र आगके समान जलता हुआ अर्जुन की तरफ चला तब अर्जुन ने मुरलीमनोहरसे पूंछा यह कैसी अग्नि हमारीतरफ दौड़ीहुई चलीआती है श्यामसुन्दर बोले यह आग ब्रह्मास्त्र अश्वत्थामा की समझकर तू भी अपना ब्रह्मास्त्र उसपर चलाव कि दोनोंअस्त्र आपस में लपटकर वह आग तेरेपास पहुंचने न सके और अश्वत्थामाने जो अपना अस्त्र चलाया है उसे बुलाने की सामर्थ्य नहीं रखता और तू चलाना और फिर बुलालेना दोनों मंत्र जानता है इसलिये चलाव यह बात सुनकर अर्जुनने भी अपना ब्रह्मास्त्र चलाया तब वह दोनों ब्रह्मास्त्र मिलकर आपस में लिपटगये अर्जुन का ब्रह्मास्त्र अश्वत्थामाके अस्त्रको नहीं छोड़ताथा कि वह अस्त्र अर्जुनके पास पहुंचने सके जब थोड़ीदेर तक दोनों अस्त्र आपसमें लिपटेरहे तब श्यामसुन्दरने अर्जुन से कहा कि तू जल्दी मन्त्र पढ़कर दोनों अस्त्रोंको अपनेपास बुलाले नहीं तो इस अग्नि से संसारीजीव जलमरैंगे यह वचन सुनतेही अर्जुनने मन्त्रके बलसे दोनों ब्रह्मास्त्र अपने पास बुलाने के उपरान्त रथ दौड़ाकर अश्वत्थामाको पकड़लिया पर अपने हृदय में दया और धर्मकी राह विचार किया कि यह ब्राह्मण मेरेगुरुका बेटाहै इसको मारना न चाहिये जब यह समझकर अर्जुनने उसका शिर नहीं काटा तब श्यामसुन्दर अर्जुनके धर्मकी परीक्षालेने वास्ते बोले हे अर्जुन अश्वत्थामाने सोयेहुये लड़कों के शिरकाटे हैं इसलिये यह आततायी हुआ और तुमने इसके शिरकाटनेका प्रणकिया था सो इसको मारडालो जिसमें द्रौपदीको संतोषहो यह बात सुनकर अर्जुनने कहा कि महाराज आप सत्य कहते हैं पर ब्राह्मणको मारना बड़ा पाप समझकर अभी इसको बधकरना न चाहिये इसे बांधकर द्रौपदी के पास लेचलो जैसा वह कहै वैसा करना जब यह बात सुनकर श्यामसुन्दरने मानलिया तब अर्जुन हाथ व पैर अश्वत्थामा के बांधकर उसे द्रौपदी के सामने लाया जैसे द्रौपदी हरिभक्ताने अश्वत्थामाको बँधेहुये देखा वैसे अपने धर्म और दयाकी राहसे रुदन करनेलगी और श्रीकृष्णजीकी बहुत स्तुति कहकर अर्जुनसे विनयपूर्वक बोली हे स्वामी तुमने मेरी प्रतिज्ञा पूरीकी अब इसब्राह्मण का प्राण मारने से मेरे मरेहुये बालक जी नहींसक्ते इसलिये अश्वत्थामाको छोड़देव यह अपने कर्म्मोंका दंड परमेश्वरसे पावेगा जिसतरह मैं अपने बेटोंके मरने का शोच करतीहूं उसीतरह कृपीनाम अश्वत्थामाकी माताभी पुत्रमरनेका दुःखपावेगी और इसके पितासे आपने धनुषविद्यासीखी है इसलिये अश्वत्थामाको पूजनेयोग्य समझकर जल्दी छोड़दीजिये इसे बांधकर रखना उचित नहीं है यह वचन द्रौपदी का सुनतेही राजायुधिष्ठिर और नकुल और सहदेवने प्रसन्नहोकर कहा द्रौपदी सत्य कहती

है अश्वत्थामाको मारनेसे सिवाय ब्रह्महत्याके क्यामिलेगा जब यह बात द्रौपदी और युधिष्ठिर आदिकी भीमसेनको अच्छी नहीं लगी तब वह अपनीगदा पृथ्वीपर पटक-कर अर्जुनसे बोला तुमने अश्वत्थामा के शिर काटनेका प्रणकियाथा सो अपनी प्र-तिज्ञा झूंठीकरना न चाहिये और जो तुम यह कहतेहो कि इसके मारने से ब्रह्महत्या लगेगी सो इसमें ब्रह्मअंश व ब्राह्मणका कर्म नहीं रहा धर्मशास्त्रमें ऐसा लिखाहै कि जो कोई शरणआये और सोतेहुये को या बालक और स्त्रीका बधकरे या मतवाले व बौड़हे को व हरिभक्त और परमहंसको मारकर दुःखदेवै ऐसे मनुष्यको आततायी समझकर मारना औ दंडदेना राजाओं का धर्म है उनके मारनेका पाप नहीं होता और छःतरह के आततायी होते हैं एक जो आग लगावै दूसरा जो विषदेवै तीसरा जो गुरुकी आज्ञा न मानै चौथा जो ब्रह्मअंश अधर्म से लेवै पांचवां जो ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्यहोकर मदिरापीवै छठवां जो प्राण मारकर अपना कुटुम्बपालै उनलोगों को अवश्य मारना चाहिये जब भीमसेनकी बात सुनकर अर्जुन विचारनेलगा कि अब मैं क्याकरूं तब श्रीकृष्णजी ने कहा हे अर्जुन तुमने जो प्रणकिया है उसको पूरा करो और भीमसेनका वचन रखकर द्रौपदी का कहनामानो और जो राजायु-धिष्ठिर कहते हैं उनका भी वचनपालो और वेदमें ऐसा लिखाहै कि ब्राह्मणका प्राण न मारै और जो आततायी हैं उनको मारडालै इसलिये तुम ऐसी बात विचारकर करो जिसमें वेद औ शास्त्रका वचन झूंठा न होकर सबकी प्रसन्नतारहै यह बात सुनकर अर्जुनने विचारा कि कोई ऐसा उपाय करना चाहिये जिसमें अश्वत्थामाका प्राण बचकर वह मरने के बराबर होजावै ऐसा विचारकर अर्जुन ने अश्वत्थामाका शिर कि बालहत्या करनेसे उसका बल व तेज जातारहाथा मुड़वाडाला व अपनी तलवारकी नोकसे चीरकर एक मणि बहुत अच्छी जो उसके शिरमेंथी निकाललिया और अपने नगर की सीमासे उसको बाहर निकलवाकर मरणतुल्य करकेछोड़दिया ॥

आठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी करके राजा दुर्योधनकी लोथको वीरों समेत जलाना जोकि महा-भारतमें गये थे और राजा युधिष्ठिरको यज्ञ करनेवास्ते समझाना और युधिष्ठिरका बोध न होना इसलिये भीष्मपितामहके पास लेजाना जोकि रणभूमि में पड़े थे ॥

सूतजीबोले हे ऋषीश्वरो अश्वत्थामाके छोड़ने उपरान्त राजा युधिष्ठिर व श्री कृष्ण महाराजकी आज्ञापाकर दुर्योधन आदिक कौरव और वीरोंकी लोथ जो रण-भूमिमें पड़ीथी उनके सम्बंधियों ने उठालिया व दग्धकर विधिपूर्वक क्रियाकर्म उनका किया जब श्यामसुन्दर व धृतराष्ट्र और पांचोंभाई पांडव और कुन्ती और द्रौपदी व

गान्धारी आदि स्नानकरने वास्ते गंगाकिनारे गये तब जितनी स्त्रियां कौरव व पांडवों के घराने में बिधवा होगई थीं वह सब बड़े विलाप से अपने २ पतिका गुण कह २ कर रोनेलगीं उसीसमय राजायुधिष्ठिर जो धर्मका अवतारथे बड़े शोचमें डूबगये और अपने ऊपर धिक्कार देकर कहनेलगे कि हमारे ये पाप कभी नहीं छूटेंगे व किसतरह मेरा उद्धारहोगा मेरे महाभारत करने से हज़ारों स्त्री हमारे कुल व परिवार की बिधवाहोकर रोती और कल्पती हैं इनके रोने और आंशू गिरनेसे जितनी रेणुका पृथ्वी की भीगैगी उतने वर्षतक मुझे नरकवास करना पड़ैगा मेरे लड़ाई करने से द्रोणाचार्य्य गुरु और भीष्मपितामह हमारे दादा व कर्ण मेरा भाई जिसके हाथसे हज़ारों ब्राह्मण नित्य दान व दक्षिणापातेथे व हज़ारों मनुष्य मेरे गोत्री व नातेदार मारेगये मुझसे बड़ी चूकहुई जो मैंने महाभारत किया ऐसा अधर्म का राज्य मुझे न करना चाहिये इन बातों को सुनकर कृष्ण महाराज व वेदव्यासजी आदिक ऋषीश्वर और ब्राह्मणों ने कईबार राजा युधिष्ठिर को समझाकर कहा इसीतरह सदासे पिछले राजा करते चले आये हैं पृथ्वी और राजगद्दी लेनेके वास्ते बेटा बापको और भाई भाईको मारडालताहै जिसतरह वह लोग राजगद्दी पाकर अश्वमेध यज्ञकरके उन पापों से छूटगये हैं उसीतरह तुम्हारा पाप भी अश्वमेध और राजसूययज्ञ करने से छूटजायगा यह बात श्यामसुन्दरकी सुनकर राजा युधिष्ठिर बोले हे ज्योतिस्स्वरूप यह कहना आपका केवल मन समझावने वास्ते है नहीं तो यज्ञकरने में भी पशु आदिक अनेक जीव हमारे हाथसे मारेजावेंगे जिसतरह कोई मनुष्य कीचड़ को धोया चाहै तो नहीं छूटता उसीतरह हमारे यज्ञ करने से इन बिधवा स्त्रियों की कल्पना नहीं छूटैगी कदाचित् आप यह कहैं कि पहिले तुमने राज्य लेनेके वास्ते इतना युद्धकिया अब राज्य क्यों नहीं करते सो मुझको समर करने की इच्छा न थी न जानै उससमय किसने मेरीमतिको फेरकर महाभारत कराया अब मैं राजसिंहासन पर नहीं बैठूंगा यह बात सुनकर मुरलीमनोहर ने जाना कि हमारे समझाने से राजा युधिष्ठिर नहीं मानैंगे जिस समय श्यामसुन्दर इसी विचारमें बैठे थे उसीसमय ब्राह्मण ऋषीश्वरों ने आनकर श्रीकृष्णजी से कहा हे त्रिलोकीनाथ राजायुधिष्ठिर का चित्त राज्यकाजमें न लगकर वह अभी इसी चिन्तामें रहते हैं कि हमने अपने भाई और नातेदार व ब्राह्मणों को मारा है सो आप उनका बोधकरदीजिये श्यामसुन्दर बोले राजा मेरे समझाने से नहीं मानते हमारी जानमें यह उचित है कि उनको भीष्मपितामह के पास जो रणभूमिमें बाण शय्यापर पड़ेहुये हमारे दर्शनों की इच्छा रखते हैं लेचलें तब वह राजा युधिष्ठिरको ज्ञान उपदेशकरके धीर्यदेवेंगे यह बात कहकर श्यामसुन्दर ने राजाको बुलाके कहा हे धर्म्मराज तुम्हारी अभीतक चिन्ता नहीं छूटी और ब्राह्मण लोग कहते हैं कि इसपापके छुड़ानेवास्ते अश्वमेधयज्ञ करना चाहिये व हमारे सम-

ज्ञानसे तुम्हारा बोध नहीं होता इसलिये तुम हमारे साथ भीष्मपितामह के पास कि वे बड़े बुद्धिमान् हैं चलो जो वह आज्ञादेवैं सो करो राजायुधिष्ठिर ने यह बात मान-कर अपने चारोंभाई व द्रौपदी व ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को रथपर बैठालिया व श्यामसुन्दर के साथ जिस स्थानपर भीष्मपितामह रणभूमिमें पड़ेथे लगये ब्राह्मणलोग दाहिने व पांडव बायें व श्रीकृष्णजी भीष्मपितामहके सन्मुख बैठे और श्यामसुन्दरने इसवास्ते चरणके समीप बैठना अंगीकार किया कि भीष्मपितामह घायल पड़हुये मेरे दर्शनों की इच्छा रखते हैं मैं दूसरी ओर बैठूंगा तो उनको करवटलेने में बहुत कष्ट होगा और यह समाचार सुनकर नारदजी और भरद्वाज व परशुराम आदिक बहुतसे ऋषि व मुनि भीष्मपितामहसे ज्ञानसुनने के वास्ते वहांपर गये और भीष्मपितामहने मानसे पूजन श्यामसुन्दर का किया ॥

नवाँ अध्याय ॥

भीष्मपितामह का राजा युधिष्ठिर को राजनीति धर्म समझाना व द्रौपदी का बोध करना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब सब लोग वहां बैठचुके तब श्री-कृष्णजी बोले हे भीष्मपितामह राजायुधिष्ठिर अपना मन राज्यकाजमें नहीं लगाकर कहते हैं कि हमने अपने भाई व बन्धु व नातेदार और ब्राह्मणोंको महाभारत में मारा है जबतक इन सब पापोंसे हमारा उद्धार न होगा तबतक राज्य नहीं करेंगे भीष्मपितामह ने यह वचन सुनतेही राज्यधर्म और आपद्धर्म और दानधम व मोक्ष-धर्म जिसका हाल शांतिपर्व और शल्यपर्व महाभारतकी पोथी में विस्तारपूर्वक लिखा है राजायुधिष्ठिर से कहिकर संक्षेपमें यह ज्ञान बतलाया हे राजा तुमको बाल्यावस्था से दुःखप्राप्त होकर लड़कपन में पिता तुम्हारे मरगये जब तुमको कुछ ज्ञान हुआ तब कौरवोंने तुम्हारे जलाने का उपाय करके भीमसेन तुम्हारेभाई के खानेकेवास्ते बिषका लड्डू बनाकर भेजा फिर तुम्हारा सब राज्य व धन छलसे जुआं में जीतकर तेरहबर्षका तुमको वनवास दिया सो वनमें तुमने अपने चारोंभाई और द्रौपदी स्त्री समेत बहुत से दुःख उठाये कदाचित् कहोकि सच्चे व धर्मात्मा मनुष्यको दुःख नहीं होता फिर तुमको जो सत्यवादी व नीतिमान्हो किसवास्ते यह सब दुःखपहुंचा और कहते हैं कि बलवान् मनुष्यको दुःख व शोक नहीं प्राप्तहोता सो तुम पांचोंभाई में अर्जुन व भीमसेन बड़े शूरवीर हैं व द्रौपदी ऐसी पतिव्रता स्त्री तुम्हारे साथ थी फिर इन्होंने किसवास्ते इतना दुःखपाया सिवाय इसके जहां श्रीकृष्णजी के नाम की चर्चा रहती है वहां दुःख नहीं होता सो श्री कृष्णजी परब्रह्म का अवतार आप रातिदिन तुम्हारी सहायता करतेथे फिर तुमने किसवास्ते इतना कष्ट

सहा सो हे राजन् तुम इसबातको विश्वासकरके जानो कि परमेश्वरकी इच्छानुसार जिसको जैसाहोनहार है उससे पृथक् दूसरीबात नहीं होनेसक्ती दुःख व सुख पिछले जन्मोंके संस्कार से भोगनापड़ता है और परमेश्वरकी महिमा और भेदको कोई नहीं जानता कोई मनुष्य किसी कामके वास्ते परिश्रम करके अपने मनोरथको पहुँचजाता है और बहुत मनुष्य जन्मभर उद्योग और परिश्रमकरने से भी अपने अर्थको नहीं पाते इसलिये सबका उत्तम व मध्यम परमेश्वरकी इच्छापर समझना चाहिये जो वह चाहते हैं सो होताहै इसलिये बुद्धिमान् और ज्ञानी उसीको समझना चाहिये जो हर्ष व शोकको बराबर जानकर परमेश्वरकी इच्छापर आनन्द रहता है और जो कोई नारायणजीकी आज्ञा ऊपर सन्तोष न रखकर थोड़ेसे दुःखपहुंचने में रोदेता है और जब उसको रोनेसे कुछ नहीं होता तब हार मानकर कहता है कि नारायणजीकी इच्छा योंहीथी उसे महामूर्ख जानना चाहिये हे राजन् मनुष्यके चिन्ता और परिश्रम करने से कुछनहीं होकर सबकाम हरीच्छासे होते हैं जिसको होनहार कहते हैं और यह श्रीकृष्णजो साक्षात् त्रिलोकीनाथ अपना स्वरूप छिपाकर जगत् में लीलाकरते हैं इन के भेद को कोई नहीं जानता और यह अर्जुनको अपना भक्तजानकर उसके सारथी हुयेथे इनकी महिमा और बड़ाई कहांतक तुमसे वर्णनकरूं हे राजन् जो लोग परमेश्वरकी इच्छापर आनन्दसे रहकर अपना जन्म तप व जप व हरिचरणों के ध्यान में काटतेहैं उनकेनाम सुनो उनमें एक महादेव सदाकैलास पर्वतपर बैठेहुये नारायण जीके तप व ध्यानके सिवाय संसारी व्यवहारसे कुछकाम नहींरखते दूसरे नारदजी आठोंपहर मग्न व आनन्दमूर्ति रहकर जिसजगह उनका मन चाहता है वीणा बजाकर ज्योतिस्स्वरूप का भजन व गुण गावते फिरते हैं तीसरे कपिलदेवमुनि दिनरात श्रीपरब्रह्म का जप और ध्यानकरके अकेले गङ्गासागर पर बैठेरहते हैं चौथे शुकदेवजी जन्मसे संसारीमाया मोहमेंनहीं लिपटकर आठोंपहर बैकुंठनाथकी कथा गाया करते हैं पांचवें राजाबलिने जबजाना कि श्यामसुन्दरकी इच्छा योंहीं है कि मैं राजसिंहासन पर न रहूं तबसब राज्य अपना वामन भगवान्‌को अर्पण करदिया हे युधिष्ठिर तुम जानतेहो कि मैंने अपनेभाई और नातेदार और ब्राह्मणोंको मारा है सो ऐसा समझना न चाहिये तुमकौनहो तुम्हाराकिया कुछनहीं होसक्ता जो बात नारायणजीने चाहा सो किया और जब जो चाहेंगे सो करेंगे ॥

चौ० । उमा दारु योषित की नाईं । सबहिं नचावत रामगोसाईं ॥

इसलिये तुम गोत्रहत्याकी चिन्ता अपने मनसे दूरकरो व भगवान्‌की इच्छा इसीतरह समझो और यज्ञकरके अपना पाप छुड़ावो और प्रजाका पालन करना तुम्हारा धर्म है कदाचित् राज्य नहींकरोगे तो और पाप तुमको होगा इतनीकथा

सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा जिससमय भीष्मपितामह यह सब ज्ञान व धर्म राजायुधिष्ठिरको समझातेथे उससमय द्रौपदी वहां बैठीहुई भीष्मपितामह की ओर देखरहीथी जब उन्होंने सबधर्म कहतेसमय यह बातभी कहा कि जिससभामें धर्म का जाननेवाला मनुष्य बैठाहो व उसजगह दूसरा कोई अधर्मकी राह कुछपाप करनेकी इच्छाकरै तो धर्म्मात्मा मनुष्यको उचितहै कि दूसरेको पापकरनेसे बर्जिदेवे कदाचित् वह मनाकरनेकी सामर्थ्य न रखता हो तो वहांसे उठजावे और परमेश्वर का ध्यान करै यह भीष्मपितामहका वचन सुनतेही द्रौपदीने राजायुधिष्ठिर व अर्जुन की ओर देख पहिले मुसकरादिया व फिर मनमें लज्जितहोकर विचारकिया देखो राजादुर्योधनकी सभामें भीष्मपितामहके सामने अधर्मकी राह मेरी यह दुर्दशाहुई और दुश्शासनने मुझको नंगी करने वास्ते मेरा चीरखींचा राजादुर्योधनने मुझे अपनी जंघा पर बैठाने वास्ते कहा ऐसी दुर्दशा होनेपर भी मेरा प्राण नहीं निकला व मैं अपनामुख लोगों को दिखलाती हूं ऐसे जीने से मरजाती तो उत्तमथा जब यह समझकर द्रौपदी बहुत उदासहो मनमें अपनेको धिक्कार देनेलगी तब भीष्मपितामहने द्रौपदीका मुख मलीन देखतेही उसके हृदयकी बात अपने ज्ञानसे जानकर कहा हे बेटी तुमअपने मनमें कुछशोच मतकरो यहसब धिक्कार मेरेऊपरहै किसकारण कि जिससमय यहसब अधर्म तेरेऊपर हुआथा उससमय मैंभी वहां बैठाथा जोमैं दुर्योधनको इस अनीति से मनाकरना चाहता तो उसकी सामर्थ्य नहींथी जो ऐसा अधर्म तेरेऊपर करता पर उससमय मेरेमनमें यहज्ञान नहींआया इससे बेटी तुम निश्चयजानो कि श्यामसुन्दर की इच्छा इसीतरह परथी जो बात वहचाहते हैं सो होतीहै उनकी इच्छामें किसीकी बुद्धि कामनहीं करती व इसका एककारण औरहै सुनो कदाचित् कोई मनुष्य कैसाही ज्ञानी व महात्माहो अधर्मीकी संगतिकरनेसे उसका ज्ञान नष्टहोकर समयपर कामनहीं आता और जोलोग जिसका अन्नखातेहैं उसकेसमान उनकी बुद्धिहोजाती है सोहम उनदिनों राजादुर्योधन अधर्मीका अन्नखाकर उसीकेसाथ दिनरात रहतेथे इसलिये मुझे उससमय धर्म व अधर्मका विचार नहींहुआ अवहमको छप्पनदिन दानापानी छोड़े व बाणशय्यापर पड़े होचुका इसलिये मेरेतनसे राजादुर्योधनके अन्नका विकार व उसके संगका प्रभाव निकलगया तब मुझे इसबातका ज्ञानहुआ और हे बेटी इस तरहपर एक इतिहास महाभारतका कहते हैं सुनो पिछलेयुगमें राजाशिविके यहां एक परमहंस महात्मा बड़ेज्ञानवान् रहतेथे और राजा उनकीसेवा अच्छीतरह सच्ची प्रीतिसे करताथा उसराजाके नगरमें एक ब्राह्मणने अपनीबेटीका गहना सोनारको बनाने के वास्ते दिया सो उससोनारने सोना बदलकर पीतलका गहना बनाया व उसपर सोनेका मुलम्माकरके ब्राह्मणको दिया व ब्राह्मणने बिनाजांचे वह गहना सोनारसे लेकर अपनीबेटीको पहिनाया जब वहलड़की उसे पहिनकर अपनी सुख-

रालमें गई तब उसके पतिने पीतलका गहना देखकर मनमें खेदमाना और उसे अपनेघर न रखकर ब्राह्मणके स्थानपर बिदा करदिया व फिर अपनेयहां नहींबुलाया जब उस ब्राह्मणने बहुत उदासहोकर राजाकेपास नालिश किया तब राजाशिविने सोनारका अपराध सत्यजानकर सबअन्न व धन उसका लूटके अपनेस्थानमें भज वादिया सो एकदिन राजमन्दिरमें उसी अन्नकीरसोई तैयारहुई और उसमें परमहंस ने भी भोजनकिया इसलिये अधर्मीसोनारका अन्नखानेसे परमहंसने ऐसा विचार किया कि कुछ बस्तु राजाकी चोरीकरें यहबात विचारकर परमहंसने रानीका एक जड़ाऊहार बहुत उत्तम महलके भीतरसे कि उनको वहां जानेवास्ते मनहाई नहींथी चुरालिया और कपड़ेमें लपेटकर अपनेपास रखलिया व तीनदिनतक परमहंस राज-मन्दिरपर नहीं गया जब उपवास करने से सोनारकाअन्न पेटमें नहींरहा तब परम-हंसको ऐसाज्ञान उत्पन्नहुआ कि हमने हारचुरायाहै इसपापके बदले नरकभोगना पड़ेगा इसवास्ते अपने अधर्मकादंड इसीतनमें भोगकरलेना उचितहै जिसमें परलोकका डर न रहै परमहंस यहबात विचारकर वहहार राजाकेपास लेगया व अपनी चोरीकर-नेका हाल कहकर बोला हे पृथ्वीनाथ इस पापकेबदले मेरेदोनोंहाथ कटवाडालिये कि हमअपने अधर्मकादंड इसीजन्ममें भोगकरलेवैं यहवचन सुनतेही राजाने उदास होकर पंडितों से पूंछा इसका क्याकारणहै जो परमहंसका चित्त उसदिन ऐसाबदल गया कि इन्होंने हारचुराया और आप उसहारको मेरेपास लाकर ऐसीबात कहते हैं ब्राह्मणोंने अपनी विद्यासे विचारकर कहा कि महाराज जिसरोज परमहंसने चोरी किया उसदिन किसी अधर्मीका अन्नखायाहोगा सो पूंछनेसे राजाको मालूमहुआ कि उसी सोनार पापीका अन्नखाने से परमहंसकी बुद्धि बदलगईथी सो हे द्रौपदी एक दिन अधर्मीके अन्नखानेसे परमहंस महात्माका ऐसाज्ञान जातारहा कि उसने चोरी किया और मैं राजादुर्योधन अधर्म्मीका सदा अन्नखाकर उसकेसाथ रहताथा मुझे उससमय इतनाज्ञान नहींआया कि दुर्योधनको तेरेऊपर अधर्म्म करने से मनाकरता तो कौन बड़ी बात था ॥

दशवां अध्याय ॥

भीष्मपितामह को श्रीकृष्ण महाराजकी स्तुति करना और श्यामसुन्दरके ध्यानमें लवलीन होकर अपना शरीर त्यागकरना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि भीष्मपितामहने यह सबज्ञान पांडवों और द्रौपदीआदि से कहकर चतुर्भुजरूप परमेश्वरका ध्यान अपने हृदयमें रखलिया और श्रीकृष्णजी की तरफ देखकर बहुत स्तुतिकरके बोले हे ज्योतिस्स्वरूप परब्रह्म आप केवल अपनेभक्तोंकी इच्छा पूर्ण करनेके वास्ते अवतार धारण करते हैं जिस

तरह आप दयाकीराह मेरे सामने बैठे हैं उसीतरह कृपाकरके बैठेरहो जिसमें प्राण छोड़ते समय तुम्हारे चरणोंका ध्यान मेरेहृदयमें बनारहे आप सबसे पहिलेथे व महाप्रलयमें भी तुम्हारानाश न होकर आपकी मायासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनों लोकका होता है व आप उत्पन्नहोने व मरनेसे कुछ प्रयोजन न रखकर केवल पृथ्वीकाभार उतारने व अधर्म्मी व दुष्टोंको मारनेके वास्ते अपनी इच्छासे अवतार लेते हैं व तुम्हारे अवतारलेनेका यह कारणहै कि जिसमें संसारीलोग आपकी सांवलीसूरति मोहनीमूरतिका ध्यान जो सबगुणोंसे भरी है अपनेहृदयमें रक्खें व पापोंसे छूटकर भवसागरपार उतरजावैं व तुम्हारीदया व कृपा अपने भक्तोंपर इतनी है कि अर्जुन अपने भक्तके प्राणकी रक्षाकरनेवास्ते उसकेसारथीहोकर आप आगे बैठे और अर्जुनको अपनेपीछे बैठाला जिससमय मैं चोखे २ बाण अर्जुनपर चलाताथा उससमय कालभी उनबाणों के सामने होता तो भागजाता सो आपने अर्जुनकी रक्षा करके उनतीरोंसे बचाया और उनबाणोंकाघाव अपने अंगपरउठाया सो मेरेबाणों के घावसे तुम्हारी सांवलीसूरतिपर रक्तके छींटे मूंगेके समान ऐसे शोभायमान दिखलाई देतेथे जिसकीशोभा बर्णननहीं होसक्ती व आप अर्जुनको इसवास्ते धीर्य देतेजाते थे जिसमें उसकापराक्रम कम न हो और आपके चन्द्रमुखपर टेढ़े २ घूंघरवाले बाल कैसेसुन्दर माल्मदेतेथे जैसे काले २ भँवरे कमलके फूलकारस चूसते हैं व तुम्हारे मुखारविंदपर धूरउड़कर पड़ने और पसीनाहोने से कैसा माल्म देताथा जैसे फलपर ओस की बूंद रहती है और वह पसीना तुम अपने पीताम्बर से पोंछकर दाहिने हाथ कोड़ा व बायें हाथ में रास घोड़ों की लियेहुये रथ को जल्दी से मेरी तरफ दौड़ाते थे सो मैं चाहता हूं वही स्वरूप आप का मेरी आंखों में बसा रहे व तुम्हारे कमलरूपी चरण मेरे हृदय से बाहर न जावैं आप अपने भक्तों का ऐसा मान रखते हैं कि महाभारत होने के पहिले तुम ने प्रण कियाथा कि हम शस्त्र नहीं चलाकर केवल रथवानी करके शंख बजावेंगे और हमने प्रतिज्ञा की थी जो मैं भीष्मपितामह कि आपको लड़ाई में विकल करके तुम्हारा प्रण छुड़ाकर तुमसे अस्त्र धराऊं सो आपने भक्तपक्ष की राहसे विचारा कि मेरा प्रण छूटजावे तो सन्देह नहीं पर मेरे भक्तकी प्रतिज्ञा न छूटै यह समझकर जब मैंने अर्जुनके रथका पहिया तोड़कर घोड़ोंको मारडाला और उसके रथकी ध्वजा व धनुष काटके गिरादिया तब आप क्रोध करके उसी रथका टूटा हुआ पहिया उठाकर मेरे मारनेके वास्ते दौड़े उस समय तुम कैसे सुन्दर माल्म देतेथे जैसे श्यामघटा बिजुली के साथ बड़े धूमधामसे चढ़े दौड़ते समय तुम्हारा पीताम्बर जो ओढ़े थे पृथ्वीपर गिरपड़ा उसके गिरने का यह कारण है जब आपने प्रतिज्ञा छोड़कर शस्त्र धरा तब पृथ्वी यह समझकर मारेडरके कांपने लगी कि श्यामसुन्दर ने मेरा भार उतारने के वास्ते

अवतार लियाहै कहीं वहभी अपना प्रण न छोड़देवैं पृथ्वीके हृदयकी बात तुमने जानकर उसको धीर्यदेनेके वास्ते अपना पीताम्बर गिरादिया कि तू मतडर अपने भक्तोंका प्रण रखनेके वास्ते मैंने अपनी प्रतिज्ञा छोड़ी है तेरा भार हम उतारेंगे जिसतरह कोई मनुष्य अपनी वस्तु दूसरेके बोध करने वास्ते गिरा धरदेताहै उसी तरह तुमने अपना पीताम्बर गिराकर पृथ्वीको धीर्यदिया और जब मैं चाहताथा कि सब सेना पाण्डवों की मारकर हटादूं तब तुम मेरेरथके चारों तरफ आनकर अपने अनेक रूप दिखलातेथे जिसमें मेराचित्त घबड़ाजावे जब मैं अनेकरूप देखने से विकल होकर यह नहीं समझताथा कि इसमें कौनरूप सत्य और कौनस्वरूप माया का है तब फिर तुम अपने निजरूपसे रहिकर मेरी बहुत प्रशंसा करतेथे जब मैं उन बातोंको समझताहूं तब मुझे बड़ी लज्जा आती है और अपनेको अपराधी समझकर आपके सामने अपना मुंह नहीं दिखलाने सक्ता आप दयालु अपने भक्तों को ज्ञान देकर उनका मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं इसलिये तुमने मुझे जो मरने के निकट पहुँचाथा बिना बुलाये आनकर अपना दर्शन दिया नहीं तो मरतीसमय बड़े २ मुनि और ऋषीश्वर और ज्ञानियोंको ध्यानमें भी तुम्हारा दर्शन जल्दी नहीं मिलता किसवास्ते कि अन्तसमय मनुष्य को इतना दुःख होताहै जितना कष्ट साठ हज़ार बिच्छूके डंक मारने से एकबार होता है इसलिये उससमय पीड़ासे मनुष्य अचेत होकर उसका चित्त ठिकाने नहीं रहता उससमय तुम्हारी कृपा होनेसे जिस का ज्ञान बनारहता है वह आदमी तुम्हारे चरणों का ध्यान हृदयमें रखकर भवसागर पार उतरजाता है इसलिये मैं तुमसे यही चाहताहूं कि यह स्वरूप आप का मेरी आंखों के भीतर बसकर तुम्हारे चरणों में मेरा मन लगारहै यह स्तुति करने उपरान्त भीष्मपितामहने ध्यान ज्योतिस्स्वरूप का हृदयमें रखकर श्यामसुन्दर और सब ऋषीश्वर और मुनीश्वरों को दण्डवत् करके अपनी आंख बन्द करलिया और योगाभ्यास के साथ अपना तन छोड़कर बैकुंठबास पाया उससमय देवतोंने आकाश से उनपर फूलोंकी बर्षा किया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिरका राजगद्दीपर बैठना और भीष्मपितामहका क्रियाकर्म करना और परीक्षितके मारनेवास्ते अश्वत्थामाका ब्रह्मास्त्रचलाना जो उत्तरा नाम अभिमन्यु की स्त्रीके पेटमें था व श्यामसुन्दर का परीक्षित की रक्षा करना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा कि भीष्मपितामह के मरनेका शोच श्रीकृष्णजी व पाण्डवों ने बहुतसा किया फिर मुरलीमनोहरने राजायुधिष्ठिरको समझाया कि जिसतरह की मृत्यु संसार में भीष्मपितामहने पाई इसतरह की मृत्यु दूसरे

को पाना बहुत दुर्लभहै संसारमें जिसने तन धारण किया वह एकदिन अवश्यमरेगा इसवास्ते इनके मरने का शोक छोड़कर हर्ष मानना चाहिये जो कोई मनुष्यका तनपाकर संसारीमाया मोहमें फँसारहे व परमेश्वर से विमुखरहिकर जन्म अपना वृथा गँवावै उसके वास्ते रोना उचितहै सो भीष्मपितामह संसारमें भक्तिपूर्वक व धर्म्मसयुक्त रहिकर शरीर त्यागने उपरांत बैकुंठको गये इसलिये इनके मरने का शोक करना न चाहिये यह बचन सुनकर राजायुधिष्ठिरने अपने मनको धीर्य्यदिया व श्यामसुन्दरकी आज्ञासे भीष्मपितामह की क्रिया और कर्म्म किया जब मुरलीमनोहर व ऋषीश्वर और मुनीश्वरों ने राजायुधिष्ठिर को हस्तिनापुर में लाकर राजगद्दी पर बैठाला तब श्रीकृष्णजी महाभारत होने व पृथ्वी का भार उतारनेसे बहुत प्रसन्नहोकर बोले हे राजन् तुम प्रजाका पालन करके कुलपरिवार समेत राज्यका सुखभोगो और जो कुछ तुम्हारे मनमें शोचहै उसको छोड़दो यह बात मुरलीमनोहरने राजा को समुझाकर उनसे अश्वमेधयज्ञ कराया व कुछदिन वहां रहिकर राजायुधिष्ठिर से कहा अब हम द्वारकापुरी को जावैंगे जिससमय श्यामसुन्दर द्वारका जाने की इच्छा रखते थे उसीसमय अश्वत्थामाने शिरमूड़ने और मणि निकाललेने की लज्जासे ब्रह्मास्त्र राजायुधिष्ठिर आदि पांचों भाइयोंके जलाने वास्ते चलाया जब वह अस्त्र अपनी पाच मुंह बनाकर पांडवोंकी तरफ आया व एक छोटासा अंगारा उस अस्त्रका उत्तरा के पेटमें जो गर्भवती थी घुसगया व उसके उदर में आग जलने लगी तब वह उस जलने से व्याकुल होकर नंगेशिर दौड़ीहुई कुन्ती के पास चलीगई जब कुन्ती ने उसको अपने साथ श्यामसुन्दर के पास लेजाकर उसके पेट में आग जलने का हाल कहा तब श्री दुःखभंजन ने सुदर्शन चक्रको आज्ञादी कि तुम उत्तरा के पेटमें जाकर ब्रह्मास्त्रकी गर्मी से रक्षाकरो और आप भी श्रीकृष्ण जी अंगुष्ठ प्रमाण अपना रूप धरकर उत्तरा के पेटमें चलेगये और गदा हाथमें लेकर वहां घुमानेलगे उससमय परीक्षित ने सांवली सूरति मोहनी मूरतिका दर्शन पानेसे चैतन्य होकर उनको दूसरा बालक अपनी माता के पेटमें समझा जब अश्वत्थामा का ब्रह्मास्त्र जो युधिष्ठिर आदिकके जलाने वास्ते पांच मुंह बनाकर गयाथा श्यामसुन्दर की भक्ति रखने व सुदर्शनचक्र के रक्षाकरनेसे उन पांचों भाइयोंको जलानेकी सामर्थ्य न रख कर फिर आया तब अश्वत्थामा ने उस अग्निको मंत्रके बलसे बुझादिया व उत्तरा राजा विराट्कीबेटी अपनी जातिके अभिमानसे गुरुमुख भी न होकर हरिचरणों में अच्छी तरह विश्वास व प्रेम नहीं रखती थी इसलिये एक अंगारा ब्रह्मास्त्रका उसके पेटमें चलागयाथा सो कुन्तीके कहने से श्यामसुन्दर ने उसकी भी रक्षाकिया जब बैकुण्ठनाथ द्वारका जानेलगे तब कुन्ती व द्रौपदी व राजा युधिष्ठिर व अर्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेवने उनके सामने हाथ जोड़कर कहा हे दीनानाथ तुम्हारे

जानेसे हमलोगोंको बड़ा दुःख मालूम होता है अब हमारी रक्षा यहां कौन करेगा जितना सुख हमको तुम्हारे चरणों के दर्शन पानेसे मिलताथा उतना आनन्द इस राजगद्दी मिलने से नहीं है तुम्हारे चरण देखे बिना हमलोगोंको धैर्य्य किसतरह होगा और कुन्ती हाथजोड़कर बोली हे महाप्रभु अबतक मैं तुमको अपने भाईका बेटा समझकर तुम्हारी महिमा नहीं जानतीथी अब मुझे विश्वासहुआ कि आप परब्रह्म परमेश्वरका अवतार होकर संसारी जीवों की उत्पत्ति व पालन व नाशकरते हैं और मेरेबेटोंने महाभारतमें तुम्हारी कृपासे विजयपायी है और आप सब ऋषीश्वर और मुनि अपने भक्तोंका दर्शनदेने और भवसागर पार उतारने और धर्मकी रक्षा करने के वास्ते सगुणरूप धरते हैं नहीं तो तुमको क्या प्रयोजनथा जो सब जीवों के मालिक होकर मत्स्य और शूकरादिकका अवतारलेते तुमने बसुदेव व देवकी के घर जन्म लेकर उनको एकबेर कैद से छुड़ाया मुझे और मेरे बेटोंपर जबजब कष्टपड़ा तबतब तुमने दयाकीराह आनकर हमलोगोंका दुःख दूरकिया अबमैं ऐसा जानतीहूं कि तुम हमलोगोंको राज्यदेकर जातेहो इसलिये हमारी सुधि भूलिजावोगे सो मुझे राज्यकी इच्छा न होकर फिर उसीतरह विपत्ति व बनबास चाहिये जिसमें तुम्हारा दर्शन सदाहोताथा यह सुख व राज्य किसकामकाहै जहां तुम्हारा दर्शन न मिलै धनपानेसे अभिमान अधिक होकर तुम्हारा भजननहीं बनिपड़ता इसलिये तुम दीन पर अधिक दयालुहोतेहो मनुष्यकेवास्ते वह बात अच्छी होती है जिसमें परमेश्वरका ध्यान बनारहै राज्य व द्रव्यपानेसे मनुष्य संसारीसुखमें भूलकर परमेश्वरकाप्रेम छोड़ देताहै और आप सबके मालिक और ईश्वरहोकर किसीकाडर नहीं रखते सूर्य और चन्द्रमा तुम्हारी आज्ञासे दिनरात्रि फिराकरते हैं और अपने भक्तोंपर तुम ऐसी कृपा और दयाकरतेहो कि यशोदापर दयालुहोकर तुम अपनी इच्छासे ऊखलमें बँधिगये नहीं तो तीनोंलोकमें कौन ऐसाहै जो तुम्हारी तरफ आंख उठाकर देखसकै जहां कालादिक तुमसे डरकर कांपते हैं वहांतुम यशोदाको छड़ी से डरतेथे यह सब लीला आपने अपने भक्तों के सुख देनेवास्ते संसारमें कियाहै अब मैं यह चाहतीहूं कि बेटा व भाई आदि सब परिवारकी प्रीति मेरेमनसे छूटिकर आठोंपहर तुम्हारे चरणों का ध्यान हृदयमें बनारहै जिसके प्रभावसे भवसागर पार उतरजाऊं जब यह बात कहकर कुन्ती श्यामसुंदर के जाने का शोचकरके अति बिलापसे रोनेलगी तब मुरलीमनोहर अपनी माया फैलाने के उपरांत मुसकराकर बोले हम तुमको नहीं भु· लावेंगे तुम हमारी माताकी जगहहो हमको द्वारकासेआये बहुतदिनहुये अब वहां जाकर सब किसीको देखेंगे सात्विकी व ऊधो हमारेसाथी चलनेकेवास्ते जल्दीकरते हैं यह बचन सुनके राजा युधिष्ठिरने अर्जुनसेकहा हे भाई तुम अपनी सेना व शूरबीर साथलेकर श्यामसुंदरको बड़े यत्नसे द्वारकामें पहुंचायदो किसवास्ते कि मेरे शत्रु बहुत

है और मुरलीमनोहर महाभारत की लड़ाई में हमारे सहायकथे ऐसानहो जो कोई हमारा शत्रु राहमें उपाधिकरै जब अर्जुन राजा युधिष्ठिरकी आज्ञापाकर श्रीकृष्णजी के साथ द्वारका जानेवास्ते तैयारहुये और श्यामसुन्दर सब किसीसे बिदाहोके रथपर बैठकरचले तब राजायुधिष्ठिर आदि सब हस्तिनापुरबासी त्रिभुवनपतिके स्नेहमें बिलापकरतेहुये उनके पीछे दौड़े व सब स्त्रियां वहांकी रुदनकरके आपसमें कहने लगीं कि देखो धन्यभाग्य व्रजकीअहीरिनियों के हैं जो श्यामसुन्दर त्रिभुवनपतिके साथ रासलीलाकरके अपनाजन्म सुफलकरतीथीं और बड़ेभाग्य रुक्मिणीआदि सोलहहज़ार एकसौ आठस्त्रियोंके समझनाचाहिये जो ऐसा सुन्दर मोहनी मूर्त्ति स्वामीपाकर उनके साथ भोग और विलासकरती हैं ऐसी ऐसी बातें एकदूसरी से कहकर श्यामसुन्दरपर फूल बर्षावतीथीं व केशवमूर्त्ति उनकी बातें सुनके व सच्चाप्रेम देखकर अपनी तिरछी चितवनसे उनको देखते व सुखदेतेहुये चलेजातेथे उसदिन श्रीकृष्णजीके बियोगका दुःख जितना हस्तिनापुरबासियों को हुआ उसकाहाल बर्णन नहीं होसक्ता जब श्री दीनानाथने देखा कि यह सब मेरे प्रेममें दूरतक चलेआये तब अपनारथ खड़ाकरके सब किसीको धीर्य्यदेकर बिदाकिया तब वह लोग पछतातेहुये हस्तिनापुर फिरगये ॥

बारहवां अध्याय ॥

पहुंचना श्रीकृष्णमहाराजका द्वारकापुरीमें व हर्ष मनावना सब द्वारकाबासियोंका ॥

सूतजीनेकहा जब सब कोई हस्तिनापुर फिरगये तब श्यामसुन्दर अर्जुनसे बोले कि रथको जल्दीचलाओ यह बचनसुनकर अर्ज्जुनने रथहांका जबसेना मोहनीमूर्त्ति की विदर्भदेश व कुंडिनपुर व कुन्तीदेश व पंजाब व कश्मीरकी राहसे होतीहुई चली तब राहमें सबदेशकेराजों ने आनकर अपने अपने देशकी सौगाति वृंदावनबिहारीको भेटदिया व उनका दर्शनकरके अपना जन्म सुफलजाना व राहवाले श्यामसुन्दरका दर्शनपाकर इसतरह उनकी स्तुतिकरतेथे कि देखो इन्हीं परब्रह्म परमेश्वरने पृथ्वी के भार उतारनेवास्ते संसारमें जन्मलियाहै जिनकादर्शन ब्रह्मा व महादेव आदि देवताओं को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता उनकादर्शन हमलोगोंको बड़ेभाग्यसे प्राप्तहुआ और इन्हों ने कौरव व पांडवों से महाभारतकराके पृथ्वीकाभार उतारा व अनेक मनुष्य कहतेथे धन्यभाग्य यदुबंशियोंके हैं जो इनको अपना नातेदार समझकर दिनरात्रि इन की सेवामें रहते हैं इसीतरह सबछोटेबड़े उनकीमहिमा व लीलाकहिकर प्रसन्नहोतेथे जब तीसरेदिन द्वारकापुरीके निकटपहुंचकर पाञ्चजन्यशंख अपनाबजाया तबसबद्वारकाबासी मुरलीमनोहरके आनेका हालजानकर बहुत आनन्द होगये श्रीकृष्णजी सांब अपने पुत्र व अनिरुद्ध पौत्रको द्वारकापुरीकी रक्षा करने के वास्ते छोड़गयेथे यह दोनों शंखध्वनि सुनतेही अपनी सेना व यदुबंशी व ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को साथ लेकर गावते व

बजावते मुरलीमनोहरको आगेसे लेनेके वास्ते गये व नगर में ढिंढोरा पिटवादिया कि सब कोई गली व सड़क व अपने २ द्वारेपर मंगलाचारकरैं सो सब द्वारकाबासियोंने नगरमें चन्दनादिक सुगन्धउड़नेके वास्ते छिड़कवादिया व अपने २ द्वारपर सब स्त्रियां अच्छा २ गहना व कपड़ा पहिनकर आरती लेकर वृन्दावन बिहारीके पूजा करनेवास्ते खड़ीहोगईं व अनेक स्त्रियां सोलहों शृंगार करने उपरांत अपने २ खिड़की व कोठोंपर बैठ व खड़ीहोकर बांकेबिहारीकी छबिदेखनेके वास्ते इच्छाकरनेलगीं जिससमय वह सांवली सूरति मोहनी मूरति बड़ी तय्यारी से द्वारकापुरी में आये उस समय सब छोटेबड़ोंने उनका दर्शन पाकर फूलोंकी बर्षाकिया व जिसतरह मुर्देके तनमें प्राण आजावें उसीतरह सबोंने नयाजन्मपाकर हर्ष मनाया और मुरलीमनोहरने मिलती समय बड़ोंको दंडवत् व बराबरवालोंसे गले मिलकर छोटोंको आशिष दिया व प्रजालोगोंकी भेंट हाथसे छूकर उनका सन्मान किया और अपने मन्दिरमें जाकर माता व पिताके चरणोंपर शिर रक्खा बसुदेव व देवकी व राजा उग्रसेन पांडवोंकी विजयहोना सुनकर बहुत प्रसन्नहुये और सब द्वारका बासियोंने दीनानाथसे कहा महाराज हमलोग तुम्हारे देखे बिना अन्धेहोरहेथे जिसतरह अंधियारी रातिमें बिना चन्द्रमा आंख होनेसे भी कुछ दिखलाई नहीं पड़ता और आंखवाला चन्द्रमाको याद करताहै वही हाल हमाराथा व द्वारकाबासी स्त्रियां श्यामसुन्दरको देखकर इसतरह प्रसन्न हुईं जिसतरह चकोर चन्द्रमाके देखनेसे आनन्द होजाता है और जब श्यामसुन्दर महलों में पहुंचे तब रुक्मिणी आदि सब स्त्रियोंने अपने २ महलमें खड़ीहोकर उनका बड़ा सन्मान किया और उन्होंने जो नन्दलालजीके पीछे अच्छागहना और कपड़ा नहीं पहिनतीथीं उसदिन प्रसन्नहोकर अपना २ शृंगार किया और एकसाइतमें श्याम सुन्दर अपना अनेक रूपधारणकरके सब महलोंमें गये और सब छोटे बड़े द्वारकाबासियों को सुखदिया ॥

तेरहवां अध्याय ॥

परीक्षित का जन्मलेना और राजायुधिष्ठिर का हर्षमानना व धृतराष्ट्र और गान्धारीका जंगलमें जाना व कथा भाण्डव्यऋषीश्वरकी ॥

सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो दूसरे शास्त्र व पुराण सुननेसे बहुत दिनमें परमेश्वर की भक्ति उत्पन्न होती है और जब भागवत कथा सुननेकी कोई इच्छाकरै उसीसमय उसके पापोंका तीन टुकड़ा होकर एकभाग सुननेकी इच्छाकरते व दूसरा जाते समय व तीसरा श्रवणकरने से छूटजाता है व दूसरे धर्म यज्ञ ब्रतादिक सम्पूर्ण होनेसे उसके फल मिलते हैं और भागवत जितना सुनै उतना फलपावै सो राजायुधिष्ठिरको हस्तिनापुरकी राजगद्दी होने पर भी श्यामसुन्दर के दर्शनपावने बिना कुछ अच्छा नहीं

लगताथा दिनरात उन्हींके चरणोंका ध्यान अपने हृदय में रखकर राजकाज करतेथे सो तुमलोग अब परीक्षितके जन्म लेनेका हाल सुनो जब परीक्षित उत्तराके पेटसे उत्पन्नहुआ तब आंख खोलकर चारोंतरफ इसइच्छासे ताकनेलगा कि जो स्वरूपमैंने माताके उदरमें देखाथा वह कहां है परन्तु इसभेदको किसीने नहीं जाना और राजा युधिष्ठिरने बड़े उत्साहसे नान्दीमुख श्राद्धक्रिया व मंगलाचार मनाकर ब्राह्मण व याचकों को मुंह मांगा दान व दक्षिणादिया जब ज्योतिषी पंडितोंको बुलाकर जन्म लग्नका हाल पूंछा तब पंडितोंने बिचारकर कहा यह बालक जन्मलेतेही आंखखोल कर सबकी परीक्षा लेताथा इसलिये परीक्षित नामरक्खो यहलड़का बड़ाप्रतापी व बलवान् और नीतिमान् और धर्मात्मा राजाहोगा प्रजालोग इससे बड़ा सुखपावैंगे औ तुम्हारानाम औ कीर्त्ति व यश इसबालक से चारों दिशामें अधिक फैलेगा व बुद्धिमें बृहस्पति व धीर्यमें हिमाचल और गम्भीरतामें समुद्र शूरतामें परशुराम व दातामें महादेव व सुख बिलास करने में इन्द्र व सत्य बोलनेवालोंमें तुम्हारे समान यह लड़का होकर राजऋषिमें इसकी गिनतीहोगी व अधर्मी व पापी व कलियुगको दण्डदेकर प्रजा का पुत्रकी तरह पालनकरैगा व अन्तसमय जब एकबालक ऋषीश्वरका इसे शाप देगा तब तक्षक सर्पके काटने से इस बालक की मृत्यु गंगाकिनारे होगी यह बात सुनकर राजाने उदास होके ज्योतिषियों से पूछा तुम सत्य बतलाओ किसी ब्राह्मणके क्रोधसे तौ नहीं मरैगा सांप काटनेसे मरना हमारे कुलमें अच्छा होताहै ऐसा न हो जो किसी महात्मा व ब्राह्मण व साधु व संतके शाप व क्रोधसे मरे ज्योतिषियोंने कहा हे युधिष्ठिर यह लड़का तुम्हारे कुलमें हरिभक्त होकर साधु व ब्राह्मण व महात्माओंकी सेवामें रहेगा व मरती समय श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यान हृदयमें रखकर तन त्याग करैगा ऐसा प्रतापी व परमेश्वरका भक्त आजतक तुम्हारे कुलमें दूसरा कोई नहीं हुआ है तुमको विपत्ति पड़नेसे परमेश्वरकी भक्तिहुईथी और इसको लड़कपनसे हरिचरणों में भक्ति व प्रीति रहेगी यहबात सुनतेही युधिष्ठिर आदिक बहुत प्रसन्नहुये व ज्योतिषियोंको दक्षिणा देकर बिदाकिया और आपसमें उन्होंने कहा पांचभाई में परमेश्वरने यह लड़का भाग्यमान दिया है इससे हमारानाम संसारमें स्थिर रहेगा यहबात समझकर सब छोटे बड़े आनन्दहुये व राजा युधिष्ठिर राजगद्दी और प्रजापालनका काम अच्छीतरह नीति और धर्मके साथ करनेलगे पर मनमें संसारी मायामोहसे वह बिरक्त रहकर दिनरात यही इच्छारखतेथे कि परीक्षित सयानाहोजावै तो उसको राजगद्दी पर बैठालकर बनमें चलेजायँ और परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके अपना परलोक बनावैं व धृतराष्ट्र अपने चाचा व गान्धारी चाचीको जिनके पुत्र महाभारत में मारेगये थे आदरपूर्वक रखकर उनकी आज्ञानुसार राजकाज करतेथे व उन्हें दिन रात्रि इसबातका ध्यान बनारहताथा कि किसीतरह दुःख धृतराष्ट्र और गान्धारी

को न होवै दुःखपाने से उनको दुर्योधनआदि अपने पुत्रोंके मारेजाने का बड़ा शोचहोगा व धृतराष्ट्रने सेवाकरना व आज्ञा मानना राजा युधिष्ठिरका देखकरकहा हे राजन् मैं मनसे कभी यहबात नहीं चाहताथा कि तुम्हारेसाथ शत्रुताकरूं पर न मालूम कौन मेरी बुद्धि फेरदेताथा यहबचनसुनकर राजायुधिष्ठिर बोले हे चाचा दिनभर लड़ाई करके जब सन्ध्याको मैं डेरेपर आताथा उससमय यह बिचार करताथा कि चारदिन के जीवनकेवास्ते अपने भाईबन्धुको मारना उचित नहीं है काल्हिसे महाभारत बन्द करूंगा जब प्रातसमय सोकर उठताथा तब फिर लड़ाई की तय्यारीकरके युद्ध करता था इसलिये समझनाचाहिये कि सबके भाग्य में इसीतरह मृत्यु लिखीथी हरिइच्छामें कोई युक्तिनहीं लगती जो ईश्वरने चाहा सो किया ऐसी बातें कहकर राजायुधिष्ठिर धृतराष्ट्र व गान्धारीका बोधकरतेथे और राजायुधिष्ठिरके राज्यमें ऐसाधर्मथा कि श्याम-सुन्दरकी दयासे प्रजाकी इच्छानुसार पानी बर्षकर बिनाकाल फूल व फल वृक्षों में लगे रहतेथे व सब छोटे बड़े आनन्द से रहकर बाघ व बकरी एकघाट पानी पीतेथे जब उन्हीं दिनों में बिदुरजी एक बर्षके उपरान्त तीर्थयात्राकरतेहुये यमुना किनारे मैत्रेय ऋषीश्वर के स्थानपर आये तब उन्हों ने ऋषीश्वरसे मारेजाने का हाल दुर्य्योधन आदि कौरवों व युधिष्ठिरका राजगद्दीपर बैठना सुनकर बड़ा शोच किया और यहभी बिदुरजीको वहां मालूमहुआ कि राजायुधिष्ठिर धृतराष्ट्र व गान्धारी को अपने स्थानमें सुख व सन्मानसे रखते हैं यह समाचार सुनकर बिदुरने चित्तमें बड़ाखेद करके कहा देखो बड़े आश्चर्य की बातहै कि धृतराष्ट्रकामन ऐसी बिपत्तिपड़ने व राज्यछूटने व सौबेटोंके मारेजानेमें भी अभीतक संसारी मायासे बिरक्त नहीं हुआ व राजायुधिष्ठिर के यहां रहनेके वास्ते चाहताहै इसलिये हम धृतराष्ट्रको संसारी मोह छुड़ानेकी राह दिखलादेवैं तो इसमें उनका भलाहोगा जब ऐसा बिचारकर बिदुरजीने परमेश्वरकी इच्छाके ऊपर सन्तोष किया व हस्तिनापुरमें राजमंदिर परगये तब राजा युधिष्ठिरने बहुत आदर व सन्मानकरके हाथ जोड़कर उनसेकहा कि तुमने हमारे कुलमें श्याम-सुन्दरके भक्त उत्पन्नहोकर बड़ी कृपासे अपनादर्शन हमकोदिया व अपने चरणों से कि तुम्हारे हृदयमें आठोंपहर परमेश्वरका बास रहताहै हमाराघर पवित्र किया है बिदुरजी तुमने हम पांचो भाइयोंको लड़कों के समान पालनकरिकै बड़ेदुःखमें हमारी सहायताकियाहै जिससमय दुर्योधनआदि कौरवोंने हमलोगोंको लाहके कोटमें रखकर चाहाथा कि जलाकरमारडालैं उससमय तुमने दयाकीराह पहिलेसे वहां सुरंग खुद-वाकर हमारा प्राणबचाया बहुत अच्छाहुआ जो आपआये कहिये कौन कौन तीर्थों परगयेथे प्रभासक्षेत्रमें भी गयेहो तो कुछहाल श्यामसुन्दरका बतलाओ जबसे मुझको राज्यदेकरगये हैं तबसे उनका कुछ समाचार नहींपाया बिदुरजीने दूसरे तीर्थोंका हाल बर्णनकिया परसब यदुवंशियों का माराजाना व श्रीकृष्णजी के अन्तर्द्धान होने का

समाचार इसलिये नहींकहा कि अर्जुन आनकर सबहाल कहेगा कदाचित् मैं कहताहूं तो राजा युधिष्ठिरको बड़ादुःखहोगा अच्छेलोग यहकहगये हैं कि ऐसीबात किसीकेसामने न कहनाचाहिये जिसके सुननेसे मन उसका दुःखितहो जब महलमें स्त्रियोंने बिदुरके आनेका हालसुना तब द्रौपदी आदिने बिदुरको परमेश्वरका भक्तजानकर दंडवत्किया व सब हस्तिनापुरबासी उनके आनेसे प्रसन्नहोगये जब बिदुरजीने वहांसे धृतराष्ट्र के द्वारपरजाकर उन्हें व गांधारीको दंडवत्किया तब धृतराष्ट्रने बिदुरसे गले मिलने के उपरांत रोकर कहा हे भाई तुम्हारेजानेके पीछे मेरेऊपर बड़ादुःख पड़ा व हमारे सब बेटे मारेजाकर राजगद्दी नष्टहुई यहबात सुनकर बिदुरजी बोले हे भाई मुरलीमनोहर की इच्छा इसीतरहपरथी उन्हों ने पृथ्वीका भार उतारनेके वास्ते अवतार धारणकिया था अब कहो राजायुधिष्ठिर तुम्हारी प्रीति व खाने पहिरने का सत्कार किसतरहपर करते हैं धृतराष्ट्रने कहा राजायुधिष्ठिर मुझसे बड़ा प्रेमरखकर हमें अपने बाप और गान्धारीको माताकी जगह जानते हैं व अर्जुन भी हमारा बहुत आदर करताहै पर भीमसेन राजायुधिष्ठिरके पीछे मुझे दुर्वचनसुनाकर यह कहताहै कि जब दुर्योधन तुम्हारा बेटा राजगद्दीपर वर्त्तमानथा तब तुमने बिषमिलाकर लड्डू मेरेखानेको भेजा व पांचोभाईको लाहके कोटमें रखकर हमारे जलानेकेवास्ते अग्नि लगवादिया अब तुम अपनापालन हमसे चाहतेहो तुम्हारे बराबर दूसराकोईपापी और अधर्मी जगत्में न होगा यहवचन भीमसेनका मुझसे सहानहींजाता और यहबातैंकहकर फिर मुझे धमकीदेताहै कि राजायुधिष्ठिरसे मेरी चुगलीखाओगे तो खानेबिना तुमको मारडालूंगा यह हाल सुनकर बिदुरजीने बड़ाखेदकरके मनमें कहा देखो परमेश्वरकीमाया ऐसी प्रबलहै कि इतनीदुर्दशा होनेपरभी धृतराष्ट्र व गांधारी घरकोनहींछोड़ते जिसतरह लालचीमनुष्य पुरानेकपड़ोंको त्यागनहींकरता और वहचिथड़ा उसकेपास सदा नहीं रहकर एकदिन नष्टहोजाताहै उसीतरह यहतन इनका सदा स्थिरनहींरहेगा बुढ़ाईहोने परभी इनको अपनेतनकी प्रीतिनहींछूटती इसलिये इनको ज्ञानसिखलाकर संसारीमाया से बिरक्तकरदेना चाहिये जिसमें इनकीमुक्तिहो यहबात बिचारकर बिदुरजीने धृतराष्ट्र से कहा सुनोभाई यहबात भीमसेनकी सत्यजानकर अब तुमको राजायुधिष्ठिरके घरमें किसीतरह रहनाउचितनहीं है तुमने अपनेराज्यभोगनेके समय अधर्मसे कैसाकैसा दुःख भीमसेनको दियाथा व दुर्योधन तुम्हारेबेटाने मध्यसभामें द्रौपदी उसकीस्त्रीको चीर खिंचवाकर नंगी करनेचाहा व भीमसेनको बिषदेकर पांचोभाई पांडवोंको लाह के कोटमें रखिकै आगिलगवादिया व सबराज्य व धन उनका छलसेजुयेमें जीतकर तेरहवर्ष बनबासदिया यहबाततुमको यादहोगी अब तुम उन्हींकेहाथसे इसशरीरको जो सदास्थिर नहींरहेगा पालतेहो व तुम्हारा जन्मभर सन्तान व संसारीमायामोह में बीत कर अब तुमबूढ़ेहुये और सबपुत्र तुम्हारेमारेगये तिसपर तुम राजायुधिष्ठिरके घरमें

रहकरकहतेहो कि राजा हमको अच्छीतरह रखते हैं व इतनादुःख उठानेपरभी तुम्हारा मन बिरक्तनहींहोता हे भाई हमने सुनाथा कि परमेश्वरकीमाया बड़ीप्रबलहै सोतुमको अपनीआंखसे देखा कि सबबेटे व पोतेतुम्हारे मारेजाकर राजगद्दी जातीरही व तुमभी मरनेकेनिकट पहुंचे और जिसभीमसेनने तुम्हारेबेटोंको मारा उसीके हाथसे रोटी लेकर खाते हो तुमको लज्जा नहीं आती तुम्हारे ऐसे खाने और जीने पर धिक्कार है जिसतरह कुत्ता लाठीमारनेसे भागकर टुकड़ा रोटीका देनेसे फिर उसको खालेताहै उसीतरह तुम्हारीभी गति समझना चाहिये हे भाई बुढ़ाई आनेपर भी तुमको अपने जीनेकी आशा बनी रहकर तुम्हारा मन संसार से बिरक्त नहींहोता व तुमसदा अमर न रहोगे इसलिये तुमको यहांसे उत्तराखंड में चलना उचित है वहां हरिचरणों में ध्यान लगाकर अपना शरीर त्यागकरो जिसमें तुम्हारी मुक्तिबने संसार में तुम्हारी यहगतिहुई अब अपने परलोककोभी क्यों बिगाड़तेहो यह वचन सुनकर धृतराष्ट्रने कहा हे भाई तुम सत्य कहतेहो हमारे मनमें भी इसी बातकी इच्छाहै पर हम स्त्री पुरुष दोनों मनुष्य आंखों से अन्धे लाचार हैं किस तरह उत्तराखण्ड को जावैं तब बिदुरजी बोले हम दोनों मनुष्योंको अपना हाथ पकड़ाकर अच्छी तरह ले-चलैंगे तुम हमारे बड़े भाईहो तुम्हारी सेवा हमको करना उचितहै जबतक तुम जीवोगे तबतक मैं साथरहकर तुम्हारी टहल अच्छीतरह करूंगा यह वचन बिदुरका धृतराष्ट्र व गान्धारी मानकर दोनों मनुष्य आधीरातको बिदुरजीके साथ राजायुधिष्ठिरसे बिना कहे उत्तराखण्डको हरद्वारकी तरफ चलेगये आगे आगे बिदुरजी धृतराष्ट्रका हाथपकड़े और गान्धारी अपने पतिकाहाथ धरेहुये चलीगई जब प्रातसमय राजायुधिष्ठिर स्नान और नित्य नियम करके माता व पिताको दण्डवत् करनेके वास्ते उनके स्थानपरगये तब मकान सूनापाकर बड़ाशोच करके मनमें बिचार किया कि वह लोग अपने बेटों के शोकमें या मुझसे दुःखित होकर न मालूम कहांचलेगये या मेरा कुछ अपराध समझ कर गंगामें डूबमरे जब राजायुधिष्ठिर यहबात कहकर रोनेलगे व संजयसे जो वहांपर था पूछा कि हमारेमाता व पिता आंखोंके अन्धे जिन्होंने मुझे बड़ेप्रेमसे पालाथा कहां चलेगये तुम उनकाहाल कुछ जानतेहो संजयने कहा मैं यह नहीं जानता वह कहांको गये पर बिदुरजी उनसे कुछ बातें करतेथे उन्हीं के साथ वहगये हैं यह बात सुनकर राजायुधिष्ठिर राजसिंहासनपर आके बड़ीउदासीमें बैठेथे कि उसी समय नारदजी वहां आये राजाने उनको दण्डवत् करके बड़े आदरसे बैठालकर पूछा महाराज हमारे माता व पिता न जाने कहांचलेगये कोई बनकापशु उनकोखाजायगा या कहीं कुयेंमें गिर करमरजायँगे उनकाहाल आपकोकुछमालूमहोतो बतलादीजिये हमजाकर प्रार्थनाकरके उनकोफेरलावें वहखानेपीने बिनादुःखपातेहोंगे आपनेबड़ी कृपाकिया जोइसमहाकष्टमें हमारेपासआये नारदमुनि यहबातसुनकरबोले हे राजन् यहमायारूपी संसारझूंठाहोकर

का अवतारलेकर जगत्‌मेंथे तबतक सूर्य्यदेवताने धर्मराजकाकाम उनकेबदलेकियाथा इसीकारण बिदुरको परमेश्वरकी भक्तिबनीथी ॥

चौदहवां अध्याय ॥

अर्जुनका द्वारकासे पहुँचना और युधिष्ठिर करके श्यामसुन्दरका हाल पूछना ॥

सूतजीने कहा हे ऋषीश्वर नारदमुनिके कहिजानेसे सातदिनबीते धृतराष्ट्र व गान्धारीने अपनातन त्यागकिया व बिदुरजी उनकीक्रिया व कर्मकरके तीर्थयात्रा करनेचलेगये व राजायुधिष्ठिर नारदजीके ज्ञानसमझाने से संसारी व्यवहार झूंठा समझकर उदासीन चित्त परमेश्वरके ध्यानबीच रहाकरते थे जब उन्हींदिनों में श्री-कृष्णजी द्वारकापुरीसे गोलोककोपधारे तब उनके बैकुंठजानेसे राजाको कलियुगके लक्षणमालूमहोकर बुरे २ स्वप्ने दिखलाई देनेलगे व मनुष्योंके स्वभावमें अधर्म व क्रोध व लोभ व कपट अधिकहोकर स्त्री व पुरुष पिता व पुत्र भाई व बन्धुमें झगड़ा होनेलगा यहसबलक्षण कलियुगकादेखकर राजायुधिष्ठिरने भीमसेनसेकहा अर्जुन हमारा भाई सातमहीने से श्यामसुन्दर प्राणप्यारेके समाचारलाने वास्ते द्वारकापुरी को गयाहै सोअभीतकनहीं आया इसका कुछकारण मालूमनहींहोता व नारदजी हम से कहिगयेहैं कि मुरलीमनोहरने पृथ्वी के भारउतारने वास्ते अवतारलिया था सो उन्होंने महाभारतकराके पृथ्वीका बोझदूरकिया अब थोड़ासा कामउनका मर्त्यलोक में और रहगयाहै उसको संपूर्णकरके परमधामको जावैंगे सो अब मुझे संसारमें कुलक्षण देखनेसे जानपड़ताहै कि वह समय आनपहुंचा जिस श्यामसुन्दरकी दयासे हमने अपने शत्रुओं को मारकर यहसबसुख व राजगद्दीपाया उनकेबिना मुझेदिनरात नये २ अशकुन दिखलाईदेकर मेरीबाईंभुजा व आंख फड़कतीहै व कभी कभी ह-मारा शरीर कांपने व कलेजा धड़कने लगकर मनमेंडरसामालूमहोताहै व प्रातसमय सूर्यकी तरफ सियार खड़ेहोकर बोलते व दिनकोतारे आकाशसेटूटतेहैं व जब मैं अहेर खेलनेजाताहूं तब सौजे मेरे बायेंतरफसे होकर निकलजातेहैं व मेरेचढ़नेके घोड़े व हाथी मुझको रोते दिखलाई देकर दिनरात कुत्तेरुदन कियाकरतेहैं व रातको उल्लू की बोली सुननेसे मुझेडरमालूम होकर चारोंदिशामें अँधियारा सा देखपड़ताहै व इनदिनों भौंचाल आनेसे पृथ्वी बारम्बार कांपकर थोड़ासा बादल आकाशपर होनेसे बिजलीगिरतीहै व आंधीचलकर आकाशसे लोहू बर्षताहै व सूर्यमें प्रकाशकम होकर नदी व नालेकापानीसीधा नहीं बहता व जब अग्निहोत्रीलोग आहुति आगमें डालते हैं तब अग्निदेवता प्रसन्नहोकर आहुति नहींलेते व बछड़ेगायोंका दूध प्रसन्नहोकर नहींपीते व गऊकीआंखसे आंसू बहिकर सांड़लोग गायोंसे प्रीति नहींकरते व देवतों

की मूर्त्तिसे पसीना निकलकर मेरीसभामें आवश्यक मनुष्य झूंठबोलते हैं व लोगोंके स्वभाव में क्रोध व लोभअधिकहोकर केतुतारा आकाशपर निकलताहै व साधुमहात्माका चित्त हरिभजनमें न लगकर शहरमें किसीकेघर मंगलाचार नहींहोता व हस्तिनापुर मुझको उजाड़सा दिखलाई देताहै सो हे भीमसेन इनसब लक्षणोंसे मैं जानता हूं कि श्यामसुन्दरप्यारे मेरेप्राणकीरक्षा करनेवाले मृत्युलोकछोड़कर बैकुंठकोपधारे जिससमय राजायुधिष्ठिर बैठेहुये ऐसा शोचकररहेथे उससमय अर्जुन द्वारकासेआनकर राजाकेचरणोंपर गिरा व उसके सामने उदासीनचित्त हाथजोड़कर खड़ाहुआ व हाल अर्जुनका इसतरहपरहै कि श्रीकृष्णजीने बैकुंठजानेकेसमय दारुकसारथीसे अर्जुनको कहलाभेजाथा कि तुम द्वारकापुरीसे सब बिधवा स्त्री व लड़के व बूढ़े व सबवस्तु यादवोंकी हस्तिनापुरलेजाना इसलिये अर्जुन उनसभोंको असबाब समेत द्वारकापुरीसे अपनेसाथलेकर हस्तिनापुरआवतेथे जब राहमें हस्तिनापुरकेनिकट भिल्लपहुंचकर सबधनलूटनेलगे तब अर्जुनने गांडीवधनुष चढ़ाकर बहुतसेबाण उनको मारे पर उनतीरोंसे कुछकाम न होकर सबबस्तु डांकूलूटलेगये उससमय अर्जुनने उदासहोकरकहा देखो यहऐसासमय हमारा आनपहुंचा जिस धनुषबाणसे मैंने भीष्मपितामह व कर्ण व जयद्रथ ऐसे कितनेशूरवीरोंको मारकरजीताथा अब वही तीरकमान रहनेपरभी मैं डांकूलोगोंसे हारगया इससे मुझेमालूमहुआ कि वहसब पराक्रम मेरा केवल श्यामसुन्दरकी कृपासेथा अब श्रीदुःखभंजन मेरेरक्षा करनेवाले नहींहैं इस लिये सबबल व तेजमेरा जातारहा यही चिन्ताकरने और मुरलीमनोहरके बैकुंठ जानेसे अर्जुनकामुख बहुतमलीन होगयाथा सोराजायुधिष्ठिरने उसेउदासदेखकर पूछा हे अर्जुन सब यदुबंशी व शूरसेन नाना व बसुदेव मामा व देवकी व राजाउग्रसेन व अक्रूर व बलदेवजी व प्रद्युम्न और अनिरुद्ध व चारुदेष्ण सब लड़केबाले मुरलीमनोहर व उद्धवभक्त व सब द्वारकावासी अच्छीतरहहैं व श्यामसुन्दर मेरेप्राणप्यारे जिनआदिपुरुष भगवान्ने संसारीजीवोंके मंगलकरनेवास्ते यदुकुलमें अवतारलिया है सुधर्मासभामें आनन्दसेहैं हे अर्जुन तुम बहुतउदास दिखलाईदेतेहो तुम्हें कोईरोगतो नहींहुआ व तुम बहुतदिनतक द्वारकामेंरहेहो तेराअपमानतो किसीने नहींकिया या किसीसभामें तेराअनादरतो नहींहुआ या तुमने किसीको कोईवस्तु देनेकहाथा सो दे नहींसके या किसीब्राह्मण व महात्माका अपमानतो नहींकिया या कोई भूखातुम्हारेघर आयाथा उसको भोजननहींदिया या कोईब्राह्मण या बालक या बूढ़ा या रोगी या स्त्री शत्रुके डरसे तुम्हारेशरणआये और तुमने रक्षा उनकीनहींकिया इसलियेतुम्हारामुख उदास व मलीनहै या तुम रजस्वलास्त्रीसे भोगकरके किसीछोटेमनुष्यसे लड़ाईमें हार तोनहींगये जिससेतुम्हारा तेजजातारहा या अच्छीचीज भोजनकरतेसमय तुमने बूढ़े व बालक देखनेवालोंको उसमेंसे न देकर अकेलेतोनहींखालिया या श्यामसुन्दरबिहारी

मर्त्यलोकछोड़कर बैकुंठधामकोतो नहींपधारे इसलिये तुम्हारी यहगतिहुई है इसकाहाल हमसे बतलाओ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

अर्जुनकरके श्रीकृष्णचन्द्रजी के अन्तर्द्धानहोनेका हाल राजायुधिष्ठिरसे कहना और परीक्षितको राजगद्दीपर बैठालकर द्रौपदीसमेत पांचोभाई पांडवोंका उत्तराखंड में चलेजाना और मुरलीमनोहरके ध्यान में अपनातन त्यागकरना ॥

सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरोंसे कहा अर्जुन यहसबबात राजायुधिष्ठिरसे सुनकर कुछनहींबोला पर श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यानधरकर इतनारोया कि उसे हिचकी लगकर बातकहनेकी सामर्थ्यनहींरही कुछबेरबीते अर्जुनने मनको धीर्यदेकर राजा युधिष्ठिरसे कहा हे पृथ्वीनाथ मैं क्या कहूं श्यामसुन्दरबिहारी हमकोठगकर अन्तर्द्धान होगये मैं उनको अपनाभाई मामूकाबेटा जानताथा कदाचित् हमलोग उन्हें परब्रह्म परमेश्वरजानकर उनकीसेवाकरते तो भवसागरपारउतरकर आवागमनसे छूटजाते परमेश्वरकी माया ऐसी प्रबल है जिसमें लिपटकर हमलोगोंने उनकोही नहीं पहिंचाना जिसतरह एकबेर चन्द्रमा दक्षप्रजापतिके शापदेनेसे बहुतदिनतक समुद्रमें जाकर रहेथे यहबात सबकोई जानते हैं कि चन्द्रमाके पास अमृत रहताहै और मछलियां बड़े २ जीव जलचर व मनुष्योंके खाजानेके डर से सदा अमृतपीने के वास्ते इच्छा रखकर चाहती हैं कि हमका अमृत मिलता तो मरने से निर्भयहोकर अमररहतीं सो चन्द्रमा हजारोंवर्षतक मछलियोंके साथ समुद्रमें रहे जिसतरह उन्होंने चन्द्रमाको नहीं पहिंचानकर उसे एकजीव समुद्रका समझा उसी तरह हमलोगोंनेभी श्रीकृष्णजीको पूर्णब्रह्म न जानकर यदुबंशीजाना अब वहबात समझकर हमको बड़ाशोच होताहै देखो मैं उन्हींकी सहायतासे बड़े २ राजा व बीरोंको महाभारतमें मारकर यह समझ-ताथा कि अपने पराक्रमसे इनको मारता हूं अब मुझे इसबातका विश्वासहुआ कि श्यामसुन्दरकी दयासे मैंने सबकोजीताथा जबसे वह मुझे यहां छोड़कर आप बैकुंठको चलेगये तबसे उनकेबिना मेरापराक्रम कुछकाम नहीं करता देखो मैं वही अर्जुन और वही धनुषबाण और वही मेरीभुजाहैं जिनसे मैंने महादेव व गन्धर्व व इन्द्र मयनाम राक्षसको लड़ाईमें जीतकर भीष्मपितामह व कर्ण व जयद्रथआदि बड़े २ शूरबीरोंको मारा और कैसे२ राजोंसे बिजय करके यज्ञ करनेवास्ते द्रव्यलाया और अश्वत्थामाका मणि निकाललियाथा सो अबवह शस्त्रादिक रहनेपरभी एक श्यामसुन्दर बिनाराहमें डाकुओंसे हारगया और वहलोग मुझे जीतकर सबधन व स्त्री आदि जो द्वारकासे अपनेसाथ लाताथा लूटलेगये इसलिये मैं उदासहूं जिस स्थानपर हमको बिपत्ति पड़तीथी उसीजगह सुदर्शनचक्र उनका हमारी रक्षाकरताथा अब उनकेबिना किसतरह

मैं प्रसन्नरहूं जब महाभारत में कर्णआदि बीरोंने अनेकप्रकारसे मुझेमारनेकेवास्ते चाहा तब मुरलीमनोहर रथहांकतेसमय हमारेआगे खड़ेहोगये व मुझे अपनेपीछे रख कर मेरीरक्षाकिया व मुझको धीर्य्यदेकर कहतेथे तू मतडर भीष्म व कर्ण आदिक सबयोद्धा मरेहुयेहैं उनकीकृपासे इसतरह मेरेशरीरपर कोईघाव शस्त्रादिककानहीं लगताथा जिसतरह कोई साधु व महात्माका अशुभचाहे तो परमेश्वरकीदयासे उनकाकुछनहीं बिगड़ता और श्यामसुन्दर हमारेशत्रुओंकी आयुर्बल अपनीचितवनसे क्षीणकरतेजाते थे जब लड़तेसमय मैं कभी २ उनसे खेदमानकर कहताथा कि जल्दी २ रथक्योंनहीं हांकते तब वहदीनानाथ मुझे अपनाभक्त व बालकजानकर कुछबुरानहींमानते थे हे राजन् मैं उन्हींकीदया व कृपासे बड़े २ प्रतापीराजोंके सामने मत्स्यबेधकर द्रौपदी को स्वयम्बरमेंसे लाया व तुम्हारेमनाकरनेपरभी उनकामनपाकर कौरवोंके सन्मुख प्रकटहुआथा व जबदुर्वासाऋषीश्वरने कौरवोंकेभेजनेसे आधीरातको बनमें जाकर हम से भोजनमांगके शापदेनेकी इच्छाकिया उससमय श्रीकृष्णजी दीनानाथ हमलोगोंको अपनाभक्तजानकर वहांआये व ऋषीश्वरके शापसेबचाकर उनकाआशीर्बाद दिलाया यहबातें यादकरके मेरीछाती शोच व चिन्तासे फटीजाती है जैसे मुर्देको कपड़ा व गहना पहिनाकर बैठालदेव वही हाल मेरा श्यामसुन्दरके चलेजानेसे समझनाचाहिये हे पृथ्वीनाथ मैं उनकेसाथ थालीमें भोजनकरनेके उपरांत एकशय्यापर सोताथा और वह परब्रह्म नारायणहोकर मेराइतना आदरकरतेथे सो कहो अब इसतरहसे हमारी कौनरक्षा व सन्मानकरैगा और किसके आश्रय व भरोसेपर हम उतनाघमंडरक्खैंगे जब श्रीकृष्णजी महाभारतकराके यहांसे द्वारकापुरीगये तब उन्होंनेमनमें बिचारकिया कि यहसब यदुबंशी हमारेकुलमें बड़ेबलवान् उत्पन्नहुयेहैं मेरेजानेउपरांत उपद्रवकरके संसारीजीवोंको बड़ादुःखदेवेंगे इसलिये अपनेसामने इनलोगोंका भी नाशकरदेना उचितहै पर अपनेहाथ उनकामारना अधर्मसमझकर दुर्वासाऋषीश्वरसे शापदिलवा दिया तब छप्पनकिरोड़ यदुबंशी इसतरह आपसमें लड़करमरगये जिसतरह समुद्रमें बड़ेजीव छोटेजीवोंको खाजातेहैं सो हेधर्मराज यहबातकहतेहुये इसीसमय मेराप्राण शरीरसे निकलजाता पर श्यामसुन्दरने दारुकनाम सारथीसे यहबातमुझे कहलाभेजाथा कि स्त्री व बालक आदिको द्वारकासे हस्तिनापुरलेजाकर मेरे बियोगका शोचमतकरना व हमनेगीतामें जो कुछज्ञान तुमको बतलायाहै उसीके अनुसार शरीरको झूंठा व चैतन्यआत्मा सत्यजानकर संसारी मायामोह में मतलिपटना वही ज्ञानसमझकर मैंने सन्तोषकियाहै नहींतो अबतक मेराप्राण निकलजाता सो हेपृथ्वीनाथ अबजीनेका कुछ सुखनरहकर इसीमेंभलाहै कि हमलोगभी अपनातन तपस्यामें गलाडालैं जबइतनी बातकहकर अर्ज्जुन अतिबिलापकरके रुदनकरनेलगा तब राजायुधिष्ठिरने भीमसेन आदि अपनेभाइयोंसमेत बड़ेशब्द से रोकरकहा हे अर्ज्जुन हम अबजीकर क्याकरैंगे

और यहराजपाट हमारा किसकामआवेगा अबहमैं यहांरहना उचितनहीं है परीक्षितको राजगद्दीदेनेउपरांत हमलोग बदरीकेदारमें चलकर अपनाशरीरत्यागकरैं यहकहनायुधिष्ठिर का पांचोभाईपांडवोंनेमानलिया और जब रोनेकाशब्द महलमेंजाकर श्यामसुन्दरके अन्तर्द्धानहोनेकाहाल स्त्रियोंकोमालूमहुआ तबकुंती व द्रौपदीआदिने रोपटिकरइतनाशोचकिया जिसकाहाल बर्णननहींहोसक्ता व कुंतीने उसीखेदमें श्यामसुन्दरके चरणोंका ध्यान धरकर तन अपना त्यागकिया व राजायुधिष्ठिरने उपरोहित बुलाकर हस्तिनापुरकी राजगद्दीपर परीक्षितको बैठालदिया व राज्य इन्द्रप्रस्थ व मथुराका बज्रनाभनाम बालकको जो श्यामसुन्दरके कुलमेंबचगयाथा देकर राजायुधिष्ठिर व अर्ज्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेव पांचोभाई व द्रौपदी उनकीस्त्रीने अपना २ बस्त्र उतार डाला व एकएक लँगोटी व चादरपहिनकर राजमन्दिरसे बाहरनिकले उससमय जो ब्राह्मण व कंगाल वहांपरआये उनको मुँहमांगा द्रव्यदेकर उत्तराखंडको सिधारे व जो कुछ ज्ञान श्रीकृष्णजीने अर्ज्जुनको गीतामें बतलायाथा उसकाचर्चा आपस में रखकर कुछ दिनतक श्यामसुन्दरका ध्यान व तपस्याकिया फिर हिमालयमें जाकर हरिचरणोंका ध्यानकरतेहुये पहिले नकुल उसकेपीछे युधिष्ठिर आदि चारों भाई व द्रौपदीने अपना २ तनगलादिया व बिदुरजीने प्रभासक्षेत्रमें जाकर अपना शरीर त्यागकिया व राजापरीक्षित राजगद्दीपर बैठकरधर्म्म व प्रजापालनकेसाथ राज्यकरनेलगे व अपने न्यायसे प्रजाकोप्रसन्नरक्खा व तीनबार सारस्वत ब्राह्मणको गुरू बनाकर अश्वमेध यज्ञकराके कलियुगको दंडदिया व विवाह अपना राजाविराट्की पौत्रीसेकरके वहदान व धर्ममें इतनाखर्चरखतेथे कि एकबेर यज्ञकरतेसमय उनकेपास द्रव्यनहींरहा तब श्यामसुन्दरका ध्यानकरनेसे बहुतधन उनकोमिलकर यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्णहुआ इसीतरह जब राजायुधिष्ठिरको तीसरे अश्वमेधयज्ञ आरम्भके समय धनका प्रयोजनपड़ा तब नारदमुनि उनकेकहनेसे मुरलीमनोहरको हस्तिनापुरमें लाकर युधिष्ठिरसे बोले हेराजन् पिछलेयुगमें राजामरुतने ऐसायज्ञ कियाथा जिसकेयहां प्रतिदिन ब्राह्मणोंको एकएकथाली और लोटा व लुटिया व सुनहरी चौकी भोजनकरतेसमय नईदेकर फिर वहसबजूंठे बर्त्तननगरके उत्तरगड़हे में फेंकवादिये जातेथे यज्ञहोनेउपरान्त जितनाबर्त्तन सोनेका नयाबचगयाथा वह आजतक उसनगरके दक्षिणतरफ़ गड़ाहुआहै तुम उनबर्त्तनोंको मँगवाकर अपनायज्ञकरो सो राजायुधिष्ठिरने वहीबर्त्तन मँगवाकर यज्ञमेंखर्चकिया श्यामसुन्दर अपनेभक्तोंकी सबइच्छा पूर्णकरतेहैं इतनीकथा सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने पूछा कि राजापरीक्षितने कलियुगको किसवास्ते दण्ड दिया सूतजीने कहा जब परीक्षित सातोंद्वीपके राजोंको जीतकर अपने आधीन करचुका तब उसने बिचारा कि राजायुधिष्ठिरके राज्य भोगने तक द्वापरयुगथा अब कलियुग आया सो हम अपने राज्यमें कलियुगको रहने न देवेंगे ऐसा बिचारकर राजापरीक्षित

यह हाल देखनेवास्ते कि हमारे राज्यमें कलियुगने प्रवेश किया या नहीं दिग्विजय करने निकले सो जिस देशमें पहुँचतेथे वहां मनुष्योंको अपने कर्म व धर्म्मसे परमेश्वरका ध्यान और चर्चाके बीच न देखकर नारायणजीका गुण गावतेथे किसवास्ते कि कलि- युगने अभीतक वहां प्रवेश नहीं किया और राजा सब प्रजाको कहतेथे कि तुमलोग इसीतरह अपने कर्म्म व धर्म्मपर स्थिर रहना और जिस जगह परीक्षितकी सेना पहुँचती थी उसके देशके राजा उनका तेज और प्रताप देखकर पहिलेसे आन मिलते और बहु- तसी भेंट देकर विनय करतेथे कि हमलोग राजायुधिष्ठिर और अर्ज्जुनके समयसे तुम्हारे आधीनहैं यह बात सुनकर परीक्षित सब राजोंका सन्मान करके किसीको दुःख नहीं देताथा और जो लोग उसके बड़ोंका यश गातेथे उनको शिरोपाव देकर बिदा करदेता था इसीतरहसे राजापरीक्षितने दिग्विजय करतेहुये कुरुक्षेत्रमें नदी किनारे पहुँचकर क्यादेखा कि वृक्षकेनीचेएकबैल तीनपांवटूटाहुआ एकपैरसेखड़ाहै व एकगौदुबलीपतली रोती और कांपतीहुई उसकेपीछेखड़ीरहकर दोनोंआपस में कुछबातकरतेहैं यह हाल बैल व गायकादेखतेही राजाअपनेधर्म्म व दयासेएकवृक्षके ओटमेंखड़ाहोकर उनकीबातें सुनने लगा और राजानेक्यादेखा कि एकशूद्र श्यामरंगभयानकरूप राजाकावेषबनाये दूरसे उसबैल व गायकी तरफ चलाआता है ॥

सोलहवां अध्याय ॥

धर्म्मरूपी बैल व गायरूपी पृथ्वीका बातचीतकरना और राजापरीक्षितका वृक्षके ओट से सुनना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा उसबैलरूपीधर्म्मने गायरूपी पृथ्वीसेपूँछा तुझकोक्यादुःख प्राप्तहुआ जोरोती है कदाचित् तुझेमेरेतीनों पैरटूटजानेका शोचहो तो इसकायहकारणहै कि कलियुगमें बहुतपापीमनुष्योंने उत्पन्नहोकर धर्म्म और कर्म्म अपनाछोड़दिया और शुभकर्म्मसंसारसे उठगया व कलियुगवासीलोग चाहते हैं कि दमादसेरुपयालेकर अपनीकन्याका बिवाहकरैं व पुत्रको इसबिचारसे पालननहींकरते कि तरुणहोकर बापकेसाथझगड़ाकरेगा और ब्राह्मणलोगवेदपढ़ने में आलस्यरखकर शूद्रआदमी वेद और पुराणपढ़नेकी इच्छारखते हैं और क्षत्रियोंनेब्राह्मणोंकी रक्षा व सेवाकरना छोड़दिया व राजालोगपोतकेबदले दोनोंभागअनाजका प्रजासेलेकर कहते हैं कि अपनाबेटा या बेटीबेंचकर और देव या इसवास्ते तू रोतीहै कि श्यामसुन्दरबिहारी जो तेरेऊपरअपना चरणकमलरखतेथे संसारसेबैकुंठकोपधारे और कलियुगमेंअधर्म्मी राजाहोकरतेरेऊपर भोगकरेंगे अपनेमनकाहालहमसे बतलाव यहबचनसुनकर गऊने कहा तुमसबबातजानबूझकर मुझसेक्यापूछतेहो जिसकारण तुम्हारेतीनपैर तप व क्षमा व दयाके टूटकर केवलसत्यएकपांव रहगयाहै उसीलिये मेरारोनाभीसमझो किसवास्ते

कि मनुष्यकासुख धर्म्म व सच्चाईसे है जबमनुष्यने धर्म्म व सच्चाई और दयाछोड़दिया तबवह परमेश्वरके भेदको कभीपहुँचनेनहींसक्ता और यहबातनहींजानता कि धर्म्म करनेसे ज्ञानहोताहै औरकोई मनुष्यकहते हैं कि मनमेरा संसारसेबिरक्तनहींहोता सो बिनज्ञानप्राप्तहुये संसारीमोह छूटनाबहुतकठिनहै और मैं चारोंबर्णकेमनुष्य और राजा लोगोंका शोचकरतीहूं कि कलियुगआनेसे सबकिसीको दुःखहोगा और अधिकरोना मेरा इसवास्ते है कि वृन्दावनबिहारी बैकुंठकोपधारे जबमुरलीमनोहरके चरणकमल रखनेसे शंख व चक्र व गदा व पद्मके आकारमेरेऊपर पड़जातेथे तब मैं बहुतआनन्द होतीथी ऐसाकौनजीव जगत्में है जिसने श्यामसुन्दरके अन्तर्द्धानहोनेसे शोचनहीं उठाया और जो छत्तीसगुणउनमेंथे उनकावर्णनतुमसे करतीहूंसत्यबोलना आचारसे रहना हृदयमेंधीर्य्यरखकर क्षमाकरना संसारीमायामोहसे बिरक्तरहना जोकुछ परमेश्वर देवैं उसमेंसन्तोषरखना मीठाबचनबोलना इन्द्री व मनकोबशमेंरखना सबछोटेबड़ोंको बराबर जानकर किसीका अपमान न करना किसीके दुर्वचन कहनेसे बुरा न मानना किसीकाममें जल्दी न करना सुनीहुईबात यादरखना अपना कहाहुआ वचन न भूलना ज्ञानको स्थिररखना व मनमेंवैराग्यरखकर स्त्री और पुत्रोंसे अधिक मोह न रखना व धन पाकर किसीसे अभिमानकी बात न बोलना बल अधिक होनेसे घमंड न करना सबसे श्रेष्ठहोना सब विद्याओंको जानना दूसरेका दुःख देखकर दुःखित होना किसीसे न डरना जोकोई अपना दुःखकहे उसकाहाल प्रसन्नहोकर सुनना और भूत भविष्य वर्त्तमान तीनों कालकी बातैं जानना अपनेमनका हाल किसीसे न बतलाकर समुद्रके समान गम्भीर रहना धर्म्मकी तरफ़से मन नहीं फेरना धर्म्म और वेदकी रक्षा करना संसारमें ऐसी कीर्त्ति करना जिसमें सब कोई भलाकहै आंखोंमें शील रखना किसी जीवको दुःख न देना जो कोई दीन होकर अपना अर्थकहै उसकी इच्छा पूर्णकरना परमेश्वर का तप व ध्यान करते रहना सबसे अधिक बलवान् होना किसी शूर बीरको तीनोंलोक में कुछ माल नहीं समझना साधु व ब्राह्मण और महात्माका आदर करके परोपकार करना सो है बैलरूपी धर्म्म श्यामसुन्दरको इन सब गुण होनेपरभी कुछ अहङ्कार नहीं था और छत्तीसगुणों के सिवायऔर बहुतसे शुभकर्म्म उनमेंथे जिससमय उनको यादकरतीहूं उससमय मेराकलेजा फटिजाताहै देखो जिसलक्ष्मीके मिलनेवास्ते सबदेवता व संसारीमनुष्य इतनातप और जपकरतेहैं वहीलक्ष्मी कमलवनको छोड़कर दिनरात श्यामसुन्दरकी सेवामें रहतीहैं ऐसेमुरलीमनोहरकी मैं दासीहूं जब द्वापरके अन्तमें तुम्हारे दोपैरटूटगये और मैं कंसादिक राजोंकेअधर्म करनेसे दुःखी हुईथी तब बैकुंठनाथने यदुकुलमें अवतारलेकर हमारा और तुम्हारा दुःखछुड़ाया और अपनी कीर्त्ति संसार में फैलाई ऐसे परोपकारी पुरुषके वियोगका दुःखकौनसहसक्ता है यहगायरूपी पृथ्वी बैलरूपीधर्म्मसे कहतीथी और राजापरीक्षित खड़ासुनताथा ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

कलियुगका बैलरूपीधर्म्म व गोरूपी पृथ्वीकेपास आवना कलियुग व राजा परीक्षितसे बातचीतहोना व परीक्षितका कलियुगके रहनेवास्ते स्थानबतलावना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहाकि उसीसमय वहशूद्ररथपरचढ़ा बहुतसी सेनासाथ लियेराजोंका वेषबनाये कालेकपड़े और मुकुटपहिने सोंटाहाथ में बांधे गाय और बैलके पासआनकर रथसे उतरपड़ा व बैल व गायको पैर से ठोकर मारकर धमकानेलगा उसका रूपदेखकर वहदोनों ऐसाडरगये किगाय आंखोंसे आंशूबहाने-लगी व बैलने मल व मूत्रकरदिया जब ऐसाअधर्म राजापरीक्षित से नहीं देखागया तब राजाने बाण निकालकर धनुषपर चढ़ाया व बड़ा क्रोधकरके कलियुगसे कहा सातों द्वीपका राजा मैंहूं तू कौन देशकाराजाहै जो हमारेराज्यमें राजोंका वेषबनाकर मेरीप्रजाको दुःखदेताहै राजाओंका ऐसाधर्म नहींहोता जो किसीको दुःखदेवें श्रीकृष्ण जी महाराज त्रिलोकीनाथ मर्त्यलोकसे अन्तर्द्धानहुये व अर्जुन हमारेदादा गांडीव-धनुष रखनेवाले बैकुंठकोगये इसलिये तू पृथ्वीको बिनाराजाके समझकर गाय और बैलको ऐसादुःखदेताहै अधर्मकरना छोड़दे नहींतो अभी तुझको मारेडालताहूं कलि-युग यहबात सुनतेही राजाके डरसे चुपचाप खड़ाहोगया तब राजाने बैलसेपूछा तुम कौनहो व तीनोंपैर तुम्हारे किसने तोड़े तुम कोईदेवता होकरमुझे भ्रमदेनेके वास्ते तो नहींआये हमनेअपने राज्यमें तुम्हारे बराबर किसीको दुःखी नहींदेखा अब तुम कुछ शोच मतकरो मेरे मिलने से तुम्हारासबडर छूटगया व तुम्हारादुःख मैं दूरकरूंगा राजा यह बचन बैलसे कहकर फिर गायसे बोले तू मतरो अधर्मी व पापियोंका दंड-देनेवाला मैं तय्यारहूं राजाओंका यहीधर्म है कि चोर और कुकर्मी मनुष्यों को दण्ड देवें जिसराजाके देशमें प्रजादुःखपावे उसका चारगुण नाशहोताहै एक उसकी कीर्त्ति न रहकर दूसरेआयुर्दाय कमहोजाती है तीसरे ज्ञानछूटकर चौथे परलोक बिगड़ताहै राजाओंको ऐसाचाहिये कि जो उनके राज्यमें दुःखीहो उसकादुःख छुड़ादियाकरें इतनाधर्म राजाको रखनेसे फिर कुछ तप व जपकरनेका प्रयोजन नहींरहता इसवास्ते मैं इसशूद्रको मारडालूंगा यह संसारीजीवोंको बहुतदुःख देताहै यहबात पृथ्वीसे कह-कर राजाने बैलसे फिरपूछा तुम्हारापैर किसनेतोड़ा जल्दीमुझे बतलाओ उसकेहाथ हमकाटडालेंगे मैं श्रीकृष्णचन्द्रका दासहोकर तुम्हारादुःख नहीं छोड़ाऊं तो मेरेकुल में दोषलगेगा कदाचित् कोई देवताभी मेरेराज्यमें आनकर किसीको दुःखदेवे तो उसे मारडालने सक्ताहूं मनुष्यकी क्या सामर्थ्य है जो किसीको दुःखदेने सके यह बात सुनतेही बैलरूपीधर्म अपना शिरझुकाकर राजासे बोला पांडवोंके बंशमें सबराजा इसी तरहपर धर्मात्माहोते आयेहैं उनके राज्यमें किसीने दुःख नहींपाया अर्जुन तुम्हारे

दादा ऐसेधर्मात्मा व हरिभक्तथे जिनके श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ सारथीहुये तुमको इसीतरह उचितहै कि सदागरीब व दुःखीलोगोंका शोचरक्खाकरो और मैं वेदशास्त्रके बचनसे लाचारहोकर यह नहींजानसक्ता कि मुझको किसने दुःखदिया इसलिये मैं किसकानाम बतलाऊं जिसकानाम बतलाऊंगा उसका तुम संकोचकरोगे अपने प्रारब्ध काफल भोगताहूं यहबात जगत् में प्रकट है कि सबकोई अपने २ अधर्म के बदले दुःखपाते हैं किसीको अपने मनके संकल्प विकल्पसे दुःखहोता है कोई लोग कहतेहैं कि मनुष्य सबदुःख व सुख परमेश्वर की इच्छासे भोगताहै पर इसबातका बिचार करनाचाहिये कि परब्रह्म परमेश्वरको जिनकी इच्छासे सबजीव उत्पन्न होतेहैं क्या प्रयोजनहै जो किसीको दुःखदेवैं नारायणजीको इसबातका दोषलगाना उचितनहीं है कोई कहते हैं मनुष्य अधर्मकरने से दंडपाताहै सो अधर्म करनेमें भी मनुष्यका कुछ बश नहीं रहता किसवास्ते कि मनुष्यकी इच्छापूर्वक सबबात नहीं होती कोई कहतेहैं दुःख शत्रुसे पहुँचताहै मित्र किसीको कुछ दुःख नहींदेता इसलिये उत्पन्नकरना शत्रु का भी अपने अधीन समझना चाहिये किसवास्ते कि जबतक मनुष्य माताके पेटमें रहताहै तबतक उसका शत्रुकोई नहींहोता जब मनुष्य उत्पन्नहोकर सयानाहोताहै तब लोगोंसे बिरोधकरके अपनाशत्रु आप खड़ाकरताहै इसकारण मैं किसीकानाम बतलाने नहींसक्ता कि किसने हमको दुःख दियाहै तुमअपनी बुद्धिसे जानलो जबपरीक्षित ने यह सबज्ञान बैलरूपी धर्म्मसे सुनकर श्रीकृष्णजीके चरणोंका ध्यानकिया तब उनको अन्तःकरणकी शुद्धताईसे मालूमहुआ कि यह बैलरूपीधर्म व गौरूपी पृथ्वी व शूद्ररूप राजा कलियुग है व इसी शूद्रने धर्म्म का पैर तोड़कर पृथ्वी को दुःख दिया है व इस पृथ्वी के मालिक परमेश्वर थे सो परमधाम को गये इसीकारण पृथ्वी चिन्ता करती है पापीका नामलेनेसे पाप व धर्मात्माका नामलेनेसे पुण्य होताहै इसीवास्ते बैल-रूपीधर्मने कलियुगको पापी समझकर उसकानाम नहीं बतलाया पहिले धर्मके चारोंपैर तप व सत्य शौच और दयाके स्थिरथे कलियुगमें अधिकपाप होनेसे तीनपैर धर्म्मके टूटगये उनतीनों पांवकानाम जिसकारण धर्मके तीनपैर तप व शौच व दयाके टूटगये हैं अहंकार और परस्त्रीगमन और मदिरापान समझना चाहिये केवल सत्यएक पैर धर्म्मका रहगया उसकोभी यह कलियुग तोड़ा चाहताहै राजाने यहबातमनमें बिचार कर बैल व गायको धीर्य्य दिया व क्रोधवन्त होकर तलवार निकालके कलियुगको मारनेदौड़ा जब कलियुगनेदेखा कि यहधर्म्मात्मा राजा क्रोधसेभराहुआ मुझेमारनेचाहता है और मैं ऐसी सामर्थ्य नहींरखता जो इसकेसाथ लड़नेसकूं ऐसा बिचारकर कलियुग राजाके चरणोंपर गिरपड़ा व अपनाजीव बचानेके वास्ते बिनतीकरनेलगा तबराजाने अपने धर्म व दयासे तलवार नहीं चलाकरकहा हेकलियुग जहांतक राजायुधिष्ठिर व अर्जुन हमारेदादाका राज्यथा वहांतुझे न रहनाचाहिये तू अधर्म करनेवाला पापियोंका

साथीहोकर जिसराजाके देशमेंरहेगा उसराजाका मन अधर्म करनेको चाहेगा तेरे में लालच व अहंकार व झूठ व कपट व झगड़ा व काम व मोहभराहुआहै इसलिये भरतखंडमें जहांतक निजहमारा राज्यहै और वहां सबकोई अपनेधर्म व कर्म से हैं मतरहो इसभरतखंडमें मनुष्यलोग तप व यज्ञदान व धर्मव्रत व परमेश्वरकी पूजन करनेसे राजगद्दी व अनेक तरहका सुखपाकर मुक्तपदवीको पहुंचतेहैं व उनको कभी दुःख नहींहोता ऐसी जगह तू रहकर विघ्नकरेगा व तेरेरहनेसे पाप अधिकहोगा मेरा कहनामान नहींतो तेराप्राणबचना दुर्लभहै कलियुगने हाथजोड़कर गिड़गिड़ाके राजा से विनयकिया महाराज आप धर्म्मात्मा व न्यायकरनेवालेहैं मेरीप्रार्थना सुनिये ब्रह्मा-जीने सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारयुगोंको बनाकर उनकी अवधिका प्रमाणकिया है सो सतयुग व त्रेता व द्वापर तीनोंयुग अपना अपना राज्यभोगचुके और मैं कलि-युगहूं अब मेरेभोगकरनेका समयआया मुझे आपआज्ञादेते हैं तू हमारेराज्यमें मतरह सो सातोंद्वीपमें आपकाराज्यहै मैं कहांजाकररहूं व जो ब्रह्माजीने चारोंयुगका प्रमाण कियाहै वह किसीतरह मिटनहींसक्ता और हे पृथ्वीनाथ आप मेरेअवगुणोंकी तरफ़ देखतेहैं और गुणोंकी तरफ़ ध्याननहींकरते सोमेरेमें एकगुण बड़ाहै वह आपसे कहताहूं सतयुगके बीच जिसराज्यमें एकमनुष्य पापकरताथा उसराज्यभरके मनुष्यदंडपातेथे व त्रेतामें एकमनुष्यके अपराधकरनेसे गांवभर दंडपाताथा व द्वापरमें अधर्मकरनेसे परि-वारभरको शासनाहोतीथी व कलियुगमें जोमनुष्य जिसअंगसे पापकरताहै मैं उसको पकड़कर उसीअंगकी शासतकरताहूं दूसरेयुगोंमें मानसीपापकरनेसे मनुष्यको दंडमि-लताथा और कलियुगमें मानसीपाप न होकर मानसीपुण्यकाफल मिलताहै जबयहबात सुनकर राजापरीक्षितको दयानहींआई तबफिर कलियुगबोला हे पृथ्वीनाथ मेरेमें एक गुण और बहुतबड़ाहै सतयुगमें जोकोई परलोक बनानेवास्ते दशहजारवर्ष तपकरताथा तबउसकी इच्छापूर्णहोतीथी व त्रेतायुगमें जबमनुष्यलोग बहुतसी द्रव्यलगाकर हजारों वर्षोंतक यज्ञकरतेथे तबउनकाअर्थ सिद्धहोताथा द्वापरमें सौवर्षतक पूजन व ध्यान नारायणजीका करनेसे मनोकामना मिलतीथी मेरेराज्यमें जोकोई एकक्षणभी श्याम-सुन्दर का ध्यान अपने सच्चेमनसेकरे या उनका नामलेकर कानोंसे लीला व कथा उनकीसुने वह अपने अर्थको पहुँचकर अनेक जन्मके पापोंसे छूटजाताहै जब यह गुण सुनकर राजापरीक्षित उसपर बहुतप्रसन्नहुये तब कलियुगने कहा हे पृथ्वीनाथ दयाकर के मुझे जीवदान दीजिये और जहांकहिये वहांजाकररहूं मैं आपसे बहुतडरताहूं तुम्हारी आज्ञामेंरहूंगा जबकलियुगने हाथजोड़कर बिनयकिया तब राजाने उसे दीनजानकर अपनाधर्म्म बिचारा कि शरणआयेको कोईनहीं मारता ऐसा समझकर बोले हे कलियुग जिसजगह मनुष्य जुवाखेलतेहैं व जहांमदिरापीनेके वास्ते बिकताहै व जिसस्थानपर वेश्यारहतीहैं व जहांपर जीवहिंसा करतेहैं वहांजाकर तुमरहो यहसुनकर कलियुगने

फिरराजासे दीनहोकेकहा इनचारों जगहों में मेराकुल व परिवारसमाने नहींसक्ता तब राजाने दयालुहोकरकहा जिसजगह सूमनुष्यके पासद्रव्य व सोनाहो और वह उसमें दान व धर्म्म न करे वहांभी तुमजाकर बसो सिवाय इनपांचों जगहके कहीं प्रवेश करेगा तो हम तुझे मारडालेंगे कलियुगने राजाको धर्म्मात्मा व बलवान् देखकर उनका वचनमानके मनमेंकहा जब राजाकाचित्त धर्म्मकी तरफसेफिरेगा तब हम अवसरपाकर अपनाअर्थ निकाललेवेंगे यहबात बिचारकर कलियुग राजासे बिदाहुआ व उसीपांचों जगह जहांराजाने बतलायाथा आनकर डेराकिया इतनीकथासुनकर सूतजीने शौन-कादिकऋषीश्वरों से कहा जोकोई अपनाभलाचाहे वह इनपांचों बातोंसे किनारारक्खे व राजाको यह बात कभीनहीं करनाचाहिये किसवास्ते कि राजाके अधीन सबप्रजारहती है जब कलियुगके जानेकेउपरान्त राजापरीक्षितने उसबैलके तीनोंपैरटूटेहुये अपने धर्म्मसे अच्छेकरके गायकोधीर्य्यदिया तब वहबैल अपना धर्म्मरूप व गायपृथ्वीरूपहो-कर अपने २ स्थानपरचलेगये व राजाने राजगद्दीपर आनकर यहब्राह्मणों व ऋषी-श्वरोंसे कहा वहलोग सुनकरबोले हे राजन् तुमनेबहुत अच्छीबात किया अबतुम्हारे राज्यमें कलियुग अपनाप्रवेशनहीं करनेसक्ता फिर राजापरीक्षितने अपने राज्यमें ऐसा ढिंढोरा पिटवादिया कि कोई जीवहिंसा न करे व मदिरा न पीवे व जुवा न खेले व द्रव्यपाकर यथाशक्ति दानदेवे व परस्त्रीगमन न करे जोकोई देवता व साधुवसन्त व ब्राह्मण व गौ व वेद व शास्त्रको नहींमानकर इनपांचों बातोंमें कोईकाम करेगा उसका हमअन्न व धनलूटकर दंडदेवैंगे सो परीक्षितके डरसे यहसब अधर्म्म उनके राज्यमें लोगोंने करना छोड़दिया व राजापरीक्षित धर्म्म बढ़ातेहुये हस्तिनापुरमें राजकाज करने लगे व सदालीला व कथापरमेश्वरकी सुनकर उनकेचरणों में ध्यानलगाये रहतेथे व उनके राज्यमें सबप्रजाभी अपनेधर्म्मसे रहकर आनन्दथे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

परीक्षितका शिकार खेलनेकेवास्ते बनमेंजाना और राजाकेमनमें कलियुगका प्रवेश करना इसलिये राजाका समीकऋषिके गलेमें मराहुआ सांपडालना और समीकऋषिके पुत्रकरके राजापरीक्षितको शापदेना ॥

सूतजी शौनकादिकऋषीश्वरोंसे कहतेहैं कि जबतकपरीक्षितने राज्यकिया तबतक उनके नाति व धर्म्मसे कलियुगने वहांप्रवेशनहींपाया व राजापरीक्षित रथपर बैठकर प्रजाकी रक्षाकरनेकेवास्ते चारोंदिशा अपनेराज्यमेंघूमते व एकछत्र राज्यकरतेरहे व कलियुगको कुछमाल न समझकर उसेपड़ारहनेदिया इतनीकथासुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने सूतजीसेकहा आप परमेश्वरकीकथामें बड़ेयोग्यहोकर अमृतरूपीरस हम लोगोंको पिलातेहैं तुम्हारेसत्संगसे हमाराजन्मकृतार्थहुआ कदाचित्आपऐसाकहें कि

तुमलोग ऋषीश्वरहो तुम्हाराजन्म इसीतरहसुधरजावेगा सोनिश्चयजानो जोसुखतुम्हारे [illegible]होताहै वहसुख स्वर्ग और बैकुंठमेंनहींमिलता जिसतरह राजापरीक्षितने तनत्यागकियाथा अबउसकाहाल बर्णनकीजिये सूतजीनेकहा जबराजापरीक्षित वृद्धा-वस्थाको पहुँचे तबराजाने बिचारकिया कि जीवहिंसाकरना घरमेंमनाथा सोहमने छोड़ दिया व राजोंका ऐसाधर्म्म है कि बनमेंशिकारखेलाकरैं इसीबहानेसे उनकोअनेकदेश देखनेमें आतेहैं व जो हरिनबनमेंबूढ़ाहोजाताहै उसेअहेरमें अवश्यमारनाचाहिये सदा से राजालोग ऐसाकरतेआयेहैं यहबातविचारतेही एकदिन राजानेबनमेंजाकर बहुतसे जीवोंको अहेरमें मारा फिरएकहरिनकेपीछे जोघायलहोकरभागाथा मध्याह्नसमय घोड़ा अपनादौड़ाया सो अपनेसाथियोंसे बिलगहोगये [illegible]से बहुत प्यासमालूमहुई और पानी ढूंढनेकेवास्ते चारोंतरफफिरनेलगे तबउसजगह भिंडीऋषीश्वर कीकुटीदिखाईदी और वहऋषीश्वर[illegible]महात्मा सदाबनमेंरहतेथे व जोदूध बछड़ेकेपीते समय गऊकेथनसेटपकताथा उसेपीकर परमेश्वरकाभजनकरतेथे सोराजानेकुटीकोदेखतेही वहांजाकर ऋषीश्वरसेकहा मैं राजापरीक्षितअभिमन्युकाबेटा बहुतप्यासाहूं दयाकरकेथोड़ा पानी मुझेपिलावो इसीतरहकईबेरराजाने ऋषीश्वरसे पानीमांगा व ऋषीश्वरमहाराज उस समय [illegible] परमेश्वरके [illegible] लौलीनबैठेहुये थे कि उन को अपनेतनकीभी सुधिनहींथी इसकारण उन्होंने राजाकीबातनहींसुनी और न उनको कुछउत्तरदिया उससमयकलियुगने जीवहिंसाकरनेसे राजाकेमनमें अपनाप्रवेशकरके कपटउत्पन्नकिया जबराजाकोधर्मात्मा व हरिभक्तहोनेपरभी अधिकभूख व प्यासलगने से क्रोधउत्पन्नहुआ तबउसनेयहबिचारा देखो हमराजा सातोंद्वीपकेप्यासेहोकर इस ब्राह्मणके [illegible] सो इसऋषीश्वरने हमकोदेखके झूंठीसमाधिलगाकर हमारीबातका उत्तरभीनहींदिया पानीकोकौनपूंछे इसकोकुछदंडदेनाचाहिये परमैंपांडवों के कुलमेंहोकर ब्राह्मणोंको किसतरहदण्डदूं जबऐसासमझकर राजाघोड़ेसेउतरा तबउसने एकसांपमराहुआ उसीजगहपड़ादेखकर मनमेंकहा सांपइसकेगलेमें डालदेवें तो सर्पके डरसे ऋषीश्वरआंखअपनी खोलदेगा ऐसाबिचारतेही राजानेक्रोधबशहोकर उससर्पको अपनेधनुषसेउठाके भिंडीऋषिकेगलेमें डालदिया परवहऋषीश्वर परमेश्वरकेध्यानमें ऐसेलवलीन व मग्नथे जिनकोसांपडालनेसेभी कुछडर न होकर वहज्योंकेत्यों अपनीआंख बन्दकियेहुये परमेश्वरके ध्यानमें बैठेरहे व राजानेअपनेस्थानपर आकर जैसे शिरपरसे मुकुटउतारा वैसेउसकोज्ञानहुआ औरबड़ेशोचसे मनमेंकहनेलगा देखोसोनेमें कलियुग कावासहै सो मेरेशिरपरथा व शिकारखेलनेसे मेरीबुद्धिबदलगई जोहमनेमराहुआसांप ऋषीश्वरकेगलेमें डालदिया अबमैंसमझा कि कलियुगने मुझसे अपनाबदलालिया इस पापसे किसतरहमेरीछुट्टीहोगी जबकोईमनुष्य नारायणजीसे बिमुखहोकर गऊ व ब्राह्मण को दुःखदेवे तो समझनाचाहिये इसकेबुरेदिनआयेहैं सो मैंने आजब्राह्मणको वृथादुःख

दिया इससे मुझकोनिश्चयहोताहै कि मेरीआयुष व धनकीहानिहोगी यहांराजाअपने घरपरबैठाहुआ इसतरह शोचकररहाथा व जिसस्थानपर [illegible] बैठेथे वहांजबऋषीश्वरोंके लड़कोंनेखेलतेहुये यहहालदेखा तबएकबालकने भिंडीऋषीश्वरके बेटे शृंगीऋषिसे जो कौशिकीनदीकेकिनारे लड़कोंमेंखेलताथा जाकरकहा तुम्हारेपिताके गलेमें राजापरीक्षितसांपडालगयाहै यहबातसुनतेही शृंगीऋषि जो ब्रह्मासे बरदानपाकर वचनअपना सिद्धरखताथा क्रोधमेंभरगया व आंखेंउसकीलालहोकर शरीरकांपनेलगा उसीसमयशृंगीऋषिने नदीकिनारेजाकर अपनाहाथ व पांवधोया व आचमनकरके हाथमेंपानीलेकर शापदिया कि आजसेसातवेंदिन तक्षकसांपकेकाटनेसे राजापरीक्षित मरजावें ऐसाशापदेकरबोला श्रीकृष्णजी बैकुंठकोपधारे इसलिये कलियुगबासीराजा धन व राज्यकेमदमें अन्धेहोकरब्राह्मणोंको दुःखदेतेहैं [illegible] द्वारकेअगोरनेके वास्ते कुत्तापालै और वहकुत्ताउसीकोकाटकर यज्ञकीथालीमें मुंहडालदे उसीतरह राजा लोग नौकरसमानऋषीश्वरोंकी रक्षाकरनेकेवास्ते रहते हैं सो अबकलियुगबासी राजोंका यहहालहै ब्राह्मणोंकीकृपा व आशीर्वादसे राजगद्दीपाकर उन्हींकोदुःखदेते हैं यहअर्जुन व युधिष्ठिरकेकुलमें ऐसाअधर्मीराजा उत्पन्नहुआ जिसनेमेरेबापके गलेमेंसांपडालदिया व राजोंने [illegible] इसलिये हमअपनीसामर्थ्य उनकोदिखलातेहैं शृंगी-ऋषि सबलड़कोंको ऐसावचन व शापदेनेका हालसुनाकर ऋषिकेपासआया व जब अपनेपिताको परमेश्वरकेध्यानमेंलीन और मराहुआसांपगलेमें पड़ादेखा तब सांपगलेसे निकालकररोनेलगा व पिताकानामलेकरपुकारा उसकाशब्द सुनतेही भिंडीऋषिनेसमाधि खोलकर अपने बेटेसेपूछा तू किसवास्तेरोताहै शृंगीऋषिनेकहा राजापरीक्षित तुम्हारेगले में सांपडालगया इसलिये मैं रोताहूं यहबातसुनकर भिंडीऋषिनेकहा हे बेटा तैनेकुछशापतो राजाकोनहींदिया तबशृंगीऋषिबोला मैंनेइसअधर्मकरनेके बदलेराजाकोयहशापदियाहै कि सातदिनबीते तक्षकसांपकेकाटनेसे राजामरजावै यहवचनसुनकर भिंडीऋषि बहुतउदास होगये व क्रोधकरके अपनेबेटेसेकहा हे मूर्ख तैंनेबहुतबुराकामकिया जो ऐसेधर्मात्माराजाको जिसकेराज्यमें कलियुगने प्रवेशनहींपायाथाशापदिया देखो बैकुंठनाथश्रीकृष्णजीने उसकी रक्षा माताकेपेटमेंकी व कौरवों व पांडवोंकेकुल में यहीएकराजाबचाथा जिसकेराज्यमें हम सब ब्राह्मण व ऋषीश्वर बहुतसुख व आनन्दसे रहिकर कोई पशु व पक्षीभी दुःखीनहींथा उसकेन्यायसे गाय व बाघ एकघाट पानीपीतेथे तैंने थोड़े अपराधमें दंड उसको बहुतदिया उसका अवगुणलिया व गुणको छोड़दिया परीक्षितके मरनेके उपरान्त अधर्मीराजाहोंगे व उनके राज्यमें कलियुगअपना प्रवेशकरके मनुष्यों से पापकरावेगा देखो राजामेरे स्थानपरआया तो मुझे उसको भोजनखिलाकर सन्मान करना उचितथा यहबड़ी लज्जाकी बातहुई जोमैंने एकलोटा पानीभी उसेनहीं पिलाया और तैंने ऐसाशाप वैष्णव राजाकोदेकर श्रीकृष्णजीका अपराधकिया राजाके मरनेके उपरान्त संसारमें सबलोग

वर्णसंकरहोजावेंगे इसपापकी जड़ तू हुआ साधु व संतका यहधर्म्महै कि गुणको लेतेहैं और अवगुणकी तरफ़नहींदेखते यहबात भिंडीऋषिने अपनेपुत्रसे कहिकर परमेश्वरका ध्यानकरके उनसेबिनयकिया हे वैकुंठनाथ मेरेअज्ञान बालकसे [illegible] इसका [illegible] जो राजा गौ व ब्राह्मणकी रक्षाकरताहै उसकेमारनेका पाप दशब्राह्मण मारनेके बराबर होताहै व बिनाराजा देशमें चोर पापी बहुत उत्पन्नहोते हैं जिसने राजाकोमारा उसनेचोर व अधर्मियोंको बढ़ाया भिंडीऋषिने ध्यानमें ऐसापरमेश्वरसे कहिकर मनमें बिचारा कि राजाको इसपापका हाल कहलाभेजना चाहिये जिसमें वह अपने परलोकका यत्नकरे यहबातसुनकर संसारीलोग शृंगीऋषिको बुरातोकहैंगे परऐसे धर्मात्माराजाकी मुक्तिबनानेकेवास्ते उसकोचितादेनाचाहिये ऐसाबिचारकर भिंडीऋषिने कुर्मुकनाम अपने शिष्यकोबुलाकर कहा तू राजाके पासजा और हमारे तरफ़से आशीर्वाददेकर कहिदे कि शृंगीऋषिनेतुमको इसतरहका शापदियाहै इसलिये तुम्हारी अकाल मृत्युहोगी सो तुमचैतन्यहोकर अपनी मुक्तिकाउपायकरो इतनीकथा सुनाकर सूतजीने ऋषीश्वरोंसेकहा देखो जो राजापरीक्षित अश्वत्थामाके ब्रह्मास्त्रसे बचा व जिसने धर्म व पृथ्वीकी रक्षाकरके कलियुगको अपने आधीनकिया वहीराजा एकब्राह्मणके शापदेनेसे मरगया ऐसामाहात्म्य ब्राह्मणकाहै व परीक्षितके मरनेके उपरान्त कलियुगने सब जगह अपना प्रवेशकरलिया व राजापरीक्षितने कलियुगका गुणसमझकर उसेनहींमारा व अवगुणकी तरफ़ध्यान नहींकिया जोलोग धर्मात्मा व हरिभक्तहोतेहैं वह गुणको लेकर अवगुणकी तरफ़ नहींदेखते इन्द्रलोक व स्वर्ग व वैकुंठ व संसार में कोईसुख सत्संगके बराबर नहीं होता व परमेश्वरका भेद व चरित्र ब्रह्मा व महादेव आदि देवता भी नहीं जानसक्ते दूसरेको क्यासामर्थ्य है जो जानसके यहबात सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने बहुतस्तुति करनेके उपरान्त उनसेकहा आपधन्यहैं जोपरमेश्वर का चरित्र व अमृतरूपी कथा हमलोगोंको कानोंकीराह पिलाकर कृतार्थकरते हैं यह बातसुनकर सूतजीबोले आजहमारा जन्मलेना सुफलहुआ जो आपऐसे ऋषीश्वर व मुनीश्वर मेरीबड़ाई करते हैं हमाराजन्म ब्राह्मण व शूद्रसे मिलकरहुआ था सो आप लोग महात्मोंकी संगतिकरनेसे मेरा सबशोच दूरहोगया जोकोई मनुष्य तनपाकर परमेश्वरकी कथासुनै व उनके नामका स्मरण व भजनकरै संसारमें उसीकाजन्मलेना सुफलहै देखो जिनचरणोंका धोवन गंगाजीहोकर तीनोंलोकके जीवोंको तारतीहैं जो उनचरणोंकी भक्तिरखकर त्रिभुवनपतिका नामलेवै व उनकी कथा कानोंसेसुनै उस कीबड़ाई कौन बर्णन करसक्ताहै मनुष्य जितनीदेरतक परमेश्वरकी कथासुनकर नाम स्मरण करतेहैं उतनाकाल उनके आयुर्बलमें क्षीणनहींहोता मेरीक्यासामर्थ्य है जो परमेश्वरके गुणोंका बर्णनकरसकूं जिसतरह आकाशमें पक्षी अपने पराक्रमभर उड़कर आकाशका अन्तकोईनहीं पासक्ते उसीतरह ब्रह्मा व महादेव आदिदेवता व ऋषीश्वर

लोग अपने ज्ञान व सामर्थ्यभर परमेश्वरका ध्यान व स्मरण करते हैं परउनके अन्त को कोई नहीं पहुँचसक्ता ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजा परीक्षितको शृंगीऋषिके शापदेनेका हाल मालूमहोना और परीक्षितका गंगाकिनारे जाना और शुकदेवआदि ऋषीश्वरों का उसस्थानपर आना ॥

सूतजीने शौनकादि ऋषीश्वरों से कहा जिससमय राजापरीक्षित अहेर से आकर अपने धर्म्मका बिचारकरके चिन्तामें बैठेहुये मनमें कहतेथे कि हमारे पीछे जो राजा होंगे वह मेरे अधर्म करनेका हाल सुनकर ऋषीश्वरों व ब्राह्मणोंका अनादर करके उनका डरनहीं रक्खेंगे सो इसपाप करने के बदले वह ब्राह्मण मुझको शापदेते या मेराप्राण निकलजाता या कुछ हानिहोती तो दूसरे राजा किसी ब्राह्मण व ऋषीश्वर को दुःख न देते उसीसमय कुर्सुकनाम भिंडीऋषिके चेलेने वहां पहुंचकर कहा हे राजन् भिंडीऋषीश्वरने आशीर्वाद देकर तुमसे कहाहै कि मैं आपके आनेके समय परमेश्वर के ध्यानमें ऐसा मग्नथा कि मुझे तुम्हारे आने व पानी मांगने की कुछसुधि नहीं हुई और तुमने क्रोधकरके मेरेगले में मराहुआ सांपडालदिया सो मैं उससे बुरा न मानकर तुम्हें पानी न पिलानेसे बहुत लज्जितहूं परन्तु शृंगीऋषि मेरे बेटेने अपने अज्ञानसे तुमको शापदिया है कि सातदिन में तुम तक्षकसांपके काटने से मरजाओ-गे इसलिये तुम अपनी मुक्तिबनानेका उद्योगकरो जिसमें कर्मकी फांसीसे छूटो राजा यह बातसुन बहुत प्रसन्नहुआ व हाथजोड़कर उसचेलेसे बोला शृंगीऋषि ने मेरेऊपर बड़ीकृपाकिया जो मुझे शापदेकर इस मायारूपी समुद्रसे कि हम काम व क्रोधकेवश होकर उसी में डूबरहे थे बाहर निकाला व मुझको इतने दिनोंमें आजतक इसबात का ध्यान नहीं हुआ कि मायामोह से बिरक्त होकर परमेश्वर का भजन व स्मरण करूं पर अब इस शापका डर मानकर मनमेरा बिरक्तहोगया सो तू मेरी दंडवत् कहिकर ऋषीश्वर महाराज से बिनयपूर्वक कहि देना कि मैं अपने दंडको पहुँचकर बहुत प्रसन्न हुआ परन्तु वह हृदय से मेरा अपराध क्षमाकरैं राजा ने यह बात उस चेलेसे कहिकर उसको बहुतसाद्रव्य व रत्नादिकदक्षिणादेके बिदा किया पर एकबात का खेद राजाकोहुआ कि इसअधर्मके बदले उचितथा कि तुरंत मेराप्राण निकलजाता सातादिनतकजीकर इसपापीतनकोरखना क्याप्रयोजनथा इसलिये उचितहै कि सातदिन जो मेरेमरनेमें हैं इसपापीतनको अन्नजल न दूं किसवास्ते कि जिसशरीरसेपरमेश्वरका भजन व स्मरण न होवे वहतन किसीकामकानहींहोता ऐसाबिचारकर राजाने मनमें शोचा कि अब स्त्री व पुत्र व राज्य व धनका मोहछोड़कर परमेश्वरकेध्यानमें लीन होनाचाहिये इतनेदिनहमारे संसारीमायामोहमें वृथाबीतगये और मनमेराबिरक्तनहीं

हुआ और जबमैं सातवेंदिन तक्षकसांपकेकाटनेसे मरजाऊंगा तबयहराज्य और धन मेरासाथछोड़देवेगा इसलिये उचितहै कि मैं पहिले से इनसबकी मायामोह छोड़दूं और गंगाकिनारे जो तीनोंलोककोतारनी हैं सातदिनपरमेश्वरकाभजन व ध्यानकरकेअपनी मुक्तिबनाऊं किसवास्ते कि संसारमेंजिसनेजन्मलिया वहएकदिनअवश्यमरेगा इन्द्रादिक देवताभी अमरनहींरहते संसारमेंजैसाकर्म्म मनुष्यकरताहै वैसादुःख व सुखभोगकर चौरासीलाख योनिमेंजन्मपाताहै सोहमइससातदिनमें ऐसाकर्म्मकरें जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागरपारउतरजावैं राजानेयहबातबिचारकर जनमेजय अपनेबड़ेबेटेको जो चौदहबर्षकाथा राजगद्दीपर बैठादिया और राज्यकाजकाकाम मंत्रियोंको सौंपकर जनमेजयसेकहा हेबेटा गऊ व ब्राह्मणकीरक्षाकरके प्रजाकोसुखदेना ऐसाकहकर राजा ने मनअपनाविरक्तकरके भूषण व बस्त्रराजसी अंगसेउतारडाला व एककोपीनपहिन-कर गंगाकिनारेचलेगये उससमयराजाने बहुतसाद्रव्य ब्राह्मणोंकोदानदेकर राज्य व परिवारकामोह इसतरहछोड़दिया जिसतरहकोईउबान्तकरके उसकीतरफआंखउठाकर नहींदेखतायहहालसुनकर सबरानी व स्त्री व पुरुषनगरवाले रोतेहुये राजाकेपीछे गंगा किनारेपहुंचे व रानियोंनेकहा महाराजतुम्हारेवियोगका दुःख हमलोगोंसेनहीं उठाया जावेगा राजाउन्हें बिकलदेखकरबोले स्त्रीकोचाहिये जिसबातमें उसकेपतिका धर्म्मरहै वहकामकरै उसकेधर्म्ममें बिघ्न न डाले यहबातकहिकर सबकोबिदाकरदिया व किसी कीतरफआंखउठाकर नहींदेखा व हरद्वारमें गंगाकिनारेजाकर स्नानकरके कुशासनपर उत्तरमुंहबैठकर मनमेंऐसासंकल्पकिया जो सातादिन हमारीआयुषहै इससातादिनतक कुछ अन्नजल न करूंगा राजाका यह हाल जिसने सुना वह बिना रोये नहीं रहा व राजा श्रीकृष्णजी के चरणोंका ध्यान धरकर बिचारनेलगा कि यह सातदिन हरि चर्चा व सत्संगमें ब्यतीतहोयँ तो बहुत अच्छाहै व राजाके शाप व विरक्तहोने का हाल ऋषीश्वर व मुनीश्वरलोग सुनकर उदास होगये अत्रिमुनि व बशिष्ठ व च्यवन व अरिष्टनेमि व भृगु व अंगिरा व पराशर व परशुराम व मेधातिथि व देवल व पिप्पलायन व भरद्वाज व गौतम व मैत्रेय व अगस्त्य व वेदब्यास व नारद व बिश्वा-मित्र व कात्यायन व बामदेव व जमदग्नि आदिक बहुतसे ऋषीश्वर व महात्मालोग राजापरीक्षितको धर्मात्मा समझकर गंगाकिनारे भेंट करनेके वास्ते आये राजा ने उनको देखतेही दंडवत् व पूजाकरके बड़े आदरभावसे बैठाया व सब किसी को आसनदेकर बोले महाराज मरतीसमय आप लोगों में से एक महात्माका भी दर्शन जिसको प्राप्तहो वह आवागमनसे छूटकर भवसागर पार उतरजावै सो मेरा बड़ा भाग्यहै जो मरतीसमय आपलोगों ने जिसतरह कृपा व दयाकरके मुझे दर्शनदिया उसीतरह दयालुहोकर सातदिनतक यहांरहिये जिसमें तुम्हारे रहनेसे मनमेरा संसारी माया मोहकीओर न जावै और आपलोगों के सत्संग से आठोंपहर चर्चा नामपरब्रह्म

परमेश्वरकी बनीरहे व आपलोग कृपाकरके मेरे भले के वास्ते यहांआये हैं और कुछ इच्छा व परवाह नहीं रखते सो दया व कृपाकरके कोई ऐसा उपाय बतलाइये कि इस सातदिनमें हम वह यत्नकरके आवागमनसे छूटजावैं उन ऋषीश्वरों में से एकने कहा तीर्थ स्नान करना बड़ा पुण्य है दूसरे ऋषीश्वर बोले ब्राह्मण लोग इकट्ठे हुये हैं यज्ञकरो जिसमें सब पाप तुम्हारा छूटजावे तीसरे ऋषीश्वर ने बतलाया कुछ तुम्हारे यहां द्रव्यहो उसे ब्राह्मणों को दानकरदेव दानकरने से उत्तम कोई दूसराधर्म्म नहीं है चौथे ऋषीश्वरने कहा देवतोंका पूजनकरने व मंत्र जपकरनेसे सब पाप मिट जाते हैं इसीतरह सब ऋषीश्वरों ने अपने अपने ज्ञान पर्य्यन्त राजासे बतलाया परन्तु कोई बात पक्की नहीं ठहरी कि कौनसा कामकरना चाहिये तब राजाने कहा आप लोगों ने जो बात बिचारकिया सो सब उत्तमहै पर इन सब बातोंकी सामग्री इकट्ठा करनेको बहुत दिन चाहिये और मेरे मरनेमें केवल सातदिन रहे हैं कोई ऐसा उपाय बतलाइये जो इसी सातदिनमें पूर्णहोसकै इसबातको सब महात्मालोग बिचारकरनेलगे इतनी कथा सुनाकर सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो जिससमय नारदजी शापदेने का हाल सुनकर राजापरीक्षित के पास गंगाकिनारे जाते थे उससमय राहमें शुकदेवजी से भेंटहुई तब शुकदेवजी ने नारदमुनिसे पूछा आप कहांजाते हैं नारदमुनिने अपने जाने और राजापरीक्षित के शाप देने का हाल सुनाकर कहा महाराज जो मुनि व ऋषीश्वर राजाके पासगये हैं वह लोग राजाको उत्तमराह जो मुक्तहोनेकी है नहीं बतलाकर कोई ऋषि यज्ञ व कोई तप व कोई दानादिक धर्मकरनेके वास्ते कहैंगे पर थोड़ेदिन रहनेसे राजापरीक्षित उसकाम करनेसे भवसागर पार नहीं उतरैगा इस लिये आप वहां जाके राजा को भगवत् गुण सुनाकर भवसागर पार उतारदीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजी ने पहिले वहांजाना अंगीकार नहीं किया तब नारदजी ने उनको यह इतिहास सुनाया महाराज चलतीसमय मैंने रास्ते में क्यादेखा कि एक मनुष्य आंखवाला कुयेंपर बैठाथा उससमय एक अंधा राह भूलकर वहां चला आया व उस कुयें में गिरकर मरगया और उस आंखवाले मनुष्य ने अंधेको देखनेपर भी कुयें की तरफ जाने से नहीं मनाकिया सो उसदेशके राजाने यह हाल सुनकर उस आंखवाले को पकड़ बहुतसा दंड देकर कहा तेरे आंखथी तैंने उस अंधे को कुयेंकी तरफ जाने से क्यों नहीं बरजा सो आप बतलाइये उस आंखवालेने उचित किया या अनुचित यह इतिहास सुनकर शुकदेवजीने कहा हेनारदमुनि उस आंखवालेने बहुत अधर्म दंडदेने योग्य काम किया कि उसके देखते वह अन्धा कुयें में गिरकर मरगया इसलिये वह उसपापका भागी हुआ तब नारदजी बोले हे शुक-देव महाराज देखो राजापरीक्षित अपनी मुक्ति बनानेका रास्ता नहीं जानता और आप भगवत् भजन करने के प्रतापसे सब राहजानते हैं कदाचित् उसको रास्तानहीं

दिखलाओगे तो उसके नरकजानेका पाप किसको होगा व तीनों लोकके राजा जो ईश्वर हैं वह तुमको इसपापके बदले दंडदेवैंगे या नहीं यहबात सुनकर शुकदेवजी लाचार हुये व राजाके पास जाना अंगीकार करके नारदजीसे कहा आपचलैं मैंभी पीछे आताहूं सो जिससमय ऋषीश्वरलोग सातादिन में राजाके मुक्तहोने का उपाय बिचार कररहे थे उसीसमय शुकदेवजी महाराज पन्द्रहवर्षकी अवस्था अतिसुन्दर परमहंस रूप बनाये आनन्दमूर्त्ति राजाके पासआये उनके तेजको देखकर सब ऋषीश्वर व मुनि जो बड़े २ महात्मा व बूढ़े वहां पहिलेसे बैठेथे उठखड़ेहुये व शुकदेव जी महाराजको बड़े आदरभाव से बीचमें ऊंचे सिंहासनपर बैठाया तब राजापरीक्षितके मनमें इसबातका संदेह हुआ कि देखो शुकदेवजी को छोटी अवस्था होनेपर भी बूढ़े २ ऋषीश्वरोंने उठकर बड़े आदरसे बैठाया सो इनके प्रकाशसे मालूम होता है कि यह गुणमें सबसे अधिकहैं ऐसा बिचारकर राजापरीक्षित भी खड़ाहोगया व उनको दंडवत् करके हाथजोड़कर बड़ी अधीनतासे बोला हे कृपानिधान आपने बड़ी दयाकरके इसबेला जो मैं मरनेके वास्ते गंगाकिनारे आयाहूं मुझको दर्शन दिया व आप ऐसे महापुरुषका आना मेरे भाग्यसे हुआ जब शुकदेवजी सिंहासनपर बैठचुके तब पराशरमुनि शुकदेवजीके दादाने राजापरीक्षितका सन्देह मिटाने के वास्ते कहा हे राजा शुकदेवजी अवस्थामें छोटे व ज्ञानमें सबसे बड़े हैं व हमलोग जितने बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनियोंको यहां देखतेहो सबको ज्ञानमें इनसे छोटा समझना चाहिये इस वास्ते हमलोगोंने उठकर इनका आदर कियाथा और यह तारणतरण हैं जबसे इन्हों ने जन्मलिया तबसे विरक्तमन दिनरात परमेश्वरके ध्यानमें लीन रहकर श्यामसुंदर का गुणानुवाद गाते हैं हे राजन् तेरा कोई बड़ा पुण्य सहायहुआ जो इससमय यह आये सब कर्मोंसे जो उत्तम धर्म्म तेरे भवसागरपार उतरनेके वास्ते होगा वहकहैंगे जिससे आवागमनसे छूटजावेगा इतनी कथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा कि तुमने जो पूंछाथा कि शुकदेवजी को राजापरीक्षितने किसतरह पहिंचाना उसका हाल तुमसे वर्णनकिया राजापरीक्षित शुकदेवजीका हाल पराशर मुनिके मुख से सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ व उसने शुकदेवजीका चरण धोकर बिधिपूर्वक पूजन करके हाथजोड़कर कहा महाराज आप बिरक्तरूप संसारसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते श्रीकृष्णजी महाराजने मुझको पांडवोंके बंशमें समझकर तुम्हारे मनमें दया उत्पन्न करदिया जो आप कृपाकरके मुझको भवसागर पार उतारने के वास्ते यहां आये और आपके दर्शनसे मैं कृतार्थहुआ जो कोई तुम्हारे चरण छुवे वह मुक्तपदवी पासक्ताहै सो मैं दीनहोकर आपसे विनय करताहूं देवता लोगोंकी आयुष्का प्रमाण है कि इतनेदिनोंमें मरैंगे और इस कलियुगमें मनुष्यके आयुर्बलका ठिकाना नहीं है कि कब मरेगा सो श्रृंगीऋषिके शापदेनेसे अब मेरे मरनेमें सातदिन और बाकीरहे हैं सो

आप अपनेमनके मालिक हैं तुम्हारे ऊपर किसीका बशनहीं चलता जो बिना प्र-सन्नता आपको एकक्षणभी रखसकै इसलिये मैं जल्दीकरके आपसे पूछताहूं कि मुझे भवसागर पार उतरने के वास्ते इस सातदिनमें क्या करना चाहिये और हमसंसारी जीव में स्त्री व पुत्रोंके मोहमें फँसे रहकर कभी मनमें इसबातका बिचार नहीं किया कि अन्तसमयका भी शोच करना चाहिये जिसतरह कसाई बहुतसी बकरियां अपने यहां रखकर उनमें से नित्य एकदो बकरी मारता है व दूसरी और बकरियोंको कभीइस-बातका डरनहीं होता कि हमारीभी एकदिन यहीगति होगी बड़े हर्षसे प्रतिदिनदाना व घास व पानी खातीपीती हैं उसीतरह हम संसारीलोग सदा माता व पिता व भ्राता व पुत्रका मरना आंखसे देखकर कुछनहीं डरते कि हमको भी एकदिन मरनाहोगा अधर्म्म करना छोड़कर परमेश्वरका भजनकरैं और यहसब हाल देखनेपरभी अपना मन स्त्री और पुत्रझूठे व्यवहार और मायामोहमें फँसायेरहते हैं अब नारायणजीने मेरे ऊपर कृपाकरके मुझे मायामोहकी नींदसे जगाया कि मनमेरा बिरक्तहुआ जिसतरह शास्त्रका वचन है कि कदाचित् कोई मनुष्य पांचदिन कार्तिकके अन्तमें एकादशी से पूर्णमासीतक गंगास्नान करै तो उसे महीने भर नहानेका पुण्य प्राप्तहोता है उसी तरह आपकोई ऐसा उपाय बतलावैं कि इससात दिनमें जो मरेमरनेके हैं तुरन्त गुण करै व जब मनुष्य मरनेके निकट पहुंचै तब उसको अपनी मुक्ति बनाने वास्ते क्या उपाय करना चाहिये किसवास्ते कि मरतेसमय गलेमें कफ इकट्ठाहोनेसे परमेश्वरका नाम उच्चारण नहीं होसक्ता व यमदूतोंके डरसे मल व मूत्र निकल आताहै इसलिये आपसे विनय करताहूं कि कोई ऐसा धर्म्म बतलाइये जिसमें जल्दी मुक्तिहोवे व दूसरे ऋषीश्वरोंने जो कुछदान व यज्ञादिक उपाय बतलायाथा वहभी शुकदेवजी से कह दिया जबयह सबबात सुनकर शुकदेवजी महाराजने मुसकरादिया व ऋषीश्वरों का कहना अच्छा नहीं लगा तब राजापरीक्षित फिर हाथजोड़कर बोले हे कृपानिधान इससमय तुम्हारे विचारमें कथा पुराण सुनना या मंत्रजपना या किसी देवता व श्यामसुन्दर के चरणोंका ध्यान करनाहो सो बतलाइये वैसा मैं करूं ॥

इतिप्रथमस्कन्धसमाप्तम् ॥

शुकदेवजी करके श्रीमद्भागवत व परब्रह्मपरमेश्वरके अवतार धारण करने का हाल वर्णन करना ॥

दो० जाकी कृपाते होतहै निपट अयान सयान ।
सो माखनके हियबसो नँदनन्दन भगवान ॥
जो द्वितीयके मध्यमें गूढ़ कहेउ शुकदेव ।
श्यामसुँदर सो कृपाकरि मोहिं बताओ भेव ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजी महाराज का राजापरीक्षितको धीर्यदेना व श्रीमद्भागवतकी स्तुति वर्णन करना ॥

शुकदेवजीने राजापरीक्षितका बचनसुनकरकहा हेराजन् तुमने जोपूछा कि अन्तसमय मनुष्यको अपनीमुक्तिबनानेकेवास्ते क्याकरनाचाहिये सो बहुतअच्छीबातपूंछी है इस में संसारीजीवोंका भी भलाहोगा हे राजन् जो अज्ञानमनुष्य परमेश्वरकीमहिमाको नहींजानता और केवल सुख व बिलासमें डूबकर भ्रष्टहोरहाहै उसकेवास्ते सबदुःख समझनाचाहिये किसवास्ते कि वहलोगसंसारीविषय व सुखरूपपदार्थोंकी चाहनारखते हैं पराबिनापरमेश्वरकीकृपा व दयाके उनकोकुछसुख नहींमिलता वहइसीतरह अपनी आयुष् रातको स्त्रीप्रसंग व दिनकोउद्यम व ब्यापारमें ब्यतीतकरतेहैं उन्हें आठोंपहर संसारीकामसे छुट्टीनहींमिलती कि किसीक्षणनारायणजीका स्मरण व ध्यान जो उन्हें उत्पन्न व पालनकरतेहैं करके परलोक अपनाबनावें व धन व परिवारसे अपनाभला चाहतेहैं देखोमनुष्यजिसस्त्री व पुत्रकेमाया व मोहमेंफँसकर सबतरहका दुःखउठाताहै व झूंठसत्यबोलकर द्रव्यउत्पन्नकरके जिनकोपालताहै उनकामरनाभी अपनीआंखों से देखकर मनको इसमहाजालसे बिरक्तनहींकरता व मरनेउपरान्तकोई बेटा व भाई व बन्धु उसकीसहायतानहीं करसक्ते व पापकरनेकेबदले आपनरकभोगता है ॥

क० कहा कोशलेश सुखपायो प्रभुतनयपाय कहासुख दीन्हों प्रह्लादहूके तात जू । कहा सुखदियो प्रियराघवको दुखीकियो कहासुख सुकंठै दियो बालिबली भ्रात जू ॥ कहा सुखदीन्हों धन

हेतु भयो मथनसिंधु कहासुख कौरवकोदियो राज्यख्यात जू । निजानन्दकन्द बिनलहेउ सुखलेश किन कहेव सरबन्धुजण दुखको संघात जू ॥

सो हेराजन् तुम्हाराजन्म भरतखण्डमेंहुआ जे मनुष्य इसखण्डमें परमेश्वरकाभजन व ध्यानकरके बैकुंठकासुखपाते हैं उन्हींलोगोंका संसारमेंजन्मलेना सफलहै देखो मुनि व ऋषीश्वरलोग संसारीमायाछोड़कर बनमें श्यामसुन्दरका स्मरण व भजनकरके अपनाकालबिताते हैं सो हे राजन् सुनो जिसकीमृत्युनिकटपहुँचीहो उसको भवसागर पारउतरनेकेवास्ते सिवाय नारायणजीकीकथा व स्तुति सुननेके दूसरीबातउत्तमनहीं है और वहमनुष्यअपनामन स्त्री व पुत्र व धनादिक संसारीमायामें बिरक्तरखकर इसबात पर स्थिरकरै कि यहसबव्यवहार जगत्काझूठाहै व संसारीबस्तुसदा बर्त्तमाननहींरहती व मरनेकेउपरान्त कोईबस्तु उसकेसाथनहींजाती केवल वह अकेलाजाताहै और स्त्री व पुत्र व धनादिकसब उसकोछोड़देते हैं उसकासाथ नहींकरते इसवास्तेबुद्धिमान् व ज्ञानीको उचितहै कि उनकेछोड़नेसे पहिलेआप उनलोगोंको त्यागकरदेवै व भगवान् की कथा शुद्धमनसे चित्तलगाकरसुनै व मुरलीमनोहरके चरणों में ध्यानलगाकर उसी परब्रह्मपरमेश्वरकी प्रीतिउत्पन्नकरै और जो कुछकथा व लीलासुनै उसपर बिश्वास रखकर कभी उसकोझूठ न जानै व उसकोसत्यजानकर किसीबातकासन्देह न करै तबवहमुक्तिपावैगा सो हेराजन् हम श्रीमद्भागवत जो सबपुराणोंसे उत्तमहोकर उसमें केवल श्यामसुन्दरकी लीला व स्तुति लिखीहै और हमने अपनेपिताव्यासजीसे उसको पढ़ाथा तुमकोसुनाते हैं जिसकिसीकी ऐसीइच्छाहो कि हमआवागमनसेछूटजावैं उसके वास्ते श्रीमद्भागवतसुननेके सिवायकोई दूसराउपाय उत्तमनहीं है सबशास्त्रसुननेका फल केवलभागवतसुननेसे प्राप्तहोताहै व सबवेदोंकासार इसेसमझनाचाहिये जिसको यमराजकी फांसीसेछूटनाहो वह भागवतसुनै परमेश्वरके चरणों में उसकोप्रीतिउत्पन्न होगी और जो मनुष्य स्त्री व लड़कोंके मोहमेंफँसारहताहै कदाचित् वहभीकथासुनने का नित्यअभ्यासकरै तो निस्सन्देह उसकामनबिरक्तहोकर हरिचरणों में प्रीतिउत्पन्न होके भवसागरपारउतरजावे व जिसस्थानपर यहकथाहोती है उसजगह सबतीर्थ व देवतालोग सुननेवास्ते आकरइकट्ठेहोते हैं व उसकेसुननेसे अनेकजन्मकापाप छूट जाताहै सो हे राजन् तुमभी इसकथाकेसुननेसे मुक्तिपदवीको पहुँचोगे कदाचित् तुम यहबातकहो कि तुम्हारेआनेसे पहिले यहसबऋषीश्वर जो यहांबर्त्तमानथे इन्होंने किस वास्ते हमको भागवतकथा सुननेका सम्मतनहींदिया इसकाकारण यहसमझनाचाहिये कि अभीतकऋषीश्वरोंका मन एकबातपर स्थिरनहींथा कभीयज्ञकरनेकेवास्ते व कभी जप व कभी तीर्थ व कभी दान व पूजाकीतरफ चलायमानहोताहै और हम अपनामन रात

दिन परमेश्वरकेध्यान व स्मरणमेंलगाकर श्रीमद्भागवत पढ़नेके सिवाय दूसरीबातों से कुछप्रयोजननहींरखते व अवधूतकीतरह अपनीआयुर्दाय संसारमेंकाटकर आनन्दसे रहते हैं हेराजन् कदाचित् तुमयहजानतेहो कि मेरेमरनमें [illegible] सो इसबात से मतडरो तुमकोअभी सातदिनमरनेमें हैं श्रीमद्भागवत चित्तलगाकर अच्छीतरह प्रेमसे सुनो तुम्हारीमुक्तिहोगी खट्वांगनामराजा दोघड़ीमें मुक्तहुआथा तुमको सातदिन बहुतहैं क्योंतुम घबड़ातेहो कदाचित्कोई अपनेसच्चेमनसे परलोक बनानाचाहै तो अढ़ाईघड़ीमें मुक्तिपासक्ताहै व संसारीमायामोहमें हजारबर्षतक अपनीआयुर्दाय व्यर्थ बितावै तो मरनेउपरान्त नरकभोगता है यहबात सुनतेही राजाने हाथ जोड़करकहा महाराज खट्वांगराजाने दोघड़ी में किसतरह मुक्तिपाईथी उसकाहाल बिधिपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेवजीबोले त्रेतायुगके आदिमें खट्वांगनामराजा सातोंद्वीपका बड़ा प्रतापी व बलवान् व नीतिमान् व धर्म्मात्मा अपने कर्म्म व धर्म्मसे अयोध्यापुरी में रहताथा उन्हींदिनोंमें दैत्योंने इन्द्रादिक देवतोंको लड़ाईमेंजीतकर इन्द्रासनसे निकाल दिया तबबृहस्पति पुरोहितने देवतोंसेकहा जब राजाखट्वांग तुम्हारीसहायता करके दैत्योंसेलड़ाईकरैं तबतुम्हारीजीतहोगी यहबातसुनतेही इन्द्र देवतोंसमेत मर्त्यलोक में राजा खट्वांगकेपास आया व उससे अपनाहालकहकर सहायताचाही तबराजानेउनको दंडवत्करके कहा हमाराबड़ाभाग्यहै जो तुमलोगहमसे दैत्योंकोलड़ाईकेवास्ते सहायता चाहतेहो एकदिन इसशरीरकाअवश्य नाशहोगा कदाचित् आपलोगोंके कामआवे तो इससे क्याउत्तमहै ऐसाबचनकहकर राजाने अपनेशस्त्रबांधलिये व इन्द्रादिकके साथ जाकर दैत्योंसे लड़ाईकिया व उन्हेंजीतकर फिर देवलोककीराजगद्दी इन्द्रकोदिया जबदेवतोंने राजाकीकृपासे विजयपाया व निडरहोकर अपनाराज्यकरनेलगे तबराजा ने देवतोंसे बिदामांगी उससमय इन्द्रने प्रसन्नहोकरकहा हेराजन् तुमहमसे कुछ वरदान मांगो यहबातसुनकर राजाने बिचारकिया कि हमने सहायताकरके छूटाहुआराज्य इनका दिलादियाहै इनसे कौनवस्तुमांगैं इन्द्रने उसकेमनकाहाल जानकरकहा हे राजन् देवतोंको बीतीहुई व होनेवाली बातसब मालूमरहती है हमलोग दैत्योंकेउपद्रव से कि वहहमसेबलवान्हैं ब्याकुलथे इसलिये तुमसे सहायताचाहीथी ऐसाबचनसुनकर राजाने अपनीबुढ़ाईशोचके देवतोंसे पूंछा कि पहिलेतुम यहबतलाओ कि मेरेआयुर्बल में कितने दिनहैं तबमैं तुमसे बरदानमांगूं इन्द्रने बिचारकरकहा हेराजन् तुम्हारी आयुर्दायमें केवलचारघड़ी हैं यहबात सुनतेहीराजाने देवतोंसेकहा हमयहीबरदान मांगतेहैं कि मुझे इसीक्षण अयोध्यामें मेरेस्थानपर पहुँचादेव वहांकर्मभूमि हमारी है अब मेरेमरनेकासमय निकटपहुँचा वहांजाकर मैं ऐसाकर्मकरूं जिसमें आवागमनसे छूटकर भवसागरपार उतरजाऊं इन्द्रने उसीसमय एकबिमान बहुतबेगसे चलनेवाला राजाकोदिया सो राजाउसीबिमानपर चढ़कर दोघड़ीमें अपनेस्थानपर पहुँचे हेराजन्

उसने भरतखण्डको देवलोकसे अच्छाजाना जो मरनेवास्ते अयोध्यापुरी में आया सो तुम बिश्वासकरके जानो कि भरतखंड बहुतअच्छास्थानहै व राजाने अयोध्यामें आनकरउसीदोघड़ी में द्रव्यादिक सबवस्तुब्राह्मणों को इच्छापूर्वक दानदेकरअपने बेटे को राजगद्दीपर बैठादिया व स्त्री व पुत्र व राज्यकामायामोह मनसेतोड़कर बैराग्य धारणकरके सरयूकिनारेजाबैठा व भगवान्जीके ध्यानमें लीनहोके योगाभ्याससे अपना तनुत्यागकर बैकुंठकोसिधारा सो हेराजन् उसकोमुक्ति दोघड़ीमें हुई तुझेअभी सातदिन बहुतहैं सो तुमअपनामन संसारीमायासे तोड़कर पञ्चभूतात्मा व सबइन्द्रियोंको अपने बशमेंरक्खो व परमेश्वरके बिराट्रूपका ध्यान कि सबलोक उसीरूपमें बर्तमानहैं करो सातोंलोक ऊपरकेकमरसेऊपर व सातोंलोक नीचेकेकमरसेनीचे उस आदिपुरुष के समझो व जितनीबस्तु तुम संसारमें देखतेहो उसरूपसे कोईबाहरनहीं है यहबात बिचारकर उसतेजकेसाथ जिसकेप्रकाशसे सूर्य व चन्द्रमा प्रकाशितहैं ध्यानलगाओ व सबजीवों में उसीतेजकाचमत्कार जानकरउसके सिवाय सब जगत्काव्यवहार झूठा समझो और जोकोई उसको सबजगहपर एकसादेखताहै उसे किसीशत्रुकाडरनहींरहता व मित्रसेभी सहायताकी इच्छानहींरहती सबजीवोंमें उन्हींकाप्रकाश उसकोदिखाईदेता है श्रीकृष्णजीके चरणोंकाध्यान हृदयमेंरखकर श्रीमद्भागवत मनलगाकेसुनो तुम्हारी मुक्तिहोजावेगी और शुकदेवजीमहाराजका अभिप्राय इनसबबातोंसे यह था कि तक्षक सांपकाडर राजाकेचित्तसे निकलजावे व जब राजाअपनेमनमें बिश्वासजाने कि नारायणजीकेसिवाय दूसरी संसारीबस्तुमें कुछप्रकाशनहीं है तब तक्षककाडर छोड़कर यह समझै किसकोकौनकाटता है जब इसतरहकाज्ञान मनमेंआया तब वह जीवन्मुक्तहुआ यहबातसुनके राजापरीक्षितने बहुतआनन्दहोकरकहा महाराज मैं किसतरह बैठकर कौनसेरूपकाध्यानकरूं शुकदेवजीबोले हेराजन् तुमकमलासन बैठो व एकचित्तहोकर अपनेहृदयमें परमेश्वरकेछोटेरूपकाध्यान जिसको सूक्ष्मरूपकहते हैं करो कदाचित् अन्तष्करणमें उसस्वरूपकाध्यान न करसको तो सबसंसारपरमेश्वरके बिराट्रूपमें जानकर उसकाध्यानलगाओ व बिराट्रूपकाहाल इसतरहपरहै पातालपरमेश्वरकेपांव व रसातललोकघुटना व सुतललोकजंघा व बितल व अतललोकचूतड़ पृथ्वीकमर व आकाशनाभि व ज्योतिषचक्र जहांसूर्य व चन्द्रमारहते हैं छाती व महर्लोकगला व जनलोकमुख व तपलोकमाथा व ब्रह्माकासत्यलोक शिर उसआदिपुरुषकाहै इन्द्रादि देवता उनकीभुजा व दशोदिशाकान व अश्विनीकुमारनाक व सबसुगन्धनाकका छेद व अग्निमुख व आकाशआंखोंके रहनेकागड़हा व सूर्य आंख व दिनराति पलक भुजा व जल पांव व सब जगत्का स्वाद जिह्वा व यमराजदांत व मायाउनकी हँसी व लज्जाऊपरकाहोठ व लालच नीचेकाहोठ व धर्म छाती व अधर्म पीठ व सबवृक्ष शरीरकारोम व मेघघटा शिरकेबाल व नदियां शरीरकीनसें व पहाड़ तनकीहड्डी व

समुद्र पेट व हवा श्वासा व मनचन्द्रमा व पानी मेहकावीर्य व आत व संध्यापरमेश्वर का कपड़ाहै और परमेश्वरके उसरूपमेंमनुष्य बुद्धिसेघोड़ा व गदहा व खच्चर व ऊंट नखसे व हरिणआदिक पशु जंवासे व पक्षीआदि जिह्वासे व गन्धर्व व विद्याधर व चारण व अप्सरा स्वरसे व भेड़ियाआदि पैरके फिल्लीसे व यज्ञादिक परमेश्वरके मर्मसे उत्पन्नहुये हैं सो मनुष्यकेतनमें ज्ञानरहताहै व दूसरीयोनि पशु व पक्षीआदिमें ज्ञान नहींहोता इसतरह जो परमेश्वरका विराट्रूप है उसीको तुम ध्यानकरो जब इसमें तुम्हारा मनलगजावे तब पीछे से छोटेस्वरूपका ध्यानकरना ॥

दूसरा अध्याय ॥

शुकदेवजीका यहवातवर्णन करना कि परमेश्वरने अपने भक्तोंके वास्ते जो उनके नामपर बनमें जाकर उनका भजन करते हैं सब खाने व पहिरने का पदार्थ तैयार कररक्खा है ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् पहिला रस्ता परमेश्वरके ध्यान करनेका यही विराट् रूप है पर जब पहिले अपना मनसंसारी मायासे विरक्तकरलेवे तब नारायणजी की तरफ मनलगताहै व परमेश्वरका ध्यान करनेसे संसारीमाया छूटिजाती है और जो लोग बुद्धिमान् व ज्ञानी हैं वह आठोपहर हरिचरणों में ध्यान लगाकर संसारी व्यवहार से कुछ प्रयोजन नहीं रखते कदाचित् तुमको इसबातका शोचहो कि जबकोई मनुष्य गृहस्थी छोड़के बनमें जाकर नारायणजीका तप व स्मरणकरै तो उसको भोजन व वस्त्र व बर्त्तन बिना दुःखहोगा तब परमेश्वरके भजन व ध्यानमें उसका मन किस तरह लगैगा सो नारायणजीने ऋषीश्वर व तपस्वी अपने भक्तों के वास्ते जो लोग बिरक्तहोकर उनके मिलने के लिये तप व योग करते हैं पहिलेसे सबबस्तु तैयारकर रक्खा है संसारमें मनुष्यको बड़े परिश्रमसे सबबस्तु प्रयोजनकी मिलती है व बनमें परमेश्वरकी कृपासे बिना परिश्रम सबपदार्थ प्राप्तहोते हैं पृथ्वी सोनेके वास्ते तैयार समझकर वहां सुखसे सोवै नींद आवने उपरांत जिसतरह पृथ्वीपर सुख होता है उसी तरह शय्या व तोशकपरभी समझना चाहिये व तकियेकाकाम टिहुनीसे निकलजाताहै व अनेक तरहके फल व मेवे खानेवास्ते बनमें लगेरहतेहैं उनको आनन्दसे खायाकरेउनसे पेट भरारहकर दूसरीबस्तु के खानेकी इच्छा न होगी व उनको बर्त्तन भी न चाहिये उनके दोनों हाथोंसे अच्छा दूसरा बर्त्तनभी न होगा जिसको चोर व ठगलेने व लूटने व पुराने होनेका डरनहीं रहता व कपड़ा पहिरने के वास्ते वृक्षकी छाल उत्तम है जिसके फटने व धुलानेका कुछ शोचनहीं रहता कदाचित् छालसे शरीर छिपाया न जावे जाड़ा मालूम हो तो नगर व गाँवके निकट घूरोंपर लत्ते व चिथडे पड़े रहते हैं उनको उठालाकर पानीसे धोके अपना तन छिपालेवे व पहाड़ोंकी दरोंको रहने

वास्ते स्थान समझै व तालाब नदी आदिकमें पानी पीकर उसीमें स्नानकरे व जो मनुष्य बनमें जाकर परमेश्वरकी शरणमें रहता है शेर व भालू आदिक जीवोंसे उसकी रक्षा परमेश्वर करते हैं व हे राजन् हमकुछ लालच व अपने प्रयोजनके वास्ते तुम्हारे पासनहीं आये नारदजीने हमारे ऊपर तुम्हारा बोझा डालदिया था इसलिये मैं आयाहूं और जो मनुष्य परमेश्वरके भजन व ध्यानसे बिमुखरहता है उसे वैतरणी नदी व नरकोंका दुःख अवश्य भोगना पड़ेगा और जो लोग संसारी मायासे बिरक्त होकर परमेश्वर के ध्यान व स्मरणमें रहते हैं उनको गृहस्थी के पास कि वहलोग अपने द्रव्यके घमंडमें अन्धेरहते हैं भोजन व वस्त्र मांगनेके वास्ते जाना क्याप्रयोजन है धनीपात्रलोग उनको पहिचान नहींसक्ते हरिभक्तोंका सब अर्थ परमेश्वर निकालदेते हैं सो मनुष्य को यहबात समझकर सन्तोष रखना चाहिये कि जिसनारायण ने मुझे उत्पन्न किया वही जीविका देनेवाले हैं कभी भूंखानहीं रक्खेंगे जब मैं माता के पेटमें था तब वही परमेश्वर मुझे भोजन पहुंचाते थे अब किसतरह मैं भूखारहूंगा व उन्हीं परमेश्वरने उत्पन्नहोनेसे पहिले हमारी माताकी छातीमें मेरे पीनेके वास्ते दूध तैयार कररक्खाथा सो थोड़ासा बिचारकरके समझना चाहिये कि कुचोंमें सब मांसरहताहै बिना परमेश्वर की दया व कृपाउनमें दूध किसभांति उत्पन्नहुआ व यह हाल देखनेपर भी जो मनुष्य संतोष न रक्खे व परमेश्वर को भूलकर खाने पहिरने का शोचकरे उसे मूर्ख समझना चाहिये देखो जो कोई गाय व बैलआदि पशुओंको अपने द्वारपर बांधते हैं वहलोग उनके घास व दानेका शोच रखते हैं नारायणजी जो सबकी जीविका देनेवाले हैं वह किसतरह अपने दासकी चिन्ता छोड़कर उसे भूखा रक्खैंगे उससमय तो परमेश्वरने तुझको नहीं भुलाया जब तू एक बूंद पानीके समानथा फिर परमेश्वरने अपनी महिमासे तेरे हाथोंमें दश अँगुली उत्पन्नकरके दोनों कांधोंपर दो भुजा बनाईं अब तू किसतरह जानता है कि नारायणजी मुझे भूलजावेंगे हे राजन् किसकी सामर्थ्य है जो परमेश्वरके गुणोंका हाल जानसके पहिले नित्य श्वासा चढ़ावनेका साधनकरै व योगाभ्यासके साथ अपनाप्राण ब्रह्मांडपर चढ़ावे व फूल कमलका ध्यान हृदयमें कि जिसमें हजारपत्ते होकर मुँह उनका नीचे है अपने ध्यानमें उसफूलका मुख ऊपरको करै यह साधन करनेसे उसकामन इसतरह निर्मल होजायगा जिसतरह लोहा मुर्चा लगाहुआ सिकलकरने से चमकने लगता है और जबमन शुद्ध होजायगा तब उसफूल में उसको परमेश्वरका छोटा स्वरूप दिखलाई देकर ऐसा सुख मिलेगा जो उसने कभी नहीं पायाथा और उस सुखपर वह मोहित होकर दूसरी वस्तुकी चाहना नहीं रक्खेगा जब वह इसपदवी को पहुंचा तब अच्छा योगीश्वरहुआ फिर उसको कुछ यज्ञ व तपआदि करनेका प्रयोजन नहीं रहता और वह परमेश्वरका चमत्कार सब जीवोंमें एकसा देखकर किसीके साथ शत्रुता व

मित्रता नहीं रखता सो हे राजन् पहिले तुम विराट्‌रूपका ध्यानकरो जब तुम्हारामन स्थिर होजावे तब अपने हृदय में उसी कमलका ध्यान लावो उस फूलमें तुमको अंगुष्ठ प्रमाण चतुर्भुजीरूप परमेश्वरका श्यामरंग नीलमणि ऐसा चमकताहुआ शङ्ख चक्र गदा पद्म चारों हाथमें लिये जड़ाऊ किरीट व मुकुट मस्तकपर व मकराकृतकुं- डल कानों में व बैजयन्ती माला व बनमाल गलेमें व नवरत्न जड़ाऊ भुजापर व कर्द्धनी घुंघुरूदार कमरके बीच व पैरोंमें कड़ापहिने व पीताम्बर बांधे उपरना ओढ़े हुये लम्बी भुजा बांकेनयन तापहारिणी चितवन मन्द मन्द मुसकराते छातीमें भृगुलता का चिह्न तुमको दिखलाई देवैगा कदाचित् सम्पूर्णरूपका ध्यानतुमसे एकबार न हो सके तो पहिले चरणोंसे आरम्भकरके एकएक अंगध्यान में लाओ धीरे २ सबरूप तुम्हारे ध्यानमें आजावेगा जब अच्छीतरह वहरूप तुम्हारे ध्यान में आजावे तब तुम श्वास खींचनेकी साधनाकरके अपनाप्राण मस्तकपर चढ़ालेना जिस मनुष्य का प्राण ब्रह्मांडतोड़कर निकलजावे वह जीव सूर्यमंडल में होकर बैकुंठ पहुंचता है फिर उसका आवागमन नहीं होता जो लोग यज्ञ व तप व दान व तीर्थादिककरके अपना तन त्यागकरते हैं वह चन्द्रमाके द्वारपरहोकर देवलोकादिमें अपने कर्मानुसार जाते हैं व अपने पुण्यकेप्रमाण वहांकासुखभोगकर उनको फिर संसारमें जन्मलेनापड़ता है आवागमनसे नहींछूटते व मकरसेलेकर मिथुनकीसंक्रांति छःमहीनेतक सूर्यउत्तरायण रहतेहैं सो यह देवतोंकादिनहै इसछःमहीनेके मरनेवालेमनुष्य सूर्यकेद्वारपरहोकर बैकुंठ को जाते हैं व कर्कसे धनकीसंक्रांति छःमहीनेतकसूर्य दक्षिणायन समझनाचाहिये यह देवतोंकीरात्रि है इस छःमहीनेकेमरनेवाले लोग चन्द्रमाकेद्वारपरहोकर देवलोकादि में जैसाकर्मकियाहो जातेहैं वहांकासुख अवधिपर्य्यन्त भोगकर उनको फिर संसार में जन्मलेनापड़ताहै दोनोंतरहके धर्मकीराहहमने तुमसेकहदिया इसकेसिवाय कोईतीसरी राहनहीं है हेराजन् जो कोईमनुष्यके तनुमें परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरके अपनी मुक्ति नहींबनाता उसको फिर चौरासीलाखयोनिमें जन्मलेनापड़ताहै जो कोई इसतनुमें परमेश्वरको नहींपहिचानता व आयुर्द्दायअपनी खेलकूद व संसारीमायामेंफँसकर नष्ट करदेताहै उसकी वहगतिसमझनाचाहिये जिसतरह कोईमनुष्य बड़ेपरिश्रमसे ऊंचे पहाड़परचढ़गया तब उसकोथोड़ासापरिश्रम अपनामनोरथमिलनेवास्ते रहजाताहै उसी तरह जब जीवने मनुष्यकातनुपायातो जानों वह ऊंचेपहाड़परचढ़चुका कदाचित् उसने इसतनुमें थोड़ासापरिश्रम भजन व स्मरण परमेश्वरकाकरके अपनाकाम नहींसवांरा तो जानो वह उसपहाड़सेनीचे पृथ्वीपरगिरपड़ा फिर चौरासीलाखयोनिमें जन्मपाकर उसपहाड़केऊपर वह पहुँचसक्ताहै जिसने जन्मअपनाव्यर्थखोया वह मरनेकेउपरान्त मनमें बहुतपछताकरकहेगा देखो मैंने क्याबुराकामकिया जो परमेश्वरको नहींजाना व संसारीमायामोहमें लिपटकरनष्टहुआ फिरवहबातहाथसेजातीरहेगी इसलियेमनुष्यको

यह ध्यान रखनाचाहिये कि प्रतिदिनआयुर्द्दाय मेरी क्षीणहोकर मृत्युकेदिन निकटचले आते हैं जो दिन बीतगये वह फिर आनहीं सक्ते यहबात आठोंपहर मनमें बिश्वास रखकर एकक्षणभी परमेश्वरको न भुलावे व नारायणजीके भजन व स्मरणमें अपना दिनकाटे व जिसने मनुष्यके तनुमें परमेश्वरका भजननहीं किया वह पशुके समानहै जिसतरह ऊंट व बैलकी पीठपर बोझालादकर एकसमय उसे दाना व घास देते हैं और वह उसीमें प्रसन्नरहकर दिन अपना काटताहै और यहनहीं जानता कि कहां सूर्य निकलते हैं व डूबते हैं वहीगति उसमनुष्यकी समझना चाहिये व हे राजन् परमेश्वर थोड़े ध्यान करने में मनुष्यसे प्रसन्नहोकर उसको मुक्तिदेते हैं व श्रीकृष्णजीने गीतामें अर्जुनसे कहाहै कि चारिसमयमें मनुष्यलोग अवश्यमेरा स्मरण करते हैं एक जब मनुष्यरोगी होकर दुःखपाता है दूसरे जिसको मेरे मिलनेकी इच्छाहो तीसरे जब किसीका कुछकाम अटके उसे कोई बस्तुकी मिलनेके वास्ते इच्छाहो चौथेज्ञानी जो मुझे पहिचानकर मेरे भेदको पहुंचा है वह लोग अपना २ अर्थ सिद्धहोनेके वास्ते मेरास्मरण व ध्यानकरते हैं सो मैं चारोंतरहके याद करनेवालों से प्रसन्नहोताहूं पर ज्ञानीसे अधिक कि वह सदा मेरे ध्यानमें रहता है हे परीक्षित तू मनमें कुछसन्देह मतकर इससात दिनमें अवश्य तेरी मुक्तिहोगी हम श्रीमद्भागवतअमृतरूपी कथाकहते हैं तुम चित्तलगाकरसुनो भवसागरपार उतरजावोगे ॥

तीसरा अध्याय ॥

शुकदेवजी महाराजका यह हाल बर्णनकरना कि किसदेवता की आराधना करने से कौन फल मिलता है ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसेकहा जब राजापरीक्षितने यहसबहाल परमेश्वर के ध्यानकरनेकासुना तब घबड़ाकर मनमेंकहा किसतरहसे यहस्वरूपनारायणजीका मेरेध्यानमेंआवेगा इसीचिन्तामें राजाकामुखमलीनहोगया तब शुकदेवजीने राजाको उदासदेखकर ऐसाबिचारा कदाचित् राजाकेमनमें कोई इच्छारहगईहो इसकारण राजा का मुख उदासहोगयाहै सो मैं अपनीबातोंसे इसकेचित्तकाहाल मालूमकरलेताहूं यह विचारकर शुकदेवजीबोले हेराजन् जो कोई अपनासत्यबढ़ायाचाहै वह ब्रह्माजीकी व जो अपनीइन्द्रियोंको पुष्टकियाचाहै वह राजाइन्द्रकी व जो प्रजा अधिकहोनेकी इच्छा रक्खै वह दक्षप्रजापतिकी व जो द्रव्यकी इच्छारक्खे वह देवीजीकी जो अपनेरूपका तेजबढ़ायाचाहे वह अग्निकी व अन्न व हाथी व घोड़ाआदि मिलनेकी चाहनारक्खे वह आठ बसुदेवताकी व जो कामदेवकीवृद्धिचाहै वह रुद्रकी व जो कोई अपने तनुमें अधिकबलहोनेकी इच्छारखताहो वह इलादेवीकी व सुन्दरताई अधिकचाहै वह गन्धर्वों की व जिसे सुन्दरस्त्रीकी इच्छाहोतो उर्वशीअप्सराकी व जो मनुष्य यशकी इच्छारखताहो

वह जगत् भगवान्की व जो विद्याचाहे वह महादेवकी व जो अपने परिवारकी बढ़तीचाहे वह दिव्य पितरोंकी व जिसको अपने कुल व परिवारकी रक्षाकरनीहो वह पुण्य जीवोंकी व जिसको राजगद्दीकी इच्छाहो वह मनुकी व जोकोई अपनेशत्रुकानाश चाहे वह निर्ऋति राक्षसकी व जो कोई अपने शरीरमें वीर्यबढ़नेकी इच्छा रखताहो वह चन्द्रमाकी व जो कोई अपनी आयुर्द्दाय अधिक चाहे तो अश्विनीकुमारकी व जो स्त्री सुन्दरपति चाहे वह पार्वतीजीकी व जिसको किसी बस्तुकी इच्छा न होवे वह परमपुरुष नारायणजीकी व जिसकिसीको सबबस्तु कि जिसका बर्णन ऊपर होचुका है व सिवाय उसके और जिसबस्तुकी इच्छाहोवे वह श्रीनारायणजीकी पूजाकरै उन की कृपासे सब मनोरथ पूर्ण होतेहैं सो हे राजन् जो मनुष्य अपना परलोक बनानेके वास्ते परमेश्वरको नहीं यादकरता उसे कुत्ता व गदहा आदि पशुके समान समझना चाहिये जिसतरह शूकर बिष्ठाखाताहै उसीतरह मदिरा पानकरनेवाले मनुष्यको समझो जिस जीवने मनुष्यका तनुपाकर अपने कानों से परमेश्वरकी कथा व लीला व कीर्त्तन नहीं सुना और लोगोंकी निन्दा सुनने में मन लगाया उसका कान बिच्छू व सांपके बिलके समानहै व जिसने जिह्वासे परमेश्वरका नाम नहीं जपा उसकी जिह्वा मेढ़कके समान जानना चाहिये जो वृथावर्षाऋतुमें चिल्लायाकरताहै व जिसका शिर देवस्थान या ब्राह्मण व साधुके आगे दंडवत् करनेके वास्ते नहीं झुका उसका मस्तक बोझके समान तनुपर समझना उचितहै व जिसने धनपाकर अपने हाथसे दान नहींदिया व हाथोंसे नारायणजी व देवता व साधु व ब्राह्मणकी सेवा व पूजा नहीं की वहहाथ काठकी करछी समान जानना चाहिये व जिनपैरोंसे तीर्थयात्रा व दर्शन करने देवताओं के व साधु व ब्राह्मणके नहीं गया वे पांव वृक्षोंकी डालीसमान हैं व जिसने आंखोंसे प्रत्यक्ष या ध्यानमें परमेश्वर व देवताका दर्शन नहीं किया उन आंखोंको मोरपंख समान समझना चाहिये व जिस मनुष्यने परमेश्वरकी चढ़ीहुई तुलसीका पत्ता व साधु व ब्राह्मणोंके चरणोंकी धूरि अपने शिरपर श्रद्धा व प्रेमसे नहीं चढ़ाया वहलोग जीतेहुये मृतकके समान हैं व जिसकिसीको हरिकथा व लीला व भजन सुनकर करुणाके जगह रोना न आवै उसका हृदय पत्थरके समान समझना चाहिये ॥

चौथा अध्याय ॥

राजापरीक्षितका शुकदेवजी महाराजसे कथा व कीर्त्तन परब्रह्म परमेश्वर के बर्णन करने के वास्ते विनय करना ॥

सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो जब राजापरीक्षित को श्यामसुन्दर के ध्यानका हाल व भागवतपुराणकी महिमा सुनकर सब शोचमनसे दूरहोगया तब उसने बहुत आनन्द

होकर राज्य व स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति छोड़दी व शुकदेवजीसे हाथ जोड़कर कहा महाराज जो कुछ आपने बर्णनकिया उसपर बिश्वासकरके मुझे बड़ाहर्ष प्राप्तहुआ व मैंने ध्यान अपना नारायणजीके चरणमें लगाया मुझको आज व सात दिनमें मरना दोनों बराबरहैं इसबातका डर मेरे मनसे जातारहा आपका सबपुराण व शास्त्र देखा व पढ़ाहुआ है व ब्रह्मा आदिपुरुषका हाल आप अच्छीतरह जानते हैं जिसतरह नारायणजी इससंसारको रचकर पालन करने के उपरान्त फिर उसका नाशकरदेते हैं वहहाल सुनाइये व परब्रह्म परमेश्वरने सगुण अवतार लेकर जोजो लीला संसार में की हैं वह बर्णन कीजिये यहबात सुनतेही शुकदेवजी प्रसन्नहोकर पहिले श्यामसुन्दर के चरणों का ध्यान जिनकी पूजाकरने व नामलेने व कथा सुननेसे मनुष्य पवित्र व ज्ञानी होताहै करके इसतरहपर स्तुतिकी हे दीनानाथ जितने योग व यज्ञआदिहैं बिना कृपातुम्हारे अपनाफलनहीं देसक्ते सो मैं उनपरमेश्वरको दण्डवत्करताहूं जिनके चरणोंका ध्यान बड़ेबड़े योगी व मुनि व सनकादि व ब्रह्मा व महादेवआदि देवता दिन रात्रि अपने हृदयमें रखते हैं व उनके चरित्र व लीलाको नहींजानते व जिनकीदया व कृपासे शबरी व गृद्ध व गोपियां आदिक छोटे २ जीव मुक्तिपदवीपर पहुंचे व जो लक्ष्मीजीके पति हैं उनको नमस्कार करताहूं वही परमेश्वर अपनीकृपासे मेरी बुद्धिमें प्रकाशकरके मेराबचन सत्यकरैं व उनकी शक्तिसे मुझे उनकाचरित्र कहनेके वास्ते सामर्थ्य प्राप्तहो फिर शुकदेवजीने वेदव्यासजी अपने पिता व गुरुके चरणोंका ध्यान व दंडवत्करके कहा हे राजन् कथा श्रीमद्भागवत जो बैकुंठनाथने ब्रह्मासे कही व ब्रह्माने नारदमुनिसे बर्णनकिया व नारदमुनिने व्यासजीको बतलाया व व्यासजी हमारेपिताने मुझे पढ़ायाथा वहसब मैं तुझे सुनाताहूं जो बात तुम सुननाचाहतेहो वह सबहाल उसीमें लिखाहै मनलगाकर सुनो ॥

पांचवां अध्याय ॥

शुकदेवजीको कथा श्रीमद्भागवत व ब्रह्मा व नारदका संवाद आरम्भकरना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् किसीयुगमें एकदिन नारदमुनि ब्रह्माजी अपने पिताके पासदण्डवत् करनेकेवास्ते गये उससमय ब्रह्माजी परमेश्वरकेध्यानमें बैठेथे नारदमुनिने उनकोदेखकर अपनेमनमें इसबातका संदेहकिया देखोसबसंसार उत्पन्नकरनेपरभी यह किसकाध्यान लगायेहैं इसध्यानकरनेसे मालूमहोताहै कि कोई इनकाभी मालिकहोगा जिसका यहध्यानकरते हैं उसकाहाल बूझनाचाहिये यहबात बिचारकर नारदजीने ब्रह्मा से ध्यानछूटनेके उपरान्त पूछा आपकहतेहैं जो कुछ जिसके भाग्यमेंलिखा है वहीबात होगी और मैं देखताहूं कि आप इसतरह सबसंसार रचकर फिर उसका नाशकरदेते हैं जिसतरह मकड़ी अपनेमुंहसे डोरा निकालकर फिर उसको खाजातीहै सो आपकेकहने

व ध्यानकरनेसे मुझे ऐसाजानपड़ता है कि आपसेभी कोईबड़े हैं जिसकाध्यानकरके उसकी आज्ञानुसार सबकाम सृष्टिरचनेका करतेहो सो जिसकाध्यान आपकरतेहैं उसका नाम व गुण मुझेभी बतलादीजिये यहबात सुनकर ब्रह्माजीबोले हे नारदजी तुमधन्यहो जो परमेश्वरकाचरित्र तुमने हमसेपूछा नारायणजीकीमाया ऐसीप्रबलहै जो तुम मुझको जगत्का कर्त्ताकहतेहो मैं इसबातसे बहुतलज्जितरहताहूं सो हे नारद मुझसे बड़े व मेरे मालिक भगवान्जीहैं जिनसे अनेकब्रह्मा व ब्रह्मांडप्रकटहोकर सारासंसार उन्हीं की मायासे उत्पन्नहोता है व मैंभी उसीपरमेश्वरकी दया व कृपासे सबजगत्की रचना करताहूं देवता मनुष्यको उन्हींके प्रतापसे बुद्धि व ज्ञानप्राप्तहोताहै सुनो जबनारायण जीकी नाभिसे कमलका फूल निकलकर हम उसफूलसे प्रकटहुये. तब मैंने बहुतशोच करके बिचारा कि कहांसे उत्पन्नहोकर यहांआयाहूं जबमुझे कुछहाल इसकानहींमालूम हुआ तबउन्हींपरमेश्वरकाध्यान करनेसे मुझेज्ञानप्राप्तहोकर यहबातजानपड़ी कि नारायण जीने मुझेउत्पन्नकियाहै व सूर्य्य व चन्द्रमा व तारागणआदिक उन्हींके तेजसेप्रकाशित हैं व जितनीबस्तुसंसारमें हैं सबउन्हींकी कृपा व मायासे प्रकटहुई हैं और यहजीव सबके शरीरमें उन्हींकाप्रकाशहै व नारायणजी अपने तेजसे आपप्रकाशित हैं उसमें किसी दूसरेका तेजनहीं है व उनकेआदि व अन्त व भेदको कोई पहुंचनहींसक्ता कि उसपर-ब्रह्म परमेश्वरकाहाल बर्णनकरनेसकै पर नारायणजीकी कृपासे जितनामुझे मालूम है सो तुमसेकहताहूं सुनो जब नारायणजीको इसबातकी चाहहोती है कि हम अकेले हैं बहुतसे रूपहोजावें तब उनकी इच्छासे बहुतरूपहोजाते हैं जबमैं कमलके फूल से उत्पन्नहुआ तबमुझको नारायणजी ने आज्ञादी कि तू संसारकी रचनाकर उससमय मैंने मनमें विचारकिया कि किसतरह संसारकी उत्पत्तिकरूं तब उन्हीं नारायणजीकी मायासे सात्त्विक राजस तामस तीनगुणप्रकटहुये और मुझको अपने हृदय में बुद्धिका चमत्कारदिखलाईदिया तब मैंने उन्हीं तीनों बस्तुकीसामर्थ्य से सारासंसार व पांचो तत्त्वउत्पन्नकरके पृथ्वीकोरचा व मिट्टी व आग व पानी व हवा व आकाश इनपांच तत्त्वोंसे सबजीवोंकाशरीरबनाया और जो पृथ्वी मैंने कमलकेपत्तेसेबनाईथी वह पानी परनहीं ठहरतीथी हज़ारबर्षतक बराबर हिलतीरही जबहमने नारायणजीसे पृथ्वीके हिलनेकाहालकहा तब उसी आदिपुरुषने अपनीशक्तिसे पृथ्वीको पानीपर स्थिर कर दिया तो हिलना उसका बन्दहोगया उसीशक्तिको ब्रह्मांड व विराट्रूप कहते हैं व वेदमें लिखाहै कि उसरूपके हज़ारशिर व हज़ारहाथ व हज़ारपांव व हज़ारआंख व हज़ार कान हैं ॥

छठवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीको नारदजीसे नारायणजीके विराट्रूप का हाल कहना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् ब्रह्माजीने नारदसेकहा नारायणजीके विराट्रूपकाहाल इसतरहपरहै कि सातोंलोक ऊपरकेकमरकेऊपर व सातोंलोक नीचेकेकमरसे नीचे उनकातनु समझनाचाहिये व अग्नि मुख व वृक्ष शरीरकेरोम व दशोंदिशा कान व समुद्र पेट व सूर्य्य आंख व पहाड़ तनुकीहड्डी व नदियां शरीरकीनस व हवा श्वासा व इन्द्रादिकदेवता भुजा व अश्विनीकुमारदेवता नाक व सबसुगंध नाककाछेद व आकाश आंखोंकागोलक व दिनरात पलकभांजना व जल पैर व जगत्कास्वाद जिह्वा व यम-राज दांत व माया हँसी व लज्जा ऊपरकाहोंठ व लालच नीचेकाहोंठ व धर्म छाती व अधर्म पीठ व मेघघटा शिरकाबाल व बर्षाकापानी बीर्य उनके विराट्रूप में समझना चाहिये सिवायइसके और सबव्यवहार जगत्के इसीरूपमेंबर्त्तमान हैं इसलिये तपस्वी व ऋषीश्वरलोग नारायणजीकाप्रकाश सबजगहएकसा समझकर किसीको दुःखनहीं देते व हरावृक्षकाटनेसे अवश्यसमझनाचाहिये कि परमेश्वरको दुःखपहुँचेगा संसारमेंहानि व लाभ यश व अपयश दुःख व सुख परमेश्वरकीइच्छा से होताहै व जोकुछ श्राद्धादिकमें पितरोंकेनाम व यज्ञादिक में देवतोंकेनामपर संसारीजीवदेते हैं वहउसीपरमेश्वरकोपहुंचता है व सबजीवजड़ व चैतन्यकेउत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाले वहीअबिनाशीपुरुषहैं उन परकोईदूसरामालिकनहीं है हे नारद जब संसाररचनेकीआज्ञा मुझेमिली तब मैंने नारायण जीकीदया व कृपासे दक्षप्रजापतिको उत्पन्नकिया उससेबहुतमनुष्यहुये व उन्हींनारायण जीकेचरणोंकाध्यान अपनेहृदयमेंरखनेसे मुझेसामर्थ्य संसाररचनेकी है और वहीपरमे-श्वर आदि व मध्य व अन्तमें सदा एकतरहपररहकर घटने व बढ़ने व पुरानेहोने से रहितहैं व कोई संसारीबस्तु उनकेरूपसे बाहरनहीं है व बुद्धि इतनीसामर्थ्य नहींरखती जो उनकीस्तुतिकरसकै व नारायणजीने अपनीइच्छा व लीलाकरने व संसारीजीवों के भवसागरपारउतरने के वास्ते मर्त्यलोकमें चौबीसअवतार धारणकिये हैं सो मनुष्य को चाहिये कि सदा उनअवतारोंकीलीला आपसमें चर्चारखकर बीचध्यानपरमेश्वरके व नाम व स्मरणमें लीनरहैं तब अन्तःकरण उनकाशुद्ध व पवित्रहोकर उसमें परमे-श्वरकाप्रकाशचमकै व आवागमनसे छूटकर भवसागरपारउतरजावें देखो उन्हीं परमे-श्वरकाभजन व स्मरणकरनेके प्रतापसे ऋषीश्वर व तपस्वीलोग जो कुछ किसीको शाप या आशीर्बाददेते हैं वहबात उसीसमयहोजाती है ऋषीश्वर व महात्मालोग मुझसे वेदादिकसीखकर संसारमेंप्रकटकरते हैं व परमेश्वरके बरदानदेनेसे मेराबचन झूठानहीं होता व मनमेरा पापकीतरफ़नहींजाता व मेरीइन्द्रियां अधर्मकीचाहना नहींकरतीं सो उसीपरमेश्वरका ध्यानकरने से यहतीनगुण मेरे में प्रकटहुये हैं व परमेश्वरने सबअंग

मनुष्यका एकएकदेवताको सौंपदियाहै सो एकएकरूप सबदेवतोंका अपनेलोक में रह कर उनकाप्रकाश सूर्य्यकेसमान जिसतरहपानीभरे बर्तनोंमेंपड़ताहै उसीतरह सबजीवों के तनुमें समझनाचाहिये व तीसरा उनकाप्रकाश बीचमूर्त्ति व देवमन्दिरों में रहता है व सूर्य्यकाप्रकाश व चन्द्रमाकीकिरणें पड़नेसे चांदी व सोना व तांबाआदिकी खानि जगत्‌मेंप्रकटहोती हैं व जो पाप व अधर्म मनुष्यसेहोते हैं उनकेप्रायश्चित्त धर्मशास्त्र में लिखे हैं यहसबहालकहकर ब्रह्माजीने जो चारश्लोक मूल श्रीमद्भागवतके नारायण-जीके मुखारबिन्दसे सुनेथे वह चारों श्लोक नारदजीसे कहकरबोले हे नारद वह परब्रह्म परमेश्वर निरंकाररूप किसीके देखनेमें नहींआवते व उनको कोई हाथसेपकड़ने नहीं सक्ता व किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो उनके सबअवतारोंकाहाल वर्णनकरसके किसवास्ते कि सबजीवों में उन्हींकी ज्योतिका प्रकाशहै मैं परब्रह्मपरमेश्वरके चौबीसों अवतारोंकाहाल जो सगुणरूप संसारमें धारणकियेथे अपनी बुद्धिप्रमाणकहताहूं ॥

सातवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका नारदजीसे चौबीसों अवतारोंका हाल वर्णनकरना ॥

ब्रह्माजीने नारदजीसेकहा कि पहिलाअवतार सनकसनन्दन व सनातन व सन-त्कुमारका मेरेनाकसेउत्पन्नहुआहै कि वहलोग तप व ध्यान परमेश्वरमें लीनरहतेथे उस तपकेप्रतापसे कईकल्पबीतनेपरभी सदा पांचवर्षकीअवस्था के बनेरहतेहैं दूसराअवतार बाराहजीका इसलिये धारणकिया कि जबमुझे संसाररचनेके वास्ते आज्ञाहुई तब मैंने नारायणजीकी कृपासे कमलकेपत्तेकी पृथ्वीबनाई सो हिरण्याक्षदैत्य वहधरती उठाकर पातालमें लेगया जब मैंने बैकुंठनाथसे बिनयकिया कि बिना मेरे धरतीउत्पन्नकियेहुये जीव कहांरहेंगे तब उन्होंने बाराहरूपधरकर पातालमेंजाके हिरण्याक्षकोमारडाला व पृथ्वीकोबाहरलाकर अपनीमहिमासे जलपरस्थिरकिया सो यहधरती कर्मोंकाफलदेने वाली है जैसाकर्म शुभ या अशुभ कोईकरै वैसाफलपावे तीसराअवतार यज्ञपुरुषका लेके संसारीराजाओं को यज्ञकरने के वास्ते राहबतलाकर कृतार्थकिया चौथाअवतार हयग्रीवका धारणकरके पातालमेंजाकर मधुकैटभ दैत्यको मारडाला और जो वेद वह दैत्य चुरालेगयाथा उसेलाकर मुझेदिया पांचवांअवतार नारायणजीने मूर्त्तिनाम कन्या धर्म ऋषीश्वरसे धारणकरके बदरीकेदार स्थान उत्तराखंडमें बैठेहुये इसइच्छासे तप करतेहैं जिसमें संसारीलोग मुझे तपकरते देखकर आपभी परमेश्वरका तप व स्मरण कियाकरें छठवांअवतार कपिलदेवमुनिका लेके देवहूती अपनीमाता को सांख्ययोग ज्ञान सिखलाकर मुक्तिदिया सातवां अवतार दत्तात्रेयजीका लेकर राजायदुको ज्ञान सिखलाया जिसके प्रतापसे वह मुक्तहुआ व दत्तात्रेयजीने चौबीस गुरु कियेथे उनका हाल एकादशस्कन्धमें लिखाहै आठवां अवतार ऋषभदेवजीका लेकर सरावगी व जैन

धर्मियोंकी जाति संसारमें प्रकटकी नवांअवतार राजापृथुका लेकर वेन अपने पिताको नरकजानेसे बचाया व गऊरूपी पृथ्वीको दुहकर सब औषधियां दूधकेसमान उसमेंसे निकालीं व पहाड़ोंको जो जगह २ पृथ्वीछेकेथे उठाकर उत्तराखंडमें रखदिया व पृथ्वी संसारीजीवोंके रहनेवास्ते खालीकरके नगर व गांवबसाया दशवां मत्स्यावतार लेकर राजासत्यव्रतको प्रलयका तमाशा दिखलाया ग्यारहवां कच्छपअवतार धारणकरके समुद्रमथते समय मन्दराचलपहाड़ अपनीपीठपर लेकर चौदहरत्न उसमेंसे निकाले बारहवां अवतार धन्वन्तरि वैद्यका लेकर रोगोंके नाशकरनेके वास्ते औषधी समुद्रसे निकालीं तेरहवांअवतार मोहनीका धरकर दैत्योंको अपनेरूपपर मोहितकिया व अमृत का कलशा जो उन्होंने धन्वन्तरि वैद्यसे बिनादेवतोंके भागदेनेके छीनलियाथा लेकर वहअमृत देवतोंको पिलाया चौदहवां नृसिंहअवतार धारणकरके हिरण्यकशिपु दैत्यको मारा पन्द्रहवां बामनअवतारधरके तीनपग पृथ्वी बलिसे दानलेकर देवताओंको दिया सोलहवांअवतार हंसपक्षीका लेकर सनत्कुमारको ज्ञान सिखलाकर गर्ब उनका तोड़ा सत्रहवांअवतार नारायण नामलेकर ध्रुवभक्तको दर्शनदिया अठारहवां हरिअवतार धरकर गजेन्द्रका प्राण ग्राहसे बचाया उन्नीसवांअवतार परशुरामजीका लेकर जो जो दुष्ट पृथ्वीपर हरिभक्तोंको दुःखदेतेथे उन्हें मारडाला व इक्कीसबार क्षत्री राजाओंको दूसरे क्षत्रियोंसमेत मारके पृथ्वी उनकीछीनकर ब्राह्मणोंको दानकरदिया बीसवांअवतार रामचन्द्रजीका धारणकरके पापीरावणको दूसरे राक्षसोंसमेत जो गऊ व ब्राह्मणको दुःख देते थे मारडाला व लंकाकाराज्य विभीषणकोदेकर हनुमान्जीको यशदिया व इक्कीसवांअवतार वेदव्यासजीका धारणकरके वास्ते भवसागरपार उतरने संसारीजीवोंके चारवेद व महाभारत और अठारहपुराण बनाये व बाईसवांअवतार श्रीकृष्णजीका लेकर कौरव व पांडवोंसे महाभारत कराया व कंस व कालयमन व जरासन्धआदि अधर्मी राजाओंको मारकर पृथ्वीका भारउतारा व संसारमें बहुतसीलीलाकी जिसका बर्णन दशमस्कन्धमें लिखाहै व तेईसवां बौद्धअवतार लेकर दैत्योंका यज्ञकरना वारन किया व कलियुगके अन्तमें चौबीसवांअवतार कलंकी धारणकरके तलवारहाथमें लिये हुये नीलेघोड़ेपर सवारहोकर अधर्मी व पापीलोगोंको मारैंगे व सतयुगका कर्म संसारमें आरम्भकरके धर्मकी वृद्धिकरैंगे हे नारद चौबीस अवतारकाहाल अपनी बुद्धिके अनुसार हमने तुमसेकहा जो मनुष्य अज्ञानीहोकर परमेश्वरकोअच्छीतरहसे न जाने उस के वास्ते प्राप्तहोने ज्ञान व पावनेमुक्ति इनसबअवतारोंकी कथा व लीला अवश्यसुनना चाहिये व जिसमनुष्यने ज्ञानीहोकर सबजीवों में परमेश्वरकाप्रकाश एकसादेखा उसे ब्रह्मज्ञानीजानकर जीवन्मुक्तसमझना उचितहै हे नारद मैं ब्रह्मा संसारकी रचनाकरने वाला व विष्णुजी सबजीवोंकापालन व महादेवजी सबकानाशकरते हैं यह तीनों अवतारभी नारायणजीके हैं व सारासंसार परमेश्वरकीमायासे महाजालमें प्रीतिसे अपनी

स्त्री व लड़के व द्रव्यमें फँसारहताहै जिसमनुष्यपर नारायणजी बड़ीकृपाकरते हैं वह सत्संगकरके इसमायाजालसे छूटसक्ताहै नहीं तो संसाररूपी जालसेछूटना बहुतकठिन समझो व इसमहाजालसे छूटनेकेवास्ते सिवाय भजन व नामस्मरण व कथासुनने व लीला अवतार परब्रह्मपरमेश्वरके दूसरा कुछउपायनहीं है व अवतारोंकी लीलाकासुनना चारोंवर्णको चाहिये व चतुश्श्लोक तत्त्वज्ञान श्रीमद्भागवतके जो हमने नारायणजीसे सुनेथे सो तुमसेकहा उन्हींपरमेश्वरकाभजन व स्मरण करनेसे तुम्हारेमें भी सबगुण प्रकटहोवेंगे हेनारद कईबेर मेरेसेब्रह्मा व तुमसेनारद संसारमें उत्पन्नहोचुके हैं इसका हाल सिवाय परब्रह्मपरमेश्वरके दूसरा कोई नहींजानता प्रत्येककल्पमें सबजीव अपने कर्मानुसार फिरजन्मपावते हैं व जिसदेशमें देवस्थाननहींरहकर परमेश्वरकी कथा नहींहोती व जिसघरमें कोई यज्ञ व होम नहींकरता वहां कलियुगका बास अधिकहोताहै व वहांके मनुष्य क्रोध व लोभ व अहंकारमें भरेरहते हैं व यही क्रोधादिक पापकीजड़ होकर मनुष्योंसे अनेकतरहका अधर्मकराते हैं व परमेश्वरकी मायाको थोड़ासा महादेवजी व दक्षप्रजापति देवता व सनकादिक व भृगुऋषीश्वर व प्रह्लाद व राजाबलि व अम्बरीष व प्राचीन बर्हिषआदि जानतेहैं व जिसजीवको अहंकार नहींहोता वही मनुष्य परमेश्वरकी मायासे छूटकर भवसागरपार उतरजाताहै और जो लोग हरिभक्त होकर परमेश्वरकी शरणमें रहतेहैं उनपर मायाका कुछबशनहीं चलता नारदजी यह प्रताप नारायणजीका ब्रह्मासेसुनतेही बहुतआनन्द होकर बीणबजाते व परमेश्वरका गुणगातेहुये चलेगये ॥

आठवां अध्याय ॥

राजापरीक्षित का श्रीशुकदेवजीसे धर्म व वेद व पुराण व योगाभ्यास आदिकका हाल पूंछना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर मनमें इसबातका बिचारकिया देखो शुकदेवजीने नारायणजीकीकथा सुनना चारोंबर्णोंकोकहा व मुझे उनसे उत्तमनहीं जानकर चारों बर्णोंकेबराबर समझा सो यहसन्देह छुड़ानेकेवास्ते पिछले राजाओंकाहाल जिन्होंने परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके अपनातनु त्यागकिया है इनसे पूंछना चाहिये ऐसा बिचारकर परीक्षितने पूंछा हे महाराज अवतारोंका हालसुनकर मेरामनबहुत प्रसन्नहुआ अब मुझे यहइच्छा है कि सिवायलीला अवतार नारायणजी के दूसरा हाल न सुनूं किसवास्ते कि इसकथा सुननेसे अन्तःकरण शुद्ध व पवित्रहोकर परमेश्वरकाप्रकाश हृदयमें प्रकटहोता है व उसचमत्कारहोनेसे इसतरहसे क्रोध व लोभ व अहंकार व कामदेवकामद शरीरमेंनहींरहता जिसतरह संसारीजीवोंके स्थानमें राजा के आनेसे घरउनकाशुद्ध व पवित्रहोजाताहै सो आप कृपाकरकेयहहाल वर्णनकीजिये

कि नारायणजी आदिज्योति निरंकारने जो बिराट्‌रूपधारण किया जिसस्वरूपमें सब संसारीबस्तुहैं व एकसेलेकर लाखोंस्वरूप अनेकप्रकारके होजातेहैं इसकाक्या भेदहै व पिछलेयुगों में जिनराजाओंने बीचस्मरण व ध्यान परमेश्वरकेलीनहोकर तनु अपना त्यागकियाहै व जितने तत्त्वहैं उनकीगिनती व परमेश्वरकीपूजाकीविधि व जिसतरह योगीलोग योगाभ्यासकरके अपनाशरीरछोंड़ते हैं व वेदकाजैसाधर्म व रूपहो व इतिहास पुराणकामाहात्म्य व जैसे संसारमें प्रलयहोती है व जिसतरहपर यज्ञादिककरते हैं व ब्रह्माण्ड व ऋषीश्वरोंकाहाल जिसप्रकार जीव नरकसे निकलकरआते हैं व पाप व अधर्मकरनेवालोंका मरनेकेउपरान्त क्याहालहोताहै और यहजीव संसार में कौनकाम करनेसे मायाजालमेंफँसकर नष्टहोते हैं व कौनकर्मकरनेसे मुक्तिमिलती है इनसबबातों का हाल कृपाकरके बर्णनकीजिये यहबातसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन् तुझेयहसब हाल पूंछनेसे क्याप्रयोजनहै राजानेहाथजोड़करकहा महाराज मैं चाहताहूं कि परब्रह्म परमेश्वरके सम्पूर्णअवतारोंकी लीलासुनूं व अपनाशरीर नारायणजी की चर्चा व ध्यान में छोड़कर भवसागरपारउतरजाऊं यहबचनसुन शुकदेवजी ने कहा हे राजन् मनुष्यका तनुपाना बहुतकठिनहै जो कोई मनुष्यकातनुपाकर नारायणजीकीलीला व कथा नहीं सुनता उसको सिवाय पछिताने के और कुछ हाथनहींलगता और जो बात तुमनेपूछी है उसकाहालसुनो जब परब्रह्मपरमेश्वरचाहते हैं कि संसारउत्पन्नकरके जीवोंकीबढ़ती करें व अपनास्वरूप आपदेखकर मोहितहोवें जिसतरहमनुष्य अपनामुख दर्पणमें देखता है और शीशा उलटदेनेसे फिरकुछ दिखलाईनहींपड़ता उसीतरह परमेश्वर सारासंसार अपनीइच्छा से उत्पन्नकरनेकेउपरांत फिर उसकानाशकरके अपनेरूप में मिलालेते हैं इसलिये जगत्‌में ज्ञानी उसीकोसमझनाचाहिये जो मनुष्य नारायणजीके चौबीस अवतारोंकी कथा व लीला अपने सच्चेमन से सुनकर उसपर बिश्वास रक्खै व चिउँटीसे लेकर हाथीतक सबजीवों में परमेश्वरकाचमत्कार एकसाजानकर किसीको दुःख न देवे इतनीकथासुनाकर सूतजीने शौनकादिकऋषीश्वरों से कहा जो हाल परीक्षितने शुकदेवजीसे पूंछाहै वहीबात एकबारब्रह्मकल्पमें ब्रह्माने नारायणजीसे पूछीथी ॥

नवां अध्याय ॥

शुकदेवजीको ब्रह्माके उत्पन्नहोने व चारश्लोक श्रीमद्भागवतका मूलहाल कहना जो श्रीनारायणजीने कहाथा ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् जबएक कमलकाफूल परमेश्वरकी नाभिसेनिकला व उस फूलमें से ब्रह्माउत्पन्नहुये तबब्रह्माने यहबातजाननाचाहा कि मैं कहां से उत्पन्नहुआहूं जबबहुत बिचारनेपर भी यहभेद ब्रह्माको नहींमालूमहुआ तब हारमानकर उसीफूल पर बैठरहे इसलिये समझनाचाहिये कि मायाभगवान्‌की ऐसीप्रबलहै कि जिसमाया

की रस्सीमें ब्रह्माभीबँधकरउनकाभेद नहींजानसके दूसरेकी क्यासामर्थ्य है जो परमे-
श्वरकीलीला व आदिअन्तको पहुंचसके फिर ब्रह्माजीने उसीफूलपर बैठेहुये चारश्लोक
मूल श्रीमद्भागवतके आकाशबाणी में सुना उसीआज्ञानुसार तपकिया जब ब्रह्माजीको
तपकरनेसे हृदयमें ज्ञानहुआ तबउनश्लोकोंका अर्थजानकर संसारकीरचनाकिया व
उन चारोंश्लोकों का अर्थ यहहै हेब्रह्मा जो सबकेपहिलेथा वह मैं हूं मेरेसिवायदूसरा
कोईनहीं है व जोकुछ तुमदेखते हो वहभी मुझे समझो व महाप्रलयके होने उपरान्तभी
सिवायमेरे और कुछनहीं रहैगा सब संसारी बस्तुकीजड़ मैंहूं जिसतरह सोनेका गहना
हाथ व पैर व नाक व कान व सब अंगोंके पहिरनेकेवास्ते बिलगबिलग तैयारकराओ
तो सबभूषणकानाम पृथक् पृथक् होताहै जब वह सबगहनातोड़कर गलाडालो तब फिर
केवलसोना रहजाता है वहीहाल मेरा समझनाचाहिये मैं अकेलारहकर जबचाहता हूं
अपनीइच्छासे अनेकरूपधारणकरके संसार में अपने बहुतनामप्रकटकरताहूं फिर जब
इच्छामेरी अकेलेरहनेके वास्ते होती है तब अकेलाहोजाताहूं और देखने व सुनने व
बोलने व भलेबुरे ज्ञानजाननेकी सामर्थ्य जो सबजीवोंमें है वहसबप्रताप मेरेप्रकाशसे
समझनाचाहिये जिसतरहआकाशकाघेरा सबजगहहै उसीतरह मैं सबसे बलवानहोकर
तीनोंलोक व चौदहोंभुवनको अपनेवशमेंरखताहूं व मेरेसिवाय सबसंसारीवस्तुओं को
झूंठीसमझनाउचितहै व पांचतत्त्वसे सबसंसारीजीव उत्पन्नहोते हैं जिसतरह संसारका
सम्पूर्ण व्यवहार मेरेबिराट्रूप में है उसीतरह सबकेतनुमें ज्योतिकाप्रकाश जिसे प्राण
कहते हैं समझो जबतक वहचमत्कार सबकेशरीरमें रहताहै तबतकचलने व फिरने व
खाने व पीने व बोलने व इन्द्रियोंके सुखभोगनेकीसामर्थ्य उसेरहती है जबवहप्रकाश
शरीरसे निकलगया तबवहीतनु मृतकहोकर गलसड़जाताहै व फिर उसशरीरसे कुछ
नहींहोसक्ता ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य व शूद्रचारोंबर्ण में मेराप्रकाश एकसा है ज्ञान
की दृष्टिसे उनमें कुछभेदनहीं जानकर इसतरह सबजीवों में नारायणजीकास्वरूप एक
सासमझनाचाहिये जिसतरह सूर्य्यकीछाया सोने व चांदी व मिट्टी व लोहआदि के
बर्तनों में बराबरपड़ती है व जिसतरह सोना व चांदी व काठ व पीतल अनेकरंग
के दानोंको एकतागेमें पिरोनेसे मालाहोजाती है उसीतरह मेराचमत्कार सबजीवों में
तागाकेसमानसमझो जब वहतागा मालाका टूटगया तब वह सबदाने बेआदर होजाते हैं
सो हेब्रह्मा तुम इसीतरह सबजगहमुझको जानकर जगत्कीरचनाकरो संसारी माया
में फँसकर आनन्दसे नहींरहोगे व तपकरने से तुमको मेरादर्शनहोगा तुममन में
दयारखकर सबजीवोंकी रचनाकरना व सारासंसार तुमको मानकर ऋषीश्वर व
ज्ञानीलोग तुम्हारी स्तुति करेंगे व संसार रचने में तुम्हें कुछपरिश्रम व दुःख नहीं
मालूमहोगा व तुम मेरेचतुर्भुजी छोटेस्वरूपका ध्यान जोमहात्मा व ऋषीश्वर व नन्द
व सुनन्दआदि दासोंके मध्यमें बिराजमान है करना यहआकाशबाणी सुनकर ब्रह्मा

नारायणजीका चरणछूने उपरान्त हाथजोड़करबोले हे दीनानाथ मुझेयहवरदानदीजिये जिसमें आपको अपनामालिक जानतारहूं व संसारकेउत्पन्नकरनेमें मुझे आसक्तिनहोवे ब्रह्माकायहवचन सुनतेही परब्रह्म परमेश्वरने उन्हें इच्छापूर्वक बरदानदेकरकहा हे ब्रह्मा तुममेरीआज्ञा यादरखकर संसारीव्यवहार परछाहींकेसमान झूठासमझतेरहना तो तुमको मेरीमायानहीं व्यापैगी ऐसाकहकर नारायणजी ब्रह्माके ध्यानसे गुप्तहोगये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् अर्थचारों श्लोक श्रीमद्भागवतका यहीहै जो मैंने तुम सेकहा व ब्रह्माजीने अपने दूसरेबेटोंको यहहालनहीं बतलाया व नारदजीको ज्ञानी समझकर यहभागवत ज्ञान उनसेकहाथा सोनारदजीने व्यासजीको उपदेशकिया व वेद-व्यासजी हमारेपिताने उसको बिस्तारपूर्वक लिखा व श्रीमद्भागवत नामरखकर मुझे पढ़ाया व इसीज्ञानको मैत्रेय ऋषीश्वरने यमुनाकिनारे बिदुरजीसे कहाथा सो अबवही कथा मैं तुमको सुनाताहूं और हेराजन् जोमनुष्य अहंकारसे अपनेको मैं समझकर परमेश्वरका माहात्म्यनहीं जानता वहीसंसार व परलोकमें दुःखपाताहै ॥

दशवां अध्याय ॥

पंचतत्त्वसे शरीरका तैयारहोना व देवतोंका सबकेअंगमें बासरहना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् इसभागवतमें दशप्रकारकी कथाहै उसका पृथक्पृथक्हाल कहताहूं मनलगाकरसुनो संसारकी उत्पत्ति व जगत्कानाशहोना संसारकोस्थिररखना सबजीवोंका पालनकरना परमेश्वरकीलीला मन्वन्तरोंकाहाल ईश्वरकीकथा बिरक्तमुक्ति नारायणजी सबजगत्के मालिकहैं हेराजन् इसनवलक्षणकाहाल सुनकर नैसाकरना केवल दशवेंलक्षणके जाननेकेवास्ते हैं जबआदिपुरुष परमेश्वरने जो शेषनागकीछाती पर शयनकरते हैं अपनेको अकेले देखकर मननहीं लगनेसे चाहाकि हमअनेकतरह कारूप धारणकरके देखैं तबउन्होंने अपनीमायाको आज्ञादिया कि वास्ते अधिकहोने संसारकेउपायकर उसीसमय उसमायाने स्वर्ग पाताल मर्त्यलोकवनाकर राजस तामस सात्त्विक तीनगुणप्रगटकिया सो तामससे अहंकार व राजससे हाथ व पांव व वाक् व लिंग व गुदा पांचकर्म्मइन्द्रिय व सात्त्विकसे आंख व कान व जिह्वा व नाक व त्वचा पांचज्ञानेन्द्रिय प्रकटहुईं सिवायइसके तमोगुणसेपृथ्वी व आकाश व जल व अग्नि व हवापांचोंतत्त्व व सतो-गुणसेशब्द व मूर्त्ति व स्वाद व सूंघना व बुद्धि सबकेतनमें प्रगटहुई व दशोंइन्द्रिय शरीरकी एकएक देवताको सौंपीगई मुंहमें अग्निदेवता जिह्वामेंबरुण कानमेंदिशा नाकमें अश्विनी-कुमार हाथमेंइन्द्र आंखमेंसूर्य लिंगमेंमित्राबरुण गुदामेंयमराज पांवमेंविष्णु बुद्धिमेंब्रह्माजी का बासरहताहै सबदेवतोंनेचाहा कि अपने सामर्थ्यसे हमलोग इसमूर्त्तिको जिलाकर बुलावें व हँसावें इसलिये उन्होंने अपनेपराक्रमसे बहुत उपायकिया जबउनकेसामर्थ्यसे वहमूर्त्तिहिलभीनसकी तबउन्होंने हारमानकर हवाकीतरफ जिसको स्वामीकहतेहैंइशारा

किया जब उस इच्छासेभी कुछनहीं होसका तबसबदेवता ध्यान चरणनारायणजीका जिनकी कृपासे वहमूर्त्ति तैयारहुईथी करकेबोले हे जगत्कर्त्ता बिना दया व कृपा आपकी हमलोगों से कुछनहींहोसक्ता जब आदिज्योति निरंकारने थोड़ासा अपनाप्रकाश उसमूर्त्ति में प्रवेशकरके कहा तुमउठो तब उस तेजकेबलसे सबदेवतोंको अपने २ स्थानपर सामर्थ्य उठने बैठने व बोलने आदिकी प्राप्तहोकर वहमूर्त्ति चलने फिरनेलगी सो हे राजन् बीचशरीर मनुष्यके हरएकअंगमें देवतालोग बासकरके यहइच्छारखते हैं कि हाथ से दानदेकर जिह्वासे परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरके कानोंसे उनकीकथा व लीलासुनैं व पैरोंसे तीर्थयात्रा व देवस्थानपर जाकर आंखोंसे प्रकट व ध्यानमें परमेश्वरकादर्शन करें जिसमें हमलोगोंकाभी भलाहो व मनुष्यकेतनमें रजोगुण या तमोगुण या सतोगुण एकवस्तु आठोंपहर वर्त्तमानरहती है व एकगुणके समय दूसरागुण नटकेखेलके समान छिपजाता है और यह हाल हमने तुमसे ब्रह्मकल्पका कहा व इसीतरह सब कल्प में संसार की उत्पत्तिहोती है ॥

इतिद्वितीयस्कन्धस्समाप्तः ॥

तीसरा स्कन्ध ॥

बिदुरजीका उद्धवभक्तसे राहमें भेंटहोना व बिदुरका मैत्रेयऋषीश्वरसे यमुना किनारे मिलना व जय विजय व कपिलदेव अवतारकी कथा ॥

पहिला अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी व बिदुरआदिकका राजादुर्योधन को राजायुधिष्ठिरके राज्यभाग बांटदेने वास्ते समझाना और उसको किसीका कहना नहीं मानना ॥

शुकदेवजीने कहा हेराजन् जोबाततुमने हमसे पूंछीथी इसीबातकाउत्तर नारायणजीने लक्ष्मीसेकहाथा व लक्ष्मीजीने शेषनागको बतलाया व शेषजीनेवात्स्यायन ऋषीश्वर कोसुनाया व वात्स्यायनजीने मैत्रेय ऋषीश्वरको उपदेशकिया व मैत्रेयजीने बिदुर सेकहा इतनीकथासुनकर राजापरीक्षितनेपूंछा हेस्वामिन् बिदुरजी व मैत्रेयऋषीश्वरसे किसजगहपर भेंटहुईथी उनदोनों मनुष्यज्ञानी व परमभक्त परमेश्वरके मिलतीसमय बड़ाआनन्द हुआहोगा उनकाहालसुनाइये शुकदेवजी बोले हेपरीक्षित जिससमय राजा धृतराष्ट्रने युधिष्ठिरआदि अपनेभतीजोंको दूसराजानकर दुर्योधनआदि अपने पुत्रोंको प्यारासमझा व दुर्योधनने अर्ज्जुनआदि पांचोंभाई पाण्डवोंको लाहके कोटमें टिकाकर आगलगवादिया व भीमसेनके खाने के वास्ते बिषकालड्डू बनवाकरभेजा व अधर्म से जुआखेलकर सबराज्य व धन उनका जीतलिया व द्रौपदी ऐसी पतिव्रता स्त्री को राजसभामें नंगी करनेकेवास्ते उसका चीर दुश्शासनसे खिंचवाया व युधिष्ठिरआदि पांचोंभाइयोंको तेरहबर्षकाबनबासदिया व श्रीकृष्णजी की इच्छाकरने से सबजगहपर उनकाप्राणबचा जबबनबासकरके युधिष्ठिरआदि फिरआये तबभी उनकाहिस्सा राजा दुर्योधन नहीं देताथा इसलिये श्रीकृष्णजी व कृपाचार्य्य व बिदुरआदिक सबको धृतराष्ट्रने बुलाभेजा तो वहलोग कौरव व पांडवोंका झगड़ाछुड़ावने के वास्ते पंचहोकर राजादुर्योधनकी सभामेंगये उससमय श्रीकृष्णजीमहाराज व भीष्मपितामह और द्रोणाचार्यने धृतराष्ट्रको समझाया कि हेराजन् तुम्हारे बेटे व भाई के बेटोंमें कुछ भेदनहीं है दुर्योधनआदि तुमको स्वर्ग में लेजाने नहीं सक्ते व न युधिष्ठिरआदिक तुम्हें नरक पहुंचावेंगे इसलियेतुमको उचितहै कि संसारीब्यवहार झूंठासमझकर युधिष्ठिरादिक पांचों भाइयोंके खाने व खर्चकरने के वास्ते कुछगांव उनको देदेव इसबात में तुम्हारायश होगा राजाधृतराष्ट्रने यहबातसुनकर उसपरकुछध्यान न किया जब बिदुरजीने जो उस सभामें बैठेथे धृतराष्ट्र अपनेभाईकी मति अधर्मपरदेखी तब यथार्थबातसमझकर कहा कि हेभाई तुमयुधिष्ठिरादिका हिस्सादेडालो किसवास्ते कि वे साधुलक्षण किसीकेसाथ बैरनहींरखकर सबको अपनामित्रजानते हैं व युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्ज्जुन व नकुल

व सहदेव पांचोंभाइयोंको ऐसीसामर्थ्य है चाहैंतो उनमेंसे एकमनुष्य दशोंदिग्पालोंको लड़ाई में जीतलेवें सिवायइसके श्रीकृष्णजी बैकुंठनाथउनकेसहायकहैं और तुमदुर्योधन अपने बेटाका मोहकरके जो समझते हो कि मेरे सौपुत्र बड़ेबलवान्लड़नेवाले हैं सो श्यामसुन्दरके बिमुखरहनेसे उनकाकियाकुछनहींहोसक्ता इसअधर्म में तुम्हाराधन व धर्म दोनों नष्टहोगा व दुर्योधन तुम्हाराबेटा श्रीकृष्णजीसे बैररखता है इसलिये उसकेसाथ प्रीतिकरने व उसकाकहामानने में अपने वास्ते अच्छा न समझो व युधिष्ठिरआदि पांचोंभाइयोंका हिस्सा राज्यबांटिदेव व दुर्योधनसे जो राज्य व धनकेमदमें अंधाहोरहा है राजसिंहासन छीनलेव इसीमें तुम्हारेकुल व परिवारकाकल्याणहै नहींतो श्रीकृष्णजी से बैरकरनेमें तुम्हारापतालगनाकठिन है जबबिदुरजीके समझानेपरभी धृतराष्ट्र कुछ नहीं बोले तबदुर्योधनने क्रोधकरकेआज्ञादी कि बिदुरकोमेरीसभासे बाहरनिकालदेव यह हमारेकुलमें दासीपुत्रहोकर सबबातों में पाण्डवोंका पक्षकरताहै व पालनइसकीहमकरते हैं और सभामें हमारेबराबरबैठकर हमको ज्ञानसिखलाताहै यहआज्ञादुर्योधनकी सुनकर जब उसके सिपाहियों ने बिदुरजीको सभासे निकालनाचाहा व धृतराष्ट्रने दुर्योधनको ऐसाबचनकहनेसे कुछ मनानहींकिया तब बिदुरजीनेसमझा कदाचित् कोईमुझे सभासे बांहपकड़करउठादेगा तो अधिक अपमानहोगा इसलिये आपयहांसेउठजाना उचितहै व वृन्दाबनबिहारी कौरवोंकानाशकरना चाहतेहैं इसीवास्ते धृतराष्ट्रआदिक कौरवों के मनमें अधर्मसमाकर अच्छीबातसमझाना इनको बुरामालूमहोताहै ऐसाबिचारकर बिदुर जी वहांसे उठके द्वारेपरचलेआये व उन्हों ने यहसमझके धनुर्बाणादिकशस्त्र अंगसे उतारकर वहांधरदिया कि शस्त्रसमेतचलेजाने में दुर्योधनको इसबातका संदेहहोगा कि यह पांडवोंकीतरफ जामिला व उसीजगहबिदुरजीने अपनाबस्त्रभी उतारडाला केवल एकलँगोटी व चादरपहिनके हस्तिनापुरसे उत्तराखण्डमें तीर्थयात्राकरनेके वास्ते चलेगये व दूसराकारण शस्त्रादि रखदेनेका यहहै कि बिदुरजी परमभक्त होनहारके जानने वाले समझे कि अबदुर्योधनआदि कौरवोंका नाशहोनेवालाहै व मैंने उनकेकुलमें जन्मलिया था इसलिये मुझेपहिलेसे अपनाशस्त्र रखदेनाचाहिये जिसमेंयुद्धकरना न पड़े सो बिदुर जीने बर्षदिनतक भरतखण्डकी तीर्थयात्राकरतेहुये यमुनाकिनारे पहुंचकरवहां सब देवतों कादर्शनकिया व समीपकुटी मैत्रेयऋषीश्वरके बहुतदिनतकटिकेरहे उन्हींदिनों बिदुरजी के पीछे हस्तिनापुरमें महाभारतहोकर दुर्योधनआदि कौरवामारेगये व राजायुधिष्ठिरने श्रीकृष्णजीकीकृपासे राजगद्दीपाया जब उद्धवभक्त श्यामसुन्दरके बैकुंठधामजाने के उपरान्त द्वारकासे बद्रिकाश्रमको जातेथे तब राहमें बिदुरजीसे भेंटहुई सो दोनोंमनुष्य परमभक्तपरमेश्वरके आपसमें गलेमिले व बिदुरजी उद्धवभक्तसे हाल मारेजाने दुर्योधनआदिक व राजसिंहासन पर बैठना युधिष्ठिरकासुनकर पहिले पछिताये फिर इच्छा श्यामसुन्दरकी इसीतरहपर समझकर संतोषकिया ॥

दूसरा अध्याय ॥

बिदुरजीको उद्धवभक्त से श्यामसुन्दरका हाल पूंछना ॥

शुकदेवजीबोले कि हे राजन् बिदुरजीने उद्धवसे मिलनेकेउपरांतपूंछा हे उद्धव तुम श्रीकृष्णजीसे एकक्षण बिलग नहींहोतेथे आजक्याकारण है जो मैं तुमको अकेलेदेखता हूं कहो श्यामसुन्दर मेरेप्राणप्यारे बलरामजी व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध व साम्ब व शूरसेन व बसुदेव व देवकी व अक्रूरआदिक सब यदुबंशियोंसमेत अच्छेहैं व युधिष्ठिर व अर्जुनआदिक पांडवान् कुन्ती व द्रौपदीसहित धृतराष्ट्रमेरा भाईअन्धा जिसनेबेटोंकेमोह में फँसकर अपने नरकजानेका उपाय कियाथा सबलोगकुशलसे हैं और मैं जानताहूं कि श्यामसुन्दरने पृथ्वीकाबोझ उतारनेकेवास्ते अवतारलेकर धृतराष्ट्रआदिक कौरवोंका ज्ञानहरलियाहै व जो राजालोग अपनेराज्य व सेना व धनका अभिमानकरके अधर्मकरतेहैं उन्हीं लोगोंकेमारनेके वास्ते श्रीकृष्णजी बैकुंठनाथने अवतारलियाहै सोतुम श्यामसुन्दर काहाल बतलाओ कि उनकीचर्चाकरनेमें तीर्थस्नानकाफल मिलताहै यहबातसुनतेही उद्धवभक्त आंखोंमें आंशूभरकर रोनेलगे और कुछउत्तरनहीं दिया जब बिदुरजीने उनकोउदास व रोतेहुये देखकरजाना कि श्रीकृष्णजी अन्तर्द्धानहोगये इसलिये मेरेपूंछने से उद्धवउनकाध्यानकरके रोतेहैं एकक्षण उपरान्तउद्धवने आंखें पोंछकरकहाकि बिदुर जी तुम केशवमूर्त्तिकाहाल क्या पूंछतेहो श्रीकृष्णरूपी सूर्य्यअस्तहोकर कलियुगरूपी रात्रिने प्रवेशकिया मैं अपने व दूसरे यदुबंशियोंका अभाग्य तुमसेक्याकहूं परब्रह्मपरमेश्वर नेअपनीइच्छासे बसुदेवजीके घरजन्मलिया सो हमलोगोंने उनकामाहात्म्य नहींजानकर उनकोभी एकयदुबंशी अपनाभाईबन्दसमझाथा अब उनकी महिमाजानकर सिवाय पछितानेके कुछहाथ नहींलगता मैंउनकीबड़ाई तुमसे कहांतकवर्णनकरूं उन्होंने सोलह हज़ारएकसौआठ स्त्रियों से बिवाहकरके गृहस्थाश्रमकाधर्म किया सो प्रयोजन उनका अवतारलेने व लीलाकरनेसे यहथाकि जिसमें संसारी मनुष्य व अधर्मीलोग उसलीला व कथाकोआपसमें कह व सुनकर भवसागरपार उतरजावें देखोउन्होंनेकैसे २ बलवान्दैत्य व राजाओंको मारकर मुक्तिदिया और वास्तेभार उतारनेपृथ्वीके अपनीइच्छासेअवतार लेकरकौरव व पांडवोंसे महाभारतकराया व दुर्योधनआदिक सबकौरवोंकानाशकिया व युधिष्ठिरआदि पांचोंभाई पांडव अपनेभक्तोंकी रक्षाकरके उन्हें राजगद्दी दिया व छप्पन करोड़ यदुबंशियोंको दुर्बासाऋषीश्वरसे शापदिलवाकर आपसकी लड़ाईमें मरवाडाला सो वहबात यादकरके मुझे बड़ादुःख होताहै हे बिदुर तुमनिश्चयकरकेजानो जबसेश्यामसुन्दरयदुबंशियोंको नाशकरके बैकुंठकोपधारे तबसे सच्चाई व धर्मसंसारसे उठगया व मैंनेबहुत विनतीकरके उनसेकहाकि मैं जन्मभरआपकी सेवा व टहलमें रहा मुझेभी अपनेसाथ लेचलो परनहीं लेजाकर बोले तू बदरीकेदारमें जाकर मेराध्यानकरके मुक्तहो और जोकुछज्ञान

उन्होंने मुझे बतलाया उसकाहाल ग्यारहवें स्कन्धमें लिखाहै व तत्त्वज्ञान मुझसे यहकहा कि हमको जानकर सबसंसारका नाशसमझो व जीवात्मा कभीनहीं मरता इसलियेमेरे बियोगका शोच न करनाचाहिये मरनाकैसा होताहै जिसतरह एककपड़ेको उतारकर दूसरावस्त्र पहिनलेवे उसीतरह यहजीव एकचोलेकोछोड़कर दूसरेतनमें प्रवेशकरताहै॥

तीसरा अध्याय ॥

उद्धवजीका बिदुरजीसे श्यामसुन्दरकी स्तुति व बड़ाई वर्णन करना ॥

उद्धवने बिदुरसे कहा देखो श्यामसुन्दर ऐतेदीनदयालुथे कि जिसपूतनाराक्षसीने उनकाप्राणमारनेके वास्तेअपने कुचोंसे बिषलगाकर दूध पिलाया उन्होंने उसराक्षसीको भी मारकर बैकुंठमें भेजदिया ऐसेदीनानाथका चरणछोड़कर दूसरे किसकीशरणमेंजाना चाहिये उनश्यामसुन्दरने पृथ्वीकेबोझउतारनेके वास्ते अपनीइच्छासे संसारमें अवतार लेकर बसुदेवजीसेकहा तुमहमको नन्दजीकेयहां लेजाकर छिपायआवो यहसबलीला उनकीथी जिसमें कोईमुझे नारायणजी न जाने नहीं तो उनकोकिसकाडरथा कालकोभी ऐसीसामर्थ्यनहींथी जोउनकासामना करसक्ता व नन्दजीकेघर जाकर कैसी २ लीलायें करकेब्रजवासियोंको सुखदिया नन्दजीके बछरे व गायेंचराकर जिसतरह आग लकड़ीमें गुप्तरहती है उसीतरह अपनेको छिपाया और जोजो दैत्य व राक्षसभेजेहुये कंसकेउनके मारनेवास्ते आयेथे सबकोमारकर भवसागरपारउतारा व इन्द्रका अभिमानतोड़ागोपी व ग्वालोंको बैकुण्ठकादर्शनकराके अपनाचतुर्भुजीरूप दिखलाया नन्दजीको सांपकाटने से बचाया व गोपियोंकेसाथ रासमंडलकिया शंखचूड़ व केशी व बकासुर व अघासुर आदि दैत्योंकोमारकर बैकुंठभेजा व जबअक्रूरकेसाथ मथुराकोचलेतब राहमें स्नानकरते समय यमुनाजलमें अक्रूरको अपनेचतुर्भुजी स्वरूपकादर्शनदिया व मथुरामें पहुंचकर राजाकंसके धोबीकोमारा व बाहुक दरजीको बीचबदले पहिरावनेकपड़ोंके प्रसन्नहोकर बैकुंठमेंभेजा व सुदामामालीपर खुशहोकर ऐसाबरदानदिया कि तेराधन कभी न घटै औरकुब्जाको चन्दनलगानेके बदलेटेढ़ासे सीधीकरके देवकन्यासमान रूपदेकरउसकी इच्छापूर्णकिया व धनुष महादेवजीका ऊखकेसमान तोड़करकुबलयापीड़ हाथीकोलड़कों के खेलसमानमारडाला और कुश्तीलड़कर चाणूर व मुष्टिकआदि पहलवान व राजा कंसकोउसके आठभाइयोंसमेत मारकर मुक्तिपदवीदिया और जिसपरमेश्वरकी सेवामें ब्रह्मा व महादेव व कालादिक सबरहते हैं उनत्रिलोकीनाथने राजाउग्रसेनको अपना भक्तजानकर उसकीआज्ञा सेवकोंके समानमाना व जिसतरह बालकखेलतेसमय चिउँटी को मारडाले उसीतरह ऐसे २ बलवान् दैत्य व राक्षस राजाओंको मारकर अन्तर्द्धान होगये दशवें व ग्यारहवें स्कन्धमें हाल उससबलीलाका लिखाहै हे बिदुरजी ऐसे दीनानाथ जिन्होंने यहसबलीला संसारीजीवोंके भवसागरपारउतरनेकेवास्ते किया उनके

चरणोंकाध्यान छोड़कर मेरा चित्त दूसरीतरफनहींजाता और वह सांवलीसूरति मोहनी-मूरति मुझे एकक्षण नहींभूलती ॥

चौथा अध्याय ॥

उद्धवजीको बिदुरजीसे श्यामसुन्दरकी स्तुति व वियोगका हाल वर्णन करना ॥

उद्धवने बीच विरहसागर श्रीकृष्णजीके डूबकरकहा कि हेबिदुर श्यामसुन्दरके ज्ञान सिखलानेसे संसारीमायामोह मेराछूटगयापर मुझको मुरलीमनोहरके वियोगका जितना दुःखहै वह कहानहींजाता तुमको सुननाहोतो मैत्रेयऋषीश्वर से जो उससमय वहांपर थे जो थोड़ेदिनों में यहांआवेंगे भेंटकरके पूंछलेना वहसबहाल तुमसेकहेंगे और जिस समय मुरलीमनोहर अन्तर्द्धान होनाचाहतेथे उससमय मैत्रेयऋषीश्वरने प्रभासक्षेत्र में जाकर श्रीकृष्णजीको दंडवत्किया तब श्यामसुन्दरबोले हे मैत्रेयजी हमने तुम्हारे मन का सबहालजाना तुम धैर्य रक्खो मेरी माया तुमको न व्यापैगी किसवास्ते कि तुम मेरेभक्त व पिछलेजन्मकेबसुदेवता और इसजन्ममें वेदव्यासजीके भाई व पुत्र पराशर मुनिकेहो तुमको मेरीलीला प्रकट व गुप्त सब मालूमरहेगी और जो भागवतधर्म तुम को बात्स्यायनऋषीश्वरने कहाहै उसीधर्मको यादरखना भवसागरपारउतरजावोगे यह बात केशवमूर्त्तिसे सुनतेही मैत्रेयजीने बहुतप्रसन्नहोकरकहा हे बैकुंठनाथ तुम्हारीलीला यादकरके मुझे बड़ाअसम्भव मालूमहोता है किसवास्ते कि ब्रह्मा व महादेव व कालकी सामर्थ्यनहीं है कि जो आपकेसन्मुख आंखउठाकरदेखसकें सो तुम जरासन्ध व काल-यमनके सामने से पैदलभागे थे तुम्हारे भेदको कोई जाननहींसक्ता इसीतरह मैत्रेयजी बहुतस्तुति श्रीकृष्णजीकी करके वहांसेचलेआये वहसबहाल जानते हैं तुमसेकहेंगे और मैं मुरलीमनोहरकी आज्ञा से बद्रिकाश्रमको जाताहूं वहांजाकर अपनातनत्यागकरूंगा कदाचित् तुमयहकहो जब ज्ञानआया तब आंखोंमें आंशूभरने व शोचकरने का क्या कारणहै सो श्रीकृष्णजीकीदया व प्रीति यादकरनेसे उनकेवियोगकादुःख मुझे एकक्षण नहींभूलता उसीज्ञानकेप्रतापसे अबतक मैं जीताहूं नहींतो श्यामसुन्दरसे बिछुड़तेसमय प्राण मेरा निकलजाता सो इतनाहालतुमसे कहताहूं कि श्यामसुन्दर ने पृथ्वीकाबोझ उतारनेकेवास्ते अवतारधारणकियाथा सो उन्होंने बड़े २ अधर्मी दैत्य व राजाओंको मारकर कौरव व पांडवों से महाभारतकराया व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कृपा-चार्य आदिक बड़े २ योद्धा व बुद्धिमान् व ज्ञानी व हरिभक्तों के रहने पर भी उस सेनामें अठारहअक्षौहिणीदल नाशकरके पृथ्वीकाभारउतारा सो हे बिदुरजी परमेश्वरकी इच्छासबपर बलवान्है इतनीकथासुनाकर सूतजीबोले हे ऋषीश्वरो जो लोग परमेश्वर की कथा व कीर्त्तनमें करुणाकेस्थानपर रोदेते हैं उनके अनेकजन्मकापाप आंखोंकी राह से बहकर निकलजाताहै सो मनुष्यकेकल्याणवास्ते सिवायसुननेकथा व लीला अवतार

श्यामसुन्दर व करने स्मरणनामपरमेश्वरके दूसरीबातअच्छीनहींहोती व महाभारतहोने उपरांत श्रीकृष्णजीने पच्चीसबर्षतक संसारमेंरहकर राजायुधिष्ठिर से दोबार यज्ञ कराके जगत् में उनको यश दिया था ॥

पांचवां अध्याय ॥

उद्धवजीका बिदुरसे बिदाहोना और बद्रिकाश्रम में जाना व अपनातन योगाभ्यास के साथ त्यागकरना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् उद्धवने बिदुरजीसेकहा अबतुम हमको बिदाकरो तो बद्रिकाश्रममेंजाऊँ बिदुरजीने यहसबबात उद्धवकीसुनतेही आंखोंमें आंशूबहाकरकहा देखो श्यामसुन्दर ने चन्द्रमाकेसमान संसारमें प्रकाशप्रकटकरके पृथ्वीकाबोझउतारा व धर्म्म व गऊ व ब्राह्मणकीरक्षाकरके गोलोकको चलेगये व हमलोगों ने अज्ञान व अभाग्यसे उनकाप्रताप नहींजाना व हे उद्धव तुम आठोंपहर उनकेपासरहतेथे सो उनकी माया ऐसीबलवान्है कि आपनेभी उनको नहींपहिचाना इसलिये यहबात निश्चय समझना चाहिये कि बिनाकृपा मुरलीमनोहरकी उनकेभेद व महिमाको कोईनहीं जानसक्ता कदाचित्हमलोग आप ऐसे भक्तोंकी सेवा व टहलमेंरहें तो जन्महमारा सफलहो पर बिनाकृपा व दया श्यामसुन्दर प्यारे के हरिभक्तों का सत्संगनहीं मिलता इसलिये हम जानते हैं कि हमारे पिछले जन्मके पुण्य सहायहुये जो आपकादर्शन मिला सूतजी शौनकादिकऋषीश्वर व शुकदेवजी राजापरीक्षित से कहते हैं कि उद्धवजी यहसबबार्त्ता करके बिदुरसेबिदाहुये व बद्रिकाश्रममें जाके बीचध्यानश्यामसुन्दरके लीनहोकर साथ योगाभ्यासके तनअपनात्यागदिया व बैकुंठधामको चलेगये व बिदुरजी तीर्थयात्राकरते मैत्रेयजी से मिलनेकीइच्छारखकर रोते व शोचकरतेहुये हरद्वार में आनकरठहरे इतनी कथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित उद्धवजी सम्पूर्णहाल अन्तर्द्धानहोने श्यामसुन्दरका बिदुरजीसे इसवास्ते प्रकटकरके नहींकहा जिसमें यहहाल सुनकर बिदुरजी उनके बिरह में तन अपना छोड़ न देवें ॥

छठवां अध्याय ॥

बिदुरको मैत्रेय ऋषीश्वरसे यहबात पूंछना कि संसारकी उत्पत्ति किसतरह होती है ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् बिदुरने जबहरद्वारमें मैत्रेयऋषीश्वरसे भेंटकरके उनको दंडवत्किया तब मैत्रेयजीनेपूछा हेबिदुर तुम बहुतउदास दिखलाई देतेहो इसका क्या कारणहै बिदुरने हालमिलने उद्धव व खबरपावना अन्तर्द्धानहोने श्रीकृष्णजी व मारेजाने दुर्योधनादि कौरवानमहाभारतमें व नाशहोना सबयदुवंशियोंका जिसतरह उद्धव से सुनाथा मैत्रेयऋषीश्वरसे कहकर बोले कि श्यामसुन्दर बिहारी के बैकुंठ जाने का हालसुनकर हमारी यहदशा हुईहै सो मैं यहइच्छा आपसे रखताहूं कि

तुमने जो कुछ ज्ञान श्रीकृष्णजीके मुखारविन्दसे सुनाहै वहहाल वर्णनकीजिये जिसमें मेरामनोरथपूर्णहो यहबात सुनकर मैत्रेयजीनेकहा जोकुछ तुमको इच्छाहो वहबात पूछो बिदुरजीबोले मनुष्यसदाअपने सुखवास्ते उद्योगकरता है पर सुख न पाकरउसके बिपरीत दुःखउठावताहै सोउसक्लेशका देनेवाला कौनहै इसकाभेदकहो और यहबात बतलाओ कि नारायणजी सगुणअवतार किसवास्ते लेतेहैं व उनकोसंसार रचने व फिर उसका नाशकरनेसे क्यालाभहोता है और मैं अपनेज्ञानमें यह जानताहूं कि पापछूटनेके वास्ते व भवसागर पारउतरने [illegible]के इसबिचारसे सगुणअवतारलेतेहैं जिसमें मनुष्यलोग उनअवतारोंकी कथा व लीलाआपसमें कह व सुनकर [illegible] भव-सागरपार उतरजावें तिसपरभीअज्ञान मनुष्य परमेश्वरकीकथा व लीलासुननेमेंप्रीति न रक्खें व दिनरात संसारीमायामोहमें लिपटकरनष्टहोवें तो अभाग्य उनकाहै इसमेंपरमे-श्वरको क्यादोषदेना चाहिये और बतलावो परमेश्वर किसतरह ब्रह्मारूपहोकरजगत् की उत्पत्ति और बिष्णुरूपधरकर सबजीवोंको पालन व महादेव रूपधारणकरकेसब जीवोंका नाशकरतेहैं और यहबातकहिये वहकौनसा उपायहै जिसकेकरनेमें नारायणजी मनुष्यसे प्रसन्नहोतेहैं व उनकेखुशहोनेसे मनुष्य संसारमें अपनामनोरथ पाकरमरनेकेउप-रान्त मुक्तहोताहै [illegible] कि जबकोई मनुष्यकिसी अपराधकेबदले दंडपाता है तबफिर वहजल्दी अधर्मनहींकरता और यहजीवकुकर्म्म व पापकरनेसे चौरासीलाख योनि व नरकमें बहुतसा दुःख भोगकरजबमनुष्यका तनपाताहै तब परमेश्वरकीमाया में लिपटकर अधर्म्मक्योंनहीं छोड़ता व दंडपानेपरभी ऐसाकर्म क्यों नहींकरता जिसमें जन्म व मरणसेछूटजावै इसकाक्याकारणहै सो आपकृपा व दयाकरके इन सबबातोंका हाल वर्णनकीजिये जिसमें मेरेमनका सन्देह मिटजावै ॥

सातवां अध्याय ॥

मैत्रेयजीका श्यामसुन्दरकी स्तुति व बड़ाई वर्णनकरना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् बिदुरकीबात सुनकर मैत्रेयजीने कहा हे बिदुर तुमआप ज्ञानीहो और तुमको लड़कपनसे हरिचरणोंमें भक्तिउत्पन्नहोकर कोईहालतुमसे छिपा नहीं परतुमनेहमसे पूंछनेकीचाहनाकिया इसलिये मैं अपनी बुद्धिके अनुसारतुमसे कहताहूं जिसमेंसंसारी जीवभी यहहालसुनकर भवसागरपारउतरजावें और तुमधर्मराज का अवतार कौरवोंकेकुलमें होकर परमेश्वरका सबगुणजानतेहो व मांडव्यऋषीश्वरके शापसेतुमने यहतनपाया श्रीकृष्णजी महाराज सबबातोंमें तुम्हारी मतिफेरकामकरते थे व तुमको परमेश्वरकीप्रीति व भक्तिहै इसलियेहमवह भगवद्धर्म तुमसे कहतेहैं जो पराशरमुनिअपने पितासे हमनेपढ़ाथा तुममनलगाकर सुनोजोमनुष्य परमेश्वरसेविमुख हैं वहदुःखके सागरमें पड़े रहकरजन्म व मरनेसे छूटनहींपाते और जोकामअपनेसुख

केवास्तेकरतेहैं उसमेंउनको सिवायदुःखके कुछ सुखनहीं मिलता कदाचित् परमेश्वरका भजनथोड़ा २ भी करैं तो संसारके दुःखसे इसतरह छूटजावैं जिसतरह औषधखानेसे दिनपरदिन रोगकमहोताहै और मनुष्यसंसारमें जैसाकर्म्म भला या बुराकरै वैसाफल पाताहै और जिसतरह मनुष्य अपनेपुत्र व कन्या व स्त्री व संसारीमोहमें फँसकरउनसे अपनासुख व भलाचाहताहै व सिवायदुःखके सुखनहींपाता उसीतरह कोयेमेंका कीड़ा अपनेरहने व सुखकेवास्ते जाला इकट्ठाकरके अन्तकोवहीजाला बटोरनेसेकोयेमें फँस-करमरजाताहै व निकलनहींसक्ता वही हाल मनुष्यकाभी समझनाचाहिये और बिना ईश्वरकीकृपा उनकी मायासे मनुष्यका छूटना बहुतकठिनहै उस मायासे छूटनेकेवास्ते परमेश्वरकी कथा सुनना व उनकेनामका स्मरणकरना मनुष्यको उचितहै और संसार के झूठे व्यवहारको सच्चाजानना यहीमायाईश्वरकी समझनाचाहिये जबमनुष्यइन्द्रियों के सुखको छोड़कर मन अपनाविरक्तकरके परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरै तबउसमाया से छूटसक्ताहै जिसतरह स्वप्नेकादुःख जागनेसे नहींरहता उसीतरह लोक व परलोक के दुःखहरिभजनकरनेसे छूटजातेहैं और संसारकी उत्पत्तिइसतरहपर है जबउस आदि निरंकारज्योतिको कि वह रूप उनका कोईनहीं देखसक्ता इसबातकी इच्छाहोती है कि संसाररचकर हमअपनेरूपको आपदेखैं जिसतरहकोई मनुष्यअपना मुखदर्पणमें देखै तबवहआदिनिरंकार पहिलेएकज्योति प्रकटकरते हैं जिसकोआदिपुरुष कहाजाता है फिर एकमहातत्त्व सबकीजड़उत्पन्नकरके उससेतीनगुण सत्त्व रज तम प्रकटकरते हैं सतोगुणसे देवतोंकेगुण और रजोगुणसे पांचोंतत्त्व और तमोगुणसे पञ्चभूतात्मा उत्पन्न होकर उसीपांचोंतत्त्वोंसे इन्द्रियआदि व मनुष्यकाशरीर तैयारहोताहै व एक २ अंगके एक २ देवताअधिष्ठाता होते हैं आंखके देवतासूर्य व नाकके अश्विनीकुमार व जिह्वा के बरुणदेवता इसीतरहसबअंगके देवताउसकाहाल दूसरेस्कन्ध दशवेंअध्यायमेंलिखाहै ॥

आठवां अध्याय ॥

देवतोंको नारायणजीकी स्तुतिकरना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हे विदुर जबयहसबबस्तुसंसाररचनेकी प्रकटहुई तबसबदेवतोंने संसार के उत्पन्नकरनेकी आज्ञापाकर अपनाउद्योगकिया जबवहकाम उन्होंसे पूरानहींहुआ तब सबदेवतोंने हारमानकरनारायणजीका ध्यान व स्तुतिकरके हाथजोड़कर इसतरहपर कहा हेदीनानाथसंसारमें जोमनुष्यआपके तेजकाप्रकाश सबजीवोंमें समझकर तुम्हारे चरणोंकाध्यान व पूजाकरै वह जगत्कीमाया व दुःखसेछूटकर सुखपाता है व तुम्हारी कथा व लीलासुननेसे उसकेमनमें इसबातका विश्वासहोताहै कि सबसेश्रेष्ठ व कर्त्ताधर्त्ता नारायणजी हैं सो बिनाकृपातुम्हारी हमलोगोंसे यहकामसंसारके रचनेका जो बहुतकठिन है होनहींसक्ता तब उसीआदि निरंकारउनके स्तुतिकरनेपर प्रसन्नहोकर देवतोंकीतरफ जैसे

कृपादृष्टिसे देखा वैसेयहपांचोंतत्त्व इकट्ठीहोकर मांसकापिंडहोगया उसीकानाम आदिपुरुष होकरउसके रहनेकेवास्ते पाताललोक व भूर्लोक व बैकुंठलोकजिसको तीनोंलोककहतेहैं निर्माणहुये और वहीपुरुष मालिक आंख व कान व हाथआदिक इन्द्रियोंकाहुआ व बिराट्-रूप उसी पुरुषकोकहते हैं और सब व्यवहार जगत्का उसीरूपमें है उसपुरुषकी नाभिसे एक फूल कमलका निकला जिसफूलमें से ब्रह्माउत्पन्नहुये व उसीपुरुषके दया व कृपासे ब्रह्माने अपनेमुखसे ब्राह्मण व भुजासे क्षत्रिय व जंघासे वैश्य व पैरसे शूद्र चारों वर्ण को उत्पन्नकिया ॥

नवां अध्याय ॥

मैत्रेयऋषीश्वरका सब सृष्टिकी उत्पत्ति कहना ॥

इतनीकथासुन बिदुरजीने मैत्रेयऋषीश्वरसे पूंछा महाराज वह अवतार आदिपुरुषका हुआ अब दूसरेअवतारोंकाहालभी बर्णनकीजिये यहबातसुनकर मैत्रेयऋषीश्वरबोले हे बिदुर जिससमय महाप्रलयहोनेसे चारोंतरफ जलमयीहोकर कुछ दिखलाईनहीं देताथा उससमय वह आदिपुरुष जिसकाबर्णन ऊपरकरचुकाहूं शेषनागकीछातीपर शयनकरते थे उनकीनाभिसे एकफूलकमलका जिसमें बड़ाप्रकाशथा निकला व उसफूलकेनालसे ब्रह्माजी प्रकटहोकर उसीफूलपरआनबैठे और यह बिचारा कि हमको किसने उत्पन्न किया और यह कमलफूलकिसकीसामर्थ्यमें खड़ाहै इसीचिन्तामें ब्रह्मा उसफूलकीनाल पकड़ेहुये हजारवर्षतक पानीमें थाहलेनेकेवास्ते चलेगये जब उसफूलकीजड़ उन्होंने न पाया तब हारमानकर फिर उसीफूलपर आबैठे व इसीचिन्तामें व्याकुलथे इसलिये तुमजानो कि आदिमें सबजीव मूर्खरहते हैं पश्चात् नारायणजी की कृपा से ज्ञानप्राप्त होताहै जिससमयब्रह्माजी शोचमें थे उसीसमय यह आकाशवाणी हुई कि परमेश्वरका तप व ध्यानकरो तबतुमको ज्ञानप्राप्तहोगा यह आकाशबाणीसुनकर जब ब्रह्माने परमेश्वर का स्मरण व ध्यानकिया तब ब्रह्माके हृदयमें ज्ञानकाप्रकाशहोकर उन्हें यह दिखलाई दिया कि एकपुरुष शेषनागकी छातीपर श्यामरूप अतिसुन्दर चतुर्भुज लक्ष्मीजीसमेत सोयाहै व उसकीनाभिमें यहफूलकमलका निकलकर हम इसफूलसे उत्पन्नहुये हैं और उसपुरुषने संसारके रचनेकाअधिकार हमको दियाहै जब ब्रह्माजीको सब संसारी बस्तु उसीपुरुषकेरूपमें दिखलाईदीं तब ब्रह्माने हाथजोड़कर यह स्तुति उनकीकिया कि हे त्रिलोकीनाथ जो मनुष्य आपसेविमुखहै उसकोकभी सुखप्राप्तनहींहोता वह सदा संसारी मायामोहमें व्याकुलरहताहै और रातको सोतीसमय उसे अनेकचिन्ता लगीरहती हैं कि कलहहमको यह यह कामकरनाहोगा एककामसे छुट्टीपाया तो दूसरीबातकी चिन्ताहोती है और तुम्हारेनामकास्मरण व चरणकमलकी भक्तिरखनेवालेलोग आपकीकृपा व दयासे अपने मनोरथका फलपाकर सदाआनन्दसे रहतेहैं कदाचित् कोईकहे कि इच्छासाधु व वैष्णवकी किसतरह पूर्णहोसक्ती है सो जो लोग बनमेंजाकर तुम्हारा तप व जप करते हैं

उनमें जिससमय इच्छा स्त्री व धन व संसारीसुखकी होती है उसीसमयतुम्हारी कृपासे उनको इन्द्रलोकके सुख प्राप्तहोजाते हैं सो मैं चाहताहूं कि तुम्हारे चरणोंके नख जो सूर्यसेअधिक तेजवान्हैं सर्वदा मेरेहृदयमें बसेरहैं जिनके प्रकाशसे मेरे अन्तःकरण में अज्ञानकाअँधियारा न होवे व तुम्हारादर्शन योगी व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने बड़ीदयाकरके मुझको अपनादर्शनदिया यह सब स्तुतिकरके ब्रह्मा ने उसीपुरुषसे विनयकिया हे स्वामी आपनेमुझको जीवोंके उत्पन्नकरनेकेवास्ते आज्ञादी सो मुझसेविनाशक्ति व कृपातुम्हारी कुछहोनहींसक्ता कि संसारकोउत्पन्नकरसकूं मेरेहाल पर दयाकीजिये तब मैं वहकर्मकरूं परन्तु ऐसा न हो जो बीचगढ़ेअहंकारके गिरकर ऐसा समझूं कि जीवोंकाउत्पन्नकरनेवाला मैं हूं तब उसपुरुषने जो शेषनागकीछातीपर शयन करतेथे ब्रह्माकीतरफ़ आंखउठाकरकहा जैसा तू चाहताहै वैसाहीहोगा पर तुम अपनामन बीचतप व स्मरणनामपरमेश्वरके लगायेरहो व काम व क्रोध व लोभ व अहंकारसे बचे रहना व सबइन्द्रियोंको अपनेबशमेंरखना जब यह अभ्यासकरनेसे तुमको ज्ञानप्राप्तहोगा तब मुझको अपनामालिक व उत्पन्नकरनेवाला जानकर सबजीवों में मेरे तेजका प्रकाश बराबरदेखोगे जिसतरहअग्नि काष्ठमेंरहती है पर बिनाउपायकिये प्रकट नहींहोती उसीतरह तुम मेरेचरणों में ध्यानलगाकर संसारकीरचनाकरो तुमको अहंकार न होकर ध्यानकरतेसमय मेरे सबअंगकादर्शनमिलैगा व बिनापढ़े सबविद्या यादहोजावेगी व तुझे किसीजीव अपने उत्पन्नकियेहुये के मरनेकादुःख नहींहोगा तुम निरसन्देह जगत् की रचनाकरो ॥

दशवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका देवता व पांचों तत्त्व व वृक्षादिकोंका नारायणजीकी कृपासे उत्पन्न करना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरबोले हे बिदुर वह पुरुष ब्रह्माजीको ध्यान में दर्शन व धैर्यदेकर अन्तर्द्धानहोगये व ब्रह्माजीने उसपुरुषको कृपादृष्टि देखनेसे अपनेमें संसाररचनेकी सामर्थ्य पाकर उत्पत्तिकरना जगत्का आरम्भ किया पहिले उन्होंने देवतों को पांचोंतत्त्वसमेत जिसकावर्णन ऊपरहोचुका है फिर अनेकरंगकेवृक्ष व पशु व पक्षी उत्पन्नकिये जब ब्रह्मा देवता व वृक्षादि की रचनाकरचुके तब उन्होंने कई मनुष्य जिनको दुःख व सुख दोनों बराबर रहताहै अपनीइच्छासे मानसीसृष्टि उत्पन्नकिया व कमलकेफूल से चौदह भुवन सात लोक ऊपर व सातलोक नीचेकाबनाया उसके उपरान्त सतयुग व त्रेता व द्वापर व कलियुग चारोंयुगबनाकर बर्ष व महीना व पक्ष व बार व घड़ी व पलक प्रमाणकिया जिनकेबीतनेसे देवता व मनुष्य व दैत्य व राक्षसआदि सबजीवों की आयुर्दा पूर्णहोती है व देवता व दैत्य व राक्षस व मनुष्यकी योनि सामने व पशु व पक्षीआदिककी योनि पीछेहोती है और ब्रह्माकी आयुर्दाका एकदिनचौदहमन्वन्तर निर्माणहुआ व एकमन्वन्तर में इकहत्तरचौकड़ीयुग भोगकरताहै जिसकी सब नवसैचौरानबे चौकड़ीहुई यहबीतजावें

तब एकदिन ब्रह्माकी आयुर्द्दा में समझनाचाहिये व उसी दिनके प्रमाण तीस दिन का महीना व बारहमहीने का बर्ष होकर सौबर्ष की आयुर्द्दा ब्रह्माकीहै व रातभी उनकी उसीदिनके बराबरहोती है सो ब्रह्माजी दिनभरजीवोंकी उत्पत्तिकरतेहैं जबब्रह्माका एक दिनबीतकर सन्ध्याहोती है तबजगत्प्रलयहोकर सबसंसारीजीव नाशहोजाते हैं जब रातबीतकर सबेराहोताहै तबफिरब्रह्माजी सबजीवोंको उन्हींके कर्मानुसार वैसी २ योनि में उत्पन्नकरते हैं इसीतरह जबपचासवर्ष आयुर्द्दा ब्रह्माजीकी बीतजाती है तो उसको अर्द्धप्रलयकहते हैं और जब १०० वर्षआयुर्द्दा ब्रह्माजीकी पूरीहोकर तनउनकाछूट जाताहै तब महाप्रलयहोकर चारोंतरफ़पानीके सिवाय और कुछनहींरहता एक वही आदि पुरुष अविनाशी अकेलेरहजाते हैं और यह हाल एकब्रह्माण्डका कहागया व ब्रह्माण्ड का स्वरूपगूलरके फलसमान समझनाचाहिये व इसीतरहपर बहुत ब्रह्माण्डहोकर सबके मालिक व उत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाले आदिपुरुष भगवान्‌जी हैं वह चाहैं तो कईहज़ारब्रह्माण्ड एकक्षणमें उत्पन्नकरके फिर नाशउनकाकरदेवें इसकाभेद कोई नहीं जानसक्ता वह नारायणजी उससमयमें थे जबकोई नहींथा और जबकुछ न रहैगा तबभी वही अविनाशी पुरुषस्थिररहेंगे मृत्युउनकेपास नहींआसक्ती वह सदा एकस्वरूपरहकर घटने व बढ़नेसे कुछप्रयोजन नहीं रखते जो कुछ इस ब्रह्माण्ड में देखतेहो सबउन्हींकी रचनाहै जो काम उत्तम व मध्यम किसी मनुष्यसेहोताहै सबकाहाल वह जानतेहैं व इस ब्रह्माण्डको गूलरके फलसमान समझनाचाहिये जिसतरहगूलरके फलमें छोटे २ मच्छड़ रहकर उसफल के तोड़तेसमय उड़जाते हैं उसीतरह ब्रह्माण्ड में सबजीव रहकर परमेश्वरके भेदको नहींजानते जिनकोसत्संग करनेसे ज्ञानप्राप्तहोताहै वहलोग संसारी ब्यवहार व शरीरको झूठासमझकर सबजीवोंमें परमेश्वरका चमत्कार बराबर जानतेहैं सो वह आदिपुरुष गूलरके वृक्षसमान हैं जिसतरह उसवृक्ष में हज़ारोंफल गूलरकालगा रहताहै उसीतरह नारायणजीके सब रोम २ में हज़ारों ब्रह्माण्ड बँधेरहते हैं इसकारण सबजीवोंमें उन्हींका प्रकाशसमझनाचाहिये ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका सनक सनन्दन सनातन व सनत्कुमार व रुद्रको उत्पन्नकरना जो लोग अवतार नारायणजी के हैं ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे बिदुर जबब्रह्माजीको देवता व मनुष्यादिक जिसकावर्णन ऊपरहोचुकाहै उत्पन्नकरनेपरभी सन्तोषनहींहुआ तब उन्होंने सृष्टिबढ़नेकेवास्ते सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमारको जो लोग नारायणजीके अवतारहैं अपनेहृदय से उत्पन्नकिया और उन्हेंकहा तुमलोगभी प्रजा उत्पन्नकरो व बरदान हमसेमांगो सो देवैं उन्होंने ज्ञानकीराह अपनेमनमें बिचारकिया कि जो माता व पिता व भाई हरि

भजनकरनेसे मनाकरें उनको अपनामित्र समझना न चाहिये ऐसाबिचारकर सनत्कु-मारादि चारोंभाइयोंने ब्रह्माजीसेकहा कि हमलोग यहीबरदान मांगतेहैं जिसमें सदा अवस्थाहमारी पांच २ वर्षकीबनीरहै व हमारामन काम क्रोध मोह लोभमें न फँसकर पंचभूतात्माके वश न होवे व अपनेमन व इन्द्रियोंपर हमलोग प्रबलरहें व युवा व वृद्धावस्था हमपर न व्यापै किसवास्ते कि पांचवर्षकी अवस्थामें इन्द्रियांअपनाबल उस पर करनहींसक्तीं हमलोग हरिभजनकरेंगे हमैंजीव उत्पन्नकरनेकी आज्ञामतदीजिये संसारके रचनेसे भगवद्भजनमें हमारा विघ्नहोगा यहबातसुनकर ब्रह्माजीने उन्हें ऐसा बरदानदिया कि तुमलोगसदा पांचवर्षकी अवस्थारहकर सबइंद्रियां अपने आधीन रक्खोगे पर जो तुमने मेरेकहनेसे उत्पन्नकरना जीवोंका अंगीकार नहींकिया सो बहुत अनुचितहुआ ऐसाकहकर जबब्रह्माजीने अपनेपुत्रोंपर आज्ञा न माननेसे क्रोधकिया तब उनकी दोनोंभौंहोंसे एकपुरुष श्याम व ललितरंगका उत्पन्नहोकर रोनेलगा उसको देखतेही ब्रह्माजीनेपूछा तू किसवास्तेरोताहै तब उसनेउत्तरदिया मैं चहताहूं कि मेरानाम धरकर मुझे कोईकाम बतलाओ ब्रह्माजीनेकहा तूने उत्पन्नहोतेसमय रुदनकिया इसवास्ते मैंने तेरा नामरुद्ररक्खा तू जीवोंकी उत्पत्तिकर सब देवतोंमें श्रेष्ठहोकर बीचसंसारके शिवशंकर व भोलानाथ व महादेवआदिक तेरे अनेकनाम प्रसिद्धहोंगे जबरुद्रने ब्रह्माजी की आज्ञापानेसे राक्षस व भूत व पिशाचआदिक जिनकेस्वभावमें काम व क्रोध व लोभ व अहंकारभराथा अपनीइच्छासे उत्पन्नकिये तब वह लोग ब्रह्माजीको अच्छेनहीं मालूम होकर उन्होंनेकहा हे रुद्र तेरीउत्पत्ति क्रोधसेहुई है जबतक तेरेअन्तःकरणमें सतोगुणनहीं आवेगा तबतक तुम्हारे उत्पन्नकियेहुये जीव अधर्मीहोवेंगे इसलिये तुम पहिलेजाकर परमेश्वरकातपकरो जब तुम्हारेस्वभावसे तमोगुणछूटकर सतोगुणका प्रवेशउसमेंहोवे तब सतोगुणसे जीवोंकी उत्पत्तिकरना तपकरनेसे तुम्हैं परमेश्वरका दर्शनमिलैगा यह बात सुनतेही रुद्र उत्पत्तिकरना जीवोंका बन्दकरके तपकरनेको चलेगये ॥

बारहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका नारद व वशिष्ठ व अंगिराआदि ऋषीश्वर व राजास्वायम्भुव मनु व शतरूपाको उत्पन्नकरना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरबोले हे बिदुर ब्रह्माजीने उसकेउपरान्त नारद व वशिष्ठ व अंगिरा आदिक कईऋषीश्वर जिनकेनामकावर्णन आगे कियाजावेगा उत्पन्नकरके सरस्वतीनाम एककन्या अपनेबचनसे उत्पन्नकिया वह लड़की अतिसुन्दर उत्तमभूषण व वस्त्रधारण किये प्रकटहुई जिसकारूप देखतेहीब्रह्माने परमेश्वरकीमायासे मोहितहोकर उसकेसाथ भोगकरनाचाहा तब नारदजी व अंगिराआदिकने यह अधर्मदेखकर ब्रह्माकोसमुझाया हे पिता जबतुम जगद्गुरूहोकर ऐसापापकरोगे तब संसारीलोगभी यहहालसुनकर अधर्म

करेंगे इसलिये तुमको अपनीकन्यासे भोगकरना न चाहिये जबब्रह्माको अपनेपुत्रोंके समझानेसे ज्ञानहुआ तबउन्होंने उसीसमय लज्जितहोके वह शरीर अपनाछोड़कर दूसरा तन धारणकिया व ब्रह्माकीलोथसे एकअँधियारासा उठकर वही कुहिरा संसारमें प्रसिद्धहुआ जो प्रातःकाल दिखलाईदेताहै फिरब्रह्माने चारोंमुखसे चारवेदउत्पन्नकरके बनाना स्थान व बेद्यक व यज्ञ व दान व रागादि चारतरहकीविद्या व चारोंआश्रमप्रकटकिये जबब्रह्मानेदेखाकि अकेलेमेरे उत्पन्नकरनेसे जीवोंकीवृद्धिनहींहोती तबउन्होंने अपने दहिनेअंगसे स्वायम्भुवमनुनाम एकपुरुष व बायेंअंगसे शतरूपानामस्त्री उत्पन्नकरके उनदोनोंका बिवाहकरदिया और उनसेकहा तुमदोनों आपसमेंभोगबिलासकरके मनुष्यउत्पन्नकरो यहवचनसुनकर स्वायम्भुवमनुबोले हेबिधाताजी मैं तुम्हारीकृपासे बहुतमनुष्य उत्पन्नकरूंगा पर उनकेरहने वास्ते जगहचाहिये चारोंतरफ पानीभराहुआहै सो वह लोग जलपरनहींरहसक्ते अभीतक आपने जिनको उत्पन्नकिया सब कमलकेफूलपरबैठे हैं मेरेउत्पन्नकरने से अधिकहोकर कहांरहेंगे यह बात स्वायम्भुवमनुसेसुनकर ब्रह्माजीनेकहा पहिलेतुम नारायणजीका तप करो पीछेसे मनुष्यकीउत्पत्तिकरो मैं उनलोगोंके रहनेवास्ते जगहका उपायकरताहूं ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका नारायणजीसे जीवोंके रहनेकी जगह वास्ते विनयकरना व वाराह अवतार धरकर परब्रह्म परमेश्वरका पातालसे पृथ्वीका लाना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरबोले हे बिदुर जब स्वायम्भुवमनुने पृथ्वीप्रकटहोनेवास्ते चाहनाकिया तब ब्रह्माने आदिपुरुषपरमेश्वरका ध्यानकरके उनसे बिनयकिया कि हे महाप्रभु बिना दया व कृपा तुम्हारे इसजीवकाकोईकाम सिद्धनहींहोता यह अनेकतरहकी इच्छा व चाहना मनमेंकरताहै सो जिसपर तुम दयाकरतेहो वह अपनामनोरथ पाते हैं और मैं तुम्हारीआज्ञासे जीवोंकीउत्पत्ति करताहूं पर वह लोग बिनाकोईआधार पानीपर किसतरह रहेंगे जितनेजीव अबतकउत्पन्नहुये वह लोग फूलपरबैठे हैं सो आप जैसी आज्ञादीजिये वैसाकरूं नारायणजीने यहवचनब्रह्माका सुनतेही उनको ध्यानमेंदर्शनदेकरकहा कि तुम इसबातकाशोचमतकरो मैं अभी अवतारलेकर पृथ्वी वास्तेरहने जीवोंके लादेताहूं ऐसा कहकर परब्रह्मपरमेश्वर अन्तर्द्धानहोगये व उन्होंने विचारकिया कि पृथ्वीको हिरण्याक्ष दैत्य उठाकर पातालमें लेगयाहै वहांसेलानाचाहिये सो परमेश्वरकी इच्छासे ब्रह्माजीको छींकआई तो उनके दहिने नाकसे एकशूकरबहुतछोटा मच्छड़केसमान जिसको वाराह कहते हैं गिरपड़ा जबवहशूकर क्षणभरमें हाथीकेसमानबढ़कर अपनीबोलीमें गर्जनेलगा तबब्रह्मा पहिले घबड़ाकर कहनेलगे कि यह कौनजीवहै जो ऐसीजल्दी बढ़गया फिर ज्ञानकीराहसे उन्होंने मालूमकिया कि मेरे बिनयकरनेसे बैकुंठनाथ यहरूपधरकर पृथ्वी लानेका उपायकरनेआये हैं नहींतो दूसरेको क्या सामर्थ्यथी जो एकक्षणमें इतनाबढ़जाता

यहदानविचारकर ब्रह्माने वाराहजीसे विनयकिया महाराजआपने वाराहरूपी ईश्वरहो-कर अपनावचनपूराकिया यहबातब्रह्माकीसुनतेही वाराहजी फूलपरसे पानीमेंकूदपड़े व पातालमेंजाकर जब हिरण्याक्षदैत्यको वहांनहींदेखा तब वाराहजीने पृथ्वीको जो वहांपर बावनकिरोड़योजनलम्बी व चौड़ीरक्खीथी अपनेदांतोंपर इसतरहउठालिया जिसतरह हाथी अपनेदांतोंपर कमलकाफूलउठालेवे जब वाराहजी पृथ्वीलियेहुये चलेआतेथे तब राहमें हिरण्याक्षदैत्यसे जो बड़ाबलवान्होकर कोई देवता उससे लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखताथा लड़ाईहुई सो वाराहजी हिरण्याक्षदैत्यको मारकर पृथ्वीपानीकेऊपरलाये ब्रह्मा पृथ्वीको देखतेही बहुतप्रसन्नहोकर परब्रह्मपरमेश्वरसे बोले आप जिसतरह बड़ीकृपाकर के पृथ्वीलाये उसीतरहदयाकरके धरतीकोपानीपररखकर स्थिरकरदीजिये जिसमें सबजीव आनन्दसेरहकर पृथ्वीपर यज्ञ व होमकरैं जब वाराहजीने पृथ्वीको पानीपररक्खा और वह मिट्टीहोनेसे गलनेलगी तब परब्रह्मपरमेश्वरने कुछ अपनीशक्ति पृथ्वीको देकर जल पर स्थिरकरदिया सो बशिष्ठादिक जो लोग ब्रह्माजी व स्वायम्भुवमनु व शतरूपासे उत्पन्नहुयेथे नारायणजीकी स्तुति करने लगे व उसपृथ्वीपर रहकर परमेश्वरका स्मरण व यज्ञ व होम करना आरम्भ किया ॥

चौदहवां अध्याय ॥

मैत्रेयऋषीश्वरका बिदुरजीसे यहबातकहना कि जय विजय द्वारपालक बैकुण्ठसे बीचपेट दितिके आनकर गर्भवास कियाथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् इतनी कथासुनकर बिदुरजी ने मैत्रेयऋषीश्वरसे पूंछा कि नारायणजी ने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु दैत्यके मारनेवास्ते आप अवतारलिया क्या देवतालोग उनकोनहींमारसक्तेथे मैत्रेयऋषीश्वरबोले हेबिदुर हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु अवतार जयबिजय बैकुण्ठके द्वारपालकोंकाहै सिवाय नारायणजीके दूसराकोई उनको मारनहींसक्ताथा व उनकीकथा इसतरहपरहै सुनो कश्यप ब्रह्मा जीकेबेटे दोस्त्री रखतेथे एक दिति व दूसरीस्त्रीकानाम अदितिथा देवता बेटे अदिति व दैत्यलोग बेटे दितिके हैं जिनदिनों देवता इन्द्रासनकाराज्य व सुख भोगकरतेथे उन्हीं दिनों में दैत्योंकी माताने अपनेबेटोंकी राजगद्दी छूटजानेसे सेवा कश्यपजी अपने पतिकी इस इच्छासे करना आरंभ किया कि जिसमें यह प्रसन्नहोकर ऐसाबलवान्पुत्र मुझेदेवें जो देवतोंसे राज्यछीनकर आप इन्द्रासनपरबैठे सो एकदिन दितिने अपनेपतिको प्रसन्न देखकर बिनयकिया कि मैं चाहतीहूं कि मेरे बेटे ऐसेशूरवीर उत्पन्नहोवें जो अदितिकेबेटोंको युद्धमेंजीतकर इन्द्रा-सन छीनलेवें देवतालोग धर्म्मात्माथे इसलिये कश्यपजीको उनकीहार मनसेनहीं भावतीथी पर कश्यपजीने दिति अपनीस्त्रीके सेवाकरनेसे लज्जित व प्रसन्नहोकर कहा जो तू चाहती है वैसाहोगा यहबातसुनकर दिति बहुतप्रसन्नहुई फिर उन्हींदिनों में जब

दिति स्त्रीधर्मसे शुद्धहुई तब उसने सन्ध्यासमय भोगकरनेकीइच्छाकरके कश्यपजी अपने पतिकेपासजाकरकहा कि इससमयमुझे कामदेव दुःखदेरहाहै व मेरेसौतकेबेटे राजसिंहासनकासुखभोगते हैं यहदुःख मुझसे सहानहींजाता सो मेरी चिन्ता दूरकीजिये यहबचन सुनकर मरीचि के बेटा कश्यपमुनि बोले हे दिति इससमय तेरेसाथ भोग व बिलास जो बहुतबुराकामहै नहीं करसक्ता सन्ध्यासे चारघड़ी रातबीतेतक व चारघड़ी रातरहेसे प्रातःकालतक सिवायलेनेनाम व करनेध्यान परमेश्वरके दूसराकाम न करना चाहिये किसवास्ते कि इससमयमें महादेव व पार्वतीजी बैलपरचढ़कर सबजगहजातेहैं उन्हें जो मनुष्यजागताहुआ परमेश्वरकेध्यान व स्मरणमें दिखलाईदेता है उसे आशीर्वाद देकर बड़ाई उसकीकरतेहैं व जो मनुष्यसोताहुआ या बीचकामकाज संसारी ब्यवहारके लगारहताहै उसको ऐसाशापदेते हैं कि तेरामनोरथकभी पूरा न होय और तू यहबात कहै कि ब्रह्माकेवंशमें तुम और वहदोनों उत्पन्नहुयेहो इसलिये महादेवजी नातेदारी होनेसे तुम्हारा अपराधक्षमाकरैंगे सो शिवजीहमारे मालिक व ईश्वरके तुल्यहैं धर्मके स्थानपर उनको किसीकासंकोचनहीं रहता इसलिये तू चारघड़ी और धैर्य्यरख जिसमें परमेश्वरके भजन व स्मरणकासमय बीतजावे उससमय दिति कामदेवकेमदमें ऐसी मतवाली होरहीथी कि अपनेपतिके समझानेपरभी उसनेसंतोषनहींकरके लाज व शर्म छोड़दिया व जबकश्यपजीके शरीरका कपड़ाधरकर भोगकरनेकेवास्ते हठकिया तब कश्यपजीने हारमानकर उसकेसाथ भोगकरकेकहा हे दिति इससमय तैंने जो यहअधर्म किया इसपापकरनेसे तेरे दोबेटा ब्राह्मण व ऋषीश्वरआदि सबजीवोंकोदुःख देनेवाले ऐसेबलवान् उत्पन्नहोंगे कि कोईदेवता या दैत्य या मनुष्य उनसेलड़ाईमें सामनाकरनेसे जीत न सकेगा नारायणजीमहाराज आप सगुणअवतार लेकर उनकोमारैंगे दितिने यहबातसुनतेही बहुतउदासहोके अपनेपतिसे हाथजोड़कर बिनयकिया महाराज मेरी इच्छा यहथी जिसमें मेरेबेटे देवतोंकोजीतकर अमरावतीपुरीका राज्यकरके सुखभोगैं मुझको यहकामनानहींथी जोमेरेबालक अधर्मीहोकर ब्राह्मणआदिक जीवोंको दुःखदेवें ऐसेपापी बेटेलेकर मैं क्याकरूंगी यहबचनदितिका सुनके व उसेबहुतउदास देखनेसे कश्यपमुनि बोले हे दिति अब क्याकरनाचाहिये इससमय भोगकरनेका प्रभावयही है इसीवास्ते मैं मनाकरताथा परन्तुकुकर्मकरनेके पीछे जो तू शोचकरती है इसपछतानेसे एकपौत्र तेरा ऐसापरमभक्त ज्ञानी व तपस्वी उत्पन्नहोगा जिसका नामलेनेसे संसारी जीव भवसागरपार उतरजावैंगे व सबदेवता व दैत्य उसकागुणगाकर नारदजीउसकी बड़ाई इन्द्रकीसभामें कहैंगे व परब्रह्म परमेश्वर अवतारलेकर रक्षा उसकीकरैंगे यहबचन अपनेपतिका सुननेसे दितिको कुछधैर्य्यहुआ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

सनत्कुमारजीको नारायणजीके जय बिजय द्वारपालकोंको शापदेना और दिति के गर्भमें उनदोनोंका आना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने बिदुरजीसेकहा कि जिससमय कश्यपमुनिकावीर्य दितिके पेटमेंपड़ा उसीसमय जय व बिजयके तेजसे जो गर्भमें आयेथे मन देवतोंका ऐसाघबड़ाया कि उनके हृदयमें डर उत्पन्नहोकर यह मालूमदेनेलगा कि कोई बलवान्‌शत्रु हमलोगोंको मारनेकेवास्ते चलाआताहै जब अधिक बिकलतासे मनदेवतोंका कहींनहीं लगकर प्रतिदिन बलउनका घटनेलगा तब इन्द्रादिक देवतोंने ब्रह्माकेपासजाकरकहा कि महाराज आपजगत्‌कर्त्ताहोकर सबजीवोंके दुःख व सुखकाहाल जो होनेवालाहै पहिलेसेजानतेहैं सो इनदिनों हमलोगोंका मनबहुत घबड़ाकर डरसेभरारहताहै इसकाभेद बतलादीजिये यहबचन देवतोंका सुनकर ब्रह्माजीबोले हे इन्द्र जय व बिजय द्वारपालक नारायणजीके जन्मलेनेकेवास्ते दितिकेपेटमें गर्भवासकिया है इसलिये उसके तप व तेजसे तुम्हारा बलहीनहोकर तुमलोगोंका यहहालहुआ यहबात सुनकर देवतोंनेकहा कि महाराज अभी उनकेगर्भमें आनेसे हमलोगोंकी यहदशा हुई उनदोनोंके जन्मलेनेसे हमारी क्यागति होगी व हे महाप्रभु बैकुंठबासीलोग जन्म व मरणसेरहितहैं उन्होंने बैकुंठकासुख छोड़कर बीचतनदैत्यके किसवास्ते जन्मलेना अंगीकारकिया इसकाहाल वर्णनकीजिये जिसमें हमारा सन्देहछूटजावे तब ब्रह्मानेकहा उनकाहाल इसतरहपरहै एकदिन लक्ष्मीजी बड़े प्रेमसे बहुतदासीरहते परभी अपनेहाथ चन्दन व अतर नारायणजीके शरीर व भुजामें लगातीथीं व परब्रह्म परमेश्वर बैकुंठमें जहांसबस्थानजड़ाऊ सोनेके बहुतअच्छे बनेहैं रत्नसिंहासनपर बैठेथे उससमय जगन्माताने यह बिचारकिया कि भुजा श्यामसुन्दरके देखनेमें बहुतसुन्दर व कोमलमालूम होतेहैं पर मैंने आजतक इनभुजोंकाबल कभीनहीं देखा न मालूम इनमेंकुछ पुरुषार्थहै या नहीं नारायणजी अन्तर्य्यामीने उनकेमनकाहाल जानकर अपनापराक्रम लक्ष्मीजीको दिखलानेकेवास्ते यहबात बिचारा कि सिवाय जय व बिजय जो मेरेद्वारपालकहैं दूसराकोई एकक्षणभी हमारे भुजाकाबल सहनहींसक्ता जो मेरेसाथलड़सके इसवास्ते इनदोनोंका दैत्ययोनिमें जो हमारेशत्रुहैं जन्मदेवें व उनसे लड़ाईकरके अपने भुजोंकापराक्रम लक्ष्मीजीको दिखलावें ऐसाबिचारकर बैकुंठनाथने जय व बिजयका ज्ञानबदलदिया कि उसीकारण तीनबेरउन्होंने बीचतनदैत्यके जन्म लिया व उनकेजन्मलेनेका यहहेतुहै कि एकदिन सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमारचारोंभाई जिनको किसीसमय भीतरजानेकेवास्ते मनहाईनहींथी नारायणजीका दर्शनकरनेकेवास्ते बैकुंठमेंगये उसीदिन परमेश्वरकी इच्छासे जिसकाहाल ऊपरलिखाहै जय व बिजय द्वारपालक चतुर्भुजीस्वरूपने सातवींडेवढ़ीपर सनत्कुमारआदि ऋषीश्वरों

को भीतरजानेसे मनाकरकेकहा कि बिनापूंछेनारायणजीके महलबीचजाना उचितनहीं है यहनईबात सुनतेही सनत्कुमारजीने क्रोधकरकेकहा हे मूर्ख हमको बैकुंठनाथने भीतर जानेकेवास्ते कभीनहीं मनाकियाहोगा किसवास्ते कि वहसदा ब्राह्मणोंका आदर व सन्मानदूसरोंसे अधिककरते हैं यहसब तुम्हारीदुष्टताहै जो हमें रोकतेहो बैकुंठमें काम क्रोध मोह लोभ ब्यापनहींसक्ता पर तुमनेहमारा अपमानकरके हमें क्रोधदिलाया इस लिये हम परमेश्वरसे चाहतेहैं कि तुमदोनों मर्त्यलोकके बीच जहांपर जीव काम क्रोध मोह लोभसेभरेरहतेहैं दैत्ययोनिमें जन्मलेव यहशाप सुनतेही जय बिजयका गर्वजाता रहा तब दौड़करसनत्कुमारजीके चरणपरगिरपड़े व रोतेहुये हाथजोड़कर बिनयकीमहा-राजहमनेजाना कि अब हमारे बुरेदिनआयेहैं इसलिये हमसे ऐसाअधर्महुआ सो अपराध हमाराक्षमाकरके अवधिका प्रमाणकरदीजिये कि दैत्ययोनिसे कबहमारा उद्धारहोगा यह दीनबचनसुनकर सनत्कुमारजीनेकहा मेराशाप किसीतरह फिरनहींसक्ता और न मालूम क्योंकर मेरेस्वभावमें क्रोधनेप्रवेशकिया सो तुमदोनों भाइयोंको तीनबार माताके पेटसे जन्मलेकर दैत्यहोनापड़ेगा व तीनोंबेर त्रिलोकीनाथ सगुणअवतारलेकर जबतुम्हें अपने हाथसे मारेंगे तबतुमउद्धारहोकर फिर बैकुंठमें अपनी जगहआवोगे जिससमय सनत्कु-मारजी जय व बिजयसे ऐसा कहरहेथे उसीसमय बैकुंठनाथ यहहालसुनकर सनत्कुमारजी का सन्मान करनेकेवास्ते नंगेपांव लक्ष्मीसमेत बाहर निकलआये और सनत्कुमार जीके चरणोंपरगिरकरकहा इनद्वारपालकोंसे बड़ाअपराधहुआ जो इन्होंने आपकोरोका मेरीलक्ष्मीको तुमसेकुछपर्दानहीं है अधर्मकीजगह स्त्रीको पर्दाकरनाचाहिये यहअधीनता बैकुंठनाथकी देखकर सनत्कुमारजीने मनमेंकहा देखो कैसीबड़ाई नारायणजीमें है जिस परब्रह्मपरमेश्वरके चरणोंकाध्यान ब्रह्मा व महादेवआदि देवता व नारदमुनि आदिक ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग अपनेहृदयमेंरखनेसे भवसागरपार उतरकर कृतार्थहोते हैं सो वही आदिपुरुष भगवान् तीनोंलोकके मालिक व उत्पन्नकरनेवाले जिनकाभजन व स्मरण करनेसे हमनेयहबड़ाईपाई हमारेचरणोंपरगिरकर इतनीअधीनता करतेहैं क्योंनहो इसी-वास्ते यहअपनानाम ब्रह्मण्यदेवरखकर ब्राह्मणोंकासत्कार बड़ेप्रेमसे करते हैं नहीं तो इनका क्याप्रयोजनथा जो मुझ ऐसे गरीबब्राह्मणपर इतनी दयाकरते यहसबकृपा इसवास्ते करतेहैं जिसमें संसारीलोग यहहालसुनकर ब्राह्मणोंकीसेवा व सन्मानकरें ऐसाबिचारकर सनत्कुमारजीने त्रिलोकीनाथ से हाथजोड़कर बिनयकी कि हे दीनानाथ मैंने क्रोधबश तुम्हारे सेवकों को शापदिया सो आप दयाकीराह मेराअपराधक्षमाकर अपने चरणोंका ध्यान मुझेदीजिये जिसमें तुम्हारे चरणकमलोंकाध्यान मनमेंरखने से फिर क्रोध हमको न आवै व कोईजीव मेरेहाथसे दुःख न पावै ॥

सोलहवां अध्याय ॥

नारायणजीको सनत्कुमारका सन्मानकरना व बैकुंठनाथकी सनत्कुमारको स्तुतिकरना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हेबिदुर सनकादिकके मुखसे सबहालसुनकर परब्रह्मपरमेश्वर बोले हेमहाराज जय व विजय मेरेद्वारपालकोंको अपराधकरनेकेबदले जो दंड आपने दिया सो बहुतअच्छाकिया और मैं इसशापदेनेसे बहुतप्रसन्नहुआ किसवास्ते कि इनके दण्डपाने से दूसराकोईब्राह्मण व ऋषीश्वरों का अपमान नहींकरेगा व तुम्हारेस्वभाव में क्रोध नहींथा यहशाप मेरीइच्छा से इनको हुआहै आप किसीबातकीचिन्ता मनमें न करें और मैं इसवास्ते तुम्हारीबिनती करताहूं कि यहदोनों मेरेद्वारपालकथे इनके अपराधकरनेका अप· यश मेरेऊपरहै इसलिये मेराअपराधक्षमाकीजिये किसवास्ते कि संसारमें किसीकानौकर कोई काम भला या बुराकरे तो उसकेमालिककानाम उसबातकेकरनेमें धराजाताहै व जो लोग साधु व महात्मा व ब्राह्मणका अपमानकरते हैं उनकातन शत्रुहोकर उन्हें नरकमें रहनापड़ता है व नरकके लोगोंकोभी ऐसे मनुष्यकीसंगति अच्छीनहींलगती सो तुमलोग ब्राह्मण व ऋषीश्वर मेरेइष्टदेवताहो तुम्हारेचरणोंकीधूरका ऐसाप्रतापहै कि लक्ष्मीजी चंचलस्वभाव होनेपरभी मेरेपास दिनरात बनीरहतीं व ब्राह्मणको मैं अपनेतन व लक्ष्मीजी व बैकुंठ सेभी प्यारा व अच्छाजानताहूं व संसारमें हम ब्राह्मणमुख व अग्निमुखसे भोजनकरते हैं पर जैसा ब्राह्मणको अच्छेपदार्थ खिलानेसे प्रसन्नहोताहूं वैसे अग्निहोमकरनेसे प्रसन्न नहींहोता ब्राह्मणोंको इच्छाभोजनखिलानेसे मेरापेट तीनोंलोकके जीवोंसमेत भरजाताहै इसलिये गृहस्थको ब्राह्मणखिलाना अवश्यचाहिये और मैं ब्राह्मणोंके चरणोंकीधूर लक्ष्मीजीसमेत अपनेशिरपरचढ़ाताहूं व ब्राह्मणका अपराधक्षमाकरनेवालेलोग मुझे बहुतप्यारे मालूमदेतेहैं यहबचन बैकुंठनाथकासुनकर सनकादिकबोले हेमहाप्रभु तुम्हारीलीला व इच्छा ब्रह्माजी हमारेपितानहींजानते हमलोगोंकी क्यासामर्थ्यहै जो जानसकें आपसब चौदहोंभुवनके जीवोंके मालिकहोकर जैसी तुम्हारीइच्छाहोती है वैसा ब्रह्मादिकदेवता करते हैं व आपसे कोईदूसरा बड़ानहीं है उनको बड़ाभाग्यवानसमझनाचाहिये जिनकेहृदय मेंतुम्हारीभक्ति व बैकुंठजानेकी चाहनारहती है व जोलोग हरिभक्तोंसे सत्संगरखकर उनकी सेवाकरते हैं उनको बैकुंठपहुंचनेमें सन्देहनहींरहता व आपकाबैकुंठ कैसाहै जिसमें काम व क्रोध व मोह व लोभकाप्रवेशनहींहोता वहां कल्पवृक्ष बहुतसेलगेरहकर बारहोंमहीने उनवृक्षों में ऐसेफूल व फल लगेरहते हैं जिसकेदेखनेसे चित्तप्रसन्नहोकर शोच व दुःख छूटजाताहै व अच्छे २ पक्षी हंस व मुरैलाआदि वहांरहकरअनेकप्रकारकी मीठी मीठी बोलियांबोलते हैं व बहुतबड़ेमकान सोनेके रत्नादिकसेजड़ेहुये बनेहैं व उसजगहपहुंचने से मनुष्यकी सबइच्छापूर्णहोजाती हैं सबतरहके सुख व पदार्थ उसकोवहांमिलते हैं ऐसा कहकर सनकादिक नारायणजी व लक्ष्मीजीके स्वरूपकाध्यानकरके ऐसेप्रेममें डूबगये

कि आंशू बेप्रमाण उनकीआंखोंसेबहनेलगे व नारायणजीकास्वरूप इसतरहपर है कि श्यामरंग कमलनयन चतुर्भुज मोहनीमूर्त्ति किरीटमुकुटसाजे अंग २ पर भूषणबिराजे कौस्तुभमणि व बैजयन्तीमालापहिने पीताम्बरकी कछनीकाछे उपरनारेशमीओढ़े चारो-हाथोंमें शंखचक्रगदापद्मधारणकिये शंख व चक्रके दोहाथ ऊपरउठाये पद्म व गदाके दोहाथ नीचेकोलटकाये घूंघरवालेबाल मन्दमन्दहास्य तापहारिणीचितवन उनके बाईं-ओर लक्ष्मीजी इसस्वरूपसे कि एकस्त्रीबहुतसुन्दर बिजली ऐसी अंगकी चमक पीताम्बर पहिने कानोंमें कर्णफूल हाथोंमें कंगन व कड़ा पैरोंमें पायजेब व कड़ा गलेमें मोती व रत्नकेहार शिरमेंचूड़ामणि नाकमेंनथपहिने लक्ष्मीनारायणजी जड़ाऊसिंहासनपर बैठे हैं जब ऐसेस्वरूपकाध्यान सनकादिकनेकिया तब बैकुंठनाथनेकहा मैं तुमसे बहुतप्रसन्नहूं कुछबरदानमांगो यहबचनसुनतेही सनकादिक हाथजोड़करबोले कि महाराज हम यही बरदानमांगते हैं कि तुम्हारे चरणोंकी भक्ति मेरेहृदय में बनी रहकर आपकी कथा व लीला सुननेमेंसर्वदा इच्छालगीरहै जब नारायणजीने इच्छापूर्वक बरदानदिया तब सन-कादिक बैकुंठनाथको दंडवत्करने उपरान्त बिदाहोकर चलेगये ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुका दितिकेपेटसेजन्मलेना व हिरण्याक्षका बरुणदेवताके स्थानपर जाना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने बिदुरसेकहा सनकादिकके जाने उपरान्त जय व बिजय द्वारपालक इसइच्छासे बैकुंठनाथके सामनेखड़ेरहे कि जिसमें नारायणजी आज्ञाकरदेवें तो ऋषीश्वरों का शाप हमकोभोगना न पड़े त्रिलोकीनाथ अन्तर्यामी उनकीमन्शा जानकर बोले हे जय बिजय मैंने अपनीइच्छासे तुम्हाराज्ञान बदलकर यहशाप ब्राह्मणोंसे दिलवादियाहै नहीं तो सनत्कुमारजीके स्वभावमें क्रोधनहींथा होनेवालीबात बिनाहुयेनहीं रहती व सनत्कुमारऋषीश्वर अपनाक्रोधक्षमाकरके तुम्हारेउद्धारका उपाय तीनजन्म बीतेकहगये हैं सो तुम्हें तीनबेर दैत्ययोनिमें जन्मलेकर भूर्लोकमें अवश्यरहनाहोगा उसतनमें मेरा ध्यान शत्रुभावसेकरना मैं सगुण अवतारलेकर तुमकोमारूंगा व तीनजन्म उपरान्त हम तुम्हें फिर बैकुंठमें बुलालेवैंगे ऐसाकहकर जय व बिजयको बैकुंठसे गिरादिया उन्हीं दोनोंभाइयोंने बैकुंठसे आनकर दितिकेपेटमें गर्भवासकियाहै सो तुमलोग चिन्ता मत करो उनके उत्पन्नहोनेसे थोड़ेदिनतक देवतोंको दुःखपहुंचेगा फिर नारायणजी अवतार लेकर उन्हें मारडालेंगे व तुमलोगोंको ऐसीसामर्थ्यनहींहै जो उनकोमार व जीतसको यहहाल ब्रह्माजीसे सुनकरदेवता अपनेस्थानपर चलेगये व जय बिजय दितिकेपेटमें पालनहोनेलगे व दिति सदा इसबातकी चिन्ताकरके कहतीथी ऐसेअधर्मी व दुःखदायी बेटेउत्पन्नहोनेसे मुझे सिवायदुःखके कुछ सुखनहींहोगा इससे वह न जन्मैं तो अच्छाहै

सो परमेश्वरकी इच्छासे सौबर्षतक वहदोनों दितिके पेटमेंरहकर उत्पन्नहुये उनदोनोंके जन्मसमय बहुतअशकुन संसारमें प्रकटहोकर ब्राह्मण व देवतोंका कलेजा मारेडरके कांपनेलगा व अग्निहोत्रियोंकी अग्नि जो कईपीढ़ीसे कुण्डमेंथी वह बुझगई व पृथ्वीपर भौंचाल आकर सबलक्षण कलियुगके दिखलाई देनेलगे सो ब्रह्माजीने उनदोनोंकानाम हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुरक्खा हिरण्याक्षका शरीरबहुतलम्बा व चौड़ा कईयोजनका था जब वहदोनोंभाई सयानेभये तब ब्रह्माजीने उनसेकहा कि तुमलोग अपनीमाताकी इच्छासेजाकर राज्यकरो यहबचन सुनतेही हिरण्याक्ष अपनेबलके घमंडसे उन्मत्तहोकर गदाहाथमें लियेहुये अकेला घरसेनिकला और वह अपनेपुरुषार्थके सामने किसीको कुछ माल नहीं समझताथा इसलिये कुछसेना साथलेकर पहिले बरुणलोकमें चलागया व बरुणदेवताके द्वारपर जो समुद्रादिक और नदियोंकेमालिकहैं खड़ाहुआ व समुद्रका पानी अपनीगदासे पीटनेलगा व बरुणदेवताके द्वारपालकोंसेकहा कि तुमलोगजाकर बरुणदेवतासे कहदो कदाचित् वह पुरुषार्थरखताहो तो आकर हमारेसाथ युद्धकरे यह सन्देशा हिरण्याक्षका सुनतेही पहिले बरुणदेवताको क्रोधहुआ फिर ब्रह्माजीका बचन यादकर व अपनी दशामध्यमदेखकर हिरण्याक्षको यहबातकहलाभेजी कि आगे हमने बहुतसे दैत्योंकोलड़ाईमें मारा व जीताथा अबहम बूढ़ेहुये इसलिये तुझतरुणदैत्यसेनहीं लड़सक्ते तुम्हारेसाथ युद्धकरनेवाला सिवाय नारायणजीके दूसराकोईनहीं है थोड़ेदिनों में तेरेऐसेअधर्मी व पापीके मारनेवास्ते बैकुण्ठनाथ अवतारलेकर तुझेमारेंगे जब हिरण्याक्षनेसुना कि मेरेलड़नेकेवास्ते परमेश्वरका अवतारहोगा तब बहुतप्रसन्नहोकर बरुणको कहलाभेजा जब तुमनेहमसे हारमाना तो जो कुछ उत्तममणि व रत्न तुम्हारेयहांहो सो हमैं भेजदो बरुणने हारमानकर बहुतसेरत्न व मणि हिरण्याक्षको भेजदिये व उससेबोले यह स्थान आपकाहै चाहोतुमरहो या किसीकोदेकर मुझेजहांआज्ञादो वहांजाकररहूं जब हिरण्याक्षने बरुणको अपने अधीनदेखा तब भेंटलेनेके उपरान्त उनकोवहां अपनीओरसे बसाकर कुबेरदेवताके स्थानमेंगया कुबेरदेवतानेभी अपनेदिन बुरेदेखकर बहुतउत्तम रत्न व मणि उसको भेंटदेकर कहा जो कुछद्रव्य मेरेयहां है उसको अपनाजानकर जैसी आज्ञा मुझेदो वैसाकरूं हिरण्याक्ष उसेभी अपनेबश जानकर यमपुरीमें पहुंचा धर्म्मराज यमपुरीके स्वामीनेभी ब्रह्माजीकाकहना यादकरके उसकी बिनतीकी व बहुतसीभेंटदेकर उसकेहाथसे अपनाप्राणबचाया जब हिरण्याक्षने उसकोभी अपने अधीन समझलिया तब इन्द्रलोकमें जाकरललकारा इन्द्रनेभी मारेडरके राज्यसिंहासनकाछत्र व चमर उसेभेंट देकर उसकीआज्ञा अंगीकारकी जब हिरण्याक्षने देखाकि तीनोंलोकमें कोईऐसा नहींरहा जो मेरासामनाकरसकै और मैं उसकेसाथ युद्धकरके अपनीइच्छा पूरीकरूं तब उसने मनमें विचारा कि अब उसको ढूंढ़नाचाहिये जो मेरेसाथ युद्धकरे हिरण्याक्ष यह बात बिचारकर अपनेलड़नेवालेको ढूंढ़ताहुआ आनन्दसेचलाजाताथा राहमें उसनेअचानक

नारदजीको देख दण्डवत्करने उपरान्त हँसकर पूछा कहो मुनिनाथ तुम तीनोंलोकमें घूमते फिरतेहो सो कोई शूरबीर हमारेसाथ युद्धकरनेको बतलाओ नहीं तो तुम्हें मारडालेंगे यहबात सुनकर नारदजीबोले हे कश्यपनन्दन हमसंसारमें किसीको ऐसानहीं देखते जो तुम्हारेसाथ लड़सके पर नारायणजी तेरेसाथ लड़सक्ते हैं तब हिरण्याक्षनेकहा तुम परमेश्वरकापता कहींबतलाओ मैं उनसेजाकर युद्धकरूं हमनेसुनाथा कि ब्राह्मण व तपस्वियोंके स्थानपर वहरहते हैं सो वहांजाकर मैंने बहुतसे ऋषीश्वर व योगीश्वरों को दुःखदिया पर मेरेडरसे वहप्रकट न हुये तब नारदमुनिबोले हे हिरण्याक्ष इससमय नारायणजी बाराहरूपधरकर पृथ्वीलानेकेवास्ते पातालमेंगये हैं तुम्हें लड़नाहो तो वहां जावो वह तुम्हारेसाथ लड़ैंगे यह बात कहकर नारदजी चलेगये ॥

अठारहवां अध्याय ॥

हिरण्याक्ष को बाराह भगवान्का मारना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे बिदुर हिरण्याक्ष यहहाल नारदजीसे सुनतेही बहुत प्रसन्न होकर गदाहाथमेंलियेहुये बाराहजीसे लड़नेकेवास्ते पातालकीओरचला राहमेंक्यादेखाकि बाराहजी अपनेदांतोंपर पृथ्वी फलके समानलियेहुये चलेआते हैं उनकोदेखतेही हिरण्याक्षने हँसकरकहा हेबाराहचोर कहांजाताहै खड़ारह हमारेसाथलड़ाईकर बनमें हमने बाराहको देखाथा यहबड़ेआश्चर्यकीबातहै जो पानीमें वहरूप दिखलाईदिया और तुम हमसेनहींडरते कि हमारेपुरुषोंकीथाती पृथ्वी जो पातालमेंरक्खीथी उसेचुराकर लियेजाते हो सो मेरेहाथसे तुम्हाराप्राण किसीतरह नहींबचेगा व जिसकारण मैं तुमको ढूंढ़ताथा वहमनोरथमेरापूर्णहुआ व मैंने पहिचाना कि तुम नारायणहो इसीतरहकईबेर अवतार लेकर तुमने हमारे भाईबन्द दैत्योंको माराहै आजतुम्हेंमारकर सबदिनोंकी कसरलेताहूं तुम्हारेमारनेकेउपरान्त योगी व ऋषीश्वरोंकोमारूंगा जिनके होम या यज्ञकरने से तुम को सामर्थ्यहोती है यहसबदुर्वचन हिरण्याक्षकासुनकर बाराहजी इसलिये थोड़ीदेर कुछ नहींबोले कि भलेमनुष्यको दुर्वचनकहने से अशुद्धबातकहनेवाले की आयुर्दा व तेज बल कमहोजाता है जब बाराहजीने जाना कि दुर्वचनकहने से तेज व बल हिरण्याक्षका क्षीणहोगया तब पृथ्वीको अपनीमायासे पानीपररखकर हिरण्याक्षसेकहा हेकश्यपनन्दन सत्यहै मैं जलकाशूकरहोकर तेरेऐसेगांवकेकुत्तेको जो अपनेको सिंहसमझते हैं ढूंढ़ताफिरता हूं व जिसकीमृत्यु निकटपहुंचती है उसको भली व बुरीबातकहनेका बिचारनहींरहता व यहपृथ्वी तुम्हारेपुरुषों की थाती मैं तेरेसामने जो तू अपनेको बड़ाशूरबीर जानता है लाकर सन्मुखखड़ाहूं पहिले तू अपनीगदा जो हाथमें लिये है मेरेऊपरचला और जब तेरी गदा कुछकामनहींकरैगी तब मैं अपनीगदा तुझे मारूंगा व यह तैंने सत्यकहा कि हम ने हजारोंबार अवतारलेकर दैत्योंकोमारकर पृथ्वीकाभार उताराहै वहीगति तेरीभीहोगी

यहबचन सुनतेही हिरण्याक्षने क्रोधसेबाराह भगवान्पर अपनीगदा चलाया सो नारायणजीने उसकीगदा रोककर अपनीगदा उसकेमारा इसीतरह दोनोंतरफसे गदायुद्धहोने लगा जब लड़ते २ थोड़ासादिनरहगया तब ब्रह्माने आनकर बाराहजीसे बिनयकिया हे महाप्रभु आपहिरण्याक्षके मारनेमें किसवास्ते बिलम्बकरके उसेखेलखिलाते हैं इस अधर्मीको जल्दीमारकर देवतोंका डरछुड़ानाचाहिये सिवाय तुम्हारे दूसराकोई ऐसी सामर्थ्यनहींरखता जो इसेमारसकै यहबचन ब्रह्माकासुनतेही बाराहजीने एकगदाहिरण्याक्ष के ऐसीमारी कि वह गिरपड़ा जबफिर उठकरउसने अपनीमायासे अँधियारा उत्पन्नकिया तब बाराहजीने सुदर्शनचक्रको जिसमेंहजार सूर्यकेसमान प्रकाशहै बुलाकर उसकीमाया हरलिया जब हिरण्याक्षने त्रिशूलचलाया तब सुदर्शनचक्रने त्रिशूल उसकाकाटडाला फिर बाराहजीने एकतमाचा हिरण्याक्षके ऐसामारा कि वहमरकर गिरपड़ाउसके मरतेही देवतोंने प्रसन्नहोकर बाराहजीपर फूलबर्षाये व अपनामनोरथ सिद्धपाकर बाजेबजाये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीका देवतोंसमेत बाराह भगवान् के पासआना व उनकी स्तुतिकरना ॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर जब हिरण्याक्ष मारागया तब ब्रह्माने देवतों समेत बाराहजी के पासआनकर इसतरहपर स्तुतिकिया हे परब्रह्मपरमेश्वर आपने वास्तेरक्षाकरने देवता व ब्राह्मण व यज्ञकेअवतारलेकर हिरण्याक्षअधर्मी दुःखदेनेवालेकोमारडाला व पृथ्वीको पातालसेलाकर पानीपर स्थिरकिया सो अबतुम्हारीकृपा से पृथ्वीपरसबजीव आनन्दसे रहकर यज्ञ व पूजा व दानआदिकरेंगे हिरण्याक्षकेसमयमें देवता व पितरोंकाभाग नहीं मिलताथा अब वहलोग अपना २ अंश यज्ञ व होममेंपाकर आनन्दसे तुम्हारास्मरण करेंगे जब देवतालोग स्तुतिकरचुके तबपृथ्वी स्त्रीरूपहोकर बाराहजीके सामने आई व उसने हाथजोड़करकहा हेज्योतिस्स्वरूप आपनेदयाकरके मुझको पातालसेलाकर पानी परस्थिरकिया सब छोटेबड़े संसारीजीव अपनेचरण मेरेऊपररखते हैं सो आपने आदर करके अपने दांतोंपरउठाया इसलिये मैंनेअपनेको कृतार्थजाना किसवास्ते कि तुम्हारे चरणोंकीछाया सबजगत्पर पड़तीहै सो मेरीछाया तुम्हारेशिरपरपड़ी पर मैं एकबातसे बहुतडरतीहूं कि कलियुगबासीमनुष्यबड़ेपापीहोके अपनाकर्म्म व धर्म्मछोड़कर अशुभ कर्म्मकरेंगे व हरिभक्तोंकेसाथ शत्रुतारखकर तुम्हारीभक्तिसे बिमुखरहेंगे व अपनेमाता व पिता व भाईबन्दसे झगड़ाकरके साले व श्वशुर से प्रीतिरक्खेंगे व स्त्री अपनेपतिसे प्रीतिनहींरखकर दूसरेपुरुषको चाहेंगी व पुरुष अपनी स्त्रीको पालन न करके वेश्यासे प्रीतिकरेंगे व बेटाबापकामरनाबिचारकर यहइच्छारक्खैगा कि जबयहमरै तब धन हमारे हाथलगकर बेश्यागमनकरने या जुआखेलनेवास्ते सुबिस्ताहो राजालोगअपनाकर्म्म व धर्म्मछोड़कर प्रजाकाधनलेके उन्हें दुःखदेवेंगे व सबमनुष्य केवलअपनेखाने व पहिरने

व इन्द्रियोंको सुखदेनेकीइच्छारखकर अपनेअर्थकी मित्रतारक्खैंगे इसलिये कलियुगबासियोंको आपसकेबिरोधसे बड़ादुःखहोगा जब ऐसेअधर्मी मेरेऊपर अपनाचरणरक्खैंगे तब मैं बहुतदुःखी होऊंगी इसबात से मेरीरक्षा आपको करनाचाहिये यहबचनसुनकर बाराहजीबोले हेपृथ्वी तू इनबातोंसेमतडर जब २ अधर्मियोंकेउत्पन्नहोनेसे तुझको दुःख प्राप्तहोगा तब २ हम सगुणअवतारलेकर अधर्मियोंकोमारके तुझेसुखदेवैंगे ऐसाकहकर बाराहजी बैकुंठकोपधारे व और सबदेवता अपने २ लोककोगये ॥

बीसवां अध्याय ॥

मैत्रेयऋषीश्वर का बिदुरजीसे जगत्की उत्पत्ति कहना ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनीकथासुनकर सूतजीसेपूछा कि जब बाराहजी पृथ्वी को पानीपर स्थिरकरके बैकुंठको गये उसकेपीछे किसतरहसंसारकी रचनाहुई व मैत्रेय ऋषीश्वर व बिदुर से क्यासंवादहुआ सूतजीने कहा जब बिदुरजी बाराहअवतारकी लीलासुनकर बहुतप्रसन्नहुये तबउन्होंने मैत्रेयऋषीश्वर से पूछा कि महाराज ब्रह्मा ने संसारीजीवोंको किसतरहउत्पन्नकिया मैत्रेयजी बोले जब पृथ्वी स्थिरहोचुकी तब आदि निरंकारकी माया व इच्छासे पहिले चौबीसतत्त्व प्रकटहोकर फिर एकपुरुष यक्षनाम उत्पन्नहुआ जबउसे भूख व प्यासलगी तबवह कुछपदार्थ भोजन न पाकर ब्रह्माजीको खानेवास्तेचला जब ब्रह्माजीने क्रोधकरके उसको अपनेखानेसे मनेकिया तब ब्रह्माके क्रोधकरने से एकपुरुषतमोगुणी रक्षनामराक्षसप्रकटहुआ ब्रह्माने उनदोनों को देखतेही कुछ भयमानकर जीवोंकाउत्पन्नकरना बन्दकरदिया व मनमें ऐसा बिचारा कि हमारे इसतनसे सृष्टिरचने में अधर्मीलोग उत्पन्नहोवेंगे जब मैं दूसरातनधरकर सतोगुण से जीवोंकीउत्पत्ति करूंगा तब ज्ञानी व धर्म्मात्मालोग उत्पन्नहोंगे ऐसाबिचारकर ब्रह्माने वहतन अपना छोड़के दूसराशरीरधारणकिया व अपने पहिले शरीरके दहिने अंगसे स्वायम्भुवमनुनाम एकपुरुष व बायें आधेतन से शतरूपानाम स्त्री उत्पन्नकरके दोनों का बिवाहकरदिया जब स्वायम्भुवमनु ने ब्रह्माजी से कहा कि महाराज मुझेक्याआज्ञा होती है तब ब्रह्मानेबिचारा कि जिसशरीरसे स्वायम्भुवमनु व शतरूपाउत्पन्नहुये हैं उस तनसे परमेश्वरकातप व स्मरणनहींकिया बिनाहरिभजनकिये धर्मात्मा व ज्ञानीमनुष्य उनसे उत्पन्ननहींहोवेंगे यहबातशोचकर ब्रह्माने स्वायम्भुवमनु व शतरूपासे कहा कि तुमलोगपहिले परमेश्वरकातप व स्मरणकरके पीछेसे संसारीजीवों की उत्पत्तिकरो जिसमें धर्मात्मामनुष्य उत्पन्नहोवें उसीसमय स्वायम्भुवमनु व शतरूपा ब्रह्माकीआज्ञासे बनमें तपकरने चलेगये उनकेजानेउपरान्त ब्रह्माने भगवान्जीकाध्यानकरके उनसे प्रार्थना किया कि हे दीनदयालु मेराअपराधक्षमाकरो व मुझ से संसाररचने में भूलहोकर यह कठिनकामनहींबनपड़ताहो तो उसके उत्पन्नकरनेकी मुझे सामर्थ्यदेव जिसमें तुम्हारी

आज्ञानुसार जीवोंकी उत्पत्तिहोवे यहबातसुनकर ब्रह्माजीको ध्यानमें नारायणजीने ऐसा उपदेशकिया हेब्रह्मा अब तुम्हारातन शुद्धहुआ तुम संसारकीरचनाकरो धर्मात्मा व ज्ञानी मनुष्य उत्पन्नहोवेंगे यहबचन बैकुंठनाथकासुनतेही ब्रह्माने प्रसन्नहोकर नारायणजीकी कृपासे मरीचि व कश्यप व अत्रि व अंगिरा व पुलस्त्य व क्रतु व भृगु व वशिष्ठ व दक्ष व नारद ये दशपुत्र उत्पन्नकिये उनदशोंने ब्रह्माजीसेपूछा कि हमें जो आज्ञाहो सो पालन करें ब्रह्माजीनेकहा तुमलोग पहिले परमेश्वरकातपकरके पीछेसे संसारीजीवउत्पन्नकरो इसबातमें नारायणजी व हमारीदोनोंकी प्रसन्नताहै यहबचन ब्रह्माकासुनकर नारद व अंगिरा व क्रतु तीनमनुष्यों ने कुछउत्तरनहींदिया और भृगुआदिसातबेटे प्रसन्नहोकर दशोंमनुष्य परमेश्वरकातपकरनेवास्ते बनमेंचलेगये व ब्रह्माके जिसशरीरसे स्वायम्भुव मनु व शतरूपा उत्पन्नहुये थे उसतनकीहड्डी व चमड़ा जो पड़ाथा उसमेंसे एक अँधियारा प्रकटहुआ उस अंधियारे को यक्ष व रक्षने जो पहिले ब्रह्मा से उत्पन्नहुये थे स्त्री समझकर लेलिया ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

नारायणजीका स्वायम्भुवमनु व शतरूपा व कर्दमऋषीश्वरको दर्शनदेकर बरदान देना॥

मैत्रेयऋषीश्वरबोले हेबिदुर जब स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने बनमेंजाकर दशहजार वर्ष परमेश्वरकातप व ध्यानकिया तब बैकुंठनाथनेदर्शनदेकर उनसेकहा मैं तुमसेबहुत प्रसन्नहूं कुछबरदानमांगो स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने परब्रह्मपरमेश्वरकादर्शनपातेही बहुतस्तुति व पूजाकरके हाथजोड़करकहा हे दीनानाथअन्तर्यामी हमने संसारउत्पन्नकरने व राजगद्दीकासुखभोगने के वास्ते तपकियाहै सो मैं बहुतभूलगया जो राज्यकी इच्छासे तपकिया मुक्तिप्राप्तहोने के वास्ते तप व स्मरणकरना उचितथा नारायणजीने यहबचनसुनकरकहा हे स्वायम्भुवमनु जो मनोरथ मिलनेवास्ते तुमने तपकियाहै वह बरदान सिवायउसके और जिसवस्तुकी तुम्हैंइच्छाहो वहमुझसेमांगलेव तुमकोदूंगा जब ऐसीदया व कृपा बैकुंठनाथकी स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने अपनेऊपरदेखीतबहाथजोड़कर बोले हमचाहते हैं कि तुमऐसापुत्र हमारेघरउत्पन्नहोवे यहबातसुनकर परब्रह्मपरमेश्वरने कहा मेरेसमान दूसराकोईनहीं है जो तुम्हारेयहांउत्पन्नहोकर तुमलोगोंकी इच्छापूर्णकरे इसलिये हमआपअवतारलेकर तुम्हारेनातीहोवैंगे ऐसाकहकरनारायणजी अन्तर्द्धानहोगयेऔर स्वायम्भुवमनु व शतरूपा ने ब्रह्माजी के पासआनकर दण्डवत्किया व स्वायम्भुवमनु अपनेपिताकीआज्ञासे सबपृथ्वी का राज्यकरनेलगे सो स्वायम्भुवमनु व शतरूपासे दो बेटा उत्तानपाद व प्रियब्रत व तीनकन्या आकूती व देवहूती और प्रसूती नाम उत्पन्न हुईं व उत्तानपादके ध्रुवनामपुत्र उत्पन्नहुआ व प्रियब्रत पहिले नारदजीके ज्ञान सिखलानेसे बिरक्तहोगयेथे फिरउन्होंने ब्रह्माजीकेसमझानेसे सातोंद्वीपकाराज्यकिया व स्वायम्भुवमनुने आकूतीका बिवाह रुचिनामऋषीश्वर से करादिया व ब्रह्माजीकेबेटे कर्दम-

ऋषीश्वरने अपनेपिताकीआज्ञा से दशहजारबर्ष परमेश्वरकातपकिया व जब नारायण जीने प्रसन्नहोकर दर्शनदेनेउपरान्त उनसेकहा कि तुम बरदानमांगो तब कर्दमऋषीश्वर दण्डवत् व पूजास्तुतिकरके हाथजोड़करबोले हे ज्योतिस्स्वरूप अन्तर्यामी मैंने संसार उत्पन्नकरनेवास्ते तपकिना है यहबचनसुनकर बैकुंठनाथ ने कहा कि मुझे पहिले से तुम्हारेमनकाहालमालूमथा सो मैंने तुझे इच्छापूर्वकबरदान दिया सिवायइसके और जो २ चाहनाकरोगे वहसबबस्तु तुमकोमिलजावैंगी व आजकेतीसरेदिन स्वायम्भुवमनु तुम्हारे पास आनकर देवहूती अपनीकन्या तुझे बिवाहदेगा व हम तेरेयहां अवतारधारणकरेंगे सो तुम विवाहकरनेसे नाहींमतकरना ऐसाकहनेउपरान्त बैकुंठनाथकी [illegible] यहबात समझकर आंशूबहनेलगे देखो कर्दमऋषीश्वर ने केवल विवाहहोने [illegible] जो सदास्थिर नहींरहता दशहजारबर्षतपकिया यही पछतावाकरनेसे [illegible] आंशू गिराथा वहां बिन्दुसरनाम तीर्थप्रकटहुआ और वहतालाव आजतक कुरुक्षेत्रकेपास बर्त्तमान है आंशू गिरनेउपरांत बैकुंठनाथनेकहा कि जो कोई इसतीर्थमें स्नानकरेगा सबपाप उस के छूटकर धर्म्मकी तरफ मन उसका लगेगा यहबातकहकर परब्रह्मपरमेश्वर बैकुंठको पधारे व कर्दमजी उनकेआगमनकी आशाकरनेलगे तीसरेदिन राजा स्वायम्भुवमनु व शतरूपा अपनीस्त्री व देवहूती कन्यासमेत जड़ाऊ रथपरचढ़कर पहिले बिन्दुसरतीर्थ में गये वहां स्नानकरनेकेउपरान्त फिर कर्दमऋषीश्वरके स्थानपरजाकर उन्हें दण्डवत् किया कर्दमजीने बड़ेआदरभावसे उन्हें बैठायबड़ाई उनकी करनेलगे इतनीकथासुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहाकि स्वायम्भुवमनु व शतरूपा कदाचित् कर्दमजी का रमणीकस्थान देखनेसे बहुतप्रसन्नहुये जब स्वायम्भुवमनु व शतरूपाने आपसमें कर्दमजीको देवहूती अपनीकन्या विवाहनेवास्ते विचारकिया तब स्वायम्भुवमनु कर्दम ऋषीश्वरके सामने खड़ेहोकर हाथजोड़केबोले कि महाराज जब नारदजीकेमुखसे आप का गुणसुनकर देवहूती मेरीकन्याको तुम्हारेसाथ विवाहकरनेकी इच्छाहुई तब उसने अपनी मातासे यह हालकहा और अपनी स्त्रीसे उसकामनोरथ सुनकर देवहूतीसमेत तुम्हारेपास आयाहूं सो मेरीकन्या आपकी सेवामें रहैगी यहबात सुनतेही कर्दमजीमनमें बहुतप्रसन्नहोकर बोलेकि हे राजन् तुम्हाराकहना मुझेअंगीकार है कदाचित् कोईमनुष्य कुछबस्तु अपनी प्रसन्नतासे किसीको देवेतो अवश्यउसको लेलेनाचाहिये नहींतो पीछे दुःखहोताहै इसलिये मैं आपकी आज्ञासे बाहरनहींहूं पर इसप्रतिज्ञासे कि जब तुम्हारी कन्याकेसन्तान उत्पन्नहोलेगी तब गृहस्थीछोड़कर हरिभजनकरने चलाजाऊंगा स्वायम्भुवमनुने ऋषीश्वर महाराजका कहना मानलिया व देवहूती ऐसीसुन्दरीथी कि जिस पर रति कामदेवकी स्त्रीको निछावर करडाले ॥

बाईसवां अध्याय ॥

स्वायम्भुवमनुको देवहूती अपनी कन्याका कर्दमऋषीश्वरसे विवाह करदेना ॥

मैत्रेयजीने बिदुरसेकहा कि जब कर्दमऋषीश्वरने देवहूतीकेसाथ विवाहकरना अंगीकारकिया तब स्वायम्भुवमनुने देवहूतीका विवाह कर्दमजीसे विधिपूर्वक करकेकहा महाराज आपको सेना व द्रव्यादिक जिसवस्तुकी चाहनाहो सो मैं तुम्हारेयहां पहुँचादूं किसवास्ते कि सबराज्य व धनमेरा ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकाहै यहबात सुनतेही कर्दमजी हँसकरबोले कि हे राजन् हमको धन व सेना कुछ न चाहिये जब स्वायम्भुवमनु व शतरूपा अपनी कन्याको कर्दमजीकेपास छोड़कर राजमंदिरपर जानेलगे उस समय देवहूतीने बहुतरुदनकिया तब राजा व रानी उसेधीर्य्यदेने उपरान्त कर्दमजीसे बिदाहुये व देवहूती कर्दमजीकी सेवामेंरहकर सबकाम उनका पहिलेबिनाकहे करदेतीथी जिसमें किसीबातकेवास्ते उनकोकहना न पड़ै व राजास्वायम्भुवमनुने बर्हिष्मतीपुरीमें जहांपर बाराहजीके रोमगिरने व कुशाउगने व ऋषीश्वरोंके मंत्रपढ़नेसे दैत्यनहीं रहसक्तेथे अपनी राजगद्दीपरजाकर बिचारकिया कि हमारेपास राज्य व द्रव्यबहुतहै व संसारमें मनुष्यलोग धन अधिक ब्यर्थहोनेसे उसको अपनेसुखकेवास्ते जो सदास्थिर नहींरहता खर्चकरतेहैं व परलोकका डरनहींरखते इसलिये मनुष्यको उचितहै कि परमेश्वर जिसको धनदेवे उसे वहधन नारायणजीके नामपर शुभकर्म्ममें खर्चकरनाचाहिये यहबात बिचारकर स्वायम्भुवमनुने हरसाल विधिपूर्वक यज्ञकरना व नित्य प्रातसमय बहुतसी गऊ व स्वर्णादिक ब्राह्मणोंको दानदेना आरम्भकिया जब नित्यनेमसे छुट्टीपावें तब परमेश्वरकीकथा व लीला महात्मा व ऋषीश्वरोंसे सुनाकरें जिससमय कोई ब्राह्मण व महापुरुष न होवें उससमय आप कथा व कीर्त्तन नारायणजीका कहकर हरिचरणोंका ध्यान मनमेंरक्खें इसीतरह इकहत्तर चौकड़ीयुग उन्होंने राज्यकिया सो हरिभजनके प्रतापसे पराक्रम उनका मरतेसमयतक ज्योंकात्यों बनारहा कोईक्षण उनका बिनायाद व चर्चा परमेश्वरके नहींबीतताथा उनकेराज्यमें हरिइच्छासे जब प्रजालोग चाहनाकरतेथे तब पानीबर्षकर बारहोंमहीने सबतरहका फल व फूल वृक्षोंमें लगारहताथा व सब प्रजा आनन्दसे रहकर परमेश्वरका भजन व स्मरण कियाकरतेथे स्वप्नमेंभी किसीको दुःख नहींहोताथा ॥

तेईसवां अध्याय ॥

कर्दमजीका अपने योगबलसे एकबिमान बहुतउत्तम प्रकटकरना व उसीमें रहकर देवहूतीके साथ बिहारकरना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरबोले कि हे बिदुरजी देवहूती नित्य अपनेपतिकी सेवा टहलमें रहकर एकदिन उनकेसामने हाथजोड़े खड़ीथी सो देवहूतीकेमनमें गृहस्थीका सुख व बिलास

करनेकेवास्ते कुछ चाहनाहुई तब कर्दमऋषीश्वरने जो उसकीसेवा व पातिव्रतधर्मसे बहुत प्रसन्नरहतेथे अपनेतपके प्रतापसेजानलिया कि मेरीस्त्रीको संसारी सुखभोगकरने की इच्छाहुई है यहहालजानकर मनमें बिचारकिया देखो इसने राजकन्याहोकर आज तक कभी अपनेवास्ते कुछ गहना व कपड़ा मुझसेनहींमांगा इसलिये अब इसकीइच्छा पूर्ण करनाचाहिये ऐसाबिचारकर कर्दमऋषीश्वर बोले हे राजकन्या मैं तुझसेबहुतप्रसन्नहूं तुझे जो इच्छाहो सो बरदान मांगले व इसबातका संदेहमतकरना कि ये कहांसेपाकर हमकोदेवेंगे नारायणजीकी कृपासे हम सबपदार्थ तुझेदेसक्तेहैं यहबचन सुनतेही देवहूती हँसकरबोली कि हे स्वामी आप लोक व परलोक दोनोंजगहका सुखदेनेवालेहैं जब मैंने आप ऐसामहापति पाया तब कौनबस्तुकी मुझेकमी है मेरे पिताने आपको ऐसाहीमहा-पुरुष व गुणवान् जानकर मुझे तुम्हारे अर्पणकियाथा एकबेर मुझे तुम्हारेसाथ गृहस्थीका संयोगहोना बहुतहै सदाभोग व बिलासकी चाहनाकरना अच्छानहींहोता यहबात सुन-कर कर्दमजीने कहा तू संतोषरख मैं तेरीइच्छा पूरीकरूंगा यहबचन अपनेपतिका सुनतेही देवहूतीने मनमें इसबातका शोचकिया देखो मेरेपास कुछ गहना व कपड़ा स्थानआदिक संसारीसुख भोगकरनेयोग्य न होकर मेराशरीर मट्टी व धूरसेभराहै किसतरह भोग व बिलासहोगा कर्दमऋषीश्वर अन्तर्यामीने उसकेमनका हाल जानकर उसीसमय एक विमान सोनहराजड़ाऊ बहुतलम्बा व चौड़ा जिसमें चारोंतरफ मोतियोंकी झालरबँधी व मख-मली बिछावनबिछे व झाड़ व फानूसलगेथे अपनेयोगबलसे प्रकटकिया व उसविमान में अनेकतरहके घरबिलगर इन्द्रपुरीके समानबनेथे व अनेकप्रकारके फल व फूल वहांवृक्षों में लगे रहकर अनेकरंगकेपक्षी उसविमानमें सोहावनी बोली बोलतेथे व अच्छी अच्छी बावली व तालाब बनेरहकर सबपदार्थ संसारीसुखका उसमें रक्खा था देवहूती ने उसविमानकी शोभादेखकर मनमें ऐसाविचारकिया कि धूरलगाहुआ मेराशरीर इस विमानपर बैठनेयोग्यनहीं है यह संदेह देवहूती के मनकाजानकर उसीसमय कर्दमजी ने अपनेयोगबलसे एक नारायणकुण्ड जिसमें बहुत निर्मलपानी भराहुआ व कमलके फूलोंपर भ्रमर गूंजरहेथे प्रकटकरके देवहूती सेकहा हे राजकन्या तू इसकुंडमें स्नानकर जब ऋषीश्वरकीआज्ञासे देवहूतीने उसकुण्डमें स्नानकिया तब वहदिव्यरूप बहुतसुन्दर देवकन्यासमान बारहबर्षकीअवस्था होकर जड़ाऊगहना व उत्तमवस्त्र पहिने उसमें से बाहरनिकलआई व उसकेसाथ हजारदासीभी बहुतसुन्दर बारहबर्षकी गहना व कपड़ा अच्छा २ पहिने अपने २ हाथों में चमर व पानदान व अतरदानआदिक सबबस्तु लियेहुये उसकुंडमेंसे बाहरनिकलकरबोलीं हे राजकन्या जो आज्ञाहो सो पालनकरैं उस समय राजकन्या ऐसीसुन्दरमालूमदेतीथी कि जिसपर रति कामदेवकी स्त्रीको निछावर करडालें जब कर्दमऋषीश्वरने उसचन्द्रमुखीका रूपदेखा तब अपनेतनको निहारकर मनमें बिचारकिया कि मुझकोभी उचितहै कि अपनाशरीर देवहूतीके प्रसंगयोग्यबनाऊं

ऐसाबिचारकर कर्दमजीने उसकुण्डमेंस्नानकिया सो वहभी दिव्यरूप अश्विनीकुमारके समान अतिसुन्दर सोलहबर्षकीअवस्था होगये जब नारायणजीकीकृपा से दोनोंमनुष्य तरुणहुये तब कर्दमजी देवहूतीकाहाथ बड़ेप्रेमसेपकड़कर उसविमानपर चढ़गये व सब दासीभी उसीविमानमें जाकर अपना २ काम करनेलगीं जो पदार्थ सुख व बिलासके बैकुण्ठ व इन्द्रलोकमेंरहते हैं वह सबबस्तु परमेश्वरकीदयासे उसविमानमें कर्दमऋषीश्वर व देवहूतीकेवास्तेवर्त्तमानथे उसविमानपर बहुतदिनोंतक कर्दमजी व देवहूतीने रहकर गृहस्थीकासुखउठाया जिससमय चित्तउनका कहींजानेकेवास्तेचाहताथा उसीसमय वह विमान पवनकेसमानउड़ताहुआ बीचइन्द्रलोक व वरुणलोक व कुबेरलोक व गन्धर्व-लोकआदिक व मन्दराचलपहाड़पर एकक्षणमेंचलाजाताथा और उनदोनोंकेबिहारकरते समय देवकन्या व देवताआदि उस विमानकी सुन्दरताई व रचना देखकर बड़ाई भाग्य कर्दमजी व देवहूतीकी कियाकरतेथे जब इसीतरह कर्दमऋषीश्वरको दशहजारबर्ष देव-हूतीसे भोग व बिलासकरतेहुये बीतकर नवकन्याउत्पन्नहुईं तब कर्दमजी ने चाहा मैं संसारी भोग व बिलास छोड़कर फिर तप व ध्यान नारायणजीकाकरूं ऐसाबिचारकर देवहूतीसेकहा कि हे राजकन्या तुमकहो तो मैं परमेश्वरका भजनकरने चलाजाऊं अब मेराचित्त गृहस्थीमें नहींलगता यहबचन सुनतेही देवहूती हाथजोड़करबोली महाराज हरिभजनकरना बहुतअच्छीबातहै और मैंभी आजतक बीचसुख व बिलास संसारीझूंठे व्यवहारके भूलकर तुम्हारीसेवा व टहलकरनेसे बिमुखरही मुझेउचितथा कि आपकेचरणों का ध्यानधरकर मुक्तिपाती सो संसारीसुख भोगनेसे नवकन्या जो उत्पन्नहुईहैं इनके विवाह करनेका शोच मुझेलगाहै इन्हें विवाहकर मैंभी बन्धनसे छूटती तो तुम्हारेसाथ सेवा व टहलकरनेवास्ते चलती सो इनसब कन्याओंका विवाहकरलीजिये तब मुझेभीसाथलेके बनमें चलकर हरिभजनकीजिये तुम्हारे चलेजानेउपरान्त इनके विवाहकरनेवास्ते कहां बरपाऊंगी अबतक मैंने अपनासुख व बिलाससमझकर तुम्हारीसेवाकिया जो आपको परमेश्वर भावजानकर तुम्हारी टहलकरती तो परलोक अपनाबनाकर आवागमनसे छूटजाती मैंने अपनेबापकेयहां महात्मालोगोंसे यहबात सुनीथी कि जिसने मनुष्यतन पाकर हरिभजन व सत्संगनहींकिया व जो कोईमनुष्यतनपाके संसारीमायामोहमें फँसकर भ्रष्टहुआ उसका जन्मलेना अकार्थ समझनाचाहिये परमेश्वरकीमायाने मुझेठगलिया जो तुम्हारे ऐसेपति महापुरुष पानेपरभी मैंने हरिभजननहींकिया संसारमें जो मनुष्य बिनाभोगलगाये शालग्राम व ठाकुरजीके भोजनकरतेहैं उन्हें जीतेहुये मृतककेसमान जाननाचाहिये यहबातसुनकर कर्दमऋषीश्वरने मनमें बिचारकिया कि परमेश्वरने मेरे यहां अवतार लेनेवास्ते बरदानदियाथा सो अभीतक जन्मनहीं लिया गृहस्थीछोड़देने में यहबात रहजावेगी कर्दमऋषीश्वर यहबचन परमेश्वरका यादकरके अपनीस्त्रीसेबोले कि हे राजकन्या तू अपनेमनमें किसीबातका सन्देहमतकर तेरेगर्भसे नारायणजी अव-

तारलेवैंगे ऐसाकहकर कर्दमऋषीश्वरने देवहूतीकेसाथ भोगकिया सो हरिइच्छासे उसी समय उसके गर्भरहा ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवमुनिका देवहूतीके गर्भसे अवतारलेना व कर्दमऋषीश्वरका बनमेंतप करनेवास्ते चलेजाना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हे विदुर जब देवहूतीकेपेटमें कपिलदेवमुनिने गर्भवासकिया तबकर्दम ऋषीश्वर उसकेमुखारबिन्दका प्रकाशचमकताहुआ देखकर बोले हे राजकन्या तेरेगर्भमें परमेश्वर अवतार लेनेवास्ते आयेहैं सो तू किसीबातकी चिन्तामतकर अबहम तपकरने वास्ते जावेंगे तुममेरीप्रीति कमकरो यहबचन सुनतेही देवहूती बहुत प्रसन्नहोकरबोली हे प्राणनाथ मैं इसबातका किसतरह बिश्वासजानूं जिससमय देवहूती अपनेपतिसे यहबचन कहरहीथी उसीसमय ब्रह्मादिक देवताओंने वहांआनकर देवहूतीको निश्चयकरानेवास्ते कहा हे राजकन्या तेरा जप व तप व नेम व धर्म सबसफलहुआ अब तेरेगर्भसे परब्रह्मपर-मेश्वर कपिलदेवमुनि नाम अवतारलेकर तुम्हारायश व कीर्त्तिसंसारमें बढ़ावेंगे व उनके उत्पन्नहोनेसे तुम्हारानाम सदासंसारमें स्थिररहैगा व तुम्हारेहृदयमें जो अज्ञानताकीकाटि जमीहै उसकोज्ञानरूपी अग्निसे वह जलादेवेंगे तुम उनको अपनाबेटा मतसमझना वे आचारियोंको सांख्ययोग ज्ञानपढ़ानेवास्ते अवतारलेतेहैं जब धर्मकीहानि होजातीहै तब वह संसारमें अवतारलेकर धर्मकीबढ़ती व पापका नाशकरतेहैं यहबचन कहने उपरान्त देवतालोग देवहूती व कर्दमऋषीश्वरकी परिक्रमालेकर अपने २ लोकमें चलेगये व देवहूतीको हरिमन्दिर बिचारकर उसकेदर्शनकरनेसे बहुतआनन्दहुये जबदशमहीने बीतने उपरान्त कपिलदेवमुनिने अवतारधारणकिया तबकर्दम ऋषीश्वर सब लक्षण परमेश्वरका उनके अंगमें देखकर बहुतप्रसन्नहुये उससमय देवताओंने आनन्दकी दुन्दुभीबजाकर आकाशसे फूलबर्षाये व गन्धर्बोंने नारायणजीकायशगाया व अप्सरा लोग आकाशमेंआकर अपने २ बिमानोंपर नाचनेलगीं व तीनोंलोकमें मंगलाचार होकर चारोंदिशामें प्रकाशहोगया जब कर्दमऋषीश्वरने उन्हें पूर्णब्रह्मजाना तब उनके सामने हाथजोड़कर इसतरहपर स्तुतिकिया हे आदिपुरुषभगवान् तुम्हारानामलेने व दर्शनकरनेसे संसारीजीव भवसागर पारउतरजाते हैं व आपकादर्शन बड़े बड़ेयोगी व ऋषीश्वरोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता मेराबड़ाभाग्यथा जो आपने मेरेयहां बेटाहोकर अवतारलिया कदाचित् अबभी मैं मुक्तिपदवीको न पहुँचूं तो मुझे बड़ाअभागीसमझना चाहिये और हमने देवताओंकेमुखसे सुनाथा कि आपने ज्ञानउपदेशकरनेवास्ते अवतार धारणकियाहै सो दयाकरके मुझेऐसाज्ञान सिखलाइये कि जिसज्ञानके प्रतापसे यहतन जो मट्टीकापुतलाहै सोछोड़कर भवसागरपार उतरजाऊं जिससमय कर्दमजी यह स्तुतिकर

रहेथे उसीसमय फिर ब्रह्माजी व सनक, सनन्दन, सनातन व सनत्कुमारने वहांआन-कर कपिलदेवजीसे हाथजोड़कर बिनतीकी महाराज जो बात आपने मुखारविन्दसे कहा था वैसाकरके अपनादर्शन हमलोगोंकोदिया संसारमें कपिलदेवमुनि तुम्हारानामप्रसिद्ध होगा फिरब्रह्माजीने कर्दमजीसे कहा तुमअपनी नवकन्याओंका विवाह नवऋषीश्वरों से करदेव सो कर्दमजी व देवहूतीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार कलानामकन्याकी शादी मरीचिऋषीश्वरसे व अनसूयाकाविवाह अत्रिमुनिसे व श्रद्धाकी शादी अंगिराऋषीश्वर से व हविकाविवाह पुलस्त्यमुनिसे व गतीनाम कन्याकी शादी पुलहऋषीश्वरसे व योग्य का विवाह क्रतुऋषीश्वरसे व ख्यातिनामकन्याकी शादी भृगुऋषीश्वरसे व अरुन्धती का विवाह वशिष्ठऋषीश्वरसे व शान्तिनामकन्याकी शादी अथर्वणऋषीश्वरसे करदिया सो सबयज्ञकी क्रिया अथर्वणवेदके प्रमाणसेहोती हैं विवाहकरने उपरान्त ऋषीश्वर लोग अपनी अपनी स्त्री समेत कर्दमजी व देवहूती से बिदाहोकर आनन्द पूर्वक अपने अपने स्थानपरगये व ब्रह्माजी व सनकादिक ऋषीश्वर कपिलदेवमुनिको दण्डवत्करके चलेगये व कर्दमजीने अपनी कन्याओंको बिदाकरके कपिलदेवमुनिसे विनयकिया हे महाप्रभु संसारमें यहजीव बारम्बार जन्म व मरणमें फँसारहकर मुक्ति होनेकी इच्छानहींरखता व अनेकतरहकादुःख उठाकर इसअधर्मी दुःखदेनेवालेको नहींछोड़ता इसकाक्याभेदहै और आपसे यहपूछताहूं कि कौनउपाय करनेमें यहमन जो बीचमायामोह कुलपरिवार व संसारीसुखमें फँसकर नष्टहोरहाहै इसमायारूपीजाल से छूटसक्ताहै यहवचन कर्दमजीकासुनकर कपिलदेवमुनिने कहा हे ऋषीश्वर तुम्हारी इच्छापूरीहुई जबमनुष्य संसारमेंजन्मलेताहै तबतीनकर्ज देवऋण पितृऋण ऋषिऋण उसपररहते हैं सो तुमयज्ञकरके देवऋण व वेदपढ़के ऋषिऋण व सन्तानउत्पन्नकरके पितृऋण तीनोंकर्जसे उऋणहुये अब हरिभजनकरना तुम्हारेवास्ते बहुतअच्छीबात है और जो तुममन अपना संसारसे विरक्त कियाचाहतेहो सो धीरे २ साधनकरनेसे संसारी प्रीतिछूटजाती है सो तुम इसतनको झूठाजानो जिसतरहपानीमें बुल्लाउठताहै उसमेंमट्टी व पानी व आग व हवा व आकाश कोईवस्तु नहींहोती उसीतरह इसतनको निषिद्ध समझकर इसकाअहंकार मतकरो किसवास्ते कि प्राण निकलने उपरान्त यह शरीर किसीकाममें नहींआता इसलिये शरीरसे प्रीतिकरना न चाहिये प्रेमउसवस्तुसे करना होताहै जो सर्वदास्थिररहे और उसकानाश न होवे और जिसके प्रकाशदेनेसे इसतन में चलने व सुनने व देखने व खाने व पीनेकी सामर्थ्य है उसकाध्यानकरो और वह चमत्कार सबजीवोंकेतनमें मेरीशक्ति समझकर किसीवस्तुसे प्रीति मतलगाओ व मेरे प्रकाशको प्रतिदिन अपनेशरीरमें ध्यानधरकरदेखो तबतुम्हाराचित्त शुद्धहोजावेगा और हे पिता यहसबज्ञान संसारीजीव भूलकर केवल अपने तन व धन व परिवारपर अहंकार करते हैं इसलिये मैंने धर्म व ज्ञान प्रसिद्धकरनेवास्ते यहअवतार धारणकियाहै न हे

ऋषीश्वर काम व क्रोध व लोभ व मोह व मद व मत्सर छःशत्रु मनुष्यकेशरीरमें रहकर यहीसब संसारीजीवको भुलावादेकर नष्टकरते हैं व उन्हींकेमदमें मनुष्य अन्धाहोकर अधर्मकरताहै और जो उनकेबशमें न होकर उन्हें अपनेअधीनरक्खे वहमनुष्य बनमें बसै चाहैघररहै उसेजीवन्मुक्त समझनाचाहिये व जबतक मनुष्य अपनेशरीर व स्त्री व पुत्र व परिवारको अपना जानताहै तबतक उसको मृत्यु व सब किसीसे डरहै जब उसे मेरीआज्ञानुसार ज्ञानप्राप्तहुआ तबवह कालादिक सबसे बेडररहताहै इतनीकथासुनाकर मैत्रेयऋषीश्वरने विदुरजीसे कहा यहज्ञानसुनतेही कर्दमजीने मनअपना विरक्तकरके कपिलदेवजीसे विनयकिया महाराज अबमुझे कहिये तो बनमेंजाकर तुम्हारेचरणोंका ध्यानकरूं यहांरहनेसे मेरामन संसारीमायामें फँसारहैगा और आपयहीज्ञान अपनीमाता कोभी सुनाकर भवसागरपार उतारदीजियेगा यहबात सुनकर कपिलदेवजीने कहा हे पिता तुमबनमेंजाकर हमारेस्वरूपका ध्यानधरना व साधु व महात्माकी संगति जिनकी मण्डलीमें सदामेरीकथा व कीर्त्तनका स्मरण व चर्चा रहताहै करना उनकेसत्संग व मेरेध्यानके प्रतापसे फिर मनतुम्हारा संसारीमायाकी तरफ नहीं दौड़ैगा ॥

पचीसवां अध्याय ॥

कर्दमजीका बनमें जाना व बीच ध्यान परमेश्वरके अपना तन त्याग करना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हे विदुर यहबचन कपिलदेवजीका सुनतेही कर्दमऋषीश्वर उन्हें दंडवत् व परिक्रमाकरके बनमें चलेगये और जातेसमय देवहूतीसेकहा तुझे जिसबातका सन्देहहो वहकपिलदेवमुनिसे पूछलेना यहबचन सुनकर देवहूती ऋषीश्वरमहाराजके चरणोंपर गिरने उपरान्त हाथजोड़करबोली आपने मुझे कपिलदेवमुनिको सौंपदिया इसलिये मैं साथचलनेसे लाचारहूं व कर्दमजी बनमेंजाकर बीचतप व ध्यान नारायणजीके लीनहुये व सबजीव व संसारीवस्तुमें प्रकाशपरमेश्वरका ऊखकेरसके समानहै कि कोई गांठमिठाई व रससेखाली नहींहोती एकसा समझकर तन अपनासाथ योगाभ्यासके त्यागदिया व उनकेजानेसे देवहूतीको बड़ा शोक व दुःखहुआ पर ब्रह्माजीका बचन यादकरके ज्ञानकी दृष्टिसे चित्तको धीर्य दिया व कपिलदेवजीके सामने हाथजोड़कर कहा मैंने देवताओं से सुनाथा कि आदिपुरुष भगवान् यहसंसाररूपी वृक्ष जो मायामोहके फल व फूलसे लदाहै इसके काटनेवाले हैं सो अबमुझे चाहना राजसीकी नहीं रही इसलिये मुझको अपनीशरण जानिके दया व कृपासे ऐसाज्ञान सिखलावो जिसमें अज्ञानतामेरी छूटजावे संसार में अज्ञान अँधेरेके समान समझनाचाहिये जिस तरह मनुष्य अँधियारे में राहभूलकर ठोकरलगनेसे गड़हेमें गिरकर चोटखाताहै उसी तरह अज्ञानमनुष्य संसारीमायामोहमें लिपटकर नष्टहोते हैं व ज्ञानकादीपक हाथ में रखनेवाला मनुष्य अच्छीतरह अपनी कामनाके स्थानपर पहुंचकर भवसागरपार उतर

जाताहै व बीचगड़हे काम व क्रोध व लोभ व अहंकारके नहींगिरता सो मैं चाहतीहूं कि आप इसप्रकृतिकाहाल जिससे सारासंसार उत्पन्नहोकर जिसतरह प्रकाश परमात्मा पुरुषका सब जीवोंके तनमें रहताहै कृपाकरके वर्णनकीजिये यहबचन सुनतेही कपिल देवजी बोले हे माता मैं इसहालके पूछनेसे बहुत प्रसन्नहुआ ऐसीबात सुननेकी इच्छा मुझसेयोगी व ऋषीश्वरलोग रखते हैं व संसारी मायाजालसे छूटनेकेवास्ते मनुष्यको सिवायज्ञान प्राप्तहोनेके दूसरीबात उत्तम नहीं है व माता व पिता व भाई व बेटा व मित्र उसीको कहना व समझनाचाहिये जो ज्ञानकीबात बतलावे और जो माता व पिता आदिक अपने परिवारको ज्ञान नहींसिखलाते उन्हेंहित न जानकर शत्रु जानना उचितहै तुमतो आपज्ञानीहो तुम्हारे भवसागर पारउतरने में सन्देह नहीं है परतुम यह बात निश्चयकरके जानो कि मेरीदया व कृपाहुयेबिना किसीको ज्ञान नहीं मिलता नहीं तो जो कोई चाहता ज्ञानी होजाता और हम ज्ञानकाहाल तुमसे कहैंगे उसे जो मनुष्य साथ प्रीतिके सुनैगा वह कृतार्थहोकर भवसागरपार उतरजावैगा संसारमें ज्ञानीलोग मुक्ति पावते हैं व अज्ञानीमनुष्य मुक्तिपदवीपर नहीं पहुंचता व हे माता जो लोग काम व क्रोध व लोभ व अहङ्कार व मद व मत्सरकेबश होकर संसारी मायामोहमें फँसजाते हैं उन्हें अवश्य नरक भोगना पड़ताहै और यहमन उनकी संगतिपाकर अशुभकर्म करनेसे चौरासीलाख योनिमें जन्मलेके अनेक तरहका दुःख भोगताहै और जो मनुष्य उनको अपनेवशमें रक्खै वह अपने तनसे उसपुरुषको पृथक् देखसक्ताहै व ज्ञानप्राप्त हुयेबिना काम व क्रोध आदिक बशमें नहीं होसक्ते व जो लोग बिरक्तहोकर वैराग्य धारणकरके भक्तियोगका अभ्यासरखतेहैं उनके बशमें भी काम व क्रोधादिक होजाते हैं व जो लोग मेरेचरणोंकीभक्ति सच्चेमनसे करते हैं उनकी मुक्तिहोनेके वास्ते वह आनन्दकी राहहै सो तुम अपनेपति व लड़कियोंके जानेकी कुछ चिन्तामतकरो गृहस्थी में मनलगाना यही संसारकी फांसी है मनुष्य जितनीप्रीति कुल परिवार व धनादिक झूठे व्यवहारकी करताहै जो उतनी प्रीति साधु व महात्मासेकरै तो मुक्ति पदवीपर पहुंचजावे हेमाता मनुष्यकातन कुछ देवतासे कमनहींहोता पर ज्ञानीहोनाचाहिये ज्ञानवान् मनुष्य देवतोंसे अच्छेहोतेहैं उनकीबराबरी देवतानहीं करसक्ते व भक्ति योगकीपदवी यज्ञ व दान व तीर्थ व ब्रतादिक सबधर्मोंसे उत्तमसमझनाचाहिये जबतक संसारी तृष्णानहींछूटती तब तक भक्तियोग मिलनाकठिनहै व ज्ञानप्राप्तहोनेवास्ते सत्संगचाहिये सो विनाकृपामेरी सन्त व महात्माकी संगतिनहींमिलती यहबातसुनतेही देवहूती प्रसन्नहोकर इसइच्छासे चारोंतरफ देखनेलगी कि वहसाधु व सन्तकैसेहोतेहैं मुझे मिलैं तो उनका सत्संगकरके भवसागरपार उतरजाऊं कपिलदेवजीने उसका यहहाल देखकरकहा हे माता साधु व सन्त व ज्ञानीके लक्षण हमतुमसे कहतेहैं सुनो उनको किसीके दुर्बचनकहनेसे क्रोधनहीं होता निन्दा व स्तुतिकरना दोनोंउनके निकट बराबरहैं किसवास्ते कि वहसबतन में

जाताहै व बीचगड़हे काम व क्रोध व लोभ व अहंकारके नहींगिरता सो मैं चाहतीहूं कि आप इसप्रकृतिकाहाल जिससे सारासंसार उत्पन्नहोकर जिसतरह प्रकाश परमात्मा पुरुषका सब जीवोंके तनमें रहताहै कृपाकरके बर्णनकीजिये यहबचन सुनतेही कपिल देवजी बोले हे माता मैं इसहालके पूछनेसे बहुत प्रसन्नहुआ ऐसीबात सुननेकी इच्छा मुझसेयोगी व ऋषीश्वरलोग रखते हैं व संसारी मायाजालसे छूटनेकेवास्ते मनुष्यको सिवायज्ञान प्राप्तहोनेके दूसरीबात उत्तम नहीं है व माता व पिता व भाई व बेटा व मित्र उसीको कहना व समझनाचाहिये जो ज्ञानकीबात बतलावे और जो माता व पिता आदिक अपनेपरिवारको ज्ञान नहींसिखलाते उन्हेंहित न जानकर शत्रु जानना उचितहै तुमतो आपज्ञानीहो तुम्हारे भवसागर पारउतरने में सन्देह नहीं है परतुम यह बात निश्चयकरके जानो कि मेरीदया व कृपाहुयेबिना किसीको ज्ञान नहीं मिलता नहीं तो जो कोई चाहता ज्ञानी होजाता और हम ज्ञानकाहाल तुमसे कहेंगे उसे जो मनुष्य साथ प्रीतिके सुनैगा वह कृतार्थहोकर भवसागरपार उतरजावैगा संसारमें ज्ञानीलोग मुक्ति पावते हैं व अज्ञानीमनुष्य मुक्तिपदवीपर नहीं पहुंचता व हे माता जो लोग काम व क्रोध व लोभ व अहङ्कार व मद व मत्सरकेबश होकर संसारी मायामोहमें फँसजाते हैं उन्हें अवश्य नरक भोगना पड़ताहै और यहमन उनकी संगतिपाकर अशुभकर्म करनेसे चौरासीलाख योनिमें जन्मलेके अनेक तरहका दुःख भोगताहै और जो मनुष्य उनको अपनेवशमें रक्खै वह अपने तनसे उसपुरुषको पृथक् देखसक्ताहै व ज्ञानप्राप्त हुयेबिना काम व क्रोध आदिक बशमें नहीं होसक्ते व जो लोग बिरक्तहोकर वैराग्य धारणकरके भक्तियोगका अभ्यासरखतेहैं उनके बशमें भी काम व क्रोधादिक होजाते हैं व जो लोग मेरेचरणोंकीभक्ति सच्चेमनसे करते हैं उनकी मुक्तिहोनेके वास्ते वह आनन्दकी राहहै सो तुम अपनेपति व लड़कियोंके जानेकी कुछ चिन्तामतकरो गृहस्थी में मनलगाना यही संसारकी फांसी है मनुष्य जितनीप्रीति कुल परिवार व धनादिक झूठे व्यवहारकी करताहै जो उतनी प्रीति साधु व महात्मासेकरै तो मुक्ति पदवीपर पहुंचजावे हेमाता मनुष्यकातन कुछ देवतासे कमनहींहोता पर ज्ञानीहोनाचाहिये ज्ञानवान् मनुष्य देवतोंसे अच्छेहोतेहैं उनकीबराबरी देवतानहीं करसक्ते व भक्ति योगकीपदवी यज्ञ व दान व तीर्थ व व्रतादिक सबधर्मोंसे उत्तमसमझनाचाहिये जबतक संसारी तृष्णानहींछूटती तब तक भक्तियोग मिलनाकठिनहै व ज्ञानप्राप्तहोनेवास्ते सत्संगचाहिये सो बिनाकृपामेरी सन्त व महात्माकी संगतिनहींमिलती यहबातसुनतेही देवहूती प्रसन्नहोकर इसइच्छासे चारोंतरफ देखनेलगी कि वहसाधु व सन्तकैसेहोतेहैं मुझे मिलैं तो उनका सत्संगकरके भवसागरपार उतरजाऊं कपिलदेवजीने उसका यहहाल देखकरकहा हे माता साधु व सन्त व ज्ञानीके लक्षण हमतुमसे कहतेहैं सुनो उनको किसीके दुर्बचनकहनेसे क्रोधनहीं होता निन्दा व स्तुतिकरना दोनोंउनके निकट बराबरहैं किसवास्ते कि वहसबतन में

परमेश्वरकाप्रकाश एकसादेखतेहैं व दुःखीमनुष्यको देखकर उनकेहृदयमें दयाआती है व सबजीवोंकेसाथ मित्रतारखकर किसीसे शत्रुतानहींकरते व दिनरात हरिचरणोंमें ध्यान अपनालगाकर मेरीकथा व कीर्त्तनसुननेका प्रेम उनको आठोंपहर बनारहताहै व खाने व पहिरनेआदिक संसारीकामको अपनाकियानहीं समझते सबबातभली व बुरीऊपर इच्छा परमेश्वरके जानतेहैं व सुख व दुःखको एकसा समझकर मेरेमिलनेकी इच्छा से अपना घरदुआर कुल परिवारछोड़कर जिसजगहमेरी कथा व कीर्तनकास्मरण व चर्चारहताहै वहांबड़ेआनन्दसेरहतेहैं और कथाके सुननेसे उनको ज्ञानप्राप्तहोकर भक्ति उत्पन्नहोतीहै व भक्तिहोनेसे मैं उनको संसारीमायाजालसे विरक्तकरके उन्हें मेरास्वरूप अपनेतनमें ज्ञानकी आंखसेदिखलाईदेताहै व उनकामन मेरेचरणोंमें लगारहनेसे बरसात व धूप व जाड़ा उनको कुछ सतानेनहींसक्ता ऐसेसन्तोंकी संगतिकरनेवास्ते मुझेसदा इच्छाबनी रहतीहै पर वह साधु व सन्त ऐसे समदर्शीहोवें जो सबजीव पशु व पक्षीआदिक में परमेश्वरका चमत्कार एकसासमझकर भीतर व बाहरअपना एकतरहपररक्खें ऐसे ज्ञानियोंकी मुक्तिहोतीहै व काल व सूर्य व चन्द्रमा व यमराज व अग्नि व पानी व हवा आदिक सब मेरेअधीन रहकर बिना आज्ञा कुछकामनहीं करसक्ते व जो मेरीशरणमेंआता है उसकेऊपर कुछवश किसीका नहीं चलता यहबचन कपिलदेवजीका सुनके देवहूतीने कहा महाराज मुझस्त्रीकोयहज्ञान प्राप्तहोना बहुतकठिनहै अपनीभक्ति व पूजाकीसहज राह मुझेबतलाकर प्रकृतिका हालकहिये यहबातसुनतेही कपिलदेवमुनिबोले हे माता पहिले तुम प्रकृतिकाहाल जो शरीर कहलाताहै सुनो यही सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण तीनों मिलकर जो एकजगहरहतेहैं उसे प्रकृतिका मूलजानकर मायाकी उसजड़को डालियां समझनाचाहिये व चौबीसतत्त्व उनशाखोंके पत्तेहैं उनसे सबजीवोंकातन बनकर उत्पत्तिसंसारकी होतीहै व तुम आत्माको जिसे बोलतापुरुष कहतेहैं इनचौबीस तत्त्वोंसे पृथक्जानो किसवास्ते कि वह आत्मासदा एकरूपरहकर घटने व बढ़ने व जन्म लेने व मरनेसे रहितहै व चौबीसतत्त्व जिनसेशरीर तैयारहोताहै सदाबनते व बिगड़ते रहतेहैं जोमनुष्य अपने तन व इन्द्रियोंके सुखको अपना जानकर उससे प्रीतिरखता है उसकोअज्ञानी व जो मनुष्य अपनेशरीरमें आत्माको तनसेसदा बिलगजानताहै उसेज्ञानी समझनाचाहिये व इसीचौबीस तत्त्वसे देवता व मनुष्य व जड़ व चैतन्यादिक सबजीवों की उत्पत्तिहोतीहै इसलिये परमेश्वरको सबकामालिक व उत्पन्नकरनेवाला जानतेरहना उचितहै सो हे माता तुम अपनेतनमें आत्माको चौबीसतत्त्वसे पृथक्जानो तब तुम्हें ज्ञान प्राप्तहोगा ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीको प्रकृतिका हाल कहना जिससे सबजीवोंकातन बनताहै ॥

कपिलदेवमुनिबोले हे माता मैं चौबीसतत्त्वोंका लक्षण बिलग बिलग तुमसेकहताहूं

परमेश्वरकाप्रकाश एकसादेखतेहैं व दुःखीमनुष्यको देखकर उनकेहृदयमें दयाआती है व सबजीवोंकेसाथ मित्रतारखकर किसीसे शत्रुतानहींकरते व दिनरात हरिचरणोंमें ध्यान अपनालगाकर मेरीकथा व कीर्त्तनसुननेका प्रेम उनको आठोंपहर बनारहताहै व खाने व पहिरनेआदिक संसारीकामको अपनाकियानहीं समझते सबबातभली व बुरीऊपर इच्छा परमेश्वरके जानतेहैं व सुख व दुःखको एकसा समझकर मेरेमिलनेकी इच्छा से अपना घरदुआर कुल परिवारछोड़कर जिसजगहमेरी कथा व कीर्तनकास्मरण व चर्चारहताहै वहांबड़ेआनन्दसेरहतेहैं और कथाके सुननेसे उनको ज्ञानप्राप्तहोकर भक्ति उत्पन्नहोतीहै व भक्तिहोनेसे मैं उनको संसारीमायाजालसे विरक्तकरके उन्हें मेरास्वरूप अपनेतनमें ज्ञानकी आंखसेदिखलाईदेताहै व उनकामन मेरेचरणोंमें लगारहनेसे बरसात व धूप व जाड़ा उनको कुछ सतानेनहींसक्ता ऐसेसन्तोंकी संगतिकरनेवाले मुझेसदा इच्छावनी रहतीहै पर वह साधु व सन्त ऐसे समदर्शीहोवें जो सबजीव पशु व पक्षीआदिक में परमेश्वरका चमत्कार एकसासमझकर भीतर व बाहरअपना एकतरहपररक्खें ऐसे ज्ञानियोंकी मुक्तिहोतीहै व काल व सूर्य व चन्द्रमा व यमराज व अग्नि व पानी व हवा आदिक सब मेरेअधीन रहकर बिना आज्ञा कुछकामनहीं करसक्ते व जो मेरीशरणमेंआता है उसकेऊपर कुछवश किसीकानहीं चलता यहबचन कपिलदेवजीका सुनके देवहूतीने कहा महाराज मुझस्त्रीकोयहज्ञान प्राप्तहोना बहुतकठिनहै अपनीभक्ति व पूजाकीसहज राह मुझेबतलाकर प्रकृतिका हालकहिये यहबातसुनतेही कपिलदेवमुनिबोले हे माता पहिले तुम प्रकृतिकाहाल जो शरीर कहलाताहै सुनो यही सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण तीनों मिलकर जो एकजगहरहतेहैं उसे प्रकृतिका मूलजानकर मायाकी उसजड़को डालियां समझनाचाहिये व चौबीसतत्त्व उनशाखोंके पत्तेहैं उन्हींसे सबजीवोंकातन बनकर उत्पत्तिसंसारकी होतीहै व तुम आत्माको जिसे बोलतापुरुष कहतेहैं इनचौबीस तत्त्वोंसे पृथक्जानो किसवास्ते कि वह आत्मासदा एकरूपरहकर घटने व बढ़ने व जन्म लेने व मरनेसे रहितहै व चौबीसतत्त्व जिनसेशरीर तैयारहोताहै सदाबनते व बिगड़ते रहतेहैं जोमनुष्य अपने तन व इन्द्रियोंके सुखको अपना जानकर उससे प्रीतिरखता है उसकोअज्ञानी व जो मनुष्य अपनेशरीरमें आत्माको तनसेसदा बिलगजानताहै उसेज्ञानी समझनाचाहिये व इसीचौबीस तत्त्वसे देवता व मनुष्य व जड़ व चैतन्यादिक सबजीवों की उत्पत्तिहोतीहै इसलिये परमेश्वरको सबकामालिक व उत्पन्नकरनेवाला जानतेरहना उचितहै सो हे माता तुम अपनेतनमें आत्माको चौबीसतत्त्वसे पृथक्जानो तब तुम्हें ज्ञान प्राप्तहोगा ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीको प्रकृतिका हाल कहना जिससे सबजीवोंकातन बनताहै ॥

कपिलदेवमुनिबोले हे माता मैं चौबीसतत्त्वोंका लक्षण बिलग बिलग तुमसेकहताहूं

जिनकेजाननेसे आत्मा व शरीरका भेद पृथक् २ मालूमहो सुनो जो प्रकाश नारायणजी का सबजीवोंके तनमेंरहताहै उसीको आत्मा बोलतापुरुष कहतेहैं उसकानाश कभीनहीं होता और वहीपुरुष सबजीवोंका पालनकरताहै उसका चमत्कार इसतरह बीचतन जीवोंकेहै जिसतरह कईबर्त्तन पानीसेभरकर धूपमेंधरदेव तो उनबर्त्तनोंमें सूर्यकी छाया पड़नेसे दूसरे सूर्यदिखलाई देतेहैं जब वह बर्त्तन तोड़डालो तब फिर वह सूर्य उसमेंनहीं देखपड़ते व उसबर्त्तन टूटनेसे सूर्यकानाश नहींहोकर वह प्रकाश फिर सूर्यमें मिलजाता है उसीतरह आत्माका हालभी समझनाचाहिये जिसको यहज्ञान प्राप्तहुआ वह मनुष्य संसारीमायामें नहींफँसता सिवाय इसके जिसतरह काठमें अग्नि व तिलमें तेलहोकर दिखलाई नहींदेता उसीतरह वह आत्माभी बीचतनके दृष्टि नहींपड़ता पर ज्ञानकीआंख से उसको अलग समझनाचाहिये किसवास्ते कि जबतक वह बोलतापुरुष तनमेंरहताहै तब तक उसकासंग पाकर यह शरीर उसीकीसामर्थ्यसे जितनेकाम चलने व बोलने व खाने व पीने व इन्द्रियोंको सुखदेनेके हैं सब कामकरताहै पर उससुखका भोग उठानेवाला उसीआत्मा पुरुषको जो छोटारूप प्रकाश परमेश्वरका अँगूठेके समान सब शरीरमेंरहताहै समझनाचाहिये किसवास्ते कि जब वह आत्मापुरुष शरीरसे बाहर निकलकर बिलग होजाताहै तब वहतन मृतकहोकर सिवाय गल व सड़जानेके फिर उसशरीरसे कुछकाम नहींहोसक्ता इसीबातको जो प्रसिद्धहै विचारकर चौबीसतत्त्वसे आत्माको पृथक् जानना चाहिये इसलिये जो लोगज्ञानीहैं वह आत्मापुरुषको अविनाशी व शरीरका नाशजान-कर इसशरीरसे प्रीतिनहींरखते व प्रकृतिका रूप पहिले अच्छीतरह मालूमनहींहोता जब सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण उसमें मिलजाते हैं तब उसकास्वरूप प्रकटहोताहै व परमेश्वरका छोटारूप शरीरमें रहनेवाला बिना योगाभ्यासकिये व ज्ञान प्राप्तहुये किसी को दिखलाई नहींदेता और वहीपुरुष दूसराकालरूप बनकर बाहररहताहै उसीकेजानने वास्ते यह सब यज्ञ व तप व दान व धर्म्मसंसारमें बनेहैं हे माता जिसने उसपुरुषको पहिंचानकर अपना मालिक व उत्पन्नकरनेवाला जाना वह सबयज्ञ व तपआदिक शुभकर्म्मकरचुका बिनाजाने उसके सबशुकर्म्म व्यर्थहोतेहैं उसकाजानना कुछकठिननहीं है वह सहजमें भक्ति व प्रेमकरनेसे पहिंचानेजातेहैं सो तुम भक्तिकरके उसपुरुषकोजानो फिर तुम्हें कोई दूसरीबात करनेकेवास्ते प्रयोजन न रहकर संसारी शोच तुम्हारा छूट जावेगा सो मैं चारतरहकी भक्ति सात्त्विकी व राजसी व तामसी व नवधा तुमसेकहताहूं उसकाहाल मनलगाकर सुनो परमेश्वरके मिलनेवास्ते सात्त्विकी भक्ति जलकेसमान निर्मलहै जिसमें सिवाय प्राप्तहोने मुक्तिके दूसरीकामना नहींरहती व राजसीभक्ति वास्ते मिलने स्त्री व द्रव्य व पुत्रादिक संसारीसुखके समझो व तामसीभक्ति इसवास्तेहै जिसमें शत्रुमेरा मरजावे व नवधाभक्ति करनेवाले संसारीसुख व मुक्तिआदि किसी बस्तुकी चाहनानहींरखते इसतरहकी भक्ति मुझे बहुतप्यारी मालूमहोतीहै व भक्ति उसको कहतेहैं

कि मेरेचरणकमलका ध्यान जो अतिसुन्दर व कोमलहै बड़ीप्रीति व सच्चेमनसे हृदयमें रक्खे व आठोंपहर मेरेनामका स्मरणकरै व पूजासमय मुझे नहींभुलाकर हाथोंसे मेरी सेवा व पूजा व पैरोंसे तीर्थयात्रा कियाकरै और जो लोग सात्त्विकी व राजसी व तामसी भक्तिकरतेहैं मैं उनकीइच्छा व कामनाभी पूरी करदेताहूं जिसमें परिश्रम उनकाव्यर्थ न जावे पर जो मनुष्य बिनाइच्छा नवधाभक्ति मेरीकरताहै उससे मैं बहुतलज्जित व प्रसन्न रहताहूं कि कौनवस्तु इसकोदेकर उसके बदलेसे उऋणहोवें हे माता तुम नवधाभक्ति मेरीकरो मुक्तिपदवीपर पहुंचोगी परजो तुम अपनेको यह जानतीहो कि मैं राजास्वायम्भुवमनु व शतरूपाकी बेटी व कर्दमजीकी स्त्री व राजाप्रियव्रत व उत्तानपादकी बहिनहूं यह शरीरकानाता सब झूंठाजानकर हरिभक्त व साधु व सन्तोंसे नातालगावो व सब इन्द्रियोंका जो स्वाद व सुखहै उसकीचाहना परमेश्वरको अर्पणकिये बिना मत करो जब इसतरह तुम साधनाकरोगी तब तुम्हारेहृदयमें उसआदिपुरुषका रूप तुमको आपसे दिखाईदेगा व हे माता यहज्ञान उसमनुष्यको प्राप्तहोसक्ताहै जो अपने धर्म्मपर स्थिररहकर ज्ञानियोंका सत्संगरक्खे व जिसकामका फलबुराहै वहकर्म न करै व जो कुछ प्रारब्धानुसार उसेमिले उसपर संतोषरखकर अधिकलोभ न बढ़ावै व पेटभर न खाय जिसमें परमेश्वरका भजन व स्मरण करतेसमय आलस्य न आवे व जिसजगह तीर्थ स्थान व ज्ञानियोंका सत्संग अच्छाहो वहांपररहै व जहांसंगति अच्छी न हो वहां न रहै व परमात्माको अपनेशरीर व सबजीवोंमें एकसादेखकर भूख व प्यास व दुःख व सुखको बराबरसमझै ऐसेमनुष्यको जीवन्मुक्तकहतेहैं व जबतक ऐसाज्ञान न प्राप्तहो तबतक अपने वर्ण व आश्रम के अनुसार धर्म व कर्म्म करतारहै उसके करनेसे धीरे २ ज्ञान प्राप्त होजाताहै ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीका सांख्ययोग ज्ञान देवहूतीसे कहना ॥

कपिलदेवजीबोले हे देवहूती अब मैं सांख्ययोग ज्ञान तुमसे कहताहूं चित्तलगाकर सुनो परतुम इसज्ञानको बहुतअच्छा जानकर दूसरे किसीसे मतकहना यहज्ञान जल्दी सबमनुष्योंको नहींमिलता और संसारीव्यवहार तुम झूठाजानकर कभी सत्य मतसमझना कदाचित् तुमको यहसन्देहहो कि जब संसारीव्यवहार सबझूठाहै तो संसारमें जो यज्ञ व तपआदिक धर्म व पापकीबात मनुष्यलोग करते हैं वेभी झूठीहोंगी सो पाप व पुण्यकीबात सत्यमानकर उसेझूठाकभी मतसमझो जिसतरह कोईमनुष्य किसी स्त्रीसे जागतेसमय मिलनेकी चाहनारखकर उसीध्यानमें सोजावे व स्वप्नमें उसीस्त्रीसे भोग करके बीर्यउसका गिरपड़े तो भोगकरना उसका झूठा व बीर्यका गिरना सच्चाहोता है उसीतरह यहसंसार झूठाहोकर जो पाप व पुण्य मनुष्यलोग करते हैं उसकेबदले सुख व दुःख अवश्य भोगनापड़ताहै इसबातका एकइतिहास मैं कहताहूं सुनो एकमनुष्य

लकड़ीकाबोझ बनसेकाटकर अपनेशिरपर लियेहुये बेचनेकेवास्ते जाताथा जबवह धूप की गर्मीसे राहमेंथकगया तब वृक्षकीछायामें बोझाअपना शिरसे उतारिके एककुआंपर पानीपीने उपरान्त बैठकर सुस्तानेलगा उससमय उसने क्यादेखा कि एकसवार घोड़ा दौड़ाये उसकुआंपर पानीपीनेवास्ते चलाआताहै उसेदेखकर लकड़ी बेचनेवालेने मनमें कहा हमकोभी घोड़ामिलता तो सवारहोकर चलते बोझा उठाने व पैदलचलनेसे पैर जलताहै इसीबिचारमें वह कुयेंकीजगतपर सोगया स्वप्नमें उसको घोड़ामिला जबवह उस पर सवारहोकर कुदानेलगा तब घोड़ेपरसे गिरपड़ा उसीस्वप्नावस्थामें सोताहुआ वह उछला तो बीचकुयेंके गिरपड़ा व कुयेंमें गिरनेसे हाथ व पैरउसका टूटगया सो हे माता उसको घोड़ामिलना झूठा व कुयेंमें गिरनेमें चोटलगनी सत्यहुई इसीतरह संसारीसुख झूठासमझो पर मनुष्यको पापकरनेसे दण्ड अवश्य मिलताहै जब उसलकड़िहारे को निकालनेवास्ते लोगोंने उपायकिया तबउसने कुयेंमेंसेकहा मैं बीचस्वप्नके घोड़ेपरचढ़ा था उसका यहफलपाया जो लोग नित्य घोड़ेपर चढ़ते हैं वहलोग न मालूम कैसेगहिरे कुयेंमें गिरकर दण्डपावैंगे हे देवहूती जो मनुष्य संसारमें सवारी गहना व कपड़ा व स्त्री व मकानादिका सुखपाकर यहसमझताहै कि यहसबसुख मैं अपनेपराक्रम व कमाईसे भोगकरताहूं व परमेश्वरकीदया व कृपासे वहसुखमिलना नहींसमझता उसे अवश्य दुःख भोगनापड़ेगा व जो मनुष्य उससुखको परमेश्वरकीइच्छा व दयासे प्राप्तहोना जानकर उसमें अधिकस्नेह नहींरखता व अपनेवर्ण व शरीरकाधर्म्म समझकर उसद्रव्यके अहं-कारमें किसीजीवको दुःख नहींदेता उसेदण्ड नहींमिलता यहज्ञानसुनकर देवहूतीबोली महाराज आपकहगये हैं कि इसशरीरसे उसआदिपुरुषको पृथक्समझो सो यह बड़ी कठिनबातहै आंखसे देखेबिना उसपुरुषको प्रकृतिसे किसतरह बिलगजानूं वहपुरुष शरीरसे इसतरहमिलाहै जिसतरह दूधमें घी व अग्निमें प्रकाशरहताहै इसकाहाल पृथक् करके वर्णनकीजिये यहवचनसुनकर कपिलदेवमुनिबोले हे माता यहबात ज्ञानकीराह व आंखोंसेभी देखकर बिचारकरनाचाहिये किसवास्ते कि जब मनुष्य मरजाताहै तब हाथ व पांव आदिक सबइन्द्रियां उसकी बनीरहती हैं परन्तु जबवह आत्मापुरुष पर-मेश्वरका चमत्कार शरीरसे निकलजाताहै तबउसतनसे कुछकाम नहींहोसक्ता यहबात प्रत्यक्षमें आंखोंसे देखकर जाननाचाहिये कि उसआत्मापुरुषके न रहनेसे यहहाल शरीरका होजाताहै सो तुम यहगति मनुष्यकीदेखकर आत्मापुरुषको शरीरसे पृथक् समझो व जिसतरह वेश्या विषयीमनुष्योंकेपास द्रव्यदेखकर अनेकरंगसे उसका धन व धर्म्म दोनोंलेलेती है उसीतरहसे मेरीमाया धर्मात्मापुरुषकेपास जाकर अनेकरंगसे उस को छलदेती है पर जो लोग मेरेचरणोंकी शरणमें रहतेहैं उनपर उसमायाका कुछवश नहींचलता किसवास्ते कि गंगाजी मेरेपांवका धोवन हैं उनमें स्नानकरनेसे सबपाप मनुष्योंकेछूटकर मनउनका शुद्धहोजाताहै व जो लोग साक्षात् मेरेचरणोंका ध्यान अ-

न्तःकरणमें रखते हैं वहलोग फिर संसारीमायामोहमें नहींफँसते जिसने पारसपत्थरपाया वह कांचके झूठेनगपर चाहना नहींरखता व संसारमें सबइच्छा व कामना उसकीपूरी होकर मरनेउपरान्त परलोकका सुखमिलताहै जिसतरह बेटाकेभोजन करनेसे बापका पेटनहींभरता व द्रव्य दूसरेकेपास रक्खाहुआ समयपर कामनहींआता उसीतरह शरीर को आत्मासे अलगजाने बिनाज्ञान नहींप्राप्तहोता व ऐसाज्ञान जाननेवाले जीवन्मुक्त होते हैं यहसबज्ञान सुनकर देवहूतीबोली हे महाप्रभो मैंने आपकेज्ञान सिखलानेके अनुसार आत्माको प्रकृतिसे बिलगसमझा परतत्काल इसमनका संसारीजालसे विरक्त होना व नारायणजीके चरणोंमें ध्यानलगना बहुतकठिनहै जिस दिनसे तुम्हारे पिता तपकरनेवास्तेगये हैं उसीदिनसे एकक्षणमुझे नहींभूलकर मनमेरा उनकेयाद व ध्यान में लगारहताहै कोईऐसाउपाय बतलाइये जिससे सहजमेंज्ञान व मुक्तिप्राप्तहोवै यहबात सुनकर कपिलदेवजीबोले हे माता हमसहजराह भक्तियोगकी तुमसेकहते हैं सुनो कदाचित् कोई परमेश्वरके मिलनेवास्ते मनअपना धीरे धीरे लगावै तो उसकीभी मुक्तिहोती है जिसतरह कोईमनुष्य इच्छाजाने जगन्नाथजी या मथुरा या किसी दूसरेतीर्थकी करके घरकेबाहर निकलकर एक२ पैग नित्यरास्ताचले तो वहएकदिन ठिकानेपर पहुँचजाता है व जो रास्ता न चले तो किसतरहपहुँचेगा व जब राहमें चलतेसमय बटोही थककर किसीसेपूछे कि ठिकाना टिकनेका कितनीदूरहै जो स्थान टिकनेका निकटबतलादेवै तो थकनेपरभी उसे सामर्थ्य चलनेकी होकर ठिकानेपर पहुँचजाताहै व जगह टिकनेकी दूर बतलावनेसे आगे न जाकर उसीजगह टिकरहताहै उसीतरहहम तुमसेकहतेहैं कि भक्तियोग पूजा व पाठ व व्रत व नेम व परमेश्वरकीकथा व कीर्त्तनसुनना सहजराहहै जोलोग चित्तलगाकर यहसब कर्मकरें वहभी मुक्तिपासक्ते हैं परपूजा कईप्रकारकी होकर एकतामसीपूजाहै जिससे यहप्रयोजनरखते हैं कि शत्रु मेरामरजावै व अनेकमनुष्य वास्तेदिखलावने लोगोंके देरतक मालाफेरकर पूजाकरते हैं जिसके देखनेसे संसारीलोग हमारा विश्वासकरें दूसरी राजसीपूजा है जिसमें नारायणजीके नामपर मनुष्योंसे कपड़ा व रुपया व मिठाई व सुगन्धादिक लेकर उसको अपने खर्चमेंलातेहैं व मूर्त्तिशालग्राम व लक्ष्मी नारायणजीवास्ते प्राप्तहोने संसारीसुखके पुजातेहैं व दूसरेके घरजो ठाकुर व शालग्राम होतेहैं उनसेभक्ति व प्रीति नहीं रखते व तीसरी सात्त्विकी भक्ति व पूजा मुक्तिचाहने वास्ते करतेहैं चौथीनिर्गुणपूजा वहहै कि जिसमें मुक्तिकी भी इच्छा न रक्खे व जो यज्ञ व पूजा व दान व व्रतआदिक शुभकर्म्म करै सब परमेश्वरके नामपर अर्पणकरदे व उसके बदलेमें कोईकामना न चाहै और मेरीकथा व कीर्त्तन सुनतेसमय करुणाकेस्थान पर रोदेवे व हर्षकीजगह प्रसन्नहोकर मेरेध्यानमें मग्नरहै उनभक्तोंसे मैं बहुतलज्जित रहकर यह विचारकरताहूं कि कौनसी वस्तु उन्हेंदूं जिसमें वह मुझसे प्रसन्नहोवें और मैं उससेवाके बदले उऋणहोजाऊं इसतरहकेभक्त मेरेजीवन्मुक्तहैं व चारोंवर्णमें ब्राह्मण

वेदपढ़ाहुआ मुझे बहुतप्यारा मालूमहोताहै पर जो ब्राह्मण परमेश्वर में प्रीति नहींरखता उसब्राह्मणसे मैं शूद्रहरिभक्त व साधुलक्षणको अधिकप्यार करताहूं सो हे माता तुममेरे चरणोंमें ध्यानलगाकर नारायणनामका स्मरणकरो भवसागरपार उतरकर आवागमन से छूटजावोगी और जो कोई परमेश्वरकी भक्ति व पूजासे बिमुखरहकर उनकानाम कभी नहींलेता वह मरने उपरान्त बहुतदिनोंतक नरकमें दुःखपाकर बीचयोनि पशु आदिकके जन्मपाताहै व बहुतदिन उसयोनि में रहकर फिर मनुष्यकातन उसेमिलता है हे माता परमेश्वरकी भक्ति व ज्ञानप्राप्तहोने व भवसागरपार उतरनेवास्ते केवल मनुष्यका चोलाहै जिसने इसतनमें परमेश्वरको नहींजाना वह पीछे बहुतपछितावेगा ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजी का देवहूतीसे मनुष्यकी उत्पत्तिकहना जिसदिन से गर्भ में आनकर फिर मरताहै ॥

मैत्रेयजीबोले हे बिदुर इतनीकथा सुनकर देवहूतीने कहा महाराज जो मनुष्य परमेश्वरसे बिमुखहैं उनकामरने उपरान्त क्याहालहोगा कपिलदेवजीबोले हेमाता संसारी लोग कुल परिवार व घर द्रव्यके जालमें फँसकर आयुर्दा अपनीव्यर्थ नष्ट करतेहैं व मनुष्यतरुणाई में कमाईकरके जिनलोगों को खिलाताहै बुढ़ाई समय वहीलोग शत्रु होकर उसे दुःखदेतेहैं सो मैं हाल उत्पत्तिहोने मनुष्यकाजन्मसे मरणतक तुमसे कहताहूं सुनो जिसरोज स्त्रीको परमेश्वरकी कृपासे गर्भरहनाहोताहै उसदिन भोगकरनेकेसमय स्त्री व पुरुषदोनोंका वीर्यमिलकर खौलताहै पांचवेंदिन उसमेंसे बुल्लेकेसमान उठकर दशवें दिन बेरकेसमान गांठिबँधिजातीहै पन्द्रहवेंदिन वह गांठि मांसका पिंडहोकर कुछगोलासा लम्बाहोजाताहै एकमहीनेमें हाथ व पैर व शिरकाचिह्न बनताहै व दूसरेमहीने में अंगुलियां व तीसरेमहीनेमें चमड़ा व हड्डी व चौथेमहीनेमें शरीरपररोयें व आंखकानआदि सबइंद्रियों के आकार बनजाते हैं व पांचवेंमहीने नारायणजीकी कृपासे जीवात्माकाप्रकाश उसमेंहोकर उसको भूख व प्यासलगती है व छठवेंमहीनेमें शिरनीचे व पैरऊपररहनेके कारणसे मन उसका घबड़ाताहै व सातवेंमहीनेमें उसको अपने कईजन्म व आठवें महीने में सौजन्म पीछेका हाल यादहोकर ज्ञानप्राप्तहोने से वहमालूम करताहै कि पिछले जन्मों में हमने ऐसाकर्म्म करनेसे वैसादुःख व सुखपाया था यह बात समझकर वह परमेश्वरका ध्यानकरके उनसे बिनती करताहै महाराज मैंने पिछलेजन्म संसारी सुख व बिलास व स्त्री व पुत्रकेमोहमें फँसेरहनेसे नष्टहोकर जन्म व मरणसे छुट्टी नहीं पाया व संत व महात्मासे सत्संग नहींकिया इसलिये उलटा लटककर दुःखपाताहूं इससमय मेरेऊपर सहायता व कृपाकरके इस नरककुंडसे मुझेबाहर निकालिये तो अब मैं तन व मनसे बीचतप व सेवा तुम्हारीमें तत्पर रहूंगा पर ऐसी दया कीजिये कि जिसमें

यह ज्ञान मुझे न भूलै व बीचसंसारके ऐसाकामकरूं जिसमें जन्म व मरणसे छूटजाऊं जब नवां या दशवां महीनाहुआ तब बायु जिसे प्रसूतकहतेहैं जोरकरके उसको बाहर गिरादेती है व बीच गर्भके कन्या बायेंतरफ़ व पुत्र दाहिनेकोखमें रहकर जब पृथ्वीपर बाहर गिरकेरोताहै तब परमेश्वरकी मायासे पहिले जन्मोंका ज्ञान उसे भूलकर याद नहीं रहता सो वह बालक छोटी अवस्थामें भूख व प्यासलगनेसे दुःखपाकर सिवाय रोनेके बोलनहींसक्ता व बिछौनेपर मल व मूत्रकरनेसे जबतक कोई उसको नहींउठाता तबतक उसीमें पड़ारहकर कष्टपाताहै व माता व पिता उसकेमल व मूत्रको लत्ता या पानीसे पोंछने व धोने उपरान्त उसे गोदमें लेकर प्रसन्न होतेहैं जब उस अवस्था से सयानाहोकर पांचवर्षका होताहै तब उसके माता व पिता विद्यासीखनेवास्ते गुरुको सौंपदेतेहैं वहां भी विद्यासीखनेमें मारपीटखानेसे दुःखपाकर अपनी इच्छापूर्व्वक खेलने नहीं पाता जब सोलहवर्षकी अवस्थामें तरुणहोकर अच्छा २ गहना व कपड़ा पहिनताहै तब अभिमानसे काम व क्रोध व मोहमें फँसकर अपनीबराबर दूसरे किसीको नहीं समझता कदाचित् दरिद्री व कंगालहुआ तो दूसरेको अच्छा गहना व कपड़ा पहिने व उत्तम पदार्थ खातेदेखकर डाहकी राहसे शोचकरताहै व बिवाहहोने उपरान्त स्त्रीघर में आनेसे बीचचिन्ता कमाने वखानेके दिनरात बिकलरहकर जन्म अपना व्यर्थगंवाता है व जो मनुष्य पहिलेजन्ममें कुछ दान व धर्म नहीं कियेरहता वह मनुष्य अधिककङ्गाल होकर आठोंपहर पेटभरनेवास्ते चिन्ता व दुःख उठाताहै जब लड़केबाले उत्पन्नहोतेहैं तब उनकी प्रीतिमेंफँसकर अनेकतरह झूठसत्यबोलनेसे कमाईकरके उनकोपालनकरता है व जबतक सामर्थ्य रहती है तबतक स्त्री व लड़कोंको अपना समझकर उनको पालन करनेवास्ते अपने प्राणपर सबतरहका दुःखउठाताहै और अपनेकुल वपरिवारमें किसी मनुष्यके मरनेसे इतना रोताहै जिसकाबर्णन नहीं होसक्ता व अपनी स्त्रीकेबशमेंरहकर माता व पिताको कठोरबचन कहनेसे दुःखदेताहै व परलोकका डरनहींरखता व जैसा मनुष्यस्त्रीके मोहमेंफँसकर नष्टहोताहै वैसीदूसरी राहउसकेपरलोक बिगाड़नेवास्तेनहींहै ॥

दो० अहिबिष तो काटेचढ़े यह चितवत चढ़िजाय ।
ज्ञानध्यान अरु धर्मको जरामूलसे खाय ॥
नारिपराई स्वप्नमें भोगत अति सुखपाय ।
धर्मरु काम गँवायके आपरहै खिसिआय ॥

इसलिये जो मनुष्य अपनाभलाचाहे तो स्त्रीके स्नेहमें न फँसै सो हे माता तुमभीस्त्री हो मेरे कहेसे बुरामतमानना धर्मशास्त्रके अनुसार यह ज्ञान तुमसेकहताहूं और जबतरु-णाईबीतकर बुढ़ाईआतीहै तब आंखोंसे कम देखकर कानोंसे सुनाईनहींदेता व सामर्थ्य कमाईकरनेकी नहींरहती तब घरमें पड़ाहुआ लम्बी २ श्वासलेकर पछताता व कहताहै

अब मैं अपनेलड़कोंको किसतरह पालनकरूंगा और जो कंगाल या दरिद्रीहुआ तो वह उससमय खाने व पहिरने बिना बहुतदुःख पाताहै व जिसके बेटेतरुण कमाई करनेवाले हुये वहलोग अपनीस्त्रीसमेत उसबूढ़को शत्रुकेसमान समझतेहैं उस अवस्थामें जब वह बूढ़ा अपनेटहल व कामको किसीसे कुछ कहताहै तबउसे घुड़कके दुर्वचनकहतेहैं उससमय वह मनमें बड़ा खेदकरके कहताहै देखो अब मैं बूढ़ाहोकर कमानेयोग्यनहींरहा इसीवास्ते यहलोग जिनकोजन्मभर मैंने पालनकिया मुझे बेआदर जानकर खाने पीनेकी सुधिभी समयपर नहींलेते जिसतरह बैल जब बूढ़ाहोकर बोझ उठानेकी सामर्थ्यनहीं रखता तब बनियेंलोग नाथ उसकी काटकर बनमें छोड़आतेहैं ॥

दो० सींगझड़े अरु खुरघिसे पीठ न बोझालेय ।
ऐसे बूढ़े बैलको कौनबांधि भुसदेय ॥

हे माता उससमय वह बूढ़ा यह सबदुःख देखकर परमेश्वरसे अपनी मृत्युमांगताहै पर आयुर्दा सम्पूर्णहोने बिना मृत्युनहींआती व उसकेबेटा व पतोह पहिले आपभोजन करके पीछेसे भिक्षुकोंकी तरह कुछ उसकोभी खानेवास्तेदेदेतेहैं जबबुढ़ाईसमय कुष्ठरोगादिक उसेहोताहै तबकोई मनुष्य घरवाला उसकी सेवा न करके दोघड़ी उसकेपास बैठनेका भी साथीनहींहोता वह बिचारा अकेला पड़ारहकर जब किसीको भोजन व पानी मांगनेवास्ते बुलाताहै तब जानबूझकर चुपहोजाते हैं व उसकीबातका उत्तर न देकर दुर्वचन उसेकहतेहैं यहसबकष्ट व दुःख उठाकर जब उसके मरनेकाकाल निकट पहुंचताहै तब कफ व पित्त व बातसे गला उसका बन्दहोकर शुद्धश्वासभी नहीं निकलती उससमय अधर्म व पापकरनेवालोंको यमदूत कहतेहैं कि जिनकेलिये तैंने यह सब पाप बटोराथा उनको अब अपनी रक्षाकरनेवास्ते बुलावो जब वह बोल बन्दहोजानेसे उसका उत्तरदेने व किसीको बुलानहींसक्ता तब अपनी करणी यादकरके आंखोंसे सब को देखकर रोदेताहै जब यमदूत अपना भयानकरूप दिखाकर धमकातेहैं तब उनके डरसे उसकामल व मूत्र निकलजाताहै व सिवाय उसकेदूसरेको वह दूत दिखलाई नहीं देते उससमय कुल परिवारवाले अपनीझूंठी प्रीति जग दिखलानेवास्ते प्रकटकरके रोते हैं इसलिये मन उसका और अधिक घबराताहै व उसरोने व पीटनेके शब्दमें यमदूत उसे और बहुतदुःखदेतेहैं उससमय परमेश्वरकानाम व कथा व कीर्त्तनउसको सुनाना व गंगाजल व तुलसी व शालग्रामजीका चरणामृत उसकेमुखमें डालना व धूरचरण साधु व वैष्णवकी उसकेशरीरपर लगाना उचितहै सो किसीसे नहींबनपड़ता केवल जाल व मकरका रोनाजानते हैं ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

यमदूतोंका अधर्मीजीवोंको यमराजके पास लेजाना ॥

मैत्रेयजीनेकहा हे बिदुर इतनीकथा सुनकर देवहूतीनेपूछा हे महाप्रभो उस मनुष्यके मरनेउपरान्त क्याहालहोताहै सो वर्णनकीजिये कपिलदेवमुनिबोले हे माता यह सब दुःख उठानेउपरान्त यमदूतलोग उसजीवको कि मरनेपीछे अंगूठेप्रमाण शरीर उसका बनारहकर सब इन्द्रियोंकी शक्ति उसमेंहोतीहै अपनीफांसीसे बांधकर लोहेके मुद्गरोंसे मारतेहुये यमपुरीमें जो मृत्युलोकसे निन्नानबेहजार योजनपरहै यमराजके पासलेजाते हैं उससमय राहमें वह जीव भूख व प्यासलगने व न मिलने दाना व पानी अपनेकिये हुये पापोंको स्मरणकरके बहुत पछताताहै और रास्तेमें पृथ्वी आगकेसमान जलतीहुई मिलतीहै जब वह उसधरतीपर नंगेपैर व नंगेशिर व नंगेशरीर चलनेसे थककर कहीं सुस्तानेको चाहताहै या राहमें अन्धकाररहनेसे चलनहींसक्ता तब यमदूत उसकोमुद्गरोंसे मारकर दमनहींलेनेदेते उससमय वहजीव मृतककेसमान अचेतहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ताहै जिसतरह यहांसंसारमें राजालोग कुकर्मकरनेवालोंको दण्डदेतेहैं उसीतरह वहांभी पापकरनेवाला मनुष्य राहमें शासनापाकर परमेश्वरकी मायासे उस अंगूठेभर शरीरको अपना पहिलातन समझताहै व उससमय बहुत दुःखीहोकर अपनेकुल परिवारवाले व नौकरोंको यादकरके पीछे फिरकर देखताहै कि इसमहादुःखमें कोई मेरीसहायता करने वास्ते आताहै या नहीं जब उसेवहांपर कुल परिवारवाला कोईनहीं दिखलाईदेता तब वह बहुतसा पछताने व रोनेउपरान्त कहताहै देखो जिनकेपालनवास्ते यह सबपाप बटोराथा उनमेंसे कोई मनुष्य इससमय मेरीसहायता नहींकरता यहबातस्मरणकरके उस जीवको बड़ा खेदहोताहै पर उससमय सिवाय पछतानेके कुछकाम नहींकरता व राहमें सांप व बिच्छूआदिक अनेकतरहके जीवरहकर उसेकाटतेहैं जब इसीतरह बहुतसा दुःख देतेहुये यमदूतलोग उसमनुष्यको वैतरणी नदीमें जहांमल व मूत्र व रक्त व पीब व कीड़े व बाल व नख व हड्डी व सड़ामांस भराहुआ चारकोशका फांटबहताहै चारघड़ीमें लेजाकर डालदेतेहैं तब वह जीव उसनदीमें कीड़ोंकेकाटने व ठोकड़मारने व मांसनोचने गिद्धों से बहुतदुःखपाकर अतिबिलापकरके कहताहै जो कोई मुझे इसनदीसे पारकरता उसका मैं बड़ा यशमानता यहबात सुनकर यमदूत लोग अपनीगदा उसेमारतेहैं यहसबदुःख उठानेउपरान्त यहजीव वैतरणीपार उतरकर जब चारघड़ीमें यमराजके पासपहुंचताहै तब धर्म्मराजकी आज्ञासे चित्रगुप्त उसकेकर्मोंका कागजदेखकर जितनेदिन जिसनरक भोगनेका दण्डदेना उचितहोताहै वहां उसेभेजदेतेहैं उसनरकमें जाकर वह बहुतदुःख उठाताहै व अवधिपूर्णहोने उपरान्त फिर वहजीवनरकसे निकलकर अशुद्ध व कुरूपजीव की योनिमें जन्मपाताहै व सदा रोगीरहकर कभी सुख नहींपाता इसीतरह चौरासीलाख

योनिमें भ्रमकर फिर उसे मनुष्यकातन मिलताहै सो हे माता यहचैतन्यचोला मनुष्यका मिलना सहज नहींहोता व रौरवआदि अट्ठाईसनरक हैं उसकाहाल पांचवेंस्कन्ध में आवेगा ॥

तीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीका देवहूतीसे वर्णन करना कि यह पाप करनेसे मरनेउपरान्त ऐसा दण्डपाता है ॥

कपिलदेवजीबोले हे माता जो पापकरनेसे मनुष्य यमपुरीको जाकर नरकभोगते हैं उनपापोंके दण्डपावनेकाहाल तुमसे बिलग २ कहताहूं सुनो जो कोई किसीकाधन बरजोरी लेलेताहै उसे यमदूत बहुतऊंचे पहाड़पर चढ़ाकरनीचे पत्थरकी चट्टानपर गिरादेते हैं सो उसका अंग अंग भंगहोजाताहै व बड़े २ गिद्ध उसकामांसखाते व रौरव नामजीव जोंककेसमान लोहूपीनेउपरान्त उससेकहते हैं कि जितनाधन तुमने दूसरेका लियाहै उतनेकल्पभर तुम्हारी यहीदशाहोगी यहबातसुनकर वहजीव दुःखपानेसे बहुतसा पछताके शोचकरताहै पर प्राणउसका नहींनिकलता व जो मनुष्य अच्छेभोजन व कपड़ाबनाकर केवल आपखाता व पहिनताहै व अपनेपरिवार व साथवालोंको न देकर साधु व सन्तकीसेवा नहींकरता उसकोवहां बड़ीभूख मालूमहोती है तब यमदूत उसीके तनकामांस नोचनेउपरांत उसेखानेवास्ते देकरकहते हैं जिसतनका तुमनेपालन किया था उसीकोखाव व जो कोई सन्त व महात्माको दुर्वचनकहकर उन्हें टेढ़ीआंखसे देखता है उसकीआंखें गिद्धअपनीचोंचसे फोड़नेउपरान्त उसकामांस व शिरकीगूदी टोकरोंसे निकाललेते हैं व जो मनुष्य या हाकिम किसीको बिनाअपराध दण्डदेताहै उसे दो पत्थरकी चट्टानमेंरखकर कोल्हूकेसमान पेरतेहैं व जो कोईभोजनमें किसीको विषदेता या आगलगावताहै उनको बहुतऊंचे वृक्षपर जिसमें तलवारके समानपत्ते हैं चढ़ाकर ऊपरसे छोड़देतेहैं तब शरीरउनका कटकर टुकड़े टुकड़े होजाताहै व जो मनुष्य परस्त्री गमनकरताहै उसकेबदनसे लोहेकी स्त्रीबनवाकर आगमें लालकरनेउपरान्त लपटादेते हैं व जो कोई दूसरेकी थाती बेईमानीसे पचालेताहै उसको आगके समान जलतीहुई पृथ्वीपरलोटाने व गर्म २ तेलशरीरपर छिड़कानेउपरान्त जलतेहुए तेलकेकड़ाहेमें डाल देते हैं तिसपरभी प्राणउसका नहींनिकलता व जो मनुष्य मच्छड़आदिकको मारकर जीवहिंसाकरताहै उसको लालाभक्षनरकमें जो पीब व मुंहकेलारसे भराहै डालकर पानी की जगह वहीपिलावते हैं व जो कोई न्याय व पंचायत व गवाहीमें पक्षकरके झूठ बोलताहै उसको बहुतगहिरे अँधियार कुयेंमें जो सांप व बिच्छूसे भरारहताहै बारम्बार डालते व निकालते हैं सो सांप व बिच्छूके काटनेसे वह बहुत दुःखपाताहै हे माता इसीतरह जो जैसा पापकरते हैं वैसादण्ड उनको वहां मिलता है ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीका देवहूती से यहबात कहना कि नरक भोगने के उपरान्त जीवका क्या हाल होताहै ॥

कपिलदेवजीने कहा हे माता जो लोग कभी परमेश्वरकानाम न लेकर कुकर्म्मके सिवाय अच्छाकाम कुछनहींकरते उन्हींमनुष्योंकी वहगतिहोकर फिर वह पशुपक्षीआदिक का तनपाते हैं इसीतरह चौरासीलाखयोनिमें जन्मपाकर फिरउनको मनुष्यकातन मिलताहै परवहलोग काने व कुवड़े व अंधे व रोगी व कुरूप व दरिद्री होकर संसारमें सबतरहका दुःखउठावते हैं व जो मनुष्यजगत्में सुन्दर व धर्मात्मा व हरिभक्त व नीतिमान् व धनीपात्र दिखलाईदे उसे समझनाचाहिये कि इसने स्वर्गसे आनकर मृत्युलोकमें जन्मलियाहै हे माता यहदोनोंबातें प्रत्यक्षदेखकर स्वर्ग व नरकसे आनेवालोंका हाल अच्छीतरह संसारमें ज्ञानीमनुष्यको मालूम होसक्ताहै व जिसमनुष्यके पाप व पुण्य दोनों रहते हैं वह जीव अपनेकर्मका दण्डभोगकर फिर मनुष्यका तनपाताहै व जिसका केवल पुण्यहोकर पाप नहींरहता वह जीव मरनेउपरान्त देवता व गन्धर्वका तनपाकर देवलोक व स्वर्गमें सुखभोगकरताहै व हे माता यहजीव देवता या मनुष्य या कुत्ता व बिल्ली व शूकरआदिक जिसतनमें जन्मपाताहै परमेश्वरकी मायासे उसीयोनिमें सदा रहनेवास्ते इच्छारखकर प्रसन्नरहताहै व मन उसका बिनाकृपा व दया परमेश्वरकी संसारसेविरक्त नहींहोता व जिसशरीरको अपनाजानकर पालनकरताहै वह तन उसका स्थिर नहींरहता सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणका तीनतरहपर स्वभावहोकर जिसे रजोगुण अधिकरहताहै वहलोग राजसीकर्म्म करके सत्यलोकमें जाते हैं और तमोगुण के अधिकरहनेसे पापकरनेवाला मनुष्य पातालमें नरककेबीच पड़ताहै व सतोगुणकी राह शुभकर्म्म करनेवाले मनुष्य देवलोकमें पहुँचते हैं व हे माता सबजीवोंकीगति तीन तरहपर जानकर जप व तप व दानादिक शुभकर्म्म जो हैं उनकोभी राजसी व तामसी व सात्त्विकी समझो जिसका जैसा स्वभावहोताहै उसीबातमें मनउसका लगकर वैसा कर्म्म वहलोग करते हैं और यहजीव अपने स्वभावानुसार कर्म्मकरके बारम्बार संसार में जन्मलेकर दुःख व सुख भोगताहै व आवागमनसेरहित नहींहोता जिसतरह कुयेंसे पानीभरनेवास्ते एकरहँट चरखीका बनाकर उसमें मेटियोंकाहार ऊपरसे पानीतक पहिना के उस रहँटको घुमावते हैं तो एकमेटी ऊपरकी पानी गिरजानेसे खाली होकर दूसरी मेटियोंमेंनीचे पानीभरजाताहै उसीतरह इसजीवकीगति समझनाचाहिये कि एकतनसे निकलकर अपनेकर्मोंकाफल शुभ या अशुभ जैसा कियाहो भोगनेउपरान्त दूसरेशरीरमें जाताहै व जिसतनमें जैसाकर्मकरै उसीकेअनुसार दूसराचोलापाता यहबात सुनकर देवहूतीनेकहा महाराज जब यहीहालहै तो जीवका छुटकारा इससंसारसे किसीतरह नहीं

होसक्ता तब कपिलदेवजीबोले हेमाता जन्म व मरणसे छूटनेकाउपाय हमतुमसेकहतेहैं सुनो सत्यबोलना आचारसेरहना सबजीवोंकी रक्षाकरना बिनाप्रयोजन अधिक न बकना बुद्धि को नष्ट न करना कुसंगति व बुरेकामोंसे अलगरहना सदा चित्तप्रसन्नरखना जितना परमेश्वरदेवें उसपर सन्तोषकरना किसीकेपास द्रव्यदेखकर डाह नहीं करना शुभकर्म करके संसारमें यशउठाना अयश किसी बातका नहीं लेना किसीपर क्रोध न करना धर्मसे कमाईकरके अपना कालक्षेपकरना व परमेश्वरके चरणोंमें प्रीतिरखना नारायणजीको अपना मालिक उत्पन्नकरने व जीवकादेनेवाला जानते रहना किसी जीवकोहिंसाकरके दुःख न देना परनारीसे प्रसंग नहींकरना साधु व सन्त व ब्राह्मणोंकी सेवाकरते रहना परमेश्वरकी कथा व कीर्त्तन सुनना परमेश्वरके नामका भजनकरना बड़ोंकी सेवामें रहकर कभी उनका अनादर न करना सबबात भली व बुरीको ऊपरइच्छा परमेश्वरके समझना अपने कर्म व धर्मपर वर्त्तमान रहना हे माता जो जीव मनुष्यतन पाकर इस तरहके कर्मकरें वह जीव आवागमनसे छूटकर भवसागरपार उतरजावेंगे पर यहसब गुणविना सत्संगकिये व कथापुराण सुने प्राप्त नहीं होते इसवास्ते मनुष्यको महात्मा व ज्ञानी लोगोंसे प्रेम रखना बहुत उचितहै जितना सत्संग उनकाकरै उतना अधिकगुण उसको होगा अधर्मी लोगोंकी संगति करनेमें कदाचित् पहिलेसे भी कोईगुण उसमेंहोगा तो वह जातारहैगा व संसारमें परस्त्रीगामी व जुवांरी व लोभी व चोर व मद्यप व चुगुल व झूठबोलने व अपना शरीर पालनकरनेवाले होकर जो सुखकेवास्ते अपनाधर्म छोड़ देते हैं उनलोगोंकी संगति कभी न करनाचाहिये उन मनुष्योंसे एकक्षण संगतिकरनेमें बुद्धिभ्रष्ट होजाती है बनना चित्तका बहुतकठिन होकर भ्रष्टहोते उसको बिलम्बनहीं लगता व लोग परस्त्रीसे प्रसंगकरते हैं उनकेज्ञान व धर्मदोनों नष्टहोजाते हैं इसलिये अपनीबेटी व बहिनकेपास भी अकेलेमें बैठना न चाहिये किसवास्ते कि मनुष्यकाचित्त सबक्षण एकतरहका नहीं रहता व कामदेवकामद ऐसाबुराहै जो मनुष्यकाज्ञान हरकर उससे बहुतपाप कराताहै एकसमय ब्रह्माजी सबसंसार व चारोंवेदके उत्पन्नकरनेवाले जो सदा ज्ञानीरहकर वेदके अनुसार धर्म्म व अधर्म्मका बिचार रखते हैं सरस्वतीनाम अपनी कन्याकेपास अकेलेमें बैठेथे सो परमेश्वरकी मायासे उसकन्याकी सुन्दरताई देखकर ब्रह्माके मनमें पापसमाया जब ब्रह्माजी कामदेवके नशेमें मतवाले होकर अपनी बेटीसे भोग करनेकेवास्तेचले तब वह कन्या धर्मरूपी उनका यहहाल देखतेहीबहुत लज्जित होकर हरिणीरूप धारणकरके वहांसे भागी व ब्रह्माभी हरिणका रूपधरकर उसकेपीछे दौड़े उससमय सनकादिक उनके बेटोंने जो परमेश्वरका अवतारहैं वहांपर आनकर ब्रह्माको बहुत समझाया तबब्रह्माने ज्ञानप्राप्त होनेसे अति लज्जित होकर वहतनअपना छोड़के दूसराशरीर धारणकिया सो हेमातादेखो ब्रह्माजीको जिनके बनायेहुये ऋषीश्वर व मुनि व प्रजापति आदिक सब संसारीजीव हैं कामदेवके वशहोकर यह दशाहुई थी

तो संसारीजीव जो सदा अज्ञानसे भरेरहते हैं उनकी क्यासामर्थ्यहै जो कामदेवके बेग को रोकसकैं जिसतरह आंधीचलनेसे वृक्षके पत्ते व घास व तिनके उड़ने व हिलने लगते हैं उसीतरह जब कामदेव परमेश्वरकी मायासे अपना बलकरताहै तब योगी व ऋषीश्वर आदि सब किसीका मनचलायमानहुये बिना स्थिरनहीं रहनेसक्ता व मेरी माया दोरूप अपना एक जड़रूप द्रव्य व दूसरा चैतन्यरूप स्त्रीकोबनाकर बीचसंसार के फैली है सो इन्हीं दोनोंरूपमें संसारीलोग लपटकर नष्टहोते हैं चैतन्यरूपमाया तो छोड़भीसक्ती है पर जड़रूप मायानहीं छोड़ती उसके मोहमें सब मनुष्य फँसेरहते हैं कदाचित् कोई पूछे कि मनुष्य चैतन्यचोलाहोकर जड़रूप मायामें क्योंफँसताहै उसका उत्तर यहदेना चाहिये जिसतरह अच्छागानेवाला ताल व स्वरसे प्रवीण जब बनमें अलगोजा बजाकर गावताहै तब हरिण आदिक बनचरजीव उसशब्दपर मोहितहोकर उस गानेवाले के पास आनके खड़े होजाते हैं और वह उन्हें पकड़कर बहुतसादुःखदेता है उसीतरह संसारीमनुष्य परमेश्वरका भजन व स्मरण जो सदैवकेवास्ते सुखकीखानि है छोड़कर जड़रूपी मायासे अपना सुख चारदिनके आयुर्दायका उत्तम जानते हैं व मायारूपीजालमें लपटनेसे बहुतसे दुःखपाकर पीछे पछताते हैं ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजी का देवहूती को तीनतरहपर ज्ञान समझावना ॥

कपिलदेवजी बोले हेमाता हमने तुमसे स्त्री व द्रव्य दोनों को बुराकहा सो तुम्हारे मनमें इसबातका सन्देहहुआहोगा कि संसारमें स्त्रीसे सबजीवोंकी उत्पत्ति होकरद्रव्यसे अनेक तरहका सुखप्राप्तहोताहै कदाचित् इनदोनोंको छोड़दें तो संसारीकाम किसतरह चले इसका हाल मैं तुमसे कहताहूं सुनो हमने द्रव्य व स्त्रीको छोड़देना गृहस्थाश्रमके वास्ते नहींकहाहै जो लोग गृहस्थीकर परमेश्वरके नामपर साधु व बैरागी व संन्यासी होनेके उपरांत बन या तीर्थोंमें रहकर जन्म अपना बीच स्मरण व ध्यान परमेश्वर के बिताते हैं उनलोगोंको द्रव्य व स्त्रीका संग नकरना चाहिये व जो मनुष्य गृहस्थाश्रम व अपनेबर्ण में रहकर परमेश्वरका भजनकरके भवसागरपार उतराचाहै वह अपनी बिवाहिता स्त्रीसे रूपवती या कुरूपा जैसी मिले प्रीतिरखकर दूसरीनारीका प्रसंग न करे व दूसरी स्त्री मिलनेवास्ते चाहना न रखकर जितनाधन थोड़ा या बहुत परमेश्वर उसको देवै उतनेमें अपना परिवार पालनकरके अधर्म व पापकी कौड़ीपर इच्छा न रक्खे व गृहस्थको उचितहै कि नित्यदेवकर्म व पितृकर्म व ठाकुरकी पूजा व सेवाकरनेकेउपरांत उनको भोगलगाकर भोजन किया करै व कथा व कीर्त्तन व लीला अवतार धारणकरने परमेश्वरकी सुनकर उसमें ध्यान अपना लगायेरहै व यथाशक्ति साधु व सन्त व बैरागी व ब्राह्मणकी सुधि भोजन व बस्त्रसे लियाकरै व जो काम उत्तम यज्ञ व तप व

दान व ब्रतआदिक करै उसका फल परमेश्वरके नामपर अर्पणकरदेवै व अपने कुल परिवारके लोगोंको ऐसा जानता रहै कि संसारमें यह सब मेरेवास्ते पैरकी बेड़ीसमान हैं मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो इनके फंदेसे छूटसकूं इस जालसे छुड़ानेवाले नारायणजी हैं इसतरह का विचार हृदय में रखकर ऊपरसे उनकी पालना कियाकरै गृहस्थ को मन विरक्त रखना चाहिये व वैरागी व संन्यासीकेवास्ते संसारी सुखका त्याग करना उचितहै व हरिभक्त गृहस्थके लक्षण हम तुमसे कहते हैं सुनो जिसतरह पानी में कमलकाफूल जलसे पृथक् रहताहै उसीतरह हरिभक्त गृहस्थभी प्रत्यक्षमें गृहस्थीके बीचरहकर अपनामन संसारीमायासे विरक्तरक्खें व मनका बीच ध्यान परमेश्वरके लगायेरहें तो गृहस्थभी मरनेउपरान्त सूर्य्यमण्डलमें होकर बैकुण्ठकोजाते हैं व अज्ञान गृहस्थोंका लक्षणसुनो वहलोग देवता व पितृ व पूजा व सेवा व दान व पुण्य कुछ न जानकर परमेश्वरकेभजन व स्मरण व कथा व कीर्त्तनमेंप्रीति नहींरखते केवल अपना परिवारपालने व इन्द्रियोंको सुखदेनेमें जन्मअपना बितातेहैं पर बिनाज्ञान व भजन व भक्ति परमेश्वरके उनको कुछ सुख व आनन्द प्राप्त नहींहोता वहलोग मरनेकेउपरान्त चन्द्रमण्डलमें होकर पितृलोकको जाते हैं कुछदिन वहांरहके फिर संसारमें जन्मलेकर अपनेकर्मोंका फलभोगते हैं व उत्तरायणसूर्य्य शुक्लपक्षमें दिनकेसमय मरनेवालामनुष्य सूर्य्यमण्डलमेंहोकर बैकुण्ठकोजाताहै व दक्षिणायनसूर्य्य कृष्णपक्षमें रात्रिकेसमय मरनेवालेमनुष्य चन्द्रमण्डलकी राहसे देवलोकमें जाते हैं व वहांकासुख अपने कर्म्मानुसार भोगकर उनको फिर संसारमें जन्मलेनापड़ता है व पापीमनुष्य नरकमें रहनेउपरान्त चौरासीलाखयोनिमें जन्मपाकर दुःखभोगकरते हैं जबतक मनुष्यचाहना व इन्द्रियोंका सुख नहींछोड़ता तबतक उसकाशरीर अँगूठेकेप्रमाण बनारहकर आवागमनमें फँसारहता है व मुक्तहोजानेसे वहशरीर उसका छूटकर फिर संसारमें जन्म नहींलेता व हे माता सिवायइसके और एकहाल मुक्तहोनेका कहताहूं सुनो मेरीराजसीभक्ति करनेवालेमनुष्य कईजन्ममें मुक्तहोते हैं व सात्त्विकीभक्ति करनेवाला मरनेउपरान्त पहिले ब्रह्मलोकमें जाताहै अवधिबीते वहांसेगिरके दूसरेजन्ममें मुक्तिपावताहै व निर्गुणभक्तिकरनेवालेमनुष्य तन छोड़नेउपरान्त सीधे बैकुण्ठधामको चलेजाते हैं सिवायइसके और तीनराह मुक्तहोनेकी हैं सुनो जो मनुष्य अपने वर्णानुसार जैसा वेदशास्त्रमें सबवर्णोंका धर्म्म लिखा है कर्म्मकरके बुरेकामोंसे न्यारारहै दूसरे जो कोई परमेश्वरकी पूजा व स्मरण साथप्रेमके करै तीसरे जो मनुष्य परमेश्वरका चमत्कार सबजीवोंमें एकसा देखकर किसीकेसाथ शत्रुता न रक्खे तो वहलोगभी मुक्तपदवीको पहुंचते हैं जिसतरह ऊखकेरससे मिश्री व शक्कर व गुड़बनकर जड़तीनोंकी ऊखहै उसीतरह भक्ति व पूजा व योगादिकके पृथक् २ राहहोकर ठिकाना व पहुंचने सबराहोंका नारायणजीके चरण हैं सो हे माता गृहस्थ या ब्रह्मचारी या बानप्रस्थ या संन्यासी या योगी या यती कोईहो जिन्हें परमेश्वरकेचरणों

में प्रीतिहै वहमुक्तिको पहुंचते हैं व जो मनुष्य परमेश्वरसे प्रेम नहींरखता उसको पिछले जन्मोंकापाप उदय जाननाचाहिये कि अमृतछोड़कर खारापानी समुद्रकापीके उसमें मीठास्वाद ढूंढ़ताहै जिसतरह शूकरको घी व चीनीखिलाओ तो उसे अच्छा नहींमालूम होकर बिष्ठा प्यारालगताहै उसीतरह जिसजगह परमेश्वरकी कथा व कीर्त्तन हरिभक्त लोग कहते हैं उस जगहसे वहअधर्मी उठकर जहांराग व रङ्ग व चुगुली व कुकर्म करने-वालोंकी संगतिरहती है वहां आनन्दसे मनलगाकर बैठता है ॥

दो० तुलसी पिछले पापसे हरिचर्चा न स्वहाय ।
जैसे ज्वरके जोरमें भोजन की रुचिजाय ॥

सो हे माता मेरेचरणोंमें प्रीतिकरनेवालेका चित्त संसारके बुरेकामोंसे जल्दीविरक्त होकर उसे अपनाभला व बुरा दिखलाईदेताहै और मैंने यह सबज्ञान जो तुमसे कहा इसको अच्छीतरह यादरखकर कभी मतभूलना इस ज्ञानको स्मरण रखनेसे तुम्हें यह विमान छोड़ने व कर्दमजी व मेरेवियोगका दुःख नहींरहेगा व कलियुगबासी लोग यह ज्ञानसुनकर उसीके अनुसार करनेसे भवसागरपार उतरजावैंगे व इसज्ञानके प्रताप से तुमभी मुक्तिपर पहुंचोगी ॥

दो० इसी ज्ञान उपदेश को कहै सुनै चितलाय ।
भवसागर से पार ह्वै अन्तमिलै यदुराय ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

कपिलदेवजीका पूर्व्व दिशामें जाना व देवहूतीका सरस्वती किनारे बैठकरमुक्तहोना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे बिदुर यहसबज्ञान देवहूतीने सुनकर कपिलदेवजीको दंडवत् करके बिनतीकी हे दीनानाथ तुम्हारे ज्ञानउपदेशके प्रतापसे मुझको संसारीमाया व मोह कर्दमजीके वियोगका दुःख सबछूटगया व आपऐसे जगत् उत्पन्नकरनेवाले त्रि-लोकीनाथनारायणने मेरेगर्भमें वासकिया इसलिये मेराअज्ञान छूटकर अबमुझे गृहस्थी की इच्छा नहींरही महाप्रलयहोनेके समय ब्रह्मादिक देवता तुम्हारी मायामें समाकर नाशहोजाते हैं औ वहमाया तुम्हारेरूपमें मिलकर रहती है व आप अविनाशीपुरुष बालकरूप अँगूठेप्रमाणहोकर अकेले बरगदकेपत्तेपर क्षीरसमुद्रमें शयनकरतेहो व अवतार धारणकरना तुम्हारा केवल अपनीइच्छासेहै आप जिससमय जैसारूपचाहैं वैसा स्वरूप धारणकरलेनेसक्त हैं जिसतरहपहिले आपने बाराह व मत्स्य व कच्छप व नृसिंह व बाम-नादिक अवतार अपनीइच्छासे धारणकिये व अपनास्वरूप व लीला हरिभक्तोंको दि-खलाने व सुखदेनेउपरान्त बैकुण्ठको चलेगयेथे उसीतरह अबभी तुमने कृपा व दया करके मेरेगर्भसे उत्पन्नहोकर मुझे ज्ञानसिखलाया व ज्ञानरूपी औषधदेकर संसाररूपी

भारीरोग मेराछुटाया इतनीकथा सुनानेउपरान्त मैत्रेयऋषीश्वरनेकहा हे बिदुर यहसब स्तुति देवहूतीसेसुनकर कपिलदेवजीबोले हे माता तुमइस सूर्यरूपीज्ञानको बहुतउत्तम जानकर सदायादरखना व सबकिसीसे मतकहना जिसतरह सूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकार छूट जाताहै उसीतरह यहज्ञान यादरखनेसे मनुष्यकीअज्ञानता छूटजावेगी व गुरु व ब्राह्मण व साधु व बैष्णव व हरिभक्तोंको यहज्ञानसुनाकर अधर्मी व मूर्ख व चोर व लोभी व मिथ्यावादी व चुगुलसे मतकहना व जो मनुष्य गुरु और परमेश्वरसे बिमुखरहकर दूसरेका उपकार न माने व गुरुकीबातपर बिश्वास न रक्खै उसकोभी यहज्ञानसुनाना न चाहिये अधर्मी व मूर्खमनुष्योंको ज्ञानसिखलाना कैसाहोताहै जैसेकोई रसायन सोना बनानेकीराख पानीमें डालदेवै यहबातकहकर कपिलदेवजीबोले कि हे माता अबमैं गंगासागरको जाताहूं तुझे जिसवस्तुकी चाहनाहो सो मांगले यहबचनसुनकर देवहूतीने विनयकिया कि महाराज जिसके तुम्हारेसदृश त्रिलोकीनाथ पुत्रउत्पन्नहो उसको फिर किसवस्तुकी इच्छारहेगी यह बचन अपनीमाताका सुनकर कपिलदेवमुनि पूर्व्वदिशामें चलेगये व देवहूतीने मन अपना संसारीमायासे बिरक्तकरके बिमानादिकको उसीजगह छोड़दिया व सरस्वती किनारे बैठकर ध्यानचरण व स्मरणनामनारायणजीका अपनेसच्चेमनसे करनेलगी सो ध्यानकरते२ शरीर उसका जलकेसमान बहकर सरस्वतीनदीमें मिलगया व चैतन्य आत्मा मुक्तिपदवी पर पहुंचा व जब कपिलदेवजी समुद्रकिनारे गंगासागरमेंपहुंचे तब समुद्रने विधिपूर्व्वक उनकी पूजा व परिक्रमा व स्तुतिकरने उपरान्त उन्हें बैठनेवास्ते आसनदिया सो वह इसवास्ते वहां बैठकर योगाभ्यासकरनेलगे जिसमें कलियुगवासी लोगोंको जो योग व तपकरने नहींसकैंगे मेरेदर्शनकरनेसे योगाभ्यासकरनेका फलप्राप्तहो सो वहस्थान बैठने कपिलदेवमुनिका गंगासागरमें कलकत्ते नगरकेपास अबतक वर्त्तमानहै बहुतलोग उनका दर्शनकरनेवास्ते कलकत्तेकी राहसे वहांजातेहैं व कपिलदेवजीने वहां बैठकर जो शुक-नामादिक ऋषीश्वरोंको सांख्ययोग पढ़ाया इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जो सांख्ययोग ज्ञान कपिलदेवमुनिने देवहूतीसे वर्णनकियाथा वही ज्ञान मैंने तुमको सुनाया व तत्त्व सांख्ययोगका यहीहै कि आत्माको अविनाशी व अपनेशरीरका नाशसमझकर मन अपनासंसारीमायामें न लगावै व मैत्रेयजीने बिदुरसेकहा मैंने कपिल-देव अवतारकीकथा तुमको सुनाई जो कोई इसको सच्चेमनसेकहै व सुनै वह मनुष्यसंसार में वांछित फलपाकर अन्तसमय मुक्तिपदवी पावैगा ॥

दो० कर्दमहूते अतिसरस करतजीव अभिमान ।
तजत न टूटी झोपड़ी कर्दम तज्यो बिमान ॥

चौथा स्कन्ध ॥

सतीका बीच यज्ञ दक्षप्रजापतिके तनत्यागकरना व पार्वतीनामसे हिमाचल
पर्व्वतके यहांजन्मलेना व ध्रुवभक्त व राजापृथुकीकथा ॥

पहिला अध्याय ॥

अत्रिमुनिका उत्पन्नहोना व तपकरना व अत्रिमुनिके यहां चन्द्रमा
व दत्तात्रेय व दुर्वासाका जन्मलेना ॥

दो० नरनारायण गिरापति व्यासदेव शुकदेव ।
बार बार बिनवौं तुम्हैं हरोबिघ्न बुधिदेव ॥

मैत्रेयऋषीश्वरनेकहा हे बिदुर अब हम संसार उत्पन्नहोनेका हालकहतेहैं सुनो ब्रह्माजी से मरीचिनाम बेटा उत्पन्नहुआ उसके कश्यप व कलानाम दोपुत्र उत्पन्नहोकर उसके आगे बहुतसन्तानहुई जिनकाहाल छठेस्कन्धमें आवेगा अब मैं स्वायम्भुवमनुके सन्तान का हाल कहताहूं सुनो राजास्वायम्भुवमनुके देवहूतीआदि तीनकन्या व उत्तानपाद व प्रियव्रतनाम दोबेटेहुये सो देवहूतीका बिवाह कर्दमऋषीश्वरसे हुआथा जिनके यहांक- पिलदेव भगवान्ने अवतारलिया उसकाहाल मैं वर्णन करचुका अबदोनों बेटियोंकाहाल सुनो एककन्याका बिवाह दक्षप्रजापतिसे व दूसरीबेटीका बिवाह रुचिप्रजापतिसे जब स्वायम्भुवमनुने करदिया तब रुचिप्रजापतिके उसकन्यासे अत्रिनाम बेटा उत्पन्नहुआ व अत्रिसे तीनबेटेहुये इतनीकथा सुनकर बिदुरजीने मैत्रेयऋषीश्वरसेकहा महाराज तीनों बेटा उत्पन्नहोनेका हाल वर्णनकीजिये तब मैत्रेयजी बोले हे बिदुर अत्रिनेभी ब्रह्माजीकी आज्ञासे संसार उत्पन्नकरनेकी इच्छारखकर मनमें ऐसा बिचारकिया कि मेरेपुत्रकोभी संसारीजीव उत्पन्नकरनाहोगा इसवास्ते पहिले परमेश्वरका तपकरके पीछेसे सन्तान उत्पन्नकरैं जिसमें वह धर्मात्माहोवें ऐसाबिचारकर अत्रिमुनिने अनसूया अपनी स्त्रीसमेत तपकरना आरम्भकिया पर नाम किसी देवता का न लेकर कर्त्ताकहके तपकरतेथे जब सौ वर्ष तपकरते बीतगये तब ब्रह्मा व विष्णु व महादेवजी तीनोंदेवतोंने जायकर अत्रिमुनि को दर्शनदिया सो मुनीश्वरने तीनोंदेवतोंकी पूजा व स्तुतिकरके कहा महाराज मैंने एक देवताका तपकियाथा आप तीनदेवतोंने किसवास्ते मुझे दर्शनदिया अब मैं अपनी कामना किससे मांगूं यहबचन सुनकर विष्णुने अत्रिमुनिको उत्तरदिया कि तू तप समय नामकर्त्ताका लेताथा सो हमतीनों मनुष्यकर्त्ता होकर एक एककाम उत्पत्ति व

पालन व नाश जगत्का करते हैं व हमलोगोंने आदिज्योति निरंकारकी महिमासे जन्मपायाहै और यह निर्गुण निरंकार कुछरूप व रेखा न रखकर किसीको अपनादर्शन नहीं देते व उन्हें कोई आंखसे देखन नहींसक्ता परसबकाम जगत्का उनकी आज्ञानुसार होकर हमलोग अपने २ कामपर जिसकावर्णन ऊपरहोचुकाहै उनकी ओरसे वर्त्तमानहै जो तुझे इच्छाहो सो हमलोगोंसे बरदानमांग तुझको देवेंगे यह बचन सुनतेही अत्रिमुनिने दण्डवत्करके उनसे कहा महाराज मैं पुत्र भाग्यवान् व धर्मात्मा चाहताहूं तब ब्रह्मा व विष्णु व महादेवजी अत्रिमुनिको उनकी इच्छापूर्वक बरदानदेकर अपने २ लोकमें चलेगये व अत्रिमुनि के यहां दत्तात्रेय विष्णुभगवान्की कृपा व दुर्वासा महादेव के आशीर्वाद व चन्द्रमा ब्रह्माकीदयासे तीनोंपुत्रोंने जन्मलिया उसमें दुर्वासा बड़ेक्रोधी आंखवाले उत्पन्नहुये सो दुर्वासा व चन्द्रमा व दत्तात्रेयसे बहुत सन्तानहुई कि उनका नाम संस्कृतभागवत में लिखाहै इतनी कथासुनाकर मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे विदुर हाल सन्तान दूसरीकन्या स्वायम्भुवमनुका भी जो रुचिप्रजापतिसे विवाहीगई थी तुमको सुनाया अब तीसरीबेटी जो दक्षप्रजापतिसे विवाहीथी उसके सन्तानकाहाल सुनो दक्षप्रजापतिके उसस्त्रीसे साठ लड़की उत्पन्नहोकर उनमें सतीनाम कन्याका बिवाह महादेवजीसे हुआथा ॥

दूसरा अध्याय ॥

दक्षप्रजापति का महादेवजीसे बुरामानना व महादेवजीको शापदेना ॥

बिदुरने इतनीकथा सुनकर मैत्रेयऋषीश्वरसे पूछा कि महाराज सतीजीने अपनातन किसतरह त्यागकियाथा उसकाहाल वर्णन कीजिये मैत्रेयऋषीश्वरने कहा कि सतीजी का बिवाहहोने उपरान्त एकदिन महादेव बहुतसे देवता व ऋषीश्वरोंसमेत बीचसभा यज्ञकरने ब्रह्माजीके बैठेथे उससमय दक्षप्रजापति वहांपर आये सो सबकिसीने उठकर उन्हें बड़ेआदरसे बैठाला पर उससमय शिवजी जो अपनी आंख बन्द कियेहुये बीच ध्यान परमेश्वरके मग्नथे नहींउठे व उन्होंने दक्षप्रजापतिको दण्डवत् भी नहींकिया इसकारण दक्षने क्रोधकरके कहा इनको लोग ज्ञानी व तपस्वी व सत्यबादी जो कहते हैं यहबात झूठहोकर इनकानाम वृथा देवतोंने महादेव रक्खाहै हमने भूलकर ब्रह्माजीके कहनेसे अपनीबेटीका बिवाह महादेवसे जो एक लोकपालके तुल्यहैं किया ये इसबिवाह योग्यनहींथे मेरीकन्या बिवाहनेसे देवतोंमें इनकी प्रतिष्ठा अधिकहोकर इन्हें ऐसाअभिमान उत्पन्नहुआ कि मेरे दामादहोकर मुझे दण्डवत्भी नहीं करते मैंने सतीकन्या महासुन्दरी व मृगलोचनी इसतरहपर महादेव भूतोंके राजाको जो दिनरात श्मशानपरबैठे रहतेहैं बिवाहदिया जिसतरह कोईमनुष्य शूद्रको वेदपढ़ावै यहदुर्बचन कहने उपरान्त दक्षप्रजापतिने उसीसभामें खड़ेहोकर ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरोंके सामने शिवजी

को ऐसाशापदिया कि आजसे कोई यज्ञमें महादेवका भाग न निकाले शिवजी ऐसाशाप सुनने परभी कुछ उत्तर न देकर उसीतरह चुपचाप बीचध्यान परमेश्वरके बैठेरहे जब दक्ष ऐसा शापदेकर अपने घरकोचले तब नन्दीगणने बिचारा कि देखो शिवशंकर भोलानाथ हमारे स्वामीको बिनाअपराध इसब्राह्मणने शापदियाहै इसलिये मैंभी ब्राह्मण को शापदूंगा यहबात बिचारके नन्दीगणने सब सभावालोंको सुनाकर कहा कि हे दक्ष मैं तुझे व सब ब्राह्मणोंको शापदेताहूं कि ब्राह्मणलोग वेद व पुराण पढ़नेपर भी अन्त अवस्थाका शोच न रक्खें व अपनी पूजा व पाठ व तप व जपकाफल मनुष्योंकेहाथ पैसा व रुपयालेकर बेंचें व बिना प्रणामकिये सबको आशिषदेवें व सबजगह भोजन करके धर्म्म व अधर्म्मका विचार न करैं यहशाप नन्दीगणका सुनकर भृगुऋषीश्वरने जो उससभामें बैठेथे कहा कि हे नन्दीगण तुमने बीचबदले अपराधकरने दक्षप्रजापति एक ब्राह्मणके सबब्राह्मणोंको व्यर्थशापदिया इसलिये मैंभी महादेवकेभक्त व सेवकोंको शापदेताहूं कि वहलोग मद्यपीकर परलोकका डर न रक्खें व अपने शरीरपर राखमल कर कानोंमें बड़ा बड़ा छेदकरावें व महादेवजीके समान योगियोंकावेष बनावें व पूजा व पाठकरनेका फल उन्हें प्राप्त न होवे जब यहशाप होचुका तब दक्षप्रजापति अपने स्थानपरआये व महादेवजी भी यहझगड़ा नन्दीगण व भृगुऋषीश्वरका देखतेही नन्दी बैलपर चढ़कर कैलासको चलेगये व समाधिलगाकर परमेश्वरका ध्यानकरनेलगे व सब देवता व ऋषीश्वरादिक भी उससभामें यहहाल देखनेसे उदास व दुःखितहोकर अपने २ घरचलेगये व दक्षप्रजापतिने अपनेघर पहुंचकर यह बिचारकिया कि मैंने देवता व ब्राह्मणोंकी सभामें ऐसाशापदिया कि कोई महादेवका भाग यज्ञमें न निकाले पर इस बातको पहिले मुझे आरम्भकरना चाहिये जब हम अपनेघर यज्ञकरके सबदेवता व ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंको बुलाकर महादेवकाभाग यज्ञमें न देवेंगे तब अधिक अपमान होकर कोईमनुष्य भी उनकाभाग यज्ञमें नहीं निकालेगा ऐसा बिचारकर दक्षप्रजापति ने वास्ते बढ़नेतेज व प्रकाश अपनेयज्ञकी तैयारीकरके सबदेवता व दैत्य व ऋषीश्वर व तपस्वी व गन्धर्व्व व किन्नरादिकको नेवता भेजदिया ॥

तीसरा अध्याय ॥

सब देवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व्वादिक का अपने अपने विमानोंपर चढ़कर दक्ष-प्रजापतिके यज्ञमें जाना व सतीजीका कैलासपर्व्वतपरसे देखना ॥

मैत्रेयजी बोले हे बिदुर जब दक्षप्रजापतिके नेवताभेजने से सबदेवता व दैत्य व ऋषीश्वर व मुनि व ब्राह्मण व गन्धर्व्व व किन्नरादि अपनी २ स्त्रियोंसमेत अच्छा २ गहना व कपड़ा पहिरने व तैयारी करने उपरान्त उत्तम २ विमानों पर सवार होकर हँसते व खेलते व गाते व बजाते उनकेयज्ञमें नेवता करने चले तब सतीजीने कैलास पर्व्वत पर

महादेवजीके पास बैठीहुई उनके जानेका शब्द सुनकर लोगोंसे पूछा कि आज आकाश-मार्ग में भीड़ दिखलाई देनेका क्याकारण है यहबात सुनकर महादेवजी के गण बोले दक्षप्रजापति तुम्हारे पिताके यहांयज्ञहै इसलिये सबदेवता व ऋषीश्वरादिक अपनी २ स्त्रियोंसमेत वहांनेवता करनेजातेहैं ऐसा सुनतेही सतीजीने मनमेंउदासहोकर कहा कि देखो मेरेबापने अपनेयज्ञमें और २ लोगोंको नेवताभेजा व मुझे व महादेवजीको नहीं बुलाकर मेराअपमानकिया कदाचित् कामकाजके भीड़में भूलगयेहोंगे सो माता व पिता व गुरु व मित्रकेघर उत्सवहो तो बिनाबुलायेभी वहांजाकर काम व टहल करनाचाहिये इसमें कुछ अपमाननहींहोता इसलिये वहांजाकर सबसे भेंटकरके वह आनन्ददेखना उचित है व मेरे न जानेसे देवतादिककी स्त्रियां वहां इकट्ठीहोकर आपसमेंकहैंगी क्याभेदहै जो दक्षप्रजापतिने सतीको नहींबुलाया इसमें हमारेमाता व पिताकी नामधराई व मेराअप-मानहोकर मरतेसमयतक इसबातका पछतावा मनमेंरहजावेगा ऐसाबिचारकर सतीने महादेवजीसे विनयकिया कि हे महाप्रभो मेरेपिताके यज्ञमें सबदेवताआदिक अपनी २ स्त्रियां साथलेकर नेवताकरनेजातेहैं कदाचित् मेरेमाता व पिताने कामकाजके भीड़में भूलकर आपको व मुझे नहींबुलाया सो मेरा व उनका एकवास्ताहोकर बिनाबुलाये जानेमें कुछ लज्जानहीं है श्वशुरको पिता व गुरुकेसमान जानकर बिनाबुलायेभी उस यज्ञमें जानाउचितहै वहांपर मेरीसबबहिनें अपने २ पतिकेसाथ आवेंगी मुझे बहुतदिनसे यह इच्छाथी कि कोईकाम उत्सवका मेरेबापके यहांहोवे तो मैंभी तुम्हारेसाथ वहांजाऊं सो आपदयाकरके मुझे अपनेसाथ लियेहुये वहां चलिये सबसे भेंटहोकर परमआनन्द दिखलाईदेगा यहबचन सतीका सुनतेही महादेवजीने सबहाल शत्रुता दक्षप्रजापतिका सुनाकरकहा हे सती तेरापिता मुझसे शत्रुतारखताहै कदाचित् वह मुझसे बुरा न मानता तो बिनाबुलायेभी हमजाते जो बिनाबुलाये उसके यहांजाऊं और वह मुझे देखकर न आदरकरे व अपनामुँह फेरलेवे या कोई दुर्बचनकहै तो इसमें अच्छानहीं किसवास्ते कि तीर व तलवारके घाव मलहमसे भरजातेहैं पर जिह्वाकाघाव जो किसीके दुर्बचनकहनेसे कलेजेमें पड़जाताहै वह किसीतरह अच्छानहींहोता उसकी औषधमिलना दुर्घटहै इस-लिये मैं तेरेपिताके यज्ञमें नहींजाऊंगा जब शिवजीनेजाना अंगीकारनहींकिया तबसती जी विनयपूर्वक बोलीं कि आपनहींजाते तो मुझको आज्ञादीजिये मेरेवास्ते अपनेमाता पिताकेघर बिनाबुलाये जानेमें कुछ लज्जानहीं है यहबचन सुनकर महादेवजीनेकहा हे सती दक्षप्रजापति अपनेराज्य व धनकेमदमें गर्वितहोकर मेरीशत्रुतासे तेराभी अप-मानकरेगा तब तुम बहुतसा दुःखउठावोगी व तेरानिरादरहोनेसे मुझभी क्रोध उत्पन्नहोगा मेरेजानमें तेराजानाभी किसीतरह उचितनहीं है नारायणजीकी इच्छासे सतीने उनके समझानेपरभी न मानकर फिर शिवजीसेकहा मेरेयहां न जानेमें अपनी साठिबहिनोंके निकट मेराअनादर होकर वहलोग मुझको तानामारैंगी इसलिये मेरेबिनागये नहीं बन

पड़ती मुझे आज्ञादेव तौ जल्दीजाऊं शिवजीने ऐसाबचन सुनतेही मनमें विचारकिया देखो सतीने आजतक कोईकाम बिनाआज्ञामेरी नहींकियाथा आज यह जानेवास्ते ऐसा हठकरके मेराकहना नहींमानती इससेमुझे मालूमहोताहै इसकेवास्ते वहांजानेमें अच्छा न होगा होनहार प्रबलहोकर परमेश्वरकी इच्छामें किसीका बश कुछनहींचलता ऐसा बिचारकर महादेवजीने सतीसेकहा कि तू जान चलीजा तेरीखुशी इसकाफल देखेगी ॥

चौथा अध्याय ॥

सतीका अपनेपिताके घरजाना व तन अपना उसीयज्ञमें त्यागकरना ॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर जब शिवजीके मनाकरनेपरभी अपनेपिताके स्थानपर चली तब महादेवजीने कईगण अपने उसकेसाथ इसबिचारसे करदिये कि देखें वहां क्यादशा होतीहै व सतीजीका जो खिलौना व पिटारीआदिकथा उसेभीगणोंके साथभेजदिया जिसमेंसतीके तनछोड़ने उपरांत वह सबबस्तु देखकर मुझेदुःख न होवै जब सती बीच यज्ञ दक्षप्रजापतिके पहुँची तब वह सतीको देखतेही मुँह अपना फेरकर कुछ उससे नहीं बोला यहदशा अपनेबापकी देखकर सती बड़ेशोचसे मनमेंकहनेलगी कि देखो मैंने बहुत बुराकामकिया जो बिनाआज्ञा महादेवजीके यहांआई जैसा अपनेपतिका कहना नहीं माना वैसाफलआंखोंसे देखा अबकोईऐसा बहाना व कारणहोजावै जिसमेंजल्दी यहांसे फिर शिवजीकेपास चलीजाऊं सिवायमाता सतीजीके और सबस्त्रियां जो वहांयज्ञमें आईथीं दक्षप्रजापतिके बुरामाननेसे सतीजीकेसाथ प्रीतिपूर्व्वक नहींबोलीं सती यहहाल देख दुःखसागरमें डूबीहुई बीचयज्ञशालाके बैठीथी जबआहुतिदेनेका समयआया और यज्ञकरानेवालोंने दक्षसे वास्तेआहुतिदेने महादेवजीके नामपरपूंछा तबदक्षप्रजापतिने शिवजीको दुर्व्वचनकहकर उनसेकहा हमनेदेवता व ऋषीश्वरोंकी सभामें महादेवको शापदियाहै कि कोईयज्ञमें उनकाभाग न निकाले इसवास्ते तुमलोग महादेवकेनामपर आहुतिमतदेव सतीजी यहकठोर बचनसुनने व नहींदेखने भागाशिवजीका यज्ञशालाकी दक्षिणदिशामें बीचक्रोधकेभरगई जबउनसे वहक्रोध रोकानहींगया तबउन्होंने दक्षसे कहा हे पिताअज्ञान तुम शिवजीकी बड़ाई व महिमाको नहींजानते वहसबदेवतोंमें श्रेष्ठ होकर किसीकेसाथ शत्रुतानहींरखते तुमव्यर्थ अपनीअज्ञानतासे बिनासमझे उनकेसाथ बैररखतेहो महात्मालोग गुणकोलेतेहैं अवगुणकीतरफ नहींदेखते व शिवजी सबगुणोंसे भरेहुये केवल जगत्में लोगोंको दिखलानेवास्ते अपनारूप भयानक बनायेरहतेहैं उसको तुमनेदेखा व उनकेगुणोंको नहींजाना सनकादिक व नारदादि उनकेचरणोंका ध्यान अपनेहृदयमें रखतेहैं तुम्हारीपदवी ऐसीनहींहै जो उनसेबराबरी करनेसको तुमउन्हें जो तीनोंलोकके जीवोंमेंश्रेष्ठहैं बीचसभाके बैठेहुये दुर्व्वचनकहकर उनकाअनादर करतेहो ऐसा न चाहिये और तुम्हेंक्याकहूं तुममेरेपिताहो परमैंतुम्हारेआगे इसीक्रोधमें यहतन

अपना जोतुमसे उत्पन्नहुआथा त्यागदेतीहूं जिसमेंतुम्हारे ऐसेअधर्मी व अज्ञानकेसाथ शिवजीका नाता न रहे तुम्हेंपीछेसे उनकेसाथ व्यर्थशत्रुताई करनेका हाल मालूम होगा ऐसाबचन कहनेउपरान्त सतीने उसीजगह उत्तरमुँह बैठकर तनअपना योगाभ्यासके अग्निसे जलादिया जब शिवजीकेगणोंने जो साथमें आयेथे यहहाल सतीका देखा तब क्रोधकरके अपने २ शस्त्रलेकर चाहा कि जो लोग यहां हैं उन्हें मारपीट करके यज्ञ दक्षप्रजापतिका बिध्वंसकरडालें उससमय भृगुऋषीश्वरने जो उससभामें बैठेथे उनगणोंकी इच्छाजानकर यज्ञकी रक्षाकरनेवास्ते जैसे कुछमन्त्रपढ़के अग्निकुण्ड में आहुतिडाला वैसे अग्निपुरुष व बैताल व बीरभद्र तीनजने उसकुण्डसे निकलकर बोले कि हे ऋषीश्वरमहाराज जो आज्ञाहो सो पालनकरें तब भृगुऋषीश्वरनेकहा कि महादेवकेगण यहयज्ञ भ्रष्टकरने चाहते हैं सो तुमलोग उन्हें बाहरनिकालदो यहबात सुनतेही उनतीनोंने महादेवजीकेगणों को धक्कादेकर यज्ञशालासे बाहरनिकालदिया ॥

पांचवां अध्याय ॥

नारदमुनिका महादेवजीके पासआना व सतीजीके तनत्याग करने व गणोंके निकालेजाने का हाल कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसे कहा जिससमय सतीजीने अपनातन त्यागकिया व महादेवजी के गण उससभासे निकालेगये उसीसमय नारदमुनि यहसबहाल देखतेहुये शिवजीके पास कैलासपर्व्वतपरपहुंचे शिवशंकरने नारदमुनिको देखतेही दण्डवत्करनेउपरान्त बड़े आदरसे बैठालकर पूंछा कहोमुनिनाथ कहांसेआतेहो नारदजीबोले कि महाराज आप को यहबात मालूमहै या नहीं आजसतीने बीचयज्ञ दक्षप्रजापतिके तुम्हारी निन्दासुनने से तनअपना छोड़दिया व भृगुऋषीश्वरके मन्त्रपढ़नेसे आपके गणलोगभी निरादर होकर उससभासे निकालेगये इसका कुछउपाय करनाचाहिये ऐसाकहकर नारदमुनि चलेगये व शिवजीने सतीकामरना सुनतेही क्रोधवन्तहोकर अपनीजटाके बालनोचने उपरान्त जैसे पृथ्वीपर पटका वैसे एकमनुष्य बीरभद्रनाम महाबली उसजटासे उत्पन्न होकर हाथजोड़केबोला मुझे जो आज्ञाहो सो करूं शिवजीने उसेदेखतेही कहा तूअभी बहुतजल्द बीचयज्ञ दक्षप्रजापतिके चलाजा व शिरउसका काटनेउपरान्त अग्निकुण्डमें डालकर जो लोग उससभामें बैठेहों उन्हें वहांसे बाहर निकालदे यहवचन सुनतेही बीरभद्र जिसकाशरीर पहाड़केसमान बड़ाथा त्रिशूलबांधेहुये सेना भूत व प्रेतकी साथ लेकर वहांसे चला व क्षणभरमें बीचयज्ञशालाके पहुंचा व शिरदक्षप्रजापतिका काटकर अग्निकुण्डमें डालदिया व भृगुऋषीश्वरकी डाढ़ीनोचडाली व दूसरेदेवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व्व व ब्राह्मण व किन्नर आदि जो उससभामेंथे उन्हें मारपीट करके सबका अंगभंग करडाला व वहांसे लोगोंको बाहरनिकालनेउपरान्त स्थान यज्ञशालाका तोड़-

कर साकल्यआदिक सामग्रीयज्ञकी फेंकदी जब शिरकाटनेपरभी प्राण दक्षप्रजापतिका नहींनिकला तब मारिमूकोंके उसेमारडाला उससमय जितने स्त्री व पुरुष दक्षकेयहां न्योताकरनेआयेथे सब दुःखितहोकर भागे व आपसमें कहनेलगे देखो दक्ष महामूर्खने महादेवजी महात्मापुरुषका जो सब देवतोंमें श्रेष्ठहैं जैसा अपमानकिया वैसा फलपाया इसीतरह सब छोटेबड़े दुःखपाकर दक्षको गालियांदेनेलगे व जब बीरभद्रने यज्ञबिध्वंस करने उपरान्त शिवजीके पासआनकर सब हालकहा तब भोलानाथने मरनासतीका ऊपरइच्छापरमेश्वरके समझकर क्रोधअपना क्षमाकिया और वह आनन्दमूर्त्ति फिरप्रसन्न चित्त बैठकर अपने चेलोंको ज्ञानसिखलानेलगे विष्णुभगवान् व ब्रह्माजी अन्तर्य्यामी पहिलेसे यज्ञबिध्वंसहोनेका हालजानकर वहां नहीं गयेथे ॥

छठवां अध्याय ॥

भृगुआदि ऋषीश्वर व देवतोंका ब्रह्माजी के पासजाना व बीरभद्रका हालकहना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे बिदुर जब बीरभद्रने भृगु व देवताआदिक को मारपीट करके यज्ञशालासे बाहरनिकालदिया तब सबकिसीने रोतेहुये ब्रह्माजीके पासजाकर अपना अपना हाल उनसेकहा ब्रह्माजी उनकावृत्तान्तसुनकरबोले कि तुमलोगोंने बहुत बुराकाम किया जो यज्ञमें बैठकर शिवजीकी निन्दाअपनेकानों से सुनतेरहे व महादेव जीकाभाग यज्ञमेंसे बन्दकरके अपना २ अंश तुमलोगोंने लिया ऐसाअधर्म्म करना तुम्हें उचितनहींथा जैसाआचरण शिवजीका किया वैसाफलपाया सुनोमहादेवजी सब देवता व तीनोंलोक के जीवोंमें श्रेष्ठ व परमेश्वरतुल्यहैं मैं उनकाकुछनहींकरसक्ता तुम सबकोई मेरेसाथ उन्हींके शरणमें चलो बिनती व स्तुतिकरके तुम्हाराअपराध उनसेक्षमा कराऊं यह बचनकहनेउपरांत ब्रह्माजी सबदेवता व ऋषीश्वरों को साथलेकर कैलास पर्व्वतपरगये उसपहाड़परपत्थरकीजगह लाल व पन्ना व हीराआदिकअनेकतरहके मणि व रत्नरहकर वहपहाड़सोरहसौकोसऊंचा व बारहसौकोसके घेरमें है और वहां बरगद आदिकके बहुतवृक्षलगेरहनेसे धूपकाप्रकाश नहींहोता व सदाठंढीछाया बनीरहती है व अनेकरंगकेफूल ऐसेलगे हैं कि जिनकी सुगन्धकोसोंतक उड़ती है व अनेकप्रकारकेफल बारहोंमहीने वृक्षोंमें लगेरहकर अमृतसमान स्वाददेते हैं व वहांपर तालाब व बावली व नहर व झरनापानी के ऐसे निर्मलभरे हैं कि जिसकेदेखनेसे आंखों में तरावट आजावे व तालाब व बावलीके किनारे अच्छे २ पक्षीमहासुन्दर मीठीबोली बोलनेवाले सारस व तूती व कोकिला व मोरआदिकबैठेहुये चहचहमचाते हैं व उसजगह देवकन्या व गन्धर्व आदिआनकर जिसबस्तुकी इच्छाकरते हैं सबमनोरथउनका सिद्धहोकर वह शोभादेखने से मनउनका मोहित होजाताहै और वहलोगसतुगङ्गामें जोधारा हिमाचलपहाड़से उतर कर वहांआई है स्नानकरके आनन्दहोजाते हैं सो उसीपहाड़पर एकवृक्षबरगदका जो

चारसौकोसऊँचा व तीनसौकोसचौड़ाथा उसकेनीचे महादेवजीमृगछालापर बैठेहुये जिस समय नारदमुनि व सनकादिक अपनेचेलोंसे परमेश्वरकागुणानुबाद कहरहेथे और योग व तप व वेदादिक अपनाअपनारूपधारणकिये उनकेसामनेरहकर कोई ऐसीसामर्थ्य नहीं रखताथा जो दमभारनेसके उसीसमय ब्रह्माजी सब ऋषीश्वर व देवताओं समेत वहांपर जापहुँचे शिवजीने ब्रह्माको देखतेही दण्डवत्करके बड़े आदरभावसे जब उन्हें अपने पास बैठाला तब ब्रह्माजी शिवशङ्करको नमस्कार करनेउपरान्त उनके सामने बैठे और देवतादिक जो ब्रह्माकेसाथ गयेथे शिवजीको दण्डवत् करनेउपरान्त यथायोग्य स्थान पर चारोंतरफ बैठगये महादेवजी महात्माके मनमें कुछशोच व दुःख शत्रुता दक्षप्रजापति व तनत्यागकरने सतीका नहींरहाथा इसलिये वह सबबातको ऊपरइच्छा परमेश्वरके समझकर उससमय हरिचर्चा में ऐसे मग्नथे कि उन्हें इसबातका कुछ ध्यान नहींहुआ कि ब्रह्माजीवास्ते क्षमाकराने अपराध देवतादिकके आये हैं व बीरभद्रने ऋषीश्वर व देवतोंकोभी मारपीट कियाहै इसवास्ते वह ब्रह्माके आवनेपरभी सबकिसी से हरिचरित्र कहतेरहे तब ब्रह्माने बहुतसी स्तुति शिवजीकी कहकर उनसे बिनयकिया कि आप सबदेवतों के मालिकहैं इसलिये तुम्हारानाम महादेवहुआ सो दक्षने आपकी प्रभुताई नहीं जानकर जैसा तुम्हारा अपमान किया वैसाफलपाया सो उसके निरादर करनेसे कुछ तुम्हारीबड़ाई कम नहींहोगई जिसतरह कोई मनुष्य चन्द्रमापर थूके तो वहथूक चन्द्रमापर नहींपड़ता उसी थूकनेवालेके मुँहपर गिरताहै वहीहाल दक्षकाहुआ अबमेरे बिनय करनेसे दयालुहोकर अपराध दक्षका क्षमाकीजिये व देवता व ऋषीश्वर आदिक जो उससभामें थे बीरभद्र तुम्हारे बेटाने उनकोभी बहुतसा दुःखदिया कितनोंके पैर तोड़डाले कितनों की आंख फोड़डाली है सो वहलोगभी आपके भयसे घबड़ारहे हैं इसलिये उनको धैर्य्यदेकर ऐसा आशीर्व्वाद दीजिये कि जिसमें घायल शरीर उनका अच्छाहोकर वहलोग ज्योंकेत्यों होजावें और दक्षप्रजापति फिर तुम्हारी कृपासे जीकर यज्ञ अपना विधिपूर्व्वक सम्पूर्ण करे व सबदेवता व ऋषीश्वरलोगभी वहां आनकर अपनाअपनाभाग यज्ञमेंपावें व आपभी मेरेसाथ वहां चलिये मैं नारायणजी कोभी बिनयकरके वहां लेआऊँगा और यज्ञकरने में जो साकल्य बचजाता है वही साकल्य आपकाभागहोगा सो आप अपनापावेंगे यह सबबात ब्रह्माजीकी सुनकर शिवजी ने कहा मैं किसीसे शत्रुता न रखकर अज्ञानके कहनेका कुछ बुरानहींमानता सतीके प्राणदेनेका हालसुनकर मुझे क्रोध आगयाथा सो दक्षप्रजापति अपनीकरणीको पहुँचा व सतीकेप्रारब्धमें इसीतरह तनत्याग करना लिखाहोकर जो कुछ परमेश्वरकी इच्छा थी वहबातहुई अब जो आज्ञादेव सो करूँ जो कोई बड़ोंकाकहना नहीं मानता वह पीछेसे दुःखपावता है ॥

———

सातवां अध्याय ॥

महादेवजी व ब्रह्मादिक देवतोंका बीच यज्ञशाला दक्षप्रजापतिके जाना ॥

मैत्रेयजीबोले कि हे विदुर जब कैलासपर्व्वतसे शिवशङ्कर व ब्रह्माजी सबदेवता ऋषीश्वरोंको साथलेकर दक्षप्रजापतिकी यज्ञशालामेंगये और जो देवताआदिक बीरभद्र के डरसे भागगयेथे वहभी वहांपर आये तब शिवजीने जिनदेवता व ऋषीश्वरका शरीर बीरभद्रके मारपीट करनेसे घायल होगयाथा उनकातन अपनी कृपादृष्टिसे अच्छा करदिया व भृगुऋषीश्वरके बालडाढ़ी बकरे की डाढ़ी लगावनेसे फिर उसीतरह जम गये उससमय ब्रह्माने शिवजीसेकहा लोथ दक्षप्रजापतिकी जो पड़ी है इसकोभी जिलानाचाहिये तब महादेवजीबोले शिर दक्षका जो अग्निकुण्डमें जलगया वह नहीं तैयारहोसक्ता कहो तो यज्ञके बकराकाशिर दक्षकेधड़से लगाकर उसे जिलादेऊं जब ब्रह्माने इसबातकोमाना तब शिवजीने बकरेकाशिर दक्षप्रजापतिके धड़से लगाकर उसे जिलादिया व शिवकीकृपासे स्थान यज्ञशालाका फिर ज्योंकात्यों होगया व दक्षप्रजापतिने महादेवजीको देखतेही उन्हें दण्डवत् करके हाथजोड़कर आधीनताई से बिनय किया हे महाप्रभो मैंने आपकी बड़ाई व महत्त्व न जानकर जैसीकरणी तुम्हारेसाथ की वैसाफलपाया व आप अपनी बड़ाई समझकर कृपाकरके यहांआये व मुझे अपनी प्रभुताईसे फिर जिलाया व मुझ अज्ञानका अपराधक्षमाकिया सचहै कि जिनको परमेश्वरने महत्त्व दियाहै वहलोगछोटे व मूर्ख मनुष्यकी बातपर ध्याननहींकरते और जितनेदेवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व व किन्नरादिक स्त्री व पुरुष दक्षकेयहां नेवताकरने आयेथे वहलोगभी यहमहिमा शिवजीकी देखकर इसीतरह स्तुतिकरनेलगे जबमहादेवजीकी आज्ञासे दक्षप्रजापति फिर यज्ञकरनेबैठे तब ब्रह्मा व महादेव व बिष्णुभगवान् ने सबदेवता व ऋषीश्वरसमेत उससभा में बैठकर शास्त्रकेअनुसार दक्षसे उसयज्ञको फिर आरम्भ कराया यज्ञसम्पूर्ण होतेही अग्निकुण्डसे यज्ञपुरुषभगवान् चतुर्भुजी मूर्त्ति ने बैजयन्तीमाला व कौस्तुभमणि व फूलोंकेहार गलेमेंडाले गरुड़परचढ़े प्रकटहोकर दर्शनदिया उनको देखतेही जितने छोटे बड़े वहां बैठेथे उठखड़ेहोगये व सबोंने उस पुरुषको साष्टांग दण्डवत्किया व दक्षप्रजापति हाथजोड़कर यज्ञभगवान्से बोले कि हे बैकुण्ठनाथ इसयज्ञके आरम्भमें मुझसे महादेवका अपमानहुआ इसलिये यज्ञ मेरा विध्वंसहोगया था अब मेराभाग्य उदयहुआ जो आपने दर्शनदेकर मुझेकृतार्थकिया व यज्ञमेरा तुम्हारी कृपासे उसीतरह सम्पूर्णहुआ अबदयाकरके ऐसा बरदान दीजिये कि जिसमें मुझको फिर दुर्बुद्धि न व्यापे फिर भृगुऋषीश्वर बोले कि हे दीनानाथ मैंने ब्राह्मण व तपस्वी होनेपरभी अपने क्रोधको वश्यनहींकिया इसकारण मेरा यह दण्डहुआ दयालुहोकर ऐसा आशीर्व्वाद दीजिये कि जिसमें क्रोधमेरा छूटजावे किस

वास्ते कि जबतक काम व क्रोध व मोह व लोभ अपने अधीननहींहोते तबतक तुम्हारी भक्ति नहीं प्राप्तहोती जब इसीतरह ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व्व व लोकपाल व किन्नरआदिक सब देवता व ऋषीश्वरोंनेभी बहुतसी स्तुति उनकीकी तब यज्ञपुरुष ने दक्षसेकहा तुझसे बहुत अनुचितहुआ जो महादेवजीका अपमानकिया सुनो ब्रह्मा व विष्णु व महादेव तीनों देवतोंको तुम एकसाजानो नाम जिसपुरुष निरंकारज्योतिका लोग जपकर अपनामालिक व उत्पन्न करनेवाला जानते हैं उसीके ध्यानमें तुमभीलीन रहो तब तुमको ज्ञान प्राप्तहोगा जिससमय यहबात यज्ञपुरुषने कहा उससमय आकाश से उनपर फूलोंकी बर्षाहुई व सबलोगों ने जयजयकारकिया तब यज्ञपुरुष सबकिसी को इच्छापूर्व्वक बरदान देकर बैकुण्ठको पधारे व ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरभी अपने अपने स्थानकोगये व प्रजापति उसदिन से शिवजीको अपना ईश्वरजानकर उनकी सेवाकरनेलगे इतनीकथासुनाकर मैत्रेयजीबोले कि हे बिदुर धर्मकी मरिष्यानाम स्त्रीसे क्रोध व लोभ व मृत्युआदिक बहुतसे लोग उत्पन्नहुयेथे उनकानाम संस्कृतभागवतमें लिखाहै कि जोकोई इसअध्यायको चित्तलगाकर कहै व सुनै वह सबपापों से छूटकर परमपदकोपावेगा ॥

आठवां अध्याय ॥

सतीका हिमाचलकेयहां पार्वतीनामसे जन्मलेना व उनकामहादेवजीकेसाथबिवाहहोना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरने कहा हे बिदुर अबहम सतीजीकीकथा जिसतरह दूसराजन्म पार्वती का लेकर महादेवजीको मिलीथीं बर्णनकरते हैं सुनोसतीने तनछोड़तीसमय महादेवजीके चरणोंकाध्यान हृदयमेंरखकर ऐसाप्रणकियाथा कि अबफिर मेराजन्महो तो शिवजीकी सेवामेंरहकर एकक्षण उनकासाथ न छोडूंगी सो वह तनछोड़नेउपरान्त हिमाचल पर्वत के यहां पार्वतीनाम से जन्मलिया जब वह सयानीहुई तब हिमाचलनेअपनीकन्यासेपूछा कि तेराबिवाह किसकेसाथकरूं पार्वतीको अपनेपिछलेजन्मकाहाल यादथा इसलिये पार्वती हिमाचलसेबोली कि मेराबिवाह महादेवजीकेसाथ करदेव उसनेकहा शिवजी सबदेवतोंके मालिकहोकर मेरीकन्या किसतरह अंगीकारकरैंगे तबपार्वतीने उत्तरदिया कि सिवाय महादेवजीके दूसरेसे मैं बिवाहनहींकरूंगी वहमुझे अंगीकारकरैं तो मेरेपतिहोवैं नहीं तो बनमेंजाकर तपकरके यहतनअपना फिरछोड़दूंगी ऐसाकहके पार्व्वतीने इसइच्छासे कि महादेवजीकेसाथ मेराबिवाहहो बनमेंजाकरतपकरना आरम्भकिया सोएकदिन नारदजीने पार्वतीके प्रीतिकीपरीक्षालेनेवास्ते वहांजाकरपूछा हे पर्वतराजकीकन्या तुमइस बनमें किसइच्छासेतपकरके इतनादुःखउठातीहो पार्वतीने नारदजीको परमेश्वरकापरम भक्तजानकर दण्डवत्करके बिनयकिया हे मुनिनाथ मैं महादेवजीसे बिवाहहोनेवास्ते इच्छारखकर तपकरतीहूं यहवचनसुनकर नारदजीबोले हे पार्वती तुमबड़ीबौरही व मूर्ख हो शिवजी अपनेशरीरमेंराख व धूरलगाये सांप व बिच्छूलपेटे मुंडोंकीमालागलेमेंडाले

हुये भूत व पिशाचअपनेसाथरखते हैं व उनकोदेखकर मनुष्यमारेडरकेभागजातेहैं तुम उनसे बिवाहकरनेकीचाहना क्योंकरतीहो यहबातसुनकर पार्वतीनेकहा वहकैसेही अव-गुणोंमेंभरेहों पर मेराचित्तउन्हींसेप्रसन्नहै ऐसासुनकर फिरनारदजीबोले कि हे पार्वती इन्द्र व गन्धर्व व कुबेर व वरुणआदिक अच्छे २ देवतोंको तुमकिसवास्तेनहींचाहतीहो यहवचनसुनतेही पार्वतीने हँसकरकहा हे मुनिनाथ मनएकहै दोचारनहींहोते सो एक चित्तमेरा शिवजीकेचरणोंमें जालगावहांसेवह निकलनहींसक्ता जो दूसरेकीतरफलगाऊं मेरीइच्छा शिवजीपूर्णकरेंगे दूसरेकीचाहना मुझकोनहींहै यहबातसुनकर नारदजीबहुत प्रसन्नहुये व पार्वतीको आशीर्वाददेकरबोले तुम्हेंमहादेवजी अवश्यमिलेंगे तुमकिसीके कहने व भुलावादेनेमें मतआना जबनारदजीने सच्चीप्रीतिपार्वतीकी देखी तब उसी समय शिवजीकेपासजाकर पार्वतीकामनोरथ व प्रेमवर्णनकिया जबमहादेवजीने सुना कि सती हिमाचलपर्वतकेघरजन्मलेकर मेरेसाथबिवाहहोनेवास्ते तपकरती हैं तबउन्हेंभी प्रीति उसकीदशगुणी अधिकहुई इसलियेमहादेवने हिमाचलसेजाकरकहा तूअपनी कन्या का बिवाहहमारेसाथकरदे हिमाचलनेयहबातसुनतेही बड़ीप्रसन्नतासे मानलिया व यह संदेशा पार्वतीकोजहांपरबैठी तपकरतीथीं जाकरकहा यहबातसुनतेही पार्वतीजी बहुत प्रसन्नहुईं उसीसमयहिमाचलने पार्वतीको बनसेलाकर विधिपूर्वक शिवजीकेसाथ बि-वाहकरदिया व बहुतसेरत्नादिक व वस्तुदहेजमें देकरबर व कन्याकोबिदाकिया तबसे पार्वतीजी एकक्षण महादेवजीसे अलग न होकर उनकी अर्द्धांगीबनीरहती हैं ॥

नवां अध्याय ॥

उत्तानपादके बेटेध्रुवजीका तपकरनेवास्ते बनमें निकलजाना ॥

मैत्रेयजीबोले हे विदुर राजास्वायम्भुवमनुकी तीनोंकन्याओंकाहाल मैंने तुमसेवर्णन किया अबउनके बेटोंकासमाचारकहताहूंसुनो स्वायम्भुवमनुके दोबेटे उत्तानपाद व प्रिय-व्रतउत्पन्नहुये सो प्रियव्रतकी सन्तानकीकथा पांचवेंस्कन्धमें आवेगी व उत्तानपाद के पुत्रोंकाहाल इसतरहपरहै कि स्वायम्भुवमनुके तनत्यागकरनेउपरान्त उत्तानपाद उन का बेटाराजाहुआ कदाचित् कोईइसबातका सन्देहकरे कि स्वायम्भुवमनुके राजगद्दीपर प्रियव्रतनेराज्यकिया उत्तानपाद किसतरहराजाहुआ सोहालउसका इसतरहपरहै कि प्रियव्रत राजास्वायम्भुवमनुकी निजराजगद्दीपरबैठे उत्तानपाद उन्हींकेदेशमें दूसरेनगर का राजाहुआथा और उसके दोस्त्री सुनीति सुरुचिनामथीं सोराजाको दोनोंस्त्रीसेसन्तान उत्पन्नहोकर बड़ीरानीके बेटेकेनामध्रुव व छोटीरानीके पुत्रकानाम उत्तमथा सोराजा छोटीरानी व उसकेबेटेसे बहुतप्रीति व बड़ीरानी व उसकेपुत्रसे कमप्रेमरखतेथे एकदिन राजाअपनी छोटीरानीसमेत राजसिंहासनपर बैठेहुये उत्तम उसकेबेटेको गोदमेंलिये प्यारकरतेथे उसीसमय ध्रुवबेटा बड़ीरानीका जो पांचवर्षकाथा खेलताहुआ वहांपर

पहुँचा व उसनेचाहा कि हमभीराजाकी गोदमेंजाके उत्तमअपनेभाई के बराबरबैठें सो राजाने ध्रुवकीमातापर कमप्रीतिरखने व छोटीरानीकेडरसे कि वहउससमय वहांबैठीथी ध्रुवको अपनेपास नहींबैठाला यहदेखकर छोटीरानीने ध्रुवसेकहा कि तैंनेपिछलेजन्म तप व स्मरणनारायणजीका नहींकिया इसलिये तू अभागीउत्पन्नहुआ कदाचित् तू पहिलेजन्म में तपकरता तो मेरे पेटसेजन्मलेकर राजाकी गोदमें बैठनेयोग्यहोता सो तुझे इसजन्म में राजसिंहासनपर बैठना बहुतकठिन है अबभी तू जाके परमेश्वरका भजन व स्मरणकर जबतेराभाग्य उदयहो तबतू मेरे पेटमेंजन्मलेकर राजाकेआसनपर बैठना किसवास्ते कि मैंपटरानी हूं सिवायमेरे बेटेके दूसरीरानीकापुत्र राजसिंहासनपर नहीं बैठसक्ता राजाउत्तानपादने भी यहबात रानीकीसुनकर जबध्रुवका कुछआदर नहीं किया तब ध्रुवको यहबात सवतेलीमाताकी तीरकेसमान कलेजे में लगी इसलिये ध्रुव वहांसेरोताहुआ अपनीमाताके पासआया सुनीति उसकीमाताने उसे रोते देखकर अपनी गोदमें उठालिया व कहनेलगी हे बेटातुझको किसनेमारा जोतूइतना रुदनकरताहै ध्रुवको अधिकरोनेसे ऐसीहिचकी लगगईथी कि थोड़ीदेरतक उससे बोलानहींगया जबरोना उसकाकमहुआ तबध्रुवअपनीमातासे बोलाकि इससमय हमराजाके पासगयेतो वहउत्तम हमारेभाईको गोदमें लियेबैठेथे सोहमनेभी चाहाकि पिताकीगोदमें जाकरबैठें परराजाने हमको अपनीगोदमें नहींबैठाला तबउत्तमकी मातानेहमसेकहा कि तू परमेश्वरकाभजन व स्मरण पिछलेजन्ममें नहींकरके प्रारब्धहीन उत्पन्नहुआ इसलिये तू राजाकेगोदमें बैठनेयोग्यनहींहै अबभीजाकर परमेश्वरकातपकरके मेरेपेटसेजन्मले तबराजाके आसन परबैठना सुनीति यहबातसुनकरबोली हेबेटा राजाकीछोटीरानी सचकहतीहै कदाचित् तू पिछलेजन्म परमेश्वरकातप कियेहोतातो मेरेपेटसेजन्मनलेता इसलिये अबभी तू बीच शरणनारायणजीके जाकर तप व स्मरणउनकाकर तोतेरामनोरथपूर्णहोगा पहिलेब्रह्माजी तेरेपरदादासेभी कठिनकामउत्पन्नकरने संसारका नहींहोसक्ताथा जबउन्होंने तप व ध्यान नारायणजीकाकिया तबपरमेश्वरकीकृपासे उनकोज्ञानप्राप्तहुआ व ज्ञानकेप्रतापसे ब्रह्माने संसारकीरचनाकी व स्वायम्भुवमनु तेरेदादाने परमेश्वरकातपकरके सन्तानधर्म्मात्मापाया सोसबमनोरथ मनुष्यका नारायणजीकी कृपासेपूर्णहोताहै परमेश्वरका तपकरनेसे तेरी कामनाभी प्राप्तहोगी राजामुझे अपनीदासी बराबरभी नहींसमझते जोबात मेरीसवति कहतीहै वहीकरतेहैं मैंजानतीहूं राजाके न रहनेउपरान्त मेरीसवति तुझेदेशसे निकाल-देवेगी यहबात सुनतेही ध्रुवने अतिलज्जितहोकर नारायणजीके खोजमें घरसे निकल कर बनका रास्तालिया पर वह मनमें इसबातका शोचविचार करताजाता था कि मैं अज्ञानबालक परमेश्वरकापता किसतरहपाऊं जो उनकी शरणमेंजाकर अपनीकामना को पहुंचूं उसीसमय राहमें नारदजीने आगेसे आनकर मनमें विचारा कि यहबालक थोड़ीबात अपनीमाताके कहनेसे दुःखितहोकर परमेश्वरको ढूंढ़ने निकलाहै सो हमइस

की परीक्षालेवें कि यह अपनीप्रतिज्ञापर दृढ़है या नहीं ऐसा बिचारकर नारदजीबोले हे राजकुमार अज्ञान तू किसवास्ते अपनेघरसे निकलआया बाल्यावस्थामें तुझे ऐसाक्रोध करना न चाहिये बालकको कोई दुर्बचनकहकर फिर प्यारसेबुलावे तो वह उसकेपास चलाजाताहै सो तैंनेलड़कोंका स्वभावछोड़कर बनका रास्तालिया ऐसीबातकरना तुझे उचित नहींहै हमतुझको तेरेबापकेपास लेचलते हैं राजगद्दी या जिसबस्तुको तुझेइच्छा हो हम दिलवादेवेंगे और जो तू नारायणजीको ढूंढ़ताहै सो उनकामिलना सहजमत समझना बहुतसे योगीश्वर व तपस्वीलोगोंने बीचखोज नारायणजीके तप व जपकरके शरीरअपना जलादिया तिसपरभी उनको नहींपाया तू वृथा उनको ढूंढ़ने क्योंजाताहै और हम नारदमुनि परमेश्वरकेभक्त व सेवकहैं तुझको तेरे पिताकेपासलेजाकर जो कुछ हम कहैंगे सबबात हमारी तेराबाप मानेगा ध्रुवने यहबचन नारदजीका सुनकर बिचार किया मैंने सुनाथा कि नारदमुनि परमभक्त नारायणजीकेहैं देखो हम अभी नारायणजीके खोजमें घरसे निकले सो ऐसे महात्मा व हरिभक्तका दर्शनपाया जब मैं बीच तप व स्मरण परमेश्वरकेलीन होऊँगा तब न मालूम और कैसे २ अच्छे पदार्थ मुझे मिलैंगे यहबात विचारकर ध्रुवने नारदजीको दण्डवत्करके बिनयकिया महाराज आप परमभक्त नारायणजीके हैं इसलिये मेरी सहायता कीजिये जिसमें परमेश्वरके चरणों तक जल्दी पहुंचजाऊं आपको परमेश्वरकी राहपरजानेसे मुझे फेरना उचित नहीं है जो रास्ता नारायणजीके मिलनेका सहजहो वह मुझे दिखलादेव और मैं क्षत्रियका बेटाहूं अब बिनादर्शनकिये नारायणजीके फिरकर अपनेघर नहीं जाऊंगा जब नारदजीने देखा कि यहलड़का बीचभक्ति परमेश्वरके सच्चा व ज्ञान सिखलावने योग्यहै तब नारद मुनिने ध्रुवसे कहा हे बेटा तुझे व तेरेज्ञानको धन्यहै हम तेरीपरीक्षालेते थे अबतुझको नारायणजीके मिलनेकीराह दिखलाते हैं सुन तू यहांसे मथुरापुरीमेंजाकर यमुनाकिनारे जहां श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ आठोंपहर रहते हैं कुशकाआसन बिछाकर उत्तरमुंहबैठ महिमा व बड़ाई यमुनाजीकी बैकुंठसे अधिकहै और तुम नित्ययमुनाजीमें त्रिकाल स्नानकरना वहां नहानेसे तेरे सबपाप जन्मजन्मांतरके छूटजावेंगे और हरसायत बीच ध्याननारायणजीके लवलीनरहना व स्वरूपउनका इसतरहपरहै श्यामरंग कमलनयन चतुर्भुज मुकुटजड़ाऊपहिने मकराकृतकुण्डल धारणकिये चंद्रमाकीतरह शोभायमान बैजयन्तीमाला व कौस्तुभमणि गलेमेंडाले मन्दमन्दमुसकराते हैं सो तुम नित्यस्नान करनेउपरान्त आसनपर बैठकर ऐसेरूपका ध्यान मनलगाकेकरना और फल या दूब या जल जो कुछमिले उसीसे धूपदीप आदिक परमेश्वरको करदेना व बारहअक्षरका मन्त्र नारदमुनिने ध्रुवको उपदेशकरके कहा इसीमन्त्रको जपना व भोजनकमकरके पानीथोड़ा पीना श्रीनारायणजी दयालुहोकर तुझे दर्शनदेवेंगे व कामनातेरी पूरीहोकर तू बड़ीपदवीको पहुंचेगा हरिभजनकरनेसे संसार व परलोक दोनोंजगहका सुखमिलता

है ध्रुवने स्वरूप व ध्यान नारायणजी व मन्त्रजपनेका हाल नारदमुनिसे सुनकर बहुत प्रसन्नहोके कहा आपने बड़ीदयासे परमेश्वरके मिलनेका सहजमार्ग मुझेदिखला दिया मैंतो जानताथा कि नारायणजीकाघर किसीनगर या गांवमें न मालूम कितनीदूर होगा वहांजाकर उनकोढूंढ़ता सो आपनेस्मरण व ध्यानकरना उनका मेरेहृदयमें बतला दिया अब मैं तुम्हारी आज्ञानुसारजप व ध्यानकरके परमेश्वरको मिलूंगा यहबातकहकर ध्रुव नारदमुनिको दण्डवत्करने उपरान्त मथुराकोचलागया व नारदजीने वहांसेराजा उत्तानपादकेपास आनकर क्यादेखा कि राजा व ध्रुवकीमाता दोनोंरोते व चिन्ताकरते आपसमें कहते हैं कि हम लोगोंने अपने पांचवर्षके बालकको जो कुछज्ञान नहींरखता तपकरनेका उपदेशदेकर बनमें भेजदिया न मालूम वहबिचारा कहांगया व उसकी क्यागतिहुईहोगी बड़े २ योगीश्वर व ज्ञानियोंको परमेश्वरका मिलना कठिनहै उस बालक अज्ञानको भगवान् किसतरह मिलैंगे व राजा अपनी छोटीरानी पर क्रोधकरके कहते थे कि तैंने कठोरबचन कहकर मेरे बेटेको बनबासदिया जैसे नारदजी वहांपहुंचे वैसे राजाने दण्डवत्करके बड़े सन्मानसे उनको बैठालकर पूंछा कि महाराज आप कहांसे आतेहैं नारदमुनिने कहा हम अपनाहाल पीछेसे कहैंगे परइससमय तुमको बहुत उदासीन व चिंतामें देखते हैं इसकाकारण कहो राजा बोले हे मुनिनाथ मेरी छोटी रानी ने ध्रुव मेरे बेटेको जो अज्ञानबालकथा ऐसी लगनीबात कही कि वह दुःखित होकर न जानें कहां निकलगया सो हम उसीकेशोकमें ब्याकुलहैं न मालूम उस बालककी क्या दशाहुईहोगी कोईशेर व भालूआदिक उसे खालेगा मुझसे बड़ी भूलहुई जो स्त्रीकेबशहोकर उसका निरादरकिया यहबात सुनकर नारदजी बोले हे राजा तुम चित्त अपना उदास मतकरो तुम्हारा बेटा मुझे राहमें मिलाथा सो मैंने बहुत उसको कहा व समझाया कि तू अपने घर मेरेसाथ फिरचल परंतु उसने नहींमाना जब मैंने देखा कि परमेश्वरके तप व स्मरणमें इसका सच्चा प्रेमहै तब हमने उसको नारायणजी के मिलनेका उपाय बतलाकर मथुराकी तरफ भेजदिया उसकी अब तुम कुछ चिन्ता मतकरो वह ऐसी पदवीको पहुँचेगा कि आजतक तुम्हारे पुरुषोंकोभी नहीं प्राप्तहुई है और ध्रुवने नारायणजीकी शरण पकड़ी अब उसको कोईनहीं दुःखदेसक्ता और तुमने अपनी अज्ञानतासे स्त्रीकेबश होकर पुत्रका निरादरकिया नारदजी यहबात कहकर ब्रह्मलोकको गये व राजाको नारदमुनिके कहनेसे धीर्यहुआ पर मन उसका ध्रुवकी तरफ लगारहकर राज्यकाजमें नहीं लगताथा और ध्रुव मथुरामें जाकर यमुनाकिनारे कुशके आसनपर बैठा व नारदजीकी आज्ञानुसार परमेश्वरका तप व ध्यानकरनेलगा आदिमें ध्रुव तीसरे दिन एकसमय भोजन करताथा एक महीने इसतरह नियम रख कर उसके उपरान्त सातवें दिन थोड़ासा खानेलगा फिर तीन महीनेतक वृक्षकी पत्ती खाकररहा चौथेमहीनेमें पत्तीखानाभी त्यागकरके पानीपीकर बिताया पांचवेंमहीनेमें

पानीपीनाभी छोड़कर जितनीहवामुंहमें जातीथी उसीके आहारपररहा व पांचमहीने तक एकपैरसेखड़ेहुये उसीमंत्रको जपकर ध्याननारायणजीके स्वरूपकाकिया सो शरीर ध्रुवका लकड़ीकेसमान सूखगया परन्तु मुखारविंदउसका सूर्यकीतरह चमकनेलगा छठे महीनेध्रुव बीचध्यान परमेश्वरके मुंहबन्दकरके ऐसालवलीनहुआ कि अन्तःकरण उसका श्यामसुन्दरके स्वरूपसे भरकर श्वासलेनेकीजगहभी न रही जब ध्रुवने इसतरह तप करके अपनीश्वासको रोकलिया तब तीनोंलोकमें चलनाहवाका बन्दहोगया जब पवन न चलनेसे सबजीव दुःखीहुये तब ब्रह्माने सब देवतोंसमेत नारायणजीके पासजाकर विनयकिया हे त्रिलोकीनाथ हवाबन्दहोनेका क्याकारणहै श्यामसुन्दर बोले कि ध्रुवने अपने तपकीसामर्थ्यसे पवनकोबांधलिया इसलिये यहदशाहुईहै सो अब हमजाके ध्रुवको अपना दर्शनदेकर हवाको छोड़देते हैं ॥

दशवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका ध्रुवको नारायणरूप धारणकरके दर्शन देना ॥

मैत्रेयजी ने कहा हे बिदुर भगवान्जी यहबात देवतोंके कहने उपरान्त जिसस्वरूप का ध्यान ध्रुव करताथा उसीरूपसे गरुड़पर सवारहोकर ध्रुवके सन्मुखजाके क्षणभर खड़ेरहे पर उससमय ध्रुव अपनी आंखबन्दकिये परमेश्वरके ध्यानमें ऐसा लीनथा कि नारायणजी के आनेका हाल न जानकर उसने आंख अपनी नहींखोली तब श्याम-सुन्दरने स्वरूप अपना ध्रुवके अन्तःकरण व ध्यानमें से बाहर खींचलिया तो जब ध्रुव ने परमेश्वरका स्वरूप अपने हृदयमें न देखा तब घबराकर आंखखोलदिया तो क्या देखपड़ा कि जिसमूर्त्तिका ध्यान मैं करताथा वहीस्वरूप सांवलीसूरति मोहनीमूरति मेरेसामने खड़ी है तब ध्रुवने उस परब्रह्मपरमेश्वरकी परिक्रमा लेकर दण्डवत् किया व उनके चरणोंपर शिररखकर चाहताथा कि स्तुति नारायणजीकी करे फिर उसने ऐसा विचारा कि जिनकी महिमा ब्रह्मा व शेषनाग व गणेशजी वर्णन नहीं करसक्ते मैं अज्ञानबालक किसतरह उनकी स्तुति करूं इसी विचारमें ध्रुव चुपचाप हाथजोड़े परमेश्वरके सामने खड़ारहा व मुखारबिन्द उनका बड़े प्रेमसे देखनेलगा तब नारायण जीनेजाना अभीतक ध्रुवको इतना ज्ञाननहीं है जो मेरी स्तुति करसकै यह बिचारकर त्रिलोकीनाथने कृपा व दयाकीराहसे जब शंख अपना ध्रुवकेमुख व कपोलोंमें छुआदिया उसके छुआतेही ध्रुवकेहृदयमें ज्ञान व बुद्धिका प्रकाशहोकर उसको सब विद्या याद होगई तब ध्रुवने हाथजोड़कर विनयकिया हे दीनानाथ जबतक तुम्हारीकृपा व दया न हो तबतक कोई आपकेचरणोंका दर्शन नहीं पानेसक्ता ब्रह्मादिक देवतोंकोभी ऐसी सामर्थ्यनहीं है जो आपकागुण वर्णनकरसकैं और आप स्तुतिकरनेकी कुछ इच्छा न रख कर अपनीमायासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनोंलोकका करतेहैं और सबजीव ब्रह्मासे

लेकर चिउँटीतक तीनोंलोकमें तुम्हारीमायासे उत्पन्नहुये पर सबकेमालिक परब्रह्मपर-
मेश्वर त्रिलोकीनाथ आपहैं ब्रह्माभी तुम्हारेभेदको नहींपहुंचसक्ते जो कुछ स्तुति आपकी
वर्णनकरसकैं और संसारमें स्त्री व पुत्रकामोह बबूररूपी वृक्ष व तुम्हारेचरणोंकी भक्ति
कल्पतरुकेसमान समझनी चाहिये जिससे मनुष्यकीकामना [illegible] और मैंमाता
व पितासे दुःखितहोकर अपने अर्थकेवास्ते तुम्हारीशरण आयाथा सो आपनेदयालुहोकर
अपनेदर्शनसे मुझे कृतार्थकिया बड़ाभाग्य उनलोगोंकाहै जो निष्काम आपकातप व
जपकरतेहैं व बिनादया आपके किसीको ज्ञाननहींप्राप्तहोता जब इसप्रकारसे ध्रुवने
बहुतस्तुति नारायणजीकीकरी तब श्यामसुन्दरबोले हे ध्रुव हम तुझसे बहुतप्रसन्नहुये कुछ
बरदान मांग यहबात सुनकर ध्रुवबोला हे दीनदयालु जब तुम्हारेचरणोंका दर्शन मैंने
किया तब दूसरी कौन इच्छा मुझे मांगनेकी बाकीरही केवल आपकेचरणोंमें भक्ति व
प्रेमचाहताहूं यहवचन सुनकर नारायणजी अन्तर्य्यामीनेकहा हे ध्रुव तैंने राजगद्दी
मिलनेवास्ते मेरातपकिया सो हमने तुझको राजसिंहासनदिया अब तू मेरी आज्ञासे नगरमें
जा व जिसने तुझको तानामाराथा उसकेसामने छत्तीसहज़ारवर्ष राज्यकर जो तुझे
अभागीकहतीथी वह और उत्तमबेटा जिसकेपास तुझे राजाने गोदमेंनहीं बैठालाथा तेरी
सेवाकरेगा व तेराबाप तुझेराजगद्दीपर बैठालकर तपकरनेकेवास्ते बनमें चलाजावैगा
व उत्तम तेरेभाईको शिकारखेलनेकेसमय बनमें एकयक्ष कुबेरदेवताका नौकरमारडालैगा
उसीचिन्तामें उत्तमकीमाताभी बनमें जलकर मरजावैगी व जब तू शरीर त्यागकरैगा तब
हम ब्रह्मलोकसेभी ऊँचेध्रुवलोकमें तुझेरहनेकेवास्ते स्थानदेवैंगे वहां तू महाप्रलयतक स्थिर
रहैगा व चन्द्रमा व सूर्य्य व सब तारागण तेरी परिक्रमाकियाकरैंगे व महाप्रलयके अन्तमें
तेरीमुक्तिहोगी व मेरेभक्तोंकी कोईबराबरीनहींकरसक्ता व उनकीकोईइच्छाबाकी नहीं
रहती और तुमसदाहमारीकथा सुनकर पिछलेधर्मात्माराजाओंका हालजानना जिस
समय भगवान्जीने यहबरदान ध्रुवकोदिया उससमय देवतालोगोंनेप्रसन्नहोकर ना-
रायणजी व ध्रुवकेऊपर फूलबरसाये व बड़ाईभाग्यध्रुवकी किया जबनारायणजी यह
बरदानदेकर ब्रह्मलोककोसिधारे तबफिरहवाचलनेलगी व तीनोंलोककेजीवोंने पवन
बहनेसे सुखपाया व ध्रुववहांसेघरकोचला पर राहमें यह चिन्ता व [illegible]
था कि देखोमुझसे बड़ीभूलहुई जोनारायणजीका दर्शनपाकर फिर मैंनेराजगद्दी अंगी-
कारकिया मुझेऐसामालूमहोताहै कि देवतोंनेभुलावादेकर मेराज्ञानहरलिया जिसमें यह
बिरक्तहोकर नारायणजीकेशरणमें न रहै या पितरोंने यहीबातसमझाहो किसवास्ते
कि यह वचनसंसारमें प्रसिद्धहै कि जबकोई मनुष्य बीचध्यानपरमेश्वरके होताहै तब
इन्द्रादिकदेवता उसके भजन व स्मरणमें विघ्नडालते हैं इसीतरह चिन्ताकरताहुआ
ध्रुव अपनेनगरके निकटपहुँचकर एकबागमेंठहरा सो वहांके मालीनेजाकर राजासे
कहा राजाउसके कहनेकाबिश्वास न करकेबोले कि ध्रुव घरसे बहुतउदासहोकर पर-

मेश्वरका तपकरनेवास्ते निकलाथा किसतरहआयाहोगा उसीसमयनारदजीने वहां आकरकहा हे राजन् ध्रुवतुम्हाराबेटा नारायणजीका दर्शनपाकर अपने मनोरथको पहुँचआया सो तुम्हेंयहां बैठेरहना उचितनहींहै चलोउसकोआदरभावसेलेआवैं नारद मुनिके कहनेसे राजाको विश्वासहोकर बड़ाआनन्दप्राप्तहुआ सो राजाने एकहाररत्न का मालीकोदेकर उसीसमय उत्तमअपनेबेटा व दोनोंरानी व नारदजी समेत बागमें जानेकी तय्यारीकी व बाजनखुशीके बजातेहुये बड़ीधूमधाम से ध्रुवकेपासचले जब नगरकेलोगोंनेसुना कि ध्रुव परमेश्वरसेमिलआया उसकादर्शनकरना बड़ापुण्यहै तब उसनगरके स्त्री व पुरुष छोटे व बड़े अपनी २ तय्यारीकरके गाते व बजातेवास्तेकरने दर्शन ध्रुवजीकेगये जबसबकोई वहांपहुँचे तबउन्होंने सवारीपरसेउतरकर ध्रुवजीका दर्शन जो अपनेशरीर व शिरकेबालोंमेंराख व धूललगाये व जटाबढ़ायेबैठेथे किया जबध्रुवने उनलोगोंको देखा तबनारदजी व राजाकेचरणोंपर गिरके दण्डवत्किया व राजाने बड़ेप्रेमसे ध्रुवकोगोदमेंउठाकर छातीसेलगाया व अपनेआंसूसे उसकेमुंहको धोदिया फिरध्रुवने पहिलेछोटीरानीकेपास जिसनेउसको तानामाराथा जाकरसाष्टांग दंडवत्करकेकहा हे माता तुम्हारेउपदेशसे मैं निकलगयाथा सोनारायणजीके दर्शन मिलनेसे सबमनोरथमेरेपूर्णहुये फिरध्रुवने सुनीति अपनीमाताको दण्डवत्करके जितने छोटेबड़ेपुरवासी उनकेदर्शनकेवास्ते आयेथे यथायोग्य सबकाशिष्टाचारकिया फिर राजाउत्तानपाद ध्रुवकोअपनेसाथ हाथीपरबैठालकर ब्राह्मण व याचकोंको दान व द-क्षिणादेते व द्रव्यलुटाते राजमन्दिरमेंलेआये व हजामतबनवाकर स्नानकरनेके उपरान्त बहुतउत्तम भूषण व वस्त्र उन्हेंपहिनाया व नारदजीवहांसे ब्रह्मलोककोगये व राजाने लाखोंब्राह्मण खिलाकर बड़ीखुशीमनाया व पुरबासियोंनेभी अपने २ घरआनन्दमचाया व सुनीति ध्रुवकीमाताको परमआनन्द प्राप्तहुआ इतनीकथासुनाकर मैत्रेयजीने कहा हे विदुर जिसकेऊपर परमेश्वरप्रसन्नहोते हैं उससे सबखुशरहते हैं और श्यामसुन्दरके विमुखरहनेसे पिता व भाईभी शत्रुहोजाते हैं व ध्रुवकाचित्त धर्म्ममेंतत्पर देखकर राजा उससे बहुतप्रसन्नरहतेथे सो कुछदिनउपरान्त राजाने हृदयमें विचारा कि ध्रुवअबराज्य करनेकेयोग्यहुआ अब इसेराजगद्दीदेकर परमेश्वरकातपकरतेतो हमारा परलोकबनता ऐसाविचारकर राजाने अपने मंत्रियोंसे पूंछा जब सबकिसीको यहबातभलीमालूमहुई तबराजाने अच्छामुहूर्त्त पूंछकर ध्रुवको राजसिंहासनपर बैठालदिया व राज्यकाजउनको सौंपनेकेउपरान्त आपबनमें जाकर तप व ध्यान नारायणजीका करनेलगे व ध्रुवजीने राजगद्दीपर बैठकर सातोंद्वीपका ऐसाराज्यकिया जिनकेधर्म व न्यायसेसबप्रजा आ-नन्दरहकर बाघ व बकरी एकहीघाट पानीपीतेथे व उनकेराज्यमें कोई दुःखी व दरिद्री न होकर वक्तचाहने प्रजाके पानी बरसताथा ध्रुवजीने उत्तम अपनेभाईको राज्यकाजका अधिकारदियाथा व उत्तमभी ध्रुवजीकी आज्ञानुसार सबकामकरके बड़े

प्रेमसे उनकी सेवाकरताथा एकदिन उत्तम ध्रुवसेआज्ञालेकर बनमेंशिकारखेलनेगया जबएक मृगकेपीछे घोड़ादौड़ाताहुआ कुबेरदेवताके बिहारकीजगह जापहुँचा और उसके साथियोंने वहस्थान मल व मूत्रकरके भ्रष्टकरदिया तबयक्षकुबेरके नौकरबोले तुमसंसारीमनुष्यहोकर देवलोकमें किसवास्ते आयेहो इसीबातपर उत्तमभी अपनेराज्यके अभिमानसे कुछदुर्बचनबोले इसीवास्ते एकयक्षने जो बलवान्था उत्तमकोमारडाला जबउसके साथियोंनेआकर यहहाल ध्रुवसेकहा तबध्रुवजी क्रोधवन्तहोकर अपनीसेना समेत यक्षोंसेलड़नेचले व सुरुचि उत्तमकीमाता यहहालसुनकर रोती व बिलापकरती उसकीलोथ ढूंढ़नेवास्ते बनमेंगई सो आगलगनेसे वहांजलमरी और जिससमयराजा ध्रुव अपनी सेनासमेत बीचबन यक्षोंकेपहुँचे उससमय एकलाखतीसहजार यक्ष नौकर कुबेरदेवताके अपने २ शस्त्रलेकर राजाध्रुवके सन्मुखआये तबराजाने अपनेसेनापतियों से कहा तुमलोग पहिले अलगखड़ेहोकर युद्धकातमाशादेखो हमकोलड़नेदेव ऐसाकहकर ध्रुवजी अपनारथ यक्षोंकेसन्मुखलेगये यक्षोंने राजाकोदेखकर अपनाअपना शस्त्र उनपर चलाया सोध्रुवजीने उनकासबबेरबचाया व अपनाधनुषचढ़ाकर ऐसे बाण यक्षोंको मारे कि उनमेंसेकुछमरगये व बाकीलोग घायलहोकर गिरपड़े व राजा ध्रुवकी विजयहुई यहदशा यक्षोंकी देखतेही एकयक्षनेजाकर कुबेरसे सबवृत्तान्तकहा जबकुबेरने अपनेनौकरोंके घायलहोने व मारेजानेका हालसुना तब अपनी सेनासाथ लेकर लड़नेवास्ते संग्रामभूमिमें आये व कुबेरने ध्रुवजीसेकहा तू मनुष्यहोकर देवतोंको दुःखदेताहै मैं तुझेमारूंगा ध्रुवजीबोले मैं केवल परमेश्वरको देवता व मालिकजानताहूं जिनकेबनायेहुये देवता व मनुष्यसबजीवहैं दूसरेको कुछमाल नहींसमझता फिरकुबेरने बहुतसेतीर ध्रुवकोमारे सोध्रुवने वहसबबाण अपनेतीरोंसे काटडाले तबकुबेरने ध्रुवजी से कहा तुम्हारागुरूध्रुवहै जिसने ऐसीविद्यातुझेपढ़ाई तुमबताओ किसकेचेलेहो ध्रुवने उत्तरदिया कि जिसके प्रतापसे तुम देवताहुयेहो वहीमेरागुरू व मालिकहै यह बातसुनतेही जब कुबेरनेक्रोधवन्तहोकर नारायणशस्त्र ध्रुवकेमारनेवास्ते उठाया और ध्रुवनेभी नारायणशस्त्र निकाला तबब्रह्माजीने बिचारकिया कि नारायणशस्त्र चलने से बड़ा अनर्थहोकर संसारीजीव मारेजावैंगे व ध्रुव परमेश्वरके भक्त व कुबेरजीदेवताहैं इनदोनों में कोई मरनहींसक्ता ऐसाविचारकर ब्रह्माजीने स्वायम्भुवमनु ध्रुवजीके दादा नारदजी से कहा कि तुमलोगजाकर कुबेरदेवता व ध्रुवजीको समझाके उनदोनोंमें सलाहकरादेव उसीसमय रणभूमिमें जहांपर ध्रुवलड़रहेथे जाकरउन्हें प्रेमसेपुकारा जबध्रुवजीने देखा कि स्वायम्भुवमनु हमारेदादा आये तब युद्धकरना छोड़कर रथपरसे उतरपड़े व स्वायम्भुवमनुको साष्टांगदण्डवत् किया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

ध्रुवजीका कुबेरदेवतासे मिलाप करलेना व अपनेपुत्रको राज्यदेकर बनमें तपकरनेवास्ते जाना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जब ध्रुवने स्वायम्भुवमनुको दण्डवत्किया तब स्वायम्भुवमनुबोले हे ध्रुव तुमवैष्णव व परमेश्वरके भक्तहो सो हरिभक्तोंको क्रोधकरना न चाहिये क्रोधकरनेवाले अपनेको वैष्णव व साधुकहैं तो यहकहना उनका झूंठसमझो क्रोधकरने से बहुतपापहोताहै सो हे ध्रुव तुमने वैष्णव व राजाहोनेपरभी कुछन्याय नहीं किया किसवास्ते कि उत्तमतेरेभाईको जो उसकीमृत्युआईथी एकयक्षनेमारा उसकेबदले तुमनेएकलाख तीसहजारयक्षोंको घायलकरके दुःखदिया उनमें कितनेलोग मरगये यह बाततुमने अच्छी नहींकिया राजाकोन्याय न करनेसे अधर्म्महोताहै और सबकोई अपनी मृत्युसेमरते हैं एकबहाना व अपयश दूसरेको होजाताहै इसका एकइतिहास हमकहते हैं सुनो कि सारस्वत आदिकल्पमें संसारीजीव बहुतउत्पन्नहुये व तबतक मृत्युउत्पन्न नहीं हुईथी इसलिये जब पृथ्वी संसारीजीवोंके बोझेसे पानीमेंडूबनेलगी तब ब्रह्माने एककन्या मृत्युनाम उत्पन्नकरके उसेसमझाकरकहा तूसंसारमेंजाकर बूढ़े व रोगीमनुष्योंको मारडाल पर वहकन्या यहबात न अंगीकारकरके परमेश्वरका तपकरनेलगी तब नारायणजीने उसकन्या मृत्युरूपीसेकहा तूजगत्मेंजाकर आयुर्दा बीतनेउपरान्त सबजीवोंको मार तुझे कुछअपयश न होकर कोईकहैगा तपादिक रोगसेमरा कोईकहैगा सांपकाटनेसे मरगया इसीतरह अनेकप्रकारसे दूसरेको दोषलगावैंगे यहबात नारायणजीकी सुनतेही जब उस कन्याने संसारमेंआनकर लोगोंको मारना आरम्भकिया तब पृथ्वीकाबोझ हलकाहुआ सो तुमने परमेश्वरका भजनकिया फिर उनकीसृष्टिको मारकर क्योंअपराधलेतेहो ध्रुवने यहबातसुनतेही अतिलज्जितहोकर लड़नाबन्दकरके स्वायम्भुवमनुसे विनयकिया महाराज मुझसेअपराधहुआ यहबचनसुनकर स्वायम्भुवमनुबोले हे ध्रुव तुम इसबातकी चिन्तामतकरो इनलोगोंकेभाग्यमें इसीतरह मरना व दुःखपाना लिखाहीथा प्रबलहोकर परमेश्वरकी इच्छानुसार सबबातहोती है व नारदमुनिने कुबेरको समझाया देखोध्रुवजीने स्वायम्भुवमनुके कहनेसे युद्धकरना छोड़दिया तुमभी अपनाक्रोध क्षमाकरो सो कुबेर ने भी लड़ना बन्दकिया फिर स्वायम्भुवमनु व नारदजीने कुबेरसे कहा पहिले तुम्हारे नौकरोंने उत्तम ध्रुवकेभाईको वृथामाराथा इसलिये तुम अपने सेवकोंका अपराध उन से क्षमाकरावो कुबेरने यहबात सुनकर बिनतीपूर्व्वक ध्रुवसेकहा हे राजन् हमारेनौकरों से अपराधहुआ जो तुम्हारे भाईको मारा उसकेबदले जो चाहो सो हमसे दण्डलेकर अपराधउनका क्षमाकरो ध्रुवबोले आपदेवताहैं हमको ऐसा आशीर्बाद दीजिये जिससे फिर मुझे क्रोध न होकर परमेश्वरके चरणोंमें भक्तिबनीरहै उत्तमके प्रारब्धमें इसीतरह

मरना लिखाथा कुबेरने ध्रुवको इच्छापूर्व्वक बरदानदेकर आपसमें मिलापकरलिया व स्वायम्भुवमनु व नारदजी इनदोनोंकी सलाहकराके जहांसेआयेथे वहांचलेगये कुबेरजी अपनेस्थानपर पधारे व ध्रुवने अपनेघर आकर विचारकिया कि यहराज्य व धन व स्त्री व पुत्र संसारी व्यवहार स्वप्नके समान झूंठाहै व राजगद्दीपर रहनेसे काम व क्रोध व मोह व लोभ समयपाकर स्वभावमें प्रवेशकरतेहैं इसलिये इनलोगोंसे विरक्तहोकर हरिभजन करना उचितहै ऐसा विचारकर ध्रुवजीने उत्कल अपनेपुत्रको जो इलानाम स्त्रीसे बहुतसुन्दर उत्पन्नहुआथा राजगद्दीपर बैठालदिया व अपनी स्त्रीसमेत बदरिकाश्रममें जाकर बीचतप व ध्यान परमेश्वरके लीनहुये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित राजायुधिष्ठिर तुम्हारेदादाके यज्ञमें किसीब्राह्मणने सोनेकाथाल चुरायाथा सो लोगोंने कहा इस ब्राह्मणकाहाथ काटडालो यहबातसुनके युधिष्ठिरने उसब्राह्मणको राजाबलिकेपास न्यायकरनेकेवास्ते भेजदिया तब राजाबलिने कहा कि जिसराजाकेदेश में यहब्राह्मण रहताहै उसराजाको दण्डदेनाचाहिये राजाने इसब्राह्मणको किसवास्ते इतनादान नहींदिया जिसमें इसको चोरीकरनेकी इच्छा न होती सो हे परीक्षित राजों को इसीतरहपर धर्मरखना चाहिये उसब्राह्मणका विधिपूर्व्वक हाल महाभारतमेंलिखाहै॥

बारहवां अध्याय ॥

ध्रुवजीका अपनी दोनों माता सहित ध्रुवलोकमें जाना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जब ध्रुवका तनुत्यागनेका समय निकटपहुँचा तब श्री भगवान्जीके गणोंने एकबिमान बहुतअच्छा वहांलाकर ध्रुवसे कहा कि नारायणजीने यह बिमान तुम्हारेवास्ते भेजदियाहै इसपर बैठकर ध्रुवलोकमें चलो यहबात सुनकर ध्रुवजीने विचारा कि सुरुचिमेरी छोटीमाता जिसके तानामारनेसे हम परमेश्वरका तप करके इसपदवीको पहुँचे वहगुरुके समानहोकर मुझे कठोरवचन कहनेसे नरक भोगती है वहां मेरेअकेले जानेसे क्या धर्म्मरहैगा जो मैं सुखकरूं व मेरीमाता दुःखभोगै ध्रुवजी इसीशोचमेंथे कि गणलोग उनके दिलकाहाल जानकरबोले कि तुम किस चिन्तामें हो ध्रुवने कहा जिस माता पिताके तानामारनेसे मैंने यह पदवीपाया सो हमचाहते हैं कि नारायणजीसे कहकर उसकी मुक्तिकरावें गणबोले भगवान्जीने आज्ञादियाहै कि ध्रुव को उसकी दोनों मातासमेत बिमानपर बैठालकर लेआवो सो वहदोनों पहिले तुमसे वहां पहुँचैंगी यहबात सुनतेही ध्रुवजी बड़े आनन्दसे अपनी स्त्रीसमेत दिव्यरूपहोकर बिमानपर चढ़के ध्रुवलोकमें चलेगये यहहाल देखकर देवतोंने ध्रुवजीके ऊपर फूलोंकी वर्षाकिया व नारदजी उससमय प्राचीन बर्हिषप्रचेतोंके बापको यज्ञकरातेथे सो ध्रुवजी का बिमानदेखकर मारेआनन्दके नाचनेलगे फिर नारदमुनिने यज्ञकराने उपरांत ध्रुवलोकमें जाकर कहा हे ध्रुव तेरा सबमनोरथ पूर्णहुआ ध्रुवने नारदजीके चरणोंपरगिरके

हाथजोड़के विनयकिया हे मुनिनाथ यह सबबड़ाई मुझे आपकीदया व कृपासे मिली तब नारदमुनिबोले कि जैसी कृपा तुझपर नारायणजीने किया ऐसी अटलपदवी दूसरे को मिलनाकठिनहै यहवचन कहकर नारदजी ब्रह्मलोकको चलेगये व ध्रुवजीखुशी व आनन्दसे रहकर वहां सुखभोगनेलगे इतनीकथा सुनकर राजापरीक्षितने पूछा हे मुनि-नाथ प्रचेतालोग कौनथे उनकाहाल वर्णनकीजिये शुकदेवजी बोले हे राजा जब ध्रुवजी बदरिकाश्रमको गये तब उत्कल उनकेपुत्रने बहुतदिनोंतक सातोंद्वीपका राज्यकरके सबप्रजाको प्रसन्नरक्खा फिर उन्होंने भी ऐसा बिचारा कि राज्य व धन व कुल व परिवार आदिक संसारीसुख स्वप्नेके समानहैं जिसतरह राजाध्रुव मेरापिता बिरक्तहोकर नारायणजीकी शरणमेंजाके कृतार्थहुआ उसीतरह मैंभी इस मायाजालसे छूटकर परमे-श्वरका भजनकरता तो क्या अच्छीबातथी पर घरवाले वैराग्यलेने व घरछोड़देनेकेसमय मनाकरैंगे इसलिये उत्तम बात यहहै कि मैं अपनेको बौरहोंकीतरह बनालूं जब सब लोग जानैंगे कि यह राज्य करनेके योग्य नहीं है तब उनके हाथसे अपनाप्राण छुटाकर मैं परमेश्वरका स्मरण व तप अच्छीतरह करूंगा ऐसा बिचारकर राजाउत्कल बौरहोंकी तरहबनकर बेप्रमाण बातैं कहनेलगा यहदशा उसकी देखकर घरवाले व कामदारोंने जाना कि यह विक्षिप्त होगया राज्यकरने योग्य नहीं है तब सब किसीने सम्मतकरके बत्सरनाम उसके छोटेभाईको जो ध्रुवकी दूसरी स्त्रीसे उत्पन्नहुआथा राजसिंहासनपर बैठाला व उत्कलबौरहोंके समान घरमें रहनेलगा कुछदिन इसीतरहबीते जब उत्कलने देखा कि कामकाज राजगद्दीका चलनिकला तब उसने एकदिन घरसे निकलकर बन का रास्तालिया व बनमेंजाने उपरान्त बीच तप व ध्यानपरमेश्वरके लीनहोकर तनु अपना त्याग दिया ॥

तेरहवां अध्याय ॥

बेनका राजा अंगके यहां ध्रुवजीके कुलमें उत्पन्नहोना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा कि अब हम ध्रुवके बंशकाहाल जो उसके पीछे राजाहुयेथे कहते हैं सुनो उसकेबंशमें कईपीढ़ी उपरान्त कि सबकानाम संस्कृत भागवतमें लिखाहै अंगनामराजाहुआ उसकेकोई बेटानहींथा इसलिये उसने दुःखित होकर ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंसे कहा कोई ऐसाउपायकरो कि जिसमें मेरेलड़का उत्पन्नहो ऋषीश्वरोंने राजासे यज्ञकराके प्रसाद उसका राजाको देकरकहा तुम यह प्रसाद अपनी एकस्त्रीको खिलादो सो राजाने सुनीथी अपनीरानीको खिलादिया उसप्रसादके प्रताप से उसके लड़काहुआ उसकानाम ब्राह्मणोंने बेनरक्खा जबराजाने उसबालकको बहुत कुरूप शूद्रकेसमान देखा और ग्रह उसके बुरेमालूमहुये तब ब्राह्मणोंसे पूछा कि आज तक हमारे कुलमें कोईलड़का ऐसा नहीं उत्पन्नहुआ सबधर्म्मात्मा व सुन्दर होतेआये हैं

क्याकारणहै जो यहबालक ऐसाकुरूपहुआ ब्राह्मणबोले कि यज्ञका प्रसाद भोजनकरती समय तुम्हारीस्त्रीने मृत्युनाम अपनीमाता व अधर्म अपने पिताको यादकियाथा इस लिये यहबालक अपनेनाना व नानीके स्वभावपर कुरूप व अभागी उत्पन्नहुआ है यह बचनसुनकर राजाको चिन्ताहुई पर इच्छा परमेश्वरकी इसतिरहपर समझकर उसबालक का पालनकरनेलगे जब बेन सयानाहुआ तब शिकारखेलनेवास्ते बनमेंजाकर जानवरों को जिनकामारना अधर्म है राजाके मनाकरनेपर भी मारनेलगा व नगरकेबालकोंको अपनेसाथ स्नानकरानेवास्ते नदीकिनारे लेजाकर पानीमें डुबाकर मारडालता कभी बनमें लेजाकर मुक्का व लातमारके उनका प्राणलेताथा जब वह ऐसा अधर्मकरनेलगा तबवहांकी प्रजाने जाकर यहहाल राजासे कहा कि राजकुमारने हमारेलड़कोंको बिना अपराध मारडाला राजाने कईबेर प्रजाको समझाबुझाकर बिदाकरदिया और बेन अपने बेटेको सबतरहसे समझाया पर वह कहना राजाका न मानकर और अधिक उपद्रव करनेलगा तब एकदिन फिर उसनगरकी प्रजाने जाकर राजासेकहा कि हे पृथ्वीनाथ हम ऐसी अनीतिहोनेसे आपके देशमें नहींरहसक्ते जबराजाने प्रजाको अतिदुःखी देखा तब बेनको बहुतडाटके समझाया कि तू प्रजाको दुःखमतदे तिसपर वह न मानकर रोता २ अपनीमाताके पासजाके कहनेलगा कि राजा मुझे वृथाधमकाकर मेरा कुछआदर नहीं करते इसलिये मैं घरसे निकलजाऊँगा सुनीथा उसकीमाता भी अधर्मिणीथी इस कारण वह बेनकीबात सुनकर बोली हे बेटा तेरेबापकी बुद्धि बूढ़ेहोनेसे मारीगई उसको बकनेदे जो तेरादिल चाहे वैसाकर सुनीथा इसतरह अपने पुत्रको धैर्य्यदेकर जब उसके बदले अपनेपतिसे झगड़ाकरनेलगी तब राजाने दुःखितहोकर बिचारा कि देखो पृथ्वी-पति मैं होकर सबराजा मेरेअधीन रहते हैं मैं चाहों तो बेनको उसकीमातासमेत अपने देशसे निकालदूँ पर इसमेंभी मेरी हँसीहोगी व मनुष्य इन्हीं स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसा रहकर परलोकका शोच नहींकरता सो यहीलोग भलीबात समझावने से बुरामानते हैं सो मैं किसवास्ते अपनाजन्म अकार्थखोऊँ मेरे पिछलेजन्मका पाप उदयहुआ जो ऐसे अधर्मी बेटेने मेरेयहां जन्मलिया उसके पापकरनेसे मैंभी नरकभोगूंगा जिसकीमाता धर्म व अधर्मका बिचार नहीं करती उसकाबेटा किसतरहसे पापी न होवे अब ऐसे अध-र्मियोंकी संगतिमें रहना न चाहिये कुसंगमें रहनेसे कुछसुख नहीं मिलता इससे बनमें जाकर परमेश्वरका स्मरण व तपकरना उत्तमहै मेरेपीछे जैसाचाहै वैसाहो राजाने यह बिचारकर मन अपना विरक्तकरलिया व आधीरातकेसमय रानीको सोईहुई छोड़कर बनमें चलेगये व बीचतप व ध्यान परमेश्वरके लीनहुये और उसदिन राजाके निक-लजानेका हाल किसीने नहीं जाना॥

चौदहवां अध्याय ॥

बेनका राजगद्दीपर बैठना व ऋषीश्वरोंको हरिभजन करनेसे बर्जना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जब राजा अंग बिनाकहे रातको बनमें चलेगये तब प्रातः-काल मंत्रियोंको यह समाचार सुनकर बड़ाखेदहुआ और बहुतढूंढ़नेपरभी उनकाठिकाना नहींलगा व बिनाराजाके उसदेशमें चोर व ठग उपद्रवकरनेलगे जब ब्राह्मण व ऋषी-श्वरोंने बिनाराजाके प्रजाकोदुःखीदेखा और दूसरे किसीको राजाअंगकेबंशमें न पाया तब लाचारीसे आपसमें सम्मतकरके बेनको राजगद्दीपर बैठाला सो बेनने राजसिंहा-सनपर बैठतेही डाकू व चोरोंको पकड़करमारना आरम्भकिया सो उसकेराज्यमें चोरी व डाकूकानाम बाकी न रहकर वह सब अधर्मकरनेवाले उसकाराज्य छोड़कर ऐसेभागगये कि जैसेसांपकेडरसे चूहे भागजातेहैं व जो राजा अपनेदेशकापैसा अंगको नहींदेतेथे वह लोगभी राजाबेनकी आज्ञापालनकरनेलगे जब बेन सातोंद्वीपका ऐसा प्रतापीराजाहुआ कि जिसकासामनाकरनेवाला कोईदूसरा संसारमें न रहा तब उसने राज्य व धन के अभिमानसे अन्धाहोकर यहबात बिचारा कि दूसरदेवताके नामपर यज्ञ व दान व जप व तपआदिक किसीकोकरना न चाहिये सबकोई देवता व पितरकी जगहपर हमारीपूजा कियाकरैं किसवास्ते कि सबकोभोजन व बस्तुदेकर मैं पालनकरताहूं ऐसाबिचारकर वह परमेश्वरको भूलगया व उसने अपनेराज्यभरमें ढिंढोरापिटवादिया कि कोईमनुष्य यज्ञ व पूजा व श्राद्ध व होम व दानआदिक परमेश्वर व देवता व पितरोंके नामपर न करैं जिसको जो कुछ करनाहो सो मेरापूजन परमेश्वर व देवता व पितरोंकी जगहकियाकरैं जो कोई ऐसानहींकरेगा उसको हम दण्डदेवेंगे इसतरह ढिंढोरापिटवाने उपरान्त राजा बेन अपनीसेना साथलेकर दूसरे राजाओंके देशमें दिग्विजयवास्ते चला जहां वह पहुँ-चता वहांकेराजा अनेकप्रकारकीबस्तु भेंटदेकर उससेमिलतेथे तब राजाबेन उनसेकहता था कि तुम हमारीआज्ञामानो तो अपनेराज्यभरमें ऐसाउपदेशकरो कि कोईमनुष्य यज्ञ व दान व जप व तपआदिक किसीदेवताके नामपर न करै जिनकोकरनाहो सो हमारी पूजाकरैं वह सब लाचारीसे अपनेप्राण व धनजानेका भय समझकर उसकी आज्ञामान लेतेथे जब राजाबेनकेडरसे सातोंद्वीपमेंयज्ञ व दानादिकशुभकर्मकरना लोगोंने छोड़दिया तब अधर्म व पापका अधिकारहोनेसे ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंका कर्म्म व धर्म्मछूटनेलगा जब भृगु व वशिष्ठादिकऋषीश्वरोंने इसतरहपर राजाबेनका अधर्म्मदेखा व अपने जप व पूजामें विघ्नसमझा तब सरस्वतीके किनारे बैठकर आपसमें ऐसाबिचारकिया कि जिसदेशमें राजानहींरहता वहांकीप्रजा अपने मनमाना पापकरती है किसीका डर नहीं रखती व चोरआदिक अधर्मीलोग सबकोदुःखदेतेहैं इसकारणधर्म्मकी हानि व पापकी वृद्धिहोती है व सब अधर्मी व पापियोंको दण्डदेने व धर्म्मकीरक्षाकरनेवाले राजाहोतेहैं

सो यह राजाबेन ऐसाअधर्मी उत्पन्नहुआ कि जिसने सम्पूर्णधर्म्म संसारसे उठादिया इसका क्या उपायकरनाचाहिये ऐसाबिचारकर ऋषीश्वरोंने आपसमेंकहा हमलोगोंने उसको राजसिंहासनपर बैठालाहै इसवास्ते एकबेर चलकर उसेसमझानाचाहिये कदाचित् हमारेबर्जनेसे उसने अधर्म्मकरना छोंड़दिया तो अच्छीबातहै नहींतो उसकादूसरा उपायकरैंगे यह सम्मतकरके भृगु व वशिष्ठादिक बहुतसे ऋषीश्वर व ब्राह्मण इकट्ठेहोकर राजमन्दिरपरगये जब राजाने दण्डवत्करके उनको बैठाला तब ऋषीश्वरबोले हे राजा हम तुझे एकबातकहने व समझाने आयेहैं उसको अंगीकारकरनेमें तेराकल्याणहै नहीं तो नष्टहोजायगा राजाने पूंछा कि वहकौनसीबातहै कहो तब ऋषीश्वरोंने कहा हे राजन् हमलोगोंको तुम यज्ञ व तपआदिक करनेसे क्यों मनाकरतेहो व संसारीमनुष्योंको शुभकर्मकरनेसे मनाकरके कहतेहो कि देवता व पितरोंकीजगह हमारीपूजाकरो यहबात किसीको अच्छीनहींलगती हमलोगोंका यहीधर्म्म है कि यज्ञ व होम व ध्यान नारायणजी का कियाकरैं यहबचनसुनकर राजाबोला तुम्हारे वेद व पुराणमेंलिखाहै कि राजा नारायणजीकास्वरूपहै इसलिये तुम्हैं हमारीआज्ञा माननाचाहिये और मेराकहना न मानोगे तो तुमलोगोंको दण्डदूंगा ऋषीश्वरोंने जब यहबातसुनी तब आपसमें सम्मतकिया कि ऐसे पापी व अधर्मीराजाको मारडालनाउचितहै ऐसाबिचारकर किसीऋषीश्वरने कुश व किसीने जल हाथमें लेकर कुछ मंत्रपढ़के ऐसाशापदिया कि राजाबेन उसीसमय मरगया व ऋषीश्वरलोग अपने २ स्थानपर चलेगये और सुनीथा बेनकीमाताने यहहालसुन कर बहुत बिलापकिया व इसबिचारसे लोथ उसकी नहीं जलाई कि ऋषीश्वर व ब्राह्मणों को सब सामर्थ्य है कदाचित् पीछेसे प्रसन्नहोकर इसे फिर जिलादेवैं इसीआश्रयपर अंतड़ी निकलवाकर पेट उसका धुलवाडाला व मसालाभरवाकर लोथ उसकी तेलमें रखछोंड़ी जिसमें गलैसड़ै नहीं बेनकेमरने उपरान्त फिर यज्ञ व होमादिक शुभकर्म संसारमें होने लगे पर राजाके न रहनेसे फिर चोर व ठग प्रजाको दुःखदेनेलगे व अधर्मियोंने निडर होकर मनमाना पापकरना आरम्भकिया यहदशा देखकर फिर ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंने आपसमें बिचारा कि बिनारहनेराजाके संसारमें धर्म न रहकर सबलोग वर्णसंकरहोजावेंगे व राजनीतिमें लिखाहै कि जिसदेशमें राजा न हो या जहां राजा अधर्मी और मूर्खहो या जिसदेशमें स्त्री राज्यकरै या जिसस्थानपर कईराजाहोवैं वहां बसनेसे धर्म्मनहींरहता ऐसी जगहरहना उचित नहीं है इसलिये दूसरेराजाका उपायकरनाचाहिये विनाराजाके प्रजा सुखनहींपावैगी व नारायणजीकी कृपासे बेनभी जीसक्ताहै पर वह अपनेअधर्मको न छोंड़ेगा इसलिये उसको जिलाना कैसाहै जैसे कोईसांपको दूधपिलावे पर यहध्रुवभक्तके कुलमें राजगद्दीथी सो बेनके लोथमेंभी कुछ उसके धर्म्मका अंशहोगा इसवास्ते इसलोथ में से एक बालक उत्पन्नकरके राजसिंहासनपर बैठालनाचाहिये जिसमें प्रजा सुखपावै व धर्म्मकीरक्षाहो सो चलकर बेनकी लोथदेखना उचितहै यहबात आपसमें बिचारकर भृगु

आदिक ऋषीश्वरोंने कि उनको परमेश्वरका तप व जपकरने से सब सामर्थ्यथी जाकर सुनीथासे पूछा बेनकीलोथ कहां है यहबात सुनतेही सुनीथा ने ऋषीश्वरों से दण्डवत् किया व बहुत प्रसन्नतासे लोथ बेनकी उनकेसामने लेआई तब ऋषीश्वरों ने कुछ मंत्र पढ़कर राजाबेनकी जंघा मथानीसे दहीकेसमान मथी जिसतरह दहीमथने से मक्खन निकलताहै उसीतरह जंघामथनेसे एकपुरुष नाटा व कालारंग अतिकुरूप उत्पन्नहोकर बोला हे ऋषीश्वरो मुझे क्या आज्ञादेतेहो जब ऋषीश्वरों ने देखा कि यहमनुष्य राज्यकरने योग्यनहीं है तब उससेकहा तू बनमेंजाकर भिल्लोंका राजाहो सो वह उनकी आज्ञासे बन में जाकर भिल्लोंका राजाहुआ उसीकेवंशमें मल्लाह व मुसहरआदिक उत्पन्नहोकर आज तक संसारमें वर्त्तमानहैं व उसपुरुषके निकलतेही सब पाप सुनीथाका बेनके शरीरसे बाहर निकल गया ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

ऋषीश्वरोंका उसकी दहिनी भुजासे राजापृथु व अरुचिनाम स्त्रीको उत्पन्नकरना ॥

मैत्रेयजी बोले हे विदुर फिर ऋषीश्वरोंने वास्ते उत्पन्नहोने एकराजा बहुतसुन्दर व नीतिमान्के दाहिनीभुजा बेनकी मथी तो उसमें से एकपुरुष अतिसुन्दर व तेजस्वी व विशालशरीर व लम्बीभुजा व एक स्त्री रूपवती दोमनुष्यउत्पन्नहुये सो ऋषीश्वरों ने उस पुरुषकानाम पृथु व स्त्रीकानाम अरुचिरखकर उनदोनोंका विवाह आपसमेंकरके पृथु से कहा तुम सातोंद्वीपका राज्यकरो व ऋषीश्वरोंने अपने ज्ञानकी दृष्टिसे जाना कि यहदोनों लक्ष्मीनारायणका अवतारहैं यहबात समझतेही ऋषीश्वरोंने बड़े आनन्दसे पृथु को राजसिंहासनपर बैठालने चाहा तब कुबेरदेवताको बुलाकरकहा कि जिस सिंहासन पर बेन अधर्मी बैठताथा वहराजापृथुके बैठनेयोग्य नहींहै इसलिये तुम दूसरा सिंहासन बहुतअच्छा पृथुके बैठनेकेवास्ते लावो उसीसमय कुबेरदेवता एक सिंहासन जड़ाऊ बहुत उत्तमलेआये सो ऋषीश्वर व देवतोंने पृथुको राजसिंहासनपर बैठालकर दण्डवत्किया व वरुणदेवताने छत्र व पवनदेवताने चमर व नागदेवताने मणि व पृथ्वीने खड़ाऊँ व सरस्वती ने मोतियोंका हार व महादेवने तलवार व विष्णुने सुदर्शनचक्र व पार्वतीजीने ढाल व त्वष्टादेवताने रथ व अग्निदेवताने धनुषबाण व समुद्रने शङ्खलाकर राजापृथु को भेंटदिया इसीतरह और सब देवताभी उत्तम २ बस्तु इन्द्रपुरीके समान लाकर राजा पृथुको भेंटदेनेगये व इन्द्रपुरीसे अप्सरालोगों ने आनकर राजाको नाचदिखलाया व गन्धर्वोंने गाना सुनाया व सिद्ध व चारणलोगों ने आकाशसे स्तुतिकरके राजापर फूलबर्षाये व भाटोंने आनकर राजापृथुकी बड़ाईमें कबित्तपढ़के पिछले प्रतापीराजाओं की उपमादी उनका बचन सुनकर राजाने भाटोंसे कहा कि अभीतक मैंने कोई ऐसा बड़ाईका काम नहीं किया कि तुमलोग इतनी स्तुति करतेहो जिस किसी में कुछगुण

नहींहोता भाटलोग अपने लोभकेवास्ते उसमनुष्यकीबड़ाई इन्द्रके समानकरते हैं यह बात अनुचितहै और जो मनुष्य इसतरह अपनीबड़ाई सुनके प्रसन्नहोताहै उसे मूर्ख समझनाचाहिये और जिसबातका अपने में गुण न हो व कोईदृष्टान्त उसको देवै तो निस्संदेह समझनाचाहिये कि यहहमारी हँसीकरताहै सो हे भाटो जब हम कुछअच्छा कामकरैं तब हमारीस्तुतिकरना अभी चुपरहो मनुष्य बड़ाईकेयोग्य नहीं है नारायण जीकीस्तुति करनाचाहिये जिन्होंने मनुष्यको उत्पन्नकरके उसे महत्त्वदिया व उसके हाथसे शुभकर्मकराते हैं तबवह स्तुतियोग्य होताहै वह मनुष्य कदाचित् किसीको एक वर्ष या दशबर्ष भोजनवस्त्रदे तो उसे दुःखमालूमहोताहै व स्तुतियोग्य भगवान्‌जी हैं जो सबको पालनकरके संसार व बैकुण्ठका सुखदेते हैं यहबचन सबकिसीने सुनकर राजाकी बड़ाईकी ॥

सोलहवां अध्याय ॥

भाटोंका बिदाहोना व राजापृथुकी जन्मकुण्डलीका फल पण्डितोंको कहना ।

मैत्रेयजीने बिदुरसे कहा कि भाटोंने राजाकाबचन सुनकर बिनयकिया हे पृथ्वी-नाथ आप नारायणजीका अवतारहैं तुम्हारी बड़ाईकरना भगवान्‌जीकी स्तुति तुल्यहै इसलिये अपनीजिह्वा पवित्र करनेके वास्ते तुम्हारी स्तुतिकरते हैं किसवास्ते कि हम लोगोंने अपनापेट पालनेवास्ते झूंठ व सच्चबहुतसी बड़ाई औरलोगोंकी कीहै और आप ऐसे अच्छे २ कामकरैंगे कि आजतक किसीराजाने ऐसेकर्म संसारमें नहींकिये जब भाटलोग ऐसेबचन कहके राजासे द्रव्य लेकर अपने २ घरचलेगये तब ज्योतिषी पण्डितोंने राजाकी जन्मकुण्डली बनाकर ग्रहोंकाफल इसतरह वर्णनकिया कि यह सातोंद्वीपके राजाहोंगे व अपनीभुजाकी सामर्थ्यसे सब पृथ्वीके राजाओंको जीतकर उदयास्ताचलतक राज्यकरैंगे व पृथ्वीको गौके समान दुहकर उसे कन्यातुल्य व प्रजा को पुत्रकी बराबर समझैंगे और ब्राह्मण व ऋषीश्वर व साधु व सन्तको नारायणरूप जानैंगे व आठमहीने प्रजासेपृथ्वीका देनलेकर चारमहीने बरसातमें उनकोअपनेपास से भोजन व वस्त्रदेवैंगे व बिनाअपराध किसीकोदण्ड नहींदेंगे जब इन्द्र डाहसे उनके राज्यमें पानी न बरसावैगा तब राजापृथुके प्रतापसे प्रजाके इच्छाकरनेकी समय बर्षा होगी व राजापृथु सौ अश्वमेधयज्ञ वा‍‍त्प्रसन्नहोने भगवान्‌जीके बिनाइच्छाकरैंगे जब निन्नानबे यज्ञ उनके अच्छीतरह सम्पूर्णहोकर सौवां यज्ञ आरम्भहोगा तब राजाइन्द्र अपने इन्द्रासनलेनेके डरसे योगीकारूपबनाकर श्यामकर्ण घोड़ा उनका चुरालेजावैंगे जब बेटा राजापृथुका घोड़ा इन्द्रसे छीन लेआवैगा तब इन्द्र उससे हारमानकर छलकरने वास्ते अनेकतरहका रूप धारणकरैंगे उनके रूपधारणकरनेका हाल सुनकर कलियुग-बासी मूर्खलोगभी दूसरोंको ठगानेकेवास्ते अनेकप्रकारकारूपधरैंगे व नारायणजी

यज्ञशालामें प्रकटहोकर राजापृथुको दर्शनदेवैंगे व सनकादिक ऋषीश्वर राजमन्दिर पर आनकर इनकोज्ञान सिखलावैंगे और यहराजा परस्त्री को माता व दूसरेकाधन मिट्टी समान समझकर सदापरमेश्वरके भजन व स्मरणमें लीनरहैंगे ऐसाकहकर ज्योतिषी लोग राजासे दक्षिणालेकर अपने २ घरचलेगये व भृगु आदिक ऋषीश्वर और देवता राजाको आशीर्वाद देकर अपने २ स्थानको पधारे ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

राजापृथुका प्रजाके दुःखपानेसे पृथ्वीपर क्रोधकरना ॥

मैत्रेयजीने कहा हे विदुर जब देवता व ऋषीश्वर बिदाहोगये तबराजापृथु साथ धर्म व नीतिके राज्यकाजकरनेलगे सो एकदिन सबप्रजाने उनके पास आनकर बिनय कीकि महाराज आप हमारे राजा व मालिकहैं शास्त्रके अनुसार आपको हमारी पालन जो मारेभूखकेमरतेहैं करनाचाहिये जिसतरह वृक्षभीतरसे खोखलेहोजाते हैं उसीतरह हमलोगोंका कलेजा व पेट मारेभूखके जलताहै अन्न व फलखानेसे सबलोग जीते हैं सो राजाबिनकेपाप व अनीतिकरनेसे पृथ्वीने सबअन्न व फल अपनेमें चुरालिये जो अन्न हमलोग पृथ्वीपरबोते हैं सो नहींउगता व जो वृक्ष पहिलेसे उगेहुये हैं उनमें फल नहीं लगते इसलिये हमलोग अपने लड़केबालोंसमेत खानेबिना मरते हैं सो आपको धर्मात्माराजा समझकर अपनादुःख कहा कोई ऐसा उपायकीजिये कि जिसमें पहिलेकीतरह अन्न व फल पृथ्वीसे उत्पन्न हुआकरैं यहबात सुनतेही राजाने पृथ्वीपर क्रोधकरके धनुषबाण अपना उठालिया व बाणसाधकर कहा कि अभी एकतीरमारके पृथ्वीको टुकड़े २ करडालूं पृथ्वी राजाको ऐसे क्रोधमें देखकर उसीसमय गोरूपधारणकरके डरती व कांपतीहुई सामने आई और राजाने अपनेज्ञानसे पहिंचानलिया कि यह गोरूपी पृथ्वी है तिसपर भी राजाने क्रोधवशहोकर धर्म्म व अधर्म्मका विचार न करके जब उसे तीरमारनेकी इच्छाकी तब गोरूपी पृथ्वी वहांसेभागकर सबलोकनमें दौड़ीगई व राजाभी धनुषबाण लियेहुये रथपरबैठकर उसकेपीछे खेदेजातेथे जब उसे किसीजगह अपनेप्राणका बचाव न दीखा तब राजाकेसामने खड़ीहोकरबोली कि हे पृथ्वीनाथ आप नहीं जानते वेदशास्त्रमें गोकामारना बड़ापापहै राजाने जवाबदिया शास्त्रमें ऐसालिखा है कि जिस किसीसे संसारीजीव दुःखपावैं उसकामारना पाप न होकर धर्म्मसमझना चाहिये ब्रह्माजीने जो औषध व अन्न संसारीजीवोंके पालनहेतु प्रकटकियाहै उसको तैंने छिपालिया राजाओंका यहीधर्म्म है कि जो उनकेप्रजाको दुःखदेवै उसेमारडालैं यहबातसुनकर फिर गोरूपी पृथ्वीने कहा हे राजन् जब मुझको हिरण्याक्षदैत्य पाताल में लेगया और वास्तेरहने जीवोंके जगह नहींथी तब नारायणजी बाराहअवतार धारण करके मुझेपातालसेलाये और पानीपर स्थिरकरके सबजीवोंको मेरेऊपर बसाया

कदाचित् तुममुझे मारडालना चाहतेहो तो सब प्रजाको कहांरक्खोगे राजानेकहा मुझमें इतनीसामर्थ्य है कि तेरेमारनेउपरांत अपने तपोबल व नारायणजीकी कृपासेमहाप्रलय के पानीपर प्रजाको बसाऊंगा गोने यहबातसुनकर अपनेज्ञानसे मालूमकिया कि राजा बड़ेप्रतापी व परमेश्वरका अवतारहैं जो चाहैंगे सो करैंगे अब विना इनके शरणगये मेराप्राण बचना कठिनहै ऐसा बिचारकर पृथ्वीने राजासे विनयपूर्व्वककहा कि हे पृथ्वीनाथ आपकर्त्तापुरुष परमेश्वरकाअवतार सबकरसक्त हैं जो आज्ञादेव सो मैं करूं ॥

अठारहवां अध्याय ॥

राजाका सब अन्न व औषध गोरूपी पृथ्वीको दुहिकर निकालना ॥

मैत्रेयजीबोले हे विदुर गोरूपीपृथ्वीने राजासेकहा कि महाराज मैंने बेनकेअधर्मकरने से अन्न व औषधआदिक इसवास्ते अपनेमें छिपालिया कि बेनकेराज्यमें संसारीलोग होम व दानकरना छोड़कर सबअन्न अपनेखर्चमें लानेलगे व देवता व अग्निकाभाग देना उन्होंने बन्दकरदिया इसलिये अधर्मीलोगोंका पालनकरना मैंने उचित नहींजाना अबतुम धर्मात्माराजा अवतारलेकर पहिलेकीतरह अन्न व फल उत्पन्नहोना चाहतेहो तो तुम वेदकामंत्र पढ़कर साथ योगाभ्यासके गोकेसमान मुझेदुहो जो कुछ मैंने गुप्त करलियाहै और जिसचीजकी इच्छा तुमकोहोगी सबमेरेमें दूधकीतरह निकलैगी व पहाड़ोंका बहुतसा बोझ मेरेऊपर बेठिकाने रक्खाहै आप उसेउठाकर एकतरफ धरदीजिये तो पृथ्वी बहुतसी खालीहोजावै व अनेकजगह ऊंचीनीची धरती जो गड़हेके समानहै उसेपाटकर बराबर करदीजिये तब मेरेऊपर सबजीव आरामसे रहकर खेती आदिक व्यापारकरके बड़ासुखपावैंगे व किसीकोदुःख न होगा व बरसात बीतनेउपरांत भी वास्तेपीनेजीव व सींचने खेतोंके सबजगह पानीरहैगा राजापृथुने यहवचन सुनतेही अपने धनुषकी नोकसे पहाड़ोंको जो बीचमें जगहछेंकेथे उठाकर उत्तरदिशा में धरदिया सो तीनतरफपृथ्वी खालीहोगई व जिसजगहगड़हेथे वहांपर छोटे २ पहाड़ों को रखकर अपनेधनुषसे ठोंकदिया तो वहधरती भी बराबर होजानेसे राजाने बहुत जगह नगर व किला व गांव जहांजैसा उचितजाना तैयारकराके वहांप्रजाकोबसाया और जहांकहीं तालाब व बावली व कुआंआदिकका प्रयोजनथा बनवादिया जिसमें सबजीवोंको सुखमिलै तब गोरूपीपृथ्वीने प्रसन्नहोकरकहा हे पृथ्वीनाथ अबमुझे दुहो पर दुहनेका बर्त्तन व बछड़ेकी सूरत वास्तेनिकालने अनेकबस्तुओंके जुदा २ बनाओ जिसमें सबपदार्थ मेरेमेंसे निकलैं पहिले भृगु व दुर्वासाआदिक ऋषीश्वरोंने गोरूपी पृथ्वीको दुहा तो उसमेंसे वेदनिकला ब्राह्मणोंने प्रसन्नहोकर कहा हमलोगोंको यही चाहिये फिर देवता व गन्धर्व व दैत्य व राजापृथु आदिकने उसगोको दुहकर अनेक प्रकारका फल व अन्न व औषधआदि सबबस्तु प्रयोजनकी उसमेंसे बाहरनिकालीं

पर दुहनेका बर्त्तन व बछड़ेका स्वरूप पृथक् २ बनायाथा हे विदुर पृथ्वीकामधेनुगायके समान है इसलिये सब किसीने अपनी इच्छापूर्वक गोरूपीपृथ्वीसे दुहिकर सबतरहकी वस्तु निकाललीं व देवता व ऋषीश्वरोंने पृथ्वीकोआशीर्वाददिया कि पहाड़ व समुद्रादिकका बोझ तुझे कुछनहींमालूमहोगा परन्तुअधर्मी व पापी व साधु व ब्राह्मणके दुःख देनेवाले जब तेरेऊपर अपनाचरणरक्खैंगे तब तू उनकेभारसे दुःखीहोगी उससमय नारायणजी अवतारलेकर अधर्मियोंको मारके तेराबोझ दूरकरैंगे यहबरदान देवता व ऋषीश्वरोंकासुनकर पृथ्वी अपना निजरूपधरके राजापृथुको आशीर्वाद देकर अपने स्थानकोचलीगई व संसारीजीव अन्न व फल उत्पन्नहोनेसे प्रसन्नहोकर अपनेकर्म्म व धर्म्ममेंलीनहुये और नगर व गांवमें सुखपूर्वकरहकर राजापृथुको आशीर्बाद देनेलगे ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजापृथुका सौ अश्वमेध यज्ञकरना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जब सबप्रजा राजापृथुकी आनन्द व खुशहुई तब राजाने ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंको बुलाकर सौ अश्वमेधयज्ञकासंकल्पकिया व ब्रह्मावर्त्त में स्वायम्भुवमनुकेस्थानपर निष्कामयज्ञकरनेलगे सो राजापृथुके नीति व धर्मकरनेसे घी व दूध व दहीकीनदी संसारमेंप्रकटहोकर बहनेलगीं व रत्न व मोती व सोना व चांदी व तांबाआदिककीखानैं समुद्र व पहाड़ों में बिनाखोदेप्रगटहोगईं इसलिये उनकेराज्यमें कोई प्रजादुःखी व दरिद्रीनहींथी जब राजाने शास्त्रकेअनुसार श्यामकर्णघोड़ाछोड़कर सेना अपनी उसके साथ करदी तब वह घोड़ा सातोंद्वीप में फिरकर चलाआया किसी दूसरेराजाको ऐसीसामर्थ्य नहींहुई जो राजापृथुका घोड़ा बांधिसके सब राजा उनके आधीन रहकर अपने २ देशकापैसा उनकोदेतेथे जब इसीतरह राजाने निन्नानबे यज्ञ सम्पूर्णहोने उपरांत सौवांयज्ञ आरम्भकरके श्यामकर्ण घोड़ाछोड़ा तब इन्द्रने चिन्ता करके विचारा कि सौवांयज्ञ सम्पूर्णहोनेमें राजापृथु मेरा इन्द्रासन छीनलेवैंगे इसलिये यह घोड़ा लेनाचाहिये जिसमें सौयज्ञ सम्पूर्ण न होनेपावें ऐसाविचारकर इन्द्र अपने बेटेसेबोला कि तू जाकर यह घोड़ा किसीतरहपकड़के हमारेपास लेआव जब इन्द्रकाबेटा वास्तेपकड़ने घोड़ेकेआया तब उसकेसाथ बड़े २ योद्धादेखकर डरसे घोड़ा धरनेनहीं सका व इन्द्रकेपास जाकरकहा कि मेरीसामर्थ्यनहीं जो घोड़ा पकड़सकूं तुम्हें बलहोतो पकड़लाओ यहबचन सुनकर इन्द्रनेबिचारा कि राजापृथु बड़े धर्मात्मा व बलवान्हैं उनसे सन्मुखलड़कर हम घोड़ालाने नहींसक्ते कुछ छलकरके घोड़ालानाचाहिये ऐसा बिचारने उपरान्त इन्द्र योगीकारूपबनकर घोड़ेकेपासगया जब राजाकेनौकरोंने योगी समझकर उसको वहांजानेसे मनानहीं किया तब इन्द्र उसघोड़ेकी बागपकड़कर आकाश मार्गसे अपनेलोककोलेचला जब राजाके मनुष्योंने जो उड़नेकी सामर्थ्य नहींरखतेथे यह

हालदेखा तब राजासे जाकरकहा कि महाराज एक मनुष्य योगीरूपबनकर घोड़ा आकाशमें उड़ालेगया यहबचन सुनतेही राजाने ब्राह्मणोंसे पूंछा कि तुमलोग अपनी ज्ञानदृष्टिसे बिचारकरो वहयोगीकौनथा जो घोड़ा हमारालेगया ब्राह्मणोंने देवदृष्टिसे देखकरकहा हे राजन् घोड़ा तुम्हारा इन्द्र इसडरसे अपनेलोकमें लियेजाताहै कि सौ यज्ञ सम्पूर्णहोनेसे इन्द्रासन मेराछूटजावेगा यहबचन सुनकर राजाबोले मैं इन्द्रलोक लेनेकी कुछ इच्छानहींरखता परन्तु इन्द्र जो मेरायज्ञ बन्दकरना चाहताहै इसलिये घोड़ा अवश्य मँगवानाचाहिये यहबात ब्राह्मणोंसे कहकर राजाने बिजिताश्व अपनेपुत्रको आज्ञादी कि तू अभीजाकर घोड़ा लेआव व अत्रिमुनिको उसकेसाथ करदिया जब वह दोनों वहांसे उड़तेहुये इन्द्रलोककेपास पहुँचे तब ऋषीश्वरने घोड़ा लियेजाते देखकर बिजिताश्वको दिखलादिया राजकुमारने इन्द्रको घोड़ासमेत देखतेही सरवन्तनाम बाण धनुषपर धरकर जैसेचाहा कि इन्द्रकी छातीमेंमारै वैसे इन्द्र अपने प्राणके डरसे घोड़ा वहां छोड़कर अन्तर्द्धानहोगया बिजिताश्वने घोड़ा पृथुकेपासलाकर हाल भागनेइन्द्रका कहदिया जब इन्द्रघोड़ा छीनजानेसे बहुत लज्जितहुआ तब अपनीमायासे अँधियारा उत्पन्नकरके कईबार धोखादेके घोड़ा चुरालेगया पर बिजिताश्व पृथुकाबेटा जाकर छीनलाया जब इन्द्रने कईबेर घोड़ा छीनजानेपर चुरानाउसका न छोड़ा तब राजापृथुने क्रोधवन्तहोकर अपना धनुषबाण इन्द्रकेमारनेवास्ते उठाया उससमय यज्ञकरनेवाले ऋषीश्वरोंने राजाको समझाया कि हे पृथ्वीनाथ तुमने सौ अश्वमेधयज्ञका संकल्पकिया है क्रोधकरनेसे संकल्पमें बिघ्नहोगा व इन्द्र अमृतपीनेसे किसीतरह मरनहींसक्ता जब ऋषीश्वरोंके समझानेसे राजाकाक्रोध शान्त नहींहुआ तब ब्रह्माजीने नारदमुनिसमेत यज्ञशालामें आनकर राजासेकहा कि तुम इन्द्रकेमारनेकी इच्छामतकरो तुम्हारेहाथ उसकी मृत्युनहीं है तुम्हें इन्द्रासनलेनेकी इच्छाहोतो उसको इन्द्रपुरीसे निकालकर वहां का राज्यभोगो व मुक्तिकी चाहनारखतेहो तो सौवांयज्ञमतकरो जितने यज्ञ तुमनेकिये हैं उन्हींयज्ञोंके करनेमें परमेश्वर तुमको दर्शनदेकर मुक्तिपदवीदेवेंगे व तुम्हारे यज्ञकरने का हाल संसारीलोग सुनकर शुभकर्म्मकरैंगे व इन्द्रके भुलावादेनेका समाचारपाकर कलियुगबासीलोग पाखण्डरचैंगे जब ब्रह्माजीके समझानेसे राजापृथुने क्रोध अपना क्षमाकिया तब ब्रह्माजी नारदमुनिसमेत अपनेलोककोगये तब राजा ब्राह्मणोंसे बोले मैं इन्द्रलोककी कुछ इच्छानहींरखता निन्नानबेयज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्णहुये एकयज्ञबाकी है वह मैं नहींकरूंगा यही पूर्णाहुति अग्निकुंडमें डालदेव जैसे ऋषीश्वरोंने मंत्रपढ़कर पूर्णाहुतिकिया वैसे ब्रह्माने नारायणजीकेपास जाकरकहा महाराज एक इन्द्रकेसामने दूसराकोई सौयज्ञकरनेनहींसक्ता व राजा पृथु परमभक्तकासंकल्पझूंठाहोना न चाहिये व आप सबबातकेमालिकहैं जैसाउचितहो वैसाकीजिये यहबचनसुनतेही परमेश्वरत्रिलोकीनाथ ब्रह्मा व इन्द्रको अपनेसाथ गरुड़पर बैठालकर पूर्णाहुतिडालनेकेसमय उस

यज्ञशालमेंपधारे उन्हेंदेखतेहीराजापृथु व सबब्राह्मण व ऋषीश्वरखड़ेहोकर बैकुंठनाथको दण्डवत्करके स्तुतिकरनेलगे ॥

बीसवां अध्याय ॥

राजापृथुका सबराजाओंको अपनेमकानपर बुलाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित नारायणजी राजापृथुके स्तुतिकरनेसे प्रसन्नहोकरबोले हे राजा तुम्हारेसौयज्ञसम्पूर्णहुये हमतुमसेबहुतप्रसन्नहैं कुछबरदानमांगो व तुम इन्द्रका अपराधक्षमाकरके इससे किसीबातकाविरोधमतरक्खो किसवास्ते कि आत्माकोआत्मासे शत्रुताकरना न चाहिये सब छोटेबड़ेजीवोंमें आत्माएकहोकर शुभ व अशुभकर्म्मकरने से भला व बुराकहलाताहै सो तुम दया व धर्मसेरहकर प्रजाकापालनकरो तुम्हें सन-कादिकऋषीश्वरआनकर ज्ञानउपदेशकरेंगे यहबचन त्रिलोकीनाथसेसुनकर राजापृथुने विधिपूर्वकउनकी पूजाकरके हाथजोड़कर विनयकिया हे दीनदयालु मैं किसीके साथ शत्रुता व इन्द्रलोक या दूसरीबस्तुलेनेकी कुछचाहना न रखकर केवलयहीचाहताहूं कि तुम्हारेचरणोंकी भक्ति व प्रीति मेरेहृदयमें बनीरहै व तुम्हारायश गुणमुझे दशहजारकानों के समानसुनिपड़ै और आप लक्ष्मीजीसेभी अपनेभक्तोंको अधिकप्याराजानते हैं जिसने तुम्हारीभक्तिका सुखपाया वहमनुष्य संसारी मायामोहमें नहीं फँसता सो मुझे तुम्हारे चरणोंकीभक्ति व प्रीतिचाहिये यहबचनसुनतेही नारायणजी प्रसन्नहोकर बोले हे राजा तुममेरे परमभक्तहो तुम्हारीसबइच्छापूर्णहोगी जब त्रिलोकीनाथऐसाकहकर बैकुंठपधारे व ब्रह्मास्थानपरगये और राजाकायज्ञसम्पूर्णहुआ तब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको बहुतसादान व दक्षिणादेकरबिदाकिया व इन्द्रसे प्रीतिरखकर साथधर्मकेप्रजापालन व राज्यकरनेलगे उनकेराज्यमेंकभी ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने किसीपर क्रोध नहींकिया व सब छोटेबड़े सुख व आनन्दसेरहतेथे कुछदिन उपरांत राजाने विचारा कि हमारेराज्यभरे में सब छोटे व बड़े चारोंवर्ण परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके हरिकथासुनते और अशुभकर्मों से रहितहोकर साधु व ब्राह्मणकी भक्तिकरते तो अच्छाहोता ऐसा बिचारकर उन्होंने सातों द्वीपकेराजा व ऋषीश्वर व ब्राह्मण व महात्मा व चारोंवर्णके लोगोंको नेवता भेजदिया सो थोड़ेदिनोंमें सबलोग राजापृथुके यहांआनकर इकट्ठेहुये राजाने उनका सन्मानकिया कि सब प्रसन्नहोगये ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

राजापृथुका सब राजाओं से भगवद्भजन अपने २ राज्यमें फैलावनेकेवास्ते कहना ॥

मैत्रेयजीने विदुरसेकहा कि जब राजापृथुसबराजोंका शिष्टाचार खिलाने पिलाने व नाचरंग दिखलाने से करचुके तब सबराजा व प्रजा व ऋषीश्वरोंको सभामें बैठालकर बोले कि एकबस्तु हम तुमलोगोंसे मांगते हैं पर दबावकरके नहींकहते तुमलोग दया करके अपनीप्रसन्नता से हमको देव तो हमतुम्हारा बड़ा उपकारमानैंगे यह दीनवचन

सुनकर सबराजाओं ने हाथजोड़कर विनयकिया हेपृथ्वीनाथ हमारातनु व धन स्त्री व पुत्र सब तुम्हारेऊपर नेवछावर हैं जो आज्ञादेव सो करैं तब राजापृथुबोले मैं चाहताहूं कि सातोंद्वीपमें जितनेमनुष्य छोटे व बड़े स्त्री व पुरुषचारोंवर्णके हैं भक्ति व पूजा जप व स्मरण नाम नारायणजीकाकियाकरैं जिसराजाकेदेशमें प्रजालोग जो धर्म या पापकरते हैं उसकाछठवांभाग राजाकोपहुंचताहै सो परमेश्वरकाभजन व स्मरणकरना व भक्ति व प्रीति उनकेचरणों में रखना व अवतारोंकीकथा व लीलासुनना चारोंवर्णको अवश्य चाहिये हरिभजन व भक्तिकरना किसीवर्णकेवास्ते पृथक् नहींबना है चारोंवर्ण में जो कोई सच्चेमनसे स्मरण व भक्तिकरताहै परमेश्वर उसपरदयालुहोकर अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंपदार्थ उसेदेते हैं देखो शबरीभिल्लिनि का जूठाबेर दियाहुआ परमेश्वरने बड़े प्रेमसेखायाथा इसीतरहबहुतमनुष्य हरिभक्त बड़ीपदवीको पहुँचे हैं दूसरेराजोंके वक्त में और २ धर्म वर्ण व आश्रमकेप्रसिद्धथे अबहमारीइच्छायहहै कि मेरेसमयमें परमेश्वर का नामलेना व उनकीभक्तिकाप्रचारहोवे सो तुमलोग अपनी २ प्रजाको इसीतरह का धर्म उपदेशकरो राजाकोछठवांभाग अन्न जो खेतमें उपजताहै प्रजासे लेनाचाहिये सो हमने अपनाछठवांअंश प्रजाको छोड़दिया उसीमें सबलोग होम व दान कियाकरैं सिवाय उसके और जिस किसीको द्रव्यकी चाहनाहो वह मेरे यहांसे लेजाकर शुभ कर्ममें खर्चकिया करै हम इसमें बहुतप्रसन्नहैं जो धन धर्म में खर्चहो व दूसरे के काम आवै उसीको सफल जानना चाहिये व हरिभक्ति करने से मनुष्यकी सब कामना पूर्ण होकर मरने उपरान्त बैकुण्ठका सुख मिलताहै जिसतरह अग्नि काठमें रहकर उपाय किये बिना नहीं निकलती उसीतरह परमेश्वर सबके हृदयमें रहकर बिना भक्तिकिये व ज्ञान प्राप्तहुये दिखलाई नहीं देते व परमेश्वरका जड़मुख अग्नि व चैतन्यमुख ब्राह्मणहोकर नारायणजी जितना ब्राह्मणको भोजन खिलाने से प्रसन्नहोते हैं उतना यज्ञ व होम अग्निमें करने से प्रसन्ननहीं होते सो मैं उन्हीं ब्राह्मणों के चरणोंकी धूरि अपने मस्तकपर चढ़ाताहूँ जिनकी सेवा करने से मनुष्य तुरन्त अपना मनोरथ पाताहै जिस मनुष्यसे ब्राह्मणप्रसन्न हो उसको समझना चाहिये कि परमेश्वर इससे राजी हैं व जिसपर ब्राह्मण क्रोधकरै उसे परमेश्वर का शत्रु जानना उचित है यह बात सुनतेही सब ब्राह्मण व ऋषीश्वरों ने राजाको आशीर्बाद देकर कहा जब आप ऐसा धर्म्मात्माराजा हम लोगोंने पाया तब दुःखहमारे छूटगये सो सब राजाओंने अपने २ देशमें आकर पृथुकी आज्ञानुसार धर्म्मका प्रचार करदिया जब राजा पृथु धर्म्मात्माके उपदेश से सब संसारी मनुष्य सातोंद्वीपमें हरिचरणोंकी भक्ति व स्मरण नाम परमेश्वरका करनेलगे तब देवलोकमें यह समाचार सुनकर एकदिन सनकादिक ऋषीश्वरों ने ब्रह्माजीकी सभामें कहा मर्त्यलोकमें राजापृथु ऐसा धर्मात्मा उत्पन्न हुआहै कि जिसके उपदेशसे हरिभजन व भागवतधर्म्म संसारमें फैलगया उस

के धर्म्मसे सबलोग कृतार्थ होंगे सो हमभी उसराजाको देखने जाते हैं ऐसा कहकर वह चारोंभाई पृथुसे भेंट करनेवास्ते राजमन्दिरपर आये राजाउन्हें आकाशमार्ग्ग से सूर्य्यके समान आते देखकर अपनी सभासमेत उठखड़ाहुआ व दण्डवत् करके बड़े हर्ष व सन्मानसे सिंहासनपर बैठालकर चरण उनका धोया और विधिपूर्वक पूजन करने व चरणामृत लेने उपरान्त हाथजोड़कर विनयकिया महाराज मेरे पिछलेजन्म का पुण्य उदयहुआ जो आपने बिनाबुलाये अपना दर्शन देकर मुझे कृतार्थकिया यह दीनबचन सुनकर सनत्कुमारजी बोले हे राजा परमेश्वर से तेरी भक्ति सुनकर हम तुझे देखनेवास्ते आये हैं राजाने उनकी अतिदया अपने ऊपर देखकर पूंछा हे दीनबन्धु संसारी मनुष्य जन्म व मरणसे किसतरह छूटते हैं सनत्कुमारने कहा हे राजा तुमने जगत्काभला करने वास्ते यह बात पूँछी है सो उसका उपाय हम बतलाते हैं सुनो जो कोई मनुष्य तनु पाकर अन्तःकरण में श्यामसुन्दरके चरण व स्वरूपका ध्यान व जिह्वासे स्मरण व हरिचर्चा रखकर कानोंसे उनकीकथा व लीला साथप्रीति के सुनाकरै वह मनुष्य आवागमनसे रहित होताहै और प्रीति परमेश्वरमें दृढ़होजाने से फिर कम नहीं होती व साधु व महात्माके मिलने में दोनोंको लाभ होताहै संसारी में अपने शरीर व घर व स्त्री व पुत्रोंको अपना समझकर उनसे प्रीतिरखना यही दुःखकी फांसीजानो व परमेश्वरके चरणोंका ध्यान करने से ज्ञान प्राप्तहोताहै व काम क्रोध मोह लोभमें चित्त लगाने से ज्ञान नहींरहता यह बात बिचारकर मनुष्य को उचितहै कि कुसंगसे अलग रहकर सन्त व महात्मोंकी सेवा कियाकरै जिसमें उसका कल्याणहो सिवाय इसके दूसरा कुछ उपाय मुक्तिहोनेवास्ते नहीं है यहज्ञान सुनकर राजाने बिनयकिया हे तरणतारण महाराज आप जिसतरह कृपाकरके यहां आये उसीतरह दयालुहोकर ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि जिसमें सबप्रजा मेरी हरिभक्त होजावै और यह ज्ञान जो आपने मुझे उपदेशकिया इसके बदले तुम्हें कौनसी वस्तुदेऊँ कदाचित् अपना शिरदेऊँ तो वह ज्ञानकी बराबरी नहींरखता व जब मैंने शिरझुकाकर आप को दण्डवत्किया तब शिरदेने में कुछ बाकीनहीं रहा और सबधन व राज्यअपना मैं ब्राह्मण व बैष्णवकासमझकर उनलोगोंसे जो बचताहै उसकोअपने अर्थमें लाताहूँ इस लिये आपको कुछ देनहींसक्ता तुम्हारा ऋणीहूँ सो आपदयाकरके कोई ऐसाउपाय करैं जिसमें इसऋणसे उऋणहोजाऊँ सनत्कुमारजीने कहा हेराजा जिसतरह कोई किसी का ऋणियांहो व पावनेवाला ऋणका कहै कि हमने तुझे छोड़दिया तो वह उऋण होजाताहै उसीतरह हमने भी ऋणछोड़कर तुम्हें उऋणकरदिया सनकादिक ऐसाकहकर ब्रह्मलोकको चलेगये ॥

———

बाईसवां अध्याय ॥

राजापृथुका तपकरनेवास्ते अरुचि अपनी स्त्रीसमेत बनमें जाना ॥

मैत्रेयजीने कहा कि हे विदुर सनकादिकके जानेउपरान्त राजापृथुने उसीतरह साथ धर्म्म व प्रजापालनके बहुतदिनतक राज्यकिया पर वह सदासाधु व ब्राह्मणकीसेवा व हरिभजनकरके कथा व कीर्त्तननारायणजीकी सुनाकरते थे व सातोंद्वीपमें भगवद्भजन होताथा जब राजाके अरुचिनामस्त्रीसे विजिताश्व आदिक पांचपुत्रउत्पन्नहुये तबराजा ने कुछदिन उपरान्त बिचारकिया कि देखो यहराज्य व धन सदास्थिर न रहकर मरने उपरान्त साथनहीं जाता इसलिये उत्तमहै कि मैं इनसे विरक्तहोकर बनमें परमेश्वरका भजन व स्मरणकरूं जिसमें मेरापरलोकबने पृथुने यहबात बिचारकर राजगद्दीविजि- ताश्व अपने बड़ेबेटेको जो छत्तीसगुणोंका निधानथा देदी व मनअपना संसारी मायासे विरक्तकरके अरुचि अपनीस्त्रीसमेत बनमेंजाकर बीचतप व ध्यान परमेश्वरके लीनहुआ राजापृथुके चलेजानेसे सबप्रजाने बड़ाखेद किया ॥

तेईसवां अध्याय ॥

राजापृथुका साथयोगाभ्यासके तनुत्यागकरना व अरुचि उनकी स्त्रीका सतीहोना ॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर राजापृथुने बीचबनकेजाकर गर्मीमें पंचाग्नितापा व बरसातमें बीचमैदानके बैठेरहे जाड़ेमें पानीकेभीतर खड़ेरहकर परमेश्वरकातप व स्मरणकिया जब इसीतरह कुछकालस्त्रीसमेत तपकरते बीतगये तब एकदिन राजाने बिचारा कि अबयह तनुछोड़कर बैकुण्ठमें जानाचाहिये यहबातठानके मध्याह्नसमय राजापृथुने बीचध्यान आदिनिरंकारज्योति साथयोगाभ्यासके बैठकर ब्रह्माण्डकीराह प्राणअपना निकालदिया तब अरुचि उनकी स्त्रीने यहहाल राजाकादेखकर पहिले बहुतशोचकिया फिर मनको धैर्य्यदेकर उठी और बनमेंसे लकड़ीबटोरकर चिताबनाई व उसपरलोथ राजाकीधरकर आगिलगादिया व अपनेपतिका चरणदेखती हुई सातपरिक्रमा उस चिताकी किया और हाथजोड़के बोली कि महाराज मैं तुम्हारेबिना दूसरीजगह नहीं रहसक्ती मुझे अकेलीछोड़कर कहांचले जहां आपजाते हैं वहांमुझको भी अपनेसाथ सेवा व टहल करनेवास्ते लेचलो जिसमें तुम्हारीसेवा करनेसे मेरापरलोकबने यहबचनकहने उपरांत रानीभी उसचितामें कूदकर राजाकेसाथ सतीहोगई उससमय एकबिमान बहुतअच्छा जड़ाऊ जिसमें मखमली बिछौनाबिछे व मोतियोंकीझालरि लगीथी बैकुंठसे वहांपर आया सो राजापृथु अपनी स्त्रीसमेत उसपर बैठकर बैकुंठको चलेगये ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

देवतोंका पृथुकी स्तुतिकरना व विजिताश्वका साथधर्मके राज्यकरना ॥

मैत्रेयजीबोले हेविदुर जिससमय राजापृथु अपनी स्त्रीसमेत विमानपर बैठकरबैकुण्ठ

कोगये उससमय देवतालोग उनकी स्तुतिकरके आपसमें कहनेलगे कि देखो आज तक इसतरहका राज्य व प्रजापालन व तपस्या किसीराजाने नहींकिया औ न ऐसी पतिव्रतास्त्री अरुचिकेसमान दूसरीहोगी व राजाने अपनी राजगद्दी के समय ऐसाधर्म बढ़ाया कि सातोंद्वीपमें संसारीलोग हरिभक्तहोगये और वह इसलिये राज्यकाज करते थे कि जिसमें अधर्मियों व पापियोंको दण्डदेनेसे पुण्यप्राप्तहो व राजा पृथु जो नारायणजीकाअवतारथे संसारीराजाओंको धर्मउपदेशकरने व पृथ्वीपर नगर व गांवआदिक बसाकर जीवोंको सुखदेनेकेवास्ते शरीर धारणकियाथा इतनीकथा सुनाकर मैत्रेयजी बोले कि हेबिदुर जबराजापृथुका विजिताश्वबड़ाबेटा राजगद्दीपरबैठा तब उसने अपने चारोंभाइयों को चारोंदिशाका राज्यबांटदिया व निजराजगद्दीपर आप बैठकर साधधर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगा उसकेराज्यमें भी सबप्रजासुखी रहतीथी इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित एकबेर वशिष्ठजीने तीनतरहकी अग्निको एक जिसमें ब्राह्मण हवनकरते हैं व दूसरी रसोईबनावनेकी व तीसरी जो काष्ठमें रहती है शापदियाथा कि तुम मर्त्यलोकमेंजाकर बीचतनुमनुष्यके जन्मलेव सो उसशापसे उन तीनों अग्निने संसारमें आनकर राजाविजिताश्वके यहां शिखण्डिनीनामस्त्रीसे जन्म लिया सो राजाने पावक व पुमान व शुचि उनकानामरक्खा वइलोग थोड़ेदिन संसार में रहकर तनुछोड़ने उपरांत फिर अग्निदेवताहोगये व राजाविजिताश्वके प्रसूतिनाम दूसरी स्त्रीसे हविर्द्धाननाम बेटाउत्पन्नहोकर बिवाह उसका हविर्द्धानीनाम अग्निकी कन्या से हुआ सो हविर्द्धानके उसीस्त्रीसे प्राचीनबर्हिषआदि छः बेटेउत्पन्नहुये प्राचीनबर्हिष के यहां सत्यवतीनामस्त्रीसे जो अतिसुन्दरीथी दशबालक एकरूपके जिन्हेंप्रचेताकहते हैं जन्मे शरीर उनका दशलड़कोंकी तरह जुदा २ होकर रूप व ज्ञान सबका एकथा इसवास्ते दशोंकानाम प्रचेतारक्खा एककोबुलाओ तो दशोंबोलैं उनमें एक जोकाम करे वहीदशोंकरैं एकके बीमारहोनेसे दशोंमांदेहोजावैं प्रत्यक्षमें वइदशौ अलग २ होकर बुद्धि व प्रारब्ध व कर्म व मृत्यु व जीवन सबका एकसाथथा जबउन्होंने अपनेपिता की आज्ञासे बनमेंजाकर दशहजारवर्ष परमेश्वरकी तपस्याकी तब महादेवजी व उन से बहुतज्ञान चर्चा हुई ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

महादेव व प्रचेतोंका संवाद ॥

बिदुरजीने इतनीकथासुनकर मैत्रेयऋषीश्वरसे पूंछा जोकुछ ज्ञानचर्चा महादेवजी व प्रचेतोंसे हुई थी वहवर्णन कीजिये मैत्रेयजीनेकहा जब कि प्रचेतालोग उत्पन्नहुये तब प्राचीन बर्हिषने उन दशोंपुत्रोंको आज्ञादी कि पहिले तुमलोग बनमेंजाकर परमेश्वर का तपकरो भगवान्का दर्शनहोने उपरांत नारायणीसृष्टि संसारमें उत्पन्नकरना प्रचेता

लोग यहबचन सुनतेही घरसे निकलकर पश्चिमदिशामें समुद्रके निकट चलेगये उनको वहांएकस्थान बहुतरमणीक तालाबके किनारे दिखलाईदिया सो उन्होंने वहां बैठकर आपसमें बिचारा कि हमनहीं जानते नारायणजी कौनहैं और किसतरह उनका तप व स्मरण करना चाहिये वहलोग इसीचिन्तामें बैठेथे कि उसीसमय कुछबोली मनुष्यकी उनको सुनाईदेनेलगी तब उन्होंने आपसमेंकहा यहांकोई दिखलाई नहींदेता यह कौनबोलताहै यहीचर्चाकररहेथे कि महादेवजी उसीतालाबमेंसे निकलकर वहां आये उनकेसाथ देवतालोग स्तुतिकरते व गन्धर्वगातेथे जब प्रचेतालोग उनको नहीं पहिंचानकर उसीतरह बैठेरहे तब शिवजीनेकहा हे प्रचेतो हम महादेवहोकर तुमलोगों को ज्ञान सिखलानेवास्ते यहांआयेहैं कि भजन व स्मरण नारायणजीका इसतरहसेकरो जिसमें उनकादर्शन तुमकोप्राप्तहो और मैं जिसतरह परमेश्वरको जानताहूं उसीतरह नारायणजीकेभक्त मुझे प्यारेहैं सो मैं तुम्हें हरिभक्त समझकर ज्ञान सिखलाताहूं यहवचन सुनतेही प्रचेतोंने बड़ेहर्षसे खड़ेहोकर शिवजीको दण्डवत्किया व बड़े सन्मानसे बैठा-लकर विनयपूर्वक उनकी स्तुतिकरनेलगे तब शिवजीने हंसगुह्यस्तोत्र नारायणस्तुतिका प्रचेतोंको सिखलाकरकहा तुमलोग नित्य प्रातःकाल व सन्ध्यासमय और स्नानकरने उपरान्त यह स्तोत्रपढ़कर नारायणजीकीस्तुति व चतुर्भुजी स्वरूपका ध्यानकियाकरो परमेश्वर तुम्हें जल्दीमिलैंगे सो हे प्रचेतो मैं दिनरात यहीकामरखकर हरिभक्त व ज्ञानियोंकादर्शन कियाकरताहूं व जो लोग अपनेअज्ञानसे परमेश्वरके भजन व स्मरणमें चाहनानहींरखते उनकोज्ञान सिखलाकर सौजन्मतक कृतार्थकरदेताहूं बीचधर्म व वर्ण अपने जैसा ब्राह्मण व क्षत्री व वैश्य व शूद्रकेवास्ते वेद व शास्त्रमें लिखाहै दृढ़रहकर वैसा कर्मकरैं व पाप व अधर्मके निकट न जावैं वे मनुष्य सौजन्मतक महादेवरहकर फिर चतुर्भुजीरूप परमेश्वरको पातेहैं इसतरहका धर्म्म व हरिभक्ति करनेवाले मनुष्य दूसरी बातका कुछ प्रयोजन नहींरखते महादेवजी यहज्ञान प्रचेतोंको सिखलाकर कैलासको चलेगये ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

नारदजीका प्राचीनबर्हिष प्रचेतोंकेबापसे भेंटकरना ॥

दो० साधन यज्ञ अनेकसे सरै न एकौकाम ।
बिनाभक्ति भगवन्तकी जीव न लह बिश्राम ॥

मैत्रेयजीनेकहा हे विदुर प्रचेतालोग साधु व वैष्णवकीबड़ाई व परमेश्वरके मिलने का उपाय महादेवजीसे सुनकर आनन्दपूर्वक वोचपढ़नेस्तोत्र व करने ध्याननारायणजी के लीनहुये जब उनको दशहज़ारवर्ष हरिभजनकरते २ बीतगये तब परमेश्वरने प्रसन्न होकर दर्शनदेके बड़ेहर्षसे उन्हें बरदानदिया तिसपरभी वे लोग संसारी व्यवहार झूठास-मझकर उसीतरह परमेश्वरका तप व ध्यानकरतेरहे व प्राचीनबर्हिष उनकेपिताने बहुत

दिनोंतक संसारीसुख व राज्यभोगकर यहबात विचारकी कि राज्य व द्रव्य भगवान्जी की दयासेपाकर यहधन संसारीसुखमें खर्चकरना अच्छानहींहोता उसेयज्ञ व दानादिक में खर्चकरके अपनापरलोक बनानाचाहिये ऐसाविचारकर राजाने इतना यज्ञ व दान करना आरम्भकिया कि शास्त्रानुसार मध्यदेश भरतखण्डमें जिस २ स्थानपर यज्ञकरना उचितथा कोई जगह बिनायज्ञकिये बाकीनहींरही पर राजाकामन विरक्त न होकरवास्ते सुख इन्द्रलोक व स्वर्गकी चाहनारखताथा यहहाल उसकादेखकर नारदजीने विचारा देखोराजाकी आयुर्दा यज्ञकरते २ बीतिजायाचाहती है केवल यज्ञकरनेसे इसका परलोक नहींबनेगा यह राजापृथु धर्मात्माकेकुलमें उत्पन्नहुआहै इसवास्ते कुछज्ञान सिखलाकर इसे भवसागरपार उतारनाचाहिये यहबात विचारकर नारदमुनिमर्त्यलोकमें राजाके पासआये उन्हें देखतेही राजानेबड़ेहर्षसे दण्डवत्करने व आदरभावसे बैठालने उपरान्त हाथजोड़कर विनयकिया महाराज मेराभाग्य उदयहुआ जो आप ऐसे महात्मापुरुषने कृपाकरके मुझे दर्शनदिया नारदजी हँसकरबोले हे राजा सचबातहै तेराबड़ा भाग्यथा जो तू मनुष्य तनुपाकर भरतखण्डके प्रजोंका राजाहुआ व तुमने इसभरतखण्ड कर्म्म भूमिमें यज्ञआदिक बहुतधर्म्म व कर्म्मकिया जहांकी इच्छाकरके रास्ताचलै उसठिकाने पहुंचनाचाहिये व कदाचित्चलते २ रास्तामेंआयुर्दापूरीहोजावै व अपनेस्थानपर न पहुंचै तो उसराह चलनेसे सिवाय थकनेके क्यालाभहोगा यहवचन नारदमुनिका सुनतेही राजानेबड़ा आश्चर्य्यमानकरकहा देखो वेद व पुराणमें यज्ञ व दानकरनेका बड़ापुण्य वर्णन कियाहै उससे अधिक दूसराधर्म्म नहींलिखता व नारदजी ऐसाकहते हैं इसका क्याभेद है राजा यहबात विचारकर चिन्ताकरनेलगे ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

प्राचीनराजावर्हिषका जीवोंको स्वरूपदेखना जिनकोमारकर यज्ञमेंहवनकियाथा ॥

नारदजीने राजाकेमनकीबात अपने ज्ञानसेसमझकर विचारकिया कि जबतक राजा को कुछ डर न दिखलावैंगे तबतक मन उसका यज्ञकरनेकी तरफसे फिरनहींसक्ता ऐसा बि-चारकर नारदमुनिने अपनेयोगबलसे जितनेपशु राजाने यज्ञमेंमारेथे उनसबोंको आकाश में राजाकेसामने लाकरखड़ाकरदिया जब वे सबजीव राजाको घूरनेलगे तब नारदजी बोले हे राजा यहसब जानवर तुमको क्यादेखरहेहैं जैसे राजाने आकाशकीतरफ आंख उठाकर उनको क्रोधसे अपनीतरफ घूरतेदेखा वैसे मारेडरके कांपताहुआ नारदजीसे बोला हे मुनिनाथ मैंने इनसबपशुओंको मारकर यज्ञमेंहवनकिया सो ये सब किसवास्ते मुझे क्रोधसेदेखतेहैं आपकृपाकरके इसकाकारण वर्णनकीजिये जिसमें मेराडर व सन्देह छूटजावे यहवचन सुनकर नारदजीबोले हे राजन् जिसतरह तुमने इनजीवोंको मारके यज्ञमें हवनकिया उसीतरह तुमकोभी यहसब पशु एक २ जन्ममें मारकर बदला अपना

लेवैंगे यहवचन सुनतेही राजाको इसबातका बड़ाशोचहुआ कि जितने जीव मैंने मारे हैं उतने जन्ममुझे लेनेपड़ैंगे तब इनके बदलेसे मैं उऋणहोऊंगा मुझसे बड़ी चूकहुई जो इतनेजीवोंको मारकर हवनकिया ऐसा बिचारकर राजाबोला महाराज जितने पण्डित व उपरोहित व मंत्रीलोग मेरेयहांहैं सबोंने मुझको यहमत दियाथा कि यज्ञकरनेसे उत्तम दूसराधर्मनहीं है और आप मुझे इसमें डर दिखलातेहैं इसकाकारण कहिये उससमय राजाके निकट एकपिंजरा मैना व एकपिंजरा तोतेका रक्खाहुआ देखकर नारदजीबोले हे राजन् यहतोता मैनासे बारंबारकहताहै कि तू मुझको इसपिंजरे से निकालदे तो मैं बन्दीसे छूटकर बनमें पक्षियोंकेसाथ विहारकरूं व मैनाकहतीहै हे तोते मैंभी चाहतीहूं कि कोईमुझे इसपिंजरेसे बाहर निकालदेता तो अपनेसाथियोंमें जाकर खुशीमनाती सो दोनों आपसमें एकदूसरेसेकहते हैं पहिले तुमउड़ो पर उड़नेकीसामर्थ्य नहीं रखता जो दूसरे को पिंजरेसे बाहर निकाले यहबात सुनकर राजाबोला हे मुनिनाथ यहदोनों आप पिंजरे में बन्दहैं किसतरह एक दूसरेको निकालनेसकैं जब उनमें एक पिंजरेके बाहर हो तब दूसरे के निकालने का उपाय करै नारदजी बोले हे राजन् इसीतरह तुम्हारे पण्डित व उपरोहित व मन्त्रीलोगभी संसाररूपी मायाजालके पिंजरेमें पड़े रहकर क्या सामर्थ्य रखते हैं जो तुम्हें इस संसाररूपी जालसे बाहर करसकैं यहबात सुनकर राजा समझा कि आजतक ऐसा ज्ञानी मुझको कोईनहीं मिला जिसका बचन सुनने में मुझे ज्ञान प्राप्तहोता ऐसा विचारकर राजाने बिनयकिया महाराज आपकोई ऐसा उपाय बतलावें जिससे इन जीवोंके हाथसे बचकर मुक्तिपदवी पाऊँ यहबात सुनकर नारदजी बोले हे राजन् हम एक इतिहास तुमसे कहते हैं सुनो एक पुरंजननाम राजा अविज्ञात अपने मित्रसे बड़ी प्रीति रखताथा व किसी दूसरेको यहबात नहीं मालूमथी व अविज्ञात सबतरहसे राजाके खाने व पहिरने व सुख व आरामकी सुधि लेताथा एकसमय राजापुरंजन अपनी इच्छासे अविज्ञातका साथ छोड़कर किसीदूसरे स्थानमें जानेवास्ते इच्छाकरके चला सो वह पूर्व व पश्चिम व उत्तर तीनोंदिशा में ढूंढ़ता व घूमताहुआ बहुत दिनतक व्याकुलरहा इच्छापूर्वक कोई स्थान रहनेयोग्य उसे नहींमिला जब वह दक्षिणदिशामें पहुँचा तब एक मकान क़िलेकेसमान बहुतअच्छा नव दरवाजेका दिखलाईदिया उसके चारोंतरफ़ नहर व बाग व फल व फूल व मेवोंके वृक्षरहकर अनेक रंगके पक्षी मीठी २ बोली बोलनेवाले बैठेहुये चहचहा मचारहेथे वहां सबतरह का सुख देखकर राजापुरंजन उस मकानमें रहनेकेवास्ते इच्छाकरके भीतरचला द्वारपर पहुँचकर क्या देखा कि एक युवती स्त्री महासुन्दरी अनेकप्रकारके भूषण व वस्त्र धारणकिये वहां टहलरही है और दशसहेलियां उसके साथ सेवा व टहलकरने वास्ते थीं व उससे थोड़ीदूर आगे एक सांप पांच फणका दरवाजे पर बैठाहुआ दिखलाई दिया राजापुरंजन उस स्त्रीको देखतेही उसके रूपपर मोहित होगया ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

राजापुरंजनका उस स्त्रीसे विवाहकरके सुख व बिलास करना ॥

नारदजी बोले हे प्राचीनबर्हिष जब राजा पुरंजनका चित्त उस स्त्री पर मोहित होगया तब उसके पास जाकर प्रेमसे पूँछा हे सुन्दरी तुम देवकन्या व लक्ष्मीकेसमान किसकी बेटी व स्त्री होकर किस इच्छासे यहां टहलतीहो तुम्हारी आंखोंके बाणसे मन पुरुषोंका घायल होजाताहै और यह मकान किसनेबनाया और इसमें कौन रहता है यह मीठा बचन सुनतेही वह स्त्री मुसकराकर बोली हे राजन् मैं अपने माता व पिता का नाम नहीं जानती कि किसकी बेटीहूं व अभीतक मेरा विवाह नहीं हुआ इस लिये मुझे शादी करनेकी चाहनाहै व नहीं मालूम यह मकान किसने बनाया पर मैं यहां रहतीहूँ जो कोई मेरेसाथ विवाहकरै वहभी इस किले में रहै और यह सांप मेरे दरवाज़े पर रक्षाकरने के वास्ते रहताहै यह बचन सुनतेही राजापुरंजनने बहुतप्रसन्न होकर कहा अय प्राणप्यारी मुझे अंगीकारकरो तो मैं तुमसे ब्याह करने में बहुत प्रसन्नहूं तुम्हारेसाथ विवाह करके इस स्थानमें रहकर भोग व विलास करूँगा वह सुन्दरी हँसकर बोली हे राजन् तुम्हारा ऐसा सुन्दर रूप देखकर कौन स्त्री मोहित न होगी जब इसतरह दोनोंसे बातचीत हुई तब राजापुरंजन उसके साथ क़िलेमें जाकर गन्धर्व्वविवाह करके भोग व बिलास करनेलगा व राजा ऐसा उसके साथ वश्य होगया कि दिन रात उसकी आज्ञामें रहकर बिना पूँछे कोईकाम नहीं करताथा जब पुरंजनके उस स्त्री से बहुतबेटी व बेटे उत्पन्नहुये तब राजा उनका बिवाह करने उपरान्त एक दिन बिना पूँछे उस स्त्री के रथपर सवारहुआ व शिकार खेलने वास्ते बनमें जाकर बहुतसे पशु मारे इसलिये रानी क्रोधमें भरकर मैलीधोती पहिनके कोप-भवनमें पड़रही जब राजा शिकारमें दौड़धूप करनेसे प्यासाहोकर अपने मकान पर आया तब उसने पानी पीने उपरान्त दासियों से रानीका हाल पूछा सो उन्होंनेकहा न मालूम आज कौनसा दुःख रानीको उत्पन्नहुआ जो गहना व कपड़ा उतारकर पृथ्वीपरपड़ी हैं यह वचन सुनतेही राजाने बड़े डर व शोचमें दौड़ेहुये रानीके पास जाकर प्रेमसे पुकारा जब वह मारे क्रोधके कुछ नहीं बोली तब राजा बड़ी बिनती से उसका चरणदाबकर कहनेलगा हे प्राणप्यारी तू किसवास्ते मुझसे नहीं बोलती मैंने कौन वस्तु तुझे न देकर किसबातमें तेरा कहना नहीं माना जो इतना दुःख उठाती है तेरी यहदशा देखने से मेरा कलेजा फटताहै तुझे मेरी सौगन्दहै जल्दी सच बतलादे तुझे किसी ने दुर्बचन कहाहो तो अभी उसको दण्डदेऊँ यह बचन सुन-तेही रानी क्रोधसे बोली यह सब तुम्हारा कसूरहै जो बिना मेरे पूँछे शिकार खेलने चलेगये थे इसीकारण उदासहूं तब राजापुरंजन रानीके पांवपर गिरकर हाथजोड़के

बोला मुझसे चूकहुई जो बिना पूँछे चलागया अब तेरी आज्ञाबिना नहीं जाऊंगा मुझे अपना दास समझके इसबेर मेरा अपराध क्षमाकर तेरे ऊपर न्योछावर होताहूँ तुम अपनी भुजासे मुझे बांधकर जो चाहो सो दण्डकरो जब ऐसी बिनती करने से रानी उठी तब राजाने अपने हाथसे उसका मुख धोकर शरीरकी धूरि झाड़दी व उसको गहना व कपड़ा पहिनाकर बहुत दिनतक उसके साथ भोग व बिलासकिया पर मन उसका मायारूपी जगत्से विरक्त नहीं हुआ जिसतरह तुझे संसारी चाहना बनी है उसीतरह राजापुरंजनको बुढ़ाईआने व इन्द्रियां शिथिलहोने परभी संसारका मोह लगाथा इतनाहाल पुरंजनका सुनाकर नारदमुनि बोले हे प्राचीनबर्हिष मृत्युनाम कालकी बेटी अपना पति ढूँढ़ने वास्ते सब जगह जातीथी पर उसे मृत्युजानकर कोई अंगीकार नहीं करताथा सो वह एक दिन मेरेपास आनकर कहनेलगी तुम मेरे साथ व्याहकरो जब मैंने नहींमाना तब उसने क्रोधकरके मुझे शापदिया कि तुम एक मुहूर्त्त से अधिक किसीजगह नहीं रहकर दिन रात फिरते घूमतेरहो अढ़ाई घड़ी से सिवाय कहीं ठहरोगे तो तुम्हारा शिरदूखैगा जब उसने मुझको ऐसा शापदिया तब मैंने उसे यह उपाय बतलाया कि तू जाकर प्रज्वारगन्धर्व्वकी बहिन होजा उसके बड़ीसेनाहै वह नित्य एकपुरुष पकड़कर तुझसे भोगकरनेकेवास्ते दियाकरैगा यहवचन सुनतेही वहकन्या प्रज्वार गन्धर्वसे जाकरबोली मैं तुम्हारी बहिनहोनेवास्ते आईहूँ गन्धर्व बोला बहुतअच्छा तुम यहांरहो फिरप्रज्वारने जरानामकुटनीको बुलाकर कहा तू इसकेवास्ते एकमनुष्ययुवा व सुन्दरठहरावतो हमइसकाव्याह उससेकरदेवें इतनीकथासुनाकरशुकदेवजी बोले हेराजन् कदाचित् कोईकिसीको कुछचीज़अपनी खुशीसेदे और वह न लेवे या धन पाकरदान व पुण्य न करे वहमनुष्य पीछेसे दुःखपाताहै व परमेश्वरने मृत्युकी अवधि इसवास्ते नहीं रक्खी जो मनुष्यको अपनी मृत्युकाहाल मालूमहोता तो वहअधर्मकरना छोड़कर विरक्तहोजाता इसलिये अपनीमायासे यहबात परमेश्वरने गुप्तरक्खी है ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

प्रज्वारका अपनी सेनालेकर पुरंजनके मारनेके वास्तेजाना ॥

नारदजी बोले हेराजन् जब जरानामकुटनीने जाकर प्रज्वारगन्धर्वसे कहा कि राजा पुरंजन इसके विवाहकरने योग्यहै तबप्रज्वारने तीनसौसाठ गन्धर्व व तीनसौसाठ गन्धर्विनी सेनाको साथलेके राजापुरंजनसे लड़नेकेवास्ते जाकर उसकाकिला घेरलिया तबवहसांप जो द्वारेपर पांचफणका रहताथा गन्धर्वोंसे युद्धकरनेलगा व उन्हें भीतरजाने नहींदिया जबवहसांप अकेला लड़ते लड़ते थकगया तब उदासहोकर कहनेलगा देखो मैं इतनेदिन शत्रुसेलड़ा परमेरास्वामी भोग व बिलासमें ऐसाआसक्त है जिसने कुछ भी मेरी सहायता नहींकी जबइसतरह शोचकरने व लड़नेसे वहसांपथकगया व एक

खुखलेवृक्षमें जाघुसा तब प्रज्वारगन्धर्व उसकिलेमें आगिलगाकर भीतरचलागया जब आगिलगनेसे पुरंजन व्याकुलहोकर अपनाप्राण बचाने न सका तब अपने कुटुम्बकी रक्षा क्याकरैगा उससमय पुरंजननें उदासहोकर बिचारा कि किसीतरह मेराप्राणबचता तो अच्छा था पुरंजनीकाबचना तो बहुतकठिनहै उसीचिन्तामें राजापुरंजन जलकर मरगया सो मलयदेशमें राजाविदर्भकी बेटीहुआ व कारण स्त्रीहोनेका यहहै कि मरती समय पुरंजनीमें उसका ध्यानलगाथा इसलिये स्त्रीकातनुपाया व पांचालदेशमें मलयध्वजराजासे जो बड़ाधर्मात्माथा ब्याह उसकाहुआ सो बहुतदिनतक उसने गृहस्थीका सुखउठाया व सातबेटे व कईपोते उत्पन्नहुये॥

तीसवां अध्याय॥

राजामलयध्वजका मरना व पुरंजनका अविज्ञात अपने मित्रसे भेंटकरना॥

नारदजीने कहा हे प्राचीन बर्हिषमलयध्वज बहुतादिन राज्यकरके अगस्त्यमुनिसे ज्ञानसीखकर संसारीमायासे विरक्तहोगये व राजगद्दी अपने बेटेकोदेदी व स्त्रीसमेतबन में जाकर बहुतदिन हरिभजनकरके जब शरीर अपना त्यागकिया तब रानीचिताबनाने व लोथराजाकी उसपर रखनेउपरांत दाहकरनेकेवास्ते तैयारहुई पर मोहबश आगि नहीं लगाकर अतिविलाप करनेलगी तब अविज्ञात उसके पुरानेमित्रने वहांआनकर उसे पहिंचाना कि यह वही पुरंजनहै जिसने मेरासाथ छोड़कर पुरुषसे स्त्रीकातनुपाया यह दशा उसकी देखकर अविज्ञातने दयाकरके जब स्त्रीरूप पुरंजनसे पूछा तू किसवास्ते इतनारोती है और यहतेरा कौनथा जो मरगया मुझको तैंने पहिंचाना या नहीं तब रानीबोली मैं तुझे नहीं पहिंचानती व यह मेरापति मरगयाहै जिसकेशोचमें रोतीहूं यहबातसुनकर अविज्ञातने कहा तू पूर्वजन्म पुरंजननाम पुरुषथा और मैं अविज्ञातनाम तेरामित्रहूं सो तू मेरासाथछोड़कर घरसे निकलआया व एकस्त्रीके संग भोग व विलास संसारीसुखमें लिपटकर मुझे भूलगया इसलिये तैंने स्त्रीकातनुपाया इसमरनेकाशोच छोंड़ के पुरुषतनु मिलनेका उपायकरना चाहिये और हम व तुम दोनोंमनुष्य हंसरूपी जीवात्मा व परमात्मा मानसरोवरके किनारेके रहनेवाले हैं सो तू संसारीमोहमें फँसकरनष्ट होगया यहजीव मेरीमायासे चौरासीलाखयोनिमें अनेकप्रकारका तनुपाताहै यहवचन सुनतेही जब स्त्रीरूपपुरंजनको ज्ञानउत्पन्नहुआ तब उसने पतिकाशोच छोड़कर लोथ उसकी जलादिया व अविज्ञातकी आज्ञानुसार हरिभजनमें लीनहोकर वहशरीर छोड़ने उपरांत पुरुषकातनुपाया व अविज्ञातसे जामिला इतनीकथा सुनकर प्राचीनबर्हिषने नारदजीसे पूंछा कि महाराज मैं संसारीजीव इतनाज्ञान नहींरखता जो इसकथाकाअर्थ समझसकूं आपदयालुहोकर विस्तारपूर्वक इसकाहाल वर्णनकीजिये तब मेरी समझमें आवै यहवचनसुनकर नारदजीबोले हे राजा वह पुरंजन जीव और अविज्ञात नाम मित्र

परमेश्वरको समझना चाहिये जो इसजीवकीरक्षा सबजगहनरक व गर्भादिकमें करते हैं पर किसीको दिखलाई नहीं देते और यहजीव परमेश्वरका स्मरण व ध्यानछोंड़कर संसारीसुखमें फँसने व अपनेज्ञान से जैसाजैसा कर्मकरताहै वैसा वैसाजन्म चौरासी लाखयोनिमें पाकर इच्छापूर्वक उसतनुमें सुखीनहीं होता उसीतरह पुरंजन भी अविज्ञात का साथछोड़कर चौरासीलाख योनि में बहुत दिनतक भ्रमतारहा जिसतरह यह जीव मनुष्यकातनुपाकर प्रसन्नहोताहै उसीतरह पुरंजनभी किलेको देखकर बहुतखुशहुआथा व जैसे उसकिलेमें नवद्वारथे वैसे मनुष्यतनुमें कान व नाकादिक नवछिद्र इन्द्रियोंके हैं और शरीरमनुष्यकारथके समानहै जिसपर बैठकर पुरंजन शिकारखेलने गयाथा उस रथकेघोड़े इन्द्रियोंको समझना चाहिये जिसओर मनआदिक इन्द्रियां दौड़ती हैं वही मनुष्य करता और मनुष्यके अहंकारको यहसांप जो पुरंजनने किलेके दरवाजेपरदेखा था समझना उचितहै किसवास्ते कि मनुष्य बुढ़ाईसमय भी अपना अहंकार नहींछोड़ कर कहताहै कि हममरतेदमतक अपने लड़केबालोंका पालनकरैंगे और यहबात नहीं जानता कि सबके पालन करनेवाले परमेश्वरहैं मनुष्यकी बुद्धिको वह स्त्री जिसपर पुरंजन मोहितहुआथा समझना चाहिये जिसतरह मरतेदमतक बुद्धिमनुष्यके साथरहकर अपनी इच्छापूर्वक उससे कामकराती है उसीतरह पुरंजनने भी उस स्त्रीकेवश रहकर आयुर्दा अपनी बिताई व जैसे अज्ञानमनुष्य अपनीबुद्धि व करतबकेसमान परमेश्वर त्रिलोकीनाथ उत्पन्न व पालनकरनेवालेको भूलकर व पुराणकीबातोंपर विश्वास न रखने से अन्तमें दुःखपाताहै तैसे पुरंजन भी अविज्ञात अपनेमित्रकासाथ छोड़ने व बुद्धिरूपी स्त्रीका संगकरनेसे बहुत दुःखीहुआथा व जिसतरह मनुष्य परिश्रमकरनेपर भी अपना मनोरथ न पाकर पछताताहै उसीतरह पुरंजनने भी जलने व मरनेकेसमय चिन्ताकी थी व मनुष्यके तनुमें कामक्रोध लोभमोहादिक जो भरारहताहै उसको पुरंजनकापरिवार समझनाचाहिये जिसतरह बुढ़ाई मरनेवालेकी खबरकालके यहांजा करदेती है कि उस को मारलेव उसीतरह जरानामकुटनीने भी पुरंजनकी बुढ़ाईदेखकर प्रज्वारगन्धर्वसे उसके मारने के वास्ते कहाथा और वह कालकन्या मृत्युहोकर प्रज्वारगन्धर्व को अन्त समयका विषमज्वर जानना चाहिये व उसकेसाथ जो तीनसौसाठगन्धर्वथे उन्हें दिन व गन्धर्वियोंको रात्रिजानकर वहीकालकी सेनासमझो जिसदिन व रात्रिकेबीतनेसे आयुर्दा पूर्णहोने उपरान्त कालमारलेताहै व जिसतरह बुढ़ाईसमय इन्द्रियोंमें सामर्थ्य न रहकर लोहू व मांस शरीरका सूखजाताहै उसीतरह प्रज्वारगन्धर्वकी सेनानेजाकर पुरंजनका किला जलादियाथा व मरतेसमय जिसचीज़में मनुष्यका ध्यानलगारहता है मरने उपरांत वहीतनुपाताहै सो पुरंजनकाचित्त मरतेसमय पुरंजनीमें लगाथा इसलिये वह स्त्रीहुआ सो अबलाहोनेसे अपनेपतिकी आज्ञामेंरहकर दिन काटनेपड़तेहैं व जबतक इसजीवकी मुक्तिनहींहोती तबतक इसीतरह चौरासीलाख योनिमें जन्मपाकर दुःखसे

नहींछूटता जब वह अविज्ञातनाम मित्र जो ईश्वरहै दयाकरके मनुष्यतनुमें किसीसाधु व महात्मासे भेंटकरादे व उस महात्माके ज्ञान उपदेशकरनेसे मनुष्य हरिकथा व कीर्त्तन सुनकर अज्ञानछोंड़के हरिचरणोंमें प्रीतिकरै तब ईश्वरका भजन व स्मरणकरके जन्म व मरणसेछूटै जिसतरह पुरंजन अविज्ञातमित्रकीकृपासे पहिलातनु अपनापाकर मुक्तहुआ था सो हे राजा बिना ईश्वरकीदयासे साधु व महात्माकादर्शन व सत्संग मिलनाकठिन है व मनुष्य बिनासत्संग व सेवाकरने हरिभक्तोंके संसाररूपी जालसे निकल नहींसक्ता सो तुमने बहुतदिनतक राजगद्दीपर बैठकर संसारीसुखभोगा व बहुतसायज्ञ व दानकरके यशपाया अब तुम्हें उचितहै कि मन अपना विरक्तकरके हरिचरणोंमें प्रीतिलगाकर परमेश्वरका भजन व स्मरणकरो जिसमें तुम्हारा परलोकबनै व जबतक संसारीमोह छोड़कर हरिचरणोंमें भक्तिनकरोगे तबतक आवागमनसे छूटना बहुतदुर्लभहै सो तुम परमेश्वरकीकथा व लीलासुनकर साधु व महात्मासे सत्संगकरोगे तब तुम्हारा अन्तः करण शुद्धहोगा व इसदान व यज्ञकरनेसे संसारीलोग थोड़ेदिन देवलोकमें सुखभोगकर फिर जन्मलेनेसे दुःखपातेहैं और विरक्तहोने व भक्तिकरनेसे बैकुंठका सुख मिलताहै सो तुमको भक्तिकरनाचाहिये यहवचन सुनतेही राजाने हाथजोड़कर नारदजीसे कहा महाराज यहज्ञान आपने बहुतअच्छा बतलाया पर अभीतक हमारेबेटे जो तपकरनेवास्ते गयेहैं नहींफिरे वहलोग आवें तब उन्हें राजगद्दीदेके मैं बनमेंजाकर परमेश्वरकातप व ध्यानकरूं ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

नारदमुनिका एकबाग हरिणसमेत अपने योगबलसे प्राचीन बर्हिषको दिखलाना ॥

मैत्रेयऋषीश्वरनेकहा हे विदुर यहबात सुनतेही नारदजीने आश्चर्य्यमानकर बिचारा देखो मैंने इतनाज्ञान राजाको सिखलाया पर यहबिरक्त न होकर अभीतक इसे राजगद्दी का मोहलगाहै ऐसाविचारकर नारदमुनि अपनेयोगबलसे एकबाग आकाशमें तैयार करकेबोले हे राजन् हमकोएक बड़ा अचम्भामालूमदेताहै नेकऊपर तो देखो जैसे राजाने आंख उठाकरदेखा तो आकाशकीतरफ उसे एकबाग बहुतअच्छाफल व पुष्पलगाहुआ चारद्वारेका दिखलाईदिया और एकहरिण जंगली वह हरियाली देखकर कूदता व चौकड़ीमारता जब उसबागमें आनके घास व फल खानेलगा तब एक बहेलिया सब सामग्री शिकारकी साथलिये उस हरिणको पकड़नेकेवास्ते बागमेंपहुँचा व उसने एक द्वारेपर जाललगाकर दूसरे दरवाज़ेसे कुत्तेकोललकारा व तीसरेद्वारेपर आगिलगाकर चौथीडेवढ़ीपर आप धनुषबाण साधकर खड़ाहुआ और वह हरिण यहदशा देखनेपरभी कुछ डर न मानकर खुशीसेपत्ती व फल खाताथा राजा उसबाग व बहेलिया व हरिण को देखकर बोला हे मुनिनाथ एकबात बड़े आश्चर्य्यकी दिखलाईदेतीहै कि चारोंद्वारे-पर इसहरिणके मरनेका योग निकटपहुँचा तिसपरभी यहहरिण अपनेमरनेका भय न

रखकर आनन्दपूर्वक चरताहै इसचरनेसे इसको क्यागुणहोगा यहवचन सुनतेही नारदजी मुसुकराकर बोले हे राजा तेराभीतो यहीहालहै बुढ़ाईआनेसे तेरीसब इन्द्रियोंकी सामर्थ्यजातीरही व मृत्युकादिन निकटपहुँचा व पहिले जो तुझे युवा अवस्थाकी आशा थी सो न रहकर अब बुढ़ापा अधिकहोनेसे दिनरात तेरेबदनका लोहू व मांस इसतरह सूखाजाताहै जिसतरह पानी आगिकीगर्मीसे जलकर कुछ बाकी नहींरहता व मृत्यु तुझे पीछेसे कुत्तेकेसमान रपेटे आनकर मरनेकादिन व्याधारूपी धनुषबाणलिये तेरेसामने खड़ाहै उसके हाथसे तेराबचाव नहींहोसक्ता और तू संसारी मायामोहके जालमें ऐसा लिप्तहै कि यहसबहाल आंखोंसेभी देखकर तुझे अपनेमरनेका कुछ डरनहींहोता व संसारी सुख व राजगद्दीकी तृष्णा तुझको अबतकलगी है यहज्ञान सुनतेही जब राजाके रोमखड़े होगये तब वह भयमानकर ऐसासमझा कि मेराशरीर जलाजाताहै यहदशा अपनी देखतेही नारदमुनिके चरणोंपर गिरकर बोला महाराज आपने बड़ीकृपाकरके संसारी फंदेसे बाहर निकाला नहींतो मैं इसमाया व मोहके महाजालमें फँसरहाथा यहवचन कहकर राजाने विधिपूर्वक नारदजीका पूजनकिया व उसीजगहसे संसारी मोहछोड़कर बदरीकेदारकी तरफ चलागया व हरिभजनकरके मुक्तिपदवीको पहुंचा और नारदमुनि वहांसे चलेगये उसके बहुतदिनों उपरांत नारायणजी प्रचेतोंके तप व स्मरणसे प्रसन्न हुये तब अपने चतुर्भुजीरूपका दर्शनदेकर उनसेकहा तुमलोग वरदानमांगो तब प्रचेतोंने दण्डवत् व स्तुतिकरके विनयकिया महाराज हम यह वरदानमांगतेहैं जिसमें बीच माया संसारके न फँसैं साधु व महात्माका सत्संगहोकर तुम्हारे चरणोंमें हमारी भक्ति बनीरहै श्यामसुन्दर त्रिलोकीनाथने इच्छापूर्वक उन्हें वरदान देकरकहा तुमलोग गृहस्थ होकर अन्तसमय मुक्तिपदवी पाओगे जब ऐसावरदानपाकर अपनेघरकोचले तब रास्ते में क्या देखा कि नगर व गांव जो बसाथा वहसब उजड़कर बनहोगया यहदशा देखकर प्रचेतोंने कहा कि बनके देवतोंने हमाराराज्य व देश उजाड़दिया सो योगकी अग्निसे उन्हें जलायाचाहिये जिसमें अपनेकियेका फलपावें ऐसाविचारकर जब प्रचेतोंने बनकीतरफ़ क्रोधसे देखा तब वह बनजलनेलगा और वहांके देवता अपना २ प्राण लेकर भागे व ब्रह्माके पासजाकर यहहालकहा तब चन्द्रमा ब्रह्माकी आज्ञानुसार प्रचेतोंके पास आकरबोले तुमलोगोंने हरिभक्तहोकर दशहजारवर्ष परमेश्वरका तपकियाहै तुम्हें बिनाअपराध ऐसाक्रोधकरना न चाहिये इसबनसे सब ऋषीश्वर व मुनीश्वर व पशु व पक्षियोंको भोजन मिलकर अनेक जीवोंकी रक्षाहोतीथी इसकेजलानेसे तुम्हें बड़ापाप होगा व तुमने संसार उत्पन्न करनेकी इच्छासे परमेश्वरका तपकियाहै सो तुमलोग निम्लोचानाम कन्यासे जो वृक्षोंकी बेटीहै ब्याहकरो उससे तुम्हारे बहुत सन्तानहोंगी यह बचन चन्द्रमाका सुनतेही बनके देवता वहकन्या प्रचेतोंके पास लेआये व चंद्रमाके समझाने से प्रचेतोंने अपना क्रोध क्षमाकिया और अग्नि बनकी बुझगई तब प्रचेता

लोग उसकन्यासे गन्धर्व विवाहकरके स्त्री समेत माहिष्मती अपने बापकी नगरी में पहुँचे व राज्यकाजकरनेलगे व चन्द्रमा प्रसन्नहोकर अपने लोकमें गये सो उसीकन्या से प्रचेतोंके दक्षनाम बेटा उत्पन्नहुआ जिसने परमेश्वरका तपकरके मैथुनधर्म करनेसे बहुतजीव उत्पन्नकिये जब कुछदिनोंके उपरान्त प्रचेतालोग अपने बेटेको राज्य देकर परमेश्वर का तप करनेवास्ते पश्चिमदिशाको चलेगये तब राहमें उनको नारदजी मिले सो उनके उपदेशसे प्रचेतालोग परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके साथ योगाभ्यासके तनु अपना छोड़कर गोलोकमें पहुँचे इतनी कथा विदुरजी मैत्रेय ऋषीश्वरसे सुनकर हस्तिनापुरको चलेगये ॥

दो० पतिकी निन्दा सुनतही तजी सती निजदेह ।
लाखन गारी देत अब पतिको त्याग सनेह ॥
जो चौथे अस्कन्धको कहै सुनै चितलाय ।
लहै ज्ञान सुख सम्पदा पाप पहाड़ बिलाय ॥

पांचवां स्कन्ध ॥

राजाप्रियव्रत व जड़भरत व सातोंद्वीप व नवखण्ड व चौदहोंभुवन
व सब नरकों का हाल ॥

दो० शेष शारदा बिनय करि गोविंद पद शिरधार।
यह पञ्चम अस्कन्धकी कथाकहौं विस्तार ॥

क० चढ़े गजराज चतुरंगिनी समाजसंग जीति छितिपाल सुर-पालसों सजतहैं। विद्या अपारपढ़ि तीरथ अनेक करि यज्ञ और दान बहुभांतिसों करतहैं ॥ तीनकालमें नहाय इन्द्रियोंको वशलाय करि बनबास विषय बासना तजतहैं। योग और यज्ञ जप तपको अनेक करैं बिना भगवन्त भक्ति भव ना तरतहैं ॥

पहिला अध्याय ॥

परीक्षित का शुकदेवजी से राजा प्रियव्रतका हाल पूँछना ॥

राजापरीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजी से विनयकिया महाराज आपने तीसरेस्कन्धमें कहाहै कि स्वायम्भुवमनुके बेटा प्रियव्रतने नारदजी के उपदेशसे बाला-पनमें विरक्त होके बनमें जाके परमेश्वरका तपकियाथा फिर गृहस्थहोकर राज्यभोगने उपरान्त तपकरके मुक्तपदवी पाया हे ब्रह्ममूर्ति ज्ञानप्राप्त होनेपर फिर वह किसवास्ते गृहस्थी में फँसा जबतक मनुष्य संसारी मोहमें फँसारहकर स्त्री व पुत्र व धनको अपना जानताहै तबतक वह ज्ञानी नहींहुआ और ज्ञान प्राप्तहोने से संसारी माया जिसकी छूटजाती है वह फिर किसवास्ते जानबूझकर मायाजालमें फँसैगा यह संदेह मेरा छुड़ा दीजिये शुकदेवजी हरिचरणों का ध्यानकरके बोले हे राजा तुमने बहुतअच्छी बात पूछी हालउसका इसतरहपरहै कि राजाप्रियव्रत ज्ञानीहोनेपरभी पिछलेजन्मके संस्कारसे प्रत्यक्षमेंराजकाज करतारहा परवहगृहस्थाश्रमसेभी विरक्तरहकर बीचमोह राज्य व धन व पुत्रादिकके नहींफँसा कुछदिनोंउपरांत राजगद्दीछोड़कर बीचतप व ध्यानपरमेश्वरके लीनहुआ व जबपहिले नारदमुनिके उपदेशसे प्रियव्रतज्ञानीहोकर मन्दराचलपहाड़पर तपकरने चलागयाथा तबराजा स्वायम्भुवमनुने वहांजाकर प्रियव्रतसेकहा हेबेटा तू राज्य व बिवाहकरके सन्तानउत्पन्नकर उसनेउत्तरदिया हेपिता व्याहकरने व सन्तान

उत्पन्नहोनेसे मनुष्य बीच मोह व धन व परिवारकेफँसकर नरकमेंपड़ताहै इसलियेमैं राजगद्दी व संसारीसुख नहींचाहता मुझेपरमेश्वरकास्मरण व ध्यानअच्छा मालूमहोताहै जब प्रियव्रतने स्वायम्भुवमनुका कहनानहींमाना तब वह उदासहोकर बैठेथे कि उसी समय ब्रह्माजी सनकादिकऋषीश्वर व देवतोंकोसाथलिये हंसपरचढ़कर वहांआये जब स्वायम्भुवमनु व प्रियव्रतने उन्हें दण्डवत्करके आदरपूर्वक बैठाला तबब्रह्माजीने कहा हे प्रियव्रत तू व्याहकरना व राजगद्दी पर बैठना क्यों नहीं अंगीकारकरता नारायणजी की आज्ञा इसतरहपरहै कि क्षत्रियलोग राज्यकरैं सो तुझे उनकी आज्ञा मानकर संसारीजीवों को बढ़ानाचाहिये जिसतरह हम नारायणजी की आज्ञानुसार संसारकी रचनाकरते हैं उसीतरह तूभी उनकी आज्ञामानकर राजगद्दीपर बैठ व व्याहकरके क्षत्रियों को उत्पन्नकर जिसेहमदेखते हैं कोईजीवउनकी आज्ञासे बाहर नहीं रहता जोकुछ जिसके भाग्य में लिखाहै वैसाहोगा श्यामसुन्दरने जिसे जो काम सौंपाहै उसकेसिवाय वहदूसराकाम नहींकरसक्ता जिसतरह बैलकेनाक में रस्सीनाथ-कर जिधरचाहै उधर लेजावै उसकाकुछवश्य नहींचलता उसीतरह सबजीवजड़ व चैतन्यकीगति समझनाचाहिये किसीको ऐसीसामर्थ्यनहीं है जो परमेश्वरकी आज्ञामें तिलभर घटाने बढ़ानेसकै इसलिये वेदकी आज्ञानुसार सबकामकरनाउचित है व हे प्रियव्रत गृहस्थाश्रम कुछ बुरा नहींहोता जोमनुष्य काम व क्रोध व अहंकार व लालच व मन व इन्द्रियोंको अपने आधीनरखकर उनकेवश न होवे उसको बन व गृहस्थी दोनोंजगहकारहना बराबर है व जिसनेउनको अपनेवशनहीं किया उसको गृहस्थी छोड़कर बनमेंजा बैठने से क्या लाभहोगा कि शत्रुबलवान् अपनेसाथरखताहै जबतक मनुष्य काम व क्रोधादिकको अपनेवश्यनहींकरता तबतक परमेश्वर उसको नहीं मिलते व मनुष्यपर तीन ऋण देवऋण व पितृऋण व ऋषिऋण रहते हैं जबतक इनतीनों से उऋणनहींहोता तबतक उसेविरक्तहोना न चाहिये व जबमनुष्य संसारीसुखभोगकर उसकास्वाद देखलेताहै तब फिर उससुखकी वहचाहनानहींरखता सो तुमपहिले राज्य करके फिर बैराग्यधारणकरना जबइसतरह समझाने से प्रियव्रतने बिवाहकरना व राजगद्दीपर बैठनाअंगीकार किया तबब्रह्माजी व स्वायम्भुवमनुने बड़े हर्षसे प्रियव्रत को माहिष्मतीपुरी में लाकर राजगद्दीदी शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित इसतरह से राजाप्रियव्रत राजसिंहासनपर बैठकर हरिचरणों में ध्यानलगाके राज्यकरनेलगा जब उसने विवाह अपना बर्हिष्मतीनाम बिश्वकर्माकी बेटीसे किया तब उसस्त्रीसे अग्नीध्र आदिक दशबेटे व यशवतीनामकन्या उत्पन्नहोकर उनमें तीनपुत्र बालयतीहोगये वेदपढ़कर परमहंसोंका सत्संगरक्खा व दूसरी स्त्री सान्तनीनामसे जो देवतोंने लाकर राजा प्रियव्रतको दियाथा उत्तम व तामस व रैवतनाम तीनबेटे उत्पन्नहोकर चौदहों मन्वन्तर में उनकी गिन्तीहुई सो प्रियव्रतने हजारोंवर्षतक साथधर्म्म व प्रजापालन

के राज्यभोगकर प्रजाको पुत्रकेसमान सुखदिया व हरिइच्छासे उनकी इन्द्रियोंका पराक्रम कमनहींहुआ कुछदिनउपरान्त राजाने बिचारकिया यहसूर्य्यकारथ आठोंपहर फिरने में दिन व रात्रिहोकर सुमेरुपर्व्वतकी ओटमेंजानेसे रात्रिहोजाती है सो रात्रिको सन्ध्या व पूजा व तर्पण व तप व दानादिक शुभकर्म में विघ्नहोकर अँधियारे में कुकर्म करनेसे अधर्महोताहै इसलिये हमारेराज्यमें आठोंपहर दिनकेसमान प्रकाश बनारहकर रात्रि न होती तो अच्छाथा यहबात विचारकर राजाप्रियव्रतने ऐसारथ एकपहिये का सूर्य्यकेसमान तैयारकराया जिसरथके प्रकाशसे आठोंपहर उनकेराज्य में उजियाला रहकर रात्रिहोनाबन्दहोगया और प्रियव्रत ऐसेप्रतापीहोनेपरभी आठपहर नारायणजीके चरणों में चित्तलगायेरहताथा जबराजाने उसरथपर बैठकर सातबेर चारोंतरफ़ पृथ्वीकीपरिक्रमाकरके एकछत्रराज्यकिया तबउसरथ के घूमनेसे जो एक पहियेका था पृथ्वीपरसातोंसमुद्र व सातोंद्वीपप्रकटहोगये पहिलेजम्बूद्वीप लाखयोजन के घेरे में होकर एकयोजनचारकोशका समझनाचाहिये और भरतखण्डादिक इसी द्वीपमें रहकर चारोंओर इसद्वीपकेसमुद्र खारेपानीकाहै दूसरापाकरद्वीप दोलाखयो-जनकेघेरे में होकर उसकेचारोंदिशा में ऊखकेरसकासमुद्र है तीसराशाल्मलिद्वीप चार लाखयोजनकेघेरे में होकर उसकेचारोंओर मदिराका समुद्रभराहै चौथाकुशद्वीप आठ लाखयोजनकेघेरे में होकर उसकेचौगिर्द घीकासमुद्रभराहै पांचवांक्रौंचद्वीप सोरहलाख योजनकेघेरे में होकर उसकेचारोंतरफ़ दूधकासमुद्रहै छठवांशाकद्वीप बत्तीसलाखयो-जनकेघेरे में होकर उसकेचारोंदिशा में मट्ठेकासमुद्रभराहै सातवांपुष्करद्वीप चौंसठ लाखयोजनकेघेरेमें होकर उसके चौगिर्दमीठेपानीका समुद्रभराहुआहै देखो परमेश्वर की महिमासे इतनीबड़ीलम्बाई व चौड़ाई भूगोलकी है सो अज्ञानमनुष्य क्यासामर्थ्य रखताहै जो स्तुतिउसकीकरसके सो राजाप्रियव्रतने एक २ द्वीपकाराज्य अपने बेटों को बांटकर यशवतीनाम अपनीकन्याकाव्याह शुक्राचार्यसेकरदिया जिसके पेटसे देव-यानी कन्याउत्पन्नहुई जबरात्रिहोना उसकेराज्य में बन्दहोगया तब स्वायम्भुवमनु व ब्रह्माने प्रियव्रतको समझाया कि जो बात परमेश्वरकी मर्यादसे होती है उसको मेटना न चाहिये तबउन्होंने फिराबनारथका बन्दकिया इतनीकथाकहकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित इनसातोंद्वीपकाराजा व मालिक प्रियव्रतथा सो उसने इतनेबड़ेराज्यको झूठासमझ कर एकदिन बर्हिष्मतीनाम अपनी स्त्रीको रथपरबैठालके कहा एकइतिहास हमतुमसे कहतेहैं सुनो एकबालक अज्ञान दरिद्री अपनेघरसे निकलकर किसीऋषीश्वरकेस्थान परगया सो उसऋषीश्वरने दयाकीराह उसबालकको ऐसी विद्यापढ़ाई कि उसे देव-दृष्टिहोकर पृथ्वीका गड़ाहुआधन व सौकोशकीचीज़ दिखलाई देनेलगी सो कुछदिन उपरान्त उसबालक के माता व पिता ढूंढ़तेहुये वहांपहुँचकर जबउसेपकड़के घरले-जानेलगे तबवहसमझा कि घरजानेसे यहगुणमेराभूलजायगा ऐसाविचारकर वहअपने

घरनहींजाताथा पर माता व पिताने हठसे घरपरलाकर बिवाहउसका करदिया तबवह लड़का सबगुणअपनाभूलकर संसारीजाल में फँसनेसे ऐसानष्टहुआ कि बोझाढोकर अपना पेटपालनेलगा इतनीकथासुनकर बर्हिष्मतीबोली वह ऐसागुण अपना छोड़कर गृहस्थीकेजाल में क्योंफँसा तब प्रियव्रतनेकहा वहीहालतो हमाराभी है कि नारदमुनि का ज्ञान छोड़कर संसारीजाल में फँसेहैं यहबचनसुनतेही बर्हिष्मतीबोली कि महाराज अब बिरक्तहोनाचाहिये प्रियव्रतने जैसे यहबातस्त्रीकी सुनी वैसे राज्य बेटोंको देकर संसारीमायाछोड़दी व स्त्रीसमेतबनमें जाकर हरिभजनकरके मुक्तहुआ जो लोग अपने को परमेश्वरके शरणमेंलेजाते हैं उनको सुखहोताहै ॥

दूसरा अध्याय ॥

प्रियव्रतके बेटे अग्नीध्रका राजाहोना व पूर्वचित्ती अप्सरासे बिवाह करना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जबराजाप्रियव्रत बनमें तपकरनेवास्ते चलेगये तबअग्नीध्र उनकेबड़ेबेटेने राजगद्दीपरबैठकर बिचारा कि पहिलेपरमेश्वरकातप व स्मरणकरके पीछेसेब्याहकरैं जिसमेंसन्तान धर्म्मात्माउत्पन्नहों व वेद व शास्त्रमें भी ऐसालिखाहै कि चौबीसवर्षकी अवस्थातक स्त्रीकाप्रसंग न करनाचाहिये ऐसा बिचार कर वहघरसे निकलखड़ाहुआ व मन्दराचल पहाड़परजाकर एक रमणीकस्थान में बैठके परमेश्वरका तपकरनेलगा जब बहुतदिन उसको तपकरतेबीते तबराजाइन्द्रने अपना इन्द्रासन छीनलेनेके डरसे पूर्वचित्तीनाम अप्सरा महासुन्दरी को उनकातपभंग करनेवास्तेभेजा जबवहअप्सरा अपनासाज व समाज लियेहुये जिसजगहपर अग्नीध्र बैठाहुआ तपकरताथा वहांजाकर नृत्यकरनेलगी और उसकेगाने व नाचने व बाजे का शब्दसुनतेही अग्नीध्रकाध्यान छूटकर आंखखुलगई तबवह उसकेरूपपर मोहित-होकर बौरहेकेसमान उससेपूंछनेलगा हे मुनि तुमकिसबनमें तपकरतेहो वहांपर कैसेफल व पुष्पहोतेहैं तुम्हारेशिरकेबाल बहुतसुन्दरहोकर छातियोंमें दोअनार ऐसे ऊंचे २ क्या दिखलाईदेतेहैं व पूर्वचित्ती अपनेबालोंमें पुष्पजोगुहेथी उससुगन्धपर भवँरेगूंजतेहुये देखकरराजाबोले यहसब तुम्हारेचेले वेदपढ़नेवास्ते आये हैं व नाचतीसमय घुंघुरूकी झनकारसुनकर कहनेलगे तुमवेदोंकास्वर बहुतअच्छा उच्चारणकरतेहो व शरीरमेंअगर व चन्दनादिक सुगन्धलगे देखकरबोले तुम्हारेतपोबनमें नदीकीमट्टी इसीतरहपर होतीहै जो तुमअंगमेंलगायेहो जिसकेमहकसे मेरास्थानभरगया उसबनमें इसीरूपके सबऋषि व मुनिरहतेहैं मुझेतुम्हारास्थान देखनेकी अभिलाषाहै सो कृपाकरकेमुझे दिखलायदेव व मेरेजानकारीमें तुमलक्ष्मी या नारायणजीकीमायाहो जो यहांआकर अपनेनयनों काबाण चलाके मुझऐसेहरिणको माराचाहतीहो परमेश्वरने बड़ीकृपाकरके तुम्हारादर्शन दिया सो तेरामोहनीरूप मुझकोबहुतप्यारा मालूमदेताहै इसलिये अबमैंतुम्हारापीछा

नहींछोडूंगा जबयहबात राजाकीसुनकर पूर्वचित्तीनेजाना कि मेरेऊपर अतिमोहित हुआ है तबवहमुसुकराकर बोली हेराजन् हमारेतपोवनमें इसीरूपकेसबऋषि व मुनि रहकर वहांऐसे कन्दमूलहोतेहैं जिनकेखानेसे मनुष्य सदातरुण व रूपवान् व कोमलबनारहता है जबतुम अपनीराजगद्दीपर चलकरकुछदिन मेरेसाथरहो तबअपनास्थान तुम्हैंदिखावें यहांपहाड़पर मैं तुम्हारेसाथ नहींरहसक्ती यहवचनसुनतेही राजा तप व ध्यानपरमेश्वर का छोड़कर अप्सरासमेत राजमन्दिरपर चलेआये व उसकेसंग विवाहकरके दशहज़ार वर्षतकभोग व विलास व राज्यकाज धर्म्मपूर्वककिया जबराजाकेनाभि व इलावृत्तादिक नवबेटे पूर्वचित्तीअप्सरासे उत्पन्नहोकर जन्मतेही अपनीमाताके आशीर्वादसे तरुण व तेजवान् व बलवान्होगये तब पूर्वचित्ती उनकाविवाहकरके इन्द्रलोकको चलीगई व राजाने जम्बूद्वीपके नवभागकरके एक २ हिस्सह जिसेनवखण्डकहतेहैं अपनेनव बेटोंको बांटदिया व आपबनमेंजाकर तप व ध्यान परमेश्वरका करनेलगे सो भरत-खंडजिसमें बहुतसेनगर व देशहैं नाभि बड़ेबेटेनेपाया व राजाको पूर्वचित्तीके वियोग का ऐसाशोकहुआ कि उसीकारण शरीरअपना त्यागदिया व गन्धर्व तनुपाके उस से जामिले ॥

तीसरा अध्याय ॥

राजानाभिके यहां ऋषभदेवजीका अवतारलेना ।

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जबराजाअग्नीध्र तपकरने बनमेंचलागया तबनाभि आदिक उसकेनवबेटे अपने २ खण्डमेंसाथधर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगे कुछ दिनउपरांत् राजानाभि बड़ेबेटेने मेरुदेवी अपनीस्त्रीसमेत सन्तानकी इच्छासेबनमें जाकर बहुतदिन परमेश्वरका तपकिया फिररानीसमेत अपनेघर आनकरब्राह्मण व ऋषी-श्वरोंकोबुलाके यज्ञकरनेलगा जबयज्ञअच्छीतरह सम्पूर्णहुआ तबनारायणजी सांवलीसू-रतमोहनमूरतने शंखचक्रगदा पद्मधारणकिये किरीटमुकुट कुण्डल बैजयन्तीमालापहिने तापहारिणी चितवन मन्द २ मुसुकरातेहुये अग्निकुण्डसे निकलकर अपनादर्शनदिया उन्हें देखतेहीराजा नाभि व ऋषीश्वर आदिक जितनेमनुष्य यज्ञशालामें बैठेथे दण्ड-वत्करके खड़ेहोकर उनकीस्तुति करनेलगे व देवतोंने आकाशसे उनपरपुष्पबरसाये व राजाने हाथजोड़कर विनयकिया हे त्रिलोकीनाथ आपने मुझगरीबकी इच्छापूर्ण करनेकेवास्ते दयालुहोकर दर्शनदिया किसकी ऐसीसामर्थ्यहै कि जो तुम्हारीमहिमा वर्णनकरसकै हरिचरणोंमें भक्तिकरनेवालेको चारोंपदार्थमिलतेहैं सो मुझे ऐसाबरदान दीजिये जिसमेंतुम्हारा ऐसाबेटा मेरेउत्पन्नहो यहवचनसुनतेही यज्ञभगवान् प्रसन्न होकरबोले हेराजन् तुमने मेराऐसापुत्र होनेकेवास्ते चाहनारखकर तप व यज्ञकियाहै सो हमआप तेरेघर अवतारलेवैंगे यह कहकर बैकुंठ को पधारे व राजाने ब्राह्मण व

ऋषीश्वरोंको दक्षिणादेकर बिदाकिया व जैसेचरुप्रसाद यज्ञकामेरुदेवी अपनीरानीको खिलाया वैसे उसकेगर्भरहा तबब्रह्माजीने देवतोंसमेत गर्भस्तुति करनेकेवास्ते राज-मन्दिरपर आनकर कहा हे राजन् तेरा भाग्य उदयहुआ जो आदिपुरुष भगवान् तेरे यहां पुत्रहोकर अवतार लेंगे जब ब्रह्मादिक सबदेवता गर्भस्तुतिकरके अपने २ लोक को चलेगये तब दशवें महीने परब्रह्मपरमेश्वरने रानीके गर्भसे अवतारलेकर अपनी सांवलीमूरत चतुर्भुजीमूरत किरीटकुण्डल मुकुटसाजे नवरत्न भुजबन्द वनमालाबिराजे कौस्तुभमणि वैजयन्तीमाला गले में डाले राजानाभि व मेरुदेवीको दर्शनदिया वैसे वहदोनों आनन्द व प्रसन्नहोकर दण्डवत् करनेउपरान्त स्तुति उनकी करनेलगे व देव-तोंने अपने २ विमानपर बैठकर आकाशसे उनपर पुष्पबरसाये व अप्सरोंने नाच दिख-लाकर गन्धर्वोंने गानासुनाया व ब्रह्मानेआनकर ऋषभदेवजी उनकानामरक्खा जब ब्रह्मादिक देवता दण्डवत् व स्तुतिकरके वहांसे अन्तर्द्धान होगये तब परब्रह्मपरमेश्वर बालकरूप होकर रोनेलगे ॥

चौथा अध्याय ॥

राजा नाभिका सहित स्त्रीके वनमें जाकर तपकरना व ऋषभदेवजीका गद्दीपर बैठना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् जबऋषभदेवजी छत्तीसगुणनिधान आदिपुरुषभगवान्ने राजानाभिके यहांजन्मलिया तबराजाने उन्हें परमेश्वरका अवतारसमझकर बड़ेहर्षसे इतनादान व दक्षिणाब्राह्मण व याचकोंकोदिया कि उसकेराज्य में कोईमनुष्य कंगाल न रहकर सब धनवान्होगये व राजा व रानीऋषभदेवजीकी बाललीलाका सुखदेखने से अपनाजन्मसफलजानकर मारेप्रसन्नताके कपड़ों में नहींसमातेथे जबऋषभदेवजी सयानेहोकर राजगद्दीपर बैठनेयोग्यहुये तबराजाने अपनेमन्त्री व प्रजाको उनसेप्रसन्न देखकर विचाराअबइनको राजगद्दीपर बैठालकर मुझेपरमेश्वरकाभजन करनाचाहिये ऐसाविचारतेही राजानेज्योतिषियोंसे शुभमुहूर्त्त पूंछकर ऋषभदेवजीको राजसिंहासन परबैठालदिया व आप स्त्रीसमेत बदरीकेदारमें जाकर तप व ध्यान परमेश्वरकाकरनेलगे कुछदिनउपरांत योगाभ्यासकेसाथ अपनातनुछोड़कर भवसागर पारउतरगये व ऋषभ देवजीनेसाधधर्म व प्रजापालनके ऐसाराज्यकिया जिसकेराज्य में बाघ व बकरी एक घाटपानीपीतेथे और कोईप्रजादुःखी व कंगाल न थी देवताउनकी स्तुतिदेवलोक में कियाकरतेथे जबराजाइन्द्रनेसबछोटे व बड़ोंकेमुहँसे उनकायश व प्रतापसुना तबडाह से भरतखण्ड उनकेराज्यमें पानीनहींबरसाया जबऋषभदेवजीको हालमालूमहुआ तब उन्होंने इन्द्रके अज्ञानपरहँसकर अपनेयोगबलसे ऐसाकरदिया कि उनकेराज्यमें जिस समयप्रजालोगपानीचाहतेथे उसीसमयनारायणजीकी कृपासे जलबरसताथा जबइन्द्रने यहमहिमा व प्रतापऋषभदेवजीकादेखा तबउन्हें परमेश्वरका अवतारजानकर अपना

अपराधक्षमाकरानेकेवास्ते जयन्तीनाम अपनीकन्याउनको बिवाहदी सो ऋषभदेवजी के उसीस्त्रीसे सौपुत्रउत्पन्नहोकर उनमेंनवबालक बिरक्तहोगये व बनमेंजाकर परमेश्वर का तप व ध्यानकरनेलगे उन्हींको नवयोगेश्वरकहते हैं जिन्होंने राजाजनकको ज्ञान उपदेशकियाथा उसकीकथा ग्यारहवेंस्कंधमें आवैगी व नवबालक नवखण्डके राजा होकर भरतनामबड़ाबेटा उनका अपनेपिताकी निजराजगद्दीपरबैठा व इक्यासी बेटे ब्राह्मणोंकेसमान वेदपढ़ने व तपकरनेलगे एकसमय ऋषभदेवजीने सबप्रजाको यज्ञ में बैठालकर अपनेपुत्रोंको यह ज्ञानउपदेश किया हे बेटो संसार में जितनेजीवजड़ व चैतन्यदेखतेहो एकदिनसबकानाशहोकर केवलनारायणजी अविनाशी पुरुष स्थिररहैंगे व उन्हींकीशक्तिशरीरमेंरहनेसे सबजीवचलतेफिरतेहैं सोतुमलोग उसीपरमेश्वरका ध्यान हृदयमेंरखकर संसारीजीवों से मोहतोड़के ज्ञानी व महात्मालोगोंका सत्संगरक्खो कि जिसमेंतुम्हारीमुक्तिहो कुसंगकरनेसे मनुष्य तुरन्तनष्टहोजाताहै उनसेसत्संगमतकरो जब तक संसारीसुखस्वप्नके समान झूंठानहीं समझता तबतक उसेसुखमिलनाकठिनहै जगत् में द्रव्य व स्त्री दो रस्सी मायारूपी ऐसीफैली हैं जिसमेंसाराजगत् बँधकर नष्टहोताहै जोमनुष्य इनदोनोंसे अलगरहै वह इसमायाजाल से छूटसक्ताहै पर इनदोनोंसेबचना व संसारीमोहछोड़कर परमेश्वरमें चित्तलगाना सहजनहींहोता पर इसकाएकउपाय हमतुमसे कहतेहैं सुनो सन्त व महात्माकी संगतिकरना यहीजड़उसकी है बिनासत्संग ज्ञानमिलना संसारको झूंठाजानना व परमेश्वरकेचरणोंमें प्रीतिहोनाकठिनहै साधु व महात्माओंकीसंगतिकरनेसे धीरे २ मनुष्यकामनबिरक्तहोकर परमेश्वरकी तरफलग-जाताहै सिवायइसके एकबात मुख्यकहताहूं उसकोतुम बिश्वासकरकेजानो संसार में नरक व मोक्षके दो दरवाजे हैं सन्त व महात्माकीसंगति व सेवाकरना मोक्षकाद्वारहै परस्त्री प्रसंग व चोर व जुआरी व विषयी व मद्यपकासंगकरना नरककादरवाजा समझना चाहिये ॥

पांचवां अध्याय ॥

ऋषभदेवजीका अपने बेटोंको ज्ञानसिखलाना व सन्त महात्मोंके लक्षणकहना ॥

ऋषभदेवजीनेकहा हे बेटो जिनसन्तों व महात्मोंकीसंगति व सेवाकरने से मोक्षका द्वार खुलजाताहै उनकेलक्षण सुनो मनउनका सदाएकसा रहकर किसीके दुर्वचन क-हनेसे उनकोक्रोध नहींहोता भीतर व बाहर उनकासमान रहकर हृदयमेंकपट नहींहोता व हरिभक्तोंसे अधिकप्रीतिरखते हैं रात्रिदिन हरिकथा व वार्त्ताकरने व सुननेमें उनको सन्तोष न होकर आलस्य नहींआता अपनेघर व परिवारमें अतिथिकेसमान रहकर केवल अपनापेटभरने व अर्थ निकालनेसे प्रयोजनरखते हैं लोभ व हानिहोनेसे कुछहर्ष व चिन्तानहींकरते अतिथिका एकलक्षणयहहै जिसतरह कोईपरदेशी कंगाल दूसरेग्राम या नगरमें पहुँचै व एकदिन किसीकेघर भोजनकरके दूसरेरोज वहांसे चलाजाय तो

भोजनदेनेवालेसे उसेकुछमोह उत्पन्न नहींहोता दूसरालक्षण अतिथिका सुनो जैसे पक्षी किसीमकानमें खोताबनाके दाना पानीखाकर वहांरहते हैं पर उसघरके गिरने व बनाने व जलजानेका कुछशोच उन्हें नहींहोता तीसरालक्षण अतिथिका यहहै कि जिसतरह खीरेकाफल ऊपरसे एकहोकर उसकेभीतर तीनचारफांक अलग अलगरहती हैं उसीतरह अतिथिज्ञानवाला गृहस्थभी प्रकटमें स्त्री व पुत्रका मोहरखकर अन्तःकरणसे उनको अपनाशत्रु जानताहै ऐसेविरक्त गृहस्थकोभी जो किसीजीवको दुःख नहींदेता साधु व महात्मा समझनाचाहिये सो तुम ब्राह्मणको बहुतबड़ा व उत्तमजानकर दयापूर्वक प्रजाकी पालनाकरो इसतरहका ज्ञानरखनेवाला यमदूतोंकीफांसीमें नहींबांधाजाता ऋषभदेवजी ने यहज्ञान अपनेबेटोंको समझाकर कुछदिनउपरान्त बिचारा कि अन्तसमय यहराज्य व परिवार मेरेसाथ न जाकर सब मेरासंग छोड़देवैंगे इसलिये पहिलेसे इनकासाथ छोड़ देना उत्तमहै ऐसाबिचारकर भरतनाम अपनेबड़ेबेटेको राजगद्दीपर बैठालदिया व आप बिरक्तहोकर जड़भरतकारूपबनालिया व पहाड़परजाकर परमेश्वरकातप व भजन करनेलगे लक्षणजड़भरतका यहहै कि मल व मूत्रकरनेपरभी नियम व आचार स्नानादिकका कुछ न रक्खै व भोजन व वस्त्रका उद्योगछोड़देवै कदाचित् कोईभोजन खिलादे तो खालेवै नहींतो निश्चिन्त बैठेरहकर अपनेकपड़ेतककी सुधि न रक्खै सो ऋषभदेवजीने यहीलक्षणधरकर स्नानकरना व पूजाआदिक सबछोड़दिया तिसपरभी उनकारूप देखकर देवकन्या मोहितहोजातीथीं व चालीसकोसतक उनकेमल व मूत्रकी सुगन्ध पहुंचतीथी उसीसमयअष्टसिद्धिने उनकेपासआकर अपनेअपने गुणोंको वर्णन किया पर ऋषभदेवजीने उनकीओर आंखउठाकरभी नहींदेखा ॥

छठवां अध्याय ॥

आदमियोंको ऋषभदेवजीका चलनदेखकर सरावगीधर्मका प्रकटकरना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकर बोले हे मुनिनाथ ऋषभदेव जो नारायणजीका अवतारथे मनआठोंसिद्धिका अपनीओरखींचकर उन्हेंविरक्तक्योंनहींकरदिया जोमनुष्य कामक्रोधमोहलोभमन व इन्द्रियोंकोअपनेवश्य न रखताहो उसेअष्टसिद्धिकी ओरदेखने सेडर व खटकाहै सो ऋषभदेवजी उनसबको अपने अधीनकियेथे उन्होंने किसवास्ते अष्टसिद्धि की ओर नहींदेखा यहवचनसुनकर शुकदेवजीबोले हेराजन् यह मन चंचल काम व क्रोधादिक बड़े २ बलवानोंकी कुसंगतिपावनेसे वश्यमेंनहींरहता उनमें एक कामदेव ऐसाबलीहै जिसकेमदमें मनुष्यअन्धाहोकर अपनाभला व बुरानहींसमझता और यहीकामदेव बीचतप व ध्यान बड़े २ योगी व ऋषीश्वरोंके बिघ्नडालकर हजारोंबर्षकातप एकक्षणमें नष्टकरदेताहै मन चंचल बिजुली व पारेकेसमान कभी एकठिकाने नहींरहता इसलिये मनकाबिश्वास न रखनाचाहिये जिसतरह पुंश्चलीस्त्री

अपनेपतिको भुलावादेकर दूसरेपुरुषकेपासजातीहै उसीतरह यहमन व इन्द्रियां अष्ट-सिद्धिका कुसंगपानेसे चैतन्यहोकर कुकर्मकी इच्छाकरतीहैं यहबिचारकर ऋषभदेवजीने उनकीओर नहींदेखाथा जिसमेंकामदेवको रोंकना न पड़े जड़भरतरूप रहनेमें शास्त्र केअनुसार धर्म्मरखने व षट्कर्म्म करनेका प्रयोजननहींरहता इसलिये बहुतमनुष्योंने चलन ऋषभदेवजीकादेखकर स्नानकरना व वेदपढ़नाछोड़दिया तभीसे ओसवाल व सरावगीकामत जोलोग वेद व शास्त्रको नहींमानते संसारमें प्रचारहुआवहीलोग जैन-धर्मीकहलाकर मरनेउपरांत अवश्यनरकभोगतेहैं व सो ऋषभदेवजी उसीअवस्थामें अग्निलगनेसेजलकर परमधामको चलेगये ॥

सातवां अध्याय ॥

भरतनामबेटा ऋषभदेवजीका राज्यकरना व बनमें तपकरनेवास्ते फिरजाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित भरतनामबड़ाबेटा ऋषभदेवजीका जोउनकीजगह राजाहुआ उसने धर्म्मपूर्व्वक राज्यकरके प्रजाको पुत्रसमानजाना व बिवाहअपनापंच-जनीनाम विश्वरूपकीकन्यासेकिया व राजाभरतके उसीस्त्रीसे धूम्रकेतुआदिक पांच पुत्रबहुतसुन्दर व प्रतापीहुये जबराजाने बहुतसेयज्ञकरके फलउनका परमेश्वरकोअर्पण करदिया तब उन्हें ईश्वरकी चतुर्भुजीमूर्तिकादर्शन ध्यानमेंहोनेलगा इसीतरह दशहज़ार वर्षराज्य व सुखभोगकर संसारीव्यवहारझूंठासमझा व विरक्तहोकरराजगद्दी बेटोंको सौंपदी व आप बनमें पुलहाश्रमनदीकिनारे जहांपरनारायणजी शालग्रामरूप से रहतेहैं बैठकरभगवत्भजनकरनेलगे वहपत्तोंकीकुटीमें कन्दमूलखाकर जैसेआनन्दकरतेथे वैसा सुखउन्हें राजगद्दीपरनहीं मिलताथा वेदकीआज्ञानुसार ब्राह्मण व क्षत्रियकोनित्यपूजा शालग्रामकीकरनीउचितहै एकदिनराजाभरत मध्याह्नसमयनदी किनारेबैठेहुये सूर्य्य-देवताका ध्यानकररहेथे सोएकहरिणीगर्भवती अपनेगोलसेफूटकर जैसेवहांपानीपीनेलगी तैसेहीएकबाघबोला उसकीबोलीसुनतेही हरिणीभागी तो नदीकासेतु नांघतेसमय बच्चा उसकेपेटसेगिरपड़ा सोवहबच्चाअपना जीताछोड़कर उसीजगहमरगई राजाभरतने यह दशादेखकर बिचारकिया कि यहबच्चा यहांपड़ारहनेसे कोईजानवर इसेखाले या मार-भूख व प्याससेमरजावे तो मुझेपापहोगा परमेश्वरनेइसकाबोझ मेरेऊपरडालदिया इसलिये रक्षाकरनीचाहिये ऐसा विचारकर राजाने धर्म व दयाकीराह उसबच्चे को उठालिया व पानीसेधोकर अपनीकुटीमेंलेआये व गोकादूध पिलाकर उसेपालनेलगे ॥

आठवां अध्याय ॥

उसबच्चेका खोजाना व राजाभरतजीका उसीशोचमें तनुत्यागकरना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजा जब उसबच्चेके पालनेसे अधिकमोहहुआ तब भरतजी अपनेहाथसे हरीघासछीलकर उसको खिलाने व अपनेपाससुलानेलगे जब दिशाफिरने

व स्नानकरनेवास्ते कहींबाहरजाते तब उसे अपनेसाथरखते व पूजा व तप करतेसमय उसको अपनेपास बैठालेरहतेथे प्रतिदिन भरतजीने इतनीप्रीति उसबच्चेसे बढ़ाई कि उनकेजप व ध्यानमें बाधाहोनेलगी जब वहबच्चा कहींचलाजाता तब उसकेवास्ते बहुत उदासहोतेथे अनायास एकदिन वहबच्चाछूटकर बनमेंचलागया व अपनेगोलमें मिल-जानेसे फिरकर कुटीपर नहींआया जब राजाभरतने बहुतढूंढ़नेपरभी उसे न पाया तब बड़ाशोचकरके कहनेलगे देखो मुझसे बड़ीचूकहुई जो अकेला छोड़देनेसे वह भागगया मैं ऐसाजानता कि वहचलाजायगा तो किसवास्ते उसे अकेलाछोड़ता परमेश्वर मुझपर दयालुहोकर मेराभाग्यउदयकरै जिसमें फिर वहबच्चा मेरेपास चलाआवे वहबच्चा डाटने से मुनीश्वरोंकेबालकसमान डरताथा व पृथ्वी तू उसे अकेलादेखकर उठालेगई है सो मेरेबच्चेको बतलादे जब इसीतरह शोच व विलापकरते रात्रिहोगई तबकहा हे चन्द्रमा तुम उसबच्चेको अवश्यदेखतेहोगे जहां मेराबच्चाहो तुम कृपाकरके बतलादेव जिसमें वह मिलजावे नहींतो मेराप्राण निकलनेचाहताहै जैसाशोच अपनेपुत्र मरनेकाभी कोईनहीं करता वैसीचिन्ता भरतजीने बच्चेकेवास्ते करके उसदिन स्नान व पूजा और भोजन कुछ नहींकिया व उसी शोचमेंमरगये सो मरतेसमय ध्यान व प्राणउनका उसबच्चेमें लगाथा इसलिये वह तनुछोड़कर हरिणका जन्म पाया ॥

नवां अध्याय ॥

भरतजीको हरिणका तनु त्यागकरना व एक ब्राह्मणके यहां जन्मलेना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजा भरतजी हरिणका जन्मपाकर बनमें रहनेलगे परन्तु ह-रिभजनकेप्रतापसे वह अपने पूर्वजन्मका वृत्तान्त जानतेथे इसलिये अपनी अज्ञानता समझकर मनमेंकहा देखो मैंने हरिचरणोंका ध्यान छोड़कर जैसीप्रीति उस बच्चेसे की वैसी अपनी स्त्री व पुत्रसे कभी नहीं की थी व उसके मोहमें फँसकर ऐसा नष्टहुआ कि मनुष्यसे हरिणका तनुपाया भरतजी पिछलीबात शोचकर किसी हरिणी आदिक से कुछ प्रीति न करके कहते कि न मालूम इनकी संगतिकरनेसे फिर मेरीक्यागति होगी यहबात समझकर भरतजीने किसीजीवको दुःखदेना व हरीघास खानाछोड़दिया जो फल पत्ता सूखकर गिरपड़ताथा उसेखाकर हरिणकेतनुमें भी परमेश्वरका ध्यान व स्मरणकरतेथे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले कि हे राजामृत्युसे मनुष्यको प्रतिक्षण डरनाचाहिये न जाने किससमय मृत्युआजावै व एकहरिणके बच्चेसे मोहकरनेमें ऐसे महात्माकी यहगतिहुई दूसराकौन गिन्तीमें है जो कोई परमेश्वरका ध्यानछोड़कर माया-रूपीजालमें फँसेगा उसकी यहगतिहोगी सो भरत उसतनुमें दिनरात इसीबातका शोच करतेथे कि जल्दी यहशरीर मेराछूटै तो मनुष्यतनुपाकर परमेश्वरका भजनकरूं इसी तरह कुछदिन बिताकर एकरोज नदीपार उतरनेलगे सो वह रूखेपत्ते खानेसे निर्बल

होगयेथे इसलिये सोतानांघते समय पुलहाश्रमनदी में डूबकर एकब्राह्मण अथर्वण वेद पढ़नेवालेके पुत्रहुये नाम उनका भरतरक्खा जब सयानेहुये तब पूर्वजन्मका वृत्तान्त यादकरके संसारीमोहमें न फँसे और दिनरात परमेश्वरमें ध्यानलगायेरहे अपनेपिताके डाटनेपरभी पढ़नेमेंजी नहींलगाया तब उस ब्राह्मणने अन्तसमय दूसरेबेटोंसे जो विद्यावान्थे कहा हे बेटा मैंने बहुत चाहा कि भरत तुम्हाराभाई कुछहै पर उसने पढ़नेमें चित्त नहींलगाया इसकारण मूर्खरहा सो तुमलोग मेरेअन्तसमयकी बातमानकर ऐसाउद्योग करना कि जिसमें वह पढ़कर चतुरहोजावै जब वह ब्राह्मण यह कहकर मरगया तब उसकेबेटोंने भरतके पढ़नेवास्ते बहुत उपायकिया पर नहींपढ़ा जड़भरतरूप बनकर ऐसा चलन पकड़ा कि कोईखिलादे तो खाना पिलादेतो पीना नहींतो कुछशोच न रखकर दिनरात्रि परमेश्वरके ध्यानमें मग्नरहना इससमयभी ऐसाचलन रखनेसे जड़भरत कहलाते हैं भरतकेभाइयोंने यहहाल देखकर उससे अपनामनमोटा करलिया पर भोजन उसको देदिया करतेथे जब उन्होंने देखा कि यहकोईकर्म घर व गृहस्थीका न करके वृथाखाताहै तब उसे अपनाखेत अगोरनेवास्ते बैठालकरकहा तुम देखाकरो जिसमें इस खेतका अनाज कोई न लेजावे व पशुपक्षीभी खाने न पावैं जड़भरतने कुछ रखवारी उसकी न की वहां आनन्दपूर्वक बैठकर परमेश्वरका स्मरण व ध्यानकरनेलगे एकराजा भीलोंका जो उसदेशमें रहताथा उसने मान्तामानी कि हे भद्रकाली मेरेबेटाहोतो मैं मनुष्यका बलिदान तुम्हैंचढ़ाऊं जब भद्रकालीकी कृपासे उसके पुत्रउत्पन्नहुआ तब उसने एकबालक बलिदानदेनेवास्ते मोललेकर पालनकिया जब वह बालक अपने बलिदान दियेजानेका हाल सुनकर भागगया तब राजा अपने नौकरोंसे बोला कि कुछ रुपया देकर एक मनुष्य बलिदानदेनेवास्ते ढूंढ़लेआवो जब वहलोग खोजतेहुये रात्रिकेसमय उसखेतपर पहुँचे तब उन्होंने वहां जड़भरतको हृष्टपुष्ट देखकर बलिदान देनेवास्ते पकड़लिया व रस्सीगलेमें बांधकर राजाकेमन्दिरमें लेगये वह राजा जड़भरत को देखकर बड़े हर्षसेबोला कि तुम ऐसा अच्छामनुष्य बलिदानदेनेवास्ते लायेहो कि जो अपनेमरनेका कुछ डर न रखकर आनन्दमूर्ति दिखलाईदेता है भद्रकाली इसका बलिदानलेकर बहुत प्रसन्नहोवैगी व राजाके पुत्र पुरोहित व ब्राह्मण महामूर्ख कुछ वेद व शास्त्रकाहाल नहींजानतेथे कि ब्राह्मणका बलिदान देनाहोताहै या नहीं सो इसबात का विचार न करके जड़भरतका क्षौरबनवाय व उबटन व फुलेललगाकर स्नानकराया व बलिदानदेनेवास्ते उसको नयाकपड़ा व गहनापहिनाया व इत्र व चन्दन शरीरमें मलकर बहुतअच्छा भोजन उसेखिलाया उससमय जड़भरतने प्रसन्नहोकर मनमेंकहा कि जबसे मेरे माता व पितामरेहैं तबसेमुझे किसीने ऐसापदार्थ नहीं खिलायाथा आज बहुतअच्छा व्यंजन यहलोगप्रीतिसे खिलातेहैं जब भोजनकराने उपरान्त जड़भरतकेगलेमें उत्तमफूलोंकाहार पहिनाकर भद्रकालीके सामने खड़ाकिया तब ब्राह्मणों

ने राजाकेहाथमें नंगीतलवार देकरकहामारो जैसेराजाने खड्ग मारनेको हाथउठाया वैसेजड़भरतने यहबात बिचारकर शिरअपना उसकेआगे झुकादिया कि पूरी व मिठाई खातेसमय मैंने अपनामुँह फैलायाथा अब तलवारखानेकेसमय गर्दन सामनेसे हटाना उचितनहीं है व भद्रकालीने उसको शिरझुकातेदेखकर बिचारा ये सबब्राह्मण ऐसाज्ञान नहींरखते जो राजाको बलिदानदेनेसे मनाकरें व इस ब्राह्मण हरिभक्तके दुःखदेनेमें ऐसा न हो कि जो नारायणजी मुझेकुछदण्डदेवें इसकीरक्षा नहींकरती तो मुझेपापहोगा किसवास्ते कि कोईमनुष्य अपनेसामने किसीको बिनाअपराध दुःखदेवे तो उसकीरक्षा करनीचाहिये नहींतो देखनेवालेको पापलगताहै ऐसाविचारकर भद्रकालीने बड़ाक्रोध किया व खड्ग व खप्पर हाथमेंलियेहुये चिल्लाकर ऐसाझपटा कि वह शब्दसुनतेही राजाअपनेपुरोहितसमेत बहिराहोकर ऐसामूर्च्छितहोगया कि तलवारगिरपड़ी तब भद्रकालीने उसीखड्गसे राजा व पुरोहितकाशिर काटलिया व दोनोंकाशिर गेंदकेसमान उछालकर इसइच्छासे नाचनेलगी कि जिसमें जड़भरत प्रसन्नहोकर मुझेकृपा व दयाकी दृष्टिसेदेखें तो मेराभलाहो व इनकेदुःखीहोनेसे मेराकल्याण न होगा जब भद्रकालीके नृत्यकरनेपरभी उसीतरह माथाझुकाये खड़ेरहे तब भद्रकालीने स्तुतिकरके उनसेकहा हे ब्रह्मदेव आपकृपाकरके मेराअपराधक्षमाकरैं किसवास्ते कि जब किसीकाभक्त व सेवक दूसरेकाअपराध करताहै तब उसकेमालिककानाम धराजाताहै सो आप ऐसाविचार न करैं कि यहराजा भद्रकालीका भक्तथा यह मेराबड़ाशत्रुहै जिसने आपसे महात्माको दुःख देनेचाहा व राज्य व धनके मदमें अन्धाहोकर तुम्हें नहीं पहिंचाना जड़भरतने यह बचन सुनतेही मुसुकराकर कहा आत्माका कभीनाश नहीं होता इसलिये अपना शिर कटने से मैं नहीं डरता पर तेरा भक्त इस पापके बदले नरक भोगकरैगा इसबातका शोच मुझे है जड़भरत ऐसा कहकर वहांसे चलाआया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् तुम निश्चयकरकेजानो कि जो मनुष्य मन अपना परमेश्वरमें लगाये रहताहै उसे कोई दुःख देने नहीं सक्ता ॥

दशवां अध्याय ॥

राजा रहूगण करके जड़भरतको अपने सुखपाल में पकड़कर लगाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजा दूसराहाल जड़भरतका सुनो एकदिन राजारहूगण सिंधुसुवीरनाम अपने नगरसे शिविकापर चढ़कर कपिलदेवमुनिके पास ज्ञान सीखने आताथा राहमेंएककहार उसकीसवारीकामांदाहोगया उसीओर कहीं जड़भरतभीपरमेश्वरकेध्यानमेंआनन्दसे बैठेथे दूसरेकहारोंनेजड़भरतको हृष्टपुष्टदेखकरपकड़के शिविकामें लगादिया जड़भरतआनन्दपूर्वक राजाकीपालकी उठायेचलेजातेथे व इसअपमानका

कुछशोच उनकोनहींथा पर धरतीकोदेखते चिउँटीआदिकजीवोंकेदवनेसे बचातेहुयेपांव रखतेथे इसलियेजबकईबेरशिविकाहिली तबराजानेक्रोधसे कहारोंकीओरदेखकरकहा कि तुमलोग पालकीक्योंहिलातेहो कहारबोले हमाराकुछअपराध न होकर यहनयाकहार शिविकाहिलाताहै यहबातसुनतेहीराजाने जड़भरतसेकहा हेकहार तू हृष्टपुष्टदिखलाईदेता है अभीइतनारास्तानहींचलाजोथकगया अपनेप्राणकाडर न रखकर मरनेकीइच्छारखता है जो पालकीहमारीअच्छीतरहनहींलेचलता जड़भरतयहबचनसुनकरचुपहोरहा व कुछ उत्तरराजाको न देकर मनमेंकहा देखो इसशरीरकोकर्मानुसार दुःख व सुख मिलता है व परमात्माइनदोनों से बिलगरहकर सदाएकरीतिसेरहते हैं जब जड़भरतचुपहोरहे तब फिरराजाक्रोधकरकेबोला कि हेकहार तूहमारीबातकाउत्तरक्योंनहींदेता यहबचनसुनकर जड़भरतनेबिचारकिया कि यह अपनेकोबड़ाज्ञानीसमझताहै इससेअभिमानइसकातोड़-नाचाहिये ऐसाबिचारकेजड़भरतहँसकरबोले हेराजातुमनेकहा कि तू बहुतराहनहींचला व थकगया जोमनुष्यवृथाफिरताहै वह दुःखपानेसेअवश्यमांदाहोगा क्यों ऐसाकर्मनहीं करता कि जिससे जन्म व मरणसेछूटजावे व आपनेकहा दुर्बल न होकरमोटा दिखाई देताहै सो हेराजा परमात्मा जिसकोजीवकहते हैं वहसदाचैतन्यरहकर न मोटाहोताहै न दुर्बल सदाएकसारहताहै कदाचित् उसे दुबलाकहो तो वह ऐसासूक्ष्मरूपहै कि किसीको दिखलाईनहींदेता व मोटासमझो तो उसकेबिराट्रूपमेंसारासंसार व चौदहोंलोकवर्त्तमान हैं और यहशरीरनाशहोनेवाला कभीपुष्ट व कभीकृशितरहताहै जिसनेइसअनित्यशरीर में प्रीतिलगाई उसे इनबातोंका बिचारकरनाचाहिये व जो तुमनेकहा तू मरनेकी इच्छा रखताहै सो मेरेनिकट जीना व मरना दोनोंबराबरहोकर बिनामृत्युआये कोईनहींमरता व हेराजन् प्रकाशपरमेश्वरका बीचतनुमेरे व तुम्हारे व सबजीवों के एकसा है इसलिये स्वामी व सेवकसमजानताहूं व तुमइसीशरीरतकराजाहो मरनेउपरान्त हम व तुम दोनों बराबरहोजावेंगे इसलियेतुमकोयहसामर्थ्यनहीं है कि जो आत्माअविनाशीपुरुषको दुःख देनेसको इसझूठीकायाको चाहोसोदण्डदेव दुःख व सुख हर्ष व विषाद शरीरकोहोताहै व परमात्मातनुमें पृथक्रहकर दुःख व सुखसे कुछप्रयोजननहींरखते यहवचनसुनतेही जब राजाकोज्ञानप्राप्तहुआ तबवह शिविकासेउतरपड़ा व जड़भरतकोदण्डवत्करके बोला कि महाराज मैंने संसारीजाल में फँसेरहने से तुमको नहीं पहिंचाना सत्यबतलावो तुम ऋषीश्वर या कोईमहापुरुषका अवतारहोकर अवधूतोंकीतरह अपनाभेषबदले फिरतेहो आपकृपाकरकेअपनाभेदबतलाइये व मुझेज्ञानसिखलाकर भवसागरपारउतारदीजिये मैं महादेवकेत्रिशूल व यमराज व चन्द्रमा व सूर्य व अग्निआदिक किसीदेवताकाभय न मानकर ब्राह्मणकेशापसेबहुतडरताहूं सो अपराधमेरा क्षमाकीजिये यहबातसुनकर जड़-भरतनेकहा हेराजा यहजीवअपनीकरणीसेकभी देवताहोताहै कभीआदमी व मनुष्यतनु में कभीराजाहोता है कभीभिखारी यहगति इसशरीरकीसमझकर परमात्माको जिसेजीव

कहतेहैं उनसब से पृथक्‌जाननाचाहिये इतनाज्ञानकहनेउपरान्त जड़भरत ने अपने पूर्व्वजन्मका सबवृत्तान्त राजारहूगणसे वर्णनकिया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

जड़भरत करके राजा रहूगणको ज्ञानउपदेश करना ॥

जड़भरतनेकहा हेराजा अज्ञानतामनुष्यकीदेखो वहअपनेकानोंसे जिन स्त्री व पुत्रादिकका दुर्वचनसुनकर दुःखपाताहै तिसपरभी चित्तउसका उनकीओरसे नहींफिरता व झूंठसत्यबोलकर किसीप्रकारसेदशरूपयाकमाके उन्हींलोगोंकोपालनकरताहै व छः चोर व ठग आठोंपहर मनुष्यकेसाथरहकर इसतरहउसकेशुभकर्मोंकोचुरालेते हैं कि जिसतरह राहमेंचोर व ठग धनपात्रकेसाथलगकर अवसरपाकेउसेलूटलेते हैं व चूहा घरमेंरहने से खानेपीनेपरभी वस्त्रादिककाटडालते हैं जिसकेघरमेंचूहा न हो उसकीवस्तु नष्टनहींहोती और उनछहोंमें एकचोरमनकोसमझो जिसकेचलायमानहोनेसे मनुष्यकुकर्मकरके नष्ट होताहै दूसरेपांचचोर व ठग काम क्रोध लोभ व मोह व इन्द्रियां हैं जिनकेअधीनहोकर अशुभकर्मकरनेसेधर्म्ममनुष्यका क्षीणहोजाताहै इसलियेमनुष्यकोचाहिये कि इनछहोंचोर व ठगोंको अपनेअधीनरखकर उनकेवश्य न होवै जब जड़भरत ने यहबात रहूगणसे कही तब राजाने फिर उन्हें दण्डवत् किया ॥

बारहवां अध्याय ॥

राजारहूगणको मनुष्यतनुकी स्तुतिकरना ॥

राजारहूगणने जड़भरतसे इतनाज्ञानसुनकर विनयकिया महाराज मनुष्ययोनि से दूसराचोलाउत्तमनहींहोता जिससे तुम्हारेऐसे महात्मा व ज्ञानीकामुझेदर्शनमिला व जन्म मनुष्यका देवतोंसेभी अच्छासमझनाचाहिये कदाचित् देवता परमेश्वरकातपकरैं तो सिवाय मुक्तिके दूसरामनोरथउनकोनहींमिलता भरतखण्डकामनुष्य जिसअर्थकेवास्ते हरिभजन करै वहीफल उसकोप्राप्तहोताहै इसलिये मैं मनुष्यतनुको देवतोंसेउत्तमजानकर दण्डवत् करताहूं जड़भरत यहवचनसुनकरबोले हेराजा यहसबबातैं मैंने तुझसेकहीं इनकाअर्थ तैंनेसमझा या नहीं राजाबोला कि महाराज मैं संसारीजीव अतिमूर्खअज्ञानहूं इसलिये यहज्ञान अच्छीतरहनहींसमझा आपदयालुहोकर विस्तारपूर्वककहिये तब मैं समझसक्ताहूं यहवचनसुनतेही जड़भरत हँसकरबोले हेराजन् यहबातकठिनहै ऐसाज्ञानयज्ञ व पूजा व तपकरने व विरक्तहोने व बनकेरहने व पंचाग्नितापने व जलमेंबैठने व दानदेने से नहींप्राप्तहोता यहसबकर्मकरनेसेमनुष्यको इसबातकाअहंकारहोता है कि मैंनेऐसेशुभकर्म किये हैं मेरीबराबरदूसराकौनहोगा शुभकर्मकरनेपरभी अहंकाररखनेसे वहनष्टहोजाताहै व जबतकअभिमानछोड़कर सन्त व महात्माके चरणोंकीधूर अपनेमस्तकपरनहींलगाताजब तक यहज्ञान उसकोनहींमिलता व बिनाकृपापरमेश्वरके सन्त व महात्माकादर्शन दुर्लभ

है व हेरहूगण तुमसमझते हो कि हम राजा हैं सो मैंभी पिछले जन्ममें भरतनाम सातों द्वीपका राजा था पर वहां रहने से अपना भला न समझकर राजगद्दी छोड़दिया व बनके बीच नारायणजी के शरण जाकर हारभजन करनेलगा सो तुमको अभीतक अपनी राजगद्दीका अभिमान बनाहै इसलिये दूसरे जीवोंपर दया नहीं रखते जिसतरह प्रकाश परमेश्वरका तुम्हारे तनुमें है उसीतरह ईश्वरका चमत्कार इन कहारोंमें भी समझना चाहिये व ज्ञानकी दृष्टिसे यहलोग व सबजीव परमेश्वरके तुम्हारे समानहैं सो तुम अपने शरीरके सुख वास्ते इन्हेंदुःख देतेहो सो बहुत अनुचितहै यहज्ञान सुनतेही राजारहूगण मारेडरके कांपनेलगा व जड़भरत से हाथजोड़कर बोला महाराज मैं ब्राह्मणके शापसेडरताहूं ऐसा नहो कि जोआप क्रोधकर मुझे कुछशाप देवैं ॥

तेरहवां अध्याय ॥

जड़भरत करके एक धनीबनियें का इतिहास राजारहूगणसे कहना ॥

रहूगण की बातसुनकर जड़भरतने कहा हे राजा मत डर तुझे शापनहीं दूंगा सुनो ज्ञानी व महात्मालोग संसारीसुख स्वप्नवत् झूठासमझकर इसशरीरसे प्रीतिनहींरखते व परमात्मा कायासे इसतरह अलगहै कि जिसतरह वृक्षपर पक्षी बैठाहो व उसपेड़ के काटने से पक्षीको कुछदुःख नहीं होता कदाचित् पक्षीव्यर्थ उसवृक्षको अपना जानकर रोवे तो उसका शोचकरना वृथाहै जोकोई शरीरको अपना समझकर संसारीसुख में मन लगाताहै उसे सिवायदुःखके सुखनहीं होता जब उसने विरक्तहोकर परमेश्वरमें ध्यानलगाया तब उसका सुखमिलताहै व परमेश्वरकी भक्तिकरनेसे हृदयमें ज्ञानका दीपकप्रज्वलित होकर काम व क्रोधका अन्धकार उसके अन्तःकरणसे छूटजाताहै यह ज्ञान सुनतेही राजारहूगण ने हाथजोड़कर कहा महाराज मैंने आपको पहिंचाना तुम ब्राह्मणहो जिसतरह रोगीका दुःख अमृतपीने से छूटजाताहै उसीतरह आप संसारीमनुष्योंको जो मायामोहमें फँसकर नष्टहोरहे हैं अपनादर्शन देकर कृतार्थ करतेहैं सो मुझे भी अपनादास जानकर दर्शनदिया यहबात सुनकर जड़भरत बोले हेराजन् मैं एक इतिहास कहताहूं तू उसके सुननेसे भवसागरपार उतरजावेगा सुनो एकबनियां धनपात्र बहुतवस्तु व्यापारकी अपने साथलेकर किसी दिशावरकोचला व उसने कृपणता से मालकी रक्षाकरने के वास्ते कोईचाकर अपनेसाथ नहींरक्खा इसलिये छःचार उस के संग होलिये व उन चोरोंके और भी सहायक उनके पीछेपीछे चले थोड़ीदूर नगर से बाहर जाकर वहबनियां राहभूलके ऐसे बनमेंपहुँचा जहां कोसोंतक बस्ती नहींथी जब बनमें बाघ व भालू कटीलेवृक्ष व नदी व नाले अधिक होनेसे उसका राहचलना कठिनहुआ तब वहबनियां मारेडरके उसबनसे पारहोने वास्ते संध्यातक बराबर चला गया पर बस्ती कहीं न मिली और उसीबनमें रातहोगई जब बनियां रातको एकनाले

में अपने मालसमेत पहुँचा तब वही छःचोर और उनके सहायक सबमाल उसका लूटनेलगे उसीसमय उस बनियेंने रोकर मनमें कहा भला कुछमाल भी बचजाता तो उसे बेंचकर फिर व्यापारकरते वहबनियां ऐसाविचारकर जिसबस्तुका बचाव करताथा उसे सबचोर लूटतेथे जब सबमाल उसका चोर लूटलेगये तब वहबनियां घबड़ाकर उसबनमें अपने टिकनेको स्थान ढूंढ़नेलगा पर कोईजगह उसके रहनेके वास्ते नहीं मिली सो वह व्याघ्र व हाथी आदिककी बोलीसुनकर डरसे कांपताहुआ राहचलाजाता था जबकहीं पृथ्वीपर सांप व बिच्छू देखता तब ठोकरखाकर गिरपड़ताथा व कहीं पैर में कांटेचुभतेथे जहां वृक्षकेनीचे सुस्तानेलगता तो वृक्षपर उल्लूका शब्दसुनकर वहां से भी भागता कभी बनमें आगलगी देखकर उसकेडरसे दूसरीओर दौड़ताथा उसी विपत्तिमें भागतेहुये एकसूखे कुयेंमेंगिरपड़ा उसकुयेंपर बरगदका वृक्षहोकर एकडाली उसकी कुयेंमें लटकतीथी जब वहबनियां आधेकुयेंमें पहुँचा तब वहडाली उसके हाथ लगी उसेपकड़कर लटकगया व उसकुयेंमें एकसांप नीचे बैठाथा सो अँधियारी रातमें बिजुली चमकनेसे उसने देखा कि कुयेंमें एकसांप फनकाढ़े बैठाहै व जिसडाली को पकड़ेथा उसडालीको ऊपरसे दोचूहे श्याम व श्वेतवर्णके काटतेहैं तबबनियांने बिचारा कुयेंमें कूदपड़ूं तो सांपके काटनेसे मरजाऊं नहींकूदता तो डाली कटजानेसे गिरकर सांपकेमुंह पड़ूंगा इसीशोचमें व बिचारमें बनियां पड़ारहा व उसीबरगदके वृक्षमें एक छत्ता शहदका लगाथा डाली हिलनेसे एक २ बूंदटपककर जो उसबनियांके मुंहमें गिरतीथी ऐसीविपत्तिमें वहबनियां शहदचाटकर बहुतप्रसन्नहोताथा इसीतरह बनियां की आयुर्दा उसकुयेंमें लटकेहुये बीतगई व उसके निकालनेवाला कोई वहां न पहुंचा जब एकदिन उनदोनोंचूहोंने ऊपरसे डालीकाटदिया तब वहबनियां कुयेंमें गिरकर सांपकाटनेसे मरगया इतनीकथा सुनकर राजाने जड़भरतसे कहा महाराज मुझेबड़ा आश्चर्यमालूम होताहै कि वहबनियां एकबूंद शहदखाकर प्रसन्नरहा व डालीपकड़कर ऊपर क्योंनहीं चढ़आया यहवचनसुनकर जड़भरतबोले हेराजन् इसीतरहपर तुम्हारी व संसारीमनुष्योंकी दशाहै कि सबमनुष्य अनेकतरहका अपना उद्यमकरके कुटुम्ब पालनकरते हैं पर घरवालोंको किसीतरहका सन्तोषनहोकर प्रतिदिन अधिकलोभ बढ़ताजाता है और अपनेउद्यमसे उनको किसीसाइति छुट्टीनहीं मिलती जो दोघड़ी परमेश्वर अपनेउत्पन्न व पालनकरनेवाले का स्मरण व ध्यानकरैं जबकोई उनसे हरि भजनकरने की चर्चाकरताहै तब कहतेहैं हमको अपनेउद्यम व गृहकार्य्यसे छुट्टीनहीं रहती किससमय परमेश्वरका भजन व ध्यानकरैं सो हेराजन् इसजीवको बनियांसमझो व काम व क्रोध व लोभ व मोह व मद व मत्सरता यही छःचोर आठोंपहर मनुष्यके साथ रहतेहैं व परिवारवालों को उनछहोंकासहायकसमझना उचितहै और जीवको इस लिये बनियां कहनाचाहिये कि उसनेधर्म व ज्ञानबढ़ाने वास्ते भरतखण्डमें मनुष्यका तनु

पाया जिसतरह उत्पन्नहोकर साधु व महात्माकासत्संग व हरिभजनकरकेसंसारीमायाजालमें फँसगया इसीकारणजोकुछउसके पूर्वजन्मकाधर्म्मथा वहभी परिवारवालों ने चुरालिया उसी तरह बनियांने अपनेमालकी रक्षाकरनेवास्ते नौकरनहींरक्खा इसलिये चोरोंने उसकोलूट-लिया कदाचित् नह भरतखण्डमेंजन्मलेकरसाधु व महात्माका सत्संगकरके ज्ञानसीखताती किसवास्ते बनियेंके समान मायाजालमें फँसकर नष्टहोता जैसे वहबनियां अपनेटिकनेके वास्ते स्थानढूंढ़तेसमय व्याघ्रादिकके डरसेभागताथा वैसेसंसारीसुख चाहनेवाले दुःखभोग-तेहैं व मनुष्य अपने कुटुम्बकी बीमारी व मरना देखने व अपने शरीरके रोगसे व कभी धनमिलनेवास्ते दुःखपाकर आठोंपहरचिन्तामें फँसारहताहै जिसतरह उल्लू व व्याघ्रादिक बनियें को डरपातेथे उसीतरह जब परिवारवाले झगड़ाकरके घुड़कते हैं तब मनुष्य बड़ा दुःख पाताहै व स्त्रीकी संगति अन्धकार समझना चाहिये जिस जगह ज्ञान व वेद पुराणका वचन सब भूलजाताहै जब मनुष्य बूढ़ा होकर कुछ कमाई नहीं कर-सक्ता तब परिवारवाले उसे दुर्वचन कहकर भोजन व वस्त्रका दुःख देते हैं व कुछ उसका आदर नहीं करते जिसतरह मनुष्य महादुःखमेंभी मरनेका कुछ डर न रखकर दिनरातकमानेका शोच कियाकरताहै उसीतरह बनियां कुयें में सांप व चूहे देखनेपर भी मरनेका भय नहीं रखताथा सो मनुष्यके वास्ते संसार व परिवारमें रहना यही अँधियारा कुवां समझो व जैसे कर्म पिछले जन्मकिये हैं उसे वरगदकी जड़ समझना चाहिये जिसे पकड़कर जीताहै व दो चूहे काले व सपेद जो जड़ काटते थे वहीदिन व रातहैं जिसके बीतने से आयुर्दाय घटजाती है और बनियें ने जो सांप कुयें में देखा था उसे कालसमझो जिसतरह एक बूँद शहद चाटकर बनियां प्रसन्न होताथा उसी तरह अज्ञान मनुष्य बुढ़ाई व सबतरहके दुःख होनेपरभी अपने कुटुम्बमें बैठकर मग्न होते हैं वही शहदकी बूँद समझना चाहिये सो हे राजन् जगत्को वही बन दुःखदेने वालाजानो संसारी मायाजालमें फँसनेवाला उसी बनियें के समान दुःखपाकर नष्ट होगा जिसतरह तू जगत्की मायामें लपटाहै उसीतरह वह बनियां स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसकर नष्ट हुआथा जो कोई वेद व शास्त्रके अनुसार चले वह अपना मनोरथ पा-सक्ताहै नहीं तो सब छोटे बड़े इसी मायारूपी बनमें भूलकर नष्ट होरहे हैं बिना सत्संग किये मोहरूपी बनसे बाहर निकलना बहुत कठिनहै ॥

चौदहवां अध्याय ॥

यह ज्ञान सुनकर रहूगणका प्रसन्नहोना व तप करनेवास्ते वनमें चलेजाना ॥

जड़भरतने जब इसतरहका ज्ञान रहूगणको बतलाया तब राजा प्रसन्नहोकर जड़-भरतके चरणोंपर शिर रखकर विनयपूर्वक बोला कि आपने अतिदयाकरके मुझे जो मायामें भूलरहाथा यह ज्ञानरूपी रास्ता दिखलाया यह बचन सुनकर जड़भरतबोले

कि तुम इसज्ञानके प्रकाशसे संसारी जालमें नहीं फँसोगे यह बात सुनतेही राजाने विरक्तहोकर उसी जगह पालकी अपनी छोड़दी व बनमें जाकर हरिभजनकरके मुक्त हुआ व जड़भरत अपना शरीर योगाभ्यासके साथ त्यागकर परमधामको चलेगये व जड़भरतके सुमतनाम बेटेने जो राजगद्दीपर बैठाथा जैनधर्म्मका मत संसारमें फैलाया उनके वंशमें प्रतिहार आदिक उत्पन्नहोकर शुभकर्मकरके परमपदको पहुँचे ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका राजा परीक्षितसे पृथ्वी आदिकका विस्तार कहना ॥

राजापरीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूछा कि हे स्वामी आप दयालुहोकर पृथ्वी व सूर्यादिक लोकोंका हाल विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजा पहिले सातोंद्वीपोंका हाल संक्षेपसे कहाहै अब फिर विस्तारपूर्वक कहते हैं सुनो पृथ्वी में सात द्वीप होकर सब द्वीपोंकी धरती पृथक् २ बँटी है व जम्बूद्वीप लाखयोजन भूमिहोकर सब पृथ्वी सातोंद्वीपकी पचास करोड़योजनहै उससे चौथाई धरती लोकालोक पर्वतके नीचे दबी रहकर तीनभागमें सातोंद्वीप व समुद्रहैं सो राजाप्रियव्रत इनसातों द्वीपोंके मालिकने एकएक द्वीप अपने सातों बेटोंको बांटदिया व आप बनमें जाकर बीचतप व ध्यान परमेश्वरके लीनहुये व प्रियव्रतके अग्नीध्रनाम बेटेने जम्बूद्वीपके नवखण्ड करके एक २ खण्ड अपने पुत्रोंको बांटदिया व जौन २ नाम उनके बेटोंके थे वही नाम उन नवखण्डोंके प्रकटहुये पहिला उत्कलखण्ड १ दूसरा हिरण्यखण्ड २ तीसरा भद्राश्वखण्ड ३ चौथा केतुमालखण्ड ४ पांचवां इलाव्रतखण्ड ५ होकर उसखण्डके मध्यमें एक पर्वत सुमेरुनाम सोनेका लक्षयोजन ऊँचा व सोलहहजार योजन लम्बा व आठहजार योजन चौड़ा व बत्तीसहजार योजनके घेरेमें है छठवां नाभिखण्ड ६ सातवां किम्पुरुषखण्ड ७ आठवां भरतखण्ड ८ नवां नरहरिखण्ड ९ हैं व ब्रह्माण्ड कमलफूलके समान गोलहोकर एक २ पर्वत नवोंखण्डोंके सिवानेपर बर्त्तमानहै व सुमेरुपर्वतके चारोंओर चारिपहाड़ पर दूध व शहद व पानी व रसका कुण्ड भरा है व चार बाग बहुत अच्छेफल व पुष्प लगेहुये कुबेर व महादेव व इन्द्र व वरुण देवताओंके वहांपर ऐसे बने हैं कि जहां जाने व स्नान करने से देवपत्नी जवानहोजाती हैं व सुमेरु पर्वतके शिखरपर ब्रह्मपुरी दशहजार योजन लम्बी व चौड़ी जड़ाऊ बनी है वहांपर भांति २ के पक्षी रहकर मीठी २ बोली बोलते हैं हे राजन् वहांकी शोभा हम तुमसे कहांतक वर्णन करैं देखने से मालूम होती है ॥

सोलहवां अध्याय ॥

शुकदेवजी का राजापरीक्षितसे लोकालोक पर्वतकी कथा कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् इसतरह जम्बूद्वीपमें नवखण्डहोकर हरएक खण्डके

रहनेवाले सब अवतारोंकी पृथक् २ पूजा करते हैं व इन सातों द्वीपोंके बाहर लोका-लोकपर्वतहै उसके उधर अँधेरा होकर सूर्य्य व चन्द्रमाका प्रकाश नहीं रहता वहां योगीलोग जाने सक्ते हैं व संसारीलोग वहां जानेकी सामर्थ्य नहीं रखते और आठ हाथी बड़े बलवान् जिनको दिग्पाल कहते हैं सब पृथ्वीके आठोंओर रहकर धरतीको अपने नीचे ऐसा दबाये हैं कि हिलने नहीं देते व सुमेरुपर्वतपर चारपुरी कुबेरपुरी १ बरुणपुरी २ इन्द्रपुरी ३ यमपुरी ४ हैं और सूर्यका रथ दोपहर पीछे इन चारोंपुरियों में प्रातःकाल व दोपहर व सन्ध्या व आधीरातके समय एकएक जगह पहुँचताहै व ब्रह्माकी पुरीसे गंगाजी निकलकर सुमेरुपर्वतके नीचे गंगोत्तरी में आई हैं ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

शुकदेव स्वामीका गंगाजीकी महिमा वर्णन करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित गंगाजीकी उत्पत्ति विस्तारपूर्वक कहताहूंसुनो! जब नारायणजी ने वामन अवतार लेकर तीनपैग पृथ्वी राजाबलिसे दानलिया सो विराट् रूपधारणकरके एकपगसे सातोंलोक नीचेके व दूसरेपगसे सातोंलोक ऊपरके नाप लिये तब ब्रह्मा दाहिनाचरण परब्रह्मपरमेश्वरका अपनी पुरीमें पहुँचतेही त्रिविक्रम अवतारहोना जानकर उठखड़ेहुये व ब्रह्माने अपने कमण्डलुमेंसे पानी विरजानदीका जो ब्रह्मरूप परमेश्वरके आंशू गिरने से बैकुण्ठमें प्रकटहुईथी लेकर उन चरणोंको धोया व चरणामृतलेकर वह जल अपने शिर व आंखोंमें लगाया और वह चरण धोतेसमय जो पानी सुमेरुपर्वतपर गिराथा वह नीचे आनकर मन्दराचल पहाड़के सिवाने पर थँभरहा फिर वहांसे चारधारा होकर वह जल बहा तो एकधारा सुमेरुके पश्चिम व दूसरी सुमेरुके दक्षिण व तीसरी सुमेरुके उत्तरदिशा बहकर समुद्रमें मिलगई चौथी धारा जो पूर्वको बहीथी वह भगीरथके तपोबलसे इलावृतखण्डको बाईंदिशा छोड़ती हुई नरनारायणपर्वतसे उतरके गंगोत्तरी से होकर भरतखण्डमें आई उसीधाराका नाम संसारमें गंगाजी प्रकटहुआ व माहात्म्य गंगाजीका इसतरहपरहै जो कोई गंगास्नान व जलपान व दर्शन करनेके वास्ते अपने घरसे जानेकी इच्छा करता है उसकेकरोड़ों जन्मके पाप छूटजाते हैं और वह मनुष्य इसइच्छासे जितने पग चलकर गंगाजीतक पहुँचताहै एक २ पग धरनेके बदले उसको सौ सौ राजसूययज्ञ व अश्वमेधके फल मिलते हैं यह वचन सुनतेही परीक्षितने सन्देह मानकर शुकदेवजी से पूँछा कि महाराज जब मनुष्यको गंगास्नान करने जाने से यज्ञोंके फल मिलते हैं तो युधिष्ठिर हमारे दादाने किसवास्ते इतना रुपया खर्चकरके यज्ञकियाथा व दूसरे राजालोग क्यों यज्ञ करते हैं यह वचनसुनकर शुकदेवजी बोले कि हे राजन् हम एक इतिहास तुमसेकहते हैं सुनो एकसमय महादेवजी पार्वतीको साथलेकर मकरमहीने में गंगास्नान करने के

वास्ते प्रयागराजको जातेथे तब राहमें पार्वतीजी ने बहुतलोगोंको जातेहुये देखकर महादेवजी से गंगास्नानका माहात्म्य पूँछा तब शिवजी ने कहा हे पार्वती जो कोई गंगा नहाने अपने घरसेचले उसको एक २ पग चलने में सौ सौ अश्वमेधयज्ञ का फल मिलकर करोड़ों जन्मके पाप छूटने से वह देवतासमान होजाताहै यह वचन सुनने व यात्रियों को देखने से पार्वतीजी ने यह सन्देह किया देखो लाखोंमनुष्य नीचजाति गंगाजी से नहाकर चलेजाते हैं सो इनलोगोंकी गंगास्नानकरने से अभीतक कुरूपता भी नहींगई देवताकातनु किसतरह पावैंगे व महादेवजी ऐसा कहते हैं सो इतने यात्रियों को ऐसा फल किसतरह मिलैगा ऐसी शंकामानकर पार्वतीजी फिर विनयपूर्वक बोलीं कि महाराज आपने गंगाजीका माहात्म्य इसतरह पर वर्णन किया और इन यात्रा करनेवालोंका रूप देखने से मुझे इसबातकी प्रतीति नहीं होती महादेवजी बोले इसका भेद हम तुमसे क्या कहैं चलो आंखसे दिखला देवें ऐसा कहकर जब शिवजी गंगाके निकट जिस रास्ते से यात्री चलेजाते थे पहुँचे तब वहां कोढ़ीरूप बनकर बैठ गये व पार्वतीसे कहा तू दिव्यरूप अति सुन्दरीहोकर मेरे शरीरकी मक्खी उड़ाव और जो कोई स्नानकरनेवाला तुझसे पूछे तो उससे यहबात कहना कि हमारा पति कोढ़ी होगया सो एक पण्डितने कर्मविपाककी पोथी देखकर बतलायाहै कि जिस किसीने सौ अश्वमेधयज्ञकिये हों वह इनको अपनेहाथसे छूदे तो इनका कोढ़ छूटजावे सो यहां लाखोंमनुष्य नहाने आयेहैं इसवास्ते इनको यहांलाकर बैठीहूँ कि जिसने सौ यज्ञ कियेहों वह इनको छूदे तो यह तन इनका अच्छा होजावे जब पार्वतीजी देवकन्याके समान बनकर मक्खी उड़ाने व यही बात कहनेलगीं तब बहुतसे यात्री उनका रूप देखतेही मोहितहोकर उनके चारोंओर खड़े होगये उनमें कोई पार्बतीको अपने साथ चलनेवास्ते कहकर कोई उनसे हँसी व ठट्ठा करनेलगे व कितनों ने अनेक तरहका डर व लोभ उन्हें दिखलाया व ज्ञानीलोगों ने कहा इस स्त्रीको धन्यहै कि जो इसदशामें भी अपने पतिकी सेवा नहीं छोड़ती जो स्त्री अपने स्वामीको काना, कुबड़ा, कोढ़ी, लँगड़ा, अन्धा, दरिद्री, कुरूप कैसाहीहो परमेश्वरके समान जानकर आनन्दपूर्वक उसकी सेवाकरै व परपुरुषको कुभाव से न देखै उसे पतिव्रता कहना चाहिये उसीसमय एक कंगाल ब्राह्मण दुर्बल उनको देखतेही निकट आनकर दण्डवत्करके पार्बतीजी से बोला कि हे माता तुम किसइच्छासे यहां भीरमें बैठीहो कहीं एकान्त में अपने पतिको लेजाकर उसकी सेवाकरो कि जिसमें मक्खी आदिक बैठने से यह दुःख न पावे यह वचन सुनकर पार्बती बोलीं मेरे पतिके कर्म्मबिपाकमें ऐसा निकलाहै कि जिसने सौ अश्वमेधयज्ञ कियेहों वह इनको छूदे तो शरीर इनका अच्छा होजाय इसी इच्छासे मैं इन्हें यहांलाकर बैठीहूँ कि इसपर्बमें लाखोंमनुष्य आवैंगे किसीने तो सौ अश्वमेधयज्ञ कियेहोंगे जिसके छूनेसे हमारे स्वामीकारोग छूटजावेगा यह बात सुनकर

वह ब्राह्मण बोला यह कौन बड़ीबातहै तुम तो सौ अश्वमेध करने कहतीहो मैंने लाखों अश्वमेधयज्ञ किये हैं जिनकी गिनती तुम नहीं करसक्तीं यह वचन सुनतेही पार्वती जी बिनयपूर्वक बोलीं कि महाराज आप दयाकरके इनको छूदीजिये जैसे उस ब्राह्मण ने शिवजी के अंगमें अपना हाथ लगाया वैसेही महादेवजी दिव्यरूप अश्विनीकुमार के समान होगये तब यह हाल देखकर पार्बती व सब यात्रियोंको इसबातका सन्देह मालूमहुआ कि यह ब्राह्मण तीसवर्षका कंगालहै व सौ अश्वमेध करने में सौ वर्ष व बहुत साद्रव्य व सेना दूसरे राजाओंके जीतनेवास्ते चाहिये इसने किसतरह सौ यज्ञ किये होंगे शिवजी अन्तर्यामी ने उनका सन्देह छुड़ानेवास्ते यात्रियोंके सामने उस ब्राह्मण से पूछा कि महाराज तुमने इतनी अवस्थामें लाखोंयज्ञ किसतरह कियेहोंगे तब वह ब्राह्मण बोला सुनिये महाराज यज्ञकी बिधि व उसका फल शास्त्रानुसार होताहै व उसी शास्त्रमें गंगास्नानका माहात्म्य ऐसा लिखते हैं कि जो कोई गंगास्नान करनेको अपने घरसेचले उसको एक २ पग चलने में सौसौ अश्वमेधका फल मिलताहै सो मैं अपने घरसे नित्य गंगास्नान करनेको कोशभर हजारोंपग चलकर आताहूं उस हिसाबसे लाखों कौन चीजहैं कई करोड़अश्वमेधयज्ञ हम करचुके होंगे इसमें आश्चर्य कौन है यहबात सुनकर महादेवजी ने पार्बती व यात्रियों से कहा ब्राह्मण सच कहताहै शिवजी ऐसा कहकर अपने स्थानको चले व राहमें पार्वतीसे बोले कि देखो तुमको जो सन्देहथा सो हमारे कहेके प्रमाण इस ब्राह्मणको गंगास्नानके फल मिलते हैं और सब यात्री वेदके वचनपर बिश्वास नहीं रखते इसलिये यहफल उनको नहीं प्राप्त होसक्ता इसवास्ते वेद व शास्त्र सुनकर निश्चय करना चाहिये जिसके सुननेव पढ़ने से मनुष्यको शुभ अशुभकर्मका ज्ञान होताहै सो हे परीक्षित राजायुधिष्ठिर तुम्हारेदादा को वेद व शास्त्रका बिश्वासथा पर उनको बहुतद्रव्य होने से यह इच्छाहुई कि इसी बहाने से श्यामसुन्दरको अपने यहां रखकर ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंका सत्संग करूँ व धन मेरा शुभकर्म में लगकर मुझे यशमिले इसकारण यज्ञ कियेथे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका यहबात वर्णनकरना कि कौन २ खण्डमें किस २ अवतारकीपूजा होती है॥

शुकदेवजीबोले कि हेपरीक्षित हमने नवोंखण्डकीकथा तुमसेबर्णनकी अबपरमेश्वर के अवतारोंकाहाल व जिसजिसखण्डमें जो जो अवतार नारायणजीने लियेथे और वहांकेसबलोग अवतारपरअधिकप्रीतिरखकर उनकी पूजाकरते हैं सुनो भद्राश्वखण्ड में वृन्दश्रवानामराजाथा वहांहयग्रीवअवतार परमेश्वरनेधारणकिया सो उसखण्डमें राजा व प्रजा उसीरूपकीपूजा व उन्हींकामन्त्रपढ़कर स्तुतिकरते हैं व नरहरिखण्ड में नृसिंह अवतार नारायणजीनेलियाथा वहांनरहरिबर्षनामराजा अपनी प्रजासमेत उसीरूपकी

वह ब्राह्मण बोला यह कौन बड़ीबातहै तुम तो सौ अश्वमेध करने कहतीहौ मैंने लाखों अश्वमेधयज्ञ किये हैं जिनकी गिनती तुम नहीं करसक्तीं यह बचन सुनतेही पार्वती जी बिनयपूर्वक बोलीं कि महाराज आप दयाकरके इनको छूदीजिये जैसे उस ब्राह्मण ने शिवजीके अंगमें अपना हाथ लगाया वैसेही महादेवजी दिव्यरूप अश्विनीकुमार के समान होगये तब यह हाल देखकर पार्बती व सब यात्रियोंको इसबातका सन्देह मालूमहुआ कि यह ब्राह्मण तीसवर्षका कंगालहै व सौ अश्वमेध करने में सौ वर्ष व बहुत साद्रव्य व सेना दूसरे राजाओंके जीतनेवास्ते चाहिये इसने किसतरह सौ यज्ञ किये होंगे शिवजी अन्तर्यामी ने उनका सन्देह छुड़ानेवास्ते यात्रियोंके सामने उस ब्राह्मण से पूछा कि महाराज तुमने इतनी अवस्थामें लाखोंयज्ञ किसतरह कियेहोंगे तब वह ब्राह्मण बोला सुनिये महाराज यज्ञकी बिधि व उसका फल शास्त्रानुसार होताहै व उसी शास्त्रमें गंगास्नानका माहात्म्य ऐसा लिखते हैं कि जो कोई गंगास्नान करनेको अपने घरसेचले उसको एक २ पग चलने में सौसौ अश्वमेधका फल मिलताहै सो मैं अपने घरसे नित्य गंगास्नान करनेको कोशभर हजारोंपग चलकर आताहूँ उस हिसाबसे लाखों कौन चीजहैं कई करोड़अश्वमेधयज्ञ हम करचुके होंगे इसमें आश्चर्य कौन है यहबात सुनकर महादेवजी ने पार्वती व यात्रियों से कहा ब्राह्मण सच कहताहै शिवजी ऐसा कहकर अपने स्थानको चले व राहमें पार्वतीसे बोले कि देखो तुमको जो सन्देहथा सो हमारे कहेके प्रमाण इस ब्राह्मणको गंगास्नानके फल मिलते हैं और सब यात्री वेदके बचनपर बिश्वास नहीं रखते इसलिये यहफल उनको नहीं प्राप्त होसक्ता इसवास्ते वेद व शास्त्र सुनकर निश्चय करना चाहिये जिसके सुननेव पढ़ने से मनुष्यको शुभ अशुभकर्मका ज्ञान होताहै सो हे परीक्षित राजायुधिष्ठिर तुम्हारेदादा को वेद व शास्त्रका बिश्वासथा पर उनको बहुतद्रव्य होने से यह इच्छाहुई कि इसी बहाने से श्यामसुन्दरको अपने यहां रखकर ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंका सत्संग करूँ व धन मेरा शुभकर्ममें लगकर मुझे यशमिलै इसकारण यज्ञ कियेथे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका यहबात वर्णनकरना कि कौन २ खण्डमें किस २ अवतारकीपूजा होती है॥

शुकदेवजीबोले कि हेपरीक्षित हमने नवोंखण्डकीकथा तुमसेबर्णनकी अबपरमेश्वर के अवतारोंकाहाल व जिसजिसखण्डमें जो जो अवतार नारायणजीने लियेथे और वहांकेसबलोग अवतारपरअधिकप्रीतिरखकर उनकी पूजाकरते हैं सुनो भद्राश्वखण्ड में वृन्दश्रवानामराजाथा वहांहयग्रीवअवतार परमेश्वरनेधारणकिया सो उसखण्डमें राजा व प्रजा उसीरूपकीपूजा व उन्हींकामन्त्रपढ़कर स्तुतिकरते हैं व नरहरिखण्ड में नृसिंह अवतार नारायणजीनेलियाथा वहांनरहरिबिर्षनामराजा अपनी प्रजासमेत उसीरूपकी

पूजाकरताहै और प्रह्लादभक्तउनकेपुजारीने मंत्रसहितस्तुतिकरके नृसिंहजी से यहबर-दानमांगा कि महाराजआपअपनेजीवोंको जिस २ योनिमेंचाहैं जन्मदेकर उनपरऐसी कृपारक्खैं कि जिससे उनको उसीतनु में तुम्हारेचरणोंकाध्यानबनारहै यहबातसुनकर नृसिंहजीबोले कि हेप्रह्लादतुमअपनेवास्ते जो चाहो सो मांगलो पर संसारीजीवों के वास्ते जो मायामोह में फंसे हैं ऐसाबरदानमतमांगो तब प्रह्लाद फिरहाथजोड़करबोले महाराजसंसारमें जोलोग कुकर्मकरते हैं अपनीदयासेउनकाअधर्मछुड़ादो अपनेचरणोंकी भक्ति उन्हें देकर बैकुंठमें बुलालो यहबचनसुनकर नृसिंहजीनेकहा हेप्रह्लाद सबजीवों को बैकुंठकीचाहनानहींहोती जिसेसत्संगप्याराहो उसे ज्ञानमिलताहै व कलियुगबासियों को सत्संगअच्छानहींलगता वह संसारीमायामें फँसेरहते हैं जो परमेश्वरकीभक्तिरखता है उसकेपाससबगुणआपसे इसतरहजाते हैं कि जिसतरह नीचीपृथ्वीपरपानीबढ़कर बट्टर-जाताहै यहबातसुनकर प्रह्लादने कहा महाराज संसारमें कोईऐसाभी मूर्खहोगा जिसे बैकुण्ठजानेकीइच्छा न होगी आप बैकुण्ठअपना किसीकोदियानहींचाहते लालचकरते हैं मुझे इसबात में लज्जामालूमहोती है कि संसारीलोग ऐसाकहैंगे कि प्रह्लादकेस्वामी लालची हैं यहवचनसुनतेही नृसिंहजीहँसकरबोले हेप्रह्लाद तुमजगत्मेंजाकर जिसे अति दुःखीपावो उसे बैकुण्ठचलने के वास्तेकहो देखोवहक्याकहताहै जब उनकीआज्ञानुसार प्रह्लादनगरमेंआनकर किसी दुःखीजीवकोढूंढ़नेलगा तबउसे एकशूकरअतिरोगी चहले में फंसा देखपड़ा उसे महादुःखी देखकर प्रह्लादने कहा तूयहांरहकर क्यों इतनादुःख उठाताहै बैकुण्ठचल वहांतुझेबड़ासुखमिलैगा नृसिंहजीकीआज्ञासे तुझेबुलानेआयाहूं यह बातसुनकर शूकरनेपूछा कि बैकुण्ठमेंक्यासुखहै जब प्रह्लादने बैकुण्ठकासुखवर्णनकिया तब वहशूकरबोला मैं अकेला वहांनहींचलसक्ता कुटुम्बसमेतकहोतो चलूं तुमनृसिंहजी से पूछआवो यहवचनसुनतेही प्रह्लाद ने जाकर नृसिंहजीसेपूछा वे बोले बहुतअच्छासबको लेआवो जब फिर प्रह्लादने आनकर उसशूकरसे परिवारसमेत चलनेकेवास्तेकहा तब उसशूकरकीस्त्रीने प्रह्लादसेपूछा कि बैकुण्ठमें बिष्ठाहमारेखानेवास्ते है या नहीं प्रह्लाद ने कहा वहां नरक न होकर और सब अच्छे २ पदार्थ भोजनकरनेके हैं तब शूकर व शूकरी आपसमेंसम्मतकरकेबोले कि हमें यहांबड़ासुखहै हमलोग बैकुण्ठमें न जावैंगे यह बातसुनकर प्रह्लादनेकहा तुमबड़ेमूर्ख हो जो बैकुण्ठमें नहींचलते जब यहबातसुनकर वहशूकर प्रह्लादकी ओर घूमनेलगा तबवहदूसराजीव बैकुण्ठमें लेजानेवास्ते ढूंढ़तेहुये एकवृद्धमनुष्यकेपासजाकर कहनेलगा कि अबतुमबूढ़ेहुये बैकुण्ठमें चलकर वहांकासुख भोगो यहबातसुनकर वहबोला कि अभीमुझेसंसारमेंजोकर अपनेबेटोंकामुण्डन व विवाह करके नातीपोते देखनेहैं तुम्हारेकहनेसे अभीमरजावें तुमयहांसे चलेजाव हमारेबेटों के सामने ऐसाबचनकहते तो वहतुम्हैंदण्डदेते जबप्रह्लादने उसबूढ़ेकीबातसुनकरहारमाना तबनृसिंहजीकेपासजाकर विनयकिया महाराजसंसारमें सब छोटे व बड़े अपनेअज्ञानसे

मायामोहकेजालमेंफँसरहे हैं इसलिये कोईमनुष्य वैकुण्ठजानेकीचाहनानहींकरता यहवचन सुनकर नृसिंहजीबोले हेप्रह्लाद जगत्में जिसजीवनेजोतनुपाया वहउसीयोनिमेंमग्नरहता है व इच्छाउसकी किसीतरहपूरीनहींहोती आंखकानआदिक सबइन्द्रियांशिथिलहोजातीहैं पर मनउसकासंसारछोड़नेवास्तेनहींचाहता यहबातसुनकर प्रह्लादने नृसिंहजीकी दण्ड-वत्करके विनयकिया महाराजयहसबतुम्हारीमायाहै जिसको आपदयाकरके ज्ञान देतेहैं वहमनुष्य वैकुण्ठजानेकीचाहनाकरताहै नहींतो सबकिसीको ज्ञानप्राप्तहोना बहुतकठिन है और केतुमालखण्डमें कामदेवभगवान्ने अवतारलियाथा वहांपरलक्ष्मीजी प्रजासमेत मंत्रपढ़कर उनकीस्तुति व पूजाकरती हैं व रमणकखण्ड में परमेश्वर ने मत्स्यअवतार धारणकियाथा वहांरमणकनामराजा अपनी प्रजासमेत मत्स्यरूपकी पूजाकरता है और हिरण्मयखण्डमें कच्छपअवतार नारायणजी ने लियाथा वहां हिरण्मयनाम राजा अपनी प्रजासमेत उसी रूपकी पूजा व स्तुति मन्त्रपढ़करकरता है और कुरुखण्डमें भगवान्ने वाराहअवतारधारणकियाथा वहां कुरुनामराजा अपनीप्रजासमेत उसी रूपकीपूजा मन्त्र पढ़करकरता है व पृथ्वीवहांपुजारीरहकर कहती है कि आप हिरण्याक्ष दैत्यको मारकर मुझे रसातललोकसे लेआये हैं ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका राजापरीक्षित से शेषखण्डों का हालकहना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजा किम्पुरुषखण्ड में रामचन्द्रजी विराजते हैं व हनुमान्जी वहां पुजारीहोकर रघुनाथजीकी मन्त्रसे पूजा व स्तुतिकरकेकहते हैं महाराजआपने केवल संसारी जीवोंको शुभमार्गदिखलाने व कृतार्थ करनेवास्ते नरतनुधारणकिया कुछ रावणादिकेमारने को अवतारनहींलियाथा आपचाहते तो अपनीइच्छासे राक्षसोंकावधकरदेते व आपनेबनमें जानकीजीकेवियोगसेबिलापकियाथा सो संसारीजीवोंको यहदिखलायाहै जबमेरेऐसेईश्वर परब्रह्मकोगृहस्थीकरनेमेंदुःखहुआतो जगत्मेंजितनेजीवहैं सबकोस्त्री व पुत्रादिकसेदुःखप्राप्त होगा व आपनेनरतनुइसवास्तेधारणकिया कि जिसमेंतुम्हारीशरणआनेवाला ऐसासुन्दररूप छोड़करदूसरेकोकिसवास्तेभजेगा व परमेश्वरने भरतखण्डमें यहबात विचारकरनरनाराय-णका अवतारलिया कि इसखण्डकेप्रजालोगकलियुगमें तप व जपनहींकरसकेंगेइसवास्तेमैं तपस्वीरूप होकर बदरीकेदारमें बैठारहूं जोकोई मेरादर्शनकरैगा उसकोअपनेदर्शनसे तपकाफल देकर पवित्रकरके मुक्तिपदवीदेऊंगा इसलियेआजतक बदरिकाश्रममें बैठकर तपकरतेहैं और वहांनारदजी पुजारीसांख्ययोग से मन्त्रपढ़करपूजा व स्तुतिकरकेकहतेहैं हे दीनानाथसबजगत्कीउत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवालेआपहैं व सातोंद्वीपमें भरत-खण्डमध्यदेश सबपृथ्वीकीजड़बहुतपवित्रहोकर इसखण्ड में जो जीवजैसाकर्म्मकरै वैसा फलदूसरेलोकमें जाकरभोगताहै इसलियेभरतखण्डकर्म्मभूमिका पाप व पुण्यकियाहुआ

खेतकेसमानबढ़ाताहै व सिवायभरतखण्डके दूसरे जोआठखण्डहैं वहांसदात्रेतायुगके समानरहकर कलियुगअपनाप्रवेशनहींकरसक्ता वहांकेरहनेवाले देवतोंकीतरह स्त्रियोंको साथलेकर भोग व विलासकियाकरते हैं उनकोवहांसदाबसन्तऋतु व इन्द्रलोककेसमान सुखबनारहकरदुःखकिसीबातकानहींहोता व चारोंवर्णकाविचार केवल भरतखण्डमें है व दूसरेखण्डकेलोग इतनासुखहोनेपरभी भरतखण्डकेमनुष्योंको अपनेसेअच्छा व भाग्यवान्जानतेहैं व भरतखण्डकेजीव थोड़ासास्मरण व भजननारायणजीकाकरनेसे भवसागरपारउतरजाते हैं व दूसरेखण्डों व द्वीपोंमें यहबातनहींप्राप्तहोती सो आपने बड़ी कृपाकरके कलियुगबासियोंको दर्शनदेनेवास्ते इसखण्डमेंअवतारलिया तिसपरभीकलियुगकेमनुष्य ऐसेकपट व आलस्य व अभिमानमेंभरेरहैंगे कि उनकोसंसारीमाया में फँसे रहनेसे तुम्हारेदर्शनकरनेकी छुट्टीनहींमिलैगी जिसपरआपअनुग्रहकरैंगे वहीतुम्हारेचरणों को आकरदेखेगा हेपरीक्षित जबदेवतालोगस्वर्गसे अपने २ बिमानोंमें बैठकर मन्दराचलपर्वतपर बिहारकरनेवास्ते आतेहैं तबभरतखण्डकेमनुष्योंकोदेखकर अपनेको तुच्छ समझकेकहते हैं कि हमलोगोंको यहसामर्थ्यनहीं है कि जो इससे उत्तमपदवीको पहुँचसकें व भरतखण्डकेजीव शुभकर्म्मकरनेसे जितनीबड़ीपदवीकोचाहैं पहुँचजावें सो हे राजा जिसनेभरतखण्डमें मनुष्यतनुपाकर जन्मअपना संसारीमायामोहमें खोया व हरिभजनसे बिमुखरहा उसकाजन्मलेना अकार्थहुआ उसमनुष्यकी वहगतिसमझना चाहिये जैसेकोई द्रव्यप्राप्तहोनेवास्ते बड़ेपरिश्रमसे ऊँचेपर्व्वतपर चढ़कर धनकेपास पहुंचै फिर अपनेको बिनामिलनेद्रव्यके पहाड़परसे नीचेगिरादेवे तौ उसकासबपरिश्रम वृथाहोकर हाथपैरटूटजावैं तबसिवायपछितानेके फिरउसबूंदसे भेंटनहींहोती इसलिये उचितहै जोजीवभरतखण्ड में मनुष्यकातनुपावै वहहरिभजनकरके भवसागरपार उतर जावै व जोअपनेअज्ञानसे ऐसानहींकरता वह पीछेबहुतदुःखपाताहै इसभरतखण्डमेंचित्रकूट व गोवर्द्धनआदिक बहुतसेपर्वत व कौशिकी व सरस्वतीआदिक अनेक नदियांभी ऐसीहैं कि जिनकानामलेने व दर्शनकरने व नहानेसेसबपाप मनुष्यकाछूटकर काया उसकीशुद्धहोजाती है इसकारण देवतालोगकहतेहैं कि भरतखण्डकेजीवोंने पिछलेजन्म के पुण्यसे यहांजन्मपाया जिसखण्डकेजन्मलेने व परमेश्वरकाभजनकरनेसे मनुष्यतुरन्त मुक्तहोजाताहै व इलावृतखण्डकीकथा नवेंस्कन्धमेंआवैगी उसखण्डमें शिवजीपार्वतीको साथलिये सोलहहजार सहेलियोंसमेत सदाविहारकरके शेषभगवान्कीपूजा व स्तुति मन्त्रपढ़करकरतेहैं व नाभिखण्ड भरतखण्डमें मिलाहै ॥

बीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका विस्तारपूर्वक सातोंद्वीपकीकथा राजापरीक्षितसे कहना ॥

शुकदेवजीबोले कि हे राजा नवोंखण्डोंकीकथा हमनेतुमसेवर्णनकी अब सातोंद्वीपों

काहालसुनो जम्बूद्वीपकेबीच नवखण्डहोकर इसद्वीपमें एकवृक्षजामुनका बहुतबड़ा लाखयोजनऊंचाहै इसकारण जम्बूद्वीपनामहुआ व उनवृक्षकीछाया लाखयोजनकेघेरे में पड़ती है व उसकेफल काले २ हाथीकेसमानबड़ेहोते हैं व उसफलकारस पृथ्वीपर गिरनेसे सूर्यकातेजपाकर सोनाहोजाताहै व चारोंओर इसद्वीपकेखारेपानीका समुद्रहै व नवखण्डके जो राजाथे उन्होंने एक २ खण्डके छः छः भागकरके अपने २ बेटोंको बांट दिया व उननवखण्डोंके सिवानेपर एक २ पहाड़बीचमेंहोकर सुमेरुपर्वतकेनीचे रस व शहद व घीकीतीननदीबहती हैं सो देवता व गन्धर्वआदिकोंकी स्त्रियां उननदियों में जाकर स्नानकरकेवहरसपीतीहैं तोउनकोअबलता व बुढ़ाईनहींहोती व जम्बूद्वीपमें राजा सगरकेसाठिहजार बेटोंने श्यामकर्णघोड़ा यज्ञकाढूंढ़नेकेवास्ते जो पृथ्वीखोदाथा उस खोदनेसे सिंहलद्वीपआदिक सातद्वीपऔरप्रकटहुयेहैं दूसरेपाकरद्वीपमें एकवृक्षपाकरका दोलाखयोजनऊंचा व उसकेफलबहुतबड़ेहोकर उसकीछाया दोलाखयोजन के घेरेमें पड़ती है इसलियेपाकरद्वीपनामहुआ व उसकेचारोंओर रसकासमुद्रभराहै जोकोई उस वृक्षकेनीचेजाकर भूषण व वस्त्र व भोजनआदिक जिसबस्तुकी इच्छाकरे उसीसमय वहपदार्थ उसवृक्षसे मिलताहै व उसीद्वीपमें अमृतनामादिक सातखण्डहैं तीसराशाल्मालि द्वीप वहां सेमलकावृक्ष चारलाखयोजनऊंचाहोकर उतनेघेरेमें उसकी छायापड़तीहै इस कारणउसकाशाल्मलिद्वीपनामहुआ उसद्वीपमें चौगिर्दकिनारे २ आठपर्वतहोकर उन पहाड़ोंपर यक्ष व गन्धर्व्वादिकजाकर गातेबजातेहैं व वहांपर तालाब व बाग व मकान अच्छे २ विहारकरनेवास्तेबनेहुयेहैं व सूर्यनामादिसातखण्ड उसद्वीपमेंहैं उसकेचारोंदिशा में मदिराकासमुद्रभराहै चौथाकुशद्वीपयहांकुशकावृक्षआठलाख योजनऊंचाहोकर उसकी छायाउतनेघेरेमेंपड़तीहै इसलियेउसकानामकुशद्वीपहुआ उसकेचारोंओरघीकासमुद्रभरा है उसवृक्षकेनीचेकुण्ड व तालाब ऐसेबनेहैं कि जिनमेंस्नानकरने व जलपानेसे भूख व प्यासलबछूटजाती है व जोबूढ़ा व रोगीमनुष्य उसमेंस्नानकरै तो रोगउसकाछूटकर हृष्टपुष्ट होजावे व नन्दनामादिक सातोंखण्डउसद्वीपमें हैं पांचवांक्रौंचद्वीप जिसमेंक्रौंचनामपर्वत सोलहयोजनऊंचाहै इसलियेउसकानामक्रौंचद्वीपहुआ उसपहाड़पर गरुड़जी बैठकर वहांसेसबद्वीपोंकोदेखके बहुतमग्नहोते हैं व उसकेचारोंओर दूधकासमुद्रभराहै व व्यास नामादिक सातखण्ड उसद्वीपमें हैं छठवांशाकद्वीप वहांशाककावृक्ष बत्तीसलाखयोजन ऊंचाहोकर उतनेघेरेमें उसकीछायापड़तीहै व चौगिर्दउसद्वीपके मट्ठेकासमुद्रहोकर देव-द्विजनामादिक सातखण्डउसद्वीपमें हैं सिद्ध व तपस्वीलोग उसवृक्षकेनीचेबैठकर हरि भजनकरतेहैं व उसवृक्षकागिराहुआ पत्ताखानेसे उनकापेटभरारहकरभूख व प्यासनहीं लगती सातवांपुष्करद्वीप वहांएकवृक्षकमलका चौंसठलाख योजनऊंचा व उतनेघेरेमें उसकीछायारहकर वहांकेसरिकीसुगन्धआतीहै उसकेचारोंदिशामेंमीठेपानीका समुद्ररहकर उस वृक्षके नीचे मानसरोवर तालाबहै वहांपर हंस पक्षी रहकर मोतीचुगते हैं व क्रम

रात आदिक सातखण्ड उस द्वीपमें हैं हे परीक्षित राजाप्रियव्रतने इन सातोंद्वीपों का राज्य झूठा समझकर छोंड़दिया व हरिभजनकरके मुक्तिपाई ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजी को राजापरीक्षितसे बिस्तार आकाश व सूर्य्यादिक का कहना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे राजा जितना बिस्तार सातोंद्वीपों का हमने तुमसे कहा उतना आकाशभी लम्बा व चौड़ाहै जिसतरह चनेकी दो दाल ऊपर व नीचे होती हैं उसीतरह आकाश व पृथ्वीको समझना चाहिये व सूर्य्य निकलने से तीनोंलोकमें प्रकाश होकर छःमहीने सूर्य उत्तरायण व छःमहीने दक्षिणायन रहते हैं व सुमेरुपर्वत से होकर तीनमार्ग्ग सूर्यके रथजानेवास्ते बने हैं उत्तरायणमें ऊँचे रास्तेपर होकर रथ उनका जानेसे प्रकाश जगत्‌में अधिक होताहै व दक्षिणायनमें नीचे मार्ग से होकर जाने व तारागणोंके ओर परने से तेज उनका कम होजाताहै व मकरसे लेकर मिथुन तक सूर्य उत्तरायण व कर्क से लेकर धनकी संक्रान्ति पर्य्यंत दक्षिणायन रहते हैं उत्त-रायण सूर्य में दिन बढ़कर राति घटती है व दक्षिणायनमें दिन छोटा होकर राति बढ़ती है व सूर्य एक राशिपर महीनाभर रहते हैं व एकदिन रातिमें नौकरोड़ लाख योजन सूर्यका रथ सुमेरुपर्वतके चारोंदिशामें फिरताहै व सुमेरुके पूर्वइन्द्रपुरी व दक्षिण यमपुरी व पश्चिम वरुणपुरी व उत्तर कुबेरपुरी है व सूर्य अपने निकलने के स्थान से उसीके सम्मुख अस्तहोते हैं व एक पहिया उनके रथका चलकर दूसरे पहियाकी धुरी सुमेरुपर्वत पर ध्रुवलोकसे दबी है व सूर्यका रथ छब्बीसलाख योजनके बिस्तार में होकर सातघोड़े एकओर व एक घोड़ा दूसरीओर जोता रहताहै व यक्षलोग उस रथको पीछेसे ढकेलते हैं व रस्सीकी जगहपर सांपोंसे धुरी आदिक उस रथकी बांधी रहकर अरुण सारथी हांकताहै व बालखिल्यादिक साठिहजार ऋषीश्वर जिनके शरीर अंगूठके प्रमाणहैं उस रथके आगे सूर्य्यकेओर मुँह किये स्तुति करते हुये पिछलेपांव दौड़े चलेजाते हैं ॥

बाईसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका चन्द्रमा व मंगलादिक ग्रहोंका हाल राजापरीक्षितसे कहना ॥

राजापरीक्षितने इतनी कथा सुनकर पूछा हे मुनिनाथ आपने कहा कि सूर्यका रथ सुमेरुपर्वत व ध्रुवलोकके चारोंओर फिरताहै व चन्द्रमा व दूसरे ग्रहोंका हाल नहीं कहा सो उसकोभी दयाकरके वतलाइये शुकदेवजी बोले कि हे राजन् चन्द्रमाका रथ ग्यारहलाख योजन लम्बा व चौड़ा सूर्यके रथसे लाखयोजन ऊँचे रहकर जितना रथ सूर्यका एक महीने में फिरताहै उतना चन्द्रमा अपने रथपर अढ़ाई दिनमें चलते हैं व चन्द्रमाके रथसे लाखयोजन ऊँचे मंगलका रथ व उससे लाखयोजन ऊँचे बुधका रथ और उनसे लाखयोजन ऊपर बृहस्पतिकारथ व उससे लाखयोजन ऊँचे शुक्रका

रथ व उससे लाखयोजन ऊपर शनैश्चरका रथ व उससे लाखयोजन ऊँचे राहुका रथ सत्रहलाखयोजनके विस्तारमें रहकर सब रथोंकी धुरी ध्रुवलोकमें लगी रहती हैं व राहुका रथ चन्द्रमा व सूर्यके बराबर आनेसे ग्रहण लगता है व सूर्यकारथ सुमेरु पर्वतपर कहीं २ रुकजानेसे तीसरेबर्ष एक महीना मलमास अधिक होकर संक्रान्ति बराबर रहती है पांचप्रकारके बर्ष होते हैं एक संक्रांतिकी गिन्तीसे सूर्यका बर्ष दूसरा शुक्लपक्षकी द्वितीयासे चन्द्रमाका बर्ष तीसरा चैत्रशुक्ल प्रतिपदासे संवत्का बर्ष चौथा नक्षत्रोंकी गिन्तीसे पांचवां बृहस्पतिकी गतिसे जो दूसरी राशिपर बदलजाते हैं समझना चाहिये व सूर्य्य क्षत्री व बृहस्पति व चन्द्रमा ब्राह्मण व मंगल वैश्य व बुध शूद्र वर्ण व राहु म्लेच्छकेवास्ते शुभकारक व अच्छे होते हैं व शुक्र जैसे स्थानमें पड़ते हैं वैसा फल चारोंवर्ण को देकर किसी वर्णके साथ मित्रता व शत्रुता नहीं रखते व शनैश्चर व राहु केतु चारोंवर्णोंको दुःख देते हैं ॥

तेईसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका ध्रुवलोककी स्तुति परीक्षितसे कहना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् सुमेरुपर्वतसे तेरहलाखयोजन ऊँचा ध्रुवलोक होकर वहांपर सदा ध्रुवजी सप्तऋषियोंसमेत सुख व आनन्दसे रहते हैं वशिष्ठ १ व भृगु २ व कश्यप ३ व अङ्गिरा ४ व अगस्त्य ५ व अत्रि ६ व पुलह ७ यहसात ऋषीश्वर ताराूपसे दिनरात ध्रुवजीकी परिक्रमालेकर इसतरह नहीं हिलते कि जिसतरह तेल निकालतेसमय बैल चारोंओर घूमताहै व कोल्हू नहीं हिलता व ध्रुवलोकके नीचे कालचक्र फिरकर अश्विनी आदिक सत्ताईस नक्षत्र ध्रुवलोकके आसपास बिना आश्रय हवाके सहारेपर इसतरह चलते हैं कि जिसतरह मेघ व बादल आकाशमें पवनके अनुसार चलताहै इसवास्ते ध्रुवलोकको सू इसकेसमान होनेसे शिशुमारचक्र भी कहते हैं जिसतरह बैठतेसमय सू इस कुम्हारके चाकसमान होजाताहै वहीरूप ध्रुवलोकका समझना चाहिये किसवास्ते कि चौदहनक्षत्र दहिने व चौदह नक्षत्र उसके बायेंओर होकर उस चाकके घूमनेके वक्त वह सब उसीके आश्रयसे घूमते हैं उसकी पूँछमें प्रजापति व अग्नि व इन्द्र व धर्म्म व पूँछकी जड़में धाता बिधाता व कमरमें सप्तऋषीश्वर ऊपरके ओठमें अगस्त्यजी व नीचेके ओठमें यमराज व राहु मंगल व मूत्रस्थानमें शनैश्चर व कांधेपर बृहस्पति व आंखों में सूर्य व हृदयमें परमेश्वर व मनमें चन्द्रमा व नाभिमें शुक्र व दोनों छाती में अश्विनीकुमार व श्वासमें बुध व गलेमें राहु व केतु व सब तारागण बदनके रोम २ में होकर वह शिशुमारचक्र नारायणजीका स्वरूपहै इसलिये सब देवता व ब्रह्माण्डको उसीरूपमें समझना चाहिये

जो कोई प्रातः व सन्ध्याकालमें यह कथा पढ़कर ध्यान इसरूपका करै उसके सबपाप छूटकर अशुभग्रहका फल न होगा ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

चौदहोंलोकका वर्णन करना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित ऐसाभी किसीपुराणमें लिखाहै कि सूर्यसे दशहजारयोजन नीचे राहुका रथ रहकर जब उसकेसम्मुख सूर्य्य व चन्द्रमाकारथ आजाताहै तब ग्रहण लगकर सूर्य व चन्द्रमाको अनिष्टप्राप्तहोताहै जिसकी कथा बिस्तारपूर्बक अष्टमस्कन्धमें आवेगी पर सुदर्शनचक्रकीरक्षा से राहुकुछउनकाकरनेनहींसक्ता उसकेबारहयोजननीचे सिद्ध व चारण व विद्याधरआदिक देवतों के रहनेकास्थानहोकर उसके बारहलाखयोजन नीचेयक्ष व राक्षस व पिशाचलोगरहतेहैं उनकेसौयोजननीचे पृथ्वीमर्त्यलोककी है व हंस व बाज व गिद्धआदिक बड़ेउड़नेवालेपक्षी बारहयोजनसेअधिक जानेकी सामर्थ्य नहींरखते व सातोंलोकऊपरका सातखण्डके घरसमानहोकर सातलोकनीचेका उसीकेतुल्यसमझना चाहिये व (नीचेकेसातोंलोकोंकेनाम) अतल १ वितल २ सुतल ३ तलातल ४ महातल ५ रसातल ६ पाताल ७ होकर सातोंलोकनीचेके दशदशहजारयोजन बिस्तार से हैं (ऊपरके सातोंलोकोंकेनाम) भूर्लोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ महर्लोक ४ जनलोक ५ तपलोक ६ सत्यलोक ७ होकर जितनासुखभोजनवस्त्र व भोगादिकका वहांरहताहै उससेअधिक नीचेकेलोकों में समझनाचाहिये अतललोकमें मयनामदैत्यरह-कर माया व इन्द्रजालकीविद्या बहुतजानता है दैत्यलोगवहविद्याउससेपढ़कर किसीको कुछमालनहींसमझते व उसलोककेरहनेवाले सबदैत्य व दानव अपनीअपनीस्त्रियोंसमेत अमृतपीकर आनन्दपूर्वकभोग व विलासकरते हैं अमृतपीनेमेंउनको मरने व बूढ़ेहोनेका डर नहींरहता व अच्छी २ औषधीखाने से कुछरोगउनकोनहींहोता व उनकीआयुर्दाय कीकुछअवधि नहीं है जबअधिक दैत्यउत्पन्नहोने से वहांजगहनहींरहती तब हरिइच्छासे सुदर्शनचक्रवहांजाकर कुछदैत्योंकोमारडालता है तबवहसमानेयोग्यबचकर आनन्दपूर्वक वहांरहतेहैं उसकेनीचे वितललोकमें मयदानवकाबेटा असुरबलवान् जिसनेछानबेमाया इन्द्रजालकीबनाईहै रहताहै व भानमतीआदिक उसीमन्त्रकोसीखनेसे एकसाइतिमेंवृक्ष फलसमेतलगाकर दिखलादेतीहैं यहसब इन्द्रजालकी विद्यासमझनाचाहिये और जम्हालेने जमुहाई असुरबलवान्के मुखसेपुंश्चली अतिसुन्दरस्त्रियांनिकलकर तीनोंलोकमें फिरती हैं व इच्छापूर्वक एकपुरुषको उठालेजाकर उसे औषधीकेकुण्डमें डालदेतीहैं जबवहकुण्डमें स्नानकरनेसेरूपवान्होकर उसेदशहजारहाथीकाबल व कामदेवमेंबड़ीसामर्थ्यहोजाती है तबवह पिछलीअवस्थाभूलनेउपरान्त अपनेकोबड़ाबलवान् व भोगी ईश्वरकेसमान समझ कर उनतीनोंपुंश्चलियोंसे भोग व विलासकरताहै व उसीवितललोकमें हाटकेश्वरमहादेव

रहतेहैं जिनकावीर्य अग्निनेमुंहसेखाकर गुदाकेरास्ते बाहरनिकालदियाथा उसीसेबहुत अच्छा सोनाउत्पन्नहुआ जिससुवर्णकाभूषण देवतोंकीस्त्रियां पहिनती हैं व मर्त्यलोकका सोना उसकीबराबरीनहींकरसक्ता उसकेनीचे तीसरेसुतललोकमें राजाबलि दैत्यविरोचन का बेटा राज्यकरताहै जिसबलिको बामनभगवान्ने इन्द्रादिक देवतोंके कल्याणकेवास्ते वहांभेजदियाथा सोवहअपनेगुरु व कुलपरिवारसमेत वहांरहकर आठोंपहरपरमेश्वरका दर्शनपानेसे अपनाजन्मसुफलजानताहै देखोराजाबलिने शुक्राचार्य्यगुरुकेबर्जनेपरभी तीनपगपृथ्वीबामनभगवान्को दानदिया इसीकारणनारायणजी त्रिलोकीनाथआठोंपहर उसकेद्वारपर गदालियेबनेरहतेहैं व सुतललोकमें बैकुण्ठकेसमान सुखरहताहै व उसी तीनपगपृथ्वीदानके प्रतापसे राजाबलिअगिले मन्वन्तर में इन्द्रपुरीकाराज्यपावेगा दान देना ऐसाअच्छाहोताहै उसकेनीचे चौथितलातललोकमें त्रिपुरबली दानव महादेवजीका परमभक्तरहकर वहांराज्यकरताहै व शिवजीकीकृपासे उसकोकुछमरनेका डरनहींरहता उसकेनीचे पांचवेंमहातललोकमें कद्रू व तक्षक व कालीयआदिक बड़ेबड़ेसर्प अपनेकुटुम्ब समेत जिनकेअनेक शिर व फनहैं रहकरवहांका राज्यकरते हैं वहलोगमृत्युकाभयनरख कर गरुड़जीसे डराकरतेहैं उसकेनीचे छठवेंरसातललोकमें बिराट्कुलदानव अपनेपरिवार समेत रहकर आनन्दपूर्वक वहांकाराज्यकरताहै उसकेनीचे सातवेंपाताललोकमें बासुकि आदिक बहुतबड़े २ नागरहकर शेषजी हजारमस्तकवाले अतितेजवान् वहांरहते हैं कि जिनके एकमस्तकपर पृथ्वीसरसोंकेसमान रक्खीरहकर हजारों नागकन्या महासुन्दरी दिनरात उनकीसेवाकरती हैं व शेषजीआठोंपहर परमेश्वरकागुण हजारमुख व दोहजार जिह्वासेगाते हैं तिसपरभीउनकेभेद व आदि व अन्तकोनहींपहुंचते व शेषजीके अंगपर एकशय्या अतिसुन्दर सांगोपांग रक्खी है उसपरचतुर्भुजीरूपभगवान् जगत्को सुखदेने वाले तीसहजारयोजनकेशरीरसे लक्ष्मीसमेत शयनकरते हैं व नीचेकेसातोंलोकमेंसूर्य व चन्द्रमाकाप्रकाश न जाकरवहांपरऐसेमणि व रत्नादिकहैं कि जिनकेतेजसेदिनरात उजि- यालाबनारहताहै और वहांसुदर्शनचक्रकीतड़पसे स्त्रियोंकागर्भ पातहोजाताहै इसलियेवहां के लोग अधिक न होकर देवतोंकेसमान सुखभोगनेसे बूढ़े व दुर्बलनहींहोते ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

शेषनागकीमहिमा वर्णनकरना ॥

शुकदेवमुनिनेकहाशेषनागजीभी ग्यारहोंरुद्रों में संकर्षणनामएकरुद्रहैं महाप्रलय में उनकेमुंहसेअग्निनिकलकर तीनोंलोकको जलादेती है व चौदहोंभुवन उनकेएकमस्तकपर रक्खेरहकर इतनाबोझउनकोकुछनहींमालूमदेता व नित्यदेवता व नागोंकी हजारोंकन्या आनकर उनकीपूजामेंबनीरहती हैं तिसपर शेषजीको कामदेवकी चेष्टानहींहोती वह केवल संसारकेकल्याणकेवास्ते कामक्रोध मोहलोभमन व इन्द्रीआदिकको अपनेअधीनरखकर

उनकेवशनहींहोते व बड़े २ योगी व मुनि उनके चरणोंकाध्यान व स्मरणआठोंपहर कियाकरतेहैं व शेषजीदिनरात सिवायकहनेकथा व कीर्त्तनबैकुण्ठनाथके दूसराकामनहीं करते जोकोईमुक्तिकीचाहनारखताहो वहशेषभगवान्‌काध्यान व स्मरणकरके उनकीशरण पकड़े तो संसारमें बांछितफलपाकर भवसागरपारउतरजावे शेषजीसेअधिक किसीदूसरे देवताकीपूजा परमेश्वरकेमिलनेकेवास्ते उत्तमनहींहोती और कहांतकउनकीस्तुति तुमसे कहैं कि जिनकाकुछअन्तनहीं है हेराजा जहांतकइसजीवकेरहने व जानेकीगति है सो वर्णनकिया सिवायइसके और कहीं जीव जाने व जन्मलेनेनहींसक्ता ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका नरकोंकाहाल व नाम वर्णनकरना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हेशुकदेवस्वामी आपनेकईजगहकहाहै कि पाप करनेवाले नरकमेंजाकरबड़ादुःखपाते हैं और शुभकर्म्मकरनेवाला स्वर्गादिकका सुख भोगता है और चौदहोंलोककीकथाकहनेपर भी आपनेकिसीजगह नरककावर्णननहीं किया इससेमुझेनरककानाम केवलभयदिखानेवास्ते मालूमहोता है मुझसेइतनीअवस्थामें यहीएकअपराधहुआ कि जो ब्राह्मणकेगलेमेंमराहुआसर्प डालदिया इसपापकेबदले मुझे नरकजानेका डरलगाहै सो नरकाकोई भिन्नलोक पृथ्वी व पानीपरहोकर उसकेनाम में कुछभेदतोनहीं है उसे वर्णनकीजिये यहबचनसुनतेही शुकदेवजी हँसकरबोले कि हे राजा तू नरकमेंजानेयोग्यनहीं है इसलिये वहांकाहाल तुझसेनहींबतलाया अबकहते हैं सुनो नरकसुमेरुपर्वतसे निन्नानबेयोजन दक्षिण धरतीसेनीचे पानीकेऊपरहै सो धृतपृष्ठ आदिक चारोंवर्ण के दिव्यपितर उसनरककादुःखदेखकर अपनेकुल व परिवारवालोंको मनाकरनेवास्ते उसकेद्वारेपर बनेरहते हैं कि जिसमेंकोई हमारे परिवारका ऐसाकर्म न करे कि उसेनरकमेंआनापड़े व यमराज सूर्यकेपुत्र यमपुरीकेराजाहैं व तामिश्ररौरवना-मादिक अट्ठाईसनरकहोकर उनकेदक्षिण संयमनीनामएकपुरी भी नरककेसमानहै सो धर्मराजजिन्हें यमराजभी कहते हैं मरनेउपरान्त पापीकोनरक व धर्मात्माकोस्वर्ग में भेज देते हैं व अपनेकर्मानुसार वहांजीवदुःख व सुख भोगकर फिर संसारमें जन्मपाता है व अतिकष्टपानेपरभी नरकमें प्राणनहीं निकलता और जौनपापकरने से जिसनरकमें वह लोगजाते हैं उसकाहालसुनो जोमनुष्यदूसरेकाधन व स्त्री छलबलसे लेलेताहै उसे यम-दूत बांधके मुद्गरोंसेमारतेहुये तामिश्रनामनरक महाअन्धकारमेंलेजाकर डालदेते हैं वहां उसे कुछ भोजन व पानी नहींमिलता जोकोईकिसीस्त्रीकेपति या रक्षकको किसीबहाने से बाहरभेजकर उसकेसाथभोगकरताहै उसकीआंखें फूटजाती हैं व मरनेकेउपरान्त उस को यमदूत मुद्गरों से मारतेहुये लेजाकर उसकाअंगअंगकाटिके अन्धतामिश्र नरक में डालदेते हैं जोमनुष्यअधर्मकीकमाईसे अपनापरिवारपालनकरके अभिमानसेकहताहै कि

मैं इनकोभोजनदेताहूं उसकोयमदूतरौरवनरकमेंडालकर सांपोंसेकटवाते हैं जोकोई किसी मनुष्य व पशु व पक्षीको अपनेभोजनकेवास्ते या शत्रुतासेमारताहै यमदूतउसको महारौरवनरकमेंडालदेते हैं तब वह बड़े २ सर्पों के काटनेसे महादुःखपाताहै जो मनुष्यकेवल अपनेतनसेप्रीतिरखके उसकोसुखदेनेवास्ते अपनाधर्म व कर्म छोड़कर ब्राह्मण व वेद व शास्त्रकोनहींमानता उसेयमदूतकालसूत्रनरकमें जहां सड़ाहुआमांसभराहै डालकरउसका मांस बड़े २ गिद्धोंकोखिलाते हैं जोकोईहरिण व पक्षीआदिकको बांधकर या पिंजड़े में बन्दरखताहै उसेयमदूत कुम्भीपाकनरकपीबभरेहुये में डालकर गरम २ तेल उसकेबदन पर छिड़कते हैं जो मनुष्यअपनेमाता व पिताको दुर्वचनकहकर भोजन व वस्त्रकादुःख देताहै उसकोयमदूतलेजाकर एकपटपर जहां दशहजारयोजनलम्बीपृथ्वी तांबेकेसमान पीटीहुई अग्नि ऐसीजलती है नंगे पैरदौड़ाते हैं जब वह पैरजलने व क्षुधातृषासे वहांअति दुःखपाकर कुछअन्न व जल नहींपाता तब अचेतहोकर गिरपड़ता है जितनेरोम पशुके अंगपररहते हैं उतनेहज़ारवर्ष उसजलतीहुईधरतीपर तड़फताहै जोलोग शास्त्रमार्गछोड़ कर अपनेमन या किसीके देखने से कुराहचलते हैं उनको यमदूत बीचअसिपत्रनरकके जहां वृक्षोंमें तलवारऐसेपत्ते हैं लेजाकर जबउनदरख्तोंपर चढ़ाके गिरादेते हैं तबशरीर कटजानेसे उन्हेंबड़ादुःखप्राप्तहोताहै जो राजाकिसीकोबिनाअपराधदण्डकरके ब्राह्मणको फांसीदेताहै उसे यमदूत शूकरमुखनरकमें लेजाकर तेलकेसमानपेरते हैं तबवहजीव कोल्हू में पेरने व शूकरऐसेजानवरोंकेकाटनेसे बड़ादुःखपाताहै जोकोई अपनीकमाई में देवता व पितरकाभाग न देकर केवलअपनापेट व परिवारपालता है उसकोयमदूत अन्धकूप नरकमें डालदेते हैं वहांपरवहसांप व बिच्छू व जोंकआदिककेकाटनेसे बहुतदुःखीहोता है जोकोई उत्तमपदार्थ अकेलेखाकर अपनेसाथी व देखनेवालोंको नहींदेता उसेयमदूत कृमिभोजन नरक हज़ारयोजनकेकुण्डमें जो कीड़ोंसेभराहै डालकर वहीकीड़ेखिलाते हैं जोकोईकिसीब्राह्मणकाधन व खेतचुराकर या बरजोरीसे लेलेताहै उसको यमदूतसंदंशन नरकमें जहां बिच्छूभरे हैं डालकरलोहेका गज आगसे लालकरके उसकाअंगदागदेते हैं जोकोई परस्त्रीसेभोगकरताहै या जोस्त्रीअपनापतिछोड़कर दूसरेपुरुषकेपासजाती है यमदूत उसकेतनुमें जलतीहुईलोहेकी मूर्त्तिलपटाकर नानाप्रकारके दुःखदेते हैं जोकोई नीच ऊंच वर्णकाविचार न रखकर परस्त्रीगमनकरता उसेयमदूत वज्रकंटक व शाल्मलिनरक में डालकर बड़े २ कांटेलोहेके उसकेशरीरमेंचुभाते हैं जोमनुष्यराजा या कामदारहोकर किसीकाधर्म जबरदस्ती बिगाड़देताहै उसे यमदूत बैतरणीनदी में जहां लोहू व पीब व मल मूत्रादिकभराहै डालकर भोजनकीजगह वहीखिलाते हैं तबपापीजीव अपनेकर्मोंको समझकर वहांबहुतपछिताताहै जोकोईदासीपालकर उससेभोगकरताहै उसेयमदूत लालाभक्ष नरकमेंडालकर मुँहकीलार व पीब पिलाते हैं जो कोईराजा या बड़ाआदमी अहेरादिकखेलकर पक्षीकोमारताहै उसेयमदूतदशहज़ारयोजन ऊंचेलेजाकर वहांसे पत्थरकी

चट्टानपरगिरादेते हैं जोमनुष्यदेवीआदिक देवतोंकानामकरके अपने भोजनवास्ते जीव- हिंसाकरते हैं उन्हेंयमदूत विश्वासननरकमेंडालकर मुद्गरोंसे इसतरहकूटते हैं कि जिस तरह उखलीमें धानकूटेजाते हैं व आगलगानेवाले मनुष्यको यमदूत सारमेयादननरकमें डालकर हज़ारोंकुत्तोंसेकटाते हैं जोकोईकिसीसेद्रव्यलेकर झूठान्यायकरे या मिथ्यासाखी भरताहै उसे यमदूतदशहजारयोजन ऊंचे लेजाकर शिरनीचे व पैरऊपरकरके रक्तभरे हुये विश्वासननरकमें गिराते हैं व उसको सूखीपृथ्वीपर जल दिखलाईदेकर पानीभरा हुआ सूखादृष्टिपड़ता है जो ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य वेदकाअधिकारी होकर देवतोंके बहाने या अपनेसुखवास्तेमद्यपीताहै उसे यमदूतक्षारकर्दमनरक लोना मिट्टीभरे हुये में डालकर गलायाहुआसीसा पिलाते हैं जो ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य बिनाप्रसाद यज्ञके पशुकामांसखाता है वहीजीव गिद्धरूपहोकर उसकामांसखाते हैं व उन्हें सिवायरक्तके पानीपीनेवास्ते नहींमिलता जो कोई साधु व सन्त या कंगाल या अपनेसेवकको बिना अपराध दुर्वचनकहकरसताता है व अन्धे मनुष्यको पूछने से भी राहनहींबतलाता उसे यमदूत रक्षोगणभोजन नरकमें जहां राक्षस काटते हैं डालकर पांच २ सात २ मुँहकेसांपों से कटाते हैं जोमनुष्य मंगन व बैरागीको भिक्षामांगतेसमय टेढ़ीआंख दिखलाकर झिड़- कदेताहै उसेयमदूत शूलप्रोत नरकमेंडालकर बड़े २ गिद्ध व सांपों से कटाते हैं व कुछ भोजन व पानी नहीं देते इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जो मनुष्य वेद व शास्त्रसे विमुखहोकर थोड़ा या बहुत कुकर्म्मकरताहै व परमेश्वरकी कथा व स्मरणमें प्रीति नहीं रखता वह अवश्य नरकमें जाकर अपने कर्मानुसार दुःख पाताहै मनुष्यका तनु वेद व शास्त्रसे विपरीत चलनेवास्ते नहीं होता अपना शरीर दूसरी योनिमेंभी पालसक्ताहै इसलिये मनुष्यको सन्त व महात्माकी सेवा व संगतिकरकेज्ञान सीखना चाहिये व ज्ञानी होनेपर सब जीवों में परमेश्वरका चमत्कार एकसा समझ कर दूसरे जीवोंकी रक्षा व परउपकार करना उचितहै जिसमें परलोक बनै अज्ञान मनुष्य जबतक कथा व पुराण न सुनै व अनजानमें उससे नरक भोगनेयोग्य कोई पाप भी होजावे व ज्ञान प्राप्त होनेपर फिर वह कुकर्म्म करना छोड़कर परमेश्वरका भजन व स्मरणकरे तो नारायणदीनदयालु सब अपराध उसका क्षमाकरके उसे देवलोक व बैकुण्ठका सुख देते हैं व पहिले पाप करनेकेकारण वह नरकमें नहींजाता व हे राजा तुम मतडरो इस भागवतकथासुनने के प्रतापसे तुम्हाराअपराध ब्राह्मणके गले में सांप डालनेका छूटगया अब तुझे मुक्ति प्राप्तहोकर बैकुण्ठकासुख मिलेगा और जो कोई इसस्कन्धकी कथा सच्चेमनसुनै व पढ़ै वह सब पापोंसे छूटकर भवसागरपार उतरजायगा ॥

छठवां स्कन्ध ॥

अजामिल ब्राह्मणअधर्मीका मुक्तहोना व देवतों व दैत्योंकी उत्पत्ति ॥

दो० लिखौं बड़ाईनामकी जाको वार न पार ।
जिहि सुमिरेसे होतहैं कोटिन जिव निस्तार ॥

पहिला अध्याय ॥

अजामिल ब्राह्मण की कथा ॥

इतनीकथासुनकर राजापरीक्षित शुकदेवजीसे बोले कि महाराज आपने दूसरेस्कन्ध में मनुष्यके बैकुंठजानेकेवास्ते प्रवृत्तिमार्ग व निवृत्तिमार्ग दोराहबतलाकर यह कहाथा कि परमहंस व योगीलोग निवृत्तिमार्गसे सूर्य्यमंडलमें होकर पहिलेब्रह्मपुरीको जातेहैं कुछदिन वहांब्रह्माके साथरहकर उनकीमुक्तिहोती है और जो जीवमायाके गुणोंसेबारंबार जन्म व मरणकोप्राप्तहोते हैं वह जीव प्रवृत्तिमार्गसे पहिले चन्द्रमण्डलमें जाकर अपने कर्मानुसार स्वर्गादिककासुख भोगनेउपरान्त फिर संसारमें जन्मलेतेहैं व आपनेबिस्तार पूर्वक कथा चौदहोंलोक व स्वर्ग व नरक व धर्म व अधर्मकरनेवालोंकी गति जो पापके बदले नरककादुःख व पुण्यके प्रतापसे स्वर्गका सुखभोगते हैं सुनाया व सब वृत्तान्त राजास्वायम्भुवमनु व प्रियव्रत व उत्तानपाद व देवहूती व ध्रुवआदिक उनकीसंतान व सातोंद्वीप व नवोंखण्ड व सातोंसमुद्र व बिस्तारपृथ्वी व भूमण्डलआदिकका वर्णन किया अब मैं ऐसाउपाय सुनाचाहताहूं कि जिसधर्मकरनेसे पापी व अधर्मीलोगभी पवित्रहोकर स्वर्गकासुखपावैं सो आपदयाकरके बतलाइये जिसमें कोई बीचनरकके न जावे यह वचनसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजा जो लोग मनसाबाचाकर्मणासे जानबूझ-कर पापकरैंगे उन्हें उसअधर्मकेबदले उननरकोंकादुःख जो मैंनेकहाहै अवश्यभोगना पड़ैगा इसवास्ते मनुष्यकोचाहिये कि यह तनुपाकरहरसाइत अपनीमुक्तिहोनेका उपाय करतारहे जो कोईइसतनुमें इसकाशोचनहींकरता वह जन्म अपना अकार्थखोकर पीछे बहुतपछताताहै मनुष्यसे कोईपापछोटा या बड़ाकिसीप्रकारकाहोजावै तो उसकाप्रायश्चित्त थोड़ा या बहुत शास्त्रानुसारकरडाले जिसतरहरोग बिनाऔषधखाये नहींजाता उसीतरह पापभी बिनाप्रायश्चित्तकियेनहींछूटता यहबातसुनकर परीक्षितनेविनयकिया महाराज जान बूझकर पापकरनेवाला जो एकबेरप्रायश्चित्तकरनेसे शुद्धहोकर फिर अधर्मकरैगा तो उसका उद्धार प्रायश्चित्तकरनेसे किसतरहहोसक्ताहै यहवचनसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजापाप व पुण्यदोनों एकएक कर्महोकर शुभकर्मकरनेसे पापछूटताहै पर फिरअधर्म न करै जिसतरह

रोगछूटनेवास्ते औषधखाकर संयमनहींकरतायाथोड़ेदिन बराबरकरके फिर खट्टामीठा खाने लगताहै तो खाना और नहींखानाऔषधका दोनों बराबरहोकर रोगउसका नहींछूटता और अधिकहोजाताहै जिसतरह हाथीनहानेउपरान्त फिर धूरिउठाकर अपनेमस्तकपर डाललेवै तो उसकेस्नानकरने से क्यागुणहोगा व जैसाउद्धार ज्ञानप्राप्तहोने से होताहै वैसा शुभकर्मकरनेसे जल्दी पापनहींछूटता पर संयमकरनेवालेकारोग नहींबढ़ताइसलिये शुभकर्मकरना उत्तमहोकर कुछदिनबीते उसकाकल्याणहोजाताहै सिवायइसके पापों को नाशकरनेवास्ते ब्रह्मचर्य व व्रतरहकर सुधर्म व तपकरना व इन्द्रियों को अपनेबश व मनको संसारी मायामोहसे बिरक्तरखकर सच्चबोलना व मनसाबाचाकर्मणासे किसीका बुरा न चहकर वित्तसमान परउपकारकरना व किसीजीवको दुःख न देना चाहिये यह सब उपायकरनेसेभी पापकटजाते हैं पर जैसा परमेश्वरकेचरणों में भक्ति व प्रीति रखने व उनकानामजपने व कीर्त्तनसुनने से अनेकजन्मकेपापछूटकर मनुष्यतुरन्तमुक्तिपाताहै वैसा तपआदिककरनेसे शुद्धनहींहोता जिसतरह प्रातःकाल कुहिरेकाअंधेरा सूर्यदेवताके प्रकाशकरनेसे नाशहोजाताहै उसीतरहबासुदेव व श्रीकृष्णजीकानामलेनेसे बड़ेबड़े पाप अनेकजन्मके न मालूमकहांभागजाते हैं जैसे पृथ्वीपरवृक्ष व फलआदिक उपजते हैं वैसे मनुष्य परमेश्वरकाभजन व भक्तिकरनेसे मनवांछितफलपाताहै इसलियेमनुष्यको संसार में परमेश्वरकीप्रीति उत्पन्नहोनेवास्ते सिवायसत्संग व सेवाकरनेसाधु व महात्माकेदूसरा मार्ग अच्छानहींहोता व उनकीसंगति व टहलकरनेसे बहुतशीघ्र मनमनुष्यका संसारसे बिरक्तहोकर मुक्तिपाताहै व जोलोग परमेश्वरसेबिमुखहैं वह प्रायश्चित्तकरनेसेभी किसी तरह शुद्धनहींहोते जिसतरह मदिराकाघड़ा गंगाजलकेधोनेसे पवित्रनहींहोसक्ता जिसने एकबेरभी अपनाचित्त श्रीकृष्णजीकेचरणों में लगाया वह स्वप्नेमेंभी यमराज व यमदूतों को नहीं देखता जानो वह सबप्रायश्चित्तकरचुका सो हम एककथामाहात्म्य नारायण नामकी जिसमेंविष्णुभगवान् व यमदूतोंकासंवाद है कहते हैं सुनो पिछलेयुग में अजा-मिलनाम ब्राह्मण रहनेवालाकन्नौजका एकदासीसेप्रीतिरखकर चोरी व ठगी व जुवा व फांसीकाउद्यमकरताथा उसदासी से उसके दशबेटेउत्पन्नहुये सो उसको अपने छोटेपुत्र नारायणनामसे बड़ाप्रेमथा इसलिये खातेपीते उठतेबैठते चलतेफिरते उसकीयाद मनमें रखताथा जब इसीचलन व ब्यवहारमें अट्ठासीवर्षकी अवस्थाहुई व उसकेमरनेका समय आया तब तीनयमदूत भयानकरूप मुद्गर व फांसीलियेहुये उसका प्राणलेनेवास्तेआये व गलेमें फांसीडालकर खींचनेलगे तब अजामिलने उनका भयानकरूपदेखतेही घब-ड़ाकर जैसे नारायणनाम अपनेपुत्रको चिल्लाकरपुकारा वैसे अन्तसमय नारायण नाम लेने के प्रतापसे बिष्णुभगवान्की आज्ञानुसार चारदूत श्यामरंग चतुर्भुज शंख व चक्र व गदा व पद्म धारणकिये बड़ेतेजवान् सुवर्णकीछड़ीलियेहुये उसकेपासपहुँचकर यम-दूतों से बोले तुमहमारेसामने इसको दुःखदेकर धर्म्मराजकेयहां नहींलेजासक्ते यहबात

सुनकर यमदूतोंनेकहा सुनो मित्र इसब्राह्मणने बहुतपाप इससंसारमें कियेहैं सो अधर्मी व पापोंकादण्ड धर्मराजसदाकरतेहैं इसलिये हम उनकीआज्ञानुसार इसे नरकमेंलेजावैंगे तुम्हें नारायणजीके दूतहोकर ऐसेअधर्मी के पासआना व हमकोलेजाने से मनाकरना उचितनहींहै यहवचनसुनकर बिष्णुके दूतबोले तुमलोग धर्मराजके दूतहोनेपरभी यह नहींजानते कि किसमनुष्यको सुखदेनाचाहिये व कौनमनुष्य दुःखदेनेयोग्यहै इसलिये धर्म व अधर्मकावृत्तान्त व रूप हमैंबतलाओ कि किस पापकरनेवालेको दंडदेनाचाहिये व कौनकर्मकरनेसे मनुष्य सुखदेनेयोग्यहोताहै यमदूतबोले जोवचन वेद व शास्त्रमें शुभ-कर्मलिखाहै उसेधर्म और जो अशुभलिखाहै उसको अधर्म समझनाचाहिये किसवास्ते कि वेद व शास्त्रकावचन नारायणजीकी आज्ञानुसारहोकर पाप व पुण्यकरने के साक्षी सूर्य व चन्द्रमा व अग्नि व दिनरात्रि व दिशा व बायुआदिक देवताहैं उन्हींलोगों से धर्म्मकाहालबूझकर मनुष्यको दुःख व सुख दियाजाताहै ऐसाकोईजीव संसारमेंनहींहोगा जिसे चलतेफिरते उठतेबैठते पाप व पुण्य न होवै सो यह अजामिल ब्राह्मणकेघर जन्म लेकर विद्यापढ़नेउपरांत शास्त्रानुसार गुरु व माता व पिता व विष्णुभगवान् व अग्नि व सूर्यदेवताकी भक्तिरखकर अपने कर्म व धर्मसे रहताथा एकदिन पिताकीआज्ञानुसार जंगलसेलकड़ी व पत्ता व पुष्पादिक तोड़कर लियेचलाआताथा राह में क्यादेखा कि एकभिल्ल अपनीस्नेहीवेश्याको साथलिये दोनोंमतवालेहोकर आपसमें हँसते व कल्लोल करतेहैं इस ब्राह्मणकोदेखतेही वहवेश्यामतवाली कामदेवकेवशहोकर उसकेगलेमें लपट गई तब वहब्राह्मणभी कामासक्तहोकर उससे भोगकरनेउपरांत उसको अपनेघरलेआया व अपनीमाता व पिता व बालास्त्री व गुरु व धर्म व कर्म्मको छोड़दिया व उसकेसाथ रहकर मांस व मदिरा खानापीना आरम्भकिया सो थोड़ेदिनोंमें सबधन अपनेपिताका फूंककर फिर चोरी व ठगी व जुवा व फांसीका उद्यमकरिकै अपनाकुटुम्ब पालनेलगा इसवास्ते हमऐसेमहापापीको यमराजके यहांसे लेनेआये हैं जिसमें अपनेकुकर्मोंका वहां दण्डपाकर शुद्ध होजावै ॥

दूसरा अध्याय ॥

बिष्णु के दूतों को परमेश्वर के नाम की महिमा वर्णन करना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् यमदूतोंसे अजामिलके अधर्मकरनेकाहालसुनकर बिष्णु-भगवान्के दूतबोले कि धर्मराजकेयहां बड़ाअन्धेर है कुछन्यायनहींहोता किसवास्ते कि उनकेदूत बिनाअपराध साधुलोगोंकोभी दुःखदेतेहैं जब धर्म्मराज सबपाप व पुण्यका हालजाननेपरभी ऐसाअन्यायकरैंगे तो संसारीकाम जिसमें कोई अपनेधर्म व अधर्मका हाल नहींजानता किसतरहचलैगा जिसकेविश्वासपर कोई गोदमें शिररखकरसोवै वही उसकाशिरकाटले या माता व पिता अपनेपुत्रकोबिषदे तो रक्षाउसकी कौनकरसक्ता है

तुमलोगोंने नारायणनामकीमहिमा नहींसुनी जोमनुष्यजानकर या धोखे व भय व हँसी से भी परमेश्वरकानामलेता है उसके सब बड़े २ पाप सोनाचुराने व गो ब्राह्मण व तपस्वी व माता पिताके मारडालने व गुरुकी स्त्री से भोगकरने व मदिरापीने व गुरु को दुर्वचनकहने के अन्तसमय परमेश्वर का नामलेने से छूटजाते हैं सो इस ब्राह्मण ने मरतेसमय नामनारायणका अपनेमुखसे निकाला कदाचित् उसकेपुत्रकानामथा तो क्यासन्देहहै उसीनामलेनेकेप्रतापसे अनेकजन्मका पापछूटकर वह ब्राह्मणबैकुण्ठजाने योग्यहुआ उसनामलेने व पापछूटनेउपरांत फिर इसनेकोई अपराधनहींकिया जो दण्ड देनेयोग्यहो व नारायणनामलेनेसे अधिककोई प्रायश्चित्त पापोंकाछुड़ानेवाला संसार में नहींहोता कदाचित् किसीयज्ञ व तप व होमआदिकमें कुछ भूलहोजावै तो राम व कृष्णकानामलेनेसे वह शुद्धहोजाताहै कोईतीर्थ व व्रत व नियम व तप व जप व यज्ञ व होम व दान व धर्म्म रामनामलेनेकेतुल्य नहींहोसक्ता जो मनुष्य नारायणनाम चार अक्षरमुखसे निकालताहै उसकोपरमेश्वर अर्थ, धर्म, काम, मोक्षचारोंपदार्थदेते हैं बड़े २ योगी व मुनीश्वरोंने परमेश्वरकेनामका माहात्म्य सबसेश्रेष्ठ लिखाहै उनकानामलेने व कथासुनने व भक्तिकरनेसे अनेकजन्मके पापछूटजातेहैं जिसतरह संसारमें दश बीस मनुष्य एकजगहबैठेहों व उनमेंसे किसीकानामलेकर कोईपुकारै तो वह मनुष्य उसकी ओर आंखउठाकर अवश्यदेखताहै उसीतरह परमेश्वर त्रिलोकीनाथने अजामिलके नारायणनामपुकारनेपर आंखउठाकर देखाथा जिसतरहमनुष्यका रोग दवा जानकर व अजानमेंदोनोंतरह खानेसेछूटजाताहै व एक चिनगारी आगिकी बड़ेढेररुई व लकड़ी को क्षणभरमेंजलादेतीहै उसीतरह एकबेर नारायणनामलेनेसे अनेकपाप रुई व लकड़ी के समान जलकरछूटजातेहैं व परमेश्वरनेवेदमें ऐसाकहाहै कि जो कोई मेरानामलेवे उसे मैं कृतार्थकरदेताहूं जिसतरहबनमें व्याघ्रकीबोली सुनकर हरिणभागजातेहैं उसी तरहरामनाम मुखसेनिकलतेही पाप मारेडरके शरीरसे निकलकर भागजातेहैं जब विष्णु भगवान्के दूतोंने ऐसी २ बातैंकहकर यमदूतोंको वहांसे निकालदिया व चारभुजावाले दूतोंकादर्शनकरनेसे अजामिलकोज्ञान व वैराग्यउत्पन्नहुआ तब वह महिमानामपरमेश्वर की सुनने व समझनेउपरांत बहुतपछताकर कहनेलगा कि देखो मैंने ब्राह्मणके घरजन्म पाकर अपनाकर्म्म व धर्म्मछोड़दिया व दासीकेबशरहकर आयुर्दा अपनीकुकर्म्ममें बिताई इनसाधुओंके आनेसे मेराप्राणबचा नहींतो यमदूत न मालूममुझको कैसादुःखदेते जिस नारायणनामलेनेकेप्रतापसे मेराकल्याणहुआ अब आयुर्बलपर्यन्त परमेश्वरकानाम जप कर अपना जन्मसुधारूंगा जब अजामिल इसतरह पछतानेलगा व पार्षद विष्णुभग- वान्केवहांसे अन्तर्द्धानहोगये तब अजामिलने उसीसमय चित्त अपनासंसारीमायामोह से बिरक्तकरदिया व पार्षदोंके दर्शनकरनेके प्रतापसे एकवर्षकी आयुर्दा उसको और मिली सो वह हरद्वारमेंजाकर अपनेसच्चेमनसे परमेश्वरकाध्यान व स्मरणकरनेलगा

जब उसको वहांएकवर्षध्यान व भक्तिकरतेहुये बीता तब बैकुण्ठसे अतिउत्तम बिमान उसकेपास आनकरउतरा सो वह उस बिमानपर चढ़कर गाताबजाता बैकुण्ठकोचला गया व चतुर्भुजी रूपहोकर वहांरहनेलगा यहहाल देवता व ऋषीश्वर देखकर उसकी बड़ाईकरनेलगे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् देखो ऐसेमहापापीने बेटाके धोखे नारायणजीकानाम मुखसे लियाथा सो ऐसीपदवीको पहुंचा जो कोई संसारसे बिरक्तहोकर हरिभजनकरताहै उसकीगति क्याकहनाचाहिये उनकाभक्तनरकमें नहीं जाता ॥

तीसरा अध्याय ॥

यमदूतोंकोजाकर अजामिलका वृत्तान्त धर्मराजसे कहना ॥

परीक्षितने इतनीकथा सुनकर शुकदेवजीसे पूछाकि महाराज यमदूतोंने अजामिल के पाससेजाकर यमराजसे क्याकहा व धर्मराजने क्याउत्तरदिया सो दयाकरके बतलाइये शुकदेवजीबोले हे राजन् यमदूतोंने धर्म्मराजसे जाकरकहा कि संसारमें अनेक मनुष्य न्यायकरनेवाले हमैं दिखलाई देतेहैं जब बहुतलोग न्यायकरैंगे तब आपसके झगड़ेसे कोईपापीको बैकुण्ठमें व कोईधर्म्मात्माको बीचनरकके भेजदेंगे हमलोग आज तक केवलआपको यहन्यायकरनेवाला जानकर तुम्हारीआज्ञासे सबजीवोंकोलेआतेथे व कर्मानुसार उनकोफल मिलताथा आज हमलोग आपकीआज्ञासे अजामिल पापीको लेनेगयेथे जैसेउसने हमैं देखकर नारायणनाम अपनेपुत्रको पुकारा वैसे चारपार्षद श्यामरंग चतुर्भुजीरूपने आनकर उसपापीको हमसेछीनलिया इसलिये कहेदेते हैं कि इसकायत्नकीजिये जिसमेंहमारा अपमान न हो यह बचनसुनतेही यमराजने ब्रह्मरूप भगवान्का ध्यानकरनेके उपरांत दूतोंसेकहा तुमलोग नारायणनामकी महिमा नहीं जानते उसनामका माहात्म्यनिर्ऋती व इन्द्रादिक अठारहदेवता व भृगुआदिक ऋषीश्वर अच्छीतरह न जानकर हम व ब्रह्मा व राजाजनक व मनु व भीष्मपितामह व प्रह्लाद व राजाबलि व शुकदेव व नारद व महादेव व कपिलदेवजी व सनकादिक चारोंभाई निजभक्तउनके अच्छीतरहजानते हैं देखोनामका वह प्रतापहै कि जो अजामिल ऐसामहापापी अपनेबेटेके धोखे नारायणनामलेकर तुम्हारीफांसीसे छूटगया सो हम व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक सबदेवता परमेश्वरकीसेवामें रहकर उनकीआज्ञानुसार सब कामकरतेहैं व भगवान्कीइच्छासे उत्पत्ति व पालन व नाश तीनोंलोकका एकक्षणमेंहोकर उनकीमायामें साराजगत् बँधारहताहै व उनके दूत सबजगह रहकर भक्तोंकी रक्षाकरतेहैं पर किसीदेवता व मनुष्यको दिखलाई नहींदेते जिन्होंने अजामिलको तुमसेछुड़ादिया तुम इसबातमें कुछखेद न मानकर अपना बड़ाभाग्यसमझो जो उनकादर्शन तुमनेपाया उनकेदर्शन देवता व ऋषीश्वरोंको जल्दी नहींमिलते यमदूतोंने यह माहात्म्य नारायणजीके नामकासुनकर धर्मराजसे बिनयकिया जब परमेश्वर

नामलेनेसे ऐसाफलहोताहै तब वेदशास्त्रमें पापछुड़ानेकेवास्ते तपआदिक कठिन कठिन प्रायश्चित्त क्योंलिखेहैं धर्मराजबोले जो मनुष्यनामकी महिमानहींजानता उसकेवास्ते सब तप व यज्ञआदिक लिखाहै जिसमेंमन उसकाबीचभक्ति व पूजा परमेश्वरकेलगे नहींतो नारायणनामलेनेसे उत्तम दूसराकोईकर्म्म नहीं है यज्ञ व तपआदिककरनेमें एक पापछूटकर परमेश्वरकानामलेनेसे अनेकप्रकारके पापनाशहोतेहैं भगवान्ने कलियुगबासियोंको केवल भयदिखलानेकेवास्ते यज्ञ व तपआदिक कठिनकठिन प्रायश्चित्तबनादिये हैं जिसमेंसंसारी जीवउसडरसेअधर्म न करें नहींतोमनुष्यनिर्भयहोकरऐसाविचारता कि पहिले संसारीसुखभोगनेकेवास्ते पापकरलेवैं पीछेसे परमेश्वरकानामलेकर शुद्धहोजावेंगेयहबचन सुनकरयमदूतबोले कि महाराज ऐसाहै तो आपहमको क्योंभेजते हैं तब धर्मराजनेकहा हम उसमनुष्यको लेनेकेवास्ते तुमकोआज्ञादेते हैं कि जिसने जन्मभरपरमेश्वरकानाम न लेकर कभीलीला व कथाउनकीनहींसुनीहो उसे महापापीसमझनाचाहिये व जो नारायणजी की शरणमेंजाताहै उससे पाप न होकर परमेश्वरउसको अशुभकर्मों से बचायेरखते हैं सो तुमलोग आजसे ऐसेपापीको विचारकरलायाकरो जो परमेश्वरसे विमुखहो व जो लोग हरिभजनमें लीनरहकर शालग्रामका चरणामृत नित्यलेते हैं उनकेपासकभी मत जाना वहलोग कुन्दनकेसमान शुद्धरहकर मुक्तिपाते हैं ऐसाकहकरधर्म्मराजने परमेश्वर का ध्यानकरके अपनेदूतोंकाअपराध उनसे क्षमाकराया व यमदूतों ने यहबातसुनतेही भयमानकर आपसमें ऐसीसम्मतिकिया कि आजसेकभी उसमनुष्यकेपास जो हरिचर्चा रखताहै जाना न चाहिये इतनीकथासुनकर परीक्षितने बिनयकिया हे मुनिनाथअजामिल महापापीकेमुखसे मरतेसमय नारायणजीकानाम किसतरहनिकला शुकदेवजीबोले हेराजन् एकदिनचारसाधु तीर्थयात्राकरतेहुये अजामिलकेगांव में सन्ध्यासमयपहुँचे व उन्होंने अपनेटिकनेकेवास्ते किसीहरिभक्तकास्थान लोगों से पूछा तब उसगांववालों ने ठट्ठेसे अजामिल अधर्मीकाघर बतलादिया जब साधुलोगवहांगये तब अजामिलकी वेश्याने उनसाधुओंको अच्छागृह टिकनेकेवास्तेदेकर धुनीपानीसे उनकीसेवाकी प्रातःकाल चलतेसमय साधुओं ने उसवेश्यासे जो गर्भवतीथी कहा तेरेपुत्रहो तो नारायण नामरखियो उनकीआज्ञासे अजामिलने उसबेटेकानाम नारायणरक्खा सो उनसाधुओं की कृपासे मरतेबेर अजामिलके मुखसे नारायणकानामानिकलाथा सन्त व महात्माकी सेवा वृथानहींजाती जोलोग साधु व वैष्णवकीसंगति व टहलकरते हैं उनको कोईदुःख नहीं देसक्ता यहसुनकरपरीक्षित अतिप्रसन्नहुये और शुकदेवजीनेकहा कि हेराजन् हमने यहकथा अगस्त्यमुनिसेसुनीथी सो तुम्हेंसुनाई परीक्षितनेहाथजोड़कर विनयकिया आपने बड़ीकृपा व दयाकरके नारायणनामका माहात्म्य मुझेसुनाया ॥

चौथा अध्याय ॥

दक्ष का प्रचेतों के यहां उत्पन्न होना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर विनयकिया महाराज आपने देवता व दैत्यादिक की उत्पत्ति संक्षेपमेंकहीथी अब उसे विस्तारपूर्वक सुनाचाहताहूं यहसुनकर शुकदेवजी बोले हेराजन् प्राचीनबर्हिषके दशपुत्र प्रचेतानामसमुद्रके किनारे जाकर महादेवजी के ज्ञानोपदेशसे परमेश्वरकातप व ध्यानकरनेलगे व उनकेजानेके उपरान्त नारदमुनिकी आज्ञानुसार प्राचीनबर्हिष राजगद्दी सूनीछोड़कर वनमें हरिभजनकरने चलागया तब उसका बहुतसादेश दूसरेराजोंनेदबालिया व अनेकनगर व गांव उजड़कर जंगलहोगये जब प्रचेतोंको हरिभजनकेप्रतापसे परमेश्वरकादर्शन मिलचुका तब एकदिन नारदजी रमतेहुयेजाकर वृत्तान्तउजड़नेनगर व उपजने जंगल व दबालेने दूसरेराजों का उनसे कहदिया वहबातसुनतेही क्रोधसे ऐसी अग्निसमान श्वासा उनकेनाकसे निकली कि जिसकीज्वालासे बनजलनेलगा यहदशादेखतेही चन्द्रमाने निम्लोचानामकन्याको जो विश्वामित्र और मैनका अप्सराके संयोगसेहुईथी लाकर प्रचेतोंसे उसकाविवाहकरदिया जैसे प्रचेतोंने आंखउठाकर उसकन्याको देखा वैसे हरिइच्छासे उसकेगर्भ रहकर दशवें महीने दक्षनामपुत्र उत्पन्नहुआ तबप्रचेतोंने अपनेपिताका नगर व देशबसाने और सृष्टिबढ़ानेकी उसेआज्ञादी सो दक्षने मानसी सृष्टिसे बहुतमनुष्य उत्पन्नकिये वहलोग स्त्री व पुरुषकेभोग न करनेसे अधिकनहीं होतेथे इसलिये दक्षने सृष्टिबढ़ानेके वास्ते मन्द- राचलपर्वतपर जाकर कुछकाल परमेश्वरका तप व ध्यानकरके इसतरह हंसगुह्यस्तोत्र से स्तुति उनकी की कि मैं उसपुरुषको नमस्कारकरताहूं जिसकावीर्य कभी नहींघटता व मायाकेगुणोंमें वहवीर्य पड़कर जड़को चैतन्यकरताहै व इसजीवात्मासे जो स्नेहरखकर सबइन्द्रियोंकाहाल जानताहै व इन्द्रियां उसकाभेद नहींजानसक्तीं उसपरब्रह्मपरमेश्वर को दण्डवत्करताहूं कि जिसकीकृपासे शरीर व प्राण व मन व बुद्धि यहसब अपना २ कर्मकरके ज्ञानीलोग जिनकेचरणोंका ध्यान आठोंप्रहर हृदयमेंरखकर उन्हेंप्रणामकरते हैं उस अविनाशीपुरुषका चरणधरताहूं व यहजगत् जिससे उत्पन्नहुआ व उसीका रूपहोकर जिसकेआश्रमपर रहताहै और जो इससंसारसे पृथक्रहकर अपनीमायाका उसमें प्रवेशरखताहै उसईश्वरको दण्डवत्करताहूं जब दक्षने ऐसीस्तुतिकरके नारा- यणजीको प्रसन्नकिया तब वह सांवलीसूरत गरुड़पर बैठ अष्टभुजीमूर्त्ति शंख व चक्र व गदा व पद्मलिये तापहारिणी चितवनि तेजवान् पीताम्बरधारणकिये किरीटकुण्डल मुकुटसाजे वैजयन्तीमाला व वनमालाविराजे कौस्तुभमणिपहने नारदजीआदिक भक्त व सोलहपार्षदसंगलिये मन्द २ मुसुकराते दक्षकेसन्मुख प्रकटहुये ऐसासुन्दररूपदेख- तेही जबदक्षने अतिहुलाससे उनकोसाष्टांग दंडवत्किया तबभगवान्जी उसे अपना

भक्तजानकर बोले हेप्रचेताकेपुत्र तू अपनीतपस्यासे सिद्धहुआ और हमतेरीस्तुतिकरने से बहुतप्रसन्नहुये व ब्रह्मा व महादेव आदिक जो मेरेभक्तहैं उनको मैं अपनामित्रजानताहूं और तपमेराहृदय व यज्ञमेराशरीर व धर्म्ममेरा आत्मा व देवता मेरेप्राणहोकर इसजगत्का उत्पन्नकरनेवालामैंहूं व ब्रह्माने भी तपकेप्रतापसे सृष्टिकीरचनाकियाहै सो तुमभी असिक्नीनामकन्या पंचजन्यप्रजापतिके बिवाहकरनेके उपरान्त मैथुनकरके संसार उत्पन्नकरो मानसीसृष्टिसे विरक्तहोकर तपकरनेकेवास्ते चलेजाते हैं उनको किसीसे प्रीतिनहींरहती स्त्रीपुरुषके भोगकरनेसे मोहनीसृष्टि बहुतउत्पन्नहोकर संसारीमायामें इस तरहलपटेरहैंगे कि जिसतरह गुड़में चिउँटा लपटारहताहै व आजसे सबजीव मैथुनकरने से जगत्में उत्पन्नहोकर अपने २ कर्म्मोंकाफल भोगकरैंगे ऐसाकहकर नारायणजी वहांसे अन्तर्द्धानहोगये व दक्ष उसकन्यासे बिवाहकरके घरआनकर राज्यकार्यकरनेलगे ॥

पांचवां अध्याय ॥

उसी स्त्रीसे दशहजार पुत्रोंका उत्पन्नहोना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् दक्षकीउसीस्त्रीसे मैथुनकरकेजब दशहजारपुत्रहुये तब दक्ष ने सबकानाम हर्यश्व रखकर उनसेकहा कि पहलेतुमलोग परमेश्वरका तपकरकेपीछेसे संतानउत्पन्नकरो यहवचनसुनतेही वहदशोंहजारबालक पश्चिमदिशामें नारायणनाम तीर्थपरजाकर जबपरमेश्वरकातप व ध्यानकरनेलगे तबनारदमुनिने दयाकीराह उन लोगोंको भवसागरपारउतारना विचारकरउनसेकहा कि तुमलोगजानतेहो उत्पन्नकरने वाला सबजगत्काएकपुरुषहै उसकेसमानदूसरानहींहोसक्ता व सबजीवोंमें उसीकेतेजका प्रकाशरहताहै जिसकीशक्तिसे सबजीवोंकोचलने व फिरनेकीसामर्थ्यहोतीहै व महाप्रलय होनेपरभी केवलवहीअबिनाशीपुरुष स्थिररहताहै सोतुमलोगसंसार किसतरहउत्पन्नकरोगे अभीतुमबालकहो पृथ्वीकाअन्त व एकपुरुषउसस्थानको जहांकागयाहुआ कोईनहीं फिरता तुमनेनहींदेखा व भूरवन्तीस्त्रीको जो नित्यनयेपुरुषकी इच्छाकरतीहै तुमनजानकरव्यभिचारिणीस्त्रीके पतिकोभी नहींपहिंचानते व एकनदीमें दोनोंतरफधाराचलतीहै उसेभी तुमनहींजानते पच्चीसमंत्रकागृहबनाहुआ व एकहंसीजाहै उसेभीतुमनेनहींदेखा व चोखीधारके चक्रकोभी तुमनहींजानतेहो इसलिये इनसबबातोंको बिचारकरसंसारको उत्पन्नकरना व अपनेपिताकी आज्ञामेंरखना जबनारदजीयहज्ञानपहेलीके समान बतलाकरचलेगये तबबालकोंने आपसमेंबैठकर अपनेज्ञानसे उनसबबातोंका यहअर्थविचारा कि पृथ्वीजीवहोकर उसकाअन्तमोक्षहै जबतकउसको हमनजानलेवैं तबतक सृष्टिकी वृद्धिक्याकरैंगे और वहपुरुषनारायणजीको समझनाचाहिये उनकीकृपा व दर्शनहुये बिना हमक्याकरसक्तेहैं और वहस्थानबैकुण्ठहै जहांकागयाहुआ फिरसंसारमें जन्म नहींलेता बिनाउसकेदेखेहमसे क्याहोसकेगा और भूरवन्तीस्त्रीको बुद्धिसमझो उसको

बिनाएकचित्तकिये हमसंसारीजीव कैसेउत्पन्नकरैंगे और व्यभिचारिणीस्त्रीकापुरुषजीवहै सोवहसंसारीमायामें फँसगयाहै उसकोअलगकिये बिनासंसारहमसे नहींउत्पन्नहोता व दोनोंतरफबहनेवालीनदी मायाको समझनाचाहिये देखो जगत्में एकमरकर दूसराजन्म लेताहै व एकघरमेंढोलकोबजाकर हर्षसेलोगगातेहैं व दूसरेकेयहांशोक व बिलापहोताहै जबतकउसमायाका भेदहमैंनमालूमहो तबतकसंसारहमसे नहींउत्पन्नहोसक्ता व पच्चीसतत्त्वोंकाबनाहुआ यहशरीरहोकर इसमेंपरमेश्वरकाप्रकाशहै बिनादेखे व जानेउस ईश्वरके हमाराकियाकुछनहोगा व हंसवेदशास्त्रको समझोजिसकावचनबंध व मोक्षका बनानेवालाहै बिनाउसकेजाने हमजगत्कीउत्पत्ति नहींकरसक्ते व चोखीधारकाचक्र मृत्युकोजाननाचाहिये किजोसबजगत्कानाशकर्त्ताहै बिनाउसकेजानेहमें सृष्टिबढ़ानेकी सामर्थ्यनहोगी इनसबबातोंको बिचारकरउन्होंनेसंसारका उत्पन्नकरना उचितनहींजाना जबज्ञानप्राप्तहोनेसे अन्तःकरणउनकाशुद्धहोगया तबवहलोगफिरकरअपने घरनहींआये परमहंसहोकर जीवन्मुक्तहोगये जबबहुतदिनबीतनेपरभी वहफिरकरनहींआये तबदक्षने जानाकिनारदमुनिने ज्ञानसिखलाकर उन्हेंबिरक्तकरदिया ऐसाबिचारकर दक्षनेहजारबेटा और उसीस्त्रीसे उत्पन्नकरके सबलनाम रखकरउनसेकहाकि पहिलेपरमेश्वरका तपकरके पीछेसे संतानउत्पन्नकरो जबवहलोगभीउसीजगह जहांउनकेभाईगयेथे जाकरपहुँचे तब नारदमुनिने वहांआकरउनको ऐसाज्ञानबतलाया कि वहभीसंसारीमायाछोड़कर परमहंसहोगये यहहालसुनतेही दक्षनेक्रोधवान्होकरकहा कि देखोनारदमुनिने हमारेग्यारह हज़ारबेटोंको ज्ञानसिखलाकर बिरक्तकरदिया संसारमेंमनुष्यकिसतरह अधिकहोवेंगे दक्ष इसीक्रोधमेंबैठेथेकि नारदजी उससिमयबीणा बजातेहुये वहांआये उनकोदेखतेही दक्षने बिनादण्डवत्कियेकहा हेनारदमुनि तुमनेहमारे अज्ञानलड़कोंको बहकाकर बिरक्तकर दिया मुझेबहकाओतोमैंजानो कितुमबड़ेज्ञानीहो परमेश्वरकेपार्षदोंमेंहोकर तुमकोहमारे साथशत्रुताकरना उचितनहींहै तुम केवल यती व सत्यबादीहोकर धर्म वेद व शास्त्रको नहींजानते मनुष्यकोदेवऋण पितृऋण ऋषिऋण तीनोंऋणसे अवश्यउऋणहोनाचाहिये सोमेरेबालक अभीतक इनतीनोंऋणोंसेनहींछूटे तुमनेकिसवास्तेउनको ज्ञानसिखलाकर बिरक्तकरदिया क्यातुमस्त्री व पुत्रादिका गृहस्थाश्रममें रहनाअच्छानहींजानते जोगृहस्थ शास्त्रानुसार अपनाकर्म व धर्मरक्खै वहनिस्संदेहयोगी व परमहंसोंकीगतिको पहुंचताहै तुमनेवेद व शास्त्रकाधर्मनिषिद्धजाना इसलियेमैं परमेश्वरसे चाहताहूं कितुमदोघड़ीसे अधिकएकजगहनरहो कदाचित्ठहरो तोतुम्हाराशिरदूखै ऐसाशापदक्षनेनारदकोदिया व नारदजीकोभी शापदेनेकीसामर्थ्यथी परउन्होंने दक्षकोहरिभक्तजानकर उन्हेंकुछशाप नहींदिया व आनन्दपूर्व्वकवहांसे चलेगये तबदक्षनब्रह्मासेजाकरकहा कि नारदमुनि तुम्हारापुत्रहमारेबेटोंको ज्ञानसिखलाकर बिरक्तकरदेताहै संसारीसृष्टि किसतरहबढ़ैगी यहसुनकरब्रह्माजीबोले कि तुमकन्याउत्पन्नकरो उन्हेंघरमेंरहनेसे नारदज्ञानउपदेशनहीं

करसकैंगे व स्त्रीकोजल्दीज्ञान नहीं प्राप्तहोता वहअपनेअर्थको अच्छाजानतीहैं उनसेसंसारी जीव अधिकहोंगे ॥

छठवां अध्याय ॥

दक्षका उसीस्त्रीसे साठिकन्या उत्पन्नकरना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन्फिरदक्षने ब्रह्माजीकीआज्ञानुसार उसीअसिक्नीनामस्त्रीसे साठि कन्याउत्पन्नकिया उनमेंदशकन्या धर्म व सत्ताइसचन्द्रमा व सत्रहकश्यप व दो भूत व दो अंगिराऋषीश्वर व दो कृशाश्वप्रजापतिको बिवाहदियाउन्हीं सबकन्याओंसे बहुत जीव देवता व मनुष्य व दैत्य व दानव व पशु व पक्षी उत्पन्नहुये सोहमउनसबकन्या व उनकीसन्तानकानाम संक्षेपसेकहतेहैं सुनोधर्म्मकी दशोंस्त्रीकानाम भानु १ व लम्बा २ व ककुब ३ व जामी ४ व विश्वा ५ व साध्या ६ व मृत्युवती ७ व बसू ८ व मुहूर्त्ता ९ व संकल्पा १० था भानुकाबेटाऋषभ उनसेइन्द्रसेनलम्बाकापुत्र विद्युत्उनसे मेघककुबकाबेटासंकटउनसे विकटहोकर कीकटसे किलेकेदेवताउत्पन्नहुये जामीकापुत्र स्वर्गउनसे नन्दपजन्मा विश्वाकाबेटा विश्वदेवा साध्यकापुत्र साध्यगणउनसे अथसिद्ध हुआ मृत्युवतीकाबेटाइन्द्र व उपेंद्रहोकर बसूके अष्टवसुदेवताजन्मे मुहूर्त्तासेमुहूर्तोके देवतासंकल्पाकापुत्र संकल्पउनसे कामनामबेटाहुआ स्वरूपानामभूतकी एकस्त्रीसेगरुड़ व रुद्रउत्पन्नहुये उसमेंग्यारहरुद्रमुख्यहैं रेवत १ अज २ भव ३ भीम ४ बाम ५ उग्र ६ वृषाकपि ७ अजपाद् ८ अहिर्बुध्न्य ९ बहुरूप १० महान् ११ अंगिराकी सुधानामस्त्रीसे पितरलोग उत्पन्नहुये कृशाश्व प्रजापतिकी अरुचिनामस्त्री से धूमकेशपुत्र हुआ और चन्द्रमाकी स्त्रियोंकानाम अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाषा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिख, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती, सत्ताइसों नक्षत्रहोकर दक्षकेशापदेनेसे चन्द्रमाके क्षयीकारोगहोगयाथा इसलिये उनसेसन्ताननहींहुई इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा कि दक्षनेचन्द्रमा अपनेदामादको किसवास्ते शापदेकर अपनीबेटियोंके बंशकीहानिकी सो कहिये शुकदेवजीबोले एकसमय कृत्तिकाने अपनेपितासेजाकर कहा कि चन्द्रमाहमैंनहीं चाहकर रोहिणी मेरीबहिनसे बहुतप्रीति रखतेहैं यहबातसुनतेही दक्षनेचन्द्रमाको शाप दिया तुम्हेंक्षयीका रोगहोजावे सोउसीकारण चन्द्रमाहज़ार बर्षतकसमुद्रमें पड़ेरहे जब चन्द्रमाने दक्षकी बहुतस्तुतिकी तबदक्षने प्रसन्नहोकरआशीर्बाददिया कि यहरोगतेरा छूटकर पन्द्रहरोज कलातुम्हारी घटै व पन्द्रहरोजबढ़ै इसीकारण चन्द्रमाकी कला घटती बढ़तीहै व कश्यपकी बिनतास्त्रीसे गरुड़ व अरुण व कद्रूसे सर्पादिक व पतङ्गीसे पक्षी आदि व यामिनीसे टिड्डीआदिक व नेमीसे जलचर व सरमा से कुत्तेआदि पांचनखके जीव व ताम्रसे गृद्ध व बाजआदिक व क्रोधवसासे बिच्छूआदि व मनीसे अप्सरा व

इलासेवृक्षादिक व सुरसासेराक्षसआदि व अरिष्टासे गन्धर्वआदिक व काष्ठासेघोड़ेआदि सब खुरवालेपशु व दनुसेदानवआदि व दितिसे हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्षदैत्य व अदितिसे सूर्य व त्वष्टादिकदेवताउत्पन्नहुये व सिवाय इनसत्रहस्त्रियोंकेदोस्त्रीउनकीपुलोमा व कालिकानाम थीं सोपुलोमासे पुलोमादि व राक्षस व कालिकासेकाले २ दैत्योंनेजन्मपाया व बिप्रचित्ती दानवके सिंहिकास्त्रीसे राहुनाम दैत्यउत्पन्नहुआ जिसराहुकाशिर नारायणजीने सुदर्शन चक्रसेकाटडालाथा व सूर्यकेश्राद्धदेव व धर्मराजदोपुत्र व यमुनानामकन्या सवर्णास्त्रीसे जोबिश्वकर्माकीबेटीथी उत्पन्नहुये जबवहीसवर्णा अपनीछायामायारूपी छोड़करचलीगई व उसने जाकरघोड़ीकास्वरूपधारणकिया तबसूर्यकोउसछायाके गर्भसेशनैश्चर व सा- वर्णिमनुदोपुत्र और उत्पन्नहुये व जबसूर्यनेसवर्णा अपनीस्त्रीघोड़ीरूपसेजाकरभोगकियातब उससे अश्विनीकुमारहुये व त्वष्टादेवताकाविवाह जयानामकन्या दैत्यकीबेटीसेहुआथा सो उससे एककन्या व विश्वरूपनाम बेटाहुआ जिसविश्वरूपको इन्द्रादिक देवतोंने बृहस्पतिजीके रूठिजानेसे अपना पुरोहितबनायाथा इतनीकथासुनकर परीक्षितने पूछा किमहाराज सबर्णाअपनीछायाछोंड़कर किसतरहचलीगईथी इसकावृत्तांतकहिये शुकदेव जीबोले हेराजन् सवर्णासूर्यदेवता अपनेपतिका तेजनहीं सहसक्तीथी इसलियेउसने एकस्त्री अपने समान मंत्रकेप्रतापसे बनाकरउससेकहा मैं अपनेपिताके घरजातीहूं तूमेरे बदलेयहांरहाकर परयहभेदमेरेपतिसे मतकहना उसनेउत्तरदिया किजबतकमेरे शिरका बालपकड़कर सूर्यदेवता मुझेनमारैंगे तबतकमैंनहींकहूंगी जबसवर्णा यहबात मायारूपी स्त्रीको समझाकर अपने पिताकेयहांगई तबविश्वकर्माने क्रोधकरकेकहा तूबिनाआज्ञा अपनेस्वामीके चलीआईहै इसलिये तुझेनरक्खूंगा जबसबर्णाने यहवचन अपनेपिताका सुना तबनिराशहोकर कुरुक्षेत्रमें चलीगई और घोड़ीरूपबनकर वहांरहनेलगी व माया रूपी सबर्णाके शनैश्चर व सावर्णिनाम दोपुत्र उत्पन्नहुये सोवहअपने बेटोंसे अधिक प्रेमरखकर धर्मराज व श्राद्धदेव सबर्णाके बेटोंको कमचाहतीथी सो छायाने धर्मराजको एकदिन लातसेमारा यहबात सुनकर जबसूर्यदेवताने छायाके शिरका बालपकड़के उसेमारा तबउसने सबवृत्तांत सवर्णाके चलेजानेका कहदिया यहसमाचारसुनकर जब सूर्यदेवता सवर्णाको ढूंढ़तेहुये कुरुक्षेत्रमें पहुंचे और घोड़ाबनकर उससेभोगकरनाचाहा तबसवर्णाघोड़ीरूपने मुखअपनाफेरलिया इसलिये उनकावीर्य घोड़ीकेगर्दन व नाकपर गिरा सोगर्दनके बालसेअश्विनी व नाकसेकुमार उत्पन्नहुये हेराजाइसतरहपर सबर्णा अपनी छायाछोड़गईथी यहकथासुनकर परीक्षित बहुतप्रसन्नहुये ॥

सातवां अध्याय ॥

बृहस्पति पुरोहितका इन्द्रादिदेवतोंसे रूठना ॥

परीक्षितने इतनीकथासुनकर विनयकिया हेमुनिनाथइन्द्रने बृहस्पतिजीपुरोहितको

किसवास्ते उदासकरके विश्वरूपको अपनापुरोहित बनायाथा उसेविस्तारपूर्वककहिये शुकदेवजीबोले हेराजाएकदिन इन्द्रबड़ेअहंकारसे राजगद्दीपरबैठाथा व बहुतसेदेवता व ऋषीश्वर व गन्धर्व व किन्नरआदिक उससभामेंवर्त्तमानथे उसीसमयबृहस्पतिजी वहां आये सो राजासदासन्मानकरके अपनीगद्दीपर बैठालताथा उसदिनअभिमानसे इन्द्रने उनकाआदरनहीं किया इसलिये बृहस्पतिरूठकर अपनेघरचलेगये तब इन्द्रनेबड़ा शोचकरके कहा कि देखोमुझसे बड़ीचूकहुई जो मैंने राज्य व धनके मदसे उनका निरादरकिया जिनके आशीर्वाद व कृपासेमुझे यहसब सुखप्राप्तहुआ उनके क्रोधकरने से यहसब नष्टहोजायगा इसलिये उनकेपासचलकर बिनती करके अपनाअपराधक्षमा करानाचाहिये जिसमें मेराकल्याणहो ऐसा बिचारकर इन्द्रउसीसमय उनकेघरगया जब बृहस्पतिजीने अपने योगबलसेजाना कि इन्द्रयहांआतेहैं तबक्रोधवश भेंटकरनाउचित न जानकर अन्तर्द्धानहोगये जबइन्द्रने बृहस्पतिको घरपरनहींपाया तबवहांसेउदासहो-कर फिरआये जबयहसमाचार दैत्योंनेसुना तबवृषपर्वा दैत्योंकेराजाने शुक्रजीकीआज्ञासे अपनीसेनालेके इन्द्रपुरीको घेरलिया जबलड़तेसमय देवतोंको बृहस्पतिजीके रूठजाने केकारण दैत्योंसेहारमालूमहुई तबउन्होंने ब्रह्माजीकेपासजाकर सबवृत्तांतकहा ब्रह्माबोले कि तुमसेयहबड़ा अपराधहुआ जो बृहस्पति अपनेपुरोहितका अपमानकिया तुम्हारा कल्याणइसीमेंहै कि त्वष्टाब्राह्मणका विश्वरूपनाम बेटाबड़ातपस्वी व ज्ञानी है उसेअपना पुरोहितबनाओ तो तुम्हारेवास्ते अच्छाहोगा यहवचनसुनतेही इन्द्रने त्वष्टाकेपासजाकर हाथजोड़के विनयपूर्वक कहा मैं तुम्हारेपास भीखमांगनेआयाहूं सो आपदयालुहोकर मेरेपुरोहितहूजिये व ऐसा उपायकीजिये जिसमें हमाराराज्यबनारहै त्वष्टानेउत्तरदिया कि पुरोहितहोनेसे तपोबलघटजाताहै परतुमबहुतबिनती करतेहो इसलिये विश्वरूपमेरा बेटापुरोहितहोकर तुम्हारीसहायताकरेगा सो विश्वरूपने अपनेपिताकी आज्ञानुसार पुरो-हितबनकर ऐसा यत्नकिया कि हरिइच्छासे इन्द्र वृषपर्वाको युद्धमें जीतकर अपनेइन्द्रा-सनपर स्थिरहुआ ॥

आठवां अध्याय ॥

जिस कवचके प्रतापसे इन्द्रने दैत्योंकोजीताथा उसकामाहात्म्य
शुकदेवजीका वर्णनकरना ॥

परीक्षितने इतनीकथासुनकर पूंछा हे शुकदेवस्वामी विश्वरूपकी थोड़ीकृपाकरनेसे इन्द्रने किसतरह दैत्योंकोजीतकर राज्य अपनास्थिररक्खा शुकदेवजीबोले हे राजन् विश्वरूपने ऐसानारायणकवच इन्द्रकोसिखलादिया कि जिसकवचका मंत्रपढ़कर अंगपर फूंकदेने और वह कवचलिखकर भुजापर बांधनेसे किसीशस्त्रका घावनहींलगता जिसतरह शूरबीर अपनेअंगकीरक्षाकेवास्ते जिरह व बख्तर पहिनलेतेहैं उसीतरह कवचसमझना

चाहिये सो राजाइन्द्रवहीमंत्र अपनेशरीरपर फूंककर लड़नेकेवास्तेचढ़ाथा उसीके प्रतापसेदैत्योंकोजीता यह सुनकर परीक्षितने बिनयकिया कि महाराज जिसकवचमें ऐसागुण व प्रतापहै उसेविस्तारपूर्वक वर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले हे राजा जिससमय किसीमनुष्यपर कुछभय आनकर प्राप्तहो उससमय हाथपांवधोकर आचमनकरके उत्तर मुंह बैठे व आठअक्षरके मन्त्रसे अंगन्यास व करन्यासकरके बारहअक्षरका मंत्रपढ़कर योंकहै जलमें मत्स्यावतारसे रक्षाकरके पातालमें वामनअवतारसे रक्षकहो और जहांपर अकेला व जंगलहै वहांनृसिंहावतार सो रक्षाकरें मार्गमें यज्ञभगवान् रक्षाकरें बिदेश व पर्वतमें रामचन्द्रजी रक्षकहोकर योगमार्गसे दत्तात्रेयजीरक्षाकरें देवताकेअपराधसे सनत्कुमार रक्षकहोकर पूजाकेविघ्नमें नारदजीसहायकहोवें कुपथ्यसे धन्वन्तरिवैद्य रक्षा करके अज्ञानसे वेदव्यासजी व अधर्मसे कलंकीभगवान् सहायताकरैं व गोविंद व नारायण व बलभद्र व मधुसूदन व हृषीकेश व पद्मनाभ व गोपीनाथ व दामोदर व ईश्वर व परमेश्वर जो भगवान्केनामहैं वह आठोंपहर सब अंग व इन्द्रियोंकीरक्षाकरैं व बैकुण्ठनाथका शंख व चक्र व गदा व पद्म व गरुड़जीअनेकभयसे रक्षकहोवैं सो यही कवच विश्वरूपने इन्द्रकोबतलाकर कहा हे इन्द्र इसनारायणकवच धारणकरनेवाले मनुष्यका सबभय छूटजाताहै यहीकवच गरुड़जीपढ़कर बैकुण्ठनाथको अपनेऊपर बैठा के उड़तेहैं जिसकेप्रतापसे कोई उनकोजीतने नहींसक्ता एकसमय कौशिकनाम ब्राह्मण इसकवचका अभ्यास रखनेवाला मरुदेशमें मरगया सो हड्डी उसकी वहांपड़ीथीं एक दिन चित्ररथ गंधर्वकाबिमान उड़ताहुआ चलाजाताथा जैसे बिमानकीछाया उसहड्डीपर पड़ी वैसे बिमानउलटगया जब बालखिल्या ऋषीश्वरके उपदेशसे उसगंधर्वने उनहड्डियोंको सरस्वतीनदी में प्रवाहकिया तब उसकाबिमान फिर उड़नेलगा सो हे राजन् ऐसानारायणकवच हमने तुम्हैं सुनाया कि जो इसकवचको पढ़ाकरै उसकेसामने युद्धमें कोईनहीं ठहरसक्ता ॥

नवां अध्याय ॥

इन्द्रका बिश्वरूप अपनेपुरोहितको मारना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् बिश्वरूपके तीनमस्तकथे एकमुंहसे वह सोमवल्लीलताका रस यज्ञमें निकालकरपीताथा व दूसरेमुखसे मदिरापीकर तीसरेमुखसे अन्नादिक भोजन करताथा सो इन्द्रनेराज्यपर बैठकर कुछदिन उपरांत विश्वरूपसेकहा मैं तुम्हारीदयासे यज्ञकरनाचाहताहूं जब विश्वरूपकी आज्ञानुसार यज्ञ आरम्भहुआ तब एकदिन किसी दैत्यने बिश्वरूपके पासजाकर कहा कि तुम्हारीमाताभी दैत्यकीकन्याहै इसकारण हमारे कल्याणवास्ते एकआहुति दैत्योंकेनामपरभी यज्ञमेंदियाकरते तो उत्तमहोता जब बिश्वरूप कहना उसदैत्यका मानकर आहुतिदेतेसमय दैत्योंकानामभी धीरेसेलेनेलगा व इसीकारण देवतोंकातेज यज्ञकरनेसे नहींबढ़ा तब इन्द्रने यह वृत्तान्तजानतेही क्रोधित

होकर तीनोंशिर बिश्वरूपके काटडाले सो मद्यपानकरनेवाला भँवरा व सोमबल्लीपीने वाला कबूतर व अन्नखानेवाला शिर तीतरनामपक्षीसंसारमें उत्पन्नहुये व बिश्वरूपके मरतेही इन्द्रकास्वरूप ब्रह्महत्याके घेरलेनेसे बदलगया जब देवतोंकेवर्षदिन पुरश्चरण करनेपरभी वह महापाप ब्रह्महत्याका नहींछूटा तब इन्द्रादिक देवतोंके बिनतीकरनेसे ब्रह्माजीने उसहत्याके चारटूककरके एकभाग पृथ्वीकोदिया इसीकारण कहीं २ धरती ऊसर होतीहै वहांपूजा व पाठ न करनाचाहिये व यह बरदान पृथ्वीकोदिया जहांपर गड़हाहो कुछ दिन में वह आपसेभरजावे दूसरा भाग वृक्षोंकोदेनेसे कोई २ वृक्षगोंद व लाहीलगकर सूख जातेहैं सिवायगुग्गुलके और सबगोंद अशुद्धसमझनाचाहिये और यहआशीर्बाददिया कि वृक्षकाटडालनेपरभी जड़ बनारहनेसे फिर तय्यारहोजावे व तीसराभाग स्त्रियोंको दिया उसीकारण स्त्री महीने २ रजस्वलाहोकर पहिलेदिन चाण्डालिनी दूसरेदिन ब्रह्म-घातिनी तीसरेदिन रजकीकेसमानरहकर चौथेदिन पवित्रहोती हैं व यहबरदान उन्हें दिया कि जिसमेंसदा उनकाकामदेव बनारहै इसलिये गर्भवतीस्त्रीकाभी मनभोगकरने वास्तेचाहताहै व चौथाभाग जलकोदेनेसे पानीपरकाई व फेन व बुल्लेआदिकहोते हैं व यह बरदानजलकोदियाकि जिसवस्तुमें पानीडालदेव वह अधिकहोजावे सो इन्द्रचारों जगह हत्याबटजानेसे शुद्धहोकर अपना राज्यकरनेचला जब त्वष्टाको बिश्वरूपके मारे जानेकाहाल पहुंचा तब उसनेबड़ा क्रोधकरके ऐसा मंत्रपढ़कर हवनकिया जिसमें एक पुरुष इन्द्रकामारनेवाला उत्पन्नहो सो परमेश्वरकी इच्छानुसार सरस्वतीने उसमंत्रका अर्थ इसतरहपर उलटादिया कि इन्द्रकेहाथसे वह माराजावे हवन सम्पूर्णहोनेके समय अग्निकुण्डमेंसे एकदैत्य अतिबलवान् पर्व्वतकेसमान कालावर्ण गदा व खड्गहाथमें लियेहुये निकला जितनीदूर एकतीरजाताहै इतनाशरीर उसदैत्यका नित्यबढ़ताथा इसी वास्तेत्वष्टाने उसकानाम वृत्रासुररक्खा व उसे आज्ञादी कि इन्द्रने तेरेभाईकोमाराहै सो तू जाकर अपनेभाईकाबदलाले जैसे यहबातत्वष्टाकेमुखसे निकली वैसे वृत्रासुरने एक क्षणमें इन्द्रकेपास पहुंचकर ललकारा उसकाभयानकरूप देखने व ललकारसुननेसे सब देवताघबड़ागये जब वृत्रासुरनेचाहा कि इन्द्रकोमुंहमें डालकर निगलजाऊं तब इन्द्रा-दिक सब देवतोंने उसकेसामने आकर अपने २ शस्त्र उसपरचलाये जब वृत्रासुर उनके सब हथियार निगलगया तब इन्द्रदेवतोंसमेत वहांसेभागा व बीचशरण नारायणजी की जाकर बिनयकिया कि हे दीनानाथ मैं तुम्हारीशरणआयाहूं मेरा प्राण इसदैत्यके हाथसेबचाइये हमलोगोंकाकिया कुछ नहींहोसक्ता जिसतरह श्रावणभादोंमें कुत्तेकीपूंछ पकड़कर मनुष्यगंगापार नहींजासक्ता उसीतरह हमाराभजन व स्मरणकरनेसे कोई भवसागरपार नहींउतरता यह स्तुतिसुनतेही परमेश्वर दीनदयालुने इन्द्रादिकदेवतोंको अपनाभक्तजानकर चतुर्भुजीमूर्त्तिसे सोलहपार्षद साथलियेहुये उनकोदर्शनदिया इन्द्रा-दिक देवतोंने बैकुण्ठनाथको देखतेही दण्डवत्करके बिनयकी कि महाराज जो यज्ञरूप

आपकाहै उसको हमनमस्कारकरतेहैं व वेद व शास्त्र तुम्हारीश्वासासे उत्पन्नहोनेपरभी आपकाआदि व अन्तनहींजानसक्ते सो हमलोग नारायण व बासुदेव रूपकोदण्डवत् करतेहैं व जो चरणकमल आपके बड़े २ योगी व परमहंसोंके हृदयमें आठोंपहररहते हैं उनचरणोंको हमारी दण्डवत् अंगीकारहो हे भगवन् दीनानाथ सबदेवता व मनुष्य तुम्हारेबनायेहैं वृत्रासुरके मारनेवास्ते कोई उपायकीजिये नहींतो वह देवता व मनुष्यादिक सबजीवोंको मारडालेगा हमलोग तुम्हारेदासहोकर ऐसेदुःखी हैं वृत्रासुरकेभयसे आनन्दपूर्वक निद्रानहींआती व अपने समयपर तुम्हारीकृपासे सबबढ़तेहैं इससमय देवतोंको बढ़ानाचाहिये सो बिपरीत उसकेवृत्रासुरबढ़ाहै इसलिये हमें दीन व दुःखी जानकर दयालुहूजिये यहबचनसुनकर नारायणजीबोले हे इन्द्र तैंने अज्ञानतासे ब्राह्मण को जो माराथा उसीका यहसबभोगहै वृत्रासुर दैत्यकेशरीरपर कोई शस्त्र नहींलगसक्ता तुमलोग दधीचि ऋषीश्वरकी हड्डी जिसने बहुत तप किया है मांगकर उसहड्डीकावज्र बनाओ तो उसतपकेप्रतापसे वह बज्र वृत्रासुरके अंगकोकाटेगा ऐसाकहकर बैकुण्ठनाथ अन्तर्द्धान होगये ॥

दशवां अध्याय ॥

दधीचि ऋषीश्वरकेपास इन्द्रादिक देवतों का हड्डी मांगनेकेवास्ते जाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित इन्द्रनारायणजीका बचनसुनतेही सबदेवतोंसमेत दधीचिऋषीश्वरके यहांगया व दण्डवत्करके बिनयकिया हमलोग आपकेपास भिक्षा मांगने आकर अपने कल्याणकेवास्ते तुम्हारेशरीरका हाड़ चाहते हैं यहबात सुनकर ऋषिबोले हेइन्द्र तुम अपनेमनमें बिचारकरो थोड़ासादुःख तनुपरपहुंचनेसे कैसाक्लेश होताहै इसलिये तुमको अपनाअंग ऐसा दूसरेकाभी समझनाचाहिये जिसतरह सबकोई अपनातनुप्यारा जानकर उसकोसुखदेने व मोटाकरनेकेवास्ते अनेकयत्नकरते हैं उसी तरह मुझेभी अपनाशरीर प्याराहै इसलिये क्योंऐसादुःख मुझेदेनेआयेहो इन्द्रने उत्तर दिया कि आपयहबचन सत्यकहते हैं पर मैं नारायणजीकी आज्ञानुसार हड्डीमांगने आयाहूं जिसतरह हरावृक्ष अपनीछाया व फल व पुष्पसे सबजीव व पशु व पक्षीआदिक को सुखदेता है और किसी के डालीकाटनेपरभी दुःखनहींमानता उसीतरह बैष्णव व ऋषीश्वरभी शरीरअपनाकेवल परोपकारवास्ते समझते हैं उनकातनु दूसरेकेकामआवे तो देनेसेनहींमुकरते जबइन्द्रने ऐसाज्ञानकहकर बहुतबिनतीकी तबऋषिबोले हेइन्द्र यह शरीर नारायणजीनेदियाहै कदाचित् वहआपआनकर ऐसाकहते तौभी मैं अपनीप्रसन्नतासे न मानता पर ऐसासमझकर तुम्हाराकहनामाना कि यह तनु सदास्थिरनरहकर एकदिनअवश्य इसकानाशहोगा इससेक्याउत्तमहै जो तुम्हारेकामआवै सो मैं योगाभ्याससाधकर परमेश्वरकेध्यानमें बैठताहूं तुम एकगायबुलाकर शरीरमेराचटाओ जब

सबमांस शरीरकाचाटनेउपरांत केवलहड्डी रहजावै तब उसहाड़कोलेकर अपनामनोरथ सिद्धकरना पर मुझे तीर्थस्नानकरनेकी अभिलाषाहै तुमआज्ञादेव तो तीर्थस्नानकरआऊं तबहड्डी मेरेशरीरकीलेना देवतोंनेकहा हमइसीजगह सबतीर्थोंकाजल लादेते हैं आप स्नानकरलीजिये ऋषीश्वरनेकहा बहुतअच्छा सोदेवतोंने क्षणभरमें सबतीर्थोंका जल वहांलादिया जबवह ऋषीश्वर स्नानकरनेउपरान्त योगाभ्यासमे प्राणअपना ब्रह्माण्ड में चढ़ाकर परमेश्वरके ध्यानमेंलीनहुये तबइन्द्रने एकगायमँगाकर नोनलगाके उनका शरीरचटवाया जबउसगायने सबमांसचाटलिया व केवलहड्डी रहगई तबइन्द्रने वहहड्डी लेकर बिश्वकर्माको शस्त्रबनानेवास्ते दिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् देखो दधीचिऋषीश्वरको दातासमझकर राजाइन्द्र भिखारीहोगया इसलियेदाताकानाम सबलोग लेकर सूम व लालचीकानाम कोईनहींलेता सोदेना बहुतअच्छाहोताहै जब बिश्वकर्माने उसहड्डीकाबज्रनामशस्त्र अतितेजवान् बनादिया तबइन्द्र वहबज्रलेकर वृत्रासुरसे लड़नेवास्तेआया वहदैत्य इन्द्रकोदेखकर बोला यहमेरेसामनेसे भागगयाथा आज न मालूम किसकारण फिर लड़नेआयाहै ऐसाबिचारकर वृत्रासुरने निमोची व द्विमूर्द्धा व बिप्रचित्ती आदिक दैत्योंको अपनेसाथलेकर देवतोंसे बड़ाभारी युद्धकिया जबगदा व तीर व तलवार व त्रिशूल व भुशुण्डी आदिक नवशस्त्र दैत्योंके टूटगये तब वहलोग पर्व्वत व वृक्ष उखाड़कर मारनेलगे परईश्वरकीदयासे देवतोंने दैत्योंकोमारकर हटादिया जबवृत्रासुरके साथी हारमानकरभागे व देवतोंने उनको पीछेसे खदेरा तबवृत्रासुरने दैत्योंको भागतेदेखकरकहा कि तुमलोग युद्धसेमतभागो एकदिन अवश्य मरनाहै मृत्युकेहाथसे कोईनहीं बचैगा सोघरमेंमरना उत्तम न होकर दोतरहकी मृत्यु मंगल समझनाचाहिये एकयोगाभ्यास करके तनुछोड़ना व दूसरे युद्धमें सन्मुखमाराजाना इसलिये तुमलोग फिरकर लड़ाईकरो भागना उचित नहीं है ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

इन्द्र व वृत्रासुरका युद्धहोना ॥

शुकदेवजीबोले हेराजन् जबवृत्रासुरके समझानेपर भी कोई २ दैत्य कहीं फिरकर भागगये तबवृत्रासुरने बड़ेक्रोधसे ललकारकरकहा हेइन्द्र भागेहुये को मारना कुछशूरता नहीं होती पहिले मैंने सबदेवतोंको जीतकर भगादियाथा अबक्याहुआ जो मेरेसाथी भागेजाते हैं तुमखड़ेरहो मैं अकेलासबको मारूंगा जबसबदेवता उसकीललकार सुनकर भयसे पृथ्वीपरगिरपड़े तबवृत्रासुरने लातोंसे सबको इसतरह रौंदडाला कि जिसतरह कमलबनको हाथीरौंदडालताहै इन्द्रने यहदशा देवतोंकी देखकर जैसे अपनीगदा उस पर चलाई वैसेवृत्रासुरने वहगदाछीनकर ऐरावतहाथीके मस्तकपर ऐसीमारी कि हाथी साठिपगपीछेको हटगया तब इन्द्रने अमृतलगाकर घाव उसका अच्छाकरदिया जब

फिर इन्द्र अपनेको सम्हालकर वृत्रासुरके सन्मुखआया तब वृत्रासुरनेकहा आजबड़ा उत्तमदिनहै जो तू अपनेभाई व गुरु व ब्राह्मणका मारनेवाला हत्यारा मेरेसन्मुखहुआ सबकेबदले आज तुझे देवतोंसमेत अपनेत्रिशूलसे मारकर भूतनाथकेनामका यज्ञकरूंगा अब तू मेरेसामनेसे जीता फिर नहींजासक्ता कदाचित् तुझको अपनीरानी व राज्यप्यारा हो तो मेरेसामनेसे भागजा मैं अपनेभाईका बदलालेने आयाहूं तेरेमारनेसे मुझेसंसारमें क्या यश मिलैगा व कदाचित् तूने मुझको मारलिया तो मैं तुरन्तपरमेश्वरके चरणोंके पास पहुंचकर यहां राज्यकरनेसे वहां अतिसुखपाऊंगा जिसतरहपक्षीकाबच्चा विनापंख उड़नेनहींसक्ता अपनेमाता व पिताकेआश्रमपर दानापानीपाताहै व दूधपीनेवालाबालक व बछवा अपनीमाताके भरोसेरहकर पतिब्रतास्त्री अपनेस्वामीकी चाहनारखतीहै उसी तरह श्यामसुन्दरके चरणोंकाध्यान मैं रखताहूं इसलिये मुझे इन्द्रासनकीगद्दीलेने व राज्यकरनेसे मारेजानेमें अतिआनन्द है जो लोग अपनेकोबलवान् व ज्ञानीजानते हैं उनकोमूर्ख समझनाचाहिये परमेश्वर सबबातोंकेमालिकहैं यहबातकहकर वृत्रासुर ईश्वर के चरणोंका ध्यानकरनेलगा व गदाछीनजानेसे इन्द्रसे लज्जितहोगया ॥

बारहवां अध्याय ॥

वृत्रासुर का बज्रसे माराजाना जो दधीचि ऋषीश्वरकी हड्डीका बनाथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् यहसबज्ञानकहकर वृत्रासुरने बड़ेक्रोधसे अपनात्रिशूल इन्द्रपरचलाया सो इन्द्रनेउसकाशस्त्रबचाकर वहीबज्र जो हड्डीसेबनाथा ऐसामारा कि वृत्रासुरकी दाहिनीभुजाकटकरगिरपड़ी तबउसने बायेंहाथसे परिघनामशस्त्रमारकर वह बज्र इन्द्रकेहाथसे गिरादिया जबइन्द्रमारेडरके फिर वहबज्र पृथ्वीपरसे उठाने न सका और खड़ारहगया तबवृत्रासुरबोला हे इन्द्र तू मतडर मुझसे शूरबीरोंकीतरह युद्धकर कदाचित् मैंने तुझकोमारालिया तो इन्द्रपुरीका राज्यकरूंगा व तेरेहाथसे मारागया तो बैकुण्ठमेंजाकर सुखभोगूंगा इसलिये मैं मृत्युसेनहींडरकर दोनोंबातमें प्रसन्नहूं व मारना व मरना कुछ मेरे व तेरेबश न होकर हानि व लाभ संसारीजीवोंका परमेश्वरकीआज्ञा-नुसार नटकेखेलसमानहोताहै जिसतरह नटचाहै उसीतरहकलाबाजी लेवे सो तू हर्षसे बज्रउठाकर मुझेमार कि जिसमेंतुरन्त ईश्वरकेचरणोंकेपास पहुंचजाऊं इन्द्रने यहबचन सुनकर अतिप्रसन्नतासेकहा हे वृत्रासुर तेरीबुद्धिधन्यहै जबइन्द्रने ऐसाकहकर उसीबज्र से उसकी बाईंभुजाकोभीकाटडाला तबवृत्रासुरदौड़कर इन्द्रको हाथीसमेत निगलगया पर नारायणकवचके प्रतापसे इन्द्रनहींमरा व बज्रसेकोखा उसकाचीरकर बाहरनिकलआया व परमेश्वरकीकृपासे कुछदुःख इन्द्र या हाथीकोनहीं पहुँचा जब फिर इन्द्रने उसीबज्र से सौबर्षमें गलाकाटकर वृत्रासुरकोमारडाला तब उसकेतनुसे एकतेजसा निकलकर बैकुण्ठमेंचलागया सो सब देवता उसके मारेजानेसे हर्षितहुये पर इन्द्र प्रसन्न नहींहुआ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्महत्याकेडरसे इन्द्रकाभागना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हे मुनिनाथ इन्द्र ऐसेबलीशत्रुकोमारकर क्यों नहींप्रसन्नहुआ शुकदेवजीबोले हे राजन् वृत्रासुरदैत्यको त्वष्टाब्राह्मणने उत्पन्नकियाथा इसलिये वृत्रासुरके मरतेही वृद्धारूप ब्रह्महत्याने जिसकीयोनिसे रक्तबहकर अंगमें सड़ी मछलीकी दुर्गन्धआतीथी लोहेका गहनापहिनेहुये इन्द्रकेपास आनकर उसे निगलने चाहा तब इन्द्र उसकेडरसेभागा व वृद्धारूपहत्याने उसकापीछाकिया जब इन्द्रने अपना बचाव उसकेहाथसे कहीं न देखा तबवह पूर्व व उत्तरकेकोनेपर मानसरोवरतालाब में जाकर कमलनालमें छिपरहा और वहहत्या भ्रमररूपहोकर उसफूलके चारोंओर गूंजने लगी इसकारण इन्द्र उसकेभयसे बाहरनहींनिकलसक्ताथा जबवह क्षुधा व तृषासे अति दुःख पानेलगा तब लक्ष्मीजी ने उसकापालनकिया जब इन्द्रके छिपे रहनेसे इन्द्रासन सूनाहोगया तब ऋषीश्वरोंने वहांकाराज्य राजानहुषको जो बड़ाधर्मात्मा व प्रतापी था देना विचारकर उससेकहा हमलोग तुझे इन्द्रासनपर बैठालाचाहते हैं राजानेउत्तरदिया कि मुझे देवलोकमें राज्यकरनेकी सामर्थ्य नहीं है यहबचनसुनकर ऋषीश्वरबोले कि हम लोग अपने तप व जप का फल तुझेदेवैंगे तब वहां के राज्यकरनेयोग्य होजायगा जब ऋषीश्वरोंने थोड़ा २ पुण्य अपनेतपका नहुषकोदेकर उसे इन्द्रासनपर बैठालदिया तब उसने इन्द्राणीपर मोहितहोकर उससेकहलाभेजा कि अब मैं इन्द्रकीजगहपर राजाहूं तू मेरेपास क्योंनहींआती यहबातसुनतेही इन्द्राणी पतिव्रता ने जो सिवाय अपनेस्वामी के दूसरेको नहींचाहती थी नहुषकेभय से बृहस्पति गुरूके पासजाकर बिनयकिया महाराज राजानहुष मनुष्यहोकर मुझे भोगकरनेवास्ते बुलाताहै जिसमें पतिव्रताधर्मबचे वहयत्न कीजिये बृहस्पतिजीबोले तू राजानहुषसे कुछदिनकी अवधिकर मैं इन्द्रको फिर गद्दीपर बैठालनेका उपायकरताहूं सो उनकीआज्ञानुसार इन्द्राणी ने कुछदिनों की अवधिकरके उसेप्रसन्नकिया व बृहस्पतिने अग्निको इन्द्रकापतालगानेवास्ते भेजा सो अग्निदेवताने बृहस्पतिसे आनकरकहा इन्द्रब्रह्महत्याकेभय से मानसरोवरतालाबमें छिपाहै जब इन्द्रका समाचारआनेतक अवधिकेदिन बीतगये व फिर नहुषकामनुष्य इन्द्राणीको बुलानेगया तब उसने बृहस्पतिजीकीआज्ञानुसार राजाको कहलाभेजा कि मनुष्य सौयज्ञराजसूय व अश्वमेधकरनेसे इन्द्रहोताहै सो तुमबिनायज्ञकिये राज्यदेवलोकका करतेहो इसलिये तुम सुखपालमें बैठकर ब्राह्मणोंकेकंधेपर मेरेयहांआवो तब मैं तुम्हारेपासरहूं राजाने कामवश होकर कुछ पाप व पुण्यका बिचार नहीं किया बहुतसे ऋषीश्वर व ब्राह्मणों को अपनेसुख-पालमें बरजोरीलगाकर इन्द्राणीके स्थानपरचला ब्राह्मणोंने कभीबोझानहीं उठायाथा इसकारणजल्दीनहीं चलसक्तेथे जबराजाने कामके मदमेंअन्धाहोकर ऋषीश्वरोंको चरण

से ठोकरमारकेकहा कि जल्दी २ चलो तबऋषीश्वरोंने उसका अधर्मदेखकर राजाको शापदिया कि तूसर्पहोजा यहवचन उनकेमुखसेनिकलतेही वहसर्पहोकर पृथ्वीपरगिरपड़ा व इन्द्राणीकापातिव्रतधर्म परमेश्वरनेबचाया तबबृहस्पतिजीने मानसरोवर तालाबपर जाकरकहा हे इन्द्र तुम कमलनालसे बाहरआवो इन्द्रने दण्डवत्करके बिनयकिया कि महाराज मैंब्रह्महत्याके भयसे बाहरनहींआसक्ता यहबातसुनकर बृहस्पतिजीबोले कि तू मतडर अश्वमेधकरनेसे यज्ञपुरुष अनेकप्रकारका पापछुड़ादेतेहैं सो मैंभी यज्ञकराके तेरा अपराधछुड़ादूंगा इन्द्रने बृहस्पतिजीकी आज्ञानुसार तालाबसे निकलकर अश्वमेधयज्ञ किया तब वह ब्रह्महत्या छूटनेसे फिर दिव्यरूप होकर देवलोककाराज्य करनेलगा ॥

चौदहवां अध्याय ॥

शुकदेवजी करके वृत्रासुरके पूर्वजन्मकी कथा बर्णन करना ॥

परीक्षितने इतनीकथासुनकर पूछा हेशुकदेवस्वामी साधु व वैष्णव परमेश्वरकेभक्त होतेहैं वृत्रासुरदैत्यको जिसेत्वष्टाने क्रोधसेउत्पन्नकियाथा युद्धमेंमरतेसमय किसतरह उसे ऐसाज्ञानहुआथा कि सबहर्ष व विषाद नारायणजीकी इच्छासे होताहै शुकदेवजीबोले हेराजन् जिसकारण वृत्रासुरकोअन्तसमय ज्ञानउत्पन्नहुआ उसकीकथासुनो पूर्वजन्ममें वृत्रासुर चित्रकेतुनाम सातोंद्वीपका राजाहोकर साधधर्म व प्रजापालनके राज्यकरताथा व सबछोटेबड़े उसराज्यमेंअपनेकर्म व धर्मसेरहकर मग्नथे पर राजाचित्रकेतुके करोड़ स्त्रीहोनेपरभी पुत्रनहींहुआ इसलिये वहआठोंप्रहर शोचमेंरहताथा सो एकदिन अंगिरा ऋषीश्वर अपनीइच्छा से राजमन्दिरपरआये सो राजाने बड़ेआदर व सन्मानसे बैठा-कर उनकापूजनकिया जबऋषीश्वरने उसको उदासदेखकर पूछा कि तुमइतनेबड़ेध-र्मात्मा व प्रतापीराजाहोकर मलीनरूप क्योंदिखलाई देतेहो तबराजाने हाथजोड़कर विनयकिया कि महाराज तुम्हारेआशीर्बादसे सबसुखमुझेहै पर सन्तान न उत्पन्नहोनेसे दुःखीरहताहूं जिसतरहकोई भूखेप्यासे मनुष्यके शरीरमें चन्दनआदिकलगावै तो सुगन्ध सूंघने से भूखप्यासउसकी नहींजाती उसीतरह बिनापुत्र यहसातों द्वीपकाराज्य व सुख मुझे अच्छानहींलगता जैसेआपदयालुहोकर यहां आयेहो वैसे यह चिन्तामेरी दूरकी-जिये यहबातसुनकर ऋषीश्वरबोले हेराजन् तुम्हारेभाग्यमें सन्ताननहीं लिखीहै तुम किसवास्ते इतनाशोच करतेहो हमतेरेभवसागरपार उतरनेका उपायबतलादेतेहैं तूपरमे-श्वरका भजनकर जिसमें तेरीमुक्तिहो राजाबोला महाराजबिनापुत्र मुझेज्ञान व ध्यान अच्छा नहींलगता अंगिराऋषीश्वरने उसेअतिअभिलाषा पुत्रकीदेखकरकहा हेराजन् जो तुम ऐसाहठकरतेहो तोतुम्हारेएकपुत्र होगा पर उसके होनेमेंपहलेतुझे बड़ाहर्षहोकर पीछे से तूमहादुःख पावैगा राजाबोले महाराज एकबेरमुझे बेटेकासुख दिखलादीजिये फिर जोचाहै सो हो यहबात सुनकर अंगिराऋषीश्वरने पुत्रहोनेकेवास्ते राजासे यज्ञकराया

व पूर्णाहुति अग्निकुण्डमें डालकर जोकुछ साकल्य बचावहप्रसाद राजाको देकरकहा इसेतूअपनीएकरानीको खिलादे जैसेराजाने वहसाकल्य अपनी बड़ीस्त्री कृतद्युतीनाम को खिलादिया वैसेहरिइच्छासे रानीकेगर्भरहकर दशवेंमहीने पुत्रउत्पन्नहुआ सोराजाने बड़ेहर्षसे छःअरब गौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदिया और सबमंगलामुखी छोटेबड़ेको मुँहमांगा द्रव्यादिकदेकर इसतरह प्रसन्नकिया कि जिसतरह श्रावणभादोंमें पानी बरस कर प्रजाकोसुखदेताहै व चित्रकेतुको उसबालकसे इतनीप्रीतिहुई कि जिसकेप्रेममें दिन रात राजा बड़ीरानीकेमन्दिरमें पुत्रकेपास रहनेलगे जब दूसरीरानियोंने देखा कि राजा बालककेमोहसे आठोंप्रहर हमारीसवतिके पासरहतेहैं वे हमलोगोंको आंखउठाकरभी नहींदेखते व उसकेवशहोकर हमें अपनीलौंड़ीबराबरभी नहींसमझते फिर सवतियाडाह से सबरानियोंने आपसमेंयहसम्मतकिया कि जिसमें यहबालकमरजावै तो राजाहमलो-गोंसेभी प्रीतिकरैंगे ऐसा विचारतेही एकदिन अकेलापाकर राजाकी किसीरानीने उस बालकको जहरखिलादिया सो वहलड़कामरगया पहलेकृतद्युतीरानी उसेसोयाहुआ जा-नकर जबजगानेके वास्तेगई तबउसकोमराहुआ देखकर अतिविलापकरनेलगी जबराजा ने वहसमाचारसुना तब रोतापीटता वहांजाकर पृथ्वीपरगिरपड़ा व बारहप्रहरतक ऐसा अचेतरहा कि उसेअपनेतनकी सुधिनहींरही जब राजकुमारका मरना व राजाकेअचेत होनेकासमाचार सुनकर नगरमें हाहाकारमचगया तबसबछोटेबड़े रुदनकरते राजमन्दिर परआये उसबालककेमरनेका जितनाशोचराजा वबड़ीरानी व दास व दासी व नगर-वासियोंकोहुआ वहवर्णननहीं होसक्ता इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् स्त्रियां अपनेपति व कुलकाभलानहींचाहकर केवल अपनेहीतनकासुखचाहतीहैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको स्त्रीकीबातपर विश्वासकरना व उसकेवशहोना उचित नहीं है ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

नारदजी व अंगिरादि ऋषीश्वरोंका राजमन्दिरपर आना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेराजन् जबसमाचार चित्रकेतुके अचेतहोनेका चारोंतरफ फैला तबनारदमुनि व अंगिराऋषीश्वर आदिक यहसुनकर राजाको बोधकरनेआये व उन्हों ने चित्रकेतुको उठाकर कहा हेराजन् तू किसवास्ते इतनाबिलापकरताहै वहबालकतुझसे क्याप्रयोजन रखताथा यहसबसंसारी जीव अपने पूर्वजन्मोंका बदलालेनेके वास्तेजगत् में आनकरइकट्ठे होतेहैं जबउसफलका बदलामिलकर अन्तसमय आनपहुँचताहै तब फिर वहलोग बिलगहोजातेहैं इसलिये मरनेका कुछशोच न रखकर सब बातोंको पिछले जन्मके संस्कारसे जाननाचाहिये और संसार स्वप्नवत् है जिसतरह मनुष्यको स्वप्नमें अनेकवस्तु दिखलाईदेकर जागनेके उपरान्तकुछनहीं मिलता तबवहजानताहै कि यह सबस्वप्नकी बातझूठीथी उसीतरहसंसारमें जबतक मनुष्यको ज्ञाननहींप्राप्तहोता तबतक

चाहिये यहपुत्रमेराशत्रुथा इसकेमरनेका अवकुछशोकनहींहै व राजाकीदूसरीस्त्री जिसने उसबालकको विषदियाथा यहहाल देखकर बहुतपछताई व नारदजी अंगिराऋषीश्वर से पूछकर शास्त्रानुसार प्रायश्चित्त उसकाकिया व राजाचित्रकेतु उसीसमयघर व राज्य छोड़कर बनमें इसतरहचलागया कि जिसतरह हाथी चहलेमेंकाफँसाहुआ निकलजाताहै जबराजायमुनाकिनारेजाकर नारदजीकाबतलायाहुआ मन्त्रजपनेलगा व उसमन्त्रकेप्रतापसे सातवेंदिनशेषजीने उसकोदर्शनदिया व राजाने शेषजीकोदण्डवत् करके बिधिपूर्व्वकपूजा व स्तुतिउनकी की तबशेषभगवान्ने प्रसन्न होकर चित्रकेतुको उसीतनसे विद्याधरोंका राजाबनाकर ऐसाबरदानदिया कि सदातुझे हरिचरणोंमें भक्तिबनीरहै व एकदिव्यबिमान क्षणभरमें सबजगहपहुँचनेवाला उसेदेके शेषजी अन्तर्द्धानहोगये व चित्रकेतु विद्याधरोंका राजाहोकर अपनीस्त्रियों समेतबिमानपर बैठके सैरकियाकरताथा ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

पार्वतीजीका चित्रकेतुको शापदेना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित एकदिन चित्रकेतुअपनी स्त्रियोंसमेत बिमानपर बैठकर सैर करनेनिकला सो कैलासपर्व्वतपर जहांमहादेवजी पार्वतीको अपने जंघापरबैठालेहुये भृगु आदिक ऋषीश्वरोंसे ज्ञानउपदेशकररहेथे जापहुँचा व उनदोनोंको नमस्कारकरके हँस करकहनेलगा कि देखो उन्होंने तपस्वी व ब्रह्मज्ञानी व जगद्गुरुहोनेपरभी ऐसी लज्जा छोड़दी कि विषयीमनुष्यके समान स्त्रीकोसभामें जंघापर बैठालेहैं संसारीजीवभी अपनी स्त्रीको अकेलेमेंलेकर बैठताहै ऐसाबचनसुननेपरभी हँसकर महादेवजी चुपहोरहे परन्तु पार्व्वतीजीने जब उसे हँसतेदेखकर यहबातसुनी तबक्रोधकरके बोलीं कि हमऐसेनिर्लज्जोंकासमझानेवाला यहविद्याधर उत्पन्नहुआहै जिनको ब्रह्मा व सनत्कुमार व शुकदेव जी नहीं उपदेशकरसक्ते उन्हें यहनारदका मन्त्रसुनकर अभिमानसे ज्ञानबतलाताहै इस मूर्खकोनारायणजीकीसेवामेंरहना न चाहिये यहकहकर पार्व्वतीजीचित्रकेतुसेबोलीं हेबेटा अबतुमदैत्ययोनिमें जन्मलेकर कुछदिन इस हँसनेकादण्डभोगो यहबचनसुनतेही चित्रकेतुनेउसशापको अपनेमस्तकपरचढ़ालिया व बिमानपरसेउतरकर पार्व्वतीजीको दण्डवत्करकेबोला कि हे माता तुम्हाराशाप मैंनेहर्षसे अंगीकारकिया परमेश्वरकीइच्छा इसी तरहपरथी संसारमेंमनुष्य दुःख सुख दोनों भोगताहै इसलिये मैं शाप व बरदान व नरक व स्वर्गदोनोंको समानजानताहूं मुझेऐसीसामर्थ्यनहींहै कि जो महादेवजीको ज्ञान सिखलाऊं मैंनेइसवास्ते इतनाकहा कि जिसमेंसंसारीलोग यहहालसुनकर ऐसेनिर्लज्ज न हों चित्रकेतु ऐसा कहके होनाइसशापकाहरिइच्छासेजानकर आनन्दपूर्वकचलागया तबशिवजीबोले हेपार्व्वती तैंने परमेश्वरकेभक्तोंका माहात्म्य व स्वभाव देखा इतनाबड़ा शापसुनकर दुःखी न हुआ सोमुझे हरिभक्तोंकेसमान दूसराकोई प्यारानहींलगता इतनी

कथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् वही चित्रकेतु पार्व्वतीजीके शापसे वृत्रासुरदैत्य हुआ इसवास्ते परमेश्वरने उसेअपनाभक्तजानकर अन्तसमयज्ञानदियाथा सो वह असुर तन छोड़नेके उपरान्त वैकुण्ठमेंजाकर परमेश्वरकी सेवाकरनेलगा हे राजन् यहकथा चित्रकेतुकी कहने व सुननेवाला भवसागरपार उतरजाताहै ॥

अठारहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका सविता देवताआदिककी कथा कहना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित अब मैं सबितादेवताआदिककी सन्तानकीकथा कहता हूं सुनो सबितादेवता पृष्णीनामस्त्रीसे अग्निहोत्रआदिक तीनबेटे व सावित्रीआदिक तीनकन्या व भगदेवताके सिद्धिनामस्त्रीसे दोपुत्र व एककन्या व धातादेवताके यहां उरगादिक चारबेटी व पूर्णमासआदिक चारबालक अग्निदेवताके कृत्तिकानामस्त्रीसे पुरीषआदिक बेटे व वरुणदेवताकी चर्षणीनामस्त्रीसे बाल्मीकिआदिक ऋषीश्वर दोपुत्र उत्पन्नहुये व मित्रावरुण देवताकावीर्य्य उर्वशीअप्सराको देखकर गिरपड़ाथा सो वह वीर्य्यघड़ेमेंरखनेसे अगस्त्य व बशिष्ठजीने जन्मपाया व इन्द्रकीपुलोमास्त्रीसे जयन्त आदिक तीनपुत्र व बामनभगवान्के कीर्त्तिनामस्त्रीसे सुभगनाम बालक व कश्यपके दितिनामस्त्रीसे हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दोपुत्र व हिरण्यकशिपुके कायाधूनामस्त्रीसे सिंहिकानाम कन्या व सिंह्लाद व प्रह्लाद व अह्लाद चारसन्तान उत्पन्नहुये वहकन्या बिप्रचित्तिदैत्यको ब्याहीगई जिससेराहु उत्पन्नहुआ सिंह्लादका बेटापंचजन होकर प्रह्लादकापुत्र बातापीदानवहुआ जिसकोअगस्त्यजीने मारा व अह्लादके महिषासुर व बाष्कल दो बेटेहोकर प्रह्लादसे बिरोचन उत्पन्नहुआ व बिरोचनके देवीनाम स्त्रीसे राजाबलिहोकर उससे बाणासुरआदिक सौ पुत्रहुये व कश्यपके दितिस्त्रीसे मरुद्गणनाम उञ्चासबालक उत्पन्नहोकर इन्द्रकेसमान देवताहोगये इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूछा कि महाराज दितिकेपुत्र दैत्यादिक किसतरह देवताहुये वह वर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले हे राजन् जब परमेश्वरने बाराह व नृसिंहअवतारलेकर हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दितिकेदोनोंपुत्रोंको मारडाला तब दितिने बहुतउदासहोकर कहा देखो मेरे दोनोंबालक इन्द्रने मरवाडाले अब मैं ऐसाउपायकरूं कि जिसमेंइन्द्रका मारनेवाला पुत्र मेरेहो इसीइच्छापर दिति अपनेस्वामीकी सेवाप्रेमसेकरनेलगी सो एकदिन कश्यपजीने प्रसन्नहोकर उससेपूछा कि हे दिति मैं तेरेऊपर बहुतहर्षितहूं तुझे जो इच्छाहो सो बरदान मांगले तब दिति हाथजोड़कर बोली कि महाराज तुम प्रसन्नहोकर बरदानदेनेकेवास्ते कहतेहो तो एकपुत्र मुझे ऐसादीजिये कि जोइन्द्रको मारकर अमररहै यहबात सुनतेही कश्यपजीने उदासहोकर मनमेंविचारा कि देखो मैं बरदानदेचुका अबक्याकरूं इन्द्र परमेश्वरकाभक्तहै उसकाप्राणलेना न चाहिये व मेराबचनभी झूठानहींहोसक्ता इसी

तरह अतिशोचकरके कश्यपजीने कहा हे दिति तू अगहनमासका ब्रतरक्खे तो तेरे ऐसा पुत्रउत्पन्नहोय यहसुनकर दितिबोली कि महाराज मुझेउसकी विधि बतलादीजिये मैं यह ब्रतकरूंगी तब कश्यपजीने कहा हे दिति अगहनमहीना शुक्लपक्षसे उसब्रतको आरम्भकरके प्रतिदिन ब्रह्मचर्यरहनाचाहिये व इसब्रतमें दिनकोसोना व नंगीहोकर स्नानकरना व नीचजातिसेबोलना व शिरकाबाल खुलारखना व झूठबोलना मना- होकर आठोंप्रहर शुद्धरहनाचाहिये व लक्ष्मीनारायण व सावित्रीस्त्रियोंकी पूजा नित्य विधिपूर्वक वर्षदिनतककरना व ब्रतरखनाउचितहै तूभी यहब्रतरक्खे तो तेरे ऐसापुत्र उत्पन्नहोकर इन्द्रकोमारके अमररहै पर नारायणजी ऐसा न चाहैंगे तो तेरेब्रतमें बिघ्न होजावेगा यह बचनसुनतेही दिति अतिप्रसन्नहोकर उसीतरह ब्रतरखनेलगी इन्द्रने यह वृत्तान्तसुनतेही अतिभयमानकर मनमेंकहा कि अब मेरेमरनेका संयोगहुआ किसी तरह बचनहींसक्ता ऐसाबिचारके इन्द्र ब्राह्मण रूपबनकर जिसजगह दिति यहब्रतकरती थी वहांपर चलागया व दिनरात उसकीसेवा व टहलकरनेलगा तब दिति उसकीसेवा से अतिप्रसन्नरहनेलगी पर ज्यों २ ब्रतसम्पूर्णहोनेके दिन निकटपहुंचतेजातेथे त्यों २ इन्द्र अधिकशोचकरताथा जब उसब्रतके सम्पूर्णहोनेमें पांच चारदिन रहगये तब पर- मेश्वरकी इच्छासे एकदिन दिति शिरकाबाल खुलाछोड़कर जूठेमुंह सोगई यहदोनोंबातें ब्रतमें अशुद्धबिचारकर इन्द्र अपनाछोटा रूपबनाकर बज्रलियेहुये दितिकेपेटमें घुसगया व वहांजाकर गर्भमें जो बालकथा उसके सातभागकरडाले तब वह सातों रोनेलगे फिर इन्द्रने एकएकके सात २ टुकड़ेकिये पर नारायणजीकी इच्छासे कोईनहींमरा व उनसातोंके उञ्चासबालकहोकर रुदनकरकेबोले हे इन्द्र तुमहमैं मतमारो हमलोग तुम्हारी सहायताकरैंगे यहदशा देखकर इन्द्र उनलड़कोंसे बोले हे भाई अब तुममतिरोवो मरुत नामहोकर मेरेसाथरहोगे फिरइन्द्र उञ्चासोंबालक समेतगर्भकीराह बाहरनिकलकर इन्द्ररूप होगया जब दितिने जागकर इन्द्रको उञ्चासबालकों समेत खड़ेहुयेदेखा तब उससेपूछा कि हेइन्द्र मैंने एकपुत्रहोनेके वास्तेसंकल्पकियाथा उञ्चासबालक किसतरह उत्पन्नहुये यह बचनसुनकर इन्द्रडरता व कांपताहुआबोला हेमाता जब मैंनेतुमको जूठेमुंह व खुले बालहोजानेसे ब्रतमेंअशुद्धदेखा तबअपना प्राणबचानेकेवास्ते तुम्हारे बालकको मारना विचारकर पेटमें घुसगया व मैंनेअपने बज्रसे उसबालकके उञ्चासभागकिये पर तुम्हारे ब्रत व पूजाकेप्रतापसे वह उञ्चासोंअमरहोकर जीतेरहेसोअबमैं इनबालकोंके साथतुम्हारे गर्भसे निकलाइसकारण वहसब हमारेभाईहोकर इन्द्रपुरीमें मेरेसाथरहैंगे यहबात सुनतेही दिति अतिप्रसन्नहोकर बोली हेइन्द्र तूने ब्राह्मणरूप धरकेमेरीबड़ी सेवाकी इसलिये अब मुझे तेरेमरनेकी कुछइच्छानहींहै और यहलोग भाईकेसमान तेरेसाथरहकर समयपर कामआवैंगे जबयहवचन सुनकर इन्द्रको अपने मरनेकाभय छूटगया तबवहबड़ेहर्षसे दितिकोसाष्टांग दण्डवत्करके उञ्चासों बालकसमेत इन्द्रलोकमेंजाकर राज्यकरनेलगा

हेराजन् इसतरहदितिकेपुत्र देवताहोगयेथे यहकथासुनकर राजापरीक्षित अतिप्रसन्नहुये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका उसव्रतकी विधिकहना ॥

परीक्षितने इतनीकथा सुनकर पूछा कि महाराज इसव्रतमें ऐसाप्रतापहै उसकी विधिबतलाइये शुकदेवजीबोले हेराजन् जो स्त्री इसव्रतको रक्खाचाहै वह अपनेस्वामी से आज्ञालेकर अगहनबदी अमावसको नहाकर पहिले मरुतदेवताकी कथासुनै फिर शूकरकीखोदीहुई मिट्टीशरीरमें मलकर स्नानकरै व अगहनसुदी प्रतिपदासे व्रतरखना आरम्भकरके ब्रह्मचर्यरहै व शास्त्रानुसार नित्य लक्ष्मीनारायणकी पूजाकरनेकेउपरान्त हाथजोड़कर उनकेमंत्रसे स्तुतिकरै फिर सावित्रीस्त्रीको पूजकर खीरकीआहुति अग्निमें देवै व प्रथमब्राह्मणको खीरखिलाकर पीछे आप वहीखीर जो आहुतिदेनेसे बचजावे सो खावे इसीतरह नित्य वर्षदिनतक बराबरव्रत व पूजनकरके कार्तिकशुक्लपूर्णमासीको विधिपूर्वक उद्यापनउसकाकरै और ब्राह्मण व कंगालोंको ऐसाभोजनखिलावै कि जिस मेंकोई बिमुख न जावै व उद्यापन करानेवाले आचार्यको शय्यादान व गो व द्रव्यादिक देकरप्रसन्नकरे इसतरहसे व्रतरखनेवालीस्त्री देवताकेसमान पुत्रपाकर सदा सावित्रीरहती है व संसारमें अपनामनोरथपाकर मरनेकेउपरान्त मुक्तिपातीहै इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् हमने पुन्सवननामव्रत व मरुतोंकेजन्मकी कथा तुमकोसुनाई यह माहात्म्य व्रतका परीक्षित सुनकर अतिप्रसन्नहुये ॥

सातवां स्कन्ध ॥

हिरण्यकशिपुको नृसिंह भगवान्का मारना ॥

दो० लिखौं कथा प्रह्लाद की जाकी भक्तिअपार ।
वाकी रक्षाके लिये भे नरहरि अवतार ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजीका जयविजयकी कथावर्णन करना ॥

राजापरीक्षित इतनी कथासुनकर बोले हेशुकदेवस्वामी परमेश्वरके निकट दैत्य व देवता बराबरहोकर फिर किसवास्ते नारायणजी देवतोंकी सहायताकरके दैत्योंकोमारते हैं इसबातकामुझे निर्गुणके गुणोंमें सन्देहहै सो छुड़ादीजिये जिसतरहकिसीके दोपुत्रहोंवें वहदोनोंपर समानप्रीतिरखता है उसीतरहदेवता व दैत्य परमेश्वरकी इच्छासे उत्पन्न होकर दोनोंएकसमानहैं किसकारण नारायणजी देवतोंपर दयारखकर दैत्योंका आदर नहीं करते यहवचन सुनकर शुकदेवजीबोले कि हे राजन् तुमने यहबहुतअच्छीबात भगवान्की भक्तिबढ़ानेवाली पूंछी है जोकथामैंने नारदमुनिआदिक ऋषीश्वरोंसे सुनी थी वह तुमसे कहताहूं सुनो परमेश्वर निर्गुणरूपको सबसेन्यारे समझनाचाहिये पर उन कीमायासे तीनगुण सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण प्रकटहुये इसलिये सतोगुणकी पारीमें देवतोंको बढ़ाकर रजोगुणकेसमय दैत्योंका प्रतापअधिककरतेहैं व तमोगुणकी पारीमें मनुष्यका भाग्यउदयहोताहै सो एकसमय राजायुधिष्ठिरने शिशुपालकीमुक्ति राजसूय यज्ञमें देखकर नारदजीसे पूंछाकि महाराज जिसशिशुपालने श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ को दुर्बचनकहा उसकी जिह्वाके सौटुकड़ा होजाना उचितथा सो उसनेमुक्तिपाई यहबड़े आश्चर्यकी बातहै तबनारदमुनिबोले कि हेराजन् परमेश्वरसबको एकसाजानते हैं जो मनुष्य अपनामन काम क्रोध लोभ मोह व किसीप्रकारसे उनमेंलगावै वहउन्हींकारूप इसतरह होजाताहै कि जिसतरह भृंगीकीड़ेको देखनेसे दूसरेकीड़े उसीकारूप होजाते हैं देखो गोपियोंने नारायणजीको अपनापतिजानकर प्रीतिकी व शिशुपाल व रावण आदिकने शत्रुसमझा व यदुवंशियोंने भाईबन्धु व युधिष्ठिर आदिक पाण्डवोंने ईश्वर जानकर उनमें चित्तलगाया सो उनकीकृपासे सबकृतार्थहोगये एकशिशुपालकी मुक्ति होनेमें क्यासन्देहहै और यहदोनों शिशुपाल व दन्तवक्र तुम्हारे मौसीकेबेटे जयविजय नाम द्वारपालकहैं ब्राह्मणके शापसे उन्होंने बैकुण्ठसे गिरकर दैत्ययोनिमें जन्मपाया व तीनोंजन्म परमेश्वरसे शत्रुभाव रखनेमें नारायणजीके हाथसे मारेजाकर अब तीसरे

जन्ममुक्तहुये यहसुनकर युधिष्ठिरबोले हेमुनिनाथ बैकुण्ठमें रहनेवालोंका शरीर व प्राण संसारी मनुष्य ऐसा न रखकरउनका चैतन्यरूप होताहै बैकुण्ठबासी पापनहींकरते सो उन्होंने बिनाअपराधकिये किसवास्ते दैत्यकातनुपाया और हिरण्यकशिपु दैत्यकेयहां प्रह्लादऐसा परमभक्त किसतरह उत्पन्नहुआ उसकाबर्णनकीजिये नारदमुनिबोले हे राजन् एकदिनसनकादिक परमेश्वरके दर्शनकेवास्ते बैकुण्ठमेंगये सो जयबिजयने ईश्वर की आज्ञानुसार उन्हें भीतर नहींजानेदिया व पांच पांचवर्षके बालकजानकर अपमानकिया तबउन्होंने क्रोधवश जयविजयको शापदेकरकहा कि हमलोग नारायणजी का दर्शनकरनेआयेथे सोतुम्हारे रोंकदेनेसे तीनक्षणदर्शन मिलनेमें बिघ्नहुआ इसलिये तुमदोनों यहांरहनेयोग्य नहींहो बैकुण्ठसेगिरकर दैत्ययोनिमें जन्मलेव तीसरेजन्म उद्धार होकर फिरबैकुण्ठमें आवोगे सो हेयुधिष्ठिर वहीदोनोंभाई शापकेमारे हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुनाम दैत्य दितिसे उत्पन्नहुये सो हिरण्याक्षने युवाहोकर ऐसाबिचारा कि देवता लोग पृथ्वीपरयज्ञ व होम होनेसे अपनाभागपाकर बलवान्होतेहैं सो मैं पृथ्वी उठाकर पातालमेंलेजाऊं तब किसतरहकोई यज्ञहवनकरैगा यज्ञकाभाग न पानेसे सबदेवता भोजनबिना दुर्बलहोकर मरजावैंगे जबहिरण्याक्ष ऐसा बिचारकर पृथ्वीको पातालमें लेगया तबनारायणजी ब्रह्माके विनयकरनेसे बाराहअवतारलेकर पातालमेंचलेगये व हिरण्याक्षको मारके पृथ्वीको लाकरफिर ज्योंकात्यों स्थिरकरदिया व नृसिंहअवतार लेकर प्रह्लादभक्तका प्राणबचानेवास्ते हिरण्यकशिपुकोमारा जबवह तनुछोड़कर उन दोनोंने बिश्रवामुनिके यहां केसीनामस्त्रीसे जन्मपाया व रावण व कुम्भकर्ण कहलाये तबनारायणजीने रामचन्द्र व लक्ष्मणअवतारलेकर उनकावधकिया अबउन्होंने क्षत्रिय वर्णहोकर तीसराजन्म तुम्हारीमौसीके घरलिया सो उसीबिरोधसे शिशुपाल क्रोधरूप होकर परमेश्वरका भजनकरताथा अब श्रीकृष्णजीने सुदर्शनचक्रसे मारकरउसे मुक्त किया सो वहदोनोंभाई शिशुपाल व दंतवक्त्र श्यामसुन्दर के हाथसे मारेजाकर फिर बैकुण्ठमें अपने स्थानपरपहुंचे इतनीकथासुनकर युधिष्ठिरने नारदमुनिसेपूछा कि महाराज प्रह्लाद ऐसेपरमभक्त व गुणवान्से हिरण्यकशिपुने किसवास्ते शत्रुता रखकर उसको दुःखदिया कि उसीकारण हिरण्यकशिपु मारागया व प्रह्लाद ऐसापरमभक्त दैत्यकुलमें किसतरह उत्पन्नहुआ इसको बतलाइये ॥

दूसरा अध्याय ॥

नारदजी को हिरण्यकशिपुकी कथाकहना ॥

नारदजी युधिष्ठिरकी बातसुनकर बोले कि हेराजन् जबहिरण्याक्ष दैत्य बाराहजी के हाथसेमारागया तबहिरण्यकशिपु क्रोधितहोकर अपनेसाथी दैत्योंसेबोला कि हे बिप्रचित्ती व शतबाहुआदिक मेरावचनसुनो देवतोंने जो हमसेलघुहैं विष्णुभगवान्को

फुसलाकर मेरेभाईको मरवाडाला नारायणजी बालकोंकेसमान बड़ेअज्ञानी हैं जोकोई उनकी बिनतीकरताहै उसीकीसहायता करतेहैं इसलिये मैं अभीहिरण्याक्षकेनामपर पानी न देकर विष्णुभगवान्को त्रिशूलसेमारूंगा और उन्हींकेरक्तसे अपनेभाईकोतिलां-जलिदूंगा दुर्बल देवतोंको क्यामारूं जब मैं नारायणजी इतनेबड़े शत्रुको जो सबदेवतों कीजड़हैं मारलूंगा तबसबदेवता बिनामारे आपसेमरजावैंगे इसकारण तुमलोग उसमूल उखाड़नेका यहउपायकरो कि जिसजगह ब्राह्मण या ऋषीश्वरोंको यज्ञ व हवनकरते देखो तो यज्ञउनका बिध्वंसकरडालो और जहां गो व ब्राह्मणकोपावो मारडालो व संसारमें किसीको तप व जप व हरिभजनकरने मतदेव यहबचनसुनतेही दैत्यलोग सबजगह ढूंढ़ २ कर गो व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको मारनेलगे जबहिरण्याक्षकी माता व स्त्री व बेटोंने उसकेमरनेका अतिशोचकिया तब हिरण्यकशिपुने इसतरह उनको समझाया कि मेराभाईशत्रुकेसन्मुख युद्धमेंमारागया इसलिये तुम्हें उसकाशोच करना न चाहिये जीव कभीनहींमरता और शरीर किसीका सदास्थिरनहींरहता इसलिये मर-नेकाशोच अज्ञानी मनुष्यकरतेहैं इसकाएकइतिहास कहताहूंसुनो उत्तरदेशमें सुयज्ञनाम एकराजारहताथा जबवहभी इसीतरह युद्धमेंमारागया तबउसकी रानियोंने मोहबश लोथकेपास बैठकर ऐसाबिलापकिया कि सूर्य्यअस्तहोनेपरभी लोथउसकी नहींजलाई तबयमराज पांचवर्षके बालकबनकर वहांआये व राजाकेजातिभाई व रानियोंकोसम-झाकरकहा बड़ाआश्चर्य्य है कि तुमलोगज्ञानीहोकर इतनाबड़ाखेदकरतेहो संसारकी गतिदेखो जहांसे जीवआयाथा वहांचलागया व तुमलोगभी उसीजगह अवश्यजावोगे फिर रोना तुम्हारावृथाहै जिसकेवास्ते तुमरोतेहो वहशरीर ज्योंकात्यों यहांपरपड़ाहै व जो इसकायामें बोलने व खानेपीनेवाला सामर्थीपुरुषथा उसकोतुमनेकभी आंखसेनहीं देखा फिरकिसकारणशोचकरतेहो सबजीवोंकी रक्षा प्रारब्ध अधीन समझनाचाहिये देखो मैं पांचबर्षकाबालक अकेलाबनमें फिरताहूं बिनामृत्युआये नहींमरता व मेरेमाता व पिता ने मुझकोछोड़दियाहै इसलिये मुझको किसीकीप्रीतिनहीं है जिसनेगर्भमें मेरापालनकिया था वहीअबभी रक्षाकरैगा जिसतरह वृक्षलगानेवाला अपनेपेड़को सींचकर उसकीरक्षा करताहै व वृक्षअपनीरक्षा आपनहींकरसक्ता उसीतरह नारायणजी सबजीवोंकापालन व रक्षाकरते हैं कदाचित् तुमलोगऐसाकहो कि राजायुद्धमें न जाता तो क्योंमरतासो यहबात निश्चयकरकेजानो कि जबमृत्युआती है तबमनुष्यलोहेकेकोटमें भी बन्दरखने से नहींबचता जिसतरह घरबनकर कुछदिनउपरान्त फिरगिरपड़ताहै उसीतरह शरीर का धर्म्मबनना व बिगड़नाहोकर यहसदा स्थिरनहींरहता व जीवसदा अमरहोकर आकाशकेसमानरहता है जिसतरह दशबर्त्तन पानीसेभरकर धूपमेंरखदेव तब सूर्य्यकी छायापड़नेसे दूसरेसूर्य्य दिखलाईदेते हैं जबवहबर्त्तन तोड़डालो तबफिरवहप्रकाश सूर्य्य में मिलजानेसे उनबर्त्तनोंमें देखनहींपड़ता जिसतरह उनबर्त्तनोंके टूटनेसे सूर्य्यकानाश

नहींहोता उसीतरह इसजीवकोभी समझो जैसेआगि लकड़ीमें नहींदिखलाईदेती उसी तरह यहजीव बोलतापुरुषशरीरमेंरहकर दृष्टिमेंनहींआता जबतक वहजीवात्मा शरीरमें था तबतक राजाजीतारहा अबतुम जितनाचाहो उतना रुदनकरके अपनाप्राणभी देडालो पर उससेभेंट नहींहोसक्ती कर्म्मोंकेफलसे न मालूम वहजीव कहांचलागया कदाचित् तुमलोग रोतेरोते मरजावोगे तो अकालमृत्युहोकर नरकमें दुःखभोगनापड़ैगा जैसेकुरंगपक्षी बच्चोंकेमोहसे जालमेंफँसकर नष्टहुआथा वहीगति तुम्हारीभी होगी जब ऐसाज्ञानसुनकर रानियोंकाशोचमिटा तब उन्होंने राजाको दग्धकिया व यमराजबालक रूपवहांसे अन्तर्द्धानहोगये सो तुमलोगभी यहीज्ञानसमझकर हिरण्याक्षकेमरनेका शोच मतकरो यहबात हिरण्यकशिपुसे सुनकर दिति हिरण्याक्षकीमाता व रुषाभानुजी व शकुनआदिक उसकेबेटोंने धैर्य्यधरा ॥

तीसरा अध्याय ॥

मंदराचल पर्वत पर जाकर हिरण्यकशिपुका तपकरना ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर जब हिरण्यकशिपुकेसमझानेसे उनकाशोककमहुआ तब दितिनेकहा कि हे बेटा नारायणजीने देवतोंकी सहायताकरके तेरेभाईकोमाराहै सो तू भी देवतोंकोमारकर अपनेभाईका बदलाले हिरण्यकशिपुबोला हे माता हिरण्याक्षको परमेश्वरनेमाराथा इसलिये मैं उनकोमारकर अपनेभाईका बदलालेऊंगा पर मैंने यह उपायबिचाराहै कि पहिले ब्रह्माकातपकरके उनसे ऐसाबरदानलेऊं कि जिसमें मैंकभी न मरूं तब नारायणजीका सामनाकरके उन्हेंमारूंगा यहकहकर हिरण्यकशिपुअपनी मातासे बिदाहुआ व मन्दराचलपहाड़परजाकर तपकरनेलगा जब उसने सौवर्षतक ऊर्ध्वबाहु एकपैरके अंगूठेसेखड़ेरहकर ब्रह्माजीकातपकिया और तपकरतीसमय अपना अंगनहींहिलाकर सूर्यभगवान्को देखतारहा तब उसकेचारोंओर मट्टीजमाहोने व घास उगनेसे सर्प व बिच्छूने अपनाबिलबनालिया और तपके प्रतापसे उसका ऐसातेजबढ़ा कि नदी व पर्वत व समुद्रजलनेलगे जब देवतोंको उसकीज्वालापहुंची तब उन्होंने ब्रह्माजीकेपासजाकर कहा कि महाराज हिरण्यकशिपुके तपोबलसे हमैं अतिकष्टहोताहै सो आपजाकर उसेबरदानदेके तपकरना छुड़ाइये नहीं तो हिरण्यकशिपु तुम्हारेउत्पन्न कियेहुये जीवोंको अपने तेजसे भस्मकरके दूसरीसृष्टि बनायाचाहताहै यहबचन देवतों कासुनतेही ब्रह्माजी भृगुआदिक ऋषीश्वरोंको अपनेसाथलेकर हिरण्यकशिपुके पासगये व उसकातेजदेखकर ब्रह्माजीनेकहा हेकशिपुनन्दन तैंनेबड़ाभारी तपकरके मुझेअतिप्रसन्न किया ऐसादूसरेसे नहींहोसक्ता जो सौबर्षतक बिना अन्नजलकिये जीतारहै अबतुझे जिसबरदानको इच्छाहो सोमांग यहकहकर जैसेब्रह्माजीने अपने कमण्डलुकाजल उस पर छिड़कदिया वैसे उसकेशरीरकामांस जो दीमकलगनेसे केवल हड्डीरहगईथीं ज्यों·

कायों बलवान् व पुष्टहोगया व सुवर्णकेसमान चमकनेलगा तबहिरण्यकशिपुनेदण्डवत् व स्तुतिकरके ब्रह्माजीसे हाथजोड़कर बिनयकिया महाराज तुम जगत्गुरुहोकर सब जड़ व चैतन्यकी उत्पत्तिकरतेहो आपयज्ञोंका बिधान व धर्मोंकी रक्षाकरनेवाले निर्गुण रूपहैं यहस्वरूप अपना केवल संसारकीरचना करनेवास्ते धारणकरतेहो जो आपदयालु होकर मुझेबरदानदेनेवास्ते कहते हैं तो मुझको ऐसा बरदानदीजिये कि जिसमेंतुम्हारा उत्पन्नकियाहुआ कोईजीव जड़ व चैतन्यदेवता व दैत्य व मनुष्यादिक मुझेमारने न सकै और मैं न दिनको मरूं न रातको और न पृथ्वीपरमरूं न आकाशमें व कोई शस्त्र मुझे न लगै और युद्धमेंकोई मेरासामना न करसकै और योग व तपकरनेसे जो सिद्धहोते हैं वह सिद्धाई मुझको होजावै और मैं देवता व दैत्य व मनुष्यादिक सब जीवोंका राजाहोकर मेरेयोगतपकी सामर्थ्य कभी न घटै ॥

चौथा अध्याय ॥

हिरण्यकशिपुको ब्रह्माजीका बरदान देना ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर ब्रह्माजीने हिरण्यकशिपुकी बातसुनकर बिचारा कि इस दैत्य अधर्म्मीको ऐसाबरदान देनानचाहिये पर मैं नहींदेता तो यहतप करनानहींछोड़ेगा इसवास्ते बरदानदिये देतेहैं फिर नारायणजीकीदयासे यहमाराजावैगा ऐसा बिचारकर ब्रह्माजीनेकहा हे हिरण्यकशिपु तैंने अतिकठिन बरमांगाहै परतेरेतपके प्रतापसे यह बरदान मैंने तुझकोदिया अब तू सातोंद्वीपका राजाहोगा ऐसाकहकर ब्रह्माजी अपने लोककोचलेगये व हिरण्यकशिपु अतिप्रसन्नहोकर अपनीमाताकेपासआया व बरदान पानेका समाचार उससेकहकर बोला कि अब मैं सबदेवतोंकोमारकर तीनोंलोकका राज्यकरूंगा दिति ऐसेबरदानपानेकी बार्तासुनकर बहुतप्रसन्नहुई व हिरण्यकशिपु अपने भुजाकेबलसे सबदेवता दैत्य व गन्धर्व व सिद्ध व चारण व किन्नर व ऋषीश्वर व तपस्वी व भूत व प्रेत व पिशाच व प्रजापति व मनु व सातोंद्वीपके राजाओंको जीत-कर तीनोंलोकका राज्यकरनेलगा जब उसको यहइच्छाहुई कि कोईशूरबीरमिले तो उससे युद्धकरूं तबसबदेवता उसकेभयसेभागे और ब्रह्माजीकेपासजाकर कहा महाराज हिरण्यकशिपुने सबराज्य देवलोकका छीनलिया तिसपर भी दिनरात हमाराप्राणलेनेका गाइकरहताहै अबहमलोग क्याकरैं ब्रह्माजीने उत्तरदिया इनदैत्योंकी दशाअच्छीहोकर तुम्हारेदिन खोटेआयेहैं इसलिये तुमलोग कहींपर्व्वतकी कन्दरामें छिपकर हरिचरणों का ध्यान स्मरणकरो जबतुम्हारी सायत अच्छीआवैगी तब वह अपनीकरणीको पहुं-चकर फिर तुम्हारा राज्यहोगा यहबचनसुनतेही देवतालोग कहींपर्व्वतकी कन्दरामें छिपरहे व अपनेदिन काटकर परमेश्वरका ध्यानकरनेलगे जब वहांरहनेसे देवतालोग अतिदुःखीहुये तब क्षीरसमुद्रके किनारेजाकर बहुतदीनतासे नारायणजीकी स्तुतिकी

उससमय आकाशवाणीहुई कि हिरण्यकशिपु धर्म्म व वेद व तुम्हारा बिरोधकरचुका जब प्रह्लादभक्तको वह दुःखदेगा तब मैं उसेमारूंगा यह बचनसुनतेही देवता फिर कन्दरामेंआनकर हरिभजनकरनेलगे व हिरण्यकशिपु आप इन्द्रासनपर बैठकर इन्द्रपुरी व स्वर्गादिकका सुखभोगताथा व इन्द्रकीअप्सरा अपनाअपना नाच उसको दिखलाकर गन्धर्वलोगगाना सुनातेथे व ऋषीश्वर व तपस्वीआदि उसके आधीनरहकर पृथ्वी व समुद्र व पर्वत व वृक्षादिक अनेकतरहके रत्न व फल व पुष्प हिरण्यकशिपुको भेंटदेते थे उसके प्रताप व भयसे बारहोंमहीने वृक्षादिकोंमें फल व पुष्प लगेरहकर घी व दूध कीनदी बहनेलगीं व हिरण्यकशिपु अपनीमायासे बरुण व कुबेरादिक दशोंदिग्पालोंका रूपधरकर मद्यपानकिये अप्सरोंसे भोग व बिलासकरताथा व ऋषीश्वर व मुनि गो व ब्राह्मण उसकेहाथसे बहुतदुःखपातेथे इसीतरह कुछदिनबीते तब हिरण्यकशिपुके चार पुत्र उत्पन्नहुये सोतीनबालक दैत्योंका कर्मकरतेथे व चौथापुत्र प्रह्लादनाम सबसे छोटा चलन व स्वभावअपना देवतोंके समानरखकर आठोंपहर सन्त व महात्मों की सेवा व हरिभजनमें रहताथा व सबजीवोंमें परमेश्वरका चमत्कार एकसाजानकर किसी जीवकोदुःखनहीं देताथा व इन्द्रीजित् व सत्यबादीहोकर छोटोंको पुत्रसमान व बड़ोंको पिता व ईश्वर तुल्यजानताथा व बालकोंके समान न खेलकर सत्संगमें अतिप्रीति रख- ताथा इसलिये महात्मालोग उसकी बड़ाईकरतेथे ऐसेपुत्रसे हिरण्यकशिपुका बिरोधहो- गया इतनीकथासुनकर युधिष्ठिरनेपूंछा कि हे मुनिनाथ पूतकपूत होतेहैं पर मातापिता अपनेबेटेका अनभलनहीं चाहते इसबिपरीतका कारणबतलाइये ॥

पांचवां अध्याय ॥

प्रह्लादको पढ़नेकेवास्ते हिरण्यकशिपुका बैठालना ॥

नारदजीनेकहा हे युधिष्ठिर शुक्राचार्यकेपुत्र सण्डा व मर्कनाम हिरण्यकशिपु व दैत्योंके लड़कोंको पढ़ायाकरतेथे जब प्रह्लाद पांचवर्षकाहुआ तब हिरण्यकशिपुने उसे उनकोसौंपकरकहा कि हमने तुम्हारेपितासे पढ़ाथा प्रह्लादको तुम हमाराधर्म्म सिख- लाओ जब प्रह्लाद वहां और लड़कोंकेसाथ पढ़नेलगा तब सण्डा व मर्कने हिरण्यक- शिपुकी आज्ञानुसार प्रह्लादसेकहा कि तू नाम हिरण्यकशिपुका जपाकर जब प्रह्लाद ने गुरुकेसमझाने व डाटनेपरभी सिवायलेनेनाम राम व नारायण व बिष्णुके व हिरण्य- कशिपुकानाम मुखसेनहींलिया तब गुरुने उसकेपिताके पासजाकर सब वृत्तान्तकहदिया इसलिये हिरण्यकशिपुने एकदिनप्रह्लादको अपनीगोदमें बैठाकरपूंछा हे बेटा जो तुमने अपनेगुरुसे आजतकपढ़ाहो वहहमैं सुनाओ प्रह्लादबोला हे पिता मैंनेसिवाय रामनाम के जिनकाचर्चा व भजनआठोंपहर करनाचाहिये और कुछनहीं पढ़ाहै मेरेजानमें साधु व महात्मोंका सत्संग उत्तमहै और मैं नवधाभक्ति परमेश्वरकी अच्छीतरह जानताहूं

व नाम उसनवधाभक्तिका यहहै श्रवण परमेश्वरकी कथासुनना कीर्त्तन ईश्वरका गुणा-नुवाद वर्णनकरना स्मरण भगवान्कानाम जपना पादसेवन नारायणका चरणपूजना अर्चन ठाकुरकीमूर्त्तिको विधिपूर्व्वक पूजकर भोगलगाना वन्दन परमेश्वरको बारंबार दण्डवत्करना दास्य ईश्वरकी भक्तिरखकर भजनगाना सख्य परमेश्वरसे मित्रता व प्रीतिरखना आत्मनिवेदन अपनातन मन धन सब भगवान्को अर्पणकरके साधु व सन्त व महात्मोंकीसंगति व सेवाकरना सबवेद व शास्त्रकासार यहीहै जो हमनेतुमसेकहा व गृहस्थीमेंरहनेसे सिवाय दुःखके सुखनहींहोता बनमेंजाकर हरिभजनकरना सबबातोंमे उत्तम समझनाचाहिये प्रह्लादकी बातसुनतेही हिरण्यकशिपु क्रोधितहोकरबोला हे मूर्ख तू नहींजानता कि नारायणने बाराहअवतार धरकर हिरण्याक्ष मेरेभाईको मारडाला था सो तू मेरेशत्रुकानामलेकर उसकीस्तुतिकरताहै अभी तू बालक अज्ञानहोकर मेरा कहनानहींमानता सयानेहोनेपर क्यादशाहोगी हे बेटा अपनाधर्मछोड़कर दूसरेका धर्म करना व बालकोंको साधु व सन्तकी संगतिरखना अच्छानहींहोता इसलिये तुम साधु व बैरागीकाकहना न मानकर अपनेगुरुकी आज्ञानुसार पढ़ाकरो यह सुनकर प्रह्लाद ने कहा मैं उसपरमेश्वरको नमस्कारकरताहूं कि जिनकीमायासे तुम अपने व दूसरोंमें भेदजानतेहो बिनाकृपा व दयाईश्वरकी किसीको ज्ञाननहींमिलता जो कोई शास्त्रपढ़कर परमेश्वरकी भक्तिनरखताहो उसकापढ़नावृथाहै यह बचन ज्ञानभराहुआ सुनतेही हिर-ण्यकशिपुने बड़ेक्रोधसे कई दैत्योंको बुलाकरकहा कि विष्णुभगवान् दैत्यकुलकेवास्ते कुल्हाड़ाहै व प्रह्लाद मेराबेटा उसकुल्हाड़ेका बेंट उत्पन्नहोकर मेराकहना नहींमानता व मेरेशत्रुकानाम जपकर उसकी बड़ाईकरताहै सो बड़ेलोग प्रथमसे ऐसाकहगयेहैं कि जिस अंगमेंरोगहोकर और अंगका उससेखटकारहै तो उसअंगको काटडालनाचाहिये इसवास्ते ऐसेपुत्रकामारना उत्तम समझकर तुमलोग इसकोमारडालो यह बचनसुनतेही दैत्यलोग प्रह्लादको वहांसेखींचतेहुये बाहरलेजाकर तलवार व तीर व त्रिशूल व गदा से मारनेलगे प्रह्लादआंखवन्दाकिये मनअपनाहरिचरणों में लगाये चुपचाप बैठारहा जब परमेश्वरकीदयासे किसीशस्त्रकाघाव प्रह्लादके अंगपरनहींलगा तब उन दैत्योंने प्रह्लादको पर्व्वतकेऊपरलेजाकर वहांसेढकेलदिया तिसपरभी उसके शरीरमें कुछ चोट नहींलगी फिरदैत्यों ने प्रह्लादको बहुतलकड़ियोंके मध्यमें बैठाकर आगलगादिया जब सबलकड़ी जलकर भस्महोगई व श्यामसुन्दरकी कृपासे प्रह्लादज्योंकात्यों बीचध्यान नारायणजीके मग्नबैठारहा तब हिरण्यकशिपुने यहमहिमा देखकर मनमेंकहा देखो बड़ा आश्चर्य है जो प्रह्लाद ऐसे उपायकरनेपरभी नहींमरता अब मैंने प्रह्लादसे अधिक शत्रुताउत्पन्नकी इसलिये नारायणजी उसकीरक्षाकरनेवास्ते अवश्यआवैंगे तब उन्हींको मारकर हिरण्याक्षका बदलालूंगा ऐसा बिचारकर हिरण्यकशिपु ने सण्डा व मर्क से कहा कि हमने प्रह्लादको बहुतदण्डदिया है अब तुम्हारीआज्ञानुसार पढ़ैगा यहबातसुनतेही

प्रह्लादने प्रसन्नहोकर मनमें कहा अब मैं पाठशालाके बालकों को ज्ञान सिखलाऊंगा जब गुरु हिरण्यकशिपुकी आज्ञासे फिर प्रह्लादको पाठशालेमें लेआया तब उसनेपूंछा हे प्रह्लाद तुझेवनमेंजाकर हरिभजनकरना किसनेउपदेशदिया है या तैंने अपनेमनसे यहबातकहाथा तब प्रह्लादने उत्तरदिया हे गुरुजी जोलोग मायारूपगृहस्थीके अंधियारेकुयेंमें पड़ेरहकर परमेश्वरसेंविमुखहैं उनकोज्ञानप्राप्त न होकर हरिचरणों की भक्तिनहीं मिलती उन्हें गदहे व कुत्तेआदिक पशुकेसमान समझनाचाहिये जबतक संसारीमनुष्य सन्त व महात्माके चरणोंपर शिरअपनारखकर उनकी सेवा मनसावाचाकर्मणासे नहीं करता व परमेश्वरकीकथा व कीर्त्तननहींसुनता तबतक उसको ज्ञाननहींप्राप्तहोता बिना दया व कृपा परमेश्वरकी ज्ञानमिलनाबहुतकठिन है सो मैंने श्यामसुन्दरकीदयासे ज्ञान पाकर यहबातकहीथी इतनीकथासुनाकर नारदजीबोले हे युधिष्ठिर देखो सण्डा व मर्क शुक्राचार्य महात्माकेपुत्र ज्ञानी व पण्डितहोकर दैत्योंकीसंगतिकरने व उनकाअन्नखाने से नारायणजीकीमहिमा भूलगयेथे मायापरमेश्वरकी ऐसीबलवान् है सो जबतक कि गुरु पाठशालामें बैठेथे तबतकप्रह्लाद मनमें यहविचारकरताथा कि जब गुरुयहांसेउठकर कहीं बाहरजावें तब मैं पाठशालाके सबबालकोंको ज्ञानसिखलाऊं जबगुरुवहांसेउठकर आप बाहरगये तब प्रह्लादने लड़कों की ओर देखकर यह विचार किया कि अभीतक बाल्यावस्थाहोनेसे इनबालकोंको कामक्रोधमोहलोभ नहींव्यापाहै इससमय इनकोसमझाना ज्ञानका तुरन्तप्रवेशकरैगा इतनीकथासुनाकर नारदमुनिने युधिष्ठिरसेकहा कदाचित् कोई पूंछे कि प्रह्लादको उन्हें ज्ञान सिखलाने से क्याप्रयोजनथा उत्तरइसबातका यहहै कि प्रह्लादने अपनेहृदयमें दया व धर्म रखकर परउपकारकेकारण यहचाहाथा कि जिसमें यहलोगभी ज्ञानीहोकर मेरीसंगति से कृतार्थहोजावैंगे यह विचारकर जब प्रह्लाद ने लड़कोंकोअपनेपासबुलाया तब सबबालक उसेराजकुमारजानकर उसकेनिकटचलेआये॥

छठवां अध्याय ॥

पाठशालाके बालकों को प्रह्लाद का ज्ञान सिखलाना ॥

प्रह्लादने सबबालकोंको अपनेनिकट बैठाकरकहा कि सुनोमित्रो अभीतक बालापन होनेसे तुमको काम क्रोध लोभ मोह नहींव्यापा और मनतुम्हारा संसारीमायाजाल में नहींफँसा इसलिये तुम जिसबातपर चित्त अपनालगावो वहकामना तुम्हें तुरन्त प्राप्त होसक्ती है सो मैं तुम्हारेकल्याणकेवास्ते एक उपायबतलाताहूं सुनो अभी से मन अपना परमेश्वरकेध्यानमेंलगावो व इसबातका विश्वासमानो कि मनुष्य संसारी तृष्णारखने व स्त्री व पुत्र व धनकामोहकरने से सदादुःखीरहकर जन्म व मरणसे नहींछूटता व इसीकारण हरिचरणोंमें प्रेमनहींहोता व परमेश्वरसे विमुखरहने व जन्म अपनावृथाखोनेवाला मनुष्य अवश्यनरकभोगताहै इसलिये तुम्हें हरिभजन व स्मरणकरना उचित

होकर संसारीजालमें फँसना न चाहिये परमेश्वरको पहिंचानने व हरिभजन करने व नारायणनामलेने व भवसागरपार उतरनेवास्ते यही चैतन्यचोलासमझो व कुत्ते व बिल्ली आदिक पशुयोनिमें यहप्राप्त न होकर केवलपेटभरने व भोगकरनेकाज्ञानरहता है इसलिये मनुष्यतनपाकर एकक्षणभी परमेश्वरको भूलना न चाहिये व तुमलोग यह बातअच्छीतरह जानतेरहो कि जप व पूजा किसीदेवताका परमेश्वरके तप व स्मरण समाननहींहोता देवतालोग जप व पूजनकरनेमें प्रसन्नहोकर छोड़देते हैं व नारायणजी अपनेभक्तोंपर चूकहोनेसेभी क्रोधनहींकरते उन्हें सबजगह वर्त्तमानजानकर कहींढूंढने केवास्तेजाना न चाहिये जिससमय प्रेमपूर्वक उनकाध्यानकरो उसीसमय वेप्रकटहोकर रक्षाकरते हैं सोतुमलोग अपनी इन्द्रिय व मनकेवश न हो और क्रोध व तृष्णाछोड़कर सतोगुणसे सबजीवोंपरदयारक्खो व मनसावाचाकर्मणासे हरिचरणोंमेंध्यानलगाकर परमेश्वरकानाम स्मरणकरो तबतुमको बड़ासुखमिलैगा कदाचित् तुमलोगमेरे कहनेकाबिश्वास न मानकर ऐसाकहो कि यहहमारेसाथकाबालकहोकर हमैं ज्ञानसिखलाताहै इसने कहांसेपाया सो मैं अपनेमनसे यहज्ञानतुमको नहींबतलाकर नारदमुनिकेबचनअनुसार कहताहूं यहबातसुनकर लड़कोंनेकहा हेप्रह्लाद अभीहमलोगबालकहैं वृद्धापनमें परमेश्वरका भजन व स्मरणकरलेवैंगे तबप्रह्लादबोले सुनोइन्द्रियोंको सबयोनिमेंसुख मिलताहै और परमेश्वरकाभजन दूसरेतनमें नहींहोसक्ता जो तुमयहसमझतेहो कि इस जन्ममें संसारीसुख भोगकरलेवैं फिरमनुष्यतनपाकर हरिभजनकरैंगे सोमनुष्यचोला बारम्बार मिलनादुर्लभहोकर दुःख व सुखपूर्वजन्मोंके संस्कार से मिलताहै व संसारी सुख थोड़ेदिनरहकर हरिभजनकरनेसे महाप्रलयतक अनेकप्रकारके आनन्दप्राप्तहोतेहैं जिसतरह आंधीवृक्ष व पत्तोंको उड़ालेजातीहै उसीतरह तुम्हारेदादा व परदादाआदिक पुरुषोंको कालरूपी आंधीमारकर उड़ालेगई व एकदिन तुम्हारी भी वहीदशाहोगी जब मायारूपीजालमेंफँसगया तब उससेनिकलनहींसक्ता सो तुमलोगभी जब स्त्री व पुत्रके मोहमेंफँसजावोगे तब परमेश्वरकाभजन तुमसेनहींहोगा जिसतरह गाय भैंस आदिक बनमेंघासचरनेकेलालचसेकुयें व मड़ारमेंगिरकर चोटखाती हैं उसीतरह मनुष्य मायारूपी अन्धकूपमेंगिरनेसे दुःखपाताहै जोकोईसंसारी मोहछोड़कर हरिचरणोंमें प्रेमलगावै वहमायारूपी कुयेंसेबाहर निकलसक्ताहै संसारीसुख कांचकेसमानजानकर हरिभजन व भक्तिकरनेसे पारसपत्थर ऐसाआनन्द समझनाचाहिये यहबातसुनकर लड़कोंनेप्रह्लाद से पूछा कि तुम्हें नारदजी कहांमिलेथे सो बतलाओ ॥

सातवां अध्याय ॥

प्रह्लादका उपदेश लड़कोंको मानना ॥

नारदजीबोले कि हेयुधिष्ठिर उनबालकोंकी बातसुनकर प्रह्लादनेकहा कि जब

हिरण्याक्ष हमारेचाचाको बाराहजीनेमारडाला व हिरण्यकशिपु मेरापिता तपकरने वास्ते मन्दराचलपर्व्वतपर चलागया तबइन्द्रनेअवसरपाकर नमुचिआदिक दैत्योंको युद्धमें अपनेबलसे मारकेभगादिया व दैत्योंकीस्त्रियोंको पकड़कर देवलोकमें लेचला जबरास्ते में नारदजीसे भेंटहुई तबउन्होंने इन्द्रसेकहा कि तुमइनसबस्त्रियोंको क्योंलियेजातेहो इन्द्रबोले हेमुनिनाथ दैत्योंनेभी हमाराराज्यछीनकर हमैंअतिदुःखदियाहै इसीवास्ते हम भी अपनाबदला उनसेलेतेहैं यहबचनसुनकर नारदमुनिबोले हेइन्द्र इनस्त्रियोंमें हिरण्यकशिपुकीस्त्रीको जिसकेगर्भमें प्रह्लादहै तूछोड़दे प्रह्लादहरिभक्त होकर देवतोंकी सहायताकरैगा तबइन्द्रने उसेनारदमुनिको सौंपदिया व मुझगर्भमें हरिभक्तसुनकर उस कीपरिक्रमाकरके इन्द्रलोककोचलागया व नारदजीने मेरीमाताको ब्राह्मण व ऋषीश्वरों केस्थानपर जहांवहलोग तप व स्मरणकरतेथे लाकररक्खा सोवहीऋषीश्वरभोजन व वस्त्रदेकर उसकी रक्षाकरतेथे जबकभी मेरीमाता अपनेस्वामी व परिवारको यादकरके रोतीथी तब नारदमुनिआदिक ऋषीश्वर उसे अनेकज्ञान समझाकर कहतेथे कि हे कायाधू तू चिन्तामतकरसंसारमें कभीदुःखहोताहै कभीसुख सो तू सन्तोषरख कुछदिनों में हिरण्यकशिपु तेरापतिमन्दराचलसे आनकर तीनोंलोकका राज्यकरैगा व तूरानीहोगी मैंने अपनीमाताकेगर्भमें यहज्ञानसुनकर यादरक्खाथा जो तुम्हें सुनाया तुमलोग मेरा वचनसत्यमानकर उसीकेअनुसारकरो व नारदजीने ज्ञानसमझातेसमय यहभीकहाथा कि इसस्त्रीको यहज्ञानप्राप्तनहोकर जो बालकगर्भमें है वहयादरक्खैगा सो मैं वहीज्ञान कहताहूं सुनो मनुष्यपर बाल युवा वृद्धा तीनअवस्था बीततीहैं व परमेश्वर परमात्मापुरुष जिनकातेजसबके शरीरमेंरहकर जीवात्मा कहलाताहै वहसदाएकरूपरहकर घटने व बढ़नेसे रहितहै व हर्ष व विषाद उनके नहींहोता जो कोई परमेश्वरको इसतरहजाने वह मनुष्यसदासुखीरहताहै कि जिसतरह न्यारिया मिट्टीछानकर सोनेकाचूर निकाललेताहै व मिट्टीसेकुछ प्रयोजन नहींरखता उसीतरह मनुष्यतनमें परमेश्वरका भजन व स्मरण करके मुक्तिपदार्थ जो सोनेकेसमानहै प्राप्तकरले व शरीरको मिट्टीसमझकर छोड़दे जो लोग धन व कुटुम्बादिकसे सुखचाहतेहैं वह आनन्दसदा स्थिरनहींरहता व हरिभजन करनेका सुखप्रतिदिनबढ़कर कभीनहींघटता महाप्रलयतक बनारहताहै इसलिये तुमलोग काम क्रोध मोह लोभको जीतकर भगवान्की भक्तिकरो उसीमेंतुम्हारा बेड़ापार लगेगा व स्त्री पुत्रराज्य व सेना व कोट व गजतुरंगादिक कुछकाम न आनकर मरती समयकोई बचानेनहींसक्ते कि एकक्षणभी रोकरक्खै और वहसबमाया मोहछोड़कर संसारमें रहजातेहैं कोई उसका संगनहींदेता व कोटआदिक गिरानेसेभी जल्दीनहींगिरते और यहशरीर एकक्षणमें नाशहोकर मरनेउपरान्त किसीकामनहींआता व मनुष्य आठोंपहर अपनेसुखकी बस्तुचाहताहै परबिनादया व कृपाईश्वरकी वहसुखउसे नहींमिलता जब अपनाशरीर संगनहींजाता तब धन व कुटुंबादिक उसकासाथ क्योंकरसक्तेहैं

व परमेश्वर जैसे भक्ति व स्मरणसेप्रसन्नहोतेहैं वैसायज्ञ व तप व दान व व्रतादिककरने से सुखीनहींहोते व मैंने जो नारदमुनिसे सुनाथा उसपरविश्वासकिया सो तुमलोगदेखो उसीज्ञान के प्रतापसे कुछबल हिरण्यकशिपु तीनोंलोकके राजाका जो उसनेमेराप्राण लेनेवास्ते अनेकउपाय कियाथा नहींलगा कदाचित्यह कहोकि हमलोग दैत्यबालक मांसाहारी व मद्यपानकरनेवालेहैं हमारा तप व भजन नारायणजी किसतरह अंगीकार करेंगे सो ऐसाविचारनकरके मेरीबातका विश्वासमानो देवता व दैत्य व मनुष्य जो परमेश्वरका तप व स्मरणकरै वही उनकोप्याराहै देखो मैं भी दैत्यकापुत्रहोकर नारायणजीके शरणगया तो मेराप्राणबचा नहीं तो मेरेपिताने प्राणलेने में कुछधोखानहीं लगायाथा कदाचित् तुम्हारे माता व पिताभी हरिभजनकरनेसे बरजकरतुम्हें दुःख देवैंगे तो परमेश्वरकीसहायतासे उसीतरह उनकाबलभी तुम्हारेऊपर कुछनहीं चलैगा यह ज्ञानसुनकर सबलड़केबोले कि हे प्रह्लाद हमलोगोंने तुम्हारा उपदेश माना आजसे गुरुकीझूठीबात न मानकर तुम्हारी आज्ञानुसार सबकाम करेंगे ॥

आठवां अध्याय ॥

नारायणजी का नृसिंह अवतार लेना व हिरण्यकशिपुको मारना ॥

नारदजीने कहा हे युधिष्ठिर जबप्रह्लादके ज्ञानउपदेशसे सबलड़केभीगुरुका पढ़ानाछोड़कर नामनारायण व विष्णु व रामकालेनेलगे और सण्डा व मर्कने घरसे आनकर यह दशा उनकीदेखी तबगुरुने हिरण्यकशिपुका भयमानकर लड़कोंसेकहा तुमलोग क्याकहतेहो उन्होंने उत्तरदिया कि इसतनमें जोबातहमको करनाचाहिये सो करतेहैं तुम्हारीझूटी २ बातेंपढ़कर किसवास्ते अपनाजन्म अकार्थखोवैं जबगुरुके धमकाने व हिरण्यकशिपुके भयसुनानेपरभी लड़कोंने रामनामलेना नहींछोड़ा तब गुरुनेजाना कि इनसबबालकों को प्रह्लादने ज्ञानसिखलाकर अपनाऐसा बनालिया यहबात विचारकर जबगुरुने प्रह्लादपर अतिक्रोधकरके धमकाया व प्रह्लाद हँसकर चुपहोरहा तबसंडा व मर्क प्रह्लादआदिक बालकोंको हिरण्यकशिपुके पासलेजाकरबोले महाराज तुम्हारे पुत्रने सबबालकोंको ऐसाबहकादिया कि वहलोग सिवाय नारायणनामलेनेके दूसरी बात मुखसेनहींकहते यहवचन सुनतेही हिरण्यकशिपु क्रोधितहोकरबोला हेप्रह्लाद मैंने तुझेबहुतदण्डदेकर समझाया कि नारायणकानाममतले परतूमेरा कहना नहींमानता इससे मैंनेजाना कि तेरीमृत्यु निकट पहुँचीहै जिसतरहऋषीश्वर व योगियोंको इन्द्रियां दुःखदेतीहैं उसीतरह तू मेराशत्रु उत्पन्नहुआ इसलिये तेरावध अपनेहाथसे करूंगा देखूं कौन राम व नारायणतेरा प्राण बचाताहै यहसुनकर प्रह्लाद भक्तबोला हे पितातुम विश्वासकरकेमानो जिसकी शक्तिसे सबजीवतीनोंलोकमें बर्त्तमानहैं और तुमराज्यकरते हो व वहीअविनाशीपुरुष सबसेबलवान् सर्वत्ररहतेहैं उनसेअधिक संसारमें कोई उत्तम

व पवित्र व मालिकनहोकर उन्हींको सबजीवोंकी उत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवाला समझनाचाहिये जो कुछ वह चाहतेहैं सो होताहै उनकीइच्छामें किसीकोश्वासलेने की सामर्थ्यनहींरहती वहीआदिनिरंकार मेरीरक्षाभीकरेंगे व हेपिता अपनेको तीनोंलोकका राजासमझकर सबजीवोंको अपनेआधीनजानतेहो जबतुमने अभीतक मन व इन्द्री व काम व क्रोधआदिकको अपने बश्यनहींकिया व उनकेआधीनरहकर नष्टहोरहेहो तब दूसरे को क्याअपनेवश्यकरोगे तुम्हैंउचितहै कि राजसीस्वभाव व अधर्मकरना छोड़कर मन व इन्द्रियोंको अपनेआधीनरक्खो और हरिचरणोंकाध्यान व स्मरणकियाकरो तब संसाररूपी महाजालसे छूटकर भवसागरपार उतरजाओगे सुनो जिसकीमृत्यु निकटपहुं-चतीहै उसकीबुद्धि ठिकानेनहींरहती सो मैंजानताहूं तुम्हारीमृत्युआनपहुंची इसीकारण तुमपरब्रह्म अपने उत्पन्नकरनेवालेको भूलगयेहो यहज्ञानसुनतेही हिरण्यकशिपु बड़ा क्रोधकरकेबोला कि हे प्रह्लाद मुझसे बलिष्ठतेरानारायणकहां है उसे तुरन्तबुलाओ जो आनकर तेरीरक्षाकरै प्रह्लादनेकहा वह ईश्वरसर्वत्र अपनेभक्तोंकी रक्षाकरनेवास्ते रहते हैं तब हिरण्यकशिपु उनकेमारनेवास्ते खड्गनिकालकर और खंभेकीओर आंखदिखलाके प्रह्लादसेबोला इसमेंभी तेरानारायण है प्रह्लादनेकहा परमेश्वर खंभेमेंभी मुझेदिखलाई देते हैं हिरण्यकशिपुभी ईश्वरकाभय मनमेंरखताथा इसलिये डरताहुआ खम्भेकीओरदेखकरबोला कि हे प्रह्लाद मुझे नारायणजी इस में नहीं दिखलाईदेते तूने झूठ किसवास्तेकहा अब तुझेमारताहूं जो तेरासहायक खंभेमें या जहांहो उसेतुरन्तबुला कि वहआनकर तुझे मेरेहाथसेछुड़ावै यहबचनसुनतेही जैसे प्रह्लादने परमेश्वरकास्मरण व ध्यानकरके खंभेकीओरदेखा वैसेही नारायणजी नृसिंह अवतार शरीरमनुष्य व मस्तक सिंहऐसाधरकर उसखंभेमेंदिखलाईदिये सो हिरण्यकशिपुने वह स्वरूपदेखतेही एकमुक्काबायेंहाथसे ऐसामारा कि खम्भाफटगया और उसकेभीतरसे नृसिंहभगवान् दशयोजनका शरीरधारणकिये अपनेभक्तकी बात सच्चकरनेवास्तेप्रकट हुये और बड़ेक्रोधसे ऐसाललकारा कि तीनोंलोकमें वहशब्दसुनतेही ब्रह्मा व इन्द्र व देवता व दैत्य व मनुष्यादिकजीव मारेडरकेकांपनेलगे हिरण्यकशिपुने उनकातेजदेखतेही घबड़ाकरमनमेंकहा यहआश्चर्य्यवत्रूप मैंने आजतक कभीनहींदेखाथा व ब्रह्माने मुझे ऐसावरदानदियाहै कि तू मनुष्य व देवता व दैत्य व पशु व पक्षीआदिक किसीकेहाथ से नहींमरेगा सो यहरूप ऐसाप्रकटहुआ जिसे न मनुष्यकहनाचाहिये न पशु व ब्रह्माने कहाथा कि तू न दिनकोमरैगा न रातको सो यह सन्ध्यासमयहै इसे न दिनकहना चाहिये न रात और मैंने ब्रह्मासे यहबरदानमांगाथा कि कोईजीव तुम्हाराउत्पन्नकिया हुआ मुझेमारनसकै सो वहस्वरूपब्रह्माने नहींबनायाहै इसलिये मैं जानताहूं कि ब्रह्मा का बरदान झूठानहोकर यह मुझे अवश्यमारेगा हिरण्यकशिपु इसीशोच व बिचारमेंखड़ा था कि उसकेसाथी दैत्यनृसिंहजीके डरसे भागगये जब हिरण्यकशिपु उनकेसन्मुख

आनकर अपनीगदा उनपरचलानेलगा तबनृसिंहजी उसकीगदापकड़कर इसतरहउससे लड़नेलगे कि जिसतरह पहलवानलोग अपनेचेलोंको कुश्तीलड़ाते हैं व बिल्लीचूहेको पकड़कर खेलखिलातीहै जब इन्द्रादिकदेवतोंने जो नृसिंहभगवान्‌कादर्शनकरनेवहांआये थे यहदशादेखनेसे संदेहमानकरमनमेंकहाकदाचित् हिरण्यकशिपु इनसे नहींमारागया तो हमलोगोंकादुःख किसतरहछूटैगा तबनृसिंहजी अन्तर्यामीने देवतोंकेमनकीबातजा- नकर हिरण्यकशिपुकोपकड़लिया व उसकीसभाका जोस्थानथा वहांडेवढ़ीमेंलेआये व लड़कोंकेसमान अपनेजंघेपर लेटाकेपेटउसका नखोंसेफारडाला उससमयहिरण्यकशिपु हँसनेलगा तबनृसिंहजीनेपूछाकितूक्याहँसताहै तबहिरण्यकशिपुबोलाकिलड़तीसमय जब इन्द्रने अपनीगदामुझेमारीथी तबवहगदामेरेअंगसे चोटखाकरटूटगई व मुझकोकुछदुःख नहींपहुँचा सोअबनखोंसे मेरापेटफाड़ाजाताहै यहीबातसमझकर मुझेहँसीआई अब मैंने जाना कि यहसबमेरे दिनोंकाफेरहै जोइसतरहमरताहूं ऐसाकहकर जबहिरण्यकशिपु मरगया तबनृसिंहजी उसकीआंतड़ी मालासमान अपनेगलेमें पहिनकर राजसिंहासनपर बैठे उससमयउन्हें महाक्रोधउत्पन्नहुआ जबनृसिंहजीका क्रोधदेखकर तीनोंलोकके सब जीवकांपनेलगे तबदेवतोंने ब्रह्मासेकहा तुमजाकरस्तुतिकरो कि जिसमें क्रोधउनका शान्तहो सोब्रह्माने नृसिंहजीके पासजाकरदण्डवत् व परिक्रमाकरके बिनयकिया हे त्रिलोकीनाथ आपआदिपुरुष सबजीवोंको उत्पन्न व पालन व नाशकरनेवालेहैं कोई ऐसीसामर्थ्यनहींरखता जो तुम्हारीस्तुति जिसकाआदि व अन्त नहींहै वर्णनकरसके अब हिरण्यकशिपुमारागया क्रोधअपना क्षमाकीजिये जबस्तुतिकरने पर भी नृसिंहजीने क्रोधदृष्टिसे ब्रह्माकोदेखा और वहमारेडरके फिरआये तबमहादेवने देवतोंकेकहनेसे नृसिंहजीके पासजाकर इसतरहपरस्तुतिकी हे दीनानाथ आपनेअपने भक्तकीरक्षावास्ते अवतारलियाहै सोहिरण्यकशिपु मारागया अबक्रोधअपना शान्तकीजिये एकछोटेदैत्य कोमारकर इतनाक्रोध न करनाचाहिये महाप्रलयमें तुम्हारेक्रोधसे तीनोंलोकका नाश होजाता है अभीवहसमयनहींआया इसलिये क्षमाकरना उचित है नहीं तो इसक्रोधकी अग्निसे सबजीवभस्महुआ चाहतेहैं जबशिवजीके स्तुतिकरनेपरभी क्रोधउनका नहीं शान्तहुआ तबइन्द्रनेहाथजोड़कर बिनयकियाहे दीनदयालु हिरण्यकशिपुके मारेजानेसे सबदेवता सुखीहुये व होममेंदेवतोंकाभाग वहआपलेताथा अबतुम्हारी दयासेहमलोग अपनाअपना अंशपावैंगे सो क्षमाकीजिये जबइन्द्रके स्तुतिकरनेसेभी क्रोध उनका नहीं गया तबलक्ष्मीजीने शृंगारकिये कमलकापुष्पलिये वहांजाकरहाथजोड़केकहा महाराज मैंनेआजतक ऐसातेजमान स्वरूपतुम्हारा कभीनहींदेखाथा इसलियेयहरूप देखकर मुझे भयप्राप्तहोताहै सोयहस्वरूप अपना अन्तर्द्धान कीजिये जबलक्ष्मीजीके स्तुतिकरनेपर भी नृसिंहजीने क्रोधअपनाक्षमा नहींकिया तब वरुण व कुबेर व गन्धर्व व विद्याधर आदिकदेवतोंने आपसमें विचारकरकहा यह अवतार नारायणजीनेकेवल प्रह्लादभक्त

का प्राणबचानेवास्तेलियाहै उसीके विनतीकरनेसे क्रोधउनकाक्षमाहोगा ऐसाविचारकर ब्रह्मादिकदेवतोंने प्रह्लादसेकहा कि तुमजाकर नृसिंहजीका क्रोधक्षमाकराओ नहीं तो तीनोंलोकनाशहुआ चाहतेहैं यहबचनसुनकर प्रह्लादबोले बहुतअच्छायोगी का बेटा योगीसेनहीं डरता सो उनकीआज्ञानुसार प्रह्लादसाष्टांगदण्डवत् करताहुआ नृसिंहजी के पासगया और परिक्रमालेकर उनकेचरणोंपर अपनाशिरधरदिया उससमय प्रह्लाद का हृदयमारेहर्षके ऐसागद्गदहोगया कि जिसकावर्णन नहींहोसक्ता व प्रह्लाद उस स्वरूपकाकुछडर न मानकर बड़ेप्रेमसे हाथजोड़कर स्तुतिकरनेलगा ॥

नवां अध्याय ॥

नृसिंहजी का क्रोध शान्त होना ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर जैसे प्रह्लादने नृसिंहजीकेचरणोंपर शिररखकर स्तुतिकी वैसे उन्होंने क्रोधक्षमाकरके प्रह्लादकाशिर प्रेमसेउठाकर उसको अपनीगोदमें बैठा-लिया व उसकेमस्तकपर हाथफेरकरबोले हे बेटा तूमतडर क्याचाहताहै जब यहबचन कहतेहुये नृसिंहजीकेनेत्रोंमें आंशूभरआये तबप्रह्लादभक्त उनकेप्रेमसे रुदनकरताहुआ हाथजोड़करबोला हे दीनानाथ मेराजन्म दैत्यकुलमें जो मांसाहारी व मद्यपई हुआ सोमैंबालकअज्ञान तुम्हारीस्तुति जिनकाआदि व अन्त कोईनहींजानता बिनाआज्ञा आपकी नहींकरनेसक्ता और हेदीनदयालु मुझअधर्मीकुलकेबालकपर दयालुहोकरआपने रक्षाकी इसलिये अपनेबराबर दूसरेकाभाग्य नहींसमझता व आप उत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवाले तीनोंलोककेहैं व ब्राह्मणचारोंवर्णमें उत्तमहोकर शूद्रको सबसेछोटाजानते हैं परमेरीसमझसे ब्राह्मण उसीकोजाननाचाहिये कि जो आपकातप व स्मरणकरै और जो ब्राह्मण तुमसेविमुखरहकर तुम्हारेचरणोंकीभक्ति नहींरखता वहनामकेवास्ते ब्राह्मण है व जो शूद्र हरिचरणोंमेंभक्ति व प्रीतिरखकर तुम्हारेनामकास्मरण व भजनकरते हैं मैं उनशूद्रोंको ब्राह्मणसे श्रेष्ठजानताहूं व आपसंसारमें केवल हरिभक्तोंकेसुखदेने व अध-र्मियोंको भवसागरपारउतारनेवास्ते सगुणरूपधरतेहैं जिससेसंसारीलोग तुम्हारेसगुणरूप का ध्यानकरके और उनअवतारोंकीलीला आपसमेंकह व सुनकर उसकेप्रतापसेमुक्ति पावैं व मनुष्यलोग अपनेसुख व कल्याणकेवास्ते तुम्हारा तप व भजनकरते हैं नहींतो आपको किसीसे अपनीस्तुति व तपकरानेका क्याप्रयोजनहै किसवास्ते कि आपसर्व-गुणनिधानहोकर किसीबातका अवगुणनहींरखते व संसारीवस्तुकी आपको कुछइच्छा नहीं है तुम्हारेभक्त ऐसीसामर्थ्यरखते हैं कि जो बात शुभ या अशुभ किसीकोकहैं उसी समय वैसाहोजाताहै आपकीमहिमा कौनबर्णनकरसक्ताहै आपचाहते तो हिरण्यकशिपु का नाश अपनीइच्छासेकरदेते सो हे दीनानाथ आपजितनाभक्तिकरनेसे प्रसन्नहोते हैं उतना तप व यज्ञ व दानादिकसे प्रसन्ननहींहोते जोब्राह्मण सबवेद व पुराणजाननेवाला

तुम्हारीभक्ति न रखताहो उसब्राह्मणसे डोम हरिभक्तको उत्तमसमझनाचाहिये यज्ञ व तपादिककरनेसे केवल अपनाभलाहोताहै व भक्तिकरनेवालेके सातपुरुषा वैकुण्ठमेंजाते हैं आप ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता व लक्ष्मीजीके स्तुतिकरनेसे नहींप्रसन्नहोकर मुझअज्ञानबालकके बिनयकरनेसे आपने क्रोधक्षमाकिया इसलिये मैंने अपनेको बड़ा भाग्यमानजाना व हे त्रिलोकीनाथ जिसतरह सांपकेमारनेसे मनुष्यप्रसन्नहोतेहैं उसी तरहसंत व महात्मालोग हिरण्यकशिपुकेमारेजानेसे आनन्दहुये और मैं तुम्हारे इसतेज-मानरूप व दांत व नखसेकुछभय न मानकर संसाररूपीमायासे अतिडरताहूं सो दया करके मुझे इसमायारूपी अन्धेकुयेंसेबाहर निकालकर अपनीशरणमेंरक्खो व हेत्रिलो-कीनाथ आपने मेरेशिरपरहाथरखकर मुझेकृतार्थकिया ऐसादीनदयाल संसारमें कोई दूसरानहीं है सो आपका यहस्वरूपदेखकर सबदेवताडरते हैं व मैं इसरूपका भय न मानकर बहुतप्रसन्नहूं किसवास्ते कि आपने यहअवतारधरकर मेराप्राणबचायाहै फिर मैं क्योंडरूं जिसतरह बनमें सबजीव बाघसेडरते हैं व बच्चाउसका कुछ भय न मान-कर उसेअपना पिता व रक्षाकरनेवाला जानताहै उसीतरह मैंभी तुमको अपनापिता समझकर इसभयानकरूपसे कुछ नहींडरता परदेवतोंकाडर छुड़ानेवास्ते दयाकरके अब इसस्वरूपका अन्तर्द्धान कीजिये ॥

दशवां अध्याय ॥

प्रह्लादपरनृसिंहजीका दयाकरना ॥

नारदजीने कहा हे युधिष्ठिर प्रह्लादकी स्तुतिसुनकर नृसिंहजीबोले हे प्रह्लाद मैं तुमसे अतिप्रसन्नहूं कुछवरदानमांग प्रह्लादने हाथजोड़करबिनयकिया हेत्रिलोकीनाथ मैंनेसंसारीसुख भूलोक व देवलोक दोनोंजगहकादेखा परवहसुख सदास्थिर नहींरहता एकदिन उसकानाश होजाताहै कदाचित् आपयहकहैं कि तूबालकअज्ञान क्याजानता है तैंनेकहांदेखाथा सो हेमहाप्रभु हिरण्यकशिपु मेरापिता तीनोंलोककाराजा ऐसाप्रतापी था जो इन्द्र व बरुण व कुबेरादिक देवतोंसेहँसकर यहबातकहताथा कि ऐसाकामतुमने क्योंकिया तो वहलोगडरकर भागजातेथे अबउसीहिरण्यकशिपुको देखताहूं कि मरा पड़ाहै जानोकभीनहींथा जबअपनाशरीर स्थिरनहींरहता तो संसारीवस्तुका क्यावि-श्वासहै कि उसेमांगूं जिसतरहअज्ञानबालकको दीपक दिखलाकर उसकेमातापिता फुसलाते हैं उसीतरह बरदानदेनेवास्ते कहकर आपभी मुझेललचाते हैं संसारमें तीनों लोकके राज्यसेउत्तम कोईबस्तुनहीं होती सो मैं उसकीभी चाहनानहींरखता किस-वास्ते कि यहतनमेरा सदास्थिरनहीं रहेगा फिरकिसआश्रयपर आपसे कोईबस्तुलूं मुझे यहीएकइच्छाहै कि जन्मजन्मान्तर दिनरात सन्त व महात्मोंकी संगतिमेंरहकर तुम्हारे नामकास्मरण व चरणोंकीभक्ति करतारहूं व एकक्षण भी तुम्हारीयाद मुझे न भूले सि-

वायहइसके अपनेवास्ते और कुछचाहनानहींरखता दूसरीइच्छायहहै कि जोलोग अपने अज्ञानसे बीचअँधेरेकुयेंमें मायामोह स्त्री व पुत्र व धन संसारीसुखके लटकेहैं उनको ज्ञानरूपी रस्सीपकड़ाकर इसकुयेंसे बाहरनिकालके भवसागरपार उतारदीजिये जिसमें उनकाकल्याणहो कदाचित् आपयहकहैं कि जिन्होंने जैसा २ कर्मशुभ या अशुभकिया है वैसा वैसा फलभोगकरेंगे सबकीमुक्ति नहींहोसक्ती सोमेरेतप व भजन शुभकर्मोंका जोफलहो वहउन्हेंदेकर कृतार्थकीजिये व उनकेअधर्म व पापकरनेकेबदले जोउचितहो सोदण्डदीजिये मैं उसेभोगकरूंगा परवहलोग बैकुण्ठकासुखपावें व हेमहाप्रभु मनुष्यअपने अभाग्य व अज्ञानतासे तुम्हारीकृपा व दया व पालनकरनेपर विश्वास न करके किसी उत्तमपदार्थ मिलनेसे जानताहै कि यहवस्तु मैंने अपनेपराक्रमसेपाई और यहनहीं जानता कि सबपदार्थ नारायणजी देकर मेरापालन व रक्षा करते हैं कदाचित् मनुष्य के परिश्रमसे कोईवस्तुमिलती तो संसारकाद्रव्य व सुन्दरस्त्री व सबपदार्थ सुखकेअपने घरलेआता हे दीनदयालु संसारीमनुष्य दिनरातदुःखसागरमें पड़ारहकर पहिले अपने पेटभरनेकीचिन्तामें कि बिनाभोजनकिये रहानहींजाता व्याकुलरहताहै दूसरे सैकड़ों स्त्रीसे भोगकरनेपरभी मनउसका न तृप्तहोकर सदानवीनस्त्रीकी चाहनारखताहै ऐसे मूर्खमनुष्यकोज्ञानदेकर भवसागरपारउतारदीजिये जबतकतुम्हारीदया व कृपानहीं तब तक छूटना उसकामायारूपी जालसेकठिनहै कदाचित् आपयहकहैं कि तुझे इनलोगों की मुक्तिहोनेसे क्यालाभहोगा सो मेरेविनयकरनेका यहकारणहै कि तुम्हारी एकबेर की कृपादृष्टिसे उनविचारोंका जो दुःखसागरमेंपड़े हैं भलाहोजायगा यहबात आपकी प्रभुताईसे कुछदुर्लभनहीं बड़ेलोगछोटोंपर सदासेकृपाकरते आयेहैं जिसतरहसमुद्रमेंसे कोईमनुष्य एककटोरा पानीलेकर अपनीप्यासमिटाले तो समुद्रसूखनहींजाता उसीतरह तुम्हारीथोड़ीकृपाकरनेमें उनकाकल्याणहोकर आपकाकुछ नहीं घटजावेगा ॥

दो० तुलसी पक्षिन के पिये सरिता घटै न नीर।
धर्म किये धन ना घटै जो सहाय रघुबीर॥

यहबचनसुनकर नृसिंहजीबोलेहे बेटा मैंनेक्रोध अपनाक्षमाकिया तुझेअपनेवास्ते जो इच्छाहो मांगले पर दूसरोंकीमुक्ति जो चाहताहै सो सबजीवोंको बैकुण्ठजानेकी इच्छा नहींहोती ॥

दो० मायारूपी जाल में सबकी है यह चाल।
अपनी अपनी खालमें सबी जीव खुशहाल॥

इतनीबातसुनकर प्रह्लादबोला हे जगत्पालक मैं निष्कामभक्तहोकर किसीबस्तुकी चाहनानहींरखता संसारमें जबकोईमनुष्य किसीकेपासजाकर कुछमांगता है तब उसके

मुखका तेजक्षीणहोजाताहै व बिना इच्छाकिसीकेपास न जाने व भेटकरने में उसका तेजबनारहताहै कदाचित् तुम्हारीइच्छा निजकरकेदेनेवास्तेहो तो ऐसाबरदान दीजिये जिसमें मुझेकिसीबस्तुकी चाहनानरहै तृष्णारखनेसे धर्मनहींरहता व लज्जाछूटजाती है व जिनकोलालच व चाहनानहींरहती वे राजाइन्द्र व मंगनदोनोंकोसमानजानतेहैं व जो कोई परमेश्वरकातप व भजनकरके उससेकुछमांगताहै उसेमजदूरकेतुल्यसमझना चाहिये इसलियेमैंकुछनहींमांगता तुम्हारीइच्छापरप्रसन्नहूं यहबचनसुनतेही नृसिंहजीबोले हेबेटातू मेराबड़ामित्र व भक्तहै इसलियेमैंचाहताहूं कि तू अपनेपिताके सिंहासनपरबैठ-कर इकहत्तरचौकड़ीराज्यकर कदाचित्तेरादूसराभाईराज्यकरैगा तो संसारीजीवकहैंगे कि प्रह्लादने हरिभक्तहोनेपरभी राज्यनहींपाया वतुझे मेरीआज्ञापालनाचाहिये व तू धीर्य रख हमारीकृपासेतुझे काम क्रोध लोभ मोह यहसबविकार राजगद्दीकेनहींव्यापैंगे व मेरे चरणोंमें प्रीतिबनीरहैगी जिसतरह मेरेपरमभक्त लोक व परलोक किसीसुखकीचाहना नहीं रखते उसीतरहतुझकोभी कुछ[illegible]प्रलयतक संसारमेंतेरा यश स्थिररहैगा ऐसा कहकरजबनृसिंहजी गायकेसमानप्रह्लादका अंगचाटनेलगे तब प्रह्लादने उनकी आज्ञा मानकर बिनयकिया हे महाप्रभु मेरापिता भक्तिहीनथा इसलिये अपनेअज्ञानसे तुम्हैंअपने भाईका मारनेवालासमझकर तुम्हारेसाथ शत्रुतारखकरदुर्वचनकहाहै सोआपउसकाबेटासम झकरमुझसेकुछबुरानमानियेगा जो कोईपरमेश्वर व वेद व शास्त्र व सन्त व महात्माकी निन्दा करताहै वहइसमहापापकरनेसे अतिदुःखपाकर जल्दीकृतार्थनहींहोता इसवास्ते मेरापिता नरकभोगकरैगा सोआपमेरेऊपर दयालुहोकर उसकाउद्धारकीजिये यहबातसुनकर नृसिंह जीनेकहा हे प्रह्लाद तू अपने पिताकाकुछ शोचमतकर वहअधर्म करनेकेबदले नरकको न जावेगा जिसकुलमें तेराऐसा हरिभक्त उत्पन्नहुआ उसकुलवाले स्वप्नेमेंभीयमदूतों को नहींदेखसक्ते हमनेतेरे इक्कीसपुरुषा नरकसे निकालकर स्वर्गमेंभेजदिये तेरापिता किसतरहसे नरकभोगेगा मेरेभक्तोंके सातपुरुषा नरकसे निकलकर स्वर्गबासकरतेहैं वेद व शास्त्रमें मगहदेशकोमरनेवास्ते अशुद्धलिखाहै पर वहांभी मेरेभक्तोंकेजाने व रहनेसे वहधरती पवित्रहोकर उसकादोष मिटजाताहै अधर्मी व पापीहोनेपर भी तुझेअपनेपिता का दाहकर्म्म व श्राद्धकरनाचाहिये जबप्रह्लाद नृसिंहभगवान्की आज्ञानुसार दग्ध व श्राद्ध हिरण्यकशिपुकाकरचुका तबनृसिंहजीने प्रह्लादको राजसिंहासनपर बैठाकर तिलक लगाया उससमय सबदैत्य व देवतोंने वहांजाकर प्रह्लादको यथायोग्य दण्डवत्किया व आशीर्वाददिया व ब्रह्मादिकदेवतोंने नृसिंहजीकोदण्डवत् व स्तुतिकरके विनयकिया हे कृपानिधान आपनेबहुतअच्छाकिया व हिरण्यकशिपु अधर्मीकोमारा जो दयाकीराह बरदान मुझ ब्रह्माका स्थिररक्खा यहबातसुनकर नृसिंहभगवान् बोले हे ब्रह्मा फिरतुम किसी दैत्यको ऐसावरदान मतदेना सर्पकोअमृतपिलाना न चाहिये ऐसाकहकर नृसिंह जी वहांसे अन्तर्द्धानहोगये व प्रह्लादने ब्रह्माआदिक देवता व शुक्राचार्य्य पुरोहितका

बिधिपूर्व्वक पूजनकरके सबदेवतोंको बिदाकिया व आपआठोंपहर हरिचरणोंका ध्यान रखकर साथ धर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगा उसकेराज्य में देवता व ऋषीश्वर व गौ व ब्राह्मण व सन्त व महात्मा आनन्दपूर्वकरहकर परमेश्वरका भजन व स्मरणकरते थे कोईजीवदुःखीनहींथा इतनीकथासुनाकर नारदजी बोले हे युधिष्ठिर तुमने हिरण्यकशिपु व प्रह्लादके विरोधहोनेकाहाल जो मुझसेपूंछाथा सो मैंनेवर्णनकिया वही हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष दूसरेजन्ममें रावण व कुम्भकर्णहुये व तीसरेजन्मशिशुपाल व दन्तवक्त्रहोकर जब श्रीकृष्णजीके हाथसेमारेगये तब बैकुण्ठमेंजाकर जयविजयद्वारपाल परमेश्वरकेहुये जोकोईपरमेश्वरकीकथा व लीलाकहता व सुनताहै वहकर्मोंकीफांसीसेछूटकरस्वप्नमें भी यमदूतोंकोनहींदेखता हेयुधिष्ठिर तुम बड़भाग्यवान् व पूर्वजन्मके तपस्वी व धर्मात्माहो देखो जिसपरब्रह्मपरमेश्वरके चरणोंकाध्यान ब्रह्मा व महादेवआदिकदेवता आठोंपहर अपनेहृदयमेंरखकर उनकी आज्ञापालनकरते व बड़े २ योगी व ऋषीश्वर जिनकादर्शनध्यानमेंभी जल्दीनहींपाते वही श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ तुम्हें अपनाभक्त जानकर तुम्हारीआज्ञामें बनेरहते हैं इसीवास्ते भक्तवत्सल इनकानाम संसारमेंप्रकटहुआ है एकबेरमहादेवजीने भी इन्हीं श्यामसुन्दरकी सहायतासे पुरनाम दैत्यकोमाराथा उसी दिनसे शिवजी त्रिपुरारिकहलाते हैं इतनीकथासुनकर युधिष्ठिरनेपूंछा हे मुनिनाथ इसकी कथावर्णनकीजिये नारदजीबोले एकसमयदेवतोंने दैत्योंको युद्धमेंजीतलिया तबसबदैत्य ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार कि उनकातप दैत्योंने कियाथा मयनामदानवकी शरणमेंगये सो उसने दैत्योंको अपनीमाया व इन्द्रजालकेमन्त्रसे तीनकिला चांदी व सोने व लोहेके बिमानकेसमान बनादिये कि वह तीनों किले आकाशमार्गमें कभीदिखलाईदेकर कभी अन्तर्द्धान होजातेथे जबपुरनाम दैत्योंकाराजा बहुतदैत्यउसी बिमानमेंसाथलेकर देवतों से लड़नेवास्तेचढ़ा तबइन्द्रादिकदेवतोंने उसकेसन्मुखजाकर अपने २ शस्त्रउसपरचलाये जबदेवतोंकेहथियार उसकोटकीदीवारमें लगकरटूटगये तबदैत्योंने अपने शस्त्रमारकर उनकोहटादिया जबदैत्यलोग तीनोंलोकजीतनेपरभी उसकिलेमें दिनरातरहकर मनुष्य व देवतोंकोढूंढ़ २ के मारने व दुःखदेनेलगे तबसबदेवतोंने शिवजीकीशरणमेंजाकर उनसे सहायता अपनीचाही जबमहादेवजी उनकेसहायकहोकर दैत्योंको युद्धमेंमारनेलगे तब मयदानवने अपनीमायासे उसकोटमें एककुण्डअमृतकाबनादिया सोजितनेदैत्योंको महादेवमारकरगिरातेथे उन्हें वहदानवउठाकर उसअमृतकुण्डमें डालदेताथा तबफिरवहलोग जीकर शिवजीसेलड़नेलगतेथे जब इसीतरह कई दिनतक महादेवजीने दैत्योंसे लड़कर उनकोमारा और वहलोग अमृतकुण्डके प्रतापसे कमनहींहुये तब शिवजीने दैत्योंकीयह दशा देखकर अपनाधनुषबाण पृथ्वीपर पटकदिया व नारायणजीकाध्यानकरनेलगे तब श्यामसुन्दर दीनदयालुने महादेवजीको उदासदेखा तबब्रह्माको बछड़ाबनाया व आप गायरूपधरके उसकुण्डपरजाकर अमृत पीनेवास्तेमुँहडलँवाया वैसे किसी दैत्यरखवारी

करनेवालेनेकहा यह गौ अमृतपीतीहै इसकोमारना चाहिये दूसरेनेउत्तरदिया कि यहगाय बछड़ा अतिसुन्दरहै पीनेदो कितनापीवैंगे जबनारायणजीने अपनेगायरूपकी सुन्दरताई दिखलाकर सबदैत्यरखवारी करनेवालोंको मोहलिया व क्षणभरमें सबअमृतउसकुण्डका पीकरवहांसे अन्तर्द्धानहोगये तबदैत्यलोग अमृतकुण्डसूखा देखतेही मयनामदानवके पासजाकररोनेलगे जबकुण्डके सूखनेकासमाचार मयदानवनेसुना तबउसने दैत्योंसे कहा हे भाईकोईजीव आपपरमेश्वर नहींहोसक्ता जोहरि इच्छाटालनेसकै यहबचनकहने उपरांत मयनामदानव नारायणजीको दैत्योंसे विमुखदेखकरउसबिमानसे बाहरचला गया व श्यामसुन्दरने महादेवके पासजाकर उन्हैंधीर्यदिया व एकरथ व धनुषबाणदेकर उनसेकहा अबअमृतकुण्ड दैत्योंकासूखगयाहै तुमइसरथपरबैठकर इसीधनुषबाणसे युद्ध करो तुम्हारी विजयहोगी यहबचन सुनतेही महादेवने बड़ेहर्षसे नारायणजीकोदण्डवत् करकेविनयकिया हे दीनदयालु बिनाकृपातुम्हारी मुझसेक्याहोसक्ताहै जिसतरह आप देवतोंकी रक्षासदाकरतेआये हैं उसीतरह आजभी कृपालुहोकर मेरीसहायताकी जब धनुष बाणदेकर बैकुण्ठनाथचलेगये तबशिवजीने उसीधन्वापर एकबाणरखकर चलाया तो उसबाणकेलगतेही मायारूपीतीनोंकोट पुरनामआदिक दैत्योंसमेत जलकर भस्महोगये व श्यामसुन्दरकीदयासे महादेवने विजयकिया व इन्द्रादिकदेवता अपनाराज्य पाकर प्रसन्नहुये हे युधिष्ठिरदेखोऐसा प्रताप श्रीकृष्णजीकाहै यहमहिमा श्यामसुन्दरकी सुनकर युधिष्ठिरने अपनेको धन्यकरकेजाना व इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित नारायणजी अपनेभक्तोंकी अवश्य रक्षा करतेहैं ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

नारदजीका राजायुधिष्ठिरसे चारोंवर्ण व चारोंआश्रमका धर्मकहना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित इतनीकथा सुनकर राजायुधिष्ठिर नारदमुनिकी बहु-तस्तुतिकरके बोले हेमुनिनाथ आपदयालुहोकर वहधर्मचारोंवर्ण व चारोंआश्रमका वर्णनकीजिये जिसधर्मकरनेमें नारायणजी प्रसन्नहोतेहैं तबनारदमुनिनेकहा हेराजा जिसकिसीमें यहसबगुणहों उसकोतुमजानना कि इसधर्म्मात्मासे परमेश्वर प्रसन्नहैं उस मनुष्यको पहिंचानने वास्ते यहसबलक्षण उसमें देखनाचाहिये पहिले वहसत्यवादी होकर झूठ न बोलै दूसरे वह अन्तःकरणमें दयारखकर जिसेदुःखी देखै अपनेसामर्थ्यभर उसकादुःखछुड़ानेवास्ते उपायकरै तीसरेअपने वित्तानुसार दानदेकर अकेले भोजनकरै जोपदार्थ उत्तममिलै उसमेंसे पहिलेब्राह्मणआदिक चारोंवर्णको देकरपीछेसे आपखावै चौथेअपनाचित्त परमेश्वरके भजन व स्मरणमेंलगाये रखकर नवधाभक्ति उनकी करता रहै पांचवें अतिलालचछोड़कर सन्तोषरक्खै व संसारीमायासे बिरक्तरहकर साधु व महात्माकीभक्ति व सेवाकरै छठेंपरमेश्वर अवतारकीलीला व कथाप्रेमपूर्वक कहै व सुन-

कर जीवहिंसाछोड़दे सांतवें इनसबबातोंमें जितनावनपड़ै उतनाध्यानरक्खै जोमनुष्य इनशुभकर्मोंमेंसे कोईबातनहींकरता वहपशुके समान है हेयुधिष्ठिर परमेश्वरकी भक्ति चारोंवर्ण व चारोंआश्रमको करनाचाहिये जोब्राह्मण अपनेकर्म्म व धर्म्म वेदपढ़ने व संध्याकरने में सावधानरहकर परमेश्वरकीभक्ति नरखताहो तो उसका वेदपढ़ना व संध्याकरना सबवृथासमझो इसीतरहसे क्षत्रिय व वैश्य व शूद्रतीनोंवर्ण गृहस्थ व ब्रह्म-चारी व बानप्रस्थ व संन्यासी चारों आश्रमको ध्यान व स्मरण व भक्ति नारायणजीकी सच्चेमनसे करनाचाहिये जिसमेंबेड़ाउनका पारलगै व धर्मचारोंवर्णका बिलग २ है उसकीकथासुनो ब्राह्मणउसे कहनाचाहिये जिसकासब संस्कारविधिपूर्वक जन्मलेने व मुण्डन व जनेऊ व विवाहकरनेके समयहुआहो और वहपालन अपनाखेतमेंका गिरा हुआ अन्नचुनने व भिक्षामांगनेसे कियाकरै व चलन भीखमांगनेका ऐसाहै जोभिक्षा बिनामांगेमिलै वहभीख अमृततुल्य होकरजो मांगनेसेपावै उसको भिक्षासमान कहतेहैं यहदोनोंतरहकी भीख उत्तमहोकर किसीको दुःखीकरके जो लेतेहैं वह भिक्षामांसके तुल्यहोती है सोब्राह्मणको नित्य वेद व शास्त्रपढ़ना व चर्चाउनकी आपसमें रखकर दूसरोंको विद्यापढ़ाना चाहिये व आप यज्ञ व होमकरना व दूसरोंसे यज्ञ व होमकराना व दानलेना व दूसरेकोदानदेना ब्राह्मणकाधर्म है व क्षत्रियवर्णका धर्मऐसालिखतेहैं कि यज्ञ व होमआपकरै व ब्राह्मणके हाथसेभीकरावै व वेद व शास्त्रआपपढ़कर दूसरोंकोभी पढ़ावै आपदान देकरदूसरेसे दान न लेवे व नौकरीकाउद्यम रखकरसाधु व ब्राह्मणका भक्तहोवै व शूरबीर व धर्म्मात्माहोकर अपने मन व इन्द्रियोंको बशमेंरक्खै व वैश्यवर्ण व्यापारकरै बणिजविद्यामें निपुणरहै व देवता व ब्राह्मणमें आधीनताईसे भक्तिरखकर क्षत्रिय व ब्राह्मणकी बराबरी नकरे व शूद्रसेवा व टहल ब्राह्मणआदिक तीनोंवर्णकी जो उससेउत्तमहैं करकेअपना कुटुम्बपालै व शूद्रकोवेदकेमंत्रसे यज्ञ व होमकरना न चाहिये व ब्राह्मण देवतातुल्य होतेहैं इसलिये उनकोनौकरी व सेवामनुष्यकी करनाअत्यन्त वर्जित है कदाचित्कोईकहै कि द्रोणाचार्य ऐसेमहात्माने किसवास्ते दुर्योधनकी नौकरीकीथी सोउनका यहवृत्तान्तहै कि एकदिनअश्वत्थामा बेटाद्रोणाचार्य्यका लड़कपनमें किसी बालकको दूधपीतेदेखकर अपनेपितासेकहा मैंभीदूधलूंगा द्रोणाचार्य्यको दरिद्रतासे इत-नीसामर्थ्यनहींथी जो दूधमोललेकर उसेदेते इसलिये उन्होंने सपेदमट्टी जिससेलड़के लिखते हैं पानीमेंपीसकर दूधकीजगह अपने बेटाकोदिया जब अश्वत्थामाने उसेदूध समझकर पीलिया तबद्रोणाचार्य्यने मनमेंकहा देखोमेरेऐसेजीनेपर धिक्कारहै कि पावभर दूधपुत्रकेपीनेवास्ते मेराकिया नहींहोसक्ता इसीदुःखसे द्रोणाचार्य राजादुर्योधनके पास जाकर रहनेलगे पर उन्होंने महीनाबांधकर उससेनहींलिया हेयुधिष्ठिर चारोंवर्णकाधर्म हमने तुमसेकहा अब स्त्रियोंकाधर्मसुनो वहअपनेस्वामीको देवता व परमेश्वर तुल्यजा-नकर उनकीआज्ञामेंरहैं व मीठेबचनबोलकर किसीको कठोरबात न कहैं व अधिक

लोभ न रखकर अपनेस्वामी व बड़ोंकीटहल शुद्धमनसेकरैं व अपनेरहनेका स्थान पवित्ररक्खैं थोड़ा या बहुत जो कुछभूषण व बस्त्रपरमेश्वरदे उसको पहिनकर मगनरहैं व सिवायसचके मिथ्यावचन अपनेस्वामीसेनकहकर सन्तोषरक्खैं और जो स्त्रीअपने कर्मोंकेफलसे बिधवाहोजावे उसकोकिसीवस्तुसे पेटभरलेना और बस्त्रसेतनढांपकर परमेश्वरकाभजन व ध्यानकरनाउचितहै बिधवास्त्रीको भोजनआदिकमें स्वादकी इच्छा रखना व उत्तमभूषण व बस्त्रपहिनकर श्रृंगारकरना न चाहिये जो स्त्री अपनेधर्म व कर्मसे रहिकर ऐसाकरती हैं वह स्त्रियांभी मरनेउपरांत बैकुण्ठमें जाकर लक्ष्मीसमान अपनेस्वामीकेसाथ सुख व बिलासभोगतीहैं व चारोंवर्णकी स्त्रीपुरुषको चोरीआदिक कुकर्मोंसेरहित रहनाचाहिये व नित्यस्त्री व पुरुषके भोगकरनेमें जल्दी सन्ताननहींहोती इसलिये ज्ञानीमनुष्यको उचितहै कि जबस्त्री रजस्वलाहोकर चौथेदिनस्नानकरे उस दिनस्त्रीप्रसंगकरनेसे सन्तानधर्मात्मा उत्पन्नहोती है दिनके मैथुनकरनेसे तेज व बल व धर्मनाशहोकर आयुर्दाक्षीणहोजातीहै व जोकोई रजस्वलाहोनेपर चौथेदिन अपनीस्त्रीके पास न जाकर परस्त्रीगमन करताहै उसेमहापापी व अधर्मीसमझना चाहिये सिवायइन चारोंवर्णके और जो वर्णसंकरआदिकहैं उनको ऐसाउचितहै कि उनकेकुलमें जिस तरहसे धर्म व कर्म चलाआताहै उसीतरह वह लोग अपना धर्म रक्खें ॥

बारहवां अध्याय ॥

नारदजीका चारोंआश्रमका धर्मवर्णनकरना ॥

नारदजीबोले हेयुधिष्ठिर चारोंवर्णकाधर्म हमनेतुमसे वर्णनकिया अबचारोंआश्रमका धर्म जोउन्हेंकरनाचाहिये सुनो ब्रह्मचारीकाधर्म यहहै कि जबकिसीकीइच्छा ब्रह्मचर्य लेनेकेवास्तेहो और उसकेमाता व पिताआज्ञादेवैं तब वह बीसवर्षकी अवस्थामें उसी इच्छासे गुरूकेघरजाकररहै व एकाग्रमनसे उनकीसेवाकरै और गुरूकीआज्ञानुसारपढ़कर उनकीटहल व सेवाकरना पढ़नेसेउत्तमसमझै व प्रातःकाल व सन्ध्यासमय गुरूनारायण व सूर्य व अग्निआदिक देवतोंका पूजनविधिपूर्वक कियाकरै व जटा शिरपररखकर शिर व दाढ़ीआदिक किसीअंगका बालकभीनमुड़ावै और जो भिक्षा माँगकरलावे सबगुरू के आगेरक्खै जब गुरूआज्ञादे तब भोजनकरै व क्रोधकरना व दुर्बचनकहना छोड़कर गुरूकीनिन्दानकरै व अतर व फुलेल व चन्दनआदिक सुगन्ध व सुरमा व मिस्सीलगाना व मांसखाना व मद्यपीनात्यागकर पांचवर्ष ब्रह्मचर्यसे गुरूकेघररहै पर उनकीस्त्री से हँसकर न बोले दूरसेदण्डवत्करलेवै व कभीस्त्रीका प्रसंगनकरै व उसकेसाथ बातकरना व स्त्रीकागाना सुननाछोड़कर उनकेपास अकेलेमें न बैठै जिसमेंइन्द्रियां व मनउसका चलायमान न होवे स्त्रीकोअग्नि व पुरुषको घृतसमान समझनाचाहिये सो घी अग्नि कासाथपाकर बिनापिघलेनहीं रहता कदाचित् बीसवर्षकी अवस्थामें चित्तउसका गृहस्थी

करनेवास्ते चाहै तो उत्तमकुलमें बिवाहकरके गृहस्थधर्म्मसेरहै व बिवाहकरनेकी इच्छा न हो तो जन्मभरगुरूके घररहकर किसीस्त्रीको कुदृष्टिसे न देखै व धर्म बानप्रस्थका यह है कि जब गृहस्थीमें पचासवर्षकी अवस्थाहो तब अपनीस्त्रीसमेत बनमेंजाकर परमेश्वरका तप व स्मरणकरै व सिवायकन्दमूल व फलादिकके खेतकाबोयाहुआ अन्न न खावे व कन्दमूलआदिक न मिलै तो वृक्षकापत्ता खाकररहै पर फल व पत्ता वृक्षमेंसे न तोड़कर पृथ्वीकागिराहुआखावै व बनमें स्त्रीसमेत अकेलीजगहरहकर छालकावस्त्रपहिने व जो अतिथि व मंगनआजावै उसको भी वहीफल व कन्दमूल खिलाकर उसीफलादिकसे होमकियाकरै व क्षौरादिकछोड़कर बर्षामें बीचमैदानके बैठे व जाड़ेमें जलवास करके गर्मीमेंपंचाग्नितपै इसतरहका तप एकवर्ष या दोवर्ष या चारवर्ष या आठवर्ष या बारहवर्ष जहांतकबनपड़े वहांतककरके ब्रह्मकाविचारकरतारहै तो वहब्रह्मरूपहोजाता है॥

तेरहवां अध्याय ॥

नारदजीको राजायुधिष्ठिरसे संन्यासधर्मकी कथा कहना ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर बानप्रस्थ पचहत्तरवर्षकी अवस्थामें संन्यासलेकर दण्ड कमण्डलुधारणकरै व धर्मसंन्यासीकायहहै कि पहिले जिसतरहब्राह्मणोंने वेदमंत्रसे उसके गलेमें जनेऊपहिनायाथा उसीतरहमंत्रपढ़कर जनेऊगलेसेउतारडाले व पूर्वआश्रमका धर्मछोड़दे व किसीनगर व गांवमें एकरात्रिसे अधिक न रहै परभिक्षामांगनेको बस्तीमें जाकर जोकुछसाधारणसे दूधभिक्षामिलै उसेलेकर शास्त्रानुसार कर्मअपना करतारहै व कुछबस्तु आदिक अपनेपास न बटोरै अकेलारहकर दण्ड व कमण्डलु एकक्षण न छोड़े व सबजीवोंपर दयारखकर हरिचरणोंका ध्यानकरतारहै व परब्रह्मकाप्रकाश जड़ व चैतन्य सबतनमें एकसासमझै व किसीको चेला न मूड़े व मठादिक अपने रहनेके वास्ते न बनवाकर बस्तीकेबाहर रहै व भोजन ववस्त्रकाशोच न रखकर वेद व शास्त्र पढ़ने व सुननेका अधिक अभ्यासरक्खै व संसारको स्वप्नवत्समझकर मरनेकी चिन्ता व जीनेकाहर्ष न करै इतनीकथासुनाकर नारदजीबोले कि हे राजन् हमने ब्रह्मचर्य व बानप्रस्थ व संन्यासकाधर्म तुमसेकहा अबएकसंन्यासीका इतिहास कहतेहैं सुनो प्रह्लाद जी राज्यपर बैठकर एकसमय अपनेदेशमें सैरकरनेवास्ते निकले जिसस्थानपर किसी ज्ञानीका समाचार मिलताथा वहांजाकर उसकेसाथ हरिचर्चा बड़ेप्रेमसे करतेथे सो एक दिन रेवानदीके किनारेपहुँचकर क्यादेखा कि एकअवधूत दत्तात्रेयनाम अतिपुष्ट व तेजमान नंगशिर नदीकेतटपरपड़ाहुआ परमेश्वरके ध्यानमेंलीनहै प्रह्लाद उसअजगर मुनिकोदेखतेही शिबिकापरसे उतरपड़ा व उसके निकटजाकरबोला हे परमहंसमूर्ति तुम हमको बड़े गुणवान् व महात्मा दिखलाई देकर कुछ भोजन व वस्त्रादिक अपनेपास नहींरखते व संसारी व्योहारसेरहकर कुछ उद्यमनहींकरते और न कुछ किसीसेमांगते तिसपर भी बहुतमोटे दिखलाईदेतेहो व जगत्में हमदेखतेहैं कि विनाउद्यमकिये किसी

कोद्रव्य न मिलकर विनाधन संसारी सुखनहीं मिलता व संसारीजीव अनेक उद्यम करनेपरभी दुर्बलरहतेहैं इसकाक्याकारणहै सिवाय इसके और जो कुछ ज्ञानपरमेश्वरने आपकोदियाहो वहभी थोड़ाकहो यहबात सुनतेही अजगरमुनिउटबैठे व प्रह्लादको हरिभक्तजानकरबोले कि हे प्रह्लाद तुमने जोपूछा कि तू कुछ उद्यमनहींकरता व मोटा दिखलाई देताहै इसकाहालसुनो मैंनेजगत्में उद्यमकरके बहुतद्रव्यकमाया पर मेरीतृष्णा नहींछूटी जब मैंनेदेखा कि लोभरूपी कमण्डलु मेरा किसीतरह नहींभरता व जितना द्रव्य अधिकबटोरताहूं उतनाही लोभ प्रतिदिन बढ़ताहै तब मैंनेविचारा कि मनुष्यतन पाकर किसवास्ते जन्मअपना अकार्थखोऊं कदाचित् इसीतरहसंसारीमायामें फँसारहकर एकदिनमरगया तो नरकमें जाकर अवश्य दुःखभोगूंगा इसलिये संसारीतृष्णाछोड़कर आठोंपहर परमेश्वरके ध्यानमें मग्नरहताहूं जिनकेहृदयमें हरिचरणोंका बासरहताहै वह लोग अशोचरहकर पुष्टहोतेहैं व संसारीचिन्तारखनेसे मनुष्यदुर्बलहोताहै व बाहरका अन्धकार सूर्यकेप्रकाश से मिटकर भीतर अन्तःकरणका अँधियारा परमेश्वरकी भक्ति करनेसे छूटजाता है व जो तुमनेयहकहा कि तू कोईवस्तु अपनेपास न रखकर किसी से कुछनहींमांगता सो मैंने बहुतधनपात्रोंको देखाहै कि वहलोग द्रव्यबटोरनेसे सदा चिंतामेंरहकर प्रथमभय राजाकीरखतेहैं ऐसा न हो कि जोकोई कलंकलगाकर हमाराधन छीनलेवे दूसरेचोर व डाकूकेडर व खटकेमेंरातको अच्छीतरह निद्रानहींआती तीसरा भय अपनेनातेदारोंका लगारहताहै और वहलोग इसीविचारमें दिनरातरहतेहैं कि किस तरह इनकाद्रव्य हमकोमिलै इसीकारण धनबटोरनेवालोंको सुखनहींमिलता जिसतरह मक्खियां अतिपरिश्रमसे छत्तेमेंशहदबटोरकर कृपणतासे उसकोनहींखातीं जब बहुतसा मधुउसमें इकट्ठाहोताहै तबकोल व मुसहरआदिक उसछत्तेमें अग्निलगाकर शहद अपने घरलेजातेहैं उनमक्खियोंको शहदबटोरनेमें सिवायदुःखके कुछ सुखनहींमिलता उसी तरह द्रव्यबटोरनेवालोंको भी अतिदुःखहोकर वहधन उनकेकामनहींआता इसीवास्ते मैं संसारी मोह छोड़कर विरक्तहोगया जिसतरह अजगरसर्प चलनेकीसामर्थ्य न रख कर एकस्थानपर पड़ारहताहै व परमेश्वर उसीजगह उसको आहारपहुँचातेहैं उसीतरह मैंभी पड़ारहकर दिनरात परमेश्वरके ध्यानमें मग्नरहताहूं जोकुछ प्रारब्धानुसार कोई देजाताहै उसेखाकर सन्तोष रखताहूं ॥

दो० अजगर करै न चाकरी पक्षी करै न काम ।
दास मलूका यों कहै सबके दाता राम ॥

हे प्रह्लाद कदाचित् कोईदयासे खीरपूरीमुझेदेगया तो उसेखाकर कुछ बखान उस कानहींकरता व जोकोई दुर्वचनकहकर सागरोटी अलोनीखिलाजाताहै उससेभी कुछ खेदनहींमानकर यहसमझताहूं कि यहसब मेरेकर्मानुसारहोताहै व किसीदिन भोजन न

मिलने व उपासकरनेपरभी प्रसन्नरहकर यहजानताहूं कि आजमेरेभाग्य में भोजन नहींलिखाथा व कभीकोई मेरेअंगमें चन्दनादिक सुगन्धलगाके उत्तमभूषण व वस्त्रपहि-नाकर हाथी व घोड़ा व सुखपालपर बैठादेताहै व कभी पृथ्वीपर धूरिमें पड़ारहताहूं सो मुझे उसकेमिलनेका हर्ष व छूटनेका विषाद कुछनहींहोता इसीतरह हम आनन्द पूर्वक जन्मअपनाकाटतेहैं सो हे प्रह्लाद यहजीव चौरासीलाखयोनिमें भ्रमकर मनुष्य तनपाताहै जोकोई भरतखण्डमें चैतन्यचोला मनुष्यकापाकर हरिभजन व स्मरणमें विमुखरहा उसे बड़ाअभागी व मूर्ख समझनाचाहिये प्रह्लाद यहज्ञानसुनकर अतिप्रसन्न हुआ व अजगरमुनिसे बिदाहोकर अपनेघरआया ॥

चौदहवां अध्याय ॥

नारदजीका राजा युधिष्ठिरसे गृहस्थाश्रमका धर्मकहना ॥

नारदजीनेकहा हे युधिष्ठिर अबहम गृहस्थाश्रम धर्म कहतेहैं सुनो जबब्रह्मचारी वेद आदिक पढ़कर गृहस्थी करनाचाहै तो वहअपनेदेशके राजासेजाकरकहै हमविद्यापढ़चुके अब तुम्हारेनगरमें गृहस्थाश्रमहोकररहेंगे तब राजाकोउचितहै उसकेविद्याकी परीक्षालेवे व अपनेकोशसे द्रव्यादिकदेकर उसकाविवाह उत्तमकुलमेंकरादेवै व गृहस्थहोनेउपरांत वहब्राह्मण अपनेधर्मानुसार उद्यमकरके अपनाकुटुम्बपालै व चारोंवर्णके गृहस्थकोचाहिये कि प्रतिदिन यथाशक्ति दान व पुण्यकरै जिसकेघर कोईवस्तुदानदेनेकी न हो उसको जिससमय कुछ भोजनकरनेवास्ते मिले उसमेंसेकुछदेदे व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व बान-प्रस्थ व संन्यासीके भोजन व वस्त्रकीसुधि अवश्यलेनाचाहिये किसवास्ते कि इनतीनों आश्रमको धनादिक बटोरनावर्जितहै व गृहस्थाश्रमको नित्य पितरोंकाश्राद्ध व तर्पण करके अमावस व पूर्णमासी व संक्रांति व द्वादशी व व्यतीपात व वर्षगांठिकेदिन अव-श्यकुछदान देनाचाहिये व ब्राह्मणकुरुक्षेत्र व गया व काशी व प्रयाग व मथुरा व अयोध्या व हरद्वार व बैजनाथ व जगन्नाथजीआदिक तीर्थोंपर रहतेहैं उनकेद्रव्यादिक दानदेनेसे सौगुनामिलताहै परब्राह्मणको नारायणरूपसमझकर दानदेवै व गृहस्थप्रति दिन कथा व लीला परमेश्वरकीसुनकर हरिचरणोंका ध्यान व स्मरणरखके ऐसाजानतारहै कि आत्मा सबजीवोंमें एकसाहै जिसतरह सोने व मट्टीकाबर्त्तन पानीभरकररखदेव तो चन्द्रमा व सूर्यकीछाया दोनोंबर्तनमें बराबर पड़तीहै उसीतरहजीवात्मा परमेश्वरके प्रकाशको ब्राह्मण व क्षत्रिय व चाण्डाल व पशु व पक्षीआदिक सबके तनमें समान समझकर किसीजीवको दुःखदेना न चाहिये आत्मामें कुछब्राह्मण व क्षत्रिय व शूद्रवर्ण का भेद नहींहोता व गृहस्थको धर्म्मकी कमाईसे देवतोंकेनामपर यज्ञ व होमकरना व मंगन व कंगालोंको भोजन व वस्त्रदेना और अपनेकुटुम्ब व परिवारवालोंको पालना उचितहै परमनसे घरवालोंको ऐसासमझे कि जिसतरह रातको चारोंदिशाके पथिक एकजगह बासकरके प्रातःकाल बिलगहोजातेहैं फिरउनकासाथ नहींरहता उसीतरह

संसारीजीव अपने २ कर्म्मोंके फलसे उत्तम व नीचकुलमें जन्मलेकर इकट्ठहोते हैं व पूर्वजन्मोंके संस्कारसे अपना २ बदलालेकर मरनेउपरान्त न मालूम किसयोनिमें चले जातेहैं इसलिये उनसे अधिक प्रीति न रक्खै व काम क्रोध मोह लोभ अपने शत्रुओंको जीतकर पतिव्रतास्त्री के समान हरिचरणोंमें ध्यानलगाकर मुक्तहोवे नहीं तो फिर यह तन मिलना बहुतकठिन है व अधर्म व पापकरने से नरकोंका दुःख अवश्य भोगकर सदा आवागमनमें फँसारहैगा व मरतीसमय हाथी व घोड़ा व द्रव्यादिक कुछ संगनहीं जाता इसलिये धनपाकर दान व धर्मकरना चाहिये जो सूमलोग धनजोड़कर मरजाते हैं उनको यमपुरीमें चोरोंके समान दण्ड मिलताहै व जिनपरिवारवालों को झूठसच बोलकर जन्मभर पालताहै उसदुःख में वहलोग कुछ सहायता नहीं करते व अपना शरीर भी गलसड़कर कुछ कामनहींआता इसलिये मनुष्यको अपना परलोक बनाने वास्ते ब्राह्मणको देवतातुल्य समझकर अच्छाभोजन खिलाना व उसकी सेवाकरना उचितहै इसमें परमेश्वर अतिप्रसन्न रहते हैं व गृहस्थको अपने परिवारवालोंका जोकोई मरजावे क्रिया व कर्म्म अवश्यकरना चाहिये व तीर्थपर रहने से मनमनुष्यका अधर्म की तरफ नहीं जाता और किसी जगहरहने में चित्त पापकी तरफ दौड़ताहै व कलियुगवासी जीव परमेश्वरका भजन व स्मरण करने व कथा व लीला सुननेसे कृतार्थ होतेहैं ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

गृहस्थाश्रम की कथा ॥

नारदजीबोले हे युधिष्ठिर गृहस्थाश्रमको देवता व पितरोंकेनामपर यज्ञ व श्राद्धादिकमें अच्छेकुलीन क्रियावान् वेद व शास्त्रजाननेवाले हरिभक्तब्राह्मणको भोजनकराना चाहिये ऐसाब्राह्मणखिलानेसे अतिपुण्यहोताहै जिसतरह अच्छीधरतीपर थोड़ाअन्नबोने से बहुतउत्पन्नहोकर ऊसरपृथ्वीपर कुछनहीं उपजता सो देवकर्म व पितरकर्ममें तीन ब्राह्मणसेकमकभी न खिलावै व यज्ञश्राद्धमें जीवहिंसा न करै देवता व पितरलोग जीवहिंसाकरनेसे प्रसन्ननहींहोते और सबयज्ञोंसे ज्ञानयज्ञ कथा व कीर्त्तन परमेश्वरकीकहना व सुनना अतिउत्तम व पवित्रहै और सबकर्मोंमें बड़ाधर्म्म यहजानो कि मनसा बाचा कर्मणासे किसीकाअनभल न चाहै और सन्तोष रक्खै जिनको सन्तोषनहींहोता वह बड़े २ पण्डित व ज्ञानीभी नरकवासकरतेहैं व गृहस्थको प्रतिज्ञाकिसीबातकी न करना चाहिये जो गृहस्थ अपनेधर्मसे विपरीतचलकर और ब्रह्मचारी अपनेव्रत व धर्मको छोड़देताहै व जो बानप्रस्थ अपनेतपसेधर्मको न मानकर जो संन्यासी लालचरखकर अपनीइन्द्रियोंका सुखचाहताहै वहलोग नामकेवास्ते आश्रमका रूपबनाये हैं परउस धर्मका फलउनकोनहींमिलता व हे राजन् चारोंवर्ण व चारों आश्रमको ऐसाउचितहै कि चैतन्यचोलापाकर दोतरहका कर्म्मकरै एकप्रवृत्ति व दूसरानिवृत्ति सोशास्त्रकी आ-

ज्ञानुसार प्रवृत्तिकर्म करनेवालाजीव चन्द्रमण्डलकेराहसे देवलोकादिकमेंजाकर अपने कर्मोंका सुखभोगताहै और अवधिबीतनेपर फिरसंसारमें जन्मलेकर आवागमनसे छुट्टी नहींपाता व निवृत्तिकर्मकरनेवाले सूर्यमण्डलके मार्गसे बैकुंठमें पहुँचकर जन्म व मरण से छूटजातेहैं सोहमनेदोनोंराह तुझकोबतलादिया जोगृहस्थ हमारेकहने व शास्त्रानुसार अपनेकर्म व धर्मसे रहै वह परमहंसपदवीको गृहस्थाश्रममेंभी पानेसक्ताहै व जोकोई संन्यास व बैराग्यलेकर फिर गृहस्थीकी चाहनाकरै उसकोकुत्तेकेसमान जो उवांतकरके खालेताहै समझना चाहिये परमेश्वरकीमायामें संसारीमनुष्य लपटकरनष्टहोरहे हैं जिस तरह रथकाघोड़ा जोताहुआ जिधरचाहै उधरखींचकरलेजावै रथकाकुछवशनहींचलता उसीतरहरथरूपी शरीरका मन चंचल घोड़ा अपनेकर्म्मोंसे जिसलोकमें चाहै वहांलेजाने सक्ताहै इसलिये मनुष्यतनमें शुभकर्म्मकरके बैकुण्ठ व स्वर्गकासुख भोगनाचाहिये व ज्ञानसे अधिकपदवी है जिसभक्ति व भजनके प्रतापसे मैं ब्रह्माकापुत्रहुआ वहकथासुनो पिछले महाकल्पमें हमउपबर्णनामगन्धर्व महासुन्दर उत्पन्नहोकर गानाअच्छाजानतेथे व अतिसुन्दरहोने से अनेकस्त्रियांमुझेचाहतीथीं सो मैंभी उनपर मोहितरहकर उनकेसाथ भोग व बिलासकरताथा सोएकदिन मैं बीचसभा बिश्वसर्जदेवताके जाकर गानेलगा पराचित्तमेरा एकस्त्रीसे उनदिनोंमें बहुतफँसाथा इसलियेउससमय गानामेरानहींबनपड़ा व अंगिराऋषीश्वरका कुरूपदेखकर मैंनेहँसदिया इसीअपराधसे उसदेवताने मुझेशाप देकरकहा तू शूद्रहोजा उसीशापसे मैं दूसरेजन्म एकब्राह्मणकी दासीकापुत्रहुआ वहांपर सत्संग व हरिभजन करनेकेप्रतापसे फिरमुझे नारदपदवीमिली सो हे युधिष्ठिर तुमबड़े भाग्यमानहो जिनकानामलेने व भजनकरनेसे मनुष्यकृतार्थहोकर [illegible] है वहीश्रीकृष्ण परब्रह्मपरमेश्वर दिनरात तुम्हारेसम्मुखरहकर तुम्हेंअपनाबड़ाजानते हैं ऐसाभाग्य दूसरेकाहोनाअतिदुर्लभहै व हमलोग ऋषीश्वर देवतादिकभी उन्हींकादर्शन करनेवास्ते तुम्हारेपास आयाकरते हैं सो श्यामसुन्दरके दर्शन व पूजाकरनेसे तुम्हारी मुक्तिहोनेमें कुछसंदेहनहीं है यहबचनसुनतेही राजायुधिष्ठिर व अर्जुनने श्रीकृष्णजीके प्रेममेंडूबकर बड़ाशोचकरके मनमेंकहा देखो परमेश्वर त्रिलोकीनाथको हमनेअपनाभाई जानकर उनसे नातेदारोंकेसमान कामलिया जबऐसाबिचारकर दोनोंभाई श्यामसुन्दर के चरणोंपर शिररखकर रोनेलगे तबश्यामसुन्दरने सैनमें नारदमुनिसेकहा कि तुमने किसवास्ते मेराभेदखोलदिया अबयहलोग नातेदारीकी प्रीतिछोड़कर मुझे ईश्वरभाव समझेंगे नारदजीबोले हे दीनानाथआजतकयहलोग तुम्हारीमायामें लपटेथे अबइनका मोह छुड़ाकर इन्हेंकृतार्थकीजिये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित यहसब महिमा व बड़ाई श्यामसुन्दरकीसुनतेही राजायुधिष्ठिरने अतिप्रसन्नहोकर बड़ेप्रेमसे श्री कृष्णजी व नारदमुनिकी बिधिपूर्वक पूजाकी व उसीदिनसे युधिष्ठिर श्यामसुन्दरकोपूर्ण ब्रह्मजानकर उनकाध्यान व स्मरणकरनेलगे व नारदमुनि वहांसे ब्रह्मलोककोचलेगये ॥

आठवां स्कन्ध ॥

परमेश्वरको हरिअवतारलेकर हाथीका प्राणबचाना व बामनअवतारधरकर राजाबलि से तीनपगपृथ्वी दानलेना ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजीका मन्वन्तरोंकी कथाकहना ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकरबोले हे शुकदेवस्वामी राजास्वायम्भुवमनुके बंशका हाल मैंनेसुना अबमन्वन्तरोंकानाम व जिस २ मन्वन्तरमें परमेश्वरने जो २ अवतार लियेथे उनकीकथा सुनाचाहताहूं सोकहिये शुकदेवजीबोले हे परीक्षित स्वायम्भुवमनुसे लेकर आजतक छःमन्वन्तरबीते हैं सोपहिले मन्वन्तरकीकथा जिसमें वही स्वायम्भुवमनु राजाहोकर दोपुत्रतीनकन्याउत्पन्नकियेथे तीसरे व चौथे व पांचवें स्कन्धमें तुमसेवर्णन करचुकेहैं उन्होंने तीसरीकन्याआकूतीनाम जो रुचिप्रजापतिको ब्याहीगईथी उसी मन्वन्तरसे यज्ञभगवान्ने अवतारलिया सो एकसमय राजास्वायम्भुवमनु सुभद्रानदी के तटपर एकपगसेखड़ेहोकर तपकरतेथे उससमयराक्षसोंने आनकर उनकेतपमें विघ्न करनाचाहा तबउन्हींयज्ञभगवान्ने राक्षसोंकेहाथसे स्वायम्भुवमनुको बचाकर तीनोंलोक की लक्ष्मीसमेत राज्यभोगा यहसबकथा पहिलेमन्वन्तरकी है दूसरास्वारोचिष नाममनु अग्निकापुत्रहुआ उसमें देवताआदिक मनुके बेटे व रोचननाम इन्द्र व तुषिताआदिक देवता व ऊर्जस्तम्भआदिक सप्तऋषिहुये व शिरस ऋषीश्वरके यहां विभवनाम परमेश्वरनेअवतारलेकर अट्ठासीहजारऋषीश्वरोंको ज्ञानउपदेशकिया तीसराउत्तमनाममनु राजाप्रियव्रतकापुत्रहुआ उसमें पवनआदिकमनुकेबेटे व सत्याजित्नाम इन्द्र व सत्य आदिक देवता व परमेश्वरआदिक सप्तऋषिहुये व धर्मकीसुनीतास्त्रीसे सत्यसेननाम परमेश्वरने अवतारलेकर पापी व दुष्टोंकानाशकरके सत्यकोस्थिरकिया चौथा तामस नाममनु उत्तमकाभाईहुआ उसमेंपृथुआदिमनुकेबेटे व विसखनाम इन्द्र व सत्यकआदि देवता व ज्योतिधर्मआदिक सप्तऋषिभये व हरिमेधा ऋषीश्वरकेयहां हरिनामपरमेश्वरने अवतारलेकर ग्राहसे गजेंद्रकोछुड़ाया इतनीकथा सुनकर परीक्षितने बिनयकिया महाराज जिसतरह परमेश्वरने गजको ग्राहसे छुड़ायाथा उसकीकथा वर्णनकीजिये ॥

दूसरा अध्याय ॥

शुकदेवजीका गजेंद्र व ग्राहकी कथाकहना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित परमेश्वर अविनाशीपुरुष जन्मलेने व मरनेसे रहितहैं

ब्रह्मा आदिकदेवता भी उनके आदि व अन्तको न जानकर निरङ्काररूप उनका प्रकट नहीं देखनेसक्ते जबकभी हरिभक्तोंपर दुःख पड़ताहै तब वहअपने भक्तकी रक्षाकरने वास्ते सगुणअवतार लेकर संसारमें एकनाम अपना प्रकटकरदेते हैं उसीतरह हाथीका प्राणबचानेवास्ते भी हरिने अवतारधारण कियाथा व कथा उसकी इसतरहपर है एक पर्व्वतत्रिकूट नाम दशहजार योजन लम्बा व चौड़ा व ऊंचाक्षीरसमुद्रके मध्यमें होकर तीनशिखर सोने व चांदी व लोहेके रखताथा व उसशिखरमें अनेकरंगके उत्तमरत्न ऐसे जड़ेथे कि जिसकाप्रकाश सूर्य्यसे अधिकथा व उसपहाड़पर देवता व गन्धर्वादिक अपनी २ स्त्रियोंसमेत रहकर विहारकरतेथे और वहां संगमरमरके कुण्डबने रहकर अनेकरंगकेपक्षी मीठे २ शब्द बोलतेथे व ऐसेउत्तम बगीचे अनेकरंगके पुष्प व फल लगेहुये वहांबनेथे जिसके देखनेसे मनसबका मोहिजाताथा व योजनपर्यन्त उनपुरुषों की सुगन्धउड़तीथी वहांपर एकतालाव बहुतबड़ा कमलफूलाहुआ होकर उसमें कच्छ मच्छ व ग्राहादिक रहतेथे सो एकदिन गजेंद्र सबहाथियोंका राजा जो उसपर्वत पर रहताथा जेठमहीनेमें दोपहरकेसमय प्यासाहोकर हजारहथिनी व कईहजार बच्चोंको साथलिये उसतालाबपर जलपीने वास्ते चला सो मदबहनेसे चारोंओर उसके भँवरे गूंजतेथे जबवह अपनेउमंगसे कि दशहज़ार हाथीकाबल रखताथा रास्तेमें झूमता व वृक्षोंकोगिराता व पत्तोंको खाताहुआ तपनकामारा तालावमें जाकरघुसा व जलपीके अपनीहथिनी व बच्चोंको सूंड़से पानीपिलाकर उनकेसाथ कल्लोलकरनेलगा तब उसके उद्धारका समय निकटपहुँचने से एकग्राहने जो उससे भी बलवान्था आनकर हाथीका पिछलापैर जलकेभीतर पकड़लिया सो हाथी व ग्राहसे युद्धहोनेलगा कभीगजेंद्र अपने बलसे ग्राहकोखींचकर सूखेमेंलेआता व कभीग्राह उसको खींचकर पानीमें लेजाताथा जब इसीतरह उनदोनोंको लड़ते २ हज़ारवर्ष बीतगये व कोईहथिनी व बच्चा अपने २ परिश्रमकरनेपर भी गजेंद्रको ग्राहसेछुड़ाने नहींसका तब अधीर्यहोकर उन्होंने समझा कि अबहाथी जीता नहींबचेगा इसकेसाथ हमलोग अपनाप्राणक्योंदेवें जब ऐसा बिचारकर हाथीको वहां अकेलाछोड़कर बनमेंचलेगये तब गजेंद्रने जिसकाप्राण कंठ में आलगाथा उन्हींके चलेजानेसे घबराकर विचारकिया देखो इसमहादुःख में कोई मेरासाथी न होकर हथिनी व बच्चोंने भी मुझेअकेला छोड़दिया व उनकी सहायता से भी कुछगुण न हुआ इससे मैंनेजाना कि मेरेपूर्वजन्मके पापोंने ग्राहरूपहोकर मेरा पैरपकड़ा है जैसाकर्म मैंने कियाथा वैसाफल भोगताहूं और यहसब देवता व गन्धर्वादिक अपने २ बिमानपर बैठेहुये मेरेयुद्धका कौतुकदेखते हैं इनमेंसे भी कोई मेराप्राण नहीं बचाता इसलिये मैं बीचशरण उसपरब्रह्मके जो कालको आदिले सबके मालिकहैं जाऊं तो मेराप्राणबचे ऐसा बिचारकर हाथी नारायणजी के चरणोंका ध्यान सच्चेमन से करने लगा ॥

तीसरा अध्याय ॥

गजेंद्रका परब्रह्मकी स्तुति करना ॥

शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित उससमय गजेंद्रने पूर्वजन्मके पुण्यसे परमेश्वरको ध्यानमें नमस्कारकरकेकहा मैं उनभगवान्की शरणहूं कि जिनकी कृपासे संसारीजीव चैतन्यहोतेहैं और जीवोंकीजड़ वही हैं व साराजगत् उन्हींसे उत्पन्नहोकर उनकेआश्रय पर रहताहै और वह परमेश्वर महाप्रलयमेंभी नाश न होकर सदास्थिर रहतेहैं जिसतरह बालक नट व भानमतीके खेलवाड़को नहींपहिंचानते उसीतरह ब्रह्मादिक देवताभी उनकेआदि व अन्तको नहींजानते जैसे अग्निकी चिनगारी उड़तीहैं और सूर्य्यका प्रकाश छिद्रमेंसे रजकेसमान दिखलाईदेताहै वैसे जिन परब्रह्म के सामने देवतालोग चिनगारी व रजतुल्यहैं मैं उन्हीं परमेश्वरको दण्डवत्करताहूं व जिनके बहुतसेनाम व स्वरूपहोकर प्रकटमेंकोईरूप उनकादिखलाई नहींदेता और वहआप मुक्तरूपहोकर सबकार्यकरतेहैं उनको मैंनमस्कारकरताहूं जिसपरमेश्वरके शरणागत मेरेऐसा पशुगया व जो अविनाशीपुरुष मुझे इसफंदे से छुड़ाने व अर्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष चारोंपदार्थ देनेवालेहैं उन्हें स्त्री व पुरुष व नपुंसक न कहनाचाहिये व सबजीवोंमें उन्हींकातेज रहताहै ऐसे सब जगद्व्यापक रामके मैंशरणहूं जो परमेश्वर सबगुणोंसे भरेरहकर योगी-श्वरोंको योग व तपकरनेकाफलदेते हैं वहीदीनानाथ इससमय मेरीरक्षाकरैं सिवाय उनके अबमैं किसीकाभरोसा नहींरखता हेदीनदयालु महाप्रभु मैं इसग्राहके मुहँसेछूटनेको यह स्तुति नहींकरता मायारूपी संसारीजालसे निकलनेवास्ते यहकहताहूं इसलिये मुझ-दीनपर दयालुहोकर मेरादुःखदूरकीजिये व हेपरब्रह्मपरमेश्वर तीनोंलोकके उत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाले सिवायतुम्हारे दूसराकोई ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो दीनों कादुःख छुड़ानेसके व हेजगद्गुरु जबतक मनुष्य अपनी सामर्थ्य व परिवारवालोंकाबल आप रखताहै तबतक उसकीकुछ इच्छा पूर्णनहींहोती सोमैंभी तुम्हारीमायामें लपटकर अपनीहथिनी व बच्चोंकाभरोसारखनेसे इसदुर्दशाको पहुँचा अबउनका आसरा छोड़कर तुम्हारीशरणआया सो हेदीनदयालु मुझेअपनेमरनेका कुछभय न होकर केवलइसबातका अतिशोचहै कि संसारीलोग ऐसाकहैंगे कि गजेंद्रकादुःख नारायणजीके शरणजानेसेभी नहींछूटा इसबातकी लज्जारखकर मेराकष्टदूरकीजिये नहींतो तुम्हारीशरणमें कोई न जावैगा आप अन्तर्यामीसे अधिकक्याविनतीकरूं हे परीक्षित यहस्तुतिसुनतेही परमे-श्वर अन्तर्यामी हरिअवतारने गजेंद्रको महादुःखी जानकर उसीसमय सुदर्शनचक्र अपना उठालिया व गरुड़पर बैठकर वैकुण्ठसेचले जबगजेंद्रने जिसकेकण्ठमें प्राण आगयाथा देखा कि वैकुण्ठनाथ सुदर्शनचक्र हाथमेंलिये गरुड़परचढ़े आकाशमार्ग से मेरी रक्षाकरनेको चलेआतेहैं तब उसनेएकपुष्प कमलका सूंड़सेतोड़लिया और ऊंचे

उठाकरपुकारा हे नारायण हे जगद्गुरु हे दीनानाथ हे भगवन् हे दुःखभंजन हे श्याम-सुन्दर हे ज्योतिःस्वरूप मैं तुम्हारेशरणागतहोकर दण्डवत्करताहूं जल्दीमेरी सुधिलेव जैसे त्रिलोकीनाथने यहदीनवचन उसदुखियारेकासुना वैसेसुदर्शनचक्रसमेत गरुड़पर से कूदकर पैदलदौड़े और वहांपहुंचतेही सुदर्शनचक्रसे ग्राहका मुखचीरकर मारडाला व हाथीको तालाबमेंसे खींचकर बाहर निकालदिया ॥

चौथा अध्याय ॥

ग्राहका गन्धर्वतन पाना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित जिससमय ग्राहमारागया उससमय देवतोंने आनन्द पूर्व्वक दुन्दुभीबजाकर पुष्पोंकीवर्षा हरिभगवान्परकी ऋषीश्वरआदिक उनकीस्तुति करनेलगे और वहग्राह परमेश्वरके स्पर्शकरतेही एकपुरुष महासुन्दर राजसीभूषण व वस्त्रपहिनेहुये आनकर नारायणजीके चरणोंपर गिरपड़ा व उसनेस्तुति व परिक्रमा करके हाथजोड़कर बिनयकिया महाराज मैं पिछलेजन्म हूहूनाम गन्धर्वथा सो एकदिन अपनीस्त्रियोंको बिमानपर बैठाकर विहारकोनिकला व बनमें एकतालाब बहुतअच्छा देखकर स्त्रियोंसमेत उसमें जलबिहार करनेलगा उसीजगह देवलऋषि भी नहातेथे सो मैंने अपनीअज्ञानता व स्त्रियोंके कहनेसे उनऋषिका उपहास बिचारकर स्नानकरते हुये गोतामारा व पैर ऋषीश्वरका पकड़कर पानीकेभीतर खींचलेगया जब वह गिरपड़े तब पैर उनकाछोड़कर तालाबसे बाहरनिकलआया व अपनीस्त्रियोंसमेत हँसनेलगा तब देवलऋषिने क्रोधितहोकर मुझेशापदिया कि हे गन्धर्व तैंने हँसीसे हमारापैर ग्राह के समान पकड़करखींचाथा इसलिये परमेश्वरसेचाहताहूं कि तू ग्राहतन में जन्मलेकर पशु व मनुष्योंकापैर जलकेभीतर पकड़ाकर यहशापसुनतेही मैंने अतिलज्जितहोकर उन से कहा मैंने अपनेकिये का फलपाया पर अब यह बतलाइये कि इसशापसे मेरा उद्धार कबहोगा तबऋषीश्वरबोले कि तू कईहजार बर्षतक ग्राहयोनिमें रहकर एकदिन गजेंद्र का पैरपकड़ेगा जब बैकुण्ठनाथ वारते छुड़ाने हाथीकेआनकर तुझेसुदर्शनचक्रसे मारेंगे तब फिर गन्धर्बतनपावेगा सो उनऋषीश्वरकी कृपासे आज आपकादर्शन जो ब्रह्मा व महादेव आदिकको जल्दीनहींमिलता सो मैंपाकर कृतार्थहुआ अब आज्ञादीजिये तो अपनेलोककोजाऊं जब वहगन्धर्व परमेश्वरसे बिदाहोकर दण्डवत्करके बिमानपर बैठ कर अपनेलोकको चलागया तब हरिभगवान्की आज्ञासे उसगजने भी वहतन छोड़ कर मुक्तिपाई व इन्द्रदमन राजाकास्वरूप चतुर्भुजीहोगया और दण्डवत् व स्तुतिकरने व परिक्रमालेने उपरान्त हाथजोड़कर बोला कि हे दीनानाथ मैं पूर्वजन्म इन्द्रदमन नाम राजाहोकर दिनरात हरिचरणोंमें ध्यानलगाये राजकाज करताथा एकदिन जप व ध्यानकरतेसमय अगस्त्यमुनि मेरेघरआयेथे सो मैं अपने अज्ञानसे उनकाआदर न

करके ज्योंकात्यों बैठारहा तब अगस्त्यजी क्रोधकरके बोले हे राजा किसशास्त्रमें ऐसा लिखाहै कि जब ब्राह्मण व ऋषीश्वर व वैष्णव किसीके स्थानपरआवै और मालिक घरका उनकाआदर व सन्मान न करके मतवाले हाथीकीतरह बैठारहै इसलिये परमेश्वर से मैंचाहताहूं कि तूहाथीका तनपावै यहशाप सुनतेही मैंने लज्जितहोकर उनसेबिनय किया हे मुनिनाथ मैंनेअपने करतबका फलपाया पर यह बतलाइये कि उसतनसे मेरी छुट्टी कबहोगी यहसुनकर मुनिनेकहा कि जब ग्राह तेरापैर तालाबमेंपकड़ेगा तब बैकुंठ-नाथ तेरीसहायताकरनेआवैंगे और ग्राहकोमारकर तुझे मुक्तिदेंगे सो मैं अगस्त्यमुनिकी दयासे तुम्हारादर्शनपाकर कृतार्थहुआ जब इसतरह बहुतसीस्तुति इन्द्रदमनने हाथजो-ड़कर किया तब नारायणजी प्रसन्नहोकरबोले हे इंद्रदमन जोकोई मुझे व तुझे इसपर्वत व क्षीरसमुद्र व कौस्तुभमणि व शंख व चक्र व गदा व पद्म मेरेशस्त्र व मत्स्य व कच्छप आदिक मेरेअवतार व गंगाआदितीर्थ ध्रुव व प्रह्लादादिक जो मेरेभक्तहैं उनको पिछली रात उठकर ध्यानकरे उसे अशुभस्वप्नेकाफलनहीं होगा व जो संसारीजीव इसगजेंद्र मोक्षस्तुति को मेरेनिमित्त करैंगे उनको मैं अन्तसमय इसीतरहमुक्तिदूंगा कि जिसतरह तेराउद्धारकिया है ऐसाकहिकर हरिभगवान्ने इन्द्रदमनको अपनेगरुड़पर बैठालिया व शंखबजाकर बैकुंठमें चलेगये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित जिसतरह हाथीको ग्राहने पकड़ाथा उसीतरह सबसंसारीजीव कालरूपी मुखमेंपड़े हैं जब गजेंद्रने दीनहोकर नारायणजीको पुकारा तब परमेश्वरने उसे ग्राहकेमुखसेछुड़ाया उसीतरह जब मनुष्य परमेश्वरकाध्यान व स्मरणकरैं तब जन्ममरणसेछूटकर भवसागरपारउतरसक्ते हैं व जो कोई विपत्ति में गजेंद्रमोक्षकथाकाध्यानकरेगा नारायणजी उसकादुःख अवश्य दूरकरेंगे ॥

पांचवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका कच्छप अवतारकी कथा कहना ॥

शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित हर मन्वन्तर में जो इकहत्तरचौकड़ी युगपर होता है नारायणजी एकअवतारलेकर धर्मकी रक्षाकरते हैं चौथेमन्वन्तरमें हरिअवतारहुआ यह उसकीकथा तुमको सुनाया और पांचवां मनुरैवतनाम तामसकाभाईहुआ उसमें बलि विंध्यादिक मनुकेबेटे व विभवनाम इन्द्र व ऊर्ध्वबाहुआदिक देवता व हिरण्यरोमादिक सप्तऋषिहुये व शुभर ऋषीश्वरकी बैकुण्ठनामस्त्री से बैकुण्ठभगवान्का अवतारहुआ और सुमेरुपर्व्वतपर सत्यलोकके सामने दूसराबैकुण्ठ लक्ष्मीजीकेरहनेवास्ते बनाया उसअवतार के गुणको कोईवर्णननहींकरनेसक्ता छठवांचाक्षुषनाम मनुहुआ उसमेंपुरआदिक मनुकेबेटे व मित्ररूपनाम इन्द्र व अभूआदिदेवता व हर्य्यश्वदेवआदिक सप्तऋषिहुये व विराजकी देवसम्भूतानामस्त्री से अजितनाम अवतार परमेश्वरकाहुआ जिन्होंने चौदहरत्न नि-कालनेवास्ते देवता व दैत्यों से समुद्रकामथनकराया व आप कच्छपकाअवतारधरा व

मन्दराचलपर्व्वतको जो मथानीबनाने से डूबाजाताथा अपनीपीठपरउठाया इतनीकथा
सुनकर परीक्षितनेपूंछा हे शुकदेवस्वामी भगवान्ने किसतरह पहाड़ अपनीपीठपरलेकर
समुद्रमथनकराया व उससे चौदहरत्न निकालकर देवतों को अमृत पिलाया सो कथा
दयाकरकेसुनाइये मनमेरा हरिचरित्र सुनने से तृप्तनहीं होता यहसुनतेही शुकदेवजी ने
अति प्रसन्नहोकरकहा हे राजा देवता व दैत्य दोनोंभाई कश्यपजी के पुत्रहोकर आपसमें
शत्रुतारखते हैं कभी इन्द्र दैत्योंको जीतकर देवतोंसमेत राज्यकरता है व कभी दैत्यलोग
देवतोंकोजीतकर तीनोंलोककाराज्य करते हैं जिसतरह यहां संसारीजीव पृथ्वीपरचलते
हैं उसीतरह देवलोकादिकमें भी धरतीहोकर ऋषीश्वर व महात्मालोग आकाशमार्ग से
वहांचलतेफिरते हैं सो एकसमय जब इन्द्र राजसिंहासनपरथा ऐरावतपरचढ़कर कहींको
चला जब रास्तेमें दुर्वासाऋषीश्वरको जो अपने चेलोंसमेत चलेआते थे देखकर इन्द्रने
दण्डवत्किया तब ऋषिने बड़ेहर्षसे एकपुष्पकीमाला जो गलेमेंपहिनेथे उतारकर इन्द्रके
पास भेजदिया जब उसकाचेला मालालेकर इन्द्रकेपासगया तब इन्द्रने वहमाला उस
से लेकर हाथी के मस्तकपर धरदिया व अभिमानसे यहबोला कि इससे सुगंधित और
उत्तम पुष्प देवलोकमेंहोते हैं व हाथीने वहमाला सूंड़सेगिराकर पैरकेनीचेमलडाला जब
उसचेलेनेजाकर यहबात ऋषीश्वरसे कहदिया तब दुर्वासा क्रोधकरकेबोले हे इन्द्र तैंने
राज्य व धनकेमदसे मेरीमालाका निरादरकिया इसलिये तेराराज्य व धन नष्टहोजावे
जब दैत्यों ने दुर्वासाऋषीश्वरके शापदेनेका समाचारसुना और युद्धकरके उनका राज्य
छीनलिया तब इन्द्रने देवतोंसमेतभागकर ब्रह्माजी से विनयकिया हे महाप्रभु दुर्वासाके
शापसे मेराराज्य व धन जातारहा कुछउपायकीजिये ब्रह्माजी बोले मैं रक्षाकरनेकी
सामर्थ्य नहींरखता चलो नारायणजी से विनती करें उनकीदयासे तुम्हारादुःख छूटेगा यह
बचनकहनेपर ब्रह्माने इन्द्रादिकदेवतोंको अपनेसंगलेलिया और क्षीरसमुद्रकेतटपर जाकर
यहस्तुति परमेश्वरसेकी कि हे दीनानाथ मैं तुम्हारीकृपासे सबजीवों को उनकेकर्मानुसार
चौरासीलाखयोनि में जन्मदेताहूं पर आप अपनीइच्छा से देवता व ब्राह्मण व हरिभक्तों
का दुःखछुड़ानेवास्ते अवतारलेते हैं उसमें मेराकुछवशनहींचलता सो इनदिनों दुर्वासा
ऋषिकेशापसे देवतोंकाराज्य दैत्योंनेछीनलिया इसलिये सबदेवतादुःखीहोकर तुम्हारेशरण
आये हैं आप दयालुहोकर इनकादुःख निवारणकीजिये सिवायतुम्हारे कोईदूसरामालिक
व बड़ानहीं है जिससेजाकर अपनादुःखकहैं संसारमें आपकानाम दीनदयालुप्रकटहै सो
उन्हें दीनजानकर दयालुहूजिये व शरणआयेकी लाजरखकर सहायताकीजिये ॥

छठवां अध्याय ॥

परमेश्वर का ब्रह्मादिकदेवतों को दर्शन देना ॥

शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जब ब्रह्मादिक देवतों के स्तुतिकरने से बैकुण्ठनाथ प्रसन्न

हुये तब उन्हों ने हजारसूर्य के समान तेजस्वीरूपसे गरुड़परआनकर देवतोंको दर्शन दिया वहप्रकाश देखते ही सिवायब्रह्मा के और सबदेवतों की आंखेंझपगईं व सुदर्शन चक्रादिक आठोंशस्त्रउनके अपनाअपनारूप धारणकिये चारों ओर खड़े थे सो ब्रह्माने दण्डवत् व परिक्रमाकरके हाथजोड़कर बिनयकिया हे दीनानाथ जल व थल व अग्नि व वायु व आकाश सब आपहीहैं हम व महादेव व दक्षप्रजापतिआदिदेवतातुम्हारेसामने चिनगारीसमानहोकर कुछसामर्थ्य नहींरखते व आप सर्वदा आनन्दमूर्त्ति रहते हैं कौन ऐसाहै जो तुम्हारे आदि व अन्त व महिमाकावर्णन करसके जिसमें देवतोंकाकल्याण हो वह कीजिये तब परमेश्वरने जलविहारकरना बिचारकरकहा हे ब्रह्मा इनदिनोंदैत्यों की दशा बलीहोकर दुर्बासाकेशापसे देवतोंके दिननिर्बलहैं अबमेरे निकट यहउचित है कि सबदेवतादैत्योंके पासजाकर उनसेप्रीतिकरके क्षीरसमुद्रमथैं व मन्दराचलपर्व्वतकी मथानीबनाकर उसमेंवासुकिसर्प की रस्सीलगावैं उससमुद्रमेंसे अमृत आदि चौदहरत्न अतिउत्तम निकालकर वहअमृत देवतोंकोपिलाऊंगा कि उसकेपीनेसे देवता अमरहोकर दैत्योंकोजीतके अपनाराज्य पावैंगे यहबातसुनकर देवतोंने बिनयकिया महाराज दैत्यलोग हमसेबलवान्हैं जबअमृतछीनकर पीलेवैंगे तबहमारा क्याबश चलैगा परमेश्वर बोले कि तुमलोग धैर्यरक्खो हमकिसी उपायसे अमृततुम्हैं पिलादेवैंगे दैत्योंको सिवायपरिश्रमके कुछलाभ न होगा तुमउनसे प्रीतिकरके अपनाअर्थ निकाललेव जिस तरह सर्पने जालमेंफँसकर चूहेसे मित्रताकरके अपनाकार्य सिद्धकियाथा उसका इतिहास महाभारतमें विस्तारपूर्वकलिखाहै जोलोग परमेश्वरकी शरणमें रहतेहैं उनका सब मनोरथ सिद्धहोताहै जो बात दैत्यलोगकहैं उसेमानलेना अधिकलोभ न करना जिसमें तुम्हारी उनकीप्रीति बनीरहै यहआज्ञादेकर नारायणजी बैकुण्ठकोपधारे व जबदेवता उनकीआज्ञासे बलिकेपास जोउनदिनों दैत्योंकाराजाथा पहुंचे तबराजाबलिने मनमें कहा देखोइन्द्र व वरुण व कुबेरादिक देवता जोमेरेसाथ सदाशत्रुतारखतेथे आज बिना शस्त्रगहे मेरीशरणआये हैं इसलिये जोबात यहलोगकहैं वहमाननी चाहिये ऐसाविचार कर राजाबलिने देवतोंसेपूछा कि तुमलोग किसइच्छासे यहांआये अपनावृत्तान्त कहो तब इन्द्रबोला कि हमतुम दोनोंदेवता व दैत्य कश्यपजीके पुत्र आपसमें भाईहैं सो मैं ने बिचारा कि कोईऐसा उपायकरें जिसमें बृद्धापन व मृत्यु न आवै और बहुतसन्तान उत्पन्नहों इसीइच्छासे मैं ब्रह्माकेपास गयाथा ब्रह्माहमलोगोंको नारायणजीके यहांलेगये उन्होंने हमारीबिनय सुनकरकहा कि तुमलोग राजाबलि आदिक अपने भाइयोंको साथलेकर क्षीरसमुद्रको मथनकरो व मन्दराचलकी मथानीबनाकर बासुकिनागकी उस में रस्सीलगावो जिसतरह दहीमथनेसे घी निकलताहै उसीतरह क्षीरसमुद्र मथनकरने से अमृत आदिक चौदहरत्न निकलैंगे सो तुमलोगोंको वह अमृतपीनेसे बुढ़ापा व मृत्यु का खटकाछूटकर सदातरुणाई बनीरहैगी इसीवास्ते हमलोगआये हैं कि इसकाममें तुम

लोग भी हमारेसाथ प्रीतिरखकर सहायताकरो कि जिसमें देवता व दैत्य दोनोंभाई अमृतपीकर अमरहोजावें हे राजाबलि तुम सबदेवतोंके मालिकहोकर रहना हमलोग तुम्हारेआधीन रहेंगे यहसुनकर राजाबलि व दूसरेदैत्योंने कहा कि इसकाममें हमलोग तुम्हारासंगदेंगे पर अमृतआदि जोवस्तु समुद्रसे निकले उसकोबांटलेवैंगे देवताबोले बहुत अच्छा तुम्हाराकहना हमैं अङ्गीकारहै फिर सबदेवता व दैत्योंनेजाकर बड़ेपरिश्रमसे मन्दराचलकोउखाड़ा जबउसे समुद्रकिनारे लेचले तब कईदेवता व दैत्य घायलहोकर मरगये तबउन्होंने हारमानकर पर्व्वतको रास्तेमें धरदिया व देवता व दैत्योंने अपना अभिमानटूटने से परमेश्वरका ध्यानकरके विनयकिया हे बैकुण्ठनाथ बिनादया करने व आवने आपके यहपर्व्वत हमलोगोंसे समुद्रतक नहीं पहुंचसक्ता जैसे भगवान् अन्तर्यामीने उनका दीनबचनसुना वैसे गरुड़परबैठकर वहांआये तब देवता व दैत्योंने दंडवत् व स्तुतिकरके कहा कि महाराज हमलोगोंसे यहपर्व्वत क्षीरसमुद्रतक नहीं पहुंचने सक्ता थोड़ीदूर लेआनेमें कईदेवता व दैत्यघायलहुये व मरगये यहबचन सुनतेही परमेश्वर दीनदयालुने अमृतदृष्टिसे देखकर घायल व मरेहुओंको अच्छाकरके जिलादिया व बायेंहाथसे मन्दराचलको उठाकर गरुड़की पीठपर धरलिया व सबदेवता व दैत्यों को भी उसीगरुड़पर बैठाकर एकक्षणमें समुद्रकिनारेजापहुंचे जबपर्व्वत उतारकर वहां से गरुड़को बिदाकिया तबदेवता व दैत्य उनकी स्तुतिकरनेलगे ॥

सातवां अध्याय ॥

क्षीरसमुद्रका मथना ॥

शुकदेवजी बोले कि हे परीक्षित जबपरमेश्वरने समुद्रकिनारे पहुँचकर देवता व दैत्योंको वासुकिनागके लानेवास्ते आज्ञादी तबउन्होंने पातालमेंजाकर उनसे कहा कि नारायणजीकी आज्ञासे मन्दराचलमें तुम्हें लपेटकर समुद्रमथा जावेगा सो तुमको बुलानेआये हैं चलो यह सुनकर वासुकिनागबोला कि पर्व्वतमें लपेटनेसे मेरे कोमल अंगको दुःखहोगा इसलिये मैंनहीं चलसक्ता देवता व दैत्योंने उत्तरदिया कि परमेश्वर ने बुलायाहै सोउनकी आज्ञामानकर अवश्यचलनाचाहिये यहबचन सुनतेही जबवासुकिनाग लाचारीसे नारायणजीके पासगया तब बैकुण्ठनाथबोले हे वासुकिनाग तुम कुछ शोचमतकरो तुम्हें कुछदुःख न होगा व अमृतनिकालनेमें तुमभी भागपावोगे जब देवता व दैत्योंने वासुकिनागसे पर्व्वतलपेटकर समुद्रमेंडालदिया व मन्दराचल पानी पर नहीं ठहरकर डूबनेलगा तबदेवता व दैत्योंने परमेश्वरसे विनयकिया हे महाप्रभू पहाड़पानीमें डूबाजाताहै हमाराबल कुछ कामनहींकरता समुद्रकिसतरहमथें यहबचन सुनतेही नारायणजीने एकरूप अपना कच्छपअवतार लाखयोजन लम्बा व चौड़ासमुद्रमें धारणकरके वहपर्व्वत अपनीपीठपर उठालिया जब वहपहाड़ जलपर ठहरगया

तब भगवान्जीने देवता व दैत्योंसे कहा कि पहिले तुमलोग गणेशजीका पूजनकरलो जिसमेंतुम्हारा मनोरथसिद्धहो व उत्पत्तिगणेशजीकी इसतरहपरहै कि एकदिनपार्वतीजी बैठीहुई महादेवके पंखाहांकतीथीं सो उनकेबालक उत्पन्नहुआ सोपार्वतीजी उसपरप्रेम से देखनेलगीं तो पंखाहाथसे गिरपड़ा इसीकारण शिवजीने क्रोधितहोकर एकत्रिशूल उसबालकको ऐसामारा कि शिरउसका कटकर न मालूमकितनीदूरगिरा यहदशा देख कर पार्वतीजीने कहा कि यहमेरापुत्रथा तुमने क्योंमारा अबफिर इसकोजिलादो नहीं तो मैंभी अपनातनु छोड़दूंगी यहबचन सुनकर महादेवजी बोले कि इसबालक का मस्तक बहुतदूर चलागया वहनहीं आसक्ता उत्तरदिशा शिरकरके जोजीव मरापड़ाहो उसकाशिरलेआवो तोमैं इसेजिलादूं खोजनेसे एकहाथी उत्तरशिरकिये मरा महादेवजी के गण लेआये जैसे उसबालकके धड़में वहशिरजोड़कर महादेवजी बोले उठबैठ वैसेवह बालकजीकर उठखड़ाहुआ तब शिवजीने उसकानाम गणेशजीरखकर ऐसावरदानदिया कि आजसे तीनोंलोकमें जिसकेयहां शुभकार्यहो वहप्रथम गणेशजीको पूजकर पीछे दूसराकामकरै तो कार्यउसका अच्छीतरह सम्पूर्णहोगा उसीदिनसे सबलोग गणेशजी को पूजते हैं सो श्यामसुन्दरकी आज्ञापाकर देवता व दैत्योंनेभी पहले गणेशजीकीपूजा की फिर नारायणजीकी आज्ञासे देवतोंने शिरवासुकिनागका पकड़कर दैत्योंसेपूंछधरने वास्तेकहा तब दैत्यलोग अभिमानसे बोले कि हम किसबातमें तुमसेकमहैं जो अशुद्ध अंग पूंछकोपकड़ैं यहसुनकर परमेश्वरने देवतोंसेकहा तुम्हींलोगपूंछपकड़ो सो दैत्यलोग शिर व देवता व नारायणजी पूंछ वासुकिनागकी पकड़कर समुद्रको दहीकेसमान मथने लगे उससमय घूमनामन्दराचलका कच्छपरूपभगवान्को कैसा मालूमहोताथा कि जैसे कोई पीठमें खुजलाताहै जब दैत्यलोग समुद्रमथतेसमय शिर वासुकिनागका खींचनेलगे तो उसकेफुफकारसे ऐसी ज्वालानिकली कि शिरउनकाजलनेलगा तब दैत्यों ने फिर चाहा कि हमलोगपूंछपकड़ें उससमय नारायणजीबोले कि जोबाततुमने अपनीइच्छासे अंगीकारकिया वह छोड़ना न चाहिये जब देवता व दैत्य समुद्रमथते २ थकगये तब उन्हों ने नारायणजी से विनयकिया कि हे त्रिलोकीनाथ अबहमें सामर्थ्य नहींरही जो समुद्रमथनकरैं यहबचनसुनतेही जब परमेश्वरने कुछबलअपना उनकोदेकर धैर्यदिया तब वहलोग नवीनबलपाकर फिर समुद्रमथनेलगे सो प्रथम ऐसाबिषहलाहल समुद्रसेनिकला कि जिसकी गरमीपाकर सब जलचर समुद्रके व्याकुलहोगये व देवता व दैत्योंने भी घबड़ाकरकहा कि हे बैकुण्ठनाथ इस बिषरखनेका कहीं ठिकानाकीजिये नहींतो हम लोग इसकीगर्मी से मराचाहते हैं तब भगवान्जीबोले इसगरलको सिवाय महादेवजीके दूसराकोई अंगीकार नहींकरसक्ता तुमलोग उनकी विनतीकरो यहबचनसुनतेही दैत्य व देवतोंने महादेवजीसे हाथजोड़करकहा हे महाप्रभु इसविषसे तीनोंलोकके जीव जलचर मरनेचाहते हैं इसको अंगीकारकीजिये सिवायतुम्हारे दूसरेमेंऐसीसामर्थ्य नहीं है कि जो

विषकीगर्मीसहनेसकै यहबातसुनकर शिवजीनेविचारा कि मैं वैष्णवहूं जोकोई दूसरेका दुःख देखकर उसकाकष्ट न निवारणकरे उसे वैष्णवकहना न चाहिये इसलिये इनका कष्टछुड़ानाउचितहै यहशोचकर शिवजी ने पार्वतीकीओरदेखा तब पार्वतीजी बोलीं हे स्वामी देवतालोग शरणआयेहैं जिसमें इनकाकल्याणहो सो कीजिये व नारायणजीने भी शिवजीसेकहा सबकोई देवहोकर आपमहादेवहैं इसलिये प्रथम जोवस्तुसमुद्रसे निकली है वह आपको भेंटचाहिये सो तुमइसे अंगीकारकरो सबजीवों का दुःखहरना आपको उचितहै तब महादेवजी प्रसन्नहोकरबोले सचहै इसगरलको सिवायमेरे दूसराकोई पीने नहींसक्ता इसे पेटमेंउतारजाऊं तो रामचन्द्रजीको जो मेरेहृदयमें रहते हैं दुःखपहुंचेगा इसलिये कण्ठमेंइसविषको रक्खेरहना उचितहै ऐसाकहकर शिवजीने वहविष जो फेन के समान समुद्रसे निकलाथा एकीबेरसब मुँहमेंडाललिया सो खातीसमय थोड़ासाविष पृथ्वीपरगिरपड़ाथा उसीसे सिंगिया व बच्छनागआदिक उत्पन्नहोकर आजतक संसारमें प्रकटहैं व महादेवजीवहजहर अपनेकंठमें रक्खेरहे इसीकारण गलाउनकाबाहरसे नीला रहकर नीलकंठनाम प्रसिद्धहुआ व नारायणजीने अमृतदृष्टिसे देवता व दैत्योंको देखा तो सबगर्मीजिहरकी उनकेअंगसेदूरहोगई व देवतोंने शिवजीकी बहुतस्तुतिकी ॥

आठवां अध्याय ॥

कामधेनुगौ व अमृतआदिक समुद्रसेनिकलना ॥

शुकदेवजीबोले कि हे राजन् जब फिरदेवता व दैत्य परमेश्वरकी आज्ञासे समुद्रको मथनकरनेलगे तो दूसरीबेरकामधेनुगौ अतिसुन्दर समुद्रसे निकली तब नारायणजी ने कहा इसगायसे संसारीबस्तुजोमाँगो सो मिलती है यहसुनकर देवता व दैत्योंने उसगौ को लेनेचाहा तब बैकुंठनाथबोले यहगऊ ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको देनीचाहिये वहलोग बनबासकरके कन्दमूलादिकखाकर दिनरातहरिभजनकरते हैं और ब्याह व यज्ञादिकमें उनको राजासे भिक्षामाँगनीपड़ती है यहगायउनकेपासरहैगी तो वहलोग निश्चिन्त रहकर परमेश्वरकाध्यानकरेंगे वेद व शास्त्रमेंभी ऐसालिखाहै कि जब मनुष्य कोई काम अपनेअर्थवास्तेकरै तो पहले उसलाभमेंसे ब्राह्मणको अवश्यकुछदेनाचाहिये जिसमें उस का मनोरथ सिद्धहो यहबचनकहके भगवान्जी वहगौ बशिष्ठ व दुर्वासाआदिक ऋषी-श्वरोंकोदेकरबोले कि तुमइसगौको देवलोकमेंरक्खो जबब्राह्मण व ऋषीश्वरों को किसी बस्तुकीचाहनाहो तो गायको अपनेस्थानपरलेआकर उससे वह जो पदार्थचाहैं लेवैं व फिर गौकोवहांपहुंचादेवैं गौ देकर जबफिर समुद्रमथनेलगे तब नारायणजीने कहा अब जो समुद्रसेनिकले उसमें एकवस्तु दैत्य व एक देवतालेवैं तीसरीबेर उच्चैःश्रवानामघोड़ा श्वेतवर्ण अतिसुन्दर निकला सो दैत्यों ने कहा कि यहघोड़ा राजाबलिके चढ़ने योग्यहै नारायणजी ने वहघोड़ा दैत्यों को देदिया जो चौथीबेर ऐरावतहाथी श्वेतवर्ण चौदन्त

प्रकटहुआ वह देवतों को दिया तब दैत्योंने कहा कि हाथी हमको दीजिये देवता हमसे घोड़ाफेरलेवैं श्यामसुन्दरबोले जोबातठहरगई उससेफिरना न चाहिये पांचवींबेर कौस्तुभ-मणि अतितेजमान् और महासुन्दरनिकली उसे देखकर नारायणजी बोले यह हमलेवैंगे जब दैत्यों व देवतों ने प्रसन्नहोकर कहा बहुतअच्छा तब त्रिलोकीनाथने वहमणिपिरो कर गलेमें पहनलिया छठवींबेर पारिजातकनाम एकवृक्षनिकला तब नारायणजी बोले इसवृक्षसे जो मांगो सो देगा उसे दैत्योंनेलिया कदाचित् कोईकहे कि वहवृक्ष इन्द्रलोकमें किसतरहगया सो जाननाचाहिये कि जब चौदहरत्नसमुद्रसे निकलनेउपरांत देवता व दैत्यों में युद्धहुआ तबदेवता दैत्योंको जीतकर वहवृक्ष देवलोकमेंलेगये सातवींबेर रम्भा नाम अप्सरा महासुन्दरी क्षीरसागरसे निकलकर किसीको नहींमिली वेश्याहोकररही आठवींबेरलक्ष्मीजी अतिसुन्दरी व तेजमान् उत्तमभूषण व ललितवस्त्रपहिने व दहिने हाथमें कमलकापुष्प व बायेंहाथमें मालालिये समुद्रसेनिकलीं उनकारूपदेखतेही सिवाय नारायणजीके सबदेवता व दैत्योंने उनपरमोहितहोकर मथनासमुद्रका छोड़दिया व उनके चौगिर्दआनकर चाहा कि इन्हें लेलेवैं तब लक्ष्मीजीबोलीं मुझेबजोरी कोईनहीं लेसक्ता जिसमेंसबगुणहोंगे उसकेपासमैं अपनीइच्छासे रहूंगी मेरेनिकटदेवता व दैत्यदोनों एकसे हैं तुम सबदेवता व दैत्य व तपस्वी व ऋषीश्वर व ब्राह्मण व गन्धर्वादिक अपनी २ पांति बांध कर बैठो उनमें जिसपर मेरा मनचाहेगा उसकेगले में जयमालडालकर उसेपति बना-ऊंगी जबउनकी आज्ञानुसार वहसब पांतिबांधकरबैठे तबपहिले लक्ष्मीजी दैत्यों को देखकर बोलीं राज्य इनलोगोंका सदास्थिरनहीं रहता और यहलोग अभिमानमें भरे रहकर पापकरतेहैं इसलिये इनकीसंगति करना न चाहिये फिरतपस्वी व ऋषीश्वरोंको देख कर कहा यहलोग महाक्रोधीहोकर थोड़ाअपराध करनेपरभी बड़ाभारी शापदेतेहैं फिर ज्ञानियोंको देखकरबोलीं यहलोगनियम व आचारसे न रहकर अपनेमनमाना कर्म करतेहैं फिरदेवतोंको देखकर कहा यहलोग निर्बलहोकर जबइन्हें कुछविपत्ति पड़ती है तब नारायणजीके शरणमेंजाकर उनसेसहायता लेतेहैं इसलिये इनको अङ्गीकारकरना उचितनहीं है उसीसमय पृथ्वीने अतिउत्तम रत्नजटितसिंहासन लाकर उसपर लक्ष्मी जीको बैठाला व गंगा व यमुना व नर्मदा आदिक तीर्थस्त्रीरूपहोकर स्वर्णके कलशोंमें अपना २ जललेआये व कामधेनुओंने दूध व दही व गोबर व गोमूत्र व घृतमिलाकर पंचगव्यबनाया तबपृथ्वीने पंचगव्य व तीर्थोंकेजलसे लक्ष्मीजीको स्नानकराया व अतिउत्तमभूषण व वस्त्रपहिनाकर यथायोग्य उनका शृंगारकिया तबलक्ष्मीजी ब्रह्माको देखकर बोलीं यहबूढ़े हैं फिरइन्द्र व वरुण व कुबेर देवतोंको देखकरकहा इनको आठों पहर अपनीपदवी बढ़नेकी इच्छा बनीरहती है फिरलोमशआदिक ऋषीश्वरोंको देखकर बोलीं इनलोगोंकी इतनीबड़ी आयुर्दा है कि कितने ब्रह्मा इनके सामने मर जाते हैं सो दीर्घआयुहोनेमें निर्बलहोकर अशुभकर्म करनेसे नहींडरते व मृत्युकाभय

नहींरखते कि जोमनुष्यमरनेसे डरताहै उससेकुकर्मनहींहोता फिर लक्ष्मीने नारायणजी के सन्मुखजाके उनकारूप व तेज और बल व गुण देखकरकहा यहत्रिलोकीनाथ सब गुणोंसे जैसामनमेरा चाहताथा भरेहैं पर एकदोष इनमेंभी है कि संसारीवस्तुकी इच्छा व किसीकामोह नहींरखते व कृपा व दयाइनकी कुछजप व स्मरणके आधीननहीं है देखोउद्धवभक्त जोजन्मभर इनकीसेवामें रहा उसको इन्होंने आज्ञादी कि तुमबदरिकाश्रम में जाकर तपकरो तबतुम्हारी मुक्तिहोगी और वहकेवट जिसने इनकेपैरमें बाण माराथा उसको बिमानपर बैठाकर उसीसमय बैकुण्ठ में भेजदिया यहसबदोष होनेपर भी इनसे उत्तमत्रैलोक्य में दूसराकोई नहीं है इसवास्ते मैं इन्हींकाचरणकमल दाबकर अपनाजन्म स्वार्थकरूंगी यहकहकर लक्ष्मीजी ने वहीमाला जो हाथमें लियेथीं बैकुण्ठनाथ के गलेमें डालदिया तब भगवान्जी बोले तू आठोंपहर हृदयमें बसीरहैगी यह देखतेही देवता व दैत्योंने अतिहर्षसेकहा हे लक्ष्मीजी तुमने बहुतअच्छाकिया जो नारायणजीके गलेमें मालाडाली उसीसमय समुद्रने मनुष्यरूपहोकर वेदानुसार लक्ष्मी जीका विवाह नारायणजीसे करदिया व बिश्वकर्माने आभूषण व पृथ्वीने मोती व रत्न की माला व नागोंने कुण्डललाकर लक्ष्मीजीको पहिनाया व ब्रह्मा व महादेवआदिक देवतोंने आनन्दपूर्वक लक्ष्मीनारायणपर पुष्पोंकीवृष्टिकी व दैत्य व देवतोंने दुन्दुभी आदिक बड़ेहर्ष से बजाया व इन्द्रकी अप्सरोंने आकाशमार्गमें आनकर नाच दिखलाया व गन्धर्बोंने गानासुनाया उससमय तीनोंलोक में मंगलाचारहुआ व लक्ष्मीजी के दर्शनसे देवता व दैत्यों के अंगमें बलआगया फिरनारायणजी की आज्ञासे देवता व दैत्य समुद्रमथनेलगे तबनवींबेर कन्यारूपहोकर बारुणीसमुद्रसे निकली उसकोदैत्योंने लेलिया दशवींबेर एकपुरुष अतिसुन्दर व तेजवान् धन्वन्तरिनाम वैद्य परमेश्वरके अवतार एकयज्ञ का भाग लेनेवाले एकहाथ अमृतकाकलशा व दूसरेहाथमें एकहर्रातकी लिये हुये समुद्रसेनिकले उनको देखतेही देवता व दैत्योंने प्रसन्नहोकर कहा कि इसअमृत के वास्ते हमलोगोंने इतनापरिश्रमकियाथा सो निकला यहकहतेही एकदैत्यने दौड़कर वहकलशा धन्वन्तरिवैद्यसे छीनलिया तबदेवताबोले इसमें आधाभाग हमाराभी है दैत्यों ने अधर्मसे उत्तरदिया कि हमारेपीने से जो बचेगा सो तुमको भी देवेंगे जबदेवतोंने हारमानकर यहसमाचार नारायणजीसे कहा तब बैकुण्ठनाथबोले तुम्हारेकहनेसे यह लोग अमृत न देवेंगे पर मैं अपनी मायासे कोईउपाय करके अमृत तुम्हें पिला दूंगा तुमशोच मतकरो उनके कहने से देवतों को धीर्यहुआ व दैत्य अमृतका कलशा धन्वन्तरिसे छीन लेगये तब जो दैत्य उनमें बलवान् थे एक दूसरेसे वह कलशा छीन लेताथा किसी दैत्यको इतनासावकाश नहींमिलताथा कि जोउसअमृतको पीनेसके जिससमय नारायणजी मोहनीमूर्तिस्त्रीरूपसे अतिसुन्दर व उत्तमभूषण व बस्त्रपहिने प्रकटहोकर जहांपर देवता व दैत्यथे उसओरचले इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले

हे राजन् मोहनीरूप उसेकहतेहैं कि जिसकारूप देखनेसे देवता व दैत्य व मनुष्य व योगीश्वर व मुनि व यती सबमोहितहोकर विह्वल हो जाते हैं वहीस्वरूप परमेश्वरने धराथा ॥

नवां अध्याय ॥

मोहनीरूपभगवान्‌का दैत्योंसे अमृतका कलशालेना ॥

शुकदेवजीबोले कि हे परीक्षित जबदेवता व दैत्योंने उसमोहनीरूपस्त्रीको अपनी ओर आतेदेखा तब वहलोग उसकेरूपपर मतवालेहोकर अमृतपीना भूलगये यहदशा देखकर जबवहरूपवती दैत्योंकी ओर कटाक्षकरतीचली तबउन्होंने अतिप्रसन्न होके आपसमेंकहा देखो हमाराभाग्य उदयहुआ जो ऐसी महासुन्दरी जिसकेबराबर तीनों लोकोंमें दूसरीस्त्री न होगी हमारीओर चलीआती है हमलोग अमृतपीनेका झगड़ा जो आपसमें रखतेहैं उसेनिपटानेवास्ते इसस्त्रीको पंचमानकर कलशाअमृतका उस के सामनेधरदेवें जोवहअपनेधर्मसे सबकोबांटकर पिलादेवै उसेपीलें आपसका झगड़ा अच्छानहींहोता यह सम्मतकरके दैत्योंने कलशाअमृतका मोहनीरूप भगवान् के पास लेजाकरकहा हे महासुन्दरी इसअमृतपीनेवास्ते हमलोगोंमें बिरुद्धहै इसलिये अपनीइच्छासे तुम्हें पंचमानकर चाहतेहैं कि यहअमृत तुम अपनेहाथसे बांटकर सबकोपिलादो जबमोहनीरूपभगवान् उनकीबातोंपर कुछध्यान न करके आगेचले व दैत्योंने उनकेचरणोंपर गिरकर अमृतबांटनेवास्ते अतिबिनतीकी तबमोहनीरूपने दैत्योंकीओर देखकर मुसकरादिया जब वह मुसकान देखकर दैत्यलोग अचेतहोगये तब मोहनीरूप भगवान्‌ने दैत्योंको अपनेरूपपर मोहितदेखकर कहा कि तुमलोग मुझ वेश्यास्त्रीसे कहांकीजान व पहिचानरखकर मुझे अमृतबांटनेवास्ते पंचमानतेहो ज्ञानी को वेश्याका कभी बिश्वास न करनाचाहिये और जो तुम अमृतबांटदेनेकेवास्ते ऐसा हठकरतेहो तो मेरेनिकट अमृतनिकालनेमें तुम्हारा व देवतोंका परिश्रमबराबरहै तुम्हारी प्रसन्नताहो तो मैं आधा २ अमृत दोनोंकोपिलादूं व तुमलोग अधर्मसे अमृत जो लेने चाहतेहो ऐसीझूंठीपंचायत मैं नहींकरती यह बचनसुनकर दैत्योंनेकहा हे प्राणप्यारी तुमसत्यकहतीहो हमलोग अधर्मसे सब अमृत अकेले पीनाचाहतेथे अब हमने तुमको अपनापंचमाना इसकारण हम तुम्हारी आज्ञापालनकरैंगे जो चाहो सो करो जब मोहनी रूप भगवान्‌ने जाना कि दैत्यलोग अच्छीतरह हमारेबशहोचुके तब दैत्य व देवतोंसे कहा तुमलोग स्नानकरके पवित्रहोकर अग्निमें आहुतिदेव व दोनों पृथक् २ पंक्तिबांध कर कुशके आसनपरबैठो तो मैं अमृत बांटकर पिलादूं जब मोहनीरूप भगवान्‌के कहने से देवता व दैत्य अच्छे अच्छे भूषण व बस्त्र पहिनकर पृथक् २ बैठे तब मोहनीरूप भगवान् दैत्योंसेबोले कि मैं पहिलेदेवतोंको अमृतदेकर पीछे तुम्हें पिलाऊंगी दैत्योंने कहा हमें तुम्हाराकहना सब अंगीकारहै यह सुनतेही मोहनीरूप भगवान्‌ने कलशा

अमृतका उठालिया और देवतोंकीपंक्तिमेंजाकर उन्हें अमृतपिलाना और दैत्योंकीओर तिरछी चितवनसेदेखना आरम्भकिया सो दैत्यलोग उसीचितवनके मदमेंमतवालेहोकर पीनाअमृतका भूलगये जब मोहनीरूप भगवान् सब देवतोंको अमृतपिलातेहुये पंक्तिके अन्तमें जहांसूर्य्य व चन्द्रमाबैठेथे पहुँचे तब राहुनामदैत्यने कलशादेखकर बिचारा कि इसस्त्रीने हमलोगोंको अपनेरूपपर मोहितकरके सब अमृत देवतोंको पिलादिया व दैत्योंको अमृतपीनेसे निराशरक्खा जब ऐसाबिचारकर उसदैत्यने अपनास्वरूप देवतों के समान बनालिया और सूर्य्य व चन्द्रमाकेमध्यमें बैठकर अमृतपिया तब चन्द्रमाने चिल्लाकर मोहनीरूपसे कहा कि यह दैत्यहै जैसे यहवचन मोहनीरूप भगवान्नेसुना वैसेही बचाहुआ अमृत चन्द्रमापर गिराकर सुदर्शनचक्रसे राहुका शिरकाटलिया पर वह दैत्य अमृतपीनेकेप्रतापसे नहींमरा शिर व धड़ उसका अलग २ दोस्वरूपहोकर उठखड़ाहुआ सूर्य्य व चन्द्रमाने मोहनीरूपसे कहा कि महाराज अब इसेमतमारो छोड़ देव जितनेभाग इसकेहोंगे अमृतपीनेकेप्रतापसे उतने स्वरूपहोकर यहजीतारहैगा यह सुनकर मोहनीरूप भगवान्ने राहुसेकहा कि तैंने देवतोंमें बैठकर अमृतपिया इसलिये अब तू दैत्योंकालक्षण व स्वभाव छोड़दे सूर्य्यादिक सातग्रहोंके साथरहकर अपनीपूजा लियाकर उसी दिनसे नवग्रहभये उसके मस्तकको राहु और धड़को केतु कहते हैं सूर्य्य व चन्द्रमाकेबतलानेसे मोहनीरूप भगवान्ने राहुदैत्यका शिरकाटलिया इसी कारण उसनेशत्रुतारखकर अमावास्याके दिन व पूर्णिमाकीरातको जब अतिप्रकाश सूर्य्य व चन्द्रमामेंहोता है तब वहीराहु व केतु आनकर उनको निगलनेचाहते हैं जिसको चन्द्रग्रहण व सूर्य्यग्रहणकहतेहैं उससमय भगवान्जीकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र उनकी रक्षाकरतेहैं इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् मोहनीरूप भगवान्ने अमृत पिलाकर सुदर्शनचक्रको वास्तेरक्षाकरने सूर्य्य व चन्द्रमाकेयहां छोड़दिया और आप अन्तर्द्धानहोकर बैकुण्ठकोपधारे और त्रिलोकीनाथने यह बिचारकर दैत्योंको अमृत नहींपिलाया कि वहलोग अमृतपीनेसे अमरहोकर संसारीजीवोंको दुःखदेवैंगे इनको अमृतपिलाना ऐसाहै कि जैसे कोई सर्पको दुग्ध पिलावै ॥

दशवां अध्याय ॥

देवता व दैत्योंसे युद्धहोना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् अमृतनिकालनेमें परिश्रम देवता व दैत्योंका बराबरथा पर नारायणजी जिसकोदेतेहैं वह पाताहै जिसतरह मनुष्य अपनेलाभकेवास्ते बहुत उद्योगकरतेहैं उनमें जिसपर भगवान्की कृपाहोती है वह अपनामनोरथ पाताहै नहीं तो बिनाइच्छा परमेश्वरके सब परिश्रम उनकाव्यर्थजाताहै उसीतरह दैत्योंकी दशाहुई सो हे राजन् जब मोहनीरूप भगवान् वहांसे अन्तर्द्धानहोगये तब दैत्यलोग चैतन्य

होकर कहनेलगे कि वह सुन्दरी सब अमृत देवतोंकोपिलाकर कहां चलीगई उनदैत्यों में जो बुद्धिमान्थे उन्होंनेकहा कि कलशाअमृतका तुम्हारे हाथलगाथा तुमलोगोंने अपनी अज्ञानतासे एक स्त्रीके रूपपर मोहितहोकर अमृत उसेदेदिया और वह मोहनीरूप नारायणथे जिन्होंने देवतोंकी सहायताकरनेवास्ते हमें धोखादेकर अमृत लेलिया यह समझतेही दैत्यलोग क्रोधितहोकर देवतोंसे युद्धकरनेवास्ते तैयारहुये देवतोंनेभी लड़ाई की तैयारीकी देवतोंकीओर राजाइन्द्र ऐरावतहाथीपरचढ़ा और चन्द्रमा व सूर्य्य व वरुण व कुबेरादिक सेनापतियोंको अपनेसाथलिया वहलोग उत्तमउत्तम भूषणव वस्त्र पहिने व अनेकप्रकारके शस्त्रलिये रथ व गज व बाजी व बिमानादिक पर बैठकर रणभूमिमेंआये व दैत्योंकीओरसे राजाबलि अतिउत्तम भूषण व वस्त्रपहिनकर प्रभास नाम बिमान आकाशगामीपर जो मयदानवने उसको बनादियाथा सवारहुआ व हय-ग्रीव व द्विमूर्द्धा व विप्रचित्ती व कालनेमिआदिक उसकेसेनापतियोंने उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्रपहिनकर अनेकरंगके शस्त्रबांधलिये और बाघ व पक्षी व मछली व बिमा-नादिकपर चढ़कर युद्धमेंआये उससमय दोनोंसेनामें मारूबाजाबजने व अनेक रंगकी ध्वजाफहरानेसे कैसाशोभामालूम देतीथी कि जैसे दूसराक्षीरसमुद्र वहांप्रकटहुआ व इतनीसेना दोनोंओरथी कि जिसकीकोईगिन्ती नहींकरसक्ताथा फिरदेवता वदैत्य अपनी बराबरवाले जोड़ीकोदेखकर सवारसेसवार व पैदलसे पैदल लड़नेलगे इसतरह दोनोंओर से तलवार व भुशुण्डी व चक्र व तीर व सांग व त्रिशूलादिक शस्त्र चलनेलगे कि जिस तरह सावन भादोंमें अतिबर्षाहोती है राजाइन्द्र व बलिसेसांग व बज्र व त्रिशूलादिक अनेक रंगके शस्त्रचलकर ऐसा देवासुरसंग्रामहुआ जिसमें रक्त नदीके समान बह निकला व शस्त्रों से घटाछाकरतलवारें बिजुलीकेसमान चमकतीथीं जब उसयुद्ध में परमेश्वरकी कृपासे देवतोंने बहुत दैत्योंको मारडाला व इन्द्रने मारेबाणों के राजाबलिकोघबड़ादिया तब उसनेसन्मुखलड़नेकीसामर्थ्य न रहनेसे मायायुद्धआरम्भ किया और अपनाबिमान आकाशमेंलेजाकर देवतोंकीसेनापर शस्त्र व पर्व्वत व अग्नि व रक्त व पीवआदिक वर्षानेलगा व नंगीनंगीराक्षसियां खड्ग वखप्परलिये देवतोंकी सेनामेंआनपहुँचीं व चारोंओरसे समुद्रकापानी चढ़ाआता दिखलाई देनेलगा यहदशा देखतेही देवतों ने घबड़ाकर नारायणजीकास्मरणकरके उनसेसहायताचाही तब दीन-दयालु अन्तर्यामी अपनेभक्तोंका दुःखदेखकर उसीसमय गरुड़परचढ़े और अष्टभुजी रूपसे शस्त्रधारणकिये देवतोंकीसेनामेंआये और उन्हेंधीर्यदेकरकहा तुमलोगोंने अमृत पिया है मरनेसेनिडरहोकर दैत्योंकेसाथ लड़ो वह तुमको नहींजीतनेसकैंगे तब भग-वान्जीकादर्शनपाने व उनकेधीर्यदेनेसे सबदेवता अधिकबलपाकर फिर दैत्योंसेलड़ने लगे जब नारायणजीको देखतेही कालनेमिदैत्य बाघपरचढ़ाहुआ उनकीओरदौड़ा और एकत्रिशूल उनपर चलाया तब बैकुण्ठनाथने वह त्रिशूल पकड़कर चक्रसे उसका

शिर बाहनसमेत काटडाला जब कालनेमिका मरना देखकर माली व सुमाली दैत्य ज्योतिस्स्वरूपकेसन्मुख लड़नेआये तब श्यामसुन्दरने उनकाशिरभी चक्रसेगिरादिया फिर माल्यवान् दैत्यनेआनकर एकगदा नारायणजी व दूसरी गरुड़कोमारी सो महाप्रभुने उसकामस्तक सुदर्शनचक्रसे काटलिया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

देवतों की विजय होना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् बैकुण्ठनाथके आतेही दैत्योंकीसबमाया इसतरह जातीरही जिसतरह स्वप्नेकादुःखजागनेसे छूटजाताहै व देवतोंको बड़ाभरोसाहोकर राजाबलि व इन्द्रसे फिर सन्मुखयुद्धहोनेलगा तब इन्द्रनेकहा हे राजाबलि तुम नटों के समान छल करके मेराराज्यलेनाचाहतेहो शूरवीरोंकीतरहसन्मुखहोकर धर्म्मयुद्धकरो आज दैत्योंको मारकर सबदिनका वैर तुमसे लेऊंगा यहबचनसुनतेही राजाबलिबोला हे इन्द्र अभी चारदिनहुये तुम हमारेसामने से भागगये थे आज ऐसाअभिमान तुम्हें करना उचित नहीं है दिनकिसी का सदा एकसानहींरहता अज्ञानमनुष्यथोड़ा दुःख व सुख होने से अभिमानकरते हैं व विजय व पराजय परमेश्वरकेआधीनहैं इसमेंमेरा व तेराकिया कुछ नहीं होसक्ता ऐसाकहकर राजाबलिने इन्द्रको बाणोंसेव्याकुलकिया तब इन्द्रने अपने बज्रसे बलिकोमारा तो वह इसतरह आकाशसे बिमानसमेत पृथ्वीपर गिरा जिसतरह पंखकटाहुआ पहाड़ गिरपड़े यहदशाराजाबलिकी देखतेही यक्षनाम दैत्यने बाघअपने बाहनको दौड़ाकर एकगदा इन्द्र व दूसरी ऐरावतहाथी के मस्तकपर ऐसीमारी कि वह हाथी व्याकुलहोकर घुटनेकेबल बैठगया तबइन्द्र हाथीसेउतरकर रथपरचढ़ा जब मातलिसारथीकी फुरतीदेखकर यक्षदैत्यने एकत्रिशूल मातलिकोमारा तब इन्द्रने बज्रसे यक्ष का शिरकाटडाला उसकेमरनेकासमाचार नारदजी से सुनकर नमुची व बलि व पाक नाम तीनदैत्य महाबली इन्द्रसे लड़नेआये उन्हों ने इन्द्रको दुर्वचनकहकर इतनेबाण मारे कि इन्द्ररथसमेत इसतरहछिपगया जिसतरहसूर्य्य बदली में दिखलाई नहीं देते जब यहदशा देखकर देवताघबड़ागये तब इन्द्रने अपनेबज्रसे बलि व पाक दोनों दैत्योंको मारकर फिर वहीबज्र नमुचीपरचलाया व उसबज्रसे नमुचीकाशिरनहींकटा तब इन्द्रने बहुतघबड़ाकर मनमेंकहा देखो जिसबज्रसे मैंने बृत्रासुरको मारकर पहाड़ों की भुजा काटीथीं उसबज्रसे नमुचीकामस्तक नहींकटा इससे मालूमहोताहै कि मेरेबज्रकी सामर्थ्य जातीरही यहीशोचविचार इन्द्र कररहाथा उसीसमय यह आकाशवाणीहुई हे इन्द्र नमुचीकोवरदानहै कि किसीगीली या सूखीवस्तुसे यह नहींमरेगा कोई दूसरा उपाय इस के मारनेकाकरो यहआकाशवाणी सुनतेही इन्द्रने समुद्रकाफेन बज्रमें लपेटकर उसपर चलाया तो उसकाशिरकटगया जब इसीतरह दूसरेदेवतोंनभी दैत्योंकोमारा तब ब्रह्माजी

ने बिचारा कि देवता व दैत्य दोनों मेरीसन्तानहोकर देवता सब दैत्योंको माराचाहते हैं ऐसासमझकर नारदजीसेकहा तुमजाकर देवतोंको समझादो कि अब न लड़ैं उसी समय नारदमुनिनेजाकर देवतों से कहा कि तुमने सेनापतियोंको मारडाला अब सब दैत्योंको किसवास्ते मारतेहो और दैत्योंको समझाया अभी दिनतुम्हारे खोटे हैं मतलड़ो जब नारदमुनिके समझानेसे देवता और दैत्योंने लड़नाछोड़दिया तब इन्द्रादिकदेवतों ने परमेश्वरकी दयासे विजयपाकर दुन्दुभीबजाई और अप्सराओं ने नाच दिखलाकर गन्धर्वोंने गानासुनाया जबनारायणजी बैकुण्ठकोगये तबसबदेवता परमेश्वरकायशगाते हुये अपने २ लोकमें जाकर सुख व आनन्दकरनेलगे व इन्द्र अपने राजसिंहासनपर बैठा व जब नारदमुनिकी आज्ञासे दैत्यलोग व राजाबलि व जिनदैत्योंका शिरपड़ाथा और सबघायल दैत्योंको उठाकर अस्ताचल में शुक्राचार्य्य के पास लेगये तब शुक्रने संजीवनीविद्यासे सबदैत्योंको जिलाकर राजाबलिको बहुतधीर्य्यदिया तब राजाबलिने हँसतेहुये हाथजोड़करकहा महाराज आपकीदयासे मैं कुछशोचनहीं रखता कभी हमारी जयहोती है व कभी देवतों की अब देवतों के दिन अच्छे हैं इसलिये उनकी विजयहुई जब हमारीदशा अच्छी आवैगी तब हमलोगभी तुम्हारे आशीर्वादसे देवलोकका राज्य पावैंगे यहसुनकर शुक्रजीने राजाबलिके धीर्य्य व ज्ञानकीबड़ाईकी इतनी कथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् तुमने कथा अमृतनिकालने व पिलानेकी जो पूंछीथी सो हमने सुनाई ॥

बारहवां अध्याय ॥

शुकदेवजी का परीक्षितसे मोहनीरूपकी सुन्दरता वर्णनकरना ॥

इतनीकथासुनकर परीक्षितने पूछा हे शुकदेव स्वामी मोहनीरूप कैसा सुन्दरथा कि जिसेदेखकर सबदेवता व दैत्य ऐसा मोहितहोगये कि दैत्यों को अमृतपीना भूलगया शुकदेवजीने कहा हे राजन् हम उसरूपकावर्णन कहांतक तुमसेकरैं वह मोहनीरूप ऐसासुन्दरथा कि जिसे देखकर महादेवजीभी जिन्हों ने कामदेवको भस्म कियाथा मोहितहोगयेथे देवता और दैत्य और मनुष्यादिक कौनगिनती में हैं जो अपने को सम्हालसकैं यह कथा इसतरहपर है एकदिन पार्वतीजीने शिवशंकर से कहा विष्णुभगवान्ने जिस स्त्रीरूपसे दैत्योंको मोहिलियाथा उस रूपको मैं देखाचाहतीहूं यह सुनतेही शिवजी पार्वतीसमेत नन्दीगणपरचढ़कर बैकुण्ठमें नारायणजी के पासगये तबविष्णुभगवान्ने आदरपूर्वक उन्हेंबैठाकरपूछा आजकिधरचले तबमहादेवजीने उन की स्तुतिकरके विनयपूर्वककहा हे दीनानाथ जिसस्वरूपसे आपनेदैत्योंको मोहिलिया था उसमोहनीरूपको मैंभीदेखाचाहताहूं बैकुण्ठनाथबोले हे महादेवजी मोहनीरूपके देखनेसे कामवशहोकर विह्वलहोजावोगे शिवशंकरने उत्तरदिया दैत्यलोग अपनेमन औरइंद्रियोंके आधीनरहकर कामदेवकेवश्यहोरहेथे इसवास्ते उनकीयहदशाहुई व मैं

अपनीइंद्रियोंको वश्यरखताहूं इसलियेमोहनीरूप देखकर उसपरमोहित न हूंगा व पार्वती भी उसरूपको देखना चाहती हैं जिसतरहआपहमारी बिनतीसदामानतेथे उसीतरह यहइच्छाभी पूर्णकीजिये यहसुनकर ज्योतिस्स्वरूपवाले हे भोलानाथ तुमहमारेनिर्गुणरूप के चाहनेवालेहो जो घटने व बढ़ने व खाने व पहिरनेसे रहितहोकर किसीको दिख- लाई नहींदेता सो तुम उसीरूपको देखाकरो व सगुणरूपमेरा उसे देखना उचित है जिसेनिर्गुणरूप देखनेकाज्ञान न हो जिसमें सगुणरूप देखकरनिर्गुणरूप से प्रीतिउत्पन्न करै और जो अज्ञानी मेरे निर्गुणरूपको नहीं देखनेसक्ता उसमैंअपने सगुणरूपका दर्शनदेकर ज्ञानीबनाताहूं कि वह थोड़ासा प्रेमकरनेसे अपनामनोरथपावे जबयहसब बात सुननेपरभी शिवजीने मोहनीरूप देखनेवास्तेहठकिया तबवैकुण्ठनाथईसकरबोले कि तुम व पार्वती दोनों ओटमें जाकरबैठो हमतुमकोमोहनीरूप दिखलावेंगे पर चैत- न्यरहना यहकहकरनारायणजी वहांसेअन्तर्द्धानहोगये जबमहादेव व पार्वती आड़में जाकर बैठे तब श्यामसुन्दरकी इच्छासे उसजगहएकबाग व अच्छाकुण्ड व बावली व अनेकरंगके पक्षीसंयुक्तप्रकटहोगया उससमयशिवजी व पार्वतीबड़ीअभिलाषासे चारों ओर देखकर आपसमें कहतेथे देखाचाहिये कि वहरूप किधरसे प्रकटहोताहै व पार्वती जी अपनी सुन्दरताकेसामने दूसरीस्त्रीको तुच्छसमझतीथीं इसलिये वह मोहनीरूपदे- खनेकी अतिचाहनारखकर यह बिचारतीथीं कि देखूं वहरूपमुझसे अच्छाहै या नहीं इसीइच्छासे पार्वतीबारम्बारउठकर बागमें चौगिर्ददेखतीथीं जिससमयमहादेव व पार्वती मोहनीरूपदेखनेकेवास्ते बहुतआशारखतेथे उसीसमयअकस्मात् एकदिशासे मोहनीरूप स्त्री अतिसुन्दरउत्तमभूषण व वस्त्रपहिने प्रकटहुई व मुखारविन्द उसका बिजलीकेसमान चमकताथा व जड़ाऊकरधनी घुंघुरूदारकमरमें पहिनेगेंदकपड़ेका बहुतअच्छा व गोल रेशमसे सियाहुआ जिसेलड़केलोग खेलते हैं अपने हाथमेंलिये आकाशमें उछालकर फिरोंकलेतीथी सो गेंदउछालते व आकाश व पृथ्वी नीचेऊपर देखनेकेसमय अनार फलसदृश छातीउसकी दिखलाईदेतीथी तब देखनेवालोंकामन चलायमान होजाताथा सोवहमोहनी उसबागमें चारोंओरगेंद खेलतीफिरतीथी जैसेमहादेवजीकी और उसकी आंख सन्मुखहुई व उसमोहनीने नयनमटकाकर मुसकरादिया वैसे शिवजीउसका रूप व चितवनदेखतेही कामातुरहोकर उसपरमोहितहोगये और मृगछाला जो पहिनेथे उसे उतारकरफेंकदिया व पार्वतीजीको वहांअकेली छोड़कर उसमोहनीरूपकेसन्मुख नंगे चलेगये और वहरूपवती महादेवपर कुछस्नेह न रखकर आगेकोचली तब शिवशंकर उसमोहनीरूपके पीछे इसतरह बिह्वलहोकरदौड़े कि जिसतरहसांड़ गायकेपीछे दौड़ताहै व कामदेवने अपनाअवसरपाकर शिवजीसेबदलालिया जब महादेवजी मोहनीरूपके निकटपहुँचे व उसनेघूंघटकाढ़िकर अपनामुँह छिपालिया तब भोलानाथ मुँहछिपालेने से अतिव्याकुलहोकर मनमेंकहनेलगे देखोमुझसे बड़ीभूलहुई जोइसके निकटआया कि

मुखारविन्द देखनेसेभी विमुखरहा व पार्वतीजीनेभी वहांजाकर उसस्त्रीकी सुन्दरताई देखी तोअपनेरूपको उसकेसामने हजारभाग में एक के तुल्यनहींपाया व पांव उस मोहनीका मोतीके समानचमकतादेखकर अतिलज्जासेमनमें कहा ऐसीसुन्दरी मैंने कभी नहीं देखीथी इसकेसामने मेरीकुछगिनती नहीं है जबमहादेवजी कामातुरहोकर अतिव्याकुलहुये व बाग ज्ञानकी हाथसे छूटगई तब शिवजीने दौड़कर उसमोहनीको अपने गलेसे लगालिया सो वह छिटककर आगेको चली जब गोदमें लेनेसे शिवजी अतिविह्वलहोगये तबवह उसकेपीछे पकड़नेके वास्ते दौड़े पर वह मोहनी इसतरह चमककर निकलजातीथी कि दौड़नेपरभी शिवजीका हाथ उसकेअंगतक नहींपहुँचता था उसीसमय वहसुन्दरी एकबेर महादेवजीकी दृष्टिसे अन्तर्द्धानहोकर एकक्षणमें फिर प्रकटहुई तब शिवजीने झपटकर उसेपकड़लिया पर वह महादेवको झटककर फिर बि- लगहोगई जब इस खींचाखींचीमें वस्त्रमोहनीरूपका ढीलाहोकरगिरपड़ा तब शिवजीने उसेनंगेदेखा और कामवशहोकर उसेगोदमें उठालिया व मोहनीभगवान्‌की इच्छानुसार उसेगोदमें लियेहुये उसीतरह ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंके स्थानपर भटकाकिये जब शिव जी बहुतदौड़ने से थककर ऋषीश्वर व मुनीश्वरोंके निकट अतिलज्जितहुये व मोहनी रूपको गोदमें लेनेसे ज्ञान व धैर्य्य उनका छूटकर वीर्य गिरपड़ा तब मोहनीभगवान् यहदशा उनकी देखकर वहांसे अन्तर्द्धान होगये सो जहां २ महादेवजी का वीर्य्य गिराथा वहांसोना व चांदी व पारेकीखानि उत्पन्नहुई व वीर्य्यगिरने व अन्तर्द्धानहोने मोहनीरूपसे महादेव अतिलज्जित व उदासहोकर एकवृक्षके नीचेबैठगये और यह इच्छाकरनेलगे कि कदाचित् फिर वहमोहनी प्रकटहोवे उसीसमय पार्वतीजी वहींपहुँच गईं उन्हेंदेखतेही महादेवने अतिलज्जितहोकर मनमेंकहा कि देखो मैं काम व क्रोध व मोह व लोभको अपनेवश जानकर हजारोंवर्ष समाधिमेंबैठाथा सो इसमोहनीरूप के देखनेसे सबज्ञानभूलकर विह्वलहोगया और उसकेपीछे बौड़होंके समान दौड़तारहा व अ- पनाधैर्य व बड़ाईछोड़कर मुनि व ऋषीश्वरोंकेनिकट अपनाउपहास कराया इससे मुझे मालूमहोताहै कि मैंने कामदेवको अपनेवश रखना कहकर नारायणजी से मोहनीरूप देखनेका हठकियाथा इसीवास्ते गर्वप्रहारी भगवान्‌ने ज्ञानहरकर मेरी यह दशाकी संसारमें जोलोग अपने ज्ञानका गर्वरखतेहैं उनकोमूर्ख समझनाचाहिये परमेश्वरकी मायाऐसी प्रबलहै कि जिससेकोई नहींछूटनेसक्ता ऐसाविचारकर महादेवजी अतिचिन्ताकरनेलगे जब परमेश्वरने देखा कि भोलानाथ मेरेपरमभक्त अतिलज्जितहोकर उसीशोच में अपनातनु छोड़नाचाहतेहैं तब विष्णुभगवान् चतुर्भुजीस्वरूपसे शिवजीकेपास आन- कर प्रकटहुये व महादेवका हाथपकड़कर आदरपूर्वकबोले हे सदाशिव तुम कुछचिन्ता मतकरो यह मोहनीरूप देखनेसे योगी व मुनिआदिक किसीकाज्ञान एकठिकाने नहीं रहता व मायारूपीस्त्रीकी चाहनासे बड़े २ ऋषीश्वर व महात्मा व संसारीजीव अपना

धर्म्म व कर्म्मछोड़देते हैं तुम संसारीजीवोंसे बिलगनहींहो इसमायारूपी समुद्रमें चैतन्य रूप कौननहींडूबा इससागरसे कोई बाहर नहींनिकलनेसक्ता देखो शुम्भ निशुम्भदैत्य दोनोंभाई कैसेबलवान्थे जब भवानीरूपी मेरीमाया उनकेपासगई व उनदोनोंभाइयों ने चाहा कि यह सुन्दरी हमारेपासरहै तब मायारूपीभगवतीने उनदोनोंसे कहा कि तुमदोनोंमें जो अधिकबलीहो उसकेपास मैं रहूंगी सो दोनोंभाई मायारूपीभवानीके वास्ते आपसमें लड़करमरगये सिवाय उनके और बहुतसेदेवता व दैत्य व मनुष्य व ज्ञानीलोगोंने कामदेवके मदमेंनष्टहोकर कामरूपीशत्रुसे हारमानी है इसलिये स्त्रीरूपी मायाको अतिप्रबल समझनाचाहिये पर तुमको मेरीमाया नहींव्यापैगी किसवास्ते कि तुम सदामेरीचर्चा व ध्यानमें रहतेहो कदाचित् तुमकहो कि इससमय मोहनीरूपमाया क्यों मेरेऊपर व्यापी उसका यहकारणहै कि तुमने मेरेनिर्गुणरूपका ध्यान छोड़कर अपनेको हमसे बिलगसमझा व मेरीमायाका कौतुक देखनाचाहा इसलिये तुम्हारी यह गतिहुई अब तुम धैर्य्यरक्खो फिर मेरीमाया तुमकोनहीं व्यापैगी जब नारायणजीने इसतरह शिवजीका बोधकिया तब वह धैर्य्यधरकर बैकुण्ठनाथको दण्डवत्करके बिदा हुये व कैलासपर्वतपर आनकर पार्वतीजीसे कहा तैंने नारायणजीकी मायाकाचरित्र देखा मैं इन्हींज्योतिस्स्वरूपका ध्यान जो मेरेइष्टदेवहैं आठोंपहरकरताहूं इतनीकथा सुना कर शुकदेवजीबोले हे राजन् जो मनुष्य समुद्रमथनकी कथासुनकर कोई उद्यमका आरम्भकरै तो उसव्यापारमें उसकामनोरथ पूर्णहोताहै ॥

तेरहवां अध्याय ॥

शुकदेवजीका आठमन्वन्तरोंकी कथा राजापरीक्षितसे कहना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित एकमन्वन्तर इकहत्तरचौकड़ीयुगपर्यंत इन्द्रराज्यकरता है व हरमन्वन्तरमें परमेश्वर एक अवतारधारणकरतेहैं व दुःखदायी और अधर्मियोंको मारकर धर्मकीरक्षाकरते हैं व चिरंजीवऋषीश्वरकी आयुर्बल एकमन्वन्तरहोकर ब्रह्माके दिनमें चौदहइन्द्र राज्यभोगतेहैं सो छःमन्वन्तरकीकथा हमने तुमसेवर्णनकी अबसातवां मनुविवस्वान्कापुत्र श्राद्धदेवनाम जो वर्त्तमानहै इसमन्वन्तरमें इक्ष्वाकुआदि मनुकेदश बेटे व आदित्यआदिक देवता व अगस्त्य व अत्रि व वशिष्ठ व विश्वामित्र व गौतम व जमदग्नि व भरद्वाज सप्तऋषि व पुरन्दरनाम इन्द्रहोकर कश्यपजीके अदितिनाम स्त्रीसे वामनअवतार परमेश्वरका हुआथा उसकीकथा हम पीछेसे विस्तारपूर्वक कहैंगे आठवां सावर्णिनाममनु निर्मेकादिक उसकेपुत्र सुतपालादिकदेवता व बलिनामइन्द्र व दीप्तनामआदिक सप्तऋषीश्वरहोंगे और नारायणजीसार्वभौमनाम अवतारलेकर राज्य इन्द्रलोकका इन्द्रसेछीनिकै राजाबलिकोदेवैंगे नवांदक्षसावर्णिनाममनु व भूतकेतुआदि उसकेपुत्र मारीचिआदिक देवता व अभूतनाम इन्द्र व द्युतिआदि सप्तऋषिहोंगे और

ऋषभनाम भगवान्का अवतारहोगा दशवां ब्रह्मसावर्णिनाममनु व भूषणआदिक उसके बेटे हविष्मन्तआदिक सप्तऋषीश्वर व सत्यादिक देवता व स्वायम्भुवनाम इन्द्रहोकर परमेश्वर अमूर्त्तिनाम अवतारलेवेंगे ग्यारहवां धर्मसावर्णिनाममनु व अनागतआदिक उसकेपुत्र व विहंगमआदि देवता व वैधृतनाम इन्द्र व अरुणादिक सप्तऋषीश्वरहोकर नारायणजी धर्मसेतुनाम अवतारधारणकरैंगे बारहवां रुद्रसावर्णिनाममनु व देवबामन आदिक उसके बेटे व राजधामाइन्द्र व हरितआदिक देवता व तपमूर्तिआदिक सप्त ऋषीश्वरहोकर सुधानाम भगवान्का अवतारहोगा तेरहवां देवसावर्णिनाममनु व चित्र-सेनआदिक उसकेबेटे व सुकर्मआदि देवता व दिवस्पतिनामइन्द्र व निर्मोकआदिक सप्तऋषिहोकर परमेश्वर योगीश्वरनाम अवतारलेवेंगे चौदहवां इन्द्रसावर्णिनाममनु व उरुगम्भीरआदि उसकेबेटे व पवित्रआदिक देवता व शुचिनामइन्द्र व अग्निबाहु सप्त ऋषीश्वरहोकर बृहद्भानुनाम परमेश्वरका अवतारहोगा हे राजन् ये चौदहमन्वन्तर ब्रह्माके एकदिनमें भोगकरते हैं उनकीकथा हमने तुमसेवर्णनकी व सब कल्पोंमें यही मनु अदल बदलकर राज्यभोगते हैं ॥

चौदहवां अध्याय ॥

इन्द्रादिक देवतोंकीकथा ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसे पूछा कि महाराज आपनेबहुतअच्छी कथा परमेश्वरकी मुझेसुनाई अब दयालुहोकर यह कहिये कि मनुआदिक अपनेराज्य में क्याकामकरतेहैं शुकदेवजीबोले हे राजन् हरमन्वन्तरमें मनु व मनुकेबेटे परमेश्वर की आज्ञानुसार पृथ्वीपर दिग्विजय व धर्मका प्रचारकरतेहैं व देवतालोग यज्ञोंकाभाग व आहुति व पूजालेतेहैं व राजाइन्द्र दैत्योंकोमारकर तीनोंलोकके जीवोंकी रक्षाकरते हैं व सप्तऋषीश्वर योगसाधकर जो वेद गुप्तहोजाताहै उसेसंसारमें प्रकटकरतेहैं व भग-वान् आप अवतारधारणकरके दुष्ट व अधर्मियोंको मारकर गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों की रक्षाकरतेहैं व चौदहों मन्वन्तरमें यहीबातैंहोती हैं और यज्ञप्रलयमें वहीपरमेश्वर कालरूपहोके सबजीवोंको मारडालतेहैं व संसारीमनुष्य अपनेबड़े व छोटेकामरना देखनेपरभी ईश्वरकीमायामें लपटकर अपनीमृत्युका बिचार नहींकरते जिसतरहतालाब का पानी प्रतिदिन सूखताजाताहै व मालूमनहींहोता उसीतरह आयुर्दा मनुष्यकी घटती जाती है पर वे अपनेमरनेसे निडररहकर परलोकका शोचनहींकरते इसलिये मनुष्य को उचितहै कि दिनरात अपनामरना बिचारकर कुकर्म न करै व परमेश्वरकाध्यान व स्मरणकरतारहै जिसमें उसका परलोकबनै इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जो लोग इनचौदहों मन्वन्तरकीकथा सुनकर प्रातःसमय उनको याद व ध्यान करतेहैं उनकोधर्म व ज्ञानप्राप्तहोताहै व देवताआदि परमेश्वरकी शक्तिहैं उनकाध्यान करनेसे भी पापछूटजाता है ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

राजाबलिको शुक्रगुरूकी कृपासे इन्द्रलोकका राज्यछीनलेना ॥

राजापरीक्षित इतनी कथासुनकरबोले हे स्वामी प्रथमआपने कहा कि नारायणजीने बामनअवतार धारणकरके राजाबलिसे भीखमांगी व राज्यउसका छलसे लेकर देवतों को दिया इसबातकामुझे बड़ासंदेहहै कि राजाबलिको ऐसीसामर्थ्यथी जो परब्रह्मपरमेश्वरने उससे भिक्षामांगकरदानलिया व दानलेनेउपरांत फिर किसवास्ते यज्ञकरतेसमय उसेबांधा इसको बिस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजीबोले हे राजन् जब नारायणजीकी कृपा से देवतोंने अमृतपीकर दैत्योंको लड़ाईमेंजीतलिया और अपनीराजगद्दीपाई व राजा बलिने दैत्योंसमेत अस्ताचलमेंरहकर बहुतदिनोंतक सेवाटहल अपनेगुरूकी प्रेमपूर्वक की तब शुक्राचार्यगुरू अतिप्रसन्नहुये और राजाबलिको प्रयागक्षेत्रमेंलाकर उससेविश्वजित्नाम यज्ञकराया यज्ञसम्पूर्ण होतेही अग्निकुण्डमें से एकरथसुनहरा व चारघोड़े व एकशंखकीध्वजा व एकधनुष व तर्कस जिसकेतीर नहींघटतेथे व खड्ग व दिव्यकवच निकला व एक माला फूलकी प्रह्लादभक्तने राजाबलि अपनेपोतेको दी व शुक्राचार्य गुरूने एकशङ्ख राजाबलिको देकरकहा तुझे अपनेयोगबलसे बरदानदेते हैं कि तुम इन्हींघोड़ोंको इसरथ में जोतो और यहीध्वजालगाकरचढ़ो और यह दिव्यकवचअपनी भुजापर बांधकर यहीधनुषबाणउठालो और यहमालापहिनके मेरादियाहुआ शङ्खबजाकर देवतोंपरचढ़ाईकरो नारायणजीकी दयासे तेरी विजयहोगी राजाबलि यहबरदान पाकर अतिप्रसन्नहुआ और शुक्राचार्य्यकी आज्ञानुसार शुभसाइतिमें अपनेगुरू व दादा को दण्डवत्करके उसीरथपरचढ़ा व अनेकशूरवीरों को संगलेकर बड़ीधूमधामसे इन्द्रपुरीको घेरलिया हे राजन् इन्द्रकी अमरावतीपुरी में अतिउत्तमस्थान व बाग व तड़ागादिक सोनहुले रत्नजटितरहकर सब स्त्री व पुरुष सोलहबर्षके किशोरअवस्था बनेरहते हैं और वहांकेसबजीव नीरोगितरहकर बहुतअच्छाभूषण व वस्त्र पहिनते हैं व सब स्त्री व पुरुष आपसमें आनन्दपूर्वक भोग व बिलासकरके जड़ाऊबिमानोंपर चारोंओर सैर व बिहारकियाकरते हैं हे राजन् उसस्थानकीबड़ाई कहांतककहूं वहांकावृत्तान्त देखनेसे मालूमहोताहै पर लालची व क्रोधी व कुकर्मी व अहंकारी व अपनाशरीर पालनकरने व मांसखानेवालेमनुष्य वहांजानेनहींसक्ते जब राजाबलिने वहांपहुँचकर वहीशंखबजाया तब इंद्रादिकदेवता वहशब्दसुनकर मारेभयके कांपउठे पर लाचारीसे जब राजाबलिके सन्मुख लड़नेवास्ते आये तब उसके तेजसे देवतोंका अंग जलनेलगा सो देवतालोग अमृतपीनेपरभी दैत्योंसे हारमानकर भागगये व राजाबलि तीनोंलोककाराज्य देवतोंसे छीनकर इन्द्रासनपरबैठा व देवतों ने जाकर बृहस्पतिगुरूसे पूछा महाराज हमलोगों की पराजय किसवास्तेहुई बृहस्पतिबोले शुक्राचार्य के आशीर्वाद व बरदानदेने से दैत्योंने

पन्द्रहवां अध्याय ॥

राजाबलिको शुक्रगुरूकी कृपासे इन्द्रलोकका राज्यछीनलेना ॥

राजापरीक्षित इतनी कथासुनकरबोले हे स्वामी प्रथमआपने कहा कि नारायणजीने वामनअवतार धारणकरके राजाबलिसे भीखमांगी व राज्यउसका छलसे लेकर देवतों को दिया इसबातकामुझे बड़ासंदेहहै कि राजाबलिको ऐसीसामर्थ्यथी जो परब्रह्मपरमेश्वरने उससे भिक्षामांगकरदानलिया व दानलेनेउपरांत फिर किसवास्ते यज्ञकरतेसमय उसेबांधा इसको बिस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजीबोले हे राजन् जब नारायणजीकी कृपा से देवतोंने अमृतपीकर दैत्योंको लड़ाईमेंजीतलिया और अपनीराजगद्दीपाई व राजा बलिने दैत्योंसमेत अस्ताचलमेंरहकर बहुतदिनोंतक सेवाटहल अपनेगुरूकी प्रेमपूर्वक की तब शुक्राचार्यगुरू अतिप्रसन्नहुये और राजाबलिको प्रयागक्षेत्रमेंलाकर उससेविश्वजित्नाम यज्ञकराया यज्ञसम्पूर्ण होतेही अग्निकुण्डमें से एकरथसुनहरा व चारघोड़े व एकशंखकीध्वजा व एकधनुष व तर्कस जिसकेतीर नहींघटतेथे व खड्ग व दिव्यकवच निकला व एक माला फूलकी प्रह्लादभक्तने राजाबलि अपनेपोतेको दी व शुक्राचार्य गुरूने एकशङ्ख राजाबलिको देकरकहा तुझे अपनेयोगबलसे बरदानदेते हैं कि तुम इन्हींघोड़ोंको इसरथ में जोतो और यहीध्वजालगाकरचढ़ो और यह दिव्यकवचअपनी भुजापर बांधकर यहीधनुषबाणउठालो और यहमालापहिनके मेरादियाहुआ शङ्खबजाकर देवतोंपरचढ़ाईकरो नारायणजीकी दयासे तेरी विजयहोगी राजाबलि यहबरदान पाकर अतिप्रसन्नहुआ और शुक्राचार्य्यकी आज्ञानुसार शुभसाइतिमें अपनेगुरू व दादा को दण्डवत्करके उसीरथपरचढ़ा व अनेकशूरवीरों को संगलेकर बड़ीधूमधामसे इन्द्रपुरीको घेरलिया हे राजन् इन्द्रकी अमरावतीपुरी में अतिउत्तमस्थान व बाग व तड़ागादिक सोनहुले रत्नजटितरहकर सब स्त्री व पुरुष सोलहबर्षके किशोरअवस्था बनेरहते हैं और वहांकेसबजीव नीरोगितरहकर बहुतअच्छाभूषण व बस्त्र पहिनते हैं व सब स्त्री व पुरुष आपसमें आनन्दपूर्वक भोग व बिलासकरके जड़ाऊबिमानोंपर चारोंओर सैर व विहारकियाकरते हैं हे राजन् उसस्थानकीबड़ाई कहांतककहूं वहांकावृत्तान्त देखनेसे मालूमहोताहै पर लालची व क्रोधी व कुकर्मी व अहंकारी व अपनाशरीर पालनकरने व मांसखानेवालेमनुष्य वहांजानेनहींसक्ते जब राजाबलिने वहांपहुँचकर वहीशंखबजाया तब इंद्रादिकदेवता वहशब्दसुनकर मारेभयके कांपउठे पर लाचारीसे जब राजाबलिके सन्मुख लड़नेवास्ते आये तब उसके तेजसे देवतोंका अंग जलनेलगा सो देवतालोग अमृतपीनेपरभी दैत्योंसे हारमानकर भागगये व राजाबलि तीनोंलोककाराज्य देवतोंसे छीनकर इन्द्रासनपरबैठा व देवतों ने जाकर बृहस्पतिगुरूसे पूछा महाराज हमलोगोंकी पराजय किसवास्तेहुई बृहस्पतिबोले शुक्राचार्य के आशीर्वाद व बरदानदेने से दैत्योंने

विजयपाई है तुम्हारेऐसे सौइन्द्र इकट्ठेहोकर राजाबलिका सामनाकरैं तो उसशंखकेप्रताप से हारजावेंगे सिवाय परब्रह्मपरमेश्वरके दूसराकोई उसकासामना नहींकरसक्ता जोकोई गुरू व ब्राह्मणकीसेवा विधिपूर्वककरताहै उसके सबमनोरथ पूर्णहोते हैं यहबचनसुनतेही देवता अधैर्यहोकर मुरैला व हरिणआदिकका रूपधरके वहां से भागे व किसी जगह छिपकर अपनेदिन काटनेलगे जब राजाबलि तीनोंलोकका राज्यपाकर अतिप्रसन्नहुआ तबउसने अपनातेज व बलबढ़ानेकेवास्ते भरतखण्डमें यज्ञकरना बिचारकर शुक्राचार्य्यगुरूसे विनयपूर्वककहा महाराज आपकोई ऐसाउपायकरैं जिसमें सदामेराराज्य स्थिर रहै शुक्रजीबोले हे राजाबलि तुम सौवर्षतक बराबरयज्ञकरो व बीचमें किसीसाल विघ्न न होकर सौयज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होजावें तब तुम्हाराराज्य सदा स्थिररहने सक्ता है बिना सौयज्ञकिये इन्द्रभी देवलोक का राज्य नहींपाता यहबचनसुनतेही राजाबलि ने गुरूकी आज्ञानुसार हरसाल यज्ञकरना आरम्भ किया जब निन्नानवे यज्ञ अच्छी तरहहोकर सौवांयज्ञ सम्पूर्णहोनेके निकटपहुँचा तब राजाबलि बहुतप्रसन्नहुआ व उसने इतनादान व दक्षिणा ब्राह्मण व कंगालों को हरयज्ञमें दिया कि किसी को कुछ इच्छा नहींरही और कोई मंगन उसकेद्वारसे बिमुख नहीं फिरा व संसारमें बड़ीकीर्त्ति उसकी फैलगई ॥

सोलहवां अध्याय ॥

अदितिको इन्द्रके राज्यपानेवास्ते अपनेपति कश्यपजीकी सेवाकरना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब इन्द्रने यहसमाचारपाया कि राजाबलि अपना राज्य सदा स्थिररहनेकेवास्ते सौयज्ञकरना चाहताहै तब उसे बड़ाशोचहुआ व अदिति देवतोंकीमाता अपनेबेटोंका राज्यछूटजानेसे सदा चिन्तामें रहाकरतीथी जब उसने देवतों से वृत्तान्त सौयज्ञकरने राजाबलिकासुना तब उसको अधिकशोच उत्पन्नहुआ सो एक दिन वह उसीचिन्तामें डूबीहुई कश्यपजी अपनेपतिकेपास चुपचापबैठीथी उसे उदास देखकर कश्यपजीनेपूछा हे अदिति आजहमतुझे बड़ेशोचमें देखते हैं इसकाक्याकारणहै तेरेद्वारेपरसे कोई मंगन व अतिथि भूखा तो फिरकर नहींचलागया या तैंने किसीब्राह्मण को दानदेने कहाथा सो नहींदिया इसलिये तेरामुखमलीन है यहबचनसुनतेही अदिति हाथजोड़कर बोली हे स्वामी मेरेद्वारे से कोई अभ्यागत भूखा फिरकरनहींगया पर मैं अपनेबेटों का जिनकाराज्य दैत्योंने छीनलिया व उनकीस्त्रियांभागकर पहाड़ोंकी कन्दरामें छिपी हैं दिनरात शोचकरतीहूं उसीकारण मेरातेजहीनहोगया है सो आप दयालु होकर कोई ऐसाउपायकीजिये जिसमें देवता फिर अपनाराज्यपावें तब कश्यपजीबोले देवता व दैत्य दोनों मेरीसन्तानहोकर अपने अज्ञानसे यहनहीं समझते कि जो नारायणजी चाहते हैं सो होताहै मेराकिया कुछनहींहोसक्ता कोई किसी का बाप व बेटा न होकर यहसब परमेश्वरकी माया समझनाचाहिये देवतोंके राज्य भोगनेके समय दिति

तेरीसवतिरोती है व जब दैत्यलोग राजाहोते हैं तब तू उदासहोती है मुझे किसीतरह छुट्टी नहींमिलती सो तू बीचशरण परमेश्वरके जाकर उनकाव्रतरख तो तेरामनोरथ पूर्णहोगा यहबातसुनकर अदितिने बिनयकिया महाराज मुझे बतलादो परमेश्वरका व्रत किसतरह करनाहोगा तब कश्यपजी बोले तुम फाल्गुनसुदी प्रतिपदासे नित्य शिव-व्रत जो ब्रह्माने मुझेबतलायाथा रखकर ब्रह्मचर्यरहो सिवायदूधके और कुछ भोजन न करके पृथ्वीपर सोयाकरो व शूकरकी खोदीहुई मिट्टी प्रतिदिन अंगमेंलगाके स्नान कियाकरो व उसीमिट्टीकी मूर्त्ति नित्यबनाके बासुदेव मंत्रसे विधिपूर्वक पूजाकियाकरो और एकसौआठ आहुति खीरसे अग्निमें होमकरके उसीखीरका भोगलगाय बारह दिनतक यहव्रतरखकर दिनरात नारायणजीके चरणोंका ध्यानकियाकर फाल्गुनसुदी द्वादशीको उद्यापन उसकाकरके ब्राह्मणोंको अच्छे २ पदार्थखिलाय व बहुतसादान व दक्षिणा आचार्य्य व ब्राह्मणपूजा व होमकरानेवालेको देव व आनन्दपूर्वक उसेबिदा करके रातको जागरणकरो तब तुम्हारीकामना पूर्णहोगी यहव्रत सब यज्ञादिकों से उ-त्तम होताहै ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

अदितिका कश्यपजीकी आज्ञानुसार व्रत आरम्भकरना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित अदितिने उसीतरह व्रतरखकर शुद्धअन्तःकरणसे पर-मेश्वरके चरणोंका ध्यानकिया तब व्रतसम्पूर्ण होनेउपरान्त आदिपुरुष भगवान्ने प्रसन्न होकर चतुर्भुजीरूपसे जड़ाऊमुकुट पहिने वैजयन्तीमाला गलेमेंडाले मन्द २ मुसकरातेहुये उसकोदर्शनदिया जब अदितिने उसमोहनीमूर्त्ति को देखतेही अतिहर्षसे दण्डवत् व पूजा व परिक्रमाकरके स्तुतिकी तब नारायणजीने कहा तू क्याचाहती है जोकुछ इच्छाहो सो बरदानमांग अदिति हाथजोड़कर बोली हे महाप्रभु अन्तर्यामी मुझे यही अभिलाषाहै जिसमें दैत्योंसे राज्यछूटकर इन्द्रादिक देवता मेरेबेटोंको इन्द्रासन मिलै वहउपायकीजिये यहबातसुनकर नारायणजीने कहा हे अदिति तू चाहती है कि जिस तरह इन्द्राणी आदिक तेरीपतोहू दुःखपाती हैं उसीतरह दैत्योंकी स्त्रियांभी कष्टपावैं सो राजाबलिने सौयज्ञकरके मुझेप्रसन्नकिया और वहगुरु व ब्राह्मणकी भक्तिरखता है इस कारण मैं उसकाराज्य बरजोरीछीनकर नहींलेसक्ता धर्मात्मा व हरिभक्तोंपर मेराकुछ बशनहींचलता पर तैंने भी मेराव्रतरखकर मुझेअतिप्रसन्न कियाहै इसलिये तेरेवास्ते छलकरके राजगद्दी दैत्योंसेलेकर देवतोंकोदेवेंगे यहबचनसुनकर अदितिने बिनयकिया महाराज मैं चाहतीहूं तुम मेरेगर्भसे अवतारलेकर देवतोंकी सहायताकरो जिसमें वे लोग अपनाराज्यपावें आदिपुरुषबोले बहुतअच्छा तेरामनोरथ पूर्णहोगा ऐसाबरदान देकर अन्तर्द्धानहोगये व उसीदिन अदितिके कश्यपजीसे गर्भरहकर मुखारबिंदउसका सूर्य्य के समान चमकनेलगा जब दशवेंमहीने बालकहोनेका समय निकटपहुँचा तबब्रह्मा व

महादेवादिक देवतोंने अदितिके स्थानपर आकर गर्भस्तुतिकरके बिनयकिया हे बैकुण्ठ-नाथ आप देवतोंकेछुड़ानेवास्ते अवतारलेते हैं सिवाय तुम्हारे और कौन उनकीसुधि लेने सत्ता है यहस्तुति सुनतेही आदिपुरुषभगवान्ने भादौंसुदी द्वादशी मध्याह्नसमयमें चतुर्भुजी रूपसे प्रकटहोकर अपनेमाता व पिता व देवता आदिक जोलोग वहांथे सबको दर्शन दिया उनको देखतेही सबछोटे बड़ेप्रसन्न होकर दण्डवत्करनेलगे फिर उसीसमय पर-मेश्वरने बामनरूप अपना अतिसुन्दर छोटाअंग जिसतरह कोईबालक ब्रह्मचर्य्यहोकर अपनेघरसे विद्यापढ़नेवास्ते बाहरनिकले उसीतरह धारणकरलिया जबकश्यप व ब्रह्मा आदिक देवतोंने उनकाबामनतनु देखा तबउन्होंने कोपीन व अंगोछा व करधनी व दंड व कमण्डलु व छत्रादिक सबवस्तु ब्रह्मचर्यकी वहांलादीं व ब्रह्माने वेदानुसार उन का यज्ञोपवीतकिया व देवतोंसमेत स्तुति व परिक्रमाकरके उनपर फूलबर्षातेहुये अपने २ स्थानको चलेगये व अप्सरोंने अपने २ बिमानोंपर आनकर आकाशमेंसे नाच दिखाया व गन्धर्वोंने गानासुनाया और कश्यपजीने उनकी बहुतस्तुतिकी उससमय तीनोंलोकमें आनन्द व मंगलाचारहोगया ॥

अठारहवां अध्याय ॥

बामनजीका राजाबलिकी यज्ञशालामें जाना व तीनपग पृथ्वीदान उनसेमांगना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित बामनभगवान्ने यज्ञोपवीत होनेउपरांत स्वरूप अपना ब्रह्मचारीके समान बनालिया व दण्डकमण्डलु हाथमेंलेकर कश्यप व अदितिके स्थान से बाहर निकले पृथ्वी दानलेनेकी इच्छारखकर नर्मदाकिनारे को जहांपर राजाबलि यज्ञकर-ताथा चले उससमय पृथ्वी यहबिचारकर कांपनेलगी देखो परमेश्वर त्रिलोकीनाथ चौदहभुवनके मालिकहोकर आप पृथ्वी मांगनेकेवास्ते जातेहैं जब बामनभगवान् अति तेजवान्रूपसे यज्ञशालामेंपहुंचे तब बड़े २ ऋषीश्वर व ब्राह्मण व राजाबलि व शुक्रा-चार्यादिक जितनेलोग वहां बैठेथे उनकाप्रकाश देखकर उठखड़ेहुये व इससूरतका नाटा मनुष्य कभी उन्होंने नहींदेखाथा इसलिये बामनरूपको देखकर आश्चर्यकरने लगे व राजाबलिने बामनजीको जड़ाऊसिंहासनपर बैठाकर हाथजोड़के बिनयकिया हे ब्रह्मचारी महाराज मैंने गुरु व ब्राह्मणके आशीर्वादसे निन्नानवेयज्ञ सम्पूर्णकिये और यह सौवांयज्ञ करताहूं बहुत अच्छाहुआ जो इसयज्ञमें आपऐसे महापुरुषके चरणआये व तुम्हारादर्शन पानेसे मेराभाग्य उदयहुआ और पितृलोग कृतार्थहुये सो हे बालक रूप ब्रह्मचारी जिसतरह आप बिनाबुलाये दयालुहोकर यज्ञमेंपधारे हैं उसीतरह आप को गो व स्थान व बाग व हाथी व घोड़ा व द्रव्य व रथ व पालकी व गांव व पृथ्वी व नगर आदिक जिसबस्तुकी इच्छाहो सो कहिये मैं तुम्हारे भेंटकरूं व तुम्हैं बिवाह की अभिलाषाहो तो अच्छेकुलमें बिवाह करदूं व हे ब्रह्मरूप तुम्हारा अंग छोटा

दिखलाईदेताहै पर मुखारविन्दकेप्रकाशसे आपमुझे महापुरुष मालूमहोते हैं जो कुछमांगो सो देसक्ताहूं अपने प्राणतक देनेमेंभी लोभनहींकरूंगा यहवचनसुनकर बामनजीबोले हे राजन् तुम्हारीबुद्धि व बड़ाईकेआगे यहसबबात कौनकठिनहै तुम प्रह्लादभक्तकेवंश में जो कश्यपजीकापोताथा उत्पन्नहोकर शुक्राचार्य ऐसामहात्मागुरु रखतेहो क्योंकर तुम धर्मात्मा न हो सो मैं बहुतलोभ न रखकर केवल तीनपगपृथ्वी तुमसे दानलेने चाहताहूं जहां आसन कुशकाबिछाकर हरिभजनकरूं यहबातसुनतेही राजाबलि हँस-करबोला हे ब्रह्मचारी आपनेमुझसे क्या थोड़ीवस्तुमांगी किसवास्ते इतनीभूमि मांगनहीं लेते जिसमें तुम्हारास्थान तैयारहो व खेतीकरके प्रसन्नतासे अपनाप्रतिपालकरो और फिर तुम्हें संसारमें किसीबस्तुकी इच्छा न रहकर दूसरे किसीसे कुछमांगना न पड़े तब भगवान्जीबोले हे राजन् अपने प्रयोजनभर मांगना अच्छाहोकर लोभसे अधिकलेना प्रतिग्रहदान समझनाचाहिये सो हम संतोषीब्राह्मणहोकर सिवाय तीनपग पृथ्वी और किसीबस्तुकी इच्छा नहींरखते व तुम्हारीगिनती बड़ेदानियोंमें है जो तुमने मुझे इच्छा-पूर्वक दान मांगनेवास्तेकहा नहींतो दूसरे संसारीमनुष्य अपनीसामर्थ्य प्रमाणदानदेते हैं हे विरोचनकेपुत्र तुम्हारेपुरुषा ऐसेदानी व शूरवीरहुये हैं जिन्होंनेकभी दानदेने से हाथ व रणभूमिसे मुँहअपना नहींफेरा व उसकुलमें कोई लालची व अधर्मी नहींहोकर हिर-ण्यकशिपु व हिरण्याक्ष तुम्हारेपरदादे ऐसेप्रतापीहुये जिन्होंने देवतोंको जीतकर तीनों लोकका राज्यकियाथा यहबातसुनकर राजाबलिबोला तुम ब्राह्मणके बालकहोकर अपना अर्थ सिद्धकरना नहींजानते तुम्हारे मुखारविन्दकाप्रकाश देखने व बातोंसे मैं आपको बड़ामहात्मा समझताहूं पर तीनपगपृथ्वी मांगनेसे तुममुझे दरिद्रीमालूमहोतेहो मेरेद्वारे पर जो ब्राह्मण व मंगन आताहै फिर उसे जन्मपर्यंत दूसरीजगहजाने व मांगनेकाप्रयो-जननहींरहता इसलिये मुझे तुम्हारेऐसे महात्मापुरुषको तीनपगपृथ्वी दानदेतेहुये लज्जा मालूमहोती है बामनजीनेकहा हे राजन् लोभ बहुत निषिद्धहोकर अधिकतृष्णारखने से ब्राह्मणकातेज व धर्म्म नहींरहता व संतोषरखनेसे ब्राह्मणकातेज व बल व गुण अधिक होताहै व लालचीमनुष्य देश बिदेश फिरकर करोड़ोंरुपयाकमावै व तीनलोककाराज्य पावै व बहुतसेबेटे व नातीउसके उत्पन्नहोवैं तिसपरभी उसकीइच्छा पूरीनहींहोती जिस तरह आगि में घीडालनेसे अग्निकीज्वालाबढ़ती है उसीतरह लोभीमनुष्य बहुतमिलने परभी तृष्णाबढ़ातेजाते हैं सन्तोषरखने से तीनपगपृथ्वी हमकोबहुतहै कदाचित् सन्तोष मुझे न होगा तो सातोंद्वीपकाराज्य मिलने से भी मेरी चाहना नहींछूटेगी इसलिये मैं सिवाय तीनपगभूमिके और कुछनहींचाहता व बिनासन्तोषकिये संसारमें सुखनहींहोता अधिक तृष्णारखना दुःखकी जड़ समझनाचाहिये ॥

दो० अर्बखर्ब लों द्रब्य है उदय अस्तलों राज।
तुलसी जो निजमरणहै तो आवै केहिकाज ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

बलिका बामनजीको तीनपगपृथ्वी दानदेनेवास्ते तैयारहोना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यहबात बामनजी से सुनकर राजाबलिने कहा बहुत अच्छा चरणअपना आगेलाइये मैं उसेधोकर तीनपगभूमि संकल्प दूं जैसे बामनजी ने पांवअपना आगेबढ़ाया वैसे राजाबलिने चरणउनकाधोकर वहजल अपनेशिर व आंखों में लगाया व वेदानुसार उसचरणको साथ धूपदीपादिकके पूजकर अपनीस्त्रीसे संकल्प करनेवास्ते पानीमांगा जब रानी बिन्ध्यावली झारीगंगाजलकी उठालाई व राजातीनपग पृथ्वी दानदेनेवास्ते तैयारहुये तब शुक्राचार्य्य अपनेज्ञानसे बामनजीको पहिचानकर उठ व राजाबलिकेपासजाकर कानमेंकहा हे राजन् तुमने इनकोनहींपहिचाना इन्हेंछोटा सा ब्रह्मचारी मतसमझो यह आदिपुरुषभगवान् देवतों की सहायताकरनेवास्ते आप बामनअवतार धरकर तेराराज्य लेनेआये हैं तीनपगदानलेने के बहाने से तीनों लोक लेकर देवतोंको देदेवैंगे तू इनकेछल में मतआव कदाचित् तुम ऐसाकहो कि तीनपग भूमि देनेवास्ते इन्हें कहिचुकाहूं तो उत्तरउसकायहहै कि राजाजोकुछ देश व धन रखता हो उसमें पांचभाग होनाचाहिये एकवास्ते धर्म्म व दूसरायश व तीसरा अपने प्रयो-जन व चौथा स्त्री व पुत्र पांचवां सेवकोंको होताहै इसलिये पांचवांभाग अपने देश व धनमें दानकरना उचितहोकर ऐसानहींकहाहै जो सबराज्य व धनदेकर पीछे से दुःख उठावे यहीबात बामनजीसे कहिदेव नहींतो अपनेदोपगमें चौदहोंभुवन तेराराज्य यह नाप लेवैंगे व तू तीसरापगभूमि नहींदेनेसकैगा धनजाने व गोब्राह्मणकी भलाईहोने स्थान पर झूठबोलना अधर्म्मनहींहोता इसलिये तू अपनेवचन से फिरजा तुझे पाप न होगा यहबातसुनतेही राजाबलिने चारघड़ीतक शोचकरके विचारा कि शुक्रगुरुका कहना न मानना मेरेवास्ते अच्छानहीं मालूमहोता व ब्राह्मण से बातहारकर अपनावचन छोड़ देना उससे अधिक निषिद्ध है उन्हीं नारायणजीने हिरण्यकशिपु मेरेपरदादेको जिसने मुँहमांगेवरदान ब्रह्मासेपायेथे मारकर राज्यउसका छीनलिया सो वहीत्रिलोकीनाथ मेरे घरआनकर तीनपगपृथ्वी भिखारीकेसमान दानमांगते हैं इसलिये मुझको अपनाराज्य व धन व प्राण इनकेऊपर निछावरकरदेना उचितहै कदाचित् मैं शुक्रगुरुकी आज्ञानु-सार दानदेनेमें वचन छोड़दूंगा तो इनमें यहभीसामर्थ्य है कि मुझेमारकर सबराज्य व देश मेरा छीनलेवैंगे तब क्यागुण निकलैगा और जो नारायणजीकी इच्छाहोगी वैसा होकर उसमें तिलभरघटने व बढ़ने नहींसक्ता इसलिये जो मैंने तीनपगपृथ्वी दानदेने का वचन किया है उससे फिरना न चाहिये ॥

बीसवां अध्याय ॥

राजाबलिका बामनजीको तीनपग पृथ्वी संकल्पकरदेना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित राजाबलि यहबात बिचारकर शुक्राचार्य्यसे बोले महाराज आपकहतेहैं कि तुम इसब्राह्मणको पृथ्वीदान मतदेव सो ब्राह्मणसे झूठबोलना बड़ापापहोताहै मैं वास्तेराज्य व धन व संसारीसुखके जो सदास्थिर नहींरहता किसतरह झूठबोलूं कि राज्य व द्रव्य अकेलामेरा न होकर इसमें लड़केबाले व सेवकोंका भी भागहै मरतीसमय इनलोगोंमेंसे कोईमेरा साथ नहींदेगा और इसझूठबोलनेके बदले मुझे नरक भोगनापड़ैगा इसलिये राजगद्दीवास्ते कि वह मेरेसाथ न जावैगी जो कुछ मैंने बचनद्दारा उससे फिर नहींसक्ता चाहै मेराराज्यजावै या रहे देखो हिरण्यकशिपु मेरापरदादा व प्रह्लादभक्त मेरेदादा तीनोंलोकके राजाहोकर देवता जिनकीआज्ञापालते थे वहलोगभी स्थिरनहींरहे और राज्यउनकाजातारहा जिसतरह विरोचन मेराबाप राज्य व धनछोड़कर मरगया उसीतरह मैंभी एकदिनराज्य व द्रव्यछोड़कर मरजाऊंगा फिर किसवास्ते झूठकहूं आपमुझे इसब्राह्मणको पृथ्वी दानदेनेसेमना न कीजिये किसवास्ते कि जो मनुष्य शुभकर्म्मकरते हैं महाप्रलयतक नामउनका स्थिररहताहै व कोईजीव सदाअमर नहींरहता देखो दधीचिने वास्तेकल्याण इन्द्रादिक देवतोंके अपनेशरीरकी हड्डी उनकोदेडाली व राजाशिबिने कबूतरका प्राणबचाकर उसकेबदले अपनेअंग का मांस काटदियाथा सो आजतक उनलोगोंकायश संसारमें छारहाहै इसलिये मैं राजगद्दीजाने या नरकभोगनेसे नहींडरकर केवल अपयशसे बहुतडरताहूं संसारीलोग कहेंगे कि राजाबलिने बामनजीको दानदेनेकोकहाथा सो लालचकी राह बचन अपना छोड़दिया सिवाय इसके गृहस्थका यहीधर्म्म है कि ब्रह्मचारी व बानप्रस्थ व संन्यासी जो उसके द्वारेपरआवैं उन्हैं विमुख न फेरै कुछदेकर प्रसन्नकरै सो आप ऐसाकीजिये जिससे मेरागृहस्थधर्म्म बनारहै और तुम आपकहतेहो कि यह नारायणजीहैं सो जिन परमेश्वरके केवल प्रसन्नहोनेवास्ते सब संसार इतनायज्ञ व तप व दान व होमकरताहै जब वहीत्रिलोकीनाथ आपमेरेघर आनकर भिखारीकेसमान तीनपग पृथ्वीदानमांगते हैं तो किसतरह न देवैं इसवास्ते मेरेनिकट इनकोदानदेकर आशीर्वाद लेना व अपने प्राणतक इनपर निछावर करदेना उचितहै औरयह मेराराज्यलेकर देवतोंको देडालैंगे तो इससेभी मेरायश महाप्रलयतक स्थिर रहेगा और लक्ष्मीपति इसशरीर व तीनोंलोकके मालिकहोकर मुझसेदानमांगते हैं इसलिये इनको बड़ेहर्षसे दानदेकर इनकाहाथ नीचे करनाचाहिये व लालची मनुष्य नरकमें पड़तेहैं इसकारण तुम्हारीआज्ञा न मानकर अवश्यदानदूंगा जब शुक्रजीने देखा कि राजाबलि मेराकहना नहींमानता तब क्रोध करके उसेशापदिया कि राज्य व धन दोनों तेराजातारहै जब राजाबलिने उसशापका

कुछभय नहींमाना और बड़ेहर्षसे बामनभगवान्को संकल्पदेकर बिनयकिया हे त्रिलोकीनाथ तीनपग पृथ्वी आपनापलीजिये तब बामनजीने स्वस्तिकहकर बिराट्रूप अपना इतनालम्बा व चौड़ाधारणकिया कि सातलोक कमरकेनीचे व सातलोक कमर के ऊपरहोगये और उसरूपमें साराब्रह्मांड व देवता व दैत्य व मनुष्य व पर्वत व समुद्र व नदी व बन व आकाश व पातालादिक तीनोंलोककी बस्तु दिखलाई देनेलगीं व शंख व चक्र व गदा व पद्म उनके हथियार व गरुड़जी व नन्द व सुनन्दादिक सोलह पार्षद अपना २ रूपधारणकिये किरीट कुण्डल व मुकुट जड़ाऊपहिने वहां आनकर प्रकट होगये व जाम्बवान्भालू ने इक्कीसपरिक्रमा बिराट्रूपकी लेकर दोहाई बामनजीकी फेरदी इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब राजाबलि शुक्र पुरोहितका कहना न मानकर बामनजीको पृथ्वीसंकल्प देनेलगा तब शुक्रजी एकरूप अपना बहुतछोटा बनाकर बीचटोंटी उसझारीके जो राजाबलि संकल्पदेनेवास्ते हाथमें लियेथा घुसगये व उन्होंनेराहगिरने पानीका इसइच्छासे बन्दकरदिया कि पानी न गिरैगा तो राजाबलि किसतरह संकल्पदेगा व बामन भगवान् अन्तर्यामी यह हाल जानकर जो कुशालियेथे वही उसटोंटीमें डालकर उसकाछेद खोलनेलगे जब उसकुशा की नोकसे एकआंख शुक्राचार्य्यकी फूटगई तब शुक्रजीकानेहोकर टोंटीसेबाहर निकल भागे सो हे राजन् जो लोग किसीको दानदेनेआदिक शुभकर्मकरनेसे बर्जतेहैं उनकी यहीगतिहोतीहै व दूसराकारण फोरदेने आंखका यह समझनाचाहिये कि परमेश्वरने दो आंखें मनुष्यको इसवास्तेदी हैं जिसमें एकआंखसे संसारीसुख देखकर दूसरीआंख से परलोकका भला अनभलादेखै सो शुक्रजी संसारीसुख अच्छाजानकर अन्तसमय का शोच भूलगयेथे इसलिये परमेश्वरने एकआंख फोड़कर उन्हें आगेको चैतन्यकर दिया यहबात सुनकर सब किसीको परलोकका शोचकरनाचाहिये ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

नापलेना नारायणजीका अपने बिराट्रूपसे एकपगमें सातोंलोक ऊपरके व दूसरेपगसे सातोंलोक नीचेके ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित बामनजीने अपना बिराट्रूप बहुतलम्बा व चौड़ा बढ़ाकर एकपगसे सातोंलोक ऊपरके व दूसरेपगसे सातोंलोक नीचेके नापलिये जब दहिनाचरण नारायणजीका ऊपरके सातोंलोक नापतेसमय ब्रह्मपुरीमें पहुंचा तब ब्रह्मादिक देवता वह चरणदेखतेही उठखड़ेहुये व विरजानदीके पानीसे उसकोधोकर चरणामृतलिया और वह जल अपनेशिर व आंखोंमें लगाकर शेषचरणोदक एक कमण्डलुमें रखछोड़ा कि उसीपानीसे गंगाजी प्रकटहुईहैं व ऋषीश्वरलोग जो वहां बैठेथे उन्होंने चरणोदकको अपनी आंखोंमें लगाकर बहुतस्तुतिकी व सब देवतोंने अपनामनोरथ

पाकर बड़ीखुशी मनाई व अनेकतरहके बाजनबजाकर जयजयकारकिया व उसचर-णोदककी विधिपूर्वक पूजाकरके आनन्दमनाया व अप्सरोंने बड़ेहर्षसे नाचना व गन्धर्वोंने गानाआरम्भकिया व बिप्रचित्तीआदिक दैत्योंने बिराट्‌रूप वामनजीको देख-तेही घबराकर राजाबलिसे कहा देखो इसब्रह्मचारी नाटेमनुष्यने कैसाछलकिया तुम कहो तो इसे पकड़लें राजाबलिने दैत्योंको उत्तरदिया यह परमेश्वर त्रिलोकीनाथ जो कुछकरैंगे सबअच्छाहोगा इनसे बिरोध न करनाचाहिये यहबात राजाबलिकी सुनकर अपनेअज्ञानसे सब दैत्योंने आपसमेंकहा देखो हमाराराजा धर्मात्माबैठाहुआ यज्ञकरता था सो इसब्राह्मणने आनकर छलसे सबराज्यउसका लेलिया अबहमारा राजा और हमलोग कहांरहैंगे राजाबलिने जन्मभर हमारापालनकिया आज इसब्राह्मणछली को मारकर पृथ्वीछीनलेवैं तब राजाबलिके अन्न व जलसे उऋणहोजावैं राजा दान देचुके हैं वहलड़नेवास्ते नहींकहैंगे सबदैत्य यहसम्मतकरके अपनेशस्त्रसहित नारायणजी के अंगमें लिपटगये तब त्रिलोकीनाथकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व पार्षदोंने दैत्यों को मारकर हटादिया जब दैत्यलोग भागकर राजाबलिके पासआये तब उसने परमेश्वरकी इच्छा ऐसीसमझके व शुक्राचार्य्य गुरुका शापबिचारकर दैत्योंसेकहा तुमलोग युद्धमतकरो दुःख व सुख प्रारब्धसे होताहै जब तुम्हारी सायतअच्छी आवैगी तब फिर राज्यपावोगे इससमय देवतोंका भाग्यउदयहुआ है इसलिये तुम्हारालड़ना व्यर्थहोगा यहबचनसुन-तेही जब दैत्यलोग लड़नाछोड़कर भागगये तब नारायणजी बोले हे राजन् तुमसे तीन पग पृथ्वी दानलियाहै और नापनेमें तुम्हारासम्पूर्णराज्य मेरेदोपगसे अधिक नहींठहरा सो तीसरापग पृथ्वी सङ्कल्पकरनेका प्रमाणदेव ॥

बाईसवां अध्याय ॥

वामनजीका राजाबलिको सुतललोकका राज्यदेना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब वामनजीने तीसरापग पृथ्वीमांगी व राजाबलि जो बामन भगवान्‌के सामने शिरनीचे कियेखड़ाथा मारेडरके कुछनहीं बोला तबफिर बामनजीने डाटकरकहा हे बलि कदाचित् तू तीसरापग भूमिनहीं देनेसक्ता तो यही बातकहो कि हम न देवैंगे यहबचनसुनतेही राजाबलिने हाथजोड़कर बिनयकिया हे त्रिलोकीनाथ मैं अधर्मीनहींहूं जो अपनावचनछांड़ू तब बामनजीबोले कि पहिले तैंने अहंकारसे यहबातकहीथी जोकुछ मुझसेमांगो सोदेऊं कंगालब्राह्मणके समान तीनपग पृथ्वी क्यामांगतेहो सो अबतू तीनपग पृथ्वीनहीं देनेसका राजाबलि बामनजीके तेज व डरसे यहनहींकहनेसका कि दानमांगनेके समय स्वरूप आपका छोटाथा अबचरण अपना तुमने इतनाबढ़ाया किसतरहदेवैं जब थोड़ीदेरतक राजाबलिने कुछउत्तर नहीं दिया तब बामनभगवान्‌ने क्रोधकरके गरुड़सेकहा राजाबलिको बांधो तो तीसरापग

भूमिदेगा जब गरुड़ने राजाबलिको बांधकर पृथ्वीपर गिरादिया तब जो लोग वहांपरथे उन्होंने आश्चर्यमानकर कहा देखो राजाबलिने सबराज्य व धनअपना बामनजीको दे दिया तिसपर उन्होंने इसकोबांधाहै यहबात अच्छीनहींकी यहसुनकर नारद व सनत्कु-मारजी बोले बामनभगवान् दयाकीराह राजाबलिकी परीक्षालेते हैं कि यह अपनेधर्म पर सच्चाहै या नहीं जबफिर बामनजीने एकपगभूमि तीनबेरमांगकर कहा हे राजाबलि तू इन्द्रसे ऊपररहने वास्ते चाहनारखताथा सो शुक्राचार्य्य गुरुकेशापसे तुझेनीचे नरक में जानापड़ैगा तब राजाबलि हाथजोड़कर बोला हे बैकुण्ठनाथ मैं अपनेवचनसे नहीं फिरकर दण्डवत्करताहूं सो आपचरण अपना मेरेमस्तकपर रखकर शरीरमेरा तीसरे पगपृथ्वीके बदले नापलीजिये व कदाचित् आपयहकहैं कि चौदहलोक तेराराज्य दो पगनापमें ठहरा केवलतेराअंग एकपगके बराबरनहीं होसक्ता सो आपदेखिये जिसतरह मनुष्यका सबअंग बराबर न होकर नाकछोटी होनेपरभी बड़ीपदवीरखती है उसीतरह यहअंग मेरा जोमालिक सबधन व राज्य तीनोंलोकका था सो एकपगभूमिसे अधिक पदवीरखता है व हे जगत्पालक तुम्हारानामलेनेसे मनुष्यनरकको नहींजाता जब आप साक्षात् ईश्वरमेरेसामने खड़ेहैं तब मैं किसतरह नरकजाऊंगा व तुम्हारादर्शन करनेसे संसारमें मेरीकीर्ति अधिकहोगी जिसतरह आपहरिभक्तोंपर दयालुहोकर उनको अशुभ कर्मोंसे बचायेरखते हैं उसीतरह प्रह्लाद अपनेभक्तके कुलमेंजानकर अहङ्कार मेरा जो राज्य व धन व सन्तान व बलकेमदमें अन्धाहोरहाथा तोड़दिया और कृपा व दयासे अपनाचरण यहांलाकर गुरुकेसमान उपदेशदेकरके मुझेकृतार्थकिया कदाचित् आज मैं लोभवश अपनाराज्य तुम्हेंदान न देता तो मरतीसमय यहसब राज्य व धनमेरेसाथ न जाकर संसारमेंकेवल अपयश मुझे प्राप्तहोता और यहभी मेराअज्ञानहै जो अपनेको दानदेनेवाला समझताहूं किसवास्ते कि सबयह लक्ष्मी व पृथ्वी आपकी होकर बिना कृपा तुम्हारी कोई मनुष्य राज्य व द्रव्यपाने नहींसक्ता हे परीक्षित जिससमय राजाबलि यहसबबात बामनभगवान् से कहरहाथा उसीसमय प्रह्लादभक्त आकाशसेउतरे और बामनजीको दण्डवत्करके हाथजोड़कर कहा हे त्रिलोकीनाथ आपने बड़ीकृपाकी जो बलिसे तीनपग पृथ्वी दानमांगा नहीं तो आपको जो तीनोंलोक व सबसंसारीबस्तुके मालिकहैं किसीसे कुछमांगना क्याप्रयोजनहै व राजाबलि जो कुछतुम्हारा दियाहुआ अपनेपास रखताथा सो सबउसने आपको अर्पणकिया अबसिवाय अपनेशरीरके कोई बस्तु उसकेपास नहींरही सो आपदयाकरके इसे अपनासेवक व भक्तजानकर छोड़दी-जिये व विंध्यावलीस्त्री राजाबलिकी हाथजोड़कर बोली हे दीनानाथ आपने अच्छा न्यायकिया जो इन्हेंबांधकर दण्डदिया किसवास्ते कि सबबस्तु संसारमें तुम्हारीहोकर आपतीनोंलोककी रचना केवलअपने खेलवास्ते करतेहैं इसलिये राजाबलिको अहङ्कार से यहबातकहना उचितनहींथा कि जोकुछ तुममांगो सो मैंदूं उसीसमय ब्रह्माने भी

वहांआनकर बामनभगवान्‌को दण्डवत्करके विनयकिया हे परब्रह्मपरमेश्वर राजाबलि ने शुभकर्मकरनेसे जो धन व राज्यपाया था सो सब आपको दानदेकर यज्ञोंका पुण्यभी तुम्हारे अर्पणकिया व अपनेधर्मसे न फिरकर बांधनेपरभी कुछ विषाद नहीं लेआया व अपना शरीरभी तुमकोभेंटदेता है फिरउसे बांधकररखना कौन न्यायकरतेहो जबआप दीनानाथहोकर ऐसाकरैंगे तब फिर तुम्हारीशरण कौनआवेगा जो मनुष्यआपको एकपत्ता तुलसी व फल व पुष्प व जलचढ़ाकर गुग्गुल आदिक सुगन्धसे तुम्हारेनामपर अग्निमेंधूपदेताहै आप उसको अपनाभक्त जानकर संसारीमहाजालसे छुड़ाके भवसागरपार उतारदेतेहैं सो राजाबलिने सबधन व तनुअपना तुम्हारे अर्पणकिया फिर इसे छुट्टी क्योंनहींदेते जब प्रह्लादभक्त व विंध्यावली व ब्रह्माने इस तरह बामनजीसे विनयकिया तब वैकुंठनाथबोले मैंने अपनीकृपा व दयासे राजाबलि की परीक्षालेकर उसकागर्व तोड़दिया व तुमलोग इसबातका विश्वासमानो जिसकिसी पर मेरीकृपाहोती है उससे इतनीबस्तु छीनलेताहूं एकजात्यभिमान दूसराधन तीसरी विद्या चौथागर्व इसबातका कि जन्मभरमें उसने जो शुभकर्म दानादिक कियाहो उसे हरसमय स्मरणरक्खे और अपनेबराबर किसी दूसरेको नहीं समझकर लोगोंके सामने कहै कि यहशुभकर्म मैंने कियाथा सुनो राजाबलिका धन व राज्य सदास्थिरनहींरहता और कीर्ति इसकी महाप्रलयतक बनीरहैगी व इसकेउपरांत आठवांमन्वन्तर जो आवैगा उसमें राज्य इन्द्रलोकका हम राजाबलिको देवैंगे मेरेभक्तलोग किसी बातका अहंकार नहींकरते यहकहनेउपरांत बामनजीने चरणअपना राजाबलिके शिरपरधरके कहा अब तीसरापग पृथ्वी मेरा पूराहुआ तबबलि ने हाथजोड़कर विनयकिया हे महाप्रभू तुम्हारा नाम भक्तवत्सलहै इसलिये आपने मुझे अपनादासजानकर मेरीप्रतिज्ञा पूर्णकी यहवचन सुनतेही बामनभगवान् अतिप्रसन्नहोकर बोले हे राजन् तू उदासमतहो मैंने राज्य सुतललोकका जो पाताल में है तुम्हें दिया उसीजगह तू अपने परिवारसमेत जाके आनन्दपूर्वक बासकर वहां मैंभी बामनरूपसे सदा तेरेद्वारपर रहकर रक्षाकरूंगा व आज से तेरी बुद्धि दैत्योंके समान नहींहोगी ॥

तेईसवां अध्याय ॥

राजाबलिका सुतललोक में जाना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित यहवचन बामनजीका सुनतेही राजाबलि बन्धनसे छुट्टी पाकर अतिहर्षितहुआ व बामन भगवान्से हाथजोड़करबोला महाराज आप जो आज्ञा दें उसीपर मैं प्रसन्नहूं व जिनचरणोंकादर्शन महादेव व ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरों को ध्यानमें नहींमिलता वे चरण आपने मेरेशिरपररक्खे उन्हें मैं दण्डवत्करताहूं और

अपनेसमान इन्द्र व कुबेर व बरुणादिक किसी देवताका भाग्यनहीं समझता यहबात बामनजी से कहकर राजाबलिने प्रह्लादभक्तको प्रणामकिया तब प्रह्लादने आंखों में आंशूभरकर राजाबलि अपनेपोतेको गलेलगालिया व उसके ज्ञानकी बड़ाईकी व हाथ जोड़कर बामनजीसेकहा हे वैकुंठनाथ राजाबलिका बड़ाभाग्यहै जैसे राजाबलिपर आप दयालुहुये वैसीकृपा ब्रह्मा व महादेवपरभी नहींकी किसवास्ते कि उनसे कभी कोईवस्तु नहींमांगी व तुम्हारे चरणकमलको जिसकाध्यान ब्रह्मादिकदेवता व बड़े २ ऋषीश्वर आठोंपहर हृदयमें रखते हैं राजाबलिने अपनेहाथसे वहधोकर चरणामृतलिया नहींतो हम दैत्योंका जो मांसखाने व मदपीनेवाले अधर्मी हैं ऐसाभाग्य कहां उदयहोसक्ता है इससे मैंनेजाना आप नीचजातिका बिचार न करके केवल अपनेभक्तोंकी कामनापूर्ण करते हैं व जिसतरह कल्पवृक्षसबको इच्छापूर्वक फलदेताहै उसीतरह आपने त्रिलोकीनाथहोकर अदिति अपनेभक्तकी चाहनापूर्वक भीखमांगना अंगीकारकिया दूसरा कौन ऐसा दीनदयालुहोगा यहस्तुतिसुनकर बामनजीबोले हे प्रह्लाद हमने बलिको सुतललोकका राज्यदिया सो तुमभी वहांजाकर उसकेपासरहो और मैं भी राजाबलिकेद्वार पर गदालिये आठोंपहरबनारहूंगा हमारामुखारविन्द देखने व तुम्हारेसत्संगसे उसको कुछनहीं मालूमहोगा कि इतनेदिन कहांबीतगये अबतक तुम हमारादर्शन ध्यानमें पाया करतेथे आजसेमेरी व तुम्हारीभेंट नित्य सन्मुखहुआकरेगी जब यहवचनसुनकर राजा बलि व प्रह्लादभक्त बामनभगवान्को दण्डवत्करके अपने परिवारसमेत सुतललोक में चलेगये तब शुक्र पुरोहितनेआनकर बामनजीको दण्डवत्करके विनयकिया हे महाप्रभू मुझे ब्राह्मण व पण्डितहोनेपर भी संसारीमाया प्रवेशकरने से कैसीकुबुद्धिआई कि मैंने राजाबलिको भूमिदानदेने से मनाकिया पर भाग्यउसका बलवान्था जो मेराकहना न मानकर अपनेवचनसे नहींफिरा सो आप मेराअपराध क्षमाकरके आज्ञादीजिये तो मैंभी सुतललोकमेंजाकर राजाबलिके पासरहूं व ऐसाबरदानदेव जिसमें फिरमुझे ऐसीकुबुद्धि न आवै यहसुनकर बामनभगवान् बोले बहुतअच्छा तुमभी सुतललोकमेंजाकर राजाबलिके पासरहो पर फिरकभी ऐसीदुर्बुद्धि उसकोमतदेना और तुमअपनेचेलेका सौवांयज्ञ सम्पूर्ण करलेव तब शुक्रजीबोले हे ज्योतिस्स्वरूप जहां तुम्हारानामलेने से यज्ञ सम्पूर्णहोता है वहां जब आपकाचरणआया तबउसके सम्पूर्णहोने में क्यासन्देहहै पर तुम्हारी आज्ञानुसार पूर्णाहुति यज्ञमें डालेदेताहूं जबशुक्रजी पूर्णाहुतिदेकर आपभी सुतललोकमें चले गये तब ब्रह्मादिकदेवता बामनभगवान्कानाम उपेन्द्ररखकर व उन्हें बिमानपर बैठाल कर स्वर्गलोकमेंपधारे व जब बामनजीने वहां पहुँचकर राज्य इन्द्रपुरीका देवतोंकोदिया तब देवतालोग बामनभगवान् व अदितिकायश गातेहुये आनन्दपूर्वक अपने २ लोक में चलेगये व इन्द्र अपनाराज्यपाकर इन्द्राणीकेसाथ भोग व विलास करनेलगा बामन भगवान्जी वैकुण्ठकोपधारे इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् तुमने जो बामन

अवतारकीकथा हमसे पूंछीथी उसे वर्णन किया जो कोई अपने सच्चे मनसे इसकथाको कहै व सुनैगा उसे मुक्तिपदवी मिलैगी ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

मत्स्यावतार की कथा ॥

राजापरीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे शुकदेवस्वामी मेरामन सुनने कथा अवतार नारायणजी से नहीं भरा इसलिये मत्स्यावतारकी कथा सुनाचाहता हूं कि इतने बड़े ईश्वरने छोटा अवतार मछली का क्यों लिया शुकदेवजी ने कहा हे राजन् आदिपुरुष भगवान् जन्म व मरण से रहितहोकर केवल इसवास्ते अवतार लेते हैं जिस में हरिभक्तलोग उन अवतारोंकी लीलाकह व सुनकर भवसागरपार उतरजावें और जब गौ व ब्राह्मण व देवता व पृथ्वी व धर्म्म व हरिभक्तोंपर दुःखपड़ताहै तब वह छोटे व बड़ेजीवका बिचारनहींरखते व कथा मत्स्यावतारकी इसतरहपरहै एकबेर जगत् प्रलय होनेमें ब्रह्मारात्रिको अचेत सोयेथे जब उनकोदिनमें जम्हाईआई तब हयग्रीव दैत्य उसीसमय वेद उनकेमुखसे निकालकर पातालमें लेगया सो ब्रह्मानेजानकर नारायण जीसे विनयकिया कि महाराज हयग्रीव दैत्य वेदचुरालेगया सो बिनावेदके संसारीकाम नहींहोसक्ते और वह दैत्य महाबलवान्है इसलिये हम और देवतालोग उसे जीतनहीं सकैंगे आपवेदलानेवास्ते कुछ उपायकीजिये व राजासत्यव्रत श्राद्धदेवके बेटे राजगद्दी छोड़कर दशहजारवर्ष तपकरके महाप्रलय देखनेकीइच्छाकी तब नारायणजीने ब्रह्माके विनयकरनेसे लानावेदका व इच्छापूर्णकरना राजासत्यव्रत अपनेभक्तकी आवश्यक जानकर मत्स्यावतारलियाथा सो एकदिन राजासत्यव्रत कीर्त्तिमालानदीमें नहानेगया जब स्नानकरके राजाने तर्प्पणके निमित्त जलदोनों हाथमेंउठाया तब उसे एकमछली बहुतछोटी अंजलीमें दिखाईदेकर बोली हे राजन् मैं बहुत दुःखी दीनहोकर तेरेशरण आईहूं कदाचित् तू मुझे फिर जलमें डालदेगा तो बड़ी २ मछली मुझेखाजावेंगी इस लिये तुझसे यह चाहतीहूं कि मुझे नदीमें न डालकर मेरापालनकर राजा यह वचन सुनतेही आश्चर्य्यमानकर मनमें कहनेलगा देखो यह मछली मनुष्यसमान बोलताहै इसलिये अवश्य रक्षाकरनी चाहिये ऐसाबिचारकरके राजाने उसमत्स्यको अपनेकम- ण्डलुमें धरकरकहा तू धैर्य्यरख मैं तेरापालनकरूंगा जब राजासत्यव्रत उसमत्स्यको अपने स्थानपरलेआये सो क्षणभरमें वह मत्स्यबढ़कर कमण्डलुमें फँसगई तब फिर उसनेकहा हे राजन् कमण्डलुमें मुझे दुःखमालूमहोताहै कहीं चौड़ीजगहरक्खो जब राजानेकमण्डलु तोड़कर मछलीको घड़ेमेंरक्खा व एकपहरबीते भोजनकरके फिर जाकर देखा तो मछलीवहांभी बढ़करफँसीहुई बोली हे राजन् इसघड़ेमेंभी मेराअंगनहीं समाता फिर राजाने एकबड़ेमट्ठकेमें उसेरक्खा वहांपर मछली और अधिकबढ़ी तब एकगड़हा

खुदवाके पानीसेभरवाकर रखदिया जब गड़हाभी मत्स्यके शरीरबढ़नेसे भरगया तब उसे तालावमें लेजाकर रक्खा थोड़ीदेरमें वह मत्स्य इतनाबढ़ा कि तालाबमेंभी अंग उसका नहींसमाया तब राजानेतालावको नदीतक खुदवाकर उसमत्स्यको वहांपहुँचा दिया जब दूसरेदिन फिर राजास्नानकरनेगये तो देखा कि मछलीसे सब नदीभरी है तब राजाने उसमत्स्यको बड़े परिश्रमसे समुद्रमें लेजाकरकहा हे मत्स्य समुद्रसे बड़ा कोई स्थान तेरेरहनेवास्ते नहीं है अबतू यहांरह व मुझको विदाकर जब उसमत्स्यका अंग समुद्रमें भी बढ़कर दशहजार योजनलम्बा व चौड़ाहोगया तब उसमत्स्यने सत्यब्रतसे कहा हे राजन् तू अपनेको बड़ाज्ञानी व धर्मात्मासमझके मुझेसमुद्रमें छोड़कर अपने घरचलाजाताहै मुझसेभी जो बड़ी २ मछलीहैं वह मुझको खाजावेंगी यह सुनतेही राजाने ज्ञानकीराहजाना कि यह मत्स्य परमेश्वरका अवतार मालूमहोता है किसवास्ते कि मछली तुरन्त इतना नहींबढ़सक्ती सो इनकी पूजाकियाचाहिये ऐसाबिचारतेही राजाने बहुतस्तुति करनेउपरान्त उसमत्स्यसे हाथजोड़कर विनयकिया हे मत्स्यरूप भगवान् मैंने तुमको नहीं पहिंचाना कि आप नारायणजीका अवतारहैं मेराबड़ाभाग्य था जो तुम्हारादर्शनपाया यहबात ज्ञानभरीहुई सुनकर मत्स्यभगवान् बोले हे राजन् तैंने क्या समझकरकहाथा कि हम तेरापालन व रक्षाकरैंगे इसीवास्ते मैंने अपनाशरीर बढ़ाकर थोड़ीसी महिमा अपनी तुझे दिखलाई जिसमें तू मेरापालन व रक्षाकरनेसे हारमाने और अहंकार तेराछूटजावे मनुष्यको ऐसाउचितहै कि किसीकामको ऐसा न कहै कि मैं करदूंगा सबबातमें ऐसा कहनाचाहिये कि परमेश्वर चाहैंगे तो यहकाम होजावेगा मेरेभक्त अहंकारका वचन नहींबोलते व हे राजा तू बिश्वासकरकेजान जिस बातको परमेश्वर चाहतेहैं वहबातहोती है बिनाइच्छा नारायणजीकी मनुष्यकाकिया कुछ नहींहोसक्ता यह सुनकर राजानेकहा हे बैकुण्ठनाथ आपने मछलीकातनु छोटी योनिमें किसवास्तेधरा तब मत्स्यभगवान् बोले हे राजन् मैं तनुधरने व मरने दोनोंसे रहितरहकर अपनेभक्त व सेवकोंकी इच्छापूर्णकरनेवास्ते कभी २ सगुणअवतारलेकर अपनानाम प्रकटकरताहूं सो इनदिनों ब्रह्माकी विनयकरनेसे वास्तेलानेवेद व इच्छा पूर्णकरनेतेरी जो तू महाप्रलयका कौतुक देखनाचाहताथा हमने मत्स्यरूप अवतारलिया है और मैंने बाराह व कच्छप व नरसिंह अवतार जो लियाथा उससेछोटा न होकर रामचन्द्र व श्रीकृष्णअवतारलेनेमें कुछ पदवी मेरी नहींबढ़ी सदा समानरहकर घटने व बढ़नेसे रहितहूं तुझे महाप्रलय देखनेकीइच्छाहै तो आजसे सातवेंदिन संसारमें चारों ओर पानी दिखलाईदेगा व उसजलमें एक नौकापर सप्तऋषिबैठेहुये प्रकटहोके तेरा हाथ पकड़कर उसनावमें बैठालेवैंगे व उसनौकाकेपास पानीपर एकसर्पप्रकटहोगा सो तुमलोग एककोनारस्सी नौकाकी मेरेसोनेकेसींगमें जो दशहजार योजनलम्बा निकलेगा व दूसराटुकड़ा रस्सीका उससर्पकी पूंछसेबांधोगे जब वह नौकापानीपर घूमेगी तब तू महा

प्रलयका चरित्रदेखकर सप्तऋषियोंसमेत मुझसे ज्ञानपूछेगा व जो ज्ञान मैं तुमलोगोंसे कहूंगा उसज्ञान सुननेकेप्रतापसे तेरीमुक्तिहोगी इससातदिनमें तुम सब औषधका बीज इकट्ठाकरके उससमय अपनेपासरखना मत्स्यरूपभगवान् यह कहकर वहांसे अन्तर्द्धान होगये और राजासब औषधियोंकेबीज अपनेपासरखकर नित्यऊपर किनारेकृतमाला के महाप्रलय देखनेवास्ते आनबैठताथा जब सातवेंदिन राजा नित्यनियमकरके वहां बैठा तब उसने क्यादेखा कि चारोंओरसे नदीकापानी उमड़ाआताहै व आकाशसेभी इतनाजलबर्षा कि सम्पूर्ण पृथ्वी उसजलमें डूबकर राजा उसजलमें गोताखानेलगा और घबड़ाकर मनमेंकहा मत्स्यभगवान्ने एकनौकाप्रकटहोनेवास्ते कहाथा सो अभी तक दिखलाई नहींदेती जब मैं डूबकर मरजाऊंगा तब वह नौका प्रकटहोकर क्या करेगी इसीचिन्तामेंथा कि दूरसे एकनावपर सप्तऋषियोंको बैठेहुये देखकर राजा बहुत प्रसन्नहुआ जब वहनौका निकटपहुंची तब सप्तऋषीश्वरोंने हाथ राजाका पकड़कर उस नौकामें बैठालिया व धैर्यदेकर बोले हे राजन् तूनहींडूबेगा राजाने दण्डवत्करके उन से पूछा मत्स्यरूपभगवान् क्योंनहींआये सप्तऋषिबोले तुम परमेश्वरका स्मरणकरो म-त्स्यरूप भगवान्भी तुरन्तआते हैं जैसेराजाने प्रेमपूर्वक ध्याननारायणजीका किया वैसे मत्स्यरूप भगवान्ने राजाकोदर्शनदिया जब बासुकिसर्प श्यामरंगवहां जलमेंप्रकटहुआ व सप्तऋषीश्वर व राजाने एककोना रस्सीनौकाकी कि वह रस्सीभी सर्पकीथी उस मछलीके सींगमें व दूसराटूक बासुकिनागकी पूंछसेबांधा तब वहमछली उसनावको पानीमेंफिरानेलगी व राजाने इच्छापूर्वक महाप्रलयका कौतुकदेखकर मत्स्यरूपभगवान् से विनयकिया महाराज आपनेदयालुहोकर चरित्र महाप्रलयका मुझेअच्छीतरह दिखाया अबमैं यहचाहताहूं कि आपमुझको ज्ञानसिखलाकर भवसागरपार उतारदीजिये जिस में जन्ममरणसे छुट्टीपाऊं किसवास्ते कि संसारीमनुष्य वहकर्मकरताहै जिसकारण सदामहाजालमें फँसारहै व जोकोई तनपाकर परलोकअपना नहींबनाता वहफिर कुत्ता व शूकर आदिक चौरासीलाखयोनिमें जन्मलेकर दुःखपाता है व संसारीमनुष्य रात्रि दिन स्त्री व पुत्र व धनकेमोहमें फँसारहताहै और किसीसमय नारायणजीको जो बेड़ा उसका पारलगावैंगे स्मरणनहींकरता व परमेश्वर अपनीदया व कृपासे जिसकामनो-रथ पूर्णकरते हैं वह अपने अज्ञानसे उसकामको कहताहै कि मैंने परिश्रमसेकिया व घर व द्रव्य व स्त्री व लड़कोंको अपनाजानकर उनकीप्रीति में अपनाजन्म अकार्थकरता है और यह नहींसमझता कि पूर्वजन्मोंके संस्कारसे सबजीव अपनाबदला लेनेकेवास्ते संसारमेंआकर इकट्ठेहोते हैं सो हे दीनानाथ छूटना इसकुबुद्धि व प्राप्तहोना ज्ञानका सिवायकृपा व दयाआपके होनहींसक्ता जबतक मनुष्य संसारीमाया से विरक्तनहींहोता तबतक आवागमनसे नहींछूटता व जिसपर आपदयालुहोकर ज्ञानदेते हैं वहभवसागर पारउतरजाता है नहींतो बारम्बार जन्मलेकर दुःखपाताहै सो मुझेअपनादासजानकर

ऐसाज्ञानदीजिये जिसमें भवसागरपार उतरजाऊं यहसुनकर मत्स्यरूपभगवान्ने जो ज्ञान राजाको उपदेशकिया वह सबज्ञान व योगसाधने व उत्पत्तिहोने दैत्य व प्रश्नोत्तर सप्त ऋषीश्वरोंका विस्तारपूर्वक मत्स्यपुराणमें लिखाहै वहीज्ञान सुननेसे राजासत्यव्रत परम ज्ञानीहोगया फिर मत्स्यरूप भगवान्बोले हे राजन् तू आंख अपनी बन्दकरले जैसे राजाने आंखबन्दकरके फिर खोला तो अपनेको उसीनदीके तट आसनपर बैठेहुये पाया व जलादिक महाप्रलयका कौतुक फिर न दिखलाईदिया और यह चरित्र व महिमानारायणजीकी देखकर आश्चर्यमाना व मनमेंसमझा कि मत्स्यरूप भगवान्ने अपनी मायासे मेरीइच्छानुसार यह कौतुक दिखलाया फिर राजासत्यव्रत ज्ञानप्राप्तहोनेसे हरि चरणोंमें ध्यानलगाकर मुक्तहुआ व मत्स्यरूपभगवान् पातालमेंजाके अपनीगदासे हयग्रीव दैत्यको मारकर चारोंवेद लेआये व ब्रह्माकोदेकर वैकुंठकोपधारे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् चौदहवें मन्वन्तरमें जो जो अवतार परमेश्वरलेतेहैं उनकी कथा तुमसेवर्णनकी और चौदहों मन्वन्तर ब्रह्माके एकदिनमें बीतजातेहैं व इतनीबड़ी रातभी उनकीहोतीहै उसीदिन व रातकेप्रमाणसे सौवर्ष ब्रह्माजीतेहैं व छःमहीने उत्तरायण सूर्य्यदिन देवतोंका होकर छःमास दक्षिणायन सूर्यरात उनकी होतीहै व पन्द्रह दिन शुक्लपक्ष दिन देवतोंका व पितरोंका कृष्णपक्ष रात उनकीसमझना चाहिये व शुक्लपक्षको शुभ और कृष्णपक्षको अशुभकहते हैं उसीदिनरातके प्रमाणसे आयुर्दा देवता व पितरोंकी सौवर्षकी होतीहै इतनीकथा सुनकर राजापरीक्षितने विनयकिया हे महाप्रभु कथा चौदहों मन्वन्तर व अवतारलेने परमेश्वरका जिसकेसुननेसे संसारीजीव भवसागरपार उतरजातेहैं तुम्हारे मुखारविन्दसे मैंने सुना और आप भूत व भविष्य व वर्त्तमान तीनोंकालके ज्ञाताहैं इसलिये मैं चाहताहूं कि आपकेमुखसे सूर्यवंशी व चन्द्रवंशी राजोंकीकथा जो पूर्वमें होगयेहैं सुनों शुकदेवजी यहबातसुनकर बोले कि हे राजन् तुमने बहुत अच्छीबातपूछी हमकहते हैं सुनो कदाचित् कोई ऐसाकहै कि शुकदेवजीने वैष्णवहोकर संसारीराजोंका वृत्तान्त किसवास्तेकहा सो उन्होंने दो गुणसमझकर यह कथा कहीथी एक यह जो पहिले राजाधर्मात्मा व ज्ञानी संसारीमायासे विरक्तहोकर मुक्तहुयेहैं उनकीकथा सुननेसे राजापरीक्षितको राज्यछोड़ने व शरीर त्यागनेका शोच नहींहोगा दूसरे परब्रह्म परमेश्वरने रामचन्द्रअवतार बीचकुल सूर्य्यवंश व कृष्णअवतार चन्द्रवंशमें हरिभक्तोंके सुखदेनेकेवास्ते धारणकरके अनेकलीलाकी हैं वहलीला व कथासुनके संसारीलोग सबपापोंसे छूटकर मुक्तिपावें ॥

नवां स्कन्ध ॥

सूर्य्यबंशी व चन्द्रबंशी राजाओं की कथा ॥

पहिला अध्याय ॥

श्राद्धदेव मनु की कथा ॥

राजापरीक्षित इतनीकथासुनकर बोले हे शुकदेवस्वामी मैंने सब मन्वन्तरों की कथा तुम्हारे मुखारबिंदसे सुनी व वृत्तान्त राजासत्यव्रतका जिसे मत्स्यरूपभगवान् ने ज्ञान बतलायाथा सुनकर अतिप्रसन्नहुआ अब मैं यह सुनाचाहता हूं कि किस २ राजा ने कौन २ मन्वन्तरमें राज्यकिया व अब श्राद्धदेव मनु सूर्य्यकाबेटा जो राज्यपरहै उस के सन्तानकी कथा विस्तारपूर्वककहिये यहबातसुनकर शुकदेवजी बोले कि हे राजन् विधिपूर्वक उसकाहाल कोई सैकड़ोंवर्ष में भी नहीकहसक्ता इसलिये संक्षेपसे मैं उनकी कथा कहताहूं सुनो जब महाप्रलयहोकर संसारमें चारोंओर पानी भरगया केवल नारायणजी स्थिररहकर उनको यहइच्छाहुई कि यहजगत् उत्पन्नकरके अपनारूप आपदेखैं तब एकपुष्प कमलका बैकुण्ठनाथकी नाभि से प्रकटहुआ और उसफूलसे ब्रह्मा उत्पन्न होकर नारायणजी की आज्ञानुसार मनुनामपुत्र उत्पन्नकिया व मनुकेहृदयसे मरीचि ने जन्मलिया और उससे कश्यपनाम बालकउत्पन्नहुआ व कश्यप से सूर्य ने जन्मपाकर श्राद्धदेवमनु पुत्रउत्पन्न किया जब श्राद्धदेव के यहां सन्तान नहीं उत्पन्नहुई तब उसने बशिष्ठ ऋषीश्वरसे विनयकिया कि आप कोई ऐसाउपायकरैं कि जिसमें मेरेपुत्र उत्पन्न हो बशिष्ठजीबोले यज्ञकरनेसे तेरे सन्तानहोगी जबउसने बशिष्ठजीकी आज्ञानुसार यज्ञ आरम्भकिया तब मनुकीस्त्री ने बशिष्ठजी के साथी ब्राह्मणसे जो अग्निकुण्डमें घी की आहुति डालता था कहा मैं चाहतीहूं कि मेरेकन्या अतिसुन्दर उत्पन्नहो उसब्राह्मणने बेटी उत्पन्नहोनेकेवास्ते मंत्रपढ़कर आहुतियज्ञमेंदी इसलिये कन्याउत्पन्नहुई जब ऋषीश्वरने इला उसकानामरक्खा तब श्राद्धदेव बोला कि महाराज मैंने पुत्रउत्पन्नहोने के वास्ते यज्ञकियाथा सो बड़ाआश्चर्य्य है मंत्रकाफल विपरीतहोकर कन्याउत्पन्नहुई बशिष्ठजी बोले हे राजन् तेरीस्त्रीने बेटीहोनेकेवास्ते इच्छारखकर आहुतिदेनेवाले ब्राह्मणसे कहदिया था इसलिये पुत्रीउत्पन्नहुई जब यहबचनसुनकर राजामनु चिन्ताकरनेलगा तब बशिष्ठजी बोले हे राजन् तू उदासमतहो मैं परमेश्वरसे विनयकरके इसकन्याको पुत्रकरदूंगा यह बचनसुनतेही राजाप्रसन्नहोगया व वशिष्ठ ने परमेश्वरका ध्यानलगाकर जब अपने ब्रह्मतेजसे स्तुतिउनकी की तब बैकुण्ठनाथ दर्शनदेकरबोले तुम क्याचाहतेहो बशिष्ठजी

ने हाथजोड़करकहा महाराज मैं चाहताहूं कि यहकन्या पुत्रहोजावे परमेश्वरबोले बहुत अच्छा ऐसाहीहोगा यहबचन नारायणजीके मुखसे निकलतेही जब वहकन्या सुन्दररूप बेटाहोकर खेलनेलगा तब राजाने उसकानाम सुद्युम्नरखकर बड़ीखुशीमनाई व ब्राह्मण व याचकलोगों को मुँहमांगा दान व दक्षिणादेकर उसे राजगद्दीपर बैठादिया जब वह साथ धर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगा तब एकदिन परमेश्वरकी इच्छानुसार उत्तर दिशा इलाव्रतखण्डमें अहेरखेलनेगया तो एक हरिणकेपीछे घोड़ादौड़ताहुआ अम्बिकाबन में जापहुंचा वहांपहुंचतेही राजा स्त्रीरूपहोकर उसकीसवारीका घोड़ाभी घोड़ीहोगया व जितनेसेवक राजाकेसाथ उसबनमें पहुंचेथे सब स्त्रीहोगये यहदशा अपनी देखतेही वह लोग लज्जितहोकर एकदूसरे से अपनाचरित्र नहीं कहसक्ताथा जब किसीका कुछ बश नहींचला तब इच्छापरमेश्वरकी इसीतरहपर जानकर सबोंने धैर्य्यधरा इतनीकथासुनकर राजापरीक्षितनेपूछा हे मुनिनाथ वहलोग उसबनमें जाकर किसकारण स्त्रीहोगये थे इस का वृत्तांतकहिये शुकदेवजीबोले हे राजन् एकदिन उसबन में महादेव व पार्वती नंगे होकर आपसमें बिहार व क्रीड़ाकररहे थे उसीसमय सनकादिक चारोंभाई उनकादर्शन करने व कथा सुननेकेवास्ते वहांजाकर जैसे दोनोंको दण्डवत्‌किया वैसे पार्वतीजी ने उनलोगों को देखतेही महालज्जितहोकर आंखैंअपनी नीची करलीं सो ऋषीश्वरलोग उदासहोकर वहांसे नरनारायणका दर्शनकरनेकेवास्ते बदरी केदारकोचले तब पार्वती ने महादेवसे कहा कि आप कोईस्थान बिहारकरने के वास्ते न बनवाकर मुझे बन में लज्जितकरते हैं आज मारेलज्जाके मुझसे अपनामुँह किसीकोनहीं दिखलायाजाता यह सुनकर शिवजीबोले हे प्राणप्यारी तुम उदासमतहो हम इसबनको ऐसाशाप देते हैं कि आजसे जो कोई देवता व दैत्य व मनुष्य या पशुआदिक पुरुष इसबनमें आवेगा वह स्त्री होजावेगा इसीकारणराजासुद्युम्न स्त्रीहोगयाथा सो भोलानाथ सदा पार्वती के संग वहां बिहारकरते हैं व सोलहहजार सहेली गिरिजादेवी की सेवामें आठोंपहर बनी रहती हैं वहां सिवायमहादेवके दूसरापुरुष नहींजासक्ता जब राजासुद्युम्न स्त्रीहोने से मारेलज्जा के अपनेघर जा न सका तब अपनेसाथियोंसमेत व्याकुलहोकर उसी बनमें चारोंओर फिरनेलगा उसबनके दक्षिण सिवाने पर बुधबेटा चन्द्रमाका बैठाहुआ तपकरताथा जब अचानक में राजासुद्युम्न स्त्रीरूप फिरताहुआ उसीजगह जानिकला व बुध तपस्वी होने परभी उसकेरूपपरमोहितहोगया और सुद्युम्न स्त्रीरूपकाभीमन उसपरचलायमानहुआ तब दोनोंने आपस में गन्धर्ब बिवाह करलिया और वहांरहकर भोग व बिलासकरनेलगे जब बुधकीआज्ञानुसार सुद्युम्नके साथ की स्त्रियां पर्वतपरचलीगईं तब उन्हें गन्धर्बउठा-कर अपने लोकको लेगये जब सुद्युम्न स्त्रीरूपके पुरूरवानाम बेटा बुधसे उत्पन्नहुआ तब एकदिन सुद्युम्नने बशिष्ठगुरु का ध्यानकरके उन्हें यादकिया जब बशिष्ठऋषीश्वर अन्तर्यामी उसकेपास आनकर प्रकटहुये तब सुद्युम्न अपनावृत्तान्त उनसे कहकर

हाथजोड़ के बोला हे मुनिनाथ ऐसी कृपाकीजिये कि जिसमें फिरमुझे पुरुषकातन मिलै यहबचनसुनकर बशिष्ठजीबोले तूधैर्यधर मैंतेरेवास्ते उपायकरताहूं जबबशिष्ठऋषीश्वरने सुद्युम्नपर दयालुहोकर गौरीशंकरका ध्यानकरके स्तुतिकी तबभोलानाथ व गिरिजादेवीदर्शनदेकर बड़ेहर्षसेबोले तुमक्याचाहतेहो बशिष्ठजीने दण्डवत्करके विनय की हे महाप्रभु आपकृपाकरके सुद्युम्नको फिरपुरुषबनादीजिये यहबचनसुनकर पार्वती जीबोलीं कि सुद्युम्नके पुरुषहोजाने को शाप शिवशंकरने अम्बिकाबनको दियाहै वह मिटनहींसक्ता पार्वतीके यहकहनेपरभी शिवजीदयालुहोकरबोले हे बशिष्ठमुनि सुद्युम्न एकमहीनापुरुष व एकमहीनास्त्रीरहेगा यहबरदानदेकर महादेवजी पार्वतीसमेत अन्तर्द्धानहोगये व राजासुद्युम्न उसीसमय पुरुषहोकर पुरूरवाबेटे को साथलियेहुये अपनी राजगद्दीपरचलाआया सोएकमहीना पुरुषरहकर राज्यकाजकरता व दूसरेमास स्त्री रूपरहनेसे रोगकेबहाने राजमन्दिरमें रहताथा जबपुरुषहोनेपर सुद्युम्नको अपनी स्त्री से तीनपुत्र औरउत्पन्नहुये तबउसनेकुछदिन राजगद्दीका सुखभोगकर मनअपना संसारी माया से बिरक्तकरालिया व राज्यदक्षिणदेशका अपने तीनोंपुत्रोंको जोस्त्रीसे उत्पन्नहुये थे देदिया औरअपनी निजराजगद्दी पर पुरूरवा बेटेको जोबुधसेउत्पन्नहुआथा बैठाकर आपबनमें चलागया और कुछदिन हरिभजनकरके मुक्तहुआ सोराजापुरूरवासे चन्द्रबंशी व सुद्युम्न के दूसरेबेटोंसे सूर्य्यबंशी कुल जगत्में प्रकटहुआहै ॥

दूसरा अध्याय ॥

श्राद्धदेवके और सन्तानोंकी कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब राजासुद्युम्न बनमें अपनाशरीरत्यागकर मुक्तहुआ तबश्राद्धदेव उसकेबापने और सन्तानउत्पन्नहोनेकेवास्ते परमेश्वरका तपकिया जबपरमेश्वर की इच्छानुसार उसके श्रद्धानामस्त्रीसे दशपुत्र और हुये तब उसने बड़ेपुत्रकानाम इक्ष्वाकु रक्खा व दूसराबेटा पृखन्धरनाम हुआ वह बशिष्ठगुरुका गौवें दिनकोचराकर रातसमय उनकीरखवारी करता था एकदिन बरसातमें रातको बाघने एकगौको पकड़ा सो गाय का चिल्लाना सुनकर पृखन्धरउठा व उसने बिजुलीकीचमकमें शेरकोदेखकर तलवार उसपरचलाई सो वहखड्ग बाघका एक कानकाटकर गायकेलगा इसकारण वहगोमर गई प्रातसमय बशिष्ठजीने उसगोको देखकर पृखन्धरसेकहा तैनेगौतलवारसे मारडाली इसलिये तू शूद्रगोपालहोजा सोगुरुके शापसे पृखन्धरने वहतनअपना छोड़कर अहीरके यहां जन्मपाया सो उसतनमें ब्रह्मचर्य्यरहकर हरिभजनकरनेलगा और बनमें आग लगनेसे अपनी इच्छापूर्वक जलकरमुक्तहुआ व कविनाम तीसराबेटा राजाका परमहंस होगया व करुषनाम चौथेपुत्रसे कारुषजाति क्षत्रियोंने उत्पन्नहोकर उत्तरादिशाका राज्यकिया व दृष्टिवृक्नाम पांचवेंबेटेके बंशमें धारिष्टजाति क्षत्रियउत्पन्नहुये वहलोग

अपनीक्रिया व कर्मसे ब्राह्मणहोगये व नृगनाम छठवेंपुत्रके बंशमें सुमन्तआदिकसे अग्नि नामतक क्षत्रियरहकर अग्निकेबंश में ब्राह्मणउत्पन्नहुये व नभगनाम सातवेंबेटेकी संतान में नाभआदिकसे लेकर कईपीढ़ीउपरान्त मरुत्नामऐसा प्रतापी व चक्रवर्त्ती राजाहुआ कि जिसकेसमान किसी दूसरेराजाने यज्ञनहीं किया उसकेयज्ञमें सब बर्त्तन भोजनकरने व जलपीने व वस्तुरखने के वास्ते सुवर्णके बनेथे व उसनेसबदेवता व ब्राह्मणोंको अपने यज्ञमें इतनादान व दक्षिणादिया कि किसीके कुछइच्छा न रही व उसके बंशमें तृणविन्दुनामराजा लम्बुकाअप्सराका पतिहुआ व उसीअप्सरासे इड़विड़ानाम कन्या उत्पन्नहोकर विश्रवा ऋषीश्वरको ब्याहीगई जिससे कुबेरदेवता उत्पन्नहुये व तृणबिन्दु राजा के शालनाम एकपुत्रने बैशालीपुरी बसाई उसकेबंशमें हेमचन्द्र व सोमदत्तादिक बहुतसे धर्मात्मा राजाहुये थे ॥

तीसरा अध्याय ॥

श्राद्धदेव मनुके सन्तान उत्पन्न होनेकी कथा ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित उसी श्राद्धदेव मनुका पुत्र सर्यातिनाम राजा था उसके यहां सुकन्यानाम एकपुत्री अति सुन्दर उत्पन्न हुई इसलिये राजा उससे बड़ी प्रीति रखकर आठोंपहर उसको अपने साथ रखताथा एकदिन राजाने अपनी रानी व कन्यासमेत अहेर खेलनेवास्ते बनमें जाकर जहांपर च्यवनऋषीश्वरका स्थानथा डेराकिया जब वह कन्या अपनी सहेलियोंको साथ लेकर उस डेरेके निकट फिरने लगी तब उसने एकढेर मिट्टीका जिसमें दो छेद चमकते थे देखकर लड़कों के समान उनदोनों छेदों में कांटाचुभादिया जब उससे कि वह दोनों आंख च्यवनऋषीश्वरकी थीं रक्त बहनेलगा तब राजकन्या मारे डरके घबड़ाकर वहांसे सहेलियोंसमेत अपने डेरेमें चली आई ऋषीश्वर महाराजके दुःख पानेसे उसी समय राजाकी सेनामें सब मनुष्य छोटे बड़े व ऊंट व घोड़ा व हाथी आदिकका मल व मूत्र बन्द होगया और पेटमें पीड़ा होनेलगी तब राजाने यहदशा सबकी देखतेही अतिव्याकुल होकर बन वासियों से पूछा यह कैसा स्थानहै कि हमारी सेनाके लोग पीड़ित होरहे हैं वहांके लोगोंने कहा कि यह स्थान रहने च्यवनऋषीश्वरकाहै यह बात सुनतेही राजा उन ऋषीश्वरका स्थान ढूंढ़ताहुआ उसजगह जहांपर लोहू बहताथा जापहुँचा तब उसने रक्त देखकर अपने ज्ञानसे मालूम किया कि इसी टीलेमें शरीर च्यवनऋषीश्वरका मट्टीसे ढँपगया है और वह बीचध्यान परमेश्वरके ऐसे लीनहैं जो अपने तनकी सुधि नहीं रखते और यह रक्त उनकी दोनों आंखमें कांटाचुभा देनेसे बहता है यह वृत्तांत देखकर राजा अपनी सेनावालों से कांटा चुभानेका हाल पूछनेलगा तब राजकन्या बोली हे पिता यह अपराध अजानमें मुझसे हुआहै राजा यहबात सुनकर प्रथम बहुत

उदासहुये फिर उसी टीलेके पास खड़ेहोकर बड़े शब्दसे स्तुति उन ऋषीश्वरकी की व अपनेहाथसे वह मट्टी जिससे ऋषीश्वरमहाराजका अंगढँपगयाथा हटाया जब च्यवनऋषीश्वर वह शब्द सुनकर समाधिसेजागे और सावधानहुये तब राजाने उन्हें दण्डवत्करके हाथजोड़कर विनयकी हे मुनिनाथ यह अपराध अजानमें मेरीपुत्रीसेहुआ जो उसने तुम्हारीआंखमें कांटाचुभादिया इसीकारण मैं अपनीकन्याको तुम्हें अर्पण करताहूं आप ऐसा आशीर्वाददीजिये कि जिसमें मेरी सेनाका दुःखछूटजाय च्यवन-ऋषीश्वरने राजाके स्तुतिकरनेसे प्रसन्नहोकर ऐसा बरदानदिया कि सब किसीके पेट की पीड़ा छूटगई तब राजा अपनीकन्या च्यवनऋषीश्वरकेपास छोड़कर वहांसे सेना समेत राजमन्दिरपर चलेआये व च्यवनऋषीश्वर फिर बीचध्यान परमेश्वरके समाधि लगाकर चौदहवर्षतक आंखवन्दकिये बैठेरहे व राजकन्याभी उतनेदिन बिनाअन्नजल उनकेसामने हाथजोड़े खड़ीरही और वह ऐसी सुन्दरथी कि इन्द्रने उसकेपास आकर कहा कि तू यहां किसवास्ते इतनादुःख सहतीहै मेरेसाथचल हम तुझे इन्द्राणीबनाकर सुखदेवेंगे इसीतरह कुबेरादिक कईदेवतोंने आकर उसेअनेकप्रकारसे अपनेसाथ चलने को कहा पर उसकन्या पतिव्रताने किसीकीओर आंखउठाकर कभीनहींदेखा च्यवन-ऋषीश्वरको अपनापति व परमेश्वर समझकर उनकेचरणोंमें ध्यानलगाये खड़ीरही जब उसकोचौदहवर्ष खड़ेहुयेबीते तब च्यवनऋषीश्वरने समाधिसेजागकर क्यादेखा कि राजकन्या उसीतरह हाथजोड़े सम्मुखखड़ी है व उसकेशरीरमें केवल हाड़ व चाम रहगया ऐसा पातिव्रतधर्म्म उसकादेखकर च्यवनऋषीश्वर अतिप्रसन्नहुये व उसीदिन परमेश्वरकी इच्छानुसार अश्विनीकुमार वैद्य वहांआये और ऋषीश्वरको दण्डवत्करके विनयकिया जो आज्ञाहो सो तुम्हारीटहलकरें च्यवनऋषीश्वरबोले हमारीआंख अच्छी करके मुझेतरुणकरदो तो मुहँमांगीवस्तु तुम्हेंदेवें जब अश्विनीकुमारने औषधकाकुण्ड बनाकर ऋषीश्वरको उसमें स्नानकराया तो उसीसमय च्यवनऋषीश्वरकी आंखें अच्छीहोकर वह अतिसुन्दरवयस सोलहवर्षकी अवस्थाकेहोगये तब राजकन्या उन्हें देख कर अतिप्रसन्नहुई व च्यवनऋषीश्वरने आदरपूर्वक अश्विनीकुमारसे कहा कि जो मांगो सो देऊं यह बचनसुनकर अश्विनीकुमारबोले महाराज हम दवाईदेवतोंकी करतेहैं इसलिये देवतालोग अपनीपंक्तिमें हमकोभोजन करनेकेवास्ते नहीं बैठालते और सोम-यज्ञमें मेराभाग नहींदेते सो आप दयालुहोकर ऐसाकरदीजिये कि जिसमें मैंभी भाग पाऊं ऋषीश्वरबोले तू धैर्यधर तेरामनोरथ पूर्णहोगा जब अश्विनीकुमार बरदानपाकर आनन्दपूर्वक वहांसे बिदाहुये तब ऋषीश्वरने राजकन्यासे कहा मैं तपस्वीसंसारी सुख की कुछ इच्छा न रखकर सदाविरक्त रहताहूं पर तेरेपातिव्रतधर्म्मसे हम अतिप्रसन्न हैं इसलिये संसारीसुखके सबपदार्थ संयुक्त तेरे साथ भोग व बिलासकरेंगे ऐसाकहकर ऋषीश्वरमहाराज अपनेयोगबलसे उसीजगह एकमकान सुवर्णका रत्नजड़ित बाग व

तड़ागादिक समेत ऐसाप्रकटकिया कि जिसमें हरिइच्छासे सबबस्तु संसारांसुखकी रक्खी थीं तब ऋषीश्वरने राजकन्यासेकहा कि तू इसतड़ागमें स्नानकर जैसे उसने तालाब में गोतामारा वैसे सोलहवर्षकी देवकन्यासमान सुन्दरीहोगई व हजारदासी रूपवन्ती भूषण व वस्त्र पहनेहुये उसकेसाथ तालाबमेंसे प्रकटहुई जब उन्होंने राजकन्याको उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहनाकर सोरहोश्रृंगार उसका किया तब च्यवनऋषीश्वर राजकन्यासे अपनाविवाहकरके भोग व विलासकरनेलगे कुछ दिनबीते एकरोज राजा सर्यातिने अपनीस्त्रीसे कहा जिसदिनसे हम अपनी प्राणप्यारीकन्या बनमें ऋषीश्वरको सौंपआयेहैं तबसे कुछ समाचार उसका नहींपाया और बिनाप्रयोजन उनकोंअपने घर बुलानहींसक्ते सो मैं चाहताहूं कि अपनेयहां यज्ञकरके इसबहानेसे च्यवनऋषीश्वरको कन्यासमेत अपनेघर बुलावैं तो पुत्रीकासमाचारभी मालूमहोवै व उसे देखकर अपनी आत्माठंढीकरें जबरानीनेभी यहबात पसंदकी तब राजा यज्ञकीतैयारीकरके आप च्यवन-ऋषीश्वरको बुलानेगये और उनकेस्थानपर पहुँचकर क्यादेखा कि वहां कुछ टीला व झोपड़ी न होकर एकमकान जड़ाऊ बागसमेतबनाहै उसेदेखतेहीराजाने आश्चर्यमान कर मनमेंकहा कि देखो इसबनमें ऐसास्थान किसनेबनाया जिससमय राजावहांखड़ा हुआ यही बिचारकररहाथा उसीसमय राजकन्या दासियोंसमेत तालाबपर स्नानकरने वास्ते महलसे बाहरनिकली सो राजाको देखतेही उसनेबड़ेहर्षसे गले मिलनाचाहा पर राजाने उसकोगले न लगाकर मनमेंबिचारा कि कदाचित् वह ऋषीश्वरमरगयेहों व इसने कोईदूसरा पतिबनाकर यहसब बिभवप्रकटकियाहै जब राजाने इससंदेहसे उसको अपनेगले नहींलगाया तब राजकन्या बोली कि हे पिता तुमने मुझे नहींपहिंचाना जो गले न लगाया राजाबोले तेरे माता व पिताका उत्तमकुलहै तैंने दूसरापति बनाकर अपनेको कलंकलगाया यह बचनसुनकर वहबोली आपऐसासन्देह न करें मैंने दूसरापति नहीं किया यह सब बिभव जो देखतेहो ऋषीश्वरमहाराजने जिन्हें मुझे सौंपगयेथे अपने योगबलसे प्रकटकिया है यह बचनसुनतेही राजानेबड़ेहर्षसे अपनीकन्याको प्यार किया व जब मन्दिरमें जाकर च्यवनऋषीश्वरको अश्विनीकुमारकेसमान अतिसुन्दर व तरुणदेखा तब आनन्दपूर्वक दण्डवत्करके उनसे बिनयकिया महाराज मैं सोमयज्ञकरने की इच्छारखकर चाहताहूं कि आपभीदयाकरके उसयज्ञमें चलिये च्यवनऋषीश्वर यह बात मानकर स्त्रीसमेत राजमंदिरपरगये रानीअपनीबेटी व दामादको देखकर हर्षितहुई जब च्यवनऋषीश्वरने राजाके यहां यज्ञआरम्भकिया और सब देवता व ऋषीश्वर आदिक वहांआये तब च्यवनऋषीश्वरने देवतोंसे कहा यज्ञमें अश्विनीकुमारको भी भागदेव यह बचनसुनकर इन्द्रबोले अश्विनीकुमार वैद्य रोगियोंको छूतेहैं इसलिये उनकोयज्ञका भागदेना न चाहिये च्यवनऋषीश्वरबोले हे इन्द्र मैं अश्विनीकुमारको यज्ञकाभाग देनेकेवास्ते बचनहारचुकाहूं इसलिये उन्हें अवश्य भागदूंगा यह बचन

सुनतेही इंद्रक्रोधितहोकर बोले हे ऋषीश्वर तुम हमारा कहना नहींमानकर अश्विनी-कुमारको यज्ञमें भाग देवोगे तो तुमको मारडालूंगा ऐसा कहकर जैसे इन्द्रने च्यवन-ऋषीश्वरके मारनेके वास्ते गदा उठाई वैसे ऋषीश्वरकी आज्ञा व परमेश्वरकी इच्छा-नुसार इन्द्रका हाथ उसीतरह उठाहुआ रहगया व उसने गदा मारने के वास्ते बहुत चाहा पर हाथ उसका नीचेको नहीं झुका जब इन्द्र अपने करतबसे लज्जित होकर हाथ उठे रहने में दुःख पानेलगा तब सब देवता व ऋषीश्वरों ने जो वहांपर बैठे थे इन्द्रसे कहा तुमने च्यवनऋषीश्वर महात्मापुरुष से जैसा अनुचित किया वैसा दण्ड पाया अब तुम उन्हींसे अपना अपराध क्षमाकरवावो तब तुम्हाराहाथ नीचेको झुकेगा जब इन्द्रने हार मानकर इसतरह पर विनय किया आप महात्मापुरुष हैं मैं तुम्हारी महिमा न जानकर अपने फलको पहुँचा अब दयालु होकर अपराध मेराक्षमाकीजिये और अश्विनीकुमार को यज्ञमें भाग दीजिये हम सब देवतोंको आपका कहना अंगी-कारहै जब च्यवनऋषीश्वरने इन्द्रको दीन देखकर अपने हाथसे उसका हाथ झुका दिया तब हाथ इन्द्रका नीचे झुककर ज्योंका त्यों होगया जब च्यवनऋषीश्वर व देवतों ने अश्विनीकुमार का भाग यज्ञमें देकर उसको अपनी पंक्तिमें बैठाके खिलाया व यज्ञ राजाका अच्छीतरह सम्पूर्ण होकर अश्विनीकुमार अतिप्रसन्न हुये तब सब देवता व मुनि व च्यवनऋषीश्वरादिक अपने २ स्थानपर चलेगये इतनी कथा सुना-कर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई बीच शरण परमेश्वरके जाकर उनका तप व स्मरण करताहै उसे लोक व परलोक दोनों जगह सुख मिलताहै व कोई दुःख दे नहीं सक्ताहै व मनुष्य जो कुछ मुखसे कहै या जिसवस्तुकी चाहना करै नारायणजी सब बचन व मनोरथ उसका सिद्ध करते हैं सो हे परीक्षित उसी श्राद्धदेवके वंशमें रेवतनाम राजा बड़ा प्रतापी होकर उसके यहां रेवतीनाम एक कन्या अतिसुन्दरी व बुद्धिमती उत्पन्नहुई जब राजाने उस कन्याको विवाहनेयोग्य देखा तब मनमें विचारा कि जगत्की रचना करनेवाले ब्रह्माजी हैं मैं उनसे जाकर पूंछूं जिस राजकुँवर का वह रूप नाम बतलावैं उसीसे अपनी कन्या विवाहदूं ऐसा विचारकर राजा अपनी कन्यासमेत ब्रह्मलोक में गये तब ब्रह्माने उनको बड़ा राजा समझकर आदरपूर्वक बैठाला उससमय ब्रह्माकी सभामें गन्धर्वलोग गाते थे इसलिये राजाने कुछ कहना उचित न जानकर विचार किया जब गाना बन्दहोजावै तब मैं अपना मनोरथ कहूं इस इच्छासे थोड़ी देर वहां राजा बैठारहा जब गन्धर्व गाचुके तब राजाने ब्रह्मासे विनय किया जो राजकुमार तुम्हारे जानमें अतिसुन्दरहो उसको बतला दीजिये तो मैं इस कन्याका विवाह उससे करदूं ब्रह्माजी बोले जबसे तुम मेरे यहां आये तबसे संसार में सत्ताईसयुग बीतगये जो राजा तुम्हारे सामने मर्त्यलोकमें थे वे सब मरगये अब उनके वंशमें कोई दूसरा राजा धर्मात्मा बीच संसारके न रहा इसवास्ते तुम अपनी कन्या

वसुदेवजी के पुत्र बलभद्रनामको जो शेषनागका अवतारहैं बिवाहदेव सो राजारेवतने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार रेवती अपनी कन्या बलरामजीको बिवाहदिया व राजा आप बनमें जाकर हरिभजनकरके मुक्तहुआ व रेवती सतयुगकी कन्या इक्कीसहाथ लम्बी थी इसलिये बलभद्रने अपने हलत दबाकर उसकाअंग अपने बराबर छोटाकरलिया ॥

चौथा अध्याय ॥

राजा अम्बरीषकी कथा ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित राजा सर्य्याति के सन्तानमें अम्बरीष राजा ऐसा वैष्णव व परमभक्त उत्पन्न हुआ कि जिसपर ब्राह्मणका शाप नहीं लगा इतनासुन कर राजापरीक्षित ने पूछा महाराज यह बड़े आश्चर्यकी बातहै जो ब्राह्मणका शाप मिथ्याहोवै व परमवैष्णव राजाका ब्राह्मणने किसवास्तेशापदिया इसकावृत्तान्त कहिये शुकदेवजीबोले हे राजन् इसकीकथा इसतरहपरहै कि राजाअम्बरीष इन्द्रियोंका सुख छोड़कर तप व पूजानारायणजीकी सच्चेमनसेकरके हरिचरणों में ध्यानलगायेहुये राज्य करताथा व उसकेयज्ञमें देवतालोग ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंकातनुधरकर अपना २ भाग लेतेथे और वहदिनरात मुखसे परमेश्वरका स्मरण व हाथोंसे ठाकुरजीकीपूजा व सेवा व आंखोंसे हरिचरणोंका दर्शन ध्यानमेंकरके कानोंसे कथा व लीलाअवतारोंकीसुनकर संसारीव्यवहार स्वप्नवत् जानताथा इसलिये नारायणजी दीनदयालु उसको अपनापरम भक्तजानकर उसकेराज्य व देशकीरक्षा सुदर्शनचक्रसेकरतथे व राजाकीस्त्री भी परम वैष्णव व पतिव्रताथी सोराजा व रानी दोनोंमनुष्य परमेश्वरकी भक्ति अपने हृदयमें रखकर दशमीकोसंयम व सबएकादशी निर्जलव्रतकरते थे व द्वादशीकेदिन राजासाठकरोड़गो विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदेकर और उनको भोजनखिलाके आपद्वादशीमें व्रतपारण करताथा सोएकबेर एकादशीके दूसरेदिन दोघड़ीद्वादशीथी उसीदिन प्रातसमयदुर्वासा ऋषीश्वरने अट्ठासीहजार ऋषीश्वरोंको साथलिये वास्तपरीक्षालेने धर्मके द्वादशीको राजाअम्बरीष के मकानपरआकर भोजनमांगा राजानेऋषीश्वरका सन्मानकरके विनय किया महाराज भोजनकापदार्थ बनाहै दुर्वासाबोले हम स्नान करआवैं तबभोजनकरैं ऐसाकहकर यमुनाकिनारे स्नानकरनेचलेगये और वहां जानबूझकर पूजा व स्नान में बिलंबकिया जिसमेंद्वादशी बीतजावे जबदुर्वासा न आये और द्वादशीबीतनेलगी तब राजाने घबड़ाकर ब्राह्मणोंसेपूछा दुर्वासाऋषीश्वर स्नानकरके नहींफिरे व द्वादशीजाता चाहतीहै त्रयोदशीमें व्रतपारण नहींहोता सोक्याकरना चाहिये ब्राह्मणोंने आज्ञादी द्वादशीमें ठाकुरजीके चरणामृत से अपनाव्रतपारण करलेव चुल्लूभर जलपीना भोजन की गिनतीमेंनहींहै राजाने ब्राह्मणोंकी आज्ञानुसार द्वादशीमें चरणामृतसे पारणकरलिया एकक्षणभर जब द्वादशीबीतगई तबदुर्वासाऋषीश्वर स्नानकरके आये जबराजाने बड़े

हर्षसे उनको भोजनकरनेवास्ते कहा तबऋषीश्वरबोले हे राजन् तूसदा अपनेव्रतको द्वादशीमे पारणकरताथा आजइससमय द्वादशीबीतगई तैनेपारणाकिया या नहीं राजाने कहा महाराज मैंनेकुछभोजन नहींकरके ब्राह्मणोंकी आज्ञानुसार चरणामृतसे पारण करलिया है यहबचनसुनतेही दुर्वासाक्रोधित होकरबोले तैंने हमकोद्वादशीमें भोजन खिलानाकहकर बिनाआये हमारे ब्रतपारण करलिया ऐसा तुझे नहींचाहिये था ऐसा कहकर क्रोधवशदुर्वासाने एकलट अपनीजटासे नोचकर पृथ्वीपर पटकी तो उसीसमय कृत्यानाम स्त्री शस्त्रलिये प्रकटहोकर राजाको मारनेदौड़ी सो हे परीक्षित दुर्वासाने बिना अपराध राजाकोमारनेचाहा इसलिये नारायणजीने अधर्म दुर्वासा ऋषीश्वरका समझ कर सुदर्शनचक्रको आज्ञादी कि तू अभीजाकर राजाकी रक्षा व सहायताकर जिसमें उसको दुःख न पहुँचे सो उसीसमय सुदर्शनचक्र वहां आनकर प्रकटहुआ जब सुदर्शनचक्रके प्रकाशसे अंगकृत्याका जलनेलगा और वह व्याकुलहोकर भागी तब सुदर्शनचक्र दुर्वासाऋषीश्वरको जलानेचला जब दुर्वासाभीवहांसे अपनाप्राणलेकर भागे व सुदर्शनचक्रने उनका पीछाकिया तब वह भागकर बरुण व कुबेर व इन्द्रलोकादिमें इसइच्छासेगये कि कोई देवता हमारीरक्षाकरै पर किसीदेवताको ऐसीसामर्थ्य नहींहुई जो ऋषीश्वरको बचासके जब दुर्वासाने अपनाबचाव कहींनहींदेखा तब ब्रह्मलोकमें दौड़गये ब्रह्मा उनको देखतेहीबोले हे दुर्वासा तुमने उनआदिपुरुष भगवान्के भक्तका अपराधकियाहै जो ईश्वर हम सबकेमालिकहोकर पलकभांजतेभरमें तीनोलोकका नाश करसक्तेहैं मैं तुम्हारीरक्षा नहींकरसक्ता तब दुर्वासा वहांसेभी निराशहोकर महादेवकी शरणगये तब शिवशंकरबोले हे दुर्वासा परमेश्वरकीमायासे हम सबलोग उत्पन्नहुयेहैं पर उनकीमायाका भेद मैं व नारद व सनकादिक व ब्रह्मा व कपिलदेवआदिक कोई नहींजानसक्ते तुम उन्हीं परब्रह्मकेशरणजाव तो बचोगे मुझेसामर्थ्यनहीं है जो तुम्हारी रक्षाकरसकूं जब दुर्वासानेदेखा कि सिवाय परमेश्वरके कोईदूसरा तीनोंलोकमें मेरारक्षक नहीं है तब बैकुण्ठनाथकेशरणगये व स्तुतिकरके विनयपूर्वककहा मैंने तुम्हारेभक्तका अपमानकिया इसलिये सुदर्शनचक्र मुझे माराचाहताहै सो मैं आपकीशरणआया शरण आयेकी लाजरखकर मेरीरक्षाकीजिये यहबात सुनकर बैकुण्ठनाथबोले हे दुर्वासा हम त्रिलोकके मालिकहैं परन्तु अपनेभक्तपर मेरा कुछ बशनहींचलता उसके अधीनरहताहूं मुझको अपनेभक्त जैसे प्रियहैं वैसा मैं लक्ष्मीजी व अपनेतनुकोभी प्यारानहींजानता जिसतरह पतिव्रतास्त्री अपनीसेवासे पतिको बशकरलेती है उसीतरह मैं अपनेभक्तोंके अधीनरहताहूं व निर्गुणभक्त सब संसारीसुख त्यागकर सिवाय ध्यानहरिचरणोंके दूसरी कुछ इच्छा नहींरखते व मुझे अपना इष्टदेवमानकर मनसा बाचा कर्मणासेचाहतेहैं इस लिये मैं उनकाबचन मिटानहींसक्ता व मुझे अपनेबचन टलजानेका कुछ शोचनहीं होता पर मेरेभक्तका कहा कोई मिटानहींसक्ता सो हे दुर्वासा मेरेभक्त बड़ेदयावान्होकर

क्रोधको अपने बशरखते हैं व किसीका अनभला नहींचाहते कदाचित् राजाअम्बरीष अपने अन्तःकरणसे क्रोधकरता तो तुम उसीजगह भस्महोजाते यहांतक नहींपहुँचते हम तुम्हारीरक्षा नहींकरसक्ते तुम राजाअम्बरीष मेरेभक्तकी शरणजाव वही तुम्हारी रक्षा करैगा नहीं तो सुदर्शनचक्रसे न बचोगे ॥

पांचवां अध्याय ॥

राजाअम्बरीषकेपास दुर्वासाऋषिका आना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब दुर्वासा बैकुण्ठनाथसेभी निराशहुये तब वह अति लज्जितहोकर राजाअम्बरीषके पासआये और दण्डवत्करके खड़ेहुये राजा यहदशा उनकी देखतेही अपनेधर्म व दयासे कि शत्रुकाभी क्लेश नहींदेखसक्तेथे बहुतस्तुतिकरने उपरान्त रोकरबोला हे सुदर्शनचक्र ऋषीश्वरको ब्राह्मणजानकर इनकीरक्षाकरो किस वास्ते कि तुम्हारेमालिक ब्रह्मण्यदेवहोकर मैंभी ब्राह्मणकी भक्तिरखताहूं इसलिये मुझसे ऋषीश्वरका दुःख नहींदेखाजाता व मैंने आजतक जो धर्मकियाहो उसकेफलसे दुर्वासा कुछदुःख न पावैं यह बचन अम्बरीषका सुनतेही सुदर्शनचक्रने तेज अपनाठण्ढाकर लिया तबराजाने दुर्वासासे जो आंखनीचेकिये खड़ेथे हाथजोड़कर कहा महाराज सब पदार्थबनेहैं चलकर भोजनकीजिये सो दुर्वासाने छत्तीसप्रकारका व्यञ्जन बड़ेआनन्दसे भोजनकिया हे परीक्षित दुर्वासा सुदर्शनचक्रके भयसे आकाश व पातालमें एकवर्ष पर्यन्त भागाकिये व राजाअम्बरीष वर्षदिनबराबर उसीजगह वैसेही खड़ारहकर इस बातकी चिंताकरतारहा देखो मेरेवास्ते ऋषीश्वर इतनादुःखपातेहैं सोवर्षदिनतक वही भोजन जो दुर्वासाकेवास्ते बनाथा हरिइच्छासे ठंढानहींहुआ जब ब्राह्मणोंको भोजन कराके राजानेभी प्रसादपाया तब दुर्वासा ऋषीश्वर अतिअधीनताईसेबोले हे अम्बरीष मैं आजतक हरिभक्तोंकी महिमा नहींजानताथा कि परमेश्वरकेभक्त सबसेप्रबलहैं तुम धन्यहो जो मुझ अपराधीकेवास्ते वर्षदिनतक खड़ेरहकर चिन्ताकरतेरहे व सुदर्शनचक्र की स्तुतिकरके तुमनेमेराप्राणबचाया मुझेसामर्थ्यनहीं है जोहरिभक्तोंकामाहात्म्य वर्णन करसकूं जबदुर्वासा राजासे बिदाहोकर चलेगये तब और सबब्राह्मण व ऋषीश्वर जो वहांथे राजाकीस्तुतिकरनेलगे उनकाबचनसुनकर राजाबोला मैंकौन गिनतीमेंहूं यहसब परमेश्वर के सुदर्शनचक्रका प्रतापथा जिसनेमुझे कृत्याकेहाथसे बचाया देखोपरमेश्वर की इतनीकृपाहोनेपरभी राजाअम्बरीष कुछअभिमान न रखकर भक्तिकेतुल्य इन्द्र लोकका सुखनहींसमझताथा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित यहथोड़ी सी महिमा अम्बरीषकी मैंने तुमकोसुनाई है उसकी भक्ति व गुणोंका सबवृत्तान्त कोई वर्णनहींकरसक्ता सो कुछकालबीते राजाअम्बरीषने बिरक्तहोकर राजगद्दी अपनेछोटे पुत्रकोदेदिया व आप बनमें जाकर हरिभजनकरके मुक्तहुआ ॥

छठवां अध्याय ॥

राजाइक्ष्वाकु का अपनेपुत्रपर क्रोधकरना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित अम्बरीषकेवंश में इक्ष्वाकुनामराजा बड़ाप्रतापीहोकर एकदिन शशाद अपने बड़ेबेटेसेबोला तू बनमेंजाकर अहेरमारलेआव तो मैं पितरों का श्राद्धकरूं सोराजकुमार बनमेंखरगोश मारकर भूखलगने से थोड़ामांस उसका खालिया शेषमांस अपनेबापकेपासलेआया जबराजाश्राद्धकरनेवास्तेबैठे तबबशिष्ठऋषीश्वर अपने योगबलसे जानकरबोले हे राजन् इसमेंसे थोड़ामांस तेरेपुत्रनेखालियाहै इसलिये यहमांस श्राद्धकरनेयोग्य नहींरहा यहवचनसुनतेही राजाने शशादको अपने नगरसे बाहरनिकालदिया तबवहबनमें जाज्वल्यऋषीश्वरकी कुटीपरजाकर हरिभजन करनेलगा जबकुछकालबीते राजाइक्ष्वाकुमरगये तबबशिष्ठऋषीश्वरने शशादको बनसे लाकर राजगद्दी पर बैठादिया उसके वंशमें पुरंजयनामराजा बड़ाप्रतापी व बलवान् हुआ सो एकबेर देवतोंको दैत्योंने युद्धमें जीतलिया जब इन्द्रने जाकर ब्रह्मासे अपने विजय का उपाय पूछा तब ब्रह्माजी बोले हे इन्द्र तुम मर्त्यलोकसे राजापुरंजयको अपनी सहायताकेवास्ते बुलावो तो तुम्हारी विजयहोगी यह बचनसुनतेही इन्द्र ने राजापुरंजय के पासजाकर विनयाकिया कि आपको हमारा सहायकहोकर दैत्यों से लड़नाचाहिये पुरंजयबोला हे इन्द्र मुझे तुम्हारी सहायताकरने में कुछ सन्देह नहीं है पर दैत्यों से लड़तेसमय मुझे इतना बल उत्पन्न होगा कि यह हाथी व घोड़ा मेरा बोझ उठानहीं सकैंगे इसलिये तुम बैलरूप होकर मुझे अपनी पीठपर उठाओ तब मैं दैत्यों से लडूंगा जब इन्द्रने अपने अर्थ साधने के वास्ते बैलरूप धरा तब राजा ने उसपर चढ़कर दैत्यों को युद्ध में जीतलिया जब राजाकी सहायता से इन्द्रादिक ने अपना राज्य पाया तब पुरंजय फिर मर्त्यलोक में आनकर अपना राज्य करने लगा उसके वंशमें सावस्तनाम राजा महाप्रतापी होकर सावस्तीपुरी बनाई उसका पोता राजा कुवलयाश्व ऐसा बलवान् उत्पन्नहुआ जिसने उतंग ऋषीश्वरकी सहायता करके धुन्धनाम दैत्यको मारडाला व उस दैत्यके मुखसे ऐसी ज्वाला निकली जिस अग्निसे इक्कीसहजार पुत्र राजा कुवलयाश्व के भस्म होगये दढ़हास आदिक तीनबेटे उसके बचे सो दढ़हासका पुत्र निकुम्भ होकर उसके बंशमें युवनाश्व नामराजा ऐसा प्रतापी व बलवान् हुआ जिसके आधीन सातोंद्वीप के राजा रहते थे पर वह सन्तान न होने से सदा उदास रहताथा एक दिन राजा ने ऋषीश्वरों से विनयकिया महाराज आपलोग कोई ऐसा उपायकरैं जिसमें मेरे पुत्रहो सो ऋषीश्वरों ने पुत्र होने के वास्ते राजासे यज्ञ कराके एक कलशा पानीका मन्त्र पढ़कर यज्ञशाला में इस इच्छासे रक्खा कि प्रातःकाल रानीको यह जल पिलवावेंगे तो उसके पुत्रहोगा जब रातको

राजा व ऋषीश्वरलोग उसी यज्ञशालामें सोये और परमेश्वरकी इच्छानुसार राजाको तृषालगी तो उसने धोखे से वह जल पीलिया तब प्रातःकाल ऋषीश्वरलोग यह वृत्तांत जानकर बोले हे राजन् तुम्हारे भाग्य व नारायणजीकी इच्छामें किसीका बश नहीं है तेरे पेटसे एक बालक उत्पन्न होगा राजा यह बचन सुनकर पहिले उदासहुआ फिर इच्छा परमेश्वरकी इसीतरह जानकर सन्तोषकिया जब पेट राजाका गर्भवती स्त्री के समान प्रतिदिन बढ़नेलगा और दशमहीने बीते तब ऋषीश्वरोंने दहिना कोखा राजा का चीरकर पेटमें से लड़का निकाललिया व घाव सीकर हरिइच्छासे राजाको चंगा करदिया जब उस बालकने रोकर दूधमांगा तब इन्द्रने अपना अँगूठा अमृतभराहुआ उसके मुखमें डालकर चुसाया तो पेट उसका भरगया व इन्द्रने अँगूठा डालतेहीसमय उसे मान्धाता पुकारकर कहाथा कि इसका पालन मैं करूँगा इसलिये ऋषीश्वरों ने उसकानाम मान्धाता रक्खा सो वह सातोंद्वीपका ऐसाप्रतापी व बलवान् राजा हुआ कि जिससे रावणआदिक सब दैत्य व राक्षस डरते थे व उसने यज्ञकरके ब्राह्मणों को बहुत दान व दक्षिणादी इसकारण तेज व बल उसका अधिकहुआ व मान्धाताके यहां मुच-कुन्दादिक तीनपुत्र व पचास कन्याहुईं सो उसने पचासोंपुत्री अपनी सौभरि ऋषीश्वर को ब्याहदीं इतनी कथासुनकर परीक्षितने पूँछा महाराज मान्धाताने पचासकन्या एक ऋषीश्वरको क्यों ब्याहदिया था शुकदेवजी बोले हे राजन् सौभरि ऋषीश्वर यमुना किनारे जलमें बैठे तप करते थे साठहजार वर्ष तप करनेउपरान्त एकदिन ऋषीश्वरने मछली को अपने बच्चोंके साथ यमुनाजल में क्रीड़ा करते देखा तब वृद्ध होनेपर भी मनमें यह बिचारा कि गृहस्थाश्रम बहुतअच्छा होताहै जब ऋषीश्वरको इच्छा गृहस्थी करनेकीहुई तब उन्हों ने राजा मान्धाताके पास जाकर कहा हमको एककन्या अपनी देव राजाने शापके भयसे यह उत्तरदिया महाराज मेरे पचासपुत्री हैं आप राजमन्दिर में जावैं जो कन्या तुमको अंगीकारकर उसका ब्याह तुमसे करदूं यह बचन सुनकर सौभरि ऋषीश्वरने बिचारा कि मुझ वृद्ध मनुष्यको यह सब राजकन्या किसतरह अंगी-कार करेंगी तरुण स्त्री वृद्धमनुष्यको नहीं चाहती हैं ऐसा बिचारकर ऋषीश्वरने तपो-बलसे अतिसुन्दर व तरुणस्वरूप अपना बनालिया कि जिसे देखकर अप्सरा मोहित होजावैं जब वह ऋषि रूप अपना अश्विनीकुमार के समान बनाकर राजमन्दिर में गये तो उनकी सुन्दरताई देखतेही पचासों राजकन्या लाज छोड़कर उनपर मोहित होगईं तब राजा मान्धाताने विधिपूर्वक पचासों कन्या ऋषीश्वरको ब्याहदीं व ऋषीश्वर महाराज सबको अपने स्थानपर लाये और उन्होंने अपने योगबलसे पचास बिमान रत्नजटित बाग व तड़ागादिक सब वस्तु संयुक्त बनादिये और सौभरिऋषी-श्वर पचास रूप धरकर एक २ स्त्रीसे बिलग २ बिमानों में भोग व बिलास करनेलगे वह बिमान ऋषीश्वरकी इच्छानुसार उड़कर इन्द्रलोकादिकमें चलेजाते थे और उन

बिमानोंकी शोभा देखकर देवता व देवकन्या व मान्धाताआदि ईर्षासंयुक्त उनकी बड़ाई करते थे जब इसीतरह सुख व बिलास करते हुये उन ऋषीश्वरके पचासहज़ार पुत्रहुये व उनका इतना बंश बढ़ा कि जिसकी कुछ गिनती नहीं होसक्ती तब उन्होंने बहुत दिन संसारीसुख भोगकरके एक दिन मनमें बिचारा कि देखो इतने दिन हमने सुख भोगा तिसपरभी मन नहीं भरा व मैंने अपने अज्ञान से हरिभजन व स्मरण छोड़ दिया और संसारी माया में फँसकर नष्टहुआ कदाचित् इसीतरह मायाजाल में फँसा हुआ मरगया तो परलोक मेरा बिगड़जायगा इसलिये फिर परमेश्वरका तप व भजन करना चाहिये ऐसा बिचारतेही सौभरिऋषीश्वरने मन अपना संसारीमायासे विरक्तकर-लिया व पचासों स्त्रीसमेत बनमेंचलेगये व योगाभ्यासके साथ अपना तनु त्यागदिया तब पचासों स्त्री उनके संग सतीहोकर पतिसमेत सत्यलोकमें चलीगई ॥

सातवां अध्याय ॥

राजात्रिशंकु व मुनि की कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित मान्धाता के मरनेउपरांत अम्बरीषनाम बड़ाबेटा उस की गद्दीपरबैठा उसकेबंशमें हारीतनाम ऐसाप्रतापीराजाहुआ जिसने नागोंकी सहायता करके गन्धर्व्वोंकोमारा तबनागोंने बड़ेहर्ष से अपनीबहिन उसको ब्याहकर यहबरदान दिया जो लोग तुम्हारेनामका स्मरणकरैंगे उनकोकोई सर्प दुःख न देगा हारीतके बंश में त्रिशंकुनामराजा उत्पन्नहुआ और बशिष्ठगुरूके पुत्रोंने उसे ऐसाशापदिया कि चांडाल होगया व फिर बिश्वामित्र के बरदान से उसको स्वर्गमिला इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे स्वामी इसकीकथा बिस्तारपूर्वक कहिये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित त्रिशंकुराजा एकदिन बशिष्ठगुरू से बोला आपमुझे कोई ऐसा यज्ञकरावैं कि जिसमें इसीशरीर से स्वर्गको चलाजाऊं यहसुनकर बशिष्ठजी ने कहा हमको ऐसा यज्ञकराना नहींआता जब त्रिशंकुनेजाकर बशिष्ठके बेटोंसे यहीबातकही तब उन्होंने उसेशापदिया कि तू गुरूकाबचन झूंठसमझकर फिर हमारेपास पूंछनेआया इसलिये चांडालहोजा सो त्रिशंकु जब रातको सोकर प्रातसमयउठा तो अंगउसका कालाहोकर कपड़ेनीले होगये इसलिये लोगों ने उसकाछूना बन्दकरदिया तब वहघबड़ाकर बीचशरण बिश्वामित्र ऋषीश्वरके जो बशिष्ठजी से शत्रुतारखते थे जाकरबोला महाराज गुरूके बेटों ने मुझे शापदेकर चांडालबनादिया व मेरीइच्छास्वर्ग में जानेकी थी सो पूरी नहींहुई इसवास्ते तुम्हारीशरणआया हूं जिसमें मेरीकामना पूरीहो वैसाकीजिये यहबचनसुनतेही बिश्वा-मित्र हँसकरबोले हे राजन् शापदेनेसे तेरास्वरूप जो चांडालकेसमान होगयाहै वह किसी-तरह बदलनहींसक्ता पर मैं तुझको इसीरूपसे स्वर्ग में पहुँचादूंगा ऐसाकहकर बिश्वा-मित्रने सम्पूर्ण पृथ्वीके ऋषीश्वरोंको अपनेयहां बुलाया उसमें सौपुत्र बशिष्ठगुरूके नहीं

आये इसलिये बिश्वामित्रने उनलोगोंको शापदेकर डोमबनादिया व राजात्रिशंकुसे यज्ञ कराया जबउसमें किसीदेवता ने आहुति नहींली तब बिश्वामित्रने क्रोधितहोकर अपने कमण्डलुकेपानीसे त्रिशंकुको स्नानकराकेकहा कि तू मेरेतपोबलसे स्वर्गमें चलाजा सो वह चांडालहोनेपरभी बिश्वामित्रके योगबलसे स्वर्ग को चढ़गया व इन्द्रासनपरजाकर थोड़ीदेर बैठा जबइन्द्रने देखा कि चांडालमनुष्य इन्द्रासनपरबैठाहै तब एकलातमारकर उसको गिरादिया और देवतोंने त्रिशंकुसे कहा तू चांडालहै इसलिये शिरनीचे व पैर ऊपरकरके गिर चांडालका ठिकाना स्वर्ग में नहीं है गिरतीसमय चिल्लाकरपुकारा हे बिश्वामित्र महाराज मुझे इन्द्रने लातमारकर इन्द्रासनसे गिरादिया मेरी सहायताकीजिये यहबचनसुनतेही बिश्वामित्रने त्रिशंकुसे कहा तू उसीजगहरह जब ऋषीश्वरकी आज्ञा-नुसार वह उसी स्थानपर ठहरगया व बिश्वामित्र अपने योगबलसे उसके रहनेवास्ते जगह नवीनस्वर्ग तय्यारकरके दूसरे देवता बनानेलगे तब देवतोंने घबड़ाके बिश्वा-मित्रकी शरणजाकर बिनयकिया महाराज दूसरे देवताबनाने से हमलोगों का अपमान होगा बिनाआज्ञा नारायणजीकी नईबात करना उचितनहीं है यहबचनसुनकर बिश्वा-मित्रबोले मैं त्रिशंकुको स्वर्गदेने के वास्ते बचन हारचुकाहूं इसलिये यह नयास्वर्ग मेरा बनायाहुआ उसकेरहनेवास्ते स्थिररहेगा पर दूसरे देवतों की रचना न करूंगा जब देवता हारमानकर बोले बहुतअच्छा तब बिश्वामित्र ने दूसरेदेवता नहींबनाकर अपना स्वर्ग बनायाहुआ रहनेदिया सो आजतक राजात्रिशंकु उसीस्वर्गमें उलटेलटके हैं व उसके मुखसे जो लारबहती है उसीकी कर्मनाशानदी प्रकटहुई जिसनदी में पैरडालने से सब पुण्यमनुष्यके क्षीणहोजाते हैं व त्रिशंकुकीछाया मगधदेशपरपड़ती है इसलिये मगधको मरनेवास्ते अशुद्धकहते हैं त्रिशंकुकापुत्र हरिश्चंद्रनाम राजा बड़ाप्रतापीहुआ और उस ने पुत्रहोनेवास्ते बरुणदेवताकी मानतामानी थी कि मेरे बेटाहो तो उसी बालकका तुम्हें बलिदान चढ़ाऊं जब बरुणदेवताकी कृपासे रोहितनाम बेटा उसकेहुआ तब राजाने प्रेमवश उसे बारहबर्षतक बलिदाननहीं दिया जब बरुणदेवताने बलिदान देनेवास्ते अतिहठकिया और उसबालकने समझा कि घररहनेसे एकदिन अवश्य बलिदानदिया जाऊंगा तबवह अपनाप्राणबचाकर तीर्थयात्राकरने चलागया व बरुणने बलिदान न पाने से क्रोधितहोकर हरिश्चन्द्रके जलंधरकारोग उत्पन्नकिया जब राजाउसरोगसे मरण तुल्यहोगया तब रोहितने यहवृत्तान्तसुना कि मेरेपिता बरुणदेवताके क्रोधसे माराचाहते हैं तब उसने कहा मेरे ऐसे जीने पर धिक्कार है जो मेरा पिता मेरेवास्ते माराजावे ऐसा बिचार कर जब वह बलिदान होने के वास्ते अपने घर आनेलगा तब राह में उसने सुनःसेफ बिश्वामित्र के भानजे को देखा तब रोहित ने सुनःसेफ के माता व पिता को जो अति कंगाल होकर तीन पुत्र रखते थे कहा सौ गौ हमसे लेकर एक पुत्र हम को देदेव यह बचन सुनकर अजयकीर्ति पिता सुनःसेफका बोला बड़ा बेटा मुझे बहुत

प्यारा है उसे न दूंगा व उसकी स्त्री बोली मैं छोटेपुत्रको बहुत प्यारकरती हूं उसे न बेचूंगी यहबचन अपनेमाता व पिताकासुनकर सुनःसेफ मँझलेपुत्रनेकहा मेरामोह माता व पिता नहींरखते इसलिये मैं रोहितकेहाथ बिकजाताहूं जब यहबचनसुनकर अजय-कीर्ति व उसकीस्त्री चुपहोरही तब रोहित ने सौ गौ विधिपूर्वक उन्हें देकर सुनःसेफको मोल लेलिया व उसे अपनेबदले बरुणदेवताका बलिदानदेने के वास्ते साथलेकर घर कोचला तब राहमें बिश्वामित्र ऋषीश्वरमिले जब उन्होंने अपनेभानजेको देखकर अपने योगबलसे जाना कि यह बलिदानहोनेवास्ते जाताहै तब उसे ऋचावेदकी बतलाकर कहा कि तू इसे नित्यपढ़ाकर तेरीमृत्यु न होगी सो ऋषीश्वरकी आज्ञानुसार उसने वह ऋचापढ़ना आरम्भकिया जब राजकुमार सुनःसेफको साथलियेहुये राजमंदिरपरपहुँचा तबहरिश्चन्द्र अपनेबेटेको देखकर अतिप्रसन्नहुआ व उसनेविश्वामित्रादिक ऋषीश्वरों कोबुलाकर बरुणदेवताका बलिदान देनेकेवास्ते यज्ञआरम्भकिया व मनमेंबिचारा कि राजकुमारके बदले सुनःसेफको बलिदानदेकर रोहितको बचालूंगा व बरुणदेवता अप-नाबलिदान लेकर मुझभी आरामकरदेवेंगे जबयज्ञकरते समय सुनःसेफको बलिदान देनेका समय आयातब बिश्वामित्रने बहुत स्तुतिकरके बरुणदेवताको प्रसन्नकिया और अपनेभानजेको बलिदान होनेसे बचालिया व बरुणने राजाहरिश्चन्द्रको वरदान देकर उसकारोग छुड़ादिया जब रोहित व सुनःसेफदोनोंके प्राणबचे और बरुणदेवता प्रसन्नहोगये तब बिश्वामित्रने हरिश्चन्द्रको ऐसा ज्ञान उपदेशकिया जिसकेप्रतापसे वह मुक्तहुआ व रोहितउसकी राजगद्दीपर बैठकर धर्मपूर्वक राज्यकरनेलगा ॥

आठवां अध्याय ॥

राजासगरकी कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित रोहितकेवंशमें राजाचम्पकहुआ जिसनेचम्पापुरीबसाई व चम्पककेवंशमें आहुकनाम राजा बड़ाप्रतापीहोकर उसनेपुत्र होनेकेवास्ते हज़ार बिवाह अपनेकिये पर हरिइच्छासे किसीरानीके सन्तान नहींहुई इसलिये राजाआहुक उदासरहताथा सो एकदिन नारदमुनिने राजमन्दिरपर आनकरपूंछा हे राजन् तुमउदास क्यों दिखलाईदेतेहो आहुकने हाथजोड़कर बिनयकिया कि महाराज मैं आपको परम भक्त समझकर अपनादुःख कहताहूं हजार बिवाहकरनेपरभी पुत्रनहींहुआ यहीचिन्ता मुझे दिनरातरहतीहै यह बचनसुनतेही नारदजीने दयालुहोकर एकफल आमका जो हाथमें लियेथे राजाको देकरकहा जिसरानीकोचाहो यह आमखिलादो परमेश्वरकीदया से बालकहोगा राजाने वहफललेकर अपनीबड़ीस्त्रीको जिसकी उसदिन बारीथी खिला दिया सो रानीके उसीदिन गर्भरहगया पर बालक उत्पन्ननहींहुआथा कि उन्हींदिनों में दूसरेराजोंने जो बलवान्थे राजाआहुकको युद्धमें जीतकर सब नगर उसका अपने

आधीन करलिया तब वह अपनी रानियोंसमेत भागकर बनमें चलागया व ऋषीश्वरों के स्थानकेनिकट झोपड़ी बनाकर रहनेलगा सो राजाबड़ीरानीके गर्भवतीहोनेसे उस पर अतिप्रीतिरखकर आठोंपहर उसीकेपास रहताथा इसलिये राजाको दूसरीरानियां सवतियाडाहसे आपसमें कहनेलगीं देखो अभी बड़ीरानीके पुत्रउत्पन्ननहींहुआ तिसपर भी राजा रातदिन उसीके पासरहतेहैं हमारीओर आंखउठाकर कभीनहींदेखते बालक होनेपर न मालूम हमलोगोंकी क्यादशाहोगी इसलियेरानीको बिषदेनाचाहिये जिसमें वह पेटके बालकसमेत मरजावे जब उन्होंने यह सम्मतकरके किसीबस्तुमें बिषमिलाकर गर्भवतीरानीको खिलादिया और वह बिषकीज्वालासे व्याकुलहुई तब उसने अवरव ऋषीश्वरकी कुटीमें जो उसीजगह रहतेथे जाकर बिनयकिया महाराज मैं तुम्हारे शरण आईहूं मेराप्राण बचाइये यह दीनबचन सुनकर ऋषीश्वरबोले हे रानी तू मतडर परमेश्वरकीकृपासे नहींमरेगी व जो बालक तेरेपेटमें है वहभी जीताबचकर बिषसमेत उत्पन्नहोगा यह आशीर्बाद सुनकर अतिप्रसन्नहुई व ऋषीश्वरकीदया व हरिइच्छासे बिषने अपना बलनहींकिया व गर्भभी ज्योंका त्योंबनारहा जब कुछकाल बीते राजा आहुक अपमृत्युसे मरगया व उसकी सब स्त्रियांसतीहोनेलगीं तब अवरव ऋषीश्वरने गर्भवती रानीसेकहा तू मतसतीहो तुझसे एकबालक बड़ाबलवान् व तेजमान उत्पन्न होकर चक्रवर्ती राज्यकरेगा यहसुनकर वहरानी नहींसतीहुई और सबरानी राजाके साथ जलकर सत्यलोकको चलीगई वगर्भवतीरानी उसीजगह कुटीबनाकररही दशवें महीने उसके एकबालक अतिसुन्दर व तेजमान उत्पन्नहुआ और उसबालकके साथ वह बिषभी पेटसेनिकला संस्कृतमें बिषकोगरलकहतेहैं इसलिये अवरव ऋषीश्वरने उसबालककानाम सगररक्खा जबवह बालक बड़ाहुआ तब उसनेसेनाबटोरी और हरिइच्छा व ऋषीश्वरके आशीर्बादसे दूसरेराजोंको जीतकर अपनेपिताकी राजगद्दी छीनली व राजसिंहासनपर बैठकर साधधर्म व प्रजापालनके राज्यकरनेलगा व राजासगर ऐसा प्रतापीहुआ जिसने तालजंघ व बबनामआदिक म्लेच्छराजोंको अपनीभुजाके बलसे युद्धमें जीतकर मारडाला व अवरव ऋषीश्वर अपनेगुरूकी आज्ञानुसार बहुतम्लेच्छों का शिर व डाढ़ी व मूंछ मुड़वाकर यहयश अपनासंसारमें प्रकटकिया व सातोंद्वीपके राजोंको अपने आधीनकरके अपने दो बिवाहकिये सो राजासगरके केशिनीरानीसे असमंजसनाम एकपुत्रहोकर सुमतीनाम दूसरीस्त्रीसे साठहजारबेटे उत्पन्नहुये व असमंजसके एकअंशुमाननाम पुत्रबड़ाप्रतापी व अतिसुन्दर उत्पन्नहुआ सो असमंजस पूर्व जन्मका योगीथा इसकारण प्रजाको दुःखदेना आरम्भकिया इसलिये राजासगरनेप्रजा के कहनेसे असमंजसको बनबासदेदिया और अंशुमान अपनेपोतेको जो धर्मात्माथा पासरक्खा कुछदिनों उपरांत राजासगरने सौ अश्वमेध यज्ञकरना बिचारकर निन्नानबे यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्णकिया जब सौवांयज्ञ आरम्भकरके शास्त्रानुसार श्यामकर्णघोड़ा

छोंड़ा और साठोंहजारबेटोंको उसकी रक्षाकरनेकेवास्ते संगकरदिया तब इन्द्रनेमनमें विचारा कि मनुष्य सौयज्ञकरनेसे इन्द्रहोताहै सो राजासगर सौवांयज्ञ सम्पूर्णकरके मेरा इन्द्रासन छीनलवेगा व मुझे ऐसीसामर्थ्यनहीं है जो राजासेसन्मुख लड़कर श्यामकर्ण घोड़ा छीनलाऊं और यज्ञउसका विध्वंसकरूं इसलिये छलकरके श्यामकर्णघोड़ा लेना चाहिये ऐसाविचारकर इन्द्र वह घोड़ा किसीछलसे चुरालेगया और जहांकपिलदेवमुनि बैठे तपकरतेथे लेजाकर उनकेपीछे बांधदिया व आपइन्द्रलोकको चलागया जब राजकुमारोंने घोड़ा अपना नहींदेखा तब उन्होंने चौदहोंलोकमें जाकर वहघोड़ा बहुतढूंढ़ा पर कहींपता उसका न पाया जब खोजनेसे निराशहुये तब राजासगरके पासजाकर सब वृत्तान्त कहकेविनयकिया महाराज आपआज्ञादेवें तो पृथ्वीखोदकर घोड़ाढूंढ़ें राजा बोले बहुतअच्छा खोजनाचाहिये सो उन्होंने अपनेपिताकी आज्ञानुसार घोड़ाढूंढ़नेके वास्ते इतनापृथ्वीखोदी कि छोटे २ सातसमुद्र और भरतखण्डमेंप्रकटहुये जब वहलोग घोड़ा खोजतेहुयेकपिलदेव मुनिके स्थानपर गये तो क्या देखा कि कपिलदेवमुनि बैठे तप करते हैं और घोड़ाउनके पीछे बँधाहै तब साठोंहज़ार राजकुमार चिल्लाकर बोले हमने अपना चोर पकड़ा जब उनके चिल्लानेसे कपिलदेवमुनिका ध्यान खुलगया तब उन्होंने आंख उठाकर क्रोधसे उनलोगोंकीओर देखा तो उसीजगह साठोंहज़ार राजकुमार जलकर भस्महोगये जब राजासगरने बहुतदिनतक कुछ समाचार अपने बेटोंका नहींपाया तब अंशुमान पोतेको बुलाकर कहा तू जाकर अपने चाचों व घोड़ेकी सुधिलेआ यह बचन सुनतेही अंशुमान घरसे निकला और उनका पता लेताहुआ जहांपर वह जलगये थे जा पहुँचा जब उसने वहांपर कपिलदेवमुनिको बीचध्यान परमेश्वरके बैठे देखा और दंडवत् व परिक्रमाकरके स्तुति उनकीकी तब कपिलदेवमुनि प्रसन्नहोकर बोले हे राजकुमार तू घोड़ा अपना लेजा पर तेरे चाचालोग जो मेरे क्रोधसे जलकर मरगये हैं वह अभी मुक्तनहीं होसक्ते जब गंगाजी आनकर अपने जलसे उनकी हड्डी व राखबहावेंगी तब उनका उद्धारहोगा यह बचन कपिलदेवमुनिका सुनतेही अंशुमान उनको दंडवत्करके श्यामकर्णघोड़ा अपना वहांसेलेकर राजासगरके पासआया व सब वृत्तान्त जो कपिलदेवमुनि से सुनाथा कहदिया राजासगरने मरना अपने बेटों का ऊपर इच्छा परमेश्वरकी समझकर सन्तोषकिया व सौवां यज्ञ अपना सम्पूर्णकरके व ऋषीश्वरों से ज्ञानसुनकर संसारीमाया छोड़दिया व अंशुमान अपने पोतेको राजगद्दीपर बैठाकर बनमें चलागया व हरिचरणों में ध्यान लगाकर मुक्तहुआ ॥

नवां अध्याय ॥

मृत्युलोकमें गंगाजीके आनेकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् अंशुमान उनकेपोतेने कुछदिनराज्यकाज साथधर्म व

प्रजापालनके करकेदिलीपनाम अपनेबेटेको राजगद्दीदेदी व आपबनमें जाकर अपने चाचोंकी मुक्तिवास्ते गंगाजीका तपकरते २ मरगया परगंगाजी प्रसंन्ननहींहुई कुछदिन उपरान्त राजादिलीप भी गंगाजीके आनेवास्ते तपकरनेलगा व उसीइच्छामें उसनेभी तनुअपना त्यागकिया पर गंगाजीने दर्शननहींदिया राजादिलीपका बेटा एकभगीरथ नाम बालकथा जबउसने खेलतेसमय अपनेसाथीबालकोंके मुखसेसुना कि मेरेबाप व दादागंगाजीके लानेवास्ते तपकरते २ मरगये तिसपर भी वहनहींआई तबभगीरथ ने कहा प्रथममैं गंगाजीको लाकर पीछेसे राजगद्दी पर बैठूंगा यहबात मनमें ठानकर यह भी बनमें चलागया व प्रेमपूर्व्वक हरिचरणोंका ध्यानकरनेलगा तब गंगाजीने प्रसन्न होकर स्त्रीरूपसे भगीरथको दर्शनदिया और कहा तू क्याचाहता है भगीरथने गंगाजी को देखतेही दण्डवत् व परिक्रमा व स्तुतिकरके हाथजोड़कर बिनयकिया हे माता मेरे पुरुषालोग कपिलदेवमुनिके शापसे जलकरराखहोगये हैं इसवास्ते चाहताहूं तुम मृत्युलोकमें चलकर उस राखको अपनी लहरसे बहावो तब वह लोग कृतार्थ होवेंगे यह बात सुनकर गंगाजीबोलीं हे राजकुमार मुझे भूलोकके आने में दो बातका संदेहहै एक तो आकाशसे गिरतीसमय पृथ्वी मेराभार न सहसकैगी ऐसाही कोई प्रतापी बलवान् हो जो मेरे जलका वेग अपने शरीरमें लैसकै दूसरे पापी व अधर्मीलोग मुझमें स्नान करने से मुक्तिपाकर बैकुण्ठ जावैंगे व उनकेपापका अंश मुझे पहुँचेगा इन दोनोंबातों का उपाय करो तो आसक्तीहूं यह सुनकर भगीरथ बोले हे जगतारिणी मैं शिवजीसे बिनय करताहूं वह तुमको अपने शिरपर लेवेंगे व हरिभक्त व तपस्वी व मुनि व महात्मा व ऋषीश्वरों के स्नान करने से पापी व अधर्मीलोगों के नहानेका पाप तुमको नहीं लगैगा यह बात मानकर गंगाजी वहांसे अन्तर्द्धान होगई व भगीरथ बीच तप व ध्यान महादेवजी के लीनहुआ जब शिवशङ्कर प्रसन्नहुये और भगीरथको दर्शन देकर बोले तू क्या चाहताहै तब भगीरथने दण्डवत् व परिक्रमाकरके बिनय किया हे महाप्रभु मैंने वास्ते कृतार्थ होने अपने पुरुषोंके गंगाजीसे मृत्युलोक में आनेको बिनय कियाथा सो गंगाजी ने कहा कोई मुझे अपने ऊपरलेकर मेरे जलका वेग उठावे तो मैं आऊं इस लिये चाहताहूं कि आप पहिले गंगाजीको अपने मस्तकपर लेवैं तब उनका वेग पृथ्वी सहिसकैगी महादेवजी ने प्रसन्नहोकर भगीरथकी बिनती मानली जब जल गंगाजी का आकाशसे गिरा व शिवजी ने अपने शिरपर लिया तब कुछकाल गंगाजी शिवशङ्करकी जटामें घूमतीरहीं पृथ्वीपर नहींगिरीं जब भगीरथने फिर स्तुति शिवजीकी वास्ते प्रकटहोने गंगाजी के की तब महादेवजी ने एक रथ भगीरथको देकर कहा तू इसपर बैठके गंगाजी के आगे २ जाकर अपने पुरुषोंकी राह दिखलादे यह कहकर शिवशङ्करने अपनी जटा निचोड़के गंगाजीको बाहर निकाला और उसी रथपर भगीरथचढ़ा जहां कि उसके पुरुषोंकी राख पड़ीथी वहां गंगाजीको लिवालाया जब गंगाजी उस

राखपर होकर बहीं तब सब पुरुषा उसके देवतारूपसे बिमानपर बैठकर स्वर्गको चले गये व भगीरथ बड़े हर्षसे राजमन्दिर पर आया व ब्राह्मण व कंगालोंको बहुतसादान व दक्षिणा देकर राजगद्दी पर बैठा व उसने बहुतकाल धर्मपूर्वक राज्यकिया उसके वंश में राजाऋतुपर्ण बड़ा प्रतापी राजा नलका मित्रहुआ जिसने घोड़ा चढ़ना राजानलसे सीखकर उसे जुआखेलना बतलाया था ऋतुपर्णका पुत्र सुदासनाम बड़ाप्रतापी राजा एकदिन अहेर खेलने वास्ते बनमें गया और वहां उसने हिरण्यरूप राक्षसको मारडाला उस राक्षसके भाईने राजासे बदला लेनेकी इच्छाकी पर वह राजासे सम्मुख लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखताथा इसलिये वह ब्राह्मणरूपसे राजाकेपास जाकरबोला मुझे रसोई बनानी अच्छी आती है यह बचन सुनकर जब राजाने उसे रसोई बनाने वास्ते नौकर रखलिया और वह राक्षस ब्राह्मणरूप वहांरहनेलगा तब एकदिन राजासुदासने वशिष्ठऋषी-श्वरको नेवता देकर अनेकप्रकारका व्यंजन व मांसबनवाया तो उसराक्षसने मनुष्यका मांसबनाकर सबपदार्थसमेत वशिष्ठजी के सम्मुखधरदिया वशिष्ठगुरूने अपने योगबल से वह मांस पहिंचानतेही राजापर क्रोधकरके कहा हे राजन् तू मुझे राक्षस समझकर मनुष्यकामांस मेरेखानेवास्ते लायाहै इसलिये मैं नारायणजीसे चाहताहूं कि तू बारह बर्षतक राक्षसहोजा व मनुष्यकामांसखायाकर ऐसाशापदेकर वशिष्ठजी उठखड़ेहुये उस समयराजाने कि वहभी अपनेतपोबलसे शापदेनेकी सामर्थ्यरखताथा कहा मेरी जान-कारी में किसी ने मनुष्यकामांस वशिष्ठऋषीश्वरके खानेवास्ते नहीं रक्खाथा मुझे वृथा ऋषीश्वर ने शापदिया इसलिये मैं भी उनको शापदेता हूं जब ऐसाकहकर राजा ने शापदेनेवास्ते पानी हाथमेंउठाया तब रानी राजाका हाथपकड़करबोली आपको ब्राह्मण व गुरूसे बराबरी करना न चाहिये वशिष्ठजी ने क्रोधवश शापदिया तो अच्छा किया फिर दयालुहोकर बरदान देवैंगे तुम इनको शाप मतदेव राजाने रानी के समझाने से वशिष्ठजीको शापदेना उचित न जानकर वहजल हाथका अपने पैरपर डालदिया सो दोनोंपैर राजाके कालेहोगये उसदिनसे राजासुदासकानाम कल्माषपादलोग कहनेलगे और सबअंग राजाका ज्योंकात्यों बनारहा पर ज्ञानउसका शापदेनेसे राक्षसों के समान होगया इसलिये वह मनुष्योंको पकड़कर मांसउनका खानेलगा पर स्त्रीको नहींखाता था सो एकदिन राजाने बनमें किसीऋषीश्वरको स्त्रीसमेत देखकर उसे खानेकी इच्छा किया तब वहस्त्री बिनतीकरकेबोली हे राजन् अभीतक मैंने अपनेस्वामीसे इच्छापूर्वक संसारीसुख नहींभोगा मुझे सन्तानहोने की इच्छाबनी है इसलिये तू मेरेपति को मतखा कदाचित् तू न माने तो मुझेभीखाले जब राजाने अपने राक्षसीधर्म्म से उसकी बिनती न मानकर ऋषीश्वरको खालिया तब वहब्राह्मणी हाड़ अपनेस्वामी के बटोरकर सती होगई व जलतीसमय उसने राजाको यहशापदिया जबतू स्त्रीप्रसंगकरैगा तब मरजा-वेगा जब बारहबर्ष शापकेदिनबीतगये और ज्ञानराजाका शुद्धहुआ तब वह अपनाराज्य

करनेलगा एकदिन राजाने रानीसे प्रसंगकीइच्छाकी पररानी शापकासमाचार सुनचुकी थी इसलिये उसनेराजाको बहुतसमझाकर भोगकरनेनहींदिया फिर एकरोज वशिष्ठगुरू ने अपनीइच्छासे राजमन्दिरपर आनकर राजा व रानीको ऐसाबरदानदिया कि बिना भोगकिये तुम्हारेपुत्रहोगा यह आशीर्वाद देकर वशिष्ठऋषीश्वर अपने स्थानपरचलेगये व उनकीकृपासे बिनाप्रसंगकिये उसीदिन रानीके गर्भरहकर सातवेंबर्ष स्मकनाम पुत्र हुआ उससे मोलकनाम बालकहोकर परशुरामजी के क्रोधसेबचा सब क्षत्रियों की जड़ वही है उसकाबेटा राजाखट्वांग ऐसाप्रतापी व धर्मात्माहुआ जिसने देवतोंकी सहायता की और दैत्यों को युद्धमें जीतकर मुक्तहुआ उसकीकथा बिस्तारपूर्वक दूसरे स्कन्ध में लिखी है ॥

दशवां अध्याय ॥

कथा रामावतारकी ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित खट्वांग के वंशमें राजादशरथ बड़ेप्रतापी व तेजवान् हुये जिन्होंने अयोध्यापुरी में धर्मपूर्वक राज्यकिया व उनकेयहां रामचन्द्रजी परब्रह्मका अवतार कौशल्यारानी से व लक्ष्मणजी शेषनागकाअवतार व शत्रुघ्न सुमित्रा स्त्री से व भरत कैकेयीरानी से उत्पन्नहुये उन्हीं रघुनाथजीका चरित्र व लीला तुमने ऋषीश्वरों के मुखसे सुनाहोगा फिर हम उनकीकथा संक्षेपसे कहते हैं सुनो जिन्होंने बालपन में मारीच व सुबाहु राक्षसकोमारकर विश्वामित्र ऋषीश्वरके यज्ञकीरक्षाकी व उन्हीं त्रिलोकीनाथने लक्ष्मणजी अपने भाईसमेत विश्वामित्र गुरुकेसाथ जनकपुरमेंजाकर जो धनुष महादेवजीका किसी राजासे नहीं उठताथा उसे ऊखकेसमान तोड़कर परशुरामजीका गर्वमिटाया व सीताकोव्याहकर अयोध्यामेंलाये और अपने पिताकीआज्ञानुसार लक्ष्मण व जानकी समेत चौदहवर्ष बनबासकिया जब पंचबटी में शूर्पणखा रावणकी बहिनकी नाक व कान काटलिया तब खर व दूषण व त्रिशिराभाई शूर्पणखाके चौदहहज़ार राक्षस समेत रामचन्द्रजीसे लड़नेआये सो उनको सेनासमेत मारडाला जब रावणने शूर्पणखा के नाक व कान काटने व खर व दूषण आदिक अपने भाइयों के मारेजानेका समाचार सुना तब वह योगीका वेषधरकर सीताजीको हरलेगया जब मार्ग में जटायु गृध्र हरिभक्तने रावणको रोंका तब लंकापति ने जटायु से बड़ायुद्धकरके अग्निबाणमारकर उसे गिरादिया व सीताजीको समुद्रपारलेजाकर अशोकबाटिकामें रक्खा जब रामचन्द्र जी मारीचराक्षसको जो मायारूपी हरिणबनाथा मारकर अपने स्थानपरआये व जानकीजी को नहींदेखा तब नरदेहधारणकरने से अतिविलापकरतेहुये दोनोंभाई सीताजी को खोजतेचले जब राहमें जटायुसे सुना कि लंकापतिरावण जानकी को हरलेगया है तबरघुनाथजीने गृध्रको परमभक्त जानकर उसकासंस्कार अपनेहाथसे किया फिर आगे

जाकर कबन्धराक्षसको मारा व कबन्धके मुखसे सुग्रीवबानरका समाचारसुनकर जानकी जीको ढूंढ़नेवास्ते उसकेसाथ मित्रताकी और बालिबानरको मारकर किष्किंधाका राज्य सुग्रीवको दिया व उसकीआज्ञानुसार हनुमान्आदिक करोड़ों बानर व भालु सीताके खोजनेवास्ते चारोंदिशामें गये व हनुमान्जीने लंकामें जाकर उसपुरीको जलादिया और वहांसेआनकर जानकीजीके कुशलानन्दका समाचार रघुनाथजीको सुनाया तब रामचन्द्रजीने बड़ीभारीसेना भालू व बानरों की साथलेकर लंकापरचढ़ाईकी व समुद्र किनारे पहुँचकर नल व नील बानरोंसे उसमें सेतुबँधाया जब बिभीषण रावणकेभाईने वहांआनकर रघुनाथजीका दर्शनकिया तबरामचन्द्रजीने उसीजगह लंकाकेराज्यका तिलक बिभीषणके लगाया व जब उसीपुलकीराह सेनासमेत पारउतरकर लंकाकोघेर-लिया तब लक्ष्मणजी सुग्रीव व हनुमान् व अंगद व नल व नील व जामवन्तभालू आदिक सेनापतियोंको साथलेकर राक्षसोंसे युद्धकरके उन्हें मारडाला जब कुम्भकर्ण भाई व इन्द्रजीत बेटा रावणका मारागया व उसने आपचढ़ाईकरके रामचन्द्रजीसे बड़ा युद्धकिया तबरघुनाथजीने अग्निबाण रावणके हृदयमेंमारकर उसेमुक्तपददिया जब बिभीषण रामचन्द्रकी आज्ञानुसार रावणका दाहकर्म्मादिक करचुका तबउसे रघुनाथ जीने राज्यलंकाका दिया जब बिभीषण राजसिंहासनपर बैठा तब वह सीताजीको जड़ाऊ सुखपालपर बैठाकर रामचन्द्रजीकेपास लेचला उससमय सब भालू व बानरों की यह इच्छाहुई कि हमलोग जानकीजीका दर्शनकरके नेत्रोंको सुफलकरते तो अच्छा होता रघुनाथजी अन्तर्यामीने बिभीषणको आज्ञादी कि जानकीजीसे कहदेव पैदल हमारेपासआवैं यह बचनसुनतेही सीताजी सुखपालसे उतरकर रघुनाथजीके पासआईं तब सबभालू व बानरोंने उनकादर्शनपाकर अपने २ नेत्रोंकोसुखदिया जब लक्ष्मणजी सीतामाताके चरणोंपर गिरे तब जानकीजीने उन्हें आशीर्वाददिया फिर रामचन्द्रजी बिभीषण व हनुमान्आदिक सेनापति व सीताजी को अपनेसाथ पुष्पकबिमान में बैठाकर लंकासेचले जब तीसरेदिन प्रयागराजपहुंचे तब वहांसे हनुमान्जीको यहकह कर अयोध्यापुरीमें भेजा कि तुम पहिलेसे जाकर भरतजीको हमारेआनेका समाचार देव व एकदिन अवधिका रहगयाहै मैं अपनी अवधिपर नहींपहुँचूंगा तो भरतजी अपनातनु त्यागकरदेवैंगे यह बचनसुनतेही हनुमान्जीने अयोध्यामें जाकर रघुनाथजी का आगमन भरतजीसे कहदिया यह समाचार सुनकर भरतजीको बड़ाहर्षहुआ और हनुमान्जीको आशीर्वाददेकर वशिष्ठगुरु व पुरवासी व सेनासमेत रामचन्द्रजीको आगे से लेनेगये व रघुनाथजी पहिले वशिष्ठगुरुके चरणोंपर गिरे फिर उठकर भरतजी व शत्रुघ्नको अपनेगलेलगाया और वहांसे अयोध्यावासी व अपनेसाथियोंको अनेकबाहनों पर बैठाकर अयोध्यापुरीमें पहुँचे व रामचन्द्र व लक्ष्मणजीने सीतासमेत राजमन्दिरमें जाकर अपनीमाताको दण्डवत्किया व वशिष्ठजीकी आज्ञासे शुभमुहूर्त्तमें राजसिंहासन

पर बैठे व धर्मपूर्वक राज्यकरनेलगे उससमय त्रेतायुगथा सो रामचन्द्रजीके धर्म व प्रतापसे उनकाराज्य सतयुगके समानहोगया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

सीताजीको बाल्मीकिजीके स्थानपर भेजनेकीकथा ॥

शुकदेवबोले हे परीक्षित रामचन्द्रजीने राजगद्दीपर बैठकर संसारीजीवोंको धर्ममार्ग दिखलानेवास्ते अनेक यज्ञकिये और सब द्रव्य व राज्यादिक अपनाब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको संकल्पकरके एकधोती व अँगौछा व एकसारी व सुमंगलानाम यंत्र सीताजीके अंगपरका अपनेपास रखलिया तब नारदजीआदिक ऋषीश्वर व ब्राह्मणोंने उनको आशीर्वाद देकरकहा महाराज आपने त्रिलोकीनाथ होकर अपने स्वरूपकाध्यान जो हमलोगोंको दियाहै उसीमें हमलोग मग्नरहतेहैं यह राज्यलेकर क्याकरैंगे हमलोगोंको इसकेबदले गोदानदीजिये कि अग्निहोत्रादिक कियाकरैं जिसमें हमाराधर्म बनारहै सो रघुनाथजीने ब्राह्मणोंको दया व कृपासे उनको गोआदिक बिधिपूर्बक दानदेके फिर देश अपना ब्राह्मणोंसे लेलिया और राज्यकरनेलगे सातोंद्वीपके राजा और सब देवता व दैत्यादिक उनकी आज्ञापालतेथे व प्रजालोग पुत्रकेसमान उनसेपालनहोकर आनन्द पूर्वक हरिभजनमेंरहतेथे एकदिनरात्रिको रघुनाथजी वेषबदलकर अपनीकीर्तिकीपरीक्षा लेनेवास्ते अयोध्यापुरीमें निकले सो एकधोबीने अपनीस्त्रीसे लड़तेहुये यहकहा तू बिना कहे मेरे एकरात्रि कहीं बाहररहआई सो तू अब मेरेघर रहनेयोग्यनहींहै इसलिये अपने यहां न रक्खूंगा जहां तेरीइच्छाहो चलीजा मैं राजारामचन्द्रजी नहींहूं जो सीताउनकी स्त्री बर्षदिनतक रावणके यहांरहीं फिर उन्हें अपनेघरमेंलाकर रखलिया जब रामचन्द्रजी यह लोकनिन्दा अपनेकानसे सुनकर राजमन्दिरपर आये व उसीचिन्तामें रात्रिभर निद्रा न आई तब प्रातःकाल शत्रुघ्नसेकहा सीतागर्भवतीको बनमें लेजाकर छोड़आवो जब शत्रुघ्न यह बचनसुनतेही अचेतहोगये और उनकीआज्ञा न मानी तब यहीबात रघुनाथजीने भरतसेकही जब उन्होंनेभी यह बचन त्रिलोकीनाथका पालन न किया तब रामचन्द्रजीने लक्ष्मणकोबुलाकर कहा मैंने भरत व शत्रुघ्नसे सीताजीकोबनमें छोड़ आनेकी आज्ञादीथी सो नहींमानी तुम यहबात जाकर सीताजीसेकहो तुमने ऋषीश्वरों की स्त्रियों व गंगाजीकी पूजाकरनेवास्ते मानतामानीथी सो चलकर पूजाउनकीकरना चाहिये जब वह तुम्हारेसाथ जावें तब तुम उनको निकटस्थान बाल्मीकि ऋषीश्वरके इसीबहानेसे छोड़कर चलेआवो जानकीजीको घरमेंरखनेसे प्रजालोग मेरीनिन्दाकरते हैं हमाराकहना न मानोगे तो मैं मरजाऊंगा जब लक्ष्मणजीने ऐसाबचन सुना और उत्तरदेनाउचित न जाना तब सीताजीसे जाकरकहा कि तुम हमारेसाथचलकर पूजा गंगाजी व ऋषिपत्नियोंकी जो मानतामानीथी करआवो यहबचनसुनतेही सीताजी

अतिप्रसन्नहुई व अनेकप्रकारका भूषण व वस्त्र ऋषिपत्नियोंके वास्ते लेकर लक्ष्मणजी के साथ रथपरचलीं उससमय बहुतअशकुनहुये पर जगन्माताने कुछविचारनहींकिया जब लक्ष्मणजी गंगापारउतरे व निकटस्थान बाल्मीकि ऋषीश्वरकेपहुंचकर रुदनकरने लगे तब जानकीजीनेपूंछा हे लक्ष्मण तुम्हारेभाई अच्छीतरहहैं तुमक्योंरोतेहो यहबचन सुनतेही लक्ष्मणजीने अतिव्याकुलहोकर सबवृत्तान्तकहदिया व हाथ जोड़कर विनय किया हे माता मैं तुमको यहांवनमें छोड़नेआयाहूं यहबातसुनतेही जगन्माता अचेतहो कर गिरपड़ीं व अतिविलापकरके लक्ष्मणजीसेकहा बहुतअच्छा जो आज्ञारघुनाथजी की है वै सो तुमकरोमेरी ओरसे रामचन्द्रजीको हाथजोड़करकहदेना मुझसे जो अपराध हुआहो क्षमाकरैं किसवास्ते कि मैंअनेकजन्मकी उनकी दासीहूं फिरलक्ष्मणजी गर्भवती जानकीमाताको रोतेहुये बाल्मीकि ऋषीश्वरकेस्थानपर छोड़करचलेआये व ऋषीश्वरने उनको अपनीकन्याकेसमानरक्खा सो कुछदिनबीते उसीजगह सीताजी के लव व कुश दोबालक अतिसुन्दर व तेजवान् व प्रतापी व बलवान् उत्पन्नहुये जब अश्वमेधयज्ञ करते समय रघुनाथजीने फिर लक्ष्मणको सीताके बुलानेवास्तेभेजा तब जानकीजीने लव व कुश दोनोंपुत्र अपने लक्ष्मणजीको सौंपदिये व अयोध्यापुरीमें जाकर उसीजगह पृथ्वीमें समागई यहसुनकर रघुनाथजीने बड़ाशोच व बिलापकिया और सीताको त्यागनेउप-रान्त रामचन्द्रजी ब्रह्मचर्य रहकर यज्ञादिक कियाकरते थे व ग्यारहहज़ारवर्षतक उन्हों-ने अयोध्यापुरीका राज्यभोगकर प्रजाको बड़ा सुखदिया व लक्ष्मण व भरतजी व शत्रुघ्न के चित्रकेतु व सुबाहु नाम आदिक दो २ पुत्र उत्पन्नहुये सो रघुनाथजी ने जो अपने भाइयोंका अतिआदरकरतेथे देश उत्तरकाभरतजी व पश्चिमका शत्रुघ्न व पूर्वका लक्ष्म-णजीको बांटदिया था और सब स्त्री व पुरुष अयोध्यावासी रघुनाथजीका दर्शन पाकर जैसा प्रसन्नरहते थे वैसा सुख इन्द्रपुरी में किसीको नहीं मिलता उनके राज्यमें पशु व पक्षी आदिक कोई जीव दुःखी नहींथा इसीतरह राज्य अयोध्यापुरीका धर्मपूर्वक किया और अन्तसमय अपने पुत्रको राज्य अयोध्यापुरीका देकर बैकुण्ठमें पधारे और अयो-ध्यावासी सब जीवोंको उसी शरीरसे बिमानपर बैठाकर अपने साथ लेगये उन रामचन्द्रजीका नाम लेनेसे करोड़ोंजीव भवसागर पार उतरजाते हैं और बिस्तारपूर्वक कथा उनकी रामायणमें लिखी है व रामचन्द्रजी के निकट समुद्र में सेतु बांधना व रावणआदिक राक्षसोंका वध करना कुछ कठिन नहीं था वह अपनी भृकुटी फेरने से एकक्षणमें चौदहोंलोककी रचना व नाश करसक्ते थे यह सब लीला व चरित्र उन्होंने संसारीजीवोंको केवल गृहस्थाश्रम मार्ग्ग दिखलाने वास्ते कियाथा देखो जब ऐसे ईश्वर को गृहस्थी करने में स्त्रीके कारण दुःख हुआ तो संसारमें स्त्री व गृहस्थी से सबको दुःख प्राप्त होगा ॥

बारहवां अध्याय॥

कुशके वंशकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित राजाकुशकेवंशमें अतिथि व पुण्डरीक व सुदास आदिक कईपीढ़ीउपरान्त मरुनामराजा बड़ाप्रतापीहुआ और वह मरु आजतक उत्तरदिशा कलापग्राममें बैठाहुआ तपकरताहै कलियुगके अन्त में फिरसूर्य्यवंशी धर्मात्मा राजा उस से उत्पन्नहोकर अपना वंशचलावैंगे और उसीमरुकेवंश में बृहद्बलनाम राजाबड़ाप्रतापीहुआ जिसको भीमसेन तुम्हारे दादाने महाभारत में माराथा इतनेलोग राजा इक्ष्वाकुके कुलमें बड़ेप्रतापी राजाहोचुके हैं अब जोलोग उनकेवंशमें आगेहोंगे उनका नामसुनो बृहद्बलके वंशमें सहदेव व सुमन्तआदिक कईराजाप्रतापीहोकर बहुतपीढ़ीतक उनकाराज्य संसारमें स्थिरहोगा हे राजन् कलियुगमें यहांतक सूर्यवंशियोंका राज्यहोकर कुलउनका उत्तमरहैगा ॥

तेरहवां अध्याय ॥

राजा निमिको वशिष्ठ ऋषीश्वर का शापदेना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजानिमि इक्ष्वाकुके बेटेने एकसमय वशिष्ठऋषीश्वर अपने गुरुसे यज्ञकराने वास्ते कहा तब वशिष्ठजी बोले राजाइन्द्रके यहांसे हमैं ज्ञानयज्ञ करानेका नेवता आयाहै पहिले वहां यज्ञ कराआऊं पीछे से तुमको यज्ञकरादूंगा जब ऐसा कहकर वशिष्ठऋषीश्वर इन्द्रपुरी में यज्ञ कराने चलेगये तब राजानिमिने विचारा देखो जानेका एक क्षणभी भरोसा नहीं रहता कदाचित् वशिष्ठजी के फिरआनेतक यह तनुमेरा छूटजावै तो यह इच्छा रहजावैगी ऐसा विचारतेही राजाने गौतमऋषीश्वरको पुरोहित बनाकर यज्ञ करना आरम्भकिया उसीसमय वशिष्ठगुरु इन्द्रको यज्ञ कराके राजमन्दिर पर आये जब वशिष्ठऋषीश्वर ने दूसरे पुरोहितको यज्ञ कराते देखा तब बड़े क्रोधसे राजानिमिको शाप देकर कहा तू बिना हमारे आये यज्ञ करानेलगा इसलिये तनु तेरा छूटजावै यह वचन सुनकर राजा बोला हे वशिष्ठजी तुम यजमान का यज्ञकराना छोड़कर लोभसे इन्द्रके यहां चलेगयेथे इसलिये तुम्हारा शरीरभी स्थिर न रहै सो वशिष्ठऋषीश्वर व राजानिमि दोनों ने आपस के शापसे अपना २ तनुछोड़ दिया कुछकाल बीते मित्रावरुणदेवताका बीर्य्य उर्वशी अप्सराकारूप देखकर गिरपड़ा सो वह बीर्य्य घड़े में रखने से वशिष्ठ व अगस्त्यमुनि उत्पन्नहुये व राजानिमिके जीनेवास्ते गौतमआदिक ऋषीश्वरों ने फिर यज्ञकिया जब देवतों ने प्रसन्नहोकर पूछा तुम क्या चाहतेहो तब ऋषीश्वरों ने विनय किया आपलोग ऐसी दयाकरैं जिसमें यजमान हमारा जीउठे सो देवतों ने ऐसा आशीर्वाद दिया कि राजाके शरीरमें प्राण

आगया तब राजा देवता व ऋषीश्वरों से हाथ जोड़कर बोला महाराज अब मुझे यह तनु जिसका एकदिन अवश्य नाशहोगा न चाहिये ऐसी कृपाकरो जिसमें सदा स्थिर रहूं यह सुनकर देवता व ब्राह्मणों ने राजाको आशीर्बाददिया कि तुम बिनाअंगहोकर सब जीवोंके पलकमें रहो यह बरदान देकर सबदेवता अन्तर्द्धान होगये सो उसीदिन से जीव राजानिमिका सबके पलमें रहताहै फिर उन सब ऋषीश्वरों ने शरीर राजा का दहीके समान मथकर उसमें से एक बालक अति सुन्दर व तेजवान् जनक नाम उत्पन्न किया जिसने मिथिलापुरी बसाई उसके वंशमें देवरातआदिक बहुत राजाहोकर कई पीढ़ीउपरान्त शीरध्वजनाम बड़ाप्रतापी राजाहुआ जिसको यज्ञशाला जोततीसमय हल लगने से सीताजी कन्यामिलीं जिनकाव्याह रामचन्द्रजी से हुआथा शीरध्वजके बंशमें धर्म्मध्वज आदिक बहुत से प्रतापी राजाहुये नाम उन राजाओंका दूसराहोकर वह सब जनक बिदेही कहलाते थे सो उनके बंशमें सब राजा योगीश्वर व ज्ञानी उत्पन्नहोकर धर्म्मपूर्वक राज्यकरके अन्तसमय मुक्तहुये यह सब सूर्य्यवंशी राजाओं की कथा हमने तुमको सुनाई ॥

चौदहवां अध्याय ॥

चन्द्रबंशी राजाओं की कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् अब हम चन्द्रबंशकुलकी उत्पत्ति कहते हैं सुनो नारायणजीके नाभिकमलसे प्रथम ब्रह्मा उत्पन्नहुये व ब्रह्माकेनेत्रसे अत्रिमुनि ने जन्मलिया और उनसे चन्द्रमाहोकर ब्राह्मण व तारागण व औषधी व वृक्षादिक के राजाहुये उन्हों ने बृहस्पतिजीको गुरू बनाकर राजसूययज्ञ आरम्भ किया व उस यज्ञमें बृहस्पति की स्त्री तारानाम जो अतिसुन्दरी थी छलकरके छीन लिया जब ताराके वास्ते दैत्यों ने चन्द्रमाकीओर व देवतों ने बृहस्पतिकीओर सहायक होकर आपसमें महायुद्ध किया तब ब्रह्माकीआज्ञानुसार चन्द्रमाने बृहस्पतिकी स्त्री देडाली सो ताराको चन्द्रमाकेबीर्य से गर्भथा जब बृहस्पतिके क्रोधकरने से ताराने अपनालड़का गर्भ से गिरादिया तब उसबालककारूप देखकर बृहस्पतिनेचाहा यहबालक हमलेवें व चन्द्रमानेइच्छाकी यह मैं लूं जब उसबालकके लेने वास्ते फिर बृहस्पति व चन्द्रमा से झगड़ाहोनेलगा तब ब्रह्माने तारासेपूछा यहबालक किसकेवीर्यसे है सो ताराने चन्द्रमाकावीर्य बतलाया इस लिये ब्रह्माकीआज्ञासे वहपुत्र चन्द्रमाने पाकर उसकानाम बुधरक्खा व बुधके इलानाम स्त्री से पुरूरवानामबेटा बड़ाप्रतापी व तेजवान् व सुन्दर उत्पन्नहुआ सो राजा पुरूरवा के यश व बल व धर्मकीबड़ाई उर्बशी अप्सराने इन्द्रकीसभा में सुनीथी जब एकदिन उर्बशी अप्सरा ऊपरस्थान तपकरने मित्राबरुण के जा निकली व उसकारूप देखकर

मित्रावरुणकावीर्य गिरपड़ा तब मित्रावरुणने शापदिया कि तैंने हमारेस्थानपर आनकर मेरेतपमें भंगकिया इसलिये तू मर्त्यलोकमेंजाकररह जब वहअप्सरा उसशापसे भूलोक में आई तबवह राजापुरूरवाकेपासरहना बिचारकर उसकीबागमेंगई और एक हिंडोला जड़ाऊ वृक्षमें लटकाकर झूलनेलगी व दो गन्धर्वों को भेड़ाबनाकर अपनेसाथ रक्खा जब राजा मालीसे उसका समाचारपाकर बागमें आया तब उर्वशी अप्सराका रूपदेखकर उसपर मोहितहोगया जब राजाने हठकरके उर्वशीको अपनेपास रहनेवास्ते कहा तबवह महासुन्दरीबोली हे राजन् तुम तीनबातकी प्रतिज्ञाकरो तो मैं तुम्हारेपास रहूं राजाबोले जो तुमकहो सोकरूं उर्वशीबोली एकतो मेरेदोनोंभेड़े कभी दुःख न पावें दूसरे नित्यनवीनघृत भोजनकोदेना तीसरे कभी अपनीइन्द्री नंगेहोकर मतदिखलाना जब इनतीनों बातमें बिपरीतहोगी तब मैं यहांसे चलीजाऊंगी राजाने तीनोंबात मानकर उसको अपनेपासरक्खा व आठोंपहर उसकेपासरहकर भोग व विलास करनेलगा सो छःपुत्र राजाके उर्वशीसे उत्पन्नहुये व उर्वशीअप्सरा मित्रावरुणके शापसे मर्त्यलोक में राजाकेपास रहनेलगी जब मन देवतोंका उर्वशीअप्सराका नाच देखनेकोचाहा तब राजाइन्द्रने गन्धर्वोंको आज्ञादी कि किसीतरह उर्वशीको यहां लानाचाहिये जब गन्धर्वोंनेजाकर उर्वशीसे कहा तुझेइन्द्रने यादकियाहै तेरे बिना इन्द्रकीसभामें शोभा नहींहोती यहवचनसुनतेही उर्वशी बड़ेहर्षसे चलनेवास्ते तैयारहुई तब गन्धर्वों ने उर्वशी की आज्ञानुसार अपनीमायासे नयाघृत बदलकर पुरानाघृत उर्वशी को खिलादिया व रातको गन्धर्वलोग दोनोंभेड़े उर्वशीके चुराकर आकाश में लेउड़े उससमय उर्वशी ने राजा पुरूरवाको जो उसकेपास सोयाथा जगाकरकहा मेरे दोनोंभेड़े कोई चुराकरलिये जाताहै तुम जल्दी छीनलेआओ तुमभी अपनेको शूरबीरजानतेहो तुमसे स्त्री बलीहोती है यहबचनसुनतेही राजाघबड़ाकर भेड़ोंकेपीछे नंगा उठदौड़ा तब उर्वशीने उसको नंगे देखकरकहा हे राजन् मेरा तेरा यहीप्रणथा जब मैं तुझे नंगादेखूंगी या मेरे दोनों भेड़े दुःखपावेंगे या जिसदिनमुझे नयाघृतखानेको नहींमिलेगा तबमैं तेरेपास न रहूंगी सो आजतीनोंबातें बिपरीतहुई इसलिये अबमैं तेरेपास नहींरहसक्ती ऐसाकहतीहुई बिजुली के समान चमककर वहांसेउड़गई सो गन्धर्वोंने उसे इन्द्रलोक में पहुँचा दिया व राजा पुरूरवा उसके चलेजाने से अतिव्याकुलहोकर बन व पहाड़में उसे ढूंढ़ने निकला सो पैदल चलने व कांटेचुभने से ऐसादुःखी हुआ कि उसको अपने तनुकी सुधि नहींरही इसतरह राजा उसके बिरहमें व्याकुलहोकर चारों ओर फिरताथा सो एक दिन फिरता हुआ कुरुक्षेत्रमेंजाकर सेमलवृक्षकेनीचे खड़ाहुआ व उसीजगह उर्वशीअप्सरा भी बहुत सखी अपनेसाथ लियेहुये सरस्वतीकुण्ड में स्नानकरती थी और कोई उन्हें नहीं देखसक्ताथा पर अप्सरालोग देवदृष्टिसे उसको देखतीथीं उससमय तिलोत्तमानाम सखी ने उर्वशीसेपूछा तुम मर्त्यलोकमेंआनकर कौन पुरुषकेपास रहतीथीं उसको मैंभी देखाचाहती

हूं उर्वशी ने राजापुरूरवाको दिखाकरकहा मैं इसीकेपास रहती थी तिलोत्तमा राजाको देखकरबोली तुम्हारे बिरहमें यह बहुतव्याकुल व मलीन दिखलाई देता है एकबेर तुम अपनारूप इसे दिखलादो तो ज्ञान व कांतिइसका अच्छाहोजाय यहबात तिलोत्तमा से सुनकर उर्वशी ने अपनारूप राजा के सामने प्रकटकिया उसे देखतेही राजापुरूरवाका चित्त ठिकाने होकर रूप उसका इसतरह बदलगया कि जिसतरह मुर्दे के तनुमें प्राण आजावे तब राजाने उर्वशी के सामने बहुतरोकर कहा हे प्राणप्यारी तू मुझे किसवास्ते छोड़कर चलीगई तेरेबिरहसे मेरी यहदशाहोकर खानापीना राजपाट सब छूटगया यह बचनसुनकर उर्बशीबोली हे राजन् तुम पुरुषहोकर अपनीइन्द्रियों के वश ऐसेहोगये जो मेरी बिनती करतेहो तुम अपनी इन्द्रियोंको वशकरो जो मनुष्य अपनी इंद्रियोंको आधीन नहींरखता वह मायारूपी स्त्रीके मोहमें फँसकर नष्टहोताहै वहीदशा तुम्हारी हुई व मैं स्त्री किसीपर मोहित न होकर सिवाय अपनेसुखके दूसरेका प्रेमनहींरखती जबतक कोईपुरुष मेरेपास रहताहै तबतक उसकी प्रीतिकरतीहूं कदाचित् मैं हजार बर्षतक एकपुरुषकेपास रहकर जबदूसरेपुरुषके निकटजाऊं तब फिर मुझे पहिलेपुरुष से कुछप्रीति नहींरहती क्षणभरमें उसेभूलकर उसका प्राणलेनेमें भी मुझे कुछदुःख नहींहोता और मैं ज्ञानउपदेश किसीका कुछ न मानकर अपने मनमाना कामकरतीहूं इसीतरह सबस्त्रियोंकास्वभाव समझनाचाहिये राजाउर्बशीपर ऐसामोहितथा कि इतना समझानेपरभी उसे कुछज्ञान प्राप्तनहींहुआ जब राजाने उर्वशी से भोगकरनेकी इच्छाकी तब वहदयाकरके बोली हे राजन् जबबर्षदिन उपरांत दूसरे बर्षका पहिलादिन लगेगा तबतेरेपास आनकर एकरात रहूंगी ऐसाकहकर उर्बशीवहांसे लोपहोगई जबउर्वशीके मिलने व एकबर्षकी अवधिकरनेसे चित्तराजाका सावधानहोगया तबवह राजमन्दिर पर आया और शीशमहल अपना सजवाकर अवधिकादिन गिननेलगा जबबर्षवेंदिन वहअप्सरा अपने बचनप्रमाण आई और एकरात राजाकेपासरहकर प्रातसमय इन्द्र-लोककोचली तबपुरूरवा उसकापांव पकड़कर रोनेलगा उससमय उर्वशी बोली हे राजन् मैं यहां रहनहींसक्ती तुझे मेरीचाहना अन्तःकरणसेहो तो मैं एकमन्त्र बतला देतीहूं तुमवहमंत्र जपकर गन्धर्बोंकी तपस्याकरो जब वे प्रसन्नहोकर तुझे यज्ञकरने वास्ते आज्ञादेंगे और तू उसयज्ञकरनेसे गन्धर्वलोकमें आनकर फिर मुझे पावेगा तब मैं तेरेसाथ आनन्दपूर्वक रहूंगी यहकहकेउर्बशी दोऋचावेदकी राजाको बतलाकर इन्द्र-पुरीको चलीगई व राजा वहीमंत्र जपकर गन्धर्बोंका तपकरनेलगा जबवहऋचाजपने से गन्धर्बोंने प्रसन्नहोकर राजाको दर्शन दिये व एकबटलोही अग्निसमान उसेदेकर यज्ञकरनेका उपाय बतलाकेवहांसे अन्तर्द्धानहोगये तबराजाने उनकी आज्ञानुसार वह बटलोही बनमें लेजाकर गाड़दी जब उस बटलोहीमेंसे एकवृक्ष पीपल व शमीका मिलकर उगा व राजाने वे दोनोंलकड़ी रगड़के उसमेंसे आगनिकालकर यज्ञकिया तब राजा

को इतनाबलहुआ कि वह गन्धर्बलोकमें जाबसा व गन्धर्वोंके देनेसे फिर उर्वशीको पाकर उसकेसाथ आनन्दपूर्वक रहनेलगा ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

पुरूरवाके सन्तानकीकथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित राजापुरूरवाके उर्वशीके पेटसे छःबालक जो राजगद्दी पर उत्पन्नहुयेथे उनमें बड़े पुत्रकानाम आयुथा उसकेबंशमें जह्नुनाम ऐसे महात्माहुये जिन्होंने गंगाजीको अपनी अंजलीमें उठाकर पीलिया जब देवतोंने अतिविनती की तब अपनी जांघ चीरकर बाहर निकालदिया उसीदिनसे गंगाजीका नाम जाह्नवी प्रकटहुआ व राजाजह्नुकेबंशमें गाधिनाम राजाबड़े प्रतापी व महात्माहोकर उनके यहां सत्यवती नामकन्या महासुन्दरी व बुद्धिमान् उत्पन्नहुई गाधिऋषिसे ऋचीकनाम ऋषीश्वरने जाकरकहा तुम अपनीकन्या हमकोबिवाह दो गाधिबोला जो कोई हजार घोड़े श्यामकर्ण मुझेलादे उसे मैं अपनीकन्यादूंगा यह बचनसुनतेही ऋचीकऋषि बड़ा परिश्रमकरके हजारघोड़े श्यामकर्ण बरुणदेवताके यहांसेलाया और वह सब घोड़े गाधि को देकर सत्यवतीसे अपनाबिवाहकिया तब गाधिकीस्त्रीने ऋचीक अपनेदामादसेकहा कोई ऐसाउपायकरो जिससे मेरेपुत्रहो और सत्यवतीनेभी अपनेपतिसे सन्तानहोनेकी इच्छाकी सो ऋचीक ऋषीश्वरने अपनीसासु व स्त्रीके सन्तानहोनेवास्ते यज्ञकरके जो साकल्य यज्ञकरनेसेबचाथा उसमें एकपिण्डी अपनीस्त्री व दूसरीसासुको बालकहोनेकी इच्छासे बनाकर उनदोनोंको खानेवास्ते दिया और आप ऋषीश्वर महाराज स्नान व संध्याकरने गंगाकिनारे चलेगये तब उनकीसासुने अपनीपिण्डी जिसेसंस्कृतमें चरुकहते हैं बदलआनकर बेटीको खिलादी व उसकाचरुलेकर आपखालिया जब ऋषीश्वरने अपनेघर आनकर अपनेतपोबलसे यहहालजाना तब सत्यवती अपनीस्त्रीसेकहा तुझसे बड़ी चूकहुई जो अपनाचरु माताको देकर उसकाचरु आपखालिया इसकारण तेरापुत्र महाबली व क्रोधीहोकर तेराभाई बड़ाधर्मात्मा व ब्रह्मज्ञानी उत्पन्नहोगा यह बचनसुनतेही वह बिनयपूर्वकबोली महाराज आपऐसाकीजिये जिसमें मेरापुत्रक्रोधी न हो तब ऋषी-श्वरने दूसरामंत्रपढ़कर अपनीस्त्रीसेकहा तू धैर्य्यरख तुझसेज्ञानी व धर्मात्मा बेटाहोकर पोतातेरा महाबली व बड़ाक्रोधीहोगा सो सत्यवतीसे जमदग्निऋषीश्वर बड़े महात्मा होकर उनकेरेणुकानाम स्त्रीसे चार पुत्रउत्पन्नहुये व उनचारोंमें सबसे छोटेपरशुरामजी ईश्वरकाअवतारथे जिन्होंने पापी व अधर्मीक्षत्रियोंको इक्कीसबेर मारकर उनकेकुलका नाशकिया इतनीकथा सुनकर परीक्षितनेपूंछा महाराज क्षत्रियोंने कौन ऐसाअपराध कियाथा जिसकारण परशुरामजीने उन्हें बधकिया शुकदेवजीबोले हे राजन् जमदग्नि ऋषीश्वर परशुरामके पितासे रेणुकाब्याहीगईथी व सत्यानाम रेणुकाकीबहिनसे सहस्रा-

बाहु अर्जुनका बिवाहहुआथा व सहस्रार्जुन सातोंद्वीपका ऐसाप्रतापीराजाथा जिसकेयहां आठोंसिद्धिबनी रहतीथीं और वह कर्म व धर्म अपना ऋषीश्वरोंकेसमान रखकर पवन के समान क्षणभरमें सबजगह जानेकीसामर्थ्यरखताथा सो वह अपनीहजारोंस्त्री साथ लेकर नर्मदानदीमें जलविहारकरनेगया व उसने अपनेहजार भुजासे जो तपकरके पाईथीं नर्मदानदीका पानीबहनेसे रोकदिया सो वह जल उलटा बहकर जहांपर रावण बैठाथा वहां इकट्ठाहुआ जब रावण वह जलदेखकर अभिमान पूर्वक सहस्रार्जुनसे लड़नेआया तब सहस्राबाहुने अपनेबलसे रावणको पकड़लिया व उसेअपने मकानपर लेजाकरकभी कभी उसके दशोंमस्तकपर दीपकजलाके सब स्त्री व लड़कोंको दिख-लाया करताथा जब रावणने बहुत बिनतीकरके उसे अपनामालिकजाना तब सहस्रा-बाहुने उसकोछोड़दिया इसतरहकी सामर्थ्य उसमेंथी सो एकदिन रेणुका सत्या अपनी बहिनकेयहां ब्याहादिकमें नेउताकरनेगई जब रेणुकाने अपनी बहिनसेकहा एकबेर तुमभी हमारेयहांआओ तब सत्या अभिमानसेबोली तुमकंगाल ऋषीश्वरकी स्त्रीहोकर हमारीसेनाको कहांसे खिलावोगी यहबातसुन रेणुकालज्जासे कुछ नहींबोली जब स्थान पर आई तब उसने जमदग्नि अपनेस्वामीसे कहा आप एकबेर मेरीबहिनको सेना समेत बुलाकर मेहमानीकरैं तो मेरी लज्जाछूटै सत्याने मुझे ऐसातानामाराथा जमद-ग्निबोले परमेश्वरकीदयासे मेहमानीकरना कुछ कठिननहीं है नारायणजी तेरीइच्छा पूर्णकरैंगे सो एकदिन राजासहस्राबाहु अहेरखेलताहुआ उसीबनमें जहांपरकुटी जम-दग्नि ऋषीश्वरकीथी सेनासमेत आनपहुँचा उनदिनों कामधेनुगाय ऋषीश्वरके स्थान पर थी जब जमदग्निने अपनीस्त्रीके कहनेसे सहस्रार्जुन व सत्रहअक्षौहिणी दलको जो उसकेसाथमें थीं नेवतादेकर कामधेनुके प्रतापसे इच्छापूर्वक भोजनखिलाया तब सह-स्राबाहुनेमनमें बिचारा कि जमदग्निने जिसकामधेनुके प्रतापसे लाखों मनुष्योंको ऐसा इच्छापदार्थ भोजनकरायाहै वह गाय ऋषीश्वरसे लेनाचाहिये ऐसाबिचारकर राजाने जमदग्निसे कहा ऐसीगौ ऋषीश्वरको रखना न चाहिये यहगाय राजाओंकेघर रहनेयोग्य है इसलिये तुम कामधेनु गौ हमको दो जमदग्नि ने उत्तरदिया हे राजन् यह गौ मेरी न होकर मैं इसको देवलोकसे मँगनी मांगलायाहूं फिर वहां पहुँचादूंगा इसकारण तुम को नहीं देसक्ता यह बचन सुनतेही सहस्रार्जुन ने क्रोधित होकर जब अधर्मकी राह वह गौ छीनली व अपने देशको लेचला तब कामधेनु भागकर जमदग्निके पास चली आई व रुदनकरके बोली हे ऋषीश्वर मेरा क्या अपराध है जो तुमने मुझे राजा को देदिया जमदग्निने आंशू भरकर कहा हे कामधेनु तुझे राजा बरजोरी लिये जाताहै मैं क्या करूँ यह बात सुनकर कामधेनुने दशहजार शूरबीर अपने अंगसे उत्पन्नकिये जब उन वीरों ने राजाका सामना किया तब सहस्रार्जुन अपने बलसे उन्हें लड़ाई में जीत कर कामधेनुको छीनलेगया यह दशा देखतेही जमदग्नि ने परशुराम अपने बेटे महा-

बलीको जो उससमय कुटीपर नहींथा बुलाकर कहा हे बेटा सहस्राबाहु कामधेनु गौ हमारी कुटीमेंसे बरजोरी छीनलेगया सो लानाचाहिये यह बचन सुनतेही परशुरामजी महाक्रोधित होकर अकेले माहिष्मतीपुरी में चलगये व अपने भुजाकी सामर्थ्य व फरसे से राजा सहस्राबाहुको उसके नौसे बेटे व सत्रहअक्षौहिणी सेनासमेत मारकर कामधेनु गौ अपने पिताके पास लेआये तब जमदग्नि ऋषीश्वर ने उदास होकर परशुरामजी से कहा हे बेटा तुमने चक्रवर्ती राजाको माराहै इसलिये शास्त्रानुसार तुमको दोषलगा सो तुम एकबर्षतक पृथ्वी परिक्रमा व तीर्थयात्रा करआवो तब तुम्हारा अपराध छूटैगा हम ब्राह्मणों को क्षमाकरना चाहिये क्षमासे ईश्वर प्रसन्नहोते हैं परशुरामजी यह बचन सुनतेही पृथ्वीकी परिक्रमा व तीर्थयात्रा करने चलगये ॥

सोलहवां अध्याय ॥

परशुरामजीका अपनी माता व भाइयोंका मारना ॥

शुकदेवजीनेकहा हेपरीक्षित परशुरामजीने अपनेपिताकी आज्ञानुसार वर्षदिन पृथ्वी परिक्रमा व तीर्थयात्राकरने उपरांत आनकर जमदग्निको दण्डवत् किया फिर एकदिन ऐसा संयोगहुआ कि रेणुकामाता परशुरामजीकी गंगाकिनारे जलभरनेगई वहांपर चित्ररथगन्धर्वको जो अपनीस्त्रियोंके साथ जलक्रीड़ा करताथा देखकर मनमेंकहा यह अति सुन्दरहै जब रेणुकाको उसका जलबिहार देखनेमें बिलंबहुआ तबवहसमझी कि मेरेपति अग्निहोत्रपरबैठे हैं जलपहुंचानेकी राहदेखतेहोंगे जल्दीजानाचाहिये जबवह ऐसा विचारकर जलसमेत कुटीपरपहुंची व ऋषिने विलम्बहोनेकाकारण अपनेयोगबलसे जानलिया कि इसकोपरपुरुषकी सुन्दरताई देखनेसे पानीलानेमें विलम्बहुआ तबजमदग्निनेक्रोधितहोकर अपनेतीनोंबड़ेबेटोंसे कहा तुमलोग इसेमारडालो जबउन्होंनेमारना माताका अधर्मविचारकर रेणुकाको नहींमारा तबऋषीश्वरने परशुरामजीछोटे पुत्रसेकहा कि तू अपनीमाताको भाइयोंसमेत मारडाल यहसुनकर परशुरामजीने बिचारा कि मारनामाता व भाइयोंका बड़ापापहै पर मैंनहींमारता तो पिताक्रोधितहोकर मुझेशापदेवेंगे व मारडालनेमें मेरेपिता अपनेयोगबलसे फिर इनकोजिलासक्तेहैं जबऐसाविचारकर परशुरामजीने रेणुकाअपनी माताको तीनोंभाइयोंसमेत मारडाला तब ऋषीश्वर प्रसन्न होकरबोले हेपरशुरामतैंने मेरीआज्ञामानकर अपनीमाता व भाइयोंकोबधकिया इससेहम अतिप्रसन्नहुये जो बरदानमांगेसोदूं यहवचनसुनतेही परशुरामअपने पितासेहाथजोड़कर बोले महाराजमैं यहीवरदानमांगताहूं जिससेमेरीमाता व भाई फिरजीउठें व उनकोयह बातनमालूमहो कि हमैं परशुरामनेमाराथा जमदग्निजी बोले बहुतअच्छा परमेश्वरकी दयासे ऐसाहीहो यहबचन ऋषीश्वरके मुखसेनिकलतेही वह सब इसतरहजीकर उठखड़ेहुये जिसतरह कोईसोयाहुआ जागे व नारायणजीकीमायासे उनको यहनहींमालूम

हुआ कि हमको परशुरामजीने माराथा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् परमेश्वरके तप व जपमें ऐसी सामर्थ्य है कि हरिभक्तलोग मुर्दको जिलासक्ते हैं फिर परशुरामजी इस बिचारसे कि मैंने अपने माता व भाइयों को माराहै सो पृथ्वी परिक्रमाकरके यह पाप छुड़ाना चाहिये इसलिये तीनोंभाइयों समेत तीर्थयात्रा करने चले गये कुछदिन बीते राजा सहस्राबाहु के सौ बेटोंने जो परशुराम से भागकर बचगये थे बिचारा कि इन दिनों परशुरामजी भाइयोंसमेत कुटीपर नहीं हैं किसीतरह आन अपने बापका बदला उनसे लेना चाहिये सो एकदिन राजकुमारों ने आनकर हरिइच्छा से जमदग्नि ऋषीश्वरको अग्निहोत्र करतेसमय मारडाला व मस्तक ऋषीश्वरका काट कर लेगये तब रेणुका अतिबिलाप करनेलगी जब उसने इक्कीसबेर अपनी छाती पीट कर परशुरामजी को पुकारा तब उन्होंने माताका चिल्लाना सुनतेही कुटीपर आनकर पिताको मरेहुये देखा और जब रेणुकासे जमदग्नि के मारेजानेका समाचार सुना तब परशुरामजी ने बड़ाक्रोधकरके सौगन्द खाकर यह प्रणकिया कि मैं इस अपराधके बदले पृथ्वीपर किसी क्षत्रियको जीता न छोडूंगा यह कहकर परशुरामजी माहिष्मतीपुरी में चलेगये व सहस्राबाहुके बेटोंको जिन्हों ने जमदग्नि का बधकिया था उनको मारकर अपने बापका शिर वहांसे उठालाये व पिताके धड़से मिलाकर क्रियाकर्म उनकाकिया व यही प्रतिज्ञा करने से परशुरामजीने इक्कीसबेर चारोंओर घूमकर क्षत्रियोंको मारडाला व कुरुक्षेत्रमें स्नानकरके सब पृथ्वीको इक्कीसबेर ब्राह्मणों को दान करदिया जब अगले मन्वन्तरमें राजाबलि इन्द्रहोगा तब परशुरामजी सब ऋषीश्वरों में रहेंगे इनदिनों मन्दराचल पर्वतपर बैठेहुये परमेश्वरका तप करते हैं जिनका गुण व यश देवता व गन्धर्व लोग सदा स्वर्ग में गाते हैं और उनके अन्तको नहीं पहुँचते हे राजन् गाधिऋषिके पुत्र बिश्वामित्र ऋषीश्वर ऐसे महात्माहुये जिन्हों ने अपने को राजऋषि से ब्रह्मऋषीश्वर कहलाया और उनके सौपुत्रहुये उनमें छोटे पचास बेटोंकानाम मधुछंदाथा जब बिश्वामित्रने सुनश्शेफ अपने भानजे को जो राजा हरिश्चन्द्रके बलिदान होने से बचा था अपना बेटा बनाया व उसका नाम देवरात रखकर अपने बड़े पचासों पुत्रों से कहा तुमलोग इसे अपना बड़ाभाईकरके मानो जब उन्होंने यह बात नहीं मानी तब बिश्वामित्रने उनको ऐसा शापदिया कि तुमलोग म्लेच्छहोजावो तभी से संसारमें म्लेच्छहुये हैं व फिर बिश्वामित्रने मधुछन्दाआदिक अपने छोटे पचासोंपुत्रों से वहीबातकही जब उन्होंने अपने पिताकीआज्ञानुसार देवरातको बड़ाभाईकरके जाना तब बिश्वामित्रने प्रसन्नहोकर उनको ऐसावरदानदिया कि तुम्हारावंश अधिकहो इसलिये बिश्वामित्र के बंशमें बहुत संतानहोकर सब कौशिकगोत्री कहलाते हैं ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

राजापुरूरवा के बंश की कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित पुरूरवाके बंशमें राजानहुष ऐसाप्रतापी हुआ जिसने देवलोकका राज्यकिया उसकीकथा पहिले होचुकी है अब हम उसकी संतानका हाल कहते हैं सुनो राजाययाति उसकापुत्र अतितेजवान् व प्रतापीहोकर एकबेर इन्द्रपुरीका राज्यकियाथा उसकीकथा इसतरहपर है कि एक दिन राजाइन्द्र गौतमऋषीश्वरकी स्त्री अहल्याको जो अतिसुन्दरी पंचकन्याओं में थी देखकर मोहितहोगया व उससे भोग करने की इच्छाकिया पर गौतमऋषीश्वर महात्माके डरसे वहांनहींजासक्ताथा जब इन्द्र से बिनाप्रसंगकिये नहींरहागया तब एकदिन रातको काकरूपबनकर गौतमऋषीश्वर के आंगनमें वृक्षपर जाबैठा व बहुतरातरहे बोलनेलगा जब ऋषीश्वरने उसकी बोली सुनकर जाना अब थोड़ीरातहै तबवह स्नान व पूजाकरनेवास्ते उठकर मकानसे बाहर आये उससमय इन्द्रने घरसूनापाकर अपनास्वरूप ऋषिकेसमान बनालिया व अहल्या के पासजाकर उससेभोगकिया जब प्रसंगकरनेउपरांत अहल्यानेजाना कि यह मेरापति नहीं है किसी दूसरेने कपटरूपबनाकर मेरापातिव्रतधर्म बिगाड़दिया तब उसने कहा हे अधर्म्मीचाण्डाल तू कौनहै यहां से चलाजा जब यहबचनसुनकर इन्द्र वहां से बाहर निकलनेलगा व गौतमऋषीश्वरसे जो अधिकरातरहना समझकर फिरेआते थे डेवढ़ी में भेंटहुई तब ऋषीश्वर इन्द्रकोदेखतेही अपनेयोगबलसे उसके कुकर्मकरनेका हाल जान कर बोले हे इन्द्र बड़ेलज्जाकी बातहै जो तैंने अनेकअप्सरा व इन्द्राणी महासुन्दरी रहने परभी ऐसाअधर्मकिया इसलिये हम तुझे शापदेते हैं कि तू एक भगवास्ते काकरूपहुआ था सो तेरेअंगमें हजारभग प्रकटहोजावें यहबचन ऋषीश्वरके मुखसे निकलतेही इन्द्र के शरीरमें हजारभगहोगईं जब मारेलज्जाके राजसिंहासनपर न जाकर कमलकीडार में छिपरहा तब ऋषीश्वरोंने इन्द्रासन सूनादेखकर राजानहुषको इन्द्रासनपर बैठाला जब इन्द्राणीका रूपदेखकर राजानहुषकामन चलायमानहुआ तब इन्द्राणी पतिव्रताने बृह-स्पतिजीकी आज्ञानुसार नहुषसेकहा तुमने आजतक जो शुभकर्मकियाहो उसे बतलाओ जब राजाने अपनेमुखसे वह वर्णनकिया तब पुण्यउसका क्षीणहोकर वह इन्द्रलोक से गिरपड़ा व बृहस्पतिजी ने जाकर इन्द्रको कमलनाल से बाहर निकाला व उससे यज्ञ कराके ऐसाआशीर्बाद दिया कि वह हजारभग आंखके समान होगईं तब इन्द्र अपनी गद्दीपर आनकर राज्यकरनेलगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् अबहम नहुषके दूसरेबंशकीकथा कहते हैं सुनो उसकेबंशमें धन्वन्तरि नामवैद्य यज्ञकाभाग लेने वाले ऐसे महात्माहुये जिनका नामलेनेसे मनुष्यकारोग व दुःख छूटजावे उनकेबंश में राजाकुबलयाश्व बड़ाप्रतापी होकर उसके मन्दालसानाम स्त्री से अलर्कआदिक पुत्र

उत्पन्नहुये वह राजाअलर्क छासठहजारवर्ष राज्यकरके तरुणबनारहा व रानी मन्दालसा अपनेबेटोंको बाल्यावस्थामें ज्ञान सिखलायाकरतीथी उसने मरतीसमय दोश्लोक अपने पुत्र राजाअलर्क को देकरकहा तू इसे यंत्रबनाकर अपने पासरख जब तेरेऊपर कुछ बिपत्तिपड़े तब इसश्लोककोपढ़कर उसीकेअनुसार करना सो राजाअलर्कने वह दोनों श्लोक यंत्रबनाकर भुजा में बांधलिये व संसारी सुख में लपटकर राज्य करनेलगा जब दूसरे राजोंने उसे सुख व बिलासमें लिपटे देखा तबजाकर अपनी सेनासे उसकानगर घेरलिया जब राजाअलर्कने देखा कि अब मेराप्राण व राज्यबचना कठिनहै तब अपने ऊपर बिपत्तिजानकर वह दोनोंश्लोक यंत्रसे निकालकेपढ़ा उनमेंलिखाथा कि सिवाय सत्संग और किसीकेसाथ प्रीतिनहींकरना संसारी लोगों से संगति व प्रेमकरने में पीछे दुःखहोताहै जगत्काव्यवहार स्वप्नवत् समझकर उसमें मनलगाना न चाहिये संसार में चाहनारखना यही दुःखकीफांसी है जबवह श्लोकपढ़ने से राजाअलर्कको ज्ञान उत्पन्न हुआ तब वह बिरक्तहोकर बनकीओर हरिभजनकरनेचला उससमय दूसरे राजों ने जो नगर उसका घेरेथे यहहालसुनतेही राजाअलर्कसे जाकरपूंछा तुम बिनायुद्धकिये हार मानकर बनमें क्योंजातेहौ अलर्कने उत्तरदिया राज्यकरनेउपरान्त नरकभोगनापड़ता है इसलिये मैं राज्य नहीं करूंगा तुम मेरी राजधानी लेकर आनन्दपूर्वक सुखकरो मुझे लड़नेकी इच्छा नहीं है जब यह बचन सुनकर दूसरे राजों को भी नरक भोगने के डरसे ज्ञान उत्पन्नहुआ तब उन्हों ने राजाअलर्क का देशलेना उचित नहीं जाना और अपनी २ राजगद्दीपर चलेगये व राजाअलर्क फिर धर्मपूर्वक राज्य करने लगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो हरिभजनका ऐसा प्रताप है जैसे राजा अलर्क ने हरिभजन करने की इच्छाकी वैसे नारायणजी की दयासे उनकादुःख छूटगया व जो लोग परमेश्वरका तप व स्मरणकरते हैं उन्हें न मालूम कैसा सुखमिलेगा उसी अलर्क के देश में राजारम्भस ऐसामहात्मा व ज्ञानी हुआ जिसकेकुलमें सब ब्राह्मणहोगये व उसके बंशमें राजारज बड़ाप्रतापी व धर्मात्मा होकर उसकेयहां पांचसौपुत्र अतिबलवान् उत्पन्नहुये एकबेर इन्द्रादिक देवतोंका राज्य दैत्योंने छीनलियाथा जब इन्द्रने बृहस्पतिकी आज्ञानुसार राजारजसे सहायताचाही तब राजारजने अपने पांचसौपुत्र साथलेकर इन्द्रकीसहायताकी जब दैत्योंको जीतकर इन्द्रासन देवतों को देने लगे तब इन्द्रनेकहा देवलोकका राज्य आप कीजिये जब राजारज इन्द्रादिक देवतों के कहनेसे बहुत दिनतक देवलोकका राज्यकरके मरगया तब उसके बेटे इन्द्रलोककाराज्य बरजोरीकरके यज्ञ में इन्द्रकाभाग आप लेनेलगे व इन्द्रादिक के मांगनेपरभी देवलोकका राज्यनहींछोड़ा तब देवतोंके बिनयकरनेपर बृहस्पतिजीने अपने तपोबलसे राजारजकेबेटोंको मारडाला जब उनमें कोई जीतानहींबचा तब इन्द्रादिक देवता बृहस्पतिगुरूकीकृपासे इन्द्रपुरीका राज्यपाकर अपनाभाग अनन्दपूर्वक लेनेलगे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

राजानहुषके बंशकीकथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित राजानहुषके ययातिनामआदिक छः बेटे बड़ेप्रतापीहुये जब राजानहुष ऋषीश्वरोंके शापदेनेसे अजगरसर्प्पहोकर कुरुक्षेत्रमें गिरपड़ा तब उसके राजसिंहासनपर जो मर्त्यलोकमेंथा ययातिनाम उसकापुत्र बैठकर बड़ाधर्मात्मा व चक्रवर्तीराजाहुआ व उसने दूसरेदेशका राज्य समभागकरके अपनेभाइयोंको बांटदिया व बिवाह अपना देवयानी शुक्राचार्यकी कन्यासेकरके वृषपर्वादैत्यकी शर्मिष्ठानामबेटीके साथभोगाकिया इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूछा हे मुनिनाथ राजाययातिने क्षत्रिय होकर शुक्राचार्य्य ब्राह्मणकीकन्या किसतरह ब्याहीथी यह संदेह मेराछुड़ादीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन् एकदिन शर्मिष्ठाबेटी वृषपर्वादानवकी जो दैत्यों का राजाथा शुक्रगुरूकीकन्या देवयानीको साथलेकर हजार दासीसमेत अपनेबाग में तालावपर स्नानकरनेगई जब शर्मिष्ठा व देवयानी व दासीआदिक अपना २ वस्त्र तालावकिनारे उतारकर जलक्रीड़ा व स्नानकरनेलगीं उसीसमय महादेव व नारदजी घूमतेहुये वहांआगये उनकोदेखतेही सब लड़कियोंने लज्जितहोकर अपने २ वस्त्र पहिनलिये व शर्मिष्ठाने जल्दीमें भूलकर जब देवयानीका कपड़ा पहिनलिया तब देवयानी क्रोधितहोकर बोली हे शर्मिष्ठा मेरावस्त्र पहिरनेयोग्य तू नहीं है किसवास्ते कि तेरापिता मेरेबापकाचेलाहै व मैं ब्राह्मणकीकन्याहूं मेरावस्त्र तैंने कैसेपहिना जैसेयज्ञकी आहुति कुत्ता उठालेवै या शूद्रहोकर वेदपढ़ै जब देवयानीने शर्मिष्ठाको ऐसादुर्वचन कहा तब उसने क्रोधकरके उत्तरदिया तू भिखारीकी कन्याहोकर मुझे ऐसीबातकहती है तेरे पिताने जन्मभर मेरेबापसे भीखमांगकर तुझेपालनकिया सो तू मेरीबराबरी करती है ऐसाबचनकहकर शर्मिष्ठाने क्रोधवश देवयानीको जो नंगीखड़ीथी कुयेंमें ढकेलदिया और आपदासियोंसमेत घर चलीगई उसीसमय हरिइच्छासे राजाययाति अहेर खेलतेहुये वहां आनपहुँचे व अपनेसेवकको पानीलेआनेवास्ते उसीकुयेंपर भेजा जब उसने एकस्त्री अतिसुन्दरी कुयेंमेंगिरीदेखकर राजासे यहसमाचार कहा तब ययातिने आपजाकर देखा तो एककन्या रूपवती उसेदेखपड़ी जब उसने अपना वृत्तान्तकहकर राजासे निकालनेवास्ते कहा तब ययातिने अपनादुपट्टा उसके पहिरनेवास्ते फेंकदिया व उसकाहाथ पकड़कर कुयेंसेबाहर निकाललिया उससमय देवयानीबोली हे राजन् हरिइच्छासे ऐसा संयोगहुआ जो तुमने मेराहाथपकड़ा इसलिये मेराबिवाह तुम्हारेसाथ होगा कचनामबृहस्पतिके पुत्रने मुझे ऐसाशापदियाथा कि तेराबिवाह ब्राह्मणसे न होगा इसलिये मेरा बिवाह ब्राह्मणसे नहींहोसक्ता जब राजाने यहबात सुनकर अपनेकोभी उसपर मोहितदेखा तब परमेश्वरकी इच्छा इसीतरह जानकर बिवाहकरना देवयानीसे

अंगीकारकरके राजमंदिरको चलागया व देवयानी वहांसेरोतीहुई अपनेघर आनकर शुक्राचार्य्यसे कहा हे पिता शर्मिष्ठाने तुमको भीखमांगनेवाला अपनेबापका कहकर मेराप्राण मारनेवास्ते कुयेंमें ढकेलदियाथा सो राजाययातिने आनकर मुझकुयेंसे बाहर निकाला तब मेराप्राणबचा यहबात सुनतेही शुक्रजीने क्रोधितहोकर बिचारा पुरोहिती करनेसे खेतमेंका गिराहुआ अन्नचुनकर खाना अच्छाहोताहै जिसमेंकोई अपमान न करै सो शर्मिष्ठाने राज्य व धनकेमदसे मेरीबेटीकोकुयेंमें गिरादिया इसलिये अब वृषपर्वा के राज्यमेंरहना न चाहिये शुक्रजीने ऐसाविचारकर देवयानी कन्यासमेत उसकाराज्य छोड़कर निकलचले वृषपर्वाने यहसुना तब उसनेघबड़ाकर कहा देखो उन्हींके आशी-र्वादसे यहसबराज्य व सुख मुझेमिलाहै नहींतो देवतालोग अबतक मुझकोमार निकाल देते उनके चलेजानेसे मेराराज्य व धनजातारहेगा यहबात समझतेही वृषपर्वादौड़ा हुआ शुक्रगुरूके शरणमेंगया व हाथजोड़कर विनयकिया महाराज मेरा अपराध क्षमा करके फिर अपने मकानपर चलिये यह दीनबचन राजाकासुनकर शुक्राचार्य्यबोले हे राजन् तुमने मेरा कुछ अपराध नहींकिया पर तुम्हारीकन्याने देवयानीका अनादर कियाहै जिसबातमें वह प्रसन्नहो वहीकामकरो तब फिर तुम्हारे देशमें चलकररहूं जब वृषपर्वाने देवयानीसे बहुत बिनतीकरके प्रसन्नहोनेवास्ते कहा तब वह सबहाल शर्मिष्ठा का कहकरबोली हे राजा जिसकेसाथ मेरीशादी शुक्राचार्यकरैं वहां शर्मिष्ठा तेरीपुत्री हजारदासी अपनेसाथलेकर मेरीसेवामेंरहै तोमैं प्रसन्नहोतीहूं यह सुनकर राजानेबिचारा कि शुक्रगुरू सदाहमारे कुलकी रक्षाकरतेआयेहैं बिनाइनके प्रसन्नहुये मेराकल्याण न होगा ऐसासमझकर राजाने शर्मिष्ठासे सब हालकहके पूछा हे पुत्री तेरामोह करनेमें शुक्राचार्य्यके क्रोधसे हमारेबंश व राज्यका नाशहोजायगा और तेरेदासीहोनेसे हमारा कल्याणहै इसमें क्याकरनाचाहिये यहबचन सुनकर शर्मिष्ठाबोली हे पिता मेराशरीर तुमसे उत्पन्न व पालनहुआहै आप जिसेचाहैं उसे मुझको देडालैं यहबात सुनकर वृषपर्वाबोला हे देवयानी तुम्हारा कहना मुझेअंगीकारहै जब देवयानी यहबात सुनकर प्रसन्नहुई तब शुक्राचार्य कन्यासमेत फिर अपनेस्थानपर आनकररहनेलगे इतनीकथा सुनकर परीक्षितनेपूछा हे मुनिनाथ कच बृहस्पतिकेबेटेने देवयानीको क्योंशापदियाथा इसकीकथा सुनाइये शुकदेवजीबोले हे राजन् एकबेर युद्धमें बहुतदैत्य देवतोंकेहाथसे मारेगये तब उन्हें शुक्राचार्यने संजीविनी विद्यासे जिलादिया जब लड़ाईहोने उपरान्त देवतोंने समाचार बृहस्पतिजीसे सुना तब इन्द्रादिक देवतोंने बृहस्पतिगुरूसे कहा महा-राज आपभी कच अपनेबेटेको शुक्रजीकेपास भेजदीजिये कि वह उनकाचेला होकर संजीविनीविद्या पढ़आवै जब बृहस्पतिने देवतोंके कहनेसे कचको संजीविनीविद्या पढ़ने वास्ते भेजदिया तब कचने शुक्राचार्य के शरणमें जाकर दण्डवत्करके बिनयकिया महाराज मैं संजीवनीविद्या पढ़ने आयाहूं जब शुक्राचार्य उसेअपने घर रखकर संजी-

विनीविद्या सिखलानेलगे तब देवयानी व कचसे अतिप्रीति होगई जब दैत्यों ने यह समाचार पाया कि बृहस्पतिका पुत्र हमारेगुरू से संजीविनीविद्या पढ़ताहै तब उन्हों ने आपसमें सम्मतकिया कि वह यहां विद्या पढ़कर देवता हमारे शत्रुओं को जिलादिया करैगा तो अच्छा नहीं होगा इसलिये इसको मारडालना चाहिये सो एकदिन कच शुक्रगुरूकी गौ चरानेवास्ते बनमें गया तब दैत्योंने उसके अंगका टुकड़ा २ करके एक गड्हे में फेंकदिया जब सन्ध्यासमय वह गौ चराके नहीं फिरा तब देवयानी बोली हे पिता कच अबतक गौ चराके नहीं आया शुक्राचार्य्य ने योगबलसे बिचारकर कहा हे पुत्री उसे दैत्यों ने मारडाला वह किसतरह आवे जब यह सुनकर देवयानी शोचित होगई तब शुक्रजी ने कचको संजीविनीविद्यासे जिलादिया यह समाचार पाकर दैत्यों ने आपस में कहा कदाचित् शुक्रगुरू इसीतरह उसको जिलादिया करेंगे तो हमारे मारने से क्या लाभहोगा ऐसा उपाय कियाचाहिये कि जिसमें वह जिलाने न सकैं यह बिचारकर दैत्यों ने गौ चरातीसमय फिर कचको मारडाला व उसके अंगका मदिराचुवाकर शुक्रगुरूको पिलादिया जब सन्ध्यासमय कच फिर नहीं आया तब देव-यानी के विनय करने से शुक्राचार्य ने ध्यानधरकर तीनोंलोकमें देखा पर उसका पता नहीं पाया जब अपने आत्मामें ध्यान लगाया तब उसको पेटमें देखकर जाना कि दैत्यों ने उसका मदिरा चुवाकर मुझे पिलादिया है यह दशा देखकर शुक्राचार्य ने कहा हे पुत्री कचके जिलाने से मैं मरजाऊंगा देवयानी हाथ जोड़कर बोली महाराज ऐसा उपायकरो जिसमें आप और वह दोनों जीतेरहैं तब शुक्रजी ने मंत्रपढ़कर अपने पेटमें कचको जिलादिया व उसीजगह संजीविनीविद्या उसको पढ़ाकर कहा हे कच जब तुझे अपने पेटसे निकालकर मैं मरजाऊं तब तू इसी विद्यासे मुझको जिलादीजियो कच बोला बहुत अच्छा जब शुक्रजी ने अपना पेट चीरकर कचका जीता बाहर निकाला व आपमरगये तब कचने संजीविनीविद्यासे उनको जिलादिया जब कुछदिन उपरान्त कच शुक्रगुरूसे बिदाहोकर अपने घर आनेलगा तब देवयानी उससे बोली कि तुम अपना बिवाह मेरेसाथ करो कचने उत्तरदिया गुरूकी कन्या बहिनकेसमान होती है इसलिये तुमसे बिवाह नहीं करसक्ता इसी बातपर देवयानी ने क्रोधितहोकर उसको यह शापदिया जो संजीविनीविद्या तैंने मेरेपितासे पढ़ी है वह तुझे भूलजावै यह वचन सुनकर कच बोला हे देवयानी धर्म करतेहुये तैंने मुझे शापदिया इसलिये तेरा बिवाह ब्राह्मणसे न होवे ऐसा शाप देकर कच अपने बापके पास चलागया हे परीक्षित देवयानी को शाप होनेका यही कारणथा सो मैंने तुमको सुनादिया अब देवयानी के बिवाहकी कथा कहताहूं सुनो जब शुक्राचार्य वृषपर्वाके देशमें आनकर बसे तब उन्होंने कुछदिन बीते परमेश्वरकी इच्छानुसार राजा ययातिको बुलाकर अपनी कन्या उसको बिवाहदी व शर्मिष्ठाको हजार दासियों समेत दहेजमें देकर राजा ययाति से

कहा तुम शर्मिष्ठाको अपनी सेजपर मत बैठालना व देवयानी नेभी इसबातका वचन ययातिसे लेलिया जब राजाने कहा मैं शर्मिष्ठासे भोग नहीं करूंगा तब शुक्रजी ने देवयानी को शर्मिष्ठा व हजारदासियोंसमेत बहुतसा भूषण व वस्त्र आदिक दहेज में देकर विदाकिया व राजा ययाति देवयानी समेत राजमन्दिर पर आनकर उसकेसाथ भोग व विलास करनेलगे व शर्मिष्ठाको एक स्थान अतिउत्तम रहनेवास्ते बनवादिया कुछदिन बीते राजा ययाति व देवयानी से दो पुत्र यदु व तुरबसुनाम उत्पन्नहुये एकबेर शर्मिष्ठा रजस्वला से शुद्धहुई थी सो उसीदिन राजाययाति भी बागमें सैरकरनेवास्ते जानिकले तब शर्मिष्ठाने हाथजोड़कर विनयकिया महाराज मैंभी तुम्हारीदासी होकर आपसे भोगकरने व सन्तान होनेकी इच्छा रखतीहूं व राजकन्या होकर दूसरे से भोग नहीं करसक्ती ऐसा बचन सुनतेही राजाने शुक्राचार्यका बचन यादकरके विचारा शर्मिष्ठा से भोगकरने में मेरेवास्ते अच्छा नहीं होगा और यह राजकन्या होकर अपने मुहँसे रतिदान मांगती है इसका कहना न मानने में भी मेराधर्म नहीं रहता इसवास्ते अब इसकी इच्छा पूर्णकरना चाहिये आगे जो मेरे प्रारब्धमें लिखाहै वह मिटने नहीं सक्ता यह बिचारकर राजाने शर्मिष्ठा से भोगकिया फिर इसीतरह देवयानी से छिपाकर कभी २ राजा उसके साथ भोग व विलास करनेलगे कुछदिन यहबात छिपीरही जब द्रुह्य व अणुनाम दोपुत्र शर्मिष्ठाके राजासेहोकर तीसरागर्भ रहा तब एकदिन शर्मिष्ठा देवयानी के पंखा हांकती थी उससमय दोबालक शर्मिष्ठाके वहां आनकर खड़ेहुये सो देवयानी ने पूछा हे शर्मिष्ठा तेरे यह दोनोंपुत्र किसतरह उत्पन्नहुये और तीसरा गर्भ किससे रहा शर्मिष्ठा बोली रातको किसी ऋषीश्वरने आनकर मुझसे स्वप्ने में भोगकियाथा उसी से दो बालक होकर तीसरा गर्भ रहाहै यह बात सुनकर देवयानी चुप होरही पर उसके मनमें खटकाहुआ इसलिये कईदिन बीते एकरोज देवयानी ने शर्मिष्ठाके मकान पर जाकर उन लड़कों से पूछा तुम्हारे पिताका क्या नामहै तब बड़े बालक ने बत-लाया मैं ययातिका बेटाहूं यह बचन सुनतेही देवयानी महाक्रोधसे राजाके पास आन कर बोली तुमने मेरेपिताके मनाकरनेपर भी शर्मिष्ठा से भोगकिया इसलिये अब मैं तुम्हारे यहां नहीं रहूंगी जब ऐसा कहकर देवयानी क्रोधबश अपने पिताके घरचली तब ययाति उसके पीछे विनय करताहुआ पैदल दौड़ागया पर उसने नहीं माना व अपने बापसे जाकर यह सबहाल कहदिया व राजाययातिभी वहां पहुँचकर खड़ाहुआ जब शुक्राचार्य ने जाना कि मेरे बरजनेपर भी राजाने शर्मिष्ठा से भोगकरके सन्तान उत्पन्न कियाहै तब क्रोधकरके कहा हे राजन् तैंने बलके अभिमान से मेरा कहना नहीं माना इसलिये तुझे शाप देताहूं कि बूढ़ा निर्बलहोकर स्त्रीप्रसंग करनेयोग्य न रहै व स्वरूप तेरा बिगड़जावे यह बचन उनके मुहँसे निकलतेही उसीसमय राजा बूढ़ा होकर दांत उसके टूटगये व बाल श्वेतहोकर आंखसे कम देखनेलगा तब हाथजोड़कर बोला

महाराज अभीतक मेरामन संसारीसुखसे नहीं भरा एकबेर अपराध क्षमा कीजिये यह दीनबचन सुनकर शुक्राचार्य्य ने अपनी बेटी का सुख बिचारके कहा हे राजन् मेरा शाप फिरने नहींसक्ता पर तेरे पांचोंपुत्रों में जो खुशीसे तेरा बुढ़ापा लेकर अपनी तरुणाई तुझे देवे तब तू फिर युवा होजायगा यह आशीर्बाद सुनतेही राजा प्रसन्नहोकर देवयानी समेत राजमन्दिर पर चलेआये उन्हींदिनों शर्मिष्ठासे पुरुनाम तीसरापुत्र उत्पन्न हुआ जब राजाने अपने बड़े पुत्रसे कहा तुम्हारे नानाने हमको शाप देकर बूढ़ा बना दिया तुम अपनी तरुणाई हमको देव तो थोड़ेदिन और संसारीसुख करलेवें तब यदुने समझा कि हमारी तरुणाई लेकर राजा मेरी मातासे भोगकरैंगे तो मुझको बड़ा अधर्म होगा ऐसा बिचारकर उसने उत्तर दिया मैंने अभीतक संसारीसुख नहीं उठाया इस लिये मैं अपनी तरुणाई नहीं देसक्ता ॥

दो० श्वेतो श्वेतो सबभलो श्वेतो भलो न केश ।
कामिनि रमै न रिपुडरै न आदरकरै नरेश ॥

यहबचन बड़ेपुत्रका सुनते ही राजाने तुर्वसुआदिक तीनबालक जो यदुसे छोटेथे उनकोबुलाकर यहीबातकही जब उन्होंने भी इसीतरह उत्तरदिया तब ययाति ने पुरु छोटेलड़के से जो शर्मिष्ठासे हुआथा कहा हे पुत्र तुम अपनीतरुणाई मुझेदेव तेरेचारों भाइयोंने नहींदिया अब सिवायतुम्हारे दूसरेकाभरोसा मुझको नहीं है यह दीनवचन सुनतेही पुरु हाथजोड़करबोला हे पिता मेरातन आपने उत्पन्न व पालनकिया है इस लिये तरुणाई क्याबस्तुहै अपनाप्राण तुम्हारे नेवछावर समझताहूं कदाचित् मैं सौ जन्म आपकी सेवाकरूं तौ भी आप से उऋण नहीं होसक्ता जो बेटा बिनाकहे माता व पिताकी सेवाकरै वह उत्तम व कहने से करै वह मध्यम व कहने पर चिड़चिड़ाकर आज्ञा पालै उसको निकृष्ट समझनाचाहिये व जो पुत्र माता पिताकी आज्ञा न मानै वह मूत्र के तुल्य है ॥

दो० जाही पैंड़े पूत है वाही पैंड़े मूत ।
राम भजै सो पूत है नहीं मूत का मूत ॥

यहबात पुरुकी सुनकर राजा अति प्रसन्नहुआ व अपनाबुढ़ापा उसे देकर उसकी तरुणाई आपलली व अपने चारोंपुत्रों को ऐसाशापदिया कि तुमलोग राजसिंहासन न पावोगे व तरुणाई लेनेपर राजाने हजारवर्षतक संसारीसुख देवयानी के साथ उठाया और बहुतसायज्ञ व दान वास्ते प्रसन्नहोने परमेश्वरके किया पर मनउसका संसारीसुख से न भरा ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

राजाययातिको एकइतिहास बकरी व बकरेका कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित बहुत दिन राजाययाति संसारीसुखमें फँसारहा जब यज्ञादिक करनेसे उसके ज्ञानहुआ तब एकदिन ऐसा बिचारकिया देखो हमने पुत्रकी तरुणाईलेकर इतनासुख उठाया तिसपर अभीतक इच्छापूरी नहींहुई देखो मट्टीकाघड़ा पानीडालने से भरजाताहै व इन्द्रियां अतिसुखपानेपरभी तृप्तनहींहोतीं वहीदशा मेरीहुई इसीतरह संसारीजाल में फँसेहुये मरनेसे जन्ममेरा अकार्थहोगा इसलिये अब परलोक बनानेवास्ते हरिभजन करनाचाहिये ऐसा बिचारकर राजाने देवयानी से कहा हे प्राण-प्यारी हमने अहेरखेलतीसमय बनमें एककौतुक देखाथा वहहालकहतेहुये हँसीआतीहै जब देवयानी हाथजोड़करबोली महाराज मुझे भी वहचरित्रसुनावो तब राजानेकहा एकबकरी ब्राह्मणकेकुयंमें गिरपड़ीथी उसको एकबकरे ने बाहरनिकाला सो बकरी ने उसबकरेको अपनास्वामीबनाकर बहुतदिन उसकेसाथ संसारीसुखउठाया जब उसबकरी के दोपुत्र उत्पन्नहुये तबवहबकरा किसीदूसरीबकरीसे फँसगया इसलिये पहिलीबकरी अनादरहोने से अपने ब्राह्मणकेयहां चलीगई उसब्राह्मणने अपनी बकरीकी सहायता करके बकरेको बधियाकरदिया जब बकरेने ब्राह्मणसे अतिबिनतीकी व ब्राह्मणने दयालु होकर फिरउसे ज्योंकात्यों बनादिया तब वहबकरा फिर संसारीसुखमें फँसगया यहबचन सुनकर देवयानी बोली महाराज वहबकरा बड़ामूर्खथा जो बकरीकेसाथ भ्रष्टहुआ तब राजाबोले यहीदशाहमारी व तुम्हारी है हे देवयानी मनुष्यको सब संसारकाधन व स्त्री व सातोंद्वीपकाराज्यमिले व हजारोंसन्तानहोकर सबमनोरथपावे तिसपरभी मनउसका संसारीसुखसे नहींभरता जिसतरह आगमें घीडालनेसे ज्वालाबढ़तीहै उसीतरह प्रति-दिन तृष्णा अधिकहोतीजाती है इसलिये अब बिरक्तहोकर हरिभजन करनाचाहिये जब यहवचन देवयानीने पसन्दकिया तब राजाययातिने पुरु छोटेबेटेको तरुणाई फेर-कर अपनाबुढ़ापा उससे लेलिया व राजसिंहासनपर उसेबैठाकर दूसरे चारोंबेटोंको जो बड़े थे चारोंदिशाकाराज्य बांटदिया व आप देवयानी स्त्रीसमेत बदरीकेदारमें चलेगये व तप व ध्यान परमेश्वरका करके मुक्तहुये ॥

बीसवां अध्याय ॥

पुरुके बंशकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित अब मैं राजापुरुके बंशकीकथा कहताहूं जिसकुलमें तुम ने जन्मलियाहै सुनो पुरुकेबंशमें कईपीढ़ीबीते दुष्यन्तनाम राजा बड़ाप्रतापीहोकर एक दिन बनमें अहेरखेलनेगया तब उसने कण्वऋषीश्वरकी कुटी में एककन्या अतिसुन्दरी देखी और उसपर मोहितहोकर पूंछा हे प्राणप्यारी तू देवकन्याकेसमान किसकीबेटी है

कोई राजकन्याभी तेरेतुल्य न होगी इसलिये तेरास्वरूप मेरेहृदयमें बसगया यहबचन सुनतेही शकुन्तला कन्याबोली हे राजन् मैं विश्वामित्रऋषीश्वर और मेनकाअप्सरा से उत्पन्नहुई हूं इसबातको कण्वऋषीश्वर जानते हैं आप मेरेस्थानपर टिककर जो आज्ञा कीजिये सो कन्दमूलादिक व लोटेभरपानी से तुम्हारासन्मानकरूं यहबातसुनतेही राजा प्रसन्नहोकरबोले कन्याकाभी स्वयम्बरकरना धर्म्म है जब ऐसाकहकर राजा बड़ेप्रेमसे रात्रिको उसके स्थानपर टिके तब दोनों ने प्रसन्नता से आपस में गन्धर्व विवाहकरके भोगकिया सो हरिइच्छासे उसीदिन उसके गर्भरहगया जब प्रातसमय राजाशकुन्तला को उसीतरहछोड़कर राजमन्दिरपर चलेगये तब कण्व ऋषीश्वर ने जाना कि इसके राजासे गर्भ रहाहै दशवें महीने एकबालक अतिसुन्दर व ऐसाबलवान् उससे उत्पन्नहुआ जो लड़कपन में सींकके धनुषबाणसे बाघोंको मारनेलगा तब कण्वऋषीश्वरबोले हे शकुन्तला तू अपने बालकको राजाके पास लेजा जब ऋषीश्वरकी आज्ञा से शकुन्तला ने अपनाबालक लियेहुये राजसभामें जाकर कहा हे पृथ्वीनाथ मैं तुम्हारी स्त्री राजकुमार समेत आईहूं तब राजाबोले मैं तुझे नहींपहिचानता तू कौनहै और यहबालक किसका है जब दुष्यन्त ने जानबूझकर यह झूठवचनकहा तब राजसभा में यह आकाशबाणी हुई हे राजा शकुन्तला सचकहती है यहबालक तुम्हारेवीर्यसे उत्पन्नहुआ है इसलिये तुम इनदोनोंको अपनेघररक्खो धर्मात्मापुत्र अपनेपिताको नरकजानेसे बचालेते हैं जब यह आकाशबाणी सब सभावालोंने सुनी तब राजाने देवतोंकी आज्ञासे शकुन्तलाको अंगीकारकिया और पुत्रसमेत राजमंदिर में भेजदिया उसबालकका नाम भरतरक्खा राजा के मरनेउपरांत वहीलड़का जो परमेश्वरकाअंश था राजगद्दीपर बैठकर ऐसाचक्रवर्ती व प्रतापी राजाहुआ जिसने एकसौतेंतीस अश्वमेधयज्ञ पृथ्वीपरकिये और बहुतसे रत्नादिक ब्राह्मणोंको दानदिये उसकेयज्ञमें कईबेर इन्द्र श्यामकर्णघोड़ा चुराकर लेगया सो राजाभरत अपने प्रताप व बलसे घोड़ा छीनलाया व उसके राज्य में कोई दूसराराजा अश्वमेधयज्ञ करनेनहींपाया व जितनेम्लेच्छ व दुःखदायीराजा पृथ्वीपरथे सबका नाश उसनेकिया और सातोंद्वीपके राजोंको अपनी सेवकाई में रक्खा व अपने बलसे दैत्यों को जीतकर इन्द्रादिकदेवतोंको देवलोकका राज्य दिलादिया उसकेराज्यमें पर्वत व समुद्रादिक अनेकतरहकेरत्न व सोना व चांदीआदिक सदा इसवास्ते प्रत्यक्षरखते थे जिसमें जिसे जो चाहनाहो वह लेजावे इसीतरह सत्ताईसहजारबर्ष भरतने इन्द्रकेसमान चक्रवर्ती राज्यकिया व तपकरने से पराक्रम उसका बनारहा व राजाभरत ने अपने तीन बिवाह विदर्भदेशके राजाकी बेटीसे किये जब उसके हरिइच्छासे कईपुत्र कुरूप उत्पन्न हुये तब रानियोंने इसडरसे कि राजाभरतकहेंगे कि ये बालक हमारेवीर्य से नहींहुये उनलड़कोंको गंगामें फेंकवादिया इसलिये राजाभरत सन्तान न होने से चितामें रहा करतेथे कुछदिनबीते राजाने कण्वऋषीश्वरसे मन्त्रलिया तब ऋषीश्वरने पुत्रहोनेवास्ते

राजाभरतसे यज्ञकराया उसीसमय देवतोंने प्रसन्नहोकर भरद्वाजनाम बालक जो ममता से हुआथा लाकर भरतकोदिया राजाने बितथनामरखकर उसका पुत्रकेसमान पालन किया और भरतके मरनेउपरान्त वह राजाहुआ इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूंछा महाराज भरद्वाज किसतरह उत्पन्नहुआ था उसकीकथा कहिये शुकदेवजीबोले हे परीक्षित एकवेर बृहस्पतिने उतथ्य अपने बड़ेभाईकी स्त्री ममतानामसे बरजोरी भोगकिया सो उसके गर्भरहगया तब उसने अपनेस्वामीकेडरसे जोबालक पेटमेंथा उसे गिरादिया वही पुत्र भरद्वाजनामहुआ जब बृहस्पति के समझाने व आकाशवाणी होनेपर भी ममताने उसकापालन नहीं किया तब मरुतदेवताने जिसके नामका यज्ञ भरतने कियाथा वह बालकलाकर राजाको देदिया इसतरह भरद्वाजका जन्म हुआथा ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

राजावितथके सन्तानकीकथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षितबितथकेवंशमें कईपीढ़ीबीते राजारान्तिदेव ऐसा महात्मा हुआ कि राजसिंहासनपर नहींबैठकर मन अपना विरक्तकरलिया व अपनीस्त्री व एक पुत्र समेत बनमें जाकर तप व ध्यानपरमेश्वरका करनेलगा व उसनेभोजनकरना भी परमेश्वरके आश्रयपर छोड़दिया जब अपनीप्रसन्नतासे कोईमनुष्य विनामांगे भोजनदे जाताथा उसीको अपनीस्त्री व बेटेसमेतखाकर बनमें आनन्दसेरहतेथे नहीं तो भूखेरह कर आप कुछ कन्दमूलादिकलानेमें उद्योगनहींकरतेथे सो एकवेर ऐसासंयोगहुआ कि भोजन न मिलनेसे अड़तालीस उपास उनकोहोगये उनचासवेंदिन थोड़ाअन्न कोई उनको देगया सो राजाने उसेरसोई बनाकर तीनभागकरके जैसेचाहा कि भोजनकरैं वैसे नारायणजी बूढ़े ब्राह्मणकास्वरूप धरकरवास्ते परीक्षालेने धर्मराजकेवहां आनकर बोले हे राजन् मैं बहुतभूखाहूं मुझेभोजनखिलाव यह बचनसुनतेही रन्तिदेवने बड़ी श्रद्धासे अपनाभाग उसेखिलादिया जब वह खाकर नारायणरूप ब्राह्मणबोले अभीमेरा पेट नहींभरा तब रानी व राजकुमारभी अपना २ भाग उसब्राह्मणको खिलाकर आप तीनोंमनुष्य ज्योंकेत्यों भूखेरहे व ब्राह्मणरूपी परमेश्वर आशीर्वाददेकर वहांसे अन्तर्द्धानहोगये कईदिन और उनको विनाअन्नके बीतगये तब फिर थोड़ा किसानेलाकर उन्हेंदिया जैसे उनतीनोंने आपसमेंबांटकर भोजनकरनेचाहा वैसे एकशूद्रने आनकर कहा मैं बहुतभूखाहूं मुझेभोजनखिलाओ राजाने उसे अपना अतिथिसमझकर सम्पूर्ण भोजन खिलादिया व आप तीनोंमनुष्य उसीतरह रहगये रानी व राजकुमार विना अन्न बहुतदिन बीतनसे निर्बलहोगयेथे इसलिये राजा उनसेबोला जिसबर्त्तनमें अतिथि ने भोजनकियाहै उसमें कुछ अन्नका अंशलगाहोगा उसको धोकर पीलेव जब रानी व राजकुमारने वह बर्त्तन पीनाचाहा तब एकडोम कुत्तेको साथलियेहुये वहां आन

पहुँचा व भूखसे व्याकुलहोकर राजाके सामने गिरपड़ा व रोकरकहनेलगा मेराप्राण निकलाजाताहै सो यह बर्त्तनका धोवन आपके पीनेयोग्य नहीं है यह जूठन मेराभाग समझकर मुझेदेव जिसमें उसेपीकर अपनाप्राणबचाऊं राजाने उसचांडालमें भी परमेश्वरका प्रकाश समझकर उसेदण्डवत्किया व रानी व राजकुमार डोमसेबोले हमलोगों ने बहुतदिन पीछे यह धोवनपीनेकी इच्छाकी है तुम दयाकरके छोड़देव तो हमपीवें जब चाण्डालने नहींमाना तब दोनों वह धोवनका पानीभी उसेपिलाकर आप भूखे रहगये जब परमेश्वरने इसतरह धर्म व धीर्य उनतीनोंमें देखा तब उसीडोमसे श्याम वर्ण चतुर्भुजीस्वरूप शंख चक्र गदा पद्मलिये प्रगटहोकर राजा व रानी व राजकुमार से कहा तुम्हें बड़ाधीर्य्य है जब उनतीनोंने परमेश्वरका दर्शनपाकर बिनयपूर्वक उनकी स्तुतिकी तब नारायणजी रन्तिदेवको अपने गलेलगाकर बोले हे राजन् हम तुझसे अतिप्रसन्नहैं जो बरदानमांगो सो देवें रन्तिदेव हाथजोड़करबोला महाराज यही बरदानमांगताहूं कि मेरीसबप्रजा सुखपावै और कोईदरिद्री न होकर मेरामन तुम्हारेचरणों में लगारहै परमेश्वर इच्छापूर्वक बरदानदेकर राजा व रानी व राजकुमारको उसीतनु से बिमानपर बैठाकर बैकुण्ठमें भेजदिया व रन्तिदेवका गर्गनाम दूसराबेटा जो राज सिंहासनपरथा उसकेवंशमें सबलोग उनकीकृपासे ब्राह्मणहोगये व पुरुकेवंशमें बृहत् क्षत्र राजाहोकर उसकेवंशमें हस्तीनाम ऐसाप्रतापी राजा उत्पन्नहुआ जिसने हस्तिनापुर नगरबसाया उसके यहांतीनबेटे अजमीढ़ व पुरुमीढ़ व दुर्मीढ़नाम बड़ेधर्म्मात्मा होकर अजमीढ़की सन्तान ब्राह्मणहोगये मुद्गल उसकेवंशमें ऐसाज्ञानीहुआ जिसकेनाम का गोत्र आजतक संसारमेंप्रकटहै व मुद्गलकेवंश में अहल्यानामकन्या महासुन्दरीहोकर गौतम ऋषीश्वरको ब्याहीगई जिसकेगर्भसे शतानन्द लड़काहोकर उसकेसत्यवतीनाम बालकउत्पन्नहुआ जिसकावीर्य एकदिनउर्बशीअप्सराको देखकर सरकण्डके बनमेंगिरपड़ा उसवीर्यसे कृपाचार्यबालक व कृपीनामकन्या उत्पन्नहुई जिन्हें राजाशन्तनु जो भरद्वाजके वंशमेंथे अहेरखेलतेसमय बनमेंपड़ाहुआ देखकर अपनेघर उठालाये व लड़कों के समान उनदोनोंकोपाला व राजाशन्तनुके हाथमें यह गुणथा जिसकेमस्तकपर अपना हाथरखदेवें उसकारोग छूटजावै इसलिये जो रोगी उनकेपासजातेथे अच्छेहोकर साथ चलेआतेथे इसकारणसंसारमें उनकायश प्रकटहुआ कि सब किसीको सुखदेनेवाले राजशन्तनुहैं एकबेर उनकेराज्यमें पानी नहींबरसा व प्रजालोग अन्नबिना दुःखपाने लगे तब राजाने ऋषीश्वरोंसे पूँछा हमने कौनअधर्मकियाहै जो मेरेराज्यमें पानी नहीं बरसता ऋषीश्वरोंने बिचारकर कहा तुमने देवापी अपनेभाईका भागछीनलियाथा इसी वास्ते जल नहींबरसता तुम उसकाभाग देडालो नहींतो अबर्षणसे तुम्हारीप्रजा अति दुःखपावेगी यह बचनसुनतेही राजाशन्तनुने देवापीसे जो बनमें बैठाहुआ तपकरताथा इसतरह भुलावादेकर बातचीतकिया जिसमें उसकेमुखसे कईबचनदेवसे बिपरीत निकल

आये इसलिये देवापीका तपोबलघटगया तब शन्तनुकेराज्यमें पानीबरसनेसे प्रजानेसुख पाया ॥

बाईसवां अध्याय ॥

दिवोदासके बंशकीकथा मुद्गलकाबेटा राजादिवोदास बड़ाप्रतापीहोकर उसकेवंश में राजाद्रुपद बहुततेजवान् उत्पन्नहुआ जिसकीकन्याद्रौपदीनामको अर्जुन तुम्हारेदादा मत्स्यबेधकर लेआये और वह अर्जुनआदिक पांचोंभाई पाण्डवोंकी स्त्रीहुईथी राजाद्रुपदके धृष्टद्युम्नआदिक कई पुत्र उत्पन्नहोकर उसीधृष्टद्युम्नने महाभारतमें द्रोणाचार्यका शिर काटाथा व अजमीढ़केबंशमें बृहद्रथनाम बड़ाप्रतापी राजाहोकर उसके दोस्त्रीथीं सो एकरानीके सत्यजित्नामबालक उत्पन्नहोकर दूसरीस्त्रीसे कोईपुत्र नहींथा इसलिये राजा महापुरुषोंकी सेवा कियाकरतेथे एकदिन किसी ऋषीश्वरने प्रसन्नहोकर एकआम राजा बृहद्रथको देकर कहा तू यहफल अपनीस्त्रीको खिलादे उसकेपुत्रहोगा राजाने वहआम लेकर अपनीबड़ीरानीको दिया सो दोनों रानियां आपसमें प्रीतिरखनेसे आधा २ आमबांटकर खागई सो राजाकी दोनोंस्त्रियोंके गर्भरहा और दशवेंमहीने उनकेपेटसे आधे २ बालक जिसतरह कोई खड़ेमनुष्यको चीरडाले उत्पन्नहुये उसे देखतेही राजाने क्रोधितहोकर उसकोबनमें फेंकवादिया व आमबांटकर खानेका हालसुनकर राजादोनों रानियोंपर अतिक्रोधितहुये सो ईश्वरकी इच्छासे जहांपर वहदोनोंटुकड़े राजाने फेंकवा दियेथे वहांपर जरानामराक्षसी जापहुंची व उसने अपनीमायासे दोनों टुकड़ोंको मिला कर जोड़दिया सो वह बालक परमेश्वरकी इच्छासे जीउठा तब वह राक्षसी उसको राजा के पास लेगई उसेदेखतेही राजाने अतिप्रसन्नहोकर उसकानाम जरासन्धरक्खा और वह बड़ाबलवान् व तेजस्वीराजाहुआ जिसकोभीमसेनने श्रीकृष्णजीकी कृपासे दोनों टांगचीरकर मारडाला व जरासन्धका बेटा सहदेवहोकर उसकेबंशमें देवापीनाम राजा बड़ाप्रतापी व धर्मात्माहुआ जिसने राजसिंहासन छोड़कर मन अपना विरक्तकरलिया व उत्तराखण्डमें जाकर तपकरताहै व कलियुगके अन्तमें चन्द्रबंश कुलको फिर उत्पन्न करेगा अब राजाशन्तनुकेबंशकी कथा जिसकुलमें तुमहुयेहो वर्णनकरतेहैं सुनो राजा शन्तनुकीस्त्रीसे सल उत्पन्नहोकर उसकेबंशमें राजादिवोदास कौरव ऐसाप्रतापीजन्मा जिसकेनामसे कुरुक्षेत्र तीर्थप्रकटहुआ व राजादिवोदासके पूर्व्वजन्मके संस्कारसे कोढ़ होगयाथा सो एक दिन वह अहेरखेलतेसमय बनमेंजाकर गर्मीसे व्याकुलहुआ सो कुरुक्षेत्रमें जाकर एकवृक्षके नीचेबैठा वहां एककुण्डपानीका देखकर जैसे राजाने उसमें स्नानकिया वैसे उनकाकोढ़छूटगया इसलिये वह अतिप्रसन्नहोकर वह कुण्ड व दूसरे जो तड़ाग व कुण्ड वहांपरथे सबको अच्छीतरह बनवादिये इसीकारण वहांकानाम कुरुक्षेत्रहुआ व उनकेबंशमें राजादिलीप ऐसाप्रतापीहुआ जिसनेदिल्ली ऐसानगरबसाया व राजाशन्तनुकी दूसरीस्त्री गंगाजीसे भीष्मपितामह ऐसेबलवान् व धर्मात्माहुये जिन्हों- ने परशुरामजीसे युद्धकिया धनुषविद्यामें उनकेतुल्य कोईनहींथा राजाशन्तनुकी तीसरी

स्त्री सत्यवतीनामसे चित्रांगद व बिचित्रबीर्य दोपुत्र उत्पन्नहुये हे परीक्षित यह वह सत्यवतीथी जिसकेसाथ पराशरमुनि हमारेदादाने कुमारपनमें बीचनौकाके भोगकिया था उसीसे वेदव्यास मेरेपिता उत्पन्नहुये एकदिन चित्रांगद पुत्र सत्यवतीका अहेरखेलने वास्ते बनमेंगया तब चित्रांगद गन्धर्वने उसको इसशत्रुतासे कि मेरेसमान इसने अपना नाम क्योंरखवायाथा मारडाला व भीष्मपितामह अपनेभुजाके पराक्रमसे अम्बा व अम्बिका व अम्बालिकानाम तीनकन्या काशीनरेशकी स्वयम्बरमेंसे छीनलायेथे सो उन तीनोंका बिवाह बिचित्रबीर्यसेहुआ उसमें अम्बानामकन्या अपनेमनमेंचाहना राजाशाल्व की रखती थी इसलिये राजा बिचित्रबीर्य्य ने उसको छोड़दिया व अम्बिका व अम्बालिका से इतनी प्रीतिहुई कि दिनरात राज मन्दिरमें रहकर उनके साथ भोग व बिलासकिया करते थे इसलिये राजा क्षयीकारोग होने से बिना सन्तान मरगये तब सत्यवती ने अपना बंश बढ़ाने वास्ते वेदव्यास अपनेपुत्रको जो पराशरमुनि से उत्पन्नहुये थे बुलाकर कहा बिचित्रबीर्यकी दोनों स्त्रियोंसे एक एक पुत्र उत्पन्नकरो तब वेदव्यासजी जो परमेश्वरका अवतारथे बोले हे माता दोनों स्त्री बिचित्रबीर्यकी मेरे सन्मुखसे नंगीहोकर चलीजावें तो मेरे देखने से उनके गर्भ रहकर एकएक पुत्र उत्पन्नहोगा जब अम्बिका अपनी सासुकी आज्ञासे नंगीहोकर वेदव्यासके सामने चली तब उसने लज्जाबश अपने बालोंसे मुँह छिपाकर आंख बन्द करलियाथा इसलिये उसके धृतराष्ट्र अन्धापुत्र उत्पन्न हुआ व अम्बालिका लज्जासे अपने अंगमें मट्टी लगाकर उनके सामने गई थी इसीकारण उससे राजापाण्डु पिण्डरोगी उत्पन्न हुये व बिलरा नाम दासी बिचित्रबीर्यकी नंगीहोकर हँसतीहुई वेदव्यासजी के सामने चलीगई सो उसके पेटसे बिदुरजी परमभागवतने जो धर्मराजका अवतार थे जन्मालिया व धृतराष्ट्रके दुर्योधन आदिक सौ पुत्र गान्धारी स्त्री से हुये व राजापाण्डु तुम्हारे परदादाको एक ऋषीश्वर हिरणरूपने जो राजाके डरा देने से भोगकरने नहीं पाया ऐसा शाप दियाथा कि स्त्री भोगकरते समय तुम मरजावोगे व सिवाय इसके राजाके पिण्डरोग होगया था इसलिये उसके सन्तान न थी जब कुन्ती उनकी स्त्रीने अपने पतिकी आज्ञानुसार मंत्रके प्रतापसे धर्म व इन्द्र व पवनदेवताओं को बुलाकर उनसे भोगकिया तब धर्मसे राजायुधिष्ठिर व इन्द्र से अर्जुन व पवनसे भीमसेन ये तीनपुत्र उसकेहुये फिर कुन्ती ने उसी मंत्रसे अश्विनीकुमार देवताको बुलाकर नकुल व सहदेव दोपुत्र माद्री अपनी सवतिसे उत्पन्नकिये और वह पांचोंभाई द्रौपदी से बिवाहकरके अपने अपनेपास पारी बांधकर उसको रखते थे सो पांचोंभाइयों के एक एकपुत्र द्रौपदी से उत्पन्नहुये जिनको अश्वत्थामा ने मार डाला व राजायुधिष्ठिर के पौरवीनाम दूसरी स्त्री से देवक व भीमसेनके हिडम्बाराक्षसी से घटोत्कच व सहदेवके सहोत्रापत्नी से बिजय व नकुलके कर्णमती स्त्रीसे निर्मित्र व अर्जुनके सुभद्रानाम पत्नी श्रीकृष्णजीकी बहिनसे अभिमन्यु पुत्र बड़ा प्रतापी हुआ जो

तुम्हारा पिताथा व अर्जुनके अलोपानाम तीसरीपत्नी से जो नागकन्या थी बभ्रुवाहन व ऐरावत दोपुत्र बड़े तेजवान् उत्पन्न हुये उसमें ऐरावतको मणिपूरपतीनाम उसके नानाने अपने रासवैठाला व बभ्रुबाहनने अर्जुनके साथ बड़ाभारी युद्धकिया था उसकी कथा अश्वमेधपर्व महाभारतमें लिखी है और जब अश्वत्थामाने तुझे मारने के वास्ते ब्रह्मअस्त्र चलाया तब श्रीकृष्ण बैकुण्ठनाथजी ने उत्तरा तेरी माताके पेटमें तुम्हारी रक्षा की व हे परीक्षित जनमेजय आदिक जो तेरे चारपुत्रहैं उनमें जनमेजय बड़ाप्रतापी व चक्रवर्ती राजा सातोंद्वीपका होकर तुम्हारा बदला लेनेवास्ते ऐसायज्ञ करेगा जिसमें बहुत सर्प जलकर मरजावेंगे व शुभकर्म करने से उसका यश संसारमें प्रकट होगा व तुम्हारे मरने उपरान्त पच्चीसपीढ़ी तक हस्तिनापुरका राज्य तेरे बंशमें रहकर फिर हस्तिना-पुर यमुनाजी में डूबजावेगा तब तिमीनाम राजा तुम्हारे बंशमें होकर वहां पर सोवस्तीपुरी बसावेगा उसके पीछे तुम्हारे बंशसे राजगद्दी छूटजावैगी और दूसरे राजा होंगे व वेदव्यासजी हमारे पिताने चारोंवेद व सब पुराण अपने चेलोंको पढ़ाये पर श्रीमद्भागवत जो सब वेदोंका सारांशहै किसीको न पढ़ाकर मुझे पढ़ायाथा वही अमृत रूपी कथा हम तुम्हें सुनाते हैं सहदेव राजा जरासन्धके पुत्र व ययातिके बंशमें बहुत से राजाहुये उनका नाम संस्कृत भागवतमें लिखाहै ॥

तेईसवां अध्याय ॥

यदुबंशियों की कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब हम यदुबंशियों की कथा जिसकुलमें कृष्णावतार हुआथा कहते हैं उसके सुनने से मनुष्योंको सब मनोरथ मिलते हैं सो तुम चित्तलगा कर सुनो ययातिका यदुनाम बड़ापुत्र जो देवयानी से हुआथा उसके बंशमें कई पीढ़ी उपरान्त राजा सहस्रार्जुन ऐसा तेजस्वी उत्पन्नहुआ जिसने पचासी हजारवर्ष चक्रवर्ती राज्यकिया उनका नाम स्मरण करनेसे गयाहुआ धन मिलताहै उसके हज़ार बेटों में नौसौपंचानबे राजकुमारों को परशुरामजी ने मारडाला पांच बेटे जो बचे थे उनमें जयध्वज बेटासे तालजंघ नाम क्षत्रियहोकर उसके बंशमें मधुनाम बड़ाप्रतापी हुआ इसी वास्ते श्रीकृष्णजीका नाम माधव कहाजाताहै व मधुका पुत्र वृष्णीथा इसीसे यदुबंशी व वृष्णिबंशी व मधुबंशी कहलाते हैं वृष्णीका बेटा शिशुबिन्द ऐसाधर्मात्मा हुआ जिसके पास चौदहरत्नथे व उसने दशलाख स्त्रियोंसे विवाह अपनाकिया सो हरिइच्छासे दश करोड़ पुत्र उसके उत्पन्नहुये उनमें सबसे बड़ापुत्र पुरुजित व छोटाबालक जामघनाम था सो राजा जामघकी स्त्री शैब्या बांझथी अनेकउपायोंसे भी उसके सन्तान नहीं हुई इसी से उदास रहतीथी सो एकबेर राजाजामघ विदर्भदेशके नृपति से लड़नेगया तो वहांसे एककन्या अतिसुन्दरी किसीभोजबंशीकी छीनलाया जब उस बांझ स्त्रीने देखा कि मेरा स्वामी एकसुन्दरी रथपरालिये आता है तब वह क्रोधसे बोली कि तुम यहकन्या किसलिये लायेहो राजा डरताहुआ अपनी स्त्री से बोला मैं तेरेवास्ते यह पतोहू लेआयाहूं ऐसा

सुनतेही रानी ने हँसकर कहा मेरेपुत्र नहींहै यह पतोहू कैसे होगी राजाने उत्तरदिया पुत्रहोनेपर इसका बिवाह उसकेसाथ करूँगा परमेश्वरकी इच्छासे उसीसमय आकाशबाणी हुई कि तू धीर्य्यधर तेरेपुत्र होगा यह सुनतेही राजा व रानी ने बड़ेहर्षसे बिश्वेदेवोंका पूजन-किया जब हरिइच्छासे उस बांझ स्त्रीके एक पुत्र अतिसुन्दर व तेजस्वी उत्पन्नहुआ तब राजाने उसका नाम विदर्भ रख वही कन्या उसे बिवाहदी व राजगद्दी देकर स्त्रीसमेत बनमें चलागया और परमेश्वरके ध्यानसे मुक्तहुआ व राजाविदर्भ धर्म्मपूर्वक राज्यकरने लगा ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

राजाउग्रसेनआदिक का उत्पन्नहोना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित राजाविदर्भ से तीनपुत्र कुश व क्रथ व रोमपाद होकर रोमपादके बंश में जयद्रथनाम बड़ाप्रतापी चन्देली का राजाहुआ जिसके यहां शिशुपालने जन्मपाया व उसीकुलमें देवावृद्ध व बिभु दोनोंपुत्र एसेधर्म्मात्मा व ज्ञानी हुय जिनके सत्संगसे छःहज़ार पैंसठ मनुष्यों ने मुक्तिपाई व बिभुके बंशमें सत्राजित व प्रसेनने जन्मलिया व विदर्भकी सन्तानमें युयुधान व सात्यकी बड़बलवान्होकर छवें युयुधान के सुफलक पुत्रहुआ व सुफलकके गांदिनी नाम स्त्री से अक्रूरआदिक बारह बालक उत्पन्नहोकर यहसब वृष्णिबंशी में कहलाये व यदुके बंश में राजाअन्धक बड़ा प्रतापीहोकर उससे दुन्दुभी उत्पन्नहुआ व दुन्दुभीके आहुकनामबालक व आहुकी कन्या होकर आहुकसे देवक व उग्रसेन दोपुत्रहुये व देवककेयहां देववानआदिक चारबालक व देवकीआदिक सातकन्याओंने जन्मपाया व उग्रसेन के कंसआदिक आठपुत्र व आठ-कन्या उत्पन्नहोकर वह सबकन्या बसुदेवजी के छोटेभाईसे ब्याहीगईं व देवकने देवकी आदिक अपनीकन्याओं का बिवाह बसुदेवजी से करदिया व कुंतिभोज पांचालदेशका राजा शूरसेन से बड़ीप्रीति रखताथा पर उसके कोईसन्तान न थी इसलिये शूरसेन ने पृथानाम अपनीकन्या उसकेरास बैठालदिया इसीकारण पृथाकानाम कुन्तीहुआ व कुंति-भोजने बिवाह कुन्तीका जो पंचकन्यामें थी राजापाण्डुसे करदिया व युधिष्ठिरआदिक उससे उत्पन्नहुये व जब कुंती ने बालापनमें दुर्वासाऋषीश्वरको अपनी सेवासे प्रसन्न किया तब ऋषीश्वरने एक देवाहूतमंत्र कुंतीको ऐसासिखलादिया जिसमंत्रके पढ़ने से देवता चलेआवें सो कुंतीने कुमारपनमें एकदिन सरस्वतीकिनारे परीक्षालेनेवास्ते वह मंत्रपढ़कर जैसे सूर्यदेवताका आवाहनकिया वैसे सूर्यभगवान्ने रथपरबैठेहुये वहां आन-कर कहा तैंने मुझे किसवास्ते बुलायाहै उनकातेज देखते ही कुंती भयसे कांपती हुई हाथजोड़करबोली महाराज मैंने अपने मंत्रकी परीक्षा लेनेवास्ते तुमको बुलायाथा सो आप दयालुहोकर चलेजाइये यहबचन सुनकर सूर्य्यदेवताबोले हे कुंती मेराआना ब्यर्थ नहींहोसक्ता अबमैं तेरेसाथ भोगकरके एकबालक तुझेदूंगा यहबचन सुनतेही कुन्ती ने बिनयकिया महाराज अभी मेराबिवाह नहींहुआ पुत्रहोनेसे मेरीनिन्दाहोगी यहसुनकर

सूर्य्यभगवान्‌बोले हे कुंती तू धीर्यधर तेरालड़कपन ज्योंकात्यों बनारहैगा ऐसाकहने उपरांत सूर्य्यदेवता कुंतीसे भोगकरके अपनेस्थानपर चलेगये उसीसमय परमेश्वरकी इच्छासे कुंती के एकबालक अतिसुन्दर व तेजवान् कुण्डलआदिक पहिरे कानके राह उत्पन्नहुआ उसेदेखतेही कुंतीने आश्चर्य्यमाना व सन्दूकमेंधरकर बीचगंगाके बहादिया सो वहीपुत्र कर्णनाम अतिबलीहोकर महाभारतमें दुर्योधनकी ओरसे लड़ताथा जिसको अर्ज्जुन तुम्हारेदादानेमारा व बसुदेवजीकी एकबहिन पृथानामकीकथा हमने तुम्हेंसुनाई अबउनकी और चारोंबहिनोंका समाचारसुनो दूसरीबहिन सत्यदेवीकाबिवाह धर्म्मका-रूषदेशके राजासेहुआ सो दन्तबक्रआदिक उससे पुत्र जन्मे थे तीसरीबहिन श्रुतिकीर्ति नामकाबिवाह धृष्टकेतुसेहोकर शत्रवनआदिक ने उनके यहां जन्मलिया चौथी बहिन राजदेवीका बिवाह अवन्तीपुरी में जयसेन राजासे होकर पांचवींबहिन श्रुतिश्रवानाम दमघोष राजा चन्देली को ब्याही गई जिसके पेटसे शिशुपाल उत्पन्नहुआ व सिवाय सातकन्या देवकके बसुदेवजीके और ग्यारहस्त्रीहोकर सबसे सन्तानहुईथी उनकानाम संस्कृतभागवतमें लिखाहै व देवकीके गर्भसे श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ व सातबेटे और सुभद्रानाम कन्याने जन्मलियाथा सो हम दशमस्कन्धमें कथा अवतारलेने श्यामसुन्दर की कहेंगे अब द्रौपदी के बिवाहका हाल संक्षेपमें कहते हैं सुनो अर्जुन मत्स्यबेधकर द्रौपदीको स्वयम्बरमें से लेआया व अर्जुनआदिक पांचोंभाइयोंने उसे अपने स्थानपर ले आकर कुन्तीसे कहा हम एकबस्तु लाये हैं तबवह उसे खानेकापदार्थ समझकरबोली तुम पांचोंभाई आपसमें बांटलेव इसलिये माताकी आज्ञानुसार पांचोंभाइयोंने द्रौपदीको स्त्रीबनाकर रक्खा जबराजाद्रुपदको यह बात अच्छीनहीं मालूमहुई तब युधिष्ठिर ने उनसेकहा कि हमअपनीमाताकी आज्ञा टालने नहीं सक्ते यहआश्चर्य देखकर राजा द्रुपदने व्यासजीसे पूछा महाराज मेराप्रण द्रौपदी के बिवाहका अर्जुनने पूराकिया व द्रौपदी मेरीकन्याको युधिष्ठिरआदिक पांचोंभाई अपनीस्त्री बनाना चाहते हैं सो आप के निकट इसकन्याको किसकीस्त्री होनाचाहिये व्यासजीने द्रुपदको अकेलेमें लेजा-करकहा हे राजा हमद्रौपदीके पूर्वजन्मकी कथा कहते हैं सुनो एकबेरदेवतोंने क्या देखा कि एकपुष्प कमलका बहुतअच्छा गंगाजीमें बहाजाता है तबइन्द्रबोला मैं जाकर देखताहूं यहपुष्पकहां से आताहै जबइन्द्र उसफूलकाहाल मालूमकरताहुआ जहांसे गंगाजीका पानी निकलाहै वहांपहुँचा तो क्या देखा कि एकस्त्री अतिसुन्दरी खड़ीहुई रोतीहै व उसके आंसू गंगामें गिरने से पुष्पहोकर बहते हैं यहहाल देखतेही इन्द्रने आश्चर्यमानकर उसस्त्रीसे पूछा तू कौनहै यहसुनकर वह बोली मैं एकजगह चलतीहूं तूभी साथआव तो मेराहाल तुझको मालूमहोगा यहबातकहकर वह स्त्री आगेको चली तब इन्द्रभी उसकेसाथ एकपर्वतपर चढ़गया तो वहां क्या देखा कि एकपुरुष व स्त्री अतिसुन्दर व तेजवान् रत्नजड़ित सिंहासनपर बैठेहुये आपसमें कुछखेलरहे हैं जब उस

पुरुषने इन्द्रको देखकर कुछसन्मान उसका नहीं किया तब इन्द्रने अभिमानसे मनमें कहा देखो मैं सबदेवतोंका राजाहोकर यहांआया सो मेराकुछआदर इन्होंने नहींकिया और उसपुरुषने जो महादेव अन्तर्यामीथे जैसे इन्द्रकीओर देखकर हँसदिया वैसे इन्द्र मारेभयके सूखगया यहदशा उसकी देखकर शिवजीने कहा तुम ऐसी प्रतिज्ञाकरो कि फिर अभिमान न करेंगे तो तुम्हाराप्राणबचेगा जब इन्द्रने उनकेभयसे वहीप्रतिज्ञाकी तब महादेव सिंहासनपरसे उतरकर इन्द्रको पर्वतकी कन्दरामें लेगये वहांजाकर इन्द्र ने क्यादेखा कि चार और पुरुष इन्द्ररूपी उसजगह बैठे हैं उनकोदेखतेही इन्द्रघबराकर जहांतकपहुँचा था उसीजगहपर मारेभयके चुपचाप खड़ाहोगया तब शिवजी ने इन्द्रसे कहा जिसतरह तैंने गर्बकिया उसीतरह इनचारों मनुष्योंको भी अहंकारहुआ था इसी कारण यहलोग कन्दरामें बन्दहैं अबमैं नारायणजीसे चाहताहूं कि तुम इनचारोंसमेत संसारमेंजाकर जन्मलो यहशापसुनतेही चारोंमनुष्य शिवजीके चरणोंपर गिरकर अति बिलापकरनेलगे तब भोलानाथनेकहा तुमलोग संसार में जन्मलेकर शुभकर्मकरोगे व बड़े बलवान्होकर तुम्हारेहाथसे बहुत शूरबीर युद्ध में मारेजावेंगे यहसुनकर उन्होंने बिनयकिया हे महाप्रभो आपकीआज्ञानुसार जन्महमारा मर्त्यलोक में अवश्यहोगा पर ऐसी दयाकीजिये जिसमें देवतों के बीर्य से मनुष्यतनपावैं शिवजी ने कहा बहुतअच्छा ऐसाहीहोगा इसलिये वह पांचों धर्मराज व पवन व इन्द्र व अश्विनीकुमार देवतों के बीर्यसे युधिष्ठिर व भीमसेन व अर्जुन व नकुल व सहदेवनाम उत्पन्नहुये व जिस स्त्री के साथ इन्द्र पर्वतपरगया था उस मायारूपीस्त्री से शिवजी ने कहा तूभी मनुष्यतनमें उत्पन्नहोकर इनपांचोंकी पत्नीहोगी सो हे राजन् वहीस्त्री आनकर तेरेयहां द्रौपदीनाम कन्याहुई और उन्हीं पांचोंइन्द्रों ने राजापांडुकेघर जन्मलियाहै सो तुम इसबातकी कुछ चिंता अपनेमनमें मतकरो यहहालसुनकर राजाद्रुपदका संदेहछूटगया व कोई २ ऋषी-श्वर ऐसालिखते हैं कि द्रौपदीने महादेवजीका तपकियाथा जब शिवजीने प्रसन्नहोकर उससेकहा तू क्याचाहती है तब द्रौपदीने पांचबेर पतिपति अपनेमुखसे कहा इसलिये महादेवजीने उसको ऐसा बरदानदिया कि तू पांचमनुष्योंकी स्त्रीहोगी यहसुनकर द्रौपदीबोली महाराज मैंने पांचपति होनेवास्ते तुम्हारातप नहीं कियाथा तब शिवजी ने कहा तैंने पांचबेर अपनेमुखसे भर्तार २ मुझसेमांगा इसलिये मैंने तुझको पांचस्वामी दिये कदाचित् एकबार कहतीतो हमतुझे एकपुरुषदेते अब जो बचन मेरेमुखसे निकला वह फिरनहींसक्ता तू धीर्यरख तेरे पांचोंपति आपस में झगड़ानहींकरेंगे व तेरेभाग्य में इसीतरह लिखाथा व कोई २ महापुरुषों ने ऐसाभी कहाहै कि एकगौ रास्ते से चली-जातीथी उसे देखकर पांचसांड़ कामातुरहोकर उसगौकेपीछे दौड़े सो द्रौपदी यहदशा देख हँसनेलगी तब गौने द्रौपदीको शापदिया कि तू मुझेदेख हँसती है इससे तूभी पांचपुरुषोंकी स्त्री होगी इसीकारण द्रौपदीके पांचपुरुष हुयेथे ॥ इतिश्रीनवमस्कन्धस्समाप्तः ॥

दशवां स्कन्ध ॥

श्रीकृष्णावतारकी लीला व कथा ॥

दो० जन्म मरणसे रहित हैं नारायण करतार ।
हरिभक्तन के हेतुसों लेत भूमि अवतार ॥
जब पृथ्वीपर होतहैं अधिकपाप विस्तार ।
तबहीं सगुणै धरतहैं एकरूप अवतार ॥
युग द्वापरके अन्तमें कंसकियो जब राज ।
साधु ऋषीश्वर दुखभयो दैत्यन बढ़ेसमाज ॥
यज्ञहोमकी हानिकरि परजाको दुखदीन ।
ऐसोपाप विचारकर भूमिभई आधीन ॥
जब सब देवन जाइकै कीन्हीं बहुत पुकार ।
तब धरि सगुणैरूपको दूरिकियो महिभार ॥

पहिला अध्याय ॥

राजापरीक्षितका शुकदेवजीसे श्रीकृष्णावतारकी कथापूछना ॥

जब राजापरीक्षितको नवस्कन्धकी कथा श्रीमद्भागवत पांचदिनमें सुननेसे ज्ञान उत्पन्नहोकर अपनेमुक्त होनेकीराह दिखलाईदी तब उसने हाथजोड़के विनयकिया हे शुकदेवस्वामी महाराज आपनेकथा सूर्य्यबंशी व चन्द्रबंशी पिछलेराजा व ऋषीश्वरों की जो लोग परमेश्वरके तप व ध्यानमेंजन्म अपना बिताकर बैकुण्ठमें गयेहैं कही वह कथा व श्रीनारायणजीकी महिमासुनकर मेरेमनको बोधहुआ अब कथा यदुबंशियोंकी जिसकुलमें श्रीकृष्णजी महाराज त्रिलोकीनाथने अवतारलेकर अनेकलीला संसारमें वास्तेमुक्तहोने मनुष्यों व सुखदेने हरिभक्तोंकेकीथीं सुनाचाहताहूं और आपने कहाहै कि परब्रह्म परमेश्वर सदा एकरूप रहकर जन्म व मरणसे रहितहैं सो देवकीजीके पेटसे उन्होंने किसतरह जन्मलिया इसबातका सन्देह मेरेमनमें आवताहै सो छुड़ादीजिये और आपने यहभी कहाहै कि बलभद्रने देवकीजीके उदरमें गर्भवासकिया फिर रोहिणीजीको उनकीमाता क्योंकहतेहैं इसकाहालभी विधिपूर्वक वर्णनकीजिये मुझको इस कथा सुननेसे आलस्य न आकर प्रतिदिन सामर्थ्यहोतीजाती है आप ज्यों २ यहकथा

सुनातेहैं त्यों २ अधिक प्यासमें अमृतपिलातेहैं जिसपरमेश्वरकी स्तुतिकरनेमें ब्रह्मादिकदेवता हारमानगये दूसरेको क्यासामर्थ्य है जो उनकागुणानुवाद बर्णनकरनेसके मेरेपुरुषोंने श्रीकृष्णजीकादयासे दुर्योधन व कर्णआदिक बड़े २ वीरोंकोमारके राजगद्दी पाई और जिससमय द्रोणाचार्य्यके बेटा अश्वत्थामाने क्रोधकरकेचाहा कि नाम व बंश पांडवोंका संसार में न रक्खै व मेराप्राण मारनेवास्ते ब्रह्मास्त्र बीचपेट हमारी माता के चलाया उससमय श्यामसुन्दरने मेरी रक्षाकी तीनोंलोककी उत्पत्ति व पालन करनेवाले हमारे सहायक व कुलपूज्य वही श्रीकृष्णजी अविनाशी पुरुषहैं सो आपदयाकरके उनकीकथा सुनाइये ॥

दो० सुनिकै शुकबोले तभी राजा तू बड़भाग ।
माखन प्रभुसों या समय बाढ़्यो है अनुराग ॥

हे परीक्षित तुमने श्यामसुन्दरकी कथा पूछकर मुझे बड़ासुखदिया अब हम निर्मल यश श्रीकृष्णजीका तुमकोसुनावेंगे पर कईदिनसे तैंने अन्न व जल नहींकिया इसलिये तेराचित्त ठिकाने न होगा सो तुझे सावधानहोकर यहकथा सुननाचाहिये यह बचन सुनकर राजाबोले हे स्वामी आपने जो नवस्कंधकथा अमृतरूपी मुझे सुनाई है वह अमृतकानोंकीराह पीनेसे पेट मेरा भरगया इसलिये मुझे कुछ इच्छा क्षुधा व तृषाकी नहीं है शुकदेवजी यहबात सुनकर बहुत प्रसन्नहुये व परमेश्वरके चरणोंमें ध्यानलगाकर उनकोदण्डवत्किया व छठवेंदिन सोमवारसे कथा दशमस्कन्ध आरम्भकरके कहा हे राजन् द्वापरके अन्तमें बीचबंश भजमान यदुवंशीके शूरसेननाम बड़ाप्रतापी राजा हुआ जिसने नवखण्ड पृथ्वीके राजोंकोजीतकर यशपाया व राजाशूरसेनके मरिष्या नाम स्त्रीसे पांचकन्या व बसुदेवादिक दशपुत्रउत्पन्नहुये और बसुदेवजी बड़ेबेटेने पहिला बिवाह अपना रोहिणीनाम बेटी राजारोहिणसे किया वह सब सत्रह पटरानी बसुदेवजी कीथीं जब उन्होंने अठारहवींशादी अपनी देवकीनामबेटी देवक व चचेरीबहिन राजा कंससे किया तब यह आकाशवाणीहुई कि देवकीके आठवेंगर्भसे राजाकंसका मारनेवाला उत्पन्नहोगा जब ऐसी आकाशवाणीसुनकर कंसने बसुदेव व देवकीको कैदकिया तब परब्रह्म परमेश्वरने श्रीकृष्णनामसे वहीं जन्मलिया इतनीकथा सुनकर राजानेपूछा कि महाराज किसतरह कंसउत्पन्नहुआ व क्योंकर श्यामसुन्दर मथुरामें जन्मलेकर गोकुलमेंगये वह कथा बिधिपूर्वक वर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले हे राजन् उनदिनों राजा आहुक यदुवंशी मथुरापुरीका राज्यकरताथा जब देवक व उग्रसेननाम दोपुत्र उसकेउत्पन्न हुये और वह मरगया तब उग्रसेन बड़ाबेटा उसका महाप्रतापी राजाहुआ व पवनरेखा रानी उसकी अतिसुन्दरी व पतिव्रता आठोंपहर अपनेस्वामीकी आज्ञामेंरहतीथी एक दिन रानी पवनरेखा रजस्वलास्नानसे शुद्धहोकर अपनेपतिकी आज्ञानुसार सहेलियों

समेत बनबिहारकरनेगई तो वहांपर अतिउत्तमफल व फूललगेहोकर अनेकरंगके पक्षी सोहावनी बोलियांबोलतेथे व ठंढी मन्द सुगन्ध पवनबहकर एकओर यमुनाजी पहाड़ के नीचे लहरेंलेतीथीं ऐसीशोभा देखतेही पवनरेखा रथसेउतरकर बनविहार करनेलगी जब वह घूमतीफिरतीहुई सहेलियोंसे अलगहोकर एकजंगल घटाटोपमें अकलीजापहुँची तब हरिइच्छासे अचानक उसजगह द्रुमलिकनाम राक्षसभी घूमताहुआ आनिकला और वह पवनरेखाकारूप देखतेही उसपर मोहितहोगया जब उसने भोगकरनेकी इच्छासे अपनास्वरूप राजाउग्रसेनके समान बनालिया व सामने आनकर रानीसे भोगकरना चाहा तब पवनरेखा दिनको प्रसंगकरना अधर्म बिचारकरबोली महाराज दिनकोभोग करनमें लज्जा व धर्म्मछूटकर पापहोताहै इसलिये प्रसंग न करनाचाहिये इसीतरह अनेक बातैं कहकर पवनरेखाने अपनेको बचानाचाहा पर द्रुमलिकराक्षसने जो काम के बशहोरहाथा रानीकाहाथ बरजोरी पकड़लिया व पृथ्वीपर गिराकर उसकेसाथ भोग किया व पवनरेखाभी उसको अपनापति समझकर चुपहोरही ॥

दो० जैसीहो होतव्यता तैसी उपजै बुद्धि।
होनहार हिरदैबसै बिसरिजाय सब सुद्धि ॥

हे राजन् जब द्रुमलिक भोगकरने उपरांत अपना राक्षस रूपबनाकर रानीके सम्मुख खड़ाहोगया तब पवनरेखा उसकोदेखतेही अतिलज्जित व शोचितहोकर बड़े क्रोधसेबोली हे राक्षस अधर्मीचाण्डाल तैंने यह क्या छलकरके मेरासतखोदिया तेरे माता व पिता व गुरूकोधिक्कारहै जिसने तुझे ऐसाज्ञान सिखलाया तेरीमाता ऐसाकुपूत जननेसे बांझरहती तो अच्छाहोता जो लोग मनुष्यका तनपाकर किसीकासत व धर्म बिगाड़देतेहैं उनको अनेकजन्म नरक भोगनापड़ताहै द्रुमलिक यह बचनसुनकरबोला हे पवनरेखा तू क्रोधकरके मुझे शापमतदे तेरी कोखबन्द देखकर मुझको बड़ाशोचथा सो आजछूटा मैंने अपनेधर्मका फल तुझेदिया मेरेभोगकरनेसे तुझको गर्भरहकर बड़ा प्रतापी पुत्रउत्पन्नहोगा और वह अपनी भुजाकेबलसे नवखण्ड पृथ्वीके राजोंको जीत कर अकेलाचक्रवर्ती राज्यकरैगा व परब्रह्म परमेश्वर श्रीकृष्णनाम पृथ्वीपर अवतार लेकर उससेलड़ैंगे व मेरानाम पिछलेजन्म कालनेमिथा लड़तीसमय हनुमान्जीके हाथ से मारागया अब द्रुमलिकराक्षसका जन्मपाकर तुझकोबेटा दियेजाताहूं तुम किसीबात की चिंतामतकरो ऐसाकहकर द्रुमलिक अपनेघर चलागया और यहबात सुनकर पव-नरेखाने समझा कि इच्छापरमेश्वरकी इसीतरहपरथी होनेवालीबात बिनाहुये नहींरहती ऐसा बिचारकर उसनेभी अपनेमनको धीर्यदिया जब सहेलियां रानीको मिलीं तब पवनरेखाकारंग व शृङ्गारबिगड़ाहुआ देखकर एकसहेलीबोली अयरानी इतनाबिलम्ब तुमको कहांलगा व तुम्हारी यह क्यादशाबनी है यह सुनकर रानीनेकहा जब तुम

सबोंने मुझे इसबनमें अकेलीछोड़दिया तब एकबानरने आनकर मुझको ऐसासताया जिसकेडरसे अभीतक मेराकलेजा धड़कताहै इसीकारण मेरी यहदशाहुई यहबात सुन-तेही सब सहेलियां घबड़ागईं और रानीको रथपर बैठाकर राजमंदिरपर लेआईं दश महीने उपरांत माघसुदीतेरस बृहस्पतिके दिन जिससमय रानीकेपुत्र उत्पन्नहुआ उस समय ऐसी आंधीचली कि पृथ्वीकांपनेलगी व हजारोंवृक्ष गिरपड़े और अँधियाराहोने व बादलगर्जने व बिजुलीचमकनेसे दिनरातकेसमानहोकर तारेटूटनेलगे व राजाउग्रसेनने पुत्रउत्पन्नहोने का बड़ा उत्सवकिया व याचकोंको बहुतदान व दक्षिणादिया जब ज्योतिषियोंसे बालककी कुण्डलीका फल पूंछा तब पण्डितोंने कहा महाराज अपनेपुत्रकानाम कंसरक्खो यह बालक अतिबलवान्होके राक्षसोंको अपनेसाथलेकर राज्यकरैगा व देवता व ब्राह्मण व साधु व सन्त व हरिभक्तलोग इसके हाथसे दुःख पावैंगे व तुम्हारा राजसिंहासन छीनकर प्रजाको बड़ा दुःखदेगा जब इसके अधर्म्म करने से पृथ्वी दुःख पावैगी तब परब्रह्म परमेश्वर अवतार लेकर इसको अपने हाथसे मारैंगे यह बचन सुनकर राजा पहिले बहुत उदास हुये फिर इच्छा परमेश्वरकी इसीतरहपर जानकर संतोषकिया व ज्योतिषियोंको सन्मानपूर्वक बिदाकरके पुत्रका पालन करनेलगे जब कंस पांच छःवर्षका हुआ तब अनेकतरह का उपद्रव प्रजापर करनेलगा कभी मथुराबासी लड़कों को बरजोरी पकड़कर बनमें ले जाता व मारकर लोथ उनकी पहाड़की खोहमें रख आवता व जो लोग उससे सयाने थे उनकी छातीपर चढ़के गलादबाकर मारडालता व कभी लड़कों को नहाने वास्ते अपने साथ यमुनाकिनारे लेजाकर पानी में डुबादेता था जब इसतरहका पाप कंस करनेलगा तब मथुराबासी अपने २ लड़कों को घरमें छिपाकर रखनेलगे और सब प्रजा उसकेहाथसे दुःखी होकर आपसमें यह कहतेथे कि कंस पापी राजा उग्रसेन के वीर्य्यसे उत्पन्न नहीं हुआ यह कोई पापी धर्मात्मा राजाके घर जन्म लेकर प्रजाको दुःख देताहै जब राजाने प्रजाको दुःख देनेका हाल सुना तब कंसको बहुत डाटकर समझाया कि प्रजाको दुःख मतदे पर वह कहना राजाका न मानकर जब प्रतिदिन अधिक प्रजाको पीड़ा देनेलगा तब राजाने उसकी यह दशा देखकर बड़े शोचसे मनमें कहा ऐसे अधर्मी पुत्र होने से मैं बिना सन्तानके अच्छाथा जिसके कुपूत सन्तान उत्पन्न होती है उसका संसारमें यश व धर्म नहीं रहता इसीतरह बहुत चिन्ताकरके राजाउग्रसेन पछताया करते व कंसपर कुछ बश उनका नहीं चलताथा जब कंस आठबर्षका हुआ तब अकेला मगधदेशमें जाकर जरासन्धसे जो बड़ाप्रतापी राजाथा कुश्तीलड़ा जब जरासन्धने उसको अपनेसे बलवान् जानकर समझा कि हम इससे युद्धमें न जीतैंगे तब हार मानकर दो बेटी अपनी कंसको बिबाहदीं जब कंस दोनों स्त्रियोंकोसाथ लेकर मथुरापुरी में आया तब राजा उग्रसेन अपने पितासे शत्रुताकरके कहा तुम रामनाम छोड़-कर महादेवजी का नाम जपाकरो यह सुनकर राजा बोले मेरेकर्त्ताधर्त्ता श्रीभगवान्जी

है उनका स्मरण छोड़देउं तो भवसागर किसतरह पार उतरूंगा जब कंसने यह वचन पिताका सुना तब क्रोधित होकर राजगद्दी उनकी छीनली व आप सिंहासन पर बैठकर राज्यकाज करनेलगा व अपने राज्यमें ऐसा ढिंढोरा पिटवादिया कि कोईमनुष्य परमेश्वरका नाम न लेवे और यज्ञ व होम व दान व धर्म व तप व जप नारायणजी का न करे जो कोई मेरीआज्ञा न मानेगा उसको हम मरवाडालेंगे जब ऐसा ढिंढोरा पीटने से उसके राज्यमें सब शुभकर्म्म बन्दहोगये व राजाकंस गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों को दुःख देकर दैत्योंके सम्मत प्रमाण राज्य करनेलगा व उसने पृथ्वी के राजोंको अपने बलसे जीतलिया तब एकदिन अपनी सेना साथ लेकर राजा इन्द्रसे युद्ध करने चला उससमय एक मंत्री ने जो उग्रसेनके समयका नौकरथा कंससे कहा हे पृथ्वीनाथ विना सौ अश्वमेधयज्ञ किये इन्द्रासन नहीं मिलता आप अपने बलका घमण्ड न कीजिये देखो रावण व कुम्भकर्णको अहंकारने कैसा खोदिया जिनके कुलमें कोई पानी देने वाला नहींरहा यह वचन सुनकर वह इन्द्रसे लड़ने नहीं गया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब पृथ्वीपर राजा कंसके डरसे यज्ञादिक शुभकर्म्म सबने करना छोड़दिया व ब्राह्मण व ऋषीश्वर राक्षसों के हाथसे दुःख पानेलगे व पृथ्वी ऐसे अधर्मियोंका बोझ सहने नहींसकी तब उसने गोरूप धरकर रोतीपुकारतीहुई राजाइन्द्र के सामने जाकर विनयकिया महाराज संसारमें कंस व राक्षसलोग बड़ा पाप करते हैं उन्हींके डरसे हरिभजन व यज्ञादिक शुभकर्म कोई नहीं करता मुझे आज्ञाहो तो मर्त्य-लोक छोड़कर पातालको चलीजाऊं यह वचन सुनतेही इन्द्रने देवतोंसमेत ब्रह्माकेपास जाकर सब हाल कहा ब्रह्माजी उन सबोंको साथ लेकर कैलासपर्वत पर इसइच्छा से गये कि महादेवजी राक्षसोंके दण्डकरनेयोग्यहैं वे उन्हें मारकर पृथ्वीका दुःख छुड़ावेंगे जैसे ब्रह्मा वहां पहुँचे वैसे महादेवजी अन्तर्यामी बोले हे ब्रह्मा इसपृथ्वी के भार उतारने की सामर्थ्य मुझे व तुमको नहीं है इसका दुःख छुड़ानेवाले आदिपुरुष भगवान्जी हैं पृथ्वीका बोझा वही उतारैंगे यह बात कहकर शिवजी ब्रह्मा आदिकको साथ लियेहुये क्षीरसागरके किनारे चलेगये वहां हाथ जोड़कर सब किसी ने यह स्तुति परब्रह्मपरमे-श्वरकी की हे करुणानिधान किसको सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा बर्णन करनेसकै आपने मत्स्यरूप धारणकरके शङ्खासुर दैत्यको मारकर वेदसमुद्रसे बाहर निकाला व कच्छपरूप होके मंदराचल पहाड़ अपनी पीठपर लेकर चौदहोंरत्न क्षीरसागर से प्रकट किये व बाराहरूप धरकर पृथ्वीको पातालसे बाहर निकाललाये और वास्ते रक्षाकरने देवतों के बामनरूप होकर राजाबलिसे पृथ्वीदानलिया व परशुराम अवतार लेकर सब क्षत्रियों को बधकिया व सातोंद्वीपकी पृथ्वी उनसे छीनकर ब्राह्मणोंको दान कर दिया व रामचन्द्र अवतार धरकर रावण आदिक राक्षसोंको मारडाला और जब जब पृथ्वी पर दैत्य व राक्षस व पापीराजा गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों को दुःख देते हैं तब तब

आप उनकी रक्षाके वास्ते सगुण अवतार लेकर अधर्मियों को मारते हैं सो इन दिनों पृथ्वी कंसादिकके पापकरने से दुःखी होकर तुम्हारे शरणआई है सो उसपर दयालु होकर रक्षा कीजिये गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुख दीजिये जब ब्रह्मादिक देवतों ने इसतरह पर स्तुति नारायणजीकी की तब यह आकाशबाणीहुई हे ब्रह्मा मुझे पृथ्वी का दुःख मालूम हुआ इसलिये हम सगुणअवतार लेकर उसका भार उतारैंगे मैं जन्म व मरणसे कुछ प्रयोजन नहीं रखता पर बसुदेव व देवकी ने पिछले जन्म मेरा तप व ध्यानकरके मुझसे ऐसा वरदान मांगलियाहै कि हम उनके पुत्रहोवें और इसीतरह नन्द व यशोदाने भी मेरा तपकरके यह बरदान मांगाथा कि तुम्हारी बाललीला का सुख देखैं इसलिये हम उनकी इच्छा पूर्णकरने के वास्ते मथुरामें बसुदेव व देवकीजी के घर जन्म लेवेंगे और वहांसे गोकुलमें जाकर बालचरित्र अपना नन्द व यशोदाको दिखलावेंगे व कंसादिक अधर्मी राजोंको मारकर अपने भक्तोंको सुख देवेंगे सो तुम देवी व देवतालोग ब्रज व गोकुल व मथुरामें पहिले से जाव व यदुबंशीकुल व ग्वाल बंशमें हमारी लीलाका सुख देखनेवास्ते जन्मलेव पीछे से हमभी चारस्वरूप धरकर अवतार लेवेंगे सब देवता यह आकाशवाणी सुनतेही बड़े हर्षसे अपने २ घर आये जब ब्रह्माने हाल आकाशवाणी का पृथ्वीको समझादिया तब वहभी आनन्द होकर अपनेस्थानपर चलीआई व उनकीआज्ञानुसार देवता व मुनि व किन्नर व गन्धर्बआदिक अपनी स्त्रियोंसमेत मथुरा व गोकुलमें जन्मलेकर यदुबंशी व ग्वालबाल कहलाये व चारोंवेदकी ऋचानेभी ब्रह्मासे आज्ञालेकर गोपियोंका जन्मलिया इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् अबहम देवकीके बिवाहकाहाल कहते हैं सुनो देवकनाम जो उग्रसेनकाभाई था उसके छःकन्या व चारपुत्रहुये सो उसनेअपनी छवोंबेटी वसुदेवजी को बिवाहदीं जब देवकी नाम सातवीं कन्या उसके यहां उत्पन्नहुई तब देवता अति हर्षितहुये व राजाउग्रसेनके यहां कंसादिक दशपुत्रोंने जन्मलिया जब देवकी बिवाहने योग्यहुई तब देवकने राजा कंससे आज्ञालेकर शुभसाइति में उसके बिवाहका तिलक बसुदेवजीको भेजदिया जब राजाशूरसेन पिता बसुदेवके तिलकलेकर बड़ी धूमधामसे मथुरामें वसुदेवजीको ब्याहनआये तब राजाकंस अपनेबाप व चाचा व सेनाको साथ-लेकर आगे से गया व बरातियोंको बड़े आदरभावसे जाकर जनवासादिया व सबका शिष्टाचार यथायोग्यकिया व बसुदेवजीको मड़वेमें लेजाकर देवकीकाविवाह बिधिपूर्बक उनकेसाथ करदिया व पन्द्रहहजारघोड़ा व चारहजारहाथी व अठारहसौरथ व दोसौ दासी व दास व भूषण व वस्त्र व द्रव्यादिक बहुतसा दहेजमें देकर बरातियों को भी सन्मानपूर्बक बिदाकिया ॥

दो० तब चढ़ाय रथ देवकी आप भयो रथवान ।
पहुँचावन अतिप्रीतिसों चल्यो सहित अभिमान ॥

जब कंस वसुदेव व देवकीकारथ हांकताहुआ थोड़ीदूर मथुराके बाहरगया तब यह आकाशवाणीहुई हे कंस तू जिसको बड़ेहर्षसे पहुचानेजाताहै उसकेपेटसे आठवांलड़का तेरामारनेवाला उत्पन्नहोगा जब यह आकाशवाणी सुनकर कंस मारेडरके कांपनेलगा व घोड़ोंकीरास हाथसे गिरपड़ीं तब उसनेबिचारा कि कोई कैसाही नातेदारहो पर अपने प्राणसेप्यारा नहींहोता इसलिये देवकीको अभी मारडालनाचाहिये न वहरहैगी न उसके आठवांबालक मेरामारनेवाला उत्पन्नहोगा यहबातबिचारकर कंस रथकेभीतर घुसगया व देवकीके शिरकेबालपकड़कर उसे नीचे खींचलिया व नंगीतलवार निकालकर क्रोध से दांतपीसताहुआ यों कहनेलगा कि जिसवृक्षमें विषसमान फललगे उसको जड़से पहिले उखाड़डालनाचाहिये जब वहवृक्ष नहींरहैगा तब उसमें फूल व फल किसतरह लगेंगे इसलिये अभी देवकीकोमारडालूं तौ निर्भयराज्यकरूं यहदशा देखकर जितने मनुष्य उससमय वहांथे सबकोई चिन्ताकरके रोनेलगे पर राजाकंसके डरकेमारे किसीकी सामर्थ्य नहींथी जोकुछ कहनेसकै तब वसुदेवजीने बिचारकिया कि कंस अज्ञानको पाप और पुण्यका कुछबिचार नहीं है इससमय मेरे क्रोधकरनेसे देवकीका प्राणजायगा इस लिये क्षमाकरना उचितहै किसवास्ते कि जब बलवान्शत्रु क्रोधकरै तब क्षमाकरके वह अवसर बचाजानाचाहिये जिसतरह ठण्ढालोहा गर्म लोहेको काटडालता है उसीतरह क्षमाकरनेवालेमनुष्य अवसरपाकर अपने बैरीको जीतलेते हैं ऐसा बिचारकर वसुदेव ने राजाकंसके सामने हाथजोड़कर बिनयकिया हे पृथ्वीनाथ संसारमें तुम्हारे समान कोई दूसरा बलवान् व प्रतापी नहींहै जो आपकीबराबरी करनेसकै जहां सबलोग तुम्हारी छायामें रहते हैं वहांआपको यहअनुचितहै जो तुम्हारेऐसा शूरबीरहोकर अपनी बहिन पर बिनाअपराध खड्गचलावै स्त्रीबधका बड़ापाप है ऐसे अधर्मकरनेवालों के अनेक पुरुष नरकमें पड़ते हैं जबमनुष्य यहजानै कि हम नहींमरैंगे तब पापकरै तो उचित है संसारमें जोजन्मा वह एकदिन अवश्यमरेगा कदाचित् अपनाशरीर रहनेकेवास्ते अनेक उपायकरै पर यहतनु किसीतरह रहने नहींसक्ता व तरुणाई व राज्यभी कुछकाम न आनकर केवल यश व अपयश संसारमें रहजाता है ॥

क० दाताको महीप मान्धाता औ दिलीप ऐसे जाकेयश आज- हूंलौं द्वीपद्वीप छाये हैं। बलि ऐसो बलवान को भयो जहान बीच रावण समान को प्रतापी जगजाये हैं॥ बानकी कलान में सुजान द्रोण पारथ से जाके गुण दीनदयाल भारत में गाये हैं। कैसे कैसे शूर रचे चातुरी बिरंचि जू फेर चकचूरकर धूर में मिलाये हैं॥

दो० अर्बखर्ब लौं द्रव्य है उदय अस्त लौं राज।

तुलसी जो निज मरण है तौ आवै कवहिकाज ॥

यहबात सुनकर कंसबोला हे वसुदेव तुमनेभी तो आकाशबाणीसुनी है इसकाउपाय पहिलेसे करनाचाहिये जिसमें हम न मरैं जो मैं आज देवकीको नहींमारता तो यह चिन्ता मेरी न छूटैगी और इसकेवदले हम तुम्हाराबिवाह दूसरीकन्यासे करदेवैंगे व इस को मारकर निश्चिन्तहोजाऊंगा यहबचनसुनकर ब्राह्मण व ऋषीश्वरों ने जो उसके साथथे कंससेकहा वेद व शास्त्रमें बहिनकामारना बड़ापाप लिखा है ऐसा अधर्मकरना तुमको न चाहिये जब कंसने ब्राह्मणोंका समझानाभी नहींमाना तब वसुदेवजीने बिचारा यहपापीराजा अपनीटेकपरहै कोई ऐसाउपाय करनाचाहिये जिसमें देवकी इसके हाथसे बचजावै ईश्वरजाने देवकी के कब बालकउत्पन्नहो या इसबीच में कंसपापी मरजावे इससमय देवकी जो मारीजाती है इसलिये इसकाबालकदेना करारकरके देवकीकाप्राण बचालेनाचाहिये यहअवसर बीतजावै पीछे समझाजायगा ऐसा बिचारकर वसुदेवने कंससेकहा महाराज एकबिनती मैं करताहूं सुनिये आकाशबाणी होनेके अनुसार आप देवकीकेपुत्रसे अपनेप्राणका डररखते हैं कुछ देवकीसे तो खटकानहीं है इस लिये देवकीको बिनाअपराध जानकर छोड़दीजिये इसके जो बालक उत्पन्नहोगा उसे मैं तुम्हारे पास पहुँचादूंगा इसबातके साक्षी सूर्य व चन्द्रमा हैं कंसने यहबात सुनतेही होनहारके बशहोकर वसुदेवजीसे वचनलेके देवकीको छोड़दिया और उनसेबोला इस समय तुमने मुझे अपराधसे बचाया ऐसाकहकर उसीजगहसे वसुदेव व देवकीको बिदा करदिया और आप राजमन्दिरपर चलाआया व वसुदेवजी देवकीसमेत अपनेस्थानपर पहुँचे जब कुछदिनों में देवकीके पुत्रउत्पन्नहुआ व वसुदेवजी ने उसीसमय रोताहुआ बालकलाकर कंसकेआगे रखदिया तब कंसने हँसकरकहा हे वसुदेवजी तुम बड़ेसच्चेहो तुमने हमसे कुछ कपटनहींकिया हमारे भलेवास्ते अपनेपुत्रका मोहछोड़कर रोताहुआ बालक मेरेसामने रखदिया इससे मुझे कुछडरनहीं है तुम अपनेघर लेजाव वसुदेवजी प्रसन्नहोकर उसे अपनेघर लेचले पर कंसको अधर्मीसमझकर पीछे देखते व यह बिचारकरते जातेथे कदाचित् बुलाकर मार न डाले जब वसुदेवजी पुत्रलेकर चलेगये तब कंसने अपनी सभावालोंसे कहा आकाशवाणी के प्रमाण मुझको आठवेंबालक से मरनेका डरहै इसे वृथामारकर किसवास्ते पापलेवैं उसीसमय हरिइच्छासे नारदमुनिवहां आनपहुंचे जब कंसने उनको बड़े आदरभावसे बैठाला व चरणउनका धोकर बिधिपूर्वक पूजनकिया तब नारदजी ने कहा हे कंस तैंने वसुदेवकाबालक क्यों फेरदिया यह तू नहींजानता कि वसुदेवजी की सेवाकरनेवास्ते सब देवता व ऋषीश्वरों ने गोकुल व मथुरा में जन्मलिया है व देवकी से आठवेंगर्भ में पृथ्वीका भारउतारनेवास्ते श्रीकृष्णजी अवतारलेकर तुमको राक्षसोंसमेत मारैंगे व तुम्हारे पिताआदिक सब यदुवंशी देवतों का अवतारहोकर तुम्हारे बैरी हैं इनको तुम अपनामित्र न समझो ऐसाकहकर नारद

मुनिने आठरेखा पृथ्वीपर खींचदीं व कंसको दिखलाकर गिनाया तो दोनोंओरसे आठवींलकीर अन्तकीठहरी तब नारदजीने कंससेकहा यहनहींजानते कौन आठवेंबालकसे तेरीमृत्युहै जब यहबातसमझाकर नारदमुनि चलेगये तब कंसने उसीसमय वसुदेवजी को बालकसमेत बुलाभेजा व लड़कालेकर पत्थरपर पटककेमारडाला व वसुदेव देवकीको कैदकिया व अपने मातापिताके समझानेपरभी न मानकर कहा मैं अपनाप्राण बचानेवास्ते देवकीके पुत्रोंको मारडालूंगा व कंसने उग्रसेन अपनेबापकोभी वसुदेवव देवकीकासहायक व अपनाशत्रु समझकर उनपर चौकी व पहराकरदिया व प्रलम्ब व बकासुर व केशी व अघासुरआदिक राक्षसों को बुलाकर आज्ञादी कि नारदजी हमसे कहगये हैं कि सबऋषीश्वर व देवतोंने मथुरा व गोकुलमें आनकर जन्मलियाहै उन्हीं लोगों में श्रीकृष्णजी भी अवतारलेवैंगे सो तुमलोग जितने यादववंशी मथुरा व गोकुल में पावो सबको मारडालो ॥

दूसरा अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का देवकी के उदरमें गर्भवास करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित इसीतरह पाँचपुत्र और देवकी के उत्पन्नहुये सो वसुदेवजी ने अपने वचनप्रमाण उनकोभी कंसकेपास जाकर पहुँचादिया उसने उनको भी मारडाला व कंसकी आज्ञानुसार प्रलम्ब व बकासुर आदिक राक्षसों ने मथुरा में जाकर जितने यदुवंशियों को खाते व पीते व सोते व बैठते व चलते व फिरते पाया सबको बांधकर लेआये व कंसने किसीको पानी में डुबाकर व बाजोंको आगमें जलाके व किसी का गला दबाकर मारडाला व जो यदुबंशी उसके मारने से बचे वह लोग अपने लड़के बालोंसमेत मथुरानगर छोड़कर पांचालदेश आदिकमें जाबसे व वसुदेवजी ने रोहिणीनाम अपनी स्त्रीको नन्दजी अपने मित्रके यहां गोकुलमें भेजदिया व नन्दजी ने उसको बड़े सन्मानसे अपने यहां रक्खा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज नारदमुनि ऐसे ज्ञानी व हरिभक्तने जो कंसके पास आनकर अपने सम्मतसे वसुदेवजी के बालक व यदुबंशियोंका बध कराया यह क्या कारणथा शुकदेवजी ने कहा हे राजन् नारदमुनिने इसवास्ते यह पाप कंसके हाथसे कराया जिसमें अधर्म करने से उसके पिछले जन्मका पुण्य क्षीणहोजावे व श्रीकृष्णजी जल्दी अवतार लेकर उसे मार डालें सो हे परीक्षित जब कंस देवता व ऋषीश्वरोंको जिन्हों ने यदुबंशीकुल में जन्म लियाथा मारकर अनेकतरहका दुःख देनेलगा व उसने छःपुत्र वसुदेवजी के व्याधाकी तरह मारडाले तब वसुदेव व देवकी ने हरिचरणों का ध्यानकरके बड़ी करुणा से बिनती की कि हे महाप्रभो कंस हमको निर्बंश किये डालताहै अब जल्दी सुधिलेकर इस दुःखसे छुड़ाओ ॥

**दो० विपति विनाशन दुखहरण जनरंजन सुरराय ।
अब हमको कोऊ नहीं तुमबिन और सहाय ॥**

जब इसीतरह वसुदेव व देवकी ने अतिविलाप किया तब परब्रह्म परमेश्वर अन्तर्य्यामी दीनदयालुने यह बिचारा कि देवता व मुनिआदिक मथुरा व गोकुलमें जन्म लेचुके अब पहिले लक्ष्मणजी बलभद्रनाम से फिर हम बासुदेवनाम होकर भरतजी प्रद्युम्न व शत्रुघ्न अनिरुद्ध व सीताजी रुक्मिणीनाम से संसारमें अवतार लेवें ऐसा बिचारकर उन्होंने गर्भ बलभद्रजीका देवकी के पेटमें स्थिर करदिया व अपनी आंख से योगमाया देवीरूपको प्रकटकिया जब वह देवी नारायणजीके सामने हाथ जोड़कर खड़ीहुई तब उससे कहा तुमभी मथुरापुरी में जहां राजाकंस मेरेभक्तों को दुःख देताहै जावो और सातवां गर्भ बलभद्रजी का जो देवकी के पेटमें है सो निकालकर रोहिणी के उदरमें धरदेव और यह भेद कोईदुष्ट न जानै इसकामके करने से कलियुगमें तेरा नाम दुर्गादेवी प्रकट होकर बड़ामाहात्म्य होगा व संसारीजीव तेरीपूजा करने से अपना मनोरथ पावेंगे व संसारमें बलभद्रजी का नाम संकर्षण व बलराम आदिक व तेरेभी अनेक नाम प्रकटहोंगे यह काम करनेउपरान्त तू यशोदाके गर्भ से जन्मले और हम भी वसुदेवजी के घर जन्मलेकर गोकुलमें आते हैं यह बात सुनतेही योगमाया परब्रह्म परमेश्वर की परिक्रमा लेकर मोहनीरूपसे मथुरामें आई व देवकीजी के पेटसे बलभद्र जीका गर्भ निकाललिया व गोकुलमें लेजाकर रोहिणी के पेटमें धरदिया पर यह हाल रोहिणीको कुछ नहीं मालूमहुआ व योगमायाने वसुदेव व देवकीको स्वप्नदिया कि मैंने तुम्हारा लड़का गर्भसे निकालकर रोहिणीके पेटमें धरदियाहै तुम किसीबातका शोच मत करना ऐसा स्वप्न देखतेही वसुदेव व देवकी नींदसे जागकर आपसमें कहने लगे भगवान्‌ने यह बात बहुतअच्छीकी पर गर्भपात होनेकाहाल कंससे कहलादेना चाहिये नहीं तो पीछेसे न मालूम वह क्या दुःख देवै जब वसुदेवजी ने ऐसा बिचारकर एक चौकीदार से गर्भ गिरजानेका हाल कंसको कहलाभेजा तब उसने प्रसन्नहोकर चौकीदारसे कहा कि आठवेंगर्भ रहनेका हाल तुरन्त कहना इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब श्रावणसुदी चतुर्दशी बुधवारको बलभद्रजी ने रोहिणी के पेटसे गोकुलमें जन्मलिया व योगमायाने यशोदाके उदरमेंजाकर गर्भबासकिया व बैकुंठनाथ जगत्‌के मंगलकरनेवाले देवकी के गर्भ में आये तब उनका प्रकाश आवने से मुखारबिंद वसुदेव व देवकीका सूर्य्यकेसमान चमकने लगा ॥

**दो० माखनप्रभु जू गर्भ में बास कियो अब आय ।
शिव ब्रह्मादिक आनकर अस्तुतिकरैं सुनाय ॥**

अपने कैदहोनेसे पहिले एकदिन देवकी व्रतरखकर यमुना स्नानकरनेवास्तेगई थी वहां यशोदासेभेंटहुई जब दोनोंने आपस में कंसकेदुःखदेनेकी चर्चाकी तब यशोदाने देवकीसेकहा मैं अपनालड़का तुझेदेकर तेराबेटा पालनकरदूंगी यहक़रार दोनों आपस में करके अपनेघर चलीआई थीं जब देवकी के आठवांगर्भरहा तब कंस ने यहहाल सुनतेही बन्दीखाने में जाकर बड़ेबड़े राक्षसोंकीचौकी वहां बैठालदी व वसुदेवसे कहा तुम अपनेमन में कुछकपट न रखकर आठवांबालक जब उत्पन्नहो उसीसमय मेरेपास पहुँचादेना तुम्हारे बचनकेअनुसार मैंने देवकीकाप्राण छोड़दिया था ऐसाकहकर कंसने वसुदेव व देवकीके हथकड़ी व बेड़ीडालके कोठरी में बन्दकरदिया व तालादेकर अनेक राक्षसोंकीचौकी वहां बैठालकर राजमन्दिरपर चलाआया व उसदिन अतिभयसे उपबासकरके सोरहा दूसरेदिन फिर बंदीखाने में जाके वसुदेव व देवकी के मुखारबिन्दका प्रकाशदेखकर कहनेलगा जैसातेज इसगर्भ में दिखलाईदेताहै वैसाप्रकाश और गर्भों में नहीं था इसलिये जानताहूं मेराकाल इसीगर्भ में है जब राजा कंसको देवकीरूप हरि-मन्दिरका दर्शनकरने से ज्ञानप्राप्तहुआ तब उसनेकहा कि देवकीको अभी मारडालता पर संसारके अपयश व पापसेडरताहूं ऐसाप्रतापी राजाहोकर गर्भवतीस्त्रीको क्यामारूं ऐसा अधर्मकरनेसे यश व पुण्य व आयुर्बलकी हानिहोती है जो बालकजन्मेगा उसीको मारूंगा ऐसाबिचारकर वह अपनेघर चलाआया व रखवारीकरनेवालों से कहदिया कि जिसघड़ी बालकउत्पन्नहो उसीसायत मुझे संदेशादेना व चौकीरहनेपरभी अपनेप्राण के डरसे नित वहांजाकर सुधि लेआता था व गर्भकातेज देखने से आठोंपहर उसको खातेपीते जागते चलतेफिरते बालरूपीमूर्ति श्रीकृष्णजीकी दिखलाईदेतीथी सो उसरूप के डरसे दिनरात वह व्याकुलरहताथा व वसुदेव व देवकी अपनादुःख देखकर हरि-चरणोंका ध्यानकरते थे जब गर्भकेदिन पूरेहुये तब श्यामसुन्दरने यहस्वप्न वसुदेव व देवकीकोदिया तुम शोचछोड़कर धैर्य्यरक्खो मैं जल्दी अवतारलेकर तुम्हारादुःख छुड़ाताहूं जब यहस्वप्नदेखकर वहदोनों जागउठे तब देवकी ने वसुदेव से कहा धर्मछूटजावे तो कुछडरनहीं पर इसबालकको कंससे छिपानाचाहिये यहसुनकर वसुदेवजी बोले हे प्राणप्यारी इस बन्दीखाने में पड़ेहैं किसतरहछिपावैं जब यहबिचारकर वहदोनों अति बिलापकरके रोनेलगे तब उसीसायत ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता इसरूपसे जिसमें उनको कोई न देखै वहांआये व हाथजोड़कर वेदमंत्रसे गर्भस्तुति इसतरहपर करनेलगे हे परब्रह्म परमेश्वरसत्यरूप आपतीनोंकालमें सच्चेरहतेहैं इसवास्ते हमलोग तुम्हारेशरणमें आयेहैं और यह संसाररूपीवृक्ष आपकीमायासे उत्पन्नहोकर तुम्हारेआश्रयपर रहताहै इसकीरक्षा व पालनकरनेवास्ते आप अनेकरूपधरकर सबजीवोंको सुखदेतेहैं और जो भक्त तुम्हारे नामकास्मरण व स्वरूपका ध्यानकरताहै उसकेभवसागरपार उतरनेमें कुछ संदेहनहींरहता और जो लोग अपने ज्ञान व तप व यज्ञादिक शुभकर्म करनेका अभि-

मानरखतेहैं और तुम्हारी भक्तिनहींकरते वह मनुष्य अवश्य धोखाखातेहैं व यज्ञादिक कर्मकरनेसे मुक्ति नहींहोती व प्रकाश तुम्हारा सबकेतनुमें बराबररहकर गवाह पाप व पुण्यकाहोताहै व आप किसीके दुःख व सुखसे कुछ प्रयोजन नहींरखते सो हे परब्रह्म परमेश्वर आप सगुणअवतार धारण न करैं तो संसारीजीव किसनामका स्मरणकरके कौनलीलाको गायकर भवसागरपारउतरें आपजन्म व मरणसेरहितहोकर केवल अपने भक्तोंको उद्धारकरनेवास्ते अवतारलेतेहैं जिसतरह आपनेमत्स्य व कच्छपआदिक अवतारधारणकियाथा उसीतरह अबभी पृथ्वीकाभार उतारने व हरिभक्तोंको सुखदेने व अधर्मी व राक्षसोंको मारनेवास्ते यदुकुलमें अवतारलेकर अपनी लीलाकीजिये देवता लोग यह स्तुतिकरके देवकी व वसुदेवसे आकाशवाणीकी तरहबोले जिनकेदर्शनवास्ते हमलोग त्रिभुवनमें घूमतेहैं और उनकादर्शन नहींपाते वहीआदिपुरुष नारायण तुम्हारे यहां अवतारलेकर सब दुष्टोंकोमारैंगे व पृथ्वीका बोझाउतारकर तुमको सुखदेवैंगे व तुम्हारीकृपासे उनकादर्शन हमैंभी मिलैगा अब तुमलोग कंससेमतडरो उसकीमृत्युनिकट आई है जब वसुदेव व देवकीने इसतरह स्तुतिसुनकर किसीकोआंखसे नहींदेखा तब उन्हैं आश्चर्य्यमालूमहोकर यह विश्वासहुआ कि अब जल्दीनारायणजी आनकर हमारा दुःखछुड़ावैंगे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् इसतरह स्तुतिकरके ब्रह्मादिक देवता अपने २ स्थानपर चलेगये ॥

तीसरा अध्याय ॥

श्रीकृष्णावतारकी कथा ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब बैकुण्ठनाथ गर्भमेंआये तबसे सब छोटे व बड़ोंको परमानन्दहोगया व सब वृक्षोंमें ऋतु व अनृतुकेफूल व फललगकर नदी व नाले पानीसे भरगये व मोरआदिक पक्षी आपसमें कलोल व विहारकरनेलगे व सबकेघरमें मंगलाचार होकर ब्राह्मणोंने यज्ञकरना आरम्भकिया व अग्निहोत्रकी आग आपसेबरकर साधुवोंका चित्त प्रसन्नहोगया व दशोंदिशाके दिक्पाल व देवता आनन्दहोकर मथुरापुरी पर फूल बरसावनेलगे व आकाशमें घटाछागई किन्नर व गन्धर्वोंने बाजन बजाकर परमेश्वरका भजनगाना आरम्भकिया व अप्सरा अपने २ बिमानोंपर नाचनेलगीं जिस समय ऐसीशोभाचारोंओर फैलरहीथी उसीसमय भादोंवदी अष्टमीबुधवार रोहिणीनक्षत्र में आधीरातको श्रीकृष्णमहाराजने इसस्वरूपसे अवतारलिया ॥

दो० हेमबरण पीताम्बर माथे मुकुट अनूप ।
शंख चक्र अम्बुज गदा धरे चतुर्भुज रूप ॥
चौ० कानन में कुण्डल छबि छाजै । उर मुक्तनकी माल बिराजै ॥

मुख आभा कछु कही न जाई । भानु कोटि प्रकटे मनुआई ॥

हे राजन् श्यामसुन्दर मेघवर्ण कमलनयनने इसस्वरूपसे बसुदेव व देवकीको अपनादर्शनदिया तब दोनोंनेज्ञानकी दृष्टिसे उन्हें परमेश्वरका अवतारसमझा व हाथ जोड़कर विनयकिया हे त्रिभुवनपति अन्तर्य्यामी हम तुम्हारेचरणोंको दंडवत्करतेहैं जब आपकी स्तुतिकरने में ब्रह्मा व महादेव व शेष व गणेश हारमानकर तुम्हारे भेद व अन्तको नहींपहुँचनेसक्ते तब हमारी क्यासामर्थ्य है जो आपकी स्तुतिकरें देवता व ऋषीश्वरोंने तुम्हारीकृपासे बड़ाईपाई है और जब जब गौ ब्राह्मण व हरिभक्तोंके दुःख पानेसे पृथ्वीपर बोझाहोताहै तब तब आप एकरूपधरकर पृथ्वीका भारउतारतेहैं हमारे बड़ेभाग्यथे जो आपने दर्शनदेकर जन्म व मरणसे उद्धारकिया अब तुम्हारेचरणोंके प्रतापसे हमारा सब दुःखछूटजायगा जब यह स्तुतिकहकर बसुदेव व देवकीने अपनी दुर्दशा उनसेकही और उनकादर्शन पानेसे प्रसन्नहोगये तब श्रीकृष्णजीबोले कि अब तुम कुछ शोचमतकरो तुमने पिछलेजन्म हमारा बड़ाउग्रतपकरके मेरेचरणोंका ध्यान कियाथा जब हमने प्रसन्नहोकर अपनादर्शनदिया तब तुमनेहमसे यह बरदानमांगा कि तुम्हारे ऐसा पुत्र मेरे उत्पन्नहो सो मेरेसमान दूसरानहींथा इसलिये मैंने तुमदोनोंकी इच्छापूर्णकरने व पृथ्वीकाभार उतारनेकेवास्ते अवतारलियाहै सो तुमको अपने पिछले जन्मका हालभूलगया इसलिये पूर्वजन्मकी सुधिकरानेवास्ते इसस्वरूपसे मैंने तुमकोदर्शन दिया अब तुम इसीसमय तुरन्त मुझे गोकुलमें लेजाकर यशोदाकी गोदमें सुलादेव व एककन्या यशोदाके उत्पन्नहुई है उसेलाकरकंसकोदेदेव नंद व यशोदानेभी मेरीबाललीला का सुखदेखनेवास्ते पिछलेजन्म तपकियाहै सो थोड़ेदिन बालचरित्र उन्हें दिखलाकर फिर कंसकोमारके आनमिलूंगा तुम धैर्य्यरक्खो यह सुनकर देवकीबोली हे करुणानिधान यह स्वरूप अपना अन्तर्द्धानकरलेव ऐसासुनतेही श्रीकृष्णजी बालकहोकर रोनेलगे व उन्होंने अपनीमाया ऐसीफैलादी कि बसुदेव व देवकीने वह ब्रह्मज्ञान भूलकर उस बातको स्वप्नसमान जाना तब बसुदेवजी पुत्रहोनेसे अतिहर्षितहोकर दशहजार गौका संकल्पमनमेंकिया व श्रीकृष्णजीको गोदमें उठाकर छातीसे लगालिया व बसुदेव व देवकी ठण्ढीसांसलेकर चिन्ताकरनेलगे व देवकीने बसुदेवजीसेकहा कि इसबालकको कहीं छिपादीजिये तो कंसकेहाथसे बचजाय तब बसुदेवजीने उसेउदास देखकर कहा हे प्रिया मैं कहां छिपाऊं जो कुछ हमारेकर्ममें लिखाहै वहीहोगा यह बचन सुनतेही देवकी हाथजोड़कर बोली ॥

दो० तब देवी पतिसों कह्यो नाहीं और उपाव ।
माखन प्रभुको लेइले गोकुलमें लेजाव ॥

हे स्वामी बहरोहिणी आपकी स्त्री व यशोदा मेरीमित्राणी व नन्दजी तुम्हारेसखा

रहतेहैं वह लोग बालककी रक्षा व पालन अच्छीतरह करेंगे इतनासुनकर बसुदेवजी बोले इसबन्दीखानेसे किसतरह लेजाऊं ऐसाकहतेही परमेश्वरकी इच्छासे बेड़ी व हथकड़ी बसुदेवजीकी खुलकर गिरपड़ीं व सब दरवाजे व ताले खुलगये व चौकीदार व पहरेवाले नींदमें अचेतहोकर सो रहे तब बसुदेवजीने यह महिमा श्यामसुन्दरकी देख कर श्रीकृष्णजीको सूपमेंधरके अपने शिरपर उठालिया व जल्दीसे गोकुलको चले उस समय अँधियारीरातहोने व पानी बरसनेसे राहमेंकांटे पड़तेथे इसलिये शेषनागजीने अपने शरीरकी सड़क बनाकर फणकीछाया बैकुंठनाथपरकरदी जिसमें बसुदेवजीके पांवमें कांटे न चुभैं व श्रीकृष्णजीपर बूंद न पड़ें इसीतरह बसुदेवजी वृन्दाबनबिहारीको लिये हुये यमुनाकिनारे पहुँचकर कहनेलगे पीछे सिंहबोलताहै व आगे यमुनाजी अथाहहैं किसतरह पारउतरूं यहांसे देवकीकेपास फिरचलूं या कैसाकरूं जब बसुदेवजी पहिले ऐसी चिन्ताकरके फिर हरिचरणोंका ध्यानधरकर यमुनाजल में पैठे तब यमुनाजीका पानी श्यामसुन्दरके चरणछूनेकेवास्ते ऊपरकोबढ़नेलगा तब बसुदेवजीने यह भेद नहीं समझकर श्यामसुन्दरको दोनोंहाथोंसे ऊपर उठालिया जब यमुनाजल बसुदेवजीके नाक तक पहुँचा और वह बहुत घबड़ाकर चिन्ताकरनेलगे तब श्रीकृष्णजी अन्तर्यामीने बसुदेवको दुःखीदेखतेही जैसे अपनाचरण यमुनाजलको छुआकर हुंकारदिया वैसे यमुनाजी थाहहोकर घुटनेबराबर जलहोगया तब बसुदेवजी यह महिमा देखतेही प्रसन्न होकर पारउतरगये व गोकुलमें नन्दजीके स्थानपर जाकर द्वार उनका खुलापाया व सबको सोताहुआ देखकर बेधड़कघरमें चले तो क्यादेखा कि एककन्या उसीसमयकी जन्मीहुई यशोदाकेपास सोईहै व यशोदाने योगमायाके मोहनीडालनेसे कन्याहोनेका हालनहींजाना सो बसुदेवजीने यशोदाको सोईहुई देखकर तुरन्त श्रीकृष्णजीको उसके पास सुलादिया व उसकन्याको लेकर उसीतरह यमुनापार उतरके मथुराकोचले और जब देवकीने बसुदेव व श्रीकृष्णजीको अँधियारीरात पानीबरसतेमें गोकुलको भेजदिया तब इसतरह रोकर पछतानेलगी कदाचित् कोई चौकीदार जागउठे व किवाड़े खुले देखकर कंससेजाकर कहदेवै या राहमें कोई बसुदेवजीको मिलजाय और उनकासमाचार कंससे कहदे तो न मालूम वह हमको कैसा दुःखदेगा व यमुनाअथाहमें वह कैसेपार उतरेहोंगे उनकोगये बिलम्बहुआ किसवास्ते फिरकर नहींआये ऐसीऐसी तर्कणाकरके जिससमय देवकी बैठीरोरहीथी उसीसायत बसुदेवजी आनपहुँचे और वह कन्यादेवकीको देकर सब हाल वहांका कहदिया तब देवकी प्रसन्नहोकर बोली अब हम को कंस चाहै मारभीडाले तो कुछडरनहीं है ऐसेपापीकेहाथसे मेराबालक तो बचगया॥

चौथा अध्याय ॥

कंसकेहाथसे उसकन्याका पटकतेसमय छूटजाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब बसुदेवजी गोकुलसे कन्याको लेआये तब फिर ज्योंका त्यों वह किवाड़ तालेबन्दहोकर बेड़ी व हथकड़ी उनकेपड़गईं और वहकन्या रोनेलगी उसका रोना सुनतेही चौकीदार जागकर बन्दूक छोड़नेलगे व उसीसमय अंधियारीरात पानी बरसतेमें एक चौकीदारने कंसके पास जाकर कहा महाराज आपका शत्रु उत्पन्नहुआ यहबात सुनतेही वहघबराकर उठा व गिरतापड़ता नंगेशिर डरताहुआ वसुदेव व देवकी के पास पहुँचा ॥

दो० कन्याले ठाढ़ी भई देवी अंचल ओड़ ।
भैया तेरे शरण है चाहे मार कि छोड़ ॥

हे राजन् ऐसा बचन कहने पर भी कंस महापापी ने वह कन्या देवकी के हाथसे छीनली तब फिर उसने हाथजोड़कर विनय किया हे भाई छःपुत्र मुझसे हुये सो तुमने मारडाले अब यह कन्या पेटपोछनी मेरी है तू इसे छोड़दे संसारमें जिस स्त्रीके बालक नहीं उसका जीनाव्यर्थ है और तुमने छःलड़के जो मेरे मारडाले हैं उनका शोक एक सायत मुझे नहीं भूलता बिना अपराध इसकन्याको मारकर क्यों पाप लेतेहो कंस निर्दयीने यह सुनकर उससेकहा मैं इसकन्याको जीती नहीं छोड़नेसक्ता जिससे इसका बिवाह होगा वही मुझे मारेगा ऐसा कहकर कंस उस लड़की का पांव पकड़के बाहर लाया और जब उसे घुमाकर पत्थरपर पटकनेलगा तब वह कन्या कंसके हाथसे छूट कर आकाशमें चली गई और वहां जाकर उसने कंसको अष्टभुजी रूप अपना त्रिशूल व खड्ग हाथमें लिये उत्तमभूषण व वस्त्र पहिने फूलोंकी माला गलेमें डाले ध्वजा लगे हुये बिमानपर बैठकर देवीजी के समान दिखलाया जब कंस वहरूप देखकर घबरा गया तब अष्टभुजी माताने कहा हे कंस पापी तैंने मुझे पटककर वृथा पापलिया तेरा मारनेवाला ब्रजमें उत्पन्नहोचुका अब तू उसके हाथसे नहीं बचनेसक्ता वह तुझे जल्दी मारकर पृथ्वी का भार उतारेगा तेरा मारनेवाला सांप समान और तू मेढ़कतुल्य है सो मेढ़क ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो सांपको खानेसके अब तू चैतन्य रहना वृथा हत्या करके क्यों पाप बटोरताहै ऐसा कहकर देवीजी अन्तर्द्धान होगईं व कंस योगमाया से यह बात सुनतेही बहुतलज्जित व शोचित होकर कहने लगा देखो हमने वसुदेव व देवकी को वृथा दुःखदिया व उनके बालक मारके पाप लिया व मेरा मारनेवाला भी उत्पन्न हुआ मैं अपना दुःख किससे कहूँ इसीतरह चिन्ता करताहुआ बसुदेव देवकीके पासआया व हथकड़ी व बेड़ी काटकर बिनयपूर्व्वक उनसे कहा मेरे बराबर संसार में

दूसरा पापीनहीं है जो मैंने अपने शरीरकी रक्षा करनेवास्ते जिसका एकदिन अवश्य नाशहोगा तुम्हारे छः बेटे बिना अपराध मारकर पाप बटोरा तिसपरभी मेरा अर्थ नहींहुआ यह पाप व कलंक कैसे छूटकर मेरी गति होगी तुम्हारे देवतालोगभी झूठे हुये जिन्होंने कहाथा देवकी के आठवें गर्भ में पुत्रहोगा सो कन्याहुई और वहभी मेरे हाथसे छूटकर स्वर्गको चलीगई सो तुमलोग मेरा अपराध क्षमाकरो और यह समझ कर धैर्य्यधरो कि उन लड़कोंकी आयुर्बल इतनीहीथी कर्म्मका लिखाहुआ कोई मिटाने नहीं सक्ता संसारमें जन्मलेकर मृत्युके हाथसे कोई नहीं बचता जिसतरह नदी में घास व तिनके न मालूम कहांसे आनकर इकट्ठे होजाते हैं और तरंग उठनेमें अलग होकर फिर पता उनका नहीं लगता उसीतरह संसारीजीवोंका हालभी समझना चाहिये ज्ञानी लोग जीने व मरने को बराबर समझते हैं व अहंकार करनेवाले मनुष्य शत्रु व मित्र में भेद जानते हैं सत्य पूंछो तो जीव अमरहोकर कभी नहीं मरता यह बात केवल कहनेको बनाईहै कि फलाने के मारने से फलाना मरगया जब ऐसा कहकर कंसने देवकी के चरणों पर शिर धरदिया और अति विलापकरके रोने लगा तब देवकी ने क्रोध क्षमाकरके उसका आंशू पोंछदिया व बसुदेवजी ने कहा महाराज तुम सत्यकहते हो इसमें तुम्हारा दोष नहीं है विधाताने हमारे कर्म्म में इसीतरह लिखदिया था होने वाली बात बिनाहुये नहीं रहती मनुष्य अपने सुख वास्ते अनेक उपाय करते हैं पर बिना इच्छा परमेश्वरकी कोई मनोरथ उनका प्राप्त नहींहोता यह बात सुनतेही कंस बहुत प्रसन्नहोकर बसुदेव व देवकीको अपने घर लेआया व भोजनकराके और उत्तम२ वस्त्र पहिनाकर उनके स्थानपर पहुँचादिया सो बसुदेव व देवकी ने घर आनकर गौ व अन्न व द्रव्य बहुतसा दान व दक्षिणा ब्राह्मण व याचकोंको दिया व कंसने उसके दूसरे दिन राजसभामें अपने मंत्री राक्षसों को बुलाकर कहा हमसे देवीजी कहगई हैं कि तेरा मारनेवाला उत्पन्न होचुका सो देवतों ने हमसे झूठ कहाथा कि देवकी से आठवां बालक तेरा मारनेवाला उत्पन्नहोगा सो उसके आठवें गर्भ में कन्याहुई इसलिये तुम लोग देवतों को मारडालो यह बात सुनतेही तृणावर्त्त व प्रलम्ब आदिक राक्षस बोले हे कृपानिधान देवतालोग जन्मके कंगालहैं उनका मारना क्या कठिनहै तुम्हारे क्रोध करने से वह भागजावेंगे उनकी क्या सामर्थ्य है जो आपसे युद्धकरसकें ब्रह्मा आठों पहर पूजा व पाठमें लीनरहतेहैं व महादेवजी दिनरात इलावर्त्तमें पार्वतीजीसे भोग व विलासकिया करतेहैं व इन्द्र ऐसीसामर्थ्यनहींरखता जो आपकेसन्मुख लड़सके व नारायण वहीहैं जिन्होंने कच्छपरूपधारणकियाथा व सदा क्षीरसागर में लक्ष्मीजीकेसाथ विहारकरतेहैं उनको युद्धकरनानहींआता इनलोगोंका जीतना कौनकठिनहै यहसुनकर कंसबोला नारायणजाने मेरेमारनेवास्ते कहीं अवतारलियाहै उन्हेंकहांपाऊं जोलड़ाई करकेमारूं ऐसासुनकर राक्षसोंनेकहा हेपृथ्वीनाथ यहबात नहींजानपड़ती कि वहबालक

कहांउत्पन्नहुआ इसलिये हमारेजान यहउपाय करनाचाहिये कि इनदिनोंमें जहां २ बालकउत्पन्नभयेहों सबकोमरवाडालो उनमें वहभी मरजावेगा कदाचित् इसउपाय करनेसे कहींछिपकर बचगया और न मरा तो ब्राह्मण व वैष्णवआदिक जितनेहरिभक्त हैं उनकोजहांपावो मारडालो ऐसाकरनेसे नारायणभागगये तो अच्छाहै नहीं तो उन लोगोंको दुःखदेनेसे जबवह उनकीसहाय करनेवास्ते प्रकटहों तबमारडालनाचाहिये जबयह उपायमंत्रियोंसे सुनकर कंसको अच्छामालूमहुआ तबउसनेवास्तेमारने ब्राह्मण व ऋषीश्वर व छोटेछोटे बालकोंकेआज्ञादी तबवहलोग बहुतसे वीरोंकोसाथलियेहुये हरिभक्त व लड़कोंको ढूंढ़ २ कर बल व छलसेमारनेलगे व उन्होंने यज्ञादिकशुभकर्म व हरिचर्चा संसारसे उठादी साधु व महात्माको दुःखदेनेसेआयुर्दा व धन व बलका नाशहोजाताहै सो ऐसापापकरनेसे कंसके पिछलेजन्मका पुण्यक्षीणहोगया ॥

पांचवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका जन्मोत्सव नन्दजीको करना ॥

शुकदेवस्वामी ने कहा हे राजन् जब वसुदेवजी श्रीकृष्णजीको यशोदाके गोदमें सुला-कर मथुरा चलेआये तब यशोदाजागी व उसने बालककामुखारबिन्द चन्द्रमा के समान देखकर नन्दजीको कहलाभेजा तुम्हारे पुत्रहुआहै आनकर देखो सो उन्होंने बड़ेप्रेम से जाकर श्यामसुन्दरको देखा व नन्द व यशोदा ने अति प्रसन्नहोकर अपना जन्म सुफलजाना व नन्दजी ने वेदकेअनुसार नांदीमुख श्राद्धकिया व श्यामसुन्दरके तेजसे नन्दजीकाघर प्रकाशितहोगया व यह आनन्दरूपी समाचार गोपी व ग्वालोंने सुनतेही अपनेअपनेघर मंगलाचार मनाया और गोदान ब्राह्मणों को दिया ॥

दो० व्रजबासी टेरत फिरैं कोऊ बन जनिजाय ।
नंदरायघर सुत भयो देव बधाई आय ॥

जब प्रातःकाल नन्दजी ने ज्योतिषियों को बुलाकर सायत व लग्न उत्पन्नहोने बालककी पूंछी तब पण्डितोंने कहा हमारे विचारमें यह लड़का दूसरा परमेश्वरमालूम होताहै और यह बालक राक्षसोंकोमारके पृथ्वीका भारउतारकर गोपीनाथ कहलावेगा व सब संसारीजीव इसकायशगावेंगे यहबात सुनकर नन्दजी बहुत प्रसन्नहुये व दो लक्ष गौ विधिपूर्व्वक व मणि व रत्नमिलाकर सातभारतिल व चांदी व सोनेका घड़ा दही व दूध व घीसेभरवाके ब्राह्मणोंको दानदिया सिवाय उसकेबहुतसा द्रव्य ज्योतिषी व पण्डितोंको देकर सब याचकोंको अयाचककिया व उससमय नन्दजीने अतिप्रस-न्नतासे अपनेद्वारेजड़ाऊ चौकीपर बैठके सब मंगलामुखियोंका नाच व रागकराया व उनलोगोंको मुहँमांगी वस्तुदेकर आदरपूर्वक बिदाकिया ॥

दो० काहू हीरालालमणि काहू मोतिनमाल ।
काहू भूषण बसनदे कीन्हो सभी निहाल ॥

फिर सब गोपी व ग्वालोंने अच्छा २ गहना व कपड़े पहिनलिये और मेवाआदिक थालमेंलेकर गातेबजाते दही व हल्दीमिलाकर लुटातेहुये नन्दजीके यहां बधावालाये ॥

दो० चोली ऊदी कोचकी लहँगा कुसुमी रंग ।
सारी गोटेतारकी शोभित सुन्दर अंग ॥
कंचनथार सवांर के तामें दीपकबारि ।
माखन प्रभुकी आरती लैआईं ब्रजनारि ॥
देहिं बधाई नन्दको पड़ैं यशोदापांव ।
कहैं पियारेलाल को नेक हमैं दिखलाव ॥

जब ऐसामीठा बचनसुनतेही यशोदाने श्यामसुन्दरका मुखखोलकर दिखादिया तब सब ब्रजबाला सांवरीसूरति मोहनीमूरतिको देखतेही परमानन्दहागईं व उनपर मोती व रत्नादिक न्यवछावरकरके आशीर्वाद देनेलगीं हे नन्दरानी तुम्हाराबालक लाखवर्ष जीतारहै गोकुलबासियोंने उसदिन अतिहर्ष से ऐसा दधिकांदोखेला कि सब गली व बाजारमें दही २ होगया व गोपियां सोहरगायकर नन्दजीको आनन्दकी गालियां देतीथीं व नन्दराय वह सुनकर परमानन्दहोतेथे व रोहिणी अतिहर्षसे गोपियोंकेसाथ नाचनेलगी उससमय ब्रह्मादिक देवता अपनी २ स्त्रियोंसमेत बिमानोंपर बैठकर आकाशमार्गसे ब्रजमण्डलपर आये और अप्सरोंने अपने २ बिमानोंपर नाचना व किन्नर व गन्धर्वोंने अनेकरंगका बाजा बजाकर गानाआरम्भकिया व देवतोंने वहां फूलबरसाकर आपसमें कहा गोकुलबासियोंका बड़ाभाग्यहै देखो जिन परब्रह्म परमेश्वर का दर्शन ब्रह्मादिकदेवतोंको जल्दीध्यानमें नहींमिलता उन्होंने यहां नरतनुधारणकियाहै ॥

दो० भरे परमआनन्दसुर उपजावत अनुराग ।
बार बार वर्णनकरैं नन्द यशोमतिभाग ॥
गोकुलको आनन्द अति कापै बरणोंजाय ।
जहां परमआनन्दमय लियोजन्म हरिआय ॥
ब्रजको सुख कोकहिसकै उपमा बड़ीअपार ।
सुखनिधान भगवानजहँ लियो मनुजअवतार ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् उसदिन नन्दजीके स्थानपर जैसा

आनन्दहुआ वह समाचार मुझसे वर्णननहींहोसक्ता व नन्दजीने सब ग्वालोंको अच्छे २ पदार्थ भोजनकराये व उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनाकर उनकी इच्छापूर्णकी व यह आनन्दरूपी समाचार सुनकर उसदेशके सब मंगलामुखी व याचक नन्दजीके यहां आये सो उन्होंने सबको मुहँमांगी बस्तुदेकर आनन्दपूर्व्वक बिदाकिया ॥

क० पूत सपूत जन्योयशुदा इतनोसुनिकै बसुधा सब दौरी । देवनको आनन्दभयो सुनि धावतगावत मंगनगौरी ॥ नन्द कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुकी मति बौरी । ग्वहिं देखत ब्रजहि लुटायदियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥

हे राजन् उन्हींदिनों महादेवजी योगीरूपसे बैकुण्ठनाथके दर्शनकरनेको नन्दराय के द्वारेपर आये व उन्होंने भिक्षा न लेकर परब्रह्मकादर्शन बड़े प्रेमसेकिया उससमय ब्रजवासियोंने नन्दजीसे कहा ॥

क० हेहो ब्रजराज कोऊवेषधारी आज पुत्रको जन्म सुनिआयो तेरे भौनहै। मोती मणिमाणिक पट कञ्चन न रत्नलेत हयगयभूमिग्राम लेतहमसो न है ॥ नगर अहोटेनाहिं भूमिब्रजलोटै एक अलखही उच्चारै और निजमौनहै । बालकके पांवलै जटानसों छुवायनाचै योगी तीनिआंखिको कहांसे आयो कौनहै ॥

सो हे राजन् जब छटीकादिन आया तब नन्दजीने अपनाआंगन चन्दन व केसरिसे लिपवाकर मोतियोंका चौकपुरवाया व पुरोहितको बुलाकर अपनेकुलके अनुसार पूजाकी व यशोदाजी श्यामसुन्दरको पीलाकुरता व टोपी व उत्तमभूषण पहिनाके पूजन करनेवास्ते गोदमेंलेकर बैठीं उसदिन वृषभानुआदिक गोप व गोपियां कुरता टोपी व अनेकरंगका भूषण नन्दजीकेघर देनेवास्ते लेआये व सबोंने बड़ेहर्षसे ढोलकी बजाकर अच्छे २ गीतगाये व नन्दजीने उसीदिन गोप व गोपियोंका यथायोग्य सन्मानकिया व एकपालना रत्नजटित अतिउत्तम श्यामसुन्दरके झूलनेकेवास्ते बनवाया उसीमें बैकुंठनाथको सुलाकर यशोदाजी बड़ेप्रेमसे झुलाया करतीथीं व लक्ष्मीपतिकी कृपासे सब गोकुलबासियोंकेघर इतनाद्रव्यहोगया जिसकीसंख्या कोई नहींकरनेसक्ता सो वह लोग आनन्द से रहकर श्यामसुन्दरका दर्शनकरके अपना २ जन्म सुफलकरते थे जबनन्दजीने यहसुना कि राजाकंसने बालकोंके मारनेवास्ते आज्ञादी है तब उन्होंने ग्वालोंसे सबवृत्तान्तसुनाकरकहा कि पुत्रहोनेकी कुछ भेंटलेकर राजाकंसको चलकर देआवैं जिस में किसीबातका डर न रहै यह सम्मत आपसमें करके नन्दजी माखन व दूध व घी व

द्रव्य गाड़ियोंपर लदवाकर ग्वालोंसमेत मथुरामें लेगये व राजाकंसकी भेंटकर अपने घर पुत्रहोनेका हाल उससेकहदिया व राजाने नन्दजीको शिरोपांव देकर बिदाकिया जब नंदजी वहांसेबिदाहोके अपनेघरचले तब बसुदेवजी उनके आनेकाहाल सुनकर मिलनेवास्ते यमुनाकिनारे आये और उनका कुशल मंगल पूंछकर कहा॥

दो० सुधिआवे जबमित्रकी तबमनआवै चैन।
यासुखकी उपमानहीं जो मुखदेखै नैन॥

हे नन्दजी तुम्हारेसमान कोईमित्र अपना हमनहींदेखते जो राजाकंसके दुःखदेनेसे मैंने अपनीस्त्रीगर्भवती तुम्हारेयहांभेजदी व उसकेवहां पुत्रउत्पन्नहुआ तब उसकापालन तुमनेहमसे अधिककिया व मैं राजाकंसकेडरसे कुछ सुधिनहीं लेसका यहबोझातुम्हारा मेरेऊपरबड़ाहै इसकेबदले जन्मभरतुम्हारीसेवाकरूं तबभीउऋणनहींहोसक्ता तुम्हारेयहां पुत्रहोनेकाहालसुनकर मुझेबड़ासुखहुआ कहो यशोदा तुम्हारी स्त्री श्रीकृष्णजी बालक समेत व सबगौ अच्छीतरहहैं व गोकुलमें घास गौओंके चरनेवास्ते अच्छीउपजीहै यह बात प्रीतिभरीहुई सुनकर नन्दजी बोले कि तुम्हारीकृपासे बलरामआदिक सबकोई आनंदसे हैं उनकेउत्पन्नहोने उपरांत मेरेभी बालकहुआ पर कंसने तुम्हेंदुःखदेकर तुम्हारेलड़कोंकोमारडाला यह हालसुनकर मुझेबड़ादुःखरहताहै क्याकरूं इसमें कुछ मेरा बशनहींचलता ऐसासुन बसुदेवजीबोले हे मित्र बिधाताने जो हमारेकर्ममें लिखा है वह किसीतरह मिटने नहींसक्ता संसारमें जन्मलेनेसे कौन नहींदुःखपाता तुम मेरे बड़े मित्रहो इसलिये मैं अपने व तुम्हारेलड़कोंमें कुछ भेद नहींजानता पर राजाकंस इनदिनों बड़ा अन्धेरकररहाहै कि हालकेजन्मेहुये बालकोंको मरवाडालताहै तुम यहां आयेहो व राक्षसलोग चारोंओर बालकढूंढ़ते फिरतेहैं ऐसा न हो कि कोई राक्षस गोकुल में जाकर कुछ उपाधिकरै॥

सो० गई पूतना आज ब्रजको बालकघातिनी।
करिहै कछूअकाज बेगि धाम सुधिलीजिये॥

हे नन्दजी तुम पराक्रमभर अपने व मेरेबालककी रक्षाकरतेरहना आगे परमेश्वर मालिकहैं और जब सावकाशमिलै तब दर्शनदेना यहबात सुनतेही नन्दजी बसुदेवसे बिदाहोकर ग्वालोंसमेत गोकुलको चले व चलतेसमय बोले॥

दो० बिनती कीन्हीमित्रसों डारेउ जनि बिसराय।
माखनप्रभु जुबुलाइहैं फेरि मिलैंगे आय॥

छठवां अध्याय ॥

पूतना राक्षसीका गोकुलमें जाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित बहुतसे राक्षस लड़कों के मारने में लगेथे तिसपर भी कंसको श्यामसुन्दरके डरसे चैन नहीं पड़ताथा इसलिये उसने पूतना राक्षसी को बुलाकर कहा इनदिनों जितने बालक मथुरा व गोकुलमें यादवआदिकके कुलमें उत्पन्न हुये हैं सबको तू मारडाल यह सुनतेही पूतना कंसकी आज्ञा पालनकरनेवास्ते चली व उसने विचारकिया कि गोकुलमें नंदजी के यहां पुत्रहुआहै सो मैं गोपीरूप बनाकर जाऊं तो उस बालकको छलसे मारके चलीआऊंगी यह बात ठानकर उसने अपने को मोहनीरूप गोपी अतिसुन्दर बनालिया व भूषण व वस्त्रादिक सोलहोंशृङ्गारकरके अपने कुचोंमें विष लगाकर हँसतीहुई बेधड़क नन्दजीके घरमें चलीगई व उसका स्वरूप देखकर किसी डेवढ़ीदारने भीतरजाने से नहीं रोका जिसतरह आगि राखमें छिपी रहती है व कोईनहीं जानता उसीतरह पूतनाने श्रीकृष्णजी को परमेश्वरका अवतार नहीं समझा था व यशोदाआदिक स्त्रियों नेभी उसका रूप व शृङ्गार देखकर उसे देवकन्याजाना इसलिये बड़ेसन्मानसे अपनेपास बैठालकर उससे बातचीत करनेलगीं ॥

चौ० एक कहै यहहै कोउ रानी । यशुमतिके आई हम जानी ॥
एक कहै यह कमलाबाई । श्रीकमलापति देखन आई ॥

हे राजन् उससमय श्मामसुन्दर पालने पर झूलते थे उन्होंने उसको देखकर मुसकरादिया और जाना कि यह कपटरूप धरके मेरे मारने के वास्ते आई है सो उन्हों ने आंख बन्दकरके मनमें कहा बहुतअच्छा हुआ जो यह मेरे यहां आई अपने दण्डको पहुँचेगी कदाचित् गोकुलमें दूसरे घर जाती तो मेरे मित्र व सखाओं को मारडालती व कपटरूप पूतनाने यशोदासे कहा हे बहिन तुम्हारे यहां पुत्र होनेका हाल सुनकर राजा कंस बहुत प्रसन्नहुआ व उसकी आज्ञासे मैं प्राणप्यारे बालकको देखने आईहूं तब यशोदा बोलीं मेरे ललना पलना में झूलते हैं यह बात सुनकर वह कपटरूप कहने लगी तुम्हारा लड़का करोड़वर्ष जीतारहै जब ऐसी २ बातें प्रीतिभरीहुई कहकर पूतना पालने के निकट चलीगई व श्यामसुन्दरको बड़े प्रेमसे गोदमें उठालिया और मुखचूम कर दूधपिलाने लगी जब मोहनप्यारे ने दोनों हाथसे स्तनधरकर इसतरह दूधके साथ उसका प्राण खींचा कि वह व्याकुलहोकर यशोदासेबोली तेरा बालक मनुष्य न होकर यमराजका दूत मालूम होताहै और मैंने रस्सीके धोखे सांपको पकड़लिया कदाचित् आज इसके हाथसे जीती बचकर जाऊं तो फिर गोकुलमें नहीं आऊंगी जब पूतना ऐसी कहतीहुई अधिक व्याकुलहोकर वहांसे आकाशमार्गको भागी तब श्रीकृष्णजी

भी उसका स्तन मुखसे न छोड़कर लटके चलेगये जब वह गोकुलगांवकी बस्ती से बाहर पहुँची तब नन्दलालजी ने प्राण उसका शिरकी गूदीसमेत खींचलिया सो मरती समय वह राक्षसी बड़ा भयानकरूप होकर वज्रके समान पृथ्वी पर गिरी उसकेगिरने से ऐसा शब्दहुआ कि धरती व आकाश कम्पायमान होगया और वह शब्द सुनकर गोकुलवासी डरकेमारे काँपनेलगे और छःकोशके बीचमें पूतनाके गिरनेसे सैकड़ों वृक्षटूटगये ॥

दो० आई अद्भुत रूपधरि अतिबिपरीतको भार।
कपटहेतु नहिं सहिसक्यो तेहि माख्योकरतार ॥

जब यशोदा व रोहिणीने वह शब्द सुनकर अपनेलालको वहां नहींदेखा तब रोती व पीटतीहुई श्यामसुन्दरको ढूंढ़ने निकलीं ॥

दो० माखनप्रभु गोपालको ढूंढ़त गोपी ग्वाल।
तबहुं पूतना उदरपर खेलत पायोलाल ॥

जब यशोदाने देखा कि मोहनप्यारे उसकीछातीपर चढ़ेहुये दूधपीरहेहैं तब उसने दौड़कर उनकोउठालिया व गोदमेंलेकर मुख व हाथ उनका चूमनेलगीं जिसतरह कोई सांप अपनीमणि खोजानेसे बिकलहोकर उसके मिलनेउपरांत प्रसन्नहोताहै उसी तरह यशोदाको आनन्दहुआ ॥

सो० कहै यशोमतिमाय फिरि फिरि सब के पांवपरि।
उबख्यो आजुकन्हाय तुम पंचनके पुरयसे ॥

जब श्रीकृष्णजीने थोड़ीदेर दूध नहींपिया तब गोपियां गौकी पूंछ छुआकर श्यामसुन्दरको झाड़नेलगीं व यशोदा जल्दीसे नन्दलालको घरपरलेआईं जब गुणीकोबुलाकर झाड़फूंककराके अपना देवता व पितरमनाया व दूधआदिक उनपर न्योछावरकरके कंगालोंको पिलाया तब वे दूधपीनेलगे व सब ब्रजबाला मोहनप्यारेका प्राणबचनेसे प्रसन्नहोकर बारम्बार परमेश्वरको दण्डवत्करनेलगीं व गोपी व ग्वाल उसलोथकेपास खड़ेहोकर आपसमें कहतेथे देखोइसके गिरनेकाशब्दसुनके अबतक हमलोगोंका कलेजा कांपताहै न मालूम उसबालककी क्यागतिहोगी उसीसमय नन्दजीने गोकुलके निकट पहुंचकर क्यादेखा कि एकराक्षसी बहुत बड़ी मरीपड़ी है व गोकुलवासी उसकोखड़े हुये देखरहेहैं जब नन्दजीने लोगोंसे उसकेमरनेकाहाल पूंछा तब उनलोगोंने सबसमाचार कहसुनाया नन्दजी यहबात सुनकर कहनेलगे बड़ीबातहुई जो इसकेहाथसे मेरा प्राणप्यारा जीताबचा और यहभी बहुतअच्छाहुआ जो लोथ इसराक्षसीकी गांवसेबाहर गिरी कदाचित्बस्ती में गिरती तो इसकेनीचे सब गोकुलबासीदबकर मरजाते यहबात

कहकर नन्दजी वहांसे स्थानपरआये व अपनेलालको गोदमें लेकर बहुतप्यारकिया व छःहजारगौ दूधदेनेवाली बिधिपूर्वक श्यामसुन्दरके हाथसे ब्राह्मणोंको दानदिलाया व अन्न व सोना व चांदीआदिक बहुतसा उनके शिरपर न्योछावरकरके कंगालोंको दिया फिर नन्दजीकी आज्ञानुसार ग्वालोंनेफरसा व कुल्हाड़ेसे शरीर पूतनाका काट डाला व गड़हाखोदके हड्डीउसकी गाड़दीं व मांसचमड़ा उसकाआगमें जलादेनेसे ऐसीसुगन्ध उड़ी जिसके सूंघनेसे सब गोकुलवासी आनन्दहोगये इतनी कथासुनकर राजा परीक्षितनेपूंछा महाराज उसराक्षसी मदिरापीने व मांसखानेवालीके शरीरजलने से सुगन्धउड़नेका क्याकारणथा शुकदेवजीबोले हे राजन् श्रीकृष्णजीने उसका दूध पीकर उसकी छातीपर अपनाचरण रक्खा व उसको अपनेहाथसे मारकर पवित्रकरके मुक्तकिया इसलिये उसके जलनेसे सुगन्धउड़ी थी ॥

दो० माखनप्रभु कमलापती सकल सुबासनिवास ।
तिनके अंग प्रसंगते प्रकट्यो बाससुवास ॥

हे राजन् देखो पूतना परमेश्वरको विषपिलाकर मारने आईथी उसने यह गतिपाई जो कोई नारायणजीको प्रेमसे अच्छा अच्छापदार्थ भोगलगातेहैं उनको न जानैं कैसी पदवीमिलती है जो लोग पूतनामरणकीकथा कहैंगे व सुनेंगे उन्हैं परमेश्वरके चरणारबिंदमें भक्तिप्राप्तहोकर मुक्तिपदवी मिलैगी हे राजन् श्रीकृष्णजीके दर्शनवास्ते देवता लोग अपना २ रूपबदलकर गोकुलमें आवतेथे व देवतोंकी स्त्रियां सुन्दरताई श्यामसुन्दरकी देखकर मोहजातीथीं ॥

सातवां अध्याय ॥

कंसका तृणावर्तआदिक राक्षसोंको श्यामसुन्दरके मारनेवास्ते भेजना ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथा सुनकर पूंछा हे महाराज जिसतरह आपने पूतना व श्रीकृष्णकीलीला सुनाई उसीतरह और कुछ बालचरित उनका वर्णनकीजिये यह मुझको बहुतप्यारा मालूम देताहै ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् कंसने पूतनाकी दशासुनकर विश्वासकरके जाना कि मेरा मारनेवाला गोकुलमें उत्पन्नहुआ इसचिन्तामें वह व्याकुलहोकर गिरपड़ा जब कुछदेरमें चैतन्यहुआ तब सभामें बैठके अपने मंत्रियोंसे कहा नंदजीके बालकने पूतनाराक्षसीको मारडाला सो मुझे मालूमहोताहै कि उसकेहाथसे मेराकालहोगा मित्र उसीको समझना चाहिये जो विपत्तिमें कामआवे उसबालकको मारकर हमारा भलाकरै ॥

दो० योधा सभी बुलायकै बीरा धर्यो बनाय ।
जो यह कारज करिसकै सोई लेय उठाय ॥

हे राजन् कंसने सब किसीसेकहा जो कोई मेराशत्रुमारे उसे मैं बहुतद्रव्यदूंगा उस समय श्रीधरनाम ब्राह्मण जो वहां बैठाथा बोला हे राजन् तू शोचमतकर मैं तेराशत्रु मारके तुझे निश्चिन्त करेदेताहूं ॥

दो० तब बोले राजा बचन धन्य धन्य द्विजराज ।
तुम बिन ऐसो कौनहै जो करिहै यह काज ॥

यह सुनतेही श्रीधरब्राह्मण बीरा उठाकर राजासे बिदाहुआ व पंडितोंका बेषबनाकर नन्दजीके यहांगया यशोदाने उसे देखतेही दण्डवत्‌किया व बड़े आदरसे बैठालकर पूंछा महाराज आपने किधर कृपाकी तब ब्राह्मण देवता अपनेको पुरोहित बतलाकर बोले तुम्हारे बालककीबड़ाई सबसेसुनकर उसकादर्शनकरने आयाहूं यशोदानेकहा ॥

दो० कमलनयन हैं शयनमें बैठो द्विज यहिकाल ।
न्हाय आय दिखराइहौं माखनप्रभु गोपाल ॥

जब यशोदा ऐसाकहकर यमुनाकिनारे स्नानकरनेको चलीगई तब ब्राह्मणने बिचारा इस निराले समयमें श्रीकृष्णकोमारकर कंसके पासजाऊं तो बहुत द्रव्यपाऊं जब ऐसा बिचारकर वह ब्राह्मण जहां बैकुंठनाथ सोतेथे वहां चलागया तब नन्दलालजी उसकी खोटी इच्छासमझकर पालनेसे उतरपड़े व श्रीधरको पकड़कर उसकीजिह्वा मरोरडाली व ब्राह्मणसमझकर प्राणनहींमारा व दही उसके मुँहमेंलगाकर बर्त्तनदही व दूधका तोड़डाला व आप फिर पालनेपर लेटरहे जब यशोदा यमुनास्नानकरके आई तब उसने दही व दूधकाबर्त्तन टूटा व दही ब्राह्मणके मुखमें लगादेखकर जाना कि इसीब्राह्मणने दही व दूधखाकर बर्त्तन तोड़डाले हैं यहबात बिचारकर यशोदाने कहा महाराज तुमने दही व दूधखाया तो अच्छाकिया पर मेरे बर्त्तन क्यों तोड़डाले जब जिह्वामुड़कनेसे वह बोलनहींसका तब नन्दलालकी ओर हाथउठाके बतलाया कि इसीने बर्त्तनतोड़े हैं यशोदाने उसब्राह्मणके बतलानेका यह बिश्वास न करके उसको अपने घरसे निकलवादिया जब वह ब्राह्मण रोताहुआ कंसकेपासआया तब उसने अधिकउदास होकर बकासुरको वास्तेमारने सांवलीसूरतके भेजा जैसे वह श्यामसुन्दर के पालने पर आनके अपनीघातलगाकरबैठा वैसे नन्दलालजी ने उसकागला मरोरकरफेंका तो कंसके सामनेआनकर गिरा और यह हाल गोकुलमें किसीने नहींजाना और मरते समय उसने कंससेकहा वह बालक मनुष्य न होकर परमेश्वरका अवतार मालूमहोता है ॥

दो० एक हाथ से पकड़ि म्वहिं फेंकिदियो तुम पास ।
ह्वैहै तुम्हरो काल वह मैं कीन्हों बिश्वास ॥

यहबातसुनतेही कंसने शोचितहोकर अपनी सभावालों से कहा कि अभीवह लड़का है सो नहीं माराजाता तरुणाई आने में किसतरह माराजायगा कोई उसेमारता तो मैं बड़ागुणमानता यहवचन सुनतेही शकटासुर वास्तेमारने श्यामसुन्दरके क़रारकरके बिदा हुआ व पवनरूपबनकर गोकुलकोचला इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब श्रीकृष्णजी सत्ताईसदिनकेहुये व जिसनक्षत्रमें उनका जन्महुआथा वहीनक्षत्र फिर आया तब नन्दजी ने ब्राह्मण व गोकुलवासियों को न्योतादेकर अपनेयहां बुलाया व अपने कुलकीरीति व रसमकरके ब्राह्मणोंको दान व दक्षिणादेकर बिदाकिया व ग्वालों को भोजनकरने वास्ते बैठाकर यशोदा व रोहिणी अच्छाअच्छा पदार्थ उन्हें परोसने लगीं व गोपियों ने बड़ेहर्षसे गाना बजाना आरम्भकिया और वे लोग आनन्दपूर्वक खानेलगे हे राजन् उससमय श्रीकृष्णजीको पालने में सुलाकर सब छोटेबड़े अपने २ काममें लगेथे और उसपालने के पास एकछकड़ा लटकायाथा सो श्यामसुन्दर नींदसे जागे व मारेभूखके हाथ पैर पटककर रोनेलगे उसीसमय वहराक्षस पवनरूप उड़ताहुआ वहां आनपहुँचा व श्यामसुन्दरको अकेला देखकर मनमें कहनेलगा कि यह बालक अति बलवान् है जिसने पूतनाको मारडाला आज इसे मारकर उसका बदला लेऊंगा यह बात बिचारकर छकड़े पर आनबैठा इसीकारण उसका नाम शकटासुर हुआ जब वह छकड़ा जिसके नीचे बर्त्तन दही व दूध का रक्खा था हिलने लगा तब श्रीकृष्णजी अन्तर्य्यामी ने उसके आनेका हाल जानकर रोते २ ऐसी एक लात उस छकड़े पर मारी जिसके लगने से शकटासुर मरकर कंसकी सभामें आनगिरा उसे देखकर कंस सब राक्षसोंसमेत घबरागया हे राजन् जब छकड़ा गिरने व बर्त्तन टूटने से बड़ाशब्द होकर दूध व दही नदीके समान बहनिकला तब नन्दजी आदिक सबग्वाल गोपी वहां दौड़आये व यशोदाने श्यामसुन्दरको उठाकर अपनी छाती में लगालिया व मुख व हाथ उनका चूमनेलगीं व सब किसी ने आश्चर्यमानकर आपसमेंकहा आकाशसे वज्र भी तो नहीं गिरा न मालूम किसतरह छकड़ा टूटकर गिरपड़ा ॥

दो० पलना ढिग खेलत हते कछुक गोपके बाल।
तिन्हन कह्यो डार्‌यो शकट पलनासे नँदलाल ॥

उन लड़कोंकी बातका किसी ने बिश्वास न करके आपसमेंकहा श्रीकृष्णजीका चरण फूलसे भी कोमलहै इतना बड़ा छकड़ा उन्होंने लातमारकर किसतरह गिराया होगा ॥

दो० बहुतभांति करुणाकरो और दियो बहुदान।
बार बार नँदलालके रक्षपाल भगवान ॥

हे राजन् जब श्रीकृष्णजी पांच महीने के हुये तब कंसने तृणावर्त्त राक्षसको उनके

मारने के वास्ते भेजा सो वह बवण्डररूप बनकर गोकुलमें आया उससमय यशोदा मन-हरणप्यारेको लिये आंगनमें बैठीथीं सो श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने तृणावर्त्त के आनेका हाल जानकर अपने शरीरको इसवास्ते भारी करदिया जिसमें यशोदा अपनी गोदसे पृथ्वी पर उतारदें नहीं तो तृणावर्त्त मेरेसाथ इनको भी उड़ालेजावेगा जब यशोदासे उनका बोझ नहीं उठायागया तब वे श्यामसुन्दरको आंगन में सुलाकर घरका काम करनेलगीं उससमय तृणावर्त्त बवण्डररूपके पहुँचने से गोकुलमें ऐसी आंधीआई कि धूरउड़ने से दिन रात्रिकेसमान होगया व वृक्षगिरने व छप्पर उड़नेलगे तब यशोदा व्याकुल होकर श्यामसुन्दरको आंगनमें से उठावने आई पर अंग उनका ऐसा भारी होगया था कि उनसे नहीं उठसके जब यशोदाने अपना हाथ उनके शरीरसे अलग किया तब तृणावर्त्त श्यामसुन्दरका प्राण लेनेवास्ते उनको उठाकर एकयोजन ऊंचे आकाशमें लेगया व यशोदाने फिर प्राणप्यारे को उठानेवास्ते हाथ लपकाया तो उस जगह उनको न पाकर रुदन करनेलगीं व नन्दजी को पुकारकरकहा तुम्हारा बेटा आंधी में उड़गया ऐसा सुनतेही नन्दादिक ग्वालव गोपी वहां दौड़आये व श्यामसुन्दर का नाम पुकारकर चारोंओर ढूंढ़नेलगे व यशोदा व रोहिणीभी गोपियोंसमेत उनको ढूँढ़ने निकलीं सो अँधेरे में ठोकर खाकर व्याकुलतासे गिर २ पड़तीथीं ॥

दो० नन्द यशोमति रोहिणी गोप ग्वाल ब्रजबाल ।
माखनप्रभु गोपाल बिन सकल बिकल त्यहिकाल ॥

हे राजन् जब श्रीकृष्णजी ने नन्दादिकको अपने बिरहमें अति दुःखी देखा तब तृणावर्त्तका गला दबाकर नन्दजी के द्वारे पत्थरपर पटका व उसे मारकर मुक्तिदी जब उसके मरने से आंधी व अँधियारा जातारहा तब नन्द व यशोदाआदिक पटकने का शब्द सुनकर अपने स्थानपर दौड़आये तो क्या देखा कि एक राक्षस मरापड़ाहै व उसकी छातीपर नन्दलालजी खेलरहे हैं व गोपियों ने दौड़कर श्यामसुन्दरको उठा लियाव यशोदाजी ने उन्हें गोदमें लेकर प्यारकिया व सबों ने कहा आज श्रीकृष्णजी का नया जन्म हुआ ॥

दो० क्या जानों केहि पुण्यते को करिलेत सहाय ।
कियो काम बहु पूतना तृणावर्त्त फिर आय ॥

उससमय नन्दराय बोले हमसे बसुदेवजी ने कहाथा कि इनदिनों बहुत उपाधि उठेगी सो वही बात देखने में आती है नन्दजी ने उसदिनभी बहुतसा द्रव्य व भूषणादिक उनपर न्योछावरकरके ब्राह्मण व कंगालोंको दिया व गोपियों ने यशोदासेकहा तैंने घरका काम प्राणप्यारे से अच्छाजाना जो उन्हें आंगन में अकेला छोड़कर काम

करनेलगी यशोदा लज्जित होकर बोली आज मैंने अपनी अज्ञानताका दण्ड पाया फिर कभी प्राणप्यारेको अकेला नहीं छोडूंगी उसदिनसे यशोदा आठोंपहर नन्दलालजी को छाती में लगाय रहिकर उनके बाललीलाका सुख देखती थीं ॥

दो० हलरावत गावत मधुर हरिके बालविनोद ।
जो सुख सुर मुनिको अगम सो सुखलेत यशोद ॥
कभी झुलावत पालने कभी खिलावत गोद ।
कभी सुलावत पलँगपर यशुदा सहितविनोद ॥

हे राजन् एकदिन यशोदा श्यामसुन्दरको गोदमें लेकर बड़े प्रेमसे बारम्बार उनका मुखचूमतीथीं उससमय श्यामसुन्दरने मुखखोलकर हँसदिया तो यशोदाको उनके मुखारविन्दमें पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व पहाड़ व समुद्रआदिक सब संसारीवस्तु दिखलाई दीं तब यशोदा आश्चर्यमानकर कहनेलगीं मेरीबुद्धि बदलता नहींगई जो यहसब चरित्र मुझे दिखलाई देताहै या मेरेबालकपर किसी देव व परीकीछाया तो नहीं होगई जो यह सबवस्तु उसके मुखमें दिखलाईपड़ती हैं ऐसा विचारके यशोदा ने गुणी बुलाकर श्रीकृष्णजीको झाड़ फूंक कराया व व्याघ्र का नख व भालूके बाल व अनेक यंत्र श्रीकृष्णजी के गले में पहनादिये ॥

आठवां अध्याय ॥

गर्गाचार्य्यका श्याम व बलरामके नाम रखना व बालचरित्र श्रीकृष्णजीकी कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् वसुदेवजी ने बलभद्र अपनेपुत्रके जन्मलेनेका हाल कंसादिकसे नहींबतायाथा इसलिये एकदिन गर्गजी अपनेपुरोहितको बुलाकर कहा रोहिणी के बेटाहुआहै सो अभीतक राजाकंसके डरसे हमने उसका नामकरण नहीं किया सो आप गोकुलमेंजाकर उसकानाम रखदीजिये यहबातसुनतेही गर्गजी प्रसन्नहोकर गोकुल में गये नन्दजी उनकाआगमन सुनतेही ग्वालोंसमेत आगे से जाकर सन्मानपूर्वक उन्हें अपनेघर लिवालाये व विधिपूर्वक पूजाकरके उन्हें आसनपर बैठाला नन्द व यशोदा ने चरणउनकाधोकर चरणामृतलिया व हाथजोड़कर विनयपूर्वक बोले मेरा बड़ाभाग्य था जो आपने चरणअपनालाकर मुझे कृतार्थकिया यह बतलाइये कि किसकारण यहां आवनेका संयोगहुआ यहबात सुनकर गर्गजीबोले वसुदेवने मुझे अपनेपुत्रका नामकरण करनेवास्ते भेजाहै तब नन्दने प्रसन्नहोकर कहा आप हमारेभाग्यसे यहांआये हैं सो एक बालक हमारेभी उत्पन्नहुआ उसकानामभी धरदीजिये गर्गजीने कहा मुझे उसके नाम रखने में यहडरहै कदाचित् कोई शत्रुजाकर कंससे कहदे कि गर्गमुनि गोकुलमें नामकरण करनेवास्ते गयेथे तो उसे यहसंदेहहोगा कि वसुदेवने कोईबालक देवकीका नन्द

के यहां पहुँचादिया है इसीवास्ते गर्गपुरोहित उनकानामरखने गोकुलमें गयेहोंगे यहबात सुनकर न मालूम तुम्हें कंस क्यादुःखदेवै इसलिये तुम नामकरण में कुछ धूमधाम न करो साधारण से घरमें नामधरालेव नन्दजी उनकाकहना अच्छाजानकर उन्हें घरके भीतर लेगये तब गर्गजीने हाथ व जन्मलग्न रोहिणीके पुत्रकादेखकर कहा ॥

दो० राम नाम है राशिको सुख निवास अभिराम ।
बली होयगो लोक में सब कहिहैं बलराम ॥

सिवायइसके इनकानाम संकर्षण व रेवतीरमण व बलदाऊ व कालिंदीभेदन व हलधर व बलभद्रभी संसारमें प्रकटहोगा व श्रीकृष्णकी जन्मकुण्डली बनाकर गर्गमुनि बोले हे नन्दजी तुम्हारेपुत्र जो श्यामरंग हैं इनकानाम श्रीकृष्णरक्खो इनके अनेकनाम हैं एकबेर इन्होंने वसुदेवकेयहां जन्मलियाथा इसलिये इनकानाम वासुदेवहुआ व हमारे विचारमें तुम्हाराबालक परब्रह्मपरमेश्वरका अवतार मालूमदेताहै इनकाभेद कोई जानने नहींसक्ता व तीनोंलोकमें किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो इनको मारसके और वह जैसे २ काम संसारमें करेंगे तैसे २ नाम इनका प्रकटहोगा व अपनी इच्छासे इन्होंने अवतारलिया है किसी समय तुमने इनके बाललीलाका सुख देखनेवास्ते तपकिया था उसकेप्रतापसे इनको पाया है इन्हें तुम अपनाजनाहुआ पुत्र मतिजानो जो कोई इनके नामका स्मरणकरेंगे वे लोग संसार में मनोकामनापाकर अन्तसमय मुक्तिपावैंगे और यहदोनोंबालक चारोंयुगमें एकसाथ उत्पन्नहोते हैं यहबात सुनकर नन्द व यशोदा बहुत प्रसन्नहुये और सोना व रत्नादिक गर्गाचार्य्य को देकर बिदाकिया व गर्गजी ने मथुरामें आनकर वसुदेवजी से सबसमाचार कहदिया हे राजन् जब श्याम व बलराम अतिसुंदर मोहनीमूर्ति घुंघुवारेबाल शिरपर बिखरे अनेकरंगका भूषण व वस्त्र पहिने व खिलौनालिये बालकोंके साथ घुटनियोंचलकर आँगनमें खेलतेथे तब यशोदा व रोहिणी व गोपियोंको वहछबिदेखकर जैसा सुखमिलता था वह मुझसे वर्णननहींहोसक्ता ॥

क० डगमग पगनते अलख अलेख ज्योति नन्दके हैं जाहिर के योगिनके जपके । रुनझुन पैंजनियां खेलत हैं रजभरे गभुवारे घुंघुवारे सोहैं बार झपके ॥ मोहन बलैया लेउँ आवो धूरि झारडारौं सुनिबात मात गले लागनको लपके । शारदा गणेश शेष बिधिसों न गिनेजात भक्तनके हितके अहीरनके तपके ॥

चौ० जबहिं यशोदामाय बुलावै । बारोलाल घुटुनियों धावै ॥
ताकेधावत अति छबिहोई । जो देखै सुख पावत सोई ॥

दो० बाल बिनोद बिलोकि कै मुदित यशोदा मात।
माखनप्रभुहि निहारिकै बार बार बलिजात ॥
सो० नितउठि ब्रजकी बाम आवैं यशुमतिके सदन।
मुदित निरखि घनश्याम लैलै गोद खिलावहीं ॥
दो० करत बाललीला ललित परमपुनीत उदार।
सुन्दरश्याम सुजान हरि सन्तन के आधार ॥
सो० कापै वरणयो जाय बालचरित नँदलाल को।
कलपन सकैं न गाय शेष कोटि शारद सहस ॥

हे राजन् देखो जिसपरब्रह्मपरमेश्वरकी महिमा वेद नहींजानते वह वैकुण्ठनाथ बालरूपसे नन्दजीके आंगनमें खेलकर प्रतिदिन नये सुख नन्द व यशोदाको दिखलातेथे जो आनन्द तीनोंलोकमें नहींमिलता वह सुख श्यामसुन्दरकी कृपासे ब्रजबासियोंको गोकुलमें प्राप्तहोताथा जब श्यामसुन्दरके दांतनिकले तब नन्द व यशोदाने शुभसाइतमें खीर व मिश्रीसे उनका अन्नप्राशन किया व उसदिन व वर्षगांठके दिन ब्राह्मणोंको बहुतसा दान व दक्षिणादेकर अपनेजाति भाइयोंको भोजन खिलाया व गाय बजायकर बड़ा आनन्दमनाया जब खेलतीसमय श्याम व बलराम छोटे २ बछड़ोंकी पूंछपकड़कर खड़ेहोते व गिरपड़ते व फिर उठते व तुतलाकर बोलतेथे तब यशोदा व रोहिणी बड़ेहर्षसे उन्हें गोदमें उठाकर दूधपिलातीथीं व दोनोंभाई अतिसुन्दरथे इसलिये उनकेरूपपर सब ब्रजबाला मोहितरहिकर अनेक बहानेसे उनको देखनेआया करती थीं उन्हींदिनों एकब्राह्मण नन्दजीकेघर आया तो यशोदाने दूध व चावल व मीठा उसेदिया जब उसब्राह्मणने खीर बनाकर थालीमेंपरोसा व परमेश्वरको भोगलगाकर आंखबन्दकरके ध्यानकिया तब श्रीकृष्णजी जाकर उसकीथालीमें भोजनकरनेलगे उस ब्राह्मणने उनकोखाते देखकर वह थाली छोड़दी व यशोदासे कहा तुम्हारेबालकने रसोई हमारीछूदी जब इसीतरह तीनबेर यशोदाने उसब्राह्मणसे खीरबनवाई और भोगलगाती समय नन्दलालजी जाकर उसकीथालीमें खानेलगे तब यशोदाने क्रोधितहोकर कहा मैं अपनीइच्छासे ब्राह्मणको भोजनकरानेवास्ते खीरकरादेतीहूं सो तू जूठी क्योंकरदेता है मैं तुझ मारूंगी यहसुनकर श्रीकृष्णजीने कहा हे माता तू मुझको दोषमतलगा जब यह ब्राह्मण विनयपूर्वक भोजनकरनेवास्ते बुलाताहै तब मैं इसके प्रेमको देखकर खानेलगत हूं यहबात नन्दलालजीकी सुनतेही ब्राह्मणदेवताको ज्ञानउत्पन्नहोगया तब वह बोला हे यशोदा धन्य तेराभाग्य है कि साक्षात् वैकुण्ठनाथने तेरे यहां आनकर अवतार लिया ॥

सो० सुफलजन्म प्रभु आज प्रकटभयो सब सुकृतफल ।
दीनबन्धु ब्रजराज दियोदर्श म्वहिं कृपाकरि ॥

उसीप्रेममें वह ब्राह्मण मग्नहोकर नन्दजीके आंगनमें लोटनेलगा व श्यामसुन्दर के सामने हाथजोड़कर विनयकिया हे दीनानाथ मेरा यह अपराध क्षमाकीजिये व मैंने कहाथा कि रसोई जूठीकरदी जो कोई तुम्हारे शरणमें आया वह कृतार्थहुआ आप अन्तर्य्यामी हैं मुझे अपनीशरण जानिकर दयालुहूजिये श्यामसुन्दर उसब्राह्मण का यहहाल देखकर यशोदाके पासखड़ेहुये हँसनेलगे व ब्राह्मणकी प्रेमभक्ति देखकर बिदाकिया व यशोदाआदिकने यहहाल देखकर आश्चर्यमाना इसीतरह श्यामसुन्दर अनेक बालचरित्रकरके नन्द व यशोदाको सुखदेतेथे एकदिन श्याम व बलराम लड़कों के साथ अपनेआंगनमें खेलतेथे सो कन्हैयाजीने मिट्टीकोखालिया तब श्रीदामाबालक ने यहहाल यशोदासे जाकर कहा यहबातसुनतेही यशोदा मारेक्रोधके हाथमें छड़ीलेकर श्यामसुन्दरको मारनेदौड़ी जब बैकुण्ठनाथने अपनीमाताको क्रोधमेंआते देखा तब मारे डरके मुख अपना पोंछकर खड़ेहोगये व यशोदाने श्रीकृष्णजीसे कहा तैंने किसवास्ते मिट्टीखाई गांववाले मेरीनिन्दाकरैंगे कि यह अपनेपुत्रको कुछ खानेवास्ते नहींदेती इसलिये वह मिट्टीखाताहै यहबात सुनकर मोहनप्यारे डरतेहुयेबोले हे मैया झूठी यह बात तुमसे किसनेकही कदाचित् कोई वृथा कलंकलगादे तो मेराक्यादोषहै तब यशोदा बोली श्रीदामातेरेसाथीने यहबात मुझसेकही है जब श्यामसुन्दरने श्रीदामाको डाट-कर पूछा अरे मैंने कब मिट्टीखाईथी तब वह बोला हे भाई मैंने तुम्हारीमातासे कुछनहीं कहाहै जब यशोदाने केशवमूर्त्तिका हाथपकड़कर धमकाया तब बोले हे मैया कहीं मनुष्यभी मिट्टीखाताहै ॥

दो० झूंठ कहत तोसोंसभी मिट्टी म्वहिं न सोहाय ।
नहिं मानै जो बाततू दिखलावों मुखबाय ॥

यह बचन सुनकर यशोदा बोली अच्छातेरी झूंठीबातोंका बिश्वास नहींकरती तू सच्चाहै तो अपना मुखखोलकर दिखलादे यहबातसुनतेही श्यामसुन्दरने अपना मुख खोलकर दिखलादिया तो यशोदाको उनकेमुखमें तीनोंलोककी बस्तु जिसतरह पहिले देखीथीं उसीतरह फिर दिखलाईदीं तब यशोदाने ज्ञानकीराह मनमें कहा देखो मेरे समान कोई मूर्ख न होगा जो त्रिलोकीनाथको अपना पुत्रजानतीहूं यह बालक मनुष्य न होकर नारायणका अवतार मालूमहोताहै किसवास्ते कि मैंने दोबेर इसके मुखमें सब संसारी व्यवहारदेखा जब ऐसा विचारकर यशोदा उनकी स्तुतिकरनेलगी तब मोहन प्यारेनेसमझा अभी मुझे बहुत लीलाकरनी है अपनेको प्रकटकरना न चाहिये जब यह

बिचारकर अपनीमाया यशोदापर फैलादी तब उसने नंदजीसे कहा मैंने यह सब चरित्र श्यामसुन्दरके मुखमें देखाहै यहहाल सुनकर नन्दरायबोले जो बात गर्गजी कहगयेहैं सो सत्यमालूमहोती है ॥

दो० नन्द कहत सुनु बावरी हरि अतिकोमलगात ।
लैसांटी धावत वृथा पुनि पाछे पछितात ॥
सो० अचरज तेरी बात कोजानै देख्यो कहा ।
कुशलरहैं दोउ भ्रात राम श्याम खेलत हँसत ॥

यह बचनसुनतेही यशोदाने नन्दलालको अपनाबेटा समझकर गोदमें उठालिया व प्यारकरके बोलीं हे प्राणप्यारे जो हाथ मैंने तुझे सांटीमारनेको उठायाथा वह हाथ मेरा गलिजावे व जिनआंखोंसे तुझकोघूराथा वे फूटजावें हे बेटा तुम माखन व मिठाई छोड़कर मिट्टी क्योंखातेहो ऐसाकहकर यशोदा श्यामसुन्दरको घरके भीतरलेगई एक दिन श्याम व बलराम लड़कोंके साथ खेलतेथे कि आपसमें कुछ झगड़ाहुआ तब बलरामजीने मोहनप्यारेसे कहा ॥

दो० बोलिउठे बलराम तब इनके माय न बाप ।
हार जीतजाने नहीं लड़िकन लावत पाप ॥

यह बचनसुनतेही श्यामसुन्दर रोतेहुये यशोदाके पासजाकरबोले ॥

चौ० मैया म्वहिं दाऊ दुखदीन्हों । मोसों कहत मोलको लीन्हों ॥
कहाकरूं या रिसके मारे । मैं नहिं खेलन जात दुआरे ॥
पुनिपुनि कहत कौन तेरिमाता । कोतेरोतात कौन तेरोभ्राता ॥
गोरे नन्द यशोदा गोरी । तुम तो कारे आये चोरी ॥
मोसों कहत देवकी जाये । लैबसुदेव यहां मिसि आये ॥
मोल कछुक बसुदेवहि दीन्हों । ताके पलटे तुमको लीन्हों ॥

हे माता बलदाऊजीके सिखलावनेसे सब बालकभी मुझे यहबात कहकर चिढ़ावते हैं सो तू सत्यकह मैं किसकाबेटाहूं यह सुनतेही यशोदा गोधनकी सौगन्दखाकरबोलीं हे मोहन प्यारे मैं तेरीमाता व तू मेरापुत्रहै ॥

दो० पाछे ठाढ़े सुनत सब नन्द श्यामकी बात ॥
लीन्हों गोदउठाय हँसि सुन्दर सांवलगात ॥

केशवमूर्त्ति यह बात अपनी मातासे सुनकर प्रसन्नहुये व फिर लड़कोंमें जाकर

खेलनेलगे जब कभी रातको मोहनप्यारे बाहर खेलने की इच्छाकरते थे तब यशोदा उनसे कहतीथी कि बाहर मतिजाव वहां हउवा काटिलेगा ॥

दो० रूपरेख जाके नहीं विधि हर अन्त न पाय ।
हाऊसों डरपाय तेहि यशुमति रखत सोवाय ॥

फिर नन्दजी ने मोहनप्यारे का मुण्डन व कर्णछेदनकरके ब्राह्मण व अपने जाति भाइयोंका सन्मानकिया जब श्यामसुन्दरको पांचवांबर्ष लगा तब ग्वालबालों के साथी ब्रज गोकुलकी गलियों में खेलनेलगे ॥

दो० जाके गुणगण अगमअति निगम न पावतश्रोर ।
सो प्रभु खेलत ग्वालसँग बँधे प्रेमकी डोर ॥

सो० खेलत भई अबेर जननी टेरत श्यामको ।
आवो धाम सबेर सांझ समय नहिं खेलिये ॥

हे राजन् सब ब्रजबाला श्याम व बलरामके रूपपर मोहितरहकर यह इच्छारखती थीं कि वह किसीतरह हमारे घरआवैं तो हम उनका दर्शन पाकर आंखैं अपनी ठंढी कियाकरैं इसलिये श्यामसुन्दर अन्तर्यामी सबकी इच्छा पूर्ण करनेवाले ग्वालबालोंसमेत उनके घरजानेलगे सो गोपियां बड़ी प्रसन्नतासे दही व माखन खिलाकर उनकासन्मान करनेलगीं और जो ब्रजबाला घरपर नहीं रहतीथीं उनके सूने घरमें बेधड़क घुसकर दही व दूध व माखन उसका ग्वालबाल व बानरों को खिलाकर आपभी खाते थे जब सबका पेट गोरस खाते २ भरजाताथा तब दही आदिक पृथ्वीपर गिराके हांडी व मट्ठकी को तोड़कर कहते थे कैसा निकम्मा यह दूध व दही है जिसे कोई नहीं खाता यह उपद्रव देखकर गोपियां बहुत बरजती थीं तिसपर भी नहीं मानते थे तब ब्रजबाला माखनचोर उनका नाम धरकर हँसी से पुकारती थीं ॥

दो० माखनप्रभु गुण देखिकै गोपिन कियो उपाय ।
दूध दही माखन मही राखैं दूर दुराय ॥

सबगोपियां दही आदिक छींकेपर रखनेलगीं जिसमें उनका हाथ न पहुँचे तब उन्हों ने यह उपाय निकाला कि पहिले ऊखली के ऊपर पीढ़ा रखकर उसके ऊपर एक लड़के को खड़ा करदेते थे व उसके कांधेपर आप चढ़कर छींकेपरसे दूध व माखन उतारकर खाजाते थे जब यह उपाय करनेपरभी बहुत ऊंचे रहने से वह बर्त्तन नहीं उतरताथा तब मुरली व लाठी से उसहांड़ी में छेदकरके दही आदिकको अंजली में रोपि कर खाते व लुटावते थे जब कोई गोपी यह दशा उनकी देखकर गालियां देती हुई

निकटआवती तब मोहनीमूर्तिको देखतेही हँसिदेतीथीं व गोपियां माखन देने के लालच से तालीबजाकर श्यामसुन्दरको नचावती थीं॥

स० शङ्करसे सुर जाहि जपैं चतुरानन ध्यानन धर्म्म बढ़ावैं। नेक हियेमें जो आवतही रसखानि महाजड़ मूढ़ कहावैं॥ जापर सुन्दर देवबधू नहिं वारत प्राण अबार लगावैं। ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभरि छाछपै नाच नचावैं॥

दो० गोरसको चसको लग्यो दिन प्रति आवै लाल।
यशुदहिं देन उराहनो आवैं सब ब्रजबाल॥

कभी कभी गोपियां यशोदापासजाकर कहती थीं श्रीकृष्ण तुम्हारे पुत्रने हमारा दूध व दही आदिक चुराकर खालियाव दूसरे बालक व बानरों को खिलाकर हमारीमट्टकी तोड़डाली हमलोग बहुत छिपा छिपाकर अपना दूध व माखनरखती हैं तिसपरभी उसके हाथसे नहीं बचता कहांतक तुम्हारा संकोच करें कदाचित् आप खाजावैं तो हमैं संतोषहो दूसरे ग्वालबाल व बानरोंको खिलाकर लुटादेता है और हमारे रसोई व पूजाका स्थान मल व मूत्रकरके भ्रष्टकरताहै सो तुम अपने कन्हैयाको मनेकरो तब श्रीकृष्ण बड़ी गरीबी से कहते थे हे माता यह सब गोपियां मुझे झूंठा कलङ्कलगाती हैं नहीं मालूम कौन ग्वालबाल इनका दूध व दही खागया होगा सोंपा मेरानाम इन्होंने सीखपाया है जो प्रतिदिन आनकर तुमसे चुगुली खाती हैं भला यह तो बिचारकरो कि मैंने छोटेहाथोंसे किसतरह छींकेपरकी वस्तु उतारी होगी॥

दो० मैं अपनो घर छोड़िकै कभी कहूँ नहिं जात।
आय सबै ये सुन्दरी वृथा कहत उठि प्रात॥

हे माता यह सब ब्रजबाला मुझे यमुनाकिनारे व गली व राहमें से अपने घर बरजोरी पकड़लेजाती हैं और उनमें कोई मेरामुख चूमती व कोई कपड़ा खींचती व कोई मेरी टोपी उतारलेती व कोई मेरेगालमें मुक्का मारकर कहती है तू नाच हे माता ये गोपियां मुझे बड़ा दुःखदेती हैं तुम यह गांव छोड़कर कहीं दूसरी जगह चलकेबसो ऐसी २ मीठीबातें मोहनप्यारेकीसुनिकर यशोदाने गोपियोंके कहनेका विश्वासनहींकिया॥

दो० माखन प्रभुहि उठायके मातुलियो उरलाय।
गोपिनसों बिनती करी रहीं तबै शिरनाय॥

इसीतरह सब ब्रजबाला उरहना देतीसमय नन्दलालजीकी अनोखी बातें सुन-

कर आनन्दपूर्वक अपने २ घर चलीआती थीं व मोहनप्यारे ने यशोदाके समझाने परभी दही व माखनकी चोरीकरना नहीं छोड़ा व अँधेरेघरमें भी अपने चन्द्रमुखके प्रकाशसे माखन आदिक ढूंढ़कर खाजाते थे व यशोदा उरहना देतीसमय गोपियोंसे कहतीथीं कि यहकाम श्यामसुन्दरका नहीं है भला तुमहीं न्यायकरो इस छोटेबालकका हाथ छींकेपर किसतरह पहुँचाहोगा किसीदूसरेग्वालकका यह कर्म्म है तुमलोग झूंठाकलङ्क मेरे प्राणप्यारे को लगातीहो जितना तुम्हारा गोरसआदिक गयाहो मेरेयहांसे लेजाव ॥

दो० झूठो दोष लगायके नित उठि आवत प्रात ।
सन्मुख बोलत लाज तजि फेर बनावत बात ॥

जो तुमलोग सच्चीहो तो चुरातीसमय उसको मेरे पास पकड़लाओ यहबात सुनकर सब ब्रजबाला अपने २ घर चलीगईं ॥

दो० घरघर प्रकटी बात यह सखावृन्द ले साथ ।
माखनचोरी खातहै नन्दसुवन ब्रजनाथ ॥
सो० सबके मन अभिलाख चोरी पकरन पाइये ।
धरिये माखनराख यही ध्यान सबके हिये ॥

हे राजन् जब कोई ब्रजबाला चोरी करतीसमय पहुँचकर नन्दलालसे यह कहती कि तुमने हमारे सूने घरमें आनकर माखन व दही की हांड़ी में क्यों हाथडाला तब उसको उत्तर देतेमें धोखे से अपना घर जानकर यहां चलाआया व दही में चिउँटीपड़ गईथीं सो निकालताहूं कदाचित् कोईब्रजबाला दही आदिक खातीसमय आनकर कहती हे माखनचोर तू हमारादही क्यों खाताहै तब मोहनप्यारे उसगोपीको अपनी आंखसैनसे निकट बुलाकर दूध या दही जो मुखमें लिये रहतेथे उसके मुख व आंखोंपर कुल्लाकर देते थे जबतक वह मुख व आँखि अपनी पोंछती तबतक भागकर अपने घर चले आतेथे व यशोदा उनको नित्य समझाया करतीथी हे बेटा नवलाखगौ मेरे दही दूध देनेवाली हैं जितना दूध व माखन तुम्हारा मनचाहै खायालुटायाकरो किसी दूसरेके घर चुरावने मतजाव सब गांववाले मुझे कहतेहैं तू अपनेबेटेको भोजन नहींदेती इसीवास्ते वह सबकेघर माखन व दही चुराकरखाताहै जब गोकुलवासी तुम्हें माखनचोर कहकर पुकारतेहैं तब मारेलज्जाके मुझसे किसीको अपनामुख नहीं दिखलायाजाता जब यह सब ग्वालिन हाटबाज़ारकी दूध दही बेंचनेवाली नित्य आनकर तेराउराहना मुझे देती हैं तब मैं मारे लज्जाके डूबजातीहूं नन्दजी यह हाल सुनकर तुझे मारैंगे ॥

सो० बड़े बापके पूत चोर नाम राख्यो जगत ।

उपज्यो पूतसपूत नाम धरावत तातको ॥

यह सुनकर मोहनप्यारेबोले हे माता अब मैं ग्वालियोंके घर नहींजाऊंगा ऐसा कहनेपरभी उन्होंने दहीआदिक चुराकरखाना नहींछोड़ा तब सब गोपियोंने आपसमें सलाहकी कि एकदिन माखनचोरको दहीसमेत पकड़कर यशोदाकेपास लेजानाचाहिये सो एकदिन मोहनप्यारे किसी ब्रजबालाकेघरमें माखनआदिक चुराकरखातेथे जब कई गोपियोंने मिलकर उन्हें पकड़लिया व उनकेसाथी ग्वालबाल वहांसेभागगये तब गोपियां केशवमूर्त्तिको पकड़कर यशोदाकेपास लेचलीं उससमय ब्रजनाथजीने अपनी मायासे ऐसाछलकिया कि जो गोपीहाथपकड़ जातीथी उसीकेपुरुषका हाथ दही मुखमें लगाकर उसे पकड़ादिया और आप वहांसे अन्तर्द्धानहोकर ग्वालबालोंमें खेलनेलगे व उसगोपीने हरिइच्छासे यह भेदनहींजाना कि मैं अपने पतिका हाथपकड़े जातीहूं व उसकीसाथी गोपियोंनेभी उसे नहींपहिंचाना व उसब्रजबालाने गोपियोंसमेत नन्दरानीके पासजाकर कहा नन्दलालजीकेमारे ब्रजगोकुलका रस नहींबचता नित्यहमारा दही व माखन चुराकर खाजातेहैं जब दहीखातीसमय इन्हें कोई पकड़ताहै तब कहते हैं कि तुमने बरजोरी मेरेमुखमें दहीलगादिया इनकेमारे कोईछछरा बँधारहने नहींपाता इनमें बड़े चरित्रभरेहैं सिवायमाखन व दही चुरानेके हमारीअँगियाभी फाड़डाली है इनको तुम बालक मतसमझो हमलोगोंको इनकाहाल कहते लज्जामालूमहोती है ॥

दो० करत फिरत उत्पातअति सबब्रजघरघरजाय ।
नितउठि खेलत फागुरी गरिआवत न लजाय ॥

और जब हमलोग उरहनादेनेवास्ते आती हैं तब तुमभी हमें झूठीबनातीहो सो आज श्यामसुन्दरको माखनचुराते व खाते पकड़कर तुम्हारेपास लाई हैं जब गोपियां इसीतरहका बहुतउरहना देचुकीं तब यशोदाबोलीं मेरामोहनप्यारा कहां है हे बहिन तुम किसे पकड़करलाईहो तुम अपनेचोरका मुखतो देखो तब सत्य व झूठ तुम्हारा खुलजायगा मेरा श्रीकृष्णतो कलहसे घरकेबाहरभी नहींनिकला यहबात सुनकर जैसे उसगोपीने जो पकड़ेथी अपनेचोरका मुखदेखा तो अपनापति दिखलाई दिया यह चरित्र देखतेही उसने उसकाहाथ छोड़दिया व लज्जितहोकर हँसनेलगी तब यशोदा ने सच्चीबनकर गोपियोंसेकहा मेरेबालकको तुमलोग वृथाचोरीलगातीहो मेराकन्हैया पांचवर्षका चोरीयोग्य नहीं है तुम मेरेप्राणप्यारेसे मतबोलाकरो यहबात गोपियोंसे कहकर यशोदाने मोहनप्यारेसे कहा हे बेटा मेरे बर्जनेपरभी चोरीकरना नहींछोड़ता ॥

दो० सुनि सुनि लाजनमरत मैं तू नाहिं मानत बात ।
अब तोहिं राखौं बांधिकै जानी तेरी बात ॥

सो० मोपै लीजै श्याम दधि माखन मेवा मधुर ।
सब कुछ तेरे धाम परघर जाय बलाय तुव ॥

यह बातसुनतेही मोहनप्यारेने तुतलाकर कहा हे माता तुम इनलोगों के कहनेका बिश्वासमतकरो यह सब मेरेपांछेपांछे फिराकरती हैं कभी मुझे दूध व दही के बर्तन व कभी बछड़ा पकड़ाकर अपनेघरका अनेक काम मुझसे कराती हैं व मेरीझूठी चुगुली आनकर तुमसेखाती हैं यह मीठाबचनसुनकर सब ब्रजबाला केशवमूर्त्तिका मुखदेखती हुई अपने अपनेघर चलीगईं फिर एकदिन श्यामसुन्दर किसी ब्रजबालाकेघर माखन आदिक चुरानेगये उससमय वह गोपी शय्यापर सोईथी नन्दलालजीने उसब्रजबाला की चोटी चारपाईसे बांधदी व उसकामाखन व दही ग्वालबालोंसमेत आनन्दपूर्व्वक खाया व बर्त्तनव दूध व दही व एकमट्टका घी का जो बहुतदिनोंसे उसकेघरमें रक्खा था तोड़डाला जब वह गोपी बर्त्तनोंका खटका सुनकर चिल्लाई तब अड़ोस पड़ोसकी गोपियोंने आनकर नन्दलालजीको पकड़लिया व यशोदापास लेजाकर कहा ॥

दो० वही उलहना नित्यको सत्यकरन के काज ।
मैं गहिलाई श्याम को बांह पकड़के आज ॥

हे राजन् उसदिन गोपियोंने सच्चीबनकर यशोदासे कहा अपने पुत्रकेलक्षण देखो हमारे बर्त्तन तोड़डाले व मेरी चोटी चारपाईसे बांधकर सब माखन व दही चुराकर खागया और हमलोगोंका चीरखींचकर नंगीकरदेताहै इसके मारे रास्ता नहींचलने पातीं यह बातसुनकर यशोदा बोलीं ॥

क० प्यारेकी कोसन सुनि कसकी कलेजेमाहिं जीवनहै मेरा कान्ह कहाकर आयो है। मोसों कहौ कोटिक कछू न कहौबालक सों केतो दुखदेखदेख कैसे करपायोहै॥ माखनको माठलेके द्वारपर महरिबैठी तौलि तौलि लेव बीर जाको जेतोखायो है। गोरसके काजग्वालिगोदहू पसारतिहूं गारीमतिदेव मोगरीबिनीकोजायोहै॥

जब यशोदाको गोपियोंकी बात सत्यमालूमहुई तब मोहनप्यारेपर क्रोधकरके कहा तैंने अच्छाचलन चोरीकासीखाहै हे बेटा मैंने तुझे बारम्बार समझाया पर तू मेराकहना नहींमानता अब मैं तुझको बांधकर घरमें बैठारक्खूंगी यह बातसुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे मैया यह गोपी मुझे बर्जोरी पकड़कर अपनेघर लेगई व हमसे इसने अपने घरकाकाम काजकराया अब झूठ कलंकलगाकर उलहना देनेआई है यहबात मोहनप्यारे की सुनकर यशोदा हँसनेलगीं व सब गोपियां अपने २ घर चलीगईं हे परीक्षित इसी

तरह श्यामसुन्दर नई २ लीलाकरके अपनीमाता व पिता व ब्रजबासियोंको सुख देतेथे देखो जो बैकुण्ठनाथ आठोंपहर क्षीरसमुद्रमें रहते हैं वह गोपियोंका दही व माखन चुराकर खातेथे ॥

दो० बिश्वभरण पोषणकरण कल्पतरोवर नाम ।
सो दधिचोरी करत हैं प्रेम विवश सुखधाम ॥
धनि ब्रजबासिन धन्यब्रज धनिधनि ब्रजकीगाय ।
जिनको माखन चोरिहरि नितउठि घरघरखाय ॥

देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरकेचरणोंका ध्यान ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता आठों पहर अपनेहृदयमें करते हैं व जल्दी उनकादर्शन नहींपाते सो उन्हें ब्रजकी अहीरियां बांहपकड़कर यशोदाकेपास लेजाती थीं उनके लीला व भेदको कोई नहीं जानसक्ता इतनीकथा सुनकर राजापरीक्षितने पूंछा हे स्वामी नन्द व यशोदाने ऐसा कौनतपकिया था जिसके फलसे परब्रह्म परमेश्वर उनके पुत्रकहलाये व उनको बाललीला दिखलाकर ऐसा सुख दिया और यहबात वसुदेव व देवकी को नहीं प्राप्तहुई शुकदेवजी बोले हे परीक्षित पिछलेजन्म नन्दजी द्रोणनाम वसुदेवता होकर यशोदा धरानाम उनकीस्त्री थी सो दोनों ने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार बहुत दिनतक परमेश्वरका तपकिया सो नारायणजी ने प्रसन्नहोकर ब्रह्मासेकहा तुम उनकोदर्शनदेकर जो बरदानमांगैं सो देव तब ब्रह्माने उनकोदर्शनदेकर कहा तुम्हें जो इच्छाहोय सो बरदानमांगो तब उन्होंने दण्डवत्करके विनयकिया कि हमैं परमेश्वरकी भक्तिप्राप्तहो ब्रह्माजी बोले तुम्हें ऐसीभक्ति परमेश्वरकीहोगी जो दूसरेकोमिलना कठिनहै तुमलोग ब्रजगोकुलमें जाकर मनुष्यका तन धारणकरो परब्रह्म परमेश्वर सगुणअवतार लेकर तुम्हें अपने बाललीलाका सुख दिखलावैंगे उसीवरदानके प्रतापसे द्रोणने नन्दजी का व धराने यशोदाजी का जन्म पाकर परमेश्वर के बाललीला का सुख देखा था ॥

नवां अध्याय ॥

यशोदा का श्यामसुंदरको ऊखल में बांधना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् एकदिन प्रातसमय यशोदा गोपियोंसमेत अपने घरमें दहीमथतीथीं सो मथानीकाशब्द मेघरूपी सुनकर मोहनप्यारे नींदसे जागे व मैया २ करके रोने व पुकारने लगे जब मथानी का अधिकशब्दहोने से उनकारोना किसी ने नहींसुना तब आपउठकर रोवनी सूरत बनाये हुये यशोदाकेपास जाकर तुतलाते हुये बोले अयमैया तू पुकारनेपरभी मुझे कलेवादेने नहींआई तुझको अबतक घरके काज

स छुट्टीनहीं मिली ऐसाकहकर नंदलालने यशोदाकी मथानी पकड़ली व चरुई में से माखन निकालकर फेंकनेलगे तब नन्दरानी झुंझलाकरबोली अयबेटा तुमने यहक्या चालनिकाली है चलउठ तुझे कलेवादेऊं यहसुनकर नन्दलालजी ने कहा पहिले तैंने कलेवा क्योंनहींदिया अब मरीबलाय कलेवालेवे जब यशोदाने श्यामसुन्दरको फुसला कर गोदमेंउठालिया व मुखचूमकर माखनरोटी खानेवास्ते दिया तब मोहनप्यारे प्रसन्न होकर खानेलगे व यशोदा अपने अंचलका ओटकरके खिलाने लगीं व श्यामसुन्दर अपनीमाताके जड़ाऊगहने में अपनामुख देखकर प्रसन्नहोते थे व यशोदा बड़ेप्रेमसे उन कोलिये बैठीथीं उससमय श्रीकृष्णजी ने अपनीमायासे दूध जो चूल्हेपरचढ़ाथा उबाल दिया तब यशोदा श्रीकृष्णजी को गोदसे उतारकर आप दूधबचानेचली तब मुरली-मनोहरने क्रोधितहोकर मनमेंकहा देखो माताने हमसे दूधको अच्छाजाना जो पृथ्वीपर मुझे पटककर उसे उतारने चलीगई ऐसाबिचारकर नन्दलालजी ने बर्त्तनफोड़के सबदही व मट्ठा गिरादिया व माखनभरी मट्ठकीलेकर ग्वालबालों में चलगये व एक उखलीपर जो वहां औंधीपड़ी थी बैठगये तब उनकेसाथी लड़कों ने कहा नित्यतुम हमारे घरका माखन व दही खायाकरते थे आज अपने घरका हमैंभी तो खिलावो यहबात सुनकर श्यामसुन्दर प्रसन्नहुये व अपने चौगिर्द सबको बैठालकर माखनबांटके खानेलगे जब यशोदाने आनकर अपनेआंगनमें दही व मट्ठेकी कीचड़देखी तब छड़ी हाथमें लेकर जहांपर श्यामसुन्दर माखनखारहेथे जापहुँची उसे क्रोधमें आतेदेखकर केशवमूर्ति ग्वाल-बालोंसमेत भागचले व यशोदा उनके पीछे दौड़ी ॥

दो० आगे सुन्दर श्यामघन पाछे यशुमति माय ।
दामिनि ज्यों दौड़ी फिरै हरि नहिं पकड़ोजाय ॥

जब श्यामसुन्दर पकड़ाई नहीं दिये तब यशोदा बहुतसी गोपियों को साथलेकर पकड़ने वास्ते दौड़ी तिसपरभी वह हाथनहींआये हे राजन् जिस परब्रह्म परमेश्वर ने अपने दोपगमें चौदहोंलोक नापलियाथा उनको किसकीसामर्थ्य है जो पकड़सके जब यशोदाआदिक सबव्रजबाला दौड़ती २ थकगईं व श्यामसुन्दरके शरीरतकभी किसीका हाथ नहींपहुँचा तब दीनानाथ भक्तवत्सल माताको दुःखीदेखकर अपनीइच्छासे यशोदा के पास खड़ेहोगये सो यशोदाने उन्हें पकड़लिया व क्रोधवश उन्हें बांधनेवास्ते रस्सी मांगकरकहा मैं तुझे समझाते २ हारगई पर तैंने माखन व दही चुराकर खाना नहीं छोड़ा अबतुझे ऊखलमेंबांधूंगी जब ऐसाकहकर यशोदा श्यामसुन्दरको रस्सी से बांध-नेलगी तब गोपियों ने नंदरानी से हँसकरकहा तुमको हमलोगोंका कहना झूठा मालूम होताथा आज अपनीहानि देखकर तुम्हैंभी सत्यमालूमहुआ यह बहुतअच्छीबात है जो माखनचोरको बांधतीहो जब यशोदा श्यामसुन्दरको रस्सी में बांधकर गांठदेनेलगी तब

बैकुण्ठनाथकी मायासे दोअंगुल रस्सी छोटीहोगई उससमय यशोदाने गोपियोंसे रस्सीलेने वास्तेकहा यहबात सुनतेही सबब्रजबाला हँसकर कहनेलगीं इन्होंने हमारा माखन व दही बहुत चुराकर खायाहै सो इनकोबांधनेवास्ते हमरस्सी लेआदेती हैं जब गोपियां अपने २ घरसे रस्सीलाईं और यशोदा सबरस्सियोंमें गांठदेकर दीनानाथको बांधनेलगीं तबभी परमेश्वरकीइच्छासे गांठदेतीसमय वहरस्सी छोटीहोगई यहमहिमा श्यामसुन्दरकी देखकर सबको आश्चर्य मालूमहुआ जब रस्सी पूरी न होने से यशोदा आदिक गोपियां हार मानगईं तब केशवमूर्ति अपनीइच्छासे एक छोटीरस्सी में बँधिगये तब यशोदाने क्रोध बश गांठदेकर वहरस्सी ऊखलमें बांधदी व सब ब्रजबालाओं को सौगन्ददेराकर कहा इसे कोई मतखोलना और उसीतरह बैकुण्ठनाथको बँधाहुआ छोड़कर यशोदा घरका काम करनेलगी इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरकादर्शन ब्रह्मा व महादेवको जल्दी ध्यानमें नहींमिलता वह ऐसे भक्तआधीनरहते हैं कि रस्सीमें बँधिगये व ऐसीमाया परमेश्वरकी बलवान्है कि यशोदाने दोबेर उनके मुखमें तीनोंलोकका व्यवहार देखाथा तिसपरभीउनको न पहिंचानकर ऊखलमें बांधदिया॥

दो० आप बँधावत प्रेमबश भक्तन छोड़त फंद।
वेद पुकारत रात दिन भक्तबछल नँदनंद॥

हे राजन् पहिलेतो गोपियां श्यामसुन्दरके बांधती समय हँसती थीं यशोदाके जाने उपरान्त जब गोपियोंने मोहनप्यारे को बँधेहुये उदास देखा तब सबब्रजबाला उनके प्रेममेंरोकर इसतरह पछतानेलगीं देखो हमलोगोंने किसवास्ते रस्सी अपनेघरसे लादी जो हमाराप्राणप्यारा बांधागया फिर सबगोपियों ने यशोदाके पास जाकरकहा तुमने माखन व दहीखाने व लुटाने के कारण श्यामसुन्दरको बांधाहै हमसे अपराधहुआ जो तुमको आनकर उलहनादिया अब हमारेऊपर दयाकरके उनको खोलदेव॥

दो० बारबार देखत बदन हिचकिनरोवत श्याम।
बज्रहुसे तेरोहियो कठिन अहो नँदबाम॥

यहबचन सुनतेही यशोदा ने झुँझलाकरकहा तुमलोग अपने २ घरजाव अब झूंठी प्रीति दिखलाने आईहो प्रतिदिन तुम्हींलोग उलहनादेने आतीथीं जब यशोदाने गोपियोंकाकहना नहींमाना तब सबब्रजबाला उदासहोकर रोतीहुई अपने २ घरचलीगईं उससमय एकबालकनेजाकर बलरामजीसे कहा कि यशोदाने श्यामसुन्दरको ऊखलमें बांधाहै सो वे बैठेरोते हैं बलभद्रजी यहबचन सुनकर दौड़ेगये व अपनेभाईको बँधे देखते ही रोकरकहा हे भाई मैं तुमको नित्य समझाताथा कि गोपियोंके घर माखनचुराने मति जायाकरो मातामारैगी सो तुमने हमाराकहना नहींमाना अब मैं तुम्हारे छुड़ाने वास्ते

यशोदाकेपास जाताहूं ऐसाकहकर बलरामजी यशोदा के पासगये व उससे हाथजोड़ कर कहा हे माता मेरेभाई को छोड़देव उसकेबदले चाहो मुझको बांधरक्खो न मालूम तुम्हारे कौनजन्मके तपकरने से वह संसार में जन्म लेकर तुम्हें बाललीला का सुख दिखलाते हैं और तुमने उनको नहींपहिंचानकर गोरसहानि करनेके बदले बांधाहै ॥

दो० छूतो तनिक जो और कोउ आज देखत्यों सोय ।
तू जननी कछु बश नहीं जो कछु करो सो होय ॥

यहवचन सुनकर यशोदाबोली हे बलभद्र मेरीबातसुनो आजमुझे श्रीकृष्णको दण्ड अच्छीतरह करने देव मैंने उसे बहुतसमझाया तिसपरभी उसने गोपियों के घरजाकर माखन व दहींचुराना नहींछोड़ा ब्रजबासियों ने उसकानाम माखनचोर रक्खा है भला तुमहीं बतलाओ मेरेघर उसे कौनबस्तु खानेवास्ते नहींमिलती जो वह बिरानेघर दही व माखनचुराकर खाताहै और मेराकहना कुछ नहींमानता जब ग्वालिन मुझे उलहना देतीहैं तब मैं मारेलज्जाके डूबजाती हूं और सबजगहजाकर धूममचाता है घरमें एक साइत नहीं बैठता इसलिये आज मैंने उसको धमकानेकेवास्ते बांधा है तिसपर तुमभी मुझे कहतेहो कि तुमको दूध व माखन कन्हैयासे अधिकप्याराहै यहबात सुनकर बल-रामनेकहा हे माता तुमकोछोड़कर किससेकहैं दूसरा हमारे मनकारखनेवाला कौनहै व हे मैया गोपियां झूंठाउलहना श्रीकृष्णजीका तुम्हें देती हैं सबब्रजबाला श्यामसुन्दर से प्रीतिरखकर उनको देखनेवास्ते उलहनादेने के बहाने तुम्हारेपास आवती हैं ॥

दो० दधिमाखन पय कान्हको कान्हा की सब गाय ।
मोको है बल कान्हको तू नहिं जानत माय ॥

यहबात सुनकर यशोदानेकहा तुम दोनोंभाइयों का एकसम्मत है जब बलरामजी के कहनेसेभी यशोदाने मोहनप्यारेको नहींछोड़ा तब बलभद्रजी इच्छा श्यामसुन्दरकी इसीतरहपर जानकर वहांसे ब्रजनाथजी के पासआये व हँसकर उनसेकहा आपकीलीला तुम्हारे बिना दूसरा कौन जान सक्ता है ॥

चौ० को तुम छोरन बांधनहारा । तुमछोरत बांधतसंसारा ॥

हे भाई तुम नन्दरानी की भक्तिसे उसकेहाथ बिकगये हो आप दैत्यों के मारने व अपनेभक्तोंका दुःखछुड़ानेवास्ते लक्ष्मीपति होकर सदा भक्तों के बश रहतेहो इस कारण कुछबल तुम्हारा भक्तोंपर नहींचलता ॥

दो० बार बार पद नाय शिर बिनती प्रभुहि सुनाय ।
प्रेम मगन निरखत बदन हर्षसहित दोउ भाय ॥

ऐसाकहकर बलरामजी वहांसे चलेआये तब श्यामसुन्दरने विचारकिया कि नलकूबर मणिग्रीव दोपुत्र कुबेरदेवताके नारदमुनिके शापदेने से नन्दजी के द्वारपर दोवृक्ष आंवलेकेहोकर खड़े हैं व यमलार्जुन उनकानाम यहांप्रसिद्ध है उनको उसशापसे छुड़ाकर अपनादर्शनदिया चाहिये उन्हीं के उद्धारकरनेवास्ते तो मैंने अपनीभुजा बँधवाई है ॥

दो० ब्रजबासी प्रभु भक्तहित आप बँधायो दाम।
ताही दिन से प्रकट भो दामोदर अस नाम ॥

दशवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का नलकूबर व मणिग्रीव को उद्धारकरना ॥

राजापरीक्षित ने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजी से पूंछा महाराज आप विधिपूर्वक हाल दोनोंवृक्षोंका बर्णनकीजिये कि किसवास्ते नारदजी ने उनको शापदियाथा शुकदेवमुनि बोले हे राजन् पिछलेजन्ममें नलकूबर व मणिग्रीव दो बेटे कुबेरदेवताके महादेवजीकी भक्तिकरने से धनपात्रहोकर कैलासपर्वतपर रहते थे एक दिन वहदोनों अपनी स्त्रियां साथलेकर बनबिहार करनेगये जबवहां मदिरापीकर मतवाले हुये तब अपनी स्त्रियोंसमेत नंगेहोकर गंगाजीमें जलक्रीड़ा करनेलगे व उसीसमय अचानक नारदजी वहां आनपहुँचे तब उनकीस्त्रियां नारदमुनिको देखतेही अति लज्जितहोकर अपना २ बस्त्र पहिरनेलगीं और वे दोनों मतवाले तरुणाई के अभिमानसे अंधेहोकर उसीतरह खड़ेरहे उन्होंने धनकेगर्व्वसे नारदजीको दण्डवत्‌भी नहींकिया और उन्हें नारदमुनिकाआना बुरामालूमहुआ यहदशा देखकर नारदजी ने मनमेंकहा देखो इनको द्रव्यका घमण्डहुआ इसलिये काम व क्रोधके बशहोकर उसे अच्छाजानते हैं और किसीको कुछ नहीं समझते व मनुष्य धनपावनेसे परस्त्रीगमन व जीवहिंसाकरके जुआखेलता है व अपनेशरीरको अमरजानकर यह नहींसमझता कि एक दिन अवश्य इसका नाशहोगा और मरनेउपरांत इसतनको पड़ारहने से कुत्ता व कीड़े खाजावैंगे व जलाने से राखहोजायगा इसलिये धनवान् मनुष्यको अच्छे बुरे छोटे बड़ेका बिचार रखना उचितहै व गरीब मनुष्यको अभिमान न होकर केवल पेट भरने से काम रहताहै और कंगाललोग परमेश्वरके भक्त होते हैं व धनपात्रसे हरिभजन नहीं बनपड़ता व मूर्खलोग इस संसारी झूँठीमायामोहमें फँसकर अपना तन व धन व परिवार देखनेसे प्रसन्न होते हैं बुद्धिमान् व हरिभक्त मनुष्य धनवान् व कंगाल दुःख व सुखको बराबर जानते हैं ऐसा बिचार कर उनदोनोंका घमण्ड तोड़ने वास्ते नारदजी ने यह शापदिया कि तुम दोनों भाई आंवले के वृक्षहोकर मर्त्यलोकमें रहो तब तुमको धनका अभिमान करने व मदिरा पीनेका स्वाद मिलेगा जब किसीको कुछरोग उत्पन्नहो तब वह उसका दुःख उठाकर

दूसरे के कष्टकोभी उसीतरह जानताहै जिसके पांवमें कांटा चुभाहो वह दूसरेके कांटा चुभने व पीड़ाहोनेका हाल जानै ॥

चौ० जाके पैर न फटै बिवांई । वह का जानै पीर पराई ॥

जबतक मनुष्य दुःख नहीं पाता तबतक उसको दूसरेका दुःख देखकर दया नहीं आती तरुणाई व धनकी शोभा धर्म व शील व लज्जाहै सो तुमने छोड़दी इसलिये थोड़े दिन तुमको दण्ड भोगनापड़ेगा जब उन दोनों ने यह बात सुनी तब उनको तन व धनका अभिमान टूटगया व दोनों भाई दौड़कर नारदजी के चरणोंपर गिरपड़े और हाथजोड़कर विनयकिया कि इस शापसे हमारा उद्धार कब होगा नारदमुनि ने कहा जब श्रीकृष्णजी पृथ्वीकाभार उतारने वास्ते मथुरापुरी में जन्मलेकर नन्द व यशोदाके घर बाललीला करैंगे तब तुम्हारा मनोरथ सिद्धहोगा ॥

दो० मोदर्शनको गुण सरस समझे क्यों न बिचार ।
कृष्णदर्श तुम पाइकै होइहौ तब उद्धार ॥

हे राजन् उसीशापसे वह दोनों गोकुलमें आनकर यमलार्जुन नाम आंवलेके वृक्ष हुयेथे उससमय श्रीकृष्णजी उनका शाप यादकरके ऊखलको घसीटतेहुये उन वृक्षों के पास लेआये व दोनों वृक्षोंमें ऊखल अड़ाकर ऐसा झिटकदिया कि वह जड़से उखड़ गये व उन वृक्षोंके गिरनेका बड़ा शब्दहुआ व उनकी जड़मेंसे दो मनुष्य अतिसुंदर व तेजवान् प्रकटहुये जब मोहनप्यारे ने अपने चतुर्भुजी स्वरूपका उन्हें दर्शन दिया तब दोनों भाइयों ने उस मोहनी मूर्त्तिको दण्डवत् व परिक्रमाकरके हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ सिवाय तुम्हारे और कौन हम ऐसे अधर्मियों की सुधि लेवै आप जन्म व मरणसे रहितहोकर केवल हरिभक्तों के सुखदेने वास्ते अपनी इच्छासे अवतार लेतेहैं और सब संसार तुम्हारी मायासे उत्पन्न होताहै व ब्रह्मादिक देवता आपके चरणोंका ध्यान अपने हृदय में रखतेहैं सो नारदजी ने हमारे ऊपर बड़ीकृपा करके शापदियाथा जिसकारण आपके चरणोंका दर्शन मिलकर सब दुःख हमारा छूट गया जिसतरह सूर्य्य व चन्द्रमाके प्रकाशसे सब वस्तु दिखलाई देतीहै व अँधेरे में कुछ नहीं सूझपड़ता उसीतरह तुम्हारा भजन व स्मरण करने से ज्ञानकी आंख खुल जातीहै और जो मनुष्य आपसे बिमुखहैं उन्हें अन्धासमझना चाहिये यह सब स्तुति सुनकर दीनानाथ बोले नारदमुनि ने तुमलोगों को गोकुलमें वृक्ष बनादियाथा उन्हीं की कृपासे मेरा दर्शन तुम्हैं मिला अब जो कुछ तुमको इच्छाहो वह बरदान मांगो ऐसी कृपा अपने ऊपर देखकर नलकूबर व मणिग्रीवने विनयकिया हे महाप्रभु जब आपका दर्शन प्राप्तहुआ तब हमलोगों को किसी बातकी इच्छा नहीं है पर इतना बर-

दान कृपाकरके दीजिये कि हमारे हृदयमें सदा आपकी नवधाभक्ति बनीरहै ऐसावचन सुनकर श्यामसुन्दर बहुत प्रसन्नहुये व इच्छापूर्वक उन्हें बरदान देकर बिदाकिया सो दोनों भाई बिमानपर बैठकर कुबेरलोकमें चलेगये ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

नन्दजीका गोकुल छोड़कर वृन्दावनमें बसना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब वह दोनों वृक्ष गिरपड़े तब वृक्षके गिरनेका शब्द सुनकर यशोदा अतिव्याकुलतासे दौड़ी व जिसजगह श्रीकृष्णको बांधगई थी वहां उनको नहींदेखा तब अधिक घबड़ाकर श्यामसुन्दरका नामलेके पुकारनेलगी व नन्दजी भी यशोदाका चिल्लाना सुनकर दौड़आये व जहां दोनोंवृक्ष गिरेथे वहांपर क्या देखा कि नन्दलालजी उन वृक्षोंके बीचमें ऊखलसे बँधे सिकुड़े बैठे हैं तब नन्दजी ने केशव मूर्त्तिको ऊखलसे खोलकर गोदमें उठालिया व छाती से लगाकर रोनेलगे व यशोदा पर क्रोधकरकेकहा तैंने मेरे प्राणप्यारेको ऊखलमें क्यों बांधाथा आज परमेश्वरने इसका प्राण बचाया उससमय मोहनप्यारे यशोदाकी ओर कनखियों देखकर अपनी आंख मलतेजाते थे व यशोदाने उनको नन्दजीके गोदसेलेकर अपने गले लगालिया जैसे साँप अपना मणि खोयाहुआ पावै वैसा हर्ष यशोदाको हुआ व गोपियां मोहनप्यारेका प्राण बचने से बहुत प्रसन्न हुईं व नन्द व उपनन्दआदिक वहां इकट्ठे होकर आपसमें कहने लगे ऐसे पुराने वृक्ष बिना आंधी आये जड़से क्योंकर उखड़गये इसबातका बड़ाआश्चर्य मालूम होता है तब एक ग्वालबाल ने जो चरित्र देखाथा ज्योंका त्यों कहसुनाया पर उस बालककी बातका कोई बिश्वास न करके आपसमें कहनेलगे कि मोहनप्यारे से इतने बड़े वृक्ष कैसे गिरेहोंगे तब दूसरे ने कहा कदाचित् ऐसाही हुआहो परमेश्वरकी गति परमेश्वर जाने दूसरा कौन जानसक्ताहै इसीतरह सब कोई आश्चर्य्यकी बातैं करते हुये मनमोहन प्यारेको घरमें लेआये व नन्दने दान व दक्षिणा ब्राह्मण व कंगालोंको देकर श्रीकृष्णजी से पूँछा हे बेटा तुमकोभी दो मनुष्य वृक्षमेंसे निकलतेहुये दिखलाई दियेथे ब्रजनाथने कहा हे बाबा हमने कुछ नहीं देखा यह मीठाबचन सुनतेही उनको नन्दजी ने अपने गले लगालिया व उनके शरीरमें जो धूर लगी थी सो पोंछ दिया तब नन्दलालजी बोले ॥

सो० माखन ल्यावरि मात भूखलगी मोको बहुत ।
आज न खायों प्रात सुनत बचन यशुमति हँसी ॥

यह बचन सुनतेही यशोदाने माखनरोटी व मेवा मिठाई आदिक लेआदिया सो मोहनप्यारे ने ग्वालबालों समेत बड़े हर्ष से भोजनकिया जब श्रीकृष्णजी के बर्षगांठ

का दिनआया तब नन्दजीने अपनेजाति भाइयों व ब्राह्मणोंको सन्मानपूर्व्वक खिलाकर बड़ी खुशीमनाई और उपनन्दआदिक ग्वालोंसे कहा गोकुलमें नित्यनया उत्पातउठता है इसलिये दूसरेस्थानपर जहांघास व जलकासुखहो चलकर बसाचाहिये यह सुनकर उपनन्दने कहा वृन्दाबनमें जहां गोबर्द्धनपर्व्वतहै चलकर बसो तो अच्छीतरह आराम पावैंगे जब यह सम्मतसबको भलामालूमहुआ तब दूसरेदिन शुभसाइतमें नन्दजी अपने जातिभाई गोकुलवासी व घरकी सब वस्तुसमेत वृन्दाबनकोगये व सन्ध्यासमय पहुँच कर वृन्दादेवीका पूजनकिया और आनन्दपूर्व्वक वहांबसे सो श्यामसुन्दरकी कृपासे सब वृन्दावन फूल व फल व घासआदिकसे हराहोगया अनेकरंगके पक्षीबोलनेलगे और सब कोई वहां अपनेरहनेवास्ते अच्छे २ स्थानबनाकर आनन्दपूर्व्वक उसमेंरहनेलगे व गौ व बछवाआदिकने वहांचरने का बड़ासुखपाया व सब कोई नित्यनई २ लीला केशवमूर्त्तिकी देखकर सुखपावतेथे ॥

दो० सुख यशुमति अरुनंद को कोकरिसकै बखान ।
सकल सुखनकै खानिहरि जहांरहे सुखमान ॥

हे राजन् जब ब्रजनाथजी पांचवर्षकेहुये तब उन्होंने नन्दरानीसे कहा हे मैया हम भी बछराचरानेजावैंगे तुम बलदाऊसे कहिदेव कि बनमें हमको अकेला न छोड़ैं तब यशोदाबोलीं हे बेटा बछराचरानेवास्ते बहुतसेबालक तुम्हारे यहां चाकरहैं मेरीआंखों के सामनेसे तुम अलगमतहो यह सुनकर नन्दलालजीने कहा तुम मुझको बछराचराने व खेलनेवास्ते बनमें न जानेदेवगी तो मैं माखन रोटीनहींखाऊँगा जब यशोदा कन्है-याजीके हठकरनेसेहारगई तब शुभसाइतमें ब्राह्मणोंको कुछ दानदेकर सब ग्वालबालों को बुलवाया व श्यामबलरामको सौंपके उनसेकहा तुमलोग बछराचराने बहुत दूरमत जाना व सन्ध्याहोनेके पहिले दोनोंभाइयोंको घरपर लेआना व इनकोबनमें अकेले न छोड़कर अपनेसाथलिये रहना जब ऐसा समझाकर श्रीकृष्ण व बलरामको बछराचराने वास्ते बिदाकिया तब श्याम व बलराम ग्वालवालोंसमेत यमुनाकिनारे बछराचराकर आपसमें खेलनेलगे ॥

दो० दिये बच्छ बगरायसब चरत आपने रंग ।
बच्छ चरावत नंदसुत मिलि ग्वालनके संग ॥
सो० उर मुक्तनकी माल शीशमुकुट कटिपीतपट ।
हाथ लकुटियालाल डोलत ग्वालन संग प्रभु ॥
दो० माखन रोटी और जल शीतल छाकबनाय ।
दीन्हों जलदी ग्वालसँग यशुमति बनहिंपठाय ॥

जब कंसनेसुना कि नन्दआदिक गोप गोकुल छोंड़कर वृन्दाबनमें बसेहैं तब उसने बत्सासुरको बुलाकर विनयपूर्व्वक श्यामसुन्दरके मारनेवास्तेभेजा जब बत्सासुर बछरा रूप वृन्दावनमेंआया व जो बछरे श्यामसुन्दर चरातेथे उन्हींमें वहभी मिलकर चरने लगा और उसे देखतेही सबबछरे डरकर जिधर तिधरभागगये तब केशवमूर्त्ति ने उसे पहिंचानकर आंखकीसैनसे बलरामजीसे कहा हे भाई यह राक्षस कंसके भेजनेसे बछरा रूपबनकर मेरे मारनेके वास्ते आयाहै जब बत्सासुर अपनी घात लगायेहुये चरते २ श्रीकृष्णचन्द्रजीके पास आनपहुँचा तब मोहनप्यारेने पिछलापांव उसकापकड़के घुमाकर वृक्षकी जड़पर ऐसापटका कि प्राण उसका निकलसटका उससमय देवतोंने श्यामसुन्दरपर फूलबर्षाये व ग्वालबालबोले हे नन्दलालजी तुमने बहुतअच्छाकिया जो कपटरूपराक्षसको मारडाला नहींतो हम सबको यह खाजाता फिर आपसमें सब कोई प्रसन्न होकर खेलनेलगे जब राजाकंसने बत्सासुरकेमरनेका हालसुना तब अति शोचितहोकर बकासुर उसके भाईको भेजा सो वह बकुलारूपसे वृन्दावनमें आया व यमुनाकिनारे पर्वतसमान रूपबनके इसघातमें बैठा कि श्रीकृष्णजीआवैं तो मछलीकीतरह उनकोनिगल जाऊं व श्यामसुन्दरने उसकोदेखकर जाना कि यह राक्षसहै और किसी ग्वालबालने नहीं पहिंचाना जब ग्वालबालोंने मोहनप्यारेसे कहा हे भाई हमने तो इतना बड़ाबकुला कभी नहींदेखाथा तब श्यामसुन्दरबोले तुमलोग धैर्य्यरक्खो हम इसकोमारैंगे ऐसाकहकर नन्दलालजी ग्वालोंके बर्जनेपरभी उसबकुलेकेपास चलेगये तब वह श्यामसुन्दरको उठाकर निगलगया व मुख अपना बंदकरके प्रसन्नहोकर मनमें कहनेलगा आजमैंने बत्सासुर अपनेभाईका बदलालिया और यहहाल देखतेही सब ग्वालबाल व्याकुल होकर आपसमें कहनलगे हमलोग जाकर यशोदाजीको जिन्होंने अपनापुत्र हमैं सौंप दियाथा क्याकहैंगे इससमय बलभद्रजी भी न मालूम कहां पीछे रहगये हैं ऐसाकहते व रोतेहुये ग्वालबाल मारेडरके वहांसेभागे जब थोड़ीदूरपर बलभद्रजीसे भेंटहुई तब लड़कोंने बलरामजीसे कहा हमारेबर्जनेपरभी मोहनप्यारे बकुलेकेपास चलेगये सो वह उनको निगलगया बलरामजीबोले तुम मतडरो नन्दलालजी उसकोमारकर तुमसे आन मिलैंगे जब ब्रजनाथने ग्वालबालोंको दुःखीदेखा तब अपनेअंगमें ऐसीज्वाला उत्पन्न की कि उस बकुलेका पेट जलनेलगा जब उसराक्षसने व्याकुलहोकर श्यामसुन्दरको उगिलदिया तब नन्दलालजीने एकठौर उसकपटरूपको पांवके नीचेदबाकर व दूसरा ठौर हाथसेपकड़के चीरडाला तो वह मरगया उससमय देवतोंने बड़ेहर्षसे बाजनेबजाये॥

दो० बकासुर सुरपुरगयो अधम असुरतन त्याग ।
सुरहर्षत बर्षतसुमन गगनसहित अनुराग ॥

जब मरतीसमय उसबकुलने बड़ाशब्द किया तब बलरामजीने ग्वालबालोंसे कहा

कि कन्हैयाने राक्षसको मारडाला हमलोगभी देखें जब सब बालक व बलरामजी वहां पर गये तब नन्दलालजीने अपने सखालोगोंसे कहा हमने चोंथफाड़कर इसकोमाराहै यह बातसुनतेही सब ग्वालबाल परमेश्वरको मनाकर कहनेलगे कि आजनन्दलालका प्राण नारायणजीने बचाया और तीनोंलोकमें कोई इनकामारनेवाला नहीं है जबसे ये उत्पन्नहुये तबसे इन्होंने कई राक्षसोंको मारडाला यह हमारा बड़ाभाग्य समझनाचाहिये जो इनके सखा कहलावतेहैं जब मोहनप्यारे सन्ध्यासमय ग्वालबाल व बछरोंसमेत हँसते व खेलतेहुये अपने घरआये तब मुरलीकी ध्वनिसुनतेही सब ब्रजबाला प्रसन्नहोकर अपने २ घरसेबाहर निकलआईं व बनवारीलालकी छविदेखकर सबोंने अपनी २ आँखें ठण्ढीकीं और ग्वालबालोंने अपनी २ माता व यशोदाआदिकसे बकुला व बत्सासुर दोनोंराक्षस मारेजानेका हाल ज्योंका त्यों कहदिया ॥

दो० मोहन लीला नन्दसों ग्वालन कही सुनाय ।
देवी देव मनाइकै मात लियो उरलाय ॥
सुनि ग्वालनके मुखन ते बत्सासुर को घात ।
यशुमति सबके पांवपरि बार बार पछितात ॥
सो० भई महर उर त्रास बचे आज हरि असुरते ।
मैं न बिगारयो काह भये सहायक आनि बिधि ॥

हे राजन् उसदिन नन्दजी ने बहुतसादान मोहनप्यारे के हाथ से कराकेकहा हम लोग गोकुलछोड़कर वृन्दाबन आनबसे तिसपरभी नित्यनया उत्पात श्रीकृष्णजी के पीछे उठताहै अब यहांसेछोड़कर कहांजावैं परमेश्वरकी कृपासे हमारे कुलदेवता सहायकहुये जो श्यामसुन्दरकाप्राण राक्षसोंके हाथसेबचा व यशोदा बहुतपछताकर नन्दलालजीको समझानेलगी ऐ बेटा तुमबनमें मतजायाकरो तुम्हारेपीछे अनेकराक्षस लगेरहते हैं तब मोहनप्यारे ने कहा ऐ मैया हमको बनमें ग्वालबाल अकेले छोंड़देते हैं और मैं उनकेहाथसे बहुतदुःख पाताहूं अब मेरीबलाय बछड़ाचरानेजावै मुझको तू चकईभवँरा मँगादे हम गांवमें खेलाकरेंगे ॥

दो० मोहिलियो मन जननिको मधुरे बचन सुनाय ।
बत्सासुर का शोचडर क्षणमें दियो मिटाय ॥

हे राजन् यशोदा ने प्रसन्नहोकर उसीसमय उनको चकई व भवँरामँगादिया तब ग्वालबालोंके साथ उसे खेलनेलगे व गोपियां नन्दलालजीके साथ अतिप्रीति रखकर एकक्षण बिनादेखे उनके नहींरहतीथीं इसलिये जब चकई खेलतासमय कोई ब्रजबाला

उनकेनिकट आनकर खड़ीहोती थीं तब नन्दलालजी हँसीकीराह चकईघुमाकर उसके गहना में जो बीचगले के पहिनेरहती थीं फँसाकर उनको छेड़ते थे और वे गोपियां अंतःकरणसे प्रसन्नहोकर प्रकटमें गालियां देतीथीं और केशवमूर्ति किसी से जामुन व बेर आदिक फललेकर उसे जो अन्न देतेथे वह उनकी महिमासे मोती रत्न होजाताथा इसलिये अनेक ब्रजबाला बेचने के बहाने लालचबश उनके यहां आतीथीं व मनहरण प्यारे इसीतरह नित्यनई लीलाकरके वृन्दाबनबासियों को सुख देतेथे ॥

दो० धनि २ ब्रजके नारिनर धनि यशुदा धनि नन्द ।
बिहरत जिनके सदन में ब्रह्म सच्चिदानन्द ॥
सो० कहि २ देव सिहाय धन्य २ बृन्दाबिपिन ।
जहां चरावतगाय सकल सुरनशिर मुकुटमणि ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् ग्वालबालों ने पिछलेजन्ममें बड़ा पुण्य कियाथा इसलिये परब्रह्मके साथ जिनका दर्शन ब्रह्मादिक को जल्दी ध्यान में नहीं मिलता वह खेलतेथे ॥

बारहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीकरके अघासुरका माराजाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् एकदिन श्यामसुन्दर यमुनाकिनारे खेलने गये वहां पर केशवमूर्त्ति नटवररूप बनाये पीताम्बरकी कछनीकाछे किरीट कुण्डल मुकुट पहिने उपरना ओढ़ लकुटिया हाथमें लिये एक सखाके कांधेपर हाथ धरेहुये खड़े थे वहांपर राधिका वृषभानुदुलारी जो लक्ष्मीजीका अवतार अतिसुन्दरि सात आठवर्षकी थी स्नान करने गई जब श्यामसुन्दर व राधाकी आंखें सन्मुखहुईं तब पिछली प्रीति यादकरके श्रीकृष्ण उसपर मोहित होगये व श्यामाका प्रेमभी उनके ऊपर बहुत लगगया जब दोनोंकी प्रीति अन्तःकरणसे बढ़ी तब वृन्दावनबिहारी ने हँसकर पूछा तुम्हारा क्या नामहै और तुम किसकी पुत्री अतिसुन्दरी व गोरीहो हमने आजतक तुम्हें कभी नहीं देखा यह प्रीति भरीहुई बात सुनकर श्यामाबोली मैं वृषभानुकी बेटीहूं व राधिका मेरा नाम है मैं अपने घर सखियों के साथ खेलती हूं बाहर नहीं निकलती इसलिये तुमने हमको नहीं देखाहोगा पर मैंने सुनाथा कि नन्दजीका बेटा गोपियोंका माखन चुराकर खाया करताहै सो आज मैंने देखा तुम्हीं नन्दकुमारहो यह सुनकर मोहनप्यारे ने कहा मैंने तुम्हारा क्या चुराया हमारा मन तुम्हारेसाथ खेलनेको चाहताहै सो तुम घड़ी दोघड़ी आनकर हमारे साथ खेलाकरो श्यामसुन्दरकी प्यारी २ बातें सुनकर श्यामाभी अन्तःकरणसे उनपर मोहित होगई पर सखियोंके डरसे प्रेम अपना प्रकट नहींकिया ॥

दो० गुप्तप्रीति प्रकटत नहीं दोऊ हृदय छिपाय ।
मनमोहन प्यारी चली घरको नयन चलाय ॥

उससमय तो राधिका यह बातें करिकै अपने घर चलीगई पर मन उसका केशव मूर्त्तिमें लगारहा सन्ध्यासमय राधा अपनी मातासे दूध दुहानेका बहानाकरके खरकोंमें मोहनप्यारे से भेंटकरने चली ॥

दो० लै मातासों दोहनी चली दुहावन गाय ।
मनअटक्यो नँदलालसों गई खरक समुहाय ॥
सो० मग २ शोचत जाय कित देखौं वह सांवरो ।
जिन मनलियोचुराय खरकमिलन मोसोंकह्यो ॥

हे राजन् जब राधाप्यारी व केशवमूर्त्तिसे खरकोंमें भेटहुई तब श्यामसुन्दरने अपनी मायासे घटा व बदली उत्पन्नकरके उसी अँधेरे में उससे प्रेमपूर्व्वक बातेंकी जब राधा प्यारी बिलम्बहोने से हरबराकर अपने घर चली तब मोहनप्यारे ने उसकी सारी आप ओढ़ली व अपना पीताम्बर उसे देदिया जब श्रीकृष्णजी वह सारी ओढ़े हुये अपने घरआये तब यशोदाने उनको देखकर बिचारा कि इसने किसी गोपीसे प्रीतिकरके उसकी सारी लेली है मोहनप्यारे अन्तर्यामी यशोदाके मनका हाल जानकर बोले हे मैया आजु मैं यमुना के किनारे गौवों को पानी पिलाने गयाथा वहांपर एक गोपी अपनी सारीरखकर स्नान करनेलगी सो एक गौ वहांसे भागी जब मैं गाय बहोरने गया तब उस गोपी ने डरके मारे जल्दी में मेरा पीताम्बर जो यमुनाकिनारे रक्खाथा पहिनलिया व अपनी सारी छोड़कर चलीगई वह ब्रजबाला मेरी पहिंचानी हुई है अभी जाकर अपना पीताम्बर लेआताहूं ऐसा कहकर वहांसे बाहर चलेआये व अपनी मायासे उसीसारीको पीताम्बर बनालिया और फिर यशोदाके पास जाकर कहा मैं अपना पीताम्बर बदललाया यशोदा उनकी बात सच्च जानकर चुप होरही व राधा प्यारी दूध दुहाकर श्यामसुन्दरका पीताम्बर पहिनेहुये अपने द्वारतक पहुँची व घबड़ा कर अपनी माताको पुकारा उसका बोल सुनतेही कीर्त्ति दौड़ीआई और उसने अपनी बेटीको घबड़ाई हुई देखकर पूछा हे बेटी अभी तू अपने घरसे चंगी भली गईथी तेरी क्या दशाहोगई तब राधाने कहा एकलड़की जिसका नाम नहीं जानती मेरे साथ चलीआवतीथी उसको सांपनेकाटलिया सो वह अचेतहोकर गिरपड़ी तब मैं भी डर-गई जब नन्दकुमारके झारनेसे उसको आरामहुआ तब मैं अपनेघरआई यह बात सुनतेही कीर्त्तिने राधाको गलेलगाकरकहा तुझे परमेश्वरने मृत्युसेबचाया मैं तुझको बारम्बार मनाकरतीहूं तू मेराकहना नहीं मानती कभीबाहर दूरखेलने व कभी यमुना

किनारे नहाने व कभी खरकामें दूधदुहावनेजाती है व खेलतीसमय आकाशकीतरफ देखकर धरतीपर पांव नहीं रखती है अब तू कहीं बाहरखेलने मतिजायाकर यहबात अपनीमातासे सुनकर राधिका मनमें कहनेलगी आज मैंने अपनीमातासे अच्छाछल किया और उसने ध्यान मोहनीमूर्तिका हृदयमेंरखकर अपनीमातासेकहा अब मैं बाहर न जाकर गांव घरमें खेलाकरूंगी हे राजन् राधाप्यारीके मनमें नन्दलालजी ऐसे बस गयेथे कि विनादेखे उनके उसको चैन नहीं पड़ताथा इसलिये तीसरेदिन फिर राधिका दूधदुहानेके बहाने श्यामसुन्दरके स्थानपरआई व द्वारेपरसे मोहनप्यारेकोपुकारा व मारेलज्जाके भीतरनहींगई राधाप्यारीकाशब्द सुनतेही नन्दलालजीने यशोदासेकहा हे मैया कल्ह मैं यमुनाकिनारे रास्ताभूलगयाथा सो एकगोपी मेराहाथ पकड़कर गांवमें पहुँचागई तब मैं घरपहुँचाहूं नहीं तो न मालूम भूलकर कहांचलाजाता सो वही ब्रज बाला मेरेसाथ खेलनेआई है पर तुम्हारेभयसे यहां नहीं आवती तुम उसको भीतर बुलाकर देखो ऐसाकहकर मोहनप्यारेने अपनीमाया ऐसी यशोदापरफैलादी कि उसको श्यामासे प्रीतिउत्पन्नहोगई तबयशोदाने श्यामसुन्दरसेकहा तू उसको भीतर बुलाले यहबातसुनतेही मोहनप्यारे जब राधिकाकी बांहपकड़कर भीतरलेआये तब यशोदाने उसकी सुन्दरताई देखतेही बड़ेप्रेमसे अपनेपास बैठालकर पूंछा कि तू किसगांवमेंरहती है मैंने आजतक कभी तुझको नहीं देखा तेरा व तेरेमाता पिताका क्या नाम है कल्ह मेरा मोहनप्यारा राहभूलगयाथा सो तैंने बहुतअच्छाकिया जो उसको गांवमें लिवालाई श्यामानेकहा मेरानाम राधिका है ॥

दो० मैं बेटी वृषभानुकी तुमको जानत माय ।
बहुत बेर मिलनो भयो यमुनाके तटआय ॥

यह सुनतेही यशोदानें कहा मैं जानतीहूं तेरीमाता बड़ी कुलवन्ती व वृषभानु तेरा पिता बड़ाखोटाहै तब राधाप्यारी हँसिकरबोली मेरेबापने तुमसे क्याखुटाईकीथी यह प्रेमभरा बचन सुनतेही यशोदाने राधिकाको अपने गले लगाकर बहुतप्यार किया व मनमें विचारा कि इसकन्याका विवाह मोहनप्यारे से होता तो बहुतअच्छा था फिर यशोदाने श्यामाका शिर गूंथकर शृङ्गारकिया व बहुतअच्छा गहना व कपड़ा पहिनाकर मेवा व मिठाई व तिलचावली उसके गोदमें डालकर कहा तू कन्हैयासे जाकर खेल यह बात सुनतेही राधिका प्रसन्नहोकर नन्दलालजी के साथ खेलने लगी हे राजन् श्याम व श्यामा ऐसे सुन्दरथे जिनके स्वरूपका वर्णन शेष गणेशजी नहीं करसक्ते दूसरे की क्या सामर्थ्य है जो बड़ाई करनेसके ॥

दो० खेलत दोउ झगड़न लगे भरे परम अह्लाद ।
मानो घन अरु दामिनी करत परस्पर बाद ॥

यशोदा उन दोनोंको खेलते हँसतेहुये देखकर बहुत प्रसन्नहुई व राधिकासे कहा तू नित्य यहां आनकर मेरे मोहनप्यारे से खेलाकर व श्यामसुन्दर राधाप्यारी से हँसकर बोले तुम लज्जाछोड़कर हमारे यहां खेलने आयाकरो तुम्हारेसाथ खेलनेसे मेरामन अति प्रसन्नहोताहै राधा यहबात मोहनप्यारेकी सुनकर मुसुकरातीहुई अपने घर चलीगई ॥

दो० परमनागरी राधिका अतिनागर ब्रजचन्द।
करत आपनी घात दोउ बँधे प्रेमके फन्द ॥

जब राधाप्यारी शृङ्गार कियेहुये अपने घर पहुँची तब कीर्त्ति उसकी माताने पूँछा तू कहांगईथी व तेरा शृङ्गार किसने करदियाहै राधिकाबोली मैं यशोदाजीके घर गईथी उन्हों ने तुम्हारा व मेरे पिताका नाम पूँछकर हमको बहुतसा प्यारकरके मेरा शृङ्गार करदिया ॥

दो० मेरे शिर बेणी गुही बेणी लाल बनाय।
पहिनाई निजहाथ सों सारी नई मँगाय ॥

हे माता तिलचावली व मेवा मिठाई मेरे गोदमें डालकर मुझे बिदाकिया व तुमको ठठोलीकी राह उन्हों ने गालीदी यह बात सुनकर कीर्त्ति बहुत प्रसन्नहुई और यहहाल बरसाने गांवकी गोपियां सुनकर यशोदाको ठट्ठेकी राह गाय बजायकर गालियां देने लगीं व यशोदाके मनकाहाल जानकर कीर्त्तिने सब गोपियोंसे कहा मेरी बेटी दामिनी और मोहनप्यारा श्यामघटासा अतिमनभावन दोनों बिवाहके योग्यहैं कीर्त्तिको भी इस बातकी चाहनाहुई कि राधाप्यारीका बिवाह नन्दलालजी से होता तो बहुतअच्छाथा ऐसा बिचारकर उसने वृषभानुसे यह बात कही ॥

दो० युगलकिशोर स्वरूपबर वृन्दाबन रसखान।
नवदूलह दुलहिनिसदा राधा श्याम सुजान ॥

वृषभानु भी अपनी स्त्रीकी बात सुनकर प्रसन्नहुये इसीतरह राधिका नित्य नन्दजीके घर आनकर मोहनप्यारे के साथ खेलाकरतीथी व श्यामसुन्दरभी उसकेसाथ बड़ी प्रीति रखतेथे व राधाप्यारी जब कभीकभी अपनी गौवोंकादूध दुहानेवास्ते मनहरणप्यारे को कहती थी तब वह बड़े प्रेमसे उसकी गो दुहदिया करते थे ॥

दो० धेनु दुहावत लाड़िली दुहत नन्दको लाल।
सो सुख कासों जात कहि देखत ब्रजकी बाल ॥

एकदिन राधाप्यारी श्यामसुन्दरसे गोदुहाकर जब दूध लियेहुई अपने घर चली उससमय मोहनप्यारे ने उसकी ओर देखकर मुसुकरादिया तब राधा वह मुसुकान देखतेही मोहित होगई जब राहमें उससे सखियों ने पूँछा आज तेरे गो दुहनेवाले ग्वाल

क्या हुये जो तैंने नन्दलालजी से दूध दुहाया है राधा श्यामसुन्दरका नाम सुनकर ऐसी अचेत होकर गिरी कि दूधका बर्त्तन उसके हाथसे छूटपड़ा व गिरती समय सखियों से बोली कि मुझको कालेसांपने काटाहै यह वचन सुनतेही सहेलियां उसे उठा कर उसके घर लेगईं व कीर्त्तिसे सांप काटनेका हाल कहदिया सो उन्हों ने बहुत से गुणी बुलाकर झाड़ व फूँककराया पर उसको मोहरूपी सांपने डसाथा इसलिये मंत्र व यंत्रसे कुछ गुण न होकर जब वह उसीतरह रही तब सहेलियों ने जो उसकी प्रीतिका हाल जानती थीं कीर्त्तिसे कहा नन्दमहरका बेटा बड़ागुणी है उसे बुलाकर दिखलावो तो इसको आराम होजायगा यह सुनकर कीर्त्ति बोली एकदिन राधिकाने आगे भी मुझसे कहाथा कि किसी लड़कीको सांप काटने से नन्दकिशोरने अच्छा करदिया था वह बात यादकरतेही कीर्त्तिने दौड़कर यशोदाके पास जाकर कहा मेरी बेटीको सांपने काटाहै सो तुम मोहनप्यारे को साथ करदेव कि वह मंत्र पढ़कर उसे अच्छी करदे यह सुनकर यशोदा बोली अय बहिन मेरा अज्ञानबालक मंत्र यंत्र क्या जानै किसी गुणी को बुलाकर दिखलाओ आजतक मैंने कभी उसके मंत्र यंत्र जाननेका हाल नहींसुना है तब कीर्त्तिने कहा मैंने राधिकासे एक लड़कीके सांप काटने व कन्हैयाको अच्छा कर देनेका हाल सुनाथा सो तुम दयाकी राह तुरन्त उसे बुलादेव इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब कीर्त्ति मोहनप्यारे को बुलाने जाचुकी तब ललिता सखी ने जो उसकी प्रीतिका हाल जानतीथी एक ब्रजबालाको मोहनप्यारे के पास जहां पर वह खेलते थे समझाकर भेजा तब उस गोपी ने जाकर नन्दलालसे कहा ॥

दो० अहो महरिके लाड़िले मोहन श्यामसुजान।
कित सीखे यह गोदुहन हमसे कहौ बखान॥

हे नन्दकुमार आज प्रातसमय जिसकी गो तुमने दुहीथी वह इससमय अचेत पड़ी है केवल तुम्हारा नाम लेने से आंख खोलदेती है व उसने गिरतीसमय यह कहा था कि मुझको कालेसांपने काटाहै सो कोई मंत्र व यंत्र उसको गुण नहीं करता इसलिये तुम चलकर अपनी कृपादृष्टिसे उसका बिष उतारदेव और तुम्हारा श्यामरङ्ग देखकर मैं जानतीहूं यह लहर तुम्हारे मुसुकानकी उसे चढ़ी है जल्दी चलकर उसे चंगी करदेव और वह तुम्हारे बिरहकी आगिमें जलरही है सो अपने चन्द्रमुखकी शीतलताई से उस बिरहिनीकी अग्नि बुझाओ कदाचित् तुम उसे न जिलाओगे तो हमलोग नंदजी के द्वारपर जाकर तुम्हारे ऊपर अपना प्राण देवेंगी कीर्त्ति उसके दुःखसे व्याकुलहोकर यशोदाके पास तुमको बुलाने गईहै यह बात सुनतेही मोहनप्यारे ने मुसुकराकर उससे कहा कदाचित् राधाप्यारी को काले भुजंगनेभी डसाहोगा तो मैं उसको अच्छाकरदूंगा ऐसा कहकर उस सखीको बिदाकिया और आप अपने घर चलेआये तब यशोदा ने

उनसे हँसकर पूंछा अय बेटा तुम कुछ सांप काटने का मंत्र जानते हो यह सुनकर श्रीकृष्णबोले अय मैया तेरी सौगन्दहै मैं ऐसामंत्र जानताहूं कि सांपके डसे हुयेको देखने पाऊं तो वह मरने न पावै यशोदाने कहा अय बेटा राधाको सांपने काटाहै तुम कीर्त्ति के साथ जाकर उसे आरामकरदो श्यामसुन्दर यह आज्ञा पातेही प्रसन्नहोकर कीर्त्तिके साथगये जब कीर्त्ति नन्दलालसमेत अपने घर पहुँची तब राधिकाको अधिक व्याकुल देख मोहनप्यारे से विनयपूर्वक कहा हे नन्दकुमार मुझे अपने ऊपर न्योछावर समझ कर राधाको अच्छा करदेव जैसे राधिकाने श्यामसुन्दरके आनेका हालसुना वैसे उसका हृदय ठण्ढाहोकर प्रेमकाआंशू बहनेलगा जब श्रीकृष्णजी ने कुछ पढ़कर अपनी मुरली राधाके अंगमें छुआदी तब उसने चैतन्यहोकर अपना अंग कपड़े से ढांपलिया व श्याम सुन्दरको देखकर उससमय चंगी भली होगई व अपनी मातासे पूंछा आज क्याहै जो इतने मनुष्य यहां इकट्ठे हुये हैं तब कीर्त्तिने कहा हे बेटी तू सांपके काटने से मरणतुल्य होगईथी सो तुझको कन्हैयाजी ने अपने मंत्रसे जिलायाहै इनसे तुझे क्या लज्जा करना चाहिये यह कहकर श्रीकृष्णको गोदमें उठालिया ॥

दो० उरलगाय मुख चूमिकै पुनि पुनि लेत बलाय ।
धन्यकोख यशुमतिमहरि जहां अवतरयोआय ॥
सो० कछु मेवा पकवान कहेउ खान घनश्यामसों ।
बिदाकियो दै पान कीरति श्यामसुजानको ॥

हे राजन् श्यामसुन्दरके जाने उपरांत वृषभानु व कीर्त्तिने कहा श्रीकृष्ण व राधिका दोनों आपसमें विवाह करनेयोग्यहैं व ललितासखी जो सब भेद जानती थी मनहरण प्यारे से बोली तुम बड़े गुणीहोगये कि राधिका का बिष तुरन्त तुमने उतार दिया यह मन्त्र कभी मतभूलना मैं तुम्हारा भेद अच्छीतरह जानतीहूं तुमने राधाको मोहनी डाल-कर उसको अपने बश करलियाहै यह सुनकर श्यामसुन्दर हँसतेहुये अपने घर चले आये व यशोदा राधिकाके आराम होनेका हाल सुनकर अतिप्रसन्न हुई व मोहनप्यारे को गोदमें उठाकर प्यार करनेलगी ॥

दो० कारोसुत नँदरायको जाकी लीला नित्त ।
उनहींको ये डसतहैं जिनके उज्ज्वल चित्त ॥
सो० धनिधनि ब्रजकीबाल धन्यधन्य ब्रजग्वालसब ।
जिनके सँग नँदलाल दुहत चरावत धेनुनित ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् एकदिन श्यामसुन्दर प्रातसमय

ग्वालबालों को साथलिये कलेवा बांधेहुये बछड़े चराने बनमें गये वहां बछड़ोंको चरने वास्ते छोड़दिया व खड़िया व गेरूसे ग्वालबालों समेत अपने २ अंगपर चित्रकारी की व अनेकरंगके फूलोंका गहना बनाकर पहिनलिया व पशु पक्षी आदिककी बोलियां बोलकर आपसमें खेलनेलगे ॥

दो० कबहुँ गावत सखन सँग कबहुँ बजावत बेनु ।
धवरी धुमरी नामले कबहुँ बुलावत धेनु ॥

हे राजन् उसीसमय अघासुर राक्षस भेजाहुआ कंसका श्यामसुन्दरके मारने वास्ते वहांआया व अजगर सांपका रूप ऐसा लम्बा व चौड़ा बनाकर रास्ते में बैठा कि नीचे का ओठ पृथ्वीपर व ऊपरका ओठ आकाशमें जालगा जब अचानक में श्यामसुन्दर ग्वालबालों समेत जहां वह सांप मुखबाये व घातलगाये बैठाथा जा निकले तब मोहन प्यारे ने ग्वालबालों से कहा जिधर यह पर्व्वतकी कन्दरासी दिखलाई पड़ती है उधर मतजाना हे राजन् जब ग्वालबाल श्यामसुन्दरके मनाकरने परभी बछड़ोंसमेत उसी ओरचलेगये और उस अजगरको जो चारकोश लम्बा व एककोश चौड़ाथा देखकर आपसमें कहनेलगे यह पर्व्वतसा क्या मालूम होताहै जब इसीतरह बात करते व बछरे चरातेहुये उसके पास जा पहुँचे तब एक बालक बोला हे भाई यह बड़ी डरावनी खोह दिखलाई देती है इसके भीतर मतजाव यह सुनकर तोषनाम बालकने कहा आवो इस कन्दराके भीतरचलैं दुःखभञ्जन हमारे साथहैं हमको किसका डरहै कदाचित् राक्षस भी होगा तो बकासुरकी तरह माराजायगा जब सब ग्वालबाल ऐसी बातें करते व पीछे मोहनप्यारेका मुख देखतेहुये ताल बजाकर उस सांपके मुखमें घुसे तब अघासुरने ऐसा श्वास खींचा कि सब ग्वालबाल बछड़ोंसमेत उसके पेटमें चलेगये उससमय अघासुरने बिचारा कदाचित् आज श्याम बलरामको मारूँ तो बकासुर भाई व पूतना अपनी बहिन का बदलालेकर उसके नामपर तर्प्पणकरूँ यह दशा उनकी देखकर श्रीकृष्णजीने कहा ॥

दो० ग्वालबाल बछड़ा सबै पड़े असुर मुख आय ।
इनसबहिन की मायसों कहा कहौंगो जाय ॥

सिवाय मेरे और कोई दूसरा इनकी रक्षाकरनेवाला नहीं है इसलिये हमैं भी इस राक्षसके मुखमें जाकर इनका प्राण बचाना चाहिये जब ऐसा बिचारकर श्यामसुन्दर आपभी उसअजगरके मुखमेंचलेगये तब उससांपने अतिप्रसन्नहोकर मुख अपनाबन्दकर लिया यहदशा देखकर देवता चिन्ताकरनेलगे व राक्षस व दैत्य कंसकेमित्र प्रसन्नहुये ॥

दो० माखनप्रभु कीन्हों तभी बाल शरीर बिशाल ।
श्वास ब्याल को रोकके त्रास दियो तेहिकाल ॥

हे राजन् जब मोहनप्यारेके शरीरबढ़नेसे श्वासचलना बन्दहोगया तब प्राण उसका ब्रह्माण्डतोड़कर निकलगया व श्यामसुन्दर सब ग्वाल बाल व बछड़ोंसमेत ज्योंके त्यों बाहर निकलआये उससमय देवतों ने अतिप्रसन्नहोकर वृन्दाबनबिहारी पर फूलवर्षाये और राक्षस व दैत्य यह महिमा केशवमूर्त्तिकी देखकर शोचकरनेलगे व चैतन्यआत्मा उस अजगरका पहिले आकाशमें जाकर फिर मोहनप्यारेके मुखमें समागया ॥

दो० माखनप्रभु परतापते त्रिविधताप मिटिजाहिं ।
ताहि पाप कैसे रहैं आप जाहिं मुखमाहिं ॥

हे राजन् इसतरह उस राक्षसकी मुक्ति देखतेही देवतों ने श्रीकृष्णजी को पूर्णब्रह्म जानकर उनकी स्तुतिकी व सब ग्वालबाल श्यामसुन्दरसे कहनेलगे आपने इसराक्षसको मारकर हमलोगोंका प्राणबचाया नहीं तो आज हमारेमरनेमें कुछ सन्देह नहीं था यह सुनकर केशवमूर्त्तिबोले अय भाइयो मैंने तुम्हारी सहायतासे इस राक्षसकोमारा कदाचित् तुमलोग न होते तो यह राक्षस मुझसे मारा न जाता ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालोंसे खेलनेलगे ॥

दो० गावत खेलत हँसत सब सखावृन्द लेसाथ ।
वृन्दाबन के कुञ्ज में वृन्दाबन को नाथ ॥

और शरीर उस सांपका सूखकर पर्वतकेसमान उसजगह पड़ारहा कभी ग्वालबाल उसखाल के भीतरघुसकर व कभी उसके ऊपर चढ़कर खेलाकरतेथे व उस राक्षसने मरतीसमय मुरलीमनोहरका ध्यान कियाथा इसलिये परमपदको पहुँचा हे राजन् यह बात विश्वासकरके जानो जो लोग मरतीसमय नारायणजी का ध्यानकरते हैं उनकी मुक्तिहोनेमें कुछसन्देह नहीं रहता व केशवमूर्त्तिने पांचबर्षकी अवस्था में अघासुरको मारा वर्षदिनकेउपरांत उसके मरनेकाहाल ग्वालबालोंने अपने घरकहा इतनकिथासुनकर परीक्षितने पूछा हे स्वामी बर्षदिनतक यहहाल नहीं कहनेका क्या कारणथा ॥

तेरहवां अध्याय ॥

ब्रह्माका ग्वालबाल व बछरोंको चुरालेजाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् तू बड़ाभाग्यवान्है किसवास्ते कि परमेश्वरकी कथामें तुझको प्रतिदिन अधिक प्रीति होतीजाती है अघासुर के मरनेउपरांत मोहनप्यारे ने ग्वालबालोंसेकहा कि यमुना किनारे यह ऊंचाशरीर सांपका बहुतअच्छापड़ाहै उसके ऊपरचढ़कर हमलोगोंको खेलने व चरतेहुये बछड़ोंके देखने का बड़ासुखहुआ इतनी कथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् उनग्वालबालोंके भाग्यकी बड़ाई किसकोसामर्थ्यहै जो वर्णनकरसके वह लोग दिनरात खाना व पीना व उठना व बैठना वृन्दाबन

बिहारीके साथ रखतेथे और सब कोई वृक्षोंकीछायामें बैठकर अपनाशरीर बैकुण्टनाथ के अंगसे स्पर्शकरतेथे यहपदवी ब्रह्मादिक देवतोंको भी मिलनाकठिनहै व ग्वालबालों का सुखदेखकर देवता उनपर डाहकरतेथे जब श्रीकृष्णजी ने अघासुरको मारा तब ग्वालबाल व बछड़ोंसमेत आगेजाकर यमुनामें स्नान किया और कदमके नीचे खड़े होकर मुरली बजाई व ग्वालबालोंसे कहा हे भाइयो यहां अच्छा बिमलस्थान है इसी जगहबैठकर कलेवाकरलेव यहबचनसुनतेही सब ग्वालबाल वहां ठहरगये ॥

दो० तहां छाक सब घरनते आई भरिभरि भार ।
यशुमति पठयो कान्हको व्यंजन बहुत प्रकार ॥

सबग्वालबालोंने ढाखकेपत्ते लाकर पत्तल व दोनालगाया व अपना अपना कलेवा निकालकर पत्तलआदिक में परोसलिया सो बीचमें मुरलीमनोहर व उनके चौगिर्द ग्वालबाल खानेवास्ते बैठे व भोजनकरतीसमय श्यामसुन्दरने बांसुरीको कमरमेंखोंसकर करलकुटिया बगलमें दबाली जब ब्रजनाथने पहिलेआप ग्रासउठाकर मुखमेंडाला तब पीछे ग्वालबालोंने भोजनकरना आरम्भ किया उससमय मुरलीमनोहर मुकुटसाजे व पीताम्बरपहिने व वनमालागलेमें डाले व लकुटिया दबाये अनेकतरहका भोजन बायें हाथमें रखकर हँसतेहुये अपनाजूठा दाहिनेहाथसे सब ग्वालबालोंको खिलावनेलगे व ग्वालबालोंके पत्तलपरसे उनकाजूठा उठाकर आपखाते थे और उसके खट्टे व मीठेका स्वाद आपसमेंकहकर ऐसाआनन्दमचाया जिसकाहाल वर्णन नहीं होसक्ता ॥

दो० ग्वालबाल में बैठके माखनप्रभु ब्रजनाथ ।
माखन रोटी हाथले खातजात इकसाथ ॥

उसमण्डलीमें मनहरणप्यारे चन्द्रमासे व सब ग्वालबालताराारूप शोभायमानदिखलाईदेतेथे उससमय देवता अपने २ विमानोंपर बैठेहुये यह सुख देखकर आपस में कहनेलगे धन्यभाग्य इनग्वालबालोंकाहै जिनको सच्चिदानन्दपरब्रह्म अपनाजूठाखिलाकर उनकाजूठन आपखातेहैं यहसुख हमलोगोंको स्वप्ने में भी नहीं प्राप्तहोसक्ता और किसी २ मुनि व देवताने ब्रह्मासे कहा महाराज हमको बड़ासंदेह मालूमहोताहै किसवास्ते कि हमलोगयज्ञमें बड़ीपवित्रतासे सामग्रीबनाकर परमेश्वरका भोगलगातेहैं तिसपरभी बैकुण्ठनाथ जल्दी वह भोग अंगीकार नहीं करते व तुम श्रीकृष्णजीको परब्रह्म का अवतार कहतेहो सो देखो यह ग्वालबालोंका जूठाउठाकर खाते हैं इसलिये हमको तुम्हारेकहनेका विश्वास नहीं आता यहसुनकर परमेश्वरकी मायासे ब्रह्माकोभी सन्देह उत्पन्नहुआ तब ब्रह्माने कहा मैं अभी ग्वालबाल व बछेरे हरकर उनकी परीक्षालेताहूं श्रीकृष्णजी सच्चिदानन्दका अवतारहोंगे तो अपनी माया से दूसरे बछेरे व ग्वालबाल

बनालेवैंगे ऐसाकहकर ब्रह्मावृन्दाबन में आये व चरतेहुये बछरोंको लेजाकर पर्वतकी कन्दरामेंबन्दकरदिया जब ग्वालबालोंने बछरोंको नहीं देखा तब केशवमूर्त्तिसेकहा हम लोग तो बैठेहुये कलवाकरतेहैं व बछरे नहीं दिखलाई देते न मालूम चरतेहुये किधर चलेगये यहसुनकर मुरलीमनोहरने कहा हे भाई तुमलोग निश्चिन्ताईसे भोजनकरो मैं जाकर बछरोंकोघेरलाताहूं ऐसाकहकर मोहनप्यारे बछरेढूंढ़नेगये जब वनमेंजाकर बछरोंको नहीं देखा तब परब्रह्मपरमेश्वर अन्तर्यामीनेमालूमकिया कि मेरीपरीक्षालेनेवास्ते ब्रह्माबछरोंको हरलेगयाहै यहसमझतेही बैकुण्ठनाथ ब्रह्माकासन्देह छुड़ानेवास्ते अपनी मायासे उसीरंग व रूपके बछरे दूसरे बनाकर वहां लेआये जब उस कदमकेतले जहां ग्वालबालोंको छोड़गयेथे पहुँचे तब ग्वालबालोंको भी वहां न देखकर अपनीमहिमासे जाना कि ब्रह्माने उनको भी हरलेजाकर पर्वतकीकन्दरामें छिपादिया है ऐसादेखकर केशवमूर्त्तिने मनमेंकहा कदाचित् ग्वालबाल अपनेघर न जावेंगे तो उनके माता व पिताका बड़ादुःखहोगा ऐसा बिचारकर त्रिलोकीनाथने अपनीप्रबलमायासे उतनेग्वालबाल उसीरूप व बोली व ज्ञान व भूषण व बस्त्रके दूसरे बनालिये जब संध्यासमय मनहरणप्यारे सबग्वालबाल व बछरोंको जो अपनीमायासे बनायेथे साथलिये हँसते व खेलतेहुये वृन्दाबनमेंआये तब सबग्वालबाल बछरेसमेत अपने अपने घरचलेगये व बछरे अपनी २ माता व गौवोंकादूध पीनेलगे व ग्वालिनोंने अपने २ बालकोंको बड़े प्रेमसे उबटन व तेल मलकर स्नानकराया व श्यामसुन्दरकी मायासे किसीको ग्वालबाल व बछरे हरजाने का भेद नहीं मालूमहुआ व सबग्वालबालोंके माता व पिता व गौवैं अपना २ बालक व बछरा जानकर प्रतिदिन उनसे अधिक प्रीतिकरनेलगे ॥

दो० माखनप्रभु रचना रची तनिक बची नहिं रेख ।
वही बेष सब देखिये पर कछु प्रीति विशेख ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् ब्रह्माजी ब्रह्मलोकमें जाकर ग्वालबाल व बछरोंके हरनेकाहाल भूलगये व वृन्दाबनबिहारी नित्यमायारूपी ग्वालबाल व बछरों समेत बनमें जाकर नई २ लीलाकरते थे एकदिन श्यामसुन्दर उन्हीं बछरोंको गोवर्द्धनपर्वतके नीचे चरानेलेगये सो उन बछरों की माता गौवैं जो गोबर्द्धनपर्वतपर चरतीथीं उन्हें देखतेही ऐसे दौड़ीं जैसे सावन भादों में नदीकाजल बहुतवेगसे बहता है ग्वालोंने लाठीसे धमकाकर गौवों को बहुतरोंका पर वह न मानकर अपने २ बच्चों के पास चली आई और दूसराबच्चा उत्पन्नहोने पर भी वे मायारूपी बछड़ों को स्तन पिलानेलगीं व ग्वाललोग भी अपने अपने बालकोंको गोदमें उठाकर प्यारकरनेलगे यहदशा देखकर बलरामजीने जो बछड़े व ग्वालबाल हरनेके दिन श्रीकृष्णजी के साथ नहीं थे बिचारा हमने ऐसीप्रीति गौ व ग्वालोंमें कभी नहीं देखीथी इसमें कुछ परमे-

श्वरकी माया मालूम होतीहै ऐसा विचारकर बलभद्रजीने ध्यानकरके देखा तो ग्वाल बाल व बछड़े उनको श्रीकृष्णरूप दिखलाईदिये तब उन्होंने श्यामसुन्दरसे पूछा हे भाई पहिलेके ग्वालबाल व बछड़े क्या हुये यह सब ग्वालबाल व बछड़े मुझे कृष्णरूप दिखलाई देतेहैं यहवचन सुनतेही केशवमूर्त्ति सबवृत्तान्त कहकरबोले हे भैया वर्षदिन से मेरी यहीदशाहै हे राजन् जब इसीतरह वर्ष दिन मृत्युलोकका बीतगया तब ब्रह्मा बालक व बछड़े हरनेकाहाल यादकरके बोले देखो मेरा अभी एकक्षण नहीं बीता व मनुष्योंका वर्षदिनहोगया अब चलकर देखाचाहिये बालक व बछड़े बिना श्रीकृष्ण व वृन्दाबनबासियोंकी क्या दशा होती है ऐसा विचारकर ब्रह्मा पहिले उस कन्दरामें गये तो ग्वालबाल व बछड़ोंको नींदमें अचेत देखा फिर वहां से वृन्दाबनमें आये तो उसरूपके ग्वालबाल व बछड़े श्रीकृष्णकेसाथ दिखलाईपड़े तब ब्रह्माने आश्चर्य मान-कर मनमेंकहा कन्दरा में से ग्वालबाल व बछड़े यहां किसतरह आये या श्रीकृष्णने अपनीमायासे इन्हें उत्पन्नकियाहै यहसन्देह छुड़ानेवास्ते ब्रह्मा फिर कन्दराकी तरफगये तो उन्होंने ग्वालबाल व बछड़ोंको उसीतरह सोयेहुये पाया जब फिर वहांसे वृन्दाबन में आये तो बैकुण्ठनाथकी मायासे क्या देखा कि जितने ग्वालबाल श्यामसुन्दर के साथमेंथे वह सबचतुर्भुजीरूप बैजयन्तीमाला व किरीटमुकुट व पीताम्बरआदिक पहिने विष्णुभगवान्के सामने बिराजतेहैं व एक २ चतुर्भुजी रूपके सामने ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक देवता हाथजोड़े स्तुतिकरते दिखलाईदिये व आठोंसिद्धियां व गंगाआ-दिक नदियां अपना २ रूप धारणकिये उनकेसामने खड़ीहैं व उनमें कोई ब्रह्मा चार शिर व कोई आठमस्तक व कोई ब्रह्मा सोलहशिरके दिखलाईदिये व इन्द्रकी अप्सरों को नाचते व गन्धर्वोंको गानासुनाते उनके सामनेदेखा व ब्रह्माको सबपशु व पक्षी व वृक्ष वहांके चतुर्भुजीरूप दिखलाईदिये और वहां बाघ और बकरी आदिक जीवोंको निर्वैरदेखा हे राजन् यह महिमा मायारूपी ग्वालबालोंकी देखतेही ब्रह्माने घबड़ाकर अपनीआंखें बन्दकरलीं व चित्रसे चुपचाप खड़ेहोरहे और ज्ञान व ध्यान व अभिमान अपना भूलकर मारे डरके कांपनेलगे जब श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने जाना कि ब्रह्मा अपने कर्त्तबसे लज्जितहोकर अतिव्याकुलहुआ तब उन्होंने मायारूपी ग्वालादिको अन्तर्द्धानकरदिया व आप अकेले कृष्णरूपसे मोरमुकुटपहिने खड़ेरहे ॥

दो० मोह विकल अति देखिकै सुन्दरश्याम सुजान ।
प्रकटकियो जन जानि निज विधिके उरमें ज्ञान ॥

सो० हृदयभई तब शुद्धि यह पूरण अवतार हरि ।
धिक धिक मेरी बुद्धि बैर बढ़ायों कृष्ण सों ॥

हे राजन् जब बैकुण्ठनाथकी कृपासे ब्रह्माके हृदयमें ज्ञान उत्पन्नहुआ तब वह हंस

परसे उतरपड़ा व अपने चारोंमस्तक वृन्दावनविहारीके चरणोंपर धरदिये व साष्टांग दण्डवत्करके हाथ जोड़कर बोला ॥

दो० मैं अपराधी हीन मति पर्यो मोह के जाल ।
ममकृत दोष न मानिये तुम प्रभु दीनदयाल ॥
सो० कहजानों तुव भेव मैं ब्रह्मा तुम्हरो कियो ।
तुम देवन के देव आदि सनातन अजित अज ॥
दो० करुणाकरि रोयो महा कहासकै गुण गाय ।
दृग जल से धोयो मनो माखन प्रभु के पांय ॥

हे राजन् ब्रह्माने रोकर केशवमूर्त्ति से कहा हे दीनानाथ आपने कृपाकरके मेरा अभिमानदूरकिया ऐसाज्ञान किसीको नहीं है जो तुम्हारेचरित्र व लीलाको जानै सारे संसारको तुम्हारीमायाने मोहिलिया दूसराकोई ऐसा नहीं है जो आपको मोहनेसकै व आप कर्त्तापुरुषहोकर मेरे ऐसे अनेक ब्रह्मा व ब्रह्माण्ड तुम्हारे एक २ रोममें बँधेहैं मैं किस गिनती में हूं हे दीनदयालु मेरा अपराध क्षमाकीजिये ॥

दो० हौं असाध्य अति हीनमति तुमगति अगम अगाध ।
माखनप्रभु परचो लियो कियो महा अपराध ॥

जब इसीतरह बहुतसी बिनती ब्रह्माने की तब ब्रजनाथजी ने हँसकर कहा हेब्रह्मा तुम सब जगत्की रचना करतेहो तिसपरभी मेरी माया तुम्हें लगी है यह सुनकर ब्रह्मा ने विनय किया हे महाप्रभु तुम्हारा भेद कोई नहीं जानसक्ता आपकी माया ऐसी प्रबल है जिसने किसीको नहीं छोड़ा यह दीनबचन सुनतेही श्यामसुन्दर ने ब्रह्मा का शिर अपने चरणों परसे उठाकर छातीमें लगालिया व कृपाकरके आंशू ब्रह्माका अपने हाथसे पोंछदिया ॥

दो० यद्यपि लियो उठायकै माखनप्रभु उरलाय ।
तद्यपि रहेउ लजायकै दृग अरु शीश नवाय ॥

जब ब्रह्माने श्रीकृष्णजीकी कृपा अपने ऊपर देखी तब सब ग्वालबाल व बछड़ों को वहां लेआदिया ॥

चौदहवां अध्याय ॥

ब्रह्माको श्यामसुन्दरकी स्तुति करना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जब ब्रह्माने श्रीकृष्णजीको अपने ऊपर प्रसन्न देखा तब

अपना अपराध क्षमा कराने वास्ते हाथ जोड़कर यह स्तुतिकी कि मैं तुम्हारे श्याम-घटा ऐसे स्वरूपको जो बिजुली के समान चमकताहुआ पीताम्बर पहिने व मोरमुकुट व फूलोंकी माला धारणकियेहो दण्डवत् करताहूं व बांसुरी व लकुटिया लिये मोहनी मूर्त्तिपर न्यवछावर होताहूं व आप जगत्के उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले बसुदेवजी के पुत्रहैं व यह शरीर तुम्हारा पांचतत्त्वसे नहीं बना अपनी इच्छासे यह रूप तुमने धारण कियाहै व मैं ब्रह्मा होनेपरभी तुम्हारे इसरूपकी महिमा नहीं जानता दूसरे को क्या सामर्थ्य है जो आपके अनन्तरूप सगुणका भेद जानसकै भक्ति कियेबिना कोई मनुष्य ज्ञानके अभिमान से तुम्हारी महिमा नहीं जानसक्ता जो कोई मनसा बाचा कर्मणासे तुम्हारे शरणमें होरहा वह तुम्हारे भेदको पहुँचकर मुक्तिपदवीपाताहै मैं अग्निकी चिनगारी के समानहूं अपनी अज्ञानतासे तुम्हारे मायामोहमें लपटकर मैंने बालक व बछरे चुराये थे और आप अग्निका समूहहैं सो मेरा अपराध क्षमाकीजिये चिनगारी को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो अग्निके ढेरसे बराबरी करसकै व आप सबसे रहितहैं व संसारी बस्तु तुम्हारी मायासे उत्पन्न होती है व आदि व मध्य व अन्तमें तुम्हारी माया का प्रकाश रहताहै और सिवाय आपके संसारीबस्तु नाश होजाती है मैंने अपनी अज्ञानतासे तुम्हारी परीक्षा लेने चाहाथा सो बहुतसे ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों को ग्वालबालों के सामने हाथजोड़े खड़े देखकर अपने दण्डको पहुँचा अब तुम्हारे शरण आयाहूँ मेरा अपराध क्षमा कीजिये जिसतरह अज्ञान बालक अपने पिताकी गोदमें बैठकर बहुत अनुचित करताहै पर पिता उसका प्रेमकी राह बुरा नहीं मानता व पेटमें लात मारने से माता विरोध नहीं करती उसीतरह मुझअज्ञान अपने बालकका अपराध आप क्षमा कीजिये किसवास्ते कि तुम्हारे विराट्रूपमें चौदहोंलोकका व्यवहार रहताहै और आप अपने छोटे स्वरूपसे चिउँटी के तनुमें व्यापक रहते हैं मैंने अपनेको जगत् का उत्पन्न करनेवाला समझाथा इसीकारण लज्जित हुआ व संसारी व्यवहार स्वप्नके समान झूठा होकर आप अबिनाशी पुरुष आनन्दमूर्त्ति सदा स्थिररहते हैं व तुम्हारी माया आपको नहीं व्यापती सो अपने चरणोंकी भक्ति मुझे दीजिये व इस ब्रजकी गौ व ग्वालिनियोंका धन्यभाग्यहै जिनका दूध आप बालक व बछरारूप होकर पीते हैं यज्ञ व होमसे तुम्हारा पेट नहीं भराथा सो ब्रजकी गौ व अहीरिनियों ने अपनादूध पिलाकर भर दिया मेरी क्या सामर्थ्य है जो ब्रजवासियों के भाग्यकी बड़ाई बर्णन करसकूं ॥

सो० भक्तनके सुखदान भक्तवत्सल भगवान हरि ।
नारी पुरुष समान प्रेमभावके बश सदा ॥

हे महाप्रभु आप ऐसे दीनदयालुहैं जिसने अपनी अज्ञानतासे तुम्हारा अपराध किया उसपरभी आपने दयालुहोकर ज्ञानरूपी दीपक उसके हृदय में प्रकाशित कर

दिया संसारी जीवोंको तुम्हारे स्मरण व भक्ति बिना भवसागर पार उतरने वास्ते दूसरा मार्ग उत्तम नहीं है इसलिये सबको चाहिये कि तुम्हारे सगुणरूपका ध्यान व नामका स्मरणकरके लीला व कथा अवतारोंकी प्रेमसे सुनाकरें व एक क्षणभी तुम्हें न भुलावें तब उनके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होगा पर बिना कृपा व दया तुम्हारी किसीकाचित्त आपके चरणोंमें नहीं लगता इसलिये सदा अपने सच्चेमनसे तुम्हारी दया व कृपाका भरोसारखनाचाहिये हे परब्रह्मपरमेश्वर बृन्दावनमें जितनेजीव जड़ व चैतन्यहैं उनकी बड़ाई कोईनहीं करसक्ता मनुष्य इसवास्ते तप व जप करते हैं जिसमें हम देवताहोवें देवतोंकी यहइच्छा आठोंपहर रहती है कि तुम्हारेचरणोंकी सेवाकरैं व दिनरात तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपनेनेत्रोंको सुखदेवें पर यहबात देवतोंको प्राप्तनहींहोती जो तुम्हारी कृपासे बृन्दावनवासियोंको सहजमें मिली है और देवतोंको यहसामर्थ्य नहीं है जो ब्रज-वासियोंकी बराबरी करसकैं तुम्हारे आदि व अन्तको वेद नहींजानता व बड़े २ योगी व मुनीश्वरोंको आपकादर्शन ध्यानमें जल्दी नहींमिलता और हम व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर रातिदिन तुम्हारे चरणोंकाध्यान हृदयमेंधरकर यहअभिलाषा रखते हैं कि तुम्हारे चरणोंकीरज मिलती तो उसे अपनेमस्तकपर लगाते पर हमैं वह जल्दी नहीं प्राप्तहोती व यशोदा आपको दिनरात गोदमें खेलाती हैं व ग्वालबालों के साथ आप बछवेचराकर यहसबलीला हरिभक्त व सबजीवों के भवसागरपार उतारने वास्ते करते हैं कदाचित् मैं जन्मभर बृन्दावनवासियों के भाग्यकी बड़ाई करूं तौभी उसका वर्णन नहींहोसक्ता और सबब्रजवासी अपनातन मन धन आपपर न्यवछावर समझते हैं केवल मुक्तिदेकर तुम उनकी सेवासे उऋणनहींहोसक्ते किसवास्ते कि मोक्ष तो आपने पूतना व अघासुरआदिकको जो तुम्हाराप्राण मारनेआयेथे दियाहै कदाचित् आपमुझे ब्रजमें वास औ मट्टीकाभी जन्मदेते तो तुम्हारे चरणपड़नेसे कृतार्थहोता ॥

दो० श्री बृन्दावन सम नहीं तिहूंलोक में और ।
माखनप्रभु खेलैं सदा अतिछबि से ता ठौर ॥
करि अस्तुति गद्गद वचन दृगजल पुलकशरीर ।
परे चरण पंकज बहुरि बिधि अतिप्रेम अधीर ॥
सो० तब हँसि बोले श्याम गर्व्वप्रहारी भक्तहित ।
जाहु आपने धाम वचन हमारो मानि अब ॥

हे राजन् जब ब्रह्माने अतिविनयसे यहस्तुति बृन्दावनविहारीकी की तब ब्रजनाथ जीने ब्रह्माकाशिर अपनेचरणोंपरसे उठाया और उससेकहा तुम ब्रजभूमिकी परिक्रमा करतेहुये अपने लोककोजावो सो ब्रह्मा श्यामसुन्दरसे बिदाहोकर चौरासीकोश ब्रज-

भूमिको दहिनावर्त्त परिक्रमाकरके ब्रह्मलोकको चलेगये व मनहरणप्यारे पहिले बछड़ों को साथलिये ग्वालबालोंकी मण्डली में जहां वे कलेवाकररहेथे आनपहुँचे परंतु हरि इच्छासे बर्षदिनबीतनेपरभी किसी ग्वालबालों ने अपने हरिजानेका भेदनहींजाना और वहलोग श्यामसुन्दरको देखते ही कहनेलगे हे भाई तुम बछरे तुरंत खोजकर लेआये हमने तो अच्छीतरह भोजनभी नहींकिया यहसुनकर श्रीकृष्णबोले हे भाइयो सबबछड़े निकटचरतेहुये मिलगये सो मैं जल्दी से उन्हें बहोरकरलेआया ऐसाकहकर श्यामसुन्दर ने ग्वालबालों के साथ भोजनकिया जब संध्याहुई तब उनसेकहा अब घरचलो यहबचन सुनतेही सबकोई घरकोचले उससमय वृन्दाबनबिहारी ने ऐसीमुरलीबजाई कि सब जड़ व चैतन्य उसका शब्दसुनकर मोहितहोगये और सब वृन्दाबनके निकटपहुँचे तब सब ब्रजबाला मुरलीकी ध्वनिसुनकर अपने २ घरसे दौड़आईं मनहरणप्यारेका दर्शनकरके अपने अपने लोचनोंको सुखदिया और दिनभर गोपियोंका यह नेमथा जब वृन्दाबन बिहारी बछरेचराने जातेथे तब उनका गुणानुबाद व चर्चा आपसमें करके दिनकाटती थीं जब संध्यासमय केशवमूर्त्ति बनसे आतेथे तब उनके चन्द्रमुखकी चमकदेखकर अपने हृदयकी तपन मिटाती थीं ॥

दो० माखनप्रभु को रूप रस प्रेम सहित सुख पाय ।
पीवैं ब्रजबासी सबै चितवत तृषा बुझाय ॥

हे राजन् उसदिन ग्वालबालों ने अघासुरके मारेजाने का वृत्तान्त अपने माता व पिता व नन्द व यशोदा से कहा यह हाल सुनतेही यशोदा पछताकर कहने लगी मेरे बर्जनेपरभी कन्हैया बनका जाना नहींछोड़ता कई बेर इसका प्राण राक्षसों के हाथ से बचा है तिसपरभी नहीं डरता ॥

दो० जन्म भयो जब श्याम को तब से यही उपाध ।
कहाहोय हमरे यतन बिधिगति अगमअगाध ॥

उसदिनभी यशोदाने बहुतसा दान व दक्षिणा केशवमूर्त्ति से दिलवाकर बड़ीखुशी मनाई हे राजन् जो कोई बालचरित्र श्यामसुन्दरका जो पांचबर्षकी अवस्थातक किया था सच्चे दिलसे कहै व सुनै कभी कोई चिन्ता उसकेपास नहीं आसक्ती व संसार में मनोकामनापाकर अन्तसमय मुक्तिपाताहै इतनीकथा सुनकर परीक्षितनेपूछा हे शुकदेव स्वामी इतनीप्रीति गोप व गोपियों को श्यामसुन्दरकी किसकारणथी जो अपनेपुत्रों से भी उनको अधिकप्यारे जानते थे शुकदेवजीबोले हे राजन् संसारमें सबको पुत्र व धन पर बहुतप्रीति होती है परन्तु अपने प्राणको उनसेभी अधिकप्याराजानते हैं जिसतरह घरमें आग लगतीसमय मनुष्य अपनीसामर्थ्यभर पुत्र व धनको बचाताहै जब उसका

बचाने नहीं सक्ता तब अपनाप्राणलेकर भागजाताहै उसीतरह श्यामसुन्दर सब जीवों के प्राण थे इसीवास्ते सब ब्रजवासी उस मोहनी मूर्त्तिको अपने प्राण से अधिकप्यारा जानते थे व उन्होंने अपनी माया से सबका चित्त मोहलिया ॥

दो० माखनप्रभु भगवान हैं घट घट व्यापक सोय ।
सब के जीवन प्राण हैं क्यों नहिं प्रीतम होय ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

बलरामजी करके धेनुकराक्षस का वधकरना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब श्यामसुन्दरका आठवांवर्षलगा तब एकदिन उन्हों ने यशोदासेकहा अयमैया अबमैं बनमें गौचरानेजाऊंगा सो तुम नन्दबबा से कहो कि वे मुझे जानेदेवें जब यशोदाने यहबात नन्दरायसे कही तब उन्होंने शुभसायत पूंछ-कर दशहजार गौ श्यामसुन्दर से दानकराईं व कार्त्तिकसुदी अष्टमीको उन्हें गौ चराने वास्ते भेजतीसमय यहबातकही अयबेटा तुम बनमें ग्वालों के साथ रहना व ग्वालोंको बुलाकर समझादिया है भाइयो आजसे श्याम व बलरामको भी गौ चरानेवास्ते अपने साथ लेजायाकरो पर बनमें उनकोअकेले न छोड़ना ऐसाकहकर नन्दजीने दोनोंभाइयों को दहीका तिलकलगाके बिदाकिया जब श्यामसुन्दर ग्वाल व गौ समेत वृन्दावन में पहुंचे तब वहांपर एकतालाब पक्का निर्मलजलसे भराहुआ अति शोभायमान देखकर गौवोंको चरनेवास्ते छोड़दिया और आप ग्वालबालोंके साथ आनन्दपूर्वक खेलनेलगे कभी ग्वालबालों से कहते मैं तुम्हारी हथेलीपर अपना हाथमारकर भागता हूं तुममुझे दौड़करपकड़ो कभी किसी ग्वालबालको हाथी व किसीको घोड़ाबनाके उसपर चढ़कर कहते तुम हाथी व घोड़ेकी बोलीबोलो व कभी आप गौवोंकेपास बाघकी बोलीबोल-कर उन्हेंडराते इसीतरह अनेकलीलाकरके सबको सुखदेते थे उससमय वृन्दावनबिहारीने शोभा उसबनकी देखकर श्रीदामाआदिक ग्वालबालों से कहा तुमलोग चैतन्यचोला-पाकर बलदाऊजी की महिमा नहीं जानते देखो इस सुन्दरस्थान में वृक्ष जड़रूपहोकर झुकेहुये बलरामजीके चरणोंको दण्डवत्करते हैं इन्हें यहइच्छा है कि जड़रूपसे छूटकर मनुष्यका चैतन्यचोलापाते तो तुम्हारी सेवाकरके कृतार्थहोते व सदासे संसारमें ऐसी रीति है कि जिसकेपास जोवस्तु उत्तमहोती है वह अपनेस्वामीको भेजदेताहै इसलिये यह सबवृक्ष परोपकारीहोकर अपना २ फल व फूल बलदाऊजीको भेंटदेते हैं और ये भँवरे फूलोंपर गुंजतेहुये जो देखतेहो सो बलदाऊजीका यशगाते हैं व मोरलोग अपना २ नाच दिखलाकर कोकिलाआदिक पक्षी अपनी २ बोली उन्हेंसुनाते हैं और यह सबवृक्ष अपने फूल व फलोंसे राही व बटोहियोंकी मेहमानी करते हैं इसवास्ते इनका बड़ादाता

व परोपकारी समझनाचाहिये और तुमलोग जितने जीव जड़ व चैतन्य वृन्दावनमें देखतेहो यहसब बलरामजी के चरणोंमें प्रीतिरखनेसे बैकुण्ठजाने योग्य हैं और यह चौरासीकोस ब्रजभूमिधन्यहै इसकीबड़ाई कोई नहीं करसक्ता व तुम्हारेचरण इसधरती पर पड़नेसे यहां सदा बसन्तऋतु बनीरहती है व वृन्दावनके सबजीव जड़ व चैतन्य जीवनमुक्त हैं हे राजन् ऐसीबड़ाई वृन्दावनकी करके जब श्यामसुन्दर एकऊंचे टीले पर चढ़कर बैठे व अपने चौगिर्द उपरनाघुमाकर काली पीली धौरी धूमरी गौवों का नामलेकर पुकारनेलगे तब सब गायें दौड़ती व हांफतीहुई केशवमूर्त्ति के पास आन पहुँचीं उससमय उनकी ऐसी शोभामालूम होतीथी जैसे रंगबरंगकी घटा चन्द्रमा के निकट चारोंतरफसे घिरआवे फिर मनहरणप्यारेने गौवोंको बनमें चरनेवास्ते हांकदिया और आप बलरामजीसमेत कलेवाकरके कदमकीछायामें एकसखाकी जंघापर शिरधर कर सोरहे जब निद्राखुली तब बलरामजी से बोले अय भाई हम व तुम अलग २ ग्वाल व गाइयोंकी टोलीबांधकर आपसमें फूलोंसे लड़ें बलभद्रजीने कहा बहुतअच्छा तब आधे २ ग्वाल व गौ दोनों भाइयों ने बांटलिये व अनेक रंग के फूल तोड़कर अपनी २ झोली सबोंने भरली व अनेकभांतिका बाजा अपने २ मुखसे बजाके एक दूसरेको फल व फूलमारकर आपसमें खेलकिया कुछ देरतक इसीतरह खेलकर फिर अपनी २ गौ अलग चरानेलगे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिस परब्रह्म परमेश्वरकादर्शन ब्रह्मा व महादेवआदिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता वह बैकुण्ठनाथ मुरैलेके संग नाचकर ग्वालबालोंके साथ खेलतेथे किसे सामर्थ्य है जो उनकीलीला व महिमा बर्णनकरिसकै जब गौ चरातीसमय बलरामजी सब ग्वालबाल व गायोंसमेत एकतरफ बनमें चलेगये व श्यामसुन्दर दूसरेबन में जानिकले उससमय एकग्वालने बलरामजीसे कहा हे भाई यहांसे थोड़ीदूरपर ताड़का ऐसा बन है जिसमें अमृतकेसमान मीठे २ फललगेहैं सो वहांपर धेनुकनाम राक्षस गर्दभरूपसे उन फलों की रखवारीकरके इसतरह आप खाता और न दूसरेको खानेदेता है जिसतरह सूमका धन किसीकेकाम नहीं आवता सो हमलोग तुम्हारीकृपासे वे फल खायाचाहते हैं यह सुनकर बलरामजीने कहा अभी चलकर खुशीसे वह फलखावो राक्षस तुम्हारा क्या करसक्ता है ऐसावचन सुनतेही ग्वाल बेडरहो बलदाऊजीके साथ उसबन में चलेगये जब बलभद्रजी ने एकवृक्ष को पकड़कर जोरसे हिलादिया व सबफल उसके टूटकर गिरपड़े तब धेनुकराक्षस फलगिरनेका शब्दसुनतेही चिल्लाताहुआ दौड़ा उसे आतेदेख कर सब ग्वालबाल मारेडरके भागगये व अकेले बलरामजी वहां खड़ेरहे जब उस गदहेने आतेही एकदुलत्ती संकर्षणको मारी तब बलभद्रजी ने उसकी टांग पकड़कर पृथ्वीपर पटकदिया जब वह फिर लोटपोटकर खड़ाहोगया व धरतीसूंघकर कानदबाये हुये बलरामजीको दुलत्तियां मारनेलगा तब हलधरजी ने दोनोंटांग उसकी धरकर

एकऊंचे वृक्षपर ऐसापटका कि वह उसीसाइत मरगया व वृक्षटूटकर गिरपड़ा उसको मरा देखतेही बहुतसे राक्षस उसके पार्श्ववर्ती बलरामजीको मारनेवास्ते आये सो उन लोगोंको भी बलभद्रजीने पलभरमें मारडाला उससमय देवतोंने बलरामजी पर फूल वर्षाकर बाजन खुशीकेबजाये हे राजन् ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता ध्यान व पूजा छोड़कर बैकुंठनाथका दर्शनकरने वृन्दावनमें आयाकरतेथे धेनुकराक्षसके मरनेउपरान्त ग्वालबालोंने इच्छापूर्वक वे फलखाये व अपनी अपनी झोरी घरलेआनेवास्ते भरली व उसवनमें निर्भयहोकर गाय चरानेलगे ॥

दो० ब्रज मोहन घर को चले जानि सांझ की बेर।
लीन्हीं गायें घेर सब मुरली की धुनि टेर ॥

हे राजन् जब श्याम व बलराम हँसते व खेलते ग्वालबाल व गायोंसमेत घरआये तब ग्वालोंने वहफल ताड़का वृन्दावनवासियों को बांटकर कहा आज बलरामजी ने बनमें धेनुकादिक बहुतसे राक्षसोंकोमारा यहबात सुनकर सबकोईप्रसन्नहुये दूसरेदिन श्यामसुन्दर फिर ग्वालोंकेसाथ गौचरानेगये व बलरामजी उसदिन घरपररहे सो बन में चरतीसमय सबगौ छिटकगई जब ग्वाललोग श्रीकृष्णजी से बिलगहोकर गौवोंको ढूंढ़ने निकले और धूपमें व्याकुलहोकर अतिप्यासेहुये तब उन्होंने गौवोंसमेत यमुना किनारे जाकर पानी पिया ॥

दो० गोप गाय अँचवत भये कालीदह को नीर।
निकसे सब अकुलायकै बैठगये जल तीर ॥
सो० परे सकल मुरझाय जहां तहां बिष झारते।
ग्वाल बच्छ अरु गाय भये मनो बिन प्राण सब ॥

हे राजन् जब सब ग्वाल व गौ कालीनागके विषसे जो यमुना में रहताथा अचेत होकर गिरपड़े व श्यामसुन्दर के पास देरतक नहीं आये तब मनहरणप्यारे ने उन्हें ढूंढ़ते व पुकारते यमुनाकिनारे जाकर क्या देखा कि वह सब कालीकुण्ड के किनारे मरेहुये पड़ेहैं यहदशा उनकी देखकर केशवमूर्तिने बिचारा कि कालीदहका जल पीने से यहदशा इनकी भई है मैं घरपरजाकर इनके माता व पिता से क्या कहूंगा इन्हें जिलानाचाहिये ऐसाबिचारकर ब्रजनाथजीने जैसे अमृतरूपीदृष्टिसे उनकी ओर देखा वैसे सब ग्वालबाल गायोंसमेत जीउठे जिसतरह कोई नींदसेजागे उसीतरह वहलोग उठकर अपनीआंखें मलनेलगे व मुरलीमनोहरको वहां देखतेही उनके गलेमें लिपट गये तब दुःखभंजनने कहा तुमलोगोंने मुझसे बिलगहोकर कालीदहका जलपिया इसी कारण तुम अचेतहोगयेथे सो परमेश्वरने तुम्हाराप्राण बचाया यहसुनकर ग्वालबालों

ने कहा यमुनाजलपीनेसे हमारी यहगतिहुई थी सो तुमने आनकर जिलादिया ब्रज-बासियोकी रक्षाकरनेवाले आपहैं जब संध्यासमय मनहरणप्यारे ग्वाल व गायोंकोसाथ लिये मुरलीबजातेहुये वृन्दाबनके निकटपहुँचे तब सब ब्रजबाला अपने अपने घरका कामकाजछोड़कर उनके दर्शनवास्ते दौड़आईं व उनकीछबि देखकर अपनी २ आंखें ठंढीकीं व ग्वालबालोंने घरपहुँचकर नन्द व यशोदा आदिक से कहा आज हमलोग कालीदहका जल पीनेसे गायोंसमेत मरगयेथे सो श्रीकृष्णजीने हमैं जिलादिया ॥

दो० अब हम काहू डरत नहिं हरि हैं हमैं सहाय ।
बल मोहन के बल फिरत बन बन चारत गाय ॥
सो० परत गाढ़ जब आय तब तब होत सहाय हरि ।
चिरंजीव दोउ भाय यशुमति यह तेरे कुँवर ॥

यशोदा व रोहिणी व गोपियां यहहाल सुनकर बहुतप्रसन्नहुईं व नन्दजी ने कहा कि जोबात गर्गजीकहगयेथे वह आंखोंसे दिखलाईदेती है श्रीकृष्णजी ने कोई अवतार होकर बड़ेभाग्यसे मेरेयहां जन्मलियाहै जब यशोदाने श्यामसुन्दरको शय्यापर सुलाया तब उन्होंने कालीनागको यमुनाजलसे निकालना विचारकर यशोदासे कहा अयमैया मैंने ऐसास्वप्नदेखा है जानो किसीने मुझे यमुनाजलमें गिरादिया यहसुनतेही नन्द व यशोदाने मोहनप्यारे के हाथसे कुछ दानकराया व स्वप्नकी बात झूटी जानकर अपने मन को धैर्य दिया ॥

सोलहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका कालीनागको यमुनाजलसे निकालना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् श्रीकृष्णजी ने यह बिचारा कि कालीनागका यहांरखना अच्छानहींहै किसवास्ते कि मनुष्य व पशुपक्षी जोकोई इसदहका जलपीवेगा वह मर-जायगा व यहां कालीनागके रहने से यमुनाको दोषलगता है इसलिये इसको यहां से निकालनाचाहिये उसनागके बिषकीज्वालासे कालीदहकाजल चारकोसतक खौलताथा इसलिये किसी जीव पशुपक्षीआदिकको ऐसीसामर्थ्य नहींथी जो वहांजासके क़दाचित् कोई धोखेसेभी जाता तो जलकर उसदहमें गिरपड़ताथा और उसजगह कोई वृक्ष नहीं ठहरकर केवल एकवृक्ष कदमका अविनाशी उसजगहपर था इतनीकथासुनकर राजा परीक्षितनेपूंछा हे स्वामी इसका क्याकारण है जो उसवृक्षका नाशनहींहुआ शुकदेवजी बोले हे राजन् बीच किसीयुगके उसवृक्षपर गरुड़जी अपनेमुखमें अमृतलियेहुये आन बैठेथे सो उनकी चोंचसे एकबूंद अमृत उसवृक्षपर गिरपड़ाथा इसलिये वहवृक्ष हरा-रहिकर उसे कालीनागकाबिष प्रवेशनहींकरसक्ता था जब श्यामसुन्दरने कालीनाग के

निकालनेका बिचारकिया तब उनकीइच्छानुसार नारदमुनि कंसकेपासगये जब कंसने बड़े आदरभावसे नारदजीको दण्डवत्करके बैटाला तब उन्होंनेपूंछा हे राजन् तुमक्यों उदास मालूमदेतेहो यहसुनतेही कंस हाथजोड़करबोला महाराज गोकुलमें नन्दजी के यहां दोबालक बड़ेबलवान् उत्पन्नहुये हैं जिन्होंने अघासुरआदिक राक्षसोंको मारडाला उनसे मुझे अपनेप्राणका खटका दिखलाई देता है ॥

चौ० ये दोउ ब्रजमें नन्दकुमारा । जानिपरत हैं कोउ अवतारा ॥
कहतजिन्हें बलरामकन्हाई । तिनकी गतिमति जानि न जाई ॥
अबतुममुनिकछुकहोबिचारा । जेहिबिधि मारोंनन्दकुमारा ॥
मुनि हरिकेगुण नीके जाने । सुनि नृपवचन मनहिंमुसक्याने ॥

दो० तब मुनि बोले नृपति सों सत्य कहो तुम बात ।
वे दोऊ अवतार हैं उन गति जानि न जात ॥

सो० हैं वे तुम्हरे काल प्रकट भये ब्रज आइकै ।
नन्द गोप के बाल तुम उनको राखो नहीं ॥

ऐसाकहकर नारदमुनिबोले हे कंस मैं एकउपाय इसका बतलाताहूं तुम नन्दजीको वास्ते भेजने फूलकमल कालीदहके कहलाभेजो जब वहबालक वहां फूललेने जावैगा तब उसको कालीनाग डसलेवेगा जब ऐसासमझाकर नारदमुनि चले गये तब कंस ने उसीसाइत नन्दजीको यह कहलाभेजा कि कल्ह करोरफूलकमल कालीदह से मँगवा-कर हमारे पास भेजदेव नहीं तो हम तुम्हाराघरबार लूटकर ब्रजसे निकालदेवैंगे और तुम्हारेबेटों को कैदकरेंगे श्यामसुन्दर अन्तर्य्यामी यहहाल जानकर उसदिन गौचराने नहींगये ग्वालबालों के साथ खेलतेरहे जब ऐसासंदेश कंसका नन्दरायके पास पहुँचा और उन्होंने घबराकर उपनन्दआदिक गोपों से यहहालकहा तब सब वृन्दावनबासी शोचितहोकर आपसमें कहनेलगे हमलोगों से कालीदहकाफूल आना बड़ाकठिनहै हमैं तो अपने प्राणका कुछडरनहीं कंसमारै चाहै छोड़ै पर यही बड़ाशोच है कि श्याम व बलरामको कैदकरैगा कोई ऐसाठिकाना देखनेमें नहींआता जहां इनदोनों बालकोंको छिपायरखते एकनेकहा चलो राजाकंसकी बिनतीकरैं व जितनादण्डमांगे सो देवैं आज तक कंसने ऐसाक्रोध कभीनहीं किया था ॥

दो० मेरे सुत दोउ नृपति उर खटकत हैं दिनरात ।
आज कहेउ ऐसो बचन बलमोहन पर घात ॥

सो० चढ़िहैं ब्रजपरधाय कालिह सबनपर कोपकरि ।

भयो मरण अब आय को राखे कित जाइये ॥

हे राजन् नन्द व यशोदाआदिक उसीशोचमें बैठेरहेथे जब मुरलीमनोहर अन्तर्य्यामी सबको दुःखीदेखकर घरपरआये और नंदरानी उन्हें गोदमेंउठाकर अतिबिलाप करनेलगी तब श्यामसुन्दरनेपूंछा अय मैया तू क्यों इतनारोतीहै यशोदाबोली तू मेरेरोनेका हाल जाकर अपने बापसे पूंछले यहवचनसुनतेही श्रीकृष्णजी नन्दकेपासआये व उन्हें उदास व रोतेहुये देखकरपूंछा अयबाबा तुमक्यों इतनेव्याकुलहो यहवचन अपने लाल का सुनकर नन्दजीबोले हे बेटा जबसे तुम्हारा जन्महुआ तबसे राजाकंस ने तेरेमारने वास्ते कैसे २ राक्षसोंको भेजा पर हमारे कुलदेवता सहायहुये जो तुम्हारा प्राणबचा ॥

दो० कालीदह के फूल अब पठयो भूप मँगाय ।
तब से यह गाढ़ी परी अब को करै सहाय ॥
सो० जो नहिं आवैं फूल लिख्यो कंस स्वहिं डाटिकै ।
करौं व्रजहि निरमूल बांधि मँगावों तुव सुतन ॥

अयबेटा वहांका फूलआना बहुतकठिन समझकर मुझे शोचहुआहै यहसुनकर श्यामसुन्दरनेकहा अयबाबा जिसदेवता ने तुम्हारीसहायता पहिलेकी थी उन्हींका ध्यानकरो वह फिर तुम्हारी सहायताकरैंगे जब उनकेसमझाने से नन्दआदिक व्रजवासियोंको कुछ धीर्य्यहुआ तब अपने २ कुलदेवतोंका ध्यान हाथजोड़कर किया व श्यामसुन्दर यमुना किनारे जाकर ग्वालबालों से गेंदखेलनेलगे जब खेलतीसमय केशवमूर्त्तिने जानबूझकर श्रीदामाकी गेंद कालीदहमें फेंकदी तब उसने श्यामसुन्दरकी कमरमें हाथडालकरकहा मेरीगेंद लादेव बिनालिये तुमको नहींछोडूंगा दूसराग्वालबाल मुझे मतसमझो मोहनप्यारे ने श्रीदामासेकहा मेरी फेंट छोड़देव थोड़ी बस्तुकेवास्ते झगड़ा मतिबढ़ाओ तैंने छोटेबड़ेका बिचार न करके मेरीकमरमें हाथडालदिया तू हमारी बराबरी करताहै मेरे प्रतापको नहींजानता मैंने तेरेसामने पूतना व बकासुरआदिक राक्षसों को मारडालाथा तिसपरभी तू हमसे नहींडरता यहबातसुनकर श्रीदामाबोला तुम बड़ेमनुष्यके बेटाहोनेसे कुछ राजा नहीं होगये यहां हम और तुम दोनों बराबरहैं बिना गेंददिये हमारी तुम्हारी नहीं बनैगी और तुमने राक्षसोंको मारा तो क्या हुआ अब राजाकंसने कालीदहके फूल मांगेहैं पहुँचाओगे तो मैं जानूंगा जब कंस काल्हि तुमको पकड़ मँगावेगा तब तुम्हारी सामर्थ्य मालूम होगी ॥

सो० सकल देव शिरताज पार न पावैं ब्रह्म शिव ।
ताहि गेंदके काज फेंटपकड़ झगड़त सखा ॥

हे राजन् ऐसा कठोर बचन सुनकर बैकुण्ठनाथने कहा तू मूर्ख सम्हालकर बात

नहीं करता कंसका डर मुझे क्या दिखलाताहै मैं फूललेनेवास्ते यहां आयाहूं आज कमलके फूल कंसको भेजकर ब्रजवासियोंका शोच मिटाऊंगा तेरे सामने कंसकेशिरका बाल खींचकर उसे मारूंगा ऐसा कहकर मुरलीमनोहरने क्रोधसे श्रीदामाको धक्का दे दिया व कमर अपनी उससे छुड़ाकर कदमके वृक्षपर चढ़गये तब ग्वालबालों ने हँसी से तालीबजाकर कहा कि श्यामसुन्दर श्रीदामाके डरसे भागकर वृक्षपर चढ़िगये व श्रीदामा रोकर कहनेलगा मैं जाकर तुम्हारे माता व पितासे गेंद फेंकदेनेका हाल कहता हूं तब ब्रजनाथजी ललकारकर बोले मैं तेरा गेंद लेआने वास्ते जाताहूं ऐसा कहकर मनहरणप्यारे कालीदहमें कूदपड़े ॥

दो० कोमल तन अतिसांवरो साजे नटवर साज ।
जल भीतर पैठे तहां जहँ सोवत अहिराज ॥

हे राजन् जब श्यामसुन्दर यमुनाजी में पैठगये तब सब ग्वालबाल श्रीदामा को गालियां देतेहुये यमुनाकिनारे हाथ फैलाकर रोनेलगे व गौवें चारोंओर मुख बाय बाय कर चिल्लानेलगीं और उनमें से दोबालक रोतेहुये घरकीओर खबर देनेवास्ते चले और उससमय वृन्दाबनमें अनेकप्रकारका अशकुन होनेसे नन्द व यशोदाको बड़ाशोच हुआ तब वे केशवमूर्त्तिको ढूंढ़ने निकले और यशोदाने नन्दरायसे कहा आज श्रीकृष्णके साथ बलरामभी नहीं परमेश्वरकी कृपासे मेरा प्राणप्यारा कुशल रहै ॥

दो० चली रसोई करन मैं छींक भई मोहिं आज ।
आगे होय बिलारि पुनि गई दूसरे भाज ॥

हे राजन् जिससमय नन्द व यशोदा शोचकरते व मनहरणप्यारेको ढूंढ़तेहुये चले जातेथे उसीसमय उन दोनों ग्वालबालों ने रोतेहुये आनकर कहा अय यशोदा माता नन्दलालजी गेंद खेलतेहुये कदमके वृक्षपर चढ़गये थे सो वहांसे कालीदहमें कूदकर डूबगये यह बचन सुनतेही नन्द व यशोदा व्याकुलहोकर गिरपड़े व यशोदाने नन्दजी से कहा मेरे प्राणप्यारे ने जो रातिको स्वप्न देखाथा वह बात सत्यहुई जब वृन्दाबन में यह समाचार पहुँचा तब रोहिणी व वृषभानु आदिक सब गोपी व सब ग्वाल अपना अपना शिर व छाती पीटते नन्द व यशोदा समेत दौड़ेहुये यमुनाकिनारे पहुँचे और वहां मोहनीमूर्त्तिको न देखकर बालकों से उनका हाल पूंछा जब उन्हों ने उस जगह को जहांपर केशवमूर्त्ति कूदे थे दिखला दिया तब नन्द व यशोदा व्याकुलहोकर यमुनाजल में कूदने दौड़े सो गोप व गोपियों ने उनको थाम्हलिया ॥

दो० सुखदानी देखे बिना बिलखानी अतिमाय ।
रानी अररानी परैं पानी में अकुलाय ॥

लोटत अतिब्याकुलधरणि जातगिरनजलधाय ।
कहतश्याम तुमदियोदुख मोको समय बुढ़ाय ॥

हे राजन् यशोदा रोतेरोते ब्याकुलहोकर बौरहोंकेसमान कहतीथी हे बेटा तुमने कहां बिलम्बलगाई तुम्हारे खानेवास्ते माखनरोटी रक्खाहै जल्दीआनकर भोजन करो ॥

चौ० बैठिय आनि संग दोउ भैया । तुमजेंवौ मैं लेउँ बलैया ॥

हे मोहनप्यारे मैं तेरे बिना कैसे जीवोंगी व किसे माखनरोटी खिलाकर अपना कलेजा ठण्ढाकरौंगी अय लालन जब तू अपनी सांवलीसूरति मोहनीमूर्त्ति दिखलाकर मुझेमीठी मीठी तोतली बातैं सुनावताथा तब मैं तीनोंलोकका सुख उसके बराबर नहीं समझती थी अब मैं किसतरह वह स्वरूप देखूंगी जब २ हमलोगों पर दुःख पड़ता था तब २ तुम हमारी रक्षा करतेथे अब हमलोग तुम्हारे विरहरूपी सागरमें डूबरहे हैं क्यों नहीं आनकर इससे बाहर निकालते ऐसी २ अनेक बातैं कहकर यशोदा बिलाप करतीथी ॥

चौ० शोकसिन्धु बूड़ी नँदरानी । तनकी सुधि बुधिसबै भुलानी ॥

दो० ब्रजयुवतिन सुनि महरिके बचन प्रेम आधीर ।
अकुलानी रोवत सबै भई कठिन उर पीर ॥

हे राजन् इसीतरह सब स्त्री व पुरुष बालक व वृद्ध वृन्दावनवासी अपना २ घर अकेलाछोड़कर कालीदहके किनारे खड़ेहुये रोतेथे और किसीको तनकी सुधिनहींथी ॥

चौ० ब्रजबासी सब उठे पुकारी । जल भीतर क्या करत मुरारी ॥
मात पिताअतिहीदुखपावैं । रोय रोय सब कृष्ण बुलावैं ॥

और सब ब्रजबाला अपना शिर व छाती पीटकर कहती थीं हे मनहरणप्यारे तुम हमलोगों को इस दुःखमें छोड़कर आप जलविहार करने चलेगये तुम्हारेबिना सारा ब्रज सूना होगया अब हमारा दही व माखन कौन चुराकर खायगा और हम सब गोपियां किसका उलहना देने यशोदाके पास जावेंगी तुम्हारे विरह में हमलोग मरने चाहती हैं जल्दी बाहर निकलकर हमारा प्राण बचाओ जलके भीतर बैठे क्या करते हो व नन्दजी बिलापकरके कहते थे हे बेटा तू मुझे छोड़कर कहां चलागया तेरे बिना मुझको जगत् अँधियारा मालूम होताहै मैं किसतरह जीवोंगा इसी दुःखके मारे गोकुल छोड़कर वृन्दाबन में आनबसे थे सो वहां भी तुम्हारे प्राणपर घात लगा अयप्राण-प्यारे जिसतरह तुमने बड़े बड़े राक्षसों को मारकर हमको सुखदियाथा उसीतरह आज भी मेरी बुढ़ाई की लज्जा रखकर जल्दी अपनी मोहनीमूर्त्ति दिखलाओ नहीं तो अब मैं मरने चाहताहूं ॥

सो० लोग उठे सब रोय दीनबचन सुनि नन्दके ।
कहत बिकलसबकोय हरितुम ब्रजसूनोकियो ॥

जब यशोदा रोते २ अचेत होगई तब बलरामजी ने उसपर जलका छींटा डाला जब उसे कुछ होशहुआ तब उसने बलरामजी को देखतेही रोकरकहा हे बेटा कन्हैया तेरे बिना एकक्षायत अकेला नहीं रहताथा तैने उसको कहां छोड़दिया जल्दी मेरेप्राण-प्यारेको बुलालावो वह बहुत भूँखाहै अभीतक उसने कुछ नहींखाया जब यहबात कहकर यशोदा कन्हैया २ पुकारनेलगी तब बलरामजी ने उसे धैर्य्य देकर इसतरह समझाया हे माता तुम किसवास्ते इतना शोच करतीहो मोहनप्यारे तुमलोगों को उदास देखकर कमलके फूललानेवास्ते कालीकुण्डमें गयेहैं वह अविनाशी पुरुष त्रिलोकीनाथहैं उनको यमुनाजलमें डूबने या कालीनागके काटनेका कुछ डरनहीं है आगे तुम अपनीआंखसे देखचुकीहो कि पूतनाको उन्होंने क्षणभर में मारडालाथा मैं तुम्हारी सौगन्द खाकर कहताहूं कोई ऐसा जीव तीनोंलोकमें नहीं है जो उनको दुःखदेने व मारनेसकै ॥

दो० मोहिं दोहाई नन्दकी अबहीं आवत श्याम ।
नाग नाथि ले आवहीं तब कहियो बलराम ॥

जब बलभद्रजीके समझानेसे कुछ धैर्य सबकोहुआ तब यशोदाने बलरामजीकाहाथ पकड़लिया व उनको अपनेपास बैठाकर बलायें लेनेलगीं और सब ब्रजवासी यमुना जीकी ओर टकटकालगायेथे कि देखैं मोहनप्यारे कब यमुनाजल से बाहरनिकलते हैं शुकदेवजी ने कहा हे राजन् उस दिन जैसा शोच नन्द व यशोदा आदिक जड़ व चैतन्य सब वृन्दावनवासियोंकोहुआथा उसकाहाल कहांतक वर्णनकरैं अब नन्दलाल जीका हालसुनो जब वह अपना नटवररूप साजेहुये कालीदहमें पहुँचे तब नागिन सुन्दरताई मोहनीमूर्त्तिकी देखतेही उसपर मोहितहोकर कहनेलगी तुम ऐसे स्वरूपवान् व कोमलतन किसवास्ते यहां आयेहौ जल्दी भागजाव अभी कालीनागसोया है नहीं तौ उसके जागतेही तुम्हाराअंग विषसे जलजायगा केशवमूर्त्ति यहवचन सुनकर नाग पत्नीसे बोले तू अपनेपतिको जल्दी जगादे हमको राजाकंस ने भेजकर करोड़फूलक-मलके कालीकुण्डमेंसे मांगे हैं तब नागिनबोली तुम कालीनाग से क्या बातैं करोगे उसके एकफुफकारसे तुम्हाराशरीर जलजायगा मुझे तेरा सुन्दररूप देखकर दया मा-लूमहोतीहै राजाकंसमरजावै जिसने तेरी ऐसी मोहनीमूर्त्तिको यहांभेजा और तू मरने के वास्ते अपनीखुशीसे यहां आयाहै बालकजानकर तुझे कहतीहूं तेरे मरनेसे तुम्हारे माता व पिता बड़ादुःखपावैंगे तू बिचारा लड़का अपना प्राणलेकर यहां से चलाजा यह सुनतेही मनहरणप्यारे बोले ॥

दो॰ अरी बावरी सर्पसों काह डरावति मोहिं ।
जैसो मैं बालक प्रकट वही देखावों तोहिं ॥
सो॰ क्यों नहिं देत जगाय देखों मैं याके बलहिं ।
यापर कमल लदाय लैजैहौं यहि नाथि ब्रज ॥

हे नागिन सोयेहुयेको मारना अधर्म है इसलिये तुझसे जगानेकेवास्ते कहताहूं यह बचनसुनकर नागपत्नीबोली छोटेमुख बड़ीबात तुझेकहना उचित नहीं है यह काली नाग गरुड़जीसे लड़ाथा जिसे तुम नाथनेकेवास्ते कहतेहो मुझे मालूमहुआ तेरी मृत्यु तुझे यहांलेआईहै जो तू मेराकहना नहीं मानता तुझे कालीनागसे लड़नेकीसामर्थ्यहो तो उन्हें आप जगाले यह बात सुनतेही वृन्दावनविहारी ने उसको झिड़ककर जैसे अपने पांवसे कालीनाग की पुच्छदबाई वैसे वह गरुड़जी के डरसे चौंककर उठखड़ा हुआ जब उसने देखा कि मेरे सामने एकबालक खड़ा है तब आश्चर्यमानकर कहा देखो मेरे विषकीगर्मी अक्षयवट नहीं सहसक्ता व कोसोंतक के पशुआदिक उसगर्मीसे भस्महोजाते हैं यह कौन ऐसाबालक है जिसने यहांतक जीते पहुँचकर मुझे नींद से जगाया ऐसा विचारकर कालीनाग क्रोधसे पुच्छपटकताहुआ केशवमूर्त्तिकीओर दौड़ा व अपने एकसौएकफणसे उनको काटनेलगा हे राजन् उस विषकीगर्मीसे यमुनाजल अदहनकेसमान खौलताथा पर बैकुण्ठनाथको कुछ विष नहीं व्यापताथा तब उस ना-गिननेकहा यहबालक बड़ाशूरवीरहोकर कोई मंत्रजानताहै इसलिये इसको विष प्रवेश नहीं करता जब कालीनागने देखा कि मेरे काटनेसे यहबालक नहीं मरता तब उसने मोहनप्यारेको अपनेशरीरसे लपेटकर कसलिया उससमय नागिनने पछिताकर मनमें विचारा देखो ऐसासुन्दरबालक अपनी खुशीसे कालबशहोकर यहांआया अब इसका बचना कठिन मालूम होताहै व कालीनागने भी अभिमान से केशवमूर्त्तिसे कहा तुम मुझे नहीं जानते मैं सर्पोंकाराजाहूं अब यहांसे जीतेबचकर जावोगे तो देखूंगा गर्व-प्रहारी भगवान् ने यह बचनसुनतेही अपनाशरीर ऐसा बढ़ाया कि अंग २ कालीका टूटनेलगा जब उसने बहुतदुःखीहोकर मोहनीमूर्त्तिको छोड़दिया व अलगजाकर खड़ा होगया तब मुरलीमनोहरने तुरन्त उसकाफण पांव के नीचे दबाकर नाकछेदडाला व उसमें डोरी नाथकर उसके शिरपर चढ़गये ॥

दो॰ माखनप्रभु फणगहिलियो दियो ब्यालफुफकार ।
चरणकमल माथे धरे निरतत हरी मुरार ॥

जब वृन्दावनविहारी तीनोंलोकका बोझ अपनेशरीरमें लेकर कालीनागके मस्तक पर बंशीबजातेहुये कूद २ कर नाचने लगे उससमय देवता व गन्धर्व व अप्सरा व

किन्नरआदिक अपने २ बिमानोंपर बैठकर यह आनन्दरूपी नाच देखनेआये व गन्ध-र्वोंने अनेकतरहके बाजनबजाकर गुणानुवाद बैकुण्ठनाथका साथ ताल व स्वरके गाना अप्सरोंने नाचनाआरम्भकिया व देवतों ने श्यामसुन्दरपर फूलबरसाये हे राजन् उस समय नाचने व गाने व मुरलीबजानेकी ऐसीशोभा मालूम देतीथी जिसका बर्णन नहीं होसक्ता जब कालीनागकेमुखसे मारे बोझ त्रिलोकीनाथके लोहूबहनेलगा तब वह मरण तुल्यहोकर अपने विषका घमण्ड भूलगया व अपनाफण पटक २ कर मुखसे जिह्वा निकालदिया व अपने जीने से निराशहोकर शिरझुकालिया उससमय कालीनाग को बैकुंठनाथका दर्शन मिलने व उनकाचरण माथेपर पड़नेसे ज्ञानउत्पन्नहोकर यह बात स्मरणआई कि मैंने ब्रह्माजीसे सुनाथा ब्रजगोकुलमें कृष्णावतारहोगा ॥

दो० ते गोकुल में अवतरे मैं जान्यों निरधार।
ये अविनाशी ब्रह्म हैं ब्रज क्रीड़ा अवतार॥

सो यह बालक वही अवतार है नहीं तो दूसरेकी क्या सामर्थ्यथी जो मेरे विषसे जीताबचे इनत्रिलोकीनाथकी बराबरी कोईकर नहींसक्ता बहुत बुराकामकिया जो पर-ब्रह्म परमेश्वरपर फण चलाया यहबात मनमें समझतेही कालीनाग शरणपुकारकरबोला हे महाप्रभू मैंने तुम्हारारूप नहीं पहिंचाना अबमुझे जीवनदान देकर अपनी शरणमें लीजिये यह अधीनताई कहकर कालीनाग चुपहोरहा व अपनी कर्त्तव्यकी लज्जासे कुछ स्तुतिकर नहींसका श्रीदीनानाथने यह दीनवचन सुनकर समझा कि अब कालीनागका अभिमान टूटगया तब उसे अपना चतुर्भुजी रूपका दर्शनदिया उनका स्वरूप देखतेही कालीनागकी स्त्रियां अतिबिलापसे रुदन करती हुई वहां आईं व हाथ जोड़कर इसतरह पर उनकी स्तुतिकी हे परब्रह्मपरमेश्वर आप तीनोंलोक व सबजीवों के उत्पन्न करनेवाले हैं व तुमने वास्ते मारने अधर्मी व भार उतारने पृथ्वीके अपनी इच्छासे अवतार लियाहै संसारमें जो कोई तुम्हारा ध्यान या भक्ति शत्रुतासे करै वहभी भवसागर पार उतरकर मुक्तिपाताहै जिसतरह अमृत जानकर व अनजानमें दोनों तरह पीनेसे मनुष्य अमरहोकर नहीं मरता उसीतरह तुम्हारे ध्यानका प्रतापभी सम-झना चाहिये हमारे पतिने अपने अज्ञान व अभिमानसे आपको नहीं पहिंचाना सो वह अपने दण्डको पहुँचा पर तुम्हारा दर्शन पाकर कृतार्थ हुआ किसवास्ते कि जिन चरणोंका दर्शन दान व यज्ञ व जप व तप करने से जल्दी नहीं मिलता सो दर्शन इस नागने सहजमें पाया हे दीनानाथ आपने बहुतअच्छा किया कि इस दुःखदायीका घमंड तोड़डाला व इसने न मालूम पूर्वजन्ममें कैसाभारी तप कियाथा जिस तपस्याके फलसे तुम्हारे चरण इसके मस्तकपर बिराजते हैं नहीं तो इन चरणोंकी धूरि मिलने वास्ते लक्ष्मीजी व ब्रह्मादिक देवता व योगी व मुनि चाहना रखते हैं और जल्दी वह रज

उनको नहीं मिलती सो धूरि कालीनागके माथेपर चढ़ी इसके बराबर दूसरेकी भाग्य होना बहुत कठिनहै व हम ऐसी सामर्थ्य नहीं रखतीं जो उस रजका प्रताप वर्णन कर सकैं नारदजी व सनकादिक उस धूरिकी भक्ति अपने हृदय में रखने से इन्द्रासन गद्दी व अष्टसिद्धि व मुक्तिपदवी व तीनोंलोकका सुख उसके सामने कुछ वस्तु नहीं समझते जिसने पारसपत्थर पाया वह सोनेकी चाहना नहीं रखता अब यह तुम्हारे भयसे मरण तुल्यहोगया व बीरलोग डरेहुये को नहीं मारते इसलिये दयाकरके इसका प्राण छोड़ दीजिये नहीं तो हमको भी इसके साथ मारडालिये किसवास्ते कि हम पतिव्रता होकर अपना प्राण इसके अधीन जानती हैं व वेद व शास्त्रमें भी ऐसा लिखाहै कि पतिव्रता स्त्री उसको समझना चाहिये जो अपनेपतिको कोढ़ी व रोगी व दरिद्री होने परभी ईश्वर समान जानै व आजसे अपने स्वामीपर हमैं अधिक विश्वास हुआ कि उसके प्रताप से हमने तुम्हारा दर्शनपाया जब इसी तरह बहुत स्तुति नागिनी ने की तब मुरलीमनोहर अपराध कालीनागका क्षमाकरके उसके मस्तक परसे कूदपड़े तब उस सर्प ने दण्डवत् करके हाथ जोड़कर विनयकिया हे दीनानाथ जो अनजानमें मुझसे अपराध हुआहो सो दयाकरके क्षमा कीजिये और मैं सांपरूप बिषसे भराहुआ तामसीस्वभावथा इस लिये तुम्हारे ऊपर अपना फणचलाया ब्रह्मादिक देवता तुम्हारे भेदको जल्दी जाननहीं सक्ते मैं मूर्ख तुम्हैं किसतरह पहिंचानता आपने मुझे दर्शन देकर कृतार्थकिया सब वेद व पुराण तुम्हारा गुण गाते हैं और जो आप न्यायकरकेदेखैं तो इसमें मेरा कुछअपराध समझना न चाहिये किसवास्ते कि मेरी जातिका यही स्वभाव आपने बनादिया है कदाचित् कोई मुझको दूध पिलावे तो मेरेशरीरसे विष उत्पन्नहोगा व गौको खालीभूसा खिलानेसे दूध होताहै मैंने अपने स्वभाव के अनुसार तुम्हारे ऊपर फणचलाया अब मुझे अपनी शरणमें रखिये व मेरा माथा धन्यहै जिसपर तुम्हारे चरण पड़ने से मेरे अनेकजन्म के पाप छूटगये जिन चरणोंको लक्ष्मीजी आठोंपहर अपने हृदयमें लगाये रहती हैं व ब्रह्मादिक देवता दिन रात्रि उनका ध्यान करते हैं और उन्हीं चरणों का धोवन गंगाजी होकर तीनोंलोकको कृतार्थ करती हैं वह चरण तुम्हारा मेरे शिरपर बिराजा शेषनागके एक मस्तक पर आप शयन करते हैं सो उसने इतनी बड़ाई पाई व मेरे एकसौ एक शीशपर आपने चरण रखकर नृत्यकियाहै इसलिये मैं अपने बराबर किसीदूसरे की भाग्य नहीं समझता अब मेरा डर छूटगया ॥

दो० निजपद पंकज परसते गतिपाई मुनिनार ।
सुर नर मुनि पूजततिन्हैं सन्तन प्राणअधार ॥
सो० फिरत चरावत गाय श्रीबृन्दाबन यह चरण ।
भक्तनके सुखदाय ब्रजबासीजन दुखहरण ॥

यह स्तुति सुनकर श्यामसुन्दरने कहा अब तू यहांका रहना छोंड़कर अपने कुल परिवार समेत रमणकद्वीपमें जाके रह मैं यहां जलक्रीड़ा करूंगा व जो कोई कालीदह में स्नानकरके पितरों को तर्पण देगा उसके जन्म जन्मान्तरके पाप छूटजावेंगे व हम तेरा अपराध क्षमाकरके अब तुझसे बहुत प्रसन्न हैं व तेरानाम महाप्रलयतक संसारमें स्थिर रहेगा जो देवता व मनुष्य मेरी व तेरी कथाकहैं व सुनैंगे उनको और इसअध्याय के कहने व सुननेवालों को सांप काटने का भय नहींहोगा व राजा कंसने करोड़फूल कमल कालीकुण्डके मांगे हैं सो तू जल्दी अपने ऊपरलादकर ब्रजमें पहुँचादे यहवचन बैकुण्ठनाथका सुनकर कालीनागने डरते व कांपते विनयकिया हे महाप्रभु मैं फूल कमलके अभी पहुँचाये देताहूं पर रमणकद्वीपमें जाने से मुझे गरुड़जी खाजावेंगे उन्हीं के डरसे मैं यहां भागआयाथा यह सुनकर मनहरणप्यारे बोले ॥

दो० चरणकमलकी थाप है तेरे मस्तक माहिं ।
अब इस छाप प्रतापसे गरुड़ बोलिहैं नाहिं ॥

ऐसा कहनेके उपरांत केशवमूर्त्तिने उसीसाइत गरुड़को बुलाकर कालीनागका भय छुड़ादिया तब कालीनागने बड़े हर्षसे अपनी स्त्रियोंसमेत विधिपूर्वक पूजा श्रीकृष्णजी की की व बहुत रत्न व मणिके हार उनको भेंटदिया व तीनकरोड़ फूल कमलके अपने ऊपर लादलिये तब फिर ब्रजनाथ उसके मस्तकपर चढ़कर नाथ पकड़े हुये वहां से चले॥

सो० फिर यशुमति उरमाहिं उठीलहरि अति प्रेमकी ।
कान्हर आयो नाहिं कहत रोय बलरामसों ॥

यह वचन सुनकर बलभद्रजी बोले हे माता तुम थोड़ी देर और धैर्य्यधरो अभी तुम्हारे प्राणप्यारे आते हैं बलरामजी के समझाने परभी फिर ब्रजवासीलोग व्याकुलता से रोकर कहनेलगे अय मनहरणप्यारे तुम हमारा मोह छोंड़कर कहां चलेगये तुम्हारे बिना हमारी यहगति होती है दो प्रहरसे यमुनाजलमें बैठे क्या करतेहो जल्दी क्यों नहीं निकल आते जिसतरह बिनामणिका सांप तड़फताहै वह दशा नन्द व यशोदाकी फिर होगई तब यशोदा रोकर कहनेलगी मुझधिकारहै जो मोहनप्यारा यमुनामें डूबजावे और मैं जीतीरहूं ॥

दो० कहत यशोदा नंदसों धृकधृक बारंबार ।
अब केतिकदिन जियोगे मरत नहीं स्वहिंमार ॥
सो० करिदेखो मनज्ञान ऐसे दुखमें मरण सुख ।
नन्दभये बिनप्रान मूर्च्छिपरे सुनि प्रियवचन ॥

जब नन्दराय मूर्च्छितहोकर गिरपड़े तब बलरामजीने उन्हें उठाकर कहा हे पिता तुम किसवास्ते इतनाशोचकरके प्राणदेतेहो श्यामसुन्दरको मारनेवाला संसारमें कोई नहीं है वह अविनाशी पुरुष आठोंप्रहर लक्ष्मीजीको साथलिये क्षीरसमुद्र में रहतेहैं उनके यमुनाजलमें कूदनेसे तुमलोग क्योंडरतेहो इसतरह बलरामजी उन्हें समझारहेथे कि उसीसाइत यमुनाजल में लहरि उठनेलगी तब बलभद्रजी बोले देखो अब बैकुंठ-नाथ जलसेबाहर आतेहैं ऐसावचन सुनतेही सब ब्रजवासी यमुनाजीकी ओर देखने लगे उसीसमय नन्दलालजी कालीनागको नाथेहुये जलके ऊपरप्रकटहुये ॥

दो० माखन प्रभु गोपालजी बाहर प्रकटे आय ।
दुःखहरन दानव दलन सन्तन सदा सहाय ॥

हे राजन् उन्हें देखतेही नन्द व यशोदाआदिक ब्रजवासी ऐसे प्रसन्नहोगये जैसे मुर्देके तनमें प्राणआजावै व कालीनागने मुरलीमनोहरको यमुनाकिनारे उतारदिया ॥

सो० तटपर कमल धराय कालीको आयसुदियो ।
उरगद्वीप अबजाय करोबास निर्भय सदा ॥

कालीनाग उनकी आज्ञानुसार दण्डवत्करके उसीसमय अपने कुल परिवारसमेत रमणकद्वीपको चलागया व श्यामसुन्दरने सब ब्रजवासियों को जो दुःख सागर में डूबे थे मिलकर उन्हें सुख दिया उसी दिन से वहां का यमुनाजल जो विष तुल्यथा सो अमृतके समानहोगया ॥

दो० धन्य धन्य प्रभु धन्यकहि मुदित सुमन बरषाय ।
गये देव सब निजसदन हृदय परमसुखछाय ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

कालीनागके रमणकद्वीप छोंड़नेकी कथा ॥

राजापरीक्षितने इतनीकथासुनकर पूंछा हेस्वामी रमणकद्वीप उत्तमस्थान छोंड़कर कालीनाग यमुनाजीमें क्योंआकररहा व गरुड़जीका कौन अपराध उसनेकियाथा इस काहाल विधिपूर्वक वर्णनकीजिये शुकदेवजीबोले ॥

दो० गरुड़बली के त्रासते बास कियो ब्रजआय ।
सो लीला विस्तारसों कहौं सबै समुझाय ॥

हे राजन् सुनो कश्यपजी ब्रह्माके बेटाहैं उनके बहुतसी स्त्रियांहोकर उनमें एककद्रू व दूसरी बिनतानामथी सो कद्रूके कालीनागआदिक बहुतसे सर्पउत्पन्नहुये व बिनता

के दोबालक एकगरुड़जी परमेश्वरके बाहन व दूसरा अरुणनाम सूर्यदेवताका सारथी हुआ सो गरुड़जी व कालीनाग आदिकसर्प रमणकद्वीप में रहते थे एकदिन कद्रू व विनता दोनों सवतिबैठीथीं सो कद्रूने विनतासे पूंछा सूर्यकेरथमें कौनरंगके घोड़ेजुते हैं सो विनताने श्वेतवर्ण व कद्रूने कालेरंगके बतलाये इसीबातपर दोनोंने आपसमें झगड़ा करके यह प्रतिज्ञाकी कि जिसकाकहना झूठाहो वह सच्चकहनेवाली की दासीहोकर रहे जब यह समाचार सर्प्पों ने पाया तब कद्रूसे कहा हे माता तुमने बिना पूँछे हमलोगों के ऐसी प्रतिज्ञाकी कि सूर्य्य के रथमें श्वेतवर्ण के घोड़े जुते हैं तू विनतासे हारजायगी यह बात सुनकर कद्रूबोली अयबेटा मैं बचन हारचुकीहूं अब कोई ऐसा उपायकरो जिसमें मेरा कहना सचहो नहीं तो मुझे विनताकी दासी होना पड़ैगी तब सांपों ने कहा हमलोग जाकर उन घोड़ों के अंगमें लपटजाते हैं इससे वह काले दिखलाई पड़ैंगे तब तू जीतजायगी सो काले २ सांप जाकर उन घोड़ोंके शरीरमें लपटगये इसलिये वह काले दिखलाई देनेलगे उसीसमय कद्रू विनताको साथलेकर घोड़े देखने गई सो सांपोंके लपटे रहने से वह काले देखपड़े इसलिये विनता हारगई ॥

दो० कद्रू बिनतहि जीतिकै लैगइ घरहि लिवाय ।
जाकी नीति अनीति है तासों कहा बसाय ॥

जब गरुड़जी ने यहहाल सुना तब कद्रूसे जाकर कहा तुमने छलकरके मेरी माता को दासी बनानेकी इच्छाकी है सो ऐसा अधर्म करना तुमको उचित नहीथा अब जो वस्तु मांगो सो हम उसके बदले लादेवें पर मेरी माताको दासी मतबनाओ यह बात सुनकर सर्प्पों ने आपसमें सम्मतकरके गरुड़जी से कहा तुम अमृतका कलशा हमैं लायदेव तो उसे दासी न बनावें गरुड़जी ने अपनी सामर्थ्य से उसीसमय अमृतका कलशा लाकर सर्प्पोंको देदिया व अपनी माताको साथलेकर घर चलेआये यहसमाचार सुनकर देवतोंने विचारकिया कि सांपलोग अमृत पीनेसे अमरहोकर सबजीवोंको अधिक दुःखदेवेंगे तो किसतरह कोई जीताबचेगा ऐसा बिचारके सब देवतोंनेआकर गरुड़जीसे कहा तुम अपने बचनप्रमाण अमृतका कलशा कद्रूको देकर अपनीमाताको लिवालेआवो जैसा छलकरके तुम्हारी माताको उन्हों ने दासी बनायाथा वैसाउपाय तुमभीकरो जिसमें अमृतका कलशा उनसे लेलेव गरुड़जी ने यह बात देवतोंकी मानली और जिससमय सर्पलोग अमृतका कलशा तालाबकिनारे रखकर इसइच्छासे स्नान करनेलगे कि पवित्र होकर अमृतपीवैं उसीसमय गरुड़जी वहांपहुंचकर कलशाअमृतका उठालाये और देवतों को सौंपदिया सो देवता अमृतलेकर अपने लोकको चलेगये जब सर्प्पों ने इसीकारण गरुड़से शत्रुता उत्पन्नकी तब एक दिन गरुड़ने नारायणजी अपने स्वामीकी बहुत स्तुतिकरके यह बरदान मांगा कि कोई सांप हमको लड़ाई में न जीतै व सर्प्पों को हम

भोजनकिया करें उनका विष हमें न व्यापै जब परमेश्वर दीनदयालुने गरुड़को इच्छा पूर्वक वरदानदिया तब वह बहुत प्रसन्नहोकर सर्पोंको पकड़के खानेलगे जब सर्पों ने गरुड़जी से जीतनेकी सामर्थ्य अपने में नहीं देखी तब ब्रह्माजीके पासजाकर विनयकिया हे जगत्कर्त्ता हमैं व गरुड़ दोनोंको आपने उत्पन्न कियाहै सो गरुड़जी वरदान पानेके प्रतापसे हमलोगों को खाजाते हैं ऐसी बरजोरी उनको करना न चाहिये यह बचन सर्पोंका सुनकर ब्रह्माजी ने इसतरहपर दोनोंका मेल करादिया कि महीनेवें दिन एकसांप गरुड़जी अपने खानिकेवास्ते लियाकरें व सबको दुःख न देवें जब गरुड़जी इसबातपरप्रसन्न हुये तब सांपलोग आपसमें पारीबांधकर हर पूर्णमासीको एकसांप पीपलके वृक्षपर रखआने लगे व गरुड़जीने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार वहीसर्पखाकर दूसरेको दुःखदेना छोंड़दिया जब कुछदिन इसीतरह बीतकर कद्रूकेबेटा कालीनागकी पारीआई तबवह अपनेविषके घमण्डसे कहनेलगा हम व गरुड़ कश्यपजी के बेटाहोकर दोनोंकी माता आपसमें बहिन हैं जबमैं उनसेडरकर उन्हें सांपखानेको दूं तो इसमें मेरी बड़ीहँसी है इसलिये हम गरुड़ जीसे लड़ैंगे यह विचारकर कालीनाग वृक्षपर सांप नहींरखआया तब गरुड़जी उसके द्वारपरआये जब कालीनागने गरुड़जी से बड़ायुद्धकिया तब गरुड़जीने उसको अपने पंख व चोंचसे मारकरगिरादिया और लड़तेसमय गरुड़जीके पंखोंसे सामवेद व ऋग्वेद व अथर्वणवेद व यजुर्वेदकेस्वर निकलते थे इसलिये वहशब्द सुनकर सांपोंकातेज हीन होजाताथा जब कालीनागने अपनेसे गरुड़में अधिकबलदेखा तबवह हारमानकर मनमें कहनेलगा अब विनाभागे गरुड़जीकेहाथसे मेराप्राण नहींबचेगा इसलिये यमुनाकिनारे वृन्दावनमेंजाकररहूं तो जीताबचूंगा किसवास्ते कि गरुड़जी सौभरि ऋषीश्वरकेशापसे वहां जानहींसक्ते ऐसाविचारकर कालीनाग अपनीस्त्री व बच्चोंसमेत रमणकद्वीपसे भाग-कर यमुनाजलमें आबसाथा व दूसरे सांप सौभरि ऋषीश्वरके शापदेनेकाहाल नहींजानते थे और कालीनागने नारदमुनि से सुनाथा इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज गरुड़जी वृन्दावनमें यमुनाकिनारे क्योंनहीं जासक्तेथे शुकदेवजी ने कहा हे राजन् किसी समय सौभरि ऋषीश्वर यमुनाकिनारे बैठे तपकरते थे वहां गरुड़जीनेजाकर एक मत्स्य बहुतबड़ा यमुनामें से खाया यहहाल देखतेही सौभरि ऋषीश्वरने क्रोधितहोकरकहा हे गरुड़जी जिसजगह हम परमेश्वरका भजनकरैं वहांपर किसी की ऐसीसामर्थ्य नहीं है जो जीवोंको दुःखदेवे कदाचित् तुमको मेरेकहनेका बिश्वास न होय तो अपनेस्वामी से जाकर पूंछ लेव आज तो तुम्हारा अपराध क्षमाकिया पर आगेकेवास्ते ऐसा शाप देताहूं जो फिर कभी तुम यहांआवो तो मरजाओगे ॥

दो० माखन प्रभुके नेह में मेरो सहज सुभाय।
जो आवे मेरी शरण ताकी करत सहाय॥

हे राजन् इसी शापकेडरसे गरुड़जी वहां नहींजासक्ते जबसे कालीनाग उसजगह आन-बसा तबसे वहांकानाम कालीदहहुआ इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जब श्रीकृष्णजी ने कालीनागको बिदाकरदिया और आप लड़कों के समान डरते व कांपते दौड़कर यशोदाकी गोदमें घुसगये नन्दरानी ने श्यामसुन्दरको बड़ी प्रीतिसे गलेलगा-लिया व मुखचूमने लगीं व रोहिणी आदिक सब ब्रजबाला उन्हें देखकर परमआनन्द होगईं व जो गौ व बछवे बिनादेखे श्यामसुन्दरके रोते थे वह पागुर करनेलगे उससमय बलरामजी यहलीला केशवमूर्त्तिकी देखकर हँसे तब नन्दजी उनको हँसतेदेखकर क्रोध से बोले बलभद्र बसुदेवजी का बालक हमारा जाति भाईनहीं है इसलिये दुःखकीसमय हँसी व ठट्ठाकरताहै यहसुनकर बलरामजीनेकहा हे पिता मेरेहँसनेका यहकारण समझो देखो जब श्यामसुन्दर यमुनामें कूदकर ऐसे बलवान् सांपकोनाथलाये तब नहींडरे अब माताकीगोदमें आकर कांपते हैं हे नन्दबाबा केशवमूर्त्ति किसीका कुछडर न रखकर सब दुःखदाइयोंको दण्डदेनेवाले हैं यहसुनकर नन्दजी हँसनेलगे और उन्होंने मनहरणप्यारे को गलेलगाकरकहा हे बेटा अबतुम गोचराने न जाकर मेरी आंखों के सामने रहाकरो ऐसाकहकर नंदजी ने बहुत गौ सोना आदिक उन से दानकराया हे राजन् उस दिन सब ब्रजबासियोंने श्यामसुन्दरका नयाजन्महोना विचारकर ऐसी खुशीमनाई जिसका हाल मुझसे वर्णननहींहोसक्ता व यशोदाने मोहनप्यारे से कहा हे बेटा मैं नित्यतुझे मनाकरती थी कि तू यमुनाकिनारे मतजायाकर सो तैंने मेराकहना नहीं माना व यमुनाजल में कूदकर हमलोगोंको इतनादुःखदिया तब केशवमूर्त्तिबोले हे मैया रातकास्वप्न सत्यहुआ ॥

दो० मैं गेंदा खेलत यहां आयों यमुना तीर ।
मोहिं डारि काहू दियो कालीदह के नीर ॥

हे माता जबमैं जलकेनीचे चलागया तब सांपको देखके बहुतडरा जब मैंने उससे कहा कि राजाकंसने मुझे वास्ते लेने फूलकमलके यहांभेजाहै तबवह राजाकेडरसे मुझे फूलसमेत यहांपहुँचागया फिर श्रीदामाआदिक ग्वालबालों ने मोहनप्यारेसे गलेमिलकर कहा हे भाई जोकुछ तुमनेकहाथा सोकिया तुम कंसको अवश्यमारोगे अब हमारा अप-राध क्षमाकरो यहवचनसुनतेही केशवमूर्त्ति हँसकरबोले हे भाई तुममेरे सखाहो हमारी तुम्हारी घड़ीभरकी लड़ाई थी अब मैं तुमसे प्रसन्नहूं फिर श्याम व बलराम यहलीला समझकर आपसमें हँसनेलगे व उसदिन सब वृन्दावनबासी श्यामसुन्दरके बिरहमें भूखे रहे थे इसलिये मुरलीमनोहरनेकहा आजकीरात सबकोई यहांटिकेरहो कल्ह घरपर चलेंगे जब उनकीआज्ञासे सबलोग वहांटिके तब नन्दजीने वृन्दावनसे पकवान व मिठाई मँगा-कर सबको भोजनकराया व उसीदिन नन्दजीने फूलकमलके गाड़ी व बैलोंपरलदवाकर ग्वालों के साथ राजाकंस के पास भेजदिया ॥

दो० बहुत विनयकरि कंसको दीन्हों पत्र लिखाय ।
कहियो मेरी ओरते नृप सों ऐसो जाय ॥
सो० गयो कमल के काज कालीदह मेरो सुवन ।
तुव प्रताप ते राज आए गयो पहुँचाइ अहि ॥

हे राजन् जब ग्वालवालों ने फूलकमलके चिट्ठी समेत कंसके पास पहुँचादिया तब कंस कमलकेफूल देखने व पत्रीबांचने से बहुतडरा व उसको बिश्वासहुआ कि श्रीकृष्णजी परब्रह्मकाअवतार हैं इनके हाथसे मेराप्राण नहींबचेगा ऐसा बिचारकर मनमें बहुत उदासहोगया पर नन्दजीको शिरोपावदेकर ग्वालों से बिदाकरतीसमय कहा तुम नन्दरायजी से कहदेना हम एकदिन उसकेबेटोंको बुलाकरदेखैंगे जब ग्वालोंने आनकर वहांका संदेशाकहा तब नन्दादिक सब वृन्दावनवासी बहुत प्रसन्नहुये ॥

दो० कहतश्याम बलरामसों हँसिहँसि करि यहबात ।
नृप हम तुम देखन लिये कहेउ बोलावन तात ॥
सो० ब्रज जन परम हुलास इकसुख हरि अहितेबचे ।
मिटो कंसको त्रास दूजे कमल पठाइ नृप ॥

जब रातको सब वृन्दावनवासी यमुनाकिनारे सरहरींके बनमें सोरहे तब राजाकंस ने यहहाल सुनके धुन्धक राक्षसको बुलाकर कहा तुम आज यमुनाकिनारे जाकर सब ब्रजवासियों को श्याम व बलरामसमेत जलादो तो मैं तुम्हारा बड़ा यशमानूंगा यह वचनसुनतेही उसराक्षसने आधीरातके समय वहांजाकर चारोंओरसे आगलगादी ॥

दो० दावानल अतिक्रोधकर लियो चहूंदिशि घेर ।
उठी अनल ज्वालाप्रबल मानो अचल सुमेर ॥

जब पशु व पक्षी व वृक्ष उसआगसे जलनेलगे तब नन्द व यशोदाआदिक ब्रज वासियोंने नींदसे चौंककर क्यादेखा कि चारोंओरसे आग दौड़ी चलीआती है व कोई राह भागनेकी दिखलाई नहींदेती यहदशा देखतेही यशोदाने घबराकर श्रीकृष्णसे कहा हे दुःखभञ्जन जब जब हमलोगोंपर दुःखपड़ताहै तब तब तुम सहायताकरतेहो अब जल्दी इस अग्निसे बचाओ नहींतो सब लोग जलकर मरनेचाहतेहैं व तुम्हाराशरण छोड़करके अग्निकेडरसे भागनहींसक्ते जब श्यामसुन्दरने अग्निकी ज्वालासे सबको बहुतव्याकुल देखा तब उनको धीर्य्यदेकर बोले तुमलोग अपनीआंख बन्दकरलेव अग्नि बुझजावेगी जब सबोंने अपनी २ आंखैंबंदकीं तब बैकुण्ठनाथ अनेकरूपधरकर सब अग्नि मुखमेंखागये व धुन्धक राक्षसको मारडाला उसीसाइत परमेश्वरकी इच्छानुसार

तब अग्निबुझकर जितने पशु व पक्षी व वृक्षादिक जलतेथे ज्योंके त्यों होगये जब केशवमूर्त्तिके कहनेसे वृन्दावन बासियोंने अपनी आंखेंखोलीं तब उन्हें एक चिनगारी भी नहींदिखलाईदी यह चरित्र देखकर सबलोग आपसमें कहनेलगे किसीनेजलसे भी नहींबुझाया यह सब अग्नि क्याहोगई तब मनहरण प्यारेने कहा खरकी आग बहुत जलती है फिर उसको बुझतेहुये देर नहींलगती ॥

सो० श्याम सहायक जाहि ताकोडरहै कौन को ।
यह न बड़ाई ताहि पांचतत्त्व जिनके किये ॥

जब सब ब्रजवासी श्यामसुन्दरकी स्तुतिकरनेलगे तब केशवमूर्त्तिने अपनी माया उनपर ऐसीफैलादी कि सब किसीने जाना यह अग्नि आपसे बुझगई व कालीनाग नाथनेका हालभी उनलोगोंको स्वप्नसा मालूमहुआ ॥

दो० माखन प्रभुके नेहमें कछुक कहूं डरनाहिं ।
प्रातहोत आनंद सों सब आये घरमाहिं ॥

उसदिन सब छोटे बड़ोंने अपने २ घर मंगलाचार मनाया व श्यामसुन्दरको बालक जानकर प्रतिदिन उनसे अधिक प्रीतिकरनेलगे ॥

अठारहवां अध्याय ॥

बलरामजीका प्रलम्बराक्षसको बधकरना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने ग्वालबालोंके साथ वृन्दावनमें खेलखेलाथा वह कहताहूं सुनो जब ग्रीष्मऋतु ज्येष्ठ व आषाढ़आया तब सूर्य्यके तपने से सारासंसार व्याकुलहोगया पर श्यामसुन्दरकी कृपासे वृन्दावनमें किसीजीवको गर्मी न व्यापकर वहां बसन्तऋतु ऐसा सुख बनारहा इसलिये वृन्दावनमें फूलोंपर झुण्डकेझुण्ड भवँरेगूंजकर आमकीडालियोंपर कोयलकूकतीथी व वृक्षोंकेनीचे ठंढीछायामें मोर नाच-कर झंकारतेथे व मन्द सुगन्ध हवा बहकर बन घटाटोपकेनिकट यमुनाजी लहरलेती थीं वहांपर वृन्दावनविहारी व बलरामजी ग्वालबालोंसमेत गायेंचराकर अनेकतरहका खेलखेलतेथे जब कभी चरखीकेसमान घूमते तब उनको पृथ्वी व आकाश घूमताहुआ मालूमदेताथा व कभी एक ग्वाल दूसरेबालकके हाथपर तालीमारकर भागताथा वह उसे पकड़नेवास्ते दौड़ताथा व कभी कभी आपसमें आंखमुदौला आदिक खेलकर अनेकतरह के रागगातेथे व अपनेमुखसे अनेकरंगका बाजाबजाकर बाघ व गिद्ध व लोमड़ी आदिककी बोली बोलतेथे व कभी २ केशवमूर्त्ति बंशीबजाके अपना गाना ग्वालोंको सुनाकर प्रसन्नकरते थे ॥

दो० कबहूं सारस कोकिला हंस मोरकी भांत ।
ग्वालबाल बोलैंकभी माखन प्रभु मुसकात ॥

हे राजन् ऐसेआनन्दमें प्रलम्बराक्षस भेजाहुआ राजाकंसका वास्तेमारने श्यामसुन्दर के ग्वालरूपबनकर वहांआया व सिवाय केशवमूर्त्तिके दूसरे किसीने नहींपहिंचाना जब उसने बहुतसे ग्वालबालोंका उठालेजाकर पहाड़कीकन्दरामें छिपादिया तब श्यामसुन्दर ने आंखकीसैनसे बलरामजीको दिखलाकरकहा अयभाई इसग्वालको अपनासाथी मत समझो यह प्रलम्बासुर कपटरूप ग्वालबनकर मेरे मारनेवास्ते आयाहै इसेमारनेका कोई उपाय करनाचाहिये ग्वालरूप यहनहीं माराजायगा किसवास्ते कि ग्वालरूप मेरेसखा व भाईबन्धु हैं जब यह राक्षसरूपधरै तब इसको मारडालना श्यामसुन्दरने बलरामजी को ऐसाकहकर उस कपटरूप ग्वालको अपनेपास बुलाया उसका हाथपकड़कर हँसते हुये बोले हे मित्र हमैं तुम्हारावेष सबसेअच्छा मालूमहोता है जो लोग मेरेसखाहैं वह कपटनहींरखते व कपटीमनुष्यको मैं अपना सखा नहीं जानता ॥

दो० सखा बुलाये निकट सब तिन्हैं कहेउ नँदलाल ।
फलबुझाय अब खेलिये मुदितभये सबग्वाल ॥

फिर श्यामसुन्दरने प्रलम्बासुरको आधे ग्वालबालसमेत अपनीओर लेलिया व आधे ग्वालबाल बलरामजीके साथ देकर फलबुझौवल खेलनेलगे और यहकरार आपस में ठहराया जो लड़का फलबूझने न सकै उसतरफके सबग्वालबाल दूसरे ओरके लड़कों को अपनी पीठपर चढ़ाकर भाण्डीरवनतक लेजावें व उसीतरह चढ़ाये हुये जहांपर दोनोंबालक फलबुझानेवाले बैठेहों फिरआवें सो एक २ ग्वालबाल दोनोंगोलका अवस्थामें बराबर जोट ठहराया और श्यामसुन्दरने अपनाजोट श्रीदामा ग्वाल व बलभद्र जीका जोट प्रलम्बासुर कपटरूपी ग्वालसेबांधा जब खेलतीसमय बलरामजीने जीता व श्रीकृष्णजी हारगये तब बलभद्रजी कपटरूपी ग्वालकी पीठपरचढ़े व श्रीदामा श्रीकृष्ण जीकी पीठपरचढ़ा इसीतरह सबबालक श्यामसुन्दरके साथी बलरामजी की ओर वाले ग्वालबाल अपनी २ जोड़ीको पीठपरचढ़ाकर भांडीरबनको चले तबवह ग्वालरूपराक्षस सबलड़कोंसे आगेबढ़कर बलरामजीको आकाशकी ओर लेउड़ा व एकयोजनके प्रमाण अपना राक्षसीरूप बनालिया सो उसके काले शरीरपर बलभद्रजीका गोरा तन कैसी शोभा देताथा जैसे श्यामघटामें चन्द्रमा व कानोंका कुण्डल बिजलीके समान चमक कर पसीना शरीरका पानीकी तरह बरसताथा उसका राक्षसीतन देखतेही बलदाऊजी ने अपना शरीर ऐसा भारीकिया कि प्रलम्बासुर वह भार उठाने न सककर उनको लियेहुये पृथ्वीपर गिरा जब उसने बलरामजी को मारनेचाहा तब संकर्षणने एकमुक्का

उसके शिरमेंमारा तो इसतरह मस्तक उसका फटगया जिसतरह इन्द्रके बज्रसे पर्वत टूट जावे जब उसके मस्तकसे धाराप्रमाण लोहू बहनेलगा तब वह राक्षस चिल्लाकर मरगया व उसकी लोथ गिरने से तीनकोसतक के वृक्ष दबकर टूटगये ॥

दो॰ ग्वालबाल चकित भये दौड़गये बलपास ।
मृतक असुर तन देखके सबको भयोहुलास ॥
सो॰ धन्यधन्य बलराम धन्य तुम्हारे मात पितु ।
बड़ोकियो यह काम कपटरूप माखो असुर ॥

हे राजन् ग्वालबालों ने प्रसन्नहोकर बहुत बड़ाई उनकी की व देवतों ने आकाशसे बलरामजीपर फूल वर्षाये व जिन ग्वालों को वह राक्षस कन्दरामें छिपाआया था उन्हें श्यामसुन्दर निकाललाये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ग्वालोंका मूंजके वनमें आग लगने से बिकल होना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब ग्वालबाल उसलोथका तमाशा देखने लगे तब सब गौ चरतीहुई मूंजके बनमें चलीगई जब दूरतक श्रीकृष्णआदिकने पता उनका नहीं पाया तब सब ग्वालबाल अलग अलग टोलीबांधकर गौवोंका ढूंढ़ने लगे व वृक्षों पर चढ़चढ़कर डुपट्टा घुमाय घुमाय गायोंका नामलेके पुकारतेथे उसीसमय एकग्वाल ने आनकर मुरलीमनोहरसे कहा हे भाई सब गौ मूंजके घोरबनमें चलीगई और ग्वाल लोग उनके खोजमें भटकते फिरते हैं यह सुनतेही श्यामसुन्दरने कदमके वृक्षपर चढ़ कर ऐसीमुरली बजाई कि उसकाशब्द सुनतेही सब गायें व ग्वालबाल मूंजबनकोचीरते फाड़तेहुये इसतरह श्यामसुन्दरकी ओरचले जिसतरह वर्षाऋतुमें नदी व नालेकाजल बेगसे बहताहै उसीसमय एक राक्षस भेजाहुआ राजाकंसका वास्ते मारने केशवमूर्त्तिके उस बनमें आया और उसने अपनी मायासे ऐसी आंधी चलाई कि चारोंओर धूरसे अँधियारा छागया तब उसने बनमें आगलगादी जब उस अग्निके तेजसे ग्वालबाल व गौवोंका शरीर जलनेलगा तब उन्होंने व्याकुलतासे श्यामसुन्दर व बलरामजी की शरण २ पुकारकर कहा अय वृन्दावनबिहारी हम लोग जलने चाहते हैं हमारा प्राण बचाइये जब २ हमको संकट पड़ताहै तब २ तुम रक्षाकरतेहो सिवाय आपके दूसरा कोई हमारा सहायक नहीं है जिसतरह नारायणजी संसाररूपी अग्निसे अपने भक्तों को बचाकर उद्धार करते हैं उसीतरह तुमभी हमलोगोंको इसआगसे बचाओ यहदशा अपने सखा ग्वालबालों की देखकर केशवमूर्त्तिने बलरामजी से कहा ॥

दो० शरणगही जिन आपकी तात मातु बिसराय ।
हम औ तुम द्वैभाय बिन इनके कौन सहाय ॥

ऐसाकहकर श्यामसुन्दरने ग्वालबालोंको पुकारकेकहा तुमलोग अपनीआंखें बन्दकर लेव तब इसअग्निसेबचोगे जब उनकीआज्ञानुसार सबग्वालबालोंने अपनीआंखें बन्दकर लीं तब श्यामसुन्दरने उसराक्षसकोमारडाला उसकेमरतेही सबअग्निबुझकर आंधीजाती रही और वैसे आंख बन्दकियेहुये सबग्वालबाल गायेंसमेत श्यामसुन्दरकी महिमासे भाण्डीरवनकेपास चलेआये तब केशवमूर्त्तिनेकहा तुमलोग आंखअपनी खोलदेव जैसे उन्हों ने आंखखोली तो क्यादेखा कि सबअग्नि व आंधीजाती रही व हमलोग भाण्डीरवनके पासचलेआये यहचरित्र देखकर सब ग्वालबालोंको बड़ाअचम्भा मालूमहुआ फिर सबों ने वृन्दावनबिहारी के साथ यमुनाकिनारे जाकर जलपिया व सन्ध्यासमय घरको चले वस्ती के निकट पहुँचकर मनहरणप्यारे ने वंशीबजाई तब मुरलीकी ध्वनि सुनतेही सब ब्रजबाला अपने २ घरका कामकाज छोड़के राहमें आन खड़ीहुईं व केशवमूर्त्तिका दर्शन करके अपनी आंखें ठण्ढीकीं सब गोपियोंका यह प्रणथा कि बिना देखे सांवलीसूरत दिनभर व्रत रहकर सन्ध्यासमय माधुरीमूर्त्तिका दर्शनकरके पारण करती थीं जब श्रीकृष्णजी अपने घरपरगये तब यशोदाने उनको गोदमें उठाकर बहुत प्यार किया व ग्वालों से पूंछा आज बिलम्ब किसवास्ते हुई तब उन्हों ने सबहाल मारने राक्षस व लगने आगका कहदिया तब यशोदा व रोहिणी बहुत प्रसन्नहुईं और यह समाचार पाकर सब वृन्दावनवासी श्याम व बलरामको देखने आये व उनकी बड़ाई करके कहने लगे हे श्यामसुन्दर तुम्हारी कृपासे हमारे बालक बचे नहीं तो आज सब अग्नि में जलकर मरचुके थे फिर सबों ने अपने २ बालकों से दान व दक्षिणा दिलवाया व परमेश्वरकी मायासे इसबातका विश्वास किसीको नहींहुआ कि यह चरित्र श्यामसुंदर ने कियाहै इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् इसीतरह केशवमूर्त्ति नित्य नई लीलाकरके सबको सुख देते थे व सब ब्रजबाला मोहनप्यारे पर ऐसी मोहित थीं कि बिना सांवलीसूरत देखे चैन नहीं पड़ती थी पानीभरने व दही दूध बेंचनेके बहाने यमुनाकिनारे व बनमें जाकर श्यामसुन्दर का दर्शनकरके अपने हृदयकी तपन बुझावती थीं व समझाना अपनीसासु व माताका उनको अच्छा नहीं लगताथा व मनहरण प्यारे अन्तर्य्यामी भी अपनी चितवन व मुसुकानसे उनको सुखदिया करते थे एकदिन केशवमूर्त्ति अपना नटवररूप धरे सब सखोंको साथलिये यमुनाकिनारे कदमके नीचे खड़े होकर मुरली बजानेलगे उसीसमय राधाप्यारी अपनी सखियोंसमेत जलभरने के बहाने मोहनप्यारेको देखने चली जब यमुनातीर ग्वालोंकीभीड़ उसने देखी तब खड़ी होकर सखियों से बोली माखनचोर राहमें खड़ाहै हम लोगोंको अवश्य छेड़ेगा जब श्यामसुन्दर उसके दिलका हाल जानकर अपने सखासमेत राहछोड़के दूसरीओर चले

गये तब राधिकाने सहेलियों समेत यमुनाकिनारे जाकर जलभरा व अपना अपना घड़ा शिरपर लेकर घरको चलीं उससमय राधाप्यारी सखियों के झुण्डमें हंसरूपी चालसे चली आतीथी उसीसमय मोहनीमूर्त्ति ने गोपियोंके गोलमें आनकर राधाकी गगरी में एक कंकरी मारी व अपनी मुसकानसे राधाआदिक सबसखियोंका मनहरलिया तब श्यामासखियों से बोली ॥

सो० कियो दृगन में धाम सुन्दरनटनागर सुखद ।
जितदेखों तितश्याम पंथमोहिं सूझै नहीं ॥

उनमें जो ब्रजबाला चतुरथीं उन्हों ने कहा हे मोहनीमूर्त्ति हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ाहै जो अपनीमुसक्यान व चितवनसे प्राण व ज्ञानदोनों हमारा हरलेतेहो व तुम्हारा मोहनीरूप देखने व बंशीकीध्वनि सुननेसे हमाराचित्त ठिकानेनहीं रहता तुम ने मनचुरानेकाउद्यम कबसे सीखा है यह प्रीतिभरीहुई बातसुनकर श्यामसुन्दर बोले जिसतरह तुमलोगोंने अपनीछबि दिखलाकर मेरामन चुरालियाहै उसीतरह मुझे भी कहतीहो तब गोपियोंने रुखाईसेकहा तुम किसीका चीर खींचके धक्कादेकर गिरादेतेहो किसीकी गगरी कंकरीमारकर फोरडालतेहो तुम्हारेमारे कोई यमुना जलभरने नहींपाता हमलोग यशोदाकेपासजाकर तुम्हें फिर ऊखलमें बँधवावेंगी ॥

दो० यहसुनिहरि रिसकरिउठे इंडुरीलई छिनाय ।
कहोजायअब मातसों लीजो मोहिं बँधाय ॥
सो० मोहिं कहत ठगचोर आप भई साहुनि सबै ।
डारी गगरी फोर कहतजाउ चुगुली करन ॥

जब श्यामसुन्दर ने ऐसाकहकर इंडुरी यमुनामें बहादी तब गोपियों ने यशोदा के पासजाकरकहा नन्दलालजीकेमारे हमलोग यमुनाजल भरने नहींपावतीं वहहमलोगों की ऐसी दुर्दशाकरतेहैं कि उसकाहाल लज्जाकेमारे कहानहीं जाता यहसुनकर यशोदा बोली जैसाकहो वैसामैंकरूं जब मैंने उसको ऊखलसेबांधाथा तब तुम्हींलोग उसकी सिफारिश करतीथीं अबजब कन्हैया घरआवेगा तब मैं उसेमारूंगी तुमलोग मेरेसङ्कोच से आज अपराध उसका क्षमाकरो इसतरहपर समझाकर यशोदाने गोपियोंको बिदा किया जब मोहनप्यारे चुपचुपाते डरतेहुये घरआये तो ओटमें खड़ेहोकर क्यासुना कि यशोदा गोपियोंके उलहनेकाहाल रोहिणीसे सुनाकर कहतीथीं आज कन्हैया घरपर आवेगा तो उसेमारूंगी यहबातसुनकर मनहरणप्यारेबोले हे माता तुम हमें मारने कहती हो गोपियों का चरित्र तुम्हें नहीं मालूम है जो वे कहती हैं उसे सचमानलेती हो गोपियां मुझे कदमके नीचेसे बरजोरीपकड़ लेजाकर मेरेगाल में मुक्कामारती हैं और

जब मटककर चलनेसे गगरी उनकी गिरकेटूटजाती है तब झूठीनिन्दा मेरी तुमसे आनकर करती हैं यहमीठावचन सुनकर जैसे यशोदाने मोहनीमूर्त्तिका चन्द्रमुखदेखा वैसे क्रोधभूलकर कहनेलगीं ॥

दो० कहां श्याम मेरो तनिक वेसब यौवन जोर ।
अब उरहन लैआवहीं तब पठवहुं सुखतोर ॥
सो० तू क्यों उन ढिगजात मैं बरजत माननहीं ।
लावत झूठीबात वे सब ढीठ गुवालिनी ॥

ऐसाकहकर यशोदा मोहनप्यारेको गोदमेंउठाके प्यारकरनेलगीं इसीतरह केशवमूर्त्ति प्रतिदिन नईलीलाकरके सबब्रजबासियोंको सुखदियाकरतेथे ॥

दो० यहलीला सबकरत हरि ब्रजयुवतिन के हेत ।
कृष्णभजे जा भाव जो वाको तस फल देत ॥

हे राजन् राधाप्यारी पूर्वजन्मके संस्कारसे श्यामसुन्दर पर बड़ीप्रीति रखतीथी इसलिये बिनादेखे मोहनीमूर्त्तिके व्याकुल होकर सखियोंसे बोली हे बहिन यमुनाकिनारे जलभरने वास्ते फिरचलो जिसमें मोहनप्यारेको देखकर आंखेंठंढीकरूं जब मैं वहां जातीहूं तब वह अपनी मुसकान व चितवनसे मेरामन मोहिलेता है व उस मोहनीमूर्त्तिके देखे बिना मुझेचैन नहींपड़ती व लोकलाजके डरसे मैं कुछ बोलने नहींसक्ती बाहर निकलो तो माता व पिताका भय सतावताहै व घरमें बैठनेसे तन मेरा यहांरहकर मनमेरा श्यामसुन्दर के पीछे दौड़ताहै मैं अपनेचित्तको बहुतसमझातीहूं पर उसचित्तचोरकी ओर से नहीं फिरता ॥

क० एक सखी मनमोहन की मधुरी मुसकान देखाय दईरी । वह सांवरी सूरत चैनमई सबही चितई हमहूं चितईरी ॥ सब सखियां अपने अपने गृह खेलतकूदत बाट लईरी । मैं बपुरी वृषभानुलली घरआवत पौर पहाड़ भईरी ॥

सो अयआली अब मैंने मनमें यहबात ठानली कि केशवमूर्त्ति से प्रकटप्रीतिकरूंगी इसमेंचाहै कोई मेरीनिन्दाकरै या स्तुति उससांवलीमूर्त्ति के सामने मुझे लोकलाज व कुलपरिवार कुछ अच्छानहीं लगता जब मेराप्राण उसकेविरहमें निकलजावेगा तब मैं लज्जाको लेकर क्याकरूंगी इसलिये अबमैं मोहनप्यारे को अपनापति बनाया चाहतीहूं इसमें तुम्हारा क्यासम्मत है यहबातसुनकर ललिता आदिक सखियों ने कि वहभी श्यामसुन्दरपर मोहितथीं कहा ॥

दो० कहु प्यारी कैसे चलैं वा यमुना की ओर ।
गैल न छांड़त सांवरो रसिया नन्दकिशोर ॥

अथराधा हमलोग अपने मनकाहाल तुमसे क्याबतलावें जो गतितेरीहै वही दशा हमारी भी समझनाचाहिये उसकीछवि देखनेसे हमाराचित्त ठिकाने नहींरहता व बांसुरीकी ध्वनि हमें अधिक अचेतकरदेती है न मालूमउसने कैसी मोहनी हमलोगोंपर डालदी सो तैंने बहुतअच्छा विचारा संसारमें कौन ऐसाजीव जड़ व चैतन्यहै जो उसकी छविदेखने व मुरलीसुननेसे मोहि न जावे वह हमारेपति होकर हमें अङ्गीकारकरें तो लाजभाड़में पड़े ॥

सो० मेटि लोककी कानि पतिव्रत राखो श्यामसों ।
यहीबनी अब आनि भलो बुरो कोऊ कहै ॥

हे राजन् राधाआदिक सबव्रजवालोंकी यहदशाथी कि दिन अपना उनके विरह व मिलने के उपायमें काटकर संध्यासमय उनका दर्शनकरके अपने हृदयकी तपन बुझावतीथीं व कहना व समझाना अपने घरवालोंका उनको अच्छा नहीं लगताथा ॥

बीसवां अध्याय ॥

वृन्दावनकी स्तुति ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जब गरमी अधिकहोनेसे संसारीजीव दुःखीहुये तब राजावरसात कृपा व दयाकीराह अपनी सेना दल व बादलको लेकर वास्ते सुखदेने सबजीव जड़ व चैतन्य व युद्धकरने राजा गरमीकेसाथ धूमधामसे चढ़आया उसकी सेनामें गर्जना बादलका मारूबाजेके समानहोकर अनेकरंगकी घटा शूरवीर ऐसीमालूम देतीथीं व चमकना बिजुलीका नंगीतलवार ऐसा होकर करखा गावनेवालोंकी जगह मोर बोलते थे व बरसना बुन्दोंका बाणके समान होकर भाटोंके कवित्त पढ़नेकी जगह मेंडुक बोलते थे व उड़ना श्वेतवर्ण बकुलोंका ध्वजाकेसमान मालूम देताथा ऐसीभारी सेना देखतेही राजा गरमीका हारमानकर भागगया व जल बरसने से पृथ्वी व वृक्षआदिक सबजीवजड़ व चैतन्यने सुखपाया व आठमहीनेतक जो जल सूर्य्यने सोखाथा वह इसतरह बरसाया जिसतरह राजालोग गरमी व जाड़ेमें प्रजासे देनलेकर बरसातमें उनकीपालना करतेहैं व पृथ्वीने जो बीच विरहजल अपनेपति सुखदेनेवालेके आठ महीनेतक दुःख उठायाथा सो उसका शोच जलबरसनेसे छूटगया व अनेकरंगके फल व फूल वृक्षोंमें लगगये ॥

दो० बेलि बिबिध लपटीं ललित फूल रहे बहु रंग ।

शोभित सहस श्रृंगार जिमिनारि पुरुषके संग ॥

पृथ्वीपर हरियाली उत्पन्नहोकर नदी व नालों में जल उमंगते बहनेलगा व उसके किनारे अनेकरंगके पक्षी मीठी २ बोली बोलनेलगे हे राजन् वृन्दावन में ऐसी शोभा मालूम देती थी जिसका वर्णन नहीं होसक्ता ॥

दो० शोभा वृन्दाबिपिन की बरणि सकै कबि कौन ।
शेष महेश गणेश बिधि पार न पावत तौन ॥
सो० महिमा अमित अपार श्री वृन्दाबन धाम की ।
जहँ नित करत बिहार परब्रह्म भगवान हरि ॥

हे राजन् उस सुहावने बनमें गोपी व ग्वाललोग अनेकरंगके वस्त्र पहिनेहुये झूला झूलतेथे व गोपियां मलारआदिक बरसातके गीत गावतीथीं और उनमें श्याम व बल-राम उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनेहुये अनेक लीलाकरके सबको सुखदेते थे जब इसी तरह आनन्दपूर्वक बरसात बीतकर शरदऋतुआई तब एकदिन श्यामसुन्दरने बलराम जी व श्रीदामाआदिक ग्वालबालों समेत वृन्दाविपिन में जाकर गौवों को चरनेवास्ते छोड़दिया व वृक्षकेनीचे बैठकरकहा अयबलदाऊजी अब शरदऋतुके अच्छेदिनआये॥

दो० जल अकाश निर्मल भयो बर्षाऋतु के अन्त ।
जैसे उज्ज्वलचित सदा भाखन प्रभुके सन्त ॥

इनदिनों भोजनकी वस्तुमें स्वादमालूमहोकर सब छोटे बड़ोंको अनेकतरहका सुख मिलताहै व गृहस्थाश्रमको अपनेघर रहने में सुखप्राप्तहोकर राजा इन्हींदिनों शत्रुपर चढ़ाईकरते हैं व व्यापारियोंको माललादने व साधु वैष्णवको तीर्थयात्राकरने में बहुत सुख प्राप्तहोता है हे भाई मुझे वृन्दाबनका ऐसासुख तीनोंलोकमें नहींमिलता इसवास्ते मनुष्य तन धारणकरके ब्रजमेंरहकर वृन्दावनको वैकुण्ठसेप्यारा जानताहूं सो तुम यहां के वृक्षों को कल्पतरुसे कम मतसमझो किसवास्ते कि वृन्दाबनवासी सबजीव जड़ व चैतन्य मेरीभक्ति व प्रीति अपने प्राणसे अधिक रखते हैं ॥

दो० जाके बश मैं रहत हूं अपनी प्रभुता त्याग ।
प्रेम भक्ति सो लहत नर वृन्दाबन अनुराग ॥

यह सुनकर बलभद्रजी बोले हे दीनानाथ मैं इतना बरदान तुमसे मांगताहूं जहां आप जन्मलेना वहां मुझेभी अपनी सेवा करनेवास्ते साथ रखना यह सुनकर केशव मूर्त्तिने कहा हे भाई मैं कभी एकक्षण तुम्हें अपने साथसे नहीं छोडूंगा तुम्हारे कारण तो हम नरतन धरकर ब्रजमें लीला करते हैं ॥

दो० मधुर बचन सुनि श्यामके सखावृन्द सुखपाय ।
प्रेमपुलक तन मुदितमन रहे सबै गहिपाय ॥
सो० धनिधनिधनि तुमश्याम धनिव्रजधनिवृन्दाबिपिन ।
तुम्हरे गुण अभिराम हम सब कछु जानें नहीं ॥

इसीतरह बहुतसी स्तुतिकरके ग्वालबालों ने श्यामसुन्दरसे कहा हे मोहनप्यारे इस समय हमलोगोंका मन मुरली सुननेवास्ते बहुत चाहताहै यह बचन सुनकर केशवमूर्त्ति ने लकुटिया हाथकी धरदी व ऐसे प्रेमसे मुरली बजाई जिसकी ध्वनि सुनतेही सबजीव जड़ व चैतन्य मोहित होकर मृगादिक उनके चारोंओर आनकर खड़े होगये व यमुनाजल बहने से थँभिरहा व पक्षियोंको उड़ना भूलगया व गायें घासचरना छोड़कर चित्रकारी सी खड़ी होगई व झरनों में से पानी गिरना बन्दहोगया व मनहरणप्यारे बंशी में छः राग व छत्तिस रागिनी गाकर ग्वालबालों का नाम उसमें लेनेलगे व मुरली बजाती समय अपनी आंख व भौंसे ऐसा भाव बतलाया कि देखनेवाले मोहित होगये उस समय देवता अपनी २ स्त्रियोंसमेत विमानपर आकाशमें आये उन्हों ने मुरली सुनने से अतिप्रसन्न होकर श्यामसुन्दर पर फूल वर्षाये और कहा धन्यभाग्य ब्रजवासियोंका है जो ऐसा सुख देखते हैं परमेश्वर हमलोगोंको वृन्दावनमें वृक्षादिकका जन्मदेते तो परब्रह्मपरमेश्वर बैकुण्ठनाथकी सेवाकरके अपना जन्म स्वार्थ करते ॥

दो० कारण करण अनन्तगुण निगम भेद नहिं पाव ।
सो ग्वालन सँग गावहीं देखो भक्ति प्रभाव ॥
सो० सुन्दर श्याम सुजान देत परमसुख सबनको ।
वारत तन मन प्रान धन्यधन्यकहि ग्वालसब ॥
दो० सो धुनि सुनिकर गोपिका लाज काज बिसराय ।
माखनप्रभुके दरशको घरसे निकलीं धाय ॥

हे राजन् जब ब्रजबाला बंशीकी ध्वनि सुनतेही मोहित होकर बनकीओर चलीं व राहमें बैठकर आपसमें यह कहनेलगीं जब ब्रजनाथजीका दर्शन मिलैगा तब हमारी आंखें ठण्ढीहोकर मनकी इच्छा पूर्णहोगी अभी तो हमारा चित्तचोर बनमें ग्वाल व गायोंके साथ नाचता गावताहोगा यह सुनकर दूसरी गोपी ने कहा सुनो सखी जब मोहनप्यारा सन्ध्यासमय बंशी बजावताहुआ अवैगा तब मैं उस मोहनीमूर्त्तिकी छबि देखकर अपना हृदय ठण्ढाकरूंगी तीसरी सखी बोली सुनो प्यारियो इस बांसमें न मालूम क्या गुण भराहै जिस बांसुरी को मोहनप्यारे हमसे सुन्दर व उत्तम समझकर

आठोंपहर अपने मुखारविन्द व छाती में लगाये रहते हैं और वह बंशी श्यामसुन्दरके होठोंका अमृत पीकर बादलसमान बोलती है चौथी ब्रजबालाने कहा मेरे सामने यह बांस बोयागया था जिसकी यह मुरली बनी है सो इसका ऐसा भाग्य चमका कि मेरी सवतिहोकर केशवमूर्त्तिकी छातीपर दिन रात चढ़ी रहती है जिससमय गोपियां चर्चा आपसमें कररही थीं उसीसमय वृन्दावनविहारी ग्वालबाल व गायोंको साथलिये मुरली बजातेहुये वहां पहुँचे उस मोहनीमूर्त्ति की छवि देखतेही सब ब्रजबाला प्रसन्न होकर आपसमें कहने लगीं ॥

क० घ० मोरके मुकुटमाथे हाथे में लकुट राजे साजे गुंजमाल गले ललित लरनते । सुंदरकपोल श्रुति कुण्डल झलकराजे जुलफ अमोलभरे गोरज कनकते ॥ गौवनके पाछे आछे काछे काछनीके काछरागगौरी गावत गवावत सखनते । आनंद के कन्द ब्रजलोचन चकोरचन्द मन्दमन्द आवतगोविन्द वृन्दाबनते १ जरीदारचीरा में चुन्निनकी चमक चारु हारमुकताके लर पांवनलों परसत । कुण्डलकी चमक पीतपट लपटाने कटि दीपकदमक द्युति दामिनी सी दरसत ॥ नैननको फलले लोचन सुफलकरो यह छबि निहारिबेको क्यों न जीव तरसत । मंदमंद आवत बजावत मधुरबेणु कुंजनते आवत रसिक रूप बरसत २ ॥

दूसरीसखीने कहा देखो यहमुरली बीचहोंठ केशवमूर्त्तिके कैसीसुन्दर मालूमहोतीहै जिसका अमृतरूपी शब्द कानोंकीराह पीनेसे मुर्दे जीउठते हैं और इसमुरलीका बांस जिसबनमें उत्पन्नहुआथा वहांके वृक्षअपनेको बड़ाभाग्यवान् जानकर कहतेहैं कि यह हमारीबांसुरी जातिभाईहै इसबंशीकी ध्वनिदेवतोंकी स्त्रियांअपने विमानोंपरसे सुनकर ऐसीमोहिजातीहैं कि घुंघुरू उनकीकमरसे खुलकर गिरपड़ती हैं व उन्हें सुधिनहींहोती व गौवांकोचरना भूलजाताहै व हरिणआदिक चित्रकारीके समानखड़ेहोकर उसकी ध्वनिसुनतेहैं व बछड़े दूधपीनाभूलकर वृक्षोंमेंसे मद बहनेलगताहै दूसरीसखीबोली ऐप्यारीपहिले इसबंशीने बांसकेतनमें जन्मलेकर धूप व पानी व सरदीकादुःख अपने ऊपरउठाया व एकपांवसे खड़ीरहकर परमेश्वरका तपकिया फिर इसने पोर २ अपना कटवा २ कर आगकीगर्मी अपने ऊपरउठाई तबटेढ़ीसे सीधीहुई इससे अधिक क्या कोई भगवान्की तपस्याकरेगा यहसुनकर दूसरीब्रजबाला बोली परमेश्वरहमाराजन्मभी बांसमेंदेते तोमैंभी आठोंपहर मोहनी मूर्त्तिके मुखसेलगीरहती व उनकेहोठोंका अमृत

पीकर सुखपावती हे राजन् नित्य जबतक केशवमूर्त्ति बनसे गौचराकर नहीं आते थे तबतक यहीदशागोपियों की रहतीथी ॥

दो० जावन धेनु चरावहीं माखन प्रभु चितचोर ।
तहां आय ठाढ़ी रहैं हरि सम्मुख करजोर ॥
वंशी ध्वनि सुनिकै सदा सुख पावैं सबलोग ।
माखनप्रभु मुखसों लगी क्योंनहिं हो सुखयोग ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

गोपियों की प्रीतिका वर्णन करना ॥

शुकदेवजीबोले हे राजन् उन्हींदिनों फिर एकदिन ब्रजबालोंने जो केशवमूर्त्तिसे सच्चीप्रीति रखतीथीं वह बांसुरीसुनकर हाथअपनाघरके कामकाजसे खींचलिया व उस मुरलीकी ध्वनिपर मोहितहोकर आपसमें कहनेलगीं इसबनके जीवोंका बड़ाभाग्यहै जो प्रतिदिन श्यामसुन्दरकी छविदेखकर आनन्दहोतेहैं व संसारमें आंखमींचने का फल इन्हींकोप्राप्तहै जो लोग गौचराते व बंशीबजाते व बनविहार करतेसमय केशवमूर्त्तिका अमृतरूपीस्वरूप आंखोंकीराहपीकर ध्यानउससांवलीसूरतका अपनेहृदयमें रखते हैं व जोहरिणियां अपनेहरिणोंसमेत मुरलीसुनकर मोहनप्यारेकी छविटकटकीलगाके देखतीं हैं उनकाभाग्य देवकन्याओंसे अधिक समझनाचाहिये व बड़ाभाग्य उनगाय बछड़ोंका है जिन्हें मुरलीमनोहर आप प्रेमसेचराते हैं व वृंदावनके पक्षियोंका बड़ाभाग्यसमझना चाहिये जो वृक्षोंपर बैठेहुये केशवमूर्त्तिकी छविदेखने व मुरली सुननेसे अपनाजन्म स्वार्थकरके उनको अपनी सोहावनी बोलियांसुनाते हैं व धन्यभाग्य यहांकी भिल्लिनियों के समझो जो केसरि व चन्दन मुरलीमनोहरके अंगका छूटाहुआ घास छीलती समय अपने मस्तकपर चढ़ावती हैं व गोवर्द्धनपर्वत गायेंचरतीसमय वृन्दावनविहारी का दर्शन पाकर कहताहै मेरेबराबर दूसरेकाभाग्यनहीं होगा किसवास्ते कि वे बैकुण्ठनाथ अपनाचरण मेरेऊपरधरते हैं और कन्दमूलादिकसे श्यामसुन्दर व ग्वालबाल व घास से गौवोंका सन्मानकरताहै व धन्यभाग्य वृन्दावनकी नदी व नालोंकाहै जो बांसुरी की ध्वनि सुनतेही बहना अपना भूलकर ठहरजातेहैं व यमुनाअपनी लहरसे केशव-मूर्तिका चरणछूकर कृतार्थहोती है व उसमें मनहरणप्यारे नित्य जलविहारकरते हैं व क्याउत्तमभाग्य उनवृक्षोंकाहै जिनकीछायामें नन्दलालजी बैठतेहैं व बड़ाभाग्य उस घास व पृथ्वीकासमझना चाहिये जिसपरकेशवमूर्त्ति अपना चरणधरके चलतेफिरते हैं व हमलोगोंकाभी बड़ाभाग्य समझोजो मोहनीमूर्त्तिकीप्रीति आठोंपहर हमारेहृदयमें लगीरहती है हे राजन् गोपियां अपनेज्ञानसों केशवमूर्त्तिको परमेश्वरका अवतारजानतीथीं

परनारायणकी माया जबउनको व्यापती थी तब उन्हें यशोदाकापुत्र समझतीथीं इस तरह सबस्त्री व पुरुष वृन्दावनवासी श्यामसुन्दरसे प्रीतिरखकर दिनरातउन्हींका यश गाया करतेथे व आठोंपहर उनकेचर्चा व ध्यानमें मग्नरहतेथे इतनीकथा सुनाकर शुक-देवजीबोले हेराजन् कोईजीव ऐसीसामर्थ्य नहींरखता जो उनकेभेद व महिमाको पहुँचन सके जिसपर वहदया करतेहैं वही उनकी महिमा कुछ जानसक्ता है ॥

बाईसवां अध्याय ॥

चीरहरण लीला ॥

इतनीकथासुनकर परीक्षितनेकहा हे शुकदेवस्वामी श्रीकृष्णजीने किसतरह उनसब व्रजबालोंकी इच्छापूर्णकीथी उसकाहालकहिये इसलीलाके सुननेसे मेराचित्त बहुतप्रसन्न होकर सबशोच छूटजाताहै यहबचनसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जब अगहन व पूसकामहीना आवनेसे सरदीअधिक पड़नेलगी तबएक गोपीने सबव्रजबालोंसे कहा मैंनेबड़े व बूढ़ोंके मुखसे ऐसासुनाथा कि अगहनके महीने में प्रातसमय यमुनास्नान करनेसे अनेकजन्मका पापछूटकर मनोकामना मिलती है सो हमसबकोई नेमबांधकर यमुनास्नानकरैं तो उसकेप्रतापसे मोहनप्यारे हमारेपति होवेंगे यहबात राधाआदिक गोपियोंने प्रसन्नकरके अगहनबदी परिवासे यमुनानहाना आरम्भकिया नित्यप्रातसमय राधाआदिक सबव्रजबाला उत्तम २ भूषण व वस्त्रपहिनकर स्नान करनेजातीं व नहाने उपरान्त सूर्यदेवताको अर्घ्यदेकर मूर्त्तिपार्वतीजीकी मट्टीसे बनावतीं व धूपदीप नैवेद्य आदिकसे विधिपूर्वक पूजन व दण्डवत् व ध्यान करके हाथ जोड़कर यह वरदान मांगती थीं ॥

क० स० गोपसुताकहैं गौरिगोसांइन पांयपरों बिनती सुनि लीजै । दीनदयानिधि दासीके ऊपर नेकुसोंचित्र दयारसभीजै ॥ देइजो ब्याहउछाहसेमोहन मातपिताकुछहूनहिंकीजै । सुंदरसांव-रोनन्दकुमार बसैउरजो बर सो बरदीजै ॥

इसीतरह नित्यपूजाकरनेउपरांत दिनभर व्रतरहिकर सन्ध्यासमय दहीचावल भोजन करके पृथ्वी पर सोरहती थीं व मनसावाचा कर्मणासे यहइच्छा उन्हें रहतीथी जिसमें जल्दी हमारामनोरथ मिले हे राजन् जब राधाप्यारीने सोलहहजार व्रजबाला छोटीअव-स्थाके साथ कि उनमें चारतरहकी गोपियां एक जनकपुरवाली स्त्रियां व दूसरी दंडक बनकी ऋषिपत्नियां जो रामावतारमें बैकुण्ठनाथपर मोहितहुईथीं तीसरीवेदकी ऋचा व चौथी गोलोककी स्त्रियां जिन्होंने बीचतन गोपियोंके जन्मलियाथा इसीतरह अगहन भर पूजा व व्रतकिया तब केशवमूर्त्ति अन्तर्यामी उनपर दयालुहुये ॥

दो० देख नेम यह प्रेममें गोपिनको गोपाल।
भये प्रसन्न कृपाल चित जनहित दीनदयाल॥

हे राजन् एकदिन जिससमय सबव्रजबाला यमुनाजल में स्नानकरके केशवमूर्त्ति की चर्चा आपसमें करतीथीं उसीसमय मनहरणप्यारे भी अपने सोलहहजार रूप से यमुनाजलमें सबगोपियोंकी पीठपीछे खड़ेहोकर मलनेलगे तबसब ब्रजबाला उन्हें देख-तेही प्रसन्नहोकर मनमेंकहनेलगीं जिनके मिलनेवास्ते हमलोग ध्यान व पूजाकरतीथीं उन्होंने दयालुहोकर दर्शनदिया फिर अपनाअङ्ग पानी में छिपाकर मोहनप्यारेसे कहने लगीं तुमको हमैंनंगीदेखते लज्जानहीं आती व श्यामसुन्दरकी मायासे किसी गोपीको दूसरीव्रजबालाका हाल नहींमालूम होताथा कि उसके पीछेभी केशवमूर्त्ति हैं इसलिये सब गोपियां अपने २ मनमें आनन्दहोकर अपनाहाल दूसरी सखीसे नहींकहतीथीं॥

दो० जो माखन प्रभुको भजै प्रेमभक्ति के रंग।
दया करैं पाछे फिरैं छायासम तेहि संग॥

इसी तरह श्यामसुन्दर जलविहारकरके बाहर निकलआये व गोपियों का कपड़ा व गहना जो यमुनाकिनारे रक्खाथा उसे फाड़तोड़कर फेंकदिया जब गोपियों ने जाकर यहहाल यशोदासे कहा तब नन्दरानी बोलीं॥

दो० तुम चाहति हौ गगनते गहनतरैया बाम।
सो कैसे बरपाइहौ तुम लायक नहिं श्याम॥
सो० मैं बूझी सबबात तुमहमसे कहियो कहा।
वृथाफिरत अठिलात मष्टकरो सुनिहै जगत॥

तुम्हें ऐसी बात कहतेहुये लज्जानहीं आवती और मेरे अज्ञानबालकको पापकी आंखसे देखतीहौ यहबातसुनकर सबव्रजबाला हर्षपूर्वक अपने अपने घरचली आईं जबदूसरे दिन फिरसबगोपियां यमुनानहानेगईं॥

दो० धरे उतारि उतारि सब तटपर भूषण चीर।
नग्नहोय स्नान हित पैठीं यमुना नीर॥

तब केशवमूर्त्ति दीनदयाल ने विचार किया कि मेरे मिलनेवास्ते इन्होंने बड़ादुःख उठाया ऐसा विचारकर उसदिन श्यामसुन्दर ने बलरामजीसे कहा हे भाई आजतुम गायें बनमेंचराने लेजावो मैं पीछे से कलेवालेकर वहांआऊँगा जब बलरामजी सब सखासमेत गौलेकर जाचुके तब वृन्दाबनबिहारीने यमुना किनारे चुपचापजाकर क्या

देखा कि सबब्रजवाला अपना २ कपड़ा व गहनाकिनारे धरकर यमुनाजलमें नहाती समय बैकुण्ठनाथका चरचाकररही हैं केशवमूर्त्ति यहप्रीति उनकीछिपे २ देखकर बहुत प्रसन्नहुये हे राजन् जिससमय सबब्रजवाला सूर्य्यको अर्घ्यदेकर आंख बन्द कियेहुये उनकाध्यान करनेलगीं उसीसमय श्यामसुन्दरने ऐसा बिचारा कि इनलोगोंको यमुनामें नङ्गीहोकर नहानेसे दोषलगताहै इसलिये आगेके वास्ते इन्हें ज्ञान सिखलाना चाहिये ॥

दो० प्रेममगन युवती सबै रहीं ध्यान मनलाय ।
हरि सब भूषणबसनलै चढ़े कदमपर जाय ॥

और सबकपड़ोंकी मोटरीबांधकर अपने सामने धरलिया व उसीजगह खुशहोकर बैठरहे जबगोपियां स्नानकरके बाहरनिकलीं व उन्होंनेकपड़ा व गहना अपना यमुना किनारे नहींदेखा तबचारोंओर ढूंढ़कर आपसमें कहनेलगीं अयसखी यहां तो चिड़िया का पूतभी नहींआया न मालूम कौनहमारा भूषण व बस्त्र उठालेगया सिवाय माखन- चोर के और कौनहमारी वस्तु लेजायगा ऐसाकहकर दीनवचन से पुकारनेलगीं कहीं श्यामसुन्दरहोवें तो दर्शन अपनादेवैं यहवचनसुनतेही केशवमूर्त्तिने एकबेर धीरे से बां- सुरी बजादी तब एकसखीने उसशब्दकी ओर आंखउठाकर क्या देखा कि मुरली मनोहर मुकुटपहिने लकुटियालिये केसरिका तिलकदिये बनमाला गलेमेंडाले पीताम्बर बांधे कदमकेवृक्षपर छिपेहुये बैठेहैं यहहाल देखतेही उससखीने सबब्रजवालोंसे पुकार कर कहा टुक इधरतो देखो माखनचोर धोतियां चुरायेहुये मोटरीबांधकर कदमपर बैठे हैं यहबातसुनकर जैसे सबब्रजबालोंने श्यामसुन्दरको वृक्षपर बैठे देखा वैसे लज्जितहो कर गलभर पानी में चलीगईं व हाथजोड़कर विनयपूर्वक बोलीं हे दीनदयालु दुःख हरनेवाले धोतियां हमारी देडालो ॥

दो० माखनप्रभु घनश्यामजू तुम्हैं उचितयहनाहिं ।
हम दासी बिनदामकी समझो तुममनमाहिं ॥

यह बातसुनकर मोहनप्यारे बोले तुमलोग अपना २ गहना व कपड़ा फेंककर स्नान करनेलगीथीं सो मैंने उसकी रखवारीकियाहै बिना चौकीदारीदिये कपड़ा नहीं पाओगी गोपियोंनेकहा हमलोगोंको जलमें जाड़ामालूम होताहै तुमको दयानहींआती॥

दो० तनमन धन अर्प्यो तुम्हैं सोहै तुम्हरे पास ।
अब अम्बर दीजै हमैं जानि आपनी दास ॥
सो० तबहंसिकह्यो कन्हाइ जोतनमन मोकोदियो ।
लेहु बसनह्यां आइ जो मानो मेरो कह्यो ॥

तुम सबएक २ सुन्दरीजलसे निकलकर मेरेपासआवो तब तुम्हारेवस्त्रदूंगा नहीं तो बाबानन्दकी सौगन्दहै जो बिनाऐसाकिये धोतियां अपनीपावो यहवचन मनहरणप्यारे का सुनकर राधिकाबोलीं हम तरुणस्त्रियां तुम्हारेसामने नंगी किसतरह आवें यहनया ज्ञान तुमको किसने सिखाया जो हमें नंगीदेखा चाहतेहो ॥

दो० छांड़िदेव यह टेक हरि बरु भूषण तुमलेव ।
शीत मरत हम नीरमें चीर हमारो देव ॥
सो० दूषण होत अपार जो त्रिय अँग देखै पुरुष ।
तातें नन्दकुमार नङ्गी नारि न देखिये ॥

जब इतनी विनय करनेपर भी मोहनप्यारे ने बस्त्र उनका नहीं दिया तब सब ब्रजबाला रुखाई से बोलीं नन्द कहींके राजा नहींहैं जो उनकी दोहाई फिरगईहो तुम धोतियां हमारी चुराकर सबको नङ्गी देखा चाहतेहो यह चलन तुम्हारा हमको अच्छा नहीं लगता अभी हमलोग अपने २ पिता व भाईसे जाकर तुम्हारा हाल कहें तो वह लोग आनकर तुम्हें चोरी में पकड़ें व नन्द व यशोदाके पास लेजाकर तुम्हारा दण्ड करावें यह कठोर बचन गोपियों का सुनतेही श्यामसुन्दर ने क्रोधित होकर कहा अब तुमलोग तभी धोतियां पावोगी जब अपने हिमायतीको लेआवोगी उन्हें क्रोधमें देख तेही सब ब्रजबाला डरती व कांपती हुई बोलीं हे दीनदयालु हमारी पति रखनेवाला सिवाय तुम्हारे दूसरा कौनहै जिसे हम अपना सहायक बुलावें तुम्हारे चरणकी दासी होनेवास्ते तो हमलोग यमुनास्नान व व्रत व पूजन करती हैं सो तुम निर्दयता छोड़कर अपनी दासियोंपर दयाकरो व चीर हमारे देडालो व आप त्रिलोकीनाथहैं तुम्हारे ऊपर कुछ हमारा वश नहीं चलता न मालूम तुमने कौनसी मोहनी हमपर डालदी जो तुम्हारी सांवली सूरति देखे बिना हमलोगों को अपना घर दुवार व कुल परिवार कुछ अच्छा नहीं लगता हमैं अबला अनाथ समझकर दयाकरो यह दीनबचन सुनतेही केशवमूर्त्तिने क्रोध क्षमाकरके कहा जो तुमलोग अपने सच्चेमनसे मेरे मिलनेवास्ते व्रत व स्नान करतीहो तो लज्जा व कपटको यमुनाजलमें डुबाके वहांसे नंगी मेरेपास आन कर धोतियां अपनी लेजाव बिना अंग दिखलाये चीर नहीं पावोगी यह बचन सुन-तेही सब गोपियों ने आपसमें कहा एक मनहरणप्यारे हमैं नङ्गी देखें यह अच्छी बातहै या सारागांव देखे वह उत्तम होगा और ये हमारे अन्तःकरण का सब हाल जानते हैं इनसे लज्जा करना न चाहिये ॥

दो० कहत परस्पर मिलि सबै हरि हठ छोड़त नाहिं ।
चीर बिना कैसे बनै कौन भांति घरजाहिं ॥

सो० चलो लीजिये चीर इनहींको हठ राखिकै ।
मनमोहन बलबीर जो कछु कहैं सो कीजिये ॥

ऐसा कहकर सब गोपियां एक हाथसे अपनी भग व दूसरे हाथसे कुचोंको छिपा कर यमुनाजलसे बाहर निकलीं व केशवमूर्त्तिके सामने जाकर शिर नीचे करके खड़ी होरहीं तब मुरलीमनोहर ने कहा अभीतक तुम्हें मुझसे कपट बना है कपटीजीव मेरे पास नहीं पहुँचते तुमलोग एक २ सामने खड़ीहोकर सूर्य्य देवताको हाथजोड़ो तब तुम्हारे चीरदेऊँ किसवास्ते कि तुमने व्रतमें नङ्गी स्नानकरके सूर्य्य देवताका अपराध कियाहै यह बात सुनकर गोपियों ने कहा हे नन्दलालजी हमलोग सीधीभोली व्रजवालों से क्यों कपट करतेहो ॥

दो० माखनप्रभु सों सब कहैं हम आईं तुम हेत ।
यही तुम्हारो सांचहै अबहूँ वस्त्र न देत ॥

हमलोग तुम्हारे आधीनहैं जो कहो सो करें जब ऐसा कहकर सब व्रजबाला छाती परका हाथ उठाकर एक हाथसे सूर्य्यको दण्डवत् करनेलगीं तब केशवमूर्त्ति बोले एक हाथसे दण्डवत् करना दोष होताहै दोनोंहाथसे प्रणाम करो ॥

दो० जो कहिहौ करिहैं सबी हँसि बोलीं व्रजबाम ।
लेहैं पलटो हम कभूँ सुनो श्याम अभिराम ॥

अब ऐसा कहकर सब गोपियां मोहनप्यारे के प्रेममें मग्नहोगईं व लज्जा छोड़कर दोनोंहाथसे सूर्य्य देवताको दण्डवत्किया तब श्यामसुन्दर निष्कपट भक्ति व प्रीति उनकी देखकर बहुत प्रसन्नहुये व वृक्षपरसे उतरके सब धोतियां अपने कांधेपर धर गोपियों से कहा अब तुम्हारा बोझा मैंने अपने ऊपर उठालिया मनुष्यके तनमें जन्मलेनेका यही फलहै जो दूसरेका उपकार करे ॥

दो० सुभग शरीर निहारिकै माखनप्रभु बलबीर ।
प्रेमप्रीति रसबश भये दिये सबनके चीर ॥

हे राजन् सब व्रजबाला अपना २ भूषण व वस्त्र पहिनकर केशवमूर्त्तिके प्रेममें ऐसी मग्न होगईं कि उनका मन घरजाने वास्ते नहीं चाहताथा तब मोहनीमूर्त्तिने कहा तुम लोग इसबातमें खेद मतमानना तुम्हें आगेके वास्ते मैंने ज्ञान सिखलादिया जल में वरुण देवताका वास होताहै इसलिये नङ्गी होकर जलमें स्नान करने से सब धर्म्म व पुण्य बहिजाते हैं सो अब तुम्हें यमुनास्नान व व्रत करनेका फल प्राप्तहुआ तुमलोग मुझे बहुतप्यारी मालूम होतीहो कुआरसुदी पूर्णमासीको मैं तुम्हारे साथ रासलीलाकरके

मनोरथ तुमलोगोंका पूर्णकरूंगा अब अपने २ घर जाकर व्रतरखना छोड़देव यह बचन सुनतेही सब ब्रजबाला प्रसन्नहोकर अपने २ घर चलीगईं व आठों पहर श्यामसुन्दरके ध्यान में लीनरहकर कुआरसुदी पूर्णमासीका दिन गिननेलगीं ॥

दो० देखि चरित नँदनन्दके सखी बाल मतिभोर ।
सुधिबुधिमनकछुथिरनहीं कहत औरकीऔर ॥

केशवमूर्त्ति वहांसे वंशीवटमें जाकर ग्वालबालों के साथ गौ चरानेलगे इतनी कथा सुनकर परीक्षित ने पूछा हे स्वामी श्रीकृष्णजी परब्रह्म का अवतार होकर जिन्हें सब जगत्का परदा ढांपना चाहिये उन्हीं ने शास्त्रके विपरीत परस्त्री को क्यों नङ्गी देखा यह सन्देह मेरा छुड़ादीजिये शुकदेवजी बोले हे राजन् स्त्रीको नङ्गीहोकर नहाने से बड़ा पाप होताहै जबतक उसीतरह जलमें से नङ्गी होकर दूसरे पुरुषके सामने न जावे तब तक वह दोष उसका नहीं छूटता इसलिये मुरलीमनोहरने शास्त्रानुसार ऐसाकरके उनका पाप छुड़ादिया ॥

दो० प्रकट शीत दुखपायकै सब मिलरहीं लजाय ।
अन्तर्गत अति सुखभयो आनँद उर न समाय ॥

हे राजन् जब श्यामसुन्दर बनमें पहुँचे तब वृक्षों की ठण्ढी छाया देखकर श्रीदामा आदिक ग्वालोंसे कहा देखो यह सब वृक्ष सर्दी व गर्मी व बरसातका दुःख अपने ऊपर उठाकर एक पांवसे खड़े रहते हैं व अपनी छाया व फल व फूलसे सबजीवों को सुख देते हैं व कोई मनुष्य उनसे विमुख नहींजाता व मनुष्य लोग सुखपाने परभी इनकी डाली व पत्ता तोड़लेते हैं तबभी यह बुरा नहीं मानते व फल व फूललगे रहने के समय राही व बटोहियोंका सन्मान करते हैं जब इनमें फल व फूल नहीं रहते तब लज्जा से शिरझुकाकर कहते हैं हमसे कुछसेवातुम्हारी नहीं बनपड़ती इसलिये हमलज्जित हैं व प्रीति अपनी धनपात्र व कंगालदोनोंसे बराबररखकर योगीश्वरों के समान तपकरते हैं संसारमें उसीकाजन्मलेना सुफलहै जो अपनेऊपर दुःखउठाकर दूसरोंका उपकारकरै ॥

दो० महिमा ऐसे द्रुमनकी कापै बरणी जाय ।
प्राण बड़े दातान के इनमें बैठे आय ॥

इसतरह वृक्षोंकी बड़ाई करतेहुये मनहरणप्यारे ग्वालोंसमेत अपनेघरआये ॥

तेईसवां अध्याय ॥

ग्वालोंका मथुराके चौबोंसे भोजनमांगना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे राजन् श्याम व बलराम एकदिन गौचरानेगयेथे बनमें जाकर

ग्वालोंकेसाथ आनन्दपूर्वक खेलतेथे उससमयग्वालोंने ब्रजनाथजीसे कहा महाराज जो कलेवाहमलोग अपनेघरसेलायेथे सो खागये पर भूखहमारी नहींगई इसलिये कुछखिला-इये यहबातसुनकर श्यामसुन्दर अंतर्यामीने विचारा कि मथुरावासी ब्राह्मणोंकी स्त्रियां मेरेदर्शनवास्ते इच्छारखतीहैं सो आजउनका मनोरथ पूर्णकियाचाहिये ऐसाविचारकर नन्दलालजीने ग्वालबालोंसे कहा देखोवनमें जहांधुआंउठताहै वहाँपर मथुरियाब्राह्मण राजाकंसकेडरसे छिपकरयज्ञ व होमकरतेहैं तुमलोगोंमेंसे पांचचारबालक वहांजावो व दण्डवत्करके मेरानामलेकर उनसे भोजनमांगलावो यहबातसुनतेही कईग्वालोंने वहां जाकर विनय पूर्वक उनसे कहा ॥

दो० हाथ जोरि ठाढ़े भये ग्वालबाल यकसाथ।
भोजन मांगतहैं कह्यो माखन प्रभु ब्रजनाथ ॥

हे राजन् उनब्राह्मणोंने जो अपने अज्ञान व कर्मके अभिमानसे श्याम व बलराम की महिमानहीं जानतेथे यहवचन सुनकर ग्वालबालोंसे कहा तुममूर्खलोग नहींजानते कि यहसब भोजनहमने देवतोंकेनामपर यज्ञकरनेवास्ते तैयारकियाहै जबतक यज्ञपर-मेश्वरका सम्पूर्ण नहींहोगा तबतक भोजननहींपावोगे यज्ञहोनेउपरांत तुमकोभी प्रसाद मिलैगा व श्याम व बलराम अहीरोंकेघर पालनहुये उनसे हम ब्राह्मणलोग उत्तमकुल हैं यहकठोरवचन ब्राह्मणोंका सुनतेही सबग्वालबाल निराशहोकर पछतातेहुये केशवमू-र्त्तिके पासजाकर बोले हे ब्रजनाथ हमलोग अपनामान छोड़कर तुम्हारेकहनेसे भीख मांगनेगये तिसपरभी भोजन नहींपाया अब क्याकरैं भूख बहुतसतावती है यहबात सुनतेही केशवमूर्त्तिने हँसकर बलरामजीसेकहा कि वहब्राह्मणलोग बिनाभक्ति हमारे भेदको नहींजानते कि स्वामीयज्ञ व होमकाकौनहै अपने कर्मके अभिमान में अन्धे होरहे हैं बहुतउत्तमहै जो वहलोग इसीतरह अपनेअज्ञानमें पड़रहें फिर श्यामसुन्दरने ग्वालबालोंसेकहा कि अब तुमलोग उनकीस्त्रियों के पास जावडीधर्मात्मा व हरिभक्त हैं जाकर कहो कि श्याम व बलरामने जो वनमें गौचराने आये हैं भूखेहोकर तुमसे भोजनमांगा है वहस्त्रियां तुमकोबड़े आदरभावसे भोजनदेवेंगी यहसुनतेही ग्वालबालों ने चौबाइनोंसे जाकरकहा हे माता श्रीकृष्ण व बलरामजीने तुमसे भोजनमांगा है सो तुम क्या कहतीहो ॥

दो० ग्वालनके सुनि वचन सब हर्षि उठीं ब्रजबाम।
कहत हमारो भाग्य धनि भोजन मांग्यो श्याम ॥
सो० करतरहींनितध्यान सुनिसुनिजिनकेगुणश्रवण।
सुफलजन्म निजजान तिनको भोजन लेचलीं ॥

दो० अतिबड़भागी जीवहैं जिनको ब्रजमें बास ।
माखन प्रभुके दरशते पावत परम हुलास ॥

उनस्त्रियोंके सदा मनसावाचासे यहइच्छारहतीथी कि कोईऐसा दिनभीहोगा जो हमैं दर्शनकेशवमूर्त्तिके मिलैंगे इसलिये उन्होंनेबड़े प्रेमसेमेवा मिठाई व पकवान व पूरी व कचौरी व दूध व दही व माखन आदिक सोने व चांदी की थालियोंमें रखकर ग्वालोंकोदिया और कुछ अपनेहाथमें लेकर जिसस्थानपर मुरलीमनोहर थे ग्वालबालों के साथ वहांकोचलीं उससमय उनकेपति आदिकोंनेबहुत मनाकिया कि तुमलोग ग्वालोंकेसाथ मतिजाव परउन्होंने जो परमभक्तथीं किसीका कहना नहीं माना ॥

सो० जिनकेउर नँदलाल बसैं लकुट मुरली लिये ।
तिन्हैं न भययमकाल कौनभांति रोकीरुकैं ॥

चौ० तबग्वालनसे पूछतबाला । केतिकदूर अहैं नँदलाला ॥
चलोआजहम नयननदेखैं । जीवन जन्म सुफलकरिलेखैं ॥

यहबचनसुनकर ग्वालबोले हेमाता थोड़ीदूर हैं जिससमय वहलोग बीच प्रेम दर्शन मोहनीमूर्त्तिके आनन्दसे चलीजाती थीं उसीसमय एकमथुरिया ब्राह्मण बर्जोरी अपनी स्त्रीको राहमेंसे पकड़लाया तबउसनेकहा हमको श्यामसुन्दरका दर्शनकरने जानेदेव अपनेऊपर अपयशमतलेव मुझे उनके दर्शनकी बड़ीलालसाहै और वह परब्रह्मपरमेश्वर पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते अवतारलेकर संसारी मनुष्यकीतरह लीलाकरतेहैं तुमलोग वेदपढ़करयज्ञ व होमकरतेहो पर उनको अपनेअज्ञानसे नहीं पहिचानते ॥

दो० को जन जाने भेव यह यज्ञ करत केहि काज ।
भोजन मांगत हैं वही माखन प्रभु ब्रजराज ॥

हे स्वामी मेराप्राण तो नन्दलालजीसे जामिला इसझूठेशरीरको रोककर क्याकरोगे मेरेमरनेउपरांत सिवायपछतानेके तुमको और कुछ हाथ नहींलगेगा जिसमनुष्य को परमेश्वरसे प्रीति न हो वह किसीकामका नहींहोता यहसब ज्ञानकहने परभी उसम-थुरियाने नहींमानकर अपनीस्त्रीको कोठरीमें बन्दकरके तालादेदिया तब उसीसाइत प्राण उसकाबीचध्यान केशवमूर्त्तिके निकलकर इसतरह सबस्त्रियों से पहिले वहां जा पहुँची जिसतरहपानी तुरन्तबहिकर नदी व समुद्रमें मिलजाताहै ॥

सो० कठिन प्रेमका पंथ जहां नेमकी गति नहीं ।
कहत सकल यह ग्रंथ प्रेमभाव के बशहरी ॥

हे राजन् जब पीछेसे वहसबस्त्रियां बड़ेप्रेमसे भोजनलिये हुये जहांपर केशवमूर्त्ति

बीचछाया वृक्ष एकसखाके कांधेपर हाथदिये बांकीसूरतबनाये कमल का फूलहाथमें लियेखड़ेथे जापहुँचीं तबचरणउनकाचूमकर थालियांभोजनकी सामनेधरदीं व उस मोहनीमूर्त्तिको देखतेही प्रसन्नहोकर आपसमें कहनेलगीं हे सखी यही नंदलालजी हैं जिनकीबड़ाई हमलोग सदासुनकर ध्यान कियाकरतीथीं आज हमारे भाग्य उदयहुये जो इनका दर्शन पाया अब इन चन्द्रमुखकी शीतलताई से अपनी २ आंखें ठण्ढीकरो व संसारमें जन्मलेनेका फल उठावो हे राजन् मुरलीमनोहरकी कृपासे उससमय उन स्त्रियोंकी दिव्यदृष्टि होगई तब उन्हों ने मोहनप्यारेको पूर्णब्रह्म जानकर हाथ जोड़कर विनय किया हे दीनानाथ बिना कृपा तुम्हारी इस सांवलीसूरति का दर्शन किसी को नहीं मिलता न मालूम कौन जन्मके पुण्य हमारे सहायक हुये जो तुम्हारा दर्शनपाया व अनेकजन्म के पाप हमारे छूटगये व हमलोगों के पति आदिक अपने अज्ञान व अभिमान से संसारी मायामोहमें डूबकर ऐसे अन्धे होगये जो परमेश्वर बैकुण्ठनाथको जिनके नामपर यज्ञ करतेहैं मनुष्य समझकर मांगने परभी भोजन नहीं दिया तन व धन वही उत्तम समझना चाहिये जो तुम्हारे कामआवै जो लोग मनुष्यका तन पाकर तुम्हारी भक्ति व सेवा करते हैं उन्हीं का जन्मलेना स्वार्थ है व यज्ञ व तप व ध्यान व ज्ञान वही उत्तम होताहै जिसमें तुम्हारा नामआवे ॥

दो० जो जन मनबचसे करैं माखन प्रभुसे हेत ।
चारि पदारथ देतहैं पाप दुःख हरिलेत ॥

यहबचन प्रीति व भक्तिसे भराहुआ सुनतेही केशवमूर्त्ति उनकी कुशलपूछकर बोले मैं नन्दमहरका बेटाहूं तुमलोग ब्राह्मणीहोकर मुझे दण्डवत् मतकरो इसमें मुझको दोष लगैगा जो लोग ब्राह्मण या उनकी स्त्रियोंसे अपनाकाम व टहललेते हैं वहसंसारमें कुछबड़ाई नहींपाकर पापके भागीहोते हैं तुमने हमैं भूखा जानकर दयाकी राह बनमें आनके भोजनदिया सो मैं इसकेबदले तुम्हारा क्यासन्मानकरूं वृन्दावन मेरा घर यहासे दूरहै कदाचित् अपने घरपर होते तो यथाशक्ति तुम्हारा आदरभाव करते सो यहां मुझसे तुम्हारा कुछ शिष्टाचार नहीं बनिपड़ा इसबातका पछताव मेरे मनमें रहगया तुमलोगों को यहां आये बहुत विलम्बहुआ अब अपने २ स्थानपर जाव ब्राह्मणलोग तुम्हें जोहतेहोंगे किसवास्ते कि स्त्री अर्द्धाङ्गी होती है विना तुम्हारे गये देवता यज्ञ व होम ब्राह्मणोंका अङ्गीकार नहीं करेंगे ॥

सो० सुना वचन निर्बान कर्म्म धर्म्म बाणी सुखद ।
द्विजत्रिय परम सुजान बोलीं सब करजोरिकै ॥

हे बैकुण्ठनाथ आपका दर्शन करने व तुम्हारे चरणकमलकी भक्ति व प्रीति रखने

से संसारीमाया छूटगई अब हमैं घरदुवार व कुलपरिवारका कुछ मोह नहींरहा सिवाय इसके हमलोग विना आज्ञा अपने पति आदिकके तुम्हारा चरण देखने आई हैं कदाचित् वहलोग हमको अपने घरमें न रक्खैं तो हम कहां जावैंगी इससे यह बात उत्तम है कि हम सब आपके चरणोंके पास बनीरहैं व तुम्हारी सेवा व टहलकरके अपना परलोक बनावें व हे महाप्रभु एक स्त्री तुम्हारे दर्शनोंकी इच्छासे हमारेसाथ आवतीथी सो उसका पति बरजोरी उसे पकड़कर राहमें से फेरलेगया न मालूम उसकी क्या गतिहुई यह बात सुनकर मोहनीमूर्त्तिने हँसदिया व उसस्त्रीका स्वरूप सबको दिखलाकर कहा देखो यह स्त्री तुमलोगों से पहिले मेरेयहां आनपहुँची जो कोई परमेश्वरमें प्रीति रखताहै उसका नाश कभी नहीं होता हे राजन् उस स्त्रीको केशवमूर्त्तिकी सेवा में देखकर पहिले सबको आश्चर्य्य मालूमहुआ फिर सब स्त्रियोंने मुरलीमनोहरसे बिनय किया हे ब्रजनाथ आप अर्थ धर्म्म काम मोक्ष चारोंपदार्थ के देनेवाले होकर हमको अपने चरणों से अलग न कीजिये तुम्हारा चरण छोड़कर अब हम जाय नहीं सक्तीं यह सुनकर केशवमूर्त्ति बोले सुनो तुमलोग परमेश्वरके प्रेममें लीनहौ पर गृहस्थ को वेदके अनुसार सब काम करना चाहिये शास्त्रमें ऐसा लिखाहै जो स्त्री अपने पतिको परमेश्वर तुल्य जानकर उसकी आज्ञा पालन करै व दूसरे पुरुषको पापकी आंखसे न देखै उस पतिव्रताको योगी व ज्ञानी से उत्तम समझना चाहिये वह स्त्री जो कुछ शुभ या अशुभ अपने मुखसे किसीको कहै वह बात सच्च होजाती है और उसको चारों पदार्थ अपने स्वामीसे मिलसक्ते हैं ॥

दो० यहिबिधिते निश्चय करै जो नारी मनमाहिं ।
चारि पदारथ सो लहै यामें संशय नाहिं ॥

इसलिये तुमलोग अपने पतिके पास जाव वह तुमसे खेद न करके प्रसन्न होंगे यह बचन सुनतेही सब चौबाइनों ने अमृतरूपी नटवरवेष केशवमूर्त्तिको आंखों की राह अपने हृदय में पीलिया व उनसे भक्ति बरदानलेकर दण्डवत्करके अपने स्थान पर चलीं व जिस ब्राह्मण ने अपनी स्त्रीको कोठरी में बन्दकरदिया था उसने ताला खोलकर देखा तो अपनी स्त्रीको मरीहुई पाकर रोने पीटनेलगा जिससमय उसकी लोथ जलाने का उपाय कररहाथा उसीसमय सब स्त्रियां अपने स्थानपर पहुँचीं ॥

दो० माखनप्रभुको दरश ले आई सुघर सुजान ।
तिनके दरश प्रतापते विप्रन पायो ज्ञान ॥

हे राजन् जाती समय ब्राह्मणलोग अपनी २ स्त्रियों पर क्रोधित हुये थे जब वह केशवमूर्त्तिका दर्शनकरके फिर आई तब उनका माथा चमकताहुआ देखकर ब्राह्मण

लोग कहनेलगे देखो जिनका दर्शन ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता उन परब्रह्मपरमेश्वरका दर्शन इन स्त्रियों ने करके अपना जन्म सुफलकिया व हम लोगों ने अपने अज्ञानसे नहीं पहिंचाना कि स्वामी यज्ञ व होमका कौनहै हमने वेद व पुराणमें ऐसा सुनाथा कि परब्रह्मपरमेश्वर यदुकुलमें अवतारलेकर नन्द व यशोदा को बाललीला का सुख दिखलावेंगे सो यही वैकुण्ठनाथ बाललीला करते हैं उन्हों ने ग्वालबालों को भोजन मांगने वास्ते हमारे पास भेजाथा सो हमसे बड़ीचूक हुई जो सच्चिदानन्दको भोजन न दिया व जिनके प्रसन्न होने वास्ते हमलोग यज्ञ व होम करते हैं उन्हें मनुष्य समझकर उनके सन्मुख नहीं गये व अपने अज्ञान व अभिमानसे हमारे मनमें दयाभी नहीं आई सो हमारे यज्ञ व तप करने पर धिक्कार है कि हमने परमेश्वर को नहीं पहिंचाना हमलोगों से इन स्त्रियोंको अच्छा समझना चाहिये जिन्हों ने बिना जप तप किये व कथापुराण सुने अपने ज्ञानसे परमेश्वरको पहिंचानकर भोगलगाया व उनका दर्शन करके अपने नेत्रोंका सुख पाया इसीतरह ब्राह्मणों ने बहुत पछताकर अपनी २ स्त्रियों से विनयपूर्वक कहा तुम्हारी बराबर दूसरोंका भाग्य न होगा जो परब्रह्मपरमेश्वरके दर्शन तुमकोमिले फिर ब्राह्मणों ने श्यामसुन्दरको ध्यानमें हाथजोड़कर विनयकिया हे दीनानाथ हमलोगोंका अपराध क्षमाकीजिये व हमारेहृदयमें अज्ञानता की काटि जो जमीहै उसको ज्ञानरूपी अग्निसे जलादीजिये जब इसीतरहपर बहुत स्तुति व बिनती ब्राह्मणोंनेकी तबकेशवमूर्त्तिने अपराधउनका अपने हृदयमें क्षमाकर-दिया व सबस्त्रियोंने लोथ उसचौबाइनकी देखकर उसकेपतिसे कहा हमने तेरीस्त्रीको नन्दलालजीकी सेवामें देखाथा यहवचनसुनतेही वहमथुरिया रोकरबोला मैंभी अपनी स्त्रीको तुम्हारेसाथ जानेदेता तो किसवास्ते वहमरती ऐसाकहकर वहमथुरिया रोताहुआ केशवमूर्त्तिके पासदौड़ागया व अपनीस्त्रीको वहां चतुर्भुजीरूप देखकर जब श्यामसुन्दर के सामने अतिबिलापकरके रोनेलगा तबब्रजनाथजीने कहा अपनीस्त्रीके भक्ति करनेसे तूभी चतुर्भुजी स्वरूपहोजा सो नन्दलालजीने स्त्रीपुरुष दोनों को बिमानपर बैठाकर बैकुण्ठमें भेज दिया व जो कुछ पदार्थ ब्राह्मणकीस्त्रियां देगईथीं उसकोबांटकर ग्वालों समेत आनन्दपूर्वक भोजनकिया उससमय श्रीदामानेकहा हे नन्दलालजी गायें चरती हुई दूरचलीगईं उनको बहोरना चाहिये यहबात सुनतेही केशवमूर्त्तिने ऐसी मुरली बजाई कि सबगायें आप दौड़कर वहां चलीआईं ॥

दो० या बिधि मुरली टेरके घेरलईं सब गाय।
सांझसमय घरको चले हलधर जूके भाय॥

जब केशवमूर्त्ति बंशीबजातेहुये वृन्दावनके निकट पहुँचे तब सबब्रजबाला उन की छबिदेखनेसे प्रसन्न होकर बोलीं ॥

दो० प्रेममगन आनन्द अति कहत सकल ब्रजबाम ।
देखोसखि यशुमतिसुवन शोभितअतिबलराम ॥
कहतमुदितमनयुवतिजनधनिधनिसखिवहमोर ।
जिनके पंखन कोमुकुट दीन्हों नन्दकिशोर ॥

हे राजन् जिससमय वैकुण्ठनाथजी गायोंकेपीठपर हाथफेरकर अपने पीताम्बरसे उनका शरीर पोंछतेथे उससमय स्वर्गमें कामधेनुगौ पछताकर कहतीथी परमेश्वर हमाराभी जन्म वृन्दाबनमें देते तो केशवमूर्त्ति हमारे ऊपरभी हाथफेरकर मेरा दूध दुहते ॥

दो० धनिधनिब्रजकी धेनु यह चारत त्रिभुवननाथ ।
झारतपोंछत दुहतनित हितकर अपनेहाथ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का गोवर्द्धनपहाड़की पूजाकरना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरहश्यामसुन्दरने गोवर्द्धन पहाड़ अपनी कानी अंगुलीपर उठायाथा वहकथाकहते हैं सुनो गोकुल व वृन्दाबनमें वर्षवें दिन ब्रजबासी लोग कार्त्तिकबदी चतुर्दशी को छत्तीसव्यंजन बनाकर राजाइन्द्रकी विधिपूर्वक पूजन कियाकरतेथे जब वहदिनआया तबवृन्दावनबासियोंने अनेकतरहका पकवान व मिठाई आदिक इन्द्रकीपूजावास्ते अपने २ घरबनवाया व यशोदा बड़ीपवित्रतासे सबपदार्थ बनाकर रखतीथीं जिसमेंकोई जूठा न करदेवै ॥

दो० सैंत सैंत अतिनेम सों धरति अछूते जाति ।
श्याम कहूं परसैं नहीं यहमनमाहिं डराति ॥
सो० शंककरत मनमाहिं सुरपति पूजा जानिजिय ।
यशुमति जानतिनाहिं सबदेवन के देवहरि ॥

हे राजन् केशवमूर्त्तिने घरघर यहतैयारीदेखकर मनमेंऐसाविचारा कि इन्द्रकीपूजा छुड़ाकर गोवर्द्धनपहाड़को पुजवानाचाहिये ऐसाविचारकर यशोदासेपूछा हे मैया आज सबब्रजवासियों के घर पकवान व मिठाई तैयारहोनेका क्या कारण है यशोदाबोली हे बेटा इससमय मुझे बातकरनेकी छुट्टी नहीं है तू अपनेपितासे जाकरपूछले यह बात सुनकर मोहनप्यारे बलरामजी समेत नन्दरायके पासगये ॥

दो० तब हरि बोले नंदसों मधुर मन्द मुसकाय ।
करत पुजाई कौनकी बाबा मोहिं बताय ॥

हे बाबा वहकौनदेवता जिनकी पूजाकरनेसे भक्ति व मुक्ति मिलतीहै उनका नाम व गुण मुझसे बर्णनकीजिये बड़ोंकोउचितहै कि अपने कुलकीरीति छोटों को बतलादेवैं लड़कपनकी सीखीहुईबात यादरहिकर कभीनहींभूलती यहसुनकर नन्दजीबोले हेबेटा अबतक तुमने इसपूजाकाहाल नहींसुना यहसबसामग्री वास्ते पूजाकरनेइन्द्र जो सब मेघोंकाराजाहै बनतीहै उनकेपूजनेसे बर्षाअच्छीहोकर घास व अन्नउपजताहै जिसके उत्पन्नहोने से सबजीव सुखपावते हैं व यहपूजा हमारेकुलमें बहुत दिनसे होती है ॥

दो० माखन प्रभु बोले तभी तात बात सुनिलेहु ।
जहँपूजन नहिंहोतहै तहँ बरसत नहिं मेहु ॥

हे बाबा आजतक जो कुछ हमारे बड़ोंने जान या अजानमें पूजा इन्द्रकी किया सो अच्छाहुआ पर तुमलोग जानबूझकर धर्मकीराह छोड़के कुराहपर क्योंचलतेहो किस वास्ते कि संसारमें तीनतरहका धर्म व कर्म होताहै एक वेद व शास्त्रके अनुसार दूसरा लोकव्यवहार तीसरा अपनेमनसे सो वेदके प्रमाणकरनेसे फल उसका मिलताहै भला तुम्हींबतलावो इन्द्रकीपूजाकरनेसे क्या मिलैगा वहकिसीको भक्ति व मुक्ति व ऋद्धि व सिद्धि व बरदाननहीं देसक्ता व इन्द्र आप सौयज्ञकरके इन्द्रासन पावता है तबदेवता उसे अपनाराजाकरके मानतेहैं इससे वह परमेश्वर नहीं होसक्ता जबवहदैत्योंसे लड़ाई में भागकर कहीं जाय छिपताहै तब नारायणजी सहायताकरके फिर उसे इन्द्रासनपर बैठाल देते हैं ऐसे निर्बलकी तुमलोग पूजन क्यों करतेहो अपनाधर्म पहिंचानकर परमेश्वरकी पूजाक्यों नहीं करते इन्द्रका किया कुछ नहींहोसक्ता और जो लोग अपने अज्ञान से नारायणजी को जो इन्द्रादिक सबदेवतोंके मालिक हैं छोड़कर दूसरे देवतों की पूजाकरतेहैं उन्हें मूर्ख समझना चाहिये किसवास्ते कि हर्ष व शोच परमेश्वरकी इच्छासे होताहै बिना इच्छानारायणजीके एक पत्ताभी वृक्षका नहीं हिलसक्ता इन्द्रभी उन्हींकीकृपासे इसपदवीको पहुँचाहै व जो बात विधाताने सबकेकर्ममें लिखदिया वहीहोकरउसमें तिलभर घटबढ़ नहींसक्ता सुखसम्पति व परिवार आदिक अच्छीवस्तु अपनेधर्म व कर्म्मसे मिलताहै व हाल वर्षाका इसतरह पर समझो कि आठमहीनेतकसूर्यदेवता जो जल पृथ्वीकासोखते हैं वहीजल चारमहीने बरसातमें वर्षकर उसीसे अन्न व घासआदिक सबउत्पन्नहोते हैं व ब्रह्माने जो चारवर्ण ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य व शूद्र संसारमें बनाये हैं उनकेपीछे एककर्म्म इसतरहपर लगादिया है कि ब्राह्मण वेद व विद्यापढ़ैं व क्षत्री सबकीरक्षाकरैं व बैश्य खेती व्यापार व शूद्र इन तीनोंवर्णकी सेवाकरैं सो हे पिता हमारावर्ण बैश्यकाहै व हमारेयहां बहुतसी गौ इकट्ठी हैं व ब्रजगोकुल जन्मभूमि हमाराहै इसवास्ते गोप व ग्वाल हमलोगोंका नाम पड़ा सो हमाराभी यहकर्म है कि खेती व व्यापारकरके गौ ब्राह्मणकी सेवाकरैं व वेद व शास्त्रकीभी ऐसीआज्ञाहै कि अपनेबर्णका धर्म न छोड़ैं जो लोग अपनाधर्म छोड़कर दूसरे

वर्णका कर्मकरते हैं उनको ऐसा समझनाचाहिये जिसतरह कुलवन्तीस्त्री अपनेपतिको छोड़कर दूसरेपुरुषके पासरहै सो हे नन्दबाबा मुझबालकका कहना सचमानो तो आप लोग इन्द्रकीपूजन छोड़कर गोवर्द्धन पहाड़ व गौ ब्राह्मण व बनकीपूजा कीजिये किस-वास्ते कि गोवर्द्धनपहाड़ यहांकाराजाहै व इसपहाड़ व बनमें चरनेसे सब गो व बछवे हमारे पालनहोते हैं व उन्हींका दूध व घी आदिक बेचनेसे हमलोगोंकी जीविका होती है जो अपनीपालनकरै उसे अपनाराजा समझकर पूजनाचाहिये इसवास्ते यहसब पक-वान व मिठाई आदिक जो बनाहै सो गोवर्द्धन पहाड़पर लेचलकर उनकी पूजनकरो व सबपदार्थ उन्हें भोगलगाकर गौ व ब्राह्मण व कंगालोंको खिलादेव और सालसे इस संवत्में अधिकवर्षाहोगी यहवचन केशवमूर्त्तिका सुन नंद व उपनन्द व बृषभानु आदिक परमेश्वरकी इच्छासे प्रसन्नहोकर बोले ॥

दो० ताते सोई कीजिये कृष्ण कही जो बात।
सब ब्रजबासी पूजिये गोवर्द्धन उठि प्रात॥

जब यहसम्मत आपसमें ठीकहोगया तब नन्दराय ने गांव में ढिंढोरा पिटवादिया कि कार्त्तिकसुदी परेवाको हम चलकर गोवर्द्धन पहाड़की पूजाकरैंगे सो सबकोई पकवान व मिठाई व सामग्रीलेकर गौवोंसमेत चलना हे राजन् यहआज्ञा नन्द व उपनन्दकी सुनकर सबलोग प्रसन्नहोगये व गोप व ग्वालों ने अपने २ गौ व बछवेका अनेकरंग से पूंछ व सींग चित्रकारी करके गले में घंटा बांधदिया व कार्त्तिकसुदी परेवाको प्रातः समय ब्रजवासियों ने स्नानकरके सबसामग्री गाड़ी व बैलोंपर लदवालिया और सबस्त्री व बालक उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनकर नन्द व बृषभानु के साथ बाजेबजातेहुये गोवर्द्धन पर्वतको पूजनेचले ॥

दो० माखन प्रभु अति चाव सों भूषण वस्त्र मँगाय।
गिरि गोवर्द्धन ले चले गोधन सबै बनाय॥
नन्द महर उपनन्द सब श्याम राम दोउ भाय।
पहुँचे गोवर्द्धननिकट निरखि शिखर सुखपाय॥
सो० उतरे सहित समाज चहूंओर ब्रज लोग सब।
मधि शोभित गिरिराज कोटिकाम शोभासरस॥

जब श्रीकृष्णजी की आज्ञानुसार सबकिसी ने पूजन गोवर्द्धनपहाड़की धूप व दीप आदिकसे विधिपूर्वककिया व इतना पकवान व मिठाई वहां इकट्ठाहुआ कि जिसका ढेर दूसरापहाड़ मालूमहोताथा और अनेक रंगके माला व फूल व कपड़े चढ़ावने से

शोभा गोबर्द्धनपहाड़की ऐसी दिखाईदेतीथी जिसकावर्णन नहींहोसक्ता उससमय मोहन-प्यारेने ब्रजवासियोंसे कहा तुमलोग आंखैंबन्दकरके ध्यान गोवर्द्धनजीकाकरो तो वह प्रत्यक्ष दर्शन अपनादेकर भोजनकरैंगे तब मुरलीमनोहरके कहनेसे नंदजी आदिक सब ब्रजबासी हाथजोड़कर खड़ेहोगये व आंखैंबन्दकरके ध्यान गोवर्द्धनपहाड़का किया तब श्यामसुन्दर अपने एकचतुर्भुजी विशालरूप अतिसुन्दर व तेजमानसे उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिने गोबर्द्धनपहाड़पर प्रकटहुये उससमय अपने श्रीकृष्णरूपसे नन्दादिक ब्रज-बासियोंसे कहा तुम्हारीभक्ति व प्रीति सच्चीदेखकर गोवर्द्धनजी तुमलोगों को दर्शनदेने वास्ते प्रकटहुये हैं सो अच्छीतरह दर्शनकरो यहवचन सुनतेही ब्रजबासियों ने आंख-खोलकर देखा तो उसस्वरूपके दर्शनपावने से बहुतप्रसन्नहुये व उनको दण्डवत्करके आपसमें कहने लगे जिसतरह आज गोवर्द्धनजी ने दर्शन दिया इसतरह इन्द्रकादर्शन कभीनहीं हुआथा न मालूम हमारे पुरुषे ऐसे प्रत्यक्षदेवताकी पूजन छोड़कर इन्द्र को क्यों पूजते थे ॥

दो० कहेउ कृष्ण तब नन्द सों भोजन लेउ मँगाय।
गिरि आगे सब राखिकै अर्पौ बिनय सुनाय ॥

यहबचन सुनतेही गोप व ग्वाल जल्दी से परात व थाली भोगकी उठाकर उनके निकटलेगये तब गोबर्द्धननाथजी हाथ फैला २ कर भोजन करनेलगे ॥

दो० देखन को धाये सभी ब्रज के नर अरु बाम।
भयो देवता गिरि बड़ो ताहि पुजावत श्याम ॥

सो० बड़े महर उपनन्द नंद आदि ठाढ़े सबै।
कहत जो कछु नँदनन्द करत सकल सोई तहां ॥

दो० इतहि नंदको कर गहे गोपिन सों बतलात।
उत अपनो धरि चार भुज रुचिसों भोजनखात ॥

सो० श्री राधा सुखपाय मुदितविलोकति श्यामछबि।
भक्तन के सुखदाय नितनव करतविनोद ब्रज ॥

दो० प्रीति रीतिके भाव सों भोजन सबको खाय।
होइ प्रसन्नअति नन्दसों तबबोल्यो गिरिराय ॥

सो० लेव नंद बरदान अब जो तुम हम सों चहौ।
मैं लीन्हो सुख मान बहुत करी तुम भक्ति मम ॥

दो० नन्द गोप अरु नन्द सुत श्री वृषभानु समेत ।
बार बार गिरिराज के चरण परत अति हेत ॥

सो० करि सब को सन्मान दे प्रसाद निज हाथ सों ।
सबनकही घर जान होइप्रसन्न गिरिराजतब ॥

दो० प्रकट देत हैं दरशगिरि सबके आगे खात ।
परम हर्ष नरनारि सब सबके मुख यह बात ॥

सो० महिमा अमित अपार श्री गोबर्द्धन अचल की ।
जेहिपूजत करतार शारदविधि नहिंकहिसकैं ॥

उससमय ललितासखी ने राधासेकहा यह सबलीला मनहरणप्यारे की है जो दूसरा स्वरूप अपनापहाड़में प्रकटकरके पकवान व मिठाई चखतेहैं हे राजन् जब गोबर्द्धन-नाथजी भोजनकरके अन्तर्धानहोगये तब नन्दजीने वहां होमकरने उपरान्त परिक्रमा कर ब्राह्मणोंको बहुतसा सोना व गोआदिक दानदिया व पहिले ब्राह्मण व गौ व कंगालों को भोजन खिलाकर पीछेसे आप सबब्रजवासियों समेत भोजनकिया व श्रीकृष्णजीने एकग्रास अपनेहाथसे उठाकर खाया सो ब्रह्मा व महादेव व विष्णु आदिक सब देवता व तीनोंलोक के जीवों का पेट भरगया ॥

दो० माखन प्रभु हरिदेव हैं सब देवन को मूल ।
मूलहि सींचे होत हैं हरे पात फलफूल ॥

हे राजन् उसदिन ब्रजवासी रातको उसीजगह टिककर बड़े आनन्दसे रातभर गाते बजाते रहे दूसरेदिन उसीतरह आनन्दमचातेहुये गो व बछड़ेसमेत अपनेघर आये उसी दिनसे अन्नकूटकी पूजा संसार में प्रकट हुई ॥

सो० खेलत नवनित ख्याल भक्तपाल नंदलाल ब्रज ।
दुष्टन के उर शाल सुरनर मुनिमोहत निरखि ॥

पचीसवां अध्याय ॥

गोवर्द्धन पहाड़को अपनी अँगुलीपर श्रीकृष्णजीका उठाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब उससाल ब्रजवासियों ने इन्द्रकी पूजा नहींकी तब इन्द्रने जो श्यामसुन्दरकी महिमा नहीं जानता था अपने सभावाले देवतों से पूंछा कहो ब्रजमें किसने कौन देवताकी पूजा कियाहै यह वचन सुनकर कोई देवता बोला ब्रजवासी लोग हरसाल तुम्हारी पूजा करते थे इस संवत्में कृष्णबालक नन्दमहर के

कहने से ब्रजबासियों ने तुम्हारा पूजन छोड़कर गोबर्द्धन पहाड़को पूजाहै यह बात सुनतेही इन्द्रने क्रोधकरके कहा ब्रजबासियों को धन अधिक होने से अभिमान उत्पन्न हुआ जो उन्होंने हमारी पूजाकरना छोड़दिया इसलिये मैं उन्हें कालके मुखमें डालकर दरिद्री करदूंगा कृष्ण छोकड़ा जो हमारा शत्रुहै उसके कहने से ब्रजबासियों ने मेरा अपमान किया सो मैं उस बालकका गर्व्व तोड़े देताहूं आजतक ब्रजबासियों का मैं मालिकथा अब उन्होंने कृष्णको अपना स्वामी समझाहै ॥

दो० ऐसे सुरपति क्रोधकरि मनमें गर्व्व बढ़ाय ।
प्रलयकालके मेघ सब लीन्हें तुरत बुलाय ॥

जब मेघोंका राजा डरता व कांपता इन्द्रकेपास आनके हाथजोड़कर खड़ाहुआ तब इन्द्रने उसे आज्ञादिया तुम इसीसमय सब मेघोंको साथलेकर ब्रजमण्डल पर जाव व इतना पानी व पत्थर बरसावो जिसमें सब ब्रजबासी गोबर्द्धन पहाड़समेत बहजावें ॥

दो० और ठौर सब छांड़िकै ब्रजमहँ बरसो जाय ।
ब्रजबासी गोधन सहित जलसे देव बहाय ॥

व इन्द्रने उञ्चासों पवनको भी मेघोंके साथ करदिया जिसमें सरदी व पानी से कोई जीता न बचे यह आज्ञा पातेही मेघराजा उञ्चासों पवनसमेत बड़े २ मेघोंको साथ लेकर ब्रजमण्डलपर चढ़ दौड़े उनके आतेही आंधी चलने व बदली छाजाने से वृन्दावनमें अँधियारा होगया व घड़ेके समान बूँद बरसकर बिजुली चमकने लगी सिवाय आंधी व पानी व बिजुली के और कुछ वहां दिखलाई नहीं देताथा तब केशव-मूर्त्तिने हँसकर बलरामजी से कहा देखो इन्द्र अपनी पूजा न पावने से क्रोधकरके महा प्रलयका पानी बरसाता है यह क्रोध उसका हमारे साथ समझना चाहिये किसवास्ते कि मेरे कहने से ब्रजबासियों ने उसकी पूजा छोड़कर गोवर्द्धन पहाड़ को पूजा था इसलिये उसका गर्व्व तोड़ना उचितहै और यह दशा देखकर नन्द व यशोदा आदिक सब ब्रजबासी घबरागये ॥

दो० देखि देखि ब्रजकी दशा नन्दमहर पछितात ।
कियो निरादर इन्द्रको मनमें बहुत डरात ॥
सो० श्याम राम दोउभाय लिये निकट शोचत महर ।
जुरे गोप तहँ आय मनहीं मन मुसुकात हरि ॥

हे राजन् जब सब ब्रजबासी ऐसे प्रलयके पानी बरसने से मारेसरदी के बहुत दुःखी हुये तब भीजते व कांपते हुये श्यामसुन्दर के शरण में आनकर पुकार २ कहने लगे

हे गोकुलनाथ इसप्रलयके पानी से हमारा प्राण बचाइये व तुमने इन्द्रकी पूजा छुड़वा कर हमलोगों से गोवर्द्धन पहाड़को पुजाया इसीवास्ते इन्द्र क्रोधकरके महाप्रलय का पानी वरसाता है अब जल्दी गोवर्द्धन पहाड़को बुलावो जो आनकर इस बरसने से हमारी रक्षाकरे नहीं तो एकक्षण में सब मनुष्य गौवोंसमेत डूबकर मरने चाहते हैं ॥

दो० जब जब गाढ़ परी हमैं तब तुम लियो उबार ।
यहि अवसर अब राखियो मोहन नन्दकुमार ॥
सो० ब्रजजनके सुखदान देखि बिकल ब्रजलोग सब ।
हँसबोले तब कान धरौधीर उर डरौ मत ॥

तुमलोग अपनी २ वस्तु व गो व बछवा आदिक अपने साथ लेकर गोबर्द्धनपहाड़ के पासचलो वह तुम्हारी रक्षाकरके इन्द्रका अभिमान तोड़ देंगे जब श्यामसुन्दर की आज्ञानुसार सब ब्रजवासी अपनी अपनी वस्तु व गो व बछवासमेत गोवर्द्धनपहाड़ के निकट गये तब ब्रजनाथजी ने पीताम्बरकी कछनी बांधकर मुरली कमरमें खोंसलिया व गोवर्द्धनपहाड़को अपने बायेंहाथकी कानी अँगुली पर फूलके समान उठालिया और सब ब्रजबासी व गोआदिकको उसकी छायामें खड़ाकरके सुदर्शनचक्र को आज्ञादी कि तुम चारोंओर इस पहाड़के फिरतेरहो जितना पानी बरसे सब अपने प्रकाशसे सोखते जाव जिसमें पृथ्वी पर एकबूंद पानी न गिरै वैसाही सुदर्शनचक्र ने किया उससमय सब ब्रजवासी केशवमूर्त्तिकी प्रभुतादेखकर आपसमें कहनेलगे श्रीकृष्णजी परमेश्वरका अवतार मालूम होते हैं नहीं तो मनुष्यकीसामर्थ्य नहीं है जो पहाड़को फूलकेसमान अँगुलीपर उठानेसकै व श्यामसुन्दर पहाड़ उठाये हुये मधुर २ शब्दसे मुरली बजाकर सबको प्रसन्नकरते थे जिसमें कोई घबरावे नहीं व यशोदा अपने प्राणप्यारे के प्रेम में घबड़ाकर नन्दजी से कहती थी अपने अज्ञानसे इन्द्रका पूजन छोड़कर गोवर्द्धनपहाड़ को पूजाथा अभी कहीं पहाड़ मोहनप्यारेपर गिरपड़े तो क्या करूँगी ॥

चौ० दाबति भुजा यशोमति मैया । बार बार मुखलेत बलैया ॥
लखिपहाड़मन अतिदुखपावे । पुनिपुनि गोबर्द्धनहिमनावे ॥
नाथ आपनो भार सम्हारी । करियो कान्हाकीरखवारी ॥
पय पकवान मिठाई मेवा । बहुरि पूजिहौं तुमको देवा ॥

फिर यशोदा ने बलरामजी से कहा कन्हैया तुम्हारी सहाय किया करता था इस समय तुमभी कुछ उसकी सहायताकरो इसतरह नन्दरानी अपने कुलदेवता व परमेश्वरको बारम्बार दण्डवत्करके यह मनावतीथी जिसमें मनहरणप्यारे को पहाड़ उठावने में दुःख न पहुँचै ॥

दो० माखनप्रभु के कारणे जाय वारनी माय ।
ताके मनकी कलपना केहिबिधि बरणी जाय ॥

जब श्यामसुन्दर ने अपनी माता व पिताको दुःखी देखा तब उनको धैर्य्य देने वास्ते यह उपाय किया ॥

चौ० कहेउ नन्दसों निकट बुलाय । तुमहूँ सबमिलिकरौ सहाय ॥
लैलै लकुट राखि गिरि लेहू । मत राखौ उरमें सन्देहू ॥
गोबर्द्धनगिरि भये सहाय । आप कहेउ मोहिं लेहुउठाय ॥

दो० यह सुनि जहँतहँ गोपसब रहे लकुट गिरिलाय ।
कहत श्याम तब नन्दसों भले लियो उचकाय ॥

सो० ठाढ़े ढिग बलराम देखि देखि लीला हँसत ।
कौतुकनिधिसुखधाम करतचरितसंतनसुखद ॥

उससमय गोपियां हँसीकीराह मोहनप्यारे से कहतीथीं तुमने संध्या सवेरे बहुतसा दूध व माखनआदिक हमारा चुराकर खायाथा उसी के बलसे इतना भारी पहाड़उठाया है सो आज वह दूध व माखन तुम्हारा खाना सुफल हुआ ॥

चौ० श्रीबृषभान सुता तहँ आई । कुंवर कान्हके अति मनभाई ॥
गोरअंग सुन्दर सुकुमारी । श्याम संग खेलत नितप्यारी ॥
सुनतबोल हँसिउठे मुरारी । तबहीं डोलगयो गिरिभारी ॥
नरनारिनको अतिभयभाई । धाय छिपाय राधिका लाई ॥

जबब्रजबाला पहाड़गिरनेके डरसे राधिकाको पकड़कर कीर्त्तिउसकी माताके पास लेगई तबकीर्त्तिने उसपर क्रोधकरके उसे अपनेपास बैठालरक्खा व फिर केशवमूर्त्तिके पास नहीं जानेदिया शुकदेवजीने कहा हे राजन् इधर श्यामसुन्दर पहाड़को उठाकर ब्रजवासियोंकी रक्षाकरतेथे व उधरराजामेघ मूसलधारपानी व पत्थरबरसाताथा व बिजुलीचमकने से आंखसबकी ढँपजाती थीं व सुदर्शनचक्र इसफुरतीसे चारोंतरफ गोवर्द्धन पहाड़के घूमकर सबपानीको अपनेतेजसे सोखलेताथा कि एकबूंद पृथ्वीपर नहींगिरता था राजाइन्द्र यहहाल सुनकर आपभी मेघराजकी सहायताकरनेकेवास्ते चढ़आया व उसीतरह सातदिन व सातरात पानीबरसतारहा पर किसीजीवको कुछदुःख नहींहोकर सबकोई आनन्दसे गोवर्द्धनपहाड़के नीचे घरकीतरह बैठेरहे व श्यामसुन्दर इरसाइत प्रेमपूर्वक गोप व गोपियोंसे पूंछतेथे कि हमारे माता व पिता व सखालोग किसतरहहैं

कुछ शोच न करैं व वे लोग उत्तरदेते थे कि सबकोई तुम्हारी कृपा व दयासे आनन्दपूर्वक रहकर पानी व बदलीका कौतुक देखते हैं सातदिनतक हरसाइत सबव्रजवासी केशवमूर्त्तिका अमृतरूपी मुखारबिन्द आंखोंसे पीतेथे इसलिये किसीको कुछ भूख व प्यासनहींलगी जबमेघराजाका सबपानी चुकगया तबउसने यहहाल इन्द्रसे कहा वह मेघराजाकी बातसुनतेही बहुतलज्जित होकर उनलोगों समेत अपने स्थानपर चला गया जबइन्द्रने यहसबहाल देवतोंसे कहा तब देवतेबोले ॥

दो० तुम जानत प्रभु भूमिजब दुखित पुकारी जाय ।
कहेउलेन अवतार तब सोइ बिहरत व्रजआय ॥
सो० कहेउ इन्द्रपछताय मैं भूल्यो जान्यो नहीं ।
कीन्हींबहुत ढिठाय भयकरि मनव्याकुलभयो ॥

हे राजन् देवतोंका बचनसुनने व ऐसी २ महिमा श्रीकृष्णजीकी देखने से इन्द्र को विश्वासहुआ कि नंदलाल आदिपुरुषका अवतारहैं नहींतो दूसरेको क्या सामर्थ्य थी जो पहाड़को अपनीअंगुलीपर उठाकर व्रजमण्डलकी रक्षाकरता ऐसा बिचारकर इंद्रअपनेकर्त्तबको शोचकरके पछतानेलगा व जब मेघोंके चलेजाने से बर्षाबन्दहोकर धूप निकलआई तबव्रजबासी बोले हे व्रजनाथ तुम्हारे डरसे सबमेघ राजा भागगये अबगिरि अपनीअंगुलीपरसे उतारदीजिये यहबचनसुनकर मोहनप्यारेने गोवर्द्धनपहाड़ को उसीस्थानपर रखदिया उससमय देवतोंने आकाशसे उनपर फूलबरसाये व अप्सरोंने अपने बिमानोंपरसे नाचदिखलाकर गंधर्वोंने गानासुनाया और ऋषीश्वरोंने स्तुतिकिया व यशोदाने केशवमूर्त्तिको गोदमें उठाकर बड़ेप्रेमसे मुखउनका चूमलिया व उनकाहाथ व अंगुली बारम्बार मलकर चटकानेलगी व रोकरअपने प्राणप्यारेसेपूछा हे बेटा सातदिनतकपहाड़ अंगुलीपर उठावनेसे तेराहाथ दुखताहोगा तबनंदलालजी बोले हे मैया गोवर्द्धनपहाड़ अपनी प्रसन्नतासे तुमलोगोंकी रक्षाकरनेवास्ते छायाकिये रहा मैंतो अपनीअंगुलीका थोड़ासा आश्रयदियेथा इसकारण मेराहाथकुछ नहींदुखता व श्रीदामा आदिक ग्वालबालोंने मोहनप्यारेसे गलेमिलकरपूछा हे भाई ऐसे कोमल हाथ पर तुमने किसतरह पहाड़उठाया हमैं बड़ाअचम्भा मालूम होताहै श्यामसुन्दर बोले तुमलोग जो अपनी २ लकुटियासे पहाड़को उचकायेथे इसलिये मुझे उसका कुछबोझा नहीं मालूमदेताथा व सबव्रजबाला मोहनीमूर्त्तिकी महिमादेखकर बहुतप्रसन्न हुई व उसीदिनसे श्रीकृष्णजीका नामगिरिधारी प्रकटहुआ और उससमय नन्दकिशोर ने व्रजवासियों से कहा ॥

दो० अब गिरिकोपूजो बहुरि सबसे कहेउ सुनाय ।

बूड़तते राख्यो ब्रजहि कीन्हीं बहुत सहाय ॥
सो० यहसुनि हर्षबढ़ाय फिरिपूज्यो गिरिको सबन ।
अति हर्षित नँदराय दियो दान बिप्रनबहुत ॥
दो० दूर भयो दुखशोच सब प्रगटो तब आनंद ।
नंद संग घरको चले माखन प्रभु ब्रजचंद ॥

नंदजी श्याम व बलराम व सबब्रजवासी व गायोंसमेत आनन्दपूर्वक अपने २ स्थानपर आये ॥

दो० घरघर ब्रजआनंद सब गावत मंगल चार ।
आये सुरपति जीति हरि गिरिधर नंदकुमार ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

ब्रजवासियों का श्यामसुंदरकी स्तुतिकरना ॥

शुकदेवमुनिनेकहा हे राजन् जबनंदलालजीने गोवर्द्धनपहाड़ उठाकर ऐसीमहिमा अपनीदिखलाई तब सब गोप व ग्वालआश्चर्य मानकर आपसमें कहनेलगे उठावना पहाड़का जिसतरह हाथी कमलकेफूलको उठालेवे मनुष्यका कामनहीं है सो आठवर्ष की अवस्थामें नंदकिशोरने इतना भारीपहाड़ अपनी अँगुलीपरउठाकर सातदिन बराबर खड़ेरहे ये परमेश्वरका अवतार मालूमहोते हैं जिन्होंने महाप्रलयके जलबरसनेसे ब्रजवासियोंका प्राणबचाया इनको हमलोग किसतरह नंदजीकापुत्रकहें लड़का अपने माता व पिताके स्वभावपर उत्पन्नहोताहै सो नंद व यशोदामें ऐसापराक्रम नहींहै जो श्रीकृष्ण ऐसाप्रतापी पुत्रउनसे उत्पन्नहो इससे मालूमहोताहै कि यशोदासे किसीदेवता या दैत्यने भोगकिया होगा इसलिये ऐसा बलवान् व प्रतापीपुत्र उसके उत्पन्नहुआहै नन्दरायके वीर्य्यका यहबालकनहीं मालूमहोता सो नन्द व यशोदाको जातिसे बाहर कियाचाहिये ऐसा विचारकर उपनन्दआदिक सबग्वाल इसबातकी पंचाइत करनेवास्ते नंदजीके स्थानपर गये व उसमें जोलोगबड़ेथे उन्होंनेपहिले नन्द व यशोदासे बहुत स्तुति केशवमूर्त्तिकी करकेकहा हे नन्दराय श्रीकृष्ण परमेश्वरकी कृपासे सर्वदा अमर रहें जोविपत्तिमें हमारीरक्षाकरतेहैं परन्तु तुम्हारे पुत्र ये हमकोनहीं मालूमहोते किसवास्ते कि जब ये बहुतछोटेथे तबइन्होंने पूतनाराक्षसीको दूध पीतेसमयमारडाला व एकबर्षकी अवस्थामें तृणावर्त्तको मारगिराया और जब यशोदाने इनको ऊखलमेंबांधा तब इन्होंने यमलार्ज्जुन दोनों वृक्षजड़से उखाड़डाले व बत्सासुर व बकासुर व अघासुर राक्षसको मारकर कालीनागको यमुनाजल से बाहर निकालदिया व धेनुक व प्रलम्बराक्षस को

मारकर ब्रजवासियोंको अग्निमें जलनेसे बचाया व इतनाभारीपहाड़ कुकरौंधे के समान पृथ्वीपरसे उखाड़कर अपनीअँगुलीपर उठालिया व महाप्रलयके जलसे ब्रजवासियोंकी रक्षा करके इन्द्र का अभिमान तोड़ा व जितनीप्रीति मोहनप्यारे में हमलोगों की रहती है उतनी हमैं अपनेप्राण व बेटी व बेटेमें नहीं यहसब आश्चर्य की बातैं देखने से हम लोगोंको उत्पन्नहोना श्यामसुन्दर का तुम्हारेवीर्य से विश्वास नहीं आता सो तुम सच बतलाओ यशोदाने कौनदेवता या दैत्यके वीर्यसे उनको उत्पन्न किया है जो व ऐसे प्रतापी बलवान् परमेश्वरके अवतारसमान होकर लीलाकरते हैं नहीं तो हमलोग तुम्हैं जाति से बाहर निकालदेवैंगे ॥

दो० मालिक तीनोंलोकके तुम्हरो पुत्र न होय।
जन्म मरण जाको नहीं माखन प्रभु हैं सोय ॥

यहवचन अपने जातिभाइयोंका सुनतेही नन्द व यशोदाने घबराकर कहा सुनो भाइयो श्रीकृष्ण मेराबेटाहै इसमें कुछसन्देह मतसमझो पर जो हाल गर्गजी मथुरासे आनकर कहगये हैं उसमें एकबात मैंने छिपाईथी सो आजकहताहूं गर्गमुनि ने केशव-मूर्त्तिके नामकर्णके समय ऐसाकहाथा कि तुम इन्हैं अपनाजनाहुआ मतसमझो तुम्हारे पिछलेजन्मके तपकरने से परब्रह्मपरमेश्वर अवतारलेकर यहांआये हैं प्रतिदिन अपनी लीला ये तुमको दिखावैंगे ये सबबातैं अब हमको आंखोंसे दिखलाईदेती हैं सो मैं भी विश्वासकरके जानताहूं कि मेराबेटा परमेश्वरका अवतारहै किसवास्ते कि जो जो काम श्यामसुन्दरने किये हैं वह मनुष्य नहीं करनेसक्ता व इन्होंने जन्म व मरणसे रहितहो-कर केवल पृथ्वीकाभारउतारने व हरिभक्तों को सुखदेनेवास्ते अपनी इच्छासे अवतार लियाहै व जन्म व मरण तीनोंलोकके जीवोंका यह अपनेअधीनरखते हैं व गर्गजी ने यहभी कहाथा कि एकबेर इन्होंने वसुदेवजीके यहां जन्मलियाहै इसलिये इनकानाम वासुदेवभी प्रकटहोगा और ये शोच व दुःख गोप ग्वालोंका निवारणकरैंगे जो कोई इन का दर्शनकरैगा या इनकीलीला व नामकीचर्चा आपसमें रखकर इनकेचरणों में ध्यान लगावैगा उसे निस्सन्देह मुक्तिमिलैगी ॥

दो० माखन प्रभु घनश्याम को जो चितधरिहैं नाम।
प्रेम भक्ति के धाम में नित करिहैं बिश्राम ॥

पिछले युगोंमें इनकारंग श्वेत व ललितथा इसबेर श्यामरूपसे इन्होंने अवतारलिया है जब यहबात सुनकर ब्रजवासियों के मनकासन्देह मिटगया तब उन्होंने श्रीकृष्णजी को आदिपुरुष जानकर बड़ीभक्ति व प्रीति से उनकीपूजाकी व बड़ाई भाग्य नन्द व यशोदाकी करनेलगे और आगे जो जो बात श्यामसुन्दरकी बालकलोग कहते थे वह किसीको बिश्वास नहींहोताथा सो उनबातोंको सबोंने सच जाना ॥

दो० जो माखन प्रभु की कथा कहै सुनै दै चित्त ।
प्रेम नेम को पद लहै रहै छेम सों नित्त ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

इन्द्र का श्रीकृष्णजीकी शरणमें आना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित इन्द्रने श्यामसुन्दरके साथ ढिठाईकरने से बहुतलज्जित होकर मनमेंकहा देखो मैंने क्याबुराकामकिया जो पूर्णब्रह्मको मनुष्य समझकर उनसे वैरबढ़ाया अब वहांचलकर उन से अपनाअपराध क्षमाकराऊं जिस में मेराकल्याणहो ऐसाविचारतेही राजाइन्द्र ऋषीश्वरोंको साथलेकर ऐरावतहाथीपरचढ़ा व अपना अपराध क्षमाकरानेवास्ते कामधेनुगौको आगेलियेहुये वृन्दावनको चला जब नन्दलालजी अन्तर्यामी ने जो वनमें गोचराते थे जाना कि इन्द्र अपनाअपराध क्षमाकराने वास्ते देवतोंसमेत मेरेपास आवताहै तब ग्वालबालोंसे अलगहोकर एकओर बनमें जाबैठे जब राजाइन्द्रने वहांआनकर मुरलीमनोहर को दूरसे बैठे देखा तब हाथी पर से उतरपड़ा और देवतोंको साथलिये व कामधेनुको आगेकिये नंगेपावँ गलेमें डुपट्टाडाले व दांतों में तिनुकादाबे साष्टांग दण्डवत्करता व कांपताहुआ श्रीवृन्दावनविहारी के चरणों पर जाकर गिरपड़ा व बड़ीअधीनता से रोकर विनयकिया हे दीनानाथ निरंजन व निरंकार मेरीहजारोंदण्डवत् आपकोपहुँचैं मैंने अपनीअज्ञानतासे आपको मनुष्यसमझकर तुम्हारीपरीक्षालीथी सो अपने कियेको पहुँचा जिसतरह अज्ञानबालक शीशे में अपनी परिछाहींदेखकर उसे पकड़नाचाहताहै व धरनहींसक्ता उसी तरह जोकोई तुम्हाराभेद जानाचाहै उसे अज्ञानबालकके समान समझनाचाहिये वहीहाल मेराहुआ जहांब्रह्मा व महादेवआदिक देवता व ऋषीश्वर तुम्हारे भेद व बड़ाई को पहुँचने नहींसक्ते वहां मेरी क्यासामर्थ्यहै जो आपकीमहिमा जाननेसकूं मैंने राज्य व धनके अभिमानसे अन्धाहोकर व्रजवासियों का प्राण मारनेवास्ते महाप्रलयकापानी व्रजमण्डलपर बरसायाथा सो आपने गोवर्द्धनपहाड़ उठाकर उनलोगोंकी रक्षाकी व मेरेअहंकारको तोड़दिया मैं अपने कर्त्तबसे बहुतलज्जितहोकर अपनाअपराध क्षमाकरानेवास्ते कामधेनुगौकेपीछे २ तुम्हारीशरणआयाहूं सो हे व्रजनाथ मुझअज्ञानकाअपराध दयाकरके क्षमाकीजिये किसवास्ते कि आप सबकेईश्वर व गुरु व परमात्माहैं सिवायतुम्हारे दूसराकोई मालिक तीनोंलोक में नहींहै व ब्रह्मा व महादेवभी तुम्हारीदीहुई बड़ाईपाकर दिनरात आपके चरणों का ध्यान अपने हृदयमें रखते हैं व आप सबजगत्के पिता व उत्पन्न व पालनकरनेवाले होकर लक्ष्मीजी तुम्हारेचरणोंकी दासी हैं और आपने वास्ते भारउतारने पृथ्वी व रक्षा करने हरिभक्त व मारनेदुष्ट व अधर्मियोंके अपनीइच्छासे अवतारलियाहै और जब जब पृथ्वी अधर्मीलोगोंके पापकरने में दुःखीहोती है तबतब आप सगुण अवतारलेकर पृथ्वी

का भारउतारते हैं और मैंभी आपकीकृपा व दयासे देवलोकका राजाहुआहूं परतुम्हारे भेदको नहीं जानता दूसरे की क्यासामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा जाननेसके और यहअपराधमेरा बड़ा दण्डकरनेयोग्यहै पर आप ऐसे दीनदयालुहैं कि जो मनुष्य तुम्हारी शरण में आया वह कैसाही अपराध कियेहो क्षमा करदेतेहो व दूसरे ऋषीश्वरों का अपराध करनेवाला अपने दण्डको पहुँचता है मुझे इस अपराधने भी तप व जप का फल दिया जिसके कारण तुम्हारे चरणों का दर्शन पाया दया करके मेरा अपराध क्षमा कीजिये ॥

सो० कहत बिहारी वार तुमगति अगम अगाध प्रभु ।
मैं भूल्यों संसार जान्यों व्रजअवतार नहिं ॥
दो० माखनप्रभु सन्मुख भये सदा सबै सुखहोय ।
जो यह सुखसे है विमुख भवदुख पावै सोय ॥

व कामधेनुगोने मुरलीमनोहरके सामने हाथजोड़कर विनयकिया हे कमलनयन मैं ब्रह्माकी भेजीहुई तुम्हारे पासआईहूं छोटोंका अपराध बड़ेलोग सदासे क्षमाकरते आये हैं सो आप दीनदयालु कृपालुहोकर इन्द्रका अपराध जो तुम्हारी शरणआया है क्षमा करदीजिये व तीनोंलोकमें किसे सामर्थ्य है जो तुम्हारेभेदको पहुँचनेसकै और आप सर्व गौ व जीवों के मालिक हैं इसलिये मैं अपनेदूध से तुम्हें स्नानकराने आई हूं व ऐरावतहाथी अपनी शुण्डमें आकाश गंगाका जल भरकर तुम्हारे स्नान कराने वास्ते लायाहै आज्ञाहो तो स्नानकरावै जब राजाइन्द्र व कामधेनुने बड़ी आधीनता से यह स्तुति गिरिधरमहाराज की की तब कृपानिधानने दयालुहोकर कहा हे इन्द्रतू कामधेनु गौको अपनेआगे लेकर हमारी शरणआया इसलिये मैंने तेराअपराध क्षमाकिया सुनो अभिमान करने से धर्म छूटकर शरीरमें अज्ञान आवताहै व मूर्खताई करने से पीछे सिवायदुःख के सुख नहींमिलता व मनुष्यलोग थोड़ासा भी हाकिमी व धनपावने से अपने को भूलजाते हैं तुम तौ अर्बखर्बसे अधिकधन व इन्द्रासनकाराज्य रखतेहो तुमने ऐसा किया तो कौनबड़ीबातहै और मैंने दयाकीराह राज्य व धनका अभिमान तोड़ने वास्ते तेरायज्ञ बन्दकराके गोवर्द्धनपहाड़को पुजवायाथा जिसपर मेरीकृपा होती है उस का अहङ्कार मैं तोड़देताहूं ॥

दो० व्याकुल देखि सुरेश अति दीनबन्धु यदुराय ।
अभयकियोकरमाथधरि भुजगहि लियोउठाय ॥
सो० लीनो हृदय लगाय देखि दीनता इन्द्रकी ।
शिर नहिं सकत उठाय बारबार परसत चरण ॥

जब केशवमूर्त्तिने इन्द्रका मस्तक अपने चरणपरसे उठाकर उसको बहुतधीर्य दिया तब इन्द्रने प्रसन्नहोकर बिनयकिया ॥

दो० धन्य बड़ाई नाथ की हौं अनाथ अ्रमसाथ ।
कमलहाथ प्रभुमाथधरि कीन्होंमोहिं सनाथ ॥

फिर कामधेनु गायने अपने दूध व ऐरावतने गंगाजल से श्रीकृष्णजी को स्नान कराया व राजाइन्द्रने चरण उनकाधोकर चरणामृतलिया व पूजा उनकी धूप दीप नैवेद्य आदिकसे विधिपूर्वककी व कामधेनु ने मनहरणप्यारेको गोविंदनाम पुकारकर चौदहों भुवनका राजा कहा उससमय देवतों ने श्यामसुन्दर पर फूल बरसाये व नारदमुनि आदिक ऋषीश्वरों ने प्रसन्नहोकर स्तुतिकी व अप्सरोंने अपने २ विमानों पर नाच दिखलाकर गन्धर्वोंने गाना सुनाया व सब पृथ्वीमें फूल लगकर यमुनाजल प्रसन्नता से लहरानेलगा उससमय तीनोंलोकमें इसतरह का आनन्द होगया जिसतरह श्याम-सुन्दरके अवतार लेनेके समय चौदहों भुवनमें खुशीहुई थी व पूजाकरने उपरांत जब इन्द्र बैकुण्ठनाथ के सामने हाथजोड़कर खड़ाहुआ तब गिरिधारी महाराजने इन्द्र से कहा तुम कामधेनुगौ समेत अपने स्थानपर जाव फिर कभी मेरीलीला व कामों में अपना प्रवेशमतकरना सो इन्द्र व कामधेनु व ऐरावतहाथी व देवता व ऋषीश्वर आ-दिक सबलोग केशवमूर्त्तिको दण्डवत्करके अपनेस्थानपर चलेगये ॥

दो० माखन प्रभुके अंगपर वारत कोटि अनंग ।
सहसनयन देखतचले कामधेनु के संग ॥

जब बृन्दाबनविहारी इन्द्रको बिदाकरके सन्ध्यासमय ग्वालवाल व गौवों समेत मुरलीबजाते व मधुर २ गावतेहुये अपने घरआये तब नन्द व यशोदा व गोपियों ने मोहनीमूर्त्ति की छविदेखकर अपनी आंखैं ठण्ढी कीं हे राजन् यह गोविन्द अभिषेक कथा सुननेसे अर्थ धर्म काम मोक्ष चारों पदार्थ मिलतेहैं और ग्वालवालों को इन्द्र के आनेका हाल कुछनहीं मालूमहुआ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका वरुणलोकमें जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् कार्त्तिकसुदी दशमीको नन्दजीने सन्ध्याकरके एका-दशीव्रत निर्जलरक्खा सो दिनभर पूजा व भजनमें बिताकर रातको जागरणकिया दूसरेदिन केवल एकघड़ी द्वादशी थी इसलिये पारणकरना व्रतका द्वादशीमें अवश्य जानकर पहररातिरहे नन्दजी उठे व उसीसमय अकेले यमुनास्नान करने चलेगये

जबयमुनाजलमें स्नानकरनेपैठे तब जलकी रखवारी करनेवालोंने जाकर बरुणदेवता से कहा महाराज एकमनुष्य यमुनाजलमें नहाता है यहबात सुनतेही बरुण ने आज्ञा दी उसेजाकर पकड़लावो सो दूतलोग नन्दजीको यमुनाजलमें जपकरतेहुये नागफांस में बांधकर लेगये उससमय नन्दजीने श्याम व बलरामका नामलेकर बहुतपुकारा पर उन्होंने कुछनहीं माना ॥

दो० जलके नीचे ठांव है जहां बरुणकोवास।
माखनप्रभुके तातको लैराख्यो तिनपास ॥

जबनंदजी बरुणदेवताके पासपहुंचे तब बरुणउनको वैकुण्ठनाथकापितापहिचान· तेही यहसमझकर बहुतप्रसन्नहुआ कि श्रीकृष्णजी अंतर्यामी अपने पिता को लेनेवास्ते अवश्य यहांआवेंगे तो इसीवहाने उनकादर्शन मिलैगा ऐसाविचारकर बरुणदेवताने नंदजीको अपनेमहलमें लेजाकर सन्मानपूर्वक बैठाला व एक सिंहासन बहुतउत्तम श्यामसुंदर के वास्ते बिछाकर उनकेआनेकी आशा देखनेलगा व बरुणकी स्त्रियोंने नंद रायकी स्तुतिकरकेकहा हे नंदजी तुम्हाराबड़ाभाग्य है जो सच्चिदानंद परमेश्वर तुम्हारे पुत्रकहलाते हैं यहां तो नंदरायका आदरभाव देवकन्याकरतीथीं और वहांजब नंदजी स्नानकरके घरनहींआये तब यशोदा ने घबराकर ग्वालोंको उनकी सुधि लेनेवास्ते यमुनाकिनारे भेजा जबग्वालोंने उनकोवहां न देखकर धोती व झारी उनकीउठालाये तब यशोदा रोकर कहनेलगी रातको नहाते समय कोई घड़ियालआदिक उनको खागयाहोगा ॥

दो० अतिव्याकुल यशुमतिभई उठी रोय अकुलाय।
सुनिधाये ब्रजलोगसब नंदहि खोजतजाय ॥
सो० यमुनातट पुनिगांव नंदनंद टेरत सबै।
ढूंढ़िफिरे सबठांव भये बिकल ब्रजलोगसब ॥

हे राजन् जबग्वालोंके ढूंढ़ने परभी नन्दजीका पता कहीं न लगा तब यशोदा व रोहणीआदिक अतिविलापसे रोनेलगीं उससमय श्यामसुंदरने यशोदा से कहा अय मैया तू मत रो मैं अभीजाकर नन्दबाबाको ढूंढ़लाता हूं जब उनके कहने से यशोदा आदिक को कुछ धीर्य्यहुआ और बैकुण्ठनाथ अन्तर्य्यामी ने जाना कि नंदजीको बरुण देवता के दूत पकड़लेगये हैं और बरुण मेरेदर्शनोंकी इच्छा से नन्दजीको बैठाले हैं तब बरुणलोक में चलेगये उससमय मुखारविंद उनका सहस्र सूर्य्य के समान चमकनेलगा जब बरुणदेवता ने श्रीकृष्णजीको आतेदेखा तब देवता व ऋषीश्वरों समेत दण्डवत् करताहुआ आगे से गया और राहमें पीताम्बर बिछावताहुआ बड़ेआदरभावसे अपनेघर

लिवालाया व रत्नजड़ित सिंहासन पर बैठाकर चरण उनका धोया व चरणामृतलेकर विधिपूर्वक उनका पूजनकिया ॥

दो० धूप दीप नैवेद्य करि प्रभुपर पुष्पचढ़ाय ।
करी आरती प्रेमसों घंटा शंख बजाय ॥

सो० प्रभुपद नायो माथ करि प्रदक्षिणादण्डवत ।
तुमत्रिभुवनकेनाथ जोरिहाथ अस्तुति करत ॥

हे महाप्रभु आज मेराजन्मसुफलहुआ जो आपने दयाकीराह कृपाकरके अपने चरणोंका दर्शनदिया व इसीलाभवास्ते मैं नन्दजीको अपनेयहां बैठालेरहा नहीं तो उसीक्षण उनको स्थानपरपहुँचादेता हमलोग आपको तीनोंलोकका पिताजानकर तुम्हाराबाप किसीकोनहींसमझते मेरेदूत नन्दजीको नहातेसमय अनजानमें यहांपकड़ लायेथे सो उन्होंनेदण्डपानेयोग्य अपराधकिया पर मैंने उनका बहुत गुणमाना जिस कारण आपकादर्शन मुझेप्राप्तहुआ मेरीदण्डवत् आप व नंदरायको पहुँचे ॥

सो० मैं कीन्हों अपराध सो प्रभुउरनहिं लाइये ।
तुमहो सिंधुअगाध क्षमाकरौ निजजानिजन ॥

व बरुणकी स्त्रियों ने दण्डवत् करने उपरान्त हाथ जोड़कर मुरलीमनोहरसे कहा नन्द व यशोदा व ब्रजवासियों का बड़ाभाग्यहै जिनके यहां परब्रह्मपरमेश्वर लीला करते हैं ब्रज गोकुलकी बड़ाई कोई वर्णन नहीं करसक्ता फिर बरुणदेवता नन्दरायको श्यामसुन्दरके पास लेआये तब वह उन्हें देखतेही प्रसन्न होगये ॥

सो० हर्षि उठे नँदराय देखि श्यामको शिशुवदन ।
लखि उनकी प्रभुताय रहे मुदित चकित हिये ॥

जब नन्दजी ने मोहनप्यारे की महिमा इसतरह पर देखी कि देवतालोग अपना शिर उनके चरणोंपर धरके स्तुति करतेहैं तब वह मनमें कहनेलगे मेरा बड़ाभाग्यथा जो बैकुण्ठनाथ ने मेरे यहां अवतार लिया जब बरुणदेवता ने बहुतसे मणि व रत्नादिक श्यामसुन्दर व नन्दरायको भेटदेकर अपराध अपना क्षमाकराया तब केशवमूर्त्ति नंदजी समेत अपने स्थानपर आये उससमय यशोदा आदिक ब्रजवासियों को बड़ा आनन्द प्राप्तहुआ और यशोदाने नन्दरायसे कहा तुम मेरे बर्जनेपरभी रातको नहाने चलेगये थे सो परमेश्वरने आज तुम्हारा प्राणबचाया नन्दराय बोले अरी बावरी तू क्या पछताती है मैं त्रिलोकीनाथका पिताहूं मुझे कोई नहीं दुःख देसक्ता फिर नन्दजी ने बहुतसा दान व दक्षिणादिया व यशोदाने अपने जातिभाइयों में मिठाई बटवाकर खुशीमनाया

जब उपनन्दादिकने भेंट करनेवास्ते आनकर नन्दरायसेपूछा तुमको कौन पकड़लेगया था तब नन्दजी बड़े हर्ष से बोले मुझे वरुणदेवताके दूत रातको नहातेसमय पकड़लेगये थे सो मोहनप्यारे के पहुँचतेही सब देवतों ने चरणोदक लेकर उनका पूजनकिया बड़े भाग्यसे परब्रह्मपरमेश्वरने मेरे घर अवतारलियाहै जिनके प्रतापसे देवतोंका दर्शन मैंने पाकर रत्नादिक भेंट उनसेलिया जो बात गर्गमुनि कहिगयेथे वह सब आंखोंसेदेखा ॥

दो॰ नन्द कहत हरि नेहमें हमलेहैं वह धाम।
जन्म मरण जहँ भय नहीं रहत सदा बिश्राम ॥

यह सुनकर ब्रजवासियोंने कहा हे नन्दराय हमलोग उसीदिन श्रीकृष्णजी को परमेश्वरका अवतार समझे थे जिसदिन उन्होंने गोवर्द्धनपहाड़ उठाकर ब्रजमण्डलकी रक्षाकी थी हमारे तुम्हारे पिछले जन्मके पुण्य सहाय हुये जो सच्चिदानन्द परमेश्वर ने तुम्हारे यहां अवतारलिया ऐसा कहकर वृन्दाबनवासी केशवमूर्त्तिके पास चलेगये व हाथ जोड़कर विनयकिया हे महाप्रभु आजतक हमलोग तुम्हारी महिमा न जानकर अपने अज्ञानसे तुमको नन्दमहरका पुत्र समझते थे अब हमें विश्वासहुआ कि आप आदिपुरुष सब जगत्के उत्पन्न करने व सुखदेने व दुःख हरनेवाले त्रिलोकीनाथ हैं इसीतरह बहुत स्तुतिकरके उन्होंने मनमें विचारा जिसतरह मुरलीमनोहरने अपने पिताको वरुणलोक दिखलाया उसीतरह हमलोगोंको भी बैकुण्ठका दर्शन कराते तो अच्छाहोता नन्दकुमार अन्तर्यामी ने उनकी यह इच्छा जानकर रातको जब सब ब्रज-वासी सोये तब लोगोंपर अपनी माया ऐसी फैलादी कि उन्हें दिव्यदृष्टि होकर स्वप्ने में इसतरह पर बैकुण्ठका दर्शन हुआ कि वहां पृथ्वी सोनेकीहोकर सब स्थान रत्नजड़ित बने हैं व बहुत उत्तम २ तड़ाग व बागआदिक बने होकर सब स्त्री व पुरुष महासुंदर भूषण व वस्त्र संयुक्त चतुर्भुजी दिखलाई दिये व एक बहुत बड़े उत्तम स्थानमें रत्नज-ड़ित सिंहासन पर श्यामसुन्दरको चतुर्भुजी स्वरूपसे लक्ष्मीजीसमेत बैठे व पार्षदोंको चारोंओर खड़े व अप्सरोंको उनकेसामने नाचते व गन्धर्वों को गावते व वेदोंको अपना रूप धारणकिये व तेंतीसकरोड़ देवतोंको उनके सन्मुख हाथ जोड़कर स्तुति करतेहुये देखा यह सुख बैकुण्ठका देखकर ब्रजवासियोंनेचाहा कि हमलोग मोहनप्यारेके सिंहा-सनकेपास जाकर उनसे कुछ बातेंकरें पर किसी ने उनको वहांतक जाने नहीं दिया तब ब्रजवासियोंनें मनमेंकहा इस बैकुण्ठसे हमारा वृन्दाबन बहुत अच्छा स्थानहै जहां दिन रात ब्रजनाथजीके साथ रहिकर उनसे हँसते खेलते हैं यहां तो उनके सिंहासनतक भी कोई हमको जाने नहीं देता ॥

दो॰ अकुलाने दृग सबनके देखनको तेहिकाल।
मोरपंख माथे धरे मुरलीधर गोपाल ॥

सो० ब्रजबासिनको ध्यान नटवरबेष गोपालको ।
अमितरूप भगवान तदपि उपासन रीतियह ॥

हे राजन् जैसे ब्रजबासियों ने ध्यान नटवररूप मोहनप्यारे का किया वैसे उनकी निद्रा खुलगई तब वहलोग अपने २ घर से उठकर केशवमूर्त्ति के पास चले गये व बैकुंठनाथका दर्शनकरने से उनकेहृदयमें ज्ञानउत्पन्नहुआ तब सबब्रजवासी नन्दकिशोर के चरणोंपर गिरपड़े व हाथजोड़कर इसतरहपर उनकी स्तुतिकरनेलगे हे दीनानाथ तुम्हारीमहिमा अपरम्पारहै हमलोग ऐसीसामर्थ्य नहींरखते जो उसकी बड़ाई करसकैं परन्तु तुम्हारीकृपासे आजहमको इतना मालूमहुआ कि आप परब्रह्मपरमेश्वरहैं व पृथ्वी का भारउतारनेवास्ते तुमने जन्मलिया यहबातसुनतेही श्यामसुन्दरने फिर अपनीमाया उनपर ऐसीफैलादी कि वहज्ञान भूलकर उन्होंने इसबातको स्वप्नकेसमान समझा और सबब्रजवासी प्रसन्नहोकर अपने २ घर चलेआये ॥

दो० श्रीबैकुण्ठ दिखायके माखन प्रभु ब्रजराय ।
निज माया विस्तारके दीन्हें गोप भुलाय ॥

व नन्दजीनेभी बरुणलोकमें जानेकाहाल स्वप्नवत् समझकर केशवमूर्त्तिको अपना पुत्र जाना वहसब ब्रह्मज्ञान उनको भूलगया ॥

दो० करत चरित्र बिचित्र प्रभु ब्रजबासिन के माहिं ।
लखि लखि शिवब्रह्मादि सुर मुनिजनमनहिंसिहाहिं ॥

सो० अतिआनँद ब्रजलोग हरिके नित नव चरित लखि ।
सबको सबसुख योग ब्रजबासी प्रभु नन्दसुत ॥

हे राजन् श्यामसुन्दर अंतर्यामी ने गोपियों का सच्चाप्रेम देखकर श्रीदामाआदिक अपने सखों से कहा सबब्रजबाला सोलहोंशृंगारकिये वृन्दावनकी राहसे मथुरामें गोरस बेंचनेजाती हैं सो बनमें रोंककर उनसे दूधदहीका दान लेनाचाहिये ॥

सो० अब इन संग बिहार करो दान दधि लाइकै ।
यह मन कियोबिचार हरि ब्रजमोहन लाड़िले ॥

जब यहसम्मत ग्वालबालों ने प्रसन्नकिया तब नन्दलालजी श्रीदामाआदिक पांच हजार सखासमेत प्रातःसमय बीचबनके जाकर वृक्षोंकीओटमें छिपरहे और उसीसमय सबब्रजबाला सोलहोंशृंगारकिये मथुराको गोरसबेचने चलीं ॥

दो० हँसत परस्पर आप में चली जायँ सब ओर ।

पाइ घात में सखन तब घेर लई चहुँ ओर ॥

सो० देखि अचानकभीर चकितरहीं चहुँदिशिचितै ।
सहमीं कछुक शरीर कितते आये ग्वाल सब ॥

उससमय नंदकुमारने ब्रजवालों से कहा तुमलोग नित्य गोरसवेंचने जातीहो सो हमारादान देदेव तब जानेपावोगी यहवचनसुनकर गोपियांबोलीं दण्डलेना राजोंका धर्म है हम और तुम दोनों राजाकंसकी प्रजा हैं तुमक्यों हमसे दण्डमांगते हो नंदजी तुम्हारे पिताने आजतक कभी ऐसीबात नहींकी कलहकीवातहै तुम गोरसहमारा चुराकर खातेथे और जबकोई पकड़ताथा तब रोकर भागजातेथे आज बनमें स्त्रियोंको घेर कर राहलूटतेहो यहबात अच्छीनहीं है ॥

चौ० चोरी करि नहिं पेट अघायो । अब बनमें दधिदान लगायो ॥

यहसुनकर केशवमूर्त्तिनेकहा तुमलोगोंने लड़कपनमें हमको बहुतखिझायाथा अब हम सयानेहुये बिना दण्डलिये नहींजानेदेवेंगे ॥

दो० तब तो हम लड़काहते सही बात अनजान ।
अब सूधे कहुँ समुझिके छांड़ि देहु अभिमान ॥

सो० हममांगत दधिदान तुम उलटी पलटी कहत ।
करत नन्दकी आन बिना दिये नहिं जाइयो ॥

यहसुनकर गोपियोंनेकहा कदाचित् तुम दही व दूधके भूखेहो तो थोड़ा २ हमसे लेकर खालेव पर दान हमसे नहीं दियाजायगा छोटे मुख बड़ीबातकहना अच्छानहीं होता अभीहमलोग राजाकंसके पासजाकर यहहालकहैं तो वहतुमको पकड़कर दण्डदे हम कौनसा लवँग व इलायची लादेहैं जो तुमको दण्डदेवें ॥

सो० लेव दही बलिजाउँ हम को होत अबेर अब ।
लिये दान को नाउँ एक बूँद नहिं पाइहौ ॥

यहवचन सुनकर मोहनप्यारे बोले तुमलोग राजा कंससे मुझे क्याडरावती हो मैं उसको कुछनहींसमझता सीधीतरह दानदेवगी तो अच्छाहै नहींतो सबदूध व दहीतुम्हारा छीनलूंगा तो रोतीहुई यशोदापासजावोगी बहुतदिनों तक तुमने चोरी से दानहमारा पचायाहै आज सबदिनकी कसरलेकर तुम्हें जानेदूंगा ॥

दो० दानलगत यहँ श्यामको सो अब देव चुकाय ।
तब मैं देहौं जान सब मोको नंद दुहाय ॥

सो० दधि लेजात प्रभात आवत हौ निशि बेंचिके ।
दानमारि नितजात भलीकरत यह बात नाहिं ॥

यहबात सुनकर गोपियांबोलीं जो तुम्हारेबड़ोंने कभीनहींकिया वह करनेलगे तो किसतरह हमलोगोंका यहांरहकर निर्वाहहोगा ॥

दो० हमैं कहत हौ चोट्टी आप भये हौ साह ।
बड़े भये चोरी करत अब लूटत हौ राह ॥

यहबात सुनकर मोहनप्यारेबोले तुम्हारेधमकाने से मैं कुछनहींडरता तुम वृन्दावन छोड़कर चलीजावगी तो क्याहोगा मैं अपनादण्ड छोड़दूं ॥

दो० गांव हमारो छांड़िकै बसियो का पुर माहिं ।
ऐसो को तिहुँलोक मैं जो मेरे बश नाहिं ॥

हे राजन् इसीतरह कुछदेरतक सबव्रजबाला मोहनप्यारेसे प्रकटमें झगड़ा करतीरहीं पर अन्तःकरणसे उनकी छबिदेखकर प्रसन्नहोतीथीं जब केशवमूर्त्तिने सब गोपियोंका गोरसछीनकर ग्वालबालोंसमेत खालिया व बानरोंको खिलाकर शेषपृथ्वीपर गिरादिया व मटुकीतोड़कर वस्त्रउनका धक्काधुक्कीकरके फाड़डाला तब सबगोपियोंने यशोदाकेपास जाके अपने फटेहुयेवस्त्र दिखलाकरकहा तुमने अपनेबेटेको अच्छाउद्यम सिखलायाहै कि वह ग्वालबालोंको साथलियेहुये बनमें सबगोपियोंको रोककर दही व दूधका दान मांगते हैं हमलोगोंने नईबातसमझकर दण्डनहींदिया इसीवास्ते सबगोरस हमारा छीन-लिया व अञ्चलपकड़कर वस्त्रहमारा फाड़डाला आजतक तुम्हारेकुलमें कोई ऐसानहीं हुआथा जिसने दही व दूधका दण्डलियाहो ॥

दो० सुनत ग्वालिनिनके वचन बोली यशुमतिमात ।
मैं जानी तुम सबन के उर अन्तर की बात ॥

तुमलोग मोहनप्यारेका पीछा न छोड़कर उसे पापकीदृष्टिसे देखतीहो व अपनेहाथ कपड़ाफाड़कर झूठाउलहना मुझे देनेआवतीहो ॥

दो० धन्यधन्य तुम कहत हो मोको आवत लाज ।
माखन मांगत रोय हरि दोष देत बिन काज ॥

यहबात सुनकर व्रजबालोंनेकहा यशोदामाता तुम्हें ऐसाउचितनहीं है जो बिनासमझे हमैं दोषलगावतीहौ दशगौ अधिकरखने से तुम कुछबढ़नहींगईं हमतुम जातिमेंबराबर

हैं यहचलन तुम्हाराबेटाकरैगा तो हम यहगांव छोड़कर निकलजावैंगी मोहनप्यारेका हाल तुम नहींजानतीं जब बनमें चलकरदेखो तब तुम्हैं मालूमहो ॥

सो० सुनो महरि तुम बात हरि सीखे टोना कछू ।
बनहिं तरुण ह्वै जात बालक ह्वै आवत घरै ॥

यशोदाने उनको उत्तरदिया तुमलोग गांवछोड़ने के वास्ते मुझे क्याधमकातीहो जहां तुम्हारा मनचाहै वहां जाकर बसो तुम्हारे वास्ते मैं अपना बेटा नहीं निकाल दऊंगी ॥

दो० कहा करौं तुम आय सब कहतीं अटपट बात ।
मोको यह भावै नहीं तरुणिन इहै स्वहात ॥

यह बात सुनतेही व्रजवाला लज्जित होकर अपने २ घर चलीआईं और वृंदाबन में यह चर्चा घर घर फैलगई कि नन्दकुमारने गोरसका दण्ड गोपियों पर लगाया है यह सुनतेही सब व्रजवालों को यह इच्छाहुई कि हमलोगभी दही दूध बेचने के वास्ते जावैं तो नन्दकिशोरकी छवि वनमें देखकर अपनी २ आंखैं ठण्ढीकरैं जब दूसरे दिन राधा आदिक सोलहहजार गोपियां गोरस बेचने मथुराको चलीं तब मोहनप्यारे ने सखासमेत जो वृक्षों पर चढ़ेहुये छिपे थे बनमें व्रजवालों को घेरकर कहा आज दान देकर जानेपावोगी ॥

दो० हँसिबोली राधा कुँवरि कहा बनिज हम पास ।
कहो श्यामसो नाम धरि देहिं दान हम तास ॥

यह बचन अपनी प्यारीका सुनकर नन्दलालजी बोले आज तुम्हारे यौवनका दान लेऊँगा हे राजन् जब इसीतरह कुछ बेरतक सब व्रजवाला मोहनप्यारे से झगड़ा करतीरहीं तब श्यामसुन्दर ने ऐसी माया अपनी उनपर फैलादी कि सब गोपियां काम रूप मदमें मतवाली होगईं ॥

दो० ब्याकुल ह्वै सब मदनमें नैनमूँदि धरि ध्यान ।
कहत कान्ह अब शरण हम लीजै सर्बस दान ॥
सो० ऐसो कहि मनमाहिं देह दशा भूलीं सबै ।
लेहु श्याम बलिजाहिं यह धन तुम सब आपनो ॥

यह दशा गोपियोंकी देखकर बैकुण्ठनाथ भक्तहितकारी ने उन लोगोंकी इच्छापूर्ण करने वास्ते अनेकरूप अपने जो किसीको दिखलाई न देवैं धारण करलिये व सब व्रजवालों से ध्यानमें भेंटकरके कामरूपी रोग उनका छुड़ादिया तब उन्हों ने हँसकर

कहा हे प्राणप्यारे तुमने हमारे यौवनका दानभी लिया अब आज्ञादेव तो अपनेअपने घरजावें यह बचन सुनकर केशवमूर्त्ति बोले तुम्हारे यौवनका दान मैंने पाया दही व दूधका दण्ड चुकादेव तो अपने २ घर जाव यह बचन सुनतेही ब्रजबालों ने प्रसन्न होकर दही व दूध अपना श्यामसुन्दरको ग्वालबालों समेत खिलादिया पर मोहनप्यारे की मायासे बर्त्तन उनका ज्योंकात्यों भरारहा जिससमय गोपियां श्यामसुन्दरको ग्वाल बालों समेत बैठाकर दही व दूध खिलाती थीं उससमय देवतालोग अपने २ बिमानों परसे यह आनन्द देखकर ब्रजबालों की बड़ाई करके कहते थे कि धन्यभाग ब्रजकी स्त्रियोंका है जिनसे परब्रह्मपरमेश्वर त्रिलोकीनाथ गोरस मांगकर खाते हैं व गोपियां उनकी सेवाकरके जन्म अपना स्वार्थ करती हैं दही खातीसमय मनहरणप्यारे बोले मैंने सबके गोरसका स्वादपाया पर राधाप्यारीका दही नहींचीखा यह बचन सुनतेही राधा ने हँसकर अपना दही अपने हाथसे नन्दकिशोरके मुखमें खिलादिया ॥

सो० प्यारी को दधिखाय बोले यों मोहन बिहँसि ।
मधुरे कहो सुनाय मीठो है यह सबनतें ॥

हे राजन् गोरस खाने उपरान्त मोहनीमूर्त्तिने अपनी चितवनि व मुसकानसे उनका मन हरलिया और बोले आज अपना दान लेकर हम तुमसे बहुत प्रसन्न हुयेइसलिये अब तुमसे घाट बाट पर कोई रोक नहीं करैगा अब अपने २ घरजाव बिलम्ब होने से तुम्हारे घरवाले चिन्ताकरते होंगे यह बचन सुनकर गोपियों ने कहा हे मोहनप्यारे दान मांगती समय हमने तुमको कठोर बचन कहा है उसका अपराध क्षमा कीजिये और तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति देखे बिना हमैं चैन नहीं पड़ती घर किसतरह जावैं तुम्हारी प्रीति बिना धन व परिवार सब बृथाहै यह बात सुनकर नन्दकिशोर बोले मैं तुम्हारा ऐसा प्रेम देखकर एकक्षण तुमसे बिलग नहीं रहता व तुम्हारा कठोर बचन मुझे बुरा नहीं मालूम होता मैं तुमलोगों को प्रसन्न करने वास्ते बैकुण्ठ छोड़कर तुम्हारा दुर्वचन अपनी इच्छासे सुनताहूं तुमने अपना मन देकर मुझे पायाहै जब अपना चित्त मुझसे फेरलेवगी तब मैं तुमसे अलग होजाऊंगा ॥

दो० तुम कारण बैकुण्ठ तजि प्रकटतहौं ब्रजआय ।
बृन्दाबन तुम्हरो मिलन यह न बिसारो जाय ॥

ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालों को साथ लियेहुये दूसरीओर बनमें चलेगये व सब ब्रजबाला अपने अपने घर न जाकर बौरहोंकी तरह बृक्षों से पूछने लगीं तुम गोरस मोललेवगे व कभी दही व दूधके बदले मोहनप्यारे व श्रीकृष्ण व नन्दलालका नाम बेचनेवास्ते पुकारकर कहती थीं ॥

दो० लीजे गोरसदान हरि तुम कहँ रहे छिपाय ।
डरन तुम्हारे जात नहिं तुम दधिलेत छिनाय ॥

सो० लेहु आपनो दान तुम रिसकरि उठिधाइहौ ।
हमैं न देइहौ जान बनमें हम ठाढ़ीं सबै ॥

दो० श्याम बिना यह कोकरै लायो दधिको दान ।
तनसुधि भूली तबहिंसे बांकी मृदुमुसुकान ॥

सो० मनहरिलीन्हो श्याम ताबिन बनिये कौनबिधि ।
ऐसे कहि सब बाम घरको चलन बिचारहीं ॥

हे राजन् इसीतरह बिपरीत बातें कहतीहुई गोपियां अपने २ घर पहुँचीं पर रूप श्यामसुन्दरका आठोंपहर उनके हृदय व आंखोंमें बना रहताथा यह दशा देखकर घर वाले बहुत समझाते थे पर कहना किसीका उन्हें अच्छा नहीं लगताथा ॥

दो० प्रकट्यो पूरण नेहउर जित देख्यो उतश्याम ।
समझाये समझै नहीं सिखदे थाक्यो ग्राम ॥
ऐसो सिखवत मातु पितु सो न करत कछुआन ।
लागतहैं तिनके बचन उरमें बाण समान ॥

सो० उन्हें कहत मनमाहिं धिकधिक उनकी बुद्धिको ।
जिन्हैं श्याम प्रियनाहिं तिन्हैं बने त्यागे भले ॥

हे राजन् श्यामसुन्दर राधाप्यारी पर लक्ष्मीजीका अवतार होने से अतिप्रीति रखते थे इसलिये राधिकाभी उनके ऊपर अधिक मोहित रहिकर जब दूसरे दिन गांवमें दही बेचने गई तब मट्की शिरपर लिये चौगिर्द मकान नन्दजी के घूमकर बौरहोंके समान लोगोंसे पूछनेलगी मेरा चित्त चुरानेवाला नन्दकुमार कहां बसताहै मैं उसे बड़ीदूरसे ढूंढ़नेवास्ते आईहूं उसका घर इसगांवमें है या नहीं ॥

दो० जिन्हें कहत मोहिं नन्दघर कहां सो देव बताय ।
जहां बसत वह सांवरो मोहन कुँवर कन्हाय ॥

जब राधिका लज्जा छोड़कर दही के बदले नन्दकुमार व नन्दकिशोर व श्रीकृष्ण व श्यामसुन्दरका नाम पुकारने लगी तब यह दशा उसकी देखकर गोपियों ने पूंछा हे राधिका तू क्या बेचती है राधा बोली ॥

दो० मोहन मूरति श्यामकी मोतन रही समाय।
ज्यों मेहँदी के पातमें लाली लखी न जाय॥

यह सुनकर एक सखी ने कि वहभी केशवमूर्त्तिकी चाहना रखती थी कहा अय राधिका तू बुद्धिमान् होकर दूसरों को ज्ञान सिखलावती थी सो आज क्या दशा हुई ऐसी निर्लज्जताकरना तुझे न चाहिये इसमें सब गांववालीस्त्रियां तुझे गँवारी कहिकर बदनामकरैंगी व तेरे माता व पिता सुनकर तुझको मारैंगे तू केशवमूर्त्ति ऐसे रूपवान् पुरुषको पाकर अपनी प्रीति क्यों प्रकट करती है॥

दो० कृष्ण प्रेम धन पाइके प्रकट न कीजै बाल।
राखो यों उर गोइके ज्यों मणिराखत व्याल॥

यहबचन सुनकर राधिकाबोली तू मुझे क्यों समुझावती है मेरामन मोहनीमूर्त्ति ने हरकर मेरेहृदयमें अपनाबास करलिया इसलिये माधुरीमूर्त्ति देखेबिना मुझे चैन नहीं पड़ती हाथमेरा बशमेंनहीं है घूंघुटकौनकाढ़े यहबात सारेब्रजमें फैलचुकी कि मैं श्यामसुन्दरके हाथ बिककर उनकी दासी होगई॥

चौ० मनमान्यो मोहन पर मेरो। जग उपहास करै बहुतेरो॥

दो० बारबार तू कहत क्या मैं नहिं समुझत बात।
मोहिं दृगन में बसिगयो वा यशुमति को तात॥

सो० रहत न मेरी आन अपनी सी मैं करथकी।
तू तौ बड़ी सुजान कहा देत सखि दोष मोहिं॥

हे सखी मैंने अपनाप्रेम नन्दकिशोरसे लगाया इसलिये मुझे किसीकीलाज नहींरही अब मेरेहृदयमें यहबात ठनगई जिसतरह दूध पानी में मिलजाताहै उसीतरह नंदलाल से मिलकर संसारमें श्याम व श्यामा अपना नाम धराऊं॥

दो० मेरोमन हरिसंग लग्यो लोकलाज कुल त्याग।
और ताहि सूझत नहीं भयो जहाज को काग॥

हे सखी तू मेरी बड़ीप्यारी है कदाचित् तुझसे होसकै तो दयाकरके मेरे चित्तचोरसे भेंटकरादे नहींतो मेराप्राण उसकेबिरहमें निकलनेचाहताहै ऐसाकहकर राधाप्यारी अति बिलापकरके पुकारनेलगी हे यशोदाकेलाल अपनादर्शन दिखलाकर दहीका दान लेजाव अब तुह्मारे बियोगका दुःख मुझसे नहीं सहाजाता॥

सो० ऐसे सखी सुनाय मौनगही पुनि नागरी।

देह दशा बिसराय मगन भई रस श्याम के ॥

जब उससखीने देखा कि राधाप्यारी के रोम २ में श्यामरूप बसिगया मेराकहना व समझाना इसेकुछ गुणनहींकरता बिनाभेंटकिये श्यामसुन्दरके इसकादुःख नहींछूटेगा तब उससखीने दयाकीराह केशवमूर्त्तिसे जाकरकहा हे मोहनप्यारे एकसुन्दरी चन्द्रमासी गोरी नीली सारीपहिने मटुकीदहीकी शिरपरलिये तुम्हारानाम लेलेकर चारोंओर पुकारती व ढूंढ़तीहुई अभी बंशीवटको चलीगईहै जल्दीजाकर उसबिरहिनीकी अग्नि अपनी अमृतरूपीदृष्टिसे ठंढीकरो नहींतो वह आपकेबिरहमें बौराकर मरजावे तो आश्चर्य्य मतिसमझो केशवमूर्त्तिने यहहाल अपनीप्यारीका सुनतेही व्याकुलहोकर तुरन्त उस सखीको बिदाकरदिया व आपने उसीसमय बंशीवटमें पहुंचकर राधाकीइच्छा पूर्णकी॥

दो० परम हर्ष दोऊ मिले राधा नंद कुमार ।
कुंज सदन शोभित मनो तनुधरि छबि श्रृंगार ॥

जब श्यामाकाचित्त श्यामसुन्दरके मिलनेसे ठिकानेहुआ तब उसनेकहा हे प्राणप्यारे जिसदिन तुमने मेरी गौ खरकामें दुहिदीथी उसीघड़ी से मेरामन ऐसामोहिलिया कि तुम्हारी सांवलीसूरत देखेबिना मुझे एकक्षण चैननहींपड़ता व गांववाले मुझको तुम्हारे साथ बदनामकरते हैं सो मेरे चित्तमें अब ऐसाआवताहै कि माता पिताआदिक अपने कुल परिवारको छोड़कर तुम्हारेसाथ प्रकट प्रीतिकरूं ॥

सो० मैं लीन्हों दृढ़नेम सुनो श्यामसुन्दर सुखद ।
तुम पद पंकज प्रेम यही बात अब राखिहौं ॥

यहवचन सुनते ही गिरिधरमहाराज ने हँसकरकहा हमारी तुम्हारी पिछले जन्मकी प्रीति है उसको प्रकटकरना न चाहिये जिसमें तेरे माता पिताके निकट हमारी बदनामी न होवे संसारी लोग तुझे नाम न धरैं मैं तेरेसाथ अकेले में भेंटकरके तेरी इच्छा पूर्ण करदिया करूंगा ॥

सो० सुनत श्याम के बैन हर्ष भई मन नागरी ।
भयो हिये अति चैन प्रीति पुरातन जानिजिय ॥

दो० कहत श्याम अब जाव घर तुमकोभई अबार ।
प्रीति पुरातन गुप्त उर करिये जग व्यवहार ॥

सो० परम प्रेम उर लाय घर पठई हरि भावती ।
चलीमहासुखपाय फिरफिरचितवत श्यामतन ॥

दो० कृष्ण राधिका के चरित अतिपवित्र सुखखान ।
कहतसुनत भवभयहरण रसिकजनन्के प्रान ॥

हे राजन् जब राधिका अपना मनोरथपाकर घरको चलीजातीथी तब राहमें वहीसखी जिसने उसकाहाल केशवमूर्त्तिसे कहाथा फिरमिली उसने श्यामाका मुखारविंद प्रसन्न देखकर अपनीबुद्धिसे जानलिया कि यहअपनी मनोकामना पाआई है ऐसा विचारकर उससखी ने राधिका से पूछा ॥

दो० फिरत हती व्याकुल अभी जिनके दर्शनलागि ।
कहां मिले नँदनन्द सो धनिधनि तेरो भागि ॥
सो० नहिं पावत हैं जाहि योगी जन जपतप किये ।
बश करिपायो ताहि तैं कैसे कहु नागरी ॥

यहबात सुनतेही राधा नाक व भौंचढ़ाकरबोली तू मुझे वृथा बदनामकरती है कदाचित् यहबात कोई जातिभाई सुनपावें तो मेराठिकाना न लगे ॥

चौ० को नँदनंद कहत तू जिनको । मैं कबहूं देख्योंनहिं तिनको ॥

यहचरित्र राधिकाका सुनकर उससखीनेकहा हमतुम दोनों व्रजमेंरहती हैं तुम्हारी चतुराई हमसे नहींछिपैगी दोघड़ीहुई तू गली २ नन्दलालजीका नामलेकर रोतीफिरतीथी अबकहती है कि मैं उनकोनहींजानती ऐसासयानपन तैंने अभी कहांसे सीखलिया ॥

दो० निपुण भई उनको मिली वहसुधि गई भुलाय ।
आवत है बन कुंज ते बातैं कहत बनाय ॥
सो० रीझे श्याम सुजान कहे देत अँग की पलक ।
मोसों कहत सयान सँग पग रहे सनेह जल ॥

जब राधाप्यारी ने बहुत पूछनेपरभी उससखीसे मोहनप्यारेकी भेंटहोनेका हाल नहीं बतलाया तब वह व्रजबाला हँसकरबोली बहुतअच्छा तू मेरेसामनेकी छोकरीहोकर मुझसे छलकरती है अब तू अपनेघरजा मैं तेराझूठ व सत्य प्रकटकरदेऊंगी यहबात कहकर वहसखी अपनेघर चलीगई व श्यामा अपने स्थानपर आई ॥

चौ० सकुचसहित वृषभानुदुलारी । गईसदन गुरुजन डरभारी ॥

उसेदेखकर कीर्त्तिनेकहा तू दिनभर दहीबेचनेके बहाने कहांरहती है आज तेराभाई कहताथा कि राधा मोहनप्यारेका प्रेमरखकर उनकेपीछे फिराकरती है तुझको कुछ लज्जा

नहींआती सबगांववाले तुझे श्यामसुन्दरकेसाथ बदनामकरते हैं ऐसीबात मतिकर जिसमें तेरे माता पिताकी हँसीहो यहवचन सुनकर राधा बोली ॥

दो० खेलन को मैं जाउँ नहिं कहा कहतरी मात ।
मुझसे जाती सहि नहीं यह सब झूंठी बात ॥
सो० घर घर खेलन जात गोपनकी सब लड़किनी ।
तू मोको रिसियात उनके मात पिता नहीं ॥

ऐसी २ झूंठ सत्य बात कहकर राधाने अपनी माताको प्रसन्न करलिया व अपने मनका भेद किसी से नहीं बतलाया और उस सखी ने जाकर ललिता आदिक सब ब्रजवालों से कहा कि आज राधिकाने श्यामसुन्दरसे भेंटकरके अपनी इच्छा पूर्ण की जब वह वंशीवटसे अपना मनोरथ पाकर आती थी तब मैंने उसका मुखारबिन्द प्रसन्न देखकर भेंटहोनेका हाल पूँछा तब वह सुनकर बोली ॥

दो० मोसों तब लागी कहन को हरि काको नांव ।
कै गोरे कै सांवरे बसत कौन से गांव ॥
सो० मैंतो जानत नाहिं लेत नाम तुम कौनको ।
लख्यो न स्वप्ने माहिं सांची कहत कि हँसततुम ॥

यह बात सुनकर ललिता आदिकने कहा हमारे सामने राधिकाकी सामर्थ्य नहीं है जो छुकरनेसकै तब वह सखी बोली अब वैसी राधिका नहीं है जो पहिलेथी भेंटकरने से उसका हाल तुम्हें माल्महोगा ॥

दो० बड़े गुरूकी बुद्धि पढ़ि काहू नहिं पतियात ।
एकौ बात न मानिहै सौ सौगन्दै खात ॥

जब ललिताआदिक सखियां इकट्ठी होकर यही बात पूछने के वास्ते राधिकाके स्थान पर आईं तब श्यामा उनके मनका हाल जानगई कि यह मेराभेद पूछने आईहैं ॥

दो० काहूको कीन्हों नहीं आदर करि चतुराय ।
मौन गही बोलत नहीं बैठिरही निठुराय ॥

उसकी यह दशा देखतेही ललिता आदिक आपसमें उसके पास बैठकर जब इधर उधर की बातें करनेलगीं तब एक सखी ने राधासे कहा तुमने मौनव्रत कबसे धारण कियाहै उसका हाल हमैंभी बतलाओ कौनगुरूसे यह मन्त्र सीखाहै हमलोग भी वह धारण करना चाहती हैं ॥

दो० अब तुमहींको हम करैं गुरू देव उपदेश।
हमहूँ राखैं मौनव्रत करैं तुम्हैं आदेश ॥
सो० हमको कियो अजान चतुर भई तुम लाड़िली।
कहँ सीख्यो यह ज्ञान ऐसी बुधि लागी करन ॥

यह बात सुनकर राधाने कहा सुनो ललिता हमारे तुम्हारे बीचमें कुछ भेद नहीं है जो मैं तुमसे कोई बात छिपातीपर झूठी बात मुझसे सही नहीं जाती कल्हि राहमें मुझसे इस सखी ने कहा कि तेरी भेंट श्यामसुन्दरसे हुई है मैंने आजतक कभी केशवमूर्त्तिको स्वप्नेमेंभी नहीं देखा और यह मुझको वृथा पाप लगाती है सो मुझे यह ठिठोली की बात अच्छी नहीं लगती इसमें मेरेवास्ते बदनामी समझना चाहिये बिना देखे कोईबात नहीं कहना होता मुझे इसने नन्दलालसे कब भेंट करते देखाथा जो ऐसी बात कही अभी कोई जातिभाई सुनै तो मेरा ठिकाना न लगै ॥

दो० और कहै तो मोहिं कछु नहिं व्यापै मनमाहिं।
तुमहिं कहो जो बातयह तौदुख होय कि नाहिं ॥
सो० तुम पर रिस मोहिंगात याते आदर नहिंकियो।
सुन प्यारीकी बात रहीं सबै मुखतन चितै ॥

तब ललिता बोली हे राधा मुझसे इस सखीने कुछ नहीं कहा कदाचित् यह मुझसे कुछ कहती तो मैं इससे झगड़ा करती व तेरी अलोनी देहीपर हमलोग क्यों लोन लगावैं तू बड़ी पतिव्रता है तेरे श्यामको इसने कहां देखा होगा बिना भाग्य उनका दर्शन मिलना बड़ा कठिनहै तेरे बराबर हमलोगोंका भाग्य कहां है जो केशवमूर्त्तिका दर्शन हमैं मिले यह सुनकर राधिका बोली ॥

दो० वृथा झौड़ मोसों करत कहि कहि झूंठी बात।
भलो नहीं उपहास यह मैं सकुचत दिन रात ॥

यह रुखाई श्यामाकी देखकर ललिताने कहा ॥

सो० जब आवैं इत श्याम तब हम तोहिं बताइहैं।
तोहिं देखिहैं बाम हमहूँ है अभिलाष अति ॥
दो० ऐसे कह सब हँसि उठीं प्यारी बदन निहारि।
आईथीं अतिगर्व्वकरि चलीं सखी सब हारि ॥
सो० कहत परस्पर जात निडर भई अब राधिका।

कबहूँ तो हम घात पढ़िहैं दोऊ आयकै ॥
दो० सब ब्रज गोपिनके बसी यही बात मन आन ।
हरि राधा दोऊ मिलैं निशिबासर यह ध्यान ॥
सो० सब सन्मुख यह बात और कछू चरचा नहीं ।
नन्दमहरको तात सुता महर बृषभानुकी ॥

जब बहुत पूछने परभी श्यामाने मोहनप्यारे के भेंट होनेका हाल सखियों से नहीं बतलाया तब वहलोग वहांसे अपने २ घर आनकर इस खोजमें लगीं कि राधा व मोहनको भेंट करती समय पकड़ना चाहिये जिसमें श्यामाका झूंठ बोलना प्रकट हो जावे और राधिका व कृष्णमें ऐसीप्रीति बढ़ी कि एकक्षण दोनोंको बिना देखे चैन नहीं पड़तीथी सो श्यामाने दूसरे दिन मोहनीमूर्त्तिको देखनेकी इच्छासे ललिताआदिक सखियों के घर जाकर कहा चलो बहिन यमुनास्नान करआवैं जब सखियों ने बड़े आदरभावसे राधाको बैठाला तब वह बोली आज मैं तुम्हारे घर नये शिरसे आई हूं जो इतना आदर करती हो ललिता बोली जैसा अपने गुरूका मन्त्र पढ़कर तुमने हमारे जाने से मौन साधलिया था तैसा हमलोगों को नहीं आवता जैसे सदा हम सब तुम्हारा सन्मान करतीथीं वैसे आजभीकिया यह बात सुनतेही राधाने हँसकरकहा उस दिनका बदला आज तुमलोगों ने मुझसे लिया यह सुनकर सब सखियां हँसनेलगीं ॥

दो० यहिबिधिहास हुलासकरि सखिनसंगसुकुमारि ।
चलि नहाय यमुनानदी श्रीवृषभानु दुलारि ॥
सो० सकल रूपकी राशि नवनागरि मृगलोचनी ।
भरी अनन्द हुलास कृष्ण प्रेममें एक चित ॥

जब श्यामा सखियों समेत यमुनाजल से स्नानकरके बाहर निकली तब उसने क्या देखा कि केशवमूर्त्ति नटवररूप साजे कदमके नीचे खड़ेहुये बंशी बजाते हैं उस मोहनीमूर्त्तिको देखतेही राधाने मोहित होकर लज्जा छोड़दिया व नन्दकुमारको टकटकी बांधकर देखने लगी ॥

दो० श्यामा नटवर रूपको देखतही सुखपाय ।
चित्र पूतरी सी रही देहदशा बिसराय ॥
सो० उत वह रहे लुभाय नागर नवलकिशोर बर ।
प्यारी मुख दगलाय नयन नहीं भटकत कछू ॥

यह दशा देखकर ललिता आदिक सखियों ने राधासे कहा कल्ह तू मोहनप्यारे की भेंट करने से मुकरकर कहती थी कि मैंने उनको स्वप्नमेंभी नहीं देखा आज क्या दशा तेरीहुई जो सांवली सूरतको टकटकी बांधकर देखरही है अच्छीतरह इनको देख लेव जिसमें यह मोहनीमूर्त्ति तुम्हैं न भूलै तेरे दिखलाने वास्ते केशवमूर्त्तिको हमने यहां बुलादिया है ॥

चौ० राखो चीन्हि इन्हैं अब नीके । यहहैं मनभावन सबहीके ॥

दो० भले शकुन आई इहां भयो तुम्हारो काज ।
अब कछु हमको देवगी मिलैं तुम्हैं ब्रजराज ॥

यह बात सुनतेही राधा मनमें पछताकर कहने लगी देखो कल्ह मैं सखियोंसे मुकर गईथी आज प्राणप्यारेकी छवि देखकर मेरी यह दशा होगई अब मेरी चोरी सखियों ने पकड़ली इनलोगों से मैं बहुत लज्जितहुई जब ऐसाविचारकर राधाकामुख मलीनहो-गया तब ललिताबोली प्यारी तुम मत पछताओ ॥

दो० कियोदरश तुम श्यामको घर चलिहौ कीनाहिं ।
चीन्हिलेहु मिलिहैंबहुरि यहकहिसबमुसकाहिं ॥

सो० तब सखियनके साथ चली सदन को नागरी ।
उर में धरि ब्रजनाथ प्रेम मगन बोलै नहीं ॥

जब राधाप्यारी नटवररूप मोहनप्यारे का अपने हृदयमें रखकर घरको चली तब सखियोंने उससेकहा ऐप्यारी तू अपनेमनमें चोरी प्रकटहोनेका कुछशोच मतकर यह नटवररूप इसीतरहकाहै जिसके देखनेसे किसी ब्रजबालाका चित्त ठिकाने नहींरहता पिछलेजन्मके पुण्यसे तेरा बड़ाभाग्यहै जो त्रिलोकीनाथ तुम्हैं ऐसाप्यारकरते हैं व तैंने उनको अपनेबश करलिया है यहसुनकर राधा मन में बहुत प्रसन्नहुई पर लज्जा से कुछ नहीं बोली ॥

सो० सखिनकह्यो मुसक्याय क्योंप्यारी बोलतनहीं ।
की हमसे रिसिआय लियो मौनव्रत आजपुनि ॥

यहबचन सुनतेही राधाने हँसकरकहा श्यामसुन्दरका स्वरूप कैसाथा मैंनेतो अच्छी-तरह नहीं देखा इसका क्याकारणहै जो तुम्हैं दोआंखसे उनकासाराअंग देखपड़ा मेरी दृष्टितो उनकी भृकुटीपरगई सो वहछबि छोड़कर दूसरेअंगपर न जानेसकी जो मैं उस मोहनी मूर्त्तिका साराअंग देखती ॥

दो० मैं तब ते अपने मनहिं यही रही पछिताय ।

देखनको छबि श्यामकी ललचत नयन बनाय ॥
बिनपहिंचाने कौनबिधि करों श्यामसों प्रीति ।
नहिं वह रूप न भाव वह क्षणक्षण औरै रीति ॥
सो० मैं जानी यह बात हैं अनंद के खानि हरि ।
पहिंचाने नहिं जात कहा करौं दो लोचनी ॥

यहसुनकर गोपियांबोलीं हे राधा तेरे बड़ेभाग्यहैं जो तू ऐसीप्रीति बैकुंठनाथसे रखती है संसारमें दूसरेका भाग्य ऐसा न होगा ॥

दो० धनि धनि तेरे मात पित धन्य भक्ति धनि हेत ।
तैं पहिंचाने श्यामको हम सब बाल अचेत ॥
सो० धनियौवन धनिरूप धनिधनिभागि सुहागतुम ।
तुम मोहन अनुरूप चिरंजीव जोड़ी अचल ॥

इसतरह सबगोपियां श्यामासे हँसती व बोलती हुई अपनेअपने घर चलीआईं पर उन्हें राधा व मोहनकी प्रीति देखकर सवतियाडाहसे आठोंपहर उनकारूप आंखों के सामने बसारहताथा एकदिनराधिका श्यामसुन्दरके बिरहमें ब्याकुलहोकर अकेली पानी भरनेवास्ते यमुनाकिनारेचली राहमें मोहनप्यारेको देखतेही उनका हाथपकड़करबोली तुमने मेरामन क्यों चुरालियाहै उसे फेर देव तनमेरा घरमेंरहकर मनचंचल दिनरात तुम्हारे पीछे २ फिराकरताहै प्यारीकाबचन सुनतेही नन्दकुमारने उसको गलेसे लगाकर कहा मैंभी तेरेदेखनेवास्ते आठोंपहर ब्याकुलरहताहूं जिससमय श्यामा व श्याम यह प्रीतिभरीहुई बातें आपसमें कररहे थे उसी समय ललिताआदिक सखियां वहांपर आनपहुँचीं उनकोदेखतेही केशवमूर्त्ति अपने ग्वालोंको पुकारतेहुये दूसरीओर चलेगये व ललिताने राधासेकहा आज तो तेरीचोरी पकड़ीगई तू नित्य हमलोगोंको झूठाबनाकर एकान्त में सुख उठावती थी ॥

दो० कहत रही जब तब यही हरि संग देखो मोहिं ।
तब कहियो जो भाव ही लीजो बेसरि खोहि ॥
सो० अब हम लई छुड़ाय बेसरि देहौ कै नहीं ।
कै करिहौ चतुराय और कछू हमसे अभी ॥

यहबात सुनतेही राधिका लज्जितहोकर अपनेघर चलीआई पर मनउसका मोहनप्यारेके भेंटवास्ते ब्याकुलरहा इसलिये उसको रातभर तारागिनते बीतगई प्रातःसमय

उसने मोतियोंकाहार अपनेगलेसे उतारकर धोतीके अंचलमें बांधलिया व कीर्त्तिअपनी मातासे कहा कल्ह यमुनाकिनारे मेराहार कहीं गिरपड़ाथा सो न मालूम कौन सखी ने उठालिया ॥

दो० नेकुनींद नहिं निशिपड़ी तेरी सौं सुनु मात।
याही डर से आज मैं उठी बड़े परभात ॥
सुन राधा तेरी नहीं अब पतियारी मोहिं।
चौकी हार हमेल कछु नहिं पहिरावौं तोहिं ॥

यहसुनकर श्यामाबोली तुम क्रोधित क्यों होतीहौ मैं उसे ढूंढ़ने जाती हूं मुझको देर लगै तो घबरानामत ऐसाकहकर राधाअपने घरसे निकली व पिछवारे स्थाननन्दजीके झूठमूठ ललितासखीका नाम पुकारकरबोली मैं बंशीबटमें जातीहूं तूभी जल्दआव उस समय नन्दलालजी ने रसोईखानेवास्ते बैठकर पहिलाग्रास उठायाथा जैसे श्यामाकाबोल सुना वैसे उठखड़ेहुये यशोदाने पूछा तुमघबराकर कहांचले तब उनसे कहा एकग्वाल मुझसे कहगयाथा कि वनमें गौके बछिया हुईहै सोमैं वहांजाताहूं ऐसाकहकर मोहन-प्यारे बंशीबटको चलेगये तब उनकेसखों ने जो वहां बैठकरखातेथे यशोदासेकहा वनमें बछिया नहीं हुई है वहां राधाप्यारी गईहोगी इसकारण मोहनप्यारे भी उनसे भेंटकरने वास्ते बिना भोजनकिये चलेगये यशोदाने उनकीबातका विश्वासनहींकिया पर केशव-मूर्त्तिके भूखेचलेजाने से पछताकर शोच करनेलगी व श्यामा व श्याम ने बंशीबट में जाकर आनन्दपूर्वक भोग व विलासकिया ॥

दो० नवलकुंज नवनागरी नवनागर नँद नन्द।
प्रेम सिंधु मर्य्यादतजि मिले उमँगि आनन्द ॥
सो० यह अचरज की बात को मानै को कहिसकै।
गोपसुताके साथ रमत ब्रह्म द्रुम कुंज तर ॥

जब सन्ध्यासमय मोहनप्यारे ने राधासे कहा अब तुमअपने घरजाओ तब श्यामा बोली मुझसे तुम्हैंछोड़कर घरजाया नहींजाता तुम्हारेवास्ते अपने माता व पिताकीगाली व मार नित्यसहतीहौं नन्दलालजी ने कहा तेरेलिये हम अपने हाथका ग्रास फेंककर चलेआये इसीतरह दोनोंमनुष्य प्रीतिभरीहुई बातैंकरते अपने घरपरगये व राधाने हार मोतीका अपनीमाताकोदेकर कहा जिसकेवास्ते तू शोचकरतीथी वह मैं यमुनाकिनारे से ढूंढ़कर लेआई सो अपनाहारले कीर्त्तिने मनमेंसमझा कि राधाने श्यामसुन्दरकी भेंट करनेवास्ते यह झूठाचरित्र हारका कियाथा श्रीकृष्णजी परमेश्वरका अवतारहैं इसलिये

राधाआदिक ब्रजबालोंको उनके देखेबिना चैननहींपड़ता शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित नन्दकिशोरकोभी राधिकाकी इतनीप्रीतिबढ़ी कि नित्य किसीजगहपर उससे भेंटकरके अपनाचित्त प्रसन्नकरते थे सो एकदिन श्यामसुन्दर उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनकर घड़ीरात्रिबीते राधाके स्थानपरगये और रातभर उसकेसाथ आनन्दपूर्व्वक विहारकरके प्रात समय अपने घर चलेआये ॥

दो० बार बार जिय लाड़िली यही शोच पछितात ।
गये श्याम आलस भरे तनिक न सोये रात ॥
सो० देखै सखी न कोय श्यामगये मो सदनते ।
मैं राख्यो है गोय अबलग यहरस सखिनसे ॥

जब ललिताआदिक सखियोंने जो आठोंपहर राधाकृष्णके पकड़नेकी घातमें रहती थीं श्यामसुन्दरको राधाकेघरसे निकलते देखा तब उनलोगों को बड़ीडाह उत्पन्नहुई केशवमूर्त्तिकेजाने उपरांत श्यामानेभी अपने द्वारेपर आनकर देखा तो चारोंओर उसे सखियां खड़ीहुई दिखलाई पड़ीं तब उसको विश्वासहुआ कि इन लोगोंने मेरेघरसे निकलतीसमय मोहनप्यारेको अवश्य देखाहोगा ऐसाविचारकर उसको लज्जामालूमहुई तब उसने मनमेंकहा अभीतक नन्दलालजीसे मेरी प्रीतिछिपीथी सो आजप्रकटहोगई नित्य सखियोंसे मुकरजातीथी आज इन्हें क्याउत्तर दूंगी ॥

दो० ऐसे शोचत लाड़िली कबहूं प्रभुहि मनाय ।
कबहूं प्रभुको सुख समुझि प्रेममगन ह्वैजाय ॥

उसीसमय ललिताआदिक सखियां राधाके घरपरगईं उनको देखतेही राधाप्यारीने चतुराईसे बिनापूछे कहा हे ललिता आजप्रातसमय बृन्दाबनविहारी मेरेद्वारेपरसे होकर न मालूम किधरजाते थे उन्हें देखकर तभीसे मैं व्याकुल होरहीहूं सखियोंने यहबात सुनतेही आपसमें कहा देखो यह बड़ीचतुरी है हमारे पूछनेसे पहिले इसने यह बात बनाकर कही जिसमें हम कुछ पूछ न सकैं ऐसाकहकर सखियां बोलीं हे राधा तू बड़ी स्यानीहोकर अपनेमनका भेद हमलोगोंसे नहींकहती रातभर मोहनप्यारेके साथ विहार किया इससमय हमलोगोंको बहकातीहौ ॥

दो० कछु दिनते तेरी प्रकृति औरोपरी यह कौन ।
निठुर भई मोसों रहत जब तब साधै मौन ॥
सो० अपने मनकी बात कछु हमसों भाषत नहीं ।
ऐसे कहि मुसकात प्यारी सों ब्रजनागरी ॥

दो० सुनिसुनि बानी सखिनकी प्यारी जिय अनुराग।
पुलक रोम गदगद हियो समझ आपनो भाग ॥
सो० बचन कह्यो नहिंजाय प्रीति प्रकट चाहतकियो।
हरि उररहे समाय बाहर लखत प्रकाश नहिं ॥

जब सखियोंकी बातसुनकर राधिकाने हँसदिया तब ललिता सवतियाडाहसे रूखी होकर बोली ॥

क० तुम जानती हौ जु अजानभई कहि आगेसे उत्तरधावती हौ। बतलाती कछू औ कछू कहती अनुरागकी आंखैं दुरावती हौ ॥ हमैं काहपड़ी जो मनेकरिहैं कविबोधाकहैं दुखपावतीहौ। बदनामीकी गैल बचाये चलो बड़ेबापकी बेटी कहावती हौ ॥

तब राधिकाने उत्तरदिया ॥

क० हमले मनमोहनसों हित है चुगुली करि कोऊ कहाकरिहै। अब तो बदनामभई ब्रजमें गुरुलोगन जानि कहाडरहै ॥ कहैं ठाकुर-लाल के देखिबेको ब्रजभूलो सबै बिसरोघरहै। तुम आपनेकामते काम करो कोउ आपने जानि कुवांगिरिहै ॥

यहबात राधिकाकी सुनकर सखियां अपने २ घरचलीगई व राधिकाकेमनमें इस बातका अहंकार उत्पन्नहुआ कि श्यामसुन्दर मेराबहुतप्यारकरते हैं अब वह किसीदूसरी सखीसेबोलैंगे तो मैं उनसेझगड़ाकरूंगी जिससमय राधिका अपनेघरबैठीहुई यह विचार कररहीथी उसीसमय केशवमूर्त्ति वहांजाकर झरोखेमेंसे ताकनेलगे तब राधाने उनसे कहा तुमकोघरघर झांकनेकी कुचालपड़ी है यहबात मुझे अच्छी नहींलगती ऐसाकह कर राधिका अपने अभिमानसे बैठीरही व मोहनप्यारे को उसने नहींबुलाया तब श्रीकृष्णजी गर्वप्रहारी अन्तर्य्यामी उसकेमनकी बात जानकर वहांसे अपनेघरचलेगये जब राधाने देखाकि मोहनप्यारे भीतर नहींआये तब अपने अभिमानकरनेसे लज्जित होकर द्वारेतकदोड़आई जब उनको वहांपर नहींदेखा तब विरहसागरके बीच अचेतहोगई ॥

दो० भई बिकल अतिनागरी बिरह बिथाकी पीर।
खानपान भावै नहीं सुधि बुधि तजी शरीर ॥
सो० घरबाहर न सुहाय सुख सब दुखदायक भये।

रह्यो शोच उरछाय व्रजबासी प्रभु मिलनको ॥

जब उसने देखा कि विनाभेंट मोहनमूर्त्तिके चित्तमेरा ठिकाने नहींहोगा तब वह ललिताआदिक सखियोंकेघर इसइच्छासे दौड़ीगई जिसमें वहलोग केशवमूर्त्तिको समझा कर मेरेपास बुलालावैं ललिताने उसेउदास देखकर पूछा कहोप्यारी आज तुम किस चिन्तामेंहो राधाने मुसकराकरकहा ॥

दो० छिपत छिपाये कौनबिधि सखि तुमसों यहबात ।
देखे बिन नँदनन्दके धीरज धरत न गात ॥
नयननते छण टरतनहिं नीके लख्यो न जात ।
कहाकहौं तुमसों सखी यह अचरजकी बात ॥

सो० मिलेमोहिं जब श्याम सुनोसखी तुमसों कहौं ।
करिकै उरमें धाम तबसे मन मेरोहस्यो ॥

दो० नहिं जान्यो हरि क्याकियो मन्दमन्द मुसकाय ।
मनसमुझत रीझतनयन सुख कछु कहो न जाय॥

सो० तबसे कछु न सुहाय कासों कहिये बात यह ।
अमल परेउ दृगआय देखनको सुन्दर बदन ॥

हे बहिन नन्दकुमार मेरावहुतप्यार करतेथे सो आज वह मेरेघर आनकर झरोखे से मुझे देखनेलगे पर मैंने अपने अभिमान व अज्ञानसे उनकोभीतर नहींबुलाया इसी वास्ते वह खेदमानकर चलेगये सो तुमलोग कोई ऐसाउपायकरो जिसमें उनकादर्शन मुझकोमिलै नहींतो मेराप्राण उनकेविरहमें निकलनाचाहताहै यहवात सुनकर ललिता आदिक सखियोंने सवतियाडाहसे राधाकोकहा जो मोहनप्यारे तुझसे विनाभेंट किये चलेगये तो तुमभी मानकरके घरबैठरहो कदाचित् उनको तेरीचहनाहोगी तो फिर तेरे घर आवैंगे यहवात सुनकर राधानेकहा एकवेर अभिमानकरके मैंने यह फलपाया कि उनके विरहमें मेरी यह दशाहुई अब मुझे मानकरनेकी सामर्थ्य नहीं है जो फिर उनसे मानकरूं ॥

दो० पुनिपुनि सिखवत तुमसखी मानकरनको मोहि ।
मनतो मेरे हाथनहिं मान कौनबिधि होहि ॥

सो० उमँग यही दिनरात श्यामगहौं अभिलाषकरि ।
मननहिं मानत बात मानकरौं कैसे सखी ॥

क० घरतजों बनतजों नागर नगर तजों बंशीराम सबतजि काहूपै न लजिहौं । देहतजों गेहतजों नेहकहौ कैसे तजों आजकाज राजबीच ऐसीसाज सजिहौं ॥ बावरे भयेहैं लोग बावरी कहत मोको बावरी कहेले मैंहूं काहू न बरजिहौं । कहैया औ सुनैयातजों बाप और भैया तजों दैयातजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजिहौं ॥

ऐसाकहकर राधा जब अतिविलापकरके रोनेलगी तब सखियोंने उसपरदयाकरके आपसमेंकहा इसकादुःख छुड़ानाचाहिये नहींतो श्यामसुन्दरके विरहमें यह मरजावेगी॥

सो० लीन्हीं सखियनजान हरिरँगराती लाड़िली ।
सुन्दर श्याम सुजान रोमरोम याके रमे ॥

ऐसासमझकर ललितासखीने राधासेकहा तू धीर्य्यधरकर यहां बैठीरह मैं तेरे चित्त चोरकोलाकर तुझेमिलादेतीहूं ऐसाकहकर ललितावंशीवट में चलीगई व केशवमूर्त्ति के पास पहुँचकर बोली हे प्राणप्यारे राधाने प्रेमबश तुमसे अभिमान कियाथा सो अपराध उसका क्षमाकरो इससमय वह तुम्हारे विरहकी अग्निमें जलरही है तुम जल्दी चलकर अपने चन्द्रमुखकी शीतलताई से उसका हृदय ठंढाकरो ॥

दो० चलो श्याम सुन्दर नवल छैल छबीले लाल ।
तुम्हेंमिलनकोनवलवह अति व्याकुलयहिकाल ॥
मैं आई तुमसों कहन चलो देखावो नैन ।
देखि परम सुख पाइहौ जो मानो मो बैन ॥
सो० भरिभरिलोचननीर श्यामश्याममुखकहिउठत ।
चलो हरो यह पीर मैं आई लखि धाय के ॥

यह बात सुनतेही नन्दलालजी व्याकुल होकर उठे व ललिताके घर पहुँचकर क्या देखा कि राधिका अपने कर्त्तवसे लज्जित होकर रोरहीहै यह दशा उसकी देखतेही केशवमूर्त्ति ने उसका घूंघट उठाकर मोहनीमूर्त्ति अपनी उसको दिखलादी वैसे राधाभी प्रेमवशहोकर उनसे लपटगई ॥

दो० वहचितवनिवहहँसिमिलनि वहशोभासुखभारि।
भई विवशललितानिरखि यकटकरहीनिहारि ॥

जब ललिताने अपने साथी सखियोंको बुलाकर उनदोनोंका प्रेम दिखलाया तब

वहलोग ऐसी प्रीति श्याम व श्यामाकी देखकर बड़ाई भाग्य राधाकी करने लगीं व केशवमूर्त्तिकी छवि देखतेही सवोंने अपना २ हृदय ठण्ढाकिया उससमय मोहनप्यारे राधापर ऐसे मोहित होगये कि अपना भूषण व बस्त्र व मुरली उसपर बारम्बार नेवछावर करनेलगे व उसी प्रममें श्यामसुन्दरने सब गहना राधाप्यारीका उतारकर आप पहिन लिया व उसकी आंखोंमें से अञ्जन निकालकर आप अपने नेत्रों में लगालिया व सारी अपने पीताम्बरकी पहिनकर स्त्रीके समान अपना रूप बना लिया व राधा प्यारी किरीट व मुकुट श्रीकृष्णजी का पहिनकर कन्हैयाजी के समान बनगई और बोली हे श्यामसुन्दर तुम स्त्रीकी तरह मानकरके बैठो हम तुम्हें बिनतीकरके मनावें जब स्त्रीरूप मोहनप्यारे रूठकर बैठे तब कृष्णरूप राधा बारम्बार उनके चरणों पर गिरकर मनाने लगीं पर श्यामसुन्दर न मानकर उससमय ऐसी माया अपनी राधापर फैलादी कि उसको इस बातका ज्ञान नहीं रहा कि मैं स्त्रीहूं तब वह मोहनप्यारे के चरणोंपर शिरधरकर रोनेलगी यह दशा उसकी देखतेही बैकुण्ठनाथ ने अपनी माया हरकर राधासे कहा मैं तेरे कहनेसे रूठकर बैठाथा तू किसवास्ते घबड़ागई जब राधा का चित्त ठिकानेहुआ और उसने अपना मुख शीशेमें देखा तब लज्जितहोकर किरीट मुकुट आदिक उतारडाला व स्त्रियोंका गहना व कपड़ा पहिन लिया जब थोड़ासादिन रहा तब श्याम व श्यामा दोनों स्त्रीरूपसे बंशीवटको चले ॥

दो० चले हरषि बनकुंज को युगलनारि के रूप।
यक गोरी यकसांवरी शोभा परम अनूप ॥

जबराहमें चन्द्रावली सखीसे भेंटहुई तबउसने पहिचाना कि यह श्याम व श्यामा स्त्री रूपबनकर बंशीवटमें बिहारकरनेजाते हैं तबचन्द्रावलीने हँसकर श्यामा से पूछा कहोप्यारी यह नई सखी साँवलीसूरति मोहनीमूरति कहांसे आई जो तेरेसाथ बिहार करने जाती है तब राधाबोली यहसखी मथुरामें रहतीहै मैं ललिता के साथ वहांदही बेचनेगई थी सो मेरी व इसकी जानपहिचान होगई उसी कारण मेरे भेंटवास्ते यहां आई है उससमय मोहनप्यारेने यह समझकर कि चन्द्रावली के पहिंचान लेने से सब सखियां मेरी हँसी करैंगी घूंघट से अपनामुख छिपालिया तबचन्द्रावलीबोली हे राधा तू इस सखीकोभी मथुरासे बुलाकर अपनेघरके पास टिकादे तो तुम और यहदोनों जो महासुन्दरी व तरुणहो श्यामसुन्दर से प्रीतिकरके उनको सुखदेना और यहस्त्री ऐसी मोहनीरूप है जिसे दूसरी अपनाको देखकर मोहितहोजावै टुकइसकामुखारविन्द मुझे भी तो अच्छीतरह दिखलावो जिसमें मेरी आंखें ठंढीहों ॥

दो० ऐसे कहि चन्द्रावली गह्यो श्याम करजाय।
यहअवलोकहिंना सुनी त्रियसों त्रियशरमाय ॥

फिर चन्द्रावली मोहनीमूर्त्ति का घूंघट उठाकरबोली तुम मुझसे क्या लज्जाकरती हौ मैं तुम्हें आगे से पहिचानतीहूं जबचन्द्रावली स्त्रीरूप श्यामसुन्दर से आंखलड़ाकर उनकागाल मलनेलगी तबकेशवमूर्त्तिने लज्जितहोकर आंख नीचीकरली यहहाल उन का देखकर चन्द्रावलीबोली हे राधाप्यारी जबसेतैंने इस सखीसे प्रेमलगाया तब से हमलोगों की प्रीतिछोड़ादी तुमदोनों वृन्दावनके कुञ्जमें जाकर सुखविहारकरो तुम्हें अपने स्वार्थके सिवाय दूसरेका सुख अच्छानहींलगता जब मोहनप्यारे ने समझा कि यह मुझे पहिंचानगई अब इससे छिपायरखना वृथाहै तबहँसकर चन्द्रावली को अपने गलेलगालिया व दहिने चन्द्रावली व बायेंतरफ राधाकाहाथ पकड़ेहुये आनन्दसे बंशी-बटको चलेगये व रातभर वहां राधाप्यारीसे भोग व विलासकिया प्रातसमय केशवमूर्त्ति पुरुषरूपबनकर अपने स्थानपर चलेआये व राधा व चन्द्रावली अपने २ घरगईं ॥

दो० अति बिचित्र नँदलाल की लीला ललितरसाल ।
जोसुख दुर्लभ शिवसनक सोलूटत ब्रजबाल ॥

एकदिन राधाप्यारी सोलहों शृंगारकरके अपनामुख शीशेमें देखनेलगी सो श्याम-सुन्दरकी मायासे उसने अपनी परछाहीं देखकर यहसमझा कि कोई दूसरी चन्द्रमुखी कहींसेयहांआई है जो यहब्रजमें रहैगी तो मोहनप्यारे मुझे छोड़कर इससे प्रीतिकरेंगे ॥

दो० यहआई केहिलोक ते महासुन्दरी नारि ।
ब्रज में तो ऐसी नहीं कोई गोपकुमारि ॥

ऐसा विचारकर राधाने अपनी परछाहींसे कहा तुमकहांसे आईहौ तुरंत अपने घर चलीजाव इसगांवमें मोहनप्यारा अतिढीठ रहकर सब ब्रजबालोंको नंगी करदेतहैं यहां रहकर उसके हाथसे बहुतदुःख पावोगी ॥

दो० तेरेहितकी कहतिहौं मान चाह मति मान ।
बिरजबसे दुख पाउगी सुन तू सुघर सुजान ॥
सो० ऐसो ढीठ न आन त्रिभुवन में कोऊ कहूं ।
जैसो ब्रजमें कान मनभायो सबसों करत ॥
दो० यह तो बोलतिहै नहीं अति गरबीली बाम ।
देखतही यहि रीझिहैं छैल छबीले श्याम ॥
सो० भई सवति यह आय अबहरि याके बश भये ।
मोर मरणभो आय उपजायो उर बिरह दुख ॥

जिससमय राधायहबातें बौरहोंके समान अपनी परछाहींसे कहरही थी उसी समय केशवमूर्त्तिने भी वहांआनकर झरोखेमें से यहहाल उसका देखा व राधाको उनका आना नहीं मालूमहुआ ॥

सो० देखि झरोखे लाय रहे श्याम यकटक निरखि ।
उर आनन्द बढ़ाय देखत प्यारी की छबिहिं ॥
कहत रसीलीबात ज्यों २ तिय प्रतिबिम्बसों ।
त्यों २ सुनि हर्षात ब्रजबासी प्रभु सांवरो ॥

जब वहपरछाहीं राधाकी कुछउत्तर न देकर वहांसे नहींगई तब राधाउसको अपनी सवतिसमझकर चिन्ताकरनेलगी व मोहनप्यारे यहहाल श्यामाका देखकर चुपचाप उस के पीछे चलेगये व अपने दोनोंहाथोंसे आंखेंउसकी बन्दकरके शीशा उलटदिया ॥

सो० लीन्हे सन्मुख आन पानि पकड़ि के लाड़ली ।
भली करी तुम कान मैं सखियन धोखे रही ॥

जब शीशा उलटने से वहस्त्री राधाको नहीं दिखलाईदी तबउसे परछाहीं समझकर प्रसन्नहोगई और श्यामसुन्दरके साथ विहारकरनेलगी जब कुछबेरबीते तब मोहनप्यारे अपनेघर चलेगये और ललिताआदिक सखियां राधाके मकानपरआईं जब राधाने उन्हें बड़े आदरभावसे बैठाला तब ललिताबोली ऐप्यारी आजतुझे श्यामसुन्दर मिले हैं जो इतनाआदर हमारा करतीहो यहबात सुनकर राधा हाल आने श्रीकृष्णजी व उलटदेने शीशेका कहकरबोली हे ललिता यह सबसुखमुझे तुम्हारीकृपा से मिलताहै यहसुनकर ललिता उसके भाग्यकी बड़ाई करने लगी जिससमय यहसब प्रेमभरी हुई बातें राधा सखियनसे कररही थी उसीसमय फिर मोहनप्यारे अपना श्रृंगारकरके नटवररूप साजे वनमालाविराजे मुरलीबजातेहुये राधाप्यारीको देखनेआये पर सखियोंका जमघट देख-कर भीतरनहींगये ब्रजबालों से आंखैंलड़ाते नयनमटकातेहुये दूसरी तरफ जानिकले ॥

दो० छबिसागरसुखकी अवधि गुणमन्दिररसखान ।
मोहिलियोमन तियनको रसिकनरेश सुजान ॥

सो० मुरली मधुर बजाय प्यारी प्यारी नाम कहि ।
सबको चित्त चुराय गये सदन आनंद घन ॥

जब सखियोंकामन उन्हों ने अपनी चितवन में मोहिलिया तब वहसब कामातुर होकर कहनेलगीं यहसबदोष हमारी आंखोंकाहै जो श्यामसुन्दरकी छबि देखतेही

मोहितहोगई व हमाराकुल परिवार व लोकलाज छुड़ाकर ब्रजगोकुलमें हमें बदनामकिया आपजाकर उनकीछवि देखनेसे प्रसन्नहोती हैं व हमें दिनराति उनके बिरहमें सिवाय दुःखके कुछ सुख नहीं मिलता ॥

दो० अब यह लोचन श्याम के सखी हमारे नाहिं ।
बसे श्याम रसरूप यह श्याम बसे इन माहिं ॥

सो० कहा करैं सखि श्याम नयननहीं को दोष यह ।
हठकरि भये गुलाम नेक मंद मुसकान पर ॥

दो० लालच बश ज्यों मीनमृग आप बँधावत आय ।
रूपलालची नयनहू भये श्याम बश जाय ॥
अब हमतलफत उन बिना मृत्यु भई अफसोस ।
पैसा खोटा आपना परखैया क्या दोस ॥

ऐसीऐसीबातैं सबब्रजबाला आपस में कहतीहुई श्यामसुन्दरका नटवररूप हृदय में राखिकर अपने अपनेघर चलीगईं पर आठोंपहर स्वरूप मोहनीमूर्त्तिका उनकी आंखों में बसा रहता था ॥

दो० प्रेमभरे छबिसों भरे भरे अनन्द हुलास ।
युगल माधुरी रसभरे ब्रजमें करत विलास ॥

सो० करत अनेक बिहार रूपराशि गुणनिधि युगल ।
राधा नन्दकुमार ब्रजबासी जन सुखकरन ॥

उनतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका मुरलीबजाना ॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दर ने कामदेवका अभिमान तोड़नेवास्ते गोपियोंकेसाथ रासलीलाकीथी वहकथा अपनी बुद्धिप्रमाण तुमसे कहते हैं चित्त लगाकरसुनो जबसे वृन्दाबन बिहारी ने चीरहरने के समय गोपियों से शरदपूनो को रासलीला करनेकेवास्ते कहाथा तबसे सबब्रजबाला उसीइच्छामें एकदिनको वर्षभरके समान समझकर कहतीथीं कि जल्दी कुवारकामहीना आवे तो हमलोग प्राणप्यारे से रासलीला करके अपनाजन्म स्वार्थकरैं जब बर्षाबीतकर शरदऋतुआई तब मोहनप्यारे ने विचारा कि अपने बचनप्रमाण गोपियों से रासलीला करनाचाहिये ऐसासमझतेही कुवारकी पूर्णमासीको तीनघड़ीरातबीते मुरलीमनोहर किरीटमुकुटसाजे बनमाला बिराजे

अंग २ पर गहना जड़ाऊ पहिने पीताम्बरकी कछनीकाछे नटवररूपबनाये अपनेघरसे निकलकर बनमें चलेगये तो क्यादेखा कि इससमयचन्द्रमा एककलाअपनी जो महादेवकेपास रहती है वहभीलाकर सोलहोंकला से प्रकाशकिये है व यमुनाजल मोती के समान निर्मलहोकर कमल फूलरहे हैं और हरियाली घटाटोप वृक्षों की चाँदनी में अतिशोभायमान होकर आकाश में तारेखिलरहे हैं व शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहकर यमुनाजी लहरें लेरही हैं ॥

दो० श्रीवृन्दाबन धाम की शोभा परम पुनीत।
बरणिसकैकविकौनबिधिमनबुधिबचनसुनीत ॥
सो० और सकल सुखधाम बैकुण्ठादिक श्याम के।
यह बिचार बिश्राम याते अति सुन्दर सुखद ॥

हे राजन् उससमय मोहनप्यारे ऐसेसुन्दर मालूमदेते थे जिनकेऊपर हज़ारोंकामदेव को न्यवछावर करिडालैं वहशोभादेखतेही नन्दकिशोरने एक ऊंचेवृक्षपर बैठकर योगमाया संयुक्त मुरली प्रेमसेबजाई और उसकीध्वनिमें राधा व गोपियों का नामलेलेकर उन्हें अपनेपास बुलानेलगे उससमय ऐसीमाया केशवमूर्त्तिने करदी कि जिनब्रजबालों ने उनको पतिबनावने की इच्छासे ब्रत व पूजनकिया था उन्हींको वहमुरली सुनपड़ी और दूसरे किसीने नहींसुनी व मोहनप्यारे ने बंशी में मनहरने व कामबढ़ावनेवाला ऐसारागगाया जिसकाशब्द सुनतेही श्यामाआदिक सोलहहजार ब्रजबाला कामातुरहोकर मोहितहोगईं व लाज व काज छोड़कर उलटा व पलटा शृंगारकरके इसतरह वृन्दावन को दौड़ीं जिसतरह श्रावण व भादौं में नदी व नालों का पानी समुद्रादिक में बेग से बहजाता है ॥

दो० अधर मधुर मुरली धरे मुरलीधर सुखदैन।
ध्वनि मोहन सुनि गोपिका तनमन प्रकटेमैन ॥
सो० रह्यो न मन में धीर बाजी बाजी कहि उठीं।
व्याकुल महा शरीर सुनि मुरली ब्रजकीतरुणि ॥

क० बाजी बौरानी बाजी देखिबे को द्वारधाईं बाजी अकुलानी सुनि बंशी बंशीधर की। बाजीना पहीरैं चीर बाजी ना धरैं धीर बाजिन के उठी पीर बिरह अनल भरकी ॥ बाजी ना बोलैं बाजी संग लागि डोलैं बाजिन को बिसरि गई सुधि बुधि

घरकी। बाजी कहैं बाजी बाजी बाजी कहैं कहां बाजी बाजी कहैं बंशी बाजी सांवरे सुन्दर की ॥

हे परीक्षित जो गोपी गौदुहतीथीं वर्त्तनदूधका उनकेहाथसे गिरपड़ा व जो भोजन करतीथीं उन्होंने हाथभी नहींधोया व जो रसोईबनावती व दूध आगपरचढ़ायेथीं उन्हों ने उसीतरह चूल्हेपरछोड़दिया व जो सुरमा व काजल लगावती थीं वहलोग दूसरीआंख में बिनालगाये उठदौड़ीं व जो अपने पतिके पास अचेत सोईथीं वह उसीतरह नंगी चलीगईं व जो बालकको दूधपिलावतीथीं वह उसे रोताछोड़कर चलनिकली व जो अपनेपतिको भोजनकरावती थीं वह बिनाखिलाये उठचलीं व जो ब्रजबाला मोहन-प्यारेकी चर्चाकरती थीं वह उसे छोड़कर उठभागीं व घबड़ाहटसे एकने दूसरीकाहाल नहींपूछा कि तू कहांजाती है व व्याकुलतासे हाथकागहना पांवमें व गलेकाभूषण भुजा-पर बांधिलिया व लहँगाकीजगहपर चादरपहिनकर सारीओढ़ली व मारेजल्दीके चोली हाथमें लियेहुये उठधाईं व अपने घरवालोंका कहना किसीने नहींमाना ॥

दो० प्रीतिलगी हरिनाथ सों तनमनकी सुधिनाहिं।
जितने भूषण बांहके पहिरे जांघन माहिं ॥
याबिधि जो जाबिधिहतीं सुधि बुधि सबै बिसार।
भाजिचलीं ब्रजराजपहँ लाजकाज घरिद्वार ॥

जब एकगोपी अपनेपतिकेपास सोईथी उठकर भागचली व उसकेपुरुषने उसे बर-जोरी पकड़कर नहींजानेदिया तब वहब्रजबाला बीचध्यान मुरलीमनोहरके तनुअपना छोड़कर दिव्यरूपसे सब गोपियोंकेपहिले श्यामसुन्दरकेपास जाय पहुँची बैकुण्ठनाथजीने उसकी प्रीति व भक्तिदेखकर उसे मुक्तिदी इतनी कथा सुनकर परीक्षितबोले महाराज उस गोपीने श्रीकृष्णजी को परमेश्वर जानकर प्रीति नहींकी कामदेवके बशहोकर अपनाप्राण दिया था फिर किसतरह मुक्तिपाई यहवचन सुनतेही शुकदेवजी क्रोधित होकर बोले हेराजन् कईबेर मैंने तुझे समझाया पर तू विश्वास नहीं रखता सुनो परमे-श्वर निर्गुणरूप सब जीवोंके मालिकहोकर सदा एकरस रहते हैं जिसतरह पारसपत्थर से लोहा जान या अजानमें छूकर सोना होजाता है व अमृतपीने से जी नहीं मरता उसीतरह परमेश्वर की ओर मन लगावनेवाला जीव मुक्त होताहै देखो जिस शिशुपाल ने परमेश्वर को ऐसा दुर्वचन कहा व जो पूतना व बत्सासुर आदिक दैत्य उनकाप्राण मारने आयेथे उन्हें परमेश्वरने कैसी गतिदी नारायण शत्रुता व मित्रतासे कुछप्रयोजन न रखकर केवल अपनीओर मन लगायेरहने से प्रसन्नहोते हैं काम क्रोध मोह लोभ

किसीतरह पर उनको यादकरै व जो कोई उनकाध्यान व स्मरण मरतेसमय करता है उसकी मुक्तिहोने में कुछसन्देह नहींरहता ॥

दो० जो शिशुपाल महाअधम हरिको निन्दनहार ।
ताहूको निजपुर दियो ऐसे अधम उधार ॥

जो मनुष्य प्रकटमें छापा तिलकलगाकर लोगोंको दिखलाने वास्ते जप व भजन करते हैं व अन्तःकरणसे प्रीतिनहीं रखते उनकी मुक्तिहोना कठिनहै सच्चे मनसे भक्ति व प्रीति रखनेवाले मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व जो लोग श्रीकृष्णजी की दयासे भव-सागर पार उतरगये थोड़ासा उनकाहाल सुनो नन्द व यशोदाने मोहनप्यारेको अपना पुत्र जाना व गोपियोंने उनको महासुन्दर देखकर अपना पति बनानेचाहा व राजा कंसने अपनाशत्रु प्राणलेनेवाला समझा व ग्वालों ने मित्रजाना व पाण्डव और यदु-वंशियों ने अपना नातेदार व भाईबन्द जानकर योगी व मुनीश्वरोंने परमेश्वर भाव समझा था उन सबको नारायणजी ने कृतार्थ किया एकगोपी उन से प्रीति लगाकर मुक्तहुई तो क्या आश्चर्य की बात है यहवचन सुनतेही परीक्षित ने बिनय किया महाराज अब मेरा सन्देह छूटगया अब कृपाकरके आगे कथासुनाइये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब राधाप्यारी आदिक सोलहहज़ार ब्रजबाला बड़ेउमंग से केशवमूर्त्ति के पास जापहुँचीं उससमय शोभा मनहरणप्यारे की कैसी मालूमदेती थी जैसे तारोंमें चन्द्रमा रहते हैं व मोहनीमूर्त्तिकी छबि देखतेही सब गोपियां उनपर मोहितहोकर जब आंखों की राह रूपरस पीनेलगीं तब वृन्दावनविहारी ने पहिले कुशल उनकी पूंछकर फिर रुखाईसे कहा तुम्हारे आवनेसे मैं प्रसन्नहुआ जो कुछकहो सो करूं पर रात्रि में भूत व प्रेतकी डरावनी समयहै तुम सब तरुण २ स्त्रियां अपने कुल व परिवार की प्रीति छोंड़कर उलटापलटा शृंगार किये बौरहोंकेसमान घबड़ाईहुई यहां क्याकरने आईहौ ॥

दो० तुम अपनो घरछोंड़िकै क्यों आईं बनमाहिं ।
रैनि समय घरकी बधू घरतजि कहूं न जाहिं ॥

तुम्हारेघरवाले तुमको ढूंढ़तेहोंगे कदाचित् तुमको चांदनी रातमें भोग व बिलासकी इच्छा हुई थी तो अपने २ पतिके साथ करतीं जो प्रेमकी राह मुझे देखने आई हो तो मैं भी अपने साथ प्रीति करनेवाले से नेहरखताहूं पर स्त्रीको अपने पतिकी आज्ञा पालन करना व लोकलाज का डररखना जप व तपके बराबर होताहै वेद व शास्त्र में ऐसा लिखते हैं कि जो स्त्री अपने पतिको अन्धा काना कुबड़ा कोढ़ी कुरूप लूला लँगड़ा व निर्द्धन कुटिल लम्पट जुवारी रोगी कैसाही अवगुणों से भराहो परमेश्वर तुल्य समझकर प्रेमपूर्वक उसकी टहल सेवाकरती हैं वह संसारमें मनोकामना पाकर अन्त

समय मुक्त होती हैं और उन्हें सबकोई कुलवन्ती कहताहै और जो स्त्री अपनेपतिको परमेश्वरके तुल्य न जानकर उसकी निन्दाकरती हैं या उसे दुर्व्वचन कहकर सेवामें नहीं रहतीं या दूसरे पुरुषसे प्रीति रखती हैं उनको लोकनिन्दा का डरलगा रहकर मनबांछित फल नहीं मिलता व मरनेउपरान्त नरकमें जाकर दुःख भोगना पड़ता है और जैसा हम दूरसे तुम्हारी भक्ति व प्रीतिकरने में प्रसन्नथे तैसा यहां आनेमें खुश नहींहुये किसवास्ते कि रातको यहां चलेआवने में तुम्हारे घरवाले खेद मानकर सब ब्रजबासी हमें व तुम्हें बदनाम करेंगे भला जो कुछ तुमने किया सो अच्छाहुआ अब चांदनी व बन व यमुना की शोभा देखचुकीं इस लिये घरजाकर अपने २ पति की सेवा व टहल प्रेमपूर्व्वककरो जिसमें तुम्हाराकल्याणहो ॥

दो० निजपति तजि परपतिभजे तियकुलीन नहिंहोय ।
मरे नरक जीवत जगत भलो कहहि नहिं कोय ॥
सो० युवतिनको पति देव कहत वेद मैंभी कहौं ।
करो उन्हींकीसेव जो तुम चाहत सुखलहन ॥

हे राजन् यहवचन ज्ञानरूपी सुनतेही सब ब्रजबाला शोचित होकर यहदशा उन की होगई कि शिरनीचा करके ठण्ढी २ श्वासलेकर नखसे पृथ्वी खोदनेलगीं व चुप-चाप चित्रकारीसी रहकर विरहसागर में डूबगईं व आंसू बेपरवाह गिरनेसे सुरमा व काजल आंखोंका बहकर गालोंपर चलाआया व कोई ब्रजबाला की बेसरटूटकर गिर पड़ी व पहिलेमारेखुशीके जो मुखारविन्द उनका ललित था सो पीलाहोगया ॥

दो० निठुर बचन सुनिश्यामके युवति उठीं अकुलाय ।
चकितभईं मनगुनिरहीं मुख कछु बचन न आय ॥

उनमें जो ब्रजबाला चतुरीथीं वह बिरहकी अग्निमें जलकर यों बोलीं हे श्याम-सुन्दर तुम बड़ेठगहो पहिले तुमने मुरली बजातीसमय सब किसीका नाम लेकर अपने पास बुलाया व अचानकमें ज्ञान व ध्यान व तन व मन हमारा तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति व बंशीकी ध्वनिने हरलिया अब तुम कठोरताई से वेद व शास्त्र समझाकर हमारा प्राण लिया चाहतेहो हे मोहनप्यारे जैसे रातको तुमने हमें बुलाया वैसे हमारी इच्छा पूर्ण करो हमलोग मर्य्याद वेद व शास्त्र व लोकलाज व प्रेम व कुलपरिवारको छोड़कर तुम्हारे चरणों में जिनका ध्यान देवता व ऋषीश्वर करते हैं प्रीति लगाया आदि पुरुष परमे-श्वर को छोड़कर ऐसाधर्म्म नहीं सीखतीं जो संसारी मायाजाल में फँसकर नष्ट होवें संसारीमायामें फँसेरहने से किसी का कल्याण नहीं होता व मन हमारा तुम्हारे प्रेममें

उलझरहा है इसलिये बीचकाम गृहस्थीके नहींलगता तुम्हारे चरण छोंड़कर एकपग जाना हमैंकठिनहै इतनीदूर घरपर किसतरह जावें ॥

दो० अब तुमको यहउचितनहिं सुनोश्याम सुखराश।
मन हमरो अपनायकै हमको करत निराश ॥
सो० पाप पुण्य कहनाथ यह तो हम जानैं नहीं।
बिकीं तुम्हारे हाथ अधरामृतके लोभसे ॥

हे महाप्रभु हमलोग अबला अनाथ कुछझूट व कपट न जानकर तुम्हें अपनापति मनसावाचासे समझती हैं आपकी मृदुमुसुकान ने सब ब्रजबालों को मोहलिया दूसरे तुम्हारी सहाय मुरली ऐसीमिली है जिसकी ध्वनि सुननेसे चित्त हमारा ठिकाने नहीं रहा व तुम्हारे चरणोंकी प्रीति करनेवाला मनुष्य कुलपरिवारका प्रेम व लोकनिन्दा का कुछडर नहींरखता सो हेअन्तर्य्यामी ब्रजराज शरणआये की लाज तुम्हारे हाथहै व हमने बड़ों के मुखसे ऐसा सुनाथा जोकि तुमसे प्रीतिरखता है उसकेसाथ तुमभी प्रेम करतेहो सो अब यह वचनझूठ मालूमहुआ किसवास्ते कि हमलोग तुम्हारे स्नेह से इससमय बनमें आई और तुमअपने पाससे हमैंखेदतेहौ व ऐसा भी लोग कहते हैं कि एक मनकाहाल दूसरामनुष्य जिससे वह प्रीतिकरै जानताहै सो यहभी तुमने कहने वास्ते बनादियाहै नहीं तो हमारे दर्दकी प्रीतिका हाल तुमजानते सिवाय इसके वेद व शास्त्रके अनुसार जबतक तुम्हारा चाहनेवाला संसारी माया से अपनामन बिरक्त नहींकरता तबतक तुम्हारे पास उसका पहुँचना कठिनहै व उसीशास्त्रके प्रमाण से हमलोग भी अपने घरवालों की प्रीति छोंड़कर तुम्हारे शरणआई हैं कदाचित् तुम शास्त्रको झूठाकरके हमारे चाहनेपर भी हमलोगोंसे प्रीति नहींरखते तो हमारामन जो तुमने हरलियाहै सो फेरिदेव नहींतो अपनीदासी हमैं बनाओ कदाचित् प्रकटमें हमैं छोड़दोगे तो हमारा बशनहीं चलता पर हमारेहृदयमें जो तुम्हाराबास आठोंपहर रहता है वहांसे भागकरकहां जावेगा ॥

दो० कर छुटकाये जातहौ अबलजानिके मोहिं।
हृदयनसे जब जाहुगे मर्दबखानों तोहिं ॥

जिसतरह तुम्हारे चरणोंकीसेवा लक्ष्मीजी बैकुण्ठमें करती हैं उसीतरह हमको तुम्हारे चरणारविन्दप्यारे हैं जिनचरणन की धूरि मिलनेवास्ते ब्रह्मा व महादेवआदिक सबदेवता चाहनारखते हैं वे चरणकमल हम किसतरह छोड़देवें इसमोहनीमूर्ति की हम लोग दासीहोकर अपना तन मन धन इसपर न्यवछावर समझती हैं तीनोंलोकमें कौन ऐसा जीव जड़ व चैतन्यहै जो तुम्हारी छबिदेखने व बंशीकीध्वनि सुनने से मोहित न

होजावे हे ब्रजनाथ तुम्हारानाम दीनदयालुहै हमसे अधिक कोईदूसरा संसारमें दीन न होगा इसलिये दयालुहोकर हमारीइच्छा पूर्णकीजिये नहीं तो तुम्हारेविरहकी अग्निमें अपनातनु जलाकर मरती हैं व मरतेसमय यह इच्छाकरैंगी कि सौ जन्मतक तुम्हारी दासीहोकर सेवाकियाकरैं तब हमारेमरने का तुम्हें दोषहोगा ॥

दो० बिरह बिकललखि गोपियन कृपासिंधु भगवान।
उमँगिउठे दृगभरि लिये दीनबचन सुनिकान ॥

जबकेशवमूर्त्तिने सच्चीप्रीति गोपियोंकी देखी तब बड़ेप्रेमसे सबब्रजबालोंको अपने पास बैठाकर कहा कदाचित् तुम्हारी ऐसीइच्छाहै तो मेरेसाथ रासमण्डलकरो यहबचन सुनतेही सबगोपियां इसतरह प्रसन्नहोगई कि जिसतरहमछलीको गर्म बालूपरसे उठाकर कोई पानीमेंडालदेवै फिर बृन्दावनविहारी ने योगमायाको बुलाकर आज्ञादी कि तुम हमारी रासलीला करनेके वास्ते एकस्थान बहुतअच्छा यमुनाकिनारे तय्यारकरके वहां बनीरहो व इनब्रजबालों को भूषण व वस्त्र आदिक जिसवस्तुकी इच्छाहो सो देव यह वचनसुनतेही योगमायाने उससमय जब एक चबूतरा गोल व बहुतबड़ा रत्नजटित तय्यारकरदिया व उसके चारोंओर केलेके खम्भेगाड़कर मोती व फूलोंकीझालर उसमें लगाया तबमोहनप्यारेने राधाआदिक गोपियोंसमेत वहांजाकरदेखा तो उसचबूतरेकी शोभा चांदनीसे चौगुनी दिखलाईदी व चारोंओर बालू यमुनाजीकी सफ़ेद बिछावनके समानहोकर एक ओर हरियाली वृक्षों की बहुतसोहावनी दिखलाई देतीथी जबउस चबूतरे के निकट हरिइच्छा से अनेक तरहके भूषण व वस्त्र व बाजनोंका ढेरलगगया तबब्रजबालोंने योगमायाकी आज्ञानुसार वहांजाकर इच्छापूर्वक गहना व कपड़ा पहन लिया व सोलहों श्रृंगार करनेउपरान्त अनेकतरहके बाजालेकर श्यामसुन्दर के पास आई व कामवश होकर उसचबूतरेपर गानेबजाने लगीं तबश्रीकृष्णजीने राधाप्यारी के साथ बीचमें अपनेनिजरूपसे रहकर और सब दो २ गोपियोंमें अपना एक २ रूप प्रकटकरदिया उससमय केशवमूर्त्ति गोपियोंके बीचमें इसतरह सुन्दरमालूम देतेथे जिस तरह सुनहलीमालाके दानोंमें नीलमणिरहती है जबश्यामसुन्दर ने ब्रजबालोंके गलेमें हाथडालकर मुखचूमने व गालछूने उपरांत उन्हें छातीसे लगाया व बंशीबजाकर अनेक राग व रागिनी उनकोसुनाया तब गोपियों का कलेजा जो बिरहकी अग्निसे जलरहा था मोहनप्यारे के चन्द्रमुखके स्पर्शकरने से शीतलहोगया जब घूमतेसमय वृन्दावन बिहारी ब्रजबालोंके पीछे २ परछाहींकी तरह फिरतेथे तब श्यामा आदिक गोपियां उन की छवि व सुन्दरताई पर मोहितहोजाती थीं व कभी मुरलीमनोहर अपनीआंख व भौंहमट-काकर उन्हेंप्रसन्न करते व कभी उनकागाना व बजानासुनकर आप आनन्द होतेथे व कोईब्रजबाला उनकी मुरलीछीनकर आपबजातीं व कोईस्वर मिलाकर गाने लगतीथीं ॥

दो० हँसे जभी सुखपाइकै चन्द्रमुखिन की ओर ।
प्रेम प्रीति रस बश भये प्रीतम नवलकिशोर ॥

हे राजन उससमय वहां ऐसाआनन्द होरहाथा जिसे ब्रह्मा व महादेव आदिकदेवता देखकरकहतेथे बड़ाभाग्य ब्रजवासियोंका है देखो जिसपरब्रह्मपरमेश्वर का दर्शन हम लोगों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता वह बैकुंठनाथ सब ब्रजबालों के साथ रास व बिलासकरते हैं ॥

दो० धनिधनिकहि बर्षैंसुमन मुदित सकलसुरनारि ।
धनिमोहन धनिराधिका धनिहैं गोपकुमारि ॥

हे परीक्षित जबगोपियोंने ऐसीकृपा मनहरण प्यारेकी अपने ऊपर देखी तबअभिमानसे कहनेलगीं हमारेबराबर सुंदर कोई दूसरीस्त्री न होगी इसवास्ते नंदकिशोर हम लोगोंके बशहोकर हमें बहुतप्यारकरतेहैं त्रिलोकी नाथको हमने ताली बजाकर नचाय दिया अबविनाआज्ञा हमारे कुछनहींकरेंगे ऐसाबिचारकर बाजी गोपी कटाक्ष करके बोली हे नन्दलाल मेरेपांव नाचते नाचते दुखनेलगे व कोई उनका हाथपकड़कर बैठगई व कोई कन्धाथांभकर खड़ीहोरहीं ॥

दो० याही बिधि ब्रजसुंदरिन देत परमसुख श्याम ।
लखि पतिगति आधीन अति भईगर्विता बाम ॥

सो० परम प्रेमकी खान रूप शील गुण आगरी ।
क्योंनकरैं अभिमान जिनके बश त्रिभुवनपती ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जबगोपियां लज्जा व धर्म छोड़कर मुरलीमनोहर को पापकीदृष्टिसे देखनेलगीं तब गर्वप्रहारी भगवान्ने बिचारा यह सब ब्रजबाला अज्ञानकीराह मुझे अपनापति समझकर अंगसे लपटाती हैं व मुझे अपने भक्तोंकी सबबात उत्तममालूम होकर अभिमानअच्छा नहींलगता इसलिये मैं इनको अकेली छोड़कर अंतर्द्धानहोजाऊं तब गर्व इनका टूटजावेगा देखो मेरेजाने उपरांत यहलोग बनमें क्या करती हैं ॥

दो० उन जान्यो हरिबशकियो लाई मन अभिमान ।
प्रभु अन्तर्यामी भये क्षण में अन्तर्द्धान ॥

सो० यह बिचारि जियजान लै बृषभानुकुमारिसँग ।
ह्वैगये अन्तर्द्धान ब्रजबासी प्रभु संगते ॥

तीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का गोपियों करके खोजना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथासुनकर बोले श्यामसुन्दर के अन्तर्द्धान होने उपरान्त गोपियों की क्या दशाहुई शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब रासमण्डल में से केशव-मूर्त्ति श्यामासमेत अन्तर्द्धान होगये तब सब गोपियों का सुख व विलास स्वप्न के धन समान जातारहा और सब ब्रजबाला इसतरह व्याकुल होगईं जिसतरह हरिणी अपने झुण्डसे बिलग होने में घबड़ाजाती है जब चित्त ठिकाने हुआ तब आपस में कहने लगीं ॥

क० बंशीकी धुनिसुनि आईं तजिलाजकाज सोई ब्रजराज साज समय बितैगये । मन्दमुसक्यायकै लोभाय मन हायहाय रूप रसप्याय प्रेम चितवन चितैगये ॥ कहैं बलदेव नीच बानसी है मारीतान लेके तुम प्रान लाज हमरी रितैगये । दोहनामिलत कछु चाहना हमारी श्याम मोहनी दिखाय रूप मोहन कितैगये ॥

दूसरी गोपीबोली यह चित्तचोर इसी वृन्दावनके कुंजों में कहीं छिपाहोगा यह वचन सुनतेही सबब्रजबाला श्यामसुन्दर का नामलेलेकर चारोंओर यमुनाकिनारे व बन में पुकारके कहनेलगीं हे प्राणपति हमैं छोंड़कर तुम कहांचलेगये जब गोपियां उनकी खोजमें दौड़ते २ थकगईं व रोते २ आंखोंमें अँधराछागया तब उनकी यह दशाहोगइ जिसतरह सांप मणि खोजानेसे घबड़ाजाता व मछली विनापानी के तड़फनेलगती है ॥

दो० यहिविधि सब खोजत फिरैं विरहातुर ब्रजबाल ।
भईं बिकल पावत नहीं कित खोजैं नँदलाल ॥

उस महादुःखकी समय एकगोपी बोली ऐ सखी मनहरणप्यारे मुझे छटकाकर कहां चलेगये अभी तो मेरेगले में बांहडाले खड़ेथे तुमलोगोंमें किसीने उनको जाते देखा है यहसुनकर दूसरी ब्रजबाला जो विरहकी अग्निमें जलरही थी हायमार कहने लगी अरी बावरी मैं उनको देखती तो किसवास्ते जानेदेती हमलोग तो उनकी सेवा मनसावाचा कर्मणासे करतीथीं न मालूम कौन ऐसा अपराध हुआ जो आधी रातको इस बन में अकेली छोंड़कर चलेगये इसीतरह सबब्रजबाला अपना २ दुःख एक दूसरीसे कहकर बहुत विलापकर बोलीं हे ब्रजनाथ हमलोग अबला अनाथको किसवास्ते इतनादुःख देतेहो हमने अपना तनमन दोनों तुम्हारेऊपर न्यवछावर करदिया है इस लिये हम लोगों को बिना दामकी दासी समझकर जल्दी अपना दर्शनदेव जब बहुत ढूंढ़ने व

बिलाप करनेपर भी कहीं कुछपता मोहनप्यारे का नहीं मिला तब बड़े शब्दसे रूदन करके बोलीं हे परमेश्वर हमलोग अबला अनाथ कहांजाकर उन्हें ढूंढ़ें व किस से अपना दुःख कहैं व कौनऐसा उपायकरैं जिसमें हमाराचित्तचुरानेवाला मिलजावै यहां तोकोई बटोही भी नहींदिखलाई देता जिससे उनका पता पूछें जिससमय गोपियां इसी तरह बिलापकररहीथीं उसीसमय एकसखी बोली सुनो प्यारियो इसबनमें जितने वृक्ष व पशु व पक्षी देखतीहौ यहसब पिछलेजन्म के ऋषि व मुनिहोकर उन्होंने कृष्णलीला का सुखदेखनेवास्ते ब्रजमेंजन्मलियाहै इनलोगोंने श्यामसुन्दरको अवश्य देखाहोगा इनसे उनकाहालपूंछो तो मालूमहोने सक्ताहै यहसुनकर सबब्रजबाला बौरहोंके समान पशु व वृक्षों से पूंछनेलगीं अभी श्रीकृष्ण हमारा मनचुराकर मारेडरके भागगये हैं तुम ने देखाथा दूसरी ब्रजबाला बोली हे गूलर व वट व पीपर व कटहर व बेर व पाकर व मौनसिरी व जामुन व आम व अमिली व कदम व बेल व फालसा आदिकके वृक्ष परोपकार करने वास्ते तुम लोग मृत्युलोकमें जन्मलेकर अपनीछाया व फल व फूलोंसे सबको सुख देतेहो सो हम लोगोंका मनहरकर नन्दलालजी अन्तर्द्धानहोगये तुम्हैं दिखलाई तो नहींदियेथे दूसरी ने कहा हे नींब व कचनार व चम्पाकेवृक्ष तुमने कहीं नन्दकुमारको देखाहै दूसरी ने पूछा हे तुलसी तुम श्यामसुन्दरको बहुतप्यारीहोकर वे तेरेबिना भोजन नहींकरते इसलिये उनकाहाल तुझे अवश्य मालूमहोगा ॥

दो० श्रीतुलसी को देखिकै जियकी कहत सुनाय ।
माखन प्रभु की प्राण प्रिय प्रीतम देव बताय ॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा हे अनार तेरेदांत निकले रहने से मुझे मालूमहोता है तैंने नन्दलालको अवश्य देखाहोगा दूसरीबोली अयकेला तेरे नरम २ पत्तोंपर सदा मनहरणप्यारे भोजन कियाकरतेथे उन्हेंदेखाहो तो दयाकरके बतलादे अब उनके बिरहका दुःख हमसे नहींसहाजाता दूसरी कहनेलगी अयअशोककेवृक्ष तेरानाम परमेश्वरने इसी वास्ते अशोकरक्खा जिसमें दूसरोंकाशोक मिटादे सो हमलोग श्रीकृष्णके बिरहसागरमें डूबरही हैं तैंने नन्दकिशोरको देखाहो तो बतलाकर हमाराशोच छुड़ादे नहींतो आजसे अपनानाम अशोकमतरख दूसरीनेकहा अयचन्दन तुझे नन्दकुमार बहुतप्यारा जानकर अपनेअंगमें लगातेथे तू उन्हैंजानता हो तो बतलाकर यशउठाले ॥

दो० माखनप्रभु जिन द्रुमनसों परसत श्यामशरीर ।
तिनको भेंटत गोपिका मेटत उर की पीर ॥

दूसरीबोली अय जुही व मालती व नेवारी व चमेलीकेफूल तुमने इसतरफ कन्हैया को जातेदेखाथा तुम्हारारूप देखनेसे मालूमहोताहै कि वे अपनाहाथ तुमपर फेरतेगयेहैं

इसलिये तुमलोग प्रसन्नतासे फूलेहुये हमारी हँसीकरतेहो दूसरी बोली अय केतकीके फूल तेरी सुगन्धलेनेवास्ते अनेकदेशके भौंरे आतेहैं सो हमदुखियारियोंपर दयालुहोकर उनसे श्यामसुन्दरका पतापूंछके हमैं बतलादे दूसरीनेकहा हे पृथ्वी तेरेऊपर केशवमूर्त्ति सदासे बड़ीप्रीति करतेआये हैं जबतुझको हिरण्याक्षदैत्य पातालमें लेगया तब वह बाराहरूप धरकर अपनेदांतोंपर उठालाये थे व बामनअवतारलेकर तुझे राजाबलिसे दानलियाथा इसलिये तेरेबराबर दूसरेकाभाग्य नहीं होसक्ता तुझे उनकापता चरणधरने से अवश्य मालूमहोगा हमैं अपनेऊपर न्यवछावर समझकर वेग उनकाहाल बतलादे ॥

दो० चरणकमल जगदीश के सदा रहैं तुम शीश।
माखन ईश बताइके हम से लेहु अशीश॥

हे राजन् जब बहुतपूंछनेपरभी किसीने कुछपता श्यामसुन्दरका नहीं बतलाया तब और अधिक बिलापकरके चारोंओर उन्हें खोजनेलगीं उनकी दशादेखकर सबपशु व पक्षी व वृक्ष उसवनके इतनाशोच करते थे जिनकाहाल बर्णननहीं कियाजाता उसी-समय एकगोपीने श्रीकृष्णजी के पांवकाचिह्न देखकर सबव्रजवालों को दिखलाया तो वहआकार देखतेही सबोंने वहांकी धूरिउठाकर अपनीआंखों में लगाया व उसपृथ्वीको चूमकरबोलीं भला उसचित्तचोरका पतातोमिला कि इसीओरको गयाहै फिर सबगोपि-यां उसचरणका पता देखतीहुई आगेचलीं जब थोड़ीदूर और बढ़ीं तब एकस्त्रीके पांव का चिह्नभी दिखलाईपड़ा जब उसेदेखकर उन्हें और अधिकडाह उत्पन्नहुई तब बड़ी करुणासे आपसमेंकहा देखो श्यामा उन्हें बहुतप्यारी थी जो उसे अपनेसाथ लेगये हैं उसने पिछलेजन्म महादेव व पार्वतीका बड़ा तपकियाथा जो अकेलेमें श्यामसुन्दर के साथ सुखउठाती है और हमलोग उनके विरहमें रातको भटकतीफिरती हैं दूसरी सखी बोली श्यामसुन्दरका ध्यान व स्मरणकरनेवाला मुक्तिपदवी पाताहै श्यामाकी बराबरी वहभी नहींकरनेसक्ता क्योंकि श्यामा नन्दकुमारकामुखचूमकर अपनाजन्मस्वार्थकरतीहै॥

दो० वह ऐसी बड़भाग्यहै सुन्दरि सुघरि सुजान।
माखन प्रभु के संग में अधर करै मधु पान॥

इसीतरह शोचकरतीहुई थोड़ीदूर और आगेजाकर क्यादेखा कि वहांराधाप्यारी के पांवकाचिह्न न होकर केवल श्यामसुन्दरके चरणोंकाआकार दिखलाईदिया तब आपस में कहनेलगीं मालूमहोताहै कि यहांसे मोहनप्यारे श्यामाको स्नेहवश कन्धेपर चढ़ाकर लेगये हैं तब थोड़ीदूर और आगेपहुँचकर घास जमीरहने से कुछचिह्न पांवका पृथ्वीपर नहीं दिखलाईदिया तब अधिक व्याकुलहोकर वहांसे फिरनेलगीं तो एकजगह नरम २ पत्तोंके बिछावनेपर राधाप्यारीका जड़ाऊशीशा पड़ाहुआ पहिचानकर एकगोपीने कहा

हे सखी मनहरणप्यारेने यहां बैठकर राधाका शृंगारकरने उपरांत उसकीचोटी फूलों से अपने हाथ गूंथी थी उससमय पीछे बैठने से केशवमूर्त्तिका मुखारविन्द श्यामाको नहीं दिखलाईदिया तब उसने इसकारण शीशालेकर देखाथा जिसमें उनकी मोहनीमूर्त्ति मुझे दिखलाईदेकर मेराचन्द्रमुख उन्हें देखपड़े यहवात सुनतेही सबब्रजबाला सवतियाडाह से और अधिकव्याकुलहोकर जब मोहनप्यारे को ढूंढ़तीहुई थोड़ीदूर और आगेगई तो क्यादेखा कि राधाप्यारी बनमें अकेली खड़ी हाथपसारे ऐसारोरही है जैसे सांप मणि खोजाने से विकलहोजावे व उसका बिलापदेखकर सब पशु व पक्षी व वृक्ष उसवनके रोतेथे व श्यामा रुदनकरके कहतीथी हे प्राणप्यारे रातको मुझे बनमें अकेली छोड़कर कहां चलेगये अपनीदासी समझकर मेरी सुधिलेव राधाको देखतेही सबब्रजबाला ऐसी प्रसन्नहुई कि जैसे किसीका गया हुआ धन आधा मिलजावै ॥

दो० जित तितते धाई सबै ब्रजसुन्दरि अकुलाय ।
व्याकुल लखि अतिलाडिली लीन्होंकण्ठलगाय ॥
सो० कहां गये गोपाल बारबार पूंछत सबै ।
मूर्च्छिपड़ी तेहिकाल मुखते बचन न आवही ॥

जब ललिता आदिक गोपियों के देखने से राधाका रोना कुछ थोड़ाहुआ तब ठण्ढी सांसलेकर बोलीं ॥

दो० क्या पूंछो मुझसों सखी मोहन की निठुराय ।
नहिं जानों वह कित गये मोहूं को छटकाय ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित कारणछोड़जाने राधाका यहहै जब केशवमूर्त्तिने राधा समेत अन्तर्द्धानहोकर अनेकगहना फूलोंकाबनाकर श्यामाको पहिनाया व उसको भोग व बिलासकरके बहुत सुखदिया तब राधाने अभिमानकी राह बिचारा कि मेरेबराबर कोई दूसरी स्त्री सुन्दर न होगी मोहनप्यारे को मैंने वशकरलिया उन्हों ने केवल मेरी चाहनाकेवास्ते ब्रजबालों को बुलाकर रासमण्डल कियाथा इसीवास्ते सबको छोड़कर मुझे अपनेसाथ लेआये हैं ऐसासमझकर श्यामाबोली हे मनहरणप्यारे मेरेपांव नाचनेसे व राहचलने से दुखनेलगे इसलिये मुझसे पैदल नहीं चलाजाता मुझे अपने कन्धेपर चढ़ाकर लेचलो यहवचन सुनतेही गर्बप्रहारी भगवान्ने जाना कि इसने मेरी महिमा न जानकर अभिमान किया इसलिये कुछदण्ड इसको करनाचाहिये ऐसा बिचारकर श्यामसुन्दरने अपनीपीठ झुकादी व मुसकराकर राधासेकहा आवो मेरेकन्धेपरचढ़ो जैसे श्यामाने हाथपसारकर कांधेपर बैठनेचाहा वैसे ब्रजनाथ अन्तर्द्धानहोगये तबवह उसी तरह हाथपसारे खड़ी रहगई ॥

दो० चकितभई जब नागरी गये कहां भजिश्याम ।
मनहीं मनपछितात अति भूली तन सुधिबाम ॥

सो० मैं कीन्हों अभिमान नारिबुद्धि ओछीसदा ।
वह प्रिय परमसुजान जानलई ममजीवकी ॥

दो० माखनप्रभुके विरहदुख कासों बरणी जाय ।
अपनो दोष बिचारिकर बारबार पछिताय ॥

हे राजन् जब गोपियोंने धीर्य्यदेकर राधासेपूछा तबउसने अपने अभिमानकरने व श्याम-सुन्दरके अन्तर्द्धानहोने का हाल ज्योंकात्यों कहसुनाया तब ब्रजबालोंने राधाको भी अपनेसमान बिरहअग्नि में जलतेहुये देखा तब अति बिलापकरके बोलीं हे ब्रजनाथ तुम्हारे वियोगमें हमको एकक्षण कल्पकेसमान मालूमहोकर प्राण निकलने चाहता है इसलिये दयालुहोकर दर्शनदेव जब बहुत ढूंढ़नेपरभी कहीं पताउनका नहींमिला तब निराशहोकर अतिविलाप करनेलगीं ॥

क० बिरहानल डाढ़ीसब ठाढ़ीसी गिरीं भूमि गाढ़ीपीर बाढ़ी निजहाथ धुनैं माथहीं । मोहनके हेत सों अचेत ह्वै पुकार उठीं अब सुधिलेत न हमारी प्राणनाथहीं ॥ कैसी गतिकीन दीनसुखद प्रवीन कान्ह कहै बलदेव मीन जैसे बिनपाथहीं । दुसह समोई दोऊ दीननसे खोई अति बिरहमें भोई गोपीरोई एकसाथहीं ॥

उससमय एकगोपी जो चतुरीथी बोली सुनोप्यारियो इसरोने व दौड़नेसे कुछअर्थ नहीं निकलता जब वही करुणानिधान दयालुहोकर अपनादर्शन देवैं तबवह मिलने-सक्तेहैं नहींतो उनका पतालगना कठिनहै इसलिये सबकोई एकजगह बैठकर उनका ध्यान व स्मरणकरो तो बिश्वासहै कि वे दुःखभंजन दयालुहोकर दर्शन अपना देवैंगे यहबचन सुनतेही सबब्रजबाला यमुनाकिनारे जहां श्यामसुन्दर से बिलगहुईथीं जाकर उनकीचर्चा आपसमें करनेलगीं व उसचबूतरे सुखस्थानको देखकरबोलीं हे मनहरण प्यारे जबसेतुमने ब्रजमेंजन्मलिया तबसे सदाहमारी रक्षाकरके हमैं सुखदिया आजक्यों इतनेकठोर व निर्दयीहोकर दुःखसागरमें डुबावतेहो कदाचित् हमाराप्राण तुमको लेना था तो गोवर्द्धनपहाड़ हमारेऊपर क्योंनहीं गिरादिया ऐसे जीनेसे मरना अच्छाहै फिर गोपियोंने योगमायाको जो अनेकतरहकारूप धारणकरलेतीथी अपनेसाथ लेलिया व आपसमें बाललीला श्यामसुन्दरकी करना आरम्भकिया उसमें एक ब्रजबालाने आप श्रीकृष्ण बनकर योगमायाको पूतनाबनाया व दूधपीतीसमय छातीकीराह प्राणउसका

निकाललिया जब दूसरी गोपी यशोदाबनकर दहीमथनेलगी व कृष्णरूप ब्रजबाला ने वर्त्तन दही व मट्ठेका तोड़कर ग्वालरूप गोपियों समेत माखनखाना आरम्भकिया तब यशोदाने क्रोधकरके उन्हें ऊखलसे बांधदिया उससमय कृष्णरूप गोपी ने यमलार्जुन दोनोंवृक्ष जो योगमाया बनी थी उखाड़डाला जब इसीतरह योगमाया ने बत्सासुर व बकासुर व तृणावर्त्त व अघासुर राक्षसबनकर कृष्णरूपी ब्रजबालाको मारनेचाहा तब श्यामरूपगोपी ने उसे मारगिराया फिर योगमायाने बहुतसीगौ वहां प्रकटकरदिया तो कृष्णरूपगोपी उन्हें चरानेलगी जब योगमाया ने कालीनाग बनकर फुफकारमारना आरम्भ किया तब केशवरूप ब्रजबालाने उसको नाथडाला जब दूसरी गोपी ने बहुत कपड़ा लपेटकर गोवर्द्धनपहाड़ बनादिया तब कृष्णरूप ब्रजबाला ने उसे अँगुली पर उठालिया व पानीकीजगह उसपहाड़पर वृक्षोंकापत्ता बरसाया जब वृक्षहिलने व पत्तों के गिरनेसे शब्दहोताथा तब सबब्रजबाला उसे खटकापांव मनहरणप्यारे का समझकर कहतीथीं हे श्यामसुन्दर देखो तुम्हारीयाद व चर्चाकरके हमलोग अपने २ मनको धैर्य्य देती हैं अबतुम जल्दी अपनी मोहनीमूर्त्ति दिखलाओ ॥

दो० माखनप्रभु के रूपगुण ध्यानधरे जो कोइ।
मन्दहोय दुख शोचसब बहुसुख पावै सोइ ॥

हे राजन् उससमय गोपियोंने बालचरित्र श्रीकृष्णजीका करके ऐसा मनउसमें लीन करलिया कि अपनेतनु व वस्त्रकी सुधि भूलगईं ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

केशवमूर्त्तिके विरहमें गोपियों का बिलाप करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब फिर गोपियोंका चित्त ठिकानेहुआ तब यमुना किनारे बैठकर कहनेलगीं हे प्रीतम जबसे तुम ब्रजमें आये तबसे नित्यनये सुख हम लोगोंको दिखलाये जिनहाथोंसे तुमने लक्ष्मीका दानलेकर उन्हें अपने चरणों में बास दिया है वहीहाथ अपनी दासियों के मस्तकपर रक्खो ॥

क० जाही हाथ धनुष चढ़ायो है सीतापति जाही हाथ रावण संहारि लंकजारी है। जाहीहाथ तारेउ औ उबारेउ हाथ हाथीगहि जाही हाथ सिंधुमथि लक्ष्मी को निकारी है॥ जाही हाथ गिरिउठाय गिरिवर गिरिधारीभयो जाहीहाथ नन्दकाज नाथ्यो नागकारी है। हौंतो अनाथ हाथजोरे कहौं दीनानाथ वाही हाथ मेरोहाथ गहिबे की पारी है ॥

जिसदिनसे हमलोगों ने तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति देखी है उसी दिनसे हमारा ध्यान व प्राण तुम्हारे चरणों के पास रहकर संसारीव्यवहारमें नहींलगता सो हमें महा दीन व दुःखी जानकर अपना चन्द्रमुख दिखलाओ हमारीआंखें जो रोते २ जलरही हैं उन्हें ठण्ढीकरो कदाचित् तुम्हें हमलोगों को अपने विरहमें मारनाथा तो राक्षसों के हाथ व दावानल अग्नि व कालीनागके विष व इन्द्रके कोपसे क्योंबचाया कदाचित् तुम नन्द व यशोदाके बेटाहोते तो ऐसीकठोरताई न करते न मालूम किसके जनेहौ तुम्हारेविरह में हमाराहृदय जलरहाहै इसलिये दुःखीहोकर यह कठोरबचन तुमको कहती हैं हमारे मनकाहाल तुम्हें अच्छीतरह मालूमहोगा ॥

दो० दही दूधले जातथे माखन प्रभु ब्रजराज।
तबहूंतो बरज्यो नहीं बैरकरत कयहि काज ॥

यह बचन सुनकर दूसरी गोपीबोली सुनो प्यारियो उनको तानामारने से कभी नहीं पावोगी केवल बिनय करने से वे प्रसन्नहोंगे किसवास्ते कि उनकानाम दीनदयालुहै ॥

दो० तब उन सब गोपिन कह्यो नाहीं और उपाय।
माखन प्रभु बिनती करौ तबै मिलैंगे आय ॥

यह बात बिचारकर सब ब्रजबालों ने कहा हे श्यामसुन्दर तुम केवल नन्द व यशोदा के पुत्र नहींहौ आपको ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता पृथ्वीका भार उतारने व संसारी जीवोंकी रक्षा करनेवास्ते क्षीरसागरमें से प्रार्थनाकरके लिवालाये हैं सो हे प्राणनाथ हमलोगों को एक बड़ा अचम्भा मालूम होताहै जब हमारी ऐसी अबला व दुखिया-रियोंका प्राण लेतेहो तो रक्षा किसकी करोगे क्या हम स्त्रियोंका प्राण मारने वास्ते आपने मूर्खताई पकड़ी है हे मनहरणप्यारे तुम्हारे मन्द २ मुसुकान व तिरछीचितवन व भौंहकी मटक व गर्द्दनकी लटक व बातोंकी चटक जब हम लोगोंको याद आवती है तब चित्त हमारा ठिकाने नहीं रहता जब तुम बनमें गोचराने जातेथे तब चारपहर दिन तुम्हारे विरहमें हमको चारयुगके समान बीततेथे फिर सन्ध्यासमय तुम्हारा चंद्र मुख देखकर अपनी आंखें ठण्ढीकरके कहती थीं ब्रह्माजी बड़े मूर्ख हैं जिन्हों ने आंखोंपर पलक बनादी कि पलक भांजने से उतनी देरतक तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति नहीं दिखलाई पड़ती हे जगत्पालक जिन चरणोंका ध्यान ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता आठोंपहर अपने हृदयमें रखते हैं उन्हीं चरणोंका दर्शन देकर हमारी इच्छा पूर्णकरो वे चरण कैसे हैं जिनके देखने व दण्डवत् करने से अनेक जन्मके पापछूटजाते हैं व लक्ष्मीजी अपने हाथ उन्हें दाबती हैं हे श्यामसुन्दर जब तुम्हारे बिरहमें हमारा प्राण निकलजावैगा तब पीछेसे अमृत पिलाकर क्या करोगे अबतक केवल तुम्हारे मिलनेकी आशा पर

प्राण अपना राखे हैं सो अपनी छवि दिखलाकर कामरूपी दुःख हमारा छुड़ावो व बंशी सुनाकर चिन्ता हमारी मिटावो रातसमय स्त्रियोंको कोई अकेला नहीं छोड़देता जिस तरह तुम लक्ष्मीजी को दिनरात छातीमें लगाये रहतेहो उसीतरह हमलोगोंको भी अपने चरणोंसे अलग मतकरो निर्दयी छोड़कर वेग अपना दर्शन देव तुम्हारा नाम संसारमें गोपीनाथ प्रकटहै सो अपने नामकी लज्जाकरो या अपना नाम गोपीनाथ मतरक्खो तुम अपने श्यामरङ्गके समान मनभी कालाकरके ऐसी निर्दयीकरतेहो जो हमें विरहसागरसे बाहर नहीं निकालते और तुम्हें ढूंढ़तीसमय हमारे पांवों में कांटे चुभते हैं तिसपरभी दया तुम्हें नहीं आवती हम लोगोंको अपने दुःख पावनेका तो इतना शोच नहीं है पर तुम्हारे कमलरूपी चरणों में रातको भागतीसमय जो कांटे चुभते हैं वह हमारे कलेजे में सालते हैं किसवास्ते कि तुम्हारे चरणोंका बास हमारे हृदयमें रहताहै इसलिये तुम जल्दी यहां चलेआवो तो तुम्हारे कोमल २ चरणों को नरम २ छातियों पर मलकर अपना २ कलेजा ठण्ढाकरें या तुम कहीं बैठकर रात बितादेव जिसमें तुमको दुःख न होवै तुम्हें कष्ट पहुँचनेसे हमलोगोंका प्राण निकल जावैगा अपने जानकारीमें हमलोगोंने कुछ अपराध तुम्हारा नहीं किया फिर किस वास्ते खेद मानकर इतनी कठोरताई करतेहो कदाचित् इसवास्ते हमारे ऊपर क्रोध कियेहो कि बिना आज्ञा अपने पतियों के तुमलोग रातको मेरेपास क्यों चली आई सो इसबातमें भी हमलोगोंका दोष नहीं है किसवास्ते कि तुम्हारी बंशी सुनकर देवता व ऋषीश्वर आदिकका चित्त ठिकाने नहीं रहता व उसकी ध्वनि सुनने से देवकन्या मोहित होकर अपने को नहीं सँभालने सक्तीं हम लोगोंकी क्या सामर्थ्य है जो मुरली सुनकर अचेत न होजावें कदाचित् आप ऐसाकहैं कि तुम्हारी कामरूपी अग्नि अपने अपने पतिसे भेंटकरनेमें बुझेगी सो ऐसा न समझिये हमारी अग्नि उनसे बुझनेयोग्य होती तो हम अपने २ पतिको छोड़कर तुम्हारे पास क्यों आतीं सो हे दीनानाथ कदाचित् हम लोगोंकी प्रीति मनसा बाचा कर्मणासे तुम्हारे चरणों में हो तो अपना दर्शन देकर हमारा दुःखहरो ॥

दो० अंग अंग सब दृगभये मोरपंख की भांति ।
माखनप्रभु जो आमिले सुन्दर मुख मुसकाति ॥

हे राजन् जब यह सब बिनती व बिलाप करनेपर भी केशवमूर्त्तिका दर्शन नहीं मिला तब सब ब्रजवालों ने व्याकुल होकर मिलनेका भरोसा छोंड़दिया व मूर्च्छित होकर पृथ्वीपर गिरपड़ीं व अति बिलापसे रोदनकरके कहनेलगीं हे माधव हे मुकुन्द हे मोहनप्यारे हे नन्दलाल हे केशवमूर्त्ति अब हमलोग तुम्हारे विरहमें अपना प्राण देती हैं जैसा उचित जानो वैसाकरो ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

गोपियोंके मध्यमें श्यामसुन्दरका प्रकटहोना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब इसीतरह सब ब्रजबाला विलाप करते २ मरण तुल्यहोगईं तब उनकी सच्ची प्रीति ने श्यामसुन्दरके अन्तःकरण में प्रवेश किया जब केशवमूर्त्तिने देखा कि अब ये मेरे विरहमें मरने चाहती हैं तब अचानक उसी जगह श्यामसुन्दरने पीताम्बर व बैजन्तीमाला पहिनेहुये इसतरह प्रकट होकर दर्शन दिया जिसतरह नटलोग अपने करतबसे अन्तर्द्धान होकर फिर प्रकट होजाते हैं ॥

क० राखेंगी न प्रान यह जानिकै कुंवरकान्ह प्रकटेसुजान बीच तान बानप्यारे हैं। लखतही गोपिनकेवृन्दमें अनंदबाढ़ी मन्दमुसुकात ब्रजचंद्यों निहारे हैं ॥ भनै बलदेव कहे बानी सुधासानी सुनो सकल सयानी तुम सबै दुःखभारे हैं। गले मालडार मुख पीतपटधारे पिय कहत पुकारे हम ऋणियाँ तुम्हारे हैं ॥

हे राजन् अपने चित्तचोर को देखतेही सब ब्रजबाला सचेत होकर इसतरह उठ खड़ीहुईं जिसतरह मुर्देके तनमें प्राण आजावें उससमय जैसी प्रसन्नता ब्रजबालों को मोहनप्यारेका दर्शन पाने से हुई उसकाहाल वर्णन नहीं होसक्ता उस आनन्दका सुख वही मनुष्य कुछ जानताहै जिसका बिछुड़ाहुआ मित्र बहुत दिनोंमें आनमिले वेसे गोपियां कामरूपी सांपके डसजाने से कुँभिला गईथीं जिसतरह कि अमृत पड़ने से सूखेवृक्ष हरे होजाते हैं उसीतरह मोहनीमूर्तिकी अमृतरूपी दृष्टि पड़ने से उनके तनमें प्राण आगया जैसे रातिको कमलका फूल मलीन रहकर प्रातसमय सूर्य्यके प्रकाशसे फूलजाताहै वैसे गोपियां जो मुरझाई हुईथीं वृन्दावन बिहारीकासूर्य्यरूपी कुण्डल देखतेही खुशी से फूलगई जिसतरह डूबताहुआ मनुष्य थाह पाकर खुशी होताहै उसीतरह ब्रजबालों ने जो बीच विरहसागर केशवमूर्त्तिके गोता खारहीथीं उनको देखतेही किनारे लगगईं व मोहनीमूर्त्तिको चारोंओरसे घेरलिया ॥

दो० कामतापसे बामयक लगी श्याम उर जाय।
ज्यों चन्दन के वृक्ष में रहत सर्प लपटाय ॥

हे राजन् इसीतरह किसी ब्रजबालाने केशवमूर्त्तिके अंगसे लपटकर अपनीछाती ठंढीकिया व किसीने उनकामुख चूमकर अपनेमनोरथके फलोंसे झालभरलिया उस समय श्यामाबोली हे प्राणनाथ हमलोग तुम्हारेप्रेममें लोकलाज तजकर यहांआई सो तुम हमें अकेली छोड़कर अन्तर्द्धानहोगये यह कौन न्यायकीबात है वृन्दावनबिहारी

ने कहा तुम्हैं रातको अपनेघरसे बनमें चलाआवना उचित नहींथा तुमलोग वहां बैठी हुई मेराध्यान व स्मरणकरतीं तोमैं बहुतप्रसन्न होता ऐसाकहकर मुरलीमनोहरने राधा प्यारीको गलेसे लगालिया व मीठी २ बातैं सुनाकर सब ब्रजबालोंको प्रसन्नकिया तब एकगोपीने फूलकमलका मोहनप्यारे के हाथसे छीनलिया दूसरीब्रजबाला उनका हाथ पकड़कर बड़े प्रेमसेबोली हे चितचोर इतनी देरतक तुमकहांरहे दूसरीगोपीने अपना मुंह चन्द्रमुखसे मिलाकर उनका जूठापान प्रेमकीराह खालिया दूसरी ब्रजबाला चित्र-कारीके समान खड़ीहोकर उनकारूप रस आंखोंकीराह पीनेलगी व दूसरीगोपीने श्यामसुन्दरके मुखका चुम्बालेतीसमय उनकाओठ अपनेओठसे दबादिया दूसरीसखी बोली तुम बहुत भागकर चलेजातेथे अब मेरेहृदयसे बाहरजावोगे तोमैं जानोंगी कि बड़े बलवान्हो दूसरी ब्रजबाला अपनाहाथ मोहनप्यारेके कन्धेपर रखकर उनकीछबि देखनेलगी जब यहदशा ब्रजबालोंकी देखकर श्यामसुन्दर उन्हैं यमुनाकिनारे लेगये तब एक गोपीने अपनीओढ़नी बिछाकर बड़ेप्रेमसे केशवमूर्त्तिको उसपर बैठाला और सब ब्रजबालोंने उनको इसतरह चारोंओरसे घेरलिया जिसतरह चंद्रमाके आसपास तारेरहतेहैं व कोईगोपी क्रोधसेबोली तुम कपटकीराह परायातन व मन हरकर किसीका गुण नहींमानते आज हमारी इच्छापूर्णकरो नहींतो अपनाप्राण तुमपरदेवेंगी जब ऐसा कहकर सब ब्रजबालोंने उसचांदनीकी शोभा देखने व शीतल मन्द सुगन्ध हवाबहने से कामातुरहोकर श्यामसुन्दरसे भोगकी इच्छाकिया तब वैकुण्ठनाथ अन्तर्य्यामी भक्त हितकारी उनकामनोरथ सिद्धकरनेवास्ते जितनी गोपियांथीं उतनेरूपहोगये उससमय ब्रजबालोंने अपनी अपनी ओढ़नी उतारकर बालूपर बिछादिया व उसकोमल बिछौने पर मोहनप्यारेको बैठाकर कामरूपी बातैं उनसे करनेलगीं तब श्यामसुन्दरने पहिले बाललीलाका सुख उन्हैं दिखलाकर फिर किशोर अवस्था अपनी बनालिया व सब गोपियोंसे अलग अलग गन्धर्व विवाहकरके उनकी मनोकामना पूर्णकिया उससमय बड़े आनन्दमें एक ब्रजबाला जो तिरछी चितवनसे देखतीथी बोली हे प्राणनाथ तुम बड़े कपटी व निर्दयीहो और सब ब्रजबाला सीधी व भोली तुम्हारे छलमें आनकर धोखाखाती हैं व मेरामन तुमसे बोलनेको नहींचाहता पर क्याकरूं तुम्हारी मोहनी मूर्त्ति देखकर बिनाबोले रहानहींजाता देखो जब तुम अन्तर्द्धानहोगयेथे तब हमलोगोंने तुम्हारे बिरहमें कितना दुःख उठाया फिर इसतरह प्रकटहुये जानो कहीं नहींगये थे सो तुम्हैं मनमें कपटरखना व गुणको छोड़कर अवगुणकी ओर देखना उचित नहीं है यह बचनसुनकर दूसरी गोपीबोली अयप्यारी तुमचुपरहो अपनेकहनेसे कुछ शोभा नहींहोती देखो मैं श्रीकृष्णके मुखसे उनकी कठोरताईका हाल कहलादेतीहौं ऐसाकहकर उसगोपी महाचञ्चलने मुसुकराकर पूछा हे मोहनप्यारे संसारमें चारतरह के मनुष्य होते हैं एक वह जैसे दो मनुष्य आपसमें प्रीतिरखकर एक दूसरेके साथ

नेकीकेबदले भलाईकरैं दूसरे वह एकओरसे प्रीतिहोकर दूसरा प्रेम न रक्खै तीसरे वह कि बुराई करनेवाले के साथभी भलाईकरता है चौथा वह कि नेकीकरनेपरभी जान बूझकर उसकेसाथ बुराईकरै बतलाओ इनचारोंमें कौन भलाहोकर किसको बुराकहना चाहिये ऐसासुनकर श्यामसुन्दरने कहा तुमने बहुत अच्छीवात ज्ञानबढ़ानेवाली पूंछी है मैं आपचाहताथा कि संसारी मनुष्योंका हाल तुमसेकहूं अब अपनेप्रश्नका उत्तर मनलगाकर सुनो जो मनुष्य आपस में नेकीकेबदले भलाईकरते हैं उनको संसार में अच्छासमझनाचाहिये जैसे संसारीलोग बिवाहआदिकमें एक दूसरेकेवर बैना व भाजी देतेहैं पर यह प्रीति सदास्थिर नहींरहती दूसरे वह कि एककीओरसे प्रीतिहोकर दूसरा मनुष्य उनकेसाथ प्रेम न रक्खै जैसे माता पिता पुत्रको बहुतप्यार करतेहैं परन्तु पुत्र उतना प्रेम नहींरखता तीसरे जो मनुष्य बिनाइच्छा सबकेसाथ भलाईकरताहै उसेबर्षा के समान समझनाचाहिये जिसतरह पानीबर्षकर सब छोटे व बड़ोंको सुखदेताहै और उसकेबदले किसीसे कुछ नहींचाहता यही हाल परमहंस व महात्मालोगोंकाभी समझो कि वहलोग अपनी सामर्थ्यभर दूसरेका भलाकरके उससे कुछ चाहना नहींरखते चौथे जो मनुष्य भलाईके बदले जानबूझकर उसकेसाथ बुराईकरते हैं उन्हें शत्रुसमझना चाहिये और वे मनुष्य कृतघ्न व अधर्मी कहलातेहैं यह वचनसुनतेही सब ब्रजबाला आपसमें एक दूसरेका मुख देखकर हँसनेलगीं व एकगोपीने दूसरीसखीसे सैनमें बतलाया कि श्रीकृष्णजी चौथे मनुष्यकी तरहहैं तब मोहनप्यारे बोले तुमलोग मुझे हँसकर क्या कहतीहो मैं निर्गुणरूप आत्माराम इनचारोंसे रहित रहकर किसीके साथ कुछ प्रीति नहींरखता मुझसे जो कोई जिनबातकी चाहनाकरता है उसकीइच्छा पूर्णकरदेताहूं व बिश्वम्भरनामसे सब जीवोंको पालनकरके एकक्षण किसी जीवको नहींभुलावता व किसीसे कुछ इच्छा न रखकर केवल सच्चाप्रेम उनकाचाहताहूं व अयगोपियो तुम लोग मुझसे प्रीतिरखतीहो इसलिये यह बातकहताहूं जिसतरह संसारीमनुष्य गाड़ेहुये धनको आठोंपहर याद रखकर उसका हाल किसीसे नहींकहता इसीतरह जो मनुष्य मुझसे गुप्तप्रीतिरखकर मेरेचरणोंमें अपना मनलगाये रहताहै उसे मैं बहुतप्यारकरताहूं॥

दो० माखनप्रभु गोपाजसों यहि बिधि राखो हेत ।
ज्यों निर्द्धन धनपायके भेद न काहू देत ॥

कदाचित् तुम ऐसाकहो कि मनसा बाचा कर्मणासे हमलोग तुम्हारेचरणों में ध्यानलगाये रहती हैं फिर तुम क्यों हमें छोड़कर अन्तर्द्धानहोगये थे तो इसका यह कारणहै हमने तुम्हारी प्रीतिकी परीक्षालियाथा तुमलोग इसबातका कुछ बुरा न मान कर मेराकहना सच्चाजानो मैं प्रेम बढ़ावनेवास्ते तुमलोगोंमेंसे अन्तर्द्धानहोगयाथा जिस तरहजाड़ेमें धूप अच्छीमालूमहोती है उसीतरह अपनेमित्रसे अलगरहनेमें प्रेम अधिक

होताहै अयगोपियो तुम्हारे प्रेम व ध्यान करनेसे मैं बहुत प्रसन्नरहताहूं पर तुमलोग अपने कुल व परिवारकी लज्जा छोड़कर रातको जो यहां चलीआई यह अच्छीबात नहींकिया ऐसाकरनेमें न हम प्रसन्नहुये न दूसरेको यहबात अच्छीमालूमहोगी जबतक मनुष्य जन्मलेकर जीतारहै तबतक कोई खोटाकाम उपहासका न करे कदाचित् मन उसका अशुभकर्म्म करनेवास्ते चाहै तौ भी ज्ञानकी राह अपने मनको रोकै जिसमें कोई उसे बुरा न कहै और यहभी मैं जानता व समझताहूं कामरूपी प्रेमबढ़नेसे बेड़ी लज्जाकी टूटजाती है व उसको किसीका समझाना कुछ गुण नहींकरता तुमलोगोंकी प्रीति व विलापकरनेका हाल मैं आंखोंसे खड़ाहुआ देखताथा तुमलोगोंने मायारूपी बेड़ी संसारकी जो कभी पुरानी नहींहोती तोड़कर मेरेसाथ ऐसी सच्चीप्रीति कियाहै जैसे परमदरिद्री बड़ाधनपावे इसलिये मैं तुमसे उऋण नहींहोसक्ता ॥

चौ० जैसे आई मेरे काज । छांड़ी लोक वेद की लाज ॥
ज्यों बैरागी छांड़ै गेह । मन दै हरिसों करै सनेह ॥
मैं क्यातुम्हरी करौंबड़ाई । हमसे पलटो दियो न जाई ॥

हे प्राणप्यारियो ब्रह्माकेआयुर्दा प्रमाणजीकर एकएक गोपियोंकी सेवाजन्मभरकरौं तौभी तुमसे उद्धार नहींहोसक्ता इसवास्ते तुम्हारा ऋणियाहूँ ॥

दो० अब तुमरहो उदास मति मनमें करो हुलास ।
महारास अब साजिकै पूरणकरिहौं आस ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका गोपियोंके साथ महारास करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरने यह बचन प्रेमभराहुआ कहकर गोपियोंको धीर्यदिया तब सब ब्रजबाला बड़े आनन्दसे हाथ श्यामसुन्दरका पकड़कर नाचनेलगीं इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज रासलीला में जिसगोपीका हाथ मुरलीमनोहर पकड़ेथे उसका अंग मोहनप्यारेसे स्पर्शहोताथा और सब ब्रजबालों की कामना किसतरह पूरीहुईथी शुकदेवजीबोले हे राजन् परब्रह्म परमेश्वरकी महिमा कोई नहीं जानसक्ता मुरलीमनोहरने दो २ गोपियोंके बीचमें एक २ रूप अपना प्रकटकरके दाहिने व बायें दोनोंगोपियोंका हाथपकड़ेहुये मण्डल बांधकर रासलीला कियाथा पर उनकीमायासे सबगोपियां अनेकरूप धारणकरनेका हाल न जानकर यह समझतीथीं कि केशवमूर्त्ति हमारेसाथ नाचते हैं और इस आनन्दरूपी नाचमें हाथ व पैरकीठोकर देकर अंगसे अंग रगड़ना व आंख व भौंह मटकाकर कटाक्षकरना व

गर्द्दनटेढ़ीकरके कुण्डलहिलावना जो २ बातें रास व बिहारमें चाहिये वह सब मुरली मनोहर ब्रजबालोंकेसाथ व गोपियां वृन्दावनविहारीसे करतीथीं उससमयशोभा श्याम रंग मोहनप्यारेकी गोरी २ गोपियोंमें कैसीमालूम देतीथी जैसे सुनहले दानोंकीमाला में नीलमणि रहती है व नाचतीसमय उनकेकानोंका कुण्डल कैसी शोभादेताथा जैसे श्यामघटामें बिजुलीचमकती है उसीसमय ब्रह्मा वमहादेवआदिक देवता व ऋषीश्वरों ने ध्यान परमेश्वर का छोड़दिया व रासलीला का सुखदेखने वास्ते अपनी २ स्त्रियों समेत विमानों पर बैठकर वृन्दावन में आये व आकाशमार्ग से श्यामसुन्दर व ब्रज बालों पर फूल बरसाकर ब्रजबासियों के भाग्य की बड़ाई करनेलगे व गन्धर्वों ने अनेकतरह का बाजाबजाकर गाना आरम्भ किया व देवकन्या व अप्सरा रासलीला की शोभा देखतेही कामरूपी मदमें ऐसी मोहित व अचेतहोगई कि उनके कमरका घुँघुरूखुलकर गिरपड़ा व तनमनकी सुधिजाती रही ॥

दो० देवराज शोभित सरिस इन्द्राणी के संग।
माखनप्रभुके दरशको हँसत नयन सब अंग॥

चन्द्रमा व तारागण वह आनन्द देखतेही चित्रकारी से खड़े होगये और उन्हें आगे चलनेकी सामर्थ्य नहींरही व चन्द्रमाने प्रसन्नहोकर अपनी किरणसे रासमंडल पर अमृतबरसाया सो चन्द्रमाके खड़ेरहने से वहरात छः महीनेके बराबर होगई पर नारायणजी की महिमासे रातबढ़ने का हाल किसीने नहीं जाना इसलिये उस रात्रि का नाम संसारमें प्रेमरात्रि प्रकटहुआ हे राजन् नाचनेके परिश्रमसे ब्रजबालोंके मुख पर पसीना निकलकर बिथरेहुये बालोंमें कैसी शोभा देताथा जैसे काले २ सांप ओस की बूंद चाटनेआये हों उससमय श्यामसुन्दर अपने पीताम्बर से पसीना उन का पोंछदेते थे व कोई गोपी नाचते २ थककर केशवमूर्त्ति का हाथ पकड़ेहुये पृथ्वी पर बैठजाती थी पर नाचना व ताल व स्वरनहीं बिगड़ताथा बाजी ब्रजबाला अपनाहाथ मोहनप्यारे के शिर व कंधेपर रखकर कहती थी नाचते २ मेरापांव दुखनेलगा तनिक सुस्ताकर फिर नाचूँगी कोई ब्रजबाला मोहनप्यारे की माला चूमकर कहती थी अय प्राणनाथ तुम्हारे गलेमें यहहार बहुत सुन्दर मालूम होताहै व बाजी गोपी घूमते २ थककर श्यामसुन्दर के गलेसे लपटके कहतीथी मैं तुम्हारे शरण आईहूं मुझे कभी अपने चरणोंसे अलग मतिकरना व कोई सखी मोहनप्यारे के हाथसे कमल का फूल छीनकर उन्हें कहतीथी मेरेकलेजे पर हाथरखकर देखो कैसा धड़कताहै आठों पहर तुम मेरे हृदयमें रहतेहो इसलिये मैं डरतीहूं कि कलेजा धड़कने से तुमको कुछ दुःख न पहुँचे ॥

दो० नख शिखसे भूषण सजे ब्रजभूषण के हेत।

गान करत अतिचावसों निरतत अतिछबिदेत ॥

इतनी कथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इसीतरह श्यामसुन्दर ब्रजबाला के साथ अनेकतरहका बाजाबजाकर छःराग व छत्तीसरागिनी अलापके रास व बिलास करतेथे व कभी बंशी में अनेकतरहकी उपजबजाकर मन ब्रजबालोंका अपनी ओर मोहिलेतेथे उस आनन्दरूपी नाचमें गोपियां कामदेवके मदमें ऐसी मोहितहोगईं कि उनको अपनेतनु व मनकी कुछ सुधिनहींरही कभी घूमतीसमय अंचल ब्रजबालों का उड़जाताथा तो कुचोंकी सुन्दरताई देखकर देवता मोहिजातेथे व कभी नाचतीसमय मुकुट श्यामसुन्दरका खुलकर गिरनेलगता था तब गोपियां अपनेहाथसे उसे बांधदेती थीं व कभी मोतियोंकाहार ब्रजबालों के गलेसे टूटकर गिरजाता व बनमाला श्यामसुन्दरका खुलकर गिरपड़ताथा उसके उठानेकीसुधि कोईनहींरखताथा कभी कोई सखी मुरलीमनोहरके साथगाकर ऐसा स्वर मिलादेतीथी कि वृन्दावनबिहारी उसके गाने से मुरली बजाना भूलजाते थे ॥

दो० माखन प्रभु घनश्याम सँग सुन्दरिब्रजकी बाम ।
दामिनिज्योंशोभितमहा निरततगतिअभिराम ॥
निरततहां हुलास सों माखनप्रभु सुखरास ।
आसपास बनिता सबै सुभग सुबास निवास ॥

हे राजन् जिसतरह बालक अपनामुख शीशे में देखकर भूलजाताहै उसीतरह सब ब्रजबाला राग व रंगकेमदमें मोहितहोकर अपनागहना व कपड़ा एकदूसरीपर न्यवछावर करतीथीं उससमय राग व रागिनीका ऐसासामा बँधाथा जिसेसुनकर यमुनाजल बहनेसे थम्हिरहा व हवाचलने से ठहरगई व सब पशु व पक्षी उसबनके वह लीला देखकर मोहितहुये कि चरना व उड़ना भूलकर चित्रकारीसे खड़ेहोगये केशवमूर्त्ति व राधाप्यारी जो बीचमें नाचतेथे उनकी सुन्दरताईपर सबब्रजबाला बलायेंलेकर आपस में प्रसन्नहोतीथीं उससमय एकब्रजबाला ने आप नन्दबनकर दूसरीसखी को वृषभानु बनाया व श्रीकृष्णका बिवाह राधिकासेकरके समधियों के समान आपसमें शिष्टाचार किया व श्यामाके हाथमें कंकणबांधकर श्यामसुन्दरसेकहा खोलो जब वहकंकण नहीं खुला तब सबब्रजबाला हँसनेलगीं व राधा श्रीकृष्णकी बिधिपूर्व्वक पूजाकरके बोलीं ॥

दो० तहँ नदनंदन लाड़िली श्रीवृषभानु कुमारि ।
दुल्लह दुलहिनि राजहीं शोभा अमित अपारि ॥
सो० दुल्लह नन्दकुमार दुलहिनि श्रीराधा कुंवरि ।

सन्तन प्राणअधार अचलरहै जोड़ीसदा ॥

हे राजन् यहचरित्र देखकर राधा व कृष्ण बहुत प्रसन्नहोते थे व नाचती समय गोपियोंके अंगसे जो फूल टूटकर गिरपड़तेथे उनपर ऋषीश्वर व मुनीश्वर भँवररूप धरकर रासलीलाका सुखदेखनेवास्ते गूंजतेथे और शब्द घुँघुरू पायजेब व करधनी व्रज-बालोंकी सुनकर वहभौंरे उड़ना भूलगये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् किसे सामर्थ्य है जो गोपियों की बड़ाई बर्णनकरने सकै अन्तसमय सब व्रजबालों ने आप मुक्तिपाकर तीन २ पीढ़ी अपने माता व पिताको कृतार्थ करदिया व परमात्मा पुरुषने अपनेभक्तोंका मनोरथ पूर्णकरनेवास्ते व्रजबालारूप जीवआत्मासे सच्ची रास-लीलाकरके जैसासुख उन्हें दिया वह आनन्दकाहाल कहानहींजाता जिसतरह बालक अज्ञान शीशेमें मुखदेखकर अपनी परछाहींसे खेलताहै वहीगति केशवमूर्तिने किया जब अंगके स्पर्शसे गोपियोंके शरीरका केशर व चंदन मोहनप्यारेके तनु व बैजयन्ती माला में लगजाताथा तब वृन्दाबनविहारी गोपियोंसे कहतेथे मैंने केशर व चन्दन नहींलगाया यहसब तुम्हारे शरीरका मेरेअंगमें लगकर सुगंधउड़ती है जब गोपियां नाचती व कूदती हुई गिरपड़ती थीं तब वृन्दाबनविहारी अनेकरूप से उनकाहाथ पकड़कर अपने पास खींचलेतेथे देवतालोग वहसुख देखकर डाहकीराह कहतेथे हे श्यामसुन्दर हमारा जन्म भी वृन्दाबनमें देते तो तुम्हारेसाथ रासलीलाकरके जन्म अपना स्वार्थकरते ॥

दो० धनिवृन्दाबन धन्य सुख धन्यश्याम धनिरास ।
धनि धनि मोहन गोपिका नितनवकरतहुलास ॥

हे परीक्षित रासलीला करते २ मोहनप्यारे के मन में कुछ तरंगआगई तो सबव्रज-बालोंको साथलियेहुये जागनेकीगर्मी मिटानेवास्ते यमुनाजलमें पैठगये जिसतरह मत-वालाहाथी हथिनियोंको साथलेकर जलक्रीड़ा करताहै उसीतरह अलग २ रूपधरकर राधाआदिक गोपियोंसे जलबिहारकिया जब स्नानकरनेसे जागने व नाचने की गर्मी मिटाकर बाहरनिकले तब योगमायाने सबव्रजबालों व अनेकरूप श्यामसुन्दरके पहिरने वास्ते उत्तमभूषण व बस्त्र वहांलादिया व इतरआदिक सुगन्ध अंगमें लगाकर एकएक गजरा सबकेगलेमें ऐसापहिनाया जिसकाफूल कभी न कुम्हिलावै जब वृन्दाबनबिहारी श्यामाआदिक गोपियों को संगलेकर बनबिहार करनेलगे तब देवतों ने उनपर फूल बरसाये व उतारीहुई गीली धोतियां उनकी आपसमें प्रसादोंके समान टुकड़े २ बांट-लिया जब बनविहार करचुके तब श्यामसुन्दरने गोपियोंसेकहा स्नानकरनेसे तुम्हारी मांदगी छूटगई अब चारघड़ीरात्रि बाकी है सो अपने २ घरजाव यहबचन सुनतेही सब व्रजबाला उदासहोकर बोलीं हे व्रजनाथ तुम्हाराचरण छोड़कर अपने घर कैसे जावें बैकुण्ठनाथनेकहा जिसतरह योगी व ऋषीश्वरलोग मेराध्यान करते हैं उसीतरह तुम

लोगभी अन्तःकरणसे मेरी यादरक्खो तो आठोंपहर तुम्हारेपास मैं बनारहूंगा यहबात सुनतेही सबव्रजवाला मनको धैर्य्यदेकर श्यामसुन्दरसे बिदाहुईं और अपने अपने स्थान-पर आईं व घरवालोंको सोयाहुआ देखने व अपनी २ मनोकामना पावने से बहुतप्रसन्न हुईं व परमेश्वरकी मायासे यहबात उनकेघरवालोंने नहींजाना कि हमारीस्त्रियां रात्रि समय कहीं बाहरगईथीं इसलिये मोहनप्यारे से किसीग्वालने कुछबुरानहींमाना इसतरह कभी २ नन्दलालजी गोपियोंकेसाथ रासलीला व वनविहार करतेथे इतनीकथा सुन-कर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ एकसंदेह मुझे है सो छुड़ादीजिये श्रीकृष्णजी ने पृथ्वी काभार उतारने व धर्म्मके बढ़ानेवास्ते अवतारलेकर विपरीत वेद व शास्त्रके परस्त्रियों से क्यों विहारकिया यहवचन सुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन् मैं तुमसे पहिले गोपियों के जन्मलेनेका हाल कहिचुकाहूं कि वे सब वेदकी ऋचाथीं व लक्ष्मीजीने राधाका अव-तारलेकर श्रीकृष्णजी के साथ संसार में लीलाकी थी इसलिये उनको श्यामसुन्दर से अलग समझना न चाहिये और जो अनेकरूप वृन्दावनबिहारी का सब गोपियों के पासथा उस बातकी महिमा कोई नहीं जाननेसक्ता और जिसकाममें बुद्धिका प्रवेश नहो उस बातमें दोष लगाना न चाहिये विषखाना महादेवका काम होकर दूसरे को ऐसी सामर्थ्य नहीं थी जो उसकी गर्मी सहनेसक्ता परमेश्वरनिर्गुणरूप संसारी बातोंसे कुछ प्रयोजन नहीं रखते इसलिये उन्हें दोष लगाना अधर्म होताहै वेद व शास्त्रका बचन सच्चा मानकर उसी के प्रमाण करना चाहिये व बैकुण्ठनाथकी लीलामें सन्देह करना उचित नहीं है व जिन परमेश्वरका नाम लेने व ध्यान करने से बड़े २ योगी व मुनि कृतार्थ होजाते हैं उन आदिपुरुष परमेश्वरको मनुष्य समझकर दोष लगाना बड़ा पापहै अग्निमें जिसतरह अशुद्ध वस्तुभी जलने से पवित्र होजाती है उसीतरह समर्थ लोग क्या नहीं करते और यह सब लीला नारायणजी ने संसारीजीवों को भवसागर पार उतरनेवास्ते जगत् में कीथी जिसके पढ़ने व सुनने से कलियुगबासी लोग मुक्ति पावैं और वह परब्रह्मपरमेश्वर अपने सुखवास्ते कुछ नहीं करते जो कोई उनका भजन व स्मरणकरके जिस वस्तुकी चाहना रखताहै उसका मनोरथ पूर्ण करते हैं यहस्वभाव उनका सदासे चलाआताहै व संसारी ब्यवहारसे रहित होकर सब वस्तुमें वर्त्तमान रहते हैं पर ज्ञान प्राप्त हुये बिना किसी को नहीं दिखलाई देते व गोपीनाथका यश गावनेवाले मनुष्य परमपदको पहुँचते हैं व श्यामसुन्दरकी लीला सुननेका फल सब तीर्थ स्नानकरने के बराबर होताहै व ब्रजवालोंके जो पतिथे उनके शरीरमेंभी श्याम-सुन्दरका प्रकाशथा इसलिये सब गोपियों के पति श्रीकृष्णजीको समझना चाहिये और यह पंचाध्याईकी कथा वांचने व सुननेवाले जीव सब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदार्थ को पाते हैं परमेश्वरकी कथामें किसी बातका सन्देह न रखकर वेद व पुराणके वचन पर बिश्वास करना चाहिये ॥

दो० मोमनमें अचरज बड़ो तुमसों ज्ञानी होय।
माखनप्रभुकी कथा में भरममानिये सोय॥

हे परीक्षित आजसे ऐसा सन्देह चित्तमें कभी मति लेआना अज्ञान मनुष्यको क्या सामर्थ्य है जो परमेश्वरके कामों में अपनी बुद्धि मिलानेसके॥

दो० माखनप्रभु गोपालकी लीला परम पुनीत।
भाग्य उदय जगमें वही जो सुनिये करिप्रीत॥

चौंतीसवां अध्याय॥

नन्दजीकी आधीटांगको अजगर सांपका निगलजाना॥

शुकदेवजी बोले हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने सुदर्शन विद्याधरको सांपकी योनिसे छुड़ाकर शङ्खचूड़दैत्यको माराथा उसकीकथा कहते हैं सुनो नन्दजी ने एकदिन सब ग्वाल व गोपियों से कहा हमने श्रीकृष्णजी के जन्मतेसमय यह मानता मानीथी कि जब मोहनप्यारे बारहवर्ष के होंगे तब मैं अपने सब जातिभाई व बाजे गाजेसमेत जाकर पूजा अम्बिकादेवी की करूँगा सो महारानी की कृपासे वहदिन मुझे दिखलाई दिया इसलिये सबको चलकर पूजा उनकी करना चाहिये यह बचन सुनतेही वे लोग प्रसन्न होगये तब एकदिन नन्द व यशोदा कृष्ण व बलराम व सब ग्वालबाल व गोपी व छोटे बड़ोंको साथ लेकर बड़े हर्षसे गाते बजाते चले व दूध व दही व मेवा व मिठाई आदिक सामग्री पूजाकी गाड़ी व बैलोंपर लदवाये हुये सरस्वती के किनारे पहुँचकर स्नानकिया व पुरोहितको बुलाकर विधिपूर्व्वक देवीजी को पूजा और हाथ जोड़कर बोले हे अम्बिकामाता तुम्हारी कृपासे मेरी मनोकामना पूरीहुई फिर नन्दजी ने बहुत सी गो व सोना बिधिपूर्व्वक दानदेकर हजार ब्राह्मणों को अच्छीतरह भोजन खिलाया उसदिन महादेवभी देवतों समेत दर्शन करने आये थे जब पूजाकरने व परिक्रमालेने व ब्राह्मण खिलाने में सारादिन बीतकर सन्ध्याहुई तब नन्दजी आदिक सबलोग तीर्थ ब्रत रखकर रातको वहीं सोरहे॥

दो० ऐसी बिधिसोये सभी सुधिनरही तनुमाहिं।
बारम्बार पुकारिये तबहूं जागत नाहिं॥

हे राजन् उसी निद्राके समय जब आधीरातको एक अजगर आनकर नन्दरायकी आधीटांग निगलगया व उन्होंने जागकर अपने को कालके मुखमें फँसे देखा तब श्रीकृष्णको अपनी रक्षावास्ते पुकारा नन्दरायका बोलसुनतेही सबग्वालबाल व गोपियों ने उठकर उजियाला करके देखा तो मालूमहुआ कि एक अजगर नन्दजीकी आधी

टांग निगलेहुये पड़ाहै यह दशा देखतेही वहलोग जलतीहुई लकड़ियों से उससांपको मारने लगे पर उसने नन्दजी को नहीं छोड़ा तब सबों ने हार मानकर श्रीकृष्णजीको जगाया जब श्यामसुन्दरने बालकोंकी तरह आंख मलतेहुये उठकर जैसे अँगूठा अपने बायें पांवका छुवाया वैसे उस अजगरने नन्दजीका पैर छोड़दिया व जमुहाई लेकर मनुष्यरूप बहुत सुन्दर भूषण व वस्त्र पहिने राजोंके समान होगया व नन्दलालजीको दण्डवत् करके उनके सामने खड़ाहोकर स्तुतिकरनेलगा यह हाल देखकर नंदआदिक गोप व गोपियों ने अचम्भा माना तब श्यामसुन्दरने उस मनुष्यसे पूँछा ॥

दो॰ तुवस्वरूप सुन्दरमहा उपमा कही न जाय।
सर्परूप काहे धरेउ हमसे कहो बुझाय॥

यह बचन सुनतेही वह हाथ जोड़कर बोला हे वैकुण्ठनाथ आप अन्तर्य्यामी से कोई बात छिपी नहीं है परन्तु तुम्हारी आज्ञानुसार अपना हाल कहताहूं सुनिये मैं सुदर्शन नाम विद्याधर हंसपुरमें रहकर धन व सुन्दरताई व बुद्धिके अभिमानसे अपने सामने किसी को कुछवस्तु नहीं समझताथा व देवतालोग भी मेरा सन्मान बहुत करते थे सो एकदिन बिमानपर बैठकर सैरकरने वास्ते निकला जब राहमें अंगिरा ऋषी-श्वरका कुरूप जो कुबड़े थे देखकर मुझे हँसीआई और मैं ठट्ठेकी राह कईबेर अपना विमान उड़ाताहुआ उनपर लेगया तब ऋषीश्वरने विमानकी परछाहीं ऊपर पड़ने से क्रोधित होकर मुझे ऐसा शापदिया कि तू अजगर सांपहोजा जब यह शाप सुनकर मैंने अपना अपराध क्षमाकराने वास्ते अति बिनती उनकीकी तब उन्हों ने कहा मेरा बचन फिरने तो नहीं सक्ता पर कुछ दिनों में श्रीकृष्णजी का चरण छूने से तुझे फिर विद्याधरका तनु मिलेगा सो मैं तभी से अजगर होकर तुम्हारे चरणोंकी इच्छा रखताथा इसी वास्ते आज मैंने नन्दजीका पांव पकड़ा जिसमें तुम्हारा दर्शन मुझे प्राप्तहो सो आपने दयाकी राह मुझे अपना दर्शन देकर कृतार्थकिया जिन चरणकमलका दर्शन ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रादिक देवतों को ध्यानमें जल्दी नहीं मिलता उन चरणों को अङ्गिरा ऋषीश्वरके प्रतापसे छूकर मैं पवित्रहुआ ॥

दो॰ ताहि शाप कैसे कहौं वहतो भई अशीश।
जेहि प्रताप जगदीश के पगलागे ममशीश॥

इसलिये उन ऋषीश्वरके उपकारसे मैं जन्मभर उऋण नहीं होसक्ता किसवास्ते कि उन्होंने बुराई के बदले मेरे साथ भलाई की जो अच्छेलोगहैं वह किसीकी बुराई नहीं चाहते यह स्तुति व दण्डवत् करने के उपरान्त वह बिद्याधर बिमानपर बैठके अपने लोकको चलागया तब ब्रजबासी लोगों ने अचम्भा मानकर यह निश्चयकिया

कि यह परब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहैं प्रातस्समय नन्दआदिक गोप व गोपियां अम्बिका देवीका दर्शनकरके अपने घरआये हे राजन् एकदिन श्याम व बलराम चांदनीरातमें ब्रजबालोंके साथ यमुनाकिनारे रास व बिलासकरके बांसुरी बजाते थे सो केशवमूर्त्ति ने मुरलीकी ध्वनिसे ब्रजबालोंका मन ऐसा मोहिलिया कि गोपियां बांसुरीके शब्दपर मोहित होकर श्यामसुन्दरके पीछे २ इसतरह गाती फिरती थीं जिसतरह परछाईंसाथ नहीं छोड़ती उससमय ब्रजबालोंका चित्त ऐसा अचेत होगया कि अपने तनु व बस्त्र की कुछ सुधि उन्हें नहीं रहीथी सो अचानक उसीसमय शङ्खचूड़नाम यक्ष कुबेरदेवता का सेवक अतिबलवान् व मित्र तृणावर्त्तआदिक दैत्योंका जिसके शिरमें बहुत बढ़िया मणिथी घूमताहुआ वहांपर आया तो उसने क्या देखा कि श्याम व बलराम बांसुरी बजारहे हैं और बंशीकीध्वनि पर सब ब्रजबाला मोहित होरही हैं यह आनन्द उससे देखा नहीं गया इसलिये कुछ गोपियों को अपने कमन्दमें फँसाकर उत्तरओर लेचला जबतक बांसुरीकी ध्वनि गोपियोंके कानमें पहुँचती रही तबतक वे सब ऐसी अचेतथीं कि उन्हें अपने फँसनेकी कुछ सुधि माळूम नहीं हुई जब दूरतक खींच लेजाने से उन्हें बंशीका शब्द सुनाई न दिया तब वे सब चैतन्यहोकर अपने को कमन्दमें फँसी देखते ही चिल्लाने लगीं ॥

चौ० पूरणब्रह्म प्रीतिरस पागीं । कृष्ण कृष्ण करि टेरन लागीं ॥
हे भगवन्त सन्तहितकारी । वेगि आय सुधिलेउ हमारी ॥

यह दीनबचन सुनतेही श्याम व बलरामने दो वृक्ष उखाड़लिये और जिसतरह सिंह हाथीको मारनेवास्ते झपटताहै उसीतरह दोनों भाई दौड़कर गोपियोंके पास जापहुँचे व पुकारकर कहा अब तुमलोग कुछ चिन्ता मतकरो ॥

दो० तुम्हरे करुणा बचन सुनि मैं आयाहूं धाय ।
शंखचूड़ शिर चूरकरि तुमको लेब छुड़ाय ॥

जब उनकी ललकार सुनतेही वह यक्ष ब्रजबालों को छोड़कर भागा तब केशव-मूर्त्ति ने गोपियों की रक्षाके वास्ते बलरामजी को वहां छोड़ दिया व आप हवा व बिजुली की तरह दौड़कर शङ्खचूड़के ऐसा मुक्का मारा कि वह मरगया तब मुरलीम-नोहर ने उसके शिरकी मणि निकालकर बलरामजी को देदिया व ब्रजबालोंको साथ लेकर आनन्दपूर्व्वक अपने घरआये इसीतरह श्रीकृष्णजी नित्य नई २ लीलाकरके वृन्दावनबासिया को सुखदेते थे ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

गोपियों के विरहकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित एकदिन श्रीकृष्णने ग्वालोंके संग गौचराती समय वृन्दावनमें बंशीबजाकर ऐसा राग व रागिनी गाया जिसका शब्द सुनतेही ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता अपनी स्त्रियोंसमेत मोहित होगये जैसा राग व रागिनी बांसुरी में गाते थे वैसा गाना ब्रह्मा व महादेव व नारदआदिक किसी से नहीं बनपड़ता था व राधाप्यारी आदिक ब्रजबाला अपने परिवारवालों के डरसे केशवमूर्त्तिके पास बनमें न जाकर नित्य उनके विरहमें व्याकुल रहती थीं व घरमें एकक्षण चित्त उनका नहीं लगताथा इसलिये अपनी २ गोल बांधकर कुछ ब्रजबाला राहमें व कोई झुण्ड यशोदा के पास व बाजी गोल गांवमेंबैठ बीच याद व चर्चा मोहनप्यारे के दिन अपनाकाटती थीं उनमें कोई ब्रजबाला सूर्य्यके सामने हाथ जोड़कर विनयपूर्व्वक कहती थी महाराज तुम जल्दी अस्त होजाव तो सन्ध्यासमय मोहनप्यारे घरपर आवैं तब मैं उनका रूपरस पीकर अपने कलेजेकी तपनि बुझाऊं व बाजी गोपी केशवमूर्त्तिकी सुन्दरताई वर्णनकरके उनके ध्यानमें अचेत होजाती थी व कोई ब्रजबाला नन्दलालजीका यश गाकर मन अपना प्रसन्नकरती व बाजी गोपी केशवमूर्त्तिके विरहमें घबड़ाकर रोने लगती थी तब ज्ञानवान् गोपियां उसे समझाकर कहती थीं सुनो प्यारी इस घबड़ाने व रोने से क्या मिलैगा उत्तम यहहै कि हमलोग बीच स्मरण व चर्चा मनहरणप्यारे के दिन अपना काटैं जब सब ब्रजबाला यह बात मानकर बीच चर्चा बालचरित्र श्रीकृष्णजी के लीनहुई तब एक गोपी बोली हे सखियो बांसुरीका बड़ाभाग्य समझो जो श्यामसुन्दरके ओठोंसे लगी रहती है व मोहनप्यारे अपना हाथ लगाकर उसमें ऐसी उपज निकालतेहैं कि जिसशब्दके सुनने से जीवजड़ व चैतन्यका चित्तठिकाने नहींरहता॥

दो० जारसको हम तपकियो षटऋतु सबब्रजबाम ।
सोरस मुरली लेत अब सहजै बशकरि श्याम ॥
सो० गावत मीठी तान मुरली सँग अधरन धरे ।
अब याके बशकान्ह अवरन बश वह करिरही ॥

दूसरी सखी ने कहा किसवास्ते बांसुरी की ऐसी बड़ाई न हो जिस किसीका हाथ श्यामसुन्दर पकड़ें वह तीनोंलोकका मालिक होसक्ताहै मनुष्योंकी क्या सामर्थ्य है जो बंशीकी ध्वनि सुनकर अचेत न होजावें उसके शब्दपर ब्रह्मादिक देवता व ऋषीश्वर मोहित होकर यह इच्छा रखते हैं कि हम लोगोंको परमेश्वर मनुष्यका जन्म बृन्दाबन में देते तो आठोंपहर श्यामसुन्दरका दर्शन करने व मुरली सुनने से आनन्द होकर

हरिचरणों की धूरि अपने शिर व आंखोंपर लगाते उसीतरह देवतोंकी स्त्रियां अपने २ पतिके साथ रहनेपरभी उस बांसुरी के बोलपर मोहित होजाती हैं ॥

दो० माखनप्रभु की बांसुरी श्रवणन सदा सुहाय।
जाकी ध्वनिसुनिकै सबै सुरमुनि रहतलुभाय॥

दूसरीसखीबोली कदाचित् मनुष्य व देवताजो ज्ञानवान् हैं बांसुरीकी ध्वनिपर मोहित होगये तो कौनबड़ीबातहै उसमुरलीका शब्दसुनतेही पशु व पक्षी चरना व पागुरकरना व उड़ना भूलकर चित्रकारी से खड़े रहजाते हैं व किसी से नहीं भड़कते ॥

दो० एकसखी यहिबिधिकहै सुरनरकी मति शुद्धि।
पशुपक्षी सब होत हैं जिनकी शुद्धि न बुद्धि॥

दूसरीनेकहा हे प्यारियो मुरलीकेशब्दमें ऐसागुणहै कि कोई कैसीही चिन्तामें बैठाहो उसकाबोल सुनतेही प्रसन्नहोजाता है ॥

दो० फिरिये याके संग लागि लोकलाज घर त्यागि।
जबजब सो जहँ बाजि है मोहन के मुख लागि॥
सो० करि है नाना रंग यह जानत टोना कछू।
या मुरली के संग देखो हरि कैसे भये॥

दूसरी ब्रजबालाने कहा वहबांसुरी बड़ीचतुरी व कुटनी है जिससमय श्रीकृष्णजी को किसीकी चाहना होतीहै उससमय वह बांसुरीवजाकर उसे अपनेपास बुलालेते हैं व यमुनाजलभी वहशब्दसुनकर बौरायजाताहै इसीवास्ते बेड़ियांलहरकी उसकेपांव में पड़ी हैं व वृक्षोंकी डाली जो नीचेऊपर लिपटीरहती हैं वहभी बांसुरीसुनने से अचेत होगई हैं नहींतो चैतन्यमनुष्य किसीसेनहीं लिपटता व कमलका फूलभी उसीशब्दपर मोहितहोकर मतवालोंकी तरह आठोंपहर शिर अपना हिलाताहै व बादल उसीध्वनि पर मोहितहोकर विरहियोंकी तरह रोयकर आंखसे पानी बरसाता है ॥

सो० हरिको करि बशमाहिं मुरली लूटै अधर रस।
उर डर मानतनाहिं हम सबते बोलत निठुर॥

दूसरीगोपीबोली मैं जानतीथी श्यामसुन्दर केवल लड़कपनके खेलमें बड़ेचतुर हैं पर अब मुझे मालूमहुआ कि गाने व बजाने में भी कोई उनकीबराबरी नहींकरसक्ता दूसरी ब्रजबालानेकहा ब्रह्मा व महादेवआदिक देवतों व बड़े २ ऋषीश्वरों व ज्ञानियों का ध्यानभी बंशीसुनकर इसतरह छूटजाता है जिसतरह कोई नींदसे जागउठै दूसरी

गोपीबोली मुरली हमारीसवति श्यामसुन्दरको ऐसीप्यारी है कि दिनरात उसको अपनी छाती से लगाये रहते हैं पिछलेजन्म मुरलीने बड़ाभारी तपकियाथा जिसके प्रताप से मोहनप्यारे को अपनेबश करलिया ॥

दो० ऐसे हैंगे हरि निठुर बंशी भई सहाय ।
अब मुरली अरु श्यामकी जोड़ी मिली बनाय ॥
सो० मेटत पिछले दाग जो बशकरि पायो पिया ।
धनिधनि मुरलीभाग अबगरजत अधरनचढ़ी ॥

दूसरीसखीने कहा हे प्यारियो मुरलीका क्याअपराधहै यहसब कठोरताई नन्दलाल जीकी समझनीचाहिये कि उन्होंने नारीप्रीति छोड़दिया व बंशी नीचजातिको अपनी रानी बनाकर रक्खाहै दूसरी ब्रजबालाबोली कि मुरली बांसकेतनुमें जन्मपाकर एकपैर से खड़ीरही बरसात व गर्मी व सर्दीकादुःख अपनेऊपर उठाकर परमेश्वरका तपकिया फिर अपना पोर २ कटवाया व अग्निकीगर्मी ऊपरसहकर अंग २ में अपने छेदकराया इतना दुःखउठाकर उसने त्रिलोकीनाथको अपने वशकियाहै इसीवास्ते तीनोंलोकों के जीव उसके शब्दपर मोहितहोजाते हैं हमलोगोंको क्या सामर्थ्य है जो उसकीबड़ाई व बराबरीकरसकैं जब उसकेसमान तुमलोगभी तपकरो तब मोहनप्यारे तुम्हारे साथभी वैसीप्रीति करसक्ते हैं उनकापाना सहजमतिसमझो देखो जब हमलोगोंने भी श्याम-सुन्दरके मिलने वास्ते व्रतकिया तब उन्हों ने हमारेवास्ते चीर छिपाकर हमको नंगी देखाथा यह अपने २ भाग्यका फलहै ॥

दो० मुरली की सर मतिकरो कहो हमारो मान ।
धनिधनि वाहि बखानिये सुन वाकोयश कान ॥
सो० रहै विश्वभरि जीति मोहन मुखलगि बांसुरी ।
मेटि सकल श्रुतिनीति रीति चलावत आपनी ॥

दूसरी गोपीनेकहा मुरलीसे प्रीतिरखने में हमारेवास्ते भी अच्छाहोकर उसकेसाथ बैरकरने में कुछफल नहींमिलैगा इसलिये बंशीसे डाहकरना न चाहिये हमलोग केशव मूर्त्तिकेसाथ बालापनसे प्रीति रखती हैं उनकेचरणोंका स्मरण व ध्यानकरने से तुम्हारा अर्थ भी सिद्ध होगा ॥

सो० हमको है यह आश वह हैं अन्तर्यामि हरि ।
करिहैं नहीं निराश उर अन्तरकी जानिकै ॥

दूसरी ब्रजबालाबोली बंशी श्यामसुन्दरके ओठोंका अमृतपीकर अमरहोगई इसी-

वास्ते अपनाबोल सुनाकर हमलोगोंको ज्ञानसिखलाती है यहबचन सुनतेही राधाप्यारी श्रीकृष्णके विरहमें डूबकर रोनेलगी तब दूसरी गोपी ने उससेकहा तू उदास मतिहो श्रीकृष्णजी तेरेऊपर मोहितहोकर तेरानाम बांसुरीमें बजातेहैं व तू रानीहोकर मुरली तेरीदासी है हमलोग वृथा बांसुरीको सवतिजानकर उससे बैररखती हैं मोहनप्यारे ने मुरलीको सब गुणनिधान समझकर उससे प्रीति लगाई है ॥

दो० अब मुरली छूटै नहीं याके बश भये श्याम ।
प्रकटकियो सब जगत में मुरलीधर निज नाम ॥

दूसरी गोपीनेकहा हे सखी मोहनप्यारा चित्तचोर वृन्दाबनमें ग्वालोंके कन्धेपर हाथ रक्खेहुये गौचरावता फिरताहोगा व बंशीकीध्वनि सुनिकर सबगौ इकट्ठी होगई होंगी दूसरीसखीबोली मोहनप्यारे ऐसेसुन्दरहैं जिनकेमुखसे हँसतीसमय फूलझड़ते हैं उसका मोहनीरूप देखने व बंशीसुननेसे कामदेव हमारेवशमें नहींरहता व बांसुरीकाशब्द सब जीवोंके पैरमें ऐसी बेड़ीडालदेताहै कि किसीको चलनेकी सामर्थ्य नहींरहती ॥

दो० धनि धनि बंशी बांसकी धनि याके मृदु बोल ।
धनि ल्याये गुण जांचिके बनते श्याम अमोल ॥

हे परीक्षित इसी तरह सबगोपियां बीचचर्चा श्यामसुन्दर के दिन अपना काटकर सन्ध्यासमय राहपर आनबैठतीथीं व केशवमूर्त्ति अन्तर्य्यामीकी प्रीतिजानकर सन्ध्या-समय बलरामजी व गौ व ग्वालोंको साथलिये व मोरपंखकीटोपी शिरपरधरे व कुण्डल जड़ाऊ कानों में पहिने बांसुरी बजाते हुये इस सुन्दरताई से घर आते थे कि उनका दर्शनकरने से सब छोटे व बड़ोंकामन प्रसन्नहोजाता था व गोपियां बड़े प्रेम से आगे दौड़कर श्रीकृष्णचन्द्रके मुखकी शीतलताई से अपने हृदयकी अग्नि ठण्ढी करती थीं व श्यामसुन्दर के पगकी धूरि अपने २ अंचल से झाड़कर परिक्रमा लेने उपरान्त अपने घर आवती थीं ॥

दो० हरि स्वरूप के सिंधु में गोपी कूदीं धाय ।
नयनन पावैं दरशरस मनकी तृषा बुझाय ॥

जब श्याम व बलराम अपने घर पहुँचते थे उस समय यशोदा व रोहिणी बड़े प्रेमसे उपटन फुलेल मलने व स्नानकरने उपरान्त छत्तीस व्यंजन खानेवास्ते देती थीं तब वह ग्वालबालों के साथ प्रसन्नहोकर भोजन करतेथे नित्य यही नेम उनका रहताथा एकदिन बृन्दावनबिहारी ने ऐसाविचार किया कि हमने रासलीला में अंत-र्द्धान होकर श्यामा आदिक गोपियोंको अपने बिरहका बहुत दुःख दियाथा उस के बदले अब मुझे उचितहै कि राधाप्यारीको जो लक्ष्मीजी का अवतार हैं मानकराऊं

और मैं उसके पांवपकड़कर उसे प्रसन्नकरूं व सब ब्रजबालोंका दुर्बचन सुनकर उन्हें दुःखदेने के बदले मैं उऋणहोजाऊं सो एक दिन राधाप्यारी सोलहों शृङ्गार किये अपने घर बैठीथी जब मोहनप्यारे ने अपनी इच्छानुसार उसके स्थान पर जाकर श्यामाको अपनेगले लगालिया व उसकी सुन्दरताईपर बलायेंलेनेलगे तब केशवमूर्त्ति की मायासे श्यामाने अपने मुखारविन्द की परछाहीं बीच जड़ाऊ गहने मुरलीमनोहर के जो गलेमें पहने थे देखकर क्या समझा कि इस दूसरी सुन्दरी से नन्दलालजी ने प्रीति करके उसको छातीमें लगारक्खा है सो मुझको दिखलाने वास्ते लेआयेहैं जब ऐसा बिचारकर राधाप्यारी को सवतियाडाहहुई तब उसने रोनीसूरत बनाकर कहा ऐ मोहनप्यारे मैंने जाना तुम प्रकटमें मेरेसाथ प्रीति करके अन्तःकरण से इस महा सुन्दरीको ऐसा चाहतेहो कि आठोंपहर अपनी छातीसे लगाये रहकर एकक्षण अलग नहीं करते इस सखी का बड़ाभाग्य समझना चाहिये जो रातदिन तुम्हारे हृदय में वसती है अब तुम इसके साथ प्रीतिकरो मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूं यहवचन सुनते ही ज्योतिस्स्वरूप उसके सामने हाथजोड़कर बोले ऐ प्राणप्यारी तुम्हारे सिवाय कौन है जिसको हम चाहते हैं तुम हमारी बातका बिश्वास रखकर ऐसामत बिचारो इसीतरह बहुत बिनती करके नन्दलालजी ने श्यामाका हाथ पकड़कर अपने पास बैठालने चाहा पर वह सवतियाडाहसे नहीं बैठकर बोली ऐ केशवमूर्त्ति अपनी प्यारीसे जिस को हृदयमें रखतेहो बोलो अब हमको तुमसे कुछ प्रयोजन नहीं है ऐसाकहकर राधा अपनी परछाहींको गालियां देनेलगी तब मोहनप्यारे ने कईबेर समझाकर कहा यह दूसरी स्त्री न होकर मेरेजड़ाऊ गहने में तेरीपरछाहीं दिखलाई देती है पर श्यामा को सवतियाडाहसे उनकी बातका बिश्वास नहीं हुआ उसी समय एकसखी वहां आई व दोनोंको उदास देखकर बोली ॥

दो० वहहरि से पूछत भई कहो न मोहिं बताय।
आज दशा कैसी लगत बैठे कहा गवांय॥
सो० क्योंतन रह्यो भुलाय अतिव्याकुल देखत तुम्हें।
रहो बदन कुम्हिलाय ऐसो शोच कहापरो॥

यहसुनकर श्रीकृष्णजीनेकहा ऐ सखी मैंने तो कुछअपराध राधाका नहींकिया इसने अपनीपरछाहीं मेरेजड़ाऊ गहनेमें देखकर उसे दूसरीस्त्रीसमझाहै इसकारण मुझसेरूठकर नहींबोलती तू किसीतरह इसका सन्देहमिटाकर प्रसन्नकरदे जब यहबात कहकर श्याम-सुन्दरने आंखों में आंसू भरलिया तब उससखीने मुरलीमनोहरसे कहा तुम वृन्दावनमें चलो मैं राधाप्यारी को वहां लियेआतीहूं यहसुनकर मोहनप्यारे वृन्दावन की कुञ्ज में

चलेगये तब उससखीने राधाके पास जाकर कहा तुम्हें गोपीनाथ ने बुलायाहै श्यामा बोली तू नहीं जानती नन्दकुमारने दूसरी सुन्दरीसे प्रीतिकरके उसको अपने हृदयमें बसायाहै अबवह मेरीचाहना नहीं रखते मैं उनके पासजाकर क्याकरूं तब फिर वह सखी बोली हेराधा तू जिनकी बस्तु मँगनी लेआई है वह तेरेबदले मोहनप्यारे को बन में घेरेखड़े हैं और तुम यहां मचलाकर बैठीहो ऐसा न चाहिये श्यामाने कहा मैं किसी की वस्तु मँगनी नहीं लेआई हूं जो घेरेहों उनका नाम बतलादेव तब वह सखीबोली हिरणीकी आंख व चीतेकी कमर व हाथीकी चाल व अनार के दांत तू मँगनीलाई है वे लोग नन्दलालजी से तगादा करते हैं तब यहबात प्रीतिभरीहुई सुनकर राधाने हँस दिया तब वह सखीबोली हे प्यारी तू बड़ीअज्ञान होकर मोहनप्यारे से वृथा खेदमानती है जिसतरह आगे एकदिन तैंने शीशादेखकर अपनी परछाहींको सवति समझा व उसीतरह आज भी नन्दलालजी के जड़ाऊगहने में अपनी परछाईंको दूसरी स्त्री जानकर मोहनप्यारेसे खेदमाना इसलिये वह तेरेबिरहमें ब्याकुलहोकर राधा २ पुकारते हैं सो तू जल्दी चलकर उनकी चिन्ता छुड़ादे जब यहबचन सुनकर श्यामाका चित्त ठिकाने होगया तब वह पछताकर कहनेलगी हे सखी तुम मोहनप्यारे से जाकर कह दो मैं शृङ्गारकरके अभी आतीहूं जब वहसखी श्यामसुन्दर के पास यह सँदेशा कहने गई तो क्यादेखा कि वृन्दावनविहारी राधाप्यारी के बिरहमें ब्याकुलहोकर वृक्षके तले लोट रहे हैं ॥

सो० बैठत उठत अधीर कोऊसुधि पावत नहीं ।
बढ़त बिरह की पीर श्रीराधा राधा रटत ॥

यहदशा उनकी देखकर वह सखीबोली हे प्राणप्यारे तुम किसवास्ते इतना शोच करतेहो अभी एकक्षणमें श्यामा आपहुंचती हैं यहबचन सुनतेही मुरलीमनोहर उठबैठे व फूलोंकी शय्याबिछाया और चारोंओर चौंक २ कर ताकनेलगे जबश्यामाके आवने में कुछदेरहुई तब फिर वहसखी राधाके पास जाकर बोली ऐ श्यामा मनहरणप्यारे तेरे बिरहमें रोरहे हैं तू क्यों नहीं चलती ॥

सो० मुख नहिं बोलत बैन अतिब्याकुल तेरे बिरह ।
भरभर डारत नैन कहाकहों उनकी दशा ॥

राधा यहबचन सुनतेही बहुतप्रसन्न होकर उससखीके साथ बनमें जापहुंची श्याम सुन्दरने प्यारीको देखतेही आनन्दहोकर उस सखीकी बड़ाईकी व श्यामाको अपनेहृदय में लगाकर कामदेवकी अग्नि बुझाई ॥

दो० परमप्रेम दोऊ मिले श्रीराधा नँदनन्द ।

गुणआगर नागर युगल छबिसागर सुखकंद ॥

गयोश्याम श्यामासदन सखीसहित सुखपाय ।

मन चरित्र रसखेलकर ब्रजबासिन सुखदाय ॥

इतनी कथासुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो जिस त्रिलोकीनाथ का दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व ऋषीश्वर जल्दीध्यानमें नहींपावते वहपरमेश्वर ब्रजकी स्त्रियोंकेवास्ते ऐसाशोचकरतेथे उनकी लीला कौनजान सक्ताहै ॥

सो० जो प्रभु अगमअपार वेद भेद जानत नहीं ।

सो ब्रज करत विहार मरम न वाको पावहीं ॥

एकदिन श्यामसुन्दर ने वृन्दाबनकी गली में ललिता सखीको आवतीहुई देखकर रोंका तब ललिताबोली तुम झूंठीप्रीति मेरेसाथ रखिकर कभीमुझ गरीबिनीके घर नहीं आवते यहसुनकर नन्दलालजीने कहा ॥

दो० तुम कैसे बिसरत प्रिया हँसि बोले घनश्याम ।

आजु आय सुखलेहिंगे रैन तुम्हारे धाम ॥

सो० सुन हर्षी ब्रजबाम चली सदन मुसकाय के ।

लखि सुखपायो श्याम मुदित गये अपनेसदन ॥

हे राजन् ललिताने बड़ेहर्ष से अपनेघर आनकर सोलहों शृंगारकिया व स्थान व शय्याकी तैयारीकरके आशा आवनेश्यामसुन्दरकी देखनेलगी जब आधीरातबीतनेपरभी श्रीकृष्णजी वहां न आनकर शैलासखीके घर चलेगये तब ललिताने उदासहोकर कहा॥

दो० कहत श्याम आये नहीं होनलगी अधरात ।

गये आश दे मोहिं पुनि कहाधरों जिय बात ॥

सो० वे बहुनायक श्याम जाय लोभाने अनत कहुं ।

मन मन शोचत बाम कारण क्या आये नहीं ॥

जब ललिताको इसी शोच व बिचार में सारीरात जागते बीतगई तब प्रातस्समय नन्दलालजी अपनावचन यादकरके ललिताके घर पहुँचे ॥

दो० तब बोली मुसकायप्रिय कहा काम मम धाम ।

ताही के घर जाइये बसे जहां निशि श्याम ॥

सो० प्रात देखावन मोहि आये रंग बनाय के ।

मैं सुख पायों जोहि भले बने हौ लाल अब ॥

जब यहवचनसुनकर श्यामसुन्दरने मुसकरादिया तब ललिताने उन्हैं स्नानकराया ॥

दो० रुचि भोजन दे सेजपर पौढ़ाये घनश्याम ।
रस बश करि नव नागरी कियेसुफल मनकाम ॥

थोड़ीदेर केशवमूर्त्ति वहांरहिकर उसकी इच्छापूर्णकरने उपरांत अपनेघर चलेआये इसीतरह मोहनप्यारे कभी श्यामा व कभी चन्द्रावली व कभी सुखमाआदिक गोपियों के स्थानपर रातभररहिकर उनकीइच्छा पूर्णकरतेथे जब एकब्रजबाला से बचनहारकर दूसरीसखीके घरचलेजाते और वहब्रजबाला हठकर मानकरती तब बहुत बिनतीकरके उसेमनाते इसीतरह मोहनप्यारे एकरूप अपना नन्द व यशोदाकेपास रखते और अनेक रूपधरकर कभी कभी ब्रजबालोंकी मनोकामना पूर्णकरते थे ॥

दो० कबहुँ कहत हरि आइ हैं उर में हर्ष बढ़ाय ।
कबहुँबिरहव्याकुलजरत अतिआतुरअकुलाय ॥

सो० कबहुँ कहत सुख पाय बहुतनारि राखैंपिया ।
बसे अनत कहुँ जाय मोसों भूंठी अवधिकरि ॥

एकरात श्यामसुन्दर किसीसखी के घररहिकर जब प्रातस्समय राधाकेपासगये तब वह खेदमानकर रूठबैठी इसलिये मोहनप्यारेने बहुत बिनतीकरके सौगन्दखाई कि हे प्राणप्यारी अबमैं दूसरीगोपीकेघर कभीनहींजाऊंगा तबवह प्रसन्नहुई पर त्रिलोकीनाथ ने जोसबकी इच्छापूर्णकरनेवाले थे सौगन्दखाने परभी ब्रजबालों के घरकाजाना नहीं छोड़ा सो एकदिन श्यामसुन्दर कौमुन्दासखी के घरपररहे व प्रातःकाल वहांसे आवने· लगे उसी समय अचानक में राधाप्यारी कौमुन्दासखी को यमुना स्नान करने वास्ते बुलानेगई जैसे श्यामाने केशवमूर्त्ति को उसके घरसे निकलते देखा वैसे क्रोधितहोकर बिनानहाये अपनेघर चलीआई व नन्दलालजी उसेदेखतेही भयमानकर मनमें कहने लगे आज हमारीचोरी राधाने पकड़लिया जब मुरलीमनोहर से बिना भेंटकिये राधा-प्यारी के नहीं रहागया तब कईसखियोंको साथलेकर उसे मनावनेगये उन्हें देखतेही श्यामा क्रोधसे बोली ॥

दो० घरघरडोलतफिरतनिशि बोलतलगत न लाज ।
आयदिखावैं प्रात मोहिं निशिवासरके साज ॥

सो० मैं आई अब बाज जित चाहो तितह्नु फिरौ ।

इनको यहां न काज राज करैं ब्रज में सदा ॥

जब श्यामसुन्दरके विनती करने व सखियों के समझानेपरभी राधाने क्रोधअपना क्षमानहींकिया तब कईसखी बोलीं हे श्यामा चारदिनके जीवनपर मत अभिमानकर वृन्दावनबिहारी तेरे खेदकरने से उदासहोकर अपना अपराध क्षमाकरानेवास्ते तुम्हारे पास आये हैं सो तुम हँसबोलकर इनकाशोच छुड़ादेव ॥

दो० आदरकरि बैठायके पिय को कंठ लगाय।
घर आये नहिं कीजिये ऐसी विधि निठुराय॥
सो० है तू नागरि बाम मनमें क्या ऐसी धरी।
वे ठाढ़े हैं श्याम तू मुख ते बोलत नहीं॥

श्यामा यहसुनकरबोली जिसकेघर श्यामसुन्दर रातभररहे हैं वहांजावैं मेरेसाथ अब इनको क्याकामहै अभी चारदिनहुआ इन्होंने मुझसे सौगन्दखाईथी कि अब किसीसखी के घर न जाऊंगा सो आजमैंने अपनीआंख से इनको कौमुन्दागोपी के यहांसे निकलते देखा इसलिये मैं इनकेयोग्य नहींहूं लम्पट मनुष्यसे प्रीतिकरके कौन नष्टहोवै ॥

दो० ऐसोगुण हरिको सखी निपट कपटकी खानि।
अब इनसों मोसों कभी नहीं बनैगी जानि॥
सो० हैं हरि कपट निधान बहुनायक सँग रमिरहे।
तिनको करतबखान जो बामन ह्वै बलिछल्यो॥
दो० ऐसो कहि चुप होरही मुर बैठी रिस गात।
मधुरे बचननसे कहत निपट सखिनसों बात॥
सो० आये हैं करि गौन चतुर नारि सँग निशिजगे।
इनसों मिलिहै कौन बिरहअग्नि में जलनको॥
सखी कह्यो मुसुकाय नहिं मानत मेरो कह्यो।
श्याम मनावैं आय मैं जान्यो तब मानिहै॥

जब सखियोंके समझानेसे राधानेनहींमाना तब उन्होंने श्यामसुन्दरसेकहा हमलोग समझाते २ हारगईं पर राधा नहींमानती तुम आप उसे समझाकर मनालेव ॥

दो० मान तजै नहिं लाड़िली थाकीं सबै मनाय।
नेक यत्न कुछ कीजिये रचिये आप उपाय॥

दो० चले बनै है लाल अब और यत्न नहिं कोय ।
काछ काछिये जौनबिधि नाच नाचिये सोय ॥
सो० आप काजमहकाज बड़े कही है बात यह ।
तजोश्याम उरलाज करिबिनती प्रियसोंमिलौ ॥

जब ऐसाकहकर सबसखियां अपने २ घर चलीगई तब नन्दकुमारभी वहांसे बाहर चलेआये पर मनउनका नहींमाना तब स्त्रीरूपबनगये व श्रीकृष्णजीकी ओरसे राधाजी के पासजाकर यहसँदेशाकहा मैं इससमय तेरेदेखनेवास्ते वृन्दाबन के कुंजमें गईथी सो तुझे उसजगह नहींपाया पर श्यामसुन्दर तेरे खेदमानने से वहां अति विलाप करते हैं उन्होंने मेरेपांवपकड़कर बहुतबिनती से तुझे बुलाया है सो तू मानछोड़कर मोहनप्यारे के पास चल यहबात कहकर गोपीरूप मोहनप्यारे श्यामा के चरणोंपर गिरकर बिनती करने लगे ॥

दो० छण २ परसत चरणकर छण २ लेत बलाय ।
कहतप्रिया अबमानतजि पुनिपुनि हाहाखाय ॥

जबराधाप्यारी उसस्त्रीके बिनतीकरने से प्रसन्नहोकर चलनेवास्ते तैयारहुई तब श्यामसुन्दरने अपनारूपधरकर श्यामाको गलेसे लगालिया तब दोनोंनेबड़ेहर्षसे एकथालीमें भोजनकिया व अपने २ कामदेवकीअग्नि भेंटरूपी जलसे बुझाई इसीतरह मोहनप्यारे राधाआदिक गोपियों का मनोरथ पूर्ण कियाकरते थे ॥

दो० यह लीला आनन्दमय सकल रसनको सार ।
भक्तन हित हरि करत हैं गाइ तरत संसार ॥
सो० घर २ करत बिहार ब्रज युवतिनके संग हरि ।
गावत हैं श्रुति चार ब्रजबासी हरिकी कथा ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका वृषासुर राक्षसको मारना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जबवर्षाऋतुआई तब राधाप्यारीने श्यामसुन्दरनेकहा तुमहिंडोला झूलनेकी लीलाकरो तो हमसबसखियां तुम्हारेसाथ झूलाझूलकर बरसातके गीतगावैं यहवचन सुनतेही श्यामसुन्दरने जड़ाऊझूला कुंजों में डलवादिया तबराधाप्यारी आदिक ब्रजबाला उत्तम उत्तम भूषण व अनेक २ रंगकेवस्त्र पहिनकर श्यामसुन्दरकेसाथ झूलने व गानेलगीं उससमय वृन्दावनबिहारीने मुरलीसुनाकर व अनेक

रागरागिनी गायके उन्हें अतिप्रसन्नकिया वह आनन्द देखनेवास्ते ब्रह्मादिकदेवता व गन्धर्व अपनी २ स्त्रियोंसमेत बिमानोंपर चढ़कर बृन्दाबनमेंआये और बड़ेहर्षसे राधा कृष्णपर फूलवर्षाये व ब्रजबालोंके भाग्यकी बड़ाई करनेलगे इसीतरह बरसातभर राधा आदिक गोपियोंकेसाथ बिहारकरके उन्हेंसुखदिया जबफागुनका महीनाआया तब श्यामा आदिक ब्रजबालों ने मोहनप्यारेसे हाथजोड़कर बिनयकिया महाराज हमलोगोंकेसाथ होली खेलो यहबचनसुनकर नंदलालजीबोले तुमलोग अपने २ घरजाकर तैयारीकरो मैंभी अपनेसखोंको साथलेकर वहांहोलीखेलने आऊंगा जब सबब्रजबालोंने अपने २ घरजाकर होलीखेलनेकी तैयारीकी तब नंदकुमारने ग्वालबालोंको बुलाकर केसरिया कपड़ा पहिनाया व रंग अबीर व इत्र आदिक अपने २ शरीरपरडालकर सुगन्धित फूलोंकेगजरे गलेमें पहिनलिये व डफ बांसुरी झँझरीबजाकर फगुवागावते व ब्रजबालों को गालियांदेते व अबीरउड़ावते व अनेक तरहके स्वांगबनाये लड़कोंको नचावतेहुये ब्रजमेंहोली खेलनेनिकले जोगोपी राहमें दिखलाईदेतीथी उसपर रंगकी पिचकारियां मारकर हँसतेथे और सबब्रजबाला अपनी २ खिड़की कोठोंपरसे मोहनप्यारे व ग्वाल बालोंपर रंग व अबीर वकुमकुमाआदिक डालकर गालियां सुननेसे प्रसन्नहोतीथीं जब इसीतरह बृन्दावनविहारी होलीखेलतेहुये राधाप्यारीके स्थानपर बरसानेगांवमें पहुँचे तब श्यामा अपनी सखियोंसमेत सोलहोंशृंगारकिये रंगकीपिचकारियांलिये गलीमेंजाकर मोहनीमूर्त्तिके सामनेखड़ीहुई जब दोनोंओरसे पिचकारियांचलकर अबीरउड़नेलगा तब श्यामा सखियोंसेबोली आज अपने चित्तचोर को पकड़कर चीरहरने का बदला लेना चाहिये ॥

दो० ललितादिक ब्रजनागरी सबसुन्दरिकोसाज ।
तिनमें श्रीराधाकुँवरि सबगोपिनशिरताज ॥
सो० कर्म्मरूपको रास गुणआगर नवनागरी ।
राजत भरी हुलास मनमोहन मन भावती ॥
दो० ग्वालबालके झुण्डमें शोभित यों ब्रजनाथ ।
ज्यों चन्दा आकाशमें तारागण लियेसाथ ॥

जबरंग व अबीरउड़नेसे अँधियाराछागया तब श्यामाने सखियोंसे कहा मनहरण प्यारेको किसीउपायसेपकड़ो यहबचनसुनतेही एकसखीने बलरामजीका वेषबनाकर धोखे में केशवमूर्त्तिको पकड़लिया और राधाआदिक ब्रजबालोंने उन्हें घेरकरकहा तुमने यमुनाकिनारे चीरछिपाकर हमको बड़ादुःखदियाथा आज उसदिनका बदलालियेबिना न छोड़ेंगी ऐसाकहकर एकगोपीने श्यामसुन्दरका पीताम्बरछीनलिया व दूसरीनेआंखों

में काजलदेकर माथेपर सिंदूर व बेंदी लगादिया व किसी ने भूषण व वस्त्रपहिनाकर उन्हें स्त्रीरूप बनाया ॥

दो० गये भागि मोहनतभी सखियनको छिटकाय ।
आयमिले निजसखनमें रहींनारिपछिताय ॥

सो० करमींजत पछिताति कहत परस्पर बातसब ।
भली मिलीथी घात दांव लेन पायो नहीं ॥

दो० भाजे भाजे कहति सब ताली दे ब्रजबाल ।
जो तुम जाये नन्दके ठाढ़े रहौ गुपाल ॥

जबउन्हें स्त्रीरूपदेखकर सबग्वालबाल हँसनेलगे तब मुरलीमनोहरने एकग्वालको सखीरूपबनाकर राधाकेगोलमेंभेजा व अपनापीताम्बर किसीउपायसे मँगालिया उस समय श्यामाबोली हे प्राणनाथ आजतुम चतुराईकरके उचकि गये फिर पकड़ेंगी तो मालूम होगा ॥

चौ० पकड़ नचावैं तुम्हैं मुरारी । तब कहियो हमको ब्रजनारी ॥

यहबात सुनकर ब्रजनाथने सखियोंसेकहा मैं तनिकश्यामाका संकोचकरताहूं नहीं तो अपने ग्वालोंको लगाकर अभी तुम्हारी दशादिखादूं यहसुन गोपियां मुसकराकर बोलीं तुमकोनन्दकी सौगन्दहै जो ऐसा न करो तब मोहनप्यारे अपने सखासमेत पिचकारियां रंगकी ब्रजबालोंपर मारकर अबीरउड़ाने व फगुआगाकर उन्हें गालियां देनेलगे व श्यामाने भी सखियोंसमेत मोहनप्यारे आदिकसे अच्छीतरह होलीखेली वह आनन्द देखनेवास्ते देवता व गन्धर्व्व अपनी २ स्त्रियोंसमेत बिमानोंपर बैठकर वहां आये व राधाकृष्णपर फूलवर्षाकर आपसमें कहनेलगे देखो जिस बैकुण्ठनाथकेचरणों का दर्शन ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहींमिलता वहीपरब्रह्मपरमेश्वर ग्वाल-बाल व गोपियोंकेसाथ होली खेलकर उनकोसुखदेतेहैं जबसन्ध्यातक राधाकृष्ण होली खेलचुके तब ललितासखीने आनकर केशवमूर्त्तिसे बिनयकिया कल्हहमलोग भी तुम्हारे गाँवमें होलीखेलने आवेंगी ॥

सो० घरआयेघनश्याम सखनसंग गावतहँसत ।
गईप्रियानिजधाम सखिनसहित आनँदभरी ॥

उससमय राधिका सखियोंसे बोली ॥

क० धाये नंदलाल वो गुलालदोऊ एकसंग भुमटिगयो जो दग

आननमढ़ै नहीं । धोयधोय हारी पद्माकर तिहारीसौंह अबतो उपाय कोऊ चितपै चढ़ैनहीं ॥ कहाकरैं कहाँजायँ कासों कहीं कौनसुनै कीजिये उपाय जामें दरद बढ़ैनहीं । एरी मेरीबीर जैसे तैसे इन आंखिनसे काढ़िगो अबीर पै अहीरको कढ़ै नहीं ॥

दूसरे दिन प्रातस्समय राधाप्यारीने सखियोंसमेत सोलहों शृङ्गारकिया व सोनेचांदी के बर्तनोंमें रंग व अबीर व गुलाब व इत्र भरवाकर बड़ी तैयारीसे होली खेलने चली जब श्यामागाती व बजाती रंग व अबीरउड़ातीहुई ने नन्दगांव में जाकर यशोदा का स्थान घेरलिया तब श्याम व बलराम भी अपने सखोंसमेत फगुवागातेहुये बाहरनिकले व रंग व अबीरसे राधा आदिकके साथ होलीखेलनेलगे जब रंग व अबीर उड़ने से चारोंओर लालहोगया तब ललिता आदिक कईसखी मोहनप्यारे को पकड़ने वास्ते दौड़ीं पर नन्दकुमार फुरतीकरके भागगये इसलिये बलरामजी को पकड़लेआईं तब श्यामा आदिकने उनको रंग व अबीरसे नहलाकर आंखोंमें काजल व माथेपर बेंदी लगादिया व उनसे बिनतीकराके छोड़ा तब बलरामजी का रूपदेखकर श्यामसुंदर व सखालोग हँसनेलगे उससमय गोपियोंने घात लगाकर मोहनप्यारेको भी पकड़ा और जब उन्हें अपनीगोलमें लेगईं तब चन्द्रावली बोली हे चित्तचोर चारहरनेके बदले आज तुम्हें नंगाकरके छोडूंगी ॥

दो० लै आईं प्यारी निकट हँसत कहत ब्रजबाल ।
कहो लाल कैसे फँसे बहुत करत रहे गाल ॥

उससमय ललिता उनकी मुरली छीनकर बजानेलगी व एकसखीने मोहनप्यारेको रंग व अबीरसे नहलाकर आंखों में काजल व माथेपर बेंदी लगाया व दूसरीने उनका पीताम्बर छीनकर उन्हें लहँगा व सारी व अँगिया पहिनाया व एकसखीने मोतियों से मांगगूंथा व स्त्रीरूपबनाकर राधाकेपास बैठालदिया तब श्यामाने बड़ेहर्षसे अपने हाथसे उनके गालोंपर इत्र व अबीर लगाकर उनका मुख चूमलिया ॥

दो० निरखि बदन प्यारी हँसी श्याम रहे सकुचाय ।
गहि प्यारी निज हाथसों दीन्हो पानखिलाय ॥
सो० सखियां करत कलोल गांठि जोरि अंचल दई ।
ब्रजमें रहै अमोल यह जोड़ी युग युग सदा ॥

जब ब्रजबालोंने राधाकृष्णको गांठिबन्धन कियेहुये बीचमें बैठाकर रंग व अबीरसे नहलादिया व उनकी छबिदेखकर प्रेमसे गावनेलगीं तब यशोदाने ललिताको घर में

बुलाकर कहा रसोईखानेका समय हुआहै इसलिये तू सबको भीतर बुलाले जबललिता श्यामा आदिक सखियोंको भोजन करनेवास्ते भीतरलिवालेगई व श्यामसुन्दर ब्रज-बालोंसे छूटकर अपनेगोलमें चलेआये तब ग्वालबालोंने बलरामजी को बुलाकर उन का रूप दिखलाया व मोहनप्यारेको सौगन्दधराकर जब उसीतरह उनका हाथ पकड़े हुये नन्द व यशोदाके पास लेगये तब वह अपनेलालको स्त्रीरूपसे देखतेही बड़हर्ष से लिपटाकर बोले अयबेटा तुम्हारा यहरूप किसनेबनाया नन्दकुमारने कहा अय बाबा ललिता आदिक राधाकी सखियोंने यहभूषण व बस्त्र मुझे पहिनायाहै फिर यशोदा ने श्यामा आदिक ब्रजबालोंको छत्तीसव्यञ्जन खिलाये व पान इलायचीदेकर अपनेयहांसे उत्तम २ भूषण व बस्त्रराधाको पहिनाये ॥

सो० रह्यो नन्दघर छाय होरी को आनन्द अति ।
कहत यशोमतिमाय फगुआ कहासो दीजिये ॥

यहसुनकर ब्रजबालोंने कहा हे नन्दरानीजी हमलोग फगुआ के बदले मोहनप्यारे को लेवैंगी तब नन्दमहरि ब्रजबासियों समेत हँसनेलगी व श्यामसुन्दरने लहँगाआदिक उतारकर अपना मुकुट व पीताम्बर पहिनलिया व सबग्वालबाल व ब्रजबालोंको साथ लेकर यमुनास्नान करनेगये जब केशवमूर्त्ति ने नहाकर फूलडोल लीला किया तब देवतोंने आकाशसे उनपर फूल बरसाये इसीतरह केशवमूर्त्ति नित्यनई लीलाकरके ब्रज वासियों को सुखदेते थे एकदिन राजाकंसने वृषासुरदैत्यको बुलाकर विनयपूर्वक कहा हम तुमको सब दैत्योंसे बलवान् समझकर अपना परममित्र जानते हैं सो तुम नन्दके बेटे कृष्ण व रामको मारडालो तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकारमानूं यहवचन सुनतेही वृषा सुर बैलरूप बहुतबड़ा पर्वतके समान होगया व दोनों सींग अपने बड़े २ कँगूरा ऐसे बनाकर बादलकी तरह गर्जता व लाल २ आंख निकाले पूंछफटकारे हुये सन्ध्यासमय वृन्दाबनमें आनपहुँचा व मारेक्रोधके मुखसे झागनिकालकर एकवार ऐसाचिल्लाया कि उसका शब्द सुनकर स्त्रियों का गर्भ गिरपड़ा व खुरोंसे पृथ्वीखोदके सींगोंपर पहाड़ उठाकर उलटनेलगा व वृक्षोंको सींगसे उखाड़कर श्यामसुन्दर को खोजता फिरता था यह दशा देखकर दिग्पाल व देवता डरगये व पृथ्वी कांपनेलगी व ग्वाललोग उसे अपना कालसमझकर श्रीकृष्णजीकी शरणपुकारने लगे व सबोंने किवाड़ अपनेबन्द कर लिये उससमय श्याम व बलराम भी ग्वालोंसमेत गोचराकर जैसे गांवके निकट पहुँचे वैसे गो व बछवे मारेडरके भागकर जिधर तिधर चलेगये व ग्वालबाल वृषासुर को देखकर रोनेलगे जब मोहनप्यारेने यह दशा ग्वालबाल व ब्रजबासियों की देखी तब उन्हें धैर्य्य देकर बोले तुमलोग शोच मतिकरो देखो मैं अभी इस दुःखदायी को मारेडालताहूं ऐसाकहकर वृषासुरके सन्मुख चलेगये और ललकारकर बोले कपटरूपी

दैत्य तू गोपी व ग्वालोंको किसवास्ते डराकर धमकाता है हमारेसामने आव तेरेऐसे बहुतराक्षसों को मैंने मारडाला है उन्हें देखतेही वृषासुरने प्रसन्नहोकर मनमें कहा कि जिसके मारनेवास्ते मेरी इच्छाथी बहुतअच्छा हुआ जो वहबालक आपसे मेरे सामने चलाआया अभी इसको मारकर राजाकंसके पास जाताहूं ऐसा बिचारकर वृषासुर बिजुलीके समान केशवमूर्त्तिपर दौड़ा व उसने अपने सींग पृथ्वीमें गड़ाकर ऐसाचाहा कि बैकुण्ठनाथको तीनोंलोक समेत उठालूं तब श्यामसुन्दरने उसका सींग पकड़कर उसे अठारहपग पीछे हटादिया फिरवह भी बलकरके मोहनप्यारेको हटानेलगा ॥

दो० वह आवे हरिओर को प्रभु पाछे लेजाहिं ।
या विधि जो आयोगयो रही शक्ति कछुनाहिं ॥

जब इसीतरह बलकरते २ वह दैत्य थकगया तब मुरलीमनोहरने एकबेर उसको पृथ्वीपर पटकदिया जब फिर उसने बड़ेक्रोधसे मोहनप्यारे को दोनोंसींगों में अड़ाया तब केशवमूर्त्तिने फुरतीसे निकलकर दोनोंसींग उसके धरलिये व ऐसाढकेला कि वह अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उससमय श्यामसुन्दरने सींग व पैरपकड़कर इसतरह शरीर उसका उमेठा जिसतरह कोई गीलाकपड़ा निचोड़ताहै तब उसके मुख व नाक व मूत्रकी राहसे लोहूबहिकर वह दैत्यमरगया यहहाल देखतेही देवतोंने आकाश से मुरलीमनोहर पर फूल बरषाये व सब वृन्दाबनबासी बड़ेहर्ष से उनकी स्तुति करके बोले अय मोहनप्यारे हमलोगों ने इस दैत्य को बैल समझा था बहुत अच्छा भया जो मारागया ॥

सो० दुष्टदलन गोपाल मुदित कहत नरनारि सब ।
भक्तन के रछपाल ब्रजबासी नँदलाड़िले ॥

उससमय राधिका बोली अय मोहनप्यारे बैलरूप दैत्यमारने से तुमको पापलगा इसलिये सब तीर्थस्नान करो तब किसीको छूना यहबचन सुनतेही नन्दकुमारने दो कुण्ड गोवर्द्धन पहाड़के पास खुदवाकर कहा अय राधाप्यारी मैं इसीजगह सबतीर्थों को बुलालेताहूं सो उनकी इच्छानुसार उसीसमय गङ्गा व यमुना व सरस्वती आदिक सबतीर्थ अपने २ रूपसे वहांआये व अपनानाम बतलाकर जब दोनोंकुण्डों में जल डालके चलेगये तब श्यामसुन्दर ने उस में स्नानकिया व बहुतसी गो व सोना देकर वहांपर ब्राह्मणोंको भोजनखिलाया व नन्दजी व वृषभानुआदिकने नन्दकुमारपर बहुत सा द्रव्यादिक न्यवछावरकरके गरीबोंकोदिया व आनन्द मचातेहुये अपने २ घरआये उसीदिनसे वे तीर्थ राधाकुंड व श्रीकृष्णकुण्ड नामसे प्रसिद्धहोकर आजतक वृन्दावन में हैं इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जब समाचार मारेजाने वृषासुरका

कंसको पहुँचा तब उसने बहुत उदासहोकर विश्वासकरके जाना कि मैं इसबालक के हाथसे अवश्य माराजाऊंगा सो श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार एकदिन नारदजी कंसकेपास आये जब उसने बड़े आदरभावसे बैठाला तब नारदमुनि बोले हे मूर्ख तैंने कुछजाना कि वृषासुरआदिक बड़े २ दैत्योंको किसनेमाराहै तू मेरावचन विश्वासकरकेमान तैंने जो कन्या देवकीकी पत्थरपर पटककर मारी थी वह कन्यारूपी योगमाया यशोदा के उत्पन्नहोकर श्रीकृष्ण ने देवकी से जन्मलियाथा व वसुदेवजी अपनाबालक रात्रिको नन्दकेघर पहुँचाकर उसकेबदले वहकन्या उठालेआये थे व बलरामभी वसुदेवका बेटाहै जिसको योगमायाने देवकी के पेटसे निकालकर रोहिणीके गर्भमें धरदियाथा व वसुदेवने तुझसे गर्भपातहोने का हाल कहा व उन्होंने तेरेडरसे रोहिणी अपनी स्त्री को नंदजी के यहां गोकुलमें भेजकर रक्खीथी उसीजगह बलभद्रजी ने जन्म लियाहै जब देवकी के प्रथमबालक उत्पन्नहुआ तभी हमने तुझसे कहदियाथा कि तू वसुदेवके संतान से चैतन्यरहियो पर इसमेंतेरा क्यावशहै भाग्यका लिखाहुआ मिटनहींसक्ता तीनकोस पर तेराशत्रुहै जोकुछ तुझसे बनपड़े आगे के वास्ते उपायकर यहबचन सुनतेही पहले कंस भयसे काँपने लगा फिर उससे क्रोधित होकर वसुदेव व देवकी को अपनेसामने बुलाकर कहा ॥

दो० प्रथम दियो सुत ल्यायकै मन परतीत बढ़ाय ।
ज्यों ठग कछू दिखायकै सर्बस ले भगिजाय ॥

चौ० मिला रहा कपटी तू मुझे । भला साधु जाना मैं तुझे ॥
कृष्ण नन्द घर तू पहुँचाय । देवी हमैं दिखाई आय ॥
मन में कछू कहै मुख और । आज तोहिं मारों यहि ठौर ॥
मित्र सगा सेवक हितकारी । करै कपट सो पापी भारी ॥

दो० मुख मीठा मन विष भरा रहै कपट के हेत ।
आप काज परद्रोहिया उस से भला जो प्रेत ॥

जब ऐसाकहकर कंस वसुदेव व देवकीको मारनेवास्ते नंगी तलवारलेके दौड़ा तब नारद मुनिने हाथ उसकापकड़कर कहा हे राजन् इनके मारनेसे तेराअर्थ नहीं निकलैगा जिनसे तुझको अपने प्राणकाडरहै उनकेमारनेका उपायकरना चाहिये यह सुन कर कंसने उनको प्राणसे नहींमारा पर बेड़ी व हथकड़ी डालकर फिर उन्हें कैदकिया जब नारदजी वहांसे चलेआये तब कंसने केशीनाम दैत्यको जो बड़ाबलवान्था बुला कर बिनयपूर्वक उससेकहा हे केशी यह समय सहायता करनेका है ।

चौ० महाबली तू साथी मेरा । बड़ा भरोसा मुझको तेरा ॥

एकबार तू ब्रजमें जावै । राम कृष्णहति मुझे दिखावै ॥

जब केशी दैत्य यह वचनमानकर वृन्दावनको चला तब कंसने चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल बड़े २ पहलवानोंको बुलाकर कहा हम श्याम व बलराम वसुदेव के पुत्रोंको किसीबहाने यहां बुलाते हैं तुमलोग कुश्तीलड़कर उन्हें मारडालो तो तुम को बहुत द्रव्यदेवैंगे ऐसाकहकर कंस अपनेमंत्रियोंसे बोला तुमलोग कोई ऐसा उपाय करो जिसमें राम व कृष्ण मारेजावें तब उन्होंने कहा महाराज आप ऐसेप्रतापी व बलवान् होकर क्योंडरतेहो हमारासम्मत यह है कि तुम एक रंगभूमि बहुत उत्तम बनवाओ व धनुषयज्ञकेबहानेसे नन्दादिकको रामकृष्णसमेत यहांबुलवाओ तो कोईमल्ल या कुवलयापीड़ हाथी दोनोंभाइयों को मारडालैगा यह सम्मत कंसनेमानकर कार्त्तिक सुदी चतुर्दशीको मुहूर्त्त धनुषयज्ञ महादेवका ठहराया व अपने सेवकोंको आज्ञादिया कि तुमलोग तुरन्त एकस्थान बहुतउत्तम रंगभूमिका पहलवानोंके लड़नेवास्ते बन-वाओ व उसमें एक मचान बहुतऊंचा व चौड़ा मेरेबैठनेको ऐसातैयारकराओ जिसमें किसीका हाथ न पहुँचै व उसीतरहका दूसरामचानभी मेरेइष्ट व मित्रोंके बैठनेवास्ते बनवाओ कि वहलोगभी हमारेपास बैठेंगे व पहिले डेवढ़ीपर धनुष महादेवजी का रखवाओ व बिधिपूर्व्वक उसे पूजकर नगरमें ढिंढोरापिटवादेव कि राजमन्दिरपर धनुष यज्ञकी पूजाहै जब रामकृष्ण धनुषकेपास पहुँचें तब हमारे शूरवीर उनदोनों बालकों से कहैं कि बिना धनुषचढ़ाये भीतर न जानेपावोगे जब वह अहंकारसे धनुषचढ़ाने वास्ते उठावैं तब मेरे शूरवीर उनको मारडालैं जो उनको मारैगा उसको मुंहमांगा धन देऊंगा व उनको मारनेसे मुझे अपनी मृत्युकाखटका मिटजावैगा व दूसरे द्वारपर कुवलयापीड़ गजपतिको जो दशहजार हाथीकाबल रखताहै वास्तेमारने उनलड़कोंके खड़ाकर रक्खो कदाचित् वह पहिली डेवढ़ीसे जीतेबचकर भीतरआये तो वह हाथी एकझपटमें उनको पैरतले दबाकर मारडालैगा और तीसरेडेवढ़ी रंगभूमिके स्थानपर मेरेमंत्री व शूरवीर अनेकशस्त्र लियेहुये चैतन्य बैठेरहैं जिसमें दोनोंबालक भीतर न आनेपावैं राजाकंस यह आज्ञादेकर सभामें आनबैठा व सबकीओर देखकर बिचारने लगा कि रामकृष्णके बुलानेवास्ते किसेभेजैं जब उसको अक्रूरसे अधिक बुद्धिमान् दूसरा कोई नहीं दिखलाईदिया तब उसने अक्रूरको अकेले में लेजाकर उनकी बड़ाई करके कहा हे अक्रूर मैं तुमको बड़ा बुद्धिमान् व अपनामित्र जानकर मनकी बात कहताहूं मुझे श्याम व बलराम बसुदेव के बेटोंसे दिनरात अपनेप्राणका डरलगारहता है यह हाल तुम्हें भी मालूमहोगा जिसतरह बिष्णुभगवान्ने देवतोंकेवास्ते तीनपग पृथ्वी राजाबलिसे दानलिया व उसकोपातालमें भेजकर सदा इन्द्रकी रक्षाकरतेहैं उसी तरह तुमकोभी हमारी सहायता करनीचाहिये अच्छेलोग आप दुःख उठाकर दूसरेका

उपकार करतेहैं इसलिये तुममेरे भलेवास्ते वृन्दावनमें जाव आकाशवाणी होने व नारदमुनिके कहनेसे मैं जानताहूं कि आठवांबालक देवकीका अवश्य मुझेमारेगा पर मनुष्यको अपने सामर्थ्यभर रोग छूटने व प्राणबचानेवास्ते औषधि करनीचाहिये आगे होनहार किसीतरह मिट नहींसक्ता ॥

दो० कहत कंस अक्रूर सों मैं जानत मनमाहिं।
तुम समान या लोकमें और दूसरो नाहिं ॥

इस वास्ते तुम श्याम व बलरामको नन्द व उपनन्दसमेत धनुषयज्ञ के बहाने से अपनेसाथ लिवालाओ मैं तुम्हारा बड़ाउपकार मानूंगा व तुम मेरेचढ़ने के रथपर बैठके चलेजाव धनुषयज्ञके उत्सवका हाल सुनकर वे लोग अवश्यआवेंगे व मैंने उन दोनों बालकोंके मारनेवास्ते जो उपाय विचारा है उसे भी सुनलेव मेरेनिकट पहिली डेवढ़ीमें धनुषचढ़ावती समय मेरेशूरबीरों के हाथसे मारेजावेंगे कदाचित् वहां बचगये तो दूसरेद्वारपर कुवलयापीड़हाथी उनको अपने पैरोंसे रौंदकर मारडालेगा वहां से भी बचकर रंगभूमिमें पहुँचे तो चाणूर व मुष्टिक कि हाथी दिग्पालभी उनकासामना करनहीं सक्ते उन्हें अवश्य मारडालेंगे जो उनसे भी बचे तो मैं अपने हाथसे श्याम व बलरामको मारकर अपना काम सवांरूंगा व उन्हें मारने उपरान्त वसुदेव व देवकी को जो वही विषकीमूल हैं उग्रसेन आदिक यदुवंशियों समेत मारडालूंगा व हरिभक्तों की जड़ संसारसे उखाड़कर जरासन्ध अपने श्वशुर व वाणासुर व दन्तवक्त्र आदिक राजों समेत जो मेरेमित्र हैं आनन्दपूर्वक राज्यकरूंगा सो तुम नन्दजीसे कहदेना कि वहबकरा व भैंसा आदिक अपने यज्ञकरने वास्ते भेंटलेकर वहां तुरन्तलेआवें व मैंभी इष्टमित्रों को इसी बहाने यहां बुलाताहूं यहवचन अभिमान भराहुआ कंससे सुनकर अक्रूरनेकहा हे राजन् आपक्रोधकरके बुरा न मानें तो मैं कुछ विनयकरूं कंसबोला बहुत अच्छा कहो हम खेद न लावैंगे तब अक्रूरनेकहा महाराजआपने जो आज्ञादी सो करूंगा परन्तु इन्द्र वज्रनाम शस्त्ररखने व रावणमृत्युको बांधेरहनेपरभी काल से नहीं बचे जो कोई उत्पन्नहुआ है वह एकदिन अवश्यमरैगा व मनुष्य अपने कल्याणकेवास्ते अनेक उपायकरके मनमें कुछविचारताहै और परमेश्वरकी इच्छानुसार कर्म्मोंके फलसे उसके विपरीतहोकर उसमें तिलभर घटनेबढ़ने नहींसक्ता जिसतरह अज्ञानमनुष्य यहसब देखनेपरभी नहींसमझते कि होनहार प्रबलहोकर मेराकिया कुछनहींहोगा उसीतरह तुमने भी आगमवांधकर यहउपाय विचाराहै इसमें न मालूम परमेश्वरकी इच्छानुसार तुम्हारे वास्ते कैसाहो जिसतरह सबजीव मरतीसमय हाथ व पांव फटकते हैं वहीहाल तुम्हारा भी मुझे मालूमहोताहै मैं तुम्हारी आज्ञानुसार राम व कृष्णको लेआऊंगा पर उनदोनों बालकों से शत्रुता करने में तुम्हारा प्राण नहीं बचेगा ॥

दो० मैं वृन्दाबन जात हौं तेरो भय कछु नाहिं ।
यह कहि आयो धाम को कंस गयो घरमाहिं ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का केशी व व्योमासुर दैत्यको मारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दरने केशी दैत्यको मारा व नारद जीने आनकर मोहनप्यारे की स्तुतिकी व व्योमासुर नन्दलालके हाथसे मारागया था वहकथा वर्णनकरते हैं सुनो जब केशी दैत्यको कंसने श्याम व बलरामके मारनेवास्ते भेजा तब वहस्वरूप अपना घोड़ेकेसमान लम्बा व चौड़ा बनाकर प्रातस्समय वृन्दाबन को चला व अपने स्वामीको पालनकरनेवास्ते बड़ेहर्षसे पूंछफटकारे व आंखैं लाल२ निकाले टापोंसे पृथ्वी खोदताहुआ वृन्दावनमें पहुँचा उसकारूप देखतेही गोपी व ग्वालों ने बहुत भयमानकर जाना कि हमलोगों के वास्ते महाप्रलयआया इसघोड़े के हाथसे हमाराप्राण नहीं बचेगा जब यहदशा अपनी ब्रजबासियों ने देखी तब श्रीकृष्णजी के पास जाकर सब वृत्तान्त कहा ॥

दो० ब्रज आयो केशी असुर जानिलियो नँदलाल ।
सन्मुख उसके हर्ष से चले कंस के काल ॥

श्यामसुन्दरने चलतीसमय सब ब्रजबासियों से कहा तुमलोग कुछ मतडरो मैं अभी उसकोमारकर तुम्हाराशोच छुड़ादेताहूं ऐसाकहकर मोहनप्यारे ने काछा अपना बांधलिया व केशीके सन्मुखजाकर ललकारा हे कपटरूप राक्षस जो तू मेरेमारनेवास्ते आया है तो औरोंको क्यों डराकर धमकाताहै मुझसे आनकरलड़ तो तेराबल व पराक्रमदेखूं जिसतरह दीपकके‌ऊपर पतंगे आपसे‌आनकर जलमरते हैं उसीतरह तूभी यहां मरने वास्ते आया है अब मेरेहाथ से जीताबचकर न जावेगा यहबचनसुनते ही केशी दैत्य क्रोधितहोकर मोहनप्यारे की ओर दौड़ा और जब उसने दोनों पैर अगिले उठाकर उनको टापमारनेचाहा तब मुरलीमनोहरने दोनोंपांव उसके पकड़लिया और इसतरह घुमाकरफेंका जिसतरह गरुड़जी सर्पको उठाकर फेंकदेते हैं जब वहघोड़ा दोसौ पगपर जागिरा व थोड़ीदेर अचेतरहकर चैतन्यहुआ तब वह अपनामुख फैलाकर इसइच्छासे नंदलालजी पर झपटा कि उनको निगलजावे उससमय मोहनप्यारेने अपनाहाथ लोहे के समान कड़ाबनाकर इसतरह उसकेमुखमें डालदिया जिसतरह सांप बिलमेंघुसजावे जब बहुत काटनेपरभी गिरिधारीलालके हाथमें कुछघाव न होकर सबदांत उस घोड़ेके टूटगये तब श्यामसुन्दरने अपनाहाथ उसकेमुखमें ऐसामोटा किया कि उसे श्वासलेने की जगह न रहकर प्राण निकलनेलगा उससमय केशी दैत्यने मनमें कहा देखो जैसे

मछली बंशी को निगलकर प्राण देती है उसीतरह मैंने केशवमूर्ति का हाथपकड़कर अपनाप्राणखोया ऐसाबिचारकर केशीने श्यामसुन्दरकाहाथ अपनेमुखसे निकालनेवास्ते बहुतचाहा जब हाथउनका नहीं निकला तब वहघोड़ा चिल्लाकर पृथ्वीपर गिरपड़ा जब पेटउसका खरबूजेके समान फटकर प्राणनिकलगया व रुधिर नदीकी तरह बहनेलगा तब देवतों ने उसके मारेजाने से प्रसन्नहोकर श्यामसुन्दरपर फूलबरषाये व वृन्दावन-बासी यहआनन्द देखकरबोले हे नंदलाल तुमने बड़ेदुष्टकोमारकर हमलोगों के प्राण बचाये व नंद व यशोदाने मोहनप्यारेको गोदमें उठाकर उनकामुख चूमलिया व बहुतसा दान व दक्षिणा उनके हाथ से दिलवाया ॥

सो० बल मोहन दोउभाय चिरंजीव जोड़ी युगल ।
देत अशीश मनाय ब्रजबासी प्रभुको सबै ॥

जब राजाकंसने हालमारेजाने केशीकासुना तब वह मारे शोचके अचेतहोगया व श्रीकृष्णजी कपटरूपघोड़ा मारनेउपरांत थोड़ीदूरआगेजाकर कदमकेनीचे खड़ेहुये तब उसीसमय नारदजीने वहांआनकर इसतरहपर स्तुतिउनकीकी हे त्रिलोकीनाथ बहुत अच्छाहुआ जो आपने केशीको जोकि सबदैत्योंसे बलवान् था मारडाला हेजगदात्मन् परब्रह्मपरमेश्वर हेज्योतिस्स्वरूप अलखभगवन् हेआदिपुरुषनिरञ्जन निराकार चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल पहलवान् व राजाकंस अपनेभाइयोंसमेत व दन्तबक्रआ-दिक उनकेमित्र मुझे मृतक दिखलाईदेतेहैं मेरीदण्डवत् आपकोअंगीकारहो हेदीनदयालो दुष्टदलन हे केशवमूर्त्तेभक्तबत्सल आपमराहुआ पुत्र सांदीपन अपनेगुरूका यमपुरीसे फेरलेआवेंगे मेरानमस्कार तुम्हें पहुंचे हे जगन्नाथजगज्जीवन हेमाधवमुकुंद अविनाशिन् हे बैकुण्ठनाथ लक्ष्मीरमण जरासन्ध व शिशुपालआदिक अधर्मीराजा व राक्षसोंको आप मारकर अठारह अक्षौहिणीदलका महाभारतमें नाशकरावेंगे मेरीदण्डवत् अंगीकारकी-जिये हे कल्याण केशव गिरिधारिन् हेदीनदयालो गोपीनाथ आपसमुद्रमें द्वारकापुरी बसाकर पांडवोंको लोक व परलोककासुखदेंगे मेरानमस्कारलीजिये हे दीनदयालो दैत्य संहारण कालयमन व भौमासुरआदिको आपमारेंगे और सोलहहजार एकसौकन्या जो उसने अपनाबिवाहकरनेवास्ते इकट्ठीकियाहै उन्हें बिवाहेंगे व रुक्मिणीकी इच्छापूरी करनेवास्ते शिशुपालआदिक राजोंको जीतकर उससे बिवाहकरेंगे व आजके तीसरे दिन राजाकंसको तुम्हारेहाथसे मराहुआदेखूंगा व इन्द्रपुरीसे आप पारिजातककावृक्ष लाकर सत्यभामा अपनीस्त्रीकेघर बैठालेंगे व राजानृगको गिरगिटानकीयोनिसे छुड़ा-कर मुक्तिदेवेंगे व स्यमन्तकमणि जाम्बवती कन्यासमेत जाम्बवान् भालूकेयहांसेलाकर उसकेसाथ अपना बिवाहकरेंगे हेमहाप्रभो अबकंसके अधर्मकरनेसे सबयदुबंशी व गौ ब्राह्मणको पृथ्वीपर बड़ादुःखहोताहै सो कृपाकरके पृथ्वीकाभार उतारिये हेसीतापते मैं

तुम्हारीदयासे आपको पहिंचानकर शरणागतहुआ नहीं तो आपकीलीला अपरम्पार का चरित्रकोई नहींबर्णनकरसक्ता पर मैं तुम्हारीदयासे इतनाजानताहूं कि आपहरिभक्तोंको सुखदेने व गौ व ब्राह्मणकीरक्षाकरने व दैत्यअधर्मी राजोंकोमारनेवास्ते बारम्बार संसारमें सगुणअवतारलेकर पृथ्वीकाभार उतारते हैं ॥

चौ० याबिधिसे तुमको पहिचानी। निशिदिनशरणतुम्हारीजानी॥
सदाफिरों तुम्हरेरंगराता। हितसों गुणगावों दिनराता॥
कृपाकरो मेरोभ्रम टारो। भवसागर ते पारउतारो॥
बारबारबहु बिनती कीन्हों। नमस्कारकरिआयसुलीन्हों॥
दो० कालरूप शिशुपालके मारन प्रभुगोपाल।
नितनवलीला करतहैं ब्रजमें मोहनलाल॥

जब इसीतरह नारदजी तीनोंकालके जाननेवालेने बहुतस्तुति श्यामसुन्दरकी की और उनसे बिदाहोकर ब्रह्मलोकको चलेगये तब वृन्दावनबिहारी ग्वालबालों को साथ लिये भाण्डीरबटकेनीचे बैठकर आपराजाबने व बाजे ग्वालबालोंकोमंत्री व किसीको दीवान व बाजेकोसेनापति व किसीकोसिपाही बनाकर फलबुझौवलखेलनेलगे व राजा कंस जबचैतन्यहुआ तबउसने व्योमासुरको बुलाकरकहा सुनो मित्र मुझे श्याम व बलरामसे अपनेप्राणकाखटका दिनरातरहताहै सो मैंने जितनेदैत्य उनकेमारनेवास्तेभेजे सबको उन्होंनेमारडाला अबतुम्हारेसमान कोईदूसराशूरबीर मुझेदिखलाई नहींदेता इसलिये तुममेरेवास्ते वृन्दावनमेंजाकर श्याम व बलरामकोमारआवो तो तुम्हाराबड़ाउपकारमानूंगा यहसुनकर व्योमासुरबोला महाराज मैं अपनातनु तुम्हारेऊपर न्यवछावर समझकर अपनीसामर्थ्यभर तुम्हारीआज्ञा पालनकरूंगा जो सेवक अपनेस्वामीकीआज्ञा पालनकरै उसकालोक व परलोक दोनोंबनताहै ऐसाकहकर व्योमासुरकंससे बिदाहुआ व ग्वालरूपधरकर जहां केशवमूर्त्तिखेलतेथे तहांआया व उसनेहाथजोड़कर मोहनप्यारे से विनयकिया महाराज मैंभी तुम्हारेसाथ खेलनेचाहताहूं यहवचनसुनतेही श्यामसुन्दर अन्तर्य्यामीने उसकपटरूपीग्वालको पहिंचानकरकहा तुमअपना संदेहछोड़कर जिस खेलवास्तेकहौ वहीखेलहमतुमसेखेलैं कपटरूपीग्वालबोला जिसतरहभेड़िया अपनीपीठ पर भेड़ीउठाकर भागजाताहै उसीतरह एकलड़का दूसरेबालकको पीठपरचढ़ाकरदौड़े यहीखेलखेलो मुरलीमनोहरनेकहा बहुतअच्छा जबमोहनप्यारे व्योमासुरकोसाथलेकर फलबुझौवल व आंखमुँदौवल खेलनेलगे तब वह कपटरूपीग्वाल बहुतलड़कोंको जो उसे नहींपहिंचानतेथे छिपतीसमय एकएकको उठाकर पर्वतकीकंदरामें रखआया व उस कंदराकेद्वारेपर शिलाधरदी जबसबग्वालोंको कंदरामेंछिपाआया व श्यामसुन्दर अकेले

रहगये तबकपटरूपीग्वाल ललकारकरबोला हे मोहनप्यारे आजतुमको सबयदुबंशी व ब्रजबासियोंसमेत मारकर राजाकंसकीआज्ञा पालनकरूंगा जबव्योमासुर ग्वालतनछोड़ कर अपने निजरूपसे श्रीकृष्णजीको मारनेवास्तेझपटा तब दैत्यसंहारणने उसकागला दबाकर पशुकीतरहलात व मुक्कोंसेमारडाला व ग्वालबालोंको कंदरामेंसे निकाललाये उससमय देवता व विद्याधरोंने श्यामसुन्दरपर फूलबर्षाकर बड़ाआनन्दमचाया सन्ध्यासमय केशवमूर्त्ति गौ व ग्वालबालोंसमेत मुरलीबजाते आनन्दमचातेहुये अपने घरआये उसीदिन रातको नन्दरानीने ऐसास्वप्नदेखा कि आज श्याम व बलराम वृन्दा· बनमें नहीं हैं कहींचलेगये यहस्वप्नदेखतेही पहिलेनन्द व यशोदाने बड़ाशोचकिया फिर स्वप्नेकीबात झूठीसमझकर अपनेमनको धीर्य्यदिया ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

अक्रूरका श्याम व बलरामके लेजानेवास्ते वृन्दावन में पहुंचना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित कार्त्तिकबदीद्वादशी को केशी व ब्योमासुरदैत्यमारेगये व उसीदिनप्रातस्समय जबअक्रूरकंसके रथपरचढ़कर वृन्दावनकोचले तबबहराह में विचारकरनेलगे देखो इसजन्मतो मुझसे कोईशुभकर्म्म नहींहुआ आजतक मेराजन्म कंसअधर्म्मीकी संगतिमेंबीता पिछलेजन्म न मालूम कौनऐसायज्ञ व तप मैंने कियाथा जिसपुण्यसे उनचरणोंकादर्शन जिनकी धोवनगंगाजीहोकर तीनोंलोकोंको तारती हैं पाऊंगा जिनचरणोंकाध्यान ब्रह्मादिकदेवता व सनकादिक ऋषीश्वरआठोंपहर अपने हृदयमेंधरकर उनकीरजमिलने वास्ते दिनरातचाहना रखते हैं वहीधूर अपनेमस्तकपर चढ़ाकर भवसागर पारउतरजाऊंगा ॥

दो० शिलाशापमोचनकरण हरण भक्त उरपीर ।
आज देखिहौं वह चरण सकल सुखनके हीर ॥

जिसतरह पापीलोग सत्संगकरनेसे कृतार्थहोजाते हैं उसीतरह मेराभाग्यभी उदयहुआ जो कंसने मुझे श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकंदके लेनेवास्तेभेजा इसीबहानेमैंभी मोहनमूर्त्तिकी छविदेखतेही अनेकजन्मके पापोंसेछूटकर लोचनोंका फलपाऊंगा नहीं तो मुझे ऐसीपापी संसारीमायाजालमें फँसेहुये लोभीको उनपरब्रह्मपरमेश्वरकादर्शन कहांमिलता यहसब उन्हीं बैकुण्ठनाथकी कृपासेसंयोगहुआहै राजाकंसने मेरेऊपर बड़ी दयाकी जो इसकामकेवास्ते मुझे भेजा जिस आदिपुरुष भगवान्ने कालीनागकोनाथ कर उसकेमस्तकपर नृत्यकिया व नन्दकीगौ चराकर गोपियोंकेसाथरासमण्डलखेला व देवतोंकेवास्ते तीनपगपृथ्वी राजाबलिसेदानलिया व देवलोककाराज्य इन्द्रादिक देवतोंकोदेडाला वहीबैकुण्ठनाथ अपना बालचरित्र ब्रजबासियोंको दिखलाकर अनेक

तरहकासुख उन्हेंदेते हैं जिनचरणोंकेदर्शनवास्ते लक्ष्मी व नारदमुनि व मार्कण्डेय व अम्बरीष आदिक बड़े २ ऋषीश्वर व महात्मा चाहनारखते हैं उनचरणोंकादर्शन व स्पर्शसहजमें ग्वालबाल व गोपियोंको प्राप्तहोता है इसलिये वृन्दाबनबासियोंका बड़ा भाग्य समझना चाहिये ॥

दो० निराकार निरलेपके भेद न जानैकोय ।
जो करता सब जगतके माखनप्रभुहैं सोय ॥

आजमुझको अच्छे २ सगुन दिखलाईदेकर हरिणमेरेदाहिनीओरसे बायेंचलेआवते हैं इसलिये अवश्यमुझे नारायणजीकादर्शन मिलेगा हे मन वहआदिपुरुष अविनाशी सबसेपहिलेथे व महाप्रलयहोनेउपरांत भी वहीस्थिररहैंगे कदाचित् तुझे इसबातका सन्देहहो कि आदिज्योतिभगवान्ने किसवास्ते संसारमें जन्मलिया तो कभी ऐसामति समझना उन्होंने केवलवास्ते सुखदेने अपनेभक्त व भवसागरपारउतारने संसारीजीव व मारनेदैत्य व अधर्मी व भारउतारनेपृथ्वीके अपनीइच्छासे जन्मलियाहै उनकेभेद व महिमाको कोईपहुँचनेनहींसक्ता वहअन्तर्यामी सबभले व बुरेके उत्पन्नकरनेवालेहोकर संसारीमायासेरहितहैं उनकोसतोगुण व रजोगुण व तमोगुण नहींव्यापता और वृन्दा-बनकीमहिमा बैकुण्ठसेअधिक जानकर ग्वालबालोंको ब्रह्मा व महादेवसे छोटा न समझना चाहिये ॥

क० एकरज रेणुकापै चिन्तामणि वारिडारों लोकनकोवारों सेवा कुंजकेबिहारपै।लतनके पातनपै कल्पवृक्ष वारिडारों रामहूं को वारिडारों गोपिनके द्वारपै ॥ ब्रजकी पनिहारिनपैशचीरची-वारिडारों बैकुंठहूको वारिडारों कालिन्दीके घाटपै । कहै अभय राम एकराधाजूको जानतहों देवनको वारिडारों नन्दकेकुमारपै॥

व दैत्यलोगोंको बड़ाभाग्यमान समझकर परमेश्वरकीदया उनपरभी जाननीचाहिये किसवास्ते कि जबनारायणजी उनकाबधकरते हैं तब वहस्थान बैकुंठमें रहनेवास्ते उन्हें मिलताहै जहांहजारोंवर्ष तपस्याकरनेपरभी मनुष्यनहीं पहुँचनेसक्ता और रावण व हिरण्याक्षकी कथा जो उनकेहाथसे मारेगयेथे इसबातकी साक्षीहैं किसवास्ते कि श्याम सुन्दरकेडरसे उनकेशत्रुओं को दिनरात अपनेप्राणका भयरहकर किसीक्षणउनकारूप चित्तसेनहीं उतरता इसीकारण वहलोग मुक्तिपाते हैं देखो मेराभाग्यउदयहुआ जिसरूप को देखनेवास्ते बड़े २ योगीश्वर व महात्मा तीनोंलोकोंकी चाहनारखतेहैं उसमोहनी मूर्त्तिको देखकर अपनाजन्म स्वार्थकरूंगा व पहिले ग्वालबालोंको जो दिनरात श्याम सुन्दरका दर्शनकरते हैं दण्डवत्करूंगा फिर शिरअपना उनचरणोंपरधरकर वहरज

अपनेमस्तकपर चढ़ाऊंगा जोधूरि ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दीनहींमिलती जबवहदीना-नाथ जगत्के मुक्तिदेनेवाले दयासे अपनाहाथ मेरेमस्तकपरधरकर मुझेउठावैंगे तब अपनेबराबर किसीतपस्वी व ज्ञानीकाभाग्य नहींसमझूंगा परमैं एकबातसे बहुतडरताहूं कदाचित् मुझे कंसका भेजाहुआ जानकर ऐसा न करैं सो यहसन्देहकरना न चाहिये जिसतरह मैं मनसावाचाकर्मणासे उनकी भक्तिरखकर उन्हें अपनास्वामी जानताहूं उसीतरह वहअन्तर्य्यामी भी मुझे अपनादासजानकर दया करैंगे ॥

दो० हरिदासनको दासहौं मनमेंकरिविश्वास ।
कंसदूत नहिंजानिहैं माखन प्रभुसुखरास ॥

जबवह करुणानिधान मेराहाथपकड़कर घरमेंलेजावैंगे तब मैं अपनेसमान किसी को नहींसमझकर सबहालकंसका सच्चा २ उनसेबतलादूंगा संसारीजीवोंको मायारूपी रस्सीमेंबँधेरहनेसे मुक्तिहोनाकठिनहै पर वहीदीनदयालु मुझेअपना जातिभाई समझकर अवश्य भवसागर पारउतारदेवैंगे जिससमय वहअपनी कृपासे मुझे चाचाकहकरपुका-रैंगे उससमय बड़े २ महात्मा मेरेऊपर डाहकरैंगे ॥

दो० हे मन तू मतिशोचकर है उनहींको लाज ।
आपुहि काज सवांरि हैं माखनप्रभुब्रजराज ॥

जबअक्रूर इसीतरह विचारकरताहुआ तीनकोशरस्ता दिनभरमेंकाटकर संध्यासमय वृन्दावनके निकटपहुँचा और उसने वहांपृथ्वीपर श्रीकृष्णजीकेचरणोंका आकार जिस में गदा व पद्म व शंख व चक्र व ध्वजाके चिह्नथे देखा तब रथसेउतरकर उनचरणों की धूरि अपनेशिर व आंखोंमेंलगाई व उसजगह दण्डवत्करके बोला जहांपर तुम्हारे चरणोंकाआकार रहताहै वहांबड़े २ ज्ञानी व ऋषीश्वर सदादण्डवत् कियाकरतेहैं जब अक्रूरको इसीविचारमें प्रेमउत्पन्नहोकर आंखोंसेआंशू बेपरवाहबहनेलगे तब सबगोप व ग्वाल सच्चीप्रीति उसकी देखकर अपने २ प्रेमकाघमण्ड भूलगये पर अपना बड़ाभाग्य समझकर आपसमें कहनेलगे देखो जिनचरणोंकीधूरि अक्रूर अपनेमस्तकपर चढ़ातेहैं उनचरणोंकीसेवा हमलोग दिनरातकरतेहैं इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेराजन् उसीसमय मुरलीमनोहर पीताम्बर पहिने फूलोंकागजरा गलेमेंडाले बलरामजी व ग्वालबालोंसमेत बनसे गौचराकर हँसतेहुये वृन्दावनके निकटपहुँचे ॥

दो० माखनप्रभुमुख देखिके रोमरोम सुखपाय ।
प्रेमभावसे मगनह्वै परेउचरणपर धाय ॥

हे परीक्षित अक्रूरने कभी श्याम व कभी बलरामकेचरणों पर शिररखकर इसतरह

आंसूसेचरण उनकाधोया जिसतरह संसारीजीव ऋषीश्वर व महात्माके आनेसे पांव उनकाधोतेहैं जब थोड़ीदेरबीते रोना अक्रूरका कमहुआ तब उसनेहाथ जोड़के विनय किया महाराजमैं अक्रूरयादव तुम्हारादासहूँ यह बचनसुनतेही श्यामसुन्दर उसे अपना बड़ा समझकर शिरउसका पैरपरसे उठाने लगे परवह उनके प्रेममें ऐसा मगनथा कि उसको अपने तनुकीसुधि नहींरही शिर कौनउठावे इसलिये श्याम व बलरामने प्रीति पूर्वक अपनेहाथों से उसकाशिरपकड़कर उठाया और उसको चाचाकहकर बड़ेआदर से भीतर लेगये व नंदराय अक्रूरके गले मिले जब मोहनप्यारे बड़े प्रेमसे आसनपर बैठाकर अपने हाथ उनकाचरण धोनेलगे तववह लज्जावशहोकर पैरअपना मुरली-मनोहरकी ओरसे खींचनेलगा पर श्यामसुन्दर पांवउनका न छोंड़कर बोले हे चाचा तुमहमारे पिताकी जगहहो इसलिये तुम्हारी सेवाकरना हमको उचित है ऐसाकहिकर श्रीकृष्णने अक्रूरका चरणधोया व उनके शरीरमें अतर व चन्दनलगाकर बड़े प्रेमसे छत्तीसव्यञ्जन खिलाया व हाथधुलाकर पान व इलायचीदिया जब अक्रूर भोजनकरके पलँगपरलेटे तब श्याम व बलराम उनकापांव दाबनेलगे व नंद व उपनंद आदिकने अक्रूरजीकेपास आनकरपूंछा कहो बसुदेव व देवकी कैसे हैं व राजा कंस किसतरह प्रजाका पालन करताहै हमारे जानकारी में जबतक कंस अधर्मीजीवेगा तबतक गौ व ब्राह्मण व प्रजा को उसकेहाथसे सुखनहींमिलैगा जहांकाराजा निर्दयी व अधर्मीहो वहांकीप्रजा सुखसे नहीं रहती जिस कंसने छःबालक अपनी बहिनके बिनाअपराध मारडाले उसको बधिकसे अधिक समझनाचाहिये यहसुनकर अक्रूरबोले जबसे कंसउत्पन्नहुआ तब से यदुबंशी व प्रजालोग दुःखपाते हैं जिसतरह बकरीके गोलमें एकभेड़िया रहनेसे उन को अपनेप्राणका डरलगारहताहै उसीतरह मथुराबासियोंको कंसके जीनेतक सुखनहीं मिलेगा उसकाहाल सब तुम्हें मालूम है और हम क्याकहैं ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

अक्रूर के साथ श्याम व बलरामका मथुरा में जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब नन्द व उपनन्द अक्रूरसे मथुराकाहाल पूँछकर अपने २ स्थानपरगये तब श्याम व बलराम जैसाबिचार राहमें अक्रूरजी करते जाते थे वैसा सन्मानकरकेपूंछा अयचाचा आपदया व प्रीतिकीराह हमको देखनेवास्ते आये हो सो आपने बहुतअच्छाकिया पर तुमने हमारेचरणोंपर जो तुम्हारे लड़कोंके समान हैं किसवास्ते गिरकर हमैं दोषलगाया हमको तुम्हारी सेवाकरनी चाहिये भला यहतो बतलाओ मथुराबासियोंकादिन किसतरह कटताहै व बसुदेव व देवकी हमारे मातापिता अच्छीतरहहैं व राजाकंस मेरामामा बड़ापापी यदुकुलमें उत्पन्नहुआहै जो गौ ब्राह्मण व यदुबंशियों को दुःखदेकर नाशकरता है व हमैं बसुदेव व देवकी के फिर कैदहोने का

समाचार सुनकर बड़ाशोचहुआ सचपूंछो तो वहलोग हमारेवास्ते इतनादुःख पाते हैं हमको गोकुल में लेआकर न छिपाते तो इतनाकष्ट क्योंपाते जबवह हमारीयादकरते होंगे तब उनको बहुतदुःख होताहोगा बड़ाआश्चर्य है कि देवकी के छःपुत्र मारने व इतनापापबटोरनेपर भी कंसका मन अधर्मकरनेकी ओरसे नहींफिरा और यहबतलाओ कि आपकाआना यहां किसकारणहुआ व तुम्हें चलतसमय राजाकंसने क्याकहा यह बचन सुनतेही अक्रूरने खड़ेहोकर हाथजोड़के बिनयकिया हे बैकुण्ठनाथ अन्तर्यामिन् कंसके अनीतिकरनेका हाल आपको मालूमहै मैं क्याकहूं कंस बसुदेव व उग्रसेन का प्राण लेनेवास्ते नित्य इच्छाकरता है पर वहलोग आजतक तुम्हारीकृपासे बचेजाते हैं व कंसका हाल जोकुछ आपनेसुना सो उसीतरहपरहै जब वृषभासुरदैत्य आपके हाथसे मारागया तब नारदमुनिने आनकर कंससेकहा तेरीमृत्यु श्रीकृष्णजीके हाथहै और यह नन्द व यशोदाकेबालक न होकर बसुदेव देवकीकेपुत्रहैं यहहाल सुनकर कंसने बसुदेव व देवकीको फिर कैदकिया व उसी दिनसे तुम्हारे प्राण मारने के उपायमें रहकर धनुषयज्ञके बहाने तुम दोनों भाई व नन्दजीआदिकको मुझे बुलानेवास्ते भेजाहै यहबात सुनतेही श्यामसुन्दरने बलरामजी की ओर देखकर हँसदिया व नन्दरायसे कहा अय बाबा अक्रूरजी यदुकुलमें बड़ेमहात्माहोकर कंसकीआज्ञानुसार धनुषयज्ञकाउत्सव देखने वास्ते हमलोगोंको बुलानेआये हैं इनकेसाथ जाने में बहुतअच्छाहोगा सो तुमभी गोप ग्वालों समेत घी व दही व माखन आदिक भेंटलेकर चलो ॥

दो० माखन प्रभु की बात यह सुनिकै गोपी ग्वाल ।
गयेसकल मुरझायतनु भयेबिकल तिहिकाल ॥

हे राजन् नन्दराय श्रीकृष्णजीके बचनकी कईबेर परीक्षालेचुके थे इसलिये उनके बचनका दुलखना उचित नहींजाना व नन्द व यशोदा स्वप्नकीबात यादकरके शोच करनेलगे पर श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार नन्दजीने वृन्दाबनमें ढिंढोरा पिटवाकर सब ग्वालबालोंको कहलाभेजा कि राजाकंसने धनुषयज्ञकाउत्सव देखनेवास्ते हमलोगों को बुलाया है सो कल्हि प्रातःसमय सब ग्वालबाल दूध व दही व घी व माखनआदिक लेकर मथुराकोचलैं जब यहसमाचार गोपियोंने सुना कि श्यामसुन्दर मथुराको जातेहैं तब वहसब मोहनप्यारेको बियोगसमझकर मृतकके समानहोगईं व उनकेघरों में ऐसा रोना व पीटना होनेलगा कि जैसे किसीका प्राणी मरजावे ॥

दो० ठौर ठौर ऐसी दशा कहत न आवै बैन ।
बढ़ी श्यामबिछुरनव्यथा दुरतउमँगि जलनैन ॥
सो० फिरत बिकल सब ग्वाल पूंछत एकहि एकसों ।

चलन चहत नँदलाल मनमलीन व्याकुलसबै ॥

फिर सबगोपियां ठौर २ बैठकर आपसमेंकहनेलगीं देखो यहक्याप्रलय हमारेऊपर आया एकक्षण बिरह मोहनप्यारे का हमसे सहा न जाकर उनके देखे बिना चैन नहीं पड़तीथी सो अबवह मथुराजाते हैं उनके बियोगमें हमाराप्राण कैसे बचैगा इस अक्रूर मूर्खको क्या प्रयोजन था जो हमलोगोंका प्राणलेनेवास्ते आया सच्चपूंछो तो श्रीकृष्ण जी ने हमारीप्रीतिने मन अपना खींचलिया नहीं तो उनको मथुरा जानेका क्याप्रयोजन है व नन्दलालजी न जावैं तो राजाकंस उनका क्या करैगा तब दूसरीगोपीबोली परमेश्वर की दयासे आज कोई बड़ामनुष्य वृन्दाबन में मरजाता या कोई दूसरा कारण होकर हमाराचित्त चुरानेवाला कल्हि मथुरा को न जाता तो बहुतअच्छाहोता दूसरी अपनी छाती पीटकर कहनेलगी बड़ा शोच है जो प्राणप्यारा मुझसे अलग होगा ॥

चौ० अबहरि जब मथुरा को जैहैं। तनु बिनुप्राण कै नबिधिरैहैं ॥

दूसरी गोपी बोली मुझे केशवमूर्त्ति के देखनेसे तीनोंलोकोंका सुख प्राप्त होता था अब बिना देखे उनके किसतरह चैनपड़ेगी दूसरीबोली जब वह एकबेर आंख उठाकर मेरीओर देखतेथे तबमैं बहुत आनन्दहोकर अपने बराबर किसीको नहीं समझती थी उनके जानेउपरान्त मेरी क्या दशाहोगी दूसरीने कहा हे ब्रह्मन् तुम बड़े कठोरहो जो पहिले मोहनप्यारेसे प्रीति लगाकर अब उनके बिरहसागरमें मुझे डुबाना बिचार कियाहै जिसतरह दूरसे कोईप्यासा पानी देखकर पीनेवास्ते जावै और वहां पहुंचकर उसे बालू दिखलाई देवे वहीगति हमारीहुई राम व कृष्ण दोनोंनेत्र हमारे चलेजायँगे तो हमलोग बिनाआंखके जीकर क्या करेंगी श्याम व बलराम बिना एकक्षण हमारा जीना कठिन है ॥

दो० जो राजन के राज हैं माखनप्रभु ब्रजराज ।
अब जीवैं कैसे सखी वह छूटत हैं आज ॥

हे राजन् इसीतरह सब ब्रजबाला बिरहकी मातीहुई अपने २ मनका हाल एक दूसरीसे कहकर बिलाप करतीथीं जब रातभर उनको मछलीके समान तड़पते बीत गई तब प्रातःसमय सबगोप व ग्वाल वृन्दाबनवासियों ने गोरस आदिक गाड़ी व बैलों पर लदवादिया व भैंसा व भेंड़ा व बकरा भेंटके वास्ते लेकर नन्दजी के द्वारपरआये व जिसजगह अक्रूरजी श्याम व बलरामको अपने आगे बैठाकर तय्यारी चलने की करतेथे वहांपर सब स्त्री व पुरुष बालक व बड़े जानकर मोहनप्यारेके बियोगमें अपनी २ आंखोंसे जलकी धारा बहानेलगे व इतनारोये कि उनके आंसू बहनेसे पृथ्वी वहां की कीचड़के समान होगई और उनलोगों ने आपसमें कहा देखो कंस अधर्मी के

राज्यमें सुख व आनन्द स्वप्नहोगया व सब ब्रजबाला उनके चौगिर्द खड़ीहोकर बड़ी करुणासे कहनेलगीं हे ब्रजनाथ तुम किसवास्ते हमलोग अबला अनाथनको अपने बिरहसागरमें डुबाकर प्राण लिया चाहतेहौ सब वृन्दाबनवासियों का जीना तुम्हारे आधीनहै जिसतरह हाथकी लकीरैं कभी नहीं मिटतीं उसीतरह भलेमनुष्य की प्रीति कभी नहीं घटती जैसे बालूकी भीति नहीं ठहरती वैसे मूर्खकी प्रीति नहीं निबहती हे गोपीनाथ हमलोगों ने तुम्हारा क्या अपराध किया जो हमैं पीठ दिखाकर चलेजाते हौ ॥

दो० एक सखी ऐसे कहै मैं शोचत मनमाहिं।
ये सुन यशुदा नन्दके हमैं छोड़िहैं नाहिं ॥

गोपियां ऐसा श्रीकृष्णजी को कहकर अक्रूरसे बोलीं हे अक्रूर तुम हमलोगों का दुःख न जानकर जिसके आधीन हमाराप्राण है उसे अपनेसाथ लेचले अब हमारा जीवन कैसे होगा क्यों ऐसा करतेहो ऐसे जीनेसे तुम हमारा बधकरडालते तो अच्छा था व अक्रूर दयावन्तको कहते हैं सो तुम अपने नामके विपरीत कठोरताई करते हौ जैसा दुःख राजाकंस ने हमलोगोंको दिया उसका दण्ड श्यामसुन्दर से पावैगा दूसरी ने कहा देखो ब्रह्मा हमको स्त्रीका तनुदेकर हमारेऊपर कुछ दया नहीं करते भवँररूपी आंख हमलोगों की कमलरूपी मुखारविन्द मोहनप्यारे का देखने वास्ते दिनरात चाहना रखती थीं कहो अब किसतरह इन नयनों को बिनादेखे सांवलीसूरति मोहनी मूरति के चैन मिलैगा ॥

दो० माखन प्रभु को रूपरस पियतरहीं जो नित्त।
अब खारीजल कूपको किहिबिधि आवै चित्त ॥

दूसरी सखी बोली सचपूंछो तो ब्रह्मा व अक्रूर का क्यादोष है यहसब कठोरताई श्यामसुन्दर की समझना चाहिये कि उनका चित्त भी शरीरके समान काला है हम लोगोंने कुल व परिवार की प्रीति छोंड़कर अपना प्रेम उनसे लगायाथा सो अब वह हमैं इस दुःखसागर में छोंड़कर चलेजाते हैं मथुरानगरकी स्त्रियां दिनरात मोहनप्यारे के भेंटहोने की इच्छा मनमें रखकर परमेश्वर से बरदान मांगतीथीं सो अब नारायण जी ने बिनय उनकी सुनी व दूसरीने कहा वहांकी स्त्रियां रूप व गुणसे भरीहैं श्याम-सुन्दर उनकी प्रीतिमें फँसकर वहां रहजावेंगे व हमलोगोंको भूलकर यहां क्योंआवेंगे उन स्त्रियोंका बड़ाभाग्य है जो मनहरणप्यारेके साथ सुखउठावेंगी न मालूम हमारेतप में क्या भूलपड़ी कि हमसे नन्दलालजी बिछुड़ते हैं दूसरी बोली आज अच्छे शकुन मथुरा की स्त्रियोंको हुयेहोंगे कि वहलोग श्यामसुन्दर का दर्शन पाकर अपने लोचनों का

फल प्राप्त करेंगी दूसरीने कहा श्रीकृष्णको किसीने मथुरामें नहीं बुलाया उनका मन वहांकी स्त्रियां देखनवास्ते चाहताहै इसीवास्ते यह बहानाकरके जाते हैं दूसरीने कहा इस चित्तचोरने हमलोगोंके साथ कौन भलाईकीहै कि वहांकी स्त्रियोंसे करेंगे रूपवान् लोग अपनी सुन्दरताई के अभिमान से किसीको कुछ बस्तु नहीं समझते दूसरी ब्रज-बाला बोली वृन्दावनबासियोंके बुरेदिन आये और मथुरावासियों का भाग्य उदयहुआ इसीवास्ते मोहनप्यारे वहां जातेहैं दूसरीने कहा यह अक्रूर हमारेवास्ते यमराजका दूत बनकर आयाहै जिसतरह किसीभूखेके आगे ग्रास उठातीसमय कोई थाली भोजनकी खींचलेवै उसीतरह श्यामसुन्दरको हमसे बिलग करता है यह कौन न्यायकी बातहै जो मछलियोंको पानीसे निकालके गर्म बालूपर डालदेवे कदाचित् हमैं दुःखदेनेसे उसको कुछ मिलताहोगा इसलिये ऐसा करता है ॥

दो० जो दुख देवै जीव को महाकष्ट वह पाय ।
बोवै बीज बबूलको आम कहांते खाय ॥

दूसरीने कहा हे प्राणप्यारी इसमें किसीका दोष देना न चाहिये हमारे खोटेदिन आनेसे प्राणप्यारे जाते हैं हमाराभाग्य अच्छाहोता तो अक्रूर क्यों आवता जिससमय गोपियां अपने २ विरहका दुःख एक दूसरीसे कहरहीथीं उसीसमय श्याम व बलराम चलने के वास्ते रथपरचढ़े तब ब्रजबालोंने कहा देखतीहो श्रीकृष्णजी हमारे रोने व विलापकरनेपर कुछ दया न करके मथुराजानेको तय्यारहोगये ॥

दो० माखनप्रभु आनन्दसों चढ़बैठे रथमाहिं ।
बहुतभलोहै सारथी अबहूं हांकतनाहिं ॥

दूसरीबोली हमसब अपनेकुल व परिवारकी लज्जाछोड़चुकीहैं जबरथ यहांसे चलै तब श्यामसुन्दरकी फेंटपकड़कर रोंकरक्खो जिसमें वह जाने न पावैं यहसुनकर दूसरी ने कहा प्यारी तू सचकहती है जबप्राणमेरा केशवमूर्त्तिने हरलिया तब उन्हैं किस तरह जानेदेंगी जिसलाजकेमारे परमेश्वरका बियोगहो उसेभरसाईं में डारदें इससमय लज्जाकरने में पीछेबहुतदुःख उठानापड़ैगा दूसरीबोली हमलोग बौरहीहोकर पड़ीरहैं और वह मथुराकी स्त्रियोंसे जाकर चैनउड़ावैं यहबात कैसेहोनेपावैगी हमैं लाजसे कुछ काम न होकर अपना अर्थसाधनाचाहिये दूसरीनेकहा हमलोगों को इसमोहनीमूर्त्तिके देखनेसे सुखमिलताथा सो अबजाते हैं भलादिनभर तो हमसमझैंगी कि गौचरानेबन में गये हैं सन्ध्याको बिनाचांदनी उनके हमाराप्राण कैसेबचेगा दूसरीबोली हे सखी उस दिनदेखो रातकीबात तुझेयादहै यानहीं जब श्यामसुन्दरने हमलोगोंकेसाथ रासलीला करके हमैं सुखदियाथा दूसरीने कहा हे सखी जो कोई इनकीलीलाभुलादेवे उसे पशु

समझनाचाहिये दूसरीबोली जबसन्ध्यासमय वृन्दावनबिहारी बनमें गौचराकर घरआवते थे तब उनके घूंघुरवाले बालोंपर धूरिपड़ीहुई कैसीशोभादेतीथी व हमलोग मार्गमें बैठकर उनकादर्शनपातीथीं तबउनकी छबिदेखने व बंशीसुननेसे कैसाआनन्दमिलता था बताओ अब वहसुख किसतरह प्राप्तहोगा हे राजन् इसीतरह सबब्रजबाला बौरहोंके समान अपने अपने विरहकाहाल श्याम व बलराम व अक्रूरकोसुनाकर विलापकरती थीं व लाजछोड़कर बारम्बार कहतीथीं हे माधव हे मुकुन्द हे गोविन्द हे दीनदयालु हे केशवमूर्त्ति हे गोपीनाथ हे श्यामसुन्दर हे मुरलीमनोहर हे श्रीकृष्ण हे ब्रजनाथ हे दुःखभञ्जन परमेश्वरकेनाम पुकारकर उन्हें अपनादुःख सुनातीथीं उससमय उनका रोना व बिलापदेखकर कौन ऐसा चैतन्यजीव वहांथा कि जिसने आंसूकीधारा अपनी आंखोंसे नहींबहाया जबजड़रूपवृक्षोंसे भी उनकादुःख नहींदेखागया तबजड़सेडाली तक मारेशोचके हिलनेलगे व अक्रूर उनसबोंकी यहदशादेखकर राजाकंसकी आज्ञा व अपनेतनुकीसुधि भूलगया जब उनका विलाप उससे नहींदेखागया तब उसने रथपर चढ़कर हांकनाचाहा उससमय ब्रजबालोंने दौड़कर रथपकड़लिया व बड़ीकरुणासे विनयकिया हे गोपीनाथ तुम किसवास्ते हमलोग अबलाअनाथको अपने विरहसागर में डुबाकर प्राणलियाचाहतेहो हमैं भी अपनेसाथ लेचलो तो धनुषयज्ञका उत्सव व राजाकंसको देखआवैं हमलोगोंने अपनाकुलपरिवार व लोकलाज छोड़कर तुमसे प्रीति लगाई तिसपर तुम क्यों ऐसे निर्दयीहोकर हमाराप्राणलेतेहो तुमअक्रूरकेसाथ जो रथ साजकरआयाहै न जाव तो कंस तुम्हारा क्याकरैगा अक्रूरअपनामुख कालाकरके फिर जायगा हे राजन् उसीसमय एकओर तो गोपियोंकी यहदशाथी दूसरी ओरसे यशोदा रोतीहुई आनकर बोलीं हे अक्रूर तुम मेरे प्राणप्यारों को किसवास्ते लेजातेहो इनके बिना मैं किसतरह जीवोंगी ॥

दो० कहा धनुष यहदेखिहैं बालक अतिअज्ञान ।
कियोनृपति कछुकपटयह पड़तमोहिं योंजान ॥
सो० मैंनहिं देहौंजान मोनिर्धनके श्यामधन ।
लेहिकंस बरुप्रान को जीवे नँदनन्द बिनु ॥

क० प्राणके अधारे मेरेबारे ये पधारे चाहैं भूपके अखारे जहां भारेसजे शूरमें । पीरबड़ी है शरीर डूबते बियोगनीर कैसे कैसे धरौंधीर प्रेमके अधीरमें ॥ डारै बरु कंस कारागारमें जंजीरभरी येरीबीर जरिजाव धनधामचूरमें । जोपै ये कन्हैया बलभैया दोऊ लाल मेरे खेलैंकरिमैया बैननैनके हजूरमें ॥

व रोहिणी रोकरकहनेलगी श्याम व बलराम ब्रज गोकुलके जीवन आधारहैं इनके जानेसे हमलोग कैसेजीवैंगी फिरयशोदा बहुतविलापकरके बोली अयमोहनप्यारे तुम हमारीप्रीति छोड़कर क्योंजातेहो मैं तुम्हारे ऊपर न्यवछावर होकर कहतीहूं कि अपनी जननी को छोड़कर मतिजाव तुम्हारे देखेविना मुझसे एकक्षण नहींरहाजायगा जब यशोदाके यहसबकहनेपर भी केशवमूर्त्ति रथसे नहींउतरे तब वह पृथ्वीपर गिरपड़ी व अतिविलापकरके कहनेलगी अयप्राणप्यारे तुम कठोरहोकर मेराप्राण लियाचाहतेहो अक्रूर मुझेमारनेवास्ते वृन्दावनमें आनकर मेरे बुढ़ौतीसमयकी लकुटिया छीनकर लिये जाताहै अयबेटा तुमको भी कुछ दया नहींआवती जो मुझेइसतरह छोड़कर चलेजाते हो हे राजन् जब इसीतरह यशोदा व रोहिणी व गोपियां रथपकड़कर रोनेलगीं तब मोहनप्यारे हँसतेहुये रथपरसे उतरकरबोले तुमलोग मति चिन्ताकरो एकमनुष्य तुम्हारे पास भेजूंगा उससमय यशोदा श्यामसुन्दरको गलेलगाकर बड़ीकरुणासे बोलीं अय बेटा तुमजल्दी धनुषयज्ञ देखकर यहांचलेआवना वहां किसीसे प्रीतिलगाकर अपनी जननीको भूलिमतिजाना यहसुनकर मुरलीमनोहर ने यशोदाको बहुतधीर्यदिया व श्रीदामा ग्वालसेकहा कि तुम गोपियोंसे कहिदेव शोच न करैं मैं फिरमिलूंगा जबमोहनप्यारे इसीतरह सबको धीर्यदेकर व माताको दण्डवत्करके रथपरचढ़े तब नन्दजीने यशोदा व गोपियोंसे कहा तुमलोग उदास मतिहो मैं श्याम व बलराम को धनुषयज्ञ दिखलाकर अपनेसाथलेआऊंगा परमुझे इसबातकाडरहै कि राजाकंस बलराम व कृष्ण से कुछकपट न करै यहबातसुनकर एकबूढ़ेमनुष्यज्ञानीने कहा अयनन्दजी श्यामसुन्दर परब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहोकर इन्होंने पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते जन्मलियाहै यह राजाकंसको क्यासमझते हैं कालकी भी मृत्यु इनकेहाथहै यहबचनसुनकर नन्दादिक को धीर्यहुआ इतनीकथासुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ बड़ाआश्चर्य्य है कि अक्रूरने यहदशा यशोदा व गोपियोंकी देखकर उन्हेंकुछ धीर्यनहींदिया शुकदेवजी बोले हे राजन् उससमय अक्रूरने इतना गोपियोंको कहाथा कि श्यामसुन्दर फिर भेंटकरके तुम्हें सुखदेवैंगे जबअक्रूरने सबको रोतेछोड़कर रथ श्याम व बलरामका मथुराकीओर हांका व नन्दजी ग्वालबालोंसमेत गाड़ीआदिकपर बैठकर उसकेसाथचले तब यशोदा बड़े बिलापसे कहनेलगीं ॥

चौ० मोहन इधर देखतो लीजै । बिछुरतलाल हमैं कछु दीजै ॥
लेहु निहारि जन्मको खेरो । बहुरि बिरजमें होत अँधेरो ॥
यहकहि ग्वाल सखनको फेरो । अपनी गाय जायके घेरो ॥
ऐसेकहि यशुमति बिलखाई । कियेयल बहुप्राण न जाई ॥
तलफत बिकल राममहतारी । अतिव्याकुल सब ब्रजकीनारी ॥

का शोचकरताहै इसलिये अपनीमहिमा दिखलाकर यहशोच इसका छुड़ादिया चाहिये जब अक्रूर यमुनाकिनारे पहुँचे और रथ अपना वृक्षके नीचे श्याम व बलरामसमेत खड़ाकरके नहानेगये तब मोहन प्यारेने नन्दरायसेकहा तुम ग्वालबालोंको साथलेकर आगे चलो अक्रूरजी स्नान व पूजाकरलेवैं तो मैंभी पीछे आनपहुँचताहूं यहबातसुन कर नन्दजी ग्वालबालसमेत आगेबढ़े व अक्रूरने जैसे यमुनाजलमें गोतामारा वैसे नन्द लालजीको पानीके भीतरदेखा जब आश्चर्य मानकर शिर अपना बाहरनिकाला तब वह रथपर बैठे दिखलाईदिये दूसरीबेर फिर गोतामारा तो वहीहाल देखकर जब तीसरा गोता लगाया तब क्यादेखा कि श्रीकृष्णजी सांवलीसूरत लक्ष्मीसमेत जड़ाऊगहना अंगअंगपर पहिने केशर व चन्दनका तिलकलगाये कौस्तुभमणि व बैजयन्तीमाला व बनमालागलेमें डाले पीताम्बर व जनेऊका जोड़ा पहिने व उपरना रेशमीओढ़े चतुर्भुजी स्वरूपसे शंख चक्र गदा पद्म धारणकियेहुये शेषजीके ऊपर बिराजतेहैं व शेषजी श्वेत वर्णहोकर अपनेहजारमस्तक पर जड़ाऊमुकुटबांधे व नीलाम्बर पहिनेहुये बहुतशोभा-यमान दिखलाईदिये व श्यामसुन्दर घूंघुरवालेबालोंपर क्रीटमुकुट जड़ाऊसाजे व मकरा-कृत कुण्डल पहिने सुन्दरनासिका व कपोल कमलनयन तिरछी चितवन दांतबिजुली के समान चमकते मन्द मन्द मुसुकाते व भुजा व छाती अतिबिशाल व गहरीनाभि पतलीकमर व जंघा मोटी पांवके नख चमकतेहुये ऐसेमहासुन्दर दिखलाईदिये जिसका वर्णन नहींहोसक्ता व आकार यव व अंकुश व बज्रादिक पैरकेतलुवेमें दिखलाईदेकर क्यादृष्टिमें पड़ा कि ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व वरुण व कुबेरआदिक देवता व नव योगीश्वर व नारदमुनि व मार्कण्डेय व भृगुआदिक ऋषीश्वर व सनकादिक व गरुड़ व आठ बसुदेवता व काल चौबीसतत्त्व व ध्रुव व प्रह्लादआदिक भक्त व बेदव्यास व उंचासपवन व आठों दिग्पाल व सातोंद्वीप व अग्नि व सातों समुद्र व बारहों सूर्य्य व चन्द्रमा व बालखिल्य ऋषीश्वर व धर्म्मराज व कामधेनु व कामदेव व सातोंपुरी व विद्याधर व सिद्ध व गन्धर्व्व व दिव्यपितर व गंगा व सरस्वतीआदिक नदियां व अरुन्धती व वशिष्ठ व यक्ष व राक्षस व कंस व देवकन्या व सब व्रत व तीर्थ व कल्प वृक्षआदिक अपना अपनारूप धारणकिये श्रीकृष्णजी के सामने हाथजोड़ेहुये स्तुति करतेहैं व अप्सराउन्हें नाचदिखाकर गन्धर्व गानासुनातेहैं व ब्रह्मादिक देवता स्तुति करने उपरांत केशवमूर्त्तिके तेजसे कुछ बोलनेकी सामर्थ्य न रखकर चित्रकारीसे चुप चापखड़े उनका मुख निहारते हैं जिसकीओर नन्दलालजीने आंख उठाकर दयासे देखा वह प्रसन्नहोकर उनका गुणानुबाद गानेलगा उनमेंबाजे मोहनप्यारेके चँवरहिलाते व बाजे उनके धूप दीपकरके सुगन्धित फूलोंका गजरापहिनाते व बाज अनेकतरहकी बस्तुउन्हें भेंटदेकर बारम्बार दण्डवत् करतेथे ॥

दो० माखनप्रभु ब्रजनाथके सभी देवता साथ।

हाथजोड़ि अस्तुतिकरैं धरे चरणपर माथ ॥

जब अक्रूरको यह सब महिमा श्यामसुन्दरकी यमुनाजलमें देखकर विश्वासहुआ कि श्रीकृष्ण परब्रह्म परमेश्वरका अवतारहैं तब वह शोच अपना छोड़कर चतुर्भुजी रूपकेपास चलागया व चरणोंपर गिरके हाथजोड़कर विनयकिया ॥

दो० तनमनरहो भुलायके देखिरूप अभिराम ।
माखनप्रभु घनश्यामको लाग्यो करन प्रणाम ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जो कोई इसअध्यायको प्रीतिसे कहै व सुनैं जानों उसको श्यामसुन्दरके दर्शन प्राप्तहुये ॥

चालीसवां अध्याय ॥

अक्रूरका श्रीकृष्णजी चतुर्भुजी रूपकी यमुनाजलमें स्तुति करनी ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब अक्रूरने यमुनाजलमें महिमा श्रीकृष्णजी की देखकर उन्हें पूर्णब्रह्मजाना तब उसीजगह इसतरह पर स्तुति उनकीकी हे नाथ निरञ्जन आप तीनोंलोकों के मालिक होकर आवागमन से रहित हैं व कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी लीला व आदि व अन्तका भेदजाननेसकै सो मेरी दण्डवत् आप को पहुँचै यहबात सुनकर परीक्षितने पूँछा हे मुनिनाथ जब परब्रह्म परमेश्वर के भेद को कोईनहीं पहुंचसक्ता फिर उनकी महिमा जाननेवाला किसको कहना चाहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् उनकी महिमा जानना बहुत कठिनहै पर तुम जितने जड़ व चैतन्यजीव देखतेहौ सबमें उन्हीं के तेजका प्रकाश समझो व जो कुछ संसारमें दिखलाई देताहै वहसब परमेश्वरकी इच्छा व महिमासे उत्पन्न होकर उन्हींका रूपहै संसार में कोई २ ज्ञानी व तपस्वी परमेश्वरके स्मरण व ध्यानकरने के प्रतापसे कुछ २ भेद उनका जानने सक्ते हैं ॥

दो० माखनप्रभु कर्त्तार को जानो या बिधि लोग ।
घटघट में व्यापक सदा हैं सब करनेयोग ॥

हे राजन् अक्रूरने श्रीकृष्णजी से यमुनाजलमें विनयकिया हे महाराज आप ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व तीनोंलोकोंके मालिक हैं जिसतरह सबनदी व नालों का पानी बहिकर समुद्रमें मिलजाताहै उसीतरह संसारीमनुष्य जो पूजा व दान व स्मरण दूसरेदेवतों के नामपर करते हैं वहसब आपको पहुंचता है व मरने उपरान्त सबजीव तुम्हारेरूपमें समाजाते हैं अलखअगोचर जहां ब्रह्मा आदिक देवता आपके गुण व महिमाको नहीं पहुंचनेसक्ते वहां दूसरेको क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा जाननेसकै

सो मेरी दण्डवत् लीजिये हे आदिपुरुष निराकार चारोंवेद आपका श्वासा होकर तुम्हारा आदि व अन्त नहींजानते व आप घटने व बढ़नेसे रहितहोकर अपनी स्तुति करानेकी कुछ इच्छानहीं रखते जैसे गूलरके फलमें मच्छड़ व जलचर जीव अपनाहाल नहीं जानते वैसे सब ब्रह्माण्डके जीव सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणसे उत्पन्नहोकर मायावश तुम्हैं नहीं पहिंचानते व तुम्हारे विराट्रूप के रोम २ में अनेक ब्रह्माण्ड हैं जिसतरह गूलरके वृक्षमें फल लगारहताहै सो मैं उसी विराट्रूप को नमस्कार करता हूं हे पूर्णब्रह्मन् निर्म्मलरूप आप चौदहोंभुवन के कर्त्ता व धर्त्ताहोकर केवल गौ व ब्राह्मण व हरिभक्तों के उद्धारकरने व सुखदेने व अधर्म्मियों के मारनेवास्ते संसार में अवतार धारणकरते हैं ॥

चौ० हंसरूप धरके अवतारा । नीरक्षीर तुम करो नियारा ॥

हे ज्योतिस्स्वरूप दीनानाथ आपने मत्स्यरूपधरकर वेदको पातालसे निकाला व हयग्रीव अवतार लेकर मधुकैटभ दैत्यको मारा और वास्ते मथने समुद्र व निकालने चौदहों रत्नके कच्छप अवतार धरकर मन्दराचलपहाड़ को अपनी पीठपर उठाया व बाराह अवतार लेकर हिरण्याक्षदैत्यको मारने उपरान्त पृथ्वी पातालसे निकाललेआये व नृसिंहरूप धारणकरके हिरण्यकशिपुको मारकर प्रह्लाद अपने भक्तकी रक्षाकी व देवतों के भलेवास्ते बामन अवतारलेकर तीनपग पृथ्वी राजाबलिसे दान लिया व परशुराम अवतार धरकर क्षत्रियोंका बध किया व रामचन्द्र अवतारसे अधर्मी रावण को मारकर विभीषणको लङ्काका राज्यदिया व गङ्गाजी तुम्हारे चरण का धोवनहोकर तीनोंलोकों के जीवोंको तारती हैं व बलभद्र व प्रद्युम्न व अनिरुद्ध तुम्हारे रूपहैं इस- लिये मैं तुम्हारे सब अवतारोंको दण्डवत् करताहूं इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज उससमय तक अनिरुद्ध व प्रद्युम्न उत्पन्न नहीं हुयेथे अक्रूर ने उनकानाम किसतरह जाना शुकदेवजी बोलेहे राजन् उद्धव व अक्रूर श्रीकृष्णजीके भक्तोंमें होकर उन की दयासे तीनोंकालों का हाल जानतेथे जिसतरह नारदमुनि को भूत व भविष्यत् व वर्त्तमान का हाल मालूम रहता है उसीतरह हरिभक्त लोग भी तीनोंकालों का हाल जानते हैं फिर अक्रूरने कहा आप बौद्धअवतार लेकर दैत्यों को यज्ञकरने से बरजैंगे व कलियुग के अन्तमें कलङ्की अवतारधरकर नयेशिरे से धर्म सतयुग का प्रचारकरैंगे व कोई मनुष्य आपका तप व ध्यानकरने से भवसागरपार उतरजाते हैं व किसी को आप संसारी मायाजाल में फँसाकर कौतुक उनका इसतरह देखते हैं जिसतरह कोई मनुष्य अपना मुख शीशेमें देखे बिना कृपा तुम्हारी इस मायाजाल से छूटना बहुत कठिनहै व पूजा आपकी कईजगह पर होकर बाजेमनुष्य तुम्हारी मूर्त्तिबनाकर पूजते हैं व कोई तुम्हारेरूप व चरणोंका ध्यान अपने हृदयमें रखते हैं व बाजे तुम्हारे नाम

पर यज्ञ व होमकरते हैं व ज्ञानी आपको सबजीवोंमें एकरूप देखताहै व बाजे मनुष्य बिरक्तहोकर बनमें तुम्हारातप व ध्यानकरते हैं व कोई गृहस्थीमें रहनेपर भी मन से तुम्हारा स्मरण व ध्यानरखकर भवसागर पार उतरजाता है व बाजेलोग सिवाय तुम्हारे दूसरे देवतासे प्रीति न रखकर बारम्बार तुम्हें दण्डवत्करके संसारी व्यवहारको स्वप्न-वत् समझतेहैं तुम्हारीपूजा स्मरण व गुणोंका वर्णन बड़े २ योगीश्वर व ज्ञानी व शेष व महेश व शारदा व गणेश नहीं करने सक्ते मुझ अज्ञानको क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा वर्णनकरनेसकूं आपका नाम दीनदयालु है इसलिये मुझे दीन व अपना दास जानकर अज्ञान व अभिमानकी काटि जो मेरेहृदयमें जमीहै सो उसको ज्ञानरूपी अग्नि से जलादीजिये व मुझे आठोंपहर अपने चरणोंके पास रखकर ऐसाज्ञान उप-देश कीजिये जिसमें आपको अपना उत्पन्नकरनेवाला जानकर तुम्हारी सेवा व चर्चा में दिनरात लीनरहूं ॥

दो० मैं अजान तुम शरणहौं माखनप्रभु भगवान।
ऐसी बुधि मोहिं दीजिये तुम्हैं सकौं पहिंचान॥

इकतालीसवां अध्याय॥

अक्रूरका श्याम व बलराम समेत मथुरा में पहुंचना॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जब श्रीकृष्णजी ने यमुनाजलमें यहसब स्तुति अक्रूर से सुनकर चतुर्भुजी स्वरूप अपना देवतों समेत अन्तर्द्धान करलिया तब अक्रूर इस बात का अचम्भा मानकर पानी से बाहर आया व श्याम व बलरामको रथपर बैठे देखकर डरता व कांपता उनकेपास पहुंचा यहदशा उसकीदेखकर केशवमूर्त्तिने पूंछा हे चाचा तुम इससमय घबराये क्योंहो व नहातीसमय शिरपानीसे बारम्बारनिकालकर हमारीओर क्यादेखते थे व चलनेका शोचभूलकर इतनीदेरतक तुमक्याकरतेरहे तुमने यमुनाजलमें कुछआश्चर्यकीबातैं तो नहींदेखीं यहबचनसुनतेही अक्रूरने हाथजोड़कर बिनयकिया हे नाथ निरंजन अन्तर्य्यामी जो कुछ पानीकेभीतर मैंने तुम्हारी महिमा देखी सो बर्णन नहीं होसक्ती॥

चौ० भलोदरश दीन्हों जलमाहीं। कृष्णचरितको अचरजनाहीं॥
मोहिं भरोसो भयो तुम्हारो। बेगि नाथ मथुरा पगधारो॥
दो० अब मोसों पूंछतकहा तुम त्रिभुवन के नाथ।
कर्त्ता हर्त्ता जगत के सकल तुम्हारेहाथ॥
माखनप्रभु करतारकी लीलाकही न जाय।

सर्ब जीव संसार के जामें रहे लुभाय ॥

यह सुनतेही श्रीकृष्णजीने हँसकरकहा आवो रथपरचढ़ो रास्ताचलनाहै तबअक्रूर ने पहिले शिरअपना उनकेचरणोंपर रखदिया फिर बैठकर रथचलाया व नन्दादिक ग्वाल जो आगेगये थे मथुराकेनिकट बागमें डेराकरके श्याम व बलरामकी आशादेखनेलगे तब श्रीकृष्णजी भी वहां पहुँचकररथसे उतरे तबअक्रूरने हाथजोड़कर उनसे बिनयकिया हे दीनानाथ मैं चाहताहूं कि आजकीरात मेरीकुटी अपनेचरणोंसे पवित्र कीजिये जिसकेघर आपकेचरणजावें उसकेपुरुषास्वर्गको पहुँचतेहैं जिनपांवोंने अहल्या गौतमऋषीश्वरकीस्त्रीको शापसेछुड़ाया व बलिको सुतललोककाराज्य दिया व जिन चरणोंकाधोवन गंगाजीको भगीरथ बड़ेतपसे अपनेपुरुषोंके तारनेवास्ते मर्त्यलोकमें लाये व शिवजीने अपने मस्तकपररक्खा वहीचरण धोकर चरणोदकपीने व शिरपर चढ़ावनेसे अपनेकुल व परिवारसमेत कृतार्थहुआ चाहताहूं ॥

चौ० ऐसे चरण सरोज तुम्हारे । तिनको सदा प्रणाम हमारे ॥

दो० माखन प्रभुके नामगुण कहै सुनै ज्यहिठौर ।
सुर नर रज उसठौरकी धरैंशीश ज्योंमौर ॥

हे महाराज मैं तुम्हारादास इनचरणोंको छोड़कर कहीं न जाऊंगा यहबात सुनतेही श्यामसुन्दरने हाथ अक्रूरका बड़ेप्रेम से पकड़कर उनसेकहा हे चाचा आजरात को हम यहांरहैंगे कल्हि राजाकंसको मारकर पीछेसे बलरामसमेत तुम्हारे स्थानपर आवेंगे आजसबको यहांछोड़करजाना उचित नहीं है जब अक्रूरने यहसुना तब उनसे बिदाहोकर राजाकंसकी सभामेंचलागया कंसने बड़ेआदरसे अपने पास सिंहासनपर बैठाकरपूछा जहांगयेथे वहांकाहाल कहो ॥

चौ० सुनि अक्रूर कहै समुझाई । ब्रजकी महिमा कही न जाई ॥
कहा नन्दकी करौंबड़ाई । बात तुम्हारी शीश चढ़ाई ॥
राम कृष्ण दोऊहैं आये । भेंट सबै ब्रजवासी लाये ॥

सो आज वे बहुत ग्वालबाल संगरहने से नगरकेबाहर टिकेहैं कल्हिराजसभा में आवैंगे यहसुनकर राजाकंस बहुतप्रसन्नहुआ और बोला हे अक्रूरजी आजतुमने हमारा बड़ाकामकिया जो राम व कृष्णको लेआये अब अपनेघरजाकर आरामकरो अक्रूर यहआज्ञापातेही अपनेस्थानपरआये व कंस श्याम व बलरामके मारनेकाउपाय बिचारनेलगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हेपरीक्षित जब नन्दादिक डेरालेकर सुचित्त हुये तब श्याम व बलरामनेपूँछा हे बाबातुम्हारी आज्ञाहो तो हममथुरापुरी देखआवें

नन्दरायने कुछपकवान व मिठाई दोनोंभाइयोंको खिलाकर कहा बहुतअच्छा तुमजाकर देखआवो पर विलम्ब मतकरना यहवचनसुनतेही उसीरोज चारघड़ीदिन बाक़ीरहे श्याम व बलराम ग्वालवालोंको साथलेकरचले मथुरानगरमें किला व स्थान बिल्लौर के बनेहुये बहुतउत्तम दिखलाईदिये व सोनहुले रत्नजटित द्वारोंपर मोतियोंकी झालरें बँधीथीं व झरोखे व खिड़कियोंमें अनेक मणिजटितहोकर किलेकेचारोंओर ऐसीगहरी खाईखुदीथी जिसमें बारहोंमहीने पानीभरारहताथा व किलेकी दीवारपरताख व झरोखों में कबूतर व तूती व कोकिलाआदिक अनेकरंगके पक्षीरहकर मीठी २ बोलियां बोलते थे व सबगली व सड़क उसनगरकी कूड़ा व धूर आदिकसे स्वच्छहोकर गुलाबजल व रगड़ेहुये चन्दनकाछिड़काव वहां होरहाथा व दीवारें महलोंकी ऐसीचमकती थीं जिन में मुख दिखलाईदेताथा व सबस्थानोंमें छोटे २ व नगरकेचारोंओर बड़े २ बहुतबाग़ और उनमें उत्तम २ फूल व फल लगेहोकर अच्छा २ स्थान वहां बैठनेकवास्तेबनाथा और वृक्षोंपर अनेकरंगकेपक्षी बोलतेथे व अच्छे २ तड़ाग व बावली व कुएँमेंमोती के समान पानी भरारहकर कमल फूलाथा व उनफूलोंपर भँवरे गूंजकर तालाबकिनारे अनेकरंगके पशु व पक्षी आपसमें कलोलकरतेथे व फूलोंकी क्यारियां कोशोंतक फूल कर मन्दसुगन्धहवा बहतीथी व पानीकी पनवाड़ियां लगीरहकर कुयें व बावलियोंपर रँहट व पुरवट चलताथा व मालीलोग मीठे २ स्वरोंसेगायकर पेड़ोंको सींचतेथे व नगरकीरक्षावास्ते जो चारोंओर अष्टधातुकी दीवारबनीथी उसमें व सबस्थानोंपर सोनहुले जड़ाऊ कलश ऐसेबने थे जिनकी चमकसे आंखसामने नहींठहरतीथी सब मथुरावासियों के द्वारपर केला व बन्दनवार बाँधकर गावना व बजाना मंगलाचार होरहाथा ॥

दो० शोभा मथुरानगरकी कासों बरणीजाय ।
जहां श्याम त्रिभुवनपती जन्मलियो है आय ॥

जबश्याम व बलराम ऐसीशोभा देखतेहुये मथुरापुरीमें पहुँचे तब उनकादर्शन पाकर मथुरावासी अपने २ लोचनोंकाफल प्राप्तकरनेलगे ॥

चौ० जो जो छबि देखैं मगमाहीं । सो करुणाकरिकै पछिताहीं ॥
असुर कंसहै बड़ो कसाई । अब इनको होइहै दुखदाई ॥

दो० बड़ीधूम मथुरानगर आवत नन्दकुमार ।
सुनिधाये पुरलोगसब गृहके काज बिसार ॥

जब मथुराकी स्त्रियोंने श्याम व बलरामके आवनेका हालसुना तब उनमें बहुतसी

वृन्दावनबिहारी के देखनेवास्ते घरसेबाहर निकलआईं व अनेकस्त्रियां अपनेकोठे व खिड़की व झरोखोंपर आन बैठीं ॥

दो० माखनप्रभु आवतसुने मनमें भयो हुलास ।
मारगमें ठाढ़ीभईं हरिदर्शन की आस ॥

व बहुत स्त्रियां आपसमें गोलबांधकर सड़क व गलियोंमें एक दूसरीसे यह कहती थीं यही श्याम व बलरामहैं जिनको अक्रूरलेनेगये थे इस मोहनीमूर्त्तिको अच्छीतरह देखकर अपनी २ आंखें ठण्ढीकरो ॥

चौ० यहिबिधि जहां तहां खड़िनारी । प्रभुहि बतावैं हाथ पसारी ॥
नील बसन गोरे बलरामा । पीताम्बर ओढ़े घनश्यामा ॥
सुनतहर्ती पुरुषारथ जिनको । देख्यो रूपनयनभरि तिनको ॥

यहीदोनों बालक कंसकेभानजे हैं जिन्होंने केशीआदिक सब दैत्योंको मारकर अनेकलीला गोकुल व वृन्दावनमें कीथीं पिछलेजन्म हमलोगोंने बड़े शुभकर्म कियेथे जिनकेप्रतापसे वैकुण्ठनाथका दर्शनपाया जो २ स्त्री उनकासमाचारपातीथी वह सब उलटापलटा शृंगारकरके अपने गोदका बालक रोताछोड़कर इसजल्दीसे बाहर चली आतीथी कि उसको अपनेतन व वस्त्रकी सुधि नहींरहतीथी ॥

दो० माखनप्रभुके दरशको यहिबिधि दौड़ींनारि ।
ज्यों सरितासागरमिलन चलत बेगिसों बारि ॥

जब मथुरावासी स्त्रियां मोहनीमूर्त्तिका रूपरस आंखोंकी राहपीनेलगीं तब केशव मूर्त्तिने अपनी मृदुमुसकान व तिरछीचितवनसे मन उन्हांका हरलिया और वे स्त्रियां श्यामसुन्दरको देखतेही उनपर मोहित होगईं ॥

दो० कहतसकल बड़भागिहैं बृन्दावनकी नारि ।
जो सुखपावतिहैं सदा माखनप्रभुहि निहारि ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् इसीतरह सब स्त्री व पुरुष मथुरावासी मोहनप्यारेके दर्शनसे प्रसन्नहोकर अनेकतरहपर बालचरित्र नन्दलालजी का आपस में कहतेथे व ब्राह्मणलोग श्याम व बलरामके माथेपर तिलकलगाकर उन्हें आशीर्व्वाद देतेथे जिस गली व सड़क व चौराहे में श्याम व बलरामजाते वहांपर सब स्त्री व पुरुष उनके दर्शनसे अपनाजन्म स्वार्थकरतेथे व मोती व रत्नादिक न्यवछावरकरके अक्षत व लावा व फल उनपर बरसातेथे उसनगरकीशोभा व बहुत भीड़ देखकर केशवमूर्त्तिने अपने साथी ग्वालबालोंसे कहा कोईराह मतभूलना कदाचित् भूलजाना तो जहांडेराहै वहां

चलेजाना उससमय मोहनप्यारेने राहमें क्या देखा कि राजाकंसका धोबी जो कपड़ों को रंगताभीथा मदिरापानकिये व कईलादी कपड़ालिये कंसकायशगाता हुआ उसी ओर चलाआताहै उसकोदेखकर श्यामसुन्दरने बलरामजीसे कहा कहोतो इसके कपड़े छीनकर हम व तुम दोनोंभाई ग्वालबालोंसमेत पहिनलेवैं और जो कुछबचैं उन्हें लुटादेवैं बलरामजीने कहा जो आपकीइच्छाहो सो कीजिये यह बचनसुनतेही श्रीकृष्णजीने जो सब धोबियोंमें मालिकथा उससेकहा तुम कुछ कपड़े हमैं पहिरनेवास्तेदेव तो राजा कंससे भेंटकरके तुम्हैं फेरदेवैंगे व जो कुछ राजाकेयहांसे मुझे मिलेगा उसमेंसे तुमको भी देवैंगे ॥

दो० हँस्यो बचन सुनि श्यामके कह्यो गर्वकरिबैन ।
बलिके बकरा ह्वैरहे आयो है पटलैन ॥
सो० राखी धरी बनाय ह्वै आवो नृपद्वारसे ।
तब लीजो पटआय जो भावै सो दीजियो ॥

ऐसा कहकर वह धोबी केशवमूर्त्तिसे बोला तुमलोग गँवार मनुष्य बनके रहनेवाले सदा इसीतरहका कपड़ा पहिनाकरतेथे जो माँगने आयेहो तुम नहींजानते कि यहसब कपड़े राजाकंसके हैं ऐसीबात फिर कहोगे तो राजा तुम्हैं दंडदेगा ॥

चौ० बनबन फिरत चरावत गैया । अहिर जाति कामरी ओढ़ैया ॥
नटको वेष बनाकर आये । नृप अम्बर पहिरन मनभाये ॥
जुरिकै चले नृपतिके पासा । पहिरावन लेनेकी आसा ॥
नेक आश जीवनकी जोऊ । खोवन चहत अभी तुम सोऊ ॥

यह सुनकर मोहनप्यारेने कहा हम सीधीतरह वस्त्रमांगते हैं तुम उलटीपलटीबातैं क्यों कहतेहो मँगनीकपड़ादेनेमें तुम्हारी कुछ हानि न होकर सदा तुम्हारा यश संसार में बनारहैगा यह सुनतेही वह धोबीक्रोधसे बोला हे बालक तैंने अभीतक राजाकंस को नहींदेखा पर उसकेप्रतापका हालभी नहींसुना गँवार लोग राजसी व्यवहार नहीं जानते तेरामुख यह कपड़े पहिरने योग्यहै ऐसीतृष्णा छोड़कर मेरेसामनेसे चला जा नहींतो अभी तुझकोमारडालताहूं जब श्यामसुन्दरने यह दुर्वचन धोबीकासुना तब क्रोधित होकर दोनोंअँगुली अपनी तिरछे हाथसे उसके गलेमें मारा कि शिर उसका भुट्टासा कटकर गिरपड़ा यहदशा मालिक धोबीकी देखतेही उसकेसाथीलादी व पेटारीआदिक छोड़कर भागगये व राजाकंसकेपास जाकर सब वृत्तान्त कहदिया व मोहनप्यारेने अपने व बलरामजी व ग्वालबालोंके पहिरनेवास्ते कपड़े निकालकर बाकी सब लुटा

दिये ग्वालवाल वस्त्रपहिरना नहींजानते थे इसलिये दामनमें हाथ व अँगरखेमें पांव डालनेलगे व केशवमूर्त्तिनेभी उलटापलटा कपड़ा पहिनलिया इतनीकथा सुनाकर शुक-देवजीबोले हे परीक्षित कदाचित् तुझे इसबातका सन्देहहो कि सब वस्तुकाज्ञान श्रीकृष्ण जीकी कृपासे उत्पन्नहुआहै वह कपड़ा पहिरने क्यों नहींजानते थे सो उनके भेद व लीलाकाहाल कोई जानने नहींसक्ता और वह परब्रह्म परमेश्वर संसारीसुखकी कुछ इच्छा नहींरखते पर उनकेभक्त व सेवक प्रीतिसे जो कुछ उन्हें भोगलगाकर भूषण व वस्त्र पहिना देतेहैं उसे वह दयाकीराह अंगीकार करतेहैं इसलिये वह अपने को वस्त्र पहिरनेसे अज्ञान बनाकर चाहतेथे कि कोईभक्त मेराआनकर आपसे मुझेपहिनादे सो उनकी इच्छानुसार उसीजगह बायकनाम दरजी हरिभक्त आनपहुँचा व श्यामसुन्दरसे हाथजोड़कर बोला महाराज प्रकटमें मुझे राजाकंसकासेवक कहते हैं पर मैं अपनेमनसे आठोंपहर तुम्हारेचरणों का ध्यानरखताहूं मुझे आज्ञादीजिये तो सब किसीको अच्छी तरह वस्त्र पहिनादूं मुरलीमनोहरने उसे अपनादास जानकर कहा बहुत अच्छा यह वचनसुनतेही उसदरजीने बड़ी प्रीतिसे छोटेबड़े कपड़ोंको काटछांटकर श्याम व बल-राम व सब ग्वालवालों को पहिनादिया व हाथजोड़के उनकेसामने खड़ाहुआ तब मुरलीमनोहर बोले हे बायक हम तुमसे बहुतप्रसन्नहुये तू सदा भक्तिपूर्वक धनीपात्र रहिकर मरने उपरांत मुक्तिपावेगा व तेरेवंशमें सब हरिभक्त उत्पन्नहोंगे ऐसावरदान देकर फिर केशवमूर्त्तिने उसदरजीसे कहा हे बायक जैसीटहल तैंने मेरीकी वैसाफल मैंने तुझको नहींदिया इसलिये तुझसे लज्जितहूं इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूंछा महाराज थोड़ीसेवा करनेकेबदले श्यामसुन्दरने उसको ऐसावरदानदिया फिर लज्जित रहने का कारण क्याथा शुकदेवजी बोले हे राजन् बैकुण्ठनाथ ने समझा कि कपड़े पहिनावतीसमय इसने सबतरहसे मनअपना बटोरकर मेरेकाममें लगाया व बिनाइच्छा हमारीसेवाकी इसलिये मैंने इसको दिया सो उसटहलकी बराबरी नहीं रखता हे परी-क्षित देखो एकवेर कपड़ा पहिनावनेके बदले वहदरजी इस पदवीको पहुचा जो लोग नित्य श्रीकृष्णजीको भूषण व वस्त्र पहिनाकर उनकी पूजा व सेवाकरते हैं वह न मालूम कैसा फल पावैंगे जब श्याम व बलराम वहांसे आगेचले तब सुदामानाम माली हरि भक्त आनकर केशवमूर्त्तिके चरणोंपर गिरपड़ा व बड़ेप्रेमसे श्याम व बलरामको ग्वाल बालों समेत अपने घर लेजाकर उत्तम आसनपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया और विधिपूर्व्वक पूजा उनकीकी व सुगन्धित फूलोंका गजरा पहिना-कर इसतरहपर स्तुति उनकी की ॥

चौ० दयासिन्धु तुम दीनदयाला । कृपावन्त सबके प्रतिपाला ॥
ऐसे चरणसरोज तुम्हारे । मित्र शत्रु जन सबै उधारे ॥

मो पर कृपा करो हरिदेवा । आयसुदेव करौं कछु सेवा ॥

जब वृन्दावनविहारीने यहस्तुति मालीसे सुनी तब उसकीसच्ची भक्ति व प्रीतिदेख कर कहा हे सुदामा हमतेरे ऊपरप्रसन्न हैं जो इच्छाहो सो वरदानमांग यह वचन सुनकर मालीने बिनयकिया मैं यहीचाहताहूं कि तुम्हारेचरणोंकी भक्ति सदामेरे हृदयमें बनी रहकर मुझ ज्ञानी व ऋषीश्वरोंका सत्संगरहै श्यामसुन्दरने उस सुखमांगा वरदानदेकर कहा तू सदा धनीपात्र व सुखसे रहैगा व तेरेवंशमें भी सब धनवान्होकर मेरी भक्ति करैंगे यहकहकर श्रीकृष्णजी वहांसे उठे ॥

दो० याबिधि दया जनाइके माली कियो सनाथ ।
आनँद सों आगे चले माखनप्रभु व्रजनाथ ॥

बयालीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का महादेवजी को धनुषतोड़ना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर सुदामा मालीकोवरदान देकर बाजार में गये तब क्या देखा कि कुब्जामालिनि कटोरियोंमें चन्दन रगड़ा हुआ भरकर थाली में रक्खेहुये चलीजाती है श्यामसुन्दरने उसे देखकर हँसीकी राह पूंछा कि तुम किसकी स्त्री बहुत सुन्दरी होकर यह चन्दनकहां लेजाती हो हमैं देवगी यहबचन सुनकर कुबड़ी ने विनय किया हे मोहनीमूर्ति मैं कुब्जानाम कंसकी दासी होकर नित्य चन्दन उसके लगानेवास्ते लेजातीहूं और वह इससेवा करनेसे बहुत प्रसन्नहोकर मेरा पालन अच्छीतरह करता है पर तुम्हारे चरणोंका ध्यान सदा अपने हृदय में रखकर आपका गुणानुवाद गाया करतीथी सो आज तुम्हारा दर्शन पानेसे मेरा जन्म सुफल होकर लोचनों का फल मिला राजाकंसके चन्दन लगानेसे मेरा परलोक नहीं बनता इसलिये अब मुझे यहइच्छाहै कि तुम्हारी आज्ञापाऊं तो अपने हाथसे तुम्हारे चन्दन लगाकर कृतार्थ होजाऊं ॥

दो० माखनप्रभु सों कूबरी यहिबिधि कहत सुनाय ।
मोहनमूरति श्याम की मनमें रही लुभाय ॥

नन्दकुमारने कुब्जाकी भक्ति व प्रीतिसच्ची देखकर उससेकहा बहुतअच्छा यहबचन सुनतेही कुबड़ीने बड़ेप्रेमसे श्याम व बलराम के मस्तक व अंगपर विधिपूर्वक चन्दन लगाया तब श्यामसुन्दरने प्रसन्नहोकर बलरामजीसे कहा कि इससेवाके बदले कुब्जा का अङ्गसीधा करदेना चाहिये ऐसाकहकर श्रीकृष्णजी ने अपना पांव कुबड़ीके पैरपर रखकर दो अंगुली अपने हाथकी उसकी ठोढ़ी में लगाके उसे उचकादिया तो कूबड़ उसका छूटकर वहसीधी व अतिसुन्दरी होगई ॥

सो० को करिसकै बखान जाहि बनाई आप हरि।
भई रूपगुणखान कुब्जा मन आनन्द अति ॥

हे परीक्षित जब कुबड़ीने अपने को महासुन्दरी देखा तब वह अञ्चल से मुखअपना ढांपकर मुसकराती हुई बिनयपूर्वक बोली हे प्रीतम जिसतरह तुमने दयालुहोकर मुझे रूप व तरुणाईदी उसीतरह मुझ दासीके घर चलकर मेरी इच्छा पूर्ण कीजिये यह बचन सुनतेही मोहनप्यारे ने हाथ उसका पकड़कर प्रेमपूर्वक कहा तू धीर्य्यरख जिसतरह चन्दन लगाकर तैंने हमारी छाती ठण्ढीकी उसीतरह हम भी तेरी इच्छा पूर्ण करैंगे ॥

दो० कंसनृपति को देखिकै हम ऐहैं तुव धाम।
यह कहकर आगे चले माखनप्रभु घनश्याम ॥

कुब्जाने यहबरदान पावतेही आनन्दसे अपने घरजाकर केसरि व चन्दनका चौक पुरवाया व स्थान अपना अच्छीतरह अलंकृतकरके मोहनप्यारेके आनेकी आशादेखने लगी जब मथुरावासी स्त्रियां यहहाल सुनकर उसके घरगईं तब उसका रूप व तरुणाई देखकर बोलीं ॥

चौ० धनि धनि कुब्जा तेरो भाग। जाको बिधिना दियो सुहाग ॥
ऐसोकहा कठिन तपकीन्हों। गोपी नाथ भेंटभुज लीन्हों ॥

हे कुब्जारानी जब श्यामसुन्दर तेरेघर आवैं तब हमको भी उनका दर्शन कराना इसीतरह मथुरावासी स्त्रियां कुब्जाकी बड़ाई करतीथीं व श्याम व बलराम ग्वालबालों समेत हँसतेहुये चलेजाते थे बाजारमें जो मनुष्य जिसवस्तु का रोजगार करता था वहलोग रत्न व बस्त्र व पान व मिठाई आदिकसोने व चांदीकी थालियोंमें रखकर उन्हें भेंटदेतेथे व श्रीकृष्णजी उनका क्षेम कुशल पूंछकर अपनी मीठी मीठी बातों से उन्हें प्रसन्न करते थे ॥

चौ० मारग में जो दर्शन पावैं। रामकृष्ण की कुशल मनावैं ॥
कामस्वरूप श्यामतनु सोहैं। मथुराकी कामिनि सबमोहैं ॥

व मथुराकी स्त्रियां अपना २ गहना व कपड़ा श्यामसुन्दर पर न्यवछावर करके कहती थीं इनके बियोग में न मालूम गोपियों की क्या दशाहुई होगी जब इसीतरह घूमतेहुये श्याम व बलराम रंगभूमिके पहिले द्वारेपर जहां महादेवका धनुषरक्खाथा तहां पहुँचे तब राजाकंसके दशहज़ार शूरबीरोंने जो धनुषकी रखवारी करतेथे श्यामसुन्दर को देखतेही दूरसे ललकारकर कहा यहांमति आवो दूरखड़ेरहो मोहनप्यारे उनके

बर्जने पर भी न मानकर बेधड़क वहां चलेगये व धनुष महादेवका जो तीनताड़ लंबा व मोटा व भारी ऊंचे चबूतरेपर रक्खाथा बायें हाथसे उठाकर इसतरह सहज में दो टुकड़े करादिये जिसतरह हाथी ऊखको तोड़डालता है जब धनुषटूटने का शब्द तीनों लोकमें पहुँचकर राजाकंसने भी सुना तब श्रीकृष्णजी को अतिबलवान् समझकर उन के डरसे कांपने लगा और जब वहसब शूरबीर राम व कृष्णसे लड़नेआये तब दोनों भाइयोंने उसी धनुषके टुकड़ों से मारकर उन्हें गिरादिया उससमय देवतोंने प्रसन्नहो कर श्याम व बलरामपर फूलबरसाये जबकोई उनके सामने लड़नेवाला नहीं रहा तब केशवमूर्त्तिने बलरामजी से कहा हमलोगों को डेराछोड़े बहुत बिलम्बहुआ नन्द बाबा चिन्ता करतेहोंगे सो चलनाचाहिये ऐसा कहकर श्यामसुन्दर ग्वालबालों समेत अपने डेरेपर आये व मथुराबासी धनुषतोड़ने व शूरबीरोंके मारेजाने का वृत्तान्त सुन कर आपसमें कहने लगे यहदोनों बालक मनुष्य न होकर कोई देवता मालूमहोते हैं जो ऐसे २ काम इन्होंने किये देखो होनहार प्रबलहोकर राजाकंसने घरबैठे अपनी मृत्यु आप बुलाई है इनके हाथसे वहजीता नहीं बचैगा व नन्दरायने श्याम व बलराम आदिक को अच्छे २ कपड़े पहिने देखकर जाना कि कन्हैयाने यहसब किसीसे छीन लिये हैं ऐसा समझकर बोले हे बेटा तुम यहांभी उत्पात करतेहो यहवृन्दावन हमारा गाँव नहीं है जो ग्वालिनियों का दहीछीन व चुराकर खाजाते थे मथुरापुरी में ऐसी उपाधि करौगे तो अच्छा न होगा यहसुनकर श्यामसुन्दर बोले हे बाबा हमने नगरमें बहुत उत्सव देखा अब भूखलगी है भोजनदेव यहबचन सुनतेही नन्दजी ने दूध व दही व माखन व पकवान व मिठाई आदिक निकालदिया ॥

दो॰ बिबिध भांति भोजनकियो सब ग्वालन के साथ ।
रैनगवांई चैनसों माखनप्रभु ब्रजनाथ ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब कंसने अपने शूरबीरों के मारे जानेकाहाल सुना तब वहमनमें बहुत उदासहोकर कहनेलगा मुझे बड़ेबलवान् शत्रुसे काम पड़ाहै अब मेराप्राण नहीं बचैगा इसीशोचमें राजाकंस भीतर २ जलकर इसतरह निर्बल होगया जिसतरह काठघुनोंके खाजाने से भीतर खुखला होकर ऊपर ज्योंका त्यों बनारहता है पर मारे लज्जाके अपने मनका हाल किसीसे न कहकर उसीचिंता में पलँगपर जाकर लेटरहा जब करवट लेते २ पहररातरहे उसकी आँख लगगई तब उसे स्वप्नमें शरीर अपना बिनाशिर मालूमहोकर चन्द्रमा दोटुकड़े दिखलाई दिये व अपनी परछाहीं में छेदमालूम होकर सूर्यका प्रकाश झरोखोंमें से देखपड़ा व सोने के समान वृक्षदिखलाई देकर ललितफूलोंका हार अपनेगलेमें देखा व अपनेको नंगेशरीर रेतमें नहाते व तेल अंगपरमले गदहेपर चढ़े श्मशानपर भूत व प्रेतसाथ लिये मुर्दोंसे

गले मिलते देखकर वृक्षोंमें अग्निलगी हुई दिखलाईदी यह बुरास्वप्न देखतेही कंस घबड़ाकर उठबैठा तो फिरउसे केशवमूर्त्तिके मारेडरसे नींदनहीं आई तिसपर भी वह प्रातस्समय सभामें बैठकर अपने सेवकोंसे बोला कि रंगभूमिमें बिछावन आदिक बिछवाकर सब राजोंको जो धनुषयज्ञ देखनेआये हैं बुलाओ और नन्दादिक ब्रजबासी व यदुवंशियोंको बुलाकर यथायोग्यसबको बैठावो व अखाड़ाकुश्तीलड़नेका तैयारकरो मैं भी वहांपहुँचताहूं ॥

दो० योधासभी बुलायकै तिनसों कहेउ सुनाय ।
अबहींरचो बनायकै रंगभूमि तुमजाय ॥

यहआज्ञापातेही उनलोगोंने रंगभूमिकी रचनाकरके सबकिसीको बुलाभेजा और यथायोग्य स्थानपर उन्हें बैठादिया व चाणूर व मुष्टिक व शल व तोशल व कूट आदिक पहलवान अपने २ चेलोंसमेत अखाड़ेमें आनकर इकट्ठेहुये व घमण्डसे ढोलबजाकर तालठोकनेलगे व राजाकंसभी अभिमानपूर्वक वहांआनकर बहुतऊंचे मचानपर जहांजड़ाऊसिंहासन बिछाथा बैठगयाव नन्द व उपनन्द आदिकराजा कंस को भेंटदेकर ग्वालबालोंसमेत एकमचानपरबैठे उससमयकंसने चाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानोंको बुलाकरकहा आजतुमलोग श्याम व बलरामको कुश्तीलड़कर मारडालो तो हमतुम्हें बहुतसा द्रव्यदेवेंगे पहलवानोंने हाथजोड़कर बिनयकिया महाराजहमलोग सामर्थ्यभरधोखा न करेंगे इतनीकथासुनाकर शुकदेवस्वामीबोले हे राजन् उससमय ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता बैकुण्ठनाथकादर्शनकरने व विजयदेखनेवास्ते अपने २ विमानोंपरचढ़कर आकाशमें आनपहुंचे व मथुरावासी स्त्री व पुरुषइतने वहांइकट्ठेहुये जिनकी गिनती नहींहोसक्ती ॥

दो० माखन प्रभुके दर्शकी सबके मनमें चाय ।
परफुल्लित ठाढ़े भये रंगभूमि में आय ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

श्याम व बलराम का कुवलयापीड़ हाथीको मारना ॥

शुकदेवजीनेकहा जबप्रातस्समय राजाकंस रंगभूमिमें जाकर बैठा व सबलोग वहां आनकर इकट्ठेहुये तब श्याम व बलरामजी ग्वालबालों समेत रंगभूमिके द्वारेपर जहां कुवलयापीड़ हाथी झूमिरहाथा पहुँचे ॥

चौ० देखि मतंग द्वारमतवारो । गजपालहि बलराम पुकारो ॥
सुनो महावत बात हमारी । लेहुद्वारते गज तुम टारी ॥

यहबातहमतुमको पहिलेसे कहतेहैं कि हाथीअपना हटाकर हमेंराजाकंसके पास जानेदेव नहीं तो अभीहाथीसमेत तुझेमारडालैंगे तू श्यामसुन्दरको बालक न जानकर तीनोंलोकोंकामालिकसमझ दुष्टोंकोमारने व पृथ्वीकेभार उतारनेवास्ते इन्होंने जन्म लियाहै यहवचनसुनतेही हाथीवानहँसकर बोला तुमगौचरानेसे त्रिभुवनपति न होकर शूरवीरोंकीतरह बातें करतेहो मैंजानताहूं कि तुमकोदैत्योंकेमारने व धनुषतोड़नेसे अभि- मान उत्पन्नहुआहै जबतक इसगजसे जोदशहजारहाथीकाबल रखताहै न लड़ौगे तब तकराजसभामें न जानेपावोगे तुम ऐसेसुन्दर होकर क्यों अपनाप्राणदेनेवास्ते यहां आयेहो किसीशूरवीरको ऐसीसामर्थ्यनहींहै जोइसहाथीसे लड़नेसकै इन्हींदिनोंकेवास्ते कंसने यहहाथीपालरक्खाथा आजइसकेहाथसे तुम्हाराप्राणबचनाकठिन है यहबातसुनते ही केशवमूर्त्तिने बालोंका जूड़ा लपेटकर उपरनारेशमी कमरसे बांधलिया ॥

दो० तभी कोपि हलधरकह्यो सुनुरे मूढ़ कुजात ।
गजसमेत पटकौं अभी तुच्छकहाल कहुबात ॥

यह सुनतेही जैसे गजपालने हाथीको अंकुशदेकर बलरामकीओर झोंका वैसेकुव- लयापीड़ बादलकेसमान गर्जताहुआ उनपरदौड़ा उससमय बलभद्रने एकमुक्का ऐसा उसहाथीकेमारा कि वह शुण्ड सिकोड़कर चिल्लाताहुआ पीछेको हटगया ऐसाबल रेवतीरमणका देखतेही बड़े २ शूरवीर जो वहांखड़े थे अपनेमनमें हारमानकर कहने लगे इन दोनोंबालकोंको कौनजीतने सकैगा व गजपालने भी डरके विचारकिया जो यहलड़के हाथीसे नहींमारेजावैंगे तो राजाकंस मुझेजीता न छोड़ैगा ऐसासमझतेही गजपालने हाथीको बड़ेजोरसे अंकुशमारकर श्याम व बलरामपर डटाया जबहाथीने झपटकर मोहनप्यारेको शूंड़से लपेटलिया व पृथ्वीपर पटककर दोनोंदांतोंसेदबाया उस समय देवता व ग्वालवाल व मथुराबासी यहहालदेखकर परमेश्वरसे श्यामसुन्दर की कुशलमनावनेलगे तब केशवमूर्त्तिने छोटारूपबनाकर दोनोंदांतोंके बीचमें चलेजानेसे अपनेको बचालिया और वहांसेकूदकर सन्मुखखड़ेहोगये व तालठोंककर हाथी को ललकारा यहफुरती श्यामसुन्दरकी देखतेही सबछोटे बड़े बेडरहोकर हँसनेलगे जब हाथी ललकार सुनकर फिर उनकीओरदौड़ा तब वृन्दावनविहारी पेटकेतलेसे निकल कर पीछे चलेगये व उसकीपूंछ पकड़कर सौ पग तक इसतरह हाथीको पीछेघसीटा जिस तरह गरुड़जी सर्प्पको घसीटलेजाते हैं जबवहहाथी मुरलीमनोहरकीओर फिरा तबबल- रामजीने उसकीपूंछ पकड़कर खींचलिया फिर दोनोंभाई उसहाथीको कभी पूंछ कभी शूंड़ व कभी मुकामारके ऐसे खिलावनेलगे जैसे बिल्ली चूहेको खेलखिलाकर मारतीहै जबवहहाथी एकभाईपर झपटता तब दूसराभाई उसे मुकामारकर छिटकजाताथा कभी श्याम व बलराम उसकेनीचे व कभी पीछे व कभी दोनों दांतोंकेबीच में व कभी

सामनेजाकर मुक्का व तमाचामारके अलग होजातेथे व कभी दोनोंदांत उसकेपकड़के पीछेहटादेते व कभी पूंछपकड़कर खींचलेजाते थे॥

दो० यद्यपिधावै कोपिकै मूड़ हिलावतजाय।
माखनप्रभु गोपालसों तदपि न कछूबसाय ॥॥

जब वहहाथी दौड़ता व मुक्का तमाचा खाते २ निर्बलहोगया तब श्यामसुन्दर ने शूंड़पकड़कर ऐसाझटकामारा कि हाथी मूर्छितहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा उससमय श्यामसुन्दरने उसकीछातीपर पांवरखकर दोनोंदांत उसके उखाड़लिये और वहींदांत ऐसे हाथीके मस्तकपरमारे कि वहमरगया तब एकदांत आपलेकर दूसरा बलरामजी को देदिया यहहालदेखकर जब हाथीवान् व राजाकंसके शूरबीर लड़नेवास्ते सन्मुखआये तब श्याम व बलरामने उन्हींदांतोंसे उनको भी मारडाला उससमय देवतोंने आकाश से दोनोंभाइयोंपर फूलबरसाये व मथुरावासियों ने प्रसन्नहोकर कहा कंसअधर्मी ने बिनाअपराध इनदोनोंबालकोंके मारनेवास्ते हाथीखड़ा कियाथा सो बहुतअच्छाहुआ जो हाथीमारागया ॥

दो० जो भूपति मनसाकरी सो कुछ ह्वैहै नाहिं।
प्रकट कंसकेकालहैं आये मथुरामाहिं ॥

उससमय हाथीके लोहूकाछींटा श्याम व बलरामकेकपड़ोंपर पड़ाहुआ कैसा सुन्दर मालूमहोताथा जैसेबरसातमें बीरबहूटी पृथ्वीपर शोभादेतीहै व पसीना उनके मुखार-बिन्दपर ऐसा दिखलाई देताथा जिसतरह कमलकेफूलोंपर ओसकीबूंदें रहती हैं जब श्याम व बलराम हाथीके मारनेउपरांत ग्वालबालोंसमेत हँसतेहुये धीरे २ बीच रंगभूमि के जाकर खड़ेहुये तब उससभावालों ने जो लाखोंमनुष्य वहां थे मोहनप्यारे को अपनी अपनी इच्छानुसार देखा ॥

चौ० जाकी रही भावना जैसी। प्रभुमूरति देखी तिनतैसी ॥

हे परीक्षित श्रीकृष्णजीने गीतामें अर्जुनसे कहा मेरे जिसरूपका ध्यान कोईकरै मैं उसीरूपकादर्शन उसको देताहूं सो चाणूरआदिक पहलवानोंको श्याम व बलराम महा-शूरबीर दिखलाईदिये व मथुराकी स्त्रियों को कामरूप अतिसुन्दरदेखपड़े व ग्वालबाल उनकेसाथियों ने अपनामित्र व भाईबन्धुजाना व नन्दादिक ग्वालोंने अपना लड़का समझा और जो राजाकंसके मित्र वहांपरथे वहलोग श्याम व बलरामको शत्रुरूपदेख कर डरगये व राजाकंस उन्हें अपनाकाल जानकर भयसे कांपनेलगा व यदुबंशियोंने उनको अपनी रक्षाकरनेवाला समझा व योगी व ज्ञानियोंको पूर्णब्रह्म दिखलाईदिये व दूसरेलोगोंने केशवमूर्त्तिको देखकर जाना यह वही बालकहै जिन्होंने छोटी अवस्था

में पूतनाराक्षसीको मारकर दोवृक्षयमलाअर्जुन जड़से उखाड़डाले व गोवर्द्धनपहाड़ अपनी अँगुलीपर उठाकर राजाइन्द्रका अभिमानतोड़ा व अघासुर व धेनुक व प्रलम्ब व केशीआदिक दैत्यों को मारकर कालीनागको यमुनासे निकालदिया व गोकुल व वृन्दावनमें ऐसे २ कठिनकामकिये जिसकाहाल सुनकर आश्चर्य मालूमहोताहै आज कुबलयापीड़ हाथीको लड़कोंके खेलकेसमान मारडाला व बाजे उनको बालकदेख-कर शोचकरके कहतेथे कंस बड़ानिर्दयी व बड़ाअधर्मी है जो छोटे २ बालक कोमल बदनको बरजोरी पहलवानों से कुश्ती लड़ाकर इनका प्राण लियाचाहताहै यहांसे उठ चलो यह अधर्म न देखना चाहिये ॥

दो० रीति अनीति निहारिकै कहैं परस्पर लोग ।
अब यह ठौर अधर्म्म को नहीं बैठने योग ॥

जब ऐसा विचारकर बाजे उनमें से उठगये व बाजे अपना अंचल फैलाफैलाकर परमेश्वर से यों बरदान मांगने लगे जिसतरह श्यामसुन्दरने धनुष महादेवका तोड़कर हाथीको माराहै उसीतरह ये पहलवानभी इनके हाथसे मारेजावैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जिससमय मोहनप्यारे उस अखाड़े में जाकर खड़े हुये उससमय चाणूर व मुष्टिक आदिक पहलवानों ने अनेकरंगका जांघियां पहिने हुये चारोंओर से आनकर उन्हें घेरलिया व चाणूर पहलवानने निकट जाकर बैकुण्ठनाथ से कहा आज मेरे राजाकाचित्त उदासहै मन बहलाने वास्ते मुझे तुम्हारे साथ कुश्ती लड़ाकर देखा चाहते हैं इसीवास्ते तुम्हें यहां बुलायाहै व नौकरोंको अपने मालिक की आज्ञा माननी चाहिये सो आवो हम व तुम कुश्ती लड़कर राजाको प्रसन्नकरें ॥

दो० रीति धर्म अरुनीतिकी सब जानत मनमाहिं ।
स्वामिकाजते जगतमें औ कछु उत्तम नाहिं ॥

और हमने सुनाहै कि तुम कुश्तीलड़ना अच्छाजानतेहो बनमें ग्वालबालोंके साथ लड़ाकरतेथे सो आज में तुम्हारेबलकी परीक्षालिया चाहताहूं किसीबातका डर अपने मनमें मतरक्खो यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे चाणूर हम ऐसेप्रतापीराजाको क्या प्रसन्नकरैंगे पर तू अपनेस्वामीकी आज्ञापालने चाहताहै तो मैं तेरेसाथ लड़ूंगा ॥

चौ० यद्यपि तू बलको अधिकारा । मैं अहीर बालक सुकुमारा ॥
तद्यपि एकबार मैं लरिहौं । युद्धबिषे तोसों नहिं टरिहौं ॥

तुम्हारे राजाने बड़ीदयाकरके मुझे बुलायाहै पर न्याय सब किसीकोकरना चाहिये तुम्हारा राजाअधर्मी व बेदर्दहोकर तुम उससेअधिक निर्दयी मालूमहोतेहो किसवास्ते

कि मुझ बालकसे तुमको कुश्तीलड़ना जो तरुण व बलवान्हो शोभा नहींदेता वैर व प्रीति व विवाह व कुश्तीबराबरवालेसे करनाचाहिये पर राजाकंससे हमारा कुछवश नहींचलता इसलिये तुमसेलड़ेंगे पर हमकोबचाकर कुश्तीलड़ना जोरसे पटककर मेरा हाथ व पैरमत तोड़डालना जिसमें हमारा व तुम्हारा दोनों मनुष्यका धर्मबनारहै व राजाकंसभी प्रसन्नहोवैं यहबात सुनकर चाणूरबोला देखनेमें तुम बालक दिखलाईदेते हो परन्तु तुम्हारी कीर्त्ति व काम सुनने व कुवलयापीड़ हाथीका मारना देखनेसे आप कोई अवतार माळूमहोते हैं इसलिये मुझे तुम्हारेसाथ किसीतरह कुश्तीलड़ना उचित नहीं है पर क्याकरूं अपनेस्वामीकी आज्ञा न मानूं तो मेराधर्मजाताहै ॥

चौ० फिर चाणूर कह्यो हरषाई । तुम्हरी गति जानी नहिं जाई ॥
तुमबालक मानुष नहिं दोऊ । कीन्हे कपटरूप सुर कोऊ ॥
खेलत धनुष खण्ड द्वै करे । माख्यो तुरत कुबलया तरे ॥
तुमसे लड़े हानि नहिंहोय । ये बातैं जानै सब कोय ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

श्याम व बलरामका चाणूरआदिक पहलवान व राजाकंसकोमारना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब ऐसीबातैं कहकर मोहनप्यारे चाणूर व बलभद्रजी मुष्टिक पहलवानसे कुश्तीलड़नेलगे तब मथुरावासियोंने बालक व जवानकी कुश्ती देखकर आपसमें कहा राजाकंसको इसकुश्तीलड़ानेसे मनाकरैं तो वह अधर्मी हमैं मार डालैगा व इसजगह बैठेरहनेमें हमाराधर्म नहींरहता इसलिये यहांसे उठजानाउचितहै ॥

दो० जो अनीति देखै नहीं ताको पाप न होय ।
जो जैसी करणी करै वह फल पावत सोय ॥

हे राजन् जो मनुष्य श्यामसुन्दरको बालकजानतेथे वह ऐसाविचारकर वहांसे बाहर चलेगये व जातीसमय कंसकोशाप देकर कहनेलगे यह अपनेअधर्मका दण्ड अवश्य पावैगा व मुरलीमनोहरने लड़तीसमय अपनी महिमासे अपनाशरीर हीरेकेसमान ऐसाकड़ा बनालिया जिसे कोईअस्त्रभी काटने न सकै जब श्यामसुन्दरने हाथसेहाथ शिरसेशिर छातीसेछाती ठोढ़ीसेठोढ़ी पैरसेपैर चाणूरसे मिलाया तब चाणूरने अनेक दाँव व पेंचलगाकर श्यामसुन्दरको पकड़नेचाहा पर वह उसकेहाथनहींआये तब चाणूरने उदासहोकर कहा देखो हमने बहुत पहलवानोंको एक दाँव व पेंचसे मारडालाथा न माळूम इसबालकके कितनाबलहै जिसपर मेरा कुछवश नहींचलता और यह लड़का एक अँगुलीभी मुझेमारताहै तो मैं घबड़ाजाताहूं इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले

हे राजन् जिसपरब्रह्म परमेश्वरको महादेव व ब्रह्मा नहींपकड़नेसक्ते व जिन्होंने अपने दोपगमें चौदहों लोकनापलिये थे उनको चाणूर पहलवान किसतरह पकड़नेसक्ताहै चाणूर व मुष्टिक श्याम व बलरामकी महिमा नहींजानतेथे पर उन्होंने पिछलेजन्म बड़ा तपकियाथा जिसकेप्रतापसे उनकाशरीर वैकुण्ठनाथके अंगमें स्पर्शहोता था यहबात ब्रह्मादिक देवतोंकोभी जल्दी नहीं प्राप्तहोती जब चाणूर अपनेछल व बलसे केशव मूर्त्तिपर झपटताथा तब वह पीछे कूदकर बचातेथे ॥

दो० मोहन मुखपर शरम जल सोहै अतिसुखदाय।
ज्यों फूलन के पातपर रहै ओस लपटाय॥

जब चाणूरने पीछे हटकर एक मुक्का श्यामसुन्दरकी छातीपर बड़े जोरसे मारा और उनके अंगपर फूलसी भी चोट नहीं लगी तब नन्दलालजी ने दोनोंहाथ उसके पकड़कर अपने शिरके चारोंओर घुमाया और ऐसा पृथ्वीपर पटका कि शरीर उसका अखाड़े की मिट्टी में धँसकर प्राण निकलगया व जिसतरह बालक चिउँटीको पकड़ कर मारडाले उसीतरह बलरामजी ने भी मुष्टिक पहलवानको कुश्ती लड़कर मार-डाला व चैतन्यात्मा दोनों पहलवानोंका वैकुण्ठमें पहुँचा जब उसके मारने उपरान्त शल व तोशल व कूटपहलवान खड्ग लेकर श्यामसुन्दर से लड़ने वास्ते आये तब केशवमूर्त्ति ने बायें पैरसे लात मारकर शल व तोशलको व बलरामजी ने बायें हाथके मुक्कासे कूट पहलवानको मारडाला इन पांचोंके मरतेही बाकी पहलवान जो उनके साथी व चेले वहांथे अपना अपना प्राण लेकर भागगये यह दशा देखतेही मथुरा-बासी व हरिभक्तलोग प्रसन्नहोकर आपसमें कहनेलगे बड़ा भाग्य उस पृथ्वीका सम-झना चाहिये जहां इन लड़कोंका चरण पड़ताहै व गोप व ग्वालबालों की बराबरी कोई नहीं करने सक्ता जो इनके साथ दिनरात रहकर अपना जन्मस्वार्थ करते हैं और गोपियां धन्यहैं जो आठोंपहर मोहनीमूर्त्तिका ध्यान अपने हृदयमें रखकर इनकेसाथ प्रीति करती हैं व जो जीव ब्रज गोकुल में जन्मलेकर श्यामसुन्दरका दर्शन करता है उसको देवतों से उत्तम समझना चाहिये ॥

दो० ब्रजबासिनके भाग्यकी महिमा कही न जाय।
जिनके चितमें नितबसैं माखनप्रभु यदुराय॥

राजा कंसने पापी होने परभी हमारेसाथ बड़ी भलाई की जिसके बुलाने से हम लोगों ने वैकुण्ठनाथका दर्शन पाया नहीं तो इनका दर्शन मिलना देवतों को कठिन है हे राजन् उससमय मथुरावासियों ने इसीतरह पर बहुत स्तुति श्याम व बलराम की की व देवतों ने आकाशसे उनपर फूल बरसाये व मथुरापुरी में यह समाचार

सुनकर सबछोटेबड़े आनन्द होगये व सिवाय राजाकंस और जितने लोग रंगभूमि में थे सबोंने प्रसन्नहोकर रामकृष्णकी जयजयकारकी व बजनिये अनेक तरहका बाजा बजानेलगे व श्याम व बलराम बड़ेहर्षसे ग्वालबालोंको दांवपेंच बतलानेलगे व राजा कंस चाणूरआदिक पहलवानों के मारेजाने से बहुतउदास होकर मथुराबासियोंको कहनेलगा तुमलोग श्रीकृष्णजीकी विजयहोनेसे प्रसन्नहोकर बाजाबजवातेहौ जब उसकी बातका उत्तर किसीने नहींदिया तब उसने क्रोधसे चिल्लाकर अपनेसाथीदैत्य व बीरोंको जोमचानपर बैठेथे कहा कि तुमलोग इनलड़कोंको बाहरलेजार खड्गसे मारडालो व बाजाबन्दकरके गोपग्वालोंको बांधलेव व बसुदेव देवकीको उग्रसेनसमेत मारकर रंगभूमिका फाटक भीतरसे बन्दकरदेव यहबचनसुनतेही जबउन्होंने नंगीतलवारालिये श्याम व बलरामको जाकरघेरलिया तब दोनों भाइयोंने एकक्षणमें बहुतसंदैत्य व बीरोंकोलड़करमारडाला व बाकीदैत्य इसतरह मुरलीमनोहरके प्रकाशसे अपनाप्राणलेकर भागगये जिसतरह प्रातःसमय सूर्य्यके निकलनेसे तारे छिपजाते हैं व जब बसुदेव व देवकीने श्याम व बलराम के कुश्ती लड़नेवास्ते आनेकाहालसुना तब वह दोनों व्याकुल होकर परमेश्वरसे उनकी कुशल मनानेलगे ॥

दो० बारबार करुणाकरैं धरैं धरणि पर शीश ।
ममपुत्रन के हूजियो रक्षपाल जगदीश ॥

जब मोहनप्यारे अन्तर्य्यामीने मातापिताकोदुःखीजानकर कंसका यहबचन सुना तब ऐसाप्रणकिया कि आजकंसको मारकर बसुदेव व देवकीको छुड़ाना चाहिये ऐसा बिचारतेही श्यामसुन्दरने अपनाछोटारूप बनालिया व इसतरह कूदकर मचानपर जहांराजाकंस खड्गलिये बड़ेअभिमानसे बैठाथा चढ़गये जिसतरह बाज कबूतरपर झपटताहै उन्हेंदेखतेही पहिले कंसनेबिचारा कि भागजाऊँ फिर मनमें धीर्य्यधरकर जब उनपर खड्गचलानेलगा तब नन्दलालजी उसकावार बचाकर उसे खेलखिलानेलगे उससमय देवतोंने बिमानोंपर चढ़ेहुये आकाशमें से बिनयकिया हे परब्रह्मन् परमेश्वर कंसमहापापीको तुरन्तमारडालो क्यों इसके मारनेमें बिलम्बकरतेहो यहबात सुनतेही श्यामसुन्दरने ऐसाप्रकाश अपनेशरीर में प्रकटकिया जिसकी चमकदेखना न सहकर कंसने अपनीआंखें बंदकरलीं तब मोहनप्यारेने पैरके ठोकरसे मुकुटउसका गिरादिया व शिरका बाल पकड़के मचानसे पृथ्वीपरपटककर तीनोंलोकोंका बोझा अपनेशरीरमेंलियेहुये उसके ऊपर कूदपड़े ॥

दो० जब धरणीमें आयके पस्रो उतानो भूप ।
उरऊपर दर्शनदियो श्यामचतुर्भुजरूप ॥

हे राजन् वैकुण्ठनाथ के कूदतेही कंसकाप्राण निकलगया पर आठोंपहर सोते व जागते व बैठते व उठते व खाते व पीते व चलते व फिरते श्यामसुन्दरकारूप उसकी आंखों में बसारहताथा इसलिये मुक्तिपदवीपर पहुँचा ॥

दो० माखनप्रभुके रूपकी महिमा अगमअपार ।
जाके सुमिरणध्यानते तरत सकल संसार ॥

देखो क्याबड़ाभाग्य उनमनुष्यों का है जोलोग नित्यपरमेश्वरका स्मरण व ध्यान करते हैं जबकंसको मरादेखकर आठभाई उसके अपनाअपना हथियारलियेहुये गोपीनाथको मारनेवास्ते दौड़े व बलरामजीने हल व मूशलले उनसबको मारडाला तब सबकिसीने बड़ेशब्दसे श्याम व बलरामका जयजयकारकिया यह समाचारसुनकर सब छोटेबड़े मथुरावासी प्रसन्नहोगये व देवतोंने दुन्दुभीबजाकर नन्दनबागके पुष्प दोनों भाइयापर बरसाये व नेवतेवाले हरिभक्त राजा कल्याणरूपको दण्डवत्करके अपने २ स्थानपरगये व नन्द व उपनन्दआदिक यहसब चरित्र स्वप्नवत् समझकर अपने डेरे पर चलेआये व केशवमूर्त्ति मारेक्रोधके अपने हाथ कंसके शिरकाबालपकड़कर इसतरह उसकीलोथ सड़कमें घसीटतेहुये यमुनाकिनारेलेगये जिसतरह हाथीकोमार सिंह घसीटलेजाताहै कंसने बसुदेव व देवकीको कैदरखकर बहुतदुःखदियाथा इसीवास्ते मोहन प्यारेने उसकीलोथ घसीटा व लोथखींचलेजाने से वहां कंसखारनाला प्रकटहोकर अब तक मथुरामें बार्जसमय कंसकीखाल दिखलाईपड़ती है व दूसराकारण घसीटने लोथका यह समझो जिसमें मथुराकी रजलगने से शरीर उसअधर्मी का पवित्रहोजावे यमुना किनारे लोथ पहुँचाकर थोड़ी देर मुरलीमनोहर उसजगह बैठे थे इसलिये वहांकानाम विश्रामघाट प्रसिद्धहुआ जब यहसमाचार रनिवासों में पहुंचा तब कंसकी रानियां व भौजाइयां व नातेदारस्त्रियां रोतीपीटतीहुई यमुनाकिनारे पहुंचीं ॥

दो० सब धाईं सुधि पायके आईं जहां नरेश ।
तोड़े हार शृँगार सब छोड़े शिरके केश ॥

हे राजन् उनस्त्रियों ने अपने २ पतियोंका मुखदेखतेही उनकाशिर गोदमें रखलिया व अतिविलापसे रोकर यों कहनेलगीं हे कंस तू ऐसाप्रतापी राजाहोनेपरभी इसदुर्दशा से माराहुआ पृथ्वीपरपड़ा है जो तू श्यामसुन्दर व बड़ों से बिनाअपराध बैर न करता तो किसवास्ते तेरी यहगतिहोती हरिभक्त व महात्मोंको दुःखदेना अच्छानहींहोता यह सबहाथी व घोड़े व द्रव्यअपना छोड़कर तू चलाजाताहै व हमारीदशा व रोनेपर कुछ ध्याननहींकरता तेरेबियोगसे हमलोगोंकी क्यागतिहोगी संसारमें अपनेबराबर तू किसी को नहीं समझताथा अब वहसबघमण्ड तेरा क्याहुआ जो इसतरहपर पृथ्वीपर बिना

कफनके पड़ाहै तेरेसोने व बैठनेवास्ते शीशमहल व रंगमहलकी अटारियां जो बनी हैं उनमें अब कौनबैठे व सोवैगा व तेरे जड़ाऊ सिंहासनपर कौन बैठकर मथुरावासियों का न्याय करैगा ॥

दो० यह मन्दिर सुन्दर महा जिनकेसम नहिंऔर ।
तुम बिन ऐसो कौन है जो बैठै यहि ठौर ॥

जब इसीतरह अनेकबातैं कहकर सबरानियां व स्त्रियां महाविलापकरनेलगीं तब श्यामसुन्दर करुणानिधान उनपर दयालुहोकर बोले हे मामीजी जोकुछ भाग्यमें लिखा होताहै वह किसीतरह नहींमिटता जैसेपाप कंसनेकिये वहसब तुमने देखे हैं परमेश्वर की इच्छा इसीतरहपर जानकर धीर्य्यधरो मैं तुम्हारीआज्ञा अच्छीतरह पालनकरूंगा अब इनलोगों की क्रिया व कर्म्म करना उचित है ॥

चौ० मामी सुनो शोकनहिं कीजै । मामाजीको पानी दीजै ॥
सदा न कोऊ जीतारहै । झूठावह जो अपना कहै ॥

श्यामसुन्दरके समझानेसे सब स्त्रियोंने अपने २ पुरुषोंकी लोथजलाकर क्रिया व कर्म्म उनकाकिया व श्यामसुन्दर ने कंस का क्रिया व कर्म्म उग्रसेन के हाथ से कराया ॥

दो० कंसहतन लीलासुनै मनचितदे जो कोय ।
माखनप्रभुके नेहमें ताको भय नहिं होय ॥

पैंतालीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का उग्रसेनको राजगद्दीपर बैठालना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब कंसआदिककी लोथजलाकर सब अपने २ घर गये तब श्यामसुन्दर व बलरामजी अक्रूरको साथलेकर कैदखानेमें बसुदेव देवकी के पासआये जब माता व पिताकी बेड़ी व हथकड़ी कटवाकर दोनोंभाइयोंने शिरअपना उनकेचरणोंपर रखदिया तब देवकी रोकरबोली अय प्राणप्यारे तुम बारहबर्षतक कहां रहे मैंने आजतक कभी तुमको गोदमें नहीं खिलाया ॥

दो० सुनिजननीके बचनप्रभु कृपासिंधु यदुराय ।
भयेप्रेमबश दुखितलखि बोले अतिसकुचाय ॥

हे माता व पिता मैं कैसाअभागी तुम्हारेयहां उत्पन्नहुआ जो मेरेकारण तुमलोगों ने इतनादुःखउठाया इसमें हमारा कुछ अपराधनहींहै किसवास्ते कि जबसेआप हमको

गोकुल में नन्दजीकेघर पहुँचायआये तबसे मैं परवशथा इसलिये तुम्हारे पासनहीं आनसका और मुझेसदा यहइच्छा बनीरहतीथी कि जिसकेपेटमें दशमहीने रहकर हमने जन्मलिया उसने बालचरित्र हमारा नहींदेखा और हमने लड़कपनमें माता व पिता का कुछसुख नहींपाया दूसरेके घररहकर वृथा इतनेदिन गँवाये जिन्होंने हमारेवास्ते इतनादुःखउठाया उनकी कुछसेवा हमसे नहीं बनपड़ी हमैं तुम्हारी सेवाकरना व बाललीलाकासुख दिखलाना उचितथा सोयह सबसुख नन्द व यशोदाको प्राप्तहुआ ॥

दो० सबैजीव सन्तान से सुखपावत दिनरैन।
तुम्हैं हमारे जन्म से बहुतै भये कुचैन॥

हे माता जिसपुत्रसे उनके मा व बाप दुःखपाते हैं वहबेटा अवश्य नरकभोगता है संसारमें उन्हींको सामर्थीपुरुष समझनाचाहिये जो अपनेमाता व पिताकीटहल मनसा वाचा कर्म्मणासे करते हैं मनुष्यतनुमें जो कोई अपने मा व बाप व गुरू व बड़ेवृद्धों की सेवा व स्त्री बालकों का पालन नहीं करता उसके लोक व परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं ॥

दो० तात मातसों प्राणधन कपटकरै जो कोय।
ताको तीनोंलोकमें कभी भलो नहिं होय॥

हे पिता मैं ब्रह्माकी आयुर्दापाकर जन्मभर तुम्हारी सेवाकरूं तौ भी आपसे उऋण नहींहोसक्ता इसलिये तुम्हारा ऋणियांहोकर यह विनयकरताहूं कि मेरा अपराध क्षमाकीजिये और सबदुःख व सुख अपनेकर्म्मानुसार समझिये हे माता अबतुम शोच छोड़कर आनन्दमनावो मैं तुम्हारीआज्ञानुसार स्वर्ग व पातालजानेसे नहीं डरूंगा व अष्टसिद्धि नवनिद्धि तुम्हारीदासी बनीरहैंगी ॥

दो० यद्यपि हम अवगुणभरे प्रकटे महाअसाध।
तद्यपिसुतहित जानिकै क्षमाकरो अपराध॥

जब यह बातसुनकर वसुदेव व देवकी को ज्ञानप्राप्तहुआ तब उन्होंने समझा कि यह हमारेपुत्र न होकर त्रिभुवनपतिहैं उन्होंने अपनीइच्छासे पृथ्वीका भारउतारनेवास्ते अवतारलेकर जो जो कामकियाहै वह मनुष्य नहींकरनेसक्ता ऐसासमझकर वह दोनों मोहनप्यारेकी स्तुतिकरनेलगे पर श्रीकृष्णजी और बहुतसी लीलासंसारमें करनीचाहतेथे इसलिये उन्होंने वहब्रह्मज्ञान उनका हरलिया तब वसुदेव व देवकी उन्हें अपना बेटा जानकर गोदमेंबैठाकर प्यारकरनेलगे व उनकामाथा व मुखचूमनेसे प्रसन्नहोकर पिछला दुःखभूलगये व श्याम व बलरामको साथलेकर बड़ेहर्षसे अपने घरपरआये ॥

चौ० परमहुलास नयन उरपेखैं । अपनो जन्म सुफल करिलेखैं ॥
अतिआनन्दभयोमनमाहीं । सो लिखिसकत शारदानाहीं ॥

हे राजन् बसुदेवजीने घरपहुँचकर उसीसमय दशहजार गौ विधिपूर्वक जो श्याम-सुन्दरकी जन्मतीसमय मनमें संकल्पकियाथा ब्राह्मणोंको दानदिया व दोनों भाइयोंको ग्वालबालोंसमेत छत्तीसव्यंजन भोजनकराके उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनाया तब मुरलीमनोहरने बलरामजीसेकहा बिनाराजाके प्रजाको दुःखहोगा व बसुदेवको राजगद्दीपर बैठालनेसे संसारीलोग ऐसाकहैंगे कि राज्यलेने के लालचसे कंसकोमारडाला इसलिये उग्रसेनको जिनकाराज्य कंसने छीनलियाथा राज्यदेना चाहिये ऐसा बिचार कर श्यामसुन्दर व बलराम व बसुदेवजीसमेत उग्रसेनकेपास चलेगये व उन्हें दण्डवत् करनेउपरान्त बहुतसा धीर्य्यदेकर बोले अय नानाजी आप राजसिंहासनपर बैठकर प्रजाको पालन कीजिये व हमें अपनादासजानकर किसीबातका सन्देह मनमें न लाइये सब पृथ्वीके राजा अपने २ देशका रुपया देकर तुम्हारे अधीन रहैंगे ॥

चौ० जोजनतुम्हरी आन न मानैं । क्षणमें तिन्हैं बांधि हमआनैं ॥
निर्भय राज्यकरोजगमाहीं । अब तुमको संशय कछुनाहीं ॥

यहबचन सुनतेही उग्रसेन हाथजोड़कर विनयपूर्व्वक बोले महाराज आपने बहुत अच्छाकिया जो राजाकंस व उसके भाइयोंको कि वह सबपापी व अधर्मीथे मारकर यदुवंशियोंका दुःखछुड़ाया जिसतरह तुमने दैत्य व राक्षस व अधर्मियों को मारकर हरिभक्तों को सुखदिया उसीतरह राजसिंहासनपर बैठकर प्रजाकापालन कीजिये यह बात सुनकर मोहनप्यारे बोले आपने सुनाहोगा कि राजाययातिके शापदेनेसे यदुआदिक उनके बेटोंने राजगद्दी नहीं पाईथी व हम भी उसी कुलमें उत्पन्नहुयेहैं इसलिये मुझे राजसिंहासनपर बैठना न चाहिये ॥

सो० करौबैठि तुमराज दूरिकरौ संदेह सब ।
हमकरिहैं सबकाज जो आयसुदीजै हमैं ॥

हे नानाजी आपसिंहासनपर बैठकर गौ ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुखदीजिये व जो यदुवंशी कंसकेडरसे मथुरापुरी अपनी जन्मभूमि छोड़कर दूसरेदेशमें जाबसेहैं उनको बुलाकर यहां बसाइये व प्रजासे अधिक करलेनेका लोभ न रखकर किसीको बिना अपराध दण्ड न दीजिये जब उग्रसेनने कहना श्यामसुन्दरका अपना भाग्यउदय समझकर मानलिया तब श्रीकृष्णजी भक्तहितकारीने उग्रसेनको राजसिंहासनपरबैठाकर विधिपूर्व्वक तिलकराजगद्दीका लगादिया व श्याम व बलरामने अपनेहाथसे उनको चँवरहिलाया व सबछोटे व बड़ोंने मंगलाचार मनाया व मथुराबासी आनंदितहोकर

श्यामसुन्दरकी स्तुतिकरनेलगे व देवतोंने आकाशसे उनपर फूलबरसाये व राजाउग्रसेनके कहलाभेजनेसे सबयदुवंशी जो भागगये थे फिर मथुरामें आनबसे जब मोहनप्यारेने उन्हें बहुतदुःखी व कंगालदेखा तब द्रव्य व वस्त्र व भूषण व गांव व स्थान आदिक जिसको जिसवस्तुकी चाहनाथी उसे वहीपदार्थ देकर ऐसाप्रसन्न करदिया कि उनको फिर कुछइच्छा नहींरही व बसुदेव व देवकी परमआनन्दहुये व जो यदुवंशी बूढ़े व निर्ब्बल थे वहलोग श्यामसुन्दरकी अमृतरूपी दृष्टिपड़नेसे तरुण व बलवान् होगये ॥

दो० उग्रसेन के राज्य में सुख को सदा समाज ।
सभी काम कीन्हे जहां माखन प्रभु ब्रजराज ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवस्वामी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दरने इसीतरह सब किसीको सुखदेकर बलरामजी से कहा यशोदाने हम दोनों भाइयों को बड़ी प्रीतिसे पालनकरके इतना बड़ाकिया सो वह हमारेवास्ते बहुत शोचकरतीहोंगी व नन्दराय ब्रजवासियों समेत मेरे चलने की आशासे जो बागमें टिकेंहैं चलकर उनको बिदा करना चाहिये ॥

चौ० बहुतहेत हमसोंउनकीन्हों । विविधभांति हमकोसुखदीन्हों ॥
सकुचतहौं अपनेमनमाहीं । उनसेउऋण कबहुँ हम नाहीं ॥
पलटो नहीं उन्हें जो दीजै । अबचलि बिदा उन्हें ब्रजकीजै ॥

ऐसाकहकर मोहनप्यारेने बहुतसाद्रव्य व रत्न व भूषण व वस्त्र अपने साथ लिवा लिया व राजाउग्रसेन व बसुदेवजीको संगलेकर जहांपर नंदादिक टिकेथे वहांको चले जिससमय नंदजी अपनेडेरेपर बैठेहुये यह विचारकररहे थे कि कई दिन वृन्दावन से आये होचुके श्याम व बलराम आवैं तो चलैं ॥

सो० अब कैसे ब्रज जाहिं बल मोहन दोऊ बिना ।
अति व्याकुल उरमाहिं कबलौं नयनन देखिये ॥

उसीसमय मोहनप्यारेने वहां पहुंचकर नन्दजी के चरणोंपर शिर अपना धरदिया तब नन्दने शिर उनका उठाकर छातीमें लगालिया व बसुदेव व राजा उग्रसेन प्रेम पूर्व्वक नन्दरायकेगले मिलकर जब सब कोई वहां बैठे व नन्दराय मन में समझे कि अब श्यामसुन्दर हमारेसाथ वृन्दावनको चलैंगे तब केशवमूर्त्ति ने सब बस्तु जो वहां लेगयेथे नन्दरायके सामने रखकर विनयकिया अय बाबा मैं तुमसे किसीतरह उऋण नहीं होसक्ता आपने मेरा बड़ा प्रतिपालन किया है ॥

दो॰ चौंकिउठे नँदराय सुनि तू क्या कहत गुपाल ।
मोसों कहत कि आनसों किन कीन्हों प्रतिपाल ॥

यहबचन सुनतेही केशवमूर्त्तिनेकहा अय बाबा हमको कहतेहुये संकोच मालूम देता है आपने गर्गपुरोहितका कहना सच्च न मानकर मुझे अपनेबेटे समान पालनकरके बड़ासुखदिया मैं कहींरहूं पर तुम्हारा कहलाऊंगा व हमारेपिताने रोहिणी मेरीमाता को बड़ी विपत्तिमें तुम्हारे घर पहुंचादियाथा सो तुमने सन्मानपूर्व्वक उसको अपने यहां रक्खा व मैंने गोरस आदिक ब्रजबासियों का खाकर अनेक उपद्रव किया सो सब आपने दयाकीराह क्षमाकरदिया व राजाकंस मेरेशत्रु से तुमलोगोंने नहीं डरकर मेरा पालनकिया व यशोदाने मुझे पुत्रजानकर पाला सो अब तुम्हें व यशोदाको अपनेमाता व पितासे अधिकजानकर तुमसे उऋण नहीं होसक्ते पर एकबातकहताहूं तुम कुछखेद मतमानना अब हम थोड़ेदिन मथुरामें यदुबंशी आदिक जाति भाइयोंके साथ रहकर अपनेमाता व पिताको सुखदेवेंगे आजतक उन्होंने हमारेवास्ते बड़ादुःख पाया है जो वह हमको तुम्हारेयहां न पहुंचाते तो क्यों इतनादुःख उठाते सो तुम घरपरजाकर यशोदामाता व सब वृन्दाबनबासियों को जो मेरेवास्ते शोचकरतेहोंगे धैर्य्यदेव व यशोमति मैयासे कहिदेना जिसतरह मेरेवास्ते माखन रखछोड़ाकरतीथीं उसीतरह अब भी धररक्खाकरैं प्रकट में हम तुमसे बिलगहोतेहैं पर अन्तःकरण से सदातुम्हारे पास रहैंगे सो मेरे ऊपर दयारखकर कभी मुझे मति भूलना ॥

चौ॰ मैयासे पालागन कहियो । हमसे प्रेम करे तुम रहियो ॥
होंगीदुखित यशोमतिमैया । मोहिंबिनु ब्रजतिरियासबगैया॥
ताते बेगि गमन ब्रज कीजै । जाय सबनको धीरज दीजै ॥
मोरी सुरति न उरते टारो । मैं तुमसे कबहूँ नहिं न्यारो ॥
दो॰ निठुरबचन सुनिश्यामके भयेबिकल अतिनन्द ।
उमँगि नीर नयनन चले पड़गये दुख के फन्द ॥

यहबात श्यामसुन्दरके मुखसे निकलतेही नन्दराय इतना बिलापकरकेरोये कि उन को हिचकी लगगई व अचेतहोकर गिरपड़े व ग्वालबाल उदासहोकर आपसमें कहने लगे हमारे निकट नन्दकिशोर हमलोगोंसे कपटकरके यहां रहिजायाचाहतेहैं नहीं तो ऐसाकठोर बचन न कहते ऐसाबिचारकर श्रीदामाग्वाल ने कहा हे मोहनप्यारे अब मथुरामें तुम्हाराक्याकामहै जो ऐसे निर्दयीहोकर अपने बूढ़ेबाप रोतेहुयेको बिदाकरके यहां रहनाचाहतेहो राजाकंसको तुमनेमारा तो अच्छाकिया अब वृन्दाबनमेंचलकर

वहांकाराज्यकरो मथुराकी राजधानी देखकर लोभकरना न चाहिये हाथी व घोड़ा व द्रव्य व राज्यदेखकर मूर्खलोग लोभकरते हैं तुमको वृन्दावन ऐसासुन्दर जहां सदावसन्तऋतु बनीरहती है कहीं नहीं मिलैगा हे भाई तुम वृन्दावन छोड़कर दूसरी जगह मतिरहो कदाचित् निर्दयीहोकर यहां रहिजावोगे तो राधाआदिक सोलहहजार गोपियां जो दिनरात तुम्हारा चन्द्रमुख देखकर अपनीआंखैं ठण्ढी करतीथीं व पांचहजारग्वालबाल जो तुम्हारेसाथ गौचरातेसमय मुरलीकीध्वनि सुनकर अपनाजन्म सुफलजानते थे वह सब तुम्हारे विना कैसेजीवेंगे हे नन्दकिशोर तुम मेराकहना न मानकर हमलोगों की प्रीति छाड़दोगे तो यहां रहनेमें तुमको क्यायशमिलेगा जिसउग्रसेनको तुमनेराज्य दियाहै रातदिन उसकीसेवकाई करनी पड़ेगी यहअपमान तुमसे किसतरह सहाजायगा इसलिये वृन्दावनको चलो ॥

चौ० ब्रजबन नदी विहार विचारो । गायनको मनते न विसारो ॥
नहिं छोड़ैं तुमको ब्रजनाथा । चलिहैं सभी तुम्हारेसाथा ॥

इसीतरह ग्वालबालों ने अनेकबातैं श्यामसुन्दरसे कहीं पर उन्होंने नहीं माना तब कुछग्वालबाल श्याम व बलरामके साथ मथुरामें रहनेवास्ते तय्यारहोकर नन्दराय से बोले आप निश्चिन्त होकर घरपर चलिये हमलोग पीछेसे इनको अपने साथ लेकर वृन्दावनमें पहुंचते हैं यहबचन सुनतेही नन्दजी विरहसागरमें डूबकर चित्रसे चुपचाप खड़ेहोकर मोहनप्यारेका मुखदेखनेलगे व मारेशोचके ऐसा घबड़ागये जिसतरह सांप काटनेसे मनुष्य व्याकुल होजाताहै ॥

दो० बिरह व्यथा कष्टितमहा जानतहौ सब कोय ।
जासों बिछुरत प्राणपति ताकी गति कहहोय ॥

यहदशा उनकी देखकर बलरामजीने नन्दरायसे कहा आप इतनाशोच क्योंकरते हैं थोड़ेदिनमें हमलोग यहांका कामकरके तुमसे आनमिलैंगे ॥

चौ० हरि प्रकटे भूभार उतारण । कह्योगर्ग तुमसों सब कारण ॥
मातु पिता हमरे नहिंकोऊ । तुम्हरे पुत्र कहावैं दोऊ ॥

हे बाबा वृन्दावन का ऐसा सुख दूसरीजगह मिलना कठिनहै इसलिये तुम्हाराघर छोड़कर कहीं न जाऊंगा हमारी माता अकेली वहांव्याकुल होतीहोगी इसवास्ते आप को यहांसे विदाकरते हैं जिसमें तुम्हारे जानेसे उनको धीर्य्यहो यहबचन सुनतेही नंद जी महाव्याकुल होकर श्यामसुन्दर के चरणोंपर गिरपड़े और रोकर बोले अय बेटा एकबार तुमदोनों भाई मेरेसाथ चलकर अपनी माता आदिक सब किसी को धीर्य्य

देकर फिर चलेआवना मैं तुम्हारा चरण छोड़कर वृन्दाबन नहीं जानेसक्ता तुम्हारी माता माखनरोटी तय्यारकरके बैठीहुई राह देखतीहोगी मैं उससे जाकर क्या कहूंगा तुम जल्दी घरपरचलो ॥

चौ० क्यों जीवैं बिनु दर्शन पाये । भये निठुर मथुरा क्यों आये ॥

अय बेटा हमने बारहवर्ष तक पालनकर तुमको सयाना किया पर तुम्हारे प्रताप व महिमाको नहीं जाना अब बसुदेवजी के बेटाहोकर तुमने गर्गजी का बचन सच्चा किया जब जब हमपर दुःखपड़ता था तबतब तुम हमारी रक्षा करतेथे कदाचित् तुम को अपने बियोगमें हमलोगों को मारनाथा तो उसीदिन गोबर्द्धन हमारे ऊपर क्यों नहीं गिरादिया जिसके तले हम सबकोई दबकर मरजाते तो आज यह दशा हमको क्यों देखनी पड़ती ॥

दो० देखि प्रीति अतिनन्दकी मन बसुदेव सिहात ।
सकुचिरहे सबप्रेमबश कहि न सकतकछुबात ॥

जब इसीतरह नन्दादिक रोने व बिलाप करनेलगे व मोहनप्यारेने उनकी दशा देखकर बिचारा कि यहलोग हमारे बियोगमें जीते न बचैंगे तब अपनी माया को जिससे सब संसारको भुलारक्खा है उनपर फैलादी व हँसकर कहा अय बाबा तुम किसवास्ते उदास होतेहो मैं तुमसे कहीं दूर न जाकर तीन कोसपर यहां रहूंगा यशो-दा मेरी माता व सबस्त्री व पुरुष वृन्दाबनबासी हमारेवास्ते शोचकरते होंगे इसलिये उनको धीर्य्य देनेवास्ते तुमको बिदा करताहूं जब परमेश्वर की माया व्यापनेसे नन्द-राय को कुछ धीर्य्य हुआ तब वह हाथ जोड़कर बोले हे जगन्नाथ तुम मथुरामें रहना चाहतेहो तो मेरा क्याबशहै हम तुम्हारी आज्ञासे वृन्दाबनको जाते हैं पर ब्रजबासियों को मति भूलना ॥

दो० मेटिदियो सन्ताप सब कियो सुकृतकी खान ।
भरसाखी चौदह भुवन सुरमुनि वेद पुरान ॥

यहबचन सुनतेही बसुदेवजी बहुतद्रव्य व रत्नादिक नन्दरायको देकर विनयपूर्वक बोले हे नन्दजी जो उपकार तुमने मुझपर कियाहै उससे मैं उऋण नहीं होसक्ता इन दोनों बालकों को अपना जानकर यहां वहांरहने में कुछभेद मत समझना हे राजन् यहबात सुनकर नन्दराय ने श्यामसुन्दर को दण्डवत्की व पांच सात ग्वालबालों को वहां छोड़दिया और सबको साथलेकर रोतेपीटते वृन्दाबनको चले पर सबकोई मथुरा की ओर पीछेसे देखतेजाते थे ॥

चौ० चले सकल मग शोचत भारी। हारे सर्वस मनहुं जुवारी॥
काहू सुधि काहू सुधि नाहीं। लटपटचरण परत मगमाहीं॥

जब श्यामसुन्दर नन्दजी आदिक को बिदाकरके राजा उग्रसेन व वसुदेव समेत राजमंदिर पर पहुँचे तब यदुबंशीलोग ब्रजवासियों की प्रीतिदेखकर आपसमें उनकी बड़ाई करनेलगे व रास्तेमें नन्दजी मोहनप्यारे की महिमा यादकरके ब्रजवासियों से कहतेजाते थे देखो हमने बड़ा अपराध किया जो परब्रह्म परमेश्वर से अपनी गौवें चरवाई व थोड़ासादही व मक्खनगिराने व खिलानेके कारण यशोदाने उनको ऊखल से बांधदिया तिसपर भी उन्होंने अपनी बड़ाई नहींछोड़ी गोबर्द्धन पहाड़ उठाकर ब्रजबासियों की रक्षाकी व मेरेलेने वास्ते वरुणलोकमें दौड़िगये व हमलोगोंने अपने अज्ञान से उन्हें नहीं पहिंचाना जब नन्दराय ऐसी २ बातें अपने साथियोंसे कहते व पछिताते हुये वृन्दावनके निकटपहुँचे तब मोहनप्यारेके विरहमें अचेतहोकर गिरपड़े जब यशोदा ने जो आठोंपहर मथुराकी राह निहाराकरतीथी देखा कि गोप व ग्वाल वृन्दावन की ओर चलेआते हैं तब वह बड़ेहर्ष से इसतरह दौड़कर श्याम व बलरामको देखने चली जिसतरह बछड़ेको देखकर गौ दौड़ती है॥

दो० धाई अतिहर्षित भई सुनत रोहिणी माय।
दर्श आश धाई सबै ब्रजतिरियां हुलसाय॥

जब उन्होंने नन्दरायके पास पहुँचकर श्याम व बलरामको नहींदेखा तब यशोदा ने घबड़ाकर नन्दजी से पूछा अय कन्त तुम मेरेराम व कृष्णको कहां खोकर उनके बदले यहगहना व कपड़ालेआये जिसतरह अन्धामनुष्य पारसपत्थर पड़ा पाकर उसे नहीं पहिंचानता और जब उसे फेंककर पीछेसे गुण उसका सुनता है तब सिवाय रोने व पछितानेके कुछहाथ नहीं आता उसीतरह तुम मेरे अनमोल लालको अपने हाथसे खोकर यहसब कांच उठालायेहो उनके बिना यहसब द्रव्य व रत्न लेकर क्या करोगे हे मूर्ख जिनके क्षणभर अलगहोने से छाती फटतीथी अब उनके बिना हमारा दिन कैसे कटैगा मेरेबर्जनेपर भी तुम उन्हें बरजोरी लिवालेगये अब उनके बिना हमलोग अन्धेहोकर किसतरह जीवैंगे यहबचन यशोदा का सुनतेही नन्दजी आंखनीचे किये हुये रोकरबोले हे प्रिया सत्यहै यहसब भूषण व वस्त्रादिक श्रीकृष्णने मुझे दिये पर यह सुधि नहींरखता कि किसने लिये श्यामसुन्दरकी बातें तुझसे क्याकहूं उनकी कठोरताई सुनकर तुझे बड़ादुःखहोगा जब वे कंसको मारकर मेरेपासआये तब अपनेको वसु-देवजीका बेटाबतलाकर प्रीतिहरणबातें कहनेलगे उनकाबचन सुनतेही जब मैं अच-म्भामानकर रोनेलगा तब मुझे बहुत धैर्य्यदेकर बिदाकरदिया हे प्रिया हमने तो तभी

गर्गमुनिके कहनेसे उनको नारायणजाना था पर मायाबशहोकर उनको पुत्रसमझतेथे सो अब पुत्रभावछोड़कर परमेश्वर समान उनकाभजन करनाचाहिये जब यशोदाने यह सबहाल नन्दरायसे सुना तब वह और अधिक मायावशहोकर रोनेलगी व श्यामसुन्दरको अपना बेटाजानकर नन्दरायसे बोली हे कन्त तुमको धिक्कारहै जो उनके मुखसे आधीबात सुनकर चलेआये व श्याम बलरामको मथुरामें छोड़कर यहां मुख दिखलातेहो राम व कृष्णबिना जीकर क्या सुख पावोगे ॥

चौ० मारगसूझिपस्थो किहिभांती । बिदाहोत फाटी नहिं छाती ॥

दो० कैसे प्राण रहे हिये बिछुरत आनँद कन्द ।
सुनी नहीं दशरथकथा कहूं श्रवण मतिमन्द ॥

सो० मैं मथुरा में जाय रहिहौं हरिकी धायबनि ।
लीजै ठोंकबजाय अब अपनो ब्रज नन्द यह ॥

हे मूर्ख तुम मेरे दोनों प्राणप्यारों को कहां छोड़आये मैं अभागी अपने लाल के साथ न जाकर तुमलोगों के कहने से घर बैठरही मैं भी साथ जाती तो किसवास्ते उनको छोड़आवती ॥

चौ० जीवनप्राण सकलब्रज प्यारो । छीनिलियो बसुदेवहमारो ॥
सुफलकसुत बैरी भो भारी । लैगो जीवनमूल हमारी ॥
पूछत बिलखि यशोमति मैया । कहौनन्द क्याकह्योकन्हैया ॥
तुमकोबिदा ब्रजहिजबकीन्हों । फिरिकछुमोहिंसँदेशोदीन्हों ॥
तुमकछुहरिसोंबिनयनभाखी । कहाश्याम मनमें यहराखी ॥

यह सुनकर नन्दजी बोले ॥

दो० मैं अपने सों बहुकियो वे प्रभु त्रिभुवननाथ ।
जो चाहैं सोई करैं कहा बसै मो हाथ ॥

सो० कहिकै तोहिं प्रणाम बहुरिश्याम ऐसे कह्यो ।
करिकै कछु सुरकाम मिलिहौंतुमसे आयब्रज ॥

व बलरामजी ने ऐसाकहा है कि मेरी माता दुःखीहोने न पावै तुमजाकर उसको धैर्य्य देदेना कुछदिनों में हमभी आनकर उससेमिलैंगे यशोदा यहसन्देशा अपने लाल का सुनतेहीं शोच में डूबगई व नंद व यशोदाआदिक सबब्रजबासी मुरलीमनोहरका बालचरित्र यादकरके रोते व पीटतेहुये अपने २ घरआये पर बिनाश्याम व बलराम

उनको वृन्दावन उजाड़सा मालूमदेताथा व नन्द व यशोदा कभी गोपीनाथको अपना बेटाजानकर उनकीयाद में रोते कभी ईश्वरभाव समझकर उनके चरणोंकाध्यान करते थे व केशवमूर्ति के बिरह में सब पशु व पक्षी व ग्वाल व गौआदिक व्याकुलरहकर फल व फूल कुंजोंके कुम्हिलागये जब श्यामसुन्दरने उन ग्वालबालोंको जो मथुरामें रहिगये कुछदिनउपरांत भूषण व वस्त्रादिक देकर बिदाकिया और उनलोगोंने वृन्दावनमेंआन· कर सबचरित्र नंदलालजीका जो उन्होंने कुब्जाआदिकके साथकियाथा व्रजवासियोंसे कहा तब गोपियोंने कुबड़ीकासमाचार सुनतेही सबतियाडाहसे बड़ाशोचकिया व बि· श्वासमाना कि अबनन्दलालजी वृन्दावन नहीं आवेंगे यहबात समझतेही व्रजबाला आपसमें इकट्ठीहोकर एकने दूसरीसेकहा देखो श्यामसुन्दरने त्रिलोकीनाथ होकर ऊंच नीच जातिका कुछ बिचार नहींकिया और कुब्जाको सुन्दररूपदेखकर अपनी रानी बनालिया दूसरीबोली कुब्जाने मोहनप्यारेको ऐसावशमें कियाहै कि बिनाआज्ञा उस की कोई काम नहींकरते अब किसवास्ते वह उनको यहां आनेदेगी अक्रूरने आकर हमारे चित्तचोरसे कुबड़ीका सन्देशाकहाथा इसीवास्ते वे मथुराजाकर बसे हैं दूसरीने एकगोपीसेपूंछा तैंने कुब्जाको देखाहै या नहीं वहबोली मैं दहीबेचने मथुरागईथी तब उसको देखाथा वह मालिनकीबेटी बहुतटेढ़ीथी उसको देखकर सबस्त्री व पुरुष हँसा करते थे सो श्यामसुन्दरने लाज व धर्म्मछोड़कर दासीको अपनी रानीबनाया यहबात सुनकर हमलोगोंको लज्जाआवती है दूसरीबोली हे सखी तुमने यहबात नहींसुनी ॥

चौ० कुब्जा सदा श्यामकी प्यारी । वे भर्त्ता उनकी वह नारी ॥
रूप रत्न कूबड़में राख्यो । ज्यों मोती सीपनसे भाख्यो ॥
व्रजबनिता छांड़ी अब यातें । बूझी सकल श्यामकी बातें ॥

दूसरीनेकहा हे प्यारी वहदिन नंदलालजी को भूलगये जब राजाकंसके डर से भागकर व्रजमें आये व ग्वाल वेषबनाकर यहांछिपेथे व घरघर माखनचुराकरखाया ॥

दो० देव मनावत दिनगये बड़े होनकी आस ।
बड़ेभये तब यह कियो बसे कूबरी पास ॥
सो० यशुमति लाड़लड़ाय बारेते सेवाकरी ।
ताहूको बिसराय भये देवकीपुत्र अब ॥

दूसरीनेकहा जैसे कोयलकाअण्डा कौवा सेवै तो बच्चा उत्पन्नहोकर अपने जाति भाइयोंमें मिलजाताहै वैसे मोहनप्यारे नन्द व यशोदा व हमलोगों की यहदशाकरके बसुदेव व देवकीकेपास चलेगये दूसरीसखीबोली अब वे राजाकेपास सिंहासनपर बैठते हैं

इसलिये उनको ब्रजबासी व मुरलीकानामलेने व मोरपंख देखनेसे लज्जाआवती है ॥

दो० भयो नयो अब राज वह नये मात पितुगेह ।
नईनारि कुब्जा मिली नयेसखा नवनेह ॥
सो० भूले ब्रजकी बात कुब्जकेलि रसरासको ।
भये आपनीघात दिन दिन सुख दूनोभयो ॥

दूसरीनेकहा अब तुमलोग उनकीचर्चा क्याकरतीहो अपनेमनमें बिचारकर देखो तो वह हमारे जातभाईनहीं हैं आगे उनकानाम यहांगोपीनाथ व नंदलाल व कन्हैया व श्रीकृष्णथा सो वहां बासुदेव प्रकटहुआ थोड़ेदिनकेवास्ते उन्होंने ब्रजबासियों से प्रीतिकरके पानीबरसने व आगलगनेसे सबकी रक्षाकी हे राजन् जिसतरह मछली बिना पानी के तलफती है उसीतरह सब ब्रजबाला दिनरात व्याकुलरहकर चर्चा मोहनप्यारे की आपसमें रखके कहतीथीं ॥

दो० देखो नहीं सुहात कछु घर बन बिन नँदनन्द ।
बिरह व्यथा जारत नहीं भयो तपन अतिचन्द ॥
कहँलगि कहिये हे सखी मनमोहन के खेल ।
उन बिन यों गोकुलभयो ज्यों दीपक बिन तेल ॥
सो० रहत नयनजल छाय सुमिरि २ गुण श्यामके ।
कहिये किसे सुनाय भये पराये कान्ह अब ॥

दूसरीगोपीबोली कोईमनुष्य मथुरामें जाकर मोहनप्यारेसे कहता कि सब ब्रजबाला तुम्हारे बिरहसागरमें डूबरही हैंसो तुम जल्दीपहुँचकर उन्हें अथाहजलसे बाहरनिकालो और तुम वृन्दाबनमें फिर आनकर बसो तुमसे गौचरानेवास्ते कोई नहीं कहैगा व तुम्हें माखन व दहीचुरानेसे नहीं बर्जैंगी ॥

दो० मांगतदान न बर्जिहैं अब नहिं करिहैं मान ।
आयदर्श पुनि दीजिये तुम बिन निकसत प्रान ॥
सो० ऐसे कहि गहि पाँय लावैं फेरि मनाय हरि ।
बसैं बहुरि ब्रज आय तब नँदनन्दन सांवरो ॥

दूसरीने कहा अब मोहनप्यारे को क्या प्रयोजन है जो राजसी सुख व बिलास छोड़कर यहां ग्वालकहलावैं व हाथी व घोड़ा व सुखपालकी सवारी तजकर यहां गौ चरावैं दूसरीने कहा हे प्यारियो वह मोहनीमूर्त्ति मुझे एक क्षण नहीं भूलती ॥

दो० सपनेहूं में देखिये नींद पड़त जो नैन।
कीन्हों बहुत उपाय मन आंख खुलत नहिं चैन॥

दूसरीबोली हे सखी श्यामसुन्दर बिना मुझे अपना घर व गांव उजाड़ मालूम होकर वृन्दावनकी कुञ्ज देखनेसे रोनाआताहै व वहांके जो फल अमृतका स्वाद देतेथे वे अब विषसमान मालूमहोते हैं व जिन पक्षियों का शब्दसुनकर मनप्रसन्न होताथा उनका बोलना अब हृदयमें गांसी ऐसा लगता है॥

चौ० जबसे बिछुरे कुँवर कन्हाई। तबसे भये सबै दुखदाई॥

हे राजन् इसीतरह सब ब्रजबाला आठोंपहर बौरहों के समान व्याकुलरहकर जो पथिक उसराहसे जाताथा उसके पांवपकड़कर कहतीथीं हे बटोही श्यामसुंदर हमलोगोंका मनचुराकर मथुरामेंजाके राजाहुयेहैं उनसे यह संदेशा हमाराकहदेना कि जिन ब्रजवालोंकाप्राण तुमने इन्द्रके पानी बरसानेसे गोवर्द्धनपहाड़ उठाकर बचायाथा वे सब उसीतरह तुम्हारेबिरहमें आठोंपहर अपनी आंखोंसे आंसू जलकेसमान बरसातीहैं और जैसे उससमय आंधी बहतीथी वैसे उनका ऊर्ध्वश्वासचलताहै सो फिर वहलोग उसी बिरहसागरमें डूबकर मरजानेचाहतीहैं केवल तुम्हारेमिलनेकी आशापर अबतक जीती हैं सो तुम उनको दीन व अपनी दासी जानकर जल्दी चलेआवो और हम दुखियारियोंको डूबनेसे बचाकर हमारेहृदयकी तपन अपनीअमृतरूपी दृष्टिसे बुझावो जब बिरहसागरमें हमलोग डूबकर मरजावैंगी तो पीछेसे आनकर क्या करोगे॥

दो० एकबार फिरि आनकर दीजै दर्शन श्याम।
तुम बिन ब्रज ऐसो लगत ज्यों दीपक बिन धाम॥

दूसरीसखीने कहा हे बटोहियो तुम्हैं नारायणजी की सौगन्दहै जो ऐसा न कहो और यह भी मोहनप्यारेसे कहदेना कि राधाप्यारी तुम्हारे वियोग में ऐसी दुर्बली व निर्बल होगई है जो उठने व बैठनेकी सामर्थ्य न रहकर पहिचानी नहीं जाती दो चार दिनमें मरजावै तो आश्चर्य नहीं भला पिछली प्रीति समझकर तो उसका प्राण बचाओ॥

दो० सुधिबुधि सब तनकी गई रह्यो बिरहदुखछाय।
मरण निकट पहुँची अभी बेगि खबरि लयोआय॥
सो० ऐसे निज निज हेत कहत सँदेशो श्याम को।
पथिक चलन नहिं देत होत सांझ ताको वहां॥

जब पपीहा वृन्दावनमें बोलताथा तब उसकी बोलीसुनकर वे सब विरहिनी कहती

थीं अरे हमलोग इसीतरह अपने दुःख में व्याकुल हैं तिसपर तू ऐसा शब्द बोलकर क्यों हमारे हृदयकी दवीदवाई अग्नि सुलगाता है ॥

चौ० करत कहा इतनी कठिनाई। हरि बिन बोलत ब्रजमें आई ॥
उपजावत बिरहिनिउरआरत। काहे अगिलोजन्म बिगारत ॥
एक कहत चातक से टेरी। हे पक्षी मैं चेरी तेरी ॥
लेटे होयँ जहां सुखदाई। ऊंची टेर सुनावो जाई ॥

दो० मानैंगे तेरो कहो मेरे हित घनश्याम।
लेहु सुयश चातक बड़ो लैआवो सुखधाम ॥

जिसतरह पपीहा स्वातीके बूंदवास्ते चाहनारखता है उसीतरह सब ब्रजबाला मोहनप्यारेके मिलनेवास्ते व्याकुल रहतीथीं ॥

दो० कोऊ ऐसे कहि उठत ब्रज में बोलत मोर।
रह्यो पड़त नहिं टेरसुनि बिन श्रीनन्दकिशोर ॥

सो० बोलत करत बिहाल मोर सखी बैरी भये।
बसे बिदेश गुपाल यह बन से मारे टरैं ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् इसीतरह सब वृन्दावनबासी श्यामसुन्दर के ध्यान व चर्चामें दिन अपना काटते थे ॥

चौ० धन्यजन्म जो हरिकेदासा। सबबिधिधन्य जिन्हैंहरिआसा ॥

दो० नन्दयशोमति गोपिकन निशिवासर यह ध्यान।
ब्रजबासी प्रभु दर्श को आश लगी रह प्रान ॥

सो० बिसरे सब व्यवहार अवर न दूजी गति कछू।
अन्ध लकुट आधार एक सुरति नँदनन्दकी ॥

हे राजन् मुझे ऐसीसामर्थ्य नहीं है जो ब्रजबासियोंके बिरहका सबहाल बर्णनकरसकूं इसलिये अब मथुराकी बात कहताहूं सुनो जब श्याम व बलराम नन्दजी आदिक को बिदाकरके अपने घरपरआये तब बसुदेव व देवकी ने दोनों भाइयों को देखकर ऐसा सुखपाया जैसे कोई तपकरनेवाला अपना मनोरथपाकर प्रसन्नहोताहै व मथुरापुरी में उसी दिनसे मंगलाचार होनेलगे और बसुदेवजी ने देवकी से कहा श्याम व बलराम अहीरों की संगति में रहने से अपनेजाति व कुलका व्यवहार नहीं जानते सो इनका

यज्ञोपवीतआदि करनाचाहिये देवकी बोली बहुतअच्छा जब बसुदेव ने गर्गपुरोहित व अपनेजाति भाइयोंको बुलाकर सब हालकहा तब गर्गजी बोले इनको गायत्री मंत्रदेकर क्षत्रिय बनाना चाहिये ॥

दो० याते इनको प्रीतिकरि दीजै यज्ञपवीत ।
जाते सीखैं सकलबिधि जो यदुकुलकी रीत ॥

यहबचनसुनतेही बसुदेवजी ने इष्टमित्र व यदुबंशियों को नेवताभिजकर अपनेयहां बुलाया व सबतीर्थोंकाजल मँगाकर श्याम व बलरामको स्नानकराया व शास्त्रानुसार दोनोंभाइयों को यज्ञोपवीत पहिनाकर पुरोहितने गायत्रीमंत्र उपदेशकिया तब बसुदेव जी ने बहुतसी गौ बिधिपूर्वक सोना व रत्नादिक ब्राह्मणों को दान दिया और अपने जातिभाई व ब्राह्मणों को छत्तीसव्यंजन खिलाकर सन्मानपूर्वक बिदा किया और जो मंगलामुखी व कंगाललोग वहांआये थे सबको मुँहमांगा द्रव्यदेकर धर्नीपात्र बनादिया उससमय देवतों ने आकाश से राम व कृष्णपर फूलबरसाये व स्त्रियों ने मंगलाचार गीतगाया व बैकुण्ठनाथ की इच्छा व दयासे मथुरामें लक्ष्मीका बासहोकर सब छोटे व बड़े धनवान् होगये ॥

सो० अन्त न पावैं शेश वेद श्वास जाकी सकल ।
ताहि दियो उपदेश गायत्री गुरु गर्गमुनि ॥

हे राजन् बसुदेवजी ने श्याम व बलरामका जनेऊ करने उपरांत दोनों भाइयों को रथपर बैठाकर सांदीपन पण्डित सम्पूर्ण विद्यानिधानके पास जो काशीपुरी अपने देश से उज्जैनमें जाबसेथे विद्यापढ़नेवास्ते भेजदिया राहमें केशवमूर्त्तिने सुदामाब्राह्मणको देखकरपूंछा तुम कहांजातेहो उसनेकहा विद्यापढ़ने जाताहूं तब मुरलीमनोहरने उसको भी रथपर बैठालिया व उज्जैनमें सान्दीपनपण्डित के पास जापहुँचे और हाथजोड़कर उनसे विनय किया ॥

चौ० हम पर कृपा करो मुनिराय । विद्या दान देहु मनलाय ॥

जब दोनों भाइयोंने इसतरह आधीन होकर गुरूसे कहा तब पण्डितजी बड़ीकृपा व दया से श्याम व बलरामको अपने घरमें रखकर विद्यापढ़ानेलगे एकदिन पण्डिता-इनने श्यामसुन्दर व सुदामाको चना कलेवादेकर लकड़ी तोड़नेवास्ते बनमें भेजा सो श्रीकृष्णजी के हिस्से का कलेवा भी सुदामा अपने पास बांधेथा जब वे दोनों बनसे लकड़ी का बोझालेकर आवनेलगे तब आंधीचलकर ऐसा पानीबरसा कि घरतक नहीं पहुँचकर रातको बनमें रहगये जब सुदामाको बहुत भूखमालूमहुई तब उसने श्याम-सुन्दर का कलेवा भी उन्हें न देकर आप खालिया व चनाखाती समय कुट्टर २ शब्द

सुनकर केशवमूर्त्तिने सुदामासे पूछा हे भाई तुम क्या खातेहो हमैं भी देव तो अपनी भूख मिटावें सुदामाने लालचकी राह परब्रह्म परमेश्वर से झूठकहा कि मैं कुछ नहीं खाता मारेशरदी के हमारादांत बोलता है इसी झूठबोलने के पापसे सुदामा महादरिद्री हुआथा व श्याम बलरामने अपनी सेवासे गुरूको ऐसा प्रसन्न किया कि चौंसठ दिन में चारोंवेद व छःशास्त्र व अठारह पुराण व राजनीति व मंत्र व यंत्र व तंत्र व ज्योतिष व वैद्यक व कोक व बाणविद्या आदिक सबगुण दोनों भाइयों को याद होगये तब सांदीपनगुरूने मनमेंकहा मनुष्य वर्षदिनमें भी एक विद्या नहीं पढ़नेसक्ता सो ये दोनों बालक कोई अवतार मालूमहोते हैं दोमहीने चारदिन में चौदहोंविद्या व चौंसठ कला पढ़लिया इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो जिस परब्रह्म परमेश्वरके श्वास से चारोंवेद उत्पन्नहुये उन्होंने सब विद्या तीनोंलोकके मालिक होकर गुरू से पढ़ीथी उनकी लीला व महिमा कोई नहीं जाननेसक्ता जब विद्यापढ़ने उपरांत केशव-मूर्त्ति ने गुरूसे हाथ जोड़कर विनयकिया कि आपकी दयासे मैं सब विद्या पढ़कर अपने मनोरथ को पहुँचकर हम अनेकजन्म अवतार लेकर तुम्हारी सेवाकरैं तो भी विद्या पढ़ानेके बदले से उऋण नहीं होसक्ते हमारी समाईदेखकर जो कुछ आज्ञाकी-जिये वह गुरुदक्षिणा तुम्हारी भेंटकरैं व आपका आशीर्वाद लेकर अपने घरजावैं जिस में विद्यापढ़ने का फल हमैं मिलै यहबचन सुनकर सान्दीपन गुरूने कहा मुझे तो कुछ इच्छा नहीं है पर तुम्हारी गुरुआइनसे पूछें उसे जो चाहनाहो वह बस्तु तुमसे मांगै ऐसा कहकर सान्दीपन अपनी स्त्रीके पास जाकर बोले ये राम व कृष्ण दोनों बालक जिन्होंने चौंसठ दिनमें सब विद्या मुझसे पढ़लिया परमेश्वर का अवतार मालूम होते हैं इनसे जो गुरुदक्षिणा मांगीजावे इनको देना सहजहै तब पण्डिताइन ने हाथजोड़कर कहा हे स्वामी ये बालक नारायणके अवतारहैं तो मेराबेटा जो समुद्र में डूबगया है उसको लादेवें जिसके शोचसे मैं सदा दुःखी रहतीहूं यही गुरुदक्षिणा उनसे मांगो ॥

दो० सम्पति तो तबहीं भली जो सुतहो घरमाहिं ।
सम्पति ले क्या कीजिये जो घरमें सुत नाहिं ॥

जब सान्दीपनको भी यह बात भली मालूमहुई तब स्त्री पुरुष दोनों मनुष्यों ने श्याम व बलरामके पास जाकर कहा हे बैकुण्ठनाथ हमारे एक पुत्रके सिवाय दूसरा पुत्र नहींथा सो एकपर्व में साथ लेकर समुद्र किनारे स्नान करने गये थे जब हम लोग जलमें पैठकर नहाने लगे तब वह बालक समुद्र में डूबगया तभी से एकक्षण उसका शोच नहीं भूलता जो तुम हमारी इच्छापूर्वक गुरुदक्षिणा दियाचाहते हो तो वही बेटा हमारा लादेव यह बचन सुनतेही श्यामसुन्दर लादेना उस बालकका अंगी·

कार करके उसीसमय दोनों भाई रथपर चढ़े व सांदीपन व पण्डिताइनको दण्डवत् करके जब एक क्षणमें क्रोधसे भरेहुये समुद्र किनारे पहुँचे तब समुद्र मनुष्यका रूप धरकर डरता व कांपता पानी से बाहर निकला व बहुतसी मणि व रत्नादिक श्याम-सुन्दरको भेंट देकर दण्डवत्करके बिनयकिया हे परब्रह्मपरमेश्वर उत्पन्न करनेवाले चौदहोंभुवनके मेरी दण्डवत् आपको पहुँचे गंगाजी तुम्हारे चरणका धोवन होकर तीनोंलोकको कृतार्थकरती हैं व तुम अपनीदया व कृपासे नित्य राजाबलिके द्वारे पर बने रहकर पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते सगुण अवतारधारण करतेहो व आप शेषनागकी छातीपर सदा शयनकरके सब गुण विद्या जानतेहो व शेष-नाग दोहजार जिह्वासे दिन रात तुम्हारी स्तुति करते हैं तिसपरभी आपका आदि व अन्त नहीं जानते और गरुड़जी आपके बाहनहैं ज्ञानी व ऋषीश्वर व वेदभी तुम्हारी महिमा व भेदको नहीं पहुँचसक्ते मेरी क्या सामर्थ्य है जो आपकी स्तुति करसकूं मेरे बड़े भाग्यहैं जो तुमने दयालुहोकर दर्शन अपना दिया व तुम्हारे चरण देखने से मैं कृतार्थ हुआ ॥

दो० आज्ञाहो सो कीजिये मन चितदे वह काज।
सब दासनको दासहौं तुम राजनके राज ॥

यह स्तुति सुनतेही केशवमूर्त्तिने प्रसन्नहोकर समुद्रसेकहा कि सान्दीपन हमारे गुरू अपने कुटुम्बसमेत यहां स्नानकरने आये थे सो तू अपनी लहरसे उनका बेटा बहा लेगयाहै जल्दीलादे गुरूकी आज्ञासे मैं उसे लेने आयाहूँ समुद्र हाथ जोड़कर बोला हे महा प्रभु अन्तर्य्यामी वह बालक मेरेपास नहीं है परन्तु पांचजन्य नाम दैत्य बड़ाबलवान् शङ्खरूपसे पानीमें रहकर सब जीवोंको बहुत दुःख देताहै वह उस बालकको नहाती समय उठा लेगयाहो तो मैं नहीं जानता यह बचन सुनतेही श्रीकृष्णजी बलरामसमेत पानीमें कूदपड़े जब शङ्खासुरके मारनेपर भी उस बालकका पता नहीं पाया तब पछताकर बलरामजी से कहा अयभाई हमने वृथा इसदैत्यको मारा व उस बालकका ठिकाना नहीं लगा यह बात सुनकर बलरामजी बोले हे दीनानाथ यह चिन्ता छोड़ कर इसदैत्यका उद्धार कर दीजिये तब केशवमूर्त्तिने उसे मुक्तिदेकर शेषरूपी तनु उसका अपने बजाने वास्ते उठालिया व उसीसमय यमपुरी के द्वारेपर जाकर वह शङ्ख बजाया जैसे वह शब्द नरकबासियों ने सुना वैसे वे लोग नरकसे निकल कर बैकुण्ठको चले गये धर्मराज दौड़ेहुये बाहर आनकर हरिचरणों पर गिरपड़े व बड़े आदरसे श्याम व बलरामको अपने घर लेजाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व विधिपूर्व्वक पूजा उनकीकी व सुगन्ध फूलोंके गजरा व मोती व रत्नादिककी माला दोनों भाइयों को पहिनाया और परिक्रमा लेकर उन्हें

चवँर हिलाने लगा व बड़े प्रेमसे हाथ जोड़कर इसतरह स्तुति श्यामसुन्दरकी की हे परब्रह्म परमेश्वर आप सदा हँसते व आनन्दमूर्त्ति रहते हैं तुम्हें कभी कुछ चिन्ता नहीं व्यापती व लक्ष्मीजी आठों पहर तुम्हारी सेवामें बनी रहकर आप हरिभक्तोंकी सब इच्छा पूर्णकरते हैं व बैकुण्ठ तुम्हारा देवलोकसे ऊँचाहोकर आपने मुझ ऐसे बहुत अधर्मियों को मुक्ति दियाहै व तुम्हारी नाभिसे कमलका फूल निकल कर उससे ब्रह्मा उत्पन्न हुये व आपकी दयासे ब्रह्माने तीनोंलोककी रचनाकी पर तुम्हारे भेद व आदि व अन्तका हाल वेभी नहीं जानसक्ते व तुमने सब जीवों के उत्पन्न व पालन करनेवाले होकर अपनी इच्छासे अपना बालकरूप प्रकट कियाहै सो मेरी दण्डवत् आपको पहुँचै जहां शेष व महेश व गणेश तुम्हारी स्तुति नहीं करने सक्ते वहां मुझे क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारा गुण बर्णन करनेसकूं जिसतरह पिछले जन्मके पुण्य उदय होनेसे आपने दयालुहोकर मुझको दर्शनदिया उसीतरह अपने आवनेका कारण बर्णन कीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले मेरे गुरूका बेटा जो समुद्र में डूबकर मरगयाहै उसे फेर देना चाहिये कदाचित् तुम ऐसा कहो कि मराहुआ जीव यमपुरी से फिरकर नहीं जाता सो यह मर्य्यादभी मैंने बांधाथा इसलिये तुझे मेरी आज्ञा पालना चाहिये यह बचन सुनतेही धर्म्मराज ने सान्दीपनका पुत्र वहां लाकर बिनय किया हे दीनानाथ मुझे पहिले से मालूमथा कि आप गुरुपुत्र लेनेवास्ते आवैंगे इसलिये इसबालकको हमने आजतक बड़े यत्नसे रखकर दूसरे तनमें जन्म नहींदिया यह बचन सुनतेही मुरलीमनोहर धर्म्मराजको भक्ति बरदान देकर बलरामजी व उस बालकसमेत वहांसे अन्तर्द्धान होगये व गुरूके पास वह बालक लाकर बोले आपने बड़ी दयाकरके हमैं विद्या पढ़ाया व हमसे कुछ सेवा नहीं बनपड़ी और जो कुछ आज्ञा कीजिये सो करैं सान्दीपन अपना बेटा देखतेही श्यामसुन्दरको परब्रह्म अवतार समझकर बहुत स्तुतिकरके बोले हे त्रिलोकीनाथ जिस किसीके तुम्हारे ऐसा चेलाहो उसे कौनइच्छा बाकीरहैगी पर मैं प्रसन्नहोकर तुम्हें यह आशीर्बाद देताहूँ कि विद्या तुम्हारी सदा नई बनी रहकर संसारमें यश तुम्हारा छायारहै जब सान्दीपन व पण्डिताइनने श्याम व बलरामको आनन्दपूर्व्वक बिदाकिया दोनों भाई उन्हें दण्डवत्करके मथुराको आये उनके आनेका समाचार पातेही बसुदेव व राजाउग्रसेन यदुबंशियों समेत आगे से होकर गाते व बजाते सन्मानपूर्व्वक उन्हें राजमन्दिर पर लेगये व सब छोटे बड़ोंने मङ्गलाचार मनाया ॥

दो० गुरुकी आज्ञा पायकै माखनप्रभु ब्रजचन्द ।
आये मथुरानगरमें सबके आनँदकन्द ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् देखो गुरुकेवास्ते श्रीकृष्णजी बैकु-

०ठनाथहोकर यमपुरी में चलेगयेथे गुरुकी इतनीबड़ी पदवी समझना चाहिये संसार में तीनतरहके गुरुहोते हैं एक जो मंत्र उपदेशकरै दूसरा जो विद्यापढ़ावै तीसरा जो धर्मकीबात सिखलावै इनतीनोंको ईश्वर समान मानकर उनकी सेवाकरनाउचितहै ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का उद्धवको गोपियोंके ज्ञान सिखलानेके वास्ते भेजना ॥

शुकदेवजीने कहा हे राजन् जिसतरह श्यामसुन्दरने नन्द व यशोदा व ब्रजवालों को ज्ञान सिखलानेवास्ते उद्धवको भेजाथा वहकथा कहते हैं सुनो जब कभी मुरलीमनोहर नन्द व यशोदा व श्यामा आदिक गोपियोंकी बातें उद्धवसे कहते थे तबवह अपनेज्ञानके अभिमानसे मित्रताकीराह उनका ठट्ठाकरतेथे इसवास्ते गर्वप्रहारी भगवान्ने एकदिन रासलीला आदिक ब्रजबासियों की चर्चा छोड़कर बलरामजीसे कहा अयभाई मैंने अपने बचनप्रमाण कोईमनुष्य वृन्दावन में नहीं भेजा इसलिये वहलोग मेरेवास्ते चिन्ताकरते होंगे सो किसीको भेजकर उन्हें धैर्यदेना चाहिये ॥

चौ० कहांनवल ब्रजगोपकुमारी। कहँ राधा वृषभानु दुलारी ॥

दो० कहां यशोदा नन्द से सुखद तात औ मात।
कहँवहसुखब्रजधामको नहिं बिसरतदिनरात ॥

सो० कहां सखनकोसंग कहांखेल वृन्दाबिपिन।
कहँवह प्रेमतरंग बंशीवट यमुना निकट ॥

जब बलभद्रजीको यहबात भली मालूमहुई तब केशवमूर्तिने मनमें विचारा कि उद्धवको अपने ज्ञानका बड़ाअभिमान रहताहै इसलिये गोपियों को ज्ञान सिखलाने वास्ते उसको भेजकरदेखैं कि ब्रजबालों को मेरीप्रीतिके सामने ज्ञान प्रवेशकरताहै या नहीं व उद्धवका अभिमान भी वहांजानेसे टूटजावेगा ॥

दो० ऐसे हरि बैठेकरत अपने मन अनुमान।
उद्धवके मनसे करौं दूर ज्ञान अभिमान ॥

सो० आयगये तिहिकाल उद्धवजी हरिकेनिकट।
बिहँसिमिले नँदलाल सखासखाकहिअंकभरि ॥

उसीसमय श्यामसुन्दरने उद्धवसे प्रेमपूर्वककहा हे मित्र जबसे मैंने श्यामा आदिक ब्रजबालोंकेसाथ रासलीला कियाथा उससमय महादेव आदिक देवतोंको ऐसाकामदेवने सताया कि शिवजी गोपेश्वर व चन्द्रमा चन्द्रकलारूप स्त्रीहोकर मेरेसाथ रास-

मण्डल खेलनेआये थे व उसीतरह अनेक देवतोंने स्त्रीका तनुधरकर वहां सुखउठाया था सो नन्द यशोदा व राधाआदिक सबव्रजबाला मेरेबिरह में बड़ादुःख पाते हैं व हम उनसे कहआये थे कि वृन्दाबन में फिर आवैंगे उसी आशापर उनका प्राण आज तक बचाहै ॥

दो० वे सब मेरे विरहमैं अतिहैं महामलीन ।
कल न परत क्षण रैनदिन जैसे जलबिनमीन ॥

सो हे मित्र मेरामन भी उनकी सच्चीप्रीति देखकर यहां नहींलगता और ब्रजका सुख एकक्षण भी नहीं भूलता इसलिये तुमको बड़ाज्ञानी व शांत स्वभाव व अपना परममित्र जानकर वृन्दावनमें भेजाचाहताहूं सो तुम वहां जाकर नन्द व यशोदा व गोपियों को ऐसाज्ञान समझावो कि जिसमें वहलोग मेरे बियोगका शोच छोड़कर धैर्यधरैं व रोहिणीमाताको अपनेसाथ लेआओ यहसुनकर उद्धवने मोहनप्यारे को समझाया हे दीनानाथ संसारी झूठीप्रीति स्वप्नवत् समझकर परमेश्वर अविनाशी पुरुषका ध्यानकरना उचितहै यह ज्ञानभरीहुईबात सुनतेही मुरलीमनोहर हँसकरबोले हे उद्धव जो बात तुमने कही सो सच्चहै पर क्याकरूं गोपियां मेरे बिरहमें बड़ादुःख पाती हैं सो तुम ऐसाज्ञान उनको उपदेश करना जिसमें कन्तभाव छोड़कर परमेश्वरसमान मेराभजनकरें व पहिले नन्द यशोदाको इसतरह समझाना कि वह मुझे पुत्रभाव तज कर ईश्वरसमान समझैं ॥

दो० यकप्रवीण अरु सखामम तुमसों ज्ञानी कौन ।
सो कीजै जो ब्रजबधू साधन सीखैं मौन ॥
सो० ज्यों सुखपावैं नारि ज्ञानयोग उपदेशसे ।
डारैं मोहिं बिसारि ब्रह्मअलख परचोकरैं ॥

यह वचन सुनकर उद्धवने विनयकिया बहुतअच्छा मैं तुम्हारी आज्ञानुसार वहां जाकर सबको ज्ञानसमझाऊंगा पर वह लोग मेरे कहनेसे न मानैं तो लाचारहूं यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले ॥

दो० बचनकहतही समझिहैं वहहैं परमप्रबीन ।
ह्वैहैं शीतल बिरहसे ज्यों जलपाये मीन ॥

ऐसाकहकर श्याम व बलरामने अनेकतरहका भूषण व बस्त्र नन्द व यशोदा व ग्वालबाल व राधाआदिक ब्रजबालों के देनेवास्ते उद्धवको दिया और एकचिट्ठी में बड़ोंको दण्डवत् व छोटोंको अशीष व ब्रजबालों को योग व ज्ञान लिखा और वह

चिट्ठी उद्धवको देकरबोले तुम आपपढ़कर इसकाहाल सबको सुनादेना व जैसे बनि-पड़े उन्हें धैर्य्यदेकर जल्दी चलेआना ॥

दो० उद्धव ब्रजमें जायकै बिलमि न रहियो जाय ।
तुमबिन हमअकुलाहिंगे श्याम करत चतुराय ॥

सो० तुमहौ सखाप्रबीन बार बार सिखवोंकहा ।
जियेज्यों जलबिनमीन सोईमतो बिचारियो ॥

फिर गोपीनाथने अपने पहिरनेका भूषण व वस्त्र उद्धवको पहिनाकर रथपर बैठा-यकै वृन्दावनको बिदाकिया व चलतेसमय आंखोंमें आंसूभरकर बोले हे उद्धव तुम इतना सन्देशा और यशोदामाता से कहदेना ॥

चौ० नीकीरहो यशामतिमैया । कछुदिनमें अइहैं दोउ भैया ॥

दो० कहाकहौं जादिवससे जननी बिछुरेउँ तोहिं ।
तादिनसे कोऊनहीं कहत कन्हैया मोहिं ॥

सो० कहो संदेश न जात अतिदुखपायो मातुतुम ।
अबमोको निजतात बासुदेव देवकिकहत ॥

क० कामरीलकुटमोहिं भूलत न एकोपल घुंघुचीन बिसारैं जोपै लालउरधारे हैं । जादिनतेछाकैं छूटगईं ग्वालनकी तादिनते भोजन न पावत सकारे हैं ॥ भनै यदुबंश यह नेह नन्दवंश सों बंशी न बिसारै जोपै बंस बिस्तारेहैं । उद्धवब्रजजाइयो मेरोलाइयो चौगानगेंद मैयातेकहियो हमऋणियां तुम्हारे हैं १ कौनाबिधि पावै यहकर्म बलवान उदय छाछ छछुआकी ब्रजभामिनिको भात हैं। मुक्तहू पदारथ सो देचुके बाकी को अबदे जननीकोकहा याते पछितातहैं ॥ बिधिने बनाई आह कौन बिधि मेटैताह ऐसेकरि शोचतरहत दिनरातहैं । उद्धवब्रजजैयो मेरीमैयासे बुझाइकहियो जापैऋणबाढ़ै सो बिदेश उठिजातहैं २ ॥

व बलभद्रजी रोकर बोले अयउद्धव मेरी ओरसे नन्द व यशोदासे हाथजोड़कर कहदेना ब्रजकासुख हमैं कभी नहीं भूलता इसलिये वहांआनकर तुमसे भेंटकरूंगा

हम दोनों भाइयोंको अपना पुत्रजानकर कभी मतभूलना और जब बसुदेवजीने उद्धवके जानेकाहाल सुना तब बहुतसी सौगात नन्द व यशोदाकेवास्ते देकर ऐसी चिट्ठी लिखदी कि तुमने हमारे बेटोंको जो पालनकियाहै इसउपकारके बदलेसे मैं अनेकजन्म नहीं उऋणहोनेसक्ता तुमश्याम व बलरामकेवास्ते वहां क्योंचिन्ताकरतेहो यहांआनकर देख नहींजाते जिससमय उद्धवजी मथुरासे वृन्दाबनको चले उसीसमय ब्रजबालोंने अन्तःकरणकी शुद्धतासे मालूमकिया कि आज मोहनप्यारेका संदेशालेकर कोईआदमी आवताहै या वह आवैंगे ऐसा बिचारतेही एकगोपी अपने आंगनमें कौवा बोलताहुआ देखकर कहनेलगी ॥

दो० जो हरि गोकुल आवहीं तो तू उड़ रे काग ।
दूध दही तोहिं देहिंगे अरु अंचलकी पाग ॥

दूसरी गोपीनेकहा आजमुझे बाईआंख फड़कनेसे मालूमहोताहै कि मोहनप्यारे चित्तचोर यहां आयाचाहते हैं सो तुमलोग शोच अपनाछोड़कर हर्षमनाओ मोहनप्यारे का चन्द्रमुख देखकर अपनी २ आंखैं ठंढीकरना ॥

दो० घरघर शकुन बिचारहीं ब्रजतिरिया बड़भाग ।
ब्रजबासी प्रभुदर्श को सबकेमन अनुराग ॥

हे राजन् सन्ध्यासमय उद्धव ने वृन्दाबनमें पहुँचकर क्यादेखा कि घने २ वृक्षोंपर अनेकतरहके पक्षी सोहावनी बोलीबोलकर धवरी धूमरी काली पीली गायें चारोंतरफ़ घूमरही हैं ॥

दो० वृन्दाबन शोभितमहा यमुनाजल चहुँओर ।
द्रुमबेली प्रफुलित सदा बोलत कोकिल मोर ॥

सच्चहै जिसस्थानपर वैकुण्ठनाथने आपबिहार कियाहो वहांक्योंनहींऐसीशोभारहै अबतकभी वहस्थानदेखनेसे चित्तमोहिजाताहै उद्धवने उसबनकोस्थानलीलाकरने श्यामसुन्दरकासमझकर दण्डवत्‌किया जबवहसबआनन्ददेखतेहुये उद्धव गाँवकेनिकट पहुँचे तबनन्दराय आदिक दूरसे रथ व भेषश्यामसुन्दरका देखतेही उनको मुरलीमनोहर समझकर मिलनेवास्ते दौड़े व केशवमूर्त्तिको न देखकर मनमें उदासहोगये पर उद्धवको भेजाहुआ मोहनप्यारेका जानकर बड़ेआदरभावसे अपने घर लिवालाये व पाँव उनकाधोकर छत्तीस ब्यञ्जनखिलवाये व पानइलायची देकर उत्तमशय्या उनके आरामकरनेवास्ते बिछादी जबउद्धव थोड़ीदेरतक सोकर उठे तब नन्द व यशोदाने बसुदेव व देवकी व श्याम व बलरामकी कुशल उनसे पूंछकर बोले ॥

दो० नंदगोप करजोरिकै पूंछत शीश नवाय ।
माखनप्रभु गोपालकी कहो कथा समुझाय ॥
करतहमारी सुधिकभी कहु उद्धवबलबीर ।
पुलकगात गद्गद वचन पूंछत नंद अधीर ॥
सो० चूकपड़ी अनजान कह पछताने आजुकै ।
घरआये भगवान जाने हमन अहीरकर ॥

अथउद्धव वसुदेव व देवकीकाभाग्य बड़ावलवान् है जो श्याम व बलराम उनके बेटेबनकर हमैं विरानासमझतेहैं बहुतअच्छाहुआ जोकंसअधर्मी अपने भाइयोंसमेत मारागया व वसुदेव व देवकीने कैदसेछुट्टीपाई भला यहतोबतलाओ कि कभी राम व कृष्ण मुझे व यशोदाको यादकरतेहैं या नहीं जिसदिनसे मोहनप्यारे ने मुझेबिदाकर दिया तबसेमेरा खाना व पहिरना व हँसना व बोलना सबसुखजातारहा व उसीदिन से यशोदादिनरात उन्हींकेचर्चा व ध्यानमेंरहकर माखन व रोटीलियेहुई उनकीआशा देखा करती है ॥

दो० जेहिबिधि तब खेलतहते ग्वालबालके साथ ।
सोकबहूँ सुधिकरतहैं माखनप्रभु व्रजनाथ ॥

हे उद्धव मैं नित्यइच्छा करताहूं कि मथुराजाकर उन्हैं देखआऊं पर क्याकरूं संसारीकामसे छुट्टीनहींमिलती जबवनमेंजाकर मोहनीमूर्त्तिकेचरणका चिह्न पृथ्वी पर देखताहूं तबमुझे यहसन्देहहोताहै कि वहकहीं कुंजों में भूलगये हैं जब ढूंढ़तेसमय उन को नहीं पाता तब हारमानकर घरचलाआताहूं व उनकी मुरली व लकुटिया देखकर जो दशा मेरीहोती है वहहाल वर्णननहींकरसक्ता व मदनमोहनने मुझसे फिर वृन्दावन आनेका करारकियाथा सो बतलाओ यहांआवैंगे या नहीं देखैं हमाराभाग्य उदयहोकर कब उनकादर्शन मिलताहै हे उद्धव मैं श्यामसुन्दरको अपनापुत्र जानताथा और वह मुझे पिताकहते थे पर उन्होंने बड़े २ आपद्कालमें ब्रजवासियों की रक्षाकी ॥

दो० सहस नयन दुखमानिकै कोपकियो जेहिकाल ।
हमकारण गिरि नखधस्यो माखनप्रभु गोपाल ॥

हे उद्धव उन्हों ने लड़कपन में पूतना राक्षसी व बत्सासुर आदिक बड़े २ राक्षसों को मारकर कालीनागको यमुनाजल से निकालदिया व गोपियोंकागोरस चुराकर उन के साथ रासलीलाकी व अनेकबालचरित्र अपना हमलोगोंको दिखलाकर बड़ासुखदिया बतलाओ कभी इनबातोंकी चर्चा वसुदेव व देवकीसे करते हैं या नहीं ॥

दो० उद्धव तुमसे क्याकहौं मनमोहन की बात ।
जो लीला ब्रजमें करी सो बरणी नहिं जात ॥

हे उद्धव मैं गर्गमुनिके कहने से जानताहूं कि वह परब्रह्म परमेश्वर हैं व पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते अपनीइच्छासे उन्होंने अवतार लिया है ॥

दो० याते यह निश्चय कियो हम अपने मनमाहिं ।
आदि पुरुष भगवान हैं पुत्र हमारे नाहिं ॥

व यशोदारोकर उद्धव से बोली ॥

चौ० कुशल हमारे सुतकी कहौ । जिनके साथ सदा तुम रहौ ॥
कबहूँ वहसुधि करत हमारी । उनबिन हमदुख पावतभारी ॥
सबहिंनसे आवन कहिगये । बीती अवधि बहुत दिनभये ॥

हे उद्धव जिनआदिज्योति नारायणजीका दर्शन ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता वहहमारेघरआये और हमनेअपने अज्ञानसे उनको पुत्रजाना ॥

चौ० फाटत नहीं बज्रकी छाती । अबयहसमुझिहृदयपछुताती॥
वैसो भाग्य कभी अबपैहौं । फेरि श्यामको गोदखिलैहौं ॥

दो० ग्वालसखा संगजोड़ अब गौवैं को लेजाय ।
को आवै सन्ध्या समय बनते गऊ चराय ॥

हे उद्धव अबमैं अपनेअंचलसे किसकीधूरझाड़कर छातीमें लगाऊं व किसकामुख चूमकरबलैयालेऊं क्षणभरवहसांवलीमूर्त्ति मुझेनहींभूलती कैसेधीर्य्यधरौं भलातुमसच कहो मनहरणप्यारे वहांकिसतरह सीधेरहते हैं यहांतो ब्रजवालोंकेसाथ अनेक उपाधि कियाकरतेथे वहांकिसकेसाथ खेलतेहोंगे मुझेतो उनके बिनादेखे एकक्षण युगसमानबीतताहै वहइतनेदिन मेरेबिनाक्योंकर वहांरहे व मैं गोवर्द्धनपहाड़आदिक उनकेलीला स्थान देखकरसमझतीहूं कि अभीआयाचाहते हैं सो बतलावो कबतकयहांआवैंगे जब इसीतरह नन्द व यशोदा अनेक बातेंकहकर मोहनप्यारेके बिरहमें रोते २ व्याकुल होगये तब उद्धव उन्हेंधीर्य्य देनेवास्ते बोले तुमलोग उदासमतहो पीछेसे श्यामसुन्दर भीआते हैं जबयहबचनसुनतेही वहदोनों प्रसन्नहोगये तबउद्धवने मुरलीमनोहर व बसुदेवजीकी सौगातभेजीहुई उनकेसामने रखकर चिट्ठीपढ़के सुनादी ॥

दो० नन्द गोप तलफैं महा माखन प्रभुके हेत ।
बुद्धिमान उद्धव तिन्हैं या बिधि उत्तर देत ॥

हे नन्दराय जिनकेघर आदिपुरुष भगवान् ने आनकरबाललीलाका सुखदिखलाया उनकीस्तुति कौनबर्णनकरसक्ताहै सो तुमबड़ेभाग्यवान हो जो आठोंपहर तुम्हें याद व प्रीति वैकुंठनाथकी बनीरहतीहै इसलिये वहभी एकक्षण तुमसे बिलगनहीं होते सो मैं तुमको जीवन्मुक्तसमझताहूं ॥

दो० माखन प्रभुको रैन दिन ध्यान धरै जो कोय।
प्रभुता तीनोंलोककी ताको प्रापत होय॥

यशोदा बड़ेप्रेमसे वहचिट्ठी शिर व आंखों में लगाकररोतीहुई बोली हे उद्धवयहज्ञान भरीहुईबातैं छोड़सचबतलाओ मोहनप्यारे यहांकबआवैंगे भला मुझको अपनी माय समझकर एकबार फिर दर्शनदेजाते तो उनका बड़ाउपकारमानती ॥

दो० उद्धव यद्यपि हमैंसब समुझावत ब्रजलोग।
उठत शूल तद्यपि निरखि माखन प्रभु सुखयोग॥

हे उद्धव मैं नित्यप्रातस्समय माखनरोटी अपनेकन्हैया को खिलातीथी वहांयहहाल जाने बिनाकौन उसे सबेरेभोजनदेताहोगा और वहलज्जावश किसीसे न मांगकर भूखे रहतेहोंगे इसबातकी चिन्तामुझे अधिक लगीरहतीहै कि वहखाने बिनादुःखपाकर दुबला होगया होगा यहबातसुनकर उद्धवने कहा तुमलोग श्यामसुन्दरको आदिपुरुषजानकर मेरीबातका बिश्वासमानो जिसतरह आगलकड़ीमें छिपीरहकर दिखलाई नहींदेती उसी तरह उननिर्गुणरूपका प्रकाशसबके तनमेंहोकर वह जगदात्मा सबजगह बनेरहते हैं पर ज्ञानप्राप्तहुये बिना दिखलाई नहींदेते इसलिये तुमलोगभी उन्हें आठोंपहर अपने निकट जानकर उनकेवास्ते चिन्तामतिकरो वहकेवल अपनेभक्तोंको सुखदेने व पृथ्वी काभार उतारनेकेकारण सगुणअवतारलेकर संसारी मनुष्योंको धर्मकारास्ता दिखलाने वास्ते लीलाकरते हैं जैसे भृंगीकीटको देखकर दूसराकीड़ा उसीके रंगहोजाताहै वैसे प्रीतिपूर्वक परमेश्वर से ध्यानलगानेवाले उन्हींकारूपहोजाते हैं सो तुमलोगभी उनकोघट २ व्यापक एकसासमझकर अपने अन्तःकरणमें उनकाध्यानलगाओ तो उन्हींके समान तुम्हारास्वरूपभी होजायगा और वह किसीके पुत्र न होकर कोई माता व पिता उनका नहीं है तुम्हारे पिछलेजन्मका पुण्यसहाय हुआ जो उनके साथ इतनीप्रीति रखतेहो ॥

दो० पहिले ब्रह्मा भेषधरि सिरजत सब संसार।
विष्णुरूप से पालकर शिवह्वै करत सँहार॥

इसलिये तुम जितनेस्त्री व पुरुष पिता व पुत्रआदि संसार में देखते हो सबमेंउन्हीं का प्रकाशसमझो ॥

दो० मतिजानो सुतकरि तिन्हैं वह सबके करतार।

तातमात तिनके नहीं भक्तन हित अवतार ॥
सो० हम सब हैं अज्ञान प्रभु महिमा जानैं नहीं ।
वहप्रभु पुरुष पुराण जन्ममरण से हैं रहित ॥

हे नन्द व यशोदा तुममोहनप्यारे अन्तर्यामीको ईश्वरजानकर भजोतो वह अपना दर्शन ध्यानमें देकर तुम्हारादुःख छुड़ादेवैंगे यहबचन सुनकर यशोदा बोली उद्धव मैं अपने मनकोबहुत समझातीहूं पर चित्तमेरानहीं मानता ॥

दो० नन्द यशोदा गोपसों माखन प्रभुकी बात ।
ऐसी विधि उद्धव कहत बीती सगरी रात ॥

जब चारघड़ी रातरही तब उद्धव नन्दरायसे पूछकर यमुनास्नान करने गये तो राहमें क्या देखा कि सब गोपियां वृन्दावनबासी अपने २ घरमें दीपक जलाकर बालचरित्र व गुणानुबाद श्रीकृष्णजीका गातीहुई दही मथन करती हैं सो उद्धव जिस २ द्वारे पर होकर चलेजाते थे उस घरके स्त्री व पुरुषोंको श्यामसुन्दरकी चर्चा करते सुन कर उन्हें बड़ा हर्ष होताथा जब उद्धवजी यमुनाकिनारे पहुँचकर स्नान करने उपरांत नित्यनेम पूजा करनेलगे तब प्रातःसमय गोपियां चौका झाडूआदिक गृहस्थी के काम काजसे छुट्टी पाकर यमुनाजल भरने वास्ते घड़ालिये हुई झुण्डका झुण्ड निकलीं उस समय आपसमें इसतरह पर मोहनप्यारेकी चर्चा करती हुई चलीं ॥

चौ० एककहै मोहिं मिले कन्हाई । एककहै वह छिपे लुकाई ॥
पीछे से पकड़ी मोरि बांह । वह ठाढ़े हरि बटकीछांह ॥
कहत एक गोदूहत देखे । बोली एक भोरही पेखे ॥
एक कहै वह धेनु चरावें । सुनो कानदै बीन बजावें ॥
या मारग हम जायँ न माई । दान मांगिहैं कुँवर कन्हाई ॥
एक कहत हरि कीन्हों काज । बैरी मार्यो लीन्हों राज ॥
काहेको वृन्दाबन आवें । राजछांड़ि क्यों गायचरावें ॥
छांड़ो सखी अवधिकी आश । चिन्ता छूटे भये निराश ॥
एक नारि बोली अकुलाय । कृष्ण आश क्यों छोड़ीजाय ॥
ऐसी कहत चलीं ब्रजनारी । कृष्णबियोग बिकलतनभारी ॥
दो० दुखसागर यह ब्रज भयो नाम नाव निरधार ।

डूबे बिरह बियोग जल श्याम करैं कब पार ॥

इसीतरह सब ब्रजबाला श्यामसुन्दरकी चर्चा करतीहुई यमुनाकिनारे चली जातीं थीं राहमें नन्दजी के द्वारपर रथ खड़ा देखकर बोलीं मालूम होताहै अक्रूर फिरआया एकबेर तो उसने हमारे प्राणनाथको अपने साथ लेजाकर राजा कंसको मरवाडाला अब क्या हमारी लोथले र उसका पिण्डा पारेगा दूसरी सखी बोली कदाचित् मनहरणप्यारे ने हमारी सुधि लनेवास्ते किसीको भेजाहो ॥

दो० तिनसों और सखी कहै तुम्हैं नहीं कुछ ज्ञान ।
अब हमसों अरु कान्हसों काहेकी पहिचान ॥

जब इसीतरह सब गोपियां आपसमें बातें करतीहुई यमुनाकिनारे पहुँचीं तब उद्धवजी उनकी प्रीति भरीहुई बातें सुनकर मनमें कहनेलगे ॥

चौ० जिनके प्राण प्राणपति पाहीं । लाजकाज पतिकीसुधिनाहीं ॥

दो० माखन प्रभुको बिरह दुख कासों बरणो जाय ।
जासों बिछुरे प्राणपति ताको कहा सुहाय ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

उद्धवका गोपियों को ज्ञान सिखलाना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जबउद्धवपूजासे सुचित्तहोकर नन्दकेघरआनेलगे तब गोपियोंने जो जलभरनेवास्ते यमुनाकिनारे गईथीं उद्धवको श्यामसुन्दरका पीताम्बर व मुकुट व बनमालापहिने देखकरआपसमें कहा मोहनप्यारे मथुराजाते समय एक मनुष्यभेजनेवास्ते कहिगयेथे सो यहउन्हींका भेजाहुआ मालूमहोताहै जब यहहाल बूझनेवास्ते गोपियां एकवृक्षकेनीचे निरालीजगह खड़ीहोगईं तब एकसखीबोली यह मनुष्य मुरलीमनोहरका भेषबनाये हमारीओर देखताआताहै दूसरीनेकहा यहउद्धवजी कल्हसेमोहनीमूर्त्तिका संदेशालेकर नन्दरायकेघर टिकेहैं यह बचनसुनतेही जब राधा आदिक गोपियोंने उद्धवको भेजाहुआ श्यामसुन्दरका जानकर बड़े आदरसे बैठने वास्तेकहा और वहभी उनलोगोंकी सच्चीप्रीति देखकर बैठगये तब सबब्रजबाला उनके चारोंओर बैठकर कुशलपूंछने उपरान्त बोलीं हे उद्धव हमैं मालूमहुआ कि तुमको वृन्दाबनविहारीने नन्द व यशोदाके धीर्य्यदेनेकेवास्ते भेजा है ॥

चौ० भलीकरी उद्धवतुम आये । समाचार माधव के लाये ॥
पठयो मातपिता के हेत । और न काहू की सुधि लेत ॥

सर्वस दीनों उनके हाथ । उरझे प्राण चरण के साथ ॥

एकसखीनेकहा ऐ उद्धव उन्हें हमलोगोंकी दया क्योंहोगी जो हमारी सुधिलेवें कदाचित् ऐसाकहो कि तुमलोग उनकी चर्चा क्यों करतीहो तो इसका यहकारणहै ॥

दो० हरिके सुमिरण ध्यान में रहत सकल संसार ।
याते हमहूं करत हैं देखि जगत व्यवहार ॥

दूसरीगोपीबोली हेउद्धवमोहनप्यारा बड़ाकपटी व निर्द्दयीहै जिसतरह बेश्याकी द्रव्यलेनेसे प्रयोजनरखकर सच्चीप्रीति पुरुषकीनहींकरती व पक्षी फूले २ वृक्षपर बैठकर सूखेवृक्षसे कुछप्रयोजन नहींरखते व भवँराफूलोंकारसलेकर उड़जाता है व दण्डी भिक्षा लेने उपरान्त देनेवाले के पास खड़ानहीं रहता व प्रजालोग नये हाकिमकी आज्ञा-मानकर पुरानेहाकिमका कुछडरनहींरखते व चेला विद्यापढ़ने उपरान्त फिर गुरूकेपास नहींरहता व यज्ञकरानेवाला ब्राह्मण यजमानसे दक्षिणालेकर फिरउससे कुछप्रयोजन नहींरखता व हरिणआदिक पशुहरेबनमें रहिकरजले हुये बनमें नहींठहरते व पुरुष भोगकरनेके पहिले जितनीप्रीतिस्त्रीकी करताहै प्रसंग करनेउपरांत उतनाप्रेमनहींरखता उसीतरह श्यामसुन्दर भी मर्त्यलोक में जन्म लेने से संसारी मनुष्यके समान जबतक यहांरहकर हमारेसाथ रास व बिलासकरते थे तबतक उन्हें हमलोगोंका प्रेमथा अब उनको क्याप्रयोजन है जो हमारीसुधिलेवें जैसे उनकी मृदुमुसकान व तिरछी चितवन व अमृतरूपी मीठी २ बातोंपर लक्ष्मीजी व देवकन्या मोहिजाती हैं वैसे हमलोगोंकी भवँररूपीआंखें भी कमलरूपी चन्द्रमुख मोहनीमूर्त्ति का रसपीकर उसीमदमें आठों पहर मतवाली बनीरहती हैं ॥

दो० लीला मोहनलाल की सदा चैन सुख दैन ।
ताही सुमिरण ध्यान में जीवत हैं दिन रैन ॥

हे राजन् श्यामसुन्दरकी चर्चा में गोपियां ऐसीलीनहोगईं कि उनको अपनेतनु व बस्त्रकी सुधिनहींरही उससमय एकभवँर श्यामरंग उड़ताहुआ वहांआया उसे देख-कर एकगोपीबोली हे सखियो जो संदेशा उद्धवसे कहतीहो वहीसमाचार इस भँवरेसे जो श्रीकृष्णजी के समान कालाहै उन्हें कहलाभेजना चाहिये जो बातें गोपियों ने मधुकरसे कही थीं उनको भवँरगीत कहते हैं ॥

दो० माखन प्रभुके बिरह में गोपिन को नहिं चैन ।
भवँर सुनाकर कहत हैं उद्धव से सब बैन ॥

उसब्रजबालाकी बातसुनकर दूसरी ने उत्तरदिया प्यारी तुझे बिश्वासहोता है कि

भँवरा हमारादूतहोकर संदेशा मोहनप्यारेको पहुँचावेगा तो मेरेनिकट जितने श्याम वर्ण हैं उनसे अपनेस्वार्थ की आशा न रखना चाहिये ॥

दो० कहै एक त्रिय सुन सखी कारे सब बकतार।
इनसे प्रीति न कीजिये कपटिनको टकसार॥

सो० देखाकरि अनुमान कारेअहि कारेजलद।
कबिजनकरत बखान भँवरकागकोयल कपट॥

दूसरीबोली हे भँवरा मुझे किसीश्यामरंगका विश्वासनहींआवता पर क्याकरूं उस चित्तचोरकीबातैं व सुन्दरताई यादआवनेसे चित्तमेराठिकाने नहीं रहता ॥

दो० मृदुमुसकनि बिषडारके गयेभुजँगलौं भाग।
नन्दयशोदा यों तजे ज्यों कोयलसुतकाग॥

जबवह भँवरा सुगन्धशरीरगोपियोंकी जो चंदन व केशर व इत्रमलेहुयेथीं सूंघकर उनके पासआया तबएकसखीने कहा हे भँवरा तू हमारेनिकटमतिआव जो तेरेसमान श्यामवर्णहोकर मथुराकी स्त्रियोंसे बिहारकरताहै वहांजा ॥

दो० कामिनि मथुरानगरकी माखनप्रभुके हेत।
बिबिधसुगन्ध लगावहीं वहसुबासनहिंलेत॥

दूसरीबोली इसभँवरेकी नाक मथुराबासी स्त्रियोंकेअंगकी सुगन्धसूंघकर भरगई है इसलिये बेपरवाहरहकर कहींनहीं बैठता दूसरीनेकहा हे भँवरा तू मथुरामें जाकर यह संदेशा हमारेचित्तचोरसेकहिदेना कि अपनेचाहनेवालोंकी प्रीतिछोड़कर उन्हैं दुःखदेना कौनन्यायहै जिसतरह भँवरा एकक्षणसे अधिक किसी फूलपर नहीं बैठता वहीहाल तुम्हाराभी समझनाचाहिये व लक्ष्मीजी तुम्हारा स्वभाव न जानकर अपनी अज्ञानतासे तुमपर मोहितहैं वह तुम्हारे कठोरताईका हाल जानतीं तो कभी तुम से प्रीति न करतीं व मथुराकी स्त्रियांभी तुम्हारे निर्दयीपनका हाल न जानकर मायाजाल में फँसी हैं ॥

दो० नातो तुम सांचीकहो जो जानत सबकोय।
माखन प्रभु के नेह में कैसेलागत सोय॥

दूसरीनेकहा जो हमाराप्राणहरकर चलागया और कुछ सुधि नहींलेता ऐसे कपटी को तू क्या सँदेशा भेजती है दूसरी ने कहा हे भँवरा तुम हमारी ओरसे मथुराकी रानियों को कहिदेना कि अभीतक तुमको श्यामसुन्दरकी कठोरताई का हाल नहीं

मालूम है परमेश्वर तुम्हारी प्रीति व उनका निर्दयीपन प्रतिदिन अधिक करै जिसमें हमारीसी गति तुम्हारी भी होजावे दूसरी बोली हे सखियो श्यामसुन्दर सर्व गुणों में भरेहोकर जैसी सुन्दरताई वह रखते हैं वैसारूपवान् तीनोंलोक में कोई न होगा इस लिये सब स्त्री स्वर्ग व मर्त्यलोक की उनपर मोहिजाती हैं हम गवांरियों की कौन गिनती है दूसरी ने कहा ऐ भँवरा तैंने माधवके चरणकमलका रसपिया इससे तेरा नाम मधुकर हुआ सो तू मोहनप्यारे कपटीका मित्र व दूतहोकर हमारे पास आया है सो श्यामवर्ण सब कपटी होते हैं इसलिये तू हमको मतिछू दूसरी ने कहा ऐ भँवरा तू कुब्जाके अंगका केशर अपने मस्तक पर लगाकर श्यामसुन्दर की आज्ञानुसार जो मुझे लेनेआयाहै सो मैं केवल तेरे बिनतीकरनेसे जानेनहींसक्ती जब मैं कुबड़ीदासी के बराबरभी नहींहूं फिर वहां जाकर क्या करूँ इसलिये तुम मथुरामें जाकर उन्हींके सामने कृष्ण व कुबड़ी का यश गावो जिसतरह बहेलिया अलगोजा बजाकर हरिण को बनमें पकड़ लेताहै उसीतरह मोहनप्यारेने मुरली बजाकर हमलोगोंकोभी अपने प्रेमके जालमें फँसालिया ॥

दो० जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय ।
नगर ढिंढोरा फेरती प्रीति करै जनि कोय ॥

जिससमय वह गोपी यह बातें भँवरे से कहरही थीं उसीसमय ललितासखी बोली सुनो प्यारियो श्रीकृष्णजी ने कुछ इसीजन्म में कठोरपन नहीं किया यह सदा इसी तरह कपट करते आये हैं रामावतारमें बालि बानरको बिना अपराध मारकर शूर्पणखा रावणकी बहिन जो उनपर मोहित हुई थी नाक कटवालिया व बामनअवतारमें राजा बलिके पासजाकर तीनपग पृथ्वी दानमांगी जब उसने ब्राह्मण समझकर संकल्पदिया तब विराट्रूप धरकर दो पगमें चौदहोंभुवन नापलिया व तीसरे पगके बदले राजा बलि ऐसे धर्म्मात्माको बांधकर पातालमें भेजदिया सिवाय इसके और जो काम कपट का उन्होंने कियाहै वह हाल कहांतक तुझसे कहूं जिसकी कुछ गिनती नहीं होसक्ती कदाचित् तू कहै कि ऐसे कपटी मनुष्यसे प्रीतिकरके क्यों इतना दुःख उठाती है सो सुन मैं किस गिनती में हूँ बड़े २ राजा उनकी स्तुति व कथा सुनने से घरद्वार व राज पाट व स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति छोड़कर मुक्त होनेवास्ते बनमें चलेजाते हैं व उस मोहनीमूर्त्तिकी छबि देखकर देवकन्याओं का चित्त ठिकाने नहीं रहता यह सबहाल तुम अपनी आंखों से देखचुकी हो दूसरी ने कहा मैं नहीं जानती कि श्यामसुन्दरको अपने बियोगमें हमारे प्राण लेनेसे क्या गुण निकलैगा जो ऐसा करते हैं दूसरी ने कहा हे भँवरा हम लोगों ने मोहनप्यारे से इसवास्ते प्रीति लगाईथी जिसमें कुछ रोज निबहैगी सो वह अपनी मृदुमुसुकानसे मन हमलोगोंका चुराकर इसतरह बिलगहोगये

जानों कभीकी जानपहिंचान नहींथी कदाचित् मैं उनको ऐसाकठोर जानती तो कभी प्रीति न करती दूसरी बोली हे सखी तैंने नहीं सुना जो कुब्जा देत्योंका जूठा खाकर दासी कहलावती थी उसे अब श्यामसुन्दरने पटरानी बनायाहै यह बात सुनकर हम लोगों से लज्जावश किसीको मुख नही दिखलायाजाता ॥

दो० अब खेलत दोउ लाज तजि बारहमासी फाग ।
लौंडीकी डौंड़ी बजी हांसी औ अनुराग ॥

दूसरी ने कहा देखो जिसे नारायण व दीनदयालु कहते हैं वह धर्म्म व दया भुला कर ऐसा निर्द्दयी होगया कि तीनकोस राह चलकर हमारा दुःख छुड़ानेवास्ते नहीं आता केवल संदेशाभेजकर हम दुखियारियों के घावपर नोन छिड़कताहै ॥

दो० एक सखी या बिधि कहै पगी श्यामके प्रीति ।
हमहूँ सीखा आजते पत्र लिखन की रीति ॥

दूसरी सखी बोली ऐ भँवरा तू अवश्य उस चित्तचोर से पूछियो भला यह कठोर-ताई छोड़कर कभी अपना दर्शन देवेंगे या नहीं दूसरी ने पूछा हे उद्धव श्याम व बलराम बालापनकी प्रीति समझकर कभी हमलोगोंको याद करते हैं या नहीं यह सुनकर दूसरी गोपी ने उसे उत्तरदिया हे सखी अब श्याम व बलराम मथुरावासी महा-सुन्दरी व चतुरस्त्रियों के वशहोकर वहां बिहारकरते हैं हम गवांरियों को किसवास्ते यादकरैंगे हमलोग पहिले ऐसा जानतीं तो क्यों वहां उनको जाने देतीं ॥

दो० आछे दिन पाछेगये हरिसे कियो न हेत ।
अब पछिताये होत क्या चिड़ियां चुनिगईं खेत ॥

जिसतरह आठमहीनेतक पृथ्वी व बन व पर्वत मेघकी आशापर तपनेका दुःख अपने ऊपर उठाकर बैठेरहते हैं व बरसातमें मेघराजा पानी बरसानेसे उनकोठण्ढा करता है उसीतरह श्यामसुन्दरभी आनकर अपनेचन्द्रमुखकी शीतलताईसे हमारेहृदयकी तपन बुझावेंगे दूसरीबोली हे सखियो इनवृथाबातोंसे कुछ प्रयोजन नहीं निकलता तुम्हें उद्धवसे यहां आवनेका कारण पूंछनाचाहिये यह बचनसुनकर दूसरीबोली हे उद्धव तुम किसवास्ते यहां आयेहो कभी वहभी इसओर आवने चाहतेहैं या नहीं दूसरीने कहा यह क्यों नहीं पूछती कि राम व कृष्णनेगुरुके यहां सिवायकपटके कुछ धर्म व दयाभी पढ़ाहै या नहीं दूसरीबोली हे प्यारियो बसुदेवजीने श्याम व बलरामको यहां अहीरोंकी संगतिमें रहनेसे तीर्थजलसे स्नानकराके उन्हें जनेऊ पहिनाया अब वह किसवास्ते उनको यहां आनेदेंगे दूसरी गोपी जो बिरहसागरमें डूबरहीथी झुंझलाकर

बोली जब वह निर्द्दयीहमारी सुधि नहींलेता तो तुमलोग किसवास्ते बारम्बार उसका हाल पूछतीहो यह कठोर बचन सुनकर दूसरीबोली हे उद्धव इस गँवारीकेमुखमें आग लगै जो ऐसीबात कहती है तुम सच बतलाओ वह कब यहां आवेंगे ॥

चौ० तादिन उइहैं भाग्य हमारे । जादिन मिलिहैं नन्ददुलारे ॥

दूसरीबोली हे उद्धव तुम हमारे प्राणनाथके भेजेहुये यहां आयेहो इसलिये जहां तुम्हारे चरणपड़ते हैं वहांकी धूर हमलोगों को अपनीआंखों में लगानाउचितहै उद्धव यहदशा गोपियोंकी देखकर मनमें कहनेलगे देखोसंसारमें इनकेबराबर दूसरे किसीको भक्ति व प्रीति बैकुण्ठनाथकी न होगी ऐसासमझकर उद्धव आनन्दरूपने राधाप्यारी को जो अलगखड़ीहुई यह सब बातें सुनतीथी दण्डवत्किया व रत्नोंकीमाला जो श्यामसुन्दरने भेजाथा उसेदेकर कहा हे गोपियो तुम्हारे समान दूसरेका भाग्यहोना बहुतकठिनहै जो आठोंपहर ऐसीप्रीति श्यामसुन्दरसे रखतीहो पिछलेजन्मके पुण्यसे मैंने तुम्हारा दर्शनपाया संसारी मनुष्य वेद व पुराण सुनकर यज्ञ वहोम व दान व व्रत व तीर्थ इसी आशापर करते हैं जिसमें हरिचरणोंकी भक्ति उत्पन्नहो पर तुम्हारे समान वह पदवी नहींपानेसक्ते इसलिये मुझको ऐसाआशीर्वाददेव जिसमें मुझभी तुम्हारेसमान हरिचरणोंमें प्रीतिहो ॥

दो० महिमा तुम्हरे भाग्यकी कासों बरणीजाय ।
जिनके चितमें नितबसैं माखनप्रभु यदुराय ॥

हे ब्रजवालो श्रीकृष्णजीने मेरेऊपर बड़ीदयाकरके यहांभेजा कि मैं तुम्हारादर्शन पाकर कृतार्थहुआ अब जो चिट्ठी व सन्देशा प्राणनाथका लायाहूं मन लगाकर सुनो जब उद्धवने श्याम व बलरामकी कुशल कहकर चिट्ठी गोपियोंको दी तब राधाप्यारी आदिक सब ब्रजबालोंने उसे अपनी अपनी छातीमें लगाया ॥

दो० अतिहितपाती श्यामकी सब मिलिमिलि सुखपाय ।
उद्धवकर दीन्हीं बहुरि दीजै बांचि सुनाय ॥

जब उद्धवजी चिट्ठी खोलकर पढ़नेलगे तब गोपियोंने क्यादेखा कि चिट्ठीमें कुब्जा नाम लिखकर हरतालसे मारनेउपरांत वहां गोपिका बनायाहुआ था यह देखकर गोपियांबोलीं देखो मोहनप्यारेकामन आठोंपहर कुब्जामें लगारहताहै इसीवास्ते उन्होंने गोपिकाकीजगह उसकानाम लिखकर उसपर हरताल ऐसालगाया मानों पीताम्बर अपना उसकोओढ़ायाहै हे राजन् उद्धव चिट्ठीसुनाकर गोपियोंसे बोले कि श्यामसुन्दरने मुझको तुम्हारेपास आत्मज्ञान समझानेवास्ते भेजकर ऐसाकहा है कि तुमलोग मुझसे भोगकी आशाछोड़कर योगसाधो तो तुम्हें बियोगका दुःख न होगा तुमलोग मेराध्यान

जो दिनरात करतीहौ इसलिये मैं तुम्हारेसमान दूसरेको प्यारा नहींजानता सो ऐ गोपियो तुम्हें श्रीकृष्णजी आदिपुरुषको जो तीनोंलोकके उत्पत्ति व पालनकरनेवाले हैं अपना पति समझना न चाहिये सुनो हवा व पानी व मिट्टी व अग्नि व आकाश पंचतत्त्व से शरीर मनुष्यका बनकर उसतनमें उन्हींका प्रकाश रहनेसे मनुष्यको चलने व फिरने व बोलने व शुभ अशुभकर्म्मकरनेकी सामर्थ्य रहती है पर नारायणजीकीमाया से वहरूप उनका किसीको दिखलाई नहींदेता इसवास्ते निर्गुणरूपका स्मरण व ध्यान कियाकरो तो वह आठोंपहर तुम्हारेपास बनेरहेंगे व सगुणरूप पासरहनेसे ज्ञान व ध्यानमें विघ्नसमझकर श्यामसुन्दर तुम्हारे कल्याणवास्ते मथुराजाकर अलगबसे हैं सो तुमलोग मोहनप्यारेका चमत्कार स्त्री व पुरुष व गृहस्थ व ब्रह्मचारी व वानप्रस्थ व संन्यासी व ग्वाल व गायोंमें एकसाजानकर सब जीव जड़ व चैतन्यको उन्हींकारूप समझो जो मनुष्य इसतरह आदिपुरुष भगवान्‌को सब जगह व्यापक जानताहै उसे कुछ वियोगका दुःख नहींहोता ॥

चौ० योगसमाधि ब्रह्म चितलावै। परमानन्द तबहिं सुखपावै।

दो० आतमही से देखिये परम आतमारूप।
सबमें पूरण एकरस अद्भुत महाअनूप ॥

हे गोपियो वह उत्पन्नहोने व मरने व घटने व बढ़नेसे रहितहोकर आकाशसमान सब जगत्‌पर अपनीछायारखते हैं जिसतरह किसीस्त्रीका पुरुष परदेशगयाहो और वह अपनेपतिको सोते व जागते उठते व बैठते खाते व पीते ध्यानमें अपनेपास देखती रहे तो उसकापुरुषसे अलगकहना न चाहिये उसीतरह तुमलोगभी जो ऋषीश्वर व योगीश्वरोंसे अधिक पदवी रखतीहो उनकेध्यानमें लीन रहकर उन्हें अपनेसे बिलग मतसमझो तो वियोगका दुःख तुम्हें न होगा ॥

दो० ताही सुमिरण ध्यानमें रहो सबहि चितलाय।
याहीबिधि तुमसों कह्यो माखनप्रभु समुझाय ॥

और यहभी केशवमूर्त्तिने कहाहै जब तुमलोगोंने रासलीला करतीसमय पुरुषभाव समझकर पापदृष्टिसे मुझे देखा तब मैं अन्तर्द्धान होगया जब तुमने ज्ञानकीराह मुझे परमेश्वर जानकर मेराध्यान किया तब मैंने तुम्हारीभक्ति देखकर फिर तुमको दर्शन दिया सो उसीतरह मेरेनिर्गुणरूपका ध्यानकरो तो आठोंपहर तुम्हारेपास बनारहूंगा ॥

दो० सुनतहि उद्धवके वचन रहीं सबै शिरनाय।
मानहुँ मांगत सुधारस दीन्हों गरलपियाय ॥

यह ज्ञानभरीहुई बातैं सुनकर श्यामानेकहा हे उद्धव जहांसे यहसब रत्नादिक व मोतीकीमाला लेआयेहो वह अनमोललाल मेराकहांहै उनके विना हमैं तीनोंलोककी सम्पत्ति अच्छी नहींलगती इसलिये यह सब गहना उसीको जाकर फेरदेव मेरे काम का नहीं मैं केवल उस मोहनीमूर्त्ति का दर्शन चाहती हूं ॥

क० धर्म्म के संघाती एक बाती न कहत बनै थिरमें थहराती जो लहाती हित रामके। जाके पूत नाती करैं प्रीति अविहाती यह काहू न सोहाती बश भये ऐसे बाम के ॥ मोहन कुज्ञाती कुबिजाती संग जाती अब हम सों कहाती वे हमारे कौन काम के। छाती दाहिबे को यह पाती ले सिधारे ऊधो घाती करी तुमहूं संघाती सखा श्याम के ॥

दूसरी गोपीबोली हे उद्धव यहकौन न्यायकी बातहै जो हमलोगोंको योगसाधने वास्ते कहकर आप कुब्जाआदिक मथुराकी स्त्रियोंसे भोगविलास करते हैं भला यह तो बतलाओ कभी उसआनन्द व खुशीकी सभामें हमारीचर्चाभी होती है या नहीं ॥

दो० यह सब दोष लगै हमैं कर्मरेख को ज्ञान।
प्रेम सुधारस सानिकै अब लिखिपठयो ज्ञान ॥

दूसरी ने कहा हमलोग दिनरात मोहनप्यारे के ध्यानमें रहकर सिवाय रोने के दूसरा कुछकाम नहींकरतीं तिसपर वह योग व वैराग्य लिखकर हमारे कलेजेकी दबी दबाई अग्नि सुलगाते हैं ॥

चौ० ज्ञान योग बिधि हमैं सुनावैं। ध्यान छोड़ि आकाश बतावैं ॥
जिनको मन लीला में रहै। उनको को नारायण कहै ॥
बालकपन से जिन सुखदयो। सोक्यों अलखअगोचरभयो ॥
जो तनुमें प्रिय प्राण हमारे। सो क्यों सुनिहैं बचनतुम्हारे ॥
एकसखी उठि कहैबिचारी। उद्धव की करिये मनुहारी ॥
इनसेसखी कछूनाहिं कहिये। सुनिकरबचन मौनधरिरहिये ॥
एक कहै अपराध न याको। यह आयो भेजो कुब्जाको ॥
अबकुब्जा जोजाहिसिखावै। सोई वाको गायो गावै ॥
कबहूं श्याम कहीनहिं ऐसी। कही आय ब्रज में इन जैसी ॥

ऐसी बात सुनै को माई । उठत शूल सुनि सही न जाई ॥
कहतभोगतजियोगश्रराधो । ऐसी कैसे कहिहैं माधो ॥
जपतपसंयम नियमअचारा । यहसबविधवा को व्यवहारा ॥
युगयुगजीवैं कुंवर कन्हाई । शीश हमारे पर सुखदाई ॥
हमको नियमधर्म व्रतयेहा । नँदनन्दन पद सदा सनेहा ॥
उद्धव तुम्हैं दोष को लावे । यहसब कुब्जा नाच नचावे ॥

दो० रहन देव ऐसे हमैं अवधि आश की थाह ।
फिरि हमको पावैं नहीं डारैं सिंधु अथाह ॥
सो० लायो युवतिन योग जो योगिन के भोग तुम ।
हमतनुभयोबियोगभयोअधिकदुखश्रवणसुनि ॥

उसीसमय राधिकाबोली ॥

क० जो हरि मथुरा जाय बसे हमरे जिय प्रीति बनीरहि सोऊ । ऊधो बड़ो सुख येहू हमैं अरु नीके रहैं वे मूरति दोऊ ॥ हमरे ही नाम की छाप पड़ी अरु अंतर बीच कहैं नहिं कोऊ । राधाकृष्ण सबै तो कहैं अरु कुबरीकृष्ण कहै नहिं कोऊ ॥

दूसरीबोली हे उद्धव अबतक हमलोगों को श्यामसुन्दरके आवने की आशा बनी थी सो तुमने यहयोग व बैराग्यका सन्देशासुनाकर हमैं निराशकिया हम गवांरी अही-रियां सिवाय गोरसबेंचने के योगसाधनेकाहाल क्याजानैं तुम दयाकीराह हमैं अवला अनाथसमझकर अपनेसाथ श्यामसुन्दरके पास ले चलो ॥

दो० अधर अरुण मुरली धरे लोचन कमल विशाल ।
क्यों बिसरत उद्धव हमैं मोहन मदनगोपाल ॥

क० ऊधो तुम सुघर सिखावत हौ नीके योग हौंतो गतिचाहत न काशी अबिनाशी की । ब्रह्मा की इन्द्र की उपेन्द्र की न चाहौं भूति तोषनिधि धनेश की दिनेश की न पाशी की ॥ तनमन नखन में पूरि रहे प्यारेलाल बाल कहा जानैं गति शंकर उदासी

की । नाशी लोक लाज वृन्दावन के मवासी संग मेरी मति दासी भई कान्ह ब्रजबासी की ॥

उद्धव ब्रजबालों का बचन सुनतेही अपने ज्ञानका अभिमान भूलकर उन्हें उत्तर देने नहीं सके ॥

दो० योगकथा युवतिन कही मनहीं मन पछिताय ।
प्रेम बचन तिनके सुनत रहिगये शीशनवाय ॥
सो० तब जान्यो मनमाह ये गुणहैं सब श्यामके ।
भेज्यो सुघर सुजान याही कारण के लिये ॥

उद्धव ने फिर ज्ञानकी राह कहा हे ब्रजबालो जिसतरह पानीपर रेखाखींचदेने से स्थिरनहींरहती उसीतरह संसारीव्यवहार स्वप्नकेसमान झूठाहोता है इसलिये तुमलोगों को चाहिये कि अपनी २ आंखैं बन्दकरके हृदयमें ध्यान एकफूल कमल व चतुर्भुजी रूप नारायणजी का मनलगाकर करो तो उसपुष्पके बीचमें तुमको दर्शन परमेश्वर का प्राप्तहोयगा यहबात सुनकर एक गोपी ने कहा हे उद्धव कदाचित् नन्दलालजी रूप व रेखा नहीं रखतेथे तो यशोदाने उनको किसतरह जानकर पालनमें झुलाया व ऊखलसे क्योंकर बांधेगये थे व हमारा गोरस किसतरह चुराकर खाया तुम्हारे झूठ ज्ञानको लेकर ओढ़ैं या बिछावैं तुम अपने अज्ञान से हम सब अबला अनाथिनों को योग व वैराग्य सिखलावतेहो तुम्हें कुछ लज्जा नहीं आती दूसरी बोली हे उद्धव एक तो हम आप श्यामसुन्दरके विरहमें व्याकुल होरही हैं दूसर तुम और ऐसी २ झूठी बात सिखलाकर हमारे घावपर नोन छिड़कतेहो मोहनप्यारे ने हम लोगोंको इसतरह तजदिया कि जिसतरह सांप केंचुलि छोंड़कर फिर उससे कुछ प्रयोजन नहीं रखता दूसरी ने कहा हे उद्धव कन्हैयाने दावानल व इन्द्रकेकोप व दैत्योंके हाथसे हमाराप्राण बचाकर यहां अनेक लीलाकीं देखो उन्हों ने परब्रह्मपरमेश्वरका अवतार होकर राजा कंसकी दासीको अपनी रानी बनाई यह बात सुनकर हमलोगोंको लज्जाआती है ॥

चौ० उद्धव कहां कंसकी दासी । यह सुनि होत सकल ब्रजहासी ॥

दो० गावत सब जगगीत अब वा चेरी के काज ।
उद्धव यह अनुचित बड़ो चेरी पति ब्रजराज ॥
सो० हमैं देत बैराग आपुतो दासीबश भये ।
चतुर चिचोड़त आग उद्धव यह अचरजबड़ो ॥

दूसरी बोली हे उद्धव कदाचित् मोहनप्यारेको कूबड़ प्याराहो तो हम लोगभी कुबड़ी

बनकर मथुरामें चलैं व अपनी टेढ़ीचाल दिखलाकर उन्हें फिर यहां लेआवें जिनसे कुबड़ी उनसे छूटे हे उद्धव फिर कोई ऐसादिन होगा जो मोहनप्यारे यहां आनकर हम लोगोंका दुःख छुड़ावैंगे दूसरी बोली अब मुझे वृन्दावन आवनेकी आशाजाती रही ॥

दो० यहां चरावत थे सदा नन्दमहरकी गाय ।

वहां जाय राजा भये माखनप्रभु यदुराय ॥

दूसरी ने कहा हे उद्धव जब मोहनप्यारे ने हम गोपियोंको छोड़दिया तो अपनानाम गोपीनाथ किसवास्ते धराया और जब उन्हों ने कुबड़ीसे प्रीतिकी तब फिर जग दिखाने वास्ते चिट्ठी व संदेशा भेजकर हमारे हृदयकी दवांदवाई आग क्यों सुलगाते हैं ॥

सो० उद्धव कहियो जाय अबहूँ चेरी को तजो ।

यह दुख सह्यो न जाय सवति कहावत कूबरी ॥

हे उद्धव इतनी बात मेरी ओरसे कुब्जाको अवश्य कहदेना कि श्यामसुन्दरकी नई प्रीतिपर तू मोहितहुई है पर उनकी कठोरताई का हालभी सुनरख ॥

क० जाकी कोखजायो ताको कैदकरवाय आयो धन्यकर मारी नारि निठुरमुरारि हैं । जेती ब्रजनारी तेती मिलिमिलिमारी अनमिलिहूं मारी जो मिलिहैं ताहि मारिहैं ॥ सुनरी प चेरी मैं तेरी सौं कहतिहौं बेनो हरि सरसनयन आंशुवनि ढारिहैं । बड़े हैं शिकारी पर इन्हैं न संभारी नारि मारिबे को नवल कन्हैया तलवारि हैं ॥

दूसरीने की हे उद्धव हमलोग अपना दुःख तुमसे कहांतककहैं कदाचित् वह प्रथमसे वसुदेव व देवकी के पास रहकर यहां न आवते तो हमलोगोंको क्यों इतना दुःख उठाना पड़ता ॥

चौ० करिकै ऐसी प्रीति कन्हाई । अब चित धरी महानिठुराई ॥

जबसे ब्रजतजिगये बिहारी । तबसे ऐसी दशा हमारी ॥

हे उद्धव उसीदिनसे हमलोगोंका खानापीना हँसनाबोलना सब सुख छूटगया दिन भर उनके आनेका रास्तादेखते व रातको तारेगिनते बीतकर सिवायचर्चा व ध्यान उस मोहनीमूर्तिके दूसरीबात हमैं अच्छी नहींलगती ऐसेजीनेसे हमलोग मरजातीं तो उत्तमथा ॥

दो० कहँलगि कहिये निजव्यथा औ हरिकी निठुराय ।

तापर लाये योग तुम अबलन करन सहाय ॥
सो० कठिन बिरहकी पीर जेहि व्यापै सो जानिहै ।
क्यों धरिहैं मन धीर सुनिकरि बचन भयावने ॥

दूसरीबोली हे उद्धव पहिले अक्रूरआनकर श्यामसुन्दरको यहांसे मथुरामें लेगया सो उनकेबिरहमें हमलोगोंकी यहगतिहुई अब तुम सगुणरूपकी प्रीतिछुड़ाकर इसतरह निर्गुणरूपका ध्यानकरनेवास्ते हमें सिखलातेहो जिसतरह कोई भूखेके आगेसे थाली भोजनकी छीनकर उसे मिट्टीखानेको कहे जो श्यामसुन्दरको ज्ञान सिखलानाथा तो किसवास्ते आधीरातको वंशीबजाकर हमलोगों को घरसे बुलाया व रासबिलासकरके हमारातन व मनहरलिया अब मथुरामें जाकर ज्ञानीहुयेहैं जब तुम्हारा व श्यामसुन्दर का एकसम्मत है तब तुम हमारी सहायता क्यों करोगे ॥

दो० मनकी मनही में रही कहिये कहा बिचार ।
हम गोहार जितते चहैं उतते आई धार ॥
सो० जानत हैं सब कोय जैसी हम सेवा करी ।
हम सहिलीनो सोय पावोगे अपनो कियो ॥

दूसरीने कहा हे उद्धव शास्त्रानुसार गुरू अपनेचेलोंके कानमें मंत्रोपदेशकरते हैं दूसरेसे मंत्र नहीं कहलाभेजते कदाचित् उन्हें हमलोगोंसे योगसधवाना है तो आप यहां आनकर बृन्दावनके कुंजोंमें ज्ञान सिखलावें ॥

दो० तब खेलत सौगन्ददे राख्यो कछु न बचाय ।
अब सीखे यह योगकहँ उद्धव कहियोजाय ॥
सो० हमको निर्गुणज्ञान जहँ स्वारथ तहँ सगुणहैं ।
लिखि भेज्यो निरबान चाटैं सहत लगायकर ॥

दूसरीबोली ऐ उद्धव जिनसखियों के बालोंमें श्यामसुन्दर अपने हाथसे फुलेल डालकर फूलोंसे शिर गूंथते व अच्छा २ गहना व कपड़ा पहिनाकर उनके अंगपर अतरलगाते थे उन्हींलोगों के अंगमें भस्मलगाने व शिरपरजटारखने व योगसाधने वास्ते कहलाभेजा है जिनकानों में अपनेहाथ जड़ाऊकर्णफूल व बाली व पत्ता पहिना कर प्रसन्नहोते थे उन्हींकानों में अब मिट्टीकी मुद्राडालने को कहाहै जिसतनुपर हम लोगों को गोटे व किनारी की रँगीहुई सारियां पहिनावते थे उसी अंगपर गेरुआवस्त्र

पहिरनेवास्ते कहाहै जिसगले में श्यामसुन्दर अपना हाथडालकर गलेलगाते थे उसगले में अब सेल्हीपहिरने को आज्ञादी है यह कौन न्यायकरते हैं ॥

दो० वहि गोकुल वहिकुञ्जबन वहीसखा वहिठौर ।
यक उद्धव ब्रजराज बिन भई औरकी ओर ॥

क० याही कुञ्ज कुञ्जनतर गुञ्जत भँवर भीर याही कुञ्ज कुञ्जनतर अब शिर धुनतहैं । याही रसनातेकरी रसकी रसीली बातैं याही रसनाते अब गुनगन गिनतहैं ॥ आलम बिहारी बिन हृदयहूं अचेतभये येहोंदई हितकहत कैसे बनतहैं । जेहीं कान्ह नयनन के तारेहुते निशिदिन तेही कान्ह कानन कहानी सुनतहैं ॥

दूसरी ने कहा ॥

क० ओढ़िबेको कन्था अरु भस्मरमाइबे को कानन के कुण्डल कर टोपियां बनावैंगी । हाथ में कमण्डलु अरु खप्परभराइबे को आदेश आदेश करि शृंगियां बजावैंगी ॥ ऋद्धि दीनी कुब्जा को सिद्धिदीनी गोपिन को फिरैंगी द्वार २ अलख जगावैंगी । एक बात उद्धव जी मन मैं बिचारि देखो येती ब्रजबाला मृगछाला कहां पावैंगी ॥

दूसरीबोली ऐउद्धव जिसतरह ठगलोग पहिले बटोहियों के साथ लगकर विनयपूर्वक उनसे प्रीतिकरके पीछे सबधन उनका लूटलेते हैं उसीतरह मोहनप्यारेने प्रथम हमलोगों से प्रीतिलगाकर तन व मनहमारा हरलिया अब योग व वैराग्यकी छुरीमारकर हमारा प्राण लिया चाहते हैं ॥

दो० हरि हमसे ऐसी करी कपट प्रीति बिस्तार ।
मुखसे कछुनहिं कहिसकैं समुझत बाररुबार ॥

दूसरीबोली ऐउद्धव एकतो श्यामसुन्दर पहले से बड़े निर्दयी थे दूसरे तुम्हारे ऐसे कठोर सखामिले फिर किसवास्ते वह ऐसासँदेशा न भेजें और तुम हमलोगोंको ज्ञान विज्ञान समझाकर योगसाधने वास्ते जो कहतेहो सो हमें इनबातों से क्याप्रयोजन है यहकर्म योगियों को चाहिये और यह जो तुमनेकहा कि सबकेतनमें उन्हींका प्रकाश रहताहै इसकारण तुमभी वहीहो फिर जिसतरह श्रीकृष्णजी ने गोवर्द्धनपहाड़ अपनी अँगुलीपर उठायाथा उसीतरह तुमभी यहपर्वत उठाकर मुरलीबजाओ जबतुम ऐसा

नहींकरनेसक्ते फिर किसतरह तुमको उनकेसमान जानकर तुम्हाराज्ञान उपदेश सच्चा मानें इसलिये हमलोग अच्छीतरह जानती हैं कि उनकेसमान कोईदूसरा नहीं है तुम किसवास्ते झूठकहकर हमलोगोंको धोखा देतेहो तुमसे होने सकै तो उस चित्तचोरको यहां लिवालाओ हमाराहृदय उसमोहनीमूर्त्ति के प्रेम से भररहाहै दूसरीवस्तु योग व ज्ञानकी वहां समाने नहींसक्ती इसलिये हमलोगों से योग व वैराग्य साधानहींजायगा यहचिट्ठी जहांसे लेआयेहो उन्हींकोजाकर फेरदेव योग व वैराग्य वहींसाधकर यहसब ज्ञान कुब्जारानीको पढ़ावैं जिसमें उसकीशोभाहो जिसतरह अंधेको शीशादिखने व ज्वर के रोगी को भोजनकरने से कुछ सुख व गुण नहींहोता उसीतरह हमको योग सिखलाने से तुम्हारा कुछअर्थ नहीं निकलैगा ॥

सो० देखु मूढ़ चितलाय कहँ परमारथ कहँ बिरह ।
राजरोग कफ जाय ताहि खवावत हौ दही ॥

दूसरीबोली हे उद्धव पहिलेतुम ब्रजबालों की दशा देखकर तबउन्हें योग व वैराग्य सिखलाओ जिसतरह डूबताहुआ मनुष्य पानी परकी फेन पकड़ने से नहीं बचता उसीतरह हमलोगों को जो बीच बिरहसागर मोहनीमूर्त्तिके गोता खारही हैं तुम्हारा ज्ञान उपदेश अच्छा नहीं लगता ॥

दो० हम बिरहिनि बिरहा जरीं तुम मतिजारो अंग ।
सुख तो तबहीं पाइहैं जब नाचैं हरि संग ॥

क० आयो आयो भयो ऊधो अब ब्रजमण्डलमें रागमें कुराग योग रीति कहि सुनायो है । झोली झण्डा गुदड़ी औ भस्म मुद्रा काननमें हाथनमें खप्पर यह स्वांग ले दिखायो है ॥ संयम नियम ध्यान धारणा दृढ़ावतहो ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशायो है । कुबरी पै पढ़िआयो बेदको पढ़ायआयो रथ चढ़िआयो अनरथ गढ़िलायो है ॥

दूसरी सखी बोली हे उद्धवजी तुम योग और ज्ञानकी गठरी बांधकर मथुरासे जो अपने शिरपर यहां लेआयेहो सो ब्रजबासियों को योग व ज्ञानलेनेकी इच्छा नहीं है तुम यह गठरी काशी में लेजाकर वहांके लोगोंको जो मुक्तिकी चाहना बहुत रखते हैं देव ॥

चौ० क्या हमकरैं मुक्तिले रूखी । अबला श्याम संगकी भूखी ॥

जिसतरह पियासा मनुष्य जबतक पेटभर पानी नहीं पीता तबतक उसकी पियास

ओसचाटने से नहींजाती उसीतरह बिनादेखे मोहनप्यारे के हमारी आंखे नहीं मानती ॥

चौ० फिर वह रूप प्रकट जब देखैं। जीवनसुफल तभी करिलेखैं॥

हे उद्धव जब यह एकमन हमारा श्यामसुन्दरके चरणों में अटकगया तब योग व वैराग कौनसाधै मैं तुमको मोहनप्यारेका भक्त जानती थी पर तुम्हारे ज्ञान सिखलाने से जो सगुणरूप व लीला छोड़कर निर्गुणरूप व आकाश पातालका हाल बतलावतेहो मुझे जानपड़ा कि तुमको श्रीकृष्णजीकी कुछ भक्ति व प्रीति नहीं है ॥

चौ० उद्धव हरि हैं ईश हमारे। सो अब कैसे जात बिसारे॥

दो० योग दीजिये लै तिन्हैं जिनके मन दशबीस।
किन डारत निर्गुण यहां उद्धव ब्रजमें खीस॥
योगकथा अब मतिकहो उद्धव बारम्बार।
भजै और नँदनन्द तजि वाको है धिक्कार॥

जिसतरह हाथी कमलकी डालमें नहीं बांधाजाता उसी तरह समुद्ररूपी हमारा विरह चिनगारी रूप तुम्हारे ज्ञानसे सूखने नहीं सक्ता देखो जहां छः महीने की रात रास बिलास में श्यामसुन्दर के साथ पलभर मालूमहुई थी वहां अब एकक्षण उनके वियोगमें युगसमान बीतताहै हमसे उन्हों ने वृन्दावन आवने के वास्ते कहाथा उसी आशापर हमलोग जीती हैं ॥

चौ० उद्धव हृदय कठोर हमारे। फटे न बिछुरत नन्ददुलारे॥

हमसे मछलियों को उत्तम समझना चाहिये जो पानी से बिछुड़तेही अपना प्राण छोड़ देती हैं ॥

दो० कहँलगि कहिये आपनी उद्धव तुमसे चूक।
श्याम बिरह तनु जरत है सुनत न कोई कूक॥
सो० उद्धव कहियो जाय मोहन मदनगुपाल सों।
नयनन देखैं आय एकबार ब्रजकी दशा॥

इसीतरह अनेक बातैं कहकर गोपियों ने आंशुओं से उद्धवका चरण धोया व विलापकरके कहने लगीं हे श्यामसुन्दर अब तुम्हारे विरहका दुःख हमसे सहा नहीं जाता इसलिये अपनी मोहनीमूर्त्ति दिखलाकर हमारी चिन्ताहरो नहीं तो हमलोगोंका प्राण लेलेव आशा दुःखदायी होकर निराश होजाने से शोच नहीं रहता ऐसा कहकर गोपियों ने उद्धवका हाथ पकड़ लिया व सब स्थान रासमण्डललीला करने श्याम-

सुन्दरका उन्हें दिखलाकर बोलीं हे उद्धव यह सब स्थान देखकर हमैं एकक्षण वह मोहनीमूर्त्ति नहीं भूलती सो तुम इतना सँदेशा हमारा विनयपूर्व्वक मोहनप्यारे से कह देना कि तुम्हारे बिरहसागरकी लहरसे शरीररूपी घर हमारा गिरने चाहताहै सो जल्दी आनकर रक्षा इसकी करो ॥

दो० तुमतौ महाप्रबीण हौ कहैं कहा समुझाय ।
माखनप्रभु से सबनकी बिनती कहियो जाय ॥

जब यह सँदेशा कहती हुई सब ब्रजबाला बौरहीं के समान अचेत होगईं तब उद्धव यह दशा देखतेही उन्हें दण्डवत्‌करके बोले हे ब्रजबालाओ मनुष्य तनु पानेका फल तुम्हींको प्राप्तहै जो आठोंपहर उन आदिपुरुष जिनके चरणोंका ध्यान ब्रह्मादिक देवता अपने हृदयमें रखते हैं करतीहो तुम्हारी बड़ाई कोई नहीं करनेसक्ता वेद व शास्त्र में स्त्रीको निषिद्ध कहते हैं पर तुम्हारा ज्ञान देवतों से भी उत्तमहै बैकुण्ठनाथ जितनी प्रीति तुमलोगोंकी रखते हैं उतनी लक्ष्मीजी पर नहीं करते ॥

दो० जाबिधि सुख तुमको दियो बृन्दाबनके माहिं ।
स्वप्नेहू में लक्ष्मी वह सुख पावत नाहिं ॥

हे ब्रजबालाओ परमेश्वर मुझे भी एक गोपीका जन्म देते तो क्या अच्छी बात होती अब मैं वृक्षादिकका जन्म लेकर यहां रहाचाहताहूं जिसमें तुम्हारे चरणों की धूरि मेरे शिरपर चढ़ाकरै तुम्हारा प्रेम देखकर देवता मोहित होजाते हैं मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी स्तुति करनेसकूं जिसतरह श्रीकृष्णजी को परमेश्वर समान जानताहूं उसीतरह तुमलोगों को भी बूझकर उनसे बिलग नहीं समझता जो पदवी ब्रह्मादिक देवता बड़े परिश्रमसे पावते हैं वह तुमलोगोंको सहजमें प्राप्तहुई इसलिये तुम्हें उन्हींका रूप समझना चाहिये ॥

दो० महाधन्य तुम गोपिका धन्य तुम्हारो नेम ।
माखनप्रभु गोपाल सों जिनको बाढ़ो प्रेम ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित इस बातमें कुछ सन्देह मतसमझो जो मनुष्य अपनामन प्रेमपूर्व्वक परमेश्वरमें लगावे वह उन्हींका रूप होताहै देखो गोपियां बीचकुल ब्राह्मण व क्षत्रियके न होकर कभी उन्हों ने वेद व पुराण नहीं सुना व किसी तीर्थका स्नानकरके कभी तप व जपभी नहींकिया केवल श्रीकृष्णजी के चरणों में प्रीति रखने से इतनी बड़ी पदवी को पहुँचगईं जिसतरह बड़ा ढेर रुई व लकड़ीका एक चिनगारी आगसे जलजाताहै उसीतरह उद्धवका ज्ञान ब्रजबालों के

सामने भूलगया तब उद्धव बारम्बार शिर अपना गोपियोंके चरणपर रखकर कहने लगे मैं तुम्हारे दर्शनसे कृतार्थहुआ मनुष्य एकक्षण श्यामसुन्दरका स्मरण करने से मुक्तिपाताहै तुमलोग तो आठोंपहर उनके याद व ध्यानमें रहतीहो मैं तुमको ज्ञान बतलाने आयाथा सो तुमसे परमभक्ति सीखचला मुझे अपना दास समझकर मेरी सुधि करती रहना हे राजन् उससमय उद्धव प्रेममें डूबकर ब्रजभूमि पर लोटने लगे व वृन्दाबनके वृक्षों से गले मिलकर कहा तुम सब वृक्ष व पक्षी आदिकका बड़ा भाग्य है जो तुमने यहां जन्मपाया जिन परब्रह्म परमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेव को जल्दी ध्यान में नहींमिलता सो उन्होंने ब्रजभूमि में आनकर तुमलोगोंको बाललीला का सुखदिखलाके अपनादर्शनदिया इसीतरह उद्धवजी गोपियोंकेसाथ जहां २ वृन्दाबन विहारीने लीलाकीथी वहांपर दो २ चारचार दिन हरिचर्चा में मग्नरहे ॥

दो० ऊधो मन आनन्द अति लखिके प्रेम बिलास ।
आया था दिन दोइ को बीतगये षटमास ॥
सो० तब उपज्यो मन शोच वचन कृष्णके यादकरि ।
मनमें भयो संकोच श्यामबुलाये वेगिम्वहिं ॥

यहसुनकर गोपियों ने कहा हे उद्धव तुमने हमारे भले वास्ते ज्ञान सिखलाया व हमलोगों ने प्रेमवश तुमको दुर्वचनकहा सो बड़ेलोग छोटोंपर सदास दयाकरते आये हैं इसकारण हमाराअपराध क्षमाकरके ऐसाउपाय करना जिसमें श्यामसुन्दर अपना-दर्शन देवें और हमलोगों की दशा तुम अपनी आंखोंसे देखेजातेहो जैसा उचितजानना वैसाकरना और यहभी मोहनप्यारे से कह देना हमाराअपराध क्षमाकरके बांहपकड़ की लज्जा रक्खें ॥

दो० प्रभु दीननपति दीनहित यही हमारी आस ।
कबहूं दर्श दिखाइके हरिहैं लोचन प्यास ॥

ऐसाकहकर जब राधाआदिक गोपियां उद्धवको बड़े प्रेम से अपनेघर लिवालेआईं तब उद्धवने भी सच्चा प्रेम उनका बैकुण्ठनाथ में देखकर उनकेघर भोजनकिया उस समय गोपियांबोलीं हे उद्धव तुम वहांजाकर श्यामसुन्दरसे कहना आगेआप दयाकी राह हमारा हाथपकड़कर वृन्दावनकी कुंजों में लिये फिरते थे अब राजगद्दी पाकर कुब्जाके कहने से हमें योग व वैराग्य लिखभेजाहै हमलोग आजतक गुरुमुखभी नहीं हुईं योग व ज्ञानका हाल क्या जानैं ॥

चौ० उनसे बालापन को प्रीति । जानैं कहा योग की रीति ॥

उद्धवयौंकहियोसमुझाय । प्राण जात हैं राखैं आय ॥
सो० ऐसे कहि ब्रजबाम भईं बिरह सागर मगन ।
उद्धव करि परणाम आये यशुमति नन्द के ॥

फिर उद्धवने नन्द व यशोदासेकहा तुमसब ब्रजबासी धन्यहो जो त्रिलोकीनाथने तुमको बाललीलाका सुखदिखलाया व मैं भी तुमलोगोंका प्रेमदेखकर इतने दिन यहां रहा अबमुझे बिदाकरो तो वहांजाकर तुम्हारा संदेशा मोहनप्यारे से कहूं यहवचन सुनतेही यशोदा माखन व घी व मिठाईआदिक अनेकवस्तु श्याम व बलरामकेवास्ते देकरबोली हे उद्धव तुम देवकीबहिनसे यों कहना कि मेरे राम व कृष्णको फुसलाकर वहांरख न छोड़ें जल्दी यहां भेजदेवैं मैं उनके देखेबिना दिनरात व्याकुलरहती हूं व मोहनप्यारेको बहुत आशिषदेकर मेरी ओरसे यह कहदेना तुम्हारे बिना यशोदा बड़ा दुःख पावती है ॥

चौ० इतनी दया मातु पर कीजै । एक बार फिर दर्शन दीजै ॥
सो० दई यशोमति माय मुरली ललित गुपाल की ।
उद्धव दीजो जाय प्यारी यह अति लाल की ॥

नन्दजीने हे उद्धव तुमआप बुद्धिमान्होकर यहांकी दशा देखेजाते हो अधिक हम क्याकहैं पर मेरीओरसे इतना मोहनप्यारे अन्तर्यामी से कहदेना कि एकबेर अपना दर्शनदेकर ब्रजवासियों का दुःख हरैं ॥

दो० मात यशोदा नन्द जू तनिक धरत नहिं धीर ।
कहत सँदेशो श्याम को भरत नयन में नीर ॥
नन्द दोहनी भरिदई कहेउ नयन भरि नीर ।
वा धवरी को दूध यह जो भावत बलवीर ॥

जब यहसंदेशाकहकर नन्द व यशोदा रोनेलगे व उद्धव उन्हें धैर्य्य देने उपरान्त रोहिणी को साथलेकर वहां से चले तब सब ग्वालबाल व गोपियों ने राम व कृष्णके वास्ते अनेकवस्तुदेकर ज्ञानकीराह कहा हे उद्धव तुम हमारी ओरसे दोनों भाइयों को हाथजोड़कर इतनासंदेशा कहदेना कि आठोंपहर प्राणहमारा तुम्हारे चरणों में लगा रहताहै इसलिये दयालुहोकर ऐसाबरदान दीजिये कि जन्मजन्मान्तर हमारे हृदय से तुम्हारा ध्यान न छूटे यहसुनकर उद्धवबोले हे ब्रजबासियो तुम्हैं ऐसी सच्ची प्रीति व भक्ति परमेश्वरकी है कि संसारी मनुष्य तुम्हारा नामलेने व दर्शनकरने से भवसागर पार उतरजावें व तुम्हारी मुक्तिहोने में कुछ संदेहनहीं सो तुमलोग जीवन्मुक्तहौ जब

इसीतरह उद्धवजी सब छोटों बड़ोंको समझायबुझाय आज्ञाभरोसादेकर मथुरामें पहुंचे व मोहनप्यारे को दण्डवत्करके मुरलीआदिक सबवस्तु उनकेसामनेरखदीं तब श्याम व बलराम उनको देखतही उठखड़ेहुये व बड़े प्रेमसे गलेमिलकरकहा हे उद्धव तुमने वृन्दावन में बहुत दिन लगाये कहो सबब्रजवासी आनन्द रहकर कभी हमारी याद करते हैं या नहीं ॥

चौ० नन्दबबा अरु यशुमतिमाय। कहौ कौनबिधि देख्यो जाय॥
बसत प्राण मेरे में जिनके। कैसे दिन बीतत हैं तिनके॥
कहो दशा ब्रज गोपिनकेरी। जिनको प्रीति निरन्तर मेरी॥
उद्धव सुनि ब्रजकीबाता। भये प्रेमबश पुलकित गाता॥

यहसुनतेही उद्धवने श्यामसुन्दरसे हाथजोड़कर विनय किया हे बैकुण्ठनाथ वृन्दावनकी महिमा व ब्रजवासियोंका प्रेम मुझसे कुछ कहानहींजाता आपने बड़ीदयाकरके मुझे वृन्दावनमें भेजा सो उनका दर्शनपाकर कृतार्थहोआया सबगोपी व ग्वाल आठोंपहर तुम्हारे चरणोंकाध्यान अपने हृदयमें रखकर केवल अवधिकी आशापर जीते हैं हे दीनानाथ जब मैं सन्ध्यासमय वृन्दावनमेंपहुंचा तब ग्वालबाल दूरसे मेरारथदेखतेही तुम्हेंसमझकर दौड़ेहुए मेरेपासआये जबमुझे रथपर बैठेदेखा तब आंखों में आंसूभरकर चुपहोरहे व यशोदा तुम्हारेविरहमें आठोंपहर यही पछितावती हैं कि मैंने श्यामसुन्दर त्रिलोकीनाथ को नहींपहिचानकर ऊखलसे बांधदिया था सो अब मनहरणप्यारे बिना साराब्रज सूना होगया ॥

चौ० दशरथ प्राण तजे सुत लागी। मैं देखतही रही अभागी॥

दो० यद्यपि मैं बांध्यो बहुत तुमबिन कछु न सुहात।
उनकी दशा बिलोकिस्वहिं युगसम बीतीरात॥

जब प्रातसमय यमुनाकिनारे स्नानकरने गया तब राधाआदिक गोपियों ने मुझे आपका सेवक समझकर बड़ेआदरसे बैठालकर तुम्हारी कुशलपूंछी और मैंने तुम्हारी चिट्ठीसुनाकर उनको ज्ञान व योग अच्छीतरह समुझाया पर उन्हों ने मेराकहना सच न मानकर सबदोष कुब्जाको लगाया और सब ब्रजबाला तुम्हारे प्रेम में डूबकर इस तरह बौरों के समान रोनेलगीं कि सब ज्ञान व योग मेरा उनकेसामने भूलकर प्रेम भक्ति मैंने उनसे पाई ॥

दो० गही एकहा बात उन मेटि वेदविधि नीति।
गोपवेष भजि सांवरे रहैं विश्वभर जीति॥

सो० नहिं सीखे कछुज्ञान जो बिधिजाहिं सिखावने ।
तुमहूं बड़े सुजान वहां जाव तो जानि हौ ॥

जिसतरह हरिण अपने गोलसे अलग होकर चौकड़ी भूलजाता है उसीतरह उन का प्रेम देखकर मेरेज्ञान का अभिमान टूटगया मैंने छः महीने रहकर वहां का हाल देखा तो सब वृन्दावनवासियों को तुम्हारे ध्यान व चर्चामें लीन पाया वहां जाने से मैं भी उनके समान होकर यहां का आवना भूलगया हे वासुदेव महाराज आपने किसवास्ते ऐसी कठोरताई उनसे की है तुम्हारी मायाको सिवाय आपके दूसरा कोई जानने नहीं सक्ता ॥

दो० निगम कहत बशभक्त के पूरण सब सुखसाज ।
करि सुदृष्टि ब्रजदेखिये बांह गहे की लाज ॥
सो० बहुत दुखिततनु छीन ब्रजबासी तुम बिरहबश ।
तुम तनमन हरिलीन रटत चातकी लौं सबै ॥

हे महाप्रभु राधिकाकी दशा आपसे क्याकहूं वह सब श्रृङ्गार छोंड़कर मैलीधोती पहिनेहुये दिनरात तुम्हारेबिरह में रोयाकरती हैं व महादुबली होकर पहिचानी नहीं जाती व बौरहोंके समान कभी श्रीकृष्ण पुकारकर कभी नखसे पृथ्वी खोदती है उस के घरवाले अनेकतरह समझाते हैं पर किसीका कहना उसको प्रवेशनहीं करता उस का प्राण निकलने में सन्देह नहीं पर तुम जो कहिआयेहो कि हम फिर आवैंगे उसी आशापर वह आजतक जीती है ॥

चौ० अचरज मोहिं बड़ो यह आवे । प्रभु तुमको कैसे यहभावे ॥
करुणामय प्रभु अन्तर्य्यामी । भक्तनहित धारेउतनुस्वामी ॥
बेगि कृपाकरि दर्शन दीजै । ब्रजजन मरत जिवासबलीजै ॥
दो० यह मुरली दै बिलखिकै कहेउ यशोमति माय ।
एकबार हितनन्दके दर्श दिखावो आय ॥
सो० जिन गौवनको श्याम आप चराई प्रीति करि ।
बहुरि न आईधाम बिड़री कुंजनमें फिरत ॥

हे दीनदयालु मैं अधिक कहांतक कहूं आप अन्तर्य्यामी सबके मनका हाल जानते हैं जब यहबात सुनकर श्यामसुन्दरको ब्रजबासियों की प्रीतियादआई तब आंखों में आंसूभरकर रोनेलगे ॥

दो० ब्रजबासिन के प्रेम में माखन प्रभु बलबीर ।
भरत उश्वास उदासचित भरे नयन में नीर ॥

केशवमूर्त्तिने मुरलीको उठाकर छातीसे लगालिया व आंखें बन्दकरके बीच ध्यान ब्रजबासियों के डूबगये फिर ब्रजका नामलेकर ठण्डीश्वासें लेते व पीताम्बरसे आंसू पोंछतेहुये बोले हे उद्धवतुम अच्छीतरह सबको ज्ञानसिखाआये ॥

चौ० मनमेंयों प्रभु कियो विचारा । ब्रजभक्तन मम रूप अधारा ॥
मेरेमुक्ति बड़ी निधि जोई । सो ब्रजबासी लेत न कोई ॥
ताते जो जिनके मन भावै । सोई मोहिं करत बनिआवै ॥
भक्ताधीन जो परम हमारे । ब्रजबासी हमको अतिप्यारे ॥
सदा बसत याते ब्रजमाहीं । इनसम मोहिं और हितनाहीं ॥

दो० मनकरि हरि ब्रजमें रहैं मिलिब्रजबासिन साथ ।
तनुधरि देवन काजहित भये द्वारकानाथ ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उससमय ब्रह्माने नारद से कहा देखो जिसपरब्रह्म परमेश्वरके दर्शन शिवजी के ध्यानमें जल्दी नहीं मिलते वहीत्रिलोकीनाथ ब्रजनारियों के वास्तेरोते हैं वेद की ऋचाओं ने आनकर गोपियों का जन्म लियाथा ॥

दो० परसै उनकी चरणरज बृन्दावन के माहिं ।
सोऊ गति उनकी लहै यामें संशय नाहिं ॥

हे राजन् उनका बड़ाभाग्य समझना चाहिये जोलोग बृन्दावनकी रज अपनेमाथे पर चढ़ावते हैं जब ब्रजका हाल सुनकर श्यामसुन्दर व बलराम उदास होगये तब उद्धव श्यामसुन्दरसे बिदाहोकर बसुदेव देवकी के पास पहुँचे व नन्द व यशोदा का सँदेशा उनसे कहकर अपने घरगये व रोहिणीजी श्याम व बलरामसे भेंटकरके राजमन्दिरमें गईं व राम व कृष्णने उसदूध व मक्खनआदिकको जो नन्द व यशोदाने भेजा था बड़ी प्रीतिसे खाया व उद्धवजी को भी उसमें से भेजवादिया ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

कुब्जा और अक्रूरके घरपर श्यामसुन्दरका जाना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसदिन से मुरलीमनोहरने कुब्जाके घर जाने का करार कियाथा उसीदिनसे वह नित्य फूलोंकी शय्या बिछाकर मोहनप्यारे की आज्ञा

देखा करती थी सो एक दिन श्रीकृष्णजी भक्तवत्सल अन्तर्य्यामी ने उसका प्रेम देखकर विचारा कि हमने कुब्जासे कहाथा कि कंसको मारकर तेरे घरआवैंगे सो अभीतक वह बचन पूरा नहीं हुआ इसलिये वहां जाना चाहिये ऐसा बिचारतेही उद्धवको साथ लेकर कुब्जाके घरगये ॥

चौ० जब कुब्जा जान्यो हरिआये । पीताम्बर पांवड़े बिछाये ॥
अति आनन्द गई उठि आगे । पूरब जन्म पुण्य सबजागे ॥

जब श्रीकृष्णजी सूर्य से अधिक तेजवान् रूप बनायेहुये बीचमन्दिर कुब्जाके पहुँचे तब उनके प्रकाशसे वह रत्नजटित स्थान जगमगानेलगा व कुब्जाने बड़ी भक्ति व प्रीतिसे उनको जड़ाऊ चौकीपर बैठाला व उद्धवको बैठने वास्ते आसन दिया और कुब्जा कमलरूपी चरण मोहनप्यारे के गोदमें लेकर बड़े प्रेमसे दाबने लगी ॥

दो० आस पास सज साजिके महाराज के काज ।
आनँद सों मनमें कहै धन्यभाग्य है आज ॥

फिर कुब्जाने चरण केशवमूर्त्ति के अपने हाथ धोकर चरणामृत लिया व बहुत उत्तम भूषण व वस्त्र जो बनवारक्खेथे उन्हें पहिनाकर इतर व चन्दन उनके अंगमेंमल दिया व छत्तीस व्यञ्जन उनको खिलाकर पान व इलायची सामने रक्खा फिर श्याम सुन्दरको रंगमहलमें रत्नजटित पुष्पोंकी शय्यापर लेजाकर बैठाला ॥

दो० फिर कुब्जा अस्नान करि पहिर्‌यो चीर सुरंग ।
रत्नजटित भूषण सजे नखशिखलौं सब अंग ॥

जब वह सोलहों शृंगारकरके बड़े प्रेमसे श्यामसुन्दरके निकट आई तब श्रीकृष्णचंद्र आनन्दकन्द सबका मनोरथ पूर्ण करनेवाले कुब्जाका हाथ प्रीतिपूर्व्वक धरकर अपनी शय्यापर लेटा लिया व उसकी इच्छा पूर्णकरके लोक व परलोक दोनों जगह का सुख उसे दिया ॥

दो० टेढ़ीसे सीधी करी दियो रूप अभिराम ।
दासी से रानी भई पूजी सब मन काम ॥

हे राजन् देखो जिस पदवीको योगी व ऋषीश्वर बड़े तप व जप करनेसे भी जल्दी नहीं पहुँचनेसक्ते वह फल कुब्जाने एकदिनके चन्दन लगावने से सहजमें पाया जो लोग नित्य विधिपूर्व्वक नारायणजी का पूजन करते हैं उनको न मालूम कैसी पदवी मिलेगी अपना मनोरथ प्राप्त होने उपरान्त कुब्जा ने श्यामसुन्दर से हाथ जोड़कर बिनयकिया है त्रिलोकीनाथ तुम्हारी मोहनीमूर्त्ति देखनेकी मुझे आठोंपहर अभिलाषा

बनी रहती है इसवास्ते मैं चाहताहूं कि कुछदिन यहांरहकर तुझे सुखदीजिये केशव मूर्त्ति बोले तू धैर्य्यरख जब मुझे यादकरेगी तब मैं तेरेघर आयाकरूंगा ॥

चौ० फिर उठि उद्धवके ढिगआये । भये लाजवश नयन नवाये ॥

जब मोहनप्यारे उद्धवसमेत अपनेस्थानपर गये तब मथुरावासियोंने यहहाल सुन-कर कुब्जाके भाग्यकी बड़ाई की ॥

चौ० धनिधनि कुब्जा हरिकीरानी । धनिधनि कृष्णप्रीति करिमानी ॥
सदारहै हरिकी यहरीती । मानत एक भक्तसे प्रीती ॥
धनिधनिचन्दन अंगलगायो । धनिधनि भवन जहांहरिआयो ॥

फिर एकदिन केशवमूर्त्तिने उद्धवसेकहा तुमस्त्रीकीभक्ति देखचुके अब चलो एक पुरुषका प्रेमदिखलावैं ऐसाकहकर मोहनप्यारे बलरामजीसे बोले हे भाई हमने अक्रूर के घरजानेवास्ते करारकियाथा सो आजतक नहींगये अब वहां चलकर अक्रूरको हस्तिनापुर भेजके युधिष्ठिरआदि अपनेभाइयोंकी सुधि मँगवाना चाहिये ऐसाकहकर बलभद्र व उद्धवसमेत अक्रूरके स्थानपरगये उन्हें देखतेही अक्रूर आगेसे आनकर शिर अपना हरिचरणोंपर रखदिया व मुरलीमनोहरने शिर उसकाउठाकर अपनीछाती में लगालिया फिर अक्रूर अपनीभाग्य उदयसमझकर बड़ेप्रेम व भक्तिसे श्याम व बलराम व उद्धवको घरकेभीतर लिवालेगये और दोनोंभाइयोंको जड़ाऊ चौकीपर बैठाकर चरण उनकेधोये व अपनीस्त्रीसमेत चरणामृत लेकर विधिपूर्वक पूजा उनकी की व सुगन्ध उड़नेवास्ते अगरआदिकको अपनेघरमें जलादिया व छत्तीसव्यञ्जन सोन-हुलीथालियों में लाकर उनकेसामने रक्खा जब श्यामसुन्दरने भक्ति व प्रीति उसकी सच्ची देखकर बलरामजी व उद्धवसमेत आनन्दपूर्वक भोजनकिया तब अक्रूर पान व इलायची उनकेसामने रखकर दोनोंभाइयों के चमरहिलानेलगा उससमय मोहनी मूर्त्तिको टकटकीबांधकर देखनसे अक्रूरको ऐसाप्रेम उत्पन्नहुआ कि वह चरणवृन्दावन बिहारीका पकड़कर अपनीआंखों में मलनेलगा जिसतरह परमदरिद्री बहुतधनपाकर प्रसन्नहोताहै उसीतरह अक्रूरको मोहनप्यारेके आनेसे परमहर्ष प्राप्तहोकर प्रेमकेआंसू बहनेलगे ॥

दो० तब अक्रूर करजोरिकै अस्तुतिकही सुनाय ।
तुम तो पुरुष प्रधानहौ माखनप्रभु यदुराय ॥

फिर अक्रूरने हाथजोड़कर विनयकिया हे दीनानाथ तुम उत्पन्नहोने व मरनेसे रहितहोकर तुम्हारेआदि व अन्त व भेद व लीलाको कोई जानने नहींसक्ता सो मेरी

दण्डवत् आपकोपहुँचै तुम रजोगुणसे संसारकी उत्पत्ति व सतोगुणसे पालन व तमोगुणसे नाशकरके कुछ इच्छा नहींरखते व तीनोंलोकका व्यवहार अपनीमायासे प्रकट करके आप उससे विलगरहते हैं व संसारीमायामोहमें फँसनेवाला मनुष्य भवसागर पार नहींउतरता व बिनाकृपा तुम्हारी मुक्तिमिलना बहुतकठिनहै नारदमुनि व सनकादिक ऋषीश्वर व ध्रुव व प्रह्लाद व अम्बरीषआदि हरिभक्त केवल तुम्हारीदयासे इतनीबड़ी पदवीकोपहुंचे हैं व गरुड़ सब पक्षियोंके राजा तुम्हारा बाहनहोकर आप सदा शेषनागके मस्तकपर विराजते हैं व गंगाजी तुम्हारेचरणका धोवनहोकर तीनों लोकको तारती हैं व पांचोंतत्त्व तुमसे उत्पन्नहोकर चारोंवेद तुम्हारीश्वासहैं सो बिना दया आपकी तुमको कोई पहिंचानने नहीं सक्ता तुमने केवल पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अपनी इच्छासे सगुण अवतारलेकर अनेकदैत्य व राक्षसोंको माराहै व अबभी बहुतसे दैत्य व अधर्मीराजाको सेनासमेतमारोगे सो मेरीदण्डवत् लीजिये मैं तुम्हारे पूजन व स्तुति करनेकी सामर्थ्य नहींरखता पर अपने भाग्यपर न्यवछावरहोताहूं जो आपने दयाकी राह आनकर मुझे दर्शनदिया व इसझोपड़ी को अपनेचरणोंसे पवित्रकिया जो कोई विरक्तहोकर तुम्हाराध्यान व स्मरण साथ प्रीतिके करताहै उसपर तुमदयालुहोकर अर्थ धर्म्म काममोक्ष उसेदेतेहो ॥

दो० माखनप्रभु गोपालसों जो राखत है हेत ।
अपने चारों हाथसों चार पदारथ देत ॥

जैसे कुब्जाकेरूपकोदेखकर उसकी इच्छापूर्णकी वैसे मुझपरभी दयालुहोकर ऐसा ज्ञानदेव जिसमें आठोंपहर तुम्हारेचरणोंका ध्यानरखकर आवागमनसे छूटजाऊं जब यह स्तुतिसुनकर केशवमूर्त्तिने अक्रूरसे बरदान मांगनेवास्ते कहा तब वह हाथजोड़कर बोला महाराज मैं यहीचाहताहूं कि स्त्री व पुत्रोंकी प्रीति मेरेमनसे छूटकर तुम्हारे चरणोंमें भक्ति उत्पन्नहो श्यामसुन्दरने उसे इच्छापूर्व्वक बरदान देकर कहा साधु व महात्माकी संगतकरनेसे तुम्हाराचित्त शुद्धहोजायगा फिर मोहनप्यारे अपनीमायासे अक्रूरका ब्रह्मज्ञानहरकर बोले हे चचा तुम यदुकुलमें श्रेष्ठ व हमारेपिताके तुल्यहोकर इतनी विनयहमारी क्योंकरतेहो तुम्हारीटहल व स्तुतिकरना हमको उचितहै और मैं आपके दर्शनवास्ते आया जब यह मायारूपी बचनसुनकर अक्रूरका ज्ञानभूलगया तब उसने श्याम व बलरामको बसुदेवजीका पुत्र जानकर बड़ेप्रेमसे गोदमें उठालिया व बड़ेहर्षसे उन्हें प्यारकरनेलगा तब मोहनीमूर्त्ति बोले हे चचा तुम्हारे पुण्य व प्रताप से दैत्यलोग मारेगये पर एकबातका शोच मुझेबनाहै सो आपदयाकीराह छुड़ादीजिये मैं सुनताहूं जबसे राजापाण्डु हमारे फूफा बैकुण्ठको सिधारे तबसे राजादुर्योधन युधिष्ठिरआदिक मेरे भाइयों व कुन्ती मेरी फूफूको बहुत दुःख देताहै सो आपहस्तिनापुर

जाइये और उनको धैर्य्य देकर वहांकी कुशललेआइये हमारामन उनकेवास्ते बहुत उदासरहताहै जब अक्रूर उनकीआज्ञानुसार हस्तिनापुरको गया तब श्याम व बलराम उद्धवसमेत अपनेघर आये ॥

उञ्चासवां अध्याय ॥

अक्रूरका हस्तिनापुरमें पहुँचना व पाण्डवोंका समाचार लेआना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दरने बहुतसीवस्तु कुन्ती व युधिष्ठिर आदिककेवास्ते देकर अक्रूरको बिदाकिया तब वह रथपर बैठकर कइदिनमें हस्तिनापुर पहुँचे व नगरके बाहर तालाब व बावली व बाग व देवस्थान बनायाहुआ राजापाण्डु व उनके पुरुषों का देखकर बहुतप्रसन्नहुये जब वह रथसे उतरकर राजादुर्योधन की सभामें जहांपर धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व कर्ण व अश्वत्थामा व विदुर बैठे थे गये तब सब किसीने अक्रूरको यादवकुलमें श्रेष्ठ समझकर सन्मानपूर्वक बैठाला उससमय दुर्योधन अभिमानी ने ब्यंगकी राह अक्रूरसे पूँछा ॥

चौ० नीके शूरसेन बसुदेव। नीके हैं मोहन बलदेव ॥
उग्रसेन राजा के हेत। और न काहू की सुधिलेत ॥
बेटा मारि करत हैं राज। तिन्हैं न काहू से है काज ॥

यह सुनकर अक्रूर चुपहोरहा व उसने मनमें विचारा कि इन अधर्मियों की सभा में मुझसे दुर्योधनका कठोर बचन नहीं सहाजायगा इसलिये यहां बैठना न चाहिये ऐसा विचारकर अक्रूर वहांसे उठ खड़ाहुआ व विदुरजी को साथ लेकर युधिष्ठिर के घर चलागया तो क्या देखा कि कुन्ती राजापाण्डु अपने पतिके शोचमें उदास बैठी है अक्रूरने कुन्ती के चरणों पर शिर रखकर सौगात भेजीहुई श्यामसुन्दरकी सामने धरदी व युधिष्ठिर आदिक पांचो भाइयों को गोदमें उठाकर बहुत प्यारकिया व जब कुन्ती ने आदरपूर्वक अक्रूरको अपने पास बैठाला तब अक्रूरने कुन्ती से कहा अय माता बिधातासे कुछ किसीका बश नहीं चलता व सदा कोई अमर नहीं रहतासंसार में जन्म लेकर दुःख व सुख दोनों भोगने पड़ते हैं इसलिये शोच करने से कुछ लाभ न होकर केवल शरीर दुःख पावताहै यह सुनकर कुन्ती ने अपने मनको धैर्य्य दिया व बसुदेव आदिककी कुशल पूंछकर बोली हे अक्रूर कभी श्याम व बलराम मुझे व युधिष्ठिर आदिक अपने पांचोभाइयोंको यादकरते हैं या नहीं मेरे बेटोंकी रक्षा जो यहां दुःखसागरमें पड़े हैं कब आनकर करेंगे ॥

दो० मम पुत्रन को तेजबल बर्णत सब संसार।
दुर्योधन सुनिकै कुढ़ै दुर्म्मति अधम गवांर ॥

इसलिये अब मुझसे अन्धे धृतराष्ट्रका दुःख देना जो दुर्य्योधन अपने पुत्रकेसम्मत से काम करताहै सहा नहीं जाता व दुर्य्योधन दिनरात मेरे बेटोंके प्राण लेनेके उपाय में रहता है एकबेर उसने भीमसेनको बिषका लड्डू खानेवास्ते भेजा फिर उन्हें लाह के कोटमें रखकर आग लगवादी पर नारायणजी की दयासे दोनों बेर उनका प्राण बचा जब कौरवलोग इसतरह मेरे बेटोंसे शत्रुता रखते हैं तो वह उनके हाथसे किस तरह जीते बचेंगे यही शोच आठोंपहर मुझे लगारहताहै जिसतरह बकरी भेड़ियों के गोलम अपने प्राणको डराकरती है व हरिणी अपने झुण्डसे बिलग होकर सुख नहीं पाती व सांप घरमें रहने से भय बनारहता है वही दशा मेरी रहकर यहांसे भागनेभी नहीं सक्ती श्रीकृष्णजी त्रिलोकीनाथ ने सब जीवोंका दुःख दूरकरने वास्ते सगुण अवतार लियाहै फिर मेरे पुत्रोंका दुःख जो बिना बापके हैं क्यों नहीं हरते हैं आजतक अपने को बिनावारिसके समझती थी पर अब श्यामसुन्दरके सुधि लेने से मुझे मालूम हुआ कि मेराभी कोई सहायकहै जिसतरह मोहनप्यारे ने कंसादिक अधर्मियों को मार कर अपने माता व पिताको सुखदिया उसीतरह मेरीरक्षाभी वही करेंगे हे अक्रूर अपना दुःख कहना किसी से अच्छा नहीं होता मैं तुमको अपना जानकर सब हाल कहती हूं जिसतरह ग्रहण लगतीसमय राहु व केतु चन्द्रमा व सूर्य्यको ग्रसिलेते हैं उसीतरह मेरे पुत्र दुर्य्योधन आदिक अधर्मियों के घेरेमें पड़े हैं हे अक्रूर तुम मेरीओरसे कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दको अशीष देकर कहदेना यह बड़े शोचकी बातहै जो मैं तुमसा भतीजा रखकर संसारी दुःखसे छुट्टी न पाऊँ मुझे महादुःखी व दीन जानकर मेरा कष्टहरो ॥

दो० मेरी औ ममसुतनकी तुमहीं को है लाज ।
और शरण सूझै नहीं माखनप्रभु ब्रजराज ॥

हे राजन् अक्रूर हरिभजनके प्रतापसे होनहार के जाननेवाले यह बात सुनतेही आंखों में आंशू भरकर बोले अय माता तुम किसीबातका शोच मतकरो तुम्हारे पांचो पुत्र श्रीकृष्णजीकी दयासे अपने शत्रुओंको जीतकर बड़े प्रतापी राजा होंगे व श्याम व बलराम ने यह सँदेशा तुम्हैं कहाहै कि फूफू किसीबातकी चिन्ता न करें मैं जल्दी उनके पास आताहूं ॥

दो० कुन्ती सों या बिधि कह्यो शोचो मति मनमाहिं ।
माखनप्रभु जा ओरहैं ताको भय कछु नाहिं ॥

जब अक्रूर इसीतरह कुन्ती व युधिष्ठिर आदिकको धीर्य्य देकर वहां से बिदा हुये व बिदुरको साथ लिये हुये हस्तिनापुरबासियों से चलन व ब्यवहार युधिष्ठिर आदिक पांचों भाइयोंका पूंछने लगे तो सबका मत यह पाया जिसमें राजगद्दी युधिष्ठिरको हो

फिर अक्रूर ने बिदुरसमेत धृतराष्ट्र के पास जाकर कहा महाराज तुमने कौरवकुल में श्रेष्ठ होकर अपनी बड़ाई क्यों खोदी व राजा पाण्डु अपने भाईकी गद्दी लेकर युधिष्ठिर आदिक अपने भतीजों को जो बिना बापके हैं किसवास्ते दुःखदेते हो और तुम ज्ञान-वान् होकर दुर्योधन आदिक अपने अधर्म्मी बेटोंके सम्मतसे क्यों ऐसा पाप करतेहो मनुष्य अकेला उत्पन्न होकर मरतीसमय कोई उसके साथ नहीं जाता जिनके वास्ते यह सब पाप बटोरतेहो वह परलोकमें तुम्हारे काम न आवेंगे और इस अधर्म करनेके बदले तुम्हें नरक भोगना पड़ेगा ॥

चौ० लोचन गये न सूझै हिये । कुल बहिजाय पापके किये ॥

हे धृतराष्ट्र तुमने नहीं सुना जो राजा अपने प्रजा व परिवारको समान न देखकर सबका पालन बराबर नहीं करता वह अवश्य नरक भोगताहै व संसारी व्यवहार स्वप्न के समान झूठाहोकर मरनेउपरान्त केवल भलाई व बुराई रहजाती है जो लोग संसारी व्यवहार झूठा समझकर किसी जीवको दुःख नहीं देते वहीलोग जगत में यश पाकर अन्तसमय मुक्तहोते हैं इसलिये तुम्हें अपने बेटे व भतीजों में कुछ भेद न समझकर युधिष्ठिर आदिकको दुःख देना न चाहिये तुम्हारे बेटे तुमको स्वर्ग में न लेजाकर भतीजे नरकमें न पहुँचावेंगे नरक व स्वर्ग अपनी करणी से मिलताहै मैं तुम्हारे कल्याण वास्ते धर्म्मकी बात कहेदेताहूं इसी के अनुसार करनेमें तुम्हारा यशहोगा कदाचित् ऐसा नहीं करोगे तो पीछेसे तुम्हें पछताना पड़ेगा ॥

दो० याते तजो अधर्म्म सब चलो धर्म्मकी रीति ।
जिनकी नीति अनीतिहै तिनकी होय नजीति ॥

यह सुनतेही धृतराष्ट्र अक्रूरका हाथ पकड़कर बोले हे भाई तुम यह अमृतरूपी व मंगलकारी बात हमारे लिये बहुतअच्छी कहतेहो और मैंभी समझताहूं कि श्रीकृष्णजी ने पृथ्वीका भार उतारने वास्ते जन्मलेकर सब भला व बुरा करनेकी सामर्थ्य अपने बश रक्खी है जो वह चाहेंगे सो होगा उनकी इच्छा प्रबलहै पर मैं क्या करूँ तुम्हारा उपदेश हृदयमें नहीं ठहरता बिजुलीकीतरह चमककर निकलजाताहै व दुर्योधन आदिक मेरेबेटेहमाराकहना न मानकर अपनीबुद्धिके प्रमाणकाम करतेहैं इसलिये मैं उनकी बातोंमें कुछनहींबोलता अकेला बैठाहुआ परमेश्वरका भजनकरताहूं तुममेरीदण्डवत् श्रीकृष्णजीको कहदेना यहसुनकर अक्रूरनेकहा हे धृतराष्ट्र परमेश्वरकीमाया बड़ीबल वान्है जो मेराउपदेश तुम्हेंनहींलगता न मालूम बैकुण्ठनाथकीक्याइच्छाहै ऐसाकहकर अक्रूर धृतराष्ट्रको दण्डवत्करके उठखड़ाहुआ व कुन्तीके घरपर चलागया और उसे धैर्य्यदेकर रथपरचढ़बैठा ॥

दो० बिदुर भक्तसे बिदा ह्वै कुन्ती सों करजोर ।
पाण्डु सुतन को देखिकै चले मधुपुरी ओर ॥

अक्रूरने मथुरामें पहुंचतेही राजाउग्रसेन व बसुदेवजी के सामने श्याम व बलराम से हाथजोड़कर बिनयकिया हे दीनानाथ मैंने हस्तिनापुर में जाकर देखा तो तुम्हारी फूफू व युधिष्ठिरआदिक पांचोंभाइयों को दुर्योधनके हाथसे बहुतदुःखी पाया अधिक मैं क्याकहूं आप अन्तर्य्यामी सबहालजानते हैं कौरवोंकाअधर्म्म कुछ आपसे छिपानहीं है जब ऐसाकहकर अक्रूर अपने घर चलागया तब श्रीकृष्णचन्द्र बैकुण्ठनाथ संसारी मनुष्योंकी तरह पहिले उदासहोगये फिर बलभद्रजीसे सम्मतकरके उससमय प्रणकिया कि महाभारत कराके पृथ्वीकाभार उतारूंगा इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो मैंने वृन्दाबन व मथुराकी लीला तुझकोसुनाई यह पूर्व्वार्द्धकथा कही है अब उत्तरार्द्धकथा श्रीद्वारकानाथकी कृपासे सुनाऊंगा ॥

पचासवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर व जरासन्ध से युद्ध होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह श्यामसुन्दर ने जरासन्धकी सेना मारकर कालयवनका नाशकिया व राजामुचुकुन्दको भवसागर पारउतारकर द्वारकामें जा बसे वहहाल कहताहूं सुनो राजाउग्रसेन धर्म्मपूर्व्वक मथुराकाराज्य करनेलगे श्याम व बलराम भक्तहितकारी उनकीआज्ञा पालनकरते थे व उसराज्यमें कोई दुःखीनहीं था पर अस्ति व प्राप्ति नाम दोनों स्त्री राजाकंसकी अपने पतिके शोच में बहुत उदासरहाकरतीथीं सो एकदिन दोनोंबहिन आपसमें रोकर कहनेलगीं अबयहां अनाथपड़ेरहने से अपनेपिताके घरचलकर रहनाउचितहै यहबिचार करतेही दोनोंबहिन रथपरचढ़के जरासंधकेघर चलीगई व जिसतरह श्याम व बलरामने राजाकंसको दैत्योंसमेत मारकर उग्रसेनको राज्य दिया था वह सबहाल रोरोकर अपने पितासे कहा यहसमाचार सुनतेही जरासन्ध अभिमानी बड़ाक्रोधकरके अपने सभावालोंसे बोला ऐसा कौनबीर यदुकुलमें उत्पन्नहुआहै जिसने कंसऐसे महाबली को दैत्योंसमेत मारडाला अबमैं यह प्रणकरताहूं कदाचित् कंसकेबदले मथुरापुरीको यदुबंशियोंसमेत जलाकर राम व कृष्ण को जीता बांध न लेआऊं तो अपनानाम जरासन्ध न रक्खूं ऐसाकहकर जरासन्ध अभिमानी जो श्याम व बलराम की महिमा नहींजानता था बोला यदुबंशीलोग इस योग्य नहीं हैं जो मैं सेनासाथलेकर उनसे लड़ने जाऊं इसीजगहसे एकगदा फेंककर उन्हें मार डालूंगा ॥

दो० राम कृष्णको मारिकै बैर कंसका लेउँ ।

कोऊ यादवबंश के कुलमें रहन न देउँ ॥

जरासन्धवरदान पावनेके प्रतापसे जैबेर गदा शिरकेचारोंओर घुमाकरजहांफेंकताथा उतनेहींयोजनपर वहगदा जाकर शत्रुओंकोमारतीथी जबजरासन्धने उसी घमण्ड से हज़ारमनकीगदा सौबेर घुमाकर मथुरापुरीपर जो चारसौकोस मगधदेशसेथीफेंकी तब श्यामसुन्दर अन्तर्य्यामीने अपनीगदाचलाकर उसकी गदा मथुरापुरीके निकटगिरादी जबवहगदा बिनाकामकिये मगधदेशमें फिर आई तबजरासन्धने अचम्भा मानकर मनमेंकहा जिसने मेरीगदाको रोकदिया वह बिना युद्धकिये नहींमाराजायगा ऐसाबिचारकर उसने सबराजोंको जो उसकी आज्ञामें रहतेथे बुलाभेजा व तेईस अक्षौहिणी सेनासाथलेकर मथुरापुरीपर चढ़आया जबदशहज़ार आठसौहाथी व तीसहज़ार आठसौसत्तर रथ व छासठ हज़ारघोड़े के सवार व एकलाखनौहज़ार साढ़ेतीनसौ पैदल सिपाही इसतरहसब दोलाख आठहज़ार तीसमनुष्योंकीसेना इकट्ठीहो तब एकअक्षौहिणी दलकहलाताहै ॥

श्लोक-अयुतंचनागास्त्रिगुणारथानां लक्षैकयोधादशलक्षबाजिनाम् । पदातिसंख्याषट्त्रिंशकोटयः अक्षौहिणीतांमुनयोबदन्ति १ ॥

सो जरासन्धने इसीहिसाबसे तेईसअक्षौहिणी दल व बड़े २ शूरवीरोंकोसाथ लिये हुये कईदिनमें वहांपहुँचकर मथुरापुरीको चारोंओरसे घेरलिया तबदशोदिक्पाल व सब देवता मारेडरके कांपउठे व पृथ्वीकम्पायमान होगई इतनीभारीसेना देखतेही सबमथुरावासी अपने प्राणके डरसे घबरागये व श्यामसुन्दरसे बिनयकी कि हे दीनानाथ जरासन्धने आनकर नगरको चारोंओरसे घेरलिया अब हम लोग कहांभागकरजावैं जिसमें प्राणबचैं जबयहसुनकर मुरलीमनोहर अपने मनमें कुछविचारकरनेलगे तब बलरामजी बोले हे महाराज आपने पृथ्वीकाभार उतारने व हरिभक्तोंको सुखदेने वास्ते अवतारलियाहै सोअग्निरूप धरकरदैत्योंकी सबसेना जलादीजिये यहबातसुनकर बैकुण्ठनाथनेकहा हेभाई इनलोगोंका मारना कुछकठिन नहींहै परन्तुमुझे बहुतसे काम संसार में करनेहैं इसलिये जरासन्ध के बधकाउपाय पीछे कियाजायगा ऐसाकहकर श्यामसुन्दर बलरामजी समेत राजाउग्रसेनके पास चलेगये और बोले महाराज मुझे आज्ञादीजिये तो जरासन्धसेजाकर लड़ूं व आपयदुवंशियोंको साथलेकर नगरकीरक्षा कीजिये उग्रसेनने कहाबहुतअच्छा श्याम व बलराम उनसे आज्ञापातेही नगरकेबाहर आये उस समय उनकी इच्छानुसार दोरथ जड़ाऊअतिउत्तम सूर्य व चन्द्रमाकेसमान चमकतेहुये आकाशसे उतरकर श्याम व बलरामके सामने खड़ेहोगये मुरली मनोहरके रथपर सुदर्शनचक्र व शार्ङ्गधनुष व तरकसबाणोंसे भराहुआ व नन्दकतलवार

व कौमोदकी गदा रक्खीहोकर ध्वजापर गरुड़की मूर्त्ति बनीथी शैव व सुग्रीव व मेघ पुष्प व बलाहकनाम चारघोड़े अतिसुन्दर उसरथमें जोतेहोकर दारुक नामसारथी उस परथा व बलभद्रजी के रथपर हल व मूशल उनका रक्खाहोकर ध्वजामें ताड़के वृक्ष का चिह्नबनाथा उसे देखतेही दोनोंभाई अपने २ रथपर चढ़बैठे व थोड़ीसी सेना साथ लेकर रणभूमिमें आये जैसे श्यामसुन्दरने जरासन्धकी सेनामें मारूबाजा बजते सुनकर पाञ्चजन्य शंख अपनाबजाया वैसे पृथ्वी व आकाश मारेडरके कांपउठा व जरासन्धके शूरबीरोंका हृदयधड़कनेलगा जब जरासन्ध रथ अपना बढ़ाकर श्रीकृष्णजी के सामने लेआया तब श्याम व बलरामभी अपनारथ बड़ेवेगसे उसकेसामने लेगये तब जरासन्धने अभिमानकी राह श्रीकृष्णजीसे कहा अयबालक तू अपनेमामाको मार कर मेरेसामने लड़नेआया है इसलिये तेरेऊपर शस्त्र नहींचलाऊंगा तू यहांसे भागजा इसीमें तेरा कल्याण है ॥

चौ० महाअधम पापी जग माहीं । तेरो मुख देखत हमनाहीं ॥
जिन अपने मामाको मारेउ । पापपुण्य कछु नहीं बिचारेउ ॥
तासों युद्ध कवन बिधिकीजै । जासों नेम धर्म्म सब छीजै ॥
दो० तोहिं बालकसों युधकरत आवतहै मोहिं लाज ।
याते हम बलभद्रसों युद्ध करैंगे आज ॥

जरासन्ध यह बचन मुरलीमनोहरसे कहकर बोला हे बलभद्र तुझे अपनाप्राण प्यारा न होतो मेरेसाथलड़ अभी तुझकोमारूंगा तू नहींजानता कि मैं जरासन्धहूं तेरा मारना मेरेनिकट क्या बड़ीबातहै यह बचन सुनकर श्यामसुन्दरबोले हे जरासन्ध अज्ञान अपनीबड़ाई आपकरना अच्छा नहींहोता शूरबीर अपनीस्तुति आप नहींकरते सबसे अधीनरहकर समयपर अपना पुरुषार्थ दिखलाते हैं जो अपनीबड़ाई आपकरता है उसे जगत्में कोई भला नहींकहता इसलिये तेरी भुजामें जो कुछ सामर्थ्यहो सो दिखलाव तैंने अभीतक बलभद्रका पराक्रम नहीं देखा जिसकी मृत्यु निकट आवती है उसे भली बुरीबात कहनेका बिचार नहीं रहता और तू मुझको मामाका मारने वाला जो कहताहै सो जिसतरह वह अपने अधर्म्म करनेके दण्डकोपहुँचा उसीतरह तेरीभी गतिहोगी यह बचनसुनतेही जरासन्ध बड़ेक्रोधसे अपनी सेनासमेत श्याम व बलरामपर दौड़ा व उन्हें बाणमारताहुआ पुकारकर बोला बहुत दिनतक तुम्हारा प्राण बचा अबमेरे आगेसे जीते फिरकर जाने न पावोगे जहां राजाकंस व सब दैत्यगये हैं वहां सब यदुबंशियोंसमेत तुमको भी भेजूंगा यहबात कहकर जरासन्ध व उसके सेनावालोंने ऐसेबाण व अनेक तरहके शस्त्र बलरामपर चलाये जैसे सावन भादोंकी

बूंदें बरसती हैं उससमय राम व कृष्णके रथ इसतरहसे छिपगये जिसतरह सूर्य्यबदली में दिखलाई नहींदेते जब मथुरा नगरकी स्त्रियां जो अपनी २ अटारियोंपर चढ़कर उसयुद्धका कौतुक देखतीथीं श्याम व बलराम का रथ नहीं देखा तब शोचित होकर रोनेलगीं ॥

दो० माखनप्रभु परतापते जीतत सब संसार।
ताप्रभुसों जीतोचहै मूरख अधम गँवार॥

जब जरासन्धआदिकने मोहनप्यारे की सेनाको मारनाचाहा तब राम व कृष्ण अपना २ रथ दौड़ाकर उसकीसेनापर ऐसेटूटे जिसतरह सिंह हाथियोंके गोलमें झपटता है जब श्याम व बलराम चाककेसमान रथ अपना घुमाकर युद्धकरनेलगे तब शूरबीरलोग मारमार कहकर प्राणदेते व कादरलोग मारेडरके पीछे भागकर गिरपड़ते थे उससमय घेरेरहना सेनाका चारोंओरसे घटारूपी मालूमहोकर कुण्डल दोनोंभाइयों के बिजुलीकेसमान चमकतेथे व देवता आकाशसे यह कौतुक देखकर मुरलीमनोहर की बिजय मनावतेथे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जबश्यामसुन्दर अन्तर्यामीने मथुराबासियोंको अपनेवास्ते चिन्ताकरते देखा तब धनुषचढ़ाकर ऐसा एकबाणछोड़ा कि वह प्रभुकीमायासे छूटतीसमयलाखों तीरहोकर जरासन्धकी सेनामें शूरबीर व दैत्योंकेलगा व बलरामने महाक्रोधसे हल व मूशल अपना उठाकर मारना आरम्भ किया जब दोनोंभाइयोंने जो अपनीभृकुटी फेरनेसे तीनोंलोकका नाशकरने सक्तेथे मनुष्यतन धरनेके कारण अढ़ाईघड़ीमें सब सेना जरासन्धकी वाहनोंसमेत मारडाली व सिवाय जरासन्धके और कोई जीता नहींबचा तब उस रणभूमिमें लोहूनदी रूपी बहकर हाथियोंकेशरीर व मस्तकसे रुधिर बहताहुआ कैसामालूम देताथा जैसे काले पहाड़ोंमें झरनाझरते हैं व रथियोंके मारेजानेसे खालीरथ उजड़ेहुये घर मालूम होकर नौकाकेसमान उसीनदीमें बहते थे व शिरकटाहुआ शूरबीरोंका कछुयेकी तरह बहकर हाथकटेहुये सांप व मछलीकेसमान दिखलाई देतेथे व हाथियोंका शरीर पुल ऐसा मालूमहोता था व धनुष गिरीहुई लहरकेसमान दिखलाई देकर टूटेहुये पहिया भँवर ऐसे मालूमहोतेथे व रत्नजटित भूषण सेनापतियोंके अंगकेगिरेहुये ऐसेचमकतेथे जैसे नदीकिनारे बालू चमकती है ॥

दो० मणिमुक्तनकी माल बहु टूटिपड़ीं तेहि खेत।
वह सब या बिधि देखिये ज्योंजल भीतररेत॥

उससमय केशवमूर्त्तिको रणभूमिमें महादेवजी सेना भूत व प्रेतकी अपनेसाथलिये मुण्डों कीमाला पहिनेहुये दिखलाईदिये और क्यादेखा कि भूतनियां व योगिनियां खप्पर भरकर

लोहूपीती हैं व गिद्ध कौवे व गीदड़लोथोंपर बैठेहुये मांसखाकर एकदूसरे से झगड़ते हैं उसीसमय कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दकी महिमा से क्षणभरमें हवाने उन सब लोथोंको बटोरकर एकजगह ढेरलगादिया व अग्निने सबको जलाकर भस्मकरडाला व मेघने पानी बरसाकर सब राख व हड्डीआदिकको बहादिया जिन पांचोतत्त्वोंसे पुतलातैयार होताहै वह पांचो अपने २ रूपमें मिलगये उससेनाको आते सबने देखा फिर किसीने न जाना कि क्याहोगई जब रणभूमिमें अकेला जरासन्ध खड़ारहकर बलरामजीसे गदा युद्धकरनेलगा तब बलभद्रने उसकेगलेमें हल डालकर पकड़लिया व उसका बधकरना बिचारकर श्यामसुन्दरसे पूछा आज्ञादीजिये तो इसअधर्मीको मारडालूं श्रीकृष्णजीनेकहा अभी इसकेमारनेका समयनहींहै भाई मैंने पृथ्वीकाभार उतारने व दैत्य व अधर्म्मीराजोंको मारने वास्ते अवतार लियाहै सो तुम जरासन्धको जीता छोड़देव यह कईबेर दैत्य व अधर्म्मी राजोंको बटोरकर मुझसे लड़ने आवेगा तब हम उन सबको मारकर पृथ्वीका भार उतारैंगे जब यह बात सुनकर बलरामजी ने जरासन्धको जीता छोड़दिया तब वह अति शोचित व लज्जितहोकर अपने देशमें पहुँचा उसने चाहा कि राजगद्दी छोड़कर बनमें चलाजाऊँ इतने इष्ट व मित्रके मारेजानेका शोच कैसे छूटैगा तब दूसरे राजालोग जो उसके मित्रथे जरासन्धका हाल सुनकर वहां आये व उसे धीर्य्य देकर समझाया कि लड़ाई में जीत व हार सदासे होती है इसवास्ते शूरबीर व ज्ञानियों का दोनों बातमें हर्ष व बिषाद करना उचित न होकर धीर्य्य रखना चाहिये किसवास्ते कि फिर सेना बटोरकर शत्रुसे युद्धकरना कुछ मना नहीं है परमेश्वरकी दयासे कृष्णव बलरामको यदुबंशियोंसमेत मारकर कंसके पास भेजदेवेंगे यह बचन सुनतेही जरासंध धीर्य्य धरकर सेना बटोरनेलगा व श्याम व बलराम अपनी सेनासमेत कि उसमें किसी के घावभी नहीं लगाथा आनन्दपूर्व्वक राजमन्दिर पर आये उससमय देवता ने दोनों भाइयों पर फूल बरसाये ॥

दो० माखनप्रभु या भांतिसों जरासन्धको जीत।
आये मथुरा नगरमें सब सन्तन के मीत ॥

जिससमय श्रीदुःखभञ्जन भक्तहितकारी नगरमें पहुँचे उससमय सब मथुराबासियों ने बड़े हर्षसे अपने अपने घर मंगलाचार मनाया व ब्राह्मणों ने वेद पढ़ना आरम्भ किया व स्त्रियां कोरे बर्त्तनमें दही सगुनवास्ते लेकर अपने अपने द्वारेपर खड़ीहोगईं व अनेक स्त्रियां अपनी २ अटारियोंपरसे उनपर फूल बरसाने लगीं इसतरह श्याम व बलराम सबको आनन्द देतेहुये राजा उग्रसेनके पास जाकर उनके चरणोंपर गिरपड़े व सब धन लूटका उन्हें देकर बिनयकिया हे पृथ्वीनाथ हमने तुम्हारे पुण्य व प्रताप से शत्रुओं को मारकर भगादिया अब आनन्दपूर्वक राज्यकरके प्रजाको सुख दीजिये

यह बचन सुनकर उग्रसेनने सब धन लूटका अपने कोशमें भेजवादिया व बड़े हर्ष से राज्य करनेलगे हे राजन् जब इसीतरह सत्रहबेर जरासन्ध तेईस २ अक्षौहिणी दल साथ लेकर मथुरामें लड़ने वास्ते आया व श्याम व बलरामने वही गति उसकी की तब जरासन्धने अति लज्जित व शोचितहोकर मनमें कहा अब अपने देशमें जाकर क्या मुख दिखलाऊँ उत्तमहै कि बनमें तपकरके किसी देवताका बरदान लेकर राम व कृष्णसे फिर लडूं परमेश्वरकी दयासे एकबेरभी कृष्णचन्द्र मेरेसामने से युद्ध करती समय भागजावें तो मैं उसको बड़ी बिजयजानूं जब ऐसा बिचारकर जरासन्ध बनकी ओरचला तब परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनिने राहमें उसे मिलकर पूंछा हे राजन् तुम किसवास्ते उदासहो जरासन्धने दण्डवत् करके बिनयकिया महाराज मैं सत्रहबेर श्याम व बलरामसे युद्ध करतीसमय हारगया इसलिये मारे लज्जाके मुझसे किसी को अपना मुख नहीं दिखलायाजाता जिसमें एकबेर वहभी मेरेसामने से भागजावें तो मेरी इच्छा पूर्णहो यह बचन सुनकर नारदजी बोले हे जरासन्ध काबुलमें कालयमन नाम म्लेच्छ राजा बड़ा बलवान् रहकर अकेली अकेला युद्ध करनेकी इच्छा रखता है सो तुम लड़नेका उद्यम न छोड़कर उसे अपनी सहायतावास्ते बुलावो व उसको साथ लेकर तुम दोनों मनुष्य श्याम व बलरामसे लड़ौ तो तुम्हारा मनोरथ मिलैगा यह बचन सुनकर जरासन्धने बिनय किया महाराज काबुल यहां से बड़ीदूरहै इसलिये दूत संदेशा लेकर बहुत दिनों में पहुँचैगा व आप एक क्षणभरमें पहुँचसक्ते हैं सो दयालु होकर मेरी सहायतावास्ते उसे बुलालेआइये तो बड़ा उपकार मानूंगा यह दीनबचन सुनकर नारदजी कालयमनके यहांगये व जरासन्ध अपनी राजगद्दीपर आनकर सेना बटोरने लगा जब नारदमुनि क्षणभरमें बीचसभा कालयमनके पहुँचे तब उसने दंड-वत्करके सन्मानपूर्वक नारदमुनिको अपने पास सिंहासनपर बैठाला व हाथ जोड़कर बिनयकिया हे मुनिनाथ जिसतरह आपने दयालु होकर दर्शन दिया उसीतरह कृपा करके अपने आवनेका कारण कहिये नारदमुनि बोले हमको राजाजरासन्धने तुम्हारे पास भेजकर यह सँदेशा कहाहै कि मथुरामें श्रीकृष्ण व बलराम दोनोंभाई बड़े बल-वान् व प्रतापी उत्पन्न हुये हैं सो सत्रहबेर मैं उनसे युद्ध करती समय हारगया अब अठारहवीं बेर उनके साथ युद्ध करनेवास्ते तुम्हारी सहायता चाहताहूं इस बातका जैसा उत्तर देव वैसा उससे जाकर कहदेउँ व कृष्ण जिनका नामहै वे मेघवर्ण चन्द्र मुख कमलनयन अतिसुन्दर पीताम्बर पहिने व उपरना ओढ़े रहते हैं तुम बिनामारे उनका पीछा मत छोड़ना यह बात सुनतेही कालयमन जो नाम व प्रताप जरासन्ध का पहिले से जानताथा बहुत प्रसन्नहोकर मनमें कहनेलगा देखो इतने बड़े प्रतापी राजाने हमसे सहायता मांगी है इसलिये उसका संग देना चाहिये ऐसा बिचारकर कालयमन बोला हे नारदजी आप मेरीओरसे जाकर जरासन्धसे कहदेव कि मैं तुरन्त

अपनी सेनासमेत इधरसे मथुरा को पहुँचताहूँ वह जल्दी अपनी सेनालेकर उधर से मथुरामें आवैं ऐसा कहकर कालयमन अपनी सेना साजने लगा व नारदजी वहांसे जरासन्धके पास आये और यह हाल उससे कहकर ब्रह्मलोकको चलेगये व कालयमन तीनकरोड़ सेना म्लेच्छों की जो बहुत मोटे बड़े २ दांत व लालआंखवाले भयानकरूप मैले २ कपड़े पहिनेहुयेथे अपने साथलेकर मथुराको चला व थोड़ेदिनों में वहां पहुँचकर अपनी सेनासे मथुरापुरी को घेरलिया व राजा जरासन्धभी तेईस अक्षौहिणीसमेत मथुराको चला जब मथुराबासी कालयमनकी सेना देखकर मारेडरके कांपनेलगे तब श्यामसुन्दरने द्वारकापुरी बसाना बिचारकर बलरामजी से कहा अब क्या उपाय करना चाहिये कालयमन ने अपनी सेनासे नगरको घेरलिया व जरासंध भी अपनी सेनासमेत आजकल्हमें आया चाहताहै एकसे युद्ध करताहूँ दूसरा राजा मथुरापुरी लूटकर प्रजाको बहुत दुःखदेगा ॥

दो० याते एक उपाय यह आयो है मनमाहिं ।
इन्हैं अवरकहिं राखिकै युद्धकरन हम जाहिं ॥

बलरामजीनेकहा जैसाउचितहो वैसाकीजिये यहबचनसुनकर जैसेवृन्दाबनबिहारी ने समुद्रको यादकिया वैसे वह उनके निकटचलाआया तबमुरलीमनोहरने समुद्रसे कहा तुमबारहयोजनपृथ्वी अभीपानीसे खालीकरदेव वहांहमएक पुरीबसावैंगे समुद्रने उनकीआज्ञानुसार उसीसमय बारहयोजन पृथ्वी पानी से खाली करदिया तब श्यामसुन्दरने उसीक्षण बिश्वकर्माको बुलाकरकहा तुमसमुद्रके टापूपर इसीसमय एकनगर इसतरहकारचो जिसमें सबयदुबंशी आदिक मथुराबासी सुखसेरहैं यह आज्ञा पावतेही बिश्वकर्माने उसीसमय समुद्रके टापूमेंजाकर एककोट सुनहला बारहयोजनके घेरे में बनाया उसकेभीतर अनेकमंदिर सुनहले बहुतउत्तम बनाकर उनमें रत्नादिक जड़दिये व जड़ाऊकिवांड़ लगाकर सबद्वारोंपर मोतियों की झालरलटकादिया व कोटके कँगूरे जड़ाऊ बनाकर अतिउत्तमबाजार रचदिया व सोलहहजार एकसौ आठ महल बहुत उत्तम श्यामसुन्दर के रहनेवास्ते बनाकर उनमें ऐसाबढ़िया रत्नादिक जड़दिया जिसकी चमक हजार सूर्यसे अधिक दिखलाई पड़तीथी व सबस्थानोंमें बाग अनेकरंगके फूल व फललगेहुये बनाकर कुण्ड व बावलीको गुलाबजलसे भरदिया व सबमहलों में बड़े २ आंगनतैयारकरके हाथी व घोड़े व गौ व बैलबांधने व रथ व गाड़ीआदिक रखनेकेस्थान बिलग २ बनादिये व सबमंदिरोंके द्वारपर नौबत झरने व द्वारपालकों के रहनेवास्ते बिलग २ स्थानबनाकर कोटकेचारोंओर उत्तम २ वाटिका लगादीं व जितनीबस्तु गृहस्थीकीहोतीहैं वहसबस्थानोंमें रखकर चारोंबर्णोंके रहनेकेवास्ते अलग २ महल्ले बनादिये हे परीक्षितजब बिश्वकर्माने बैकुण्ठनाथकी दयासे यहसबमुहूर्त्त भरमें

तैयारकरके द्वारकापुरी उसकानामरक्खा तब वरुणदेवता ने श्यामकर्ण घोड़े व कुबेर देवताने उत्तम २ रथ व रत्नादिक व इन्द्रने सुधर्म्मासभा द्वारकामें पहुँचादी इसीतरह अनेकदेवता बहुतउत्तम २ बस्तु जिनकानाम कहांतक वर्णनकियाजावे वहांलेआकर रखगये जबविश्वकर्माने द्वारकापुरी जहांजाने से काम क्रोध मोह व लोभ नहींव्यापते थे रचिकर श्यामसुन्दर से खबरकी तब कृष्णचन्द्र आनंदकन्दने उसीक्षण योगमाया को बुलाकरकहा तुमअभी मथुराबासियों को गौ व घोड़े व हाथीआदिक सबबस्तु समेत रातोंरात मथुरासे लेजाकर द्वारका में पहुँचादो पर कोईमनुष्य वहांसे यहांपहुँचनेतक यहभेद न जाने योगमायाने उनकी आज्ञानुसार उसीक्षण राजाउग्रसेन व बसुदेव आदिक सबमथुराबासियोंको जो नींदमें सोये थे वहांसे उठालेजाकर द्वारकापुरी में पहुँचादिया जबमथुरावासी समुद्रका शब्दसुनकर नींदसे चौंकउठे तबआपसमें अचम्भामानकर कहनलगे देखो यहां समुद्रकहांसेआया जबउन्होंने अच्छीतरह बिचार किया तो मालूमहुआ कि यहदूसरानगर बासुदेवकी इच्छासे समुद्रमें बसाहै जबउन्हों ने मथुरासे उत्तम स्थानमें अपनेकोदेखा और सबबस्तु गृहस्थीकी वहांपाई तबस्त्री व पुरुषप्रसन्नहोकर बड़ाई मोहनप्यारे की करनेलगे ॥

इक्यावनवां अध्याय ॥

कालयमन व राजा मुचुकुन्दकी कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर मथुराबासियोंको द्वारकाभेजचुके तब बलभद्रजीको मथुरामें छोड़कर आप प्रातसमय अकेले चतुर्भुजीरूप धारण किये मुकुटजड़ाऊ सूर्य्यसेअधिक चमकताहुआ शिरपरबांधे कुण्डल व पीताम्बर पहिने कौस्तुभमणि व मोतियोंकाहार बैजयन्तीमाला गलेमेंडाले व उपरनारेशमी ओढ़े अंग २ में रत्नजटित भूषणसाजे व शंख व चक्र व गदा व पद्म चारोंहाथमें लिये केशरकातिलक लगाये तापहारिणी चितवनमंन्दमन्द मुसकरातेहुये कालयमन के सन्मुखगये ॥

दो० जाय कृष्ण दर्शनदियो धरे चतुर्भुज रूप ।
अंग अंग बहुरंग छबि शोभित परम अनूप ॥

जब कालयमनने नारदमुनिके कहने प्रमाण सबलक्षण उनमें देखे तब श्यामसुन्दरको अतिबलवान् समझकरमनमें कहा राजाकंस व जरासन्धकी सेनाको इसीपुरुष नेमाराथा पर इससमय यहकुछ शस्त्रनलेकर पैदल मेरेसन्मुख लड़नेआया सो इसके साथ शस्त्रलिये रथपरचढ़ेहुये युद्धकरना धर्मनहीं है ऐसाबिचारकर कालयमन रथसे कूदपड़ा व उसने पुकारकर अपनी सेनावालों से कहा कि कोई मनुष्य इसमोहनीमूर्त्तिपर शस्त्रमतचलावो तब ऐसाकहकर कालयमन आप अकेला श्यामसुन्दर के

निकट आया जबमोहनप्यारेने एकतो म्लेच्छका अंग छूना उचितनहींजाना दूसरे उन्हें देवतोंकावरदान सत्यकरनेवास्ते राजामुचकुन्द को अपना दर्शनदेकर भवसागर पार उतारनाथा इसलिये बैकुंठनाथ उसके सामनेसे भागे व कालयमन उन्हेंपकड़ने वास्ते पीछेदौड़कर अभिमानकी राहबोला ॥

चौ० कालयमन यों कहै पुकारि । काहे भागेजात मुरारि ॥
आय पर्योअब मोसों काम । ठाढ़े रहो करो संग्राम ॥

मुझको राजाकंस व जरासन्ध मतसमझना मैं यदुबंशियों का वीर्य संसार में नहीं रक्खूंगा क्षत्रिय व शूरबीरोंको युद्धमें से भागना मरणतुल्य होताहै ॥

दो० रिपु सन्मुख ते भाजिबो क्षत्रिय को है लाज ।
प्रकट पिता बसुदेवको दोषलगाया आज ॥

हे श्याममूर्त्ति मैं तुमको बड़ा शूरबीर सुनकर तुम्हारेसाथ लड़ने आयाहूं सो एक क्षण ठहरकर मेरेसाथ युद्धकरो तुम्हाराप्राण न मारूंगा श्यामसुन्दर उसकी बातका कुछ उत्तर न देकर एकहाथका अन्तर देतेहुये इसतरह भागेजातेथे जिस में वह निराश न होवै व पकड़नेभी न पावे जबकालयमन बहुतदूरतक पीछे दौड़ाचलागया तब केशवमूर्त्ति बीचकन्दरा गंधमादनपहाड़के जहांराजामुचकुन्द सोयाहुआथा घुस-गये और वहांजाकर पीताम्बरअपना राजामुचकुन्दको उढ़ादिया व आप अन्तर्द्धान होकर उसीजगह एककोनेमें खड़ेहोगये जबपीछेसे कालयमन दौड़ता व हांफताहुआ उसीकंदरामें पहुँचा तब उसने मुचकुंदकोपीताम्बर ओढ़े देखकर क्याजाना कि यह वहीपुरुषहै जो भागाआवताथा मेरेडरसे पीताम्बर ओढ़कर सोरहाहै ऐसाबिचारतेही कालयमन बड़ेक्रोधसे एकलात राजामुचकुंदको मारकर बोला यह कौनशूरताहै जो रणभूमिमेंसे भागकर यहांसोरहा उठअभी तुझे मारडालूं जब ऐसाकहकर कालयमन ने वह पीताम्बर मुचकुन्दके शरीरपरसे खींचलिया तब वह लातलगने व पीताम्बर झटकनेसे जागउठा ॥

दो० ताकी दृष्टि प्रभावते अग्नि उठी तनवांहि ।
देखतही जरके भयो यमनभस्म क्षणमांहि

हे राजन् कालयमनने मरतीसमय बैकुण्ठनाथकादर्शन पायाथा इसलिये वह सब पापोंसेछूटकर मुक्तिपदवीपरपहुँचा इतनीकथा सुनकर परीक्षितनेपूछा हेमुनिनाथ मुच-कुन्द कौन महातेजवान्होकर किसकारण कन्दरामें सोयाथा जिसकी दृष्टिपड़ने से कालयमन ऐसाप्रतापी राजा जलगया शुकदेवजीबोले हे परीक्षित मुचकुन्द राजाइक्ष्वाकु

क्षत्रियकेकुलमें युवनाश्वकापौत्र व मान्धाताकापुत्र बड़ा प्रतापी व चक्रवर्त्तीराजाहोकर अपनेधर्म व तपकेबलसे सबराजोंको अधीनकिये था उन्हींदिनों दैत्योंने देवतों को लड़ाई में जीतकर राजसिंहासन उनकाछीनलिया तबइन्द्रवरुण आदिक देवता शूर-ताई व बड़ाई राजामुचकुन्दकी सुनकर मर्त्यलोक में आये व बहुतदीनहोकर राजा मुचकुन्दसे बिनयकिया हमलोग दैत्योंके हाथसे बहुत दुःख पाकरतुम्हारे शरणआये सो सहायताकरके दैत्योंसे हमारा राज्यदिलवादीजिये यहबातसदासे होतीआई है कि जब देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंको दुःख पड़ताहै तबक्षत्री लोगउनकी रक्षाकरते हैं यहदीनबचन सुनतेही राजामुचकुन्दने देवतों का सहायकहोकर दैत्योंसे युद्धकिया व दैत्योंको जीतकर देवतोंका राज्यदेदिया सो जब २ देवतोंको दैत्यलोग दुःखदेतेथे तब २ राजामुचकुन्द देवतों की सहायता करके दैत्यों को भगादेताथा एकबार मुचकुन्द को दैत्योंसे लड़तेहुयेकई युगबीतगये तब स्वामिकार्तिकजी देवतोंकी सहायताकरने आये उससमय देवतोंने राजा मुचकुन्दसेकहा अबहमलोगोंकी सहायता स्वामिकार्तिकजी करैंगे तुमने हमारे वास्ते बड़ापरिश्रमकिया है इसलिये सिवाय मुक्तिके जो वरदान मांगोसो तुमकोदेवैं ॥

दो० अर्थ धर्म अरु कामना ये सबहैं ममहाथ।
एक पदारथ मुक्तिको देहैं श्रीब्रजनाथ॥

यहसुनकर मुचकुन्दने कहा बहुतदिनहुये मैं अपनेघरद्वार व बालबच्चोंसे बिलग पड़ाहूं आज्ञादेव तो जाकर उन्हेंदेखूं देवतोंनेउत्तरदिया तुम्हारे वंशमें अबकोई नहींरहा सब मरगये यहबचनसुनकर मुचकुन्दबोले यहीहाल है तो बहुतदिनसे नींदभर सोया नहीं तुमलोग कोईऐसी एकान्त जगहमुझे बतलादेव जहांजाकर सोऊं व कोईमुझे न जगावै देवतोंने प्रसन्नहोकरकहा तुम गन्धमादन पहाड़की कन्दरा में जाकर शयन करो हमलोग ऐसाबरदानदेते हैं जो कोई वहांजाकर तुमको जगावै उसीसमय तुम्हारी दृष्टिपड़ने से जलकर भस्महोजावै व हमारे आशीर्वादसे तुम्हें परब्रह्म परमेश्वरकादर्शन प्राप्तहोगा सो राजामुचकुन्द त्रेता युगसे यहबरदानपाकर उसकन्दरा में सोयाथा श्याम-सुन्दर अन्तर्यामी यह सबभेदजानतेथे इसलिये उन्होंने देवतोंका बरदानसच्च करने वास्ते कालयमन को वहांलेजाकर मुचकुन्दकी दृष्टिसे मरवाडाला उसकेजलने उपरांत बृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारी ने चतुर्भुजी रूपसे मेघवर्ण चन्द्रमुख कमलनयन शंख चक्रगदापद्म लिये किरीटमुकुटसाजे बनमाला बिराजे पीताम्बरपहिने तीनोंलोक की सुन्दरताई धारणकियेहुये राजामुचकुन्दको दर्शनदिया जब उनकेचन्द्रमुखके प्रकाश से उस अँधियारी कन्दरा में उजियालाहोगया तब राजामुचकुन्दने उनको देखकर साष्टांगदण्डवत्किया ॥

दो० माखन प्रभु के दर्श ते भयो सरस आनन्द ।
जोरि हाथ व्रजनाथ से पूछत है मुचकुन्द ॥

हे दीनानाथ तुम्हारेबराबर तीनोंलोकमें कोई सुन्दर न होगा जैसे आपने दयालु-होकर दर्शनदिया वैसे कृपाकरके अपनाहाल वर्णनकीजिये मेरीसमक्ष में आप सूर्य या चन्द्रमा या कोई लोकपाल या ब्रह्मा व बिष्णु व महेश तीनों बड़ेदेवतों में मालूमहोते हैं जो तुम्हारेआवने से यहकन्दरा प्रकाशितहोगई और ये कोमलचरण आपके फूलोंसे भी अधिकनरमहैं इसपहाड़ व कांटों में किसतरह बिराजे सो अपनानाम व गोत्र बत-लाइये कदाचित् आप मुझसेपूछैं कि तू कौनहै सो मैं मुचकुन्दनाम राजा मान्धाताका बेटाहूं व दैत्योंसे लड़तीसमय परिश्रमकरने में देवतों ने मुझे ऐसाबरदानदिया था कि तुम निश्चिन्तहोकर सोवो तुम्हैं जगानेवाला तुम्हारी दृष्टिपड़ने से जलकर मरजावैगा इसीवास्ते यहमनुष्य जिसने मुझेजगायाथा देखो जलकरभस्महोगया यहसुनकर बृन्दा-बन बिहारी ने कहा हे मुचकुन्द मैं कौनसानाम अपना तुझेबतलाऊं मेरेनामों की कुछ गिनतीनहीं है मैंने लाखोंबेर संसारमें अवतारलेकर बहुतसे कामकिये हैं कदाचित् कोई चाहे तो बालूकीरेणुका व पानी बरसने के बूंद गिनलेवेपर मेरेअवतार और कामों की गिनतीकरना बहुतकठिनहै इसलिये अपने पिछलेअवतारोंकाहाल तुझसे नहींकहसक्ता पर इसबेर पृथ्वीका भारउतारनेवास्ते बसुदेव व देवकीकेघर यदुकुलमें अवतारलियाहै इसलिये मेरानाम बासुदेवभी कहते हैं व हमने मथुरामें राजाकंसको दैत्योंसमेत मार-कर पृथ्वीका बोझउतारा व सत्रहबेर तेईस २ अक्षौहिणीदल साथलेकर राजाजरासन्ध मथुरापर चढ़आया सो वहभी मुझसे हारगया अठारहवींबेर उसकीसहायता करनेवास्ते यह कालयमन तीनकरोड़सेना म्लेच्छोंकी साथलेकर मुझसेलड़नेआया था सो तुम्हारी दृष्टि से जलकरमरगया कदाचित् तुमकहो कि कालयमनको अपने हाथसे तुमने क्यों नहींमारा सो इसका यहकारणहै कि देवतोंकाबरदान सच्चकरनेवास्ते मुझेतुमको अपना दर्शनदेकर भवसागर पारउतारना था इसलिये मैंने कालयमनको तेरीदृष्टि से जलाकर अपनादर्शन तुझेदिया पिछलेजन्म तैंने मेरा बहुतभारी तपकियाथा उसकाफल आज पाकर तू जन्म व मरणसे छूटगया अबतुझे जो इच्छाहो सो बरदानमांग हम देवैंगे बै-कुण्ठनाथका दर्शनमिलनेसे मुचकुन्दके मनमें ज्ञान उत्पन्नहोकर उसको यादआई कि गर्गमुनि ने मेरी जन्मपत्री देखकरकहा था तुझे परमेश्वरका दर्शन मिलैगा वहबात आंखों से दिखलाई दी ॥

दो० सोई द्विजको बचन हरि सत्य भयो है आज ।
प्रकट आइ दरशन दियो माखनप्रभु व्रजराज ॥

जब मुचकुन्दको बिश्वास हुआ कि यह चतुर्भुजी रूप भगवान् हैं तब उसने श्यामसुन्दरके सन्मुख हाथ जोड़कर बिनय किया हे महाप्रभु आप निर्गुण व निराकार अविनाशी पुरुष होकर केवल हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते सगुण अवतार धरतेहो तुम्हारे आदि व अन्तको कोई नहीं जानता सारासंसार आपकी मायामें लपटरहाहै इस लिये किसीका ज्ञान ठिकाने न रहकर सब मनुष्य बीचजाल काम क्रोध मोह लोभके ऐसा फँसरहे हैं कि किसीतरह मायारूपी जालसे छूटने नहीं सक्ते ॥

चौ० करत कर्म सब सुखके हेत । याते भारी दुख सहि लेत ॥

जिसतरह कुत्ता सूखी हड्डी चबातीसमय अपने मुखके लोहूका सलोना स्वाद पाकर अज्ञानतासे वह स्वाद हाड़में निकलता समझताहै उसीतरह मनुष्य स्त्रीप्रसंग करतीसमय अपने बीर्य्य गिरनेका क्षणभर सुखपाकर अज्ञानतासे जानते हैं कि स्त्री से यह आनन्द हमैं मिलताहै जे अज्ञानी मनुष्य इस झूठे सुखको अच्छा जानकर कामदेव के मदमें परस्त्रीगमन करके अपना परलोक बिगाड़देते हैं व ऐसा काम नहीं करते जिसमें आवागमनसे छूटजावें उन्हें कुत्तेसेभी निकृष्ट समझना चाहिये हे दीनानाथ संसारी जीवोंको बिना कृपा व दया तुम्हारी इसमायारूपी अँधियारे कूपसे बाहर निकलना बहुत कठिनहै जो मनुष्य तुम्हारे शरणहोकर आपका ध्यान व स्मरण करै वह मायाजालसे छूटकर परमगतिको पहुँचने सक्ताहै सो मैं आजतक राज्य व धनके मदमें तुम्हारे भजन व स्मरणसे बिमुख रहा व जिन स्त्री व पुत्रोंकी प्रीतिमें फँसकर हाथी व घोड़े आदिक संसारी सुखको अपना जानताथा वह सब नाशहोकर केवल यह तनु मेरा जिसे राजा कहते हैं रहिगया सो यहभी किसी कामका नहीं है किसवास्ते कि यह तनु मरने उपरान्त सियार आदिकके खाजाने से बिष्ठा होजाताहै व पड़ेरहने व सड़ि जाने से कीड़े पड़िजाते हैं व जला देने से राख होजाताहै इसलिये जो लोग अपने तनु व बलका अभिमान करते हैं उन्हें मूर्ख समझना चाहिये मनुष्य तनु पाकर सिवाय भजन व स्मरण परमेश्वरके संसारी व्यवहारमें मन लगाना अच्छा नहीं होता पर अज्ञानी मनुष्य शुभकर्म्म में एकक्षण मन नहीं लगाते व आठोंपहर स्त्री व पुत्रकी माया में फँसे रहकर संसारी झूठे व्यवहारको सच्चा जानते हैं जो कोई बिनाइच्छा केवल तुम्हारे प्रसन्न होनेवास्ते आपका ध्यान व स्मरण करताहै उसे बड़ाभाग्यवान् समझना चाहिये पर वैसे मनुष्य संसारमें कमहैं मुझ अज्ञानी व अभिमानी को अपने भवसागर पार उतरनेका बड़ा शोच लगाथा सो मेरे पिछले जन्मके पुण्य सहाय हुये जो कमल रूपी तुम्हारे चरणों में जिनका ध्यान ब्रह्मादिक देवता व बड़े २ योगी व ऋषीश्वर दिनरात अपने हृदयमें रखते हैं अपना दर्शन देकर मुझे कृतार्थ किया इसलिये सिवाय भक्ति व ध्यान इन चरणों के जो मुक्ति देनेवाले हैं दूसरी कोई संसारी वस्तु माया मोहमें फँसावनेवाली नहीं चाहता ॥

दो० मैं जप तप नहिं कुछ कियो नहिं चीन्हे महराज ।
एक तुम्हारी कृपाते दर्शन पायों आज ॥

हे महाप्रभु तुम अपने भक्तोंको अर्थ धर्म्म काम मोक्ष चारों पदार्थ देनेवाले हो इसलिये यह इच्छा रखताहूं कि तुम्हारी कृपासे भवसागर पार उतरजाऊं मैं आपके शरणागतहूं जब राजा मुचकुन्दने यह सब स्तुतिकी तब श्यामसुन्दरने हँसकर कहा हे मुचकुन्द तेरा ज्ञान धन्यहै तैंने सच्चीबात कही तू सदासे मेरा परमभक्त है पिछले जन्म तुमने बहुतसा तपकरके हमारा दर्शन चाहाथा उसका फल आज मिलकर तेरी कामना पूर्णहुई व हमको तैंने पहिंचाना व हमने तुमको वरदान देनेवास्ते ललचाया था सो तैंने किसीबस्तु लेनेकी इच्छा न रखकर केवल मेरे चरणों की भक्ति मांगी इसतरहका ज्ञान सब किसीको प्राप्त नहीं होता अब तेरे भवसागर पार उतरने का उपाय बतलादेताहूं सो तू कर किसवास्ते कि तैंने पृथ्वी लेने व परस्त्रीगमन करने में बहुत पाप कियाहै वह बिना तपकिये नहीं छूटैगा इसलिये तू उत्तरदिशामें जाकर मेरे स्मरण व ध्यानमें लीनहो यह तनु छोड़ने उपरान्त ब्राह्मणके घर जन्मलेकर मेरी भक्ति करैगा तब यह तनु छोड़ने उपरान्त मेरी ज्योतिमें समाजायगा ॥

दो० यदपि पदारथ मुक्तिको राजन दीजत नाहिं ।
तद्यपि हम तुमको दियो जानि प्रीति मनमाहिं ॥

यहबात सुनतेही मुचकुन्द वैकुण्ठनाथके चरणों पर गिरपड़ा व जब उन्हें साष्टाङ्ग दण्डवत्करके कन्दरासे बाहर निकला तब उसने मनुष्य व वृक्षोंका छोटारूप देखकर जाना कि कलियुगका लक्षण निकट पहुँचा ऐसा बिचारकर उसीसमय राजा मुचकुन्द बदरिकाश्रम में तप व जप करनेवास्ते चलागया व सच्चेमनसे परमेश्वरका तप करने लगा व गरमी व शरदी व बर्षाऋतुको बराबर जानकर हर्ष व शोचको एकसासमझा जब वह तनु छोड़कर ब्राह्मणके यहां जन्मपाया तब हरिभक्तिके प्रतापसे मरनेउपरांत परब्रह्म परमेश्वर के रूपमें लीनहोगया कालयमन ब्राह्मणके बीर्य्य से उत्पन्न हुआथा इसलिये मुरलीमनोहरने उसको अपने हाथसे नहीं मारा इतनी कथा सुनकर परीक्षितने पूँछा हे मुनिनाथ कालयमन म्लेच्छने ब्राह्मण के बीर्य्य से किसतरह जन्मपाया शुकदेवजी बोले हे राजन् एकदिन गौड़ब्राह्मण गर्गमुनिके साले ने ठट्ठे से उन्हें कहा तुम नपुंसकहो जब यही बात सुनकर यदुबंशीलोग हँसीकी राह गर्गऋषीश्वरको हिजड़ा कहनेलगे तब उन्होंने यदुबंशियों को नीचा दिखलाने वास्ते महादेवका तप करना आरम्भ किया जब शिवजीने प्रसन्नहोकर उनसे बरदान मांगने को कहा तब गर्गमुनि ने हाथ जोड़कर बिनयकिया मुझे ऐसा पुत्र दीजिये जिसमें सब यदुबंशी डरकर भाग जावें महादेवने एकफल उन्हें देकर कहा यह फल स्त्रीको खिलादेने से वैसापुत्र उत्पन्न

होगा सो गर्गब्राह्मणने वह फल लेकर अपने पास रखछोड़ा जब तालजंघनाम क्षत्रिय ने जो काबुलमें बड़ा प्रतापी राजा होकर सन्तान नहीं रखताथा पुत्र उत्पन्न होनेवास्ते गर्ग ऋषीश्वरकी बहुत सेवाकी तब ऋषीश्वर महाराज ने उसकी स्त्रीको बीर्य्यदान देकर वह फल खानेवास्ते दिया सो उसने परमेश्वरकी इच्छानुसार अपनी सौतों के डरसे जल्दी में वह फल विना स्नानाकिये खालिया तब गर्गमुनिने कहा तेरा पुत्र बड़ाप्रतापी व बलवान् उत्पन्न होकर म्लेच्छोंका कर्म्म करैगा इसीकारण कालयमन बेटा तालजंघ क्षत्रियका म्लेच्छ होगयाथा यह हाल सुनकर परीक्षितका सन्देह मिटगया ॥

बावनवां अध्याय ॥

श्याम व बलरामका जरासन्धके सामनेसे उसका मनोरथ पूर्ण करनेवास्ते भागना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दर मुचकुन्दको बिदाकरके मथुरा में चले आये व बलरामजीसे कहा हमने राजामुचकुन्दकी दृष्टिसे कालयमनका नाशकराके मुचकुन्दको बदरीकेदारमें तप करनेवास्ते भेजदिया अब चलो कालयमनकी सेना मारकर पृथ्वी का भार उतारैं ऐसाकहकर दैत्यसंहारण बलरामसमेत मथुरासे बाहर निकले व कालयमनकी सेनामें चलेगये ॥

दो० संकर्षण को साथले माखनप्रभु करतार।
कालयमन की सेन सब हती एकही बार ॥

जब क्षणभरमें श्याम व बलराम हल व मूशल व बाणोंसे म्लेच्छोंको मारकर सब बस्तु लूटकी अपनेसाथ लेचले तब राजाजरासंधने अपनी सेनासमेत पहुँचकर उन्हें घेरलिया उससमय बैकुण्ठनाथ भक्तबत्सलने जरासन्धका मनोरथ पूर्णकरनेवास्ते सब बस्तु लूटकी वहांछोड़दी व बलरामसमेत उसकेसामनेसे पैदल भागे तब जरासन्धके मंत्रीने कहा महाराज तुम्हारे प्रतापकेसामने कौन ऐसाशूरबीर है जो ठहरनेसकै देखो राम व कृष्ण दोनोंभाई घर दुवार व सब बस्तु अपनी छोड़कर आपके डरसे नंगेपांव भागेजाते हैं जब जरासन्धनेभी दोनोंभाइयोंको अपनी आंखोंसे भागतेहुये देखा तब अपनी सेनासमेत उनके पीछे दौड़ा व पुकारकर यों कहा ॥

चौ० काहे डरके भागे जात। ठाढ़े रहौ करौ कछु बात ॥
गिरत उठत कम्पत क्योंभारी। आई है ढिग मृत्युतुम्हारी ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब श्याम व बलराम नारदजी का वचन सत्यकरनेवास्ते लोक व्यवहार दिखलाकर जरासन्धके सन्मुखसे भागे तब वह बड़ेहर्ष से उनकेपीछे दौड़ा व दोनों भाई भागे हुये प्रवर्षण पहाड़पर जो ग्यारह

योजन ऊंचाथा व उसमें सिवाय एकरास्ते के दूसरीराह नहींथी चढ़गये व पहाड़के ऊपरजाकर खड़ेहुये ॥

चौ० देखि जरासंध कहै पुकारी । शिखर चढ़े बलभद्र मुरारी ॥
अब यह कैसे जायँ पराय । यह पर्वतको देव जलाय ॥

ऐसी आज्ञापातेही उसकेसेवकोंने उसपहाड़को जहांसदा पानी बरसताथा लकड़ियों का ढेर चारोंओर इकट्ठाकरके उसमें आगिलगादी व जो राह पहाड़पर चढ़नेकी थी वहां जरासन्ध आप खड़ाहोगया जब थोड़ीदेरमें वह अग्नि पर्व्वतके शिखरतक लहकि कर बुझगई तब वह उस अग्निमें जब मरना दोनोंभाइयों का समझकर मथुरापुरीको चलाआया और वहां अपनाढिंढोरा पिटवादिया व जितनेस्थान राजा उग्रसेन व बसु-देवजीके उसनगरमें थे वह सब खोदवाकर उसजगह नयेस्थान बनवादिये व अपना कारोबार वहां छोड़कर सेनासमेत हर्षपूर्वक मगधदेशमें आगा व श्यामसुन्दरने बल-रामजीसे कहा बड़ेशोचकी बात है जो हमाराचरण आवनेसे भी यह पहाड़ जलजावै ऐसाकहकर बैकुण्ठनाथने उसपहाड़को अपनेचरणोंसे ऐसादबादिया कि पातालमें चला गया आगि बुझनेउपरान्त फिर उसीतरह उठादिया ॥

दो० ता गिरिवरते कूदिके माखनप्रभु यदुराय ।
रामसहित श्रीद्वारिका पलमें पहुँचे जाय ॥

उन्हें देखतेही सबद्वारकाबासी प्रसन्नहोगये व मुरलीमनोहरकी दयासे आनन्दपूर्बक वहां रहनेलगे कुछदिनबीते राजारेवतने ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार रेवतीनाम अपनीकन्या चन्द्रमुखी व मृगलोचनीको द्वारकापुरी में लाकर बलरामजीसे बिवाहदिया व श्याम सुन्दर बलरामजी समेत कुण्डिनपुरमें जाकर रुक्मिणीनाम राजाभीष्मककी कन्या जो शिशुपालको मांगीगईथी अनेकराजोंमें से बर्जोरी हरिलेआये व अपने घरलाकर उसके साथ बिवाहकिया यह सुनकर परीक्षितने बिनयकिया कि कृष्णचन्द्र रुक्मिणीको बहुत राजोंमें से किसतरह जीतकर लेआये थे ।

दो० माखनप्रभुके कर्मगुण सुने महासुख होय ।
जो कोइ ऋषिमुनिसेसुने बड़ीभाग्य है सोय ॥

यह वचनसुनकर शुकदेवजीबोले हे राजन् भीष्मकनाम बड़ाप्रतापी राजाबिदर्भ देशका कुण्डिनपुरमें रहकर धर्म्मपूर्व्वक राज्यकरताथा व रुक्माग्रज आदिक पांचपुत्र उसकेहुये जब रुक्मिणीनाम कन्या महासुन्दरी राजाभीष्मकके यहां उत्पन्नहुई तब उसने मंगलाचार मनाकर ज्योतिषियोंसे उसके जन्मलग्नका फलपूछा तब पण्डितोंने

कहा कि हमारे बिचारमें यह गुण व रूप व शीलकीसागर होकर आदिपुरुष भगवान् से बिवाहीजावैगी यह सुनकर राजाने बड़ेहर्षसे पण्डितोंको सन्मानपूर्व्वक बिदाकिया जब राजकुमारी प्रतिदिन चन्द्रकलासी बढ़कर कुछ सयानीहुई तब एकदिन नारदमुनि कुण्डिनपुरमेंगये व उसकाहाथ देखकर रुक्मिणीसे कहा तेराबिवाह कृष्णचन्द्र आनन्द कन्द बैकुण्ठनाथके साथ होगा यहबातसुनकर रुक्मिणी बहुतप्रसन्नहुई व नारदमुनिने द्वारकापुरी में जाकर कहा हे बैकुण्ठनाथ राजाभीष्मक के एककन्या रुक्मिणीनाम लक्ष्मीसमान अतिसुन्दरी उत्पन्नहोकर तुम्हारेबिवाहने योग्यहै यहबातसुनतेही केशव मूर्त्ति अन्तर्यामीको भी उसकी चहनाहुई उन्हींदिनोंमें याचकोंने कुण्डिनपुर में जाकर यश व गुण मुरलीमनोहरका जो जो काम उन्होंने गोकुल व बृन्दाबन व मथुरामेंकिये थे गाया तब वहांके लोगोंको श्यामसुन्दरके दर्शनकी इच्छाहुई जब इसबातकी चर्चा होते २ राजाभीष्मकको खबरपहुँची व उसनेभी उनयाचकों को राजमन्दिरपर बुलवाकर श्यामसुन्दर का यशगवाया तब राजा व रानीआदिक उनकी लीलासुनकर अतिप्रसन्नहुये ॥

चौ० चढ़ीअटा रुक्मिणि सुन्दरी। हरिचरित्र ध्वनिश्रवणपरी॥
अचरजकरे भूलिमन रहै। फेरि उचकिकर देखन चहै॥
सुनिकर कुँवरि रहीमनलाय। प्रेमलता उर उपजी आय॥
अतिआनँदमयभई सुन्दरी। उसकी सुधिबुधि हरिगुणहरी॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित पहिले रुक्मिणी नारदमुनिसे मुरलीमनोहरका गुण सुनचुकीथी जब उसनेयाचकोंसे भी उनकीबड़ाई सुनी तब उसे उनकेसाथ बिवाहकरनेकी अधिक इच्छाहुई उसीदिनसे रुक्मिणी आठोंपहर खातेपीते सोते जागते उठते बैठते ध्यान सांवलीसूरत मोहनप्यारेका प्रेमपूर्वक करनेलगी और उनके मिलनेवास्ते प्रतिदिन पार्वतीजीको पूजनकर यह बरदान मांगतीथी ॥

चौ० मुझपर गौरि कृपा तुमकरो। यदुपति पतिदे ममदुखहरो॥
दो० कमल नयनके ध्यान में मग्न रहै दिन रैन।
खान पानकी को कहै लहै नहीं क्षण चैन॥

जब रुक्मिणीने दिनरात मोहनीमूर्त्तिका ध्यान रखकर अपनेमनमें यह प्रणकिया कि सिवाय श्यामसुन्दरके दूसरेसे बिवाह नहींकरूंगी तब उसके मातापिताभी यहहाल जानकर इसीबात में प्रसन्नथे जब कभी रुक्मिणी बीचबिरह मनहरण प्यारेके उदास होकर रोनेलगतीथी तब उसकी सहेलियां चर्चा बालचरित्र नंदलालजी का सुनाकर उसे प्रसन्नकर देतीथीं ॥

दो० या विधि लीला कृष्णकी गावैं सब दिनरैन ।
सो सुनिके श्रीरुक्मिणी लही सदा सुखचैन ॥

एकदिन रुक्मिणी सहेलियोंकेसाथ खेलतीहुई राजाकेपास आई तब भीष्मकने उसे बिवाहनेयोग्य देखकर मनमें कहा अब इसकाबिवाह जल्दी नहींकरता तो संसारीलोग मेरी निन्दाकरेंगे जिसकेघर कुमारीकन्या तरुणहोजाती है उसे दान व पुण्य जपआदिक शुभकर्म्म करनेका फल नहींमिलता ऐसाबिचारतेही राजाने अपने पांचोंबेटे व मंत्री व इष्टमित्रोंको सभामें बैठाकरकहा अब रुक्मिणी सयानीहुई इसलिये कोई राजकुमार जो कुलीन व सबगुणोंसे भराहो ठहरानाचाहिये यहबात सुनकर सभावालोंने अनेक राजकुमारोंकानाम बतलाकर उनकेरूप व गुणका वर्णनकिया पर राजाकेमनमें कोई नहींभाया तब रुक्माग्रज उसके बड़े बेटेने कहा हे पृथ्वीनाथ नगर चँदेली में राजा शिशुपाल कुलीन व बलवान् है रुक्मिणी उसे बिवाहकर संसार में यशलीजिये जब राजा उसकीबातपरभी नहींबोले तब रुक्मकेश राजाके छोटेपुत्रने कहा ॥

चौ० रुक्मिणि पिता कृष्णकोदीजै । बासुदेव से नाता कीजै ॥
यह सुनि भीष्मक हर्षेगाता । कह्यो पूत तुम अच्छीबाता ॥
तू बालक सबसे बड़ज्ञानी । तेरी बात भली हममानी ॥

दो० तरुण छोट सों पूंछके कीजै मन परतीति ।
सार बचन गहि लीजिये यही जगतकी रीति ॥

यदुबंशियों में राजाशूरसेन बड़े प्रतापीहोकर बसुदेवजी उनकेपुत्र ऐसे धर्मात्मा हैं जिनकेघर आदिपुरुष भगवान्ने श्रीकृष्णनामसे अवतारलिया व राजाकंसआदिक अधर्मियों को मारकर सब यदुबंशी व प्रजाको बड़ासुख देते हैं ऐसे द्वारकानाथ को रुक्मणी देकर संसारमें यश व बड़ाईलेना उचित है यह बचन सुनतेही तीनोंछोटे पुत्र राजाके और मंत्रीआदिक सभावालोंने प्रसन्नहोकर कहा महाराज आपने बहुत अच्छा बिचाराहै ऐसाबरव घर दूसरा नहीं मिलैगा यहबात सुनतेही रुक्माग्रज बड़ा पुत्र राजाका जिसकेसम्मतसे राजकाज होताथा सब सभावालोंपर झुंझलाकर बोला ॥

चौ० समुझि न बोलत महागँवार । जानत नहीं कृष्ण व्यवहार ॥
बारह वर्ष नन्द के रह्यो । तब अहीर सबकाहू कह्यो ॥

दो० जन्मभयो यदुबंश में बस्यो नन्द घर आय ।
कांध कमरिया कर लकुट फिरे चरावतगाय ॥

हे पिता वह ग्वाल गँवारहोकर उसकी जाति पांतिका क्या ठिकाना है उसे कोई नंदजीका बेटा जानकर कोई बसुदेवका बालक कहतेहैं आजतक यहभेद अच्छीतरह नहींखुला कि किसकाबेटाहै व यदुबंशी कुछ प्राचीन राजा नहीं हैं क्याहुआ जो थोड़े दिनोंसे बढ़गये इससे उनकीगिनती तिलकधारीराजोंमें नहींहोसक्ती कदाचित् श्रीकृष्ण बसुदेव यादवका पुत्र समझाजावै तौभी यादवलोग हमारेबराबर कुलीन न होकर वह अपनीकन्या हमकोदेवैं तो उचितहै सिवाय इसके श्रीकृष्ण राजाउग्रसनका सेवक कहलाता है उसे रुक्मिणी बिवाहकर संसारमें क्या यशपावैंगे बैर व बिवाह बराबरवाले से करना चाहिये जब रुक्मिणीका बिवाह कृष्णकेसाथ करनेमें सब कोई मुझे ग्वाल का सालाकहैंगे तब मैं अपना मुँह लोगोंको क्या दिखलाऊंगा ॥

चौ० याबिधि औगुण भरे कन्हाई । तासों हमनहिं करत सगाई ॥

इसलिये शिशुपाल तिलकधारी राजाको जिसकेप्रताप व डरसे दूसरे राजा थर २ कांपते हैं रुक्मिणी बिवाहदीजिये व फेर कृष्णकानाम मेरेसामने मतलीजिये जब यह बचनसुनकर सब सभावाले अपने २ मनमें पछिताकर चुपहोरहे व राजाभीष्मक बड़ा पुत्र समझकर कुछ नहींबोले तब राजकुमारने उसीसमय ज्योतिषियोंसे शुभ लग्नपूछ कर एक ब्राह्मणकेहाथ तिलक बिवाह रुक्मिणीका राजाशिशुपाल के पास भेजदिया जब वह ब्राह्मण तिलकलेकर नगर चँदेलीमें राजमन्दिरपर पहुँचा व शिशुपालने बड़े हर्षसे तिलकलेकर उसब्राह्मणको सन्मानपूर्व्वक बिदाकरदिया तब वह ब्राह्मण कुण्डिन पुर में चला आया व राजाभीष्मक व रुक्माग्रज से तिलक लेने का हाल कहकर बोला राजाशिशुपाल बड़े धूमधाम से बरातसाजकर बिवाहने आते हैं आप अपने यहां तैयारी कीजिये यह बातसुनकर पहिले राजाभीष्मक बहुत उदासहोगये फिर अपने मनको धैर्य्यदेकर रानीसे यह सब हाल कहा तब वह अपनी नातेदार स्त्रियोंको बुलाकर रुक्मिणी के बिवाहका मंगलाचार मनानेलगी व राजाने अपनेमंत्रियोंको बिवाह की तैयारी करनेवास्ते आज्ञादी व कुंडिनपुर में यह चर्चा घर २ होनेलगी कि राजा रुक्मिणीका बिवाह श्रीकृष्णजीसे करतेथे पर रुक्माग्रज दुष्टने नहींहोने दिया अब शिशुपालसे बिवाह उसकाहोगा इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् जब राजमन्दिरमें केलेकेखम्भे गाड़कर सोनेका कलश धरनेउपरान्त मँड़वा तैयारहुआ व स्त्रिया मंगलाचार गीतगाकर अपने कुलकी रीति करनेलगीं व राजाने न्योता भेजकर अपने इष्ट व मित्रोंको बुलाया व नाच व रंगआदिक अनेक तरहका मंगलाचार वहां होने लगा तब दोचार सखियोंने आनकर रुक्मिणीसे कहा तेराबिवाह रुक्माग्रजने राजा शिशुपाल के साथ ठहराया है सो अब तू रानी होगी यहबातसुनतेही रुक्मिणी अपने मनमें बहुत उदासहोकरबोली हे प्यारी मेरेस्वामी मनसा वाचा कर्मणा से श्यामसुन्दर

बैकुंठनाथ हैं उनकेसिवाय मैं दूसरे को अपनापतिबनाना नहींचाहती ऐसाकहकर रुक्मिणी शोच व विचार करनेलगी ॥

चौ० शोचत महा करे दुख भारी । मिलैं कौन बिधि कृष्णमुरारी ॥

दो० माखन प्रभुके दरशको किहिबिधि करौं उपाय ।
पुरी द्वारका दूर अति कछु नहिं बनै बनाय ॥

रुक्मिणीने बहुत शोच व बिचारकरके यहबात मनमेंठहराई कि किसीको मुरली-मनोहरकेपास भेजकर अपनीइच्छा उनसे प्रकट कियाचाहिये आगे वे मालिकहैं जब रुक्मिणीने इसकेसिवाय दूसरा कुछउपाय उत्तमनहींदेखा तब एकब्राह्मण बुद्धिमान्को अपने माता व पिता व भाईसे छिपाकर बुलाया व अपनामनोरथ कहने व चिट्ठीदेने उपरान्त हाथजोड़कर उससे बिनय किया महाराज आप कृपाकरके तुरन्त यह चिट्ठी द्वारकामें लेजाइये व श्रीकृष्णजी के हाथ देकर मेरासन्देशा कहनेउपरान्त उन्हें अपने साथ यहां लेआइये तो जन्मभर आपका गुणमानकर यहसमझूंगी कि तुम्हारी दयासे मैंने द्वारकानाथको स्वामीपाया यहबचन सुनतेही वहब्राह्मण रुक्मणी से बिदाहोकर मुरलीमनोहरका ध्यानकरताहुआ द्वारकाकोचला व बैकुण्ठनाथकी कृपासे तुरन्त वहां पहुँचकर द्वारकापुरी की शोभा इसतरहपर देखी कि रत्नजटित स्थान वहांबने होकर घर २ मंगलाचार व कथा पुराणहोरहा है जब वहब्राह्मण यहसब शोभा व आनन्द देखताहुआ श्यामसुन्दरकी डेवढ़ीपर जहां हजारों द्वारपालखड़े थे जापहुँचा व मारेडर के भीतर जानेनहींसका तब द्वारपालकों ने उसब्राह्मणसे पूंछा ॥

चौ० को हो आप कहां से आये । कौन देश की पाती लाये ॥

दो० सकल ब्यवस्था आपनी तिनसों कही जनाय ।
कुण्डिनपुर को बिप्रहौं अबहीं पहुंचो आय ॥

उसब्राह्मणका हालसुनकर एक द्वारपालकबोला महाराज तुमकिसवास्ते यहां खड़े हो हमारेस्वामीके स्थानमें किसीब्राह्मणको जानेवास्ते मनानहीं है आप बेधड़क भीतर चलेजाइये श्यामसुन्दर सामने सिंहासनपरबैठे हैं वे तुम्हारा बड़ाआदरकरैंगे यहबचन सुनतेही जब वहब्राह्मण कृष्णचन्द्रकेसामने जहां वे जड़ाऊ सिंहासनपर पीताम्बरपहिने बैठेथे चलागया तब त्रिलोकीनाथने ब्राह्मणको देखतेही सिंहासनसे उतरकर दण्डवत् की व सन्मानपूर्वक अपनेपास बैठाला व चरणधोकर चरणामृतलिया व उसके शरीर पर उबटन व फुलेलमलवाकर स्नानकराया व छत्तीसव्यंजन खिलाकर पान व इला-यचीदिया व सुगंधित फूलोंका गजरापहिनाया व बड़ेप्रेमसे पूछा महाराज आपकहांसे

आवते हैं व जिसदेशमें तुमरहतेहौ वहांकाराजा अपने कर्मधर्मसे रहकर प्रजापालन व ब्राह्मणोंकी सेवा अच्छीतरह करताहै या नहीं ॥

चौ० कौन काज यहँ आवन भयो । दरशदिखाय हमैं सुखदयो ॥

दो० कहत बचन द्विजराजसों माखनप्रभु या भांत ।
देखत हरिकी दीनता यादव सब मुसुकात ॥

यहबचनसुनतेही वहब्राह्मण रुक्मिणी की चिट्ठी उनके आगेरखकरबोला हे कृपानिधान मेरेआवने का यहकारणहै कि कुण्डिनपुर में रुक्मिणी राजाभीष्मककी कन्या आपकानाम व गुणसुनकर दिनरात यहइच्छारखती है जिसमें तुम्हारे चरणोंकी दासी होवे सो उसकापिता उसे तुम्हारेसाथ बिवाहनेचाहताथा परन्तु रुक्माग्रज बड़ेराजकुमारने यहबात न मानकर सगाईउसकी शिशुपालसे की है इसलिये वह बहुतराजोंको साथलेकर बड़ेधूमधाम से कुण्डिनपुर में बिवाहकरने आवेगा व रुक्मिणी मनसाबाचा कर्मणासे तुम्हारेचरणों में प्रीतिरखकर उसके साथ बिवाहकरना नहींचाहती इसीवास्ते राजकुमारी ने व्याकुलतासे चिट्ठी भेजकर तुम्हें बुलायाहै यहबचनसुनतेही केशवमूर्त्ति भक्तहितकारी ने बड़ेहर्षसे वहचिट्ठी उसीब्राह्मणको देकरकहा तुम इसकोपढ़ो ब्राह्मण वह चिट्ठीपढ़कर सुनानेलगा उसमें रुक्मिणी ने लिखाथा हे त्रिलोकीनाथ अबिनाशी पुरुष तुम्हारेबराबर कोईदूसरा सुन्दरनहीं है सो मेरीविनयसुनिये हे परब्रह्मपरमेश्वर मैं आपकी स्तुतिसुनकर मनसाबाचा कर्मणासे अपनेको तुम्हारीदासी समझतीहूं व सिवायतुम्हारे दूसरेको नहींचाहती सो आपभी दयालुहोकर मुझे अपनेचरणोंकेपास रखिये यद्यपि मैं आपकेयोग्य नहींहूंपर तुम्हारीदासियों में रहूंगी मेराबड़ाभाई बरजोरी मुझे शिशुपालसे बिवाहने चाहताहै पर मैं यहबात न चाहकर प्रेमपूर्वक यहइच्छारखती हूं कि तुम्हारी सेवाकरके अपनाजन्म स्वार्थ करूं कदाचित् आप ऐसाकहैं कि कुलवन्ती कन्या ऐसा कर्म नहींकरतीं जो अपनेबिवाहकासँदेशा आपभेजैं सो हे दीनानाथ इसका यहकारण समझिये तुम्हारीस्तुति जो संसारमें प्रकटहै सुनकर मेरीलज्जा छूटगई तुम्हारेचरणों की रज मिलनेवास्ते ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता व बड़े २ योगी व मुनि इच्छारखते हैं पर वहधूर उनको जल्दी नहींमिलती सो मैं अपने मनसाबाचाकर्मणा से यहइच्छा रखती हूं जिसमें उनचरणोंकी सेवाकरके वहरज अपनेमस्तकपर लगाऊं कदाचित् वह धूर मुझे नहींमिलैगी तो उनचरणों में ध्यानलगाकर यहतनु छोड़देऊंगी ॥

चौ० जाको शिव सनकादिक ध्यावैं । वेदपुराण भेद नहिं पावैं ॥
ताही चरण कमल की आस । मनमधुकर ह्वै कीन्हों बास ॥

दो० तुम चाहो या मति चहो माखनप्रभु यदुराय ।

मैं चाहति हूं आपको प्रेम प्रीति के भाय ॥

हे महाप्रभु अब शिशुपाल बरातसाजिकर कुण्डिनपुरमें मुझे ब्याहने आवैगा सो तुम वेग आनकर शत्रुओंको जीतनेउपरांत मुझे यहांसेलेजाव कदाचित् आपनहींआवैंगे तो मैं अपनाप्राण तुम्हारे चरणोंपर न्यवछावरकरके जहां दूसराजन्मपाऊंगी उसीतनु में तुम्हारा भजनकरिकै हरिचरणोंपास पहुंचोंगी ॥

चौ० हौं तुम्हरी चेरी की चेरी । तुम को सकल लाज है मेरी ॥
कृपाकरो मोहन यदुनाथा । रथचढ़ि चलो बिप्र के साथा ॥

हे दीनदयालु ऐसामतकरना कि सिंहकाआहार गीदड़लेजावे कदाचित् आप ऐसा कहैं कि हम राजमन्दिर में से तुझे किसतरह हरलेजावेंगे सो मैं बिवाह से एकदिन पहिले देवीजी की पूजा करने वास्ते नगर के बाहर जाऊंगी जब वहां से फिरकर घर आनेलगूं तब आप राहमें से मुझे अपने साथ लेजाना संसारमें तुम्हारानाम दीनदयालु प्रकट है इसालिये मुझे महादीन जानकर दयालुहोना ॥

चौ० जो तुमबेगि न पहुँचोआय । तो मोहिं असुरब्याहिलैजाय ॥
दो० या बिधि पाती श्रवण करि माखनप्रभु कर्त्तार ।
कुण्डिनपुर के चलनको मनमें कियो बिचार ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

रुक्मिणी को श्यामसुन्दरका हरिले आवना ॥

शुकदेवजी ने कहा अय परीक्षित श्यामसुन्दरने वह चिट्ठी सुनतेही बड़ी प्रसन्नतासे उस ब्राह्मणका हाथ पकड़लिया व उसको अकेले में लेजाकर कहा अय ब्रह्ममूर्त्ति जिसदिनसे मैंने रुक्मिणी के रूप व गुणका हाल नारदजीके मुखसे सुनाहै उसीदिनसे मैंभी उसके मिलनेवास्ते चाहना रखताहूं और यहभी मुझको मालूमहै कि रुक्माग्रज मेरेसाथ शत्रुता रखकर उसका बिवाह मुझसे होने नहीं देता सो तुम आज रात्रिको यहांरहो कल्ह प्रातसमय तुम्हारे साथ चलकर रुक्मिणीकी इच्छा पूर्णकरूंगा जिसतरह काठमें काठ रगड़ने से आगि उत्पन्न होकर साराबन जलजाताहै उसीतरह शत्रुओं को सेनासमेत जीतकर रुक्मिणी को लेआऊंगा जब यह बात सुनकर ब्राह्मणदेवताको धैर्य हुआ तब मुरलीमनोहरने दारुक सारथीको बुलाकर कहा कल्ह प्रातसमय रथ तैयार करके लेआवना जब प्रातःकाल दारुक सारथी रथ उनका साजकर लेआया तब श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उस ब्राह्मणसमेत रथपर चढ़कर कुण्डिनपुरको चले जब वह सारथी रथ दौड़ाकर नगरसे बाहर लेगया तब प्राणनाथने क्या देखा कि दाहिनी

ओर हरिणोंका झुण्ड चलाजाताहै यह शकुन देखकर उस ब्राह्मणने केशवमूर्त्तिसे कहा महाराज अच्छे शकुन मिलने से मेरे विचारमें ऐसा आवताहै कि जिस कामके वास्ते आप चलते हैं वह अर्थ तुरन्त सिद्धहोगा श्यामसुन्दर बोले आपकी कृपासे मेरा मनोरथ मिलैगा यह बात कहकर रथ आगेको बढ़ाया जब बलभद्रने सुना कि मुरलीमनोहर अकेले कुण्डिनपुरको गये तब उन्होंने जाकर राजा उग्रसेनसे कहा महाराज हमने सुनाहै कि राजा शिशुपाल जरासन्ध आदिक बहुतसे राजोंको अपने साथ बरात में लेकर रुक्मिणी से बिवाह करनेवास्ते कुण्डिनपुर आवताहै व मोहनप्यारे यहांसे अकेले बिना कहे वहां चलेगये हैं इसलिये हमको मालूम होताहै कि वहां श्यामसुन्दर व उन लोगों से बड़ायुद्ध होगा आप आज्ञादीजिये तो हमलोगभी जावैं यह बात सुनतेही उग्रसेनने बलरामसे कहा तुम सब सेना मेरी साथ लेकर ऐसी जल्दी कुण्डिनपुर में जाव कि बासुदेव वहां पहुँचने न पावैं राहमें उनसे मिलकर उन्हें अपने साथ यहां लेआवो यह बचन सुनतेही बलरामजी ने उसीसमय दो अक्षौहिणी दल व बहुत शूर बीरोंको अपने साथ लेकर कुण्डिनपुरको कूचकिया व राहमें श्रीकृष्णजी से मिलकर बोले हे भाई मुझेभी साथ न लेकर अकेले चलेआये मेराप्राण तुम्हारे ऊपर न्यवछावर है श्यामसुन्दर भाईको देखने से बहुत प्रसन्नहुये व रुक्मिणीजी की व्याकुलताका हाल जानकर महीने का रास्ता एकदिन व एकराति में चले और जिसदिन शिशुपालकी बरात कुण्डिनपुरमें आवनेवाली थी उसीदिन वहां जापहुँचे तब क्या देखा कि उस नगरमें घर २ मंगलाचार होकर गली व चौराहों में गुलाबजल व चन्दनका छिड़काव होरहाहै व सब छोटे बड़े कुण्डिनपुरबासी अच्छा २ गहना व कपड़ा पहिने हुये अपने २ द्वारे व चौराहोंपर बरात देखनेवास्ते हर्षपूर्व्वक बैठे हैं ॥

दो० कुण्डिनपुरकी छबि महा बरणिसकै कबिकौन।
जाकी शोभा देखिकै सुख पावत ऋषिमौन ॥

यह सब शोभा यहांकी देखते हुये श्यामसुन्दर ने अपना रथ राजाभीष्मकके बागमें लेजाकर खड़ा किया व उस ब्राह्मणसे बोले महाराज हम अपना डेरा यहां करते हैं तुम जाकर हमारे आवनेका हाल रुक्मिणी से कहिदेव जिसमें उसको धैर्य्यहो और वहां का समाचार फिर आनकर हमसे कहो कि उसका उपाय कियाजावै यह बचन सुन कर वह ब्राह्मण राजमन्दिरको चला और उसीदिन राजाभीष्मक बरात निकट आवने का हाल सुनकर अपनी सेना व न्योतहारी राजोंको साथ लियेहुये बरातियों को आगे से लेनेगया व सन्मानपूर्व्वक उन्हें अपने साथ लेआकर यथायोग्य स्थानमें जनवास दिया और अनेकपदार्थ भोजनके सब बस्तु समेत जो जिसे चाहियेथा उनके स्थान पर भेजदिया व बरात पहुँचनेकी खबर सुनकर राजमन्दिरमें स्त्रियां मंगलाचार मनाने

लगीं और पुरोहितने रुक्मिणी से सोना व गोदान दिलवाकर मोतियोंका कँगना उसके हाथमें बँधवादिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कृष्ण-चन्द्र आनन्दकन्द कुण्डिनपुरमें पहुँचचुके थे पर रुक्मिणी को उनके आवनेका हाल नहीं मालूमथा इसलिये वह यह सब चरित्र देखतेही अपने मनमें शोचित होकर कहने लगी देखो श्यामसुन्दर चिट्ठी भेजने से मुझे निर्लज्ज समझकर अभीतक नहीं आये और उस ब्राह्मणने भी अबतक फिरकर कुछ सँदेशा नहीं दिया कि प्राणनाथ आवते हैं या नहीं इससे मालूम होताहै कि बैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी ने मुझे कुरूप समझ कर कृपा नहीं किया या वह ब्राह्मण रास्ता भूलकर द्वारकाको नहीं गया या बरातकेसाथ जरासन्धका आवना सुनकर नहीं आये ॥

चौ० मेरी कछुक चूक मन आनी। याते नहिं आये सुखदानी ॥
अजहूँ नहिं आये नँदलाला। आयमोहिं बरिहै शिशुपाला ॥

हे महाप्रभो जब शिशुपाल कल्ह मुझे बिवाहने उपरांत हाथ पकड़कर लेजावैगा तब मैं अबला अनाथ क्या करूंगी इससमय मेरे तप व जप व देवीजीकी पूजाने भी कुछ सहायता नहींकी हे परमेश्वर मैं क्या करूं किधर भागजाऊं या अपना प्राण देडालूं अब तुम्हारे बिना किसीका भरोसा नहीं रखती रुक्मिणी अनेक बातें मनमें बिचारकर किसीके पांवका खटका सुनती तो आना उस ब्राह्मणका जानकर चारोंओर देखने लगती थी जैसे चन्द्रमाका प्रकाश प्रातस्समय मलीन होजाताहै वैसे रुक्मिणी का चन्द्रमुख उसी शोचमें उदास होगयाथा जिसतरह पारा एकजगह नहीं ठहरता उसी तरह घबड़ाहट से कभी कोठेपर व कभी द्वारे पर कभी खिड़कियों में जाकर उस ब्राह्मणके आने की राह निहारा करतीथी व लज्जाबश अपने मनका भेद किसी से नहीं कहती थी ॥

दो० माखनप्रभुके ध्यान में प्राणनकी सुधिनाहिं।
तबहीं फड़के नयनभुज मुदित भई मनमाहिं ॥

यह दशा रुक्मिणीकी देखकर एकसखी जो सब भेद जानतीथी बोली हे प्यारी तुम इतना घबड़ाकर क्यों अपनाप्राण देतीहो वह बिनापूंछे अपने पिता व भाई के किसतरह आवैंगे तब दूसरीसखीने कहा वे दीनदयालु अन्तर्य्यामी तुम्हारे मनका हाल जानकर बिनाआये न रहैंगे तुम अपनेमनको धैर्य्यदेकर व्याकुल मतिहो मेरी समझमें वह कुण्डिनपुरमें पहुँचचुके हैं उसका बचनसुनकर रुक्मिणीने कहा इससमय मेरीबाईआंख व भुजा फड़कती है तब वह सखीबोली इसे बहुतअच्छा शकुन समझो अभीकोई आनकर ऐसीखबर देगा कि श्यामसुन्दर आयेहैं जिससमय रुक्मिणी यहचर्चा

अपनी सखियों से कररहीथी उसीसमय उसब्राह्मणने पहुँचकर रुक्मिणी को अशीश देनेउपरांत कहा केशवमूर्त्तिने बलरामजी व सेनासमेत यहां आनकर राजाके बागमें डेराकिया है ॥

दो० रुक्मिणि विप्रहि देखिके कीन्हों बहुत हुलास।
कहत तुम्हारे धर्मसे अब पूजी मम आस ॥

इससमय रुक्मिणीको ऐसी प्रसन्नताहुई कि जैसे मृतकके तनुमें प्राण आजावैं व तपकरनेवाला अपनामनोरथ पाकर प्रसन्नहोवे तब उसने हाथजोड़कर ब्राह्मणसे विनय किया हे द्विजराज तुमने बैकुण्ठनाथके आवनेकाहाल सुनाकर मुझे जीवदानदिया मैं इसके बदले तुमको तीनोंलोककी सम्पदादूँ तो भी तुमसे उऋण नहींहोसक्ती यहबात कहिकर जैसे रुक्मिणीने कृपादृष्टिसे उसब्राह्मणकी ओर देखा वैसे उसकेघर लक्ष्मीजी का बासहोगया फिर वह ब्राह्मण आशीर्व्वाद देकर राजाभीष्मकके पास चलागया और श्यामसुन्दरके आनेका समाचार ज्योंका त्यों राजासे कहिदिया जब राजाने सुना कि श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द मेरेयहां विवाहकरनेवास्ते आनकर बागमें टिकेहैं तब वह उसीक्षण बड़ेहर्षसे बहुतरत्नादिक साथलेकर अपनेचारों छोटे बेटोंसमेत बाटिकामें चला गया जब उसनेदूरसे राम व कृष्ण दोनोंभाइयोंको बैठेहुये देखा तब सवारीपरसे उतर कर पैदल उनकेनिकट चलागया व रत्नादिक उन्हें भेंटदेकर विनयपूर्व्वक बोला ॥

चौ० मेरे मन बच तुमहौहरी। कहा कहों जो दुष्टन करी ॥

हे महाप्रभो जब आपने दयालुहोकर अपनादर्शन मुझेदिया तब मैं कृतार्थहोकर अपने मनोरथको पहुँचा फिर राजाभीष्मक बहुतअच्छे स्थानमें श्याम व बलरामको टिकाकर राजमन्दिरपर चलाआया व सब पदार्थ भोजनादिकका उनके यहां भेजकर यों कहनेलगा कि रुक्मिणी श्रीकृष्णजी के साथ बिवाहने योग्यहै पर क्याकरूं मेरा कुछ बश नहींचलता ॥

चौ० हरि चरित्र जानै नहिं कोय। क्याजानैं अब कैसी होय ॥

जब कुण्डिनपुर बासियोंने दोनोंभाइयोंके आनेका हाल सुना तब सब छोटे बड़ोंने उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनकर झुंडकेझुंड उनके दर्शनवास्ते वहांपहुँचे व उन्हें दण्ड-वत्करके अपने अपने लोचनोंका फल प्राप्तकिया व बड़े हर्षसे आपसमें कहनेलगे ॥

दो० हैं अतिसुन्दर श्यामवर कहैं परस्पर लोग।
यह शिशुपाल महाअधम नहीं रुक्मिणी योग ॥

परमेश्वरकीदयासे हमारी इच्छापूर्णहोकर रुक्मिणीका बिवाह मुरलीमनोहरके साथ

होवे और श्याम व बलराम दोनोंभाइयों की जोड़ी चिरंजीविनी रहे हे राजन् जब चारघड़ी दिनरहा तब राम व कृष्ण रथपर बैठकर कुण्डिनपुरकी शोभा देखनेवास्ते निकले जिस गली व बाजार व चौराहेपर उनकीसवारी पहुँचतीथी वहांके सब स्त्री व पुरुष अपनी २ खिड़कीव चौबारे व द्वारोंपरसे दोनोंभाइयोंपर पुष्पआदिक बरसाकर आपसमें यों कहतेथे ॥

चौ० नीलाम्बर ओढ़े बलराम । पीताम्बर पहिने घनश्याम ॥
कुण्डल चपल मुकुट शिरधरे । कमल नयन माधव मनहरे ॥

जब श्याम व बलराम नगरकी शोभा व राजा शिशुपालादिककी सेना देखतेहुये अपने डेरेपर पहुँचे तब रुक्म्यग्रज उनके आनेका हाल सुनतेही बड़ेक्रोधसे अपने बापके पास जाकर बोला तुम सच बतलावो श्रीकृष्ण हमारे यहां बिवाहमें बिघ्नकरने वास्ते किसके बुलानेसे आये हैं राजाभीष्मकने कहा मैंने उनको नहींबुलाया तब वह जनवासे में जाकर शिशुपाल व जरासन्धसे बोला कुण्डिनपुरमें श्याम व बलरामभी आये हैं सो तुम अपने सेनापतियोंसे कहदेव कि चैतन्यरहैं उनदोनों भाइयोंकानाम सुनतेही राजाशिशुपाल मारेडरके चित्रकारीसा चुपचापरहकर कुछ नहींबोला पर जरासन्धने रुक्मसेकहा सुनोमित्र इन्हीं दोनोंभाइयोंने राजा कंसादिक बड़े २ शूरबीरोंको सहजमें मारलियाथा यहां जो आये हैं तो अवश्य कुछ उपाधिकरैंगे इन्हें तुम बालक मतसमझो यह बड़े प्रतापीहोकर आजतक किसीसे नहींहारे सत्रहबेर तेईस २ अक्षौहिणी दल मेरा इनदोनोंभाइयोंने लड़कर मारडाला जब अठारहवीं बेर मैं सेनालेकर इन पर चढ़ा तब यह दोनोंभाई बिनालड़े मेरेसामने से भागकर पर्व्वतपर चढ़गये जब मैंने उसपहाड़ के चारोंओर आगिलगवादी तब वहांसे कूदकर द्वारकामें जाबसे ॥

चौ० इनको काहू भेद न पायो । करन उपद्रव यहँ भी आयो ॥
यह हैं छली महाछल करैं । काहू को नहिं जानों परैं ॥

इसवास्ते अब कोई ऐसाउपाय करनाचाहिये जिसमें हमलोगोंकी लाजरहै यहबात सुनकर रुक्म्यग्रज अभिमानसे बोला श्याम व बलराम क्याबस्तुहैं जिनसे तुम इतना डरतेहो मैं उनको अच्छीतरह जानताहूं वृन्दावन में नाचगायकर गौवें चरायाकरतेथे वे बालक गँवार युद्धकाहाल क्या जानते हैं तुम किसीबातकीचिन्ता मतकरो कृष्ण बलरामको यदुबंशियों समेत हम अकेले हटादेवेंगे हे राजन् उसदिन रुक्म इसतरह उन्हें बोध देकर अपनेघर चलाआया व शिशुपाल व जरासन्धने आपसमें अनेकउपाय बिचारकर बड़ी चिन्तासे वहरात काटी प्रातसमय वह दोनों इधर बरात निकालनेकी तैयारी करनेलगे व उधर राजाभीष्मकके यहां मंगलाचार व बिवाहका उद्योग होने

लगा व जातिभाइयों की स्त्रियों ने रुक्मिणी को उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनाकर दुलहिनों के समान बनाया जब चारघड़ी दिनरहे बहुतसी ब्राह्मणी जो उसरोज मौन व्रत रक्खेथीं रुक्मिणीको हजार सहेलियों समेत साथलेकर गावती बजावती देवीपूजा करनेवास्ते चलीं तब राजा शिशुपालने यह समाचार सुनकर इसडरसे कि कदाचित् मोहनप्यारे रुक्मिणी को बरजोरी उठा न लेजावें पचासहजार शूरवीर उसकी रक्षा करनेवास्ते संग करदिये सो वहलोग अनेक तरहके शस्त्र लेकर राजकुमारी के साथ चले उससमय रुक्मिणी सहेलियों के झुण्डमें धीरे २ हंसरूपी चाल चलती हुई कैसी सुन्दर मालूम होती थी जैसे चन्द्रमा तारों में शोभा देताहै व शिशुपाल व जरासन्धके शूरबीर काले काले कपड़े पहिने उसको चारोंओर घेरेहुये श्यामघटासे मालूम होकर बीचमें जड़ाऊ बाला पहिनने से कान रुक्मिणीजी का बिजुलीकी तरह चकताथा सो रुक्मिणीजी ने मन्दिरमें पहुँचकर देवीजीका चरण धोया व बिधिपूर्व्वक पूजनकरके हाथ जोड़कर बिनयकिया ॥

दो० बालापनते करतिहौं बहु बिधानते सेव ।
जो तुम सांची गौरिहौ मनमानत फल देव ॥

यह बचन सुनतेही दूसरी स्त्रियों ने भी जो उसके साथमें थीं हाथ जोड़कर कहा हे अम्बिके मातः ऐसी कृपाकरो जिसमें राजदुलारी का मनोरथ मिलै जब पूजाकरने व परिक्रमा लेने व ब्राह्मण खिलावने उपरान्त वह चन्द्रमुखी जिसके प्रकाशसे अँधेरा छूटजाताथा रोलीकी बेंदीलगाकर मंदिरसे बाहर निकली उससमय वह मृगलोचनी ऐसी सुन्दर मालूम देती थी जिसपर हजारों रति कामदेवकी स्त्री न्यवछावर होजावैं ॥

दो० वादिन रुक्मिणि प्रातते धरे हती ब्रत मौन ।
पूजाकरि छबिसों चली बरणिसकै कबिकौन ॥

हे राजन् जिससमय वह महासुन्दरी श्याममिलनकी आशा लगाये गजरूपी चालसे धीरे धीरे सहेलियों समेत राजमन्दिर पर आवने लगी उसीसमय श्रीकृष्ण-चन्द्र आनन्दकन्द भी तीनोंलोकों की सुन्दरताई धारण किये अकेले रथपर बैठे हुये वहां आन पहुँचे ॥

दो० पूजिगौरि जबहीं चली एक कहत अकुलाय ।
सुन प्यारी आये हरी देख ध्वजा फहराय ॥

यह बचन सुनतेही जैसे राजकुमारी ने घूँघट उठाकर मुसुकराती हुई रथकी ओर देखा वैसे सब शूरबीर रखवारी करनेवाले वह तिरछीचितवन व मन्दमुसुकान देखतेही ऐसे अचेत होगये कि शस्त्र उनके हाथ से गिरपड़े ॥

सो० भृकुटी धनुष चढ़ाय अञ्जन बरुणी पनच कै।
लोचन बाण चलाय मारे पै जीवत रहै॥

उसीसमय बृन्दाबनबिहारी ने अपना रथ सखियों के झुण्डमें लेजाकर रुक्मिणी के पास खड़ा करदिया जैसे राजकुमारी ने लजाती हुई हाथ बढ़ाकर मोहनप्यारे को मिलनेचाहा वैसे श्यामसुन्दरने बायेंहाथसे रुक्मिणीका हाथ पकड़के अपने रथपर बैठा लिया व शङ्ख बजाकर वहांसे रथ अपना हांका ॥

चौ० काँपतगात सकुच मनभारी । छांड़िसबै हरिसंग सिधारी॥
ज्यों बैरागी छांड़ै गेह । कृष्ण चरणस करै सनेह॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रुक्मिणी अपने ब्रत व पूजा का फल पाकर पिछला सब शोच भूलगई व राजा जरासन्ध व शिशुपालके शूरबीरों से कुछ नहीं बनपड़ा श्रीकृष्णजी इसतरह उनलोगों के बीचमें से रुक्मिणीको लेकर चलेगये जिसतरह सिंह सियारोंके गोलमेंसे अपना आहार लेकर निर्भय चलाजाता है जब वहां से बाहर कोशपर रथ मुरलीमनोहरका जापहुँचा तब वह शूरबीर सचेत होकर उनके पीछे दौड़े ॥

दो० ऐसी बिधि कन्या हरी भई प्रकट यह बात ।
सब राजा सुनकर कुढ़े मनहीं मन पछितात॥

जब बलरामजी ने देखा कि श्यामसुन्दर रुक्मिणी को रथपर बैठाकर द्वारकाकी ओर चलेजाते हैं तब वहभी अपनी सेनासाजकर शत्रुओं के लड़नेवास्ते श्रीकृष्णजी के पास चलेआये और मुरलीमनोहरने रुक्मिणी को डरसे घबड़ाई हुई देखकर कहा हे प्राणप्यारी अब तू किसीबातका शोचमतकर द्वारकामें पहुँचतेही शास्त्रानुसार तुझसे बिवाहकरके तेरा मनोरथ पूर्ण करूंगा जब श्यामसुन्दर इसतरह धैर्य्य देकर अपने गले की माला रुक्मिणी को पहिनादी तब उसका भय छूटगया ॥

चौवनवां अध्याय॥

जरासन्ध व रुक्म्यग्रज आदिकको श्याम व बलरामसे युद्ध करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब मुरलीमनोहर रुक्मिणी को इसतरह हरलेगये और यह समाचार शिशुपालने सुना तब जरासन्ध व दन्तबक्र आदिक सब बरात वाले राजा अपनी २ सेना साथ लेकर श्यामसुन्दरके पीछे चढ़दौड़े व आपसमें कहने लगे कि बड़े लज्जाकी बातहै हमलोगों के रहने परभी यादवका बेटा रुक्मिणी को बरजोरी हरलेजावै जब इसीतरहकी चर्चा आपसमें करते हुये निकट रथ श्यामसुन्दरके पहुँचे

तब उनलोगों ने ललकारकर कहा तुम दोनों भाई कहां भागेजातेहो खड़े होकर हमारे साथ लड़ाई करो जो शूरबीर क्षत्रियहैं वह युद्धविषे पीठ नहीं दिखलाते यह बचन सुनतेही बलरामजी ने अपनी सेनासमेत फिरकर उनलोगों से ऐसा युद्धकिया कि दोनोंओरसे अनेक शस्त्र चलकर नदीरूपी रुधिर बहिनिकला ऐसा भारी युद्ध देखकर रुक्मिणी घबड़ागई और बड़े शोचसे मनमें कहने लगी देखो मेरेवास्ते श्याम व बलराम इतना दुःख पाते हैं हे परमेश्वर यह सब शत्रु कबतक लड़ैंगे व इतनी सेना किस तरह मारी जावेगी जब रुक्मिणी इसीतरह अनेक बातैं बिचाकर मारे डरके कांपने लगी तब बैकुण्ठनाथ अन्तर्य्यामी ने उससे कहा तू मेरी महिमा जानबूझकर इतना क्यों डरती है धैर्य्यरख अभी एकक्षण में यह सब शत्रु इसतरह मारे जावैंगे जिसतरह सूर्य्य निकलने से तारे दिखलाई नहीं देते जब मुरलीमनोहर के समझाने परभी राज दुलारीका डर नहीं छूटा तब उन्होंने आप लड़ना उचित नहीं जाना व रथ अपना रणभूमिसे अलग लेजाकर खड़ा करदिया और युद्धका कौतुक देखने लगे ॥

दो० यादव असुरन से लड़त होत महा संग्राम।
ठाढ़े देखत कृष्ण हैं करत युद्ध बलराम॥

उससमय बलरामजी ने क्रोधितहोकर हल व मूसल अपना उठालिया व बड़े २ शूरबीर व हाथी व घोड़ोंको उससे मारनेलगे जिसतरह किसानलोग खेत काटडालते हैं उसीतरह बलभद्रजीने क्षणभरमें बहुतसीसेना शत्रुओंकी मारगिराई जब जरासन्ध आदिक राजोंने यहदशा अपनी सेनाकीदेखी तब रणभूमिसे भागकर शिशुपालकेपास चले आये इतनी कथासुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित उससमय देवता अपने बिमानोंपरसे बलरामजीपर पुष्पबरसाकर उनकी स्तुतिकरनेलगे जब शिशुपालने यह दुर्दशा अपने साथी राजोंकी देखी तब मारेशोच व लज्जाके मुखउसका पीलाहोगया और जरासन्धसे रोकर कहा महाराज रुक्मिणीको श्रीकृष्णचन्द्र बरजोरी उठालेगये व लड़ाई में भी हमलोगों से कुछनहीं बनपड़ा इसलिये लज्जाबश मुझसे अपनामुख किसी को दिखलायानहीं जाता और यहकलंक मेरा जन्मभर नहींछूटैगा इससे कहोतो मैंभी लड़कर मरजाऊं ॥

चौ० नहिं इत रहौं करौं बनबासा। लेइहौं योग छांड़ि सब आसा॥

यहबातसुनकर जरासन्धने कहा महाराज आप ऐसेज्ञानीको मैं क्यासमझाऊं बुद्धिमान्लोग हानि व लाभमें हर्ष व बिषाद न करके सब बातोंको परमेश्वरकेआधीन समझते हैं जिस तरह काठकी पुतली को मदारीनचाते हैं उसीतरह सबजीवों के कर्त्ताधर्त्ता नारायणजी होकर जोचाहते हैं सोहोताहै इसलिये दुःख व सुखको एकसाजानकर संसारीव्यवहार

स्वप्नवत् समझनाचाहिये देखो इसीतरह मैंभी सत्रहबेर इनसे हारगयाथा पर कुछउदास नहीं हुआ जब अठारहवींबेर ये दोनों भाई मेरेसामने से भागगये तब मैंने कुछहर्षभी नहीं किया न मालूम यहदोनों कौन अवतार ऐसे बलवान् व प्रतापी हैं जिनसे कोई जीतने नहीं सक्ता ॥

दो० सुख पाछे दुख होत है यही जगत की रीति ।
कबहूं रणमें हारिहै कबहूं लीजै जीति ॥

इसलिये यहसमय टालदेना उचितहै जिसतरह अठारहवींबेर मेरामनोरथ मिलाथा उसीतरह आपभीजीतेरहैंगे तो एकदिन तुम्हारीइच्छा पूर्णहोजावेगी जब इसतरह समझानेसे शिशुपालको धैर्य्यहुआ तबवह और सबराजा उसके साथी सेनासमेत जो जीते व घायल बचगये थे अपने २ देशको चलेगये व यादव बंशियों ने सबबस्तु लूटकी द्वारका में भेजदी ॥

दो० लज्जित होके फिर चल्यो हारमानि शिशुपाल ।
सब राजनको जीतिकै कूचकियो नँदलाल ॥

जब रुक्म्यग्रजने जरासन्धआदिकके भागआवनेका समाचारसुना तब बहुतक्रोधित होकर अपनीसभा में आनबैठा व सबलोगोंको जो वहां नेवताकरनआये थे बड़े शब्द से सुनाकर कहनेलगा यह कौनबात है जो मेरी बहिनको बरजोरी कृष्णचन्द्र उठा ले जावैं जबतक मेरेतनुमें प्राण हैं तबतक रुक्मिणीको नहीं लेजानेदूंगा अब मैं यह प्रण करताहूं कि अभीजाकर दोनों भाइयों को मारने या जीतापकड़ने उपरांत रुक्मिणीको न लेआऊं तो अपनानाम रुक्म न रखकर कुण्डिनपुर में किसीको अपनामुख न दिखलाऊं ऐसाकहकर एकअक्षौहिणी दलसे उनके पीछे चढ़दौड़ा और रास्ते में अपने सेनापतियों से कहा तुमलोग यादवबंशियोंको मारो मैं अपनारथ आगेको बढ़ाकर कृष्ण को जीता पकड़लेआवताहूं यहबचन सुनतेही सेनाउसकी यदुबंशियों से जो बलरामजी के साथमें थे लड़नेलगी व रुक्मने रथअपना आगेबढ़ाकर श्यामसुन्दरसे ललकार के कहा हे यादव कहांभागाजाता है तुझे सामर्थ्यहो तो एकक्षण ठहरकर मेरेसाथ युद्ध कर मुझे शिशुपाल व जरासन्धआदिक मतसमझना जिसतरह गोकुल व बृन्दाबन में अहीरियोंका गोरसचुराकर खायाकरतेथे उसीतरह मुझको भी ब्रजबासी अहीरसमझकर मेरीबहिन चुरालेभागे तुझे इसबातका कुछ भयनहींहुआ कि रुक्मिणी मुझ ऐसे शूरबीर व प्रतापीकी बहिनको बरजोरी उठालेचला आजतक तुमने राजाभीष्मकका नामभी नहींसुनाथा जो ऐसीअनीति की जोलोग तुम्हारेसन्मुखसे भागगये हैं वे क्षत्रिय नहीं थे अब मेरेसामने से तुमको जीतेबचकर जाना बहुतकठिन है जब इसीतरहकी

अनेकबातें अभिमानपूर्व्वक रुक्मनेकहकर बहुतसेतीर श्यामसुन्दरपरचलाये तब द्वारकानाथने अपनेबाणसे वेसबतीर काटडाले फिर केशवमूर्त्ति ने चारबाणसे चारों घोड़ा और उसके रथकोमारकर एकतीरसे सारथीको अचेतकिया व एकबाणसे रथकीध्वजा गिराकर दूसरे तीरसे धनुषउसका काटडाला जब रुक्मने छोटे २ गदाआदिक अनेक शस्त्र मुरलीमनोहरपर चलाये व उनअस्त्रोंको भी श्यामसुन्दरने अपनेबाणों से काटडाला व कोईअस्त्र उसका मोहनप्यारे के नहींलगा तब इसतरह क्रोधकरके ढालतलवार हाथमें लियेहुये रथमेकूदकर वृन्दाबनबिहारीपर झपटा जिसतरह पतंगआपसे जलने वास्ते दीपकपर जागिरताहै या जैसे बौड़हागीदड़ हाथीपरझपटै तब मुरलीमनोहर ने उसक ढाल तलवार भी बाणसे काटकर गिरादिया ॥

दो० तेहिअवसर कोपितभये माखन प्रभु ब्रजनाथ।
रुक्म हतनके कारणे लियो खड्ग निज हाथ॥

जब श्रीकृष्णचन्द्रने नंगीतलवार लियेहुये रथसेकूदकर रुक्मका शिरकाटने चाहा तब रुक्मिणी यहदशा अपनेभाई की देखकर डरती व कांपती हरिचरणोंपर गिरपड़ी व रोतीहुई हाथजोड़कर बोली ॥

चौ० मारो मति भाई है मेरो। छांड़ो नाथ तुम्हारो चेरो॥
मूरखअन्ध कहायहजानै। लक्ष्मीपति को मानुष मानै॥
नहिंजानैकोइ तुम्हरोअंत। भक्त हेतु प्रकटे भगवन्त॥
यहजड़ कहातुम्हैं पहिचानै। दीनदयालु जगतुम्हैं बखानै॥

सो मैं दीनहोकर कहतीहूं हे दीनानाथ जिसतरह आप बलभद्रजीको प्याराजानते हैं उसीतरह मेराभाई मुझकोभी प्याराहै जिसतरह ज्ञानीलोग बालक व बौड़हे व मूर्ख के अपराधपर कुछ ध्यान नहींकरते दुर्वचन उनककुत्तेके भूंकनेसमान समझते हैं उसीतरह आपभी मेरेभाईको मूर्खसमझकर इसकाप्राण मुझे दानदीजिये कदाचित् आपइस को मारडालेंगे तो मेरेपिताको जो तुम्हाराभक्त है बड़ादुःख होगा और यहबातसंसार में प्रकट है कि जहां तुम्हारेचरण जाते हैं वहां सबको सुखमिलताहै सो यह बड़ाआश्चर्य समझनाचाहिये कि भीष्मक तुम्हाराश्वशुर होकर पुत्रकाशोक उठावे ॥

चौ० बन्धु भीख प्रभुमोको दीजै। इतनो यश तुम जगमें लीजै॥

दो० जो तुम याको मारिहौ माखनप्रभु ब्रजराज।
तो मोको सब सृष्टि में अपयश ह्वैहै आज॥

हे राजन् यहबात सुनने व रुक्मिणीकी दशा देखनेसे श्यामसुन्दरने प्राणलेना

रुक्मका छोड़कर जैसे सारथी को सैनमें बतलाया वैसे उसने रुक्मकीपगड़ी उतारकर भुजा उसकी बाँध मूछ व डाढ़ी व शिरके बालमूड़कर सातचोटी रखने उपरांत उसे अपनेरथमें बांधलिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित उधर श्रीकृष्णजी ने रुक्मकी यहदुर्दशाकी इधर बलरामजी सेना उसकीमार व भगाकर यदुबंशियोंका साथ लिये इसतरह बड़ेहर्षसे केशवमूर्त्तिके पासपहुँचे जिसतरह ऐरावतहाथी कमलबनको रौंद कर तोड़ता चला आवताहै जब रुक्मकोबांधा देखकर सबयदुबंशी हँसनेलगे तब बल-भद्रजीने मुरलीमनोहरसे कहा हे भाई रुक्मसे तो भूलहुई थी पर आपनेभी अच्छा नहींकिया जो अपनेसालेका शिर मुड़वाकर उसे बांधरक्खाहै इसतरहके जीनेसे रुक्म का मरना उत्तमथा कदाचित् यह युद्धविषे सन्मुख माराजाता तो अप्सरा हाथोंहाथ इसे उठाकर स्वर्गमें लेजातीं अब तुम्हारी सरहजभी इसकासंग प्रसन्नतासे नहींकरेगी॥

चौ० बांध्यो याहि करी बुधि थोरी । फिर तुम कृष्ण सगाई तोरी ॥
यदुकुलको तुम लीक लगाई । अब हमसे को करै सगाई ॥
दो० अब याकी गति देखिकै मनमें आवै त्रास ।
नारि आपनी होय जो सोउ न आवै पास ॥

इसलिये जिससमय रुक्म तुम्हारेसामने लड़ने आयाथा उसीसमय उसकोसमझाकर बिदाकर देना उचितथा इष्टमित्र व सम्बन्धियों को अपराध करनेपरभी मारना व बांधना न चाहिये सो आपने प्राणलेनेसेभी अधिक दण्ड इसकोदिया अब इसे बांधकर रखनेसे क्या गुण निकलेगा यह बचन अपनेभाईका सुनतेही श्रीकृष्णजीने रुक्मको छोड़दिया तब बलदाऊजीने उसे बहुत संतोषदेकर जानेवास्ते कहा व रुक्मिणीजीसे बोले ऐ राजकन्या तुम्हारे भाईकी जो यहगतिहुई इसमें कुछ दोष श्यामसुन्दरका नहीं है यह सब इसके पिछले जन्मके कर्मोंका फलथा क्षत्रियोंका यह धर्म है कि पृथ्वी व द्रव्य व स्त्रीकेवास्ते आपसमें झगड़ा करतेहैं जब दो मनुष्य लड़ेंगे तो उसमेंसे एकजीतकर दूसरा अवश्यहारैगा कर्म्मका लिखाहुआ किसीतरह नहींमिटता जो कुछ रुक्मके भाग्य में लिखाथा सो हुआ व संसारमें जिसने जन्मपाया वह अवश्य दुःख व सुख उठावता है व जीवात्मा सदा अमर रहकर कभी नहीं मरता और यह शरीर सदा बनता बिगड़ता रहताहै इसवास्ते अंगकी दुर्दशाहोनेसे जीवात्माकी निन्दा नहींहोती इसलिये तुम रोना अपना छोड़कर यह सबदुःख रुक्मके प्रारब्धाधीनसमझो यहबात समझानेसे रुक्मिणी अपने मनको धैर्य्यदेकर चुपहोरही व रुक्मबिदा होतेसमय शिर अपना ऊपरचरण श्यामसुन्दरके रखकर बिनयकिया हे दीनानाथ मैं तुम्हारी महिमा नहींजानताथा इस लिये मुझसे अपराध हुआ अब दयालुहोकर उसे क्षमाकीजिये जब ब्रह्मा व महादेव

आदिक देवता आपको नहींपहिंचानसक्ते तो मेरीक्या सामर्थ्य है जो तुम्हारीमहिमा जाननेसकूं इसीतरह बहुत बिनती व स्तुतिकरके रुक्म वहांसे बिदाहुआ ॥

दो० कहै सुन्दरी सैनमें किये जेठकी लाज ।
अब बिलम्ब क्यों करतहौ हांकोरथ ब्रजराज ॥

यह मनसा रुक्मिणीकी समझकर श्रीकृष्णजीने रथ अपना द्वारकाकी ओर हांक दिया व रुक्म अपनी प्रतिज्ञानुसार राजमन्दिर पर नहींगया व कुण्डिनपुरके निकट भोजकटनाम दूसरा नगर बसाकर वहांरहा व राजाभीष्मकसे मन में शत्रुतारखकर अपनी स्त्री व पुत्रोंको वहां बुलाभेजा जब रामकृष्ण द्वारकापुरीके निकट पहुँचे तब राजाउग्रसेन व बसुदेवआदिक बड़ेहर्षसे नगरकेबाहर आनकर सन्मानपूर्व्वक उनको लिवालेगये व सब द्वारकाबासियों ने अपने अपने द्वारेपर मंगलाचार मनाकर उनकी आरती की ॥

दो० प्रिया सहित श्रीद्वारका यदुपति पहुँचे आय ।
पुरबासी प्रफुलित भये आनँद उर न समाय ॥

जब केशवमूर्त्ति इसीतरह सबको सुखदेतेहुये अपने द्वारेपर पहुँचे तब देवकीजीने बहुत स्त्रियोंसमेत वहां आनकर अपनेकुलकी रीतिकी व रुक्मिणीकी सुन्दरताई देखतेही बड़ेहर्षसे उसे व मोहनप्यारे को महल में लेगई व राजाउग्रसेन व बसुदेवजीने उसीदिन गर्गपुरोहितको बुलाकर बिवाहका मुहूर्त्तपूछा जब गर्गमुनिने शुभलग्न बिवाह का बतलाया तब राजाउग्रसेनने अपनेमंत्रियोंको बिवाहकी तैयारीकरनेवास्ते आज्ञा देकर दुर्य्योधनआदिक अनेकराजों के यहां नेवताभेजदिया जब राजाभीष्मकने जो अपनीकन्या श्यामसुन्दरको बिवाहनेचाहताथा द्वारकामें बिवाहहोनेकी तैयारीसुना तब उसने बड़ेहर्षसे अपनेमनमें कन्यादान संकल्पकिया व बहुतसे रत्नादिक व भूषण व बस्त्र व हाथी व घोड़ा व रथ व पालकी व दासी व दास अपने पुरोहित सहित द्वारकापुरीमें बसुदेवजीकेपास भेजदिया व बिनती अपनी कहलाभेजा जब द्वारकामें उधरदेश२ के राजा नेवता करनेवास्ते आनकर इकट्ठेहुये तब इधरसे यह ब्राह्मण सब बस्तुदहेजकी लेकर वहां पहुँचा तो ऐसीभीड़ व शोभाद्वारकामें हुई जिसकाहाल वर्णन नहींहोसक्ता जब बिवाह वालेदिन केलोंके खम्भागाड़कर मखमली चँदवा रत्नजटित बांधागया व सुगन्धित पुष्प व नौरत्नकी बंदनवार बांधकर मोतियोंसे चौकपुरवाने उपरांत मड़वा तैयारहुआ तब राजाउग्रसेनआदिकने मोहनप्यारे व रुक्मिणी को उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनाकर जड़ाऊ चौकीपर बैठालदिया जब बड़े बड़े यदुबंशी व नातेदार राजालोग वहां आनकर चारोंओर बैठे व ब्रह्मा व महादेव व कुबेरआदिक सब देवता अपना २ रूप बदलकर

वह मंगलाचार देखनेवास्ते उसजगह इकट्ठेहुये तब गर्गपुरोहितने शास्त्रानुसार बिवाह श्यामसुन्दरका रुक्मिणी के साथ करादिया और दोनोंको भाँवरि फिराया ॥

चौ० पण्डित तहां वेदध्वनि करैं । रुक्मिणिसँग प्रभुभांवरिफिरैं ॥
ढोल नफारो बहुत बजावैं । हरषैं देव सुमन बरसावैं ॥
सिद्ध साध्य चारण गन्धर्व । अन्तरिक्ष ह्वै देखैं सर्व ॥
चढ़िविमान सब माथझुकावैं । देववधू सब मंगल गावैं ॥
हाथधरे प्रभु भांवरि पारी । बाम अंग रुक्मिणि बैठारी ॥
खोलत कंकण कृष्णमुरारी । ऐसे रस्म रीति सब कारी ॥
अतिआनन्दरच्यो जगदीशा । हर्षि हर्षि सब देहिं अशीशा ॥
कृष्ण रुक्मिणी जोड़ीजीवैं । यह चरित्र सुनि अमृत पीवैं ॥

उससमय स्त्रियां मंगलाचार गीतगायकर व अप्सरा आकाशमें बिमानोंपर नाच २ के प्रसन्नहोतीथीं व गंधर्व गानासुनाके देवतालोग अनेकतरहके रत्नजटितभूषण दुल्लह व दुलहिनको पहिनाकर आनंदमचाते थे जब बिवाहहोचुका तब राजाउग्रसेनने ब्राह्मणोंको बहुतसा दान व दक्षिणादेकर सन्मानपूर्वक बिदाकिया व याचकों व मंगनोंको मुँहमांगा द्रव्यादिक इतना दानदिया कि उनको दूसरीजगह मांगनेकी इच्छा नहींरही व सबयदुबंशी व राजालोगोंने रुपया व अशरफी नेवतादेकर उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र रुक्मणी को पहिनादिया व राजाउग्रसेनने सब नेवतहारी राजा व कुण्डिनपुर बासी ब्राह्मणों को यथायोग्य सन्मानपूर्व्वक बिदाकिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् उसदिन द्वारकापुरी व तीनों लोकों में ऐसाआनन्द सबको प्राप्तहुआ जिसकाहाल बर्णन नहींहोसक्ता व रुक्मिणीजीके द्वारकामें आनेसे सब छोटे बड़ोंके घरमें लक्ष्मीजीका बासहोगया व सब राजा उनके आधीन रहकर अपने २ देशकी सौगात श्याम व बलरामको भेजनेलगे जो कोई यहकथा रुक्मिणी मंगलकी सच्चेमन से कहै व सुनै उसकोभुक्ति व मुक्ति सब तीर्थ स्नानकरनेका फल मिलता है ॥

पचपनवां अध्याय ॥

प्रद्युम्न के जन्मकी कथा ॥

इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूँछा हे मुनिनाथ कामदेवको शिवजीने किसतरह जलादियाथा वहकथा बर्णनकीजिये शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित एकदिन महादेवजी कैलासपर्व्वत पर बीचध्यान परमेश्वरके बैठेथे उससमय अचानकमें कामदेवने आन-

कर उन्हें ऐसासताया कि ध्यान उनकाखुलगया तब उन्होंने क्रोधसे अपनी तीसरी आंखखोलकर कामदेवकी ओर देखा तो वह जलकर राखहोगया॥

दो० काम बली जब शिवदहेउ तब रति धरत न धीर।
पतिबिनु अतितलफतखड़ी बिह्वल बिकलशरीर॥
चौ० कामनारि यों लोटत फिरै। कन्तकन्त कहि चाहत मरै॥

जब शिवजीने यहदशा उसकी देखी तब प्रसन्नहोकर कहा हे रते तू शोचमतकर कुछ दिन बीते कामदेव कृष्णअवतार में रुक्मिणीके गर्भसे उत्पन्नहोकर शम्बरासुरके घर आवैगा सो तू शम्बर दैत्यके यहां जाकर रसोई बनानेवास्ते रह वहां तेरास्वामी तुझे मिलकर सुखदेवैगा जब यह सुनकर रतिकोधीर्य्यहुआ तब वह मायावतीनाम वृद्धा स्त्रीका रूपधरकर उसदैत्यके यहां चलीगई व रसोई बनानेवालों में मुखिया बनकर अपनेपति के मिलनेकी आशा में रहनेलगी व परमेश्वर की आज्ञानुसार कामदेव ने रुक्मिणी के गर्भसे जन्मलिया सो वह बालक श्रीकृष्णजी के रूपसमान ऐसासुन्दर उत्पन्नहुआ जिसेदेखकर सूर्य्यदेवता लज्जित होजातेथे जब राजाउग्रसेन व बसुदेवजी ने ज्योतिषियोंसे जन्मलग्नका हाल पूँछा तब पण्डितोंने जन्म कुण्डली उसकीबना॰ कर कहा महाराज हमारे बिचारमें ऐसामालूमहोताहै कि यह बालक सुन्दरताई व बल व गुणमें श्रीकृष्ण ऐसाहोगा और कुछ दिन जलबासकरने व शत्रुकोमारने उपरांत अपने माता व पितासे आनमिलैगा जब ब्राह्मणलोग उसबालकका नाम प्रद्युम्नरख कर दक्षिणा लेनेउपरांत अपने २ घर चलेगये तब बसुदेवजीने अपनेकुलकी रीति करके मंगलाचारमनाया तब परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनिने शम्बरदैत्यसे जाकर कहा तू नहींजानता कामदेव तेरेशत्रुने प्रद्युम्ननामसे कृष्णचन्द्रके यहां जन्मलिया है बारहबर्षकी अवस्थामें वह तुझेमारेगा जब नारदमुनि ऐसाकहकर ब्रह्मलोकको चले गये तब शम्बरदैत्यने बिचारकिया मैं अभी प्रद्युम्नको उठाले आकर समुद्रमें डालदूं तो मेरे मनकी चिन्ता छूटजावे ऐसा बिचारतेही शम्बरासुर हवारूप बनकर द्वारकामें आया व रुक्मिणी के मंदिरमें जाकर बीच सौरीके घुसगया और प्रद्युम्नको जो अठा॰ रहदिनकाथा वहांसे उठाकर लेउड़ा पर किसी स्त्री ने जो सौरी में बैठी थी उसे ले जाते नहीं देखा जब रुक्मिणी अपना बालक शय्यापर न देखकर रोनेलगी तब सब स्त्रियों ने इसबातका आश्चर्य माना व शम्बरदैत्य प्रद्युम्नको समुद्र में डालकर अपने घर चलाआया व श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार प्रद्युम्नको एक मछली ने निगलकर तीनबर्षतक पालन किया जब एक केवट उसी मछलीको जालमें फँसाकर शम्बरदैत्य के यहां भेटलेगया तब उसने वह मछली अपने रसोई बनानेवालोंके पास भेजदिया जब उन्हों ने उस मछलीका पेटचीरा तब उसमेंसे एक बालक श्यामरङ्ग बहुत सुन्दर

जीताहुआ निकला जब वहलोग अचम्भा मानकर उसे मायावती के पास लेगये तब उसने बड़े हर्षसे बालकको लेलिया व शम्बरदैत्यसे छिपाकर उसे पालनेलगी कुछदिन बीते शम्बरासुरने भी उसे देखा तो उसकी सुन्दरताई पर मोहित होकर मायावती से कहा तू इसे अच्छीतरह पालन कर उन्हीं दिनों नारदमुनि मायावती के पास जाकर बोले यह बालक कामदेवनाम तेरा पति है और इसकी माता रुक्मिणी और पिता श्रीकृष्णजी द्वारकामें रहते हैं व शम्बरासुर ने इसको सौरीमेंसे चुराकर बीचसमुद्र के डालदिया था सो महादेवजी के आशीर्व्वाद से तेरेपास पहुँचा है अपना बालापन यहां बिताकर शम्बरदैत्यको मारने उपरान्त तुझे द्वारकामें लेजायगा यह बात कहकर नारदमुनि चलेगये व रति यह हाल सुनतेही बहुत प्रसन्न होकर बड़े प्रेमसे उसको पालने लगी ज्यों २ वह बालक सयाना होताथा त्यों २ रतिको अपने पति मिलनेकी चाहना बढ़कर यों कहती थी ॥

चौ० ऐसो प्रभु संयोग बनायो । मछली माहिं कन्त मैं पायो ॥

जब प्रद्युम्न पांचबर्षकाहुआ तब रति उसको उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनाकर उसे देख २ अपनी आंखों को सुख देनेलगी व प्रद्युम्न उसको अपनी माता समझकर लड़कोंकी तरह मैया मैया कहताथा व मायावती उसके साथ कान्तभाव रखकर दुलार व प्यार करती थी ॥

दो० ऐसेही पालतरही बहुत दिना बितलाय ।
भयो तरुण सुन्दर महा शोभा कही न जाय ॥

जब प्रद्युम्न नवदश बर्षका होकर सब भला व बुरा समझनेलगा तब उसने एक दिन मायावती से जो अपना श्रृङ्गारकरके उसकेसाथ कटाक्षकरती थी कहा तुम हमारी माताहोकर मुझे पतिभावसे देखतीहो यह बात सुनकर रति मुसकरातीहुई बोली अय कान्त तुम यह क्या बात कहतेहो मैं रति तुम्हारी स्त्रीहूं ॥

दो० जन्म लियो श्रीद्वारका शम्बर लियो चुराय ।
और अवस्था जो हती सो सब कही बुझाय ॥

जब प्रद्युम्नने मायावती से सब हाल अपने जलने व अवतार लेने व समुद्र में डालने व मछली निगलनेका सुना तब उसने रतिको अपनी स्त्री जानकर शम्बरासुर को अपना शत्रु समझा उससमय मायावती बोली हे कान्त शिवजी के आशीर्व्वाद से मैं तो अपने मनोरथको पहुँची पर रुक्मिणी माता तुम्हारी ऐसा दुःख पावती है जैसे बछड़े के बिछुड़ने में गौको सुख नहीं मिलता इसवास्ते अब तुम्हें शम्बर दैत्य को मारकर द्वारकामें चलके अपने माता व पिताको सुख देना चाहिये पर यह दैत्य

मायायुद्ध बहुत जानताहै व तुमने अभीतक युद्धकी विद्या कुछ नहीं पढ़ी इसलिये वह विद्या मुझसे सीखलेव ॥

दो० मैं याकी विद्या सकल तुमको देउँ बताय।
जाते शम्बर असुर खल तुमसों जीतो जाय॥

जब प्रद्युम्नने बारहबर्षकी अवस्थातक सब बाणविद्या व मायायुद्ध मायावती से सीखलिया तब अपने मनमें युद्ध करनेकी सामर्थ्य पाकर शम्बरदैत्यको दुर्बचन कहने लगा जिसमें उससे युद्धहो जब एकदिन प्रद्युम्न खेलताहुआ शम्बरासुरकी सभा में चलागया तब उस दैत्यने किसी दूसरेसे कहा मैंने इसबालकको अपना बेटाकरके पालाहै यह बचन सुनकर प्रद्युम्न ताल ठोंककर बड़ेक्रोधसे बोला मुझे अपना लड़का मत समझो मैं तुम्हारा शत्रुहूं मुझसे लड़कर मेरा बल देखलेव यह बचन सुनकर शम्बरासुर हँसताहुआ अपने सभावालों से बोला देखो भाई जैसे मैंने दूध पिलाकर सांपको पाला वैसे यह मेरेवास्ते दूसरा प्रद्युम्न उत्पन्नहुआ ऐसा कहकर शम्बर दैत्य प्रद्युम्नसे बोला अयबेटा तुम्हारी क्या मृत्यु आई है जो ऐसी कठोर बातें मुझसे कहते हो उसने उत्तर दिया कि मेराहीनाम प्रद्युम्नहै तुमने तो मुझको समुद्रमें फेंककर मेरा प्राण लेनेचाहाथा पर नारायणजीकीदयासे जीता बचकर आज तुमसे अपना बैरलेने आयाहूं जिसतरह तुमने अपना काल घरमें पालाथा उसीतरह अब मुझसे लड़ाई करो कोई किसीका बाप व बेटा नहीं होता संसारकी गति सदासे इसी तरहपर चली आती है यह बात सुनकर शम्बरासुर बड़ा शोच व क्रोधकरके अपनी सेनासमेत प्रद्युम्नसे लड़ने वास्ते नगरके बाहर निकला व गदा हाथमें लेकर प्रद्युम्नसे ललकार के बोला देखें अब तेराप्राण कौन बचाताहै जब ऐसा कहकर शम्बरदैत्यने उनपर गदा चलाई प्रद्युम्नने अपनी गदा मारकर उसकी गदा गिरादी तब शम्बरासुर ने अग्निबाण उसके ऊपर छोड़ा जब उसेभी प्रद्युम्नने जलबाण मारकर बुझादिया तब शम्बरासुरने झुँझलाकर अनेकतरहके शस्त्र उसपर चलाये जब प्रद्युम्नने वेभी सब काटकर गिरा दिये तब दोनों मनुष्य आपसमें लपटकर मल्लयुद्ध करनेलगे जब कुश्ती में प्रद्युम्न नहीं हारा तब शम्बरदैत्य मन्त्रकी विद्यासे उसपर पत्थर बरसानेलगा जब प्रद्युम्नने अपने मन्त्रसे पत्थर बरसाना बन्द करदिया तब शम्बरासुर मायाके बलसे प्रद्युम्नको उठाकर आकाशकीओर लेउड़ा उससमय प्रद्युम्नने क्रोधकरके एक तलवार शम्बरदैत्यके ऐसी मारी कि शिर उसका भुट्टासा कटकर पृथ्वीपर गिरपड़ा व क्षणभरमें उसकी सेनाभी काटडाली तब देवतों ने प्रसन्नहोकर आकाशसे उनपर फूल बरसाये व संसारी लोग जो उसके डरसे यज्ञ व होम नहीं करनेपाते थे आनन्द होगये व प्रद्युम्नकी बहुत स्तुतिकरके बोले श्रीकृष्णजी बैकुण्ठनाथका सामना कोई

नहीं करसक्ता अब उनका पुत्रभी ऐसा बलवान् उत्पन्नहुआ जिसके बराबर कोई दूसरा शूरबीर संसारमें दिखलाई नहीं देता ॥

दो० जो ऐसे बल देखते निजसुत को भगवान।
करते मनमें मुदित ह्वै तिहूँलोक को दान ॥

जब प्रद्युम्नने शम्बरासुरको मारकर श्यामसुन्दरकी दुहाई उस नगरमें फेरदी तब मायावती ने प्रसन्नहोकर निजरूप अपना रतिका महासुन्दर बारहबर्षकी अवस्था बना लिया व उड़नखटोलने पर अपने पतिसमत बैठकर द्वारकाको गई उससमय प्रद्युम्न श्यामरङ्ग व रति चन्द्रमुखी दोनों आकाशमें कैसे सुन्दर मालूमदेते थे जैसे कालीघटा में बिजुली शोभा देती है जब वे रुक्मिणी के आंगनमें उड़नखटोलने से उतरकर खड़े हुये तब सब स्त्रियां श्यामसुन्दरकी जो प्रद्युम्नके हरने उपरांत ब्याहीगई थीं प्रद्युम्न को जो केशवमूर्त्ति के रूपसमान था देखकर चौंकउठीं व उनके मनमें इस बातका सन्देह हुआ कि मुरलीमनोहर यह नईसुन्दरी और कहींसे लाये हैं तब उन्होंने उसकी सुन्दरताई देखने वास्ते चारोंओरसे आनकर घेरलिया और यह भेद किसी ने नहीं जाना कि यह प्रद्युम्नहै उससमय श्रीकृष्णकुमारने सब स्त्रियों से पूँछा कि हमारे माता व पिता कहां हैं जब यह बात सुनकर सब स्त्रियोंको अचम्भा मालूमहुआ तब उन्होंने प्रद्युम्नकी ओर आंख उठाकर देखा तो चिह्न भृगुलताका उनकी छातीपर नहीं दिखलाई दिया तब उन्होंने समझा कि यह श्रीकृष्ण न होकर कोई दूसरा पुरुष है और रुक्मिणी ने प्रद्युम्नका मुखारबिन्द देखकर अपनी सहेलियों से कहा बड़ाभाग्य उस स्त्रीका समझना चाहिये जिसने ऐसा सुन्दर पुत्रजना और यह स्त्रीभी सुन्दरताई में इस बालककी बराबरहै मेरा बेटाभी जो कोई चुरालेगया इसीरूपकाथा परमेश्वरकी दया व मेरे भाग्यसे जीताहोकर यह वही बालक आयाहो तो आश्चर्य्य नहीं मेरा बेटाभी रहता तो इसी अवस्थाका होता ऐसा बिचारकर रुक्मिणी ने प्रद्युम्नसे पूँछा ॥

दो० जन्म भयो किहि गांवमें कहा तुम्हारो नांव।
कौन तुम्हारे मातु पितु क्यों आयो यहिठांव ॥

यह बचन कहतेही रुक्मिणीको प्रेमहुआ कि उसकी छाती से दूध बहनिकला व बायांअङ्ग फड़कनेलगा तब उसे बिश्वासहुआ कि यह मेरा पुत्रहै यह बात समझतेही रुक्मिणीनेचाहा कि मैं उसकोगोदमें उठाकर प्यारकरूं पर बिनाआज्ञा अपनेस्वामीकी ऐसाउचित न जानकर मनमें शोच बिचार कररहीथी कि उसीसमय बसुदेव व देवकी व कृष्णचन्द्रने वहां पहुँचकर यहहाल देखा जब श्यामसुन्दरने सब भेद जाननेपरभी कुछ हाल प्रद्युम्नका किसीसे नहींकहा तब उनकी इच्छानुसार उसीक्षण नारदमुनिने

वहां आनकर सबहाल प्रद्युम्नका ज्योंका त्यों कहसुनाया व रुक्मिणीसे बोले यहतेरा बेटाहै यह बचनसुनतेही रुक्मिणी ने दौड़कर प्रद्युम्नको गोदमें उठालिया व शिर व मुख उसकाचूमकर बलायें लेनेलगी जिसतरह बिछुड़ाहुआ बेटा मिलनेसे माता व पिताको हर्षहोताहै उसीतरह रुक्मिणीको आनन्द प्राप्तहुआ व उसनेरतिको अपनी गोदमें बैठाकर बहुतसा प्यारकिया ॥

दो० देखिपुत्र प्रफुल्लितभई या बिधि रुक्मिणि माय।
हर्षन जाके चित्तकी धर्षन कहो न जाय॥

श्रीकृष्णजीभी अपनेपुत्र व पतोहूको देखकर बहुतप्रसन्नहुये श्यामसुन्दर अंतर्यामी सब हाल जानतेथे कि मेराबेटा शम्बरासुरके यहां है पर इतने दिनतक उन्होंने यह भेद रुक्मिणीसे नहींकहाथा जब प्रद्युम्न ने शिर अपना ऊपर चरण माता व पिता व दादा व दादीआदिकके रखकर अपने बड़ोंकोपहिंचाना तब सबोंने उसकोआशिष देकर प्यारकिया व बहुतसा द्रव्यादिक उसकेहाथसे दान व दक्षिणा दिलवाया व सब स्त्री व पुरुष द्वारकाबासी अपने २ घर मंगलाचार मनाकर कहनेलगे बसुदेव नन्दन का बड़ाभाग्य है जो खोयाहुआ पुत्र एक स्त्री महासुन्दरी अपनेसाथ लेकर उनके घर चलाआया ॥

दो० नरनारी मोहे सबै देखि प्रद्युमन रूप।
बिनु देखे क्षण ना रहैं ऐसो रूप अनूप॥

बसुदेवजीने शुभलग्नमें बड़ीधूमधामसे बिवाहप्रद्युम्नका रतिकेसाथ करदिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् इसतरह कामदेवने प्रद्युम्न जन्मलेकर रति अपनी स्त्रीको सुखदिया था ॥

छप्पनवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका जाम्बवती व सत्यभामासे बिवाहकरना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिनदिनों प्रद्युम्न शम्बरासुरके यहांथा उन्हींदिनों सत्राजित यादवने पहिले श्रीकृष्णजीको मणिकी झूंठी चोरीलगाई पीछेसे लज्जितहोकर अपनीकन्या उन्हें बिवाहदी यह सुनकर परीक्षितने बिनयकिया हे कृपानिधान सत्राजितने वह मणि कहांसेपाकर किसतरह श्यामसुन्दरको उसकीचोरीलगाई व फिर क्योंकर अपनीकन्या उन्हें बिवाहदी शुकदेवजी बोले सत्राजितनाम यादव द्वारकापुरी में रहताथा जब उसने बहुत दिनतक सूर्य्य देवताकातप व ध्यान सच्चेमनसे किया तब सूर्य्य भगवान्ने प्रसन्नहोकर उसकोदर्शन अपनादिया व स्यमंतकनाममणि उसेदेकर

बोले तुम इसमणिको मेरेसमान जानकर नित्य बिधिपूर्वक इसका पूजनकरना तो सुख से रहोगे व जिसनगर व घरमें यहमणि रहैगी वहांरोग व दरिद्र किसीको न होकर महँगी अनाजकी नहींपड़ैगी व जो कोई सच्चेमनसे इसकी पूजाकरैगा उसकेघर ऋद्धि सिद्धि बनीरहैगी ऐसाकहकर सूर्य्यदेवता अन्तर्द्धान होगये व सत्राजित वहमणि गलेमें डालकर अपने घर चलाआया व ज्योतिषियोंसे शुभमुहूर्त्त पूंछकर उसमणिको बहुत अच्छे जड़ाऊ सिंहासनपर रक्खा व अपनेनेम व धर्म्मसे रहकर बिधिपूर्वक प्रतिदिन उसकापूजन करनेलगा व प्रभाव उसमणिका यहथा कि जो कोई शास्त्रानुसार उसकी पूजा कियाकरै उसेबीसमन सोना वहमणि नित्यदेतीथी जब सत्राजित यादव उसमणि पूजनके प्रतापसे थोड़े दिनों में बड़ा धनाढ्यहोगया तब द्रव्यके अभिमानसे किसीको अपने बराबर नहींसमझनेलगा एकदिन वह अभिमानपूर्वक स्यमन्तकमणि अपनेगले में पहिनकर श्रीकृष्णजीकी सभामें चला जब यदुबंशियोंने जो वहां बैठेथे उसमणिका प्रकाशसूर्य्यकेसमान देखा तब वे लोग उसेसूर्यसमझकर बोले अयद्वारकानाथ आपका प्रताप व यशसुनकर सूर्यदेवता तुम्हारेदर्शनवास्ते आवते हैं यह बचन यदुबंशियोंका सुनकर श्यामसुन्दरनेकहा यह सूर्यदेवता नहीं हैं सत्राजितयादवने सूर्यभगवान्का तप करके स्यमन्तकमणि उनसेपाईथी वही मणि अपनेगले में बांधहुये चलाआवताहै जब सत्राजित सभामें पहुँचकर जहांपर यादवलोग चौपड़ खेलरहेथे बैठा व केशवमूर्त्ति व यदुबंशी उसमणिकीओर देखनेलगे तब वहमनमें कुछसमझकर तुरन्त अपनेघरचला गया इसीतरह कभीकभी सत्राजित वहमणि अपनेगले में पहिनकर वहांजायाकरताथा एकदिन यदुबंशियोंने मुरलीमनोहरसे कहा महाराज यहमणि सत्राजितसे लेकर राजा उग्रसेनको देदीजिये उसेशोभानहींदेती यहसुनकर किसीसमय श्रीकृष्णजीने सत्राजित की परीक्षालेनेवास्ते हँसते हँसते उससेकहा राजालोगसबमें श्रेष्ठहोतेहैं इसलिये जिसके पास जो अच्छापदार्थहो उसे वहबस्तु उन्हेंभेंटदेनाचाहिये ऐसीबातकरनेसे लोक व परलोकदोनोंबनतेहैं इसलिये तुमयहमणि राजाउग्रसेनको जिन्हेंहमभी अपनाबड़ाजानते हैं भेंटदेकर संसार में यशउठालेव यहबातसुनतेही सत्राजित यादवलालचबशउदास होगया व इसबातका कुछउत्तरनदेकर चुपहोरहा व उन्हेंदण्डवत्करके अपनेघरचला आया सो बृन्दावन बिहारीकी इच्छानुसार कि सूर्य्य व चन्द्रमाआदिक सबदेवतोंके वही मालिकथे उसीदिनसे जितनागुण उसमणिमें था वहजातारहा व सत्राजितने घरजाकर प्रसेन अपनेभाई से कहा श्यामसुन्दर ने मुझे यह मणि राजा उग्रसेनको देनेवास्ते कहाथा सो मैंने नहींदिया यहबचन सुनतेही प्रसेनमूर्ख ने द्वारकानाथ अंतर्यामी पर क्रोधकिया और वहमणिसत्राजित से लेकर अपनेगलेमें बांधलिया व घोड़े पर चढ़कर बनमें अहेरखेलने चलागया वहां एकहरिणके पीछे घोड़ा जो दौड़ाया तो अपने साथ- वालों से बिलगहोकर पहाड़की कन्दरापास जिसमें एकशेररहताथा जापहुँचा जैसे शेर

ने घोड़ेकीटापसुनी वैसेबाहर निकलकर प्रसेनकोघोड़े व हरिणको मारडाला जब वह शेर प्रसेनकेगलेसेमणि लेकर अपनीकंदरामें घुसनेलगा तबरामचन्द्रजीके भक्तजाम्ववंत भालूनेवहां पहुँचकर उसशेरको कन्दराके द्वारेपरमारडाला और वहमणिलेली ॥

दो० वाकी इक कन्या हती महासुन्दरी रूप।
ताके खेलनको दियो सो मणि महा अनूप॥

उस मणिके प्रकाशसे स्थान जाम्बवान्का जो अँधियारी कन्दरामें था आठोंपहर दिनके समान उजियाला रहनेलगा जब प्रसेनके साथवालों ने आनकर सत्राजित से कहा तुम्हारे भाई ने बनमें एक हरिणके पीछे घोड़ा दौड़ाया तो फिर उसका पता बहुत ढूंढ़ने पर भी नहीं मिला इसलिये हमलोग लाचार होकर चलेआये यह बात सुनतेही सत्राजितने बड़ाशोच करके मनमें संदेह किया कि श्यामसुन्दर ने स्यमंतक मणि राजा उग्रसेनके देनेवास्ते मुझसे कहा था सो मैंने नहीं दिया इसलिये उन्हों ने मेरे भाईको बनमें मारकर वह मणि लेलिया होगा सत्राजित इसबात का शोच अपने मनमें रखकर दिनरात उदास रहनेलगा पर श्रीकृष्णजी के भयसे यहबात कह नहीं सक्ताथा एकदिन रात्रिको शय्यापर सत्राजितकी स्त्रीने उसेउदास देखकर पूछा ॥

चौ० कहा कन्त मन शोचत भारी। मुझसे भेद बताओ सारी॥

यहबात सुनकर सत्राजितने कहा अय प्राणप्यारी स्त्रीके पेटमें कोई बातनहीं पचती वह सबहाल अपने घरका दूसरे से कहदेती है व अपना भला व बुरा नहीं समझती इसलिये अपने मनका भेद जिसबातमें खटकता हो स्त्रीसे कहना न चाहिये यहवचन सुनतेही वह झुंझलाकर बोली मैंने कौनसी बात तुम्हारी सुनकर बाहरकहदी थी जो ऐसा कहतेहो क्या सब स्त्री एकतरहकी होती हैं जबतक तुम अपने मनका हाल मुझ से न बतलावोगे तबतक मैं अन्न जल नहीं करूंगी यहबात सुनकर सत्राजितने लाचारी से कहा झूंठ सचका हाल तो परमेश्वर जाने पर मेरे मनमें एक बातका संदेह है सो तुझसे कहताहूं तू किसीके सामने इसबात की चर्चा मत कीजियो जब उस ने कहा बहुतअच्छा किसीसे नहीं कहूंगी तब सत्राजित बोला एकदिन श्यामसुन्दरने मुझसे स्यमन्तकमणि राजाउग्रसेन को देनेवास्ते कहाथा सो मैंने नहीं दिया इसलिये मुझे ऐसा मालूम होता है कि उन्होंने प्रसेनको बनमें मारकर वहमणि ले लियाहोगा दूसरे की सामर्थ्य नहीं है जो मेरेभाई को मारनेसक्ता सत्राजित तो यह बात अपनी स्त्री से कहकर सोरहा पर उसकीस्त्री रातभर शोच बिचार में जागती रहकर जब प्रात समय उठी तब उसने अपनीसखी व दासियोंसे कहा श्रीकृष्णजी ने प्रसेनको मारकर स्यमन्तकमणि लेलिया है यहबात रातको मेरे स्वामीने मुझसे कहीथी परन्तु तुमलोग

किसीके सामने यह चर्चा मतिकरना हे राजन् स्त्रियोंके पेटमें कोईबात नहीं पचती इसलिये जब यह चर्चा होते २ फैलगई तब श्यामसुन्दरके महलमें किसीस्त्रीने जाकर कहा ऐसीबात सत्राजितकी स्त्री कहतीथी जब यह झूठाकलंक सुनकर मुरलीमनोहर की स्त्रियां आपसमें यह चर्चा व शोच करनेलगीं तब उनमें किसीने वृन्दाबनबिहारी से कहा महाराज आपको सत्राजित व उसकी स्त्री प्रसेनके मारने व स्यमन्तकमणि लेनेका कलंक लगावत हैं ॥

दो० चहुंदिशि फैली बात यह जानत राजा रंक।
सो उपाय अब कीजिये जामें मिटै कलंक ॥

श्यामसुन्दर यह झूठाकलंक सुनकर पहिले अपने मनमें उदासहोगये फिर कुछशोच बिचारकर राजाउग्रसेन के पास जहांपर बसुदेव व बलरामजी आदिक अनेक यदुबंशी बैठेथे जाके कहा महाराज सबलोग यह झूठा कलङ्क लगाते हैं कि कृष्णने प्रसेन को बनमें मारकर स्यमन्तकमणि लेलिया है आप आज्ञा दीजिये तो मैं प्रसेन व उसमणि का पता लगाकर कलङ्क अपना छुड़ाऊं जब उग्रसेन यहबात सुनकर कुछ नहीं बोले तब श्यामसुन्दर दशपन्द्रह यादवबंशी व प्रसेनके सेवकोंको जो अहेर खेलती समय उसके संगथे अपने साथलेकर उसे ढूंढ़ने निकले जहां प्रसेनने हरिणके पीछे घोड़ा दौड़ाया था वहां घोड़ेके पैर का चिह्न देखतेहुये चले जब उसजगह जहां प्रसेन व घोड़ेकी लोथपड़ीथी पहुँचे तब वहां शेरकेपांवका चिह्नदेखकर मालूमकिया कि शेरने उस को मारडाला पर उसमणि का पता वहां नहीं मिला इसलिये मोहनप्यारे यदुबंशियों समेत शेरके पैरका चिह्न देखतेहुये जब उस कन्दराके द्वारेपर जहां जाम्बवंत रहता था पहुंचे तब वहां क्यादेखा कि शेर मराहुआ पड़ाहै पर मणि वहां दिखलाई नहींदी यहअचम्भा देखकर यदुबंशियोंने श्यामसुन्दरसे कहा महाराज इसबनमें ऐसा बलवान् मनुष्य व पशुकहां से आया जो शेरको मारके मणिलेकर इस कन्दरा में घुस गया हमलोगोंनेअपनीसामर्थ्यभरढूंढ़ा प्रसेनके मारनेकाअपयश इसशेरकोलगा अबतुम्हाराझूठा कलंक छूटगया इसलिये फिर चलिये यहसुनकर दैत्यसंहारणने कहाचलो इसकन्दरामें घुसकर देखें शेरकोमारकर मणिकौनलेगया यदुबंशीबोले महाराज हमें इसअँधियारी कंदराका मुखदेखनेसे भयमालूमहोताहै इसमेंजाकर अपनाप्राण क्योंदेवैंआपसेभीबिनय करतेहैं कि इसभयानक गुफामें न जाकर द्वारकाकोचलिये हमसबकोई वहांचलकर कहैंगे कि प्रसेनको शेरनेमारकर स्यमन्तकमणिलेलिया व उसशेरको न मालूम कौन मारकरवहमणि कंदराकेभीतर लेगया यहहालहमलोग अपनीआंखसे देखआये हैं इस बातके कहनेसे तुम्हारा कलंकछूटजायगा जबमारेडरके कोईउसगुफामें नहींगया तब श्यामसुन्दरने अपनेसाथियोंसेकहा मेराचित्त स्यमन्तक मणिमेंलगाहै इसलिये मैं किसी

का कुछडर न रखकर अकेलाइसीकन्दरामेंजाताहूं तुमलोगबारहदिनतक मेरीआशा यहां देखना इसअवधितक कन्दरासेबाहरआये तो अच्छाहै नहीं तो यहांकाहाल घरपर जाकर कहदेना ॥

दो० द्वादश दिनकी अवधिकरि गये तहां यदुराय ।
यादव जितने संगथे रहे द्वारपर छाय ॥

हेराजन् केशवमूर्त्तिनेउस अँधियारी कन्दरामें थोड़ीदूर जाकरक्या देखा कि एक स्थान व बागबहुतअच्छा जाम्बवन्तकेरहनेकाबहांबना है व जाम्बवती महासुन्दरी कन्या उसकी वहमणि हाथमें लियेहुई पालनेमें झूलरही है व जाम्बवन्तसोया होकर एकदासी उसपालनेके पासबैठीहुई दिखलाईदी जैसेकृष्णचन्द्रने हाथबढ़ाकरस्यमन्तकमणि लेना चाहा वैसे दासीने जाम्बवन्तको पुकारा सो जाम्बवन्त नींद से जागकर मुरलीमनोहरके साथ कुश्तीलड़नेलगा सत्ताईस दिनतक बराबर दिनरात जाम्बवन्तने श्यामसुन्दर से मल्लयुद्धकरके अनेकदांव व पेंचअपने किये जबकोईदांव उसका वृन्दावनविहारीपरनहीं लगा व लड़ते २ मारेभूंख व प्यासके सब बलउसका घटगया तब दैत्यसंहारणने एकमूका ऐसाजाम्बवन्तके मारा कि वहघुटनेकेबल बैठगया उससमय वहअपनेमनमें बिचारकरनेलगा सिवाय रामचन्द्र व लक्ष्मणजीके कोईसंसारी मनुष्यइतनी सामर्थ्य नहींरखता जोसत्ताईसदिनतक मेरेसाथलड़कर मुझसे जीतसके इसलिये मेरेजानमें यहश्यामरूप रामचन्द्रजीका अवतार मालूमहोताहै जिनके साथ लड़ने से मेरीयहदशा होगई इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जबजाम्बवन्तके हृदयमें ज्ञानकाप्रकाशहोकर उसे विश्वासहुआ कि ये रामचन्द्रजीकाअवतारहैं तब श्यामसुन्दर भक्तहितकारी अन्तर्य्यामीने प्रसन्नहोकर उसीसमय रघुनाथरूप धारण करके धनुषबाण लियेहुये उसको दर्शन अपनादिया जाम्बवन्तयह स्वरूपदेखतेही साष्टांगदण्डवत्करके हरिचरणोंपर गिरपड़ा व परिक्रमालेकर उनकेसामने खड़ाहोगया व बड़े प्रेमसे आंखोंमें आंशू भरेहुये हाथजोड़कर बिनय किया हे दीनानाथ सबजगत् के उत्पत्ति व पालन करनेवाले अन्तर्यामी आपने बड़ी दयाकी जो पृथ्वी का भार उतारनेवास्ते अवतार लेकर मुझे अपना दर्शनदिया नारदमुनि मुझसे कहगये थे कि रामचन्द्रजी बासुदेव अवतार धरकर तेरे स्थानपर आवैंगे इसलिये मैं त्रेतायुग से यहां रहकर तुम्हारे दर्शनोंकी आशा देखता था सो आज अपने मनोरथ को पहुँचा आप तीनों लोक के उत्पन्न व पालनकरनेवाले होकर सबसे पहिलेथे व महाप्रलय होने उपरान्त भी सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा स्थित नहीं रहेगा आप राजा दशरथके पुत्र अयोध्यापुरी व सब जगत्के राजा हैं तुम्हारा आदि व अन्त वेदभी नहीं जाननेसक्ता व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म आपके शस्त्र हैं व सबतरह का सुख तुम्हारी कृपासे जीवों को

प्राप्तहोता है व आप सदा आनन्दमूर्त्ति रहते हैं किसीबात का शोच आपको नहींव्यापता व आप सबका मनोरथ पूर्ण करनेवाले हैं तीनोंलोक में किसीको ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो तुम्हारी महिमा व भेद जानसकै व आप सीतापति लक्ष्मण व भरत शत्रुघ्नके बड़े भाई ऐसे सुन्दर हैं कि कामदेव भी तुम्हारे रूपपर मोहित होजाता है व तुमसदा शेषनागकीछातीपर शयनकरतेहो व आपने राजादशरथ अपने पिताकीआज्ञासे राज्यछोड़कर लक्ष्मण व सीताजीसमेत चौदहबर्षतक बनबासाकिया व बनमें अनेकराक्षसों को मारकर ऋषीश्वर व हरिभक्तोंको सुखदिया जबआपने शूर्पणखाकी नाककाटकर खरदूषण व त्रिशिराआदिकको मारडाला तबरावणयोगीका वेषबनाकर पंचबटीमें आया व सीताजीको अकेलीदेखकर छलसे हरलेगया और उसने अपने पैरमें आपबसूलामारा जबसुग्रीवबांदर जो बालि अपने भाईकेडरसे बिकलथा तुम्हारीशरणआया तबआपने बालिबांदर अधर्मीको मारकर सुग्रीवकी इच्छा पूर्णकी व हनुमान्जीको अपनाभक्त व सेवक समझकर उन्हें यशदिया जब आप बड़ीभारी सेना भालू व बांदरोंकी अपनेसाथ लेकर समुद्रकेकिनारे पहुँचे तब बिभीषण रावणकाभाई तुम्हारीशरणआया सो आपने उसेलंकापतिकहा जब समुद्र अज्ञान व अभिमानकीराह तुम्हारेपास नहीं आया तब आपके क्रोधकरने से समुद्रकापानी सूखनेलगा और सब जलकेजीव ब्याकुलहोगये यहदशा देखतेही समुद्रबिनयपूर्वक तुम्हारेचरणोंपर आनकरगिरपड़ा व अपनाअपराध क्षमाकरानेवास्ते हाथजोड़कर बोला महाराज आपनेदर्शनदेकर मुझेकृतार्थकिया यह दीनबचन सुनकर आप उसपरदयालुहुये फिर आप समुद्रमें पुलबँधवाकर भालू व बांदरोंकी सेनासहित पारउतरगये रावणको कुलपरिवार व सेनासमेतमारकर बिभीषण को लंकाका राज्यदिया व सीताकोसाथलेकर अयोध्यापुरीमें आये और ग्यारहहजार बर्ष वहांका राज्यकिया उनदिनों त्रेतायुगथा तबसे आज मैं तुम्हारा दर्शनपाकर जो ब्रह्मादिक देवतोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता अपनेबराबर किसीदूसरेका भाग्य नहीं समझता सो हे दीनानाथ जिसतरह आपदयाकरके अपनेचरण यहांलेआये उसीतरह दयालुहोकर आवनेकाकारण बतलाइये यहबचनसुनकर श्यामसुंदरनेकहा हे जाम्बवन्त हम तेरीस्तुतिसुनने से बहुतप्रसन्नहुये जो मणि तेरीकन्या हाथमेंलिये खेलती है इसी मणिकी चोरी मुझे सत्राजित यादवनेलगाई इसलिये मैं अपना कलंकछुड़ानेवास्ते यही मणिलेनेआयाहूं सो मुझे देव यहबचन सुनतेही जाम्बवंतने मनसाबाचा कर्म्मणासे प्रसन्नहोकर विनयकिया हे महाप्रभु मेरेयहां एक स्यमन्तक व दूसरी जाम्बवतीकन्या दो मणिहैं सो यहदोनों तुम्हारे भेंट करताहूं आप दयाकरके अंगीकार कीजिये जिसमें मेराउद्धार हो यहसुनकर केशवमूर्त्तिबोले बहुतअच्छा मैंने तेराकहनामाना जैसे यह बचन जाम्बवन्तने सुना वैसेहर्षपूर्बक अपनीकन्या श्रीकृष्णजीको ब्याहकर वहमणि दहेजमें देदिया इतनी कथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित इधर तो मोहनप्यारे

सत्ताईसवेंदिन जाम्बवन्त से बिदाहोकर स्यमन्तकमणि व जाम्बवतीको साथलिये अपने घरचले व उधर यदुबंशी चौबीसदिनतक उनकी आशादेख फिर निराशहोकर वहांसे रोते पीटते द्वारकामेंआये जब राजाउग्रसेन व बसुदेवजीआदिक द्वारकाबासियोंने यह हालसुना तब सब छोटे बड़े स्त्री व पुरुष अन्न जल छोड़कर अति बिलापकरनेलगे व सबोंने सत्राजितको गालियांदेकर अनेक दुर्बचनकहा और बहुतलोगोंने सत्राजित को मारनेचाहा पर बलरामजीने उन्हें मारनेसे वर्जकर समझाया तुमलोग कुछ चिंता मतकरो दैत्यसंहारण स्यमन्तकमणि लियेहुये आवते हैं तीनोंलोकमें कोई ऐसा नहीं है जो उनको दुःखदेने व मारनेसकै जब उनके समझानेपर भी किसीको धैर्य्यनहींहुआ तब रुक्मिणीआदिक सबस्त्रियां कृष्णचन्द्रको रोते २ घबड़ाकर अपने महलमे बाहर निकलीं व आपसमें इकट्ठीहोकर द्वारकाबासियोंसमेत मोहनमूर्त्तिको ढूंढ़ने चलीं ॥

दो० माखनप्रभु बलबीर बिनु धरैं नहीं मनधीर ।
सब मिलकर खोजन चलीं ब्याकुल महाशरीर ॥

हे राजन् नगरकेबाहर जो देवस्थान उन्हें दिखलाई देताथा वहां मानता मानकर आगे चलीजातीथीं जब नगरसे एककोश बाहर देवीके मन्दिरपर पहुँचीं तब बिधि पूर्व्वक पूजाकरने उपरांत हाथजोड़कर बोलीं हे अम्बिकामाता तुम सबकी इच्छापूर्ण करतीहो इसलिये हमलोग तुमसे यह बरदान मांगती हैं जिसमें हमारे प्राणनाथ जल्दी अपनादर्शन देकर हमलोगोंका दुःखहरैं जिससमय द्वारकानाथकी स्त्रियां देवीजीसे यह बरदान मांगरहीथीं व राजाउग्रसेन यदुबंशियोंसमेत अपनीसभामें बैठेहुये शोचकररहे थे उसीसमय मुरलीमनोहर स्यमन्तकमणि व जाम्बवतीको अपनेसाथ लिये हँसतेहुये राजाउग्रसेनकी सभामें जाकर खड़ेहोगये उनकाचन्द्रमुख देखतेही बसुदेवआदिकने अति प्रसन्नहोकर बहुतद्रव्यादिक उनकेहाथसे दान व दक्षिणा दिलवाया और यह समाचार सुनकर रुक्मिणीआदिक स्त्रियां बड़ेहर्षसे गावती व बजावती अपने २ मंदिरमें आईं व एकयदुबंशीनें हँसीकीराह मोहनप्यारेसे कहा ॥

दो० मणि कारण कछु कहिगये जामवन्तके धाम ।
ब्याह करन पहुँचे वहां माखनप्रभु घनश्याम ॥

केशवमूर्त्तिने यहबात सुनकर हँसदिया व उसीसमय सत्राजित को बुलाभेजा व स्यमन्तकमणि उसे देकर कहा तुमने हमको झूठा कलंक लेनेमणि व मारने प्रसेनका लगायाथा सो तुम्हारेभाईको शेरनेमारकर मणिलेलिया व उसशेरको जाम्बवन्त भालू मारकर मणिलेगयाथा सो जाम्बवन्तने अपनी बेटी मुझे ब्याहकर यह मणि दहेज में दिया है सो अपनामणि तुमलेव जब सत्राजितने वहमणि देखकर सब हालसुना तब

अतिलज्जित होगया उससमय तो वह श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार मणि लेकर अपने घर चलाआया पर मनमें बहुत उदासहोकर कहनेलगा देखो मैंने बड़ापापकिया जो झूठाकलंक बैकुंठनाथको लगाया अब मुझे उचितहै कि सत्यभामा अपनीकन्या उन्हें ब्याहकर यहमणि दहेज में देडालूं तो मेराअपराध छूटजावै ॥

दो० यह कन्या जग मोहनी सुन्दर महाअनूप ।
श्रीयदुपति को दीजिये ऐसी रत्नस्वरूप ॥

जब ऐसा बिचारकर सत्राजितने अपनी स्त्री से पूंछा तब वह बोली हे स्वामिन् तुमने बहुतअच्छा बिचाराहै सत्यभामा श्रीकृष्णजीको देकर जगत्में यशलीजिये यह बचनसुनतेही सत्राजितने शुभलग्न ठहराकर सबवस्तु तिलककी अपनेपुरोहितसे बसुदेवजीके यहां भेजदिया तो राजाउग्रसेनने वह तिलक बड़ेहर्षसे लेलिया और धूमधाम से बरातसाजकर श्यामसुन्दरको ब्याहनेआये तब सत्राजितने शास्त्रानुसार अपनीकन्या मुरलीमनोहरको ब्याहकर वहीमणि व अनेकरत्नादिक दहेजमें दिया सो श्रीकृष्णचन्द्र ने और सब दहेजको लेलिया पर वहमणि उसे फेरकर कहा यहमणि हमारेकामकी नहीं है हम से इसकी पूजा नहीं बनपड़ेगी यह मणि तुम अपने यहां रक्खो जब तुमने अपनीकन्या हमकोबिवाहदी तब सब धन तुम्हारेघरका हमाराहुआ व जो तुमने हमैं कलंक लगायाथा उस बातकाभी कुछ अपनेमनमें शोचमतिकरो अब हम तुमसे कुछ खेद नहींरखते जिसकीवस्तु खोजाती है उसकासन्देह अनेक मनुष्योंपर होताहै यह सुनतेही सत्राजितने लज्जितहोकर वहमणि लेलिया व श्यामसुन्दर सत्यभामाको साथ लेकर बाजेगाजेसमेत अपने घर आये इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे स्वामिन् कृष्णचन्द्र बैकुण्ठनाथ को झूठाकलंक क्योंकर लगा शुकदेवजी बोले मुरलीमनोहरने भादौंसुदी चौथकाचन्द्र देखाथा इसलिये उनको झूठीचोरीलगीथी ॥

दो० भादौं शुक्लाचौथ को चन्द्र निहारे जोय ।
यह प्रसंग श्रवणन सुनै तौ कलंक नहिं होय ॥

सत्तावनवां अध्याय ।

सत्राजित व शतधन्वाका माराजाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह शतधन्वा यादव ने सत्राजितको मारकर स्यमन्तकमणि उसकीलेलिया व मुरलीमनोहरके भयसे द्वारका छोड़कर भागाथा वह हाल कहतेहैं सुनो एकदिन किसीने द्वारकामें आनकर श्याम व बलरामसे यहसन्देशा कहा कि युधिष्ठिरआदिक पांचौभाइयोंको दुर्योधनने लाक्षागिरिकेकोटमें रखकर आधीरातको चारोंओरसे आगिलगवादी सो वहलोग अपनी मातासमेत जलगये यहहाल

सुनतेही दोनोंभाइयोंको ऐसाशोचहुआ कि उसीसमय रथपर चढ़कर अपनी फूफू व भाइयोंकी सुधि लेनेवास्ते हस्तिनापुर चलेगये जब श्याम व बलराम राजादुर्योधनकी सभामें पहुँचे तब क्यादेखा कि राजादुर्योधन व धृतराष्ट्रआदिक सब छोटे बड़े उदास बैठे हैं व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य्यकी आंखोंसे आंशू बहिरहाहै व गान्धारीआदिक कौरवोंकी स्त्रियां पांचोंभाइयोंको यादकरके रोरही हैं जब यहदशा देखकर श्याम व बलरामजीभी उनकेपास जाबैठे व युधिष्ठिरकाहाल उनसेपूंछा तो किसीने कुछ उत्तर नहींदिया परन्तु बिदुरने श्यामसुन्दर के निकटजाकर धीरेसे कहदिया कि दुर्योधन आदिकने ता पांचोंभाइयों के प्राणलेनेमें कुछ धोखा नहींकियाथा पर तुम्हारीदयासे वह लोग बचगये यहहाल सुनकर केशवमूर्त्ति वहांसे बागमें अपने डेरेपर चलेआये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब श्याम व बलराम हस्तिनापुर चले गये तब उनकेपीछे द्वारकामें यहहाल हुआ कि शतधन्वा यादव द्वारकाबासीके यहां जिससे पहिले सत्यभामाकी मँगनीहुईथी अक्रूर व कृतबर्माने जाकरकहा एक तो सत्रा-जितने झूठाकलंक मणि चुरानेका द्वारकानाथको लगाया दूसरे अपनी बेटीकी मँगनी पहिले तुमसे करके श्रीकृष्णको बिवाहदी इसलिये तुम्हारी नामधराई जात भाइयों में हुई इनदिनों श्याम व बलराम हस्तिनापुरगये हैं सो तू उसेमारकर अपना बैर क्यों नहींलेता हमारे निकट यहबात उत्तमहै कि रातको हमतीनों मनुष्य सत्राजितके घरपर चलकर उसेमारडालैं व इतने दिनोंतक उसने जो सोना स्यमन्तकमणिके प्रतापसे इकट्ठा किया है वह छीनलेवें यहबात मानकर शतधन्वा रातको अक्रूर व कृतबर्माके साथ सत्राजितके स्थानपर गया व अक्रूर व कृतबर्मा को द्वारेपर खड़ाकरदिया और आप अकेला घरके भीतर जाकर सत्राजितको जो नींदमें सोयाथा मारडाला व स्यमन्तक मणि व जो कुछ सोना उसके घरमें था लेकर बाहर चलाआया जब सत्राजितको मार कर तीनों मनुष्य अपने २ घर चलेआये तब शतधन्वा अकेला अपने घर बैठकर शोच करने लगा देखो मैंने अक्रूर व कृतबर्माका कहना मानकर श्रीकृष्णजी बैकुण्ठनाथ से बैरकिया अब न मालूम वह मेरी क्या दशा करैंगे ॥

दो० कृतबर्मा अक्रूर मिलि मता दियो त्वहिं आय
साधु कहै जो कपटकी तासों कहा बसाय ॥

जब सत्राजितकी स्त्री यह दशा अपने पतिकी देखकर रोने पीटनेलगी व सत्य-भामाने यह हाल सुनतेही वहां जाकर अपने पिताकी यह गति देखी तब उसने पहिले बड़ा बिलापकिया फिर अपनी माताको धैर्य्यदेकर सत्राजितकी लोथको तेलमें रखवा दिया व उसीसमय आप रथपर चढ़कर दैत्यसंहारणके पास हस्तिनापुरको गई ॥

चौ० देखतही उठि बोले हरी । घरहै कुशल क्षेम सुन्दरी ॥

सत्यभामा कह जोरे हाथ । तुमबिनकुशल कहांयदुनाथ ॥

हे महाप्रभो शतधन्वा रात्रिको अधर्म्म की राह सोती समय मेरे पिताको मारकर स्यमन्तकमणि लेगया ॥

चौ० धरे तेलमें श्वशुर तुम्हारे । दूर करो सब शोच हमारे ॥

ऐसा कहकर जब सत्यभामा श्याम व बलराम के सामने अति बिलाप करनेलगी तब द्वारकानाथने भी बलरामसमेत आंखों में आंशूभरकर सत्यभामासे कहा तू अपने मनमें धैर्य्यधर जो कुछ होनाथा सो होचुका अब तेरा पिता जीने तो नहीं सक्ता पर जिसने तेरे बापको माराहै उसे हम मारकर बदला लेवैंगे व जबतक शतधन्वा को न मारूंगा तबतक दूसरा काम नहीं करूंगा जब यह बात सुनकर सत्यभामा को कुछ धैर्य्यहुआ तब बृन्दाबनबिहारी उसीसमय बलरामजी व सत्यभामा को साथ लेकर द्वारकाकीओर चले जब शतधन्वा ने सुना कि श्याम व बलराम हस्तिनापुर से आते हैं तब वह रहना अपना द्वारकामें उचित न जानकर स्यमन्तकमणि लियेहुये कृतबर्मा व अक्रूरके पास चलागया व हाथ जोड़कर बोला सुनो भाई मैंने तुम्हारे कहने अनुसार सत्राजितको मारकर बैकुण्ठनाथसे शत्रुताकी सो अब श्याम व बलरामके हाथसे मेरा प्राण बचना कठिनहै इसलिये तुम्हारे शरण आयाहूं अपने कहनेकी लाज रखकर जहां बतलावो वहां छिपकर रहूं ॥

चौ० मोपर क्रोधकियो यदुनाथा । आवत लिये सुदर्शनहाथा ॥

मोको जीवदान अब दीजै । अपने शरणाखिअब लीजै ॥

नहीं तो हे अक्रूर तुम हमारा रथ हांको हम श्रीकृष्णजी से लड़ैंगे ॥

दो० शतधन्वासे तुरतही उत्तर कह्यो सुनाय ।
अपराधी यदुनाथ को कापै राख्यो जाय ॥

हे शतधन्वा तुम अपने अज्ञानसे यह बात हमैं कहने आयेहो पहिले तुमने नहीं समझ लियाथा कि सत्राजितको मारने में श्रीकृष्णजी सत्यभामाकी सहायता करैंगे हमसे तुम्हारी रक्षा नहीं होसक्ती जहां तुम्हारा मनचाहै वहां भागजावो व हम बैकुण्ठनाथ के सेवक होकर ऐसी सामर्थ्य नहीं रखते जो तुम्हारा साथ देकर उनके हाथसे अपना प्राणखोवैं व उनसे बैरकरके कोई जीता बचने नहीं सक्ता जिन्हों ने गोबर्द्धन पहाड़ अपनी अँगुलीपर उठालिया व बड़े २ योद्धा राक्षसोंको क्षणभरमें मार डाला उनसे कौन लड़ने सक्ताहै संसारी लोग अपने अर्थवास्ते बहुत बातें कहते हैं पर बुद्धिमान् मनुष्यको उचितहै कि अपनी हानि व लाभ समझकर वह काम करे

जिसमें पीछेसे दुःख न पावे हे राजन् जब अक्रूर व कृतबर्म्मा ने ऐसी रूखी २ बातें शतधन्वाको सुनाईं तब उसने अपने जीसे निराशहोकर वह मणि अक्रूरके सामने फेंकदी व आप एक घोड़ेपर जो चारसौकोश एकदिनमें जाताथा चढ़कर जनकपुरकी ओर भागा जब उसी दिन श्यामसुन्दर ने द्वारका में पहुँचकर उसके भागनेका हाल सुना तब अपने स्थानपरभी न जाकर सत्यभामाको महलमें भेजदिया व श्याम व बलराम दोनों भाइयों ने अपना रथ शतधन्वाके पीछे दौड़ाया तो जनकपुरके निकट उसको जाघेरा जब उसीजगह घोड़ा शतधन्वाका मरगया तब वह मुरलीमनोहरके रथ की आहट पाकर पैदलभागा जैसे दैत्यसंहारणने उसको भागते देखा वैसे बलरामजी को रथपर छोड़कर आप उसके पीछेदौड़े व निकट पहुँचकर सुदर्शनचक्रसे शिर उसका काटलिया जब उसका कपड़ाआदिक ढूंढ़नेपरभी वह मणि उसके पास नहीं मिली तब बलरामजी से आनकर कहा अयभाई मैंने शतधन्वाको वृथा मारा किसवास्ते कि स्यमन्तकमणि उसके पास नहीं मिली शतधन्वाके मरतीसमय बलरामजी उनके साथ नहीं थे इसलिये परमेश्वरकी मायासे बलरामजी के मनमें यह संदेहहुआ कि श्यामसुंदर ने वह मणि सत्यभामाके देनेवास्ते हमसे छिपाया है तब उन्हों ने केशवमूर्त्तिसे कहा हे भाई वह मणि किसी दूसरे के पासहै तुम द्वारकामें जाकर ढूंढ़ो एकदिन आप प्रकट होजायगी मैं मिथिलापुर देखताहुआ पीछे से आऊंगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् श्यामसुन्दर अन्तर्यामी बलरामजी के मनका हाल जानकर वहां से द्वारकापुरी को गये व बलरामजी मिथिलापुरी में आये जब जनकपुर के राजाने उनके आवनेका हाल सुना तब सन्मानपूर्बक उन्हें राजमन्दिर पर लिवालेगया और बड़े आदरभावसे उनको अपने यहां रक्खा जब राजादुर्य्योधन ने जो बलरामजी से प्रीति रखताथा यह हाल सुना कि इनदिनों बलभद्रजी कृष्णचन्द्रसे खेद मानकर जनकपुरमें टिके हैं तब वह मिथिलापुरी में आया व बलरामजी के पास जाकर उन्हें बड़े आदरभावसे अपने डेरेपर लिवा लेगया व बिनयपूर्बक हाथ जोड़कर बोला मुझे बड़े भाग्यसे आपका दर्शन प्राप्तहुआ अब मेरे मनमें यह इच्छाहै कि आप कृपाकरके थोड़े दिन यहां रहिये व मुझको अपना चेला बनाकर गदायुद्ध सिखलाइये यह बात सुनने व उसकी सच्चीप्रीति देखने से बलदाऊजी दुर्य्योधन को चेला बनाकर वहां गदायुद्ध सिखाने लगे व श्यामसुन्दर ने द्वारकामें पहुँचकर सत्यभामासे कहा कि सत्राजित के बदले शतधन्वाको मैंने मारडाला पर वह मणि उसके पास नहीं मिली सत्यभामाको इसबातका बिश्वास न होकर मनमें यह सन्देह हुआ कि मुरलीमनोहर वहमणि बलरामजीको देकर मुझसेबहाना करते हैं जब अक्रूर व कृतबर्माने शतधन्वाके मारेजाने का हालसुना तब वह भी अपनेप्राणका डरमानकर द्वारकासे भागे व कृतबर्मा दक्षिणदिशामें चलागया व अक्रूरजी प्रयागक्षेत्रमें चलेआये और स्नान व

दानकरनेउपरांत गयाजीजाकर पितरोंका श्राद्धकिया व वहांसे काशीजी में आनकर रहनेलगे व अक्रूर प्रतिदिन बीसमनसोना स्यमन्तकमणिसेपाकर दानादिक शुभकर्ममें खर्चकरडालताथा श्यामसुन्दर अन्तर्य्यामी यह सबहालजानतेथे पर उन्होंने यह भेद किसीसे नहीं कहा कि अक्रूरस्यमन्तकमणि लेकर काशीजीमें टिकाहै सब द्वारकाबासी यह समझते थे कि अक्रूर व कृतबर्माने सत्राजितके मारनेवास्ते सम्मत कियाथा इस लिये श्रीकृष्णके डरसे वे दोनों भागगये हैं जब बलरामजी कुछदिनबीते दुर्योधनको गदायुद्ध सिखलाकर द्वारकामेंआये तब मुरलीमनोहरने यदुबंशियोंको साथलेकर लोथ सत्राजितकी तेलमेंसे निकलवाया व दग्धक्रियाकर्म उसका आपकिया इतनीकथासुनाकर शुकदेवमुनिबोले हे राजन् अक्रूरजी जिसदेश व गाँवमेंरहतेथे उसजगह हरिइच्छासे प्रजाकी चाहनानुसार पानीबरसकर अन्नमहँगा नहींहोताथा और वहांपर कुछरोग महामारीआदिक का न होकर सबछोटे बड़े आनन्दपूर्वक रहतेथे जबबैकुण्ठनाथकी यहइच्छाहुई कि फिर अक्रूरको बुलानाचाहिये तब द्वारकापुरीमें अबर्षणहोकर रोग व महँगीसे प्रजालोग दुःखपावनेलगे यहदशा अपनेदेशकी देखतेही यदुबंशियोंने घबड़ाकर श्यामसुन्दरसे कहा ॥

चौ० हमतो शरण तुम्हारे रहैं । महाकष्ट अब क्योंकर सहैं ॥

महाराज न मालूम परमेश्वरकी क्याइच्छाहै जो पानी नहींबरसता हमलोग तुम्हें छोड़कर अपनादुःख किससेकहैं आप दयाकरके कोईऐसा उपायकीजिये जिसमेंहमारा दुःखछूटजाय यह आधीन बचनसुनकर द्वारकानाथने कहा कि जिसजगहसे साधु व महात्मा चलाजाताहै वहांकेलोग अनेकतरहका दुःखपावते हैं जबसे अक्रूरद्वारकाछोड़कर चलेगये तबसे यहांअन्नकी महँगी व रोगकी आधिक्यताहै यह बचनसुनकर यदु-बंशीबोले हे कृपानिधान आपनेसच्चकहा हमलोग भी यहबात समझते हैं पर तुम्हारे डरसे कहिनहींसक्तेथे अक्रूरजी यदुबंशियोंमें श्रेष्ठहोकर तुम्हारेडरसे भागे हैं जबतक वह द्वारकामेंरहे तबतक हमलोगोंने दुःखनहींपाया सो आप दयाकरके अक्रूरको यहींबुलाइये जिसमें सबकोई सुखपावैं यहबात सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा बहुतअच्छा तुमलोग अक्रूरको ढूंढ़कर सन्मानपूर्व्वक यहां लिवालेआवो यहवचन सुनतेही पांच सात यदु-बंशी मिलकर अक्रूरको ढूँढ़ने निकले जब काशीजीमें पहुंचकर पता उनकापाया तब उनकेपासजाकर बिनयकिया हे अक्रूरजी तुम्हारेबिना द्वारकाबासियोंने बड़ादुःखपाया मुरलीमनोहर के रहनेपरभी वहां अवर्षणहोकर अकालपड़ा इसलिये श्यामसुन्दर ने तुमको बुलाकर कहाहै कि मेरी भक्तिरखतेहो तो निस्संदेह चलेआवो ॥

चौ० साधुनके बश श्रीपति रहैं । तिनसे सबसुख सम्पतिलहैं ॥

यहबात सुनतेही अक्रूरजी बड़ेहर्षसे उसीसमय स्यमन्तकमणि लेकर यदुबंशियोंके

साथ द्वारकाकोचले जब अक्रूरजी नगरकेनिकट पहुंचे तब श्याम व बलराम आगेसे आनकर उनको सन्मान पूर्व्वक लिवालेगये जैसे अक्रूर द्वारकापुरीमें पहुंचे वैसे परमेश्वरकी इच्छानुसार पानीबरसा व अन्न सस्ताहोकर सब किसीका रोगछूटगया एक दिन वृन्दाबनबिहारीने अक्रूरको बुलाकर कहा अयचाचा अब तुम उदासी छोड़कर प्रसन्नरहाकरो हमनेतुम्हारा अपराध क्षमाकिया और तुम्हारेपास जो स्यमन्तकमणिहै उसे किसीकेसामने हमारेपासलेआवो जिसमें बलरामजी व सत्यभामाका सन्देहछूटजावै जिसकीबस्तुहो उसको देनीचाहिये जब वह न रहै तो उसकेपुत्रकोदेवै व बेटा भी न हो तो उसकीस्त्रीको देवै व स्त्री भी न होवै तो कन्याकेपुत्रको देवै वह भी न हो तो उसकेभाईको देडालै जब भाई भी न रहै तो उसके कुलपरिवारमें जो कोई हो उसे देनाचाहिये जिसकेकुलमें कोई भी न हो तो उसके गुरूकोदेडालै वह भी न हो तो उसकेगुरूके पुत्रको सौंपदेवै जब वह भी न रहै तो वहबस्तु ब्राह्मणकोदेदेवै दूसरेकाधन कभी न लेनाचाहिये सो सत्राजितके पुत्र नहीं है इसलिये सत्यभामाका बेटायहमणिलेगा यहबचनसुनतेही अक्रूरने वहमणि राजाउग्रसेनकी सभामें जहांपर बलभद्रआदिक सबयदुबंशी बैठेथे लाकर श्याममुंदरके सामनेरखदिया व हाथजोड़कर बिनयकिया हे दीनानाथ यहमणिलेकर मेराअपराध क्षमाकीजिये आजतक जितना सोना इसमणिने मुझको दियाथा वह सब मैंने शुभकर्म में खर्चकरडाला जब वह देखकर बलरामजी व सत्यभामाका संदेहछूटगया तब वे दोनों बहुतलज्जितहोकर मोहन प्यारेके चरणोंपरागिरपड़े व बलदाऊजीने रोकरकहा हे दीनानाथ मुझसे बड़ाअपराध हुआ जो तुम्हारेऊपर झूठा संदेहकिया इसलिये बनमेंजाकर मरजाऊंगा अब मैं इस योग्यनहींरहा जो अपनामुंह आपको दिखलाऊं जब यहदशा बलभद्रजीकी गोपीनाथने देखी तब उनको अपनीछातीसे लगालिया व बहुतधैर्य्यदेकर कहा तुम किसी बातकी चिन्तामतकरो मैंने तुम्हारे संदेहकरनेसे कुछखेद नहींमाना संसारमेंमायारूपी स्त्री व द्रव्यदोनों बहुतबुरीहोकर स्त्री व पुरुष व पिता व पुत्रमें बिरोधकरादेती हैं इसलिये ज्ञानीमनुष्यको इनदोनोंसे अधिकप्रीतिरखना न चाहिये जब श्यामसुन्दरने इसी तरह उन्हें बहुतधैर्य्य देकर स्यमन्तकमणि सत्यभामाको सौंपदिया तब उसकेमनका शोचछूटिगया इतनीकथासुनकर परीक्षितनेपूंछा हे मुनिनाथ जब अक्रूर ऐसागुणरखता था तो सत्राजित उसकेसामने क्योंमाराजाकर वहआप किसवास्तेभागगया शुकदेवजी ने कहा हेराजन् जिसदिनसे अक्रूरने शतधन्वाको सत्राजितके मारनेवास्ते सम्मतदिया उसीदिनसे सबगुण उसकाजातारहा यहबातसुनकर परीक्षितबोले महाराज आपनेसच्च कहा कुसंगतिकरनेमें सिवाय हानिके कुछलाभनहींहोता अक्रूरका सुलक्षण जातारहा तो कौनआश्चर्य्य है पर आप यह कहिये कि अक्रूरमें ये सबगुण किसतरह प्रकटहुये थे शुकदेवजीनेकहा हे राजन् एकसमय काशीजीमें अबर्षणहोकर बड़ीमहँगी पड़ी व

उन्हींदिनों सुफल्कयादव बड़ाधर्म्मात्मा व सत्यबादी व हरिभक्त किसी संयोगसे वहां जापहुंचा जब उसके जातेही हरिइच्छासे बड़ापानी बर्षकर सबलोगोंने सुखपाया तब काशीनरेशने प्रसन्नहोकर गांदिनीनाम अपनीकन्या उसको बिवाहदी सो उसीकन्यासे अक्रूर उत्पन्नहोकर सुफल्कका गुण उसमें प्रकटहोगया ॥

दो० मणिलीला अद्भुत महा कहै सुनै जो कोय।
ताको कबहूं जगत में कछुकलंक नाहिं होय ॥

अट्ठावनवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरको कालिन्दी व सत्या व भद्रा व लक्ष्मणा आदिसे बिवाह करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दर सत्राजितका मरनासुनकर युधिष्ठिर आदिको बिनादेखे हस्तिनापुरसे चलेआयेथे सो मनउनका अर्जुन आदिकसे भेंटकरने वास्ते चाहताथा व हाल युधिष्ठिरआदिक का इसतरह परहै जब राजादुर्योधनने पांचौ भाई पाण्डवों व कुन्ती उनकीमाताको लाखकेकोटमेंरखकर आगलगवादी तब वेलोग सुरंगकेराह जो बिदुरजीने पहिलेसे बनवारक्खाथा बाहर निकलआये और संन्यासी वेषमें अपनेको छिपाकर कहींरहनेलगे व एकभिल्लिनि अपने पांचबेटोंसमेत जो उसी कोटमें जलकर मरगईथी उनकी हड्डीदेखने से दुर्योधनको बिश्वासहुआ कि युधिष्ठिर आदिक जलगये व उन्हींदिनों में राजाद्रुपदने अपनी कन्याका स्वयम्बररचा सो वहांपर दुर्योधनआदिक सब पृथ्वीके राजा इकट्ठेहुये व वेदव्यास व धूम्रऋषीश्वरके कहजाने से अर्जुनआदिक पांचौभाई भी अपनी माताको किसीजगह छोड़कर संन्यासी वेषबनाये हुये उसस्वयम्बरमें पहुंचे जिससमय द्रौपदी चन्द्रमुखी सोलहोंशृङ्गारकिये अङ्ग २ पर गहना जड़ाऊ पहिने फूलोंकागजरा हाथमें लिये वहांपर जहां सबराजाबैठेथे आनकर खड़ीहुई तो उसकी सुन्दरताई देखकर सबछोटे बड़े मोहितहोगये उससमय धृष्टद्युम्न द्रौपदीकेभाई ने पुकारकरकहा जो कोई कड़ाहे में मछलीकी परछाहीं देखकर शिरनीचे कियेहुये बाणसे मच्छकोबेधै उसेयहकन्या बिवाहदेऊंगा यहबचनसुनतेही राजाशिशु-पाल ने उठकर वहधनुष जो मछली बेधनेवास्ते राजाद्रुपदने वहांरखवाया था उठाने चाहा जबवहधनुष उठाने नहींसका और लज्जितहोकर फिर आया और वही दशा राजाजरासन्धकी भी हुई तब कर्णने उसधनुषको चढ़ाकर मच्छ बेधनाचाहा उससमय द्रौपदीकर्णसे बोली तू सूतपुत्रहोकर ऐसी सामर्थ्य नहींरखता जो मुझे बिवाहलेजावे यहबचनसुनतेही कर्णने द्रौपदीकीओर देखकर वहधनुष पृथ्वीपर धरदिया व अपनी जगह आनबैठा जब यहदशा उनलोगोंकी देखकर और दूसरेराजा मच्छबेधनेसे नि-राशहोगये तब अर्जुनने युधिष्ठिर बड़ेभाईकी आज्ञालेकर जैसे उसमच्छको अपनेबाण

से बधडाला वैसे द्रौपदीने जयमाल उनकेगलेमें पहिनादिया यहहाल देखतेही दूसरे राजोंने डाहसे आपसमें कहा बड़े शोच व लज्जाकी बातहै जो हम लोगों के सामने से यह संन्यासी राजकन्याको लेजावै जब ऐसा बिचारकर मूर्खराजों ने अर्ज्जुन का सामनाकिया तब पांचौभाई पाण्डवा उन्हें युद्धमें जीतकर द्रौपदीको अपनी माताके पास लेआये व कुन्ती माताकी आज्ञानुसार अर्जुन आदिक पांचौभाइयों ने उसे अपनी स्त्री बनाकर रक्खा जब यह हाल दुर्य्योधनको मालूमहुआ कि युधिष्ठिर आदिक पांचौ भाई नहीं जले और जीते बचिगये हैं तब बिदुरको भेजिकर उन्हें बुलाया व आधा राज्य अपना उनको बांट दिया जब युधिष्ठिर आदिक पांचौ भाइयों ने आधा राज्य अपना पाया तब वे हस्तिनापुरके निकट इन्द्रप्रस्थनाम एकनगर बहुतअच्छा बसाकर आनन्दपूर्वक राज्य करनेलगे व अनेक राजोंको जीतकर अपने बशमें करलिया यह समाचार पातेही मोहनप्यारे कई यदुबंशियोंको साथलेकर इन्द्रप्रस्थको गये जब देवकी नन्दन उसनगरके निकट पहुँचे तब युधिष्ठिरआदिक पांचौभाई यह समाचार सुनतेही आगे से आनकर सन्मानपूर्वक उन्हें राजमन्दिरपर लिवालेगये व श्रीकृष्णजी ने कुन्ती के पास जाकर उसके चरणोंपर शिर अपना रखदिया तब कुन्ती ने श्यामसुन्दर को गोदमें बैठाकर बहुतसा प्यारकिया जब द्रौपदी कुन्तीकी आज्ञानुसार घूंघटकाढ़े हुये हरिचरणोंपर गिरपड़ी तब मुरलीमनोहरने उसके शिरपर हाथ रखकर उसे अशीश दिया फिर कुन्ती ने श्यामसुन्दरको जड़ाऊ चौकीपर बैठाकर प्रसन्नतासे उनकी आरती की व छत्तीसव्यञ्जन बनाकर उन्हें खिलाया जब श्यामसुन्दर भोजनकरके पान व इलायची खानेलगे उससमय कुन्ती ने बसुदेव व शूरसेन व बलरामजी आदिककी कुशलपूंछकर उनसे कहा महाराज तुम्हारी कृपाकाहाल मैं कहांतक वर्णनकरूं पहिले अक्रूरको मेरी सुधि लेनेवास्ते भेजकर दूसरी बेर आपआये ॥

दो० जब तुम प्यारे प्रीति करि पठयो श्रीअक्रूर।
तबहीं मन धीरजभयो गयो कष्ट सब दूर॥

हे दीनानाथ उसीदिनसे मैंने जाना कि आप मेरेसहायकहैं जब आप ऐसे त्रिलोकीनाथ मेरीरक्षा करनेवाले हैं तो मैं किसीकाडर नहींरखती मुझे इसबातका बिश्वास है कि जो कोई तुम्हारे शरणआया उसे कुछ दुःख नहींहोता जिसतरह तुम अपनेभक्त व तीनोंलोकों का दुःखछुड़ा देतेहो उसीतरह मेरे बेटोंको भी अपनेशरणागत जानकर उनका रक्षाकरो ॥

चौ० जब जब बिपतिपरी हरिभारी। तब तब रक्षाकरी हमारी॥
अहो कृष्ण तुम परदुखहरणा। पांचोभाय तुम्हारीशरणा॥

जिसतरह हरिणी अपनेझुण्डसे बिलगहोकर भेड़िये का डररखती है उसीतरह मेरे पांचोपुत्र दुर्योधन आदिकसे अपने प्राणका भयरखते हैं जबकुन्ती यह कहचुकी तब युधिष्ठिरने श्यामसुन्दरके आगे हाथजोड़कर बिनयकिया हे त्रिलोकीनाथ मैं जानताहूं कि पिछलेजन्म कोई शुभकर्म मुझसेहुआ था जिसके प्रतापसे तुम्हारेचरण जिनका दर्शन ब्रह्मादिक देवतों को जल्दीध्यानमें नहीं मिलता सो मेरेघरआये ॥

दो० जिनचरणों की रेणुसों ममघर भयोपुनीत ।
केहि मुखसों वर्णनकरौं माखन प्रभूसुनीत ॥

हे महाप्रभो हमलोग अनाथहोकर सिवाय तुम्हारीदया व कृपाके दूसरेका भरोसा नहींरखते मुझे ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो आप बैकुण्ठनाथकी स्तुति वर्णनकरनेसकूं जिसतरह आपने मुझको अपनादास जानकर दयाकीराह यहां कृपाकी उसीतरह चार महीने बरसातभर यहांरहकर अपनेदासोंको सुखदीजिये यह दीनबचन कुंती व युधिष्ठिरका सुनकर वृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारीने उनकोबहुत धैर्य्यदिया व चारमहीने वहां रहकर प्रतिदिन नये २ सुख उन्हें देनेलगे एकदिन श्यामसुन्दर व अर्जुन राजा युधिष्ठिरसे आज्ञालेकर रथपर बैठके बनमें अहेरखेलनेवास्ते गये सो अर्जुनने कईशेर व चीता व भालू व शूकर व हरिण व साबर व रीछआदिकका शिकारमारा व मांस हरिण व साबरका राजमन्दिरपर भेजदिया जब बहुत परिश्रम करनेसे मुरलीमनोहर व अर्जुनको प्यासमालूमहुई तब दोनोंने यमुनाकिनारे जाकर पानी पिया व वृक्षकी छायामें सोगये ॥

दो० श्रीयमुना शोभितमहा जामें उठत तरंग ।
शीतल पवनबहै सदा फूले कमल सुरंग ॥

जब अर्जुन थोड़ीदेर सोकर टहलताहुआ यमुनाकिनारेगया तब उसने क्या देखा कि यमुनाजल में सुनहला जड़ाऊमन्दिर बनाहोकर उसमें एककन्या महासुन्दरी बैठी हुई तपकरती है यह चरित्र देखतेही अर्जुनने उसकन्यासे पूछा तुम किसकी बेटी कौन नामहोकर यहां किसकारण अकेली बैठी तपकरतीहो ॥

दो० यह सुनकर बोली तभी महामनोहर बाम ।
पिता हमारे सूर्य हैं कालिन्दी ममनाम ॥

जिनदिनों कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द वृन्दाबनमें बिहारकरतेथे तभीसे मैं उसमोहनी मूर्त्तिपर मोहितहोकर उन्हें अपनापति बनाया चाहतीहूं व मैंने मन साबाचा कर्मणासे यह प्रणकियाहै कि सिवाय बैकुण्ठनाथके दूसरेसे बिवाह नहींकरूंगी सूर्य्यदेवताने मेरी

इच्छाजानकर यह मन्दिर रहनेवास्ते बनवादिया सो अपने पिताकी आज्ञानुसार दिन रात यहां रहकर हरिचरणोंका ध्यान व स्मरणकरतीहूं पर मैंने सुनाहै कि श्यामसुन्दर पर अनेक स्त्रियां महासुन्दरी मोहितहोकर आठोंपहर उनकी सेवामें रहती हैं इसलिये मुझगरीब बिचारीको उनकेपास द्वारकामें पहुँचना बहुतकठिन है कदाचित् वे दयालु होकर अपनादर्शन देवैं तो मेरीकामना पूर्णहोसक्ती है ॥

चौ० वे सबके मनकी गति जानैं । दासनकी बिनती नितमानैं ॥
जबलों नहिं पूजै मम आसा । तबलों जल में करों निवासा ॥

अर्जुन यहबात सुनतेही वहांसे हँसताहुआ श्यामसुन्दरके पास आनकर बोला महाराज यमुनाजलमें एकमहासुन्दरी तुम्हें अपनापति बनानेवास्ते तपकरती है तुम ऐसे भाग्यवान्हो कि तुम्हारे पीछे २ महासुन्दरी स्त्रियां दौड़ाकरती हैं यह सुनतेही श्याम सुन्दर वहांसे उठकर यमुनाकिनारे चलेगये व अर्जुनने पहिलेसे जाकर उसचंद्रमुखी से कहा जिन्हें तुम अपनापति बनाया चाहतीहो वही द्वारकानाथ अविनाशीपुरुष यहां आते हैं जैसे यह बचन कालिन्दीने सुना वैसे मारेहर्षके आगे दौड़कर हरिचरणोंपर गिरपड़ी व परिक्रमा लेनेउपरांत हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ीहोगई जब मुरलीमनोहर ने उसकीसच्ची प्रीति देखकर हँसतेहुये उसकाहाथ पकड़लिया तब कालिन्दीने बिनय पूर्व्वक कहा हे प्राणनाथ मैं मनसाबाचा कर्मणासे आपकी दासीहोकर तुम्हारे साथ चलनेकोतैयारहूं पर संसारी व्यवहार व मर्य्याद वेद व शास्त्र जो कुछ आपने बनादियाहै उसके अनुसार चलनाचाहिये यह बचन सुनकर केशवमूर्त्तिने उसीसमय सूर्य्यदेवता के पास जाकरकहा तुम अपनी कन्या हमैं देव जब सूर्य्यदेवताने उसीक्षण वहां आनकर वह कन्या श्रीकृष्णजीको संकलपदी तब श्यामसुन्दर उसे रथपर चढ़ाकर इन्द्रप्रस्थ में आये वहांपर विश्वकर्माने पहिलेसे बैकुण्ठनाथकी इच्छानुसार एकस्थान बहुत अच्छा बनारक्खाथा उसीमें कालिन्दीको उतारकर एकरूप अपना उसकेपास रक्खा व दूसरे स्वरूपसे अर्जुनको साथलियेहुये कुन्तीके घर चलेगये एकदिन राजायुधिष्ठिरने केशव मूर्त्तिसे बिनयकिया हे महाप्रभो ऐसी दयाकीजिये कि जिसमें मेरेरहनेवास्ते एकस्थान बहुतअच्छा तैयार होजावै यह वचन सुनतेही गोपीनाथने विश्वकर्माको आज्ञादी तो उसने द्वारकापुरी में ऐसे उत्तम अनेकस्थान तुरन्त युधिष्ठिरआदिकके रहनेवास्ते बना दिये जब पांचौभाई उसमें हर्षपूर्वक रहनेलगे तब एकदिन रातको जहां मुरलीमनोहर व अर्जुन बैठेथे अग्निदेवताने आनकर कृष्णचन्द्रसे बिनयकिया महाराज मुझे अजीर्ण का रोग उत्पन्नहुआ है सो किसीतरह नहींजाता मैं नन्दनबनको जहां अनेक जड़ी व बूटी गुणवतीलगी हैं जलादेऊं तो मेरारोग छूटजावे श्यामसुन्दरनेकहा बहुतअच्छा तुम जाकर उसे जलादेव अग्नि हाथ जोड़कर बोले हे दीनानाथ उसबागकी रक्षा

इन्द्रकरता है मैं अकेलाजाऊं तो इन्द्र पानीबरसाकर मेरीज्वाला ठंढीकरदेगा यहबात सुनकर लक्ष्मीपतिने अर्जुनसे कहा हे भाई तुम अग्निके साथ जाकर नन्दनबन इसे जलानेदेव जिससे इसकारोग छूटजावै अर्जुन उनकी आज्ञानुसार धनुषबाण उठाकर अग्निके साथ चलागया व उसबागमें पहुँचकर अग्निसेकहा तुम अपनी इच्छानुसार यहबाग जलादेव मैं तुम्हारी रक्षाकरनेवास्ते खड़ाहूं जब अग्निदेवता आम व इमली व बेर व पीपर व पाकर व महुआ व जामुन व खिरनी व कचनार व गूलरआदिक वृक्ष वहांके चारोंतरफसे जलानेलगे व सब पशुपक्षीआदिक वहांके अपना २ प्राणलेकर जिधर तिधर भागे और धुवां आकाशमें पहुँचा तब राजाइन्द्रने मेघपतिको बुलाकर आज्ञादी तुम अभीजाकर ऐसापानी नन्दन बागपर बरसावो जिसमें सब अग्नि बुझ- जाय व कोई पशु व पक्षी जलने न पावै जब यह आज्ञापातेही मेघराजने दल बादलकी सेनासाथ लियेहुये नन्दनबागपर जाकर पानीबरसाया तब अर्जुनने पवनबाण मार कर सब बादलको इसतरह जहां तहां उड़ादिया जिसतरह हवासे रुईकेफूहेउड़जाते हैं व बाणोंसे नन्दनबागके चारोंओर ऐसापिंजरा बनादिया जिसमें कोई वहांका पशु पक्षीबाहर न जावे व पानीकीबूंद उसजगह पहुँचने न सके जब अग्निदेवता आनन्द पूर्व्वक बागजलातेहुये निकटस्थान मयनामदानवके पहुँचे तब उसदानवने जलनेकेडर से अर्जुनके पास आनकर बिनयकिया हे राजकुमार मुझे अपनी शरणागत समुझकर मेराप्राण इस अग्निके हाथ से बचावो यह दीनबचन सुनतेही अर्जुन ने प्रसन्नहोकर अग्निसे कहदिया तुम मयदानवकाघर मतजलावो जब अग्निदेवताने अर्जुनकी आज्ञा से मयदानवका स्थानछोड़कर और सब नन्दनबागको जलादिया तब मयदानवने अर्जुन का उपकारमानकर उससे मित्रताईकी व अपनीमायासे एकस्थान सभाका बहुतउत्तम युधिष्ठिरआदिक के बैठनेवास्ते इन्द्रप्रस्थमें बनादिया जिसे देखकर हमलोग मोहितहो जातेथे उसमें कईजगह ऐसेकुण्ड बिल्लौरके साफबने थे जिसको देखकर पानीभराहुआ मालूमहोताथा व किसीजगह पानीभरेहुये कुण्ड सूखेदिखलाई देतेथे एकदिन राजा दुर्योधन वहस्थान देखनेवास्ते गया जब पानी में भीगने के सन्देहसे अपनाजामा उठाया तब भीमसेन हँसनेलगा इसलिये दुर्योधन बहुतलज्जितहोकर अपनेघर चलाआया व उसी दिनसे दुर्योधनने पांडवों के साथ अधिकशत्रुता मनमें बढ़ाई जब अग्निदेवताकारोग अर्जुनकी सहायताकरने से छूटगया तब उसने बहुतप्रसन्नहोकर गांडीवनाम धनुष व दिव्यकवच व एकरथ चारघोड़े श्वेतबर्ण व दो तरकस जिसकेबाण कभी नहीं घटते थे व एकतलवार व ढाल अतिउत्तम अर्जुनको दिये ॥

दो० कालिन्दी सुख देनको पाण्डुसुतन के काज ।
अग्निभार उपजायकर रहे तहां यदुराज ॥

जब श्यामसुन्दरने चारमहीने इन्द्रप्रस्थमें रहिकर राजायुधिष्ठिरसे बिदाचाही तब पांचौभाई पाण्डव व कुन्ती व द्रौपदी आदिक बहुत उदास होगये इसवास्ते बसुदेव नन्दन उन्हें धैर्य्य देने उपरान्त अर्ज्जुन व कालिन्दी को साथ लेकर जब कईदिन में आनन्दपूर्व्वक द्वारकापुरी पहुँचे तब उनके दर्शन से सब छोटे बड़ों ने सुखपाया कई दिनबीते कृष्णचन्द्रजी ने राजा उग्रसेनसे कहा महाराज कालिन्दी सूर्य्यदेवताकी बेटी जो हमारे संगआई है उसका बिवाह मेरेसाथ करदीजिये यह बचन सुनतेही उग्रसेन ने शुभलग्नमें श्यामसुन्दर व कालिन्दीका बिवाह बड़े धूमधामसे करदिया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह मुरलीमनोहर मित्रबिन्दाको बिवाह लाये थे उसका हाल सुनो श्यामसुन्दरकी फूआराजदेबीनाम उज्जैनके राजासे बिवाही गईथी जब उसकी मित्रबिन्दा कन्या अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी उत्पन्न होकर बिवाहने योग्यहुई तब राजा मित्रसेन उसके भाई ने स्वयम्बर उसका रचकर सब जगह नेवता भेजा सो अनेक देशके राजा वहां आनकर इकट्ठे हुये यह हाल सुनकर बसुदेवनन्दन अन्तर्यामी भी जिनकी चाहना व भक्ति वह कन्या हृदय में रखती थी अर्जुन समेत उज्जैनको गये और वहां पर देश २ के प्रतापी राजा स्वयम्बरमें बैठे थे वहां जाकर खड़ेहुये उसीसमय मित्रबिन्दाने सोलहों शृङ्गार किये हाथमें जयमाल लिये उसस्थान पर आनकर जैसे मोहनीमूर्त्तिको देखा वैसे उनपर मोहित होकर वह माला उनके गलेमें डालदी यह हाल देखकर सब राजा अपने अपने मनमें पछितानेलगे व राजा दुर्योधन जो अपने भाइयों समेत वहां गयाथा मनमें डाह उत्पन्नकरके मित्रसेन व बिन्दसेन राजकन्याके भाइयों से बोला सुनो यार कृष्ण तुम्हारे मामाका बेटा राजकन्या को बिवाह लेजायगा तो इससंसारी के लोग तुम्हारी हँसी करैंगे इसलिये तुम अपनी बहिनको जाकर समझादो कि वह इनसे अपना बिवाह न करै नहीं तो सब राजों में तुम्हारी हँसी होगी यह बचन सुनतेही जैसे मित्रसेन ने अपनी बहिनको समझाया वैसे वह श्यामसुन्दर के निकटसे हटकर अलग खड़ी होगई तब अर्ज्जुन ने झुककर श्रीकृष्णजी के कानमें कहा महाराज इससमय आप किसीका संकोच करैंगे तो बात बिगड़जायगी जो कुछ करनाहो सो तुरन्त कीजिये यह बात सुनतेही वृन्दाबनबिहारी ने झपटकर स्वयम्बरके बीचमें मित्रबिन्दाका हाथ पकड़लिया व उसको अपने रथपर बैठाकर द्वारकाको चले यह हाल देखतेही दूसरे राजा जो वहां थे अपने २ रथ व घोड़ोंपर चढ़कर उनके पीछे दौड़े व अनेक रंगके शस्त्र लियेहुये उनको चारोंओर से घेरलिया जब दैत्यसंहारणनेदेखा कि बिनालड़े ये लोग नहीं पीछा छोड़ैंगे तब उन्होंने कई बाण ऐसे मारे कि सब राजा जिधर तिधर भागगये व वृन्दाबनबिहारी ने आनन्द पूर्वक द्वारकामें पहुँचकर शास्त्रानुसार उसके साथ अपना बिवाहकिया ॥

दो० ताके अंग प्रसंगते मुदित भयो यदुराय।

महिमा वाके भाग्यकी कासों बरणी जाय ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित अब जिसतरह श्यामसुन्दरने सत्यानाम राजकुमारी से बिवाहकियाथा उसका हालसुनो नग्नजित अयोध्याके नृपति ने सत्या अपनी कन्याका स्वयम्बर रचकर यह प्रण कियाथा जो आदमी मेरे सातों बैलोंकी नाक एकबेर नाथडालै उसको अपनी बेटी बिवाहदूंगा इसलिये जो राजा स्वयम्वरका हाल सुनकर वहां जातेथे वह लोग उन बैलों का स्वरूप देखकर कोई उनकी नाक छेदना अंगीकार नहीं करताथा यह सुनतेही मुरलीमनोहर अर्ज्जुन को सेनासमेत साथलेकर राजकन्यासे बिवाह करनेवास्ते अयोध्यापुरी में गये जब उन के आवनेका हाल राजा नग्नजितने सुना तब वह आगे से जाकर हरिचरणों पर गिर पड़ा व अनेकबस्तु उन्हें भेंटदेकर सन्मानपूर्वक अपने घर लिवालाया व जड़ाऊ चौकी पर बैठाकर चरण धोने उपरान्त चरणामृत लिया व बिधिपूर्वक पूजाकरके बहुतअच्छा भोजन उनको खिलाया व मोतियोंकी माला पहिनाकर पीताम्बर ओढ़ाया व सच्चे मनसे हाथ जोड़कर इसतरह पर बिनयकिया हे महाप्रभु आप सब गुणोंसे भरे होकर कुछ अवगुण नहीं रखते व तुम्हारे चरणोंकी धूरि ब्रह्मादिक देवता व योगी व ऋषी-श्वर अपने शिरपर चढ़ावते हैं जब शेषनागजी दोहजार जिह्वासे आपकी स्तुति नहीं करनेसक्ते तो दूसरेकी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारे गुण बर्णन करनेसकै लक्ष्मी दिनरात तुम्हारा पांव दाबकर नारदजी आठोंपहर आपका गुण गायाकरते हैं हे बैकुण्ठनाथ सब जगत् तुम्हारी छायामें रहताहै आज मेरा बड़ाभाग्यथा जो आपके चरण तीनों लोकके तारनेवाले मेरेघर आये व मैंने उनचरणोंको अपनेहाथसे धोया इन्हींचरणोंका धोवन गंगाजी हैं जिनकीमहिमाका वर्णन नहींहोसक्ता जिस २ जगह आपने चरण कमल अपनारक्खा है उसपृथ्वीपर नेवछावर होजाताहूं ॥

दो॰ चरणाम्बुज हरिके चहैं शिव बिरंचि मुनिईश ।
धन्यभाग्य जो धरतहैं उनचरणन पर शीश ॥
उदयभयो सब आयके आज हमारोभाग ।
माखनप्रभु दर्शनदियो कियो बहुत अनुराग ॥

जब राजाने इसीतरह बहुतस्तुतिकरके उसदिन मुरलीमनोहरको अपने यहांटिकाया तब सत्यानाम राजकुमारी जो अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी थी मोहनीमूर्त्तिको देखतेही उनपर मोहितहोकर अपनेमनमें कहनेलगी हे परमेश्वर मुझसे कोई शुभकर्म पिछले जन्ममेंहुआहो तो कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दको स्वामीपाकर अपनाजन्म स्वार्थकरूं ऐसा बिचारकर उसने अपनीसखियोंसेकहा हे प्यारियो मेरामन इस श्याममूर्त्तिनेमोहिलिया॥

चौ० यद्यपि ये त्रिभुवन के स्वामी । सकल विश्वके अन्तर्यामी ॥
सदा बिरक्त रहैं मनमाहीं । इन्हिनकी इच्छा कछुनाहीं ॥
तद्यपि जो इनसे मनलावै । प्रेमरीतिकी प्रीति लगावै ॥
तासों प्रीतिकरत सुखदाई । हरिजूकी यहरीति सदाई ॥
जब मैं हरिचरणनको पाऊं । हरिदासन में नामधराऊं ॥

दो० जिनके मनमें प्रीतिहै सो सबदेव अशीश ।
श्रीयदुपति मोकोबरैं सब ईशनके ईश ॥

जब दूसरेदिन प्रातसमय श्यामसुन्दर उठे तब राजा नग्नजितने हाथ जोड़कर बिनयकी हे करुणानिधान मुझसे कुछ टहल तुम्हारी नहींबनपड़ी इसलिये लज्जितहूं और जो आज्ञादीजिये सो अपनी सामर्थ्यभर तुम्हारीसेवाकरूं श्यामसुन्दर अन्तर्यामी को सच्चाप्रेम उसकन्याका मालूमहुआथा इसलिये उन्होंने हँसकर कहा हे राजन् तुम्हारी स्तुतिसुनकर हमारामन भेंटवास्ते बहुतचाहताथा सो तुम्हें देखकर बड़ा सुखपाया क्षत्री वर्णको मांगनाधर्म नहीं है परन्तु तुम्हारीभक्ति व प्रीति देखकर मैं चाहताहूं कि सत्या नाम अपनीकन्या जो गुण व शीलसेभरी है वह हमैं बिवाहदेव यह बचनसुनकर राजा बड़ेहर्षसे बिनयकी हे बैकुण्ठनाथ जहां लक्ष्मीजी आठोंपहर तुम्हारी सेवा में रहती हैं वहां मेरीबेटी उनकेसामने क्यावस्तुहै जो आप चाहनाकरैं केवल मेरीभक्ति देखकर दयाकीराह आप ऐसाकहते हैं सो मेराबड़ाभाग्य है जो मेरीकन्या आपकी दासियोंमें रहै पर मैंने इसकन्याके बिवाहवास्ते यह प्रणकियाहै कि जो आदमी मेरेसातबैलों को एकबेर नाथदेवे उसे अपनीबेटी बिवाहदूं सो अनेकराजकुमारों ने आनकर ऐसीइच्छा की पर किसी से वहकाम पूरानहींहुआ उनमें कितने बैलों के सींगसे घायलहोकर अपने घर चलेगये व बहुतराजकुमार अभीतक यहां घायलपड़े हैं आपसे मेराप्रण पूराहोसके तो यहकन्या बिवाहलेजाइये मेरे निकट सिवायतुम्हारे दूसरे से यहकाम नहींहोगा यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा बहुतअच्छा मैं सातोंबैलोंकी नाकछेदकर उन्हें नाथदूंगा यह बचनसुनतेही जब राजा उन सातोंबैलों को जो हाथीकेसमान बलवान्थे उनकेसन्मुख लेआया तब श्यामसुन्दर ने उठकर कमरअपनी बांधली व सातरूप अपने इसतरहपर जो दूसरे को दिखलाई न देवैं धारणकरके सातोंबैलों की नाक एकबेरमें छेदडाली व उनसातों को एकरस्सी में नाथकर खड़ा करदिया ॥

दो० माखनप्रभु ज्ञानीमहा कीन्हो चरित अनूप ।
सातबृषभ के कारणे धर्यो सप्त निजरूप ॥

हे परीक्षित देखो जिनकीआज्ञामें तीनोंलोकके जीवरहतेहैं उनके निकट सातबैलों का एकबेर में नाथलेना कौनकठिन है जब राजानग्नजित यह चरित्र देखकर बहुत प्रसन्नहुआ व इच्छा राजकन्याकी पूर्णहुई तब सब छोटे व बड़े नगरबासियोंने यहचरित्र देखकर अचम्भामाना व स्तुति द्वारकानाथकी करनेलगे व राजाने उसीसमय उपरोहितसे शुभलग्न पूंछकर अपने यहां बिवाहकी तैयारी व शास्त्रानुसार सत्या अपनी कन्या मुरलीमनोहरको बिवाहदी व दशहज़ार गौ व तीन हजारदासी अतिसुन्दर भूषण व बस्त्रसमेत नवलाखहाथी व नवकरोड़ घोड़ा व नवलाख रथ व नब्बेहज़ार दास व असंख्य रत्न व द्रब्यादिक दहेजमें श्यामसुन्दरको देकर अपनीकन्यासमेत बिदाकिया पर दूसरे राजा जो उस स्वयम्बर में इकट्ठेहुयेथे क्रोधित व लज्जित होकर आपसमें बोले इसयादवको क्या सामर्थ्य है जो हमारे ऐसेप्रतापी राजोंकेसामने राजकुमारीको लेजावे जब वे लोग ऐसा बिचारकर अपनी २ सेनासमेत चढ़दौड़े व उन्होंने चारों ओरसे आनकर द्वारकानाथको राहमें घेरलिया तब अर्जुनने गाण्डीव धनुष चढ़ाकर उनराजोंको ऐसेबाणमारे कि वे लोग हारमानकर जिधर तिधर भागगये जब केशव मूर्त्ति आनन्दपूर्व्वक द्वारका में आये तब राजा उग्रसेनआदिक सब छोटे बड़े आगेसे आनकर गाते व बजाते उनको राजमन्दिर पर लिवालेगये ॥

दो० तहां बहुत उत्सव भयो कासों बरणोजाय ।
नरनारी हर्षें सभी आनँद उर न समाय ॥

जब दहेजकीबस्तु देखकर सब द्वारकाबासी राजानग्नजितकी बड़ाई करनेलगे तब श्याम व बलरामने उसीसमय वह सबदहेज जो नग्नजित से पायाथा अर्जुनको देकर संसार में यशउठाया इतनीकथासुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जिसतरह बसुदेवनन्दन भद्राको बिवाहलेआये थे अब उसकाहाल सुनो गयनामनगरमें राजा ऋतुसुकृत ने भद्रा अपनीबेटीका स्वयम्बररचकर बहुतसेराजोंको इकट्ठाकिया तब मोहनीमूर्त्ति भी अर्जुनको साथलियेहुये वहांजाकर खड़ेहोगये जब चन्द्रमुखी राजकन्या जयमाल हाथ में लिये सबराजों को देखती हुई श्यामसुन्दरके निकटआई व उसने सांवली मूरतपर मोहितहोकर उनके गले में जयमालडालदी तब राजाऋतुसुकृत ने बड़ेहर्षसे अपनी कन्या मुरलीमनोहरको बिवाहदी व बहुतसादहेज उन्हें देकर अपनीकन्यासमेत बिदाकिया जब श्रीकृष्णजी भद्राकोलेकर द्वारकामें आये तब घर २ मंगलाचार होनेलगा इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जिसतरह श्रीकृष्णजीने लक्ष्मणाको बिवाहाथा वहकथा सुनो भद्रदेशकेराजा बड़ेप्रतापीने लक्ष्मणा अपनीकन्या का स्वयम्बर रचकर बहुतसे राजों को नेवता कहलाभेजा जब चारोंओर के राजा अपनी २ सेना साथलिये बड़ीधूमधामसे वहां आनकर इकट्ठेहुये व वृन्दावनबिहारी भी अर्जुनको साथ

लेकर उसीस्वयम्बरमें पहुँचे तब राजकुमारीने सोलहोंश्रृंगारकिये जयमाललिये राजसभामें आनकर जैसे बसुदेवनन्दनको देखा वैसे उनपर मोहितहोकर वहमाला उनके गलेमें पहिनादी राजाने यहहाल देखतेही बड़ेहर्षसे अपनीकन्या उन्हें बिवाहदी व बहुतसा दहेजदेकर कन्यासमेत बिदाकिया पर दूसरेराजा जो उसके स्वयम्बर में आये थे डाहकीराह अपनीसेना साथलिये द्वारकाकी राहपर जाखड़ेहुये जब श्रीकृष्णजी लक्ष्मणाको साथलेकर अर्जुनसमेत द्वारकाकोचले तब उनराजोंने उनसे युद्धकिया उससमय दैत्यसंहारण व अर्जुनने ऐसेबाणचलाये कि सबराजा हारमानकर भागगये व श्यामसुन्दर हर्षपूर्व्वक द्वारकामें पहुँचे व द्वारकाबासियों ने अपने २ घर मंगलाचारमनाया हे परीक्षितइसी तरह श्यामसुन्दर अपना बिवाहकरके आठोंपहर रानियों समेत आनन्दपूर्व्वक द्वारकापुरी में रहनेलगे व सबस्त्रियां प्रेमपूर्व्वक उनकी टहलकरतीथीं उनआठोंकेजो अष्टनायका व पटरानी कहलातीथीं ये नामथे रुक्मिणी, जाम्बवती, सत्यभामा, कालिन्दी, मित्रबिंदा, सत्या, भद्रा, लक्ष्मणा ॥

दो० माखन प्रभुकी नायका आठों कही सुनाय ।
सोलहसहस कुमारिका अबकहिहौं समुझाय ॥

उनसठवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका भौमासुरको मारना व सोलहहजार एकसौ राजकन्याओंसे अपना बिवाह करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक दिन नारदमुनिने फूल कल्पवृक्षका जिसकी सुगन्ध बहुतअच्छी होती है नन्दनबागसे लेआकर श्यामसुन्दरको दिया जब मुरलीमनोहर ने वहफूल रुक्मिणीको देडाला तब नारदमुनि सत्यभामाकेपास जाकर बोले आजमुझे मालूमहुआ कि बसुदेवनन्दन तुमसे रुक्मिणीको अधिक प्यारकरतेहैं इसलिये उन्होंने कल्पवृक्षकाफूल जो राजाइन्द्रकी बागमें होता है रुक्मिणी को देदिया उनको तेरीप्रीति अधिकहोती तो तुझेदेते जब यह झगड़ा लगाकर नारदमुनि चलेगये तब सत्यभामा उदासहोकर कोपभवनमें जाबैठी जब मुरलीमनोहरने उसेमनाकर यहइकरार किया कि मैं कल्पवृक्षको इन्द्रलोकसे लेआकर तेरेआंगनमें लगादूंगा तब सत्यभामा प्रसन्नहोकर उनकेसाथ बिहारकरनेलगी हे राजन् एकसमय पृथ्वी स्त्रीरूपबनकर तप करनेलगी तब ब्रह्मा व बिष्णु व महादेव उसे दर्शनदेकर बोले तैंने इतनादुःख उठाकर कौनमनोरथ मिलनेवास्ते तपकियाहै स्त्रीरूपधरतीने उनतीनोंदेवताओंकी दण्डवत् करके बिनयकिया महाराज दयाकरके मुझे एकबेटा ऐसाबलवान् व प्रतापी दीजिये जिसका सामना तीनोंलोकमें कोई न करसकै व किसीकेहाथसे वहमारा न जावै यह

बात सुनतेही तीनों देवताओंने प्रसन्नहोकर कहा तेरापुत्र नरकासुरनाम जिसे भौमासुर लोग कहैंगे बड़ाप्रतापी उत्पन्नहोकर सब पृथ्वीके राजोंको लड़ाईमें जीतलेगा व स्वर्ग-लोकमेंजाकर सबदेवतोंको जीतनेउपरांत अदितिके कानोंकाकुण्डल लेकर आपपहि-नेगा व इन्द्रकाछत्र अपनीभुजाकी सामर्थ्य से छीनकर अपनेशिरपर धरेगा व संसारी राजोंकी सोलहहजार एकसौ कन्या अतिसुन्दरी बरजोरीसे लेआकर बिनाबिवाही अपने घर रक्खेगा जब श्रीकृष्णजी बैकुण्ठनाथ उसकेसाथ लड़ने आवैंगे और तू अपनेमुख से कहैगी कि मेरे बेटेको मारो तब वे उसेमारकर सबराजकन्या द्वारकापुरीमें लेजावैंगे यहबरदानदेकर तीनोंदेवता अन्तर्द्धान होगये व पृथ्वीने बिचारकिया कि मैं अपनेपुत्र को मारनेवास्ते क्यों कहूंगी कि वह माराजायगा यहबरदान पाकर पृथ्वीने तपकरना छोड़दिया कुछदिनबीते उसके नरकासुरनामबालक बड़ाबलवान् उत्पन्नहोकर प्राग्ज्यो-तिष पुरमें सातकिले के भीतर राज्यकरनेलगा व सब पृथ्वीके राजोंकोजीतकर अपने आधीन करलिया और सोलहहजार एकसौराजकन्या बिनाबिवाही जिसमें एकसेएकसुन्दरी थी चलते फिरते खाते पीते बरजोरी उठालेआया व अपनेयहां एकस्थान में रखकर ऐसाप्रणकिया जब बीसहजारकन्या पूरीहोंगी तब एकसाथ उनसे अपनाबिवाहकरूंगा सो एकदिन सबकन्या आपसमें बैठकर रोनेलगीं उसीसमय परमेश्वरकी इच्छानुसार नारदमुनिने वहांजाकर उनसेकहा तुमलोग कुछ चिंतामतिकरो श्यामसुन्दर त्रिलोकी-नाथ तुम्हैं यहांसे छुड़ाकर तुम्हारेसाथ अपनाबिवाहकरैंगे यहबचन सुनतेही सबराज-कन्या प्रसन्नहोकर उस दिनसे नित्य हरिचरणोंका ध्यानकरनेलगीं एकदिन भौमासुर क्रोधकरके भूप बिमान जो लङ्कासे लेआया था उसपर बैठकर इंद्रादिक देवतोंसे युद्ध करनेवास्तेगया जबस्वर्गमें जाकर देवतोंको दुःख देनेलगा व देवतालोग उसकेहाथसे अपनेप्राणका बचाव न देखकर जिधर तिधर भागगये तब उसने अदितिकाकुण्डल व इन्द्रकेशिरकाछत्र छीनलिया व अपने नगरमें आनकर ऋषीश्वर व हरिभक्तों को दुःखदेनेलगा जब देवता व हरिभक्त आदिक उसकेहाथसे बहुतदुःखी हुये तब एक दिन राजाइन्द्र द्वारकापुरीमें बीचसभा श्यामसुन्दरके आनकर हरिचरणोंपर गिरपड़ा व परिक्रमालेने व स्तुतिकरनेउपरांत हाथजोड़कर बिनयकिया हे दीनानाथ भौमासुर दैत्य ऐसाबलवान् उत्पन्नहुआ जिसने मेरीमाताका कुण्डल व मेराछत्र छीनकर सब देवतोंको स्वर्गसेबाहर निकालदिया व हरिभक्तोंको दुःख देताहै इसलिये तुम्हारीशरण आनकर चाहताहूं कि आप उसेमारकर देवता व हरिभक्तों की रक्षाकीजिये सिवाय तुम्हारे दूसरेका भरोसा नहींरखता जो उसकीशरणजाऊं यह दीनबचनसुनतेही बसु-देवनन्दनने इन्द्रको धैर्यदेकरकहा तू अपनेस्थानपरजा मैं भौमासुरको मारकर तेरादुःख हरूंगा जब इन्द्र मुरलीमनोहरको दण्डवत्करके अपने स्थानपर चलागया तब दैत्य-संहारण गरुड़पर चढ़कर सत्यभामासे बोले चल तुझको भौमासुरका युद्ध दिखालावैं व

इन्द्रलोकसे कल्पवृक्ष लेआकर तेरेआंगन में लगादेवैं तू मुझे उसवृक्षकेसाथ नारदमुनि को दानकरदीजियो फिर गो व सुवर्ण आदिक शास्त्रानुसार उन्हें देकर मुझको उनसे मोल लेलीजियो तब मैं तेरेबशरहिकर सबस्त्रियों से तेरी अधिकप्रीति करूंगा इसीतरह इन्द्राणीने इन्द्रको व अदितिने कश्यपजी अपनेपतिको दानदेकर फिर मोल लेलियाथा जब यहबचनसुनतेही सत्यभामा बड़ेहर्षसे चलनेको तैयारहोगई तब श्यामसुन्दरने उसे अपनेपीछे बैठाकर गरुड़को उड़ाया ॥

दो० या बिधि सतभामा सहित माखनप्रभु यदुराय ।
भौमासुरके नगर को छण में पहुँचे जाय ॥

हे राजन् भौमासुरकानगर छः किले के भीतर इस उपाय से बनाथा पहिले किला पहाड़का तैयारहोकर उसके भीतर दूसरा किला अनेकशस्त्रों से बनाथा तीसरा किला पानीसे भराहोकर चौथेकिले में चारोंओर आगि जलतीथी पांचवांकिला बायुकाहोकर छठवांकिला रस्सों के जालका बनाथा व सातवें अष्टधाती किले में नरकासुरके रहनेका स्थानथा सो श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार सुदर्शनचक्र व कौमोदकी गदा व गरुड़जी ने क्षणभरमें पहाड़ व पत्थर व शस्त्रोंको तोड़कर पानी सुखाडाला व आगिबुझाने व बायु उड़ानेउपरांत रस्सों के जाल काटकर रास्ताबनादिया जब वृन्दाबनबिहारी सातवेंकिले के द्वारपरपहुँचे तब लाखशूरबीर द्वारपालक युद्धकरने वास्ते उनके सामने आये सो गरुड़जीने उनको अपने पंख व चोंचसे मारकर गिरादिया व दैत्यसंहारणने किले के भीतरजाकर पञ्चजन्यशंख अपना बजाया ॥

दो० भौमासुरके श्रवण में शब्दपस्यो जब जाय ।
तबहीं सोवतसे जग्यो मनमें बहुत रिसाय ॥

हमने तीनोंलोकमें किसीको ऐसानहींछोड़ा जो मेरेसाथ लड़ने की सामर्थ्यरखताहो यह कौनपुरुषहै जिसने यहांआनकर आजमुझे नींद से जगाया उसे चलकर देखा चाहिये जिससमय भौमासुर यहबिचारकररहा था उसीसमय मुरनामदैत्य उसकेमंत्रीने द्वारपालकों का मरनासुनतेही नरकासुरके पासजाकर बिनय किया महाराज मेरेरहते आपको परिश्रम करना उचितनहीं है मैं जाकर देखता हूं जो हाल होगा वह सब तुम से कहूंगा ॥

दो० तुमसों कौन महाबली तिहूंलोक में आज ।
कौनकाज श्रमकरतहौ सब राजन के राज ॥

यहबातकहिके मुर वहांसेबिदाहुआ व त्रिशूल हाथमेंलेकर श्यामसुन्दरके सामनेआया

व क्रोधसे लालीलाली आंखैंनिकालकर दांतपीसताहुआ बोला देखूं मुझसे कौनबली है जो यहां लड़नेआयाहै जब ऐसाकहकर उसने केशवमूर्त्तिपर त्रिशूल व गदाआदिक अनेकशस्त्र अपनेचलाये व बसुदेवनन्दन ने उसके शस्त्र सुदर्शनचक्रसे काटडाले तब वह दैत्य जो पांचशिरकाथा झुंझलाकर अपने पांचोंमुंहबायेहुए इसइच्छासे उनकीओर दौड़ा जिसमें बैकुण्ठनाथको निगलजाऊं उससमय त्रिभुवनपतिने सत्यभामाको घबड़ाईहुई देखकर सुदर्शनचक्रसे पांचोंशिर उसके काटडाले उसीदिनसे संसार में मुरारि उनकानाम प्रकटहुआ जब मुरदैत्यके ताम्रआदिक सातोंबेटोंने अपनेबापका मरनासुना तब वे लोग अनेकतरहके शस्त्रबांधेहुये बहुतसीसेना साथलेकर मोहनप्यारे के सामने आये व अपना २ शस्त्र उनपर चलानेलगे वृन्दाबनबिहारीने सुदर्शनचक्रसे इसतरह उनलोगोंको भी सेनासमेत एकक्षणमें मारकर गिरादिया जिसतरह किसानलोग जुवार का खेत काटडालते हैं जब भौमासुरने सुना कि मुरदैत्य मेरामंत्री अपने सातोंबेटों व सेनासमेत मारागया तबवह क्रोधितहोकर बहुतसे शूरबीर व हाथी साथलियेहुये श्यामसुन्दर पर चढ़ दौड़ा ॥

दो० तभी चल्यो अति कोपकै असुर महाबलवन्त ।
गजमतंग आगे करे जिनके लम्बे दन्त ॥
योधा बहुत हते तहां भौमासुर के संग ।
कोउ हस्ती कोउ रथन में कोऊ चढ़े तुरंग ॥

जब नरकासुर त्रिभुवनपतिके सामनेआनकर गदा व त्रिशूल व भुशुण्डीआदिक अनेकतरहके शस्त्र उनपर चलानेलगा व दैत्यसंहारण सुदर्शनचक्रसे उसकेशस्त्रकाटने लगे तब भौमासुर ने खिझलाकर एकतलवार मुरलीमनोहरपर बड़े बेगसे चलाई व ललकारकरबोला आज तुम मेरेहाथसे जीतेबचकर नहींजासक्ते जब उसकीतलवारने भी कुछकाम नहींकिया व सबसेना उसकी दैत्यसंहारण व गरुड़जीने क्षणभरमें मारडाली और उसने अपने को अकेलादेखा तबवह अपने घरसे एक बड़ाभारी त्रिशूल लेकर फिर वृन्दाबनबिहारीपर मारनेझपटा उससमय सत्यभामाने श्यामसुन्दरसे पुकार करकहा इसपापी को मारडालो इतनी बात उसके मुखसे निकलतेही बसुदेवनन्दन ने शिरउसका सुदर्शनचक्र से काटकर गिरादिया ॥

चौ० कुण्डलमुकुटसहित शिरपस्यो । धड़केगिरत शेष थरथस्यो ॥
तिहूँलोक में आनँद भये । दुख चिन्ता सबही के गये ॥
तासुज्योतिहरिमुखहिसमानी । जयजयशब्दकरैं सुरज्ञानी ॥

चढ़े विमान पुष्प बरसावैं । बेद बखानि देव यशगावैं ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे राजन् महादेव आदिककावरदान सत्यकरने वास्ते जब सत्यभामाने जो पृथ्वीकाअवतारथी अपने मुखसे भौमासुरके मारने वास्ते कहा तब श्यामसुन्दरने सुदर्शनचक्रसे उसकाशिर काटलिया जब भौमासुर मरगया तब पृथ्वी उसकीमाता अपनीपतोहू व भगदत्तपोतेको साथलेके द्वारकानाथके पासआई व छत्र व कुण्डल जो भौमासुर इन्द्रलोकसे छीनलेआया था व बहुतसे रत्नादिक उन्हें भेंट देकर शिरअपना हरिचरणोंपर रखदिया व हाथजोड़कर बिनयकिया हे ज्योतिस्स्वरूप भक्तहितकारी तुम्हारी महिमा व लीला अपरम्पारहै व आपकाभेद व आदि व अन्त कोईनहीं जानसक्ता व तुम अबिनाशीपुरुष तीनोंकालके जाननेवाले किसीसेकुछ भय नहींरखते व आपदेवता व मनुष्यआदिक तीनोंलोकके उत्पन्नकरनेवाले हैं व आदि व अन्त व मध्यमें केवल तुम्हाराप्रकाश रहताहै व आपअन्तर्यामी सबमेंव्यापक व सबसे बिलगरहिकर संसारीबस्तुकी कुछ चाहनानहींरखते व लक्ष्मीजी तुम्हारीदासीहोकर चरण कमल आपका आठोंपहर अपनेहृदयमें लगायेरहती हैं व ब्रह्मादिक देवता व बड़े बड़े ऋषीश्वर व मुनि तुम्हारेचरणोंका ध्यान दिनरात अपने हृदयमें रखकर तुम्हें अपना उत्पन्न व पालनकरनेवाला जानतेहैं सो मेरीदण्डवत् उन्हींचरणों को पहुँचे जब महा-प्रलयमें शेषनागकी छातीपर शयनकरते थे तब आपकीनाभिसे कमलकाफूल निकला उसीपुष्पसे ब्रह्माने उत्पन्नहोकर तीनोंलोककी रचनाकी इसलिये चौदहों भुवनकी जड़ आपहोकर सबकामनोरथ पूर्णकरते व मट्टी व हवा व पानी व अग्नि व आकाश पांचों तत्त्व व दशोंइन्द्रियों को प्रकटकरके रजोगुणसे संसारकीउत्पत्ति व सतोगुणसे पालन व तमोगुणसे नाश उसका करतेहो व गरुड़जी तुम्हारे बाहनहैं व सब किसीको बल व यश आपकी दयासे प्राप्त होताहै व तुम हरिभक्तोंकी रक्षा करनेवास्ते संसारमें मनुष्य रूप अवतार लेकर सबको सुख देतेहो जिसमें संसारीलोग उस रूपका ध्यान व पूजा व नामका स्मरण करैं व तुम्हारी लीलाकी चर्चा आपसमें रखकर भवसागरपार उतर जावैं तुम्हारा निर्गुणरूप किसीको दिखलाई नहीं देता इसलिये उसरूपसे जो कुछ चिह्न व रेखा नहीं रखता प्रीति उत्पन्न होना कठिनहै संसारी लोग अपने वर्ण व धर्म्म के अनुसार तुम्हारी पूजा कईतरह परकरके अपना मनोरथ पाते हैं जहां तुम्हारी स्तुति शारदादेवी व शेष व महेश व गणेशसे नहीं होसक्ती वहां मुझ अज्ञान मट्टीकी पुतली को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारा गुण बर्णन करनेसकूं पर तुम जिसपर कृपाकरो वह अवश्य तुम्हें पहिंचानसक्ताहै सो मेरी दण्डवत् आपको अंगीकारहो ॥

चौ० जयजय कमलनाथ जलशायी । कमलनयन कमलासुखदायी ॥
नामस्वरूप अनन्त तुम्हारे । गावैं निशिदिन सन्तमुरारे ॥

दो० सब देवनके देव तुम कोऊ लहै न भेव ।
तुमहीं जगकरतारहौ माखन प्रभु हरिदेव ॥

पृथ्वीने इसीतरहसे बहुत स्तुतिकरके भगदत्त अपनेपोतेको हरिचरणोंपर गिराकर बिनयकिया हे दीनानाथ कृपासिन्धु आपने मुझे यह बरदान दियाथा कि बिना तेरे कहे भौमासुरको न मारूंगा फिर किसवास्ते आज उसकाबधकिया यहबचन सुनतेही केशवमूर्त्तिने सत्यभामाकी ओर सैन बतलाकरकहा यह पृथ्वीका अवतारहै इसके कहने से मैंने नरकासुरको माराथा जब पृथ्वीने सत्यभामाको देखा तब लज्जितहोकर बोली हे नाथ निरञ्जन मेरापुत्र आपको न पहिंचानकर अधर्म्म करनेलगा सो वह अपने दण्डको पहुँचा अब उसकेबालकको जो तुम्हारीशरणमें है अभयकीजिये जब यहदीन बचनसुनतेही श्यामसुन्दरने अपनाहाथ भगदत्तके शिर व पीठपर फेरकर उसे बहुत धैर्य्यदिया तब भौमासुरकी स्त्री हाथजोड़कर बोली हे जगत्पालक जिसतरह आपने कृपाकरके अपना दर्शन हमैं दिया उसी तरह अपने चरणों से मेरा घर पवित्र कीजिये जब बसुदेवनन्दन सच्चीप्रीति उन लोगोंकी देखकर राजमन्दिर पर गये तब भगदत्त व उसकी माताने बड़े हर्ष से पीताम्बर राहमें बिछावते हुये वृन्दाबनबिहारी व सत्य-भामाको अपने घर लेजाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरणधोने उपरान्त चरणामृत लेकर बिधिपूर्व्वक पूजा उनकी की व सुगन्धादिक उनके अङ्गमें लगाकर छत्तीस व्यञ्जन खिलाये व सुनहली झारीसे हाथ धुलाकर पान व इलायची व उत्तम उत्तम भूषण व वस्त्र पहिनाकर चमर हिलानेलगी व बड़े प्रेमसे भगदत्तकी माताने हाथ जोड़कर बिनय किया हे बैकुण्ठनाथ बहुत अच्छाहुआ जो आपने भौमासुर देवता व हरिभक्तों के दुःख देनेवाले को मारडाला देखो रावण व कंसादिक जिस किसी ने परमेश्वरसे बिरोधकिया उसका जगत्में नाशहुआ अब भगदत्त मेरे बेटाको अपना सेवक जानिये व सोलहहज़ार एकसौ राजकन्या जो इसके बापने बिना बिवाही इकट्ठी की हैं उनको दयाकी राँह अङ्गीकारकीजिये यह बचन सुनतेही वृन्दाबनबिहारी उसस्थानमें जहांपर वे सब श्यामसुन्दरको अपना पति बनाने वास्ते हरिचरणों का ध्यान करतीथीं चलेगये तो क्या देखा कि सब राजकन्या मैले वस्त्र पहिनेहुये शोचमें बैठी हैं जैसे सांवलीसूरत मोहनीमूर्त्तिपर उनकी दृष्टिपड़ी वैसे प्रसन्नहोकर प्राणनाथ के सामने खड़ी होगईं व हाथ जोड़कर बिनयकिया हे द्वारकानाथ हमलोगोंकी छुट्टी यहांसे बिनाकृपा तुम्हारे होना बहुत कठिनहै हे महाप्रभु जिसतरह आप अन्तर्य्यामी परब्रह्मपरमेश्वर ने हमलोग अबला अनाथों को दुःखी जानकर अपना दर्शन दिया उसीतरह हम दुःखियोंको साथ लेचलकर अपनी दासी बनाइये जिसमें तुम्हारी सेवा करने से हमारा जन्मस्वार्थ हो यह दीनबचन सुनतेही श्रीकृष्णजीने उनको बहुत धैर्य्य

देकर कहा तुमलाग अपने २ घरजाओ तो वहां तुमको पहुँचादेवैं उन्होंने बिनय किया कि महाराज अब हमलोगोंको तुम्हारा कमलरूपी चरण छोड़कर घरजाना नहीं अंगीकार है हमैं अपनी सेवामें रखिये जब केशवमूर्त्तिने उनकी सच्चीप्रीति देखकर सब राजकन्याओं को अपने साथ द्वारकामें लेचलने के वास्ते उस मकानसे बाहर निकाला व भगदत्तको भौमासुरके सिंहासन पर बैठाकर अपने हाथसे राजतिलक उसके लगाया तब भगदत्तने अनेक रत्न व रथ व घोड़े व साठहाथी श्वेतवर्ण चारदांतवाले जो ऐरावत के वंशमें थे श्यामसुन्दरको भेंटदिये व उन सब राजकन्याओं को उबटन मलवाने व स्नान कराने उपरान्त उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनाये व पालकी व सुखपालकीआदिक पर चढ़ाकर मुरलीमनोहरके साथ अपनी सेनासमेत बिदाकिया जिससमय वृन्दावनबिहारी सोलहहजार एकसौ राजकन्याओं को जड़ाऊ पालकी व सुखपाल व रथआदिक पर साथ लेकर द्वारकाको चले उससमय ऐसी शोभा मोहनप्यारेकी मालूम होती थी जैसे तारों में चन्द्रमा सुन्दर दिखलाई देताहै श्यामसुन्दरने सब राजकन्याओं को सेना समेत द्वारकापुरी में भेजदिया व आप सत्यभामाको गरूड़पर बैठाले और वही छत्र व कुण्डल लियेहुये इन्द्रपुरी को चले गये जब इन्द्रने जो भौमासुर के मारेजानेका समाचार सुनकर आनन्द मचारहा था हाल आवने मुरलीमनोहरका सुना तब उसने देवतोंसमेत आगेसे जाकर शिर अपना हरिचरणों पर रखदिया व बसुदेवनन्दन को बड़े आदरभावसे अपने घर लेजाकर इन्द्रासनपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृतलिया व बिधिपूर्वक पूजा उनकी की ॥

दो० हाथजोड़ बिनती करै धरै चरणपर माथ।
हरिदासन के दासहौं तुम नाथनके नाथ॥

इन्द्रके स्तुतिकरनेसे बैकुण्ठनाथने प्रसन्नहोकर छत्र व कुण्डल इन्द्र व अदितिका देदिया जब यहहाल सुनकर नारदजी इन्द्रपुरी में श्यामसुन्दरकेपास आये तब मुरलीमनोहरने नारदमुनिसे दण्डवत्करके कहा महाराज तुम जाकर इन्द्रसे कहो कि सत्यभामा तुमसे कल्पवृक्ष मांगती हैं जैसा वहकहैं वैसा हमको आनकर उत्तरदेव यहबचन सुनतेही नारदमुनिने इन्द्रकेपास जाकरकहा सत्यभामा तुम्हारी भौजाईने कल्पवृक्ष मांगा है यह बचनसुनकर इन्द्र चुपहोरहा व उसने जाकर अपनी स्त्रीसे यहहालकहा तब इन्द्राणी क्रोधित होकर अपने पतिसे बोली तुम्हैं यह बात याद है या नहीं कि इसी कृष्ण ने ब्रजमें तुम्हारी पूजा छुड़ाकर ब्रजबासियों से गोबर्द्धन पहाड़ पुजवाया व छलकरके सबपकवान व मिठाईआपखाया व सातदिन व सातरात्रि गोवर्द्धनपर्बतउठाकर तुम्हाराअभिमान तोड़ाथा तुम्हैं उसबातकी लज्जाहै या नहीं देखो वह अपनी स्त्रीकी आज्ञामानकर यहांकल्पवृक्षलेने आयाहै और तुम मेराकहना कुछ नहींमानते यह

वचन अपनीस्त्रीका सुनतेही इन्द्रअज्ञान नारदजीकेपास आनकरबोला महाराज तुम श्यामसुन्दर से मेरीओरसे जाकर कहिदो कि कल्पवृक्ष नन्दनबागछोड़कर दूसरीजगह जानेनहींसक्ता कदाचित् लेजावैंगे तो किसीतरह न रहैगा और यह भी उनसेकहि देना कि व्रजकासा बिरोध मुझसे न करैं बरजोरी कल्पवृक्ष लेजावैंगे तो मेरा उनका बड़ायुद्धहोगा जब नारदमुनिने आनकर यहसन्देशा केशवमूर्त्तिसेकहा तबगर्व्वप्रहारी भगवान्ने उसीसमय नन्दनबागमेंजाकर रखवारों को मारकर भगादिया व कल्पवृक्ष जिसे पारिजातकभी कहतेहैं नन्दनबागसे उखाड़लिया व गरुड़कीपीठपररखकर द्वारका कोचलेआये जबइन्द्र कल्पवृक्ष लेजानेका हालसुनकर बड़ेक्रोधसे ऐरावतहाथीपर चढ़ा व बज्रहाथ में लेकर देवतोंसमेत दैत्यसंहारणसे लड़नेचला तबनारदमुनिने उसकेपास जाकर कहा हे इन्द्र तू बड़ामूर्खहै जोअपनीस्त्रीके कहनेपर बैकुंठनाथसे लड़नेको तैयार हुआ तुझेकुछलज्जानहीं आवती जोऐसीसामर्थ्यथी तोभौमासुरसे छत्र व कुण्डल क्यों नहींफेरलाया जबवृन्दाबनबिहारी परब्रह्मपरमेश्वरने तेरेबिनयकरनेसे नरकासुरको मार कर छत्र व कुण्डलतेरालेआदिया तब तू उन्हींको अपनाबलदिखलानेचला वहदिन तुझे भूलगया जबवृन्दाबनमें श्रीकृष्णजीके पांवपरगिरकर अपनाअपराध उनसेक्षमाकराया था यहबचन सुनतेही इन्द्रलज्जितहोकर हाथीपरसे उतरपड़ा व युद्धकरने नहींगया श्यामसुन्दरने आनन्दपूर्वक द्वारकापुरीमें पहुँचकर कल्पवृक्ष सत्यभामाके आँगनमें लगा दिया व राजाउग्रसेनसे आज्ञालेकर सोलहहजार एकसौ राजकन्याओंसे विधिपूर्वक अपना बिवाहकिया व उनसबको पृथक् २ महलमें जोबाग में बिश्वकर्माने तैयारकिये थे रक्खा और आप उतनेरूप धरकर उनकेसाथ बिलग २ संसारीसुख उठानेलगे ॥

दो० तिनसों हरिजूप्रीतिकरि अमृतबैन सुनाय।
प्रेमरीति समुझाइ कै दीन्ही लाज छुड़ाइ ॥

वे लोग आठोंपहर प्राणनाथको अपनेपासदेखकर एक दूसरीसे डाहनहीं करतीथीं व सबस्त्रियोंकेघर में सैकड़ोंदासीथीं तिसपर भी उनलोगोंका यहप्रणथा कि प्रातसमय श्यामसुन्दरका चरणोदकलेकर अपनेहाथ सबसेवा व टहल उनकी करतीथीं जिसस-मय मोहनप्यारे फुलेललगाने व स्नान व पूजाकरनेउपरांत छत्तीसब्यंजन सोनहुली थालियोंमें भोजनकरते थे उससमय सबरानियां पंखाहिलातीथीं व जड़ाऊ गडुये से हाथधुलाकर पान व इलायची देतीथीं और जबशय्यापर शयनकरते थे तब उनकेपांव दाबतीथीं पर बैकुण्ठनाथ जो कुछ इच्छा न रखकर सबजगत्को अपनेअधीन रखते हैं किसीस्त्रीके बशनहींहोतेथे व उन स्त्रियोंकी सुन्दरताईकाहाल कोई बर्णन नहींकरने सक्ता वे ऐसीसुन्दरीथीं जिनकेसामने सूर्य व चंद्रमाका तेज धूमिल होजाताथा एक

दिन महादेवजीने द्वारकापुरीमें जाकर उनस्त्रियोंको देखा तो कामदेवके जलादेनेपर भी उनकारूप देखकर मोहित होगये ॥

दो० ऐसीसुन्दरि नारिसों माखनप्रभु यदुनाथ।
कामकलोलकरैं सदा खानपान यकसाथ॥

साठवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरको रुक्मिणीजीसे ठट्ठाकरना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित एकदिन श्रीकृष्णजी रुक्मिणीके मन्दिरमेंथे वहस्थान सोनहुलाजड़ाऊ बहुतउत्तम बनाहोकर उसमें मखमलीबिछावनबिछे थे व सबजगह चँदवे बँधेहोकर मोतियोंकी झालरैं द्वारोंपर लटकाई थीं व पारिजातक फूलकेगजरे अनेकजगह लटकाये होकर धूप व चन्दनादिक जलनेसे सुगन्ध उड़ती थी ॥

दो० कल्पवृक्ष के फूलकी कहियेकहा सुबास।
जासों बन उपबनसबी भये सुबास निवास॥

मंद सुगंध शीतलहवा बहने से सबको सुखमिलताथा व नहर व झरनेबहकर मोर नाचतेथे व ऐसेलाल व रत्न वहांजड़ेथे जिसकेचमकसे आठोंपहर उजियाला रहकर दीपकजलानेका प्रयोजननहींपड़ताथा व उसस्थान में एकशय्या रत्नजटितसबसामग्री समेत बिछीथी व उसकेचारोंओर मेवामिठाई व चौघड़ाआदिक रक्खाहोकर उसशय्या पर श्यामसुन्दरलेटेथे उनकेभूषण व वस्त्र व रूपकी छबिदेखकर चित्तसबकामोहिजाताथा॥

दो० शोभा त्रिभुवननाथकी कासों बरणी जाय।
कामरूपकी छबिमहा वहभी रहै लुभाय॥
चौ० तहां रुक्मिणी सुन्दरिबाला। सखीश्रृंगार सजेत्यहिकाला॥
अंग अंग भूषण छबि छाजै। महामधुर स्वर नूपुर बाजै॥
सोध्वनिसुनिमोहितपुरबासी। मानोलगी कामकी फांसी॥
दो० याबिधिसों श्रीरुक्मिणी माखनप्रभु के पास।
पवनडुलावै प्रेमसों मनमें बहुत हुलास॥

उससमय परमेश्वरकीमायासे रुक्मिणीको अभिमानहुआ कि बसुदेवनंदनकी सब स्त्रियोंसे मैं अतिसुन्दरीहूँ इसलिये मोहनप्यारे मुझेबहुतचाहतेहैं व बैकुण्ठनाथ अंतर्यामी ने यहहाल जानकर बिचारा कि रुक्मिणीको क्रोधदिलाकर प्रेमकीपरीक्षालूं कि उसको

अपने रूपका अभिमानहै या मेरीप्रीति अधिकहै ऐसाबिचारकर बोले हे रुक्मिणी तुझ ऐसी सुन्दरी और राजाभीष्मककी कन्याहोकर मेरेसाथबिवाहकरना उचितनहींथा बैर व बिवाह व प्रीतिबराबरवाले से करना चाहिये मैं किसीदेशका तिलकधारीराजा न होकर जरासन्धके भयसेभागाहुआ यहांटापूमेंबसाहूं व जबसेमैंने जन्मलिया तबसेकोई शुभकर्म्म नहींकिया जोकोई मेराभजन व स्मरणकरताहै उसेबिरक्त व निर्द्धनकरदेताहूं इसलियेमेरेभक्तको संसारीसुख नहींमिलता व मैं किसीकेसाथ प्रीति न रखकर सबसेअपना मन मोटारखताहूं बालापनमें याचकोंको कुछ द्रव्यादिक दियाकरताथा वहीयश सुन कर तैंने मेरेसाथ बिवाहकरके धोखाउठाया व शिशुपाल चंदेलीके राजाको जो तिल-कधारी व बलवान्होकर जरासन्धादिक बड़े २ राजोंको अपनेसाथ बरातमें लायाथा अंगीकार नहींकिया ॥

दो० रुक्म दई शिशुपालको बांध्यो कंकण हाथ ।
आयो साजि बरात वह सब राजन ले साथ ॥

अयरुक्मिणी तुझसे बड़ीचूकहुई जो तैंने राजाशिशुपालको जिसकेसाथ तेरीमँगनी रुक्म्यग्रजनेकीथी छोड़कर मुझ गोचरानेवाले से बिवाहअपनाकिया और उत्तममध्यम का बिचार न करके अपनेकुलमें कलंक लगाया ॥

चौ० कहियेकहा कुबुद्धितिहारी । भली भांति मनमें न बिचारी ॥
रुक्म भ्रात की लाज गवांई । तात मात को लीक लगाई ॥
छांड़िनृपतिमोसोंहितकीनो । निर्गुण महा जाति को हीनो ॥
याते सच्च बात हम मानी । उलटी बुद्धि त्रियनकी जानी ॥
जोतुमकहो लिखोबिधिजोई । कर्म प्रमाण होत है सोई ॥

दो० ऐसी झूठी बात को मानै मूरख होय ।
अपने यश अरु चैन को यत्न करत सब कोय ॥

सिवायइसके जिसबातमें लड़कियोंको लज्जा है वह तैंनेकिया कि ब्राह्मणको पत्री देकर अपनेबिवाहका संदेशा मेरेपासभेजा सचहै स्त्री निर्बुद्धि होती हैं ॥

चौ० जो तुम कहौ हमैं क्यों लाये । कौनकाज कुण्डिनपुर आये ॥
सांच बात समझो मनमाहीं । तुम सों मोह हमैं कछुनाहीं ॥
बहु नरेश आये वहिठाहीं । बड़ो गर्व जिनके मनमाहीं ॥
त्यहिकारणकुण्डिनपुरआये । उन्हैंभगाय तुम्हैं हरिलाये ॥

नातो मैं बिरक्त मनमाहीं। कबहूं मोह होत मम नाहीं॥
सदा उदास रहौं चितमाहीं। नारिन की कछु इच्छा नाहीं॥

हे रुक्मिणी तेरे बुलाभेजने से वहांजाकर तेराप्रण पूराकिया सो परमेश्वरने इतने राजों के सामने मेरीलज्जारक्खी व बलरामजीने वहां जैसापराक्रमकिया वह तैंनेअपनी आंखोंसे देखा मैं तुझे अपनीइच्छासे नहींलाया इसलिये तुझे आज्ञादेताहूं अबभी मन तेरा चाहै तो मुझे छोड़कर किसी तिलकधारी राजा के पास जो तेरेसमान कुलीनहो जाकररह मैं कुछ बुरा नहींमानूंगा॥

चौ० नारिन में सोइ नारिसुभागी। जाको पुरुष होइ बड़भागी॥
या कारण ढूंढ़ो तुम सोई। जामें लोक महायश होई॥

यह कठोरबचनसुनतेही रुक्मिणी रोनेलगी व मुखउसका पीलाहोगया व श्याम-सुन्दरकी बातोंका कुछउत्तर न देकर अतिशोचसे शिरअपना नीचेकरलिया व नखसे पृथ्वी खोदनेलगी व चित्तउसका ठिकाने न रहकर शरीर कांपनेलगा॥

चौ० चिन्ता बहुत बढ़ी उरमाहीं। काहू बिधि समझै मन नाहीं॥

दो० ऐसी बिधि अकुलाय के पड़ी धरणि मुरझाय।
तनुकी सुधि भूली उसे मरण निकट भइ आय॥

जब वृन्दाबनबिहारीने देखा कि अतिशोचसे प्राणप्यारी मरनेचाहती है तब उसे उठाकर अपनीसेजपर बैठालिया व चतुर्भुजी रूपधरकर एकहाथ से जो उसके बाल बिखड़गये थे सवाँरनेलगे व दूसरेहाथसे उसके आंसूपोंछकर तीसरेहाथसे पंखाहिलाना आरम्भकिया व चौथाहाथ अपना कमलकेसमान उसके हृदयपर रखकर उसे गलेमें लगालिया जब उनका प्रेमदेखकर रुक्मिणीका चित्त कुछ ठिकानेहुआ तब केशवमूर्त्ति बोले हे प्राणप्यारी गृहस्थोंकेपास कुछ पृथ्वीआदिक रहनी अवश्यचाहिये जिसमें वह आनन्दपूर्वक अपना कुटुम्बपालें सो मेरेपास कुछनहीं है इसलिये तुझसे हँसीकी थी सो तैंने सत्यमानकर इतनादुःख उठाया मैं तुझसे अधिक किसीका प्यारनहींकरता तू यहबात सच्चमानकर उदासी छोड़दे तेराअंग अतिकोमल है इसलिये घबड़ागई व तैंने जाना ये मुझे छोड़देंगे सो तू धैर्य्य धरकर हमसे हँस बोल॥

दो० अमृत बैन सुनाय कै माखन प्रभु यदुराय।
लीन्हीं प्रिया मनाय कै दीन्हीं रिस बिसराय॥

जब श्यामसुन्दरकी प्रेमपूर्वक बातेंसुननेसे रुक्मिणीकाशोच छूटगया तबवह अपना को श्यामसुन्दरकी गोदमें देखकर लज्जासे उठखड़ीहुई व हाथजोड़कर बिनयकी हे

बैकुण्ठनाथ आपने क्या बिचारकर ऐसा कठोरबचन मुझसेकहा मैं अपनाको मनसा बाचा कर्मणासे तुम्हारीदासी जानतीहूँ व आपमुझे तिलकधारी राजाकेपास रहनेवास्ते कहते हैं सो तुमसेप्रतापी तीनोंलोकमें दूसराकौन है जिसकेपास जाकररहूं तुम्हारेसमान किसी दूसरेको न देखकर तुम्हें त्रिलोकीनाथ समझतीहूं ब्रह्मा व महादेवआदिक देवता तुम्हारे चरणोंका ध्यान सदा रखकर उनचरणों की रज अपनेमस्तकपर चढ़ाते हैं व तुम्हारी दया से उन्हें यहसामर्थ्य है जिसे चाहैं उसको बरदान देकर तिलकधारी राजा बनादेवैं ॥

दो० तुम चरणन की रेणुका वे चाहत दिन रैन ।
जिनके दर्शन देख के सुख पावत हैं नैन ॥

हे महाप्रभु तुम्हाराध्यान व स्मरणकरने से राजगद्दीआदिक अनेकतरह का सुख प्राप्तहोताहै व बड़े २ राजा संसारीसुख व राज्यछोड़कर तुम्हारा भजनकरके भवसागरपार उतरजाते हैं व तुम रजोगुण व तमोगुणसे कुछप्रयोजन न रखकर आठोंपहर क्षीरसागरमें शयनकरतेहो जब दैत्योंके अधर्मकरने से पृथ्वी दुःखीहोकर तुम्हारेशरणजाती है या गो ब्राह्मण व हरिभक्तलोग दुःखपाते हैं तब आप सगुणअवतार से पृथ्वीकाभार उतारकर गोब्राह्मणको सुखदेते हैं मुझे ऐसीसामर्थ्यनहीं है जो आपकागुण बर्णनकरसकूं आपने कोईदोष मुझमेंदेखकर ऐसाबचनकहाहै इसलिये चाहतीहूं कि आपदीनदयालु जगत्के पर्दाढांकनेवाले मेरा अवगुण छिपाकर क्षमाकीजिये बड़े लोग सदासे छोटोंपर दयाकरते आये हैं हे दीनानाथ मैंने अपनीआंखों से देखा कि जरासन्ध व शिशुपाल आदिक बड़े २ राजोंको जो अपनेबलका घमण्डरखते थे आपने एकक्षणमें भगादिया इससे मैं जानतीहूं तीनोंलोकमें कोईदूसरा तुमसेबलिष्ठ नहीं है व जो तुम अपनेभक्तों को कंगालरखते हो उसका यहकारणहै कि संसारी मनुष्य धन व राज्यकेमदमें अन्धे होकर धर्म कर्म अपना व ध्यान व स्मरण तुम्हारा छोड़देते हैं इसलिये तुम अपनी कृपासे उनको कंगालबनाकर हरिभजनकराते हो जिसमें भवसागरपार उतरजावैं व संसारीसुख सदा स्थिरनहींरहता व हरिभजनके प्रतापसे महाप्रलयतक सुखमिलता है जैसा हरिभजन गरीबी में बनपड़ता है वैसा धनपात्रहोने में नहीं होसक्ता इसीवास्ते संसारीसुख व व्यवहार झूंठसमझकर अम्बरीष व प्रह्लाद व ऋषभदेव व प्रियव्रत व जड़भरत आदिक ज्ञानीराजों ने सातोंद्वीपों का राज्य व परिवार छोड़दिया व बिरक्त होकर तुम्हारेचरणोंका ध्यानलगाया सो आजतक उनकायश छारहाहै और जो तुम ने कहा कि हम कुछचाहना न रखकर तेरीइच्छा से तुझको यहांलेआये हैं सो सच्चहै यहांलक्ष्मीजी तुम्हारी दासीहोकर दिनरात सेवामें रहतीहैं वहां मेरी कौनगिनती है जो आपकेयोग्यहोऊं आपदीनदयालुने मुझे दीनजानकर मेरीइच्छापूर्णकी हे जगत्पालक

शिशुपाल चँदेलीका राजाभी तुम्हारा उत्पन्नकियाहै तुम्हारीसेवाछोड़कर उसेअंगीकार करती तो आवागमनमें फँसीरहती जिसतरह राजा अम्बरीषआदिक हरिभजनकरके मुक्तहुयेहैं उसीतरह मैंभी तुम्हाराचरणधोकर भवसागर पारउतरजाऊंगी व तुम्हारीदया से मेरानामभी सदा स्थिररहेगा ॥

दो० जैसी बिधि शोभा रची नगरद्वारकामाहिं ।
देश चँदेली को कहै स्वर्ग लोकमें नाहिं ॥

हे बैकुण्ठनाथ जो स्त्रियां तुम्हारेभजन व कथासे विमुखहोवैं उन्हें शिशुपाल व दन्त-बक्रादिक पतिमिलैं जिसतरह अम्बानामकन्या काशीनरेशकी राजाशाल्वको चाहती थी इसीकारण बिचित्रवीर्य्यने उसेछोड़दिया उसीतरह आपनेभी बिचारकिया कि यह राजा शिशुपालको चाहतीहै सो मनसा बाचा कर्मणासे तुम्हारीदासीहोकर उसेअपना शत्रु समझतीहूं जो स्त्री कि निष्कपट अपनेपतिकी सेवाकरतीहै उसकी मनोकामना संसारमें मिलकर अन्तसमय मुक्तहोतीहै हे प्राणनाथ जैसे राजा इन्द्रदमनकी कन्याने तपकरके शिखण्डीकाजन्मलेकर भीष्मपितामहसे बदलालियाथा वैसे मैं नहींकरसक्ती किसवास्ते कि मैं तुम्हारी अनेकजन्मकीदासीहौं व आपने यह कहा कि तैंने याचकों के मुखसे सुनकर धोखाखाया सो तुम्हारी स्तुति वेद व शास्त्रमें लिखी है और ब्रह्मादिक देवता व नारदमुनि आठोंपहर तुम्हारा गुण गायाकरते हैं वहबड़ाई सुनकर मैंने ब्राह्मण को तुम्हारेपास भेजाथा सो आपदयालुहोकर इसदासीकोलेआये अब मैं यहीचाहतीहूं कि जन्मजन्मांतर तुम्हारीदासीहोकर मेराप्रेम व अनुराग आपकेचरणोंमें बनारहै ॥

दो० पूरण पुरुष पुराणहौ अलख निरंजन नाम ।
तुम्हरे चरणनको सदा हितसोंकरौंप्रणाम ॥
तुमतो जानतहौ पिया प्रेमप्रीतिकी रीति ।
अन्तर्यामी होयके क्यों ठानत अनरीति ॥
दीनदयालु कृपालु हौ बढ़ै तुम्हारोलाल ।
निठुरवचन कैसेकह्यो माखनप्रभु गोपाल ॥
याहीबिधि हांसीकरौ निजनारिन के साथ ।
जैसी तुम हमसेकरी माखनप्रभु ब्रजनाथ ॥

यहसुनकर श्रीकृष्णजी बोले हे प्राणप्यारी तेराप्रेम व विश्वासबड़ाहै मैंने ऐसा कठोर बचनकहकर केवल तेरी प्रीतिकी परीक्षालीथी सो तेराप्रेम सच्चापाया जिसतरह मेरे

निष्कामभक्तहोते हैं उसीतरह तुझेभी देखा मेराकठोरबचन सुनने से रंग तेरापीला होगया पर अन्तःकरणसे प्रेमनहींघटा सो हे प्राणप्यारी तूअपनीबड़ाई इसतरह समझ कि मनुष्य मेरीस्तुतिकरके अपनाजन्म स्वार्थकरतेहैं और मैं तेरागुण इसतरह वर्णन करताहूं जिससमय मैंने तेरेभाईकाशिरमुड़वाकर उसकेहाथबँधवायेथे उससमयभी तैंने सिवाय अधीनताईके मुझसे कुछनहींकहा पतिव्रतास्त्रियों का यहीधर्महै कि अपनेपति की आज्ञानुसार चलैं और मैं तेरीसुन्दरताई सुनकर कुण्डिनपुरनहींगयाथा केवलतेरा सच्चाप्रेम देखकर तुझे लेआया अब तू कुछचिन्ता न करके सदाप्रसन्नरहाकर जो कोई यहअध्यायसच्चेमनसे कहैव सुनैगा इसीतरह उसकीभी स्त्री व पुरुष में प्रीतिहोगी हे परीक्षित यहबचन श्यामसुन्दरका सुनकर रुक्मिणी हर्ष से उनकीसेवाकरनेलगी ॥

दो० जैसी यह लीलाकरी माखनप्रभु यदुनाथ ।
याहीबिधि क्रीड़ाकरैं सबनारिन के साथ ॥

इकसठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी के बंशकी कथा ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित इसीतरह श्रीकृष्णजी द्वारकापुरी में सोलहहजार एक सौ आठ स्त्रीसे भोग व बिलासकरके धर्म गृहस्थाश्रमका शास्त्रानुसार रखतेथे व सब स्त्रियां पतिव्रताधर्म से आठोंपहर सेवाउनकी करतीथीं व हरिइच्छासे सबस्त्रियों के दश दश पुत्र श्यामरंग कमलनयन अतिबलवान् व एकएककन्या महासुन्दरी उत्पन्नहोकर वे सब अपने बालचरित्रका सुख माता व पिताको दिखलातेथे व उनके माता व पिता उत्तमोत्तम भूषण व बस्त्रपहिनाकर प्रसन्नहोते थे सब एकलाख इकीसहजार अस्सीपुत्र व सोलहहजार एकसौ आठ कन्या बसुदेवनन्दनके उत्पन्नहोकर उनकेआगे इतनीसन्तान बढ़ी कि उनकी गिन्ती नहीं होसक्ती ॥

दो० शोभा आठों रानियन कासों बरणी जाय ।
शिवबिरञ्चि सनकादिमुनि देखत रहैं लुभाय ॥

हे परीक्षित सबस्त्रियां आठोंपहर केशवमूर्त्तिको अपने पास देखकर अतिप्रसन्नहोती थीं और उनकी जो सन्तानहुईथीं उनकानाम कहतेहैं सुनो प्रद्युम्नआदिक रुक्मि व भानआदिक सत्यभामा व साम्बआदिक जाम्बवती व सूरति आदिक कालिंदी व श्रीमान् आदिक सत्या व बरघोषआदिक लक्ष्मणा व बरकआदिक मित्रविन्दा व संग्रामजित् आदिक भद्राके बेटों का नामथा व ताम्रकेतु व दत्तमान दोभाई बलरामजी के रोहिणी से हुयेथे प्रद्युम्नके अनिरुद्धहोकर अनिरुद्धसे बलरामनामपुत्र उत्पन्नहुआ था सो रुक्म्यग्रजने मुरलीमनोहरके यहां प्रद्युम्नआदिक पुत्रहोने का हालसुनकर अपनी

स्त्रीसे कहा रुक्मवती मेरी कन्या जो कृतबर्मा के पुत्रसे मांगीगई है उसेवहां न बिवाह कर स्वयम्बर उसकारचूंगा तू चिट्ठी भेजकर रुक्मिणी मेरीबहिनको उसके बेटों समेत बुलाभेज यहबचन सुनतेही उसने पत्रीलिखकर ब्राह्मणकेहाथ रुक्मिणीकेपास भेजदी सो रुक्मिणीजी यहसमाचार पातेही बसुदेवनन्दनसे आज्ञालेकर प्रद्युम्नसमेत भोजकट नगरमेंगई सो रुक्म अपनी बहिनको देखकर अतिप्रसन्नहुआ पर उसने पिछली बात यादकरके लज्जासे शिरअपना नीचाकरलिया व उसकीस्त्री ने पैरोंपर शिररखकर रुक्मिणीसे कहा जबसे मेराननदोई तुम्हें हरलेगया तबसेआज तुम्हारादर्शनपाया सो तुम हमारेऊपर कृपाकरके प्रद्युम्नका बिवाह मेरी कन्यासे करो यहसुनकर रुक्मिणी बोली भैयाकाहाल तुमको मालूमहै फिर क्या झगड़ाकरावोगी ऐसीबात कहते व सुनते मुझे डरमालूमहोताहै जब रुक्मने यहवृत्तान्त अपनी स्त्रीसे सुना तबवह रुक्मिणी से बोला हे बहिन अबतुम कुछमतडरो वेदकी आज्ञानुसार भानजे को कन्यादानदेते हैं इसलिये रुक्मवती का बिवाह प्रद्युम्नसे करके श्रीकृष्णजीके साथ नई नातेदारी करूंगा जिसमें पिछलाबैर मिटजावै जब यहबातकहकर रुक्म्यग्रज अपनीसभामें जहांपर अनेकराजा उत्तमउत्तमभूषण व वस्त्रपहिने स्वयम्बरकरने आये थे जाबैठा तब प्रद्युम्नभी अपनी मातासे आज्ञालेकर वहांजाके खड़ाहुआ जब रुक्मवती जयमाल हाथमेंलिये सबराजों को देखती हुई प्रद्युम्नके पास पहुँची तबउसने सांवलीसूरतपर मोहितहोकर जयमाल उसकेगले में डालदिया यहहालदेखतेही सबराजोंने आपसमें यहसम्मतकिया कि जब प्रद्युम्न राजकुमारीकोलेकर यहांसेचले तबराहमें छीनलेवैं ऐसीइच्छासे सबराजा द्वारकाके रास्तेपर जा खड़ेहुये व रुक्मने बिधिपूर्व्वक रुक्मवतीका प्रद्युम्न से ब्याहकर बहुतसा द्रब्य व रत्नादिक दहेजमेंदिया जब रुक्मिणीजी अपनेभाई व भौजाइयोंसे बिदाहोकर बेटा व पतोहूसमेत द्वारकाको चलीं व राहमें उनसबराजों ने आनकर घेरलिया तब प्रद्युम्नने बाणमारकर क्षणभरमें सबराजोंको भगादिया जब रुक्मिणीजी दुल्लह व दुलहिनको साथ लियेहुई आनन्दपूर्व्वक द्वारका में पहुँचीं तब बसुदेव व देवकीआदिक रीति व रस्मकरके दुल्लह व दुलहिनको राजमन्दिर में लिवालेगये व घर घर मंगलाचार होनेलगा जब कईबर्षउपरान्त प्रद्युम्नके रुक्मवतीके पेटसे एकलड़का महासुन्दर व तेजस्वी उत्पन्नहुआ तब श्यामसुन्दरने मंगलाचारमनाकर मुखमांगा दान व दक्षिणा ब्राह्मण याचकोंको दिया व ज्योतिषियोंको बुलाकर जन्मलग्न उसकापूंछा तब ब्राह्मणों ने उसबालक का नाम अनिरुद्धरखकर कहा महाराज यहपुत्र अतिसुन्दर व बलवान् व चौदहोंविद्यानिधान होगा यहबातसुनकर बसुदेवनन्दन ने ज्योतिषियों को सन्मानपूर्व्वक बिदाकिया और वहबालक प्रतिदिन चन्द्रकलासा बढ़नेलगा जब रुक्मने यह हाल सुना कि मेरे नाती उत्पन्नहुआ तब उसने बड़ेहर्षसे भूषण व वस्त्रभेजकर ऐसी चिट्ठी श्रीकृष्णजीको लिखी कि मैं अपनीपोती का बिवाह तुम्हारे पौत्रसे करूंगा जब

रुक्मने यहपत्रीभेजकर थोड़ेदिन उपरान्त एकब्राह्मणके हाथ सामग्री तिलककी द्वारका में भेजदी तब श्यामसुन्दरने बड़ेहर्षसे वहतिलक अनिरुद्धको चढ़ाया व उसब्राह्मणको द्रव्यादिक देकर बिदाकिया व राजाउग्रसेन से आज्ञालेकर श्याम व बलराम बड़ीधूम धामसे अनिरुद्धको व्याहनेगये जबबरात भोजकटनगरके निकटपहुँची तब रुक्म्यग्रज नेवतहारी राजोंसमेत आगेसे लेनेगये व सब बरातियों को बड़ेआदरभावसे नगर में लेजाकर जनवासादिया व यथायोग्य सबका सन्मानकरके दुल्लहको मड़ये में लेगया जब बिधिपूर्व्वक पोतीका कन्यादानदेकर रुक्मने बहुतसाद्रव्यादिक दहेजमें श्यामसुन्दर को दिया तब राजाभीष्मकने जनवासे में जाकर श्रीकृष्णजीसे कहा महाराज बिवाह होचुका अब यहां अधिकरहना उचितनहीं है किसवास्ते रुक्मने जिन राजों को अपने यहां नेवते में बुलायाहै वह आपसे शत्रुतारखते हैं ऐसा न हो जो कोई उत्पातकरैं यह कहकर राजाभीष्मक अपनेघर चलेगये व केशवमूर्त्तिनें रुक्मिणीको सबवृत्तान्त सुना-कर चलनेवास्तेकहा तब वह रुक्मसेबोली हे भाई तुम्हारेनेवतेवाले राजा मेरेप्राणनाथ से शत्रुतारखते हैं इसलिये हमको बिदाकरदेव नहींतो शुभकार्य्य में बिघ्नहुआचाहता है यहसुनकर रुक्मबोला हे बहिन तुम किसीबातकी चिन्तामतकरो मैं पहिले नेवतेवाले राजोंको बिदाकरआऊं पीछे जो तुम कहोगी सोकरूंगा जबऐसाकहकर रुक्म सबराजों को बिदाकरनेवास्ते उनकेडेरोंपरगया तबकलिंगदेशके नृपति और कईराजोंने रुक्मसे कहा देखो तुमने श्यामव बलरामको इतना द्रव्यदहेजमें दिया पर उन्होंने अभि-मानकी राह कुछनहींसमझा एक तौ इसबातका माख हमलोगोंको है दूसरे उसदिनकी कसक हमारेमनसे नहींभूलती जो बलरामजीने रुक्मिणीहरणमें तुम्हारीगति कीथी सो हमलोग यादवबंशियों को युद्धमें जीतनेनहींसक्ते तुम बलदाऊजी को हमारे स्थानपर बुलादेव तो चौपड़में सबधन उनका जीतलेवें व श्यामसुन्दरसे बिगाड़ना कुछ प्रयो-जननहीं है जब यहबचनसुनकर रुक्मको पिछलीबात यादकरके क्रोध उत्पन्नहुआ तब वहां से उठकर कुछ शोचबिचार करताहुआ बलभद्रजी के पासजाकर बोला महाराज आपको सबराजों ने दण्डवत्करके चौपड़खेलनेवास्ते बुलाया है यहबातसुनकर जब बलदाऊजी रुक्मकेसाथ राजोंकीसभामें आये तब उन्होंने सन्मानपूर्वक बैठाकर उनसे कहा हमलोग आपसे चौपड़खेलनाचाहते हैं इतनाकहकर उन्होंने चौपड़बिछादिया व रुक्म व बलराम खेलनेलगे जब पहिले रुक्मने दशबाजी बलभद्रसे जीतिलिया और वह बहुतद्रव्य हारगये तब रुक्मने अभिमानपूर्वक बलरामसेकहा सबधनहारगये अब काहेसे खेलोगे और कलिंगदेशका राजाभी यहबातकहकर हँसनेलगा तब बलरामजी लज्जितहोकर दशकरोड़ रुपयेकी बाजीलगाकर बोले ॥

दो० कह्यो हमारे मन बिषे जो नहिं कपट कुभाव ।
तौ अबकी हम जीतिहैं निश्चय करि यहदांव ॥

जब वह बाजी रेवतीरमण जीतकर रुपया उठानेलगे तब सब राजा अधर्म्म से बोले रुक्मने बाजीजीती यह बात सुनकर बलरामजी ने वह रुपया रुक्मको देडाला दूसरीबाजी अर्ब रुपयेकी लगाकर बलदाऊजी ने पांसा फेंका जब वह बाजीभी संकर्षण जीते तब फिर सब राजा झूंठ बोलकर कहनेलगे रुक्म ने जीताहै कलिङ्गदेशका राजा हँसनेलगा जब यह अधर्म्म सबका देखकर बलरामजी को क्रोधहुआ तब रुक्म अभिमानसे चिल्लाकर बोला सुनो बलभद्रजी तुम सच कहने से क्यों क्रोध करतेहो तुमने जन्म अपना ग्वालों के साथ बनमें रहकर बिताया राजसी खेल चौपड़खेलनेका तुम क्या जानो जुआ खेलना व शत्रुओं से लड़ना राजाओंका धर्म्म है ॥

दो० बसे नन्दघर जायकै रहे चरावत गाय।
हम राजनकी सभाको जानत नहीं स्वभाय॥

यह बचन सुनकर रेवतीरमणको ऐसा क्रोधहुआ जैसे पूर्णिमाको समुद्रकी लहर बढ़ती है पर उन्हों ने रुक्मिणी के संकोच से क्रोध अपना क्षमाकिया व सातअर्बरुपये की फिर बाजी लगाकर खेले जब वह बाजीभी बलदाऊजी ने जीती व सब राजा झूठ बोलकर रुक्मका जीतना बतलानेलगे तब यह आकाशबाणी हुई कि बाजी संकर्षण जीने जीती है तुम सब क्यों झूठ बोलतेहो जब आकाशवाणी होनेपर भी सब लोग अधर्म से बलभद्रजी को झूठा बनानेलगे तब बलदाऊजी ने महाक्रोधित होकर रुक्म से बोले तैंने नातेदारी करनेपरभी हमसे शत्रुताई नहीं छोड़ी अब चाहे भौजाई बुरा मानैं या भला तुमकोबिनामारे नहींछोडूंगा यहबातकहकर रेवतीरमणने सबराजोंके सामने अपनेहल व मुसलसे रुक्मकोमारडाला जबकलिंगदेशकाराजा यहहाल देखकर वहांसेभागचला तबउसकोभी पछाड़कर घुस्सोंसे दांततोड़डाले व दूसरेराजा जो उस सभामें झूंठबोलकर बलरामजीको हँसतेथे उनमें किसीका हाथ व किसीका पैर व किसी की नाक मारेघुस्सोंके तोड़दिया यहदशादेखतेही और सबराजा अपनेप्राणकेडरसे भाग गये व जबबलदाऊजीने श्यामसुन्दरकेपासजाकर सबवृत्तान्त वहांकासुनाया तब केशव मूर्त्ति अन्तर्यामीने रुक्मका अधर्म्मसमझकर अपनेभाईको कुछनहींकहा और वहांसे दुल्लह व दुलहिन व रुक्मिणी व बरातियों समेत अपने साथलेकर द्वारकाकोचले॥

दो० याबिधिपौत्र बिवाहिकै माखनप्रभु यदुनाथ।
आनँदसों पहुँचेसदन सकलसेन लै साथ॥

जबउनके आनेकासमाचार द्वारकाबासियोंनेसुना तबसब छोटेबड़ेगातेबजाते आगे से आनकर दुल्लह व दुलहिनको राजमन्दिरमें लेगये व घर घर मंगलाचारहोनेलगा व श्याम व बलरामने राजाउग्रसेन से हाथजोड़कर कहा महाराज तुम्हारे पुण्यप्रताप

से अनिरुद्धको ब्याहकरलेआये व रुक्म्यग्रजको जो बड़ाअधर्मीथा मारडाला यहबात सुनकर राजाउग्रसेन अतिप्रसन्नहुये ॥

बासठवां अध्याय ॥

अनिरुद्ध व ऊषाकी कथा ॥

राजा परीक्षितने इतनीकथासुनकर शुकदेवजीसे बिनयकिया हे महाराज दयालु होकर अब अनिरुद्धहरणकी कथा सुनाइये ॥

दो० कहौप्रकट समझायकै सकलऋषिनके राय ।
श्रीमाखनप्रभुकी कथा श्रवणन सदा सुहाय ॥

यहसुनकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित द्वारकानाथकी दयासे ऊषा व अनिरुद्धकी कथाकहताहूं सुनो ब्रह्माजीके बंशमेंकश्यपजीहोकर उनकापुत्रहिरण्यकशिपु बड़ाबलवान् हुआ जिसके यहां प्रह्लादभक्तने जन्मलिया व प्रह्लादका बेटा बैरोचनहोकर उसके यहां राजाबलि ऐसा धर्मात्माहुआ जिसका यश आजतक संसारमें छायरहा है व राजा बलिके यहां सौपुत्रहोकर बाणासुर बड़ाबेटा उसका महाबली व सत्यबादी व धर्म्मात्मा था सो वह शोणितपुर में ब्रह्मचर्यसे राज्यकरके नित्य कैलासपर्वतपरजाकर पूजा व तप महादेवजीका प्रेमपूर्व्वककरताथा एकदिन बाणासुर मृदंगलेकर बड़ेप्रेमसे महादेवजी के सामने नाचने व गानेलगा तब भोलानाथने प्रसन्नहोकर पार्वतीसमेत उसेदर्शन देकरकहा हे बेटा तेराप्रेमदेखकर मैं अतिप्रसन्नहुआ जोइच्छाहो सोवरदानमांग बाणासुर ने उनको साष्टांगदण्डवत्करके बिनयकिया हे महाप्रभु आपनेदयालुहोकर दर्शनदिया तोमुझे पहिले अमरकरदीजिये फिर चौदहोंलोकका राज्यदेकर ऐसा पराक्रमदीजिये जिसमें कोईदेवतादिकभी मुझे जीतने न सकैं ॥

दो० बहुतभांति बिनतीकरूं हौं दासनको दास ।
तुमठाकुर तिहुँलोकके पुरवत सबकीआस ॥

यहबचनसुनतेही शिवजीने हजारभुजा बाणासुरको देकरकहा हमने तुझे इच्छा पूर्व्वक बरदानदिया अब तू अचलराज्यकर तुझेकोईनहीं जीतसकैगा जब महादेवका बरपानेसे बाणासुरके हजारभुजाहोगईं तबवहउनसे बिदाहोकर हँसताहुआ राजमन्दिर परआया व अपनीभुजाके बलसे संसारीराजों व सबदेवतोंको जीतकर तीनोंलोकका राज्यकरनेलगा व नित्य कैलासपर्वतपरजाकर विधिपूर्वक पूजनमहादेवजीकाकरताथा व सबदेवता उसकेआधीनरहतेथे व शिवजीने बाणासुरसे यहकहाथा कि हमतेरेनगरकी रक्षाकरैंगे इसलिये महादेवके गण शोणितपुरमें रक्षाकरनेवास्ते रहतेथे जबबाणासुर से

कोई शत्रुलड़नेवाला नहीं ठहरा व हजारभुजा उसकी बिनालड़े खुजलानेलगीं तबवह बड़े २ पर्वतउठाकर दूसरेपहाड़ोंपर पटकके चूरकरनेलगा तिसपरभी उसकाबोध नहीं हुआ तबउसने बिचारा कि बिनायुद्धकिये सबभुजा मुझको बोझमालूमदेती हैं इसलिये महादेवजीकेपासचलकर किसीशत्रुका पतापूंछूं ऐसाबिचारकर कैलासपर्वतपर चलागया व शिवजीसे बिनयकिया हे महाप्रभु तीनोंलोकमें कोई ऐसाबलवान् दिखलाई नहीं देता जो मेरेसाथलड़नेसके जबमैं दिग्पालहाथियों से लड़नेगया और वहभीहमसे हार मानगये तबमैंनेबड़े २ पहाड़ोंको मुक्कामारकर चूर करडाला सो बिनायुद्धकिये सबभुजा मुझे बोझमालूमहोतीहैं कोई लड़नेवाला बतलाइये जिससे युद्धकरूं ॥

चौ० यद्यपि यहजानौं मनमाहीं । तुमसों और बली कोउनाहीं ॥
त्यहिकारण त्रिभुवनकेनाथा । तुमहीं युद्धकरौ ममसाथा ॥

यह अहंकार सुनकर महादेवजीने विचारा कि मैंने तो इसको भक्तजानकर ऐसा बरदानदियाथा सो यहअज्ञान मुझीसे लड़नेआया इसलिये इसका अभिमान तोड़ना उचित है ऐसा बिचारकर शिवजी बोले हे मूर्खअभिमानी तू मतघबड़ा अभीतक तो तीनोंलोकमें ऐसाकोई बलवान् नहींहै जो तेरेसाथ लड़नेसकै पर थोड़ेदिनोंमें श्रीकृष्ण जी अवतारलेकर तुझसेलड़ैंगे यहबचन सुनतेही बाणासुरने प्रसन्नहोकर महादेवजीसेपूंछा महाराजमुझे उनकेअवतारलेनेकाहाल किसतरह मालूमहोगा तब भोलानाथने एकध्वजा बाणासुरको देकरकहा तू इसध्वजाको लेजाकर अपनेराजमन्दिरपर खड़ीकरदे जिसदिन यहध्वजाआपसेटूटकर गिरपड़े उसदिनजानियो कि मेराशत्रु उत्पन्नहुआ बाणासुर वह ध्वजालेकर बड़ेहर्षसे अपनेमकानपर चलाआया व उसेराजमन्दिरपर खड़ाकरदिया व सदाउसेदेखकर अपनेशत्रुउत्पन्नहोनेकी इच्छारखताथा जबकईबर्षबीते बाणासुरके बाणा-वती बड़ीस्त्रीसे एककन्या ऊषानाम अतिसुन्दरीउत्पन्नहुई तब उसनेप्रसन्नहोकर ब्राह्मण व याचकोंको बहुतसादान व दक्षिणादिया जबऊषा सातबर्षकीहुई तबबाणासुरने उस को सहेलियोंसमेत कैलासपर्वतपर महादेव व पार्वतीकेपास विद्यापढ़नेवास्ते भेजदिया सो ऊषाने वहां पहुँचकर भोलानाथ व पार्वतीको दण्डवत्करके बिनयकिया हे त्रिलो-कीनाथ इसदासीको विद्यादानदेकर संसारमें यशलीजिये तबमहादेव उसेविद्यापढ़ानेलगे कुछदिनोंमें ऊषाउनकीकृपासे सबशास्त्र व गानेबजानेमें ऐसीनिपुणहोगई कि अनेक तरहका बाजाबजाकरछःराग व छत्तीसरागिनीगानेलगी एकदिन ऊषावीणाबजाकर पार्वतीजीकेसाथ सांगीतरागगातीथी उससमय शिवजीने पार्वतीसेकहा हे प्राणप्यारी जिसकामदेवको मैंनेजलादियाथा उसने श्रीकृष्णजीकेयहां प्रद्युम्ननामसे जन्मलियाहै ऐसाकहकर शिवजी पार्वतीकोसाथलिये गंगाकिनारेचलेगये व बड़ेप्रेमसे उनकेसाथस्नान व जलबिहारकिया व पार्वतीजीको अपनेहाथसे उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनाये जब

जगन्माता बीणाबजाकर सांगीतराग उनको सुनानेलगीं उससमयमहादेवजीने प्रसन्न होकर बड़ेप्रेमसे पार्वतीजीको गलेलगालिया यहहालदेखकर ऊषाकोभी इसबात की चाहनाहुई कि मेराव्याहभी हुआहोता तो इसीतरह अपनेपतिसे बिहारकरती जैसेरात्रिबिना चन्द्रमाकेशोभानहींदेती वैसेस्त्रीबिनापुरुषकेअच्छीनहींमालूमहोती उसकेमनकाहालपार्वती अंतर्यामीनेजानकर उसे अपने पासबुलाया व ऊषाकोधैर्य्यदेकरकहा अयबेटी तेरास्वामी तुझे स्वप्नमेंआनकर मिलेगा तू उसेढुंढ़वाकर भोग व विलासकीजियो जब ऐसाकहकर पार्वतीजीने उसकोबिदाकिया व ऊषाउन्हें दण्डवत्‌करके राजमन्दिरपर आई तबबाणासुरने एकस्थानरत्नजटितमें उसको सहेलियोंसमेत रक्खा जिसतरह चन्द्रमाकाप्रकाश द्वितियासे पूर्णमासीतकबढ़ताहै उसीतरह ऊषाबारहवर्षतक बढ़कर ऐसीसुन्दरी व तरुणीहुई जिसकेसामनें पूर्णमासीका चन्द्रमाधूमिल दिखलाई देने लगा एक दिन ऊषाने सोरहोंशृंगारकिये सहेलियोंको साथलिये अपनेमाता व पिताके पासजाकर दण्डवत् किया तब बाणासुरने उसेबिवाहनेयोग्य देखकर बिचारा अबयहब्याहने योग्यहुई यह समझकर उसने बहुतदैत्य व राक्षसोंको उसके महलकी रक्षाकरनेवास्ते बैठादिया जिस में कोई पुरुषवहांजाने न पावै व ऊषा अपनेस्वामीके मिलनेवास्ते आठोंपहरपूजा व ध्यान पार्वतीजीका करनेलगी सो एकदिन ऊषानेरात्रिको शय्यापर अकेलीबैठीहुई यहबिचारा देखैं राजा मेराबिवाह कबकरते हैं जबवह इसीतरह बिचारतीहुई सोगई तो स्वप्नमें क्यादेखा कि एकपुरुष किशोर अवस्था श्यामरंग चन्द्रमुख कमलनयन अति सुन्दर जड़ाऊ मुकुट शिरपर धरे किरीट कुण्डल व पीताम्बर पहिने अंग अंगपर गहना जड़ाऊ साजे मोतियों की माला गले में डाले जर्दउपरना रेशमीओढ़े सामने आनकर खड़ाहै ऊषा वहमूर्त्ति देखतेही लज्जितहोगई जबउसपुरुषने प्रेमपूर्व्वक बातों से लज्जा उसकी छुड़ाकर अपने गले लगालिया तबवहसुन्दरी उस मोहनीमूर्त्तिको अपनी शय्यापर बैठाकर प्रेमकीबार्त्ताकरनेलगी जैसे ऊषाने हाथफैलाकर कमलनयन से मिलनेचाहा वैसे आंखउसकी खुलगई व मनकीइच्छा मनहीमें रही ॥

दो० जागपड़ी शोचत खड़ी भयो परम दुख ताहि ।
कहांगयो वहप्राणपति देखतचहुँदिशि जाहि ॥

जबऊषाने जागनेउपरांत उसपुरुषको नहींदेखा तबब्याकुलहोकर कहनेलगी अब मैं अपने प्राणप्यारेको किसतरहदेखूं कदाचित् न जागती तो किसतरह वह मेरामन चुराकर भागजाता अब जो रातबाकीहै वह कैसेकटैगी ॥

चौ० बिनपीतम जियनिपटअचैन । देखे बिन तरसत हैं नैन ॥

कान सुनों चाहतहैं बैन। कहां गये पीतम सुखदैन॥
जो स्वप्नेमें फिरि लखिलेऊं। प्राण साथ उनके करिदेऊं॥

जबऊषा इसतरह अनिरुद्धको स्वप्नेमेंदेखकर उसपर मोहितहोगई तबउसरूपका ध्यानहृदयमें रखकर शय्यापरपड़रही व उसीशोचमें निद्राउसे न आई जबपहरदिन चढ़ेतक नहींउठी तबउसकी सहेलियां आपसमें कहनेलगीं आजक्याकारण है जो राजकन्यासोकर नहींउठी जबवहसब घबड़ाकर ऊषाकासमाचार लेनेवास्ते शीशमहल में गई तबउसे रोतीहुई ब्याकुलदेखकर बहुतसमझाया पर बिरहकीमारीहुई नहींउठी तबसहेलियोंसे चित्ररेखा कुम्भाण्डकी बेटीने ऊषाकाहालसुना तब उसने राजकन्याके यहांजाकर क्यादेखा कि ऊषाछपरखटमें लेटीहुई रोरहीहै यह दशा उसकीदेखतेही चित्र- रेखाने घबड़ाकर पूंछा अयप्यारी आजक्यादुःख तुमको हुआ जो इतनारोतीहो अपना भेद मुझे बतलावो तो उसका उपायकरूं मुझे तुम्हारी दयासे यहसामर्थ्य है कि चौदहौं लोकमें जाकर जोकाम किसीसे न हो वह करलाऊं ब्रह्माके बरदान देने से शारदादेवी आठोंपहर मेरेसाथरहती हैं उनकीकृपासे ब्रह्मादिकदेवतों को बशकरलेने सक्तीहूं मेरागुण अबतक तुमकोनहीं मालूम था आजतुम्हारी यहदशा देखकर अपना हाल तुमसे कहा॥

चौ० अब तू कह सब अपनी बात। कैसी कटी आजकी रात॥
मुझसे कपटकरो मतप्यारी। पूरण करिहौंआश तुम्हारी॥
दो० अंग अंग ब्याकुल महा मानो लगो है प्रेत।
कहो कपट समझायकै कासों बाढ़्यो हेत॥

ऊषा यह प्रेमपूर्वक बातसुनकर छपरखटसे उतरपड़ी व लज्जासंयुक्त उसके निकट आनकर धीरेसेंबोली अयसखी मैंतुझे परममित्रजानकर रातकाहाल कहतीहूं तू यहबात अपनेमनमेंरखकर जो उपाय तुझसे बनपड़े सोकीजियो आजरातको एक पुरुषश्यामवर्ण कमलनयन अतिसुंदर मेरीशय्यापर आनबैठा जबउसने प्रेमपूर्वक बातेंकहकर मेरामन हरलिया तबमैंनेभी लज्जाछोड़कर उसको गलेलगानेवास्ते हाथपसारा तो जागउठनेसे फिरउसको नहींदेखा परवहमोहनीरूप आंखोंमें बसरहाहै उसका नाम व घर मैं कुछ भी नहीं जानती॥

चौ० वाकीछबि बरणीनहिं जाय। मेरो चित लैगयो चुराय॥
मनलाग्यो त्यहि सूरतमाहीं। इकक्षण कबहूं भूलत नाहीं॥

जबमैं कैलासपर्वतपर विद्यापढ़तीथी तबमुझे पार्वतीजीने कहाथा कि तेरा स्वामी

तुझको स्वप्न में आनकर मिलेगा तू उसको ढूंढ़वालीजियो वही पति आज रातमुझे स्वप्नमें मिलाथा पर मैं उसे कहांढूँढ़वाकर पाऊं व अपना दुःख किससे सुनाऊं ॥

दो० पड़ैनींदनयनन नहीं धरैनहीं चितचैन ।
वहमूरति सुखधामकी ढूंढ़तिहौं दिनरैन ॥

जबऊखा यहहाल अपनाकहकर ठण्ढीश्वासलेनेलगी तबचित्ररेखाने कहा हे प्यारी अबतुम किसीबातकी चिन्तामतकरो मैं तुम्हारेचित्तचोरको जहांहोगा वहांसे लेआकर मिलादूंगी तुममुझे आज्ञादेव तो मैं तीनोंलोकमें जितनेसुन्दरपुरुषहैं सबकी तसवीरखींच कर तुम्हेंदिखलादूं तुमउनमें से अपनेचित्तचोरको पहिंचानकर मुझे बतलादेव फिर उसकालेआना मेराकामहै यहबातसुनतेही ऊषा प्रसन्नहोकर बोली बहुतअच्छा मैं अपने चित्तचोरकोपहिंचानलूंगी यहबातसुनतेही चित्ररेखाने गणेशजी व शारदादेवीकोमनाकर तसवीरखींचना आरम्भकिया व देवता व किन्नर आदिकके करोड़ों चित्रखींचकर उसे दिखलाया जबऊषाने उनमें अपने चित्तचोरको नहींपहिंचाना तबउसने तसवीर श्री कृष्णजी व प्रद्युम्नकी लिखकर ऊषाकोदिखलाया जबवह दोनों चित्रदेखतेही ऊषा इस तरह लज्जितहोगई जिसतरह स्त्री अपनेश्वशुरआदिकको देखकर लज्जितहोजातीहै तबवहचित्ररेखासे बोली मेरा चित्तचोर इन्हींकेवंशमेंहोगा यहबचनसुनतेही चित्ररेखा ने जैसे तसवीर अनिरुद्धकी खींचकर राजदुलारीको दिखलाई वैसे ऊषा अचेतहोगई जबचित्तउसका ठिकानेहुआ तबचित्ररेखासे बोली स्वप्नेमें यहीपुरुष मेरामनचुरालेगया है अबऐसा उपाय करनाचाहिये जिसमें यहमुझेमिले नहींतो मेराप्राण इसके बिरहमें निकलनेचाहताहै यहबातसुनकर चित्ररेखाबोली अयप्राणप्यारी अबयहपुरुष मेरेहाथसे बचकर नहींजासक्ता यहयदुवंशीकुलमें श्रीकृष्णजीका पोता व प्रद्युम्नका बेटा अनिरुद्ध नाम द्वारकापुरीमें रहताहै व सुदर्शनचक्रकी रक्षाकरनेसे कोईमनुष्य व दैत्य व राक्षस बिनाआज्ञा श्रीकृष्णजीके वहांजानेनहींसक्ता यहबातसुनतेही ऊषा उदासहोकर बोली वहांकापहुँचना ऐसाकठिनहै तो मेरेप्राणनाथको किसतरहलेआवोगी चित्ररेखानेकहा तू चिन्ता न कर मैं तेरेवास्ते एकबेर उपायकरतीहूं जबऐसाकहनेउपरांत चित्ररेखाचील्ह रूपबनकर वहांसेउड़तीहुई द्वारकापुरीके निकटपहुँची तबउसनेक्यादेखा कि सुदर्शन चक्र चारोंओर घूमकर उसपुरीकी रक्षाकरताहै व बिनाआज्ञाउसके द्वारकापुरीमें कोई जानेनहीं सक्ता जबयहदशादेखकर वह खड़ीहोरही तबपरमेश्वरकीइच्छानुसार नारदमुनिने वहांआनकर चित्ररेखासेपूंछा तूयहांकिसवास्तेआईहै जबचित्ररेखाने नारदमुनिको दण्डवत् करके सबकारण अपनेआनेका उनसेवर्णनकिया तबनारदमुनिने उसेएकमंत्रबतलाकर कहा तू साधुका बेषबनाकर द्वारकामें जा तो सुदर्शनचक्र तुझेनहींरोंकैगा व अनिरुद्धको बाणासुरसे लड़तीसमय मेरास्मरण करनाचाहिये जबऐसाकहकर नारदमुनिचलेगये

तबचित्ररेखाने उसीसमय वैष्णवकारूप सांगोपांग बनालिया व अँधियारीरातमें श्याम घटाकेसाथ बिजुलीसी चमकतीहुई द्वारकापुरीमें चलीगई और सुदर्शनचक्रने वैष्णव समझकर नहींरोंका तबढूंढ़तीहुई अनिरुद्धकेमहलमें जहां वहशय्यापर अकेलासोयाहुआ स्वप्नेमें ऊषाकेसाथ बिहारकररहाथा जापहुँची व उनकोवहांसे शय्यासमेत उठाकर ले उड़ी व एकक्षणमें पलंगउसका बीचमहल ऊषाके लेजाकर रखदिया व ऊषासेबोली मैंने तुम्हारे चित्तचोरको यहांलेआकर पहुँचादिया अबतुम इसकेसाथबिहारकरो ऊषा यहहाल देखकर चित्ररेखाके पांवपर गिरपड़ी व हाथजोड़कर कहनेलगी तू धन्यहै जो तैंने मेरेचित्तचोरको क्षणभरमें यहांलाकर अपनाप्रण पूराकिया अबजन्मभर तेरागुण न भूलूंगी यह सुनकर चित्ररेखाबोली संसारमें परोपकारसे उत्तम दूसरीबात नहींहोती अब तुम अपनेप्राणपतिको जगाकर इच्छापूरीकरो ऐसाकहकर चित्ररेखा अपनेघर चलीगई व ऊषा डर व लज्जासे मनमें कहनेलगी किसतरह इसकोजगाकर अपनामनोरथ पूर्ण करूं फिरकुछशोचबिचारकर जबराजकुमारी मीठेस्वरोंसे बीनबजानेलगी तब अनिरुद्ध ने जागकर चारोंओर देखा तो अपनेको दूसरेस्थानमेंपाकर मनमेंकहा मुझको यहांकौन पलँगसमेत ले आया ॥

दो० पहिले श्रीप्रद्युम्नकी सुनीहती उनबात ।
ताही बिधिमोकोभयो जानो कछु उत्पात ॥

अनिरुद्ध तो यहीशोच व बिचार कररहाथा ऊषा अपने प्राणनाथको जागते देख कर रूपरसउनका आंखोंकीराह पीनेलगी तब अनिरुद्धने उससुन्दरीको देखकर कहा हे प्राणप्यारी तुमकौनहोकर मुझेकिसवास्ते यहांउठालेआईहो जबऊषा इसबातका कुछ उत्तर न देकर लज्जासे कोनेमें सिमिटगई तबअनिरुद्धने हाथ उसका पकड़कर अपनी शय्यापर बैठालिया व प्रेमभरीबातें कहकर उसकीलज्जा छुड़ादिया जबदोनोंने आपसमें गन्धर्व बिवाहकरके अपने मनकीइच्छा पूरीकी तबअनिरुद्धने ऊषासे हँसकरपूंछा हे प्राणप्यारी तैंने मुझे किसतरह देखकर यहां मँगवाया यहसुनकर ऊषाबोली मैं तुम्हें स्वप्नेमें देखकर अतिमोहितहोगई सो चित्ररेखा तुम्हारेबिरहमें मुझेव्याकुलदेखकर न मालूम तुमको यहांकिसतरह लेआई यहबातसुनकर अनिरुद्ध बोले हे प्राणप्यारी आज मैंभी तुझेस्वप्नेमें देखकर तेरेसाथ बिहारकररहाथा सो न मालूम कौनमुझे यहांउठालाया जब मैं बीणाका शब्दसुनकरजागा तबतुझे देखा जबइसीतरह सुख व बिलासकरतेहुये सबेराहोगया तबऊषाने अनिरुद्धको अपनीसखी व सहेलियों से छिपाकर कहीं अलग रक्खा व उसकी सेवा आपकरनेलगी जबकईदिन बीतनेपर अनिरुद्धकाहाल सबसखी व सहेलियोंको प्रकटहोगया तबऊषाउन्हें छत्तीसव्यञ्जन खिलाकर उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनानेलगी ॥

दो० मैन पुत्रसुखदेनका प्रेमलगे दिन रैन।
काम कलोलकरैं सदा बोलत अमृतबैन ॥

एकदिन ऊषा व अनिरुद्ध आपसमें चौपड़ खेलरहेथे उसीसमय ऊषाकी माता अपनी कन्याको देखनेआई तो अनिरुद्धकी सुन्दरताई देखतेही अतिप्रसन्न होकर दबेपांव फिरगई व ऊषा व अनिरुद्ध यह भेद न जानकर ज्योंके त्यों खेलतेरहे चारमहीने अनिरुद्धके रहनेका हाल छिपारहकर फिरइसतरह प्रकट होगया कि एक दिन ऊषाने अनिरुद्धको सोयाहुआ देखकर यह बिचारा कि मेरे बाहर न जाने से सबलोग सन्देहकरैंगे ऐसा बिचारतेही ऊषा अपने रंगमहलका द्वारखोलकर बाहर निकली व क्षणभरमें फिर बन्दकरके भीतरचलीगई व अनिरुद्धकेसाथ बिहारकरनेलगी यहदेखकर उसमहलके चौकीदारों ने आपसमें कहा देखोभाई आज क्याकारणहै जो राजकन्या इतनेदिनोंपर बाहरनिकलकर फिर उलटेपैर महलमें चलीगई यहबातसुनकर दूसरा द्वारपालकबोला मैं कईदिनसे ऊषाका रंगमहल आठों पहर बन्द देखकर वहां किसीपुरुषके बोलने व चौपड़खेलनेका शब्दसुनताहूं यहसुनकर दूसरेने कहा यहबात सचहै तो चलो बाणासुरसे कहिदें दूसराबोला राजकन्याकी चुगली खाना न चाहिये चुपचाप बैठेरहो होनेवालीबात आप प्रकटहोजायगी जिससमय द्वारपालक आपस में यहचर्चा कररहेथे उसीसमय राजाबाणासुर अनेक शूरबीरोंसमेत टहलताहुआ वहां आ निकला व ध्वजा महादेवजी की दीहुई महलपर न देखकर चौकीदारों से उसकाहाल पूंछा तो द्वारपालकोंने कहा महाराज बहुतदिनहुये कि वहध्वजा आपसे टूटकर गिर-पड़ी यहबातसुनते ही बाणासुर प्रसन्नहोकर व शिवजीकाबचन यादकरके बोला कि ध्वजागिरने से मालूमहोताहै कि मेराशत्रु लड़नेवाला उत्पन्नहुआ यहबचन बाणासुरके मुखसे निकलतेही एक चौकीदारने हाथजोड़कर बिनयकिया हे पृथ्वीनाथ राजकन्या के महलमें कई एक दिनसे एकपुरुषके हँसने व बोलने का शब्दसुनताहूं पर यह नहीं जानता कि वह कौनहै और किसराहसे आया यहसुनतेही बाणासुर क्रोधितहोकर शस्त्र लियेहुये दबेपांव ऊषाके महलमें चलागया तो क्यादेखा कि एकपुरुष श्यामरंग अति-सुन्दर ऊषाकेपास पलँगपर सोरहाहै उसकारूप देखतेही बाणासुरने प्रसन्नहोकरकहा कि यह ऊषाके ब्याहकरने के योग्यहै पर इसबातकी लज्जासमझकर महलसे बाहर चला आया व अपनेसाथियों से बोला मेराशत्रु अभी सोरहाहै सोतेहुयेको मारना न चाहिये इसलिये तुमलोग यहमहल घेरेखड़ेरहो जिसमें वह भागने न पावे जब सोकरउठै तब मुझसे आनकर कहना यह आज्ञादेकर बाणासुर अपनी सभामें चलाआया व बहुतसी सेना ऊषाका मकान घेरनेकेवास्ते भेजकर उनसेकहा तुमलोगचलो मैंभी वहांपहुँचता हूं उसकी आज्ञापातेही जब हज़ारों योद्धाओं ने जाकर ऊषाका रंगमहल घेरलिया व

अनिरुद्ध व ऊषा जागकर आपस में चौपड़खेलनेलगे तब एक चौकीदार ने जाकर बाणासुरसे कहा कि तुम्हाराशत्रु नींदसे जागा है यहसमाचारपातेही उसने तलवार व त्रिशूल लियेहुये ऊषाके द्वारेपर आनकर ललकारा तू कौनचोर राजमन्दिर में घुसाहै जल्दी निकलकर मेरेसामनेआव तो तुझे दण्डदूं अब तू यहां से जीताबचकर अपने घर जानेनहींसक्ता जब ऊषाने बाणासुरका शब्दसुना तब डरती व कांपतीहुई अनिरुद्धसे बोली हे प्राणनाथ मेरापिता बहुतदैत्य साथलेकर तुम्हारे पकड़नेकेवास्ते चढ़िआयाहै अबतुम उसकेहाथसे किसतरह बचोगे यहबातसुनतेही अनिरुद्ध ऊषाको धैर्य्य देकर बोले हे प्राणप्यारी तुम देखतीरहो एकक्षणमें सबदैत्योंको मारडालूंगा ऐसाकहकर जैसे अनिरुद्धने कुछ मंत्रपढ़ा वैसे एकसौ आठहाथकापत्थर जिसे शिलाकहते हैं उनकेपास आनपहुँचा जब अनिरुद्धजीने वहशिला हाथमेंलिये बाहरनिकलकर बाणासुरको ललकारा तब वह अपने शूरबीरों समेत इसतरह अनिरुद्धपर झपटा जिसतरह शहतकीमक्खियां छत्ताउजाड़नेवाले पर झुण्डका झुण्ड झपटती हैं ॥

दो० तिन्हैं देखि कोपे तभी महाबली अनिरुद्ध ।
उन सों औ योधान सों भयो परस्पर युद्ध ॥

जब बाणासुरकी आज्ञापाकर सबदैत्य अपनाअपना शस्त्र अनिरुद्धपर चलानेलगे तब उन्हों ने क्रोधितहोकर उसीशिलासे दैत्यों को मारना आरम्भकिया जिसकीचोट से बहुतदैत्य मरगये व कुछ घायलहोकर गिरपड़े व बाकी अपनाप्राणलेकर भागगये जब बाणासुरने देखा कि यहपुरुष महाबली है जिसने सबसेनामेरी मारकरहटादी तब उसने नागफांस जो महादेवजीने उसे दीथी उसको फेंककर अनिरुद्धको फांसलिया व उसी तरह बांधेहुये अनिरुद्धको अपनीसभामें लेजाकरकहा हे बालक अब तेराप्राणलूंगा जो तेरासहायकहो उसको अपनीरक्षाकेवास्ते बुलाव अनिरुद्धने यहसुनकर बिचारा कि मैं अपनेबलसे नागफांसको तोड़कर बाहरनिकलजाऊं तो शिवजीका अपमानहोगा इस लिये मुझे दुःख हो तो कुछचिन्तानहीं पर महादेवजीका बचन झूठाकरना न चाहिये जो परमेश्वरकी इच्छाहोगी सो होगा यहां अनिरुद्ध पड़ाहुआ अनेकतरहका शोच व बिचार कररहाथा व ऊषा उसका समाचारपातेही व्याकुलहोकर चित्ररेखासे बोली हे सखी ऐसेजीनेपर धिक्कारहै जो मेराप्राणप्यारा दुःखउठावे और मैं सुखसेरहूं ऐसे जीने से मेराप्राण निकलजावे तो अच्छाहै जब ऐसाकहकर ऊषा अतिबिलापकरनेलगी तब चित्ररेखा उसे धैर्य्यदेकरबोली तू कुछ चिन्तामतकर तेरेपतिका कोईकुछ करनहींसक्ता अभी श्याम व बलरामजी यदुबंशियों को साथलेकर शोणितपुर में पहुँचते हैं व सब दैत्योंको मारकर तुझे अनिरुद्धसमेत द्वारकापुरी लेजावैंगे वे जिस राजकन्याको सुंदरी सुनते हैं उसे बिनालेगये नहींरहते अनिरुद्ध उन्हीं श्रीकृष्णजीका पोताहै जो कुण्डिन-

पुरसे शिशुपाल व जरासंधआदिक बड़े २ प्रतापीराजाओंको जीतकर रुक्मिणी राजा भीष्मककी बेटीको हरलेआये थे यहबात चित्ररेखाकी सुनकर ऊषाबोली हे सखी अपने प्राणनाथको नागफांसमें बँधे सुनकर मेराकलेजा जलाजाताहै व मुझे खाना व पीना व सोना व बैठना कुछ अच्छानहींलगता बाणासुरचाहै मुझको भी अनिरुद्ध के साथ मारडाले तो अच्छाहै पर इस महादुःखमें मुझसे उनकासाथ छोड़ानहींजाता ऐसाकह-कर ऊषा महलसे बाहरचलीगई व लज्जाछोड़कर राजसभामें अनिरुद्धकेपास जाबैठी यहहालसुनतेही बाणासुरने स्कन्द अपनेबेटेको बुलाकरकहा तुम अपनीबहिनको यहां से घरमें लेजाकर बैठाररक्खो व फिर उसको बाहर निकलने मतदेव यहबचनसुनतेही स्कन्दने ऊषाकेपासजाकर क्रोधसेकहा तैंने लोकलाज छोड़कर अपनेमाता व पिताका नामडुबाया मैं तुझे अभी मारडालता पर क्याकरूं पापहोनेको डरताहूं ऊषाने उत्तर-दिया हे भाई जो चाहो सोकहो और करो मैंनेतो पार्वतीजीके बरदानसे यहपतिपाया अब इनको छोड़कर दूसरेसे बिवाहकरूं तो संसारमें अपनेको कलंकलगाऊं बिधाताने जो बर मेरेभाग्यमें लिखदियाथा वह मुझेमिला इनकेसाथ चाहै मेराभलाहो या बुरा इन के सिवाय मैं दूसरे को नहीं चाहती जब स्कन्दने यहबात ऊषाकीसुनी तब बरजोरी उसका हाथपकड़कर महलमेंलेगया व उसपर चौकी व पहरारखकर फिर उसे अनिरुद्धके पास जानेनहींदिया व अनिरुद्धको वहांसे दूसरेमकानमें लेजाकर हथकड़ी व बेड़ी डाल-कर क़ैदरक्खा इधरतो अनिरुद्धजी ऊषाकेबिरहमें व्याकुलरहनेलगे व उधर ऊषानेभी उसके बीच बिरहसागर में डूबकर खानापीना छोड़दिया जब कईदिनउपरांत अनिरुद्धने चित्ररेखाकाकहना यादकरके नारदमुनिका ध्यानकिया तब नारदजीने उसीसमय पहुँच कर अनिरुद्धसेकहा हे बेटा तुम किसीबातकी चिन्तामतकरो श्रीकृष्णजी आनन्दकन्द व बलरामजी यदुबंशियोंसमेत यहांआनकर तुझे छुड़ालेजावेंगे अनिरुद्धको ऐसा धैर्य देनेउपरांत नारदमुनि ने बाणासुरसे जाकरकहा हे राजन् जिसको तुम बांधकर अपने यहां क़ैदरक्खेहो वह अनिरुद्धनाम प्रद्युम्नकाबेटा व श्रीकृष्णजी का पोताहै तुम यदु-बंशियोंका प्रताप अच्छीतरह जानते हो जैसाउचितहो वैसाकरो मैं तुम्हारे कल्याण के वास्ते यह कहने आयाहूं बाणासुर यहबचनसुनकर अभिमानसे बोला हे मुनिनाथ मैं सबको जानताहूं तुम्हारे आशीर्बाद से उन्हें देखलूंगा नारदमुनि उसका कुछ उत्तर न देकर वहां से चले गये ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर व बाणासुर से युद्धहोना ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब अनिरुद्धको चारमहीने से अधिकहोगये व उसका पता नहींमिला तब एकदिन प्रद्युम्नआदिक यदुबंशी श्याम व बलरामकेपास बैठकर

बड़ीउदासीसे अनिरुद्धकी चर्चाकरनेलगे पर मुरलीमनोहरने सबवृत्तान्त जाननेपरभी कुछहाल उसका अपनेबेटा व पतोहू से नहींबतलाया परन्तु उनकीइच्छासे उसीसमय नारदमुनि वहां आनपहुँचे उनकोदेखतेही सब छोटे व बड़ोंने दण्डवत्करके सन्मान-पूर्वक बैठाला तब नारदजीने प्रद्युम्नआदिकको उदासदेखकरपूंछा आजतुमलोग मलीन दिखलाई देतेहौ यहबातसुनतेही श्रीकृष्णजी ने हाथजोड़कर बिनयकिया हे मुनिनाथ आप चारोंओर घूमतेहैं कुछहाल अनिरुद्धका मालूमहो तो बतलाइये जिसमें हमलोगों का शोच छूटिजाय जबसे कोई उसको पलँगसमेत उठालेगया तबसेकुछ पता उसका नहींलगा यहबचनसुनकर नारदमुनिबोले तुमलोग चिन्तामतकरो अनिरुद्धजी शोणित-पुरमें जीतेहैं उन्होंने वहांजाकर बाणासुरकी बेटी से भोगकियाथा इसीवास्ते राजा ने नागफांससे उनकोबांधकर अपनेयहां क़ैदरक्खाहै बिनायुद्धकिये अनिरुद्धकोनहींछोड़ेगा उसकाठिकाना हमने तुमसेबतलादिया आगे जैसाउचितजानो वैसाकरो जब नारदमुनि यहकहकर ब्रह्मलोकको चलेगये तब श्याम व बलराम ने राजाउग्रसेनके पास जाकर जो हाल नारदमुनिसे सुनाथा वह बर्णनकिया राजाबोले तुम हमारी सबसेना अपने साथलेकर अभी शोणितपुरमें चलेजाव व जिसतरहबनपड़ै उसतरह अनिरुद्धको मेरे पास अभी लेआवो यह आज्ञापातेही श्यामसुन्दर प्रद्युम्नसमेत गरुड़पर बैठकर शो-णितपुरको चले व बलरामजी बारहअक्षौहिणीसेना साथलेकर शोणितपुरपर चढ़ाईकी उससमय ऐसीशोभा उनकी मालूमदेतीथी जिसकाहाल तुमसे कहांतक बर्णनकरूं व बलदाऊजी राहमें सबकिला व नगरबाणासुरका तोड़ते व लूटतेहुये शोणितपुरमें पहुँचे व श्यामसुन्दर व प्रद्युम्नभी उनसे आनमिले तब बाणासुरके सेवकने दैत्यसंहारण की सेना देखते ही अपने स्वामी के पास जाकर बिनयकिया महाराज श्याम व बलराम तुम्हारा नगर लूटते व उजाड़तेहुये बड़ीभारीसेना साथलेकर चढ़आये हैं और शो-णितपुरको उन्होंने चारों ओर से घेरलिया अब तुम्हारी क्याआज्ञाहोती है यहबचन सुनतेही बाणासुरने अपने सेनापतियोंको आज्ञादी कि तुमलोग अपने शूरबीरोंको साथ लेकर श्रीकृष्णजीके सन्मुखजाकर खड़ेहो मैंभी पीछेसे आताहूं यहबचनसुनतेही बाणा-सुरकामंत्री बारहअक्षौहिणीसेना दैत्य व राक्षसोंको साथलेकर नगर से बाहरनिकला व अनेक शस्त्रोंसमेत यदुबंशियोंके सन्मुखआया व बाणासुरभी पूजा व ध्यान शिवजीका करके अपनीसेनामें आनमिला बाणासुरके ध्यानकरतेही महादेवजीको मालूमहुआ कि इससमय मेरेभक्तपर कुछ दुःखपड़ाहै इसलिये वहांचलकर उसकी सहायताकरनी चा-हिये ऐसाबिचारकर भोलानाथने पार्व्वतीको कैलासपर्व्वतपर अकेलीछोड़दी और आप जटाबांधने व बिभूतिलगाने उपरांत भांग व धतूराखाकर श्वेतनागोंकाजनेऊ व मुण्ड-माला पहिनलिया व बाघम्बरओढ़कर त्रिशूल व धनुषबाण व खप्पर हाथ में लेलिया और नन्दीबैलपरबैठकर भूत व प्रेत व पिशाचादिकोंको साथलियेहुये शोणितपुरकोचले

जब भोलानाथ कानोंमें गजमुक्ता व मुद्राडाले व मस्तकपर चन्द्रमा व शिरपर गंगाजी धारणकिये व लाल २ नेत्रनिकाले गातेबजाते अपनीसेनाको नचातेहुये बाणासुर के निकट क्षणभरमें आनपहुँचे तब उनको देखतेही बाणासुरचरणोंपर गिरपड़ा व हाथ-जोड़करबोला हे कृपानिधान इस महाकष्टमें आपबिना कौन मेरीसुधिले तुम्हारेप्रतापके सामने यादवलोग अबमेरा क्याकरसक्ते हैं यहबातशिवजीसेकहकर बाणासुरने श्याम व बलरामकी सेनामें कहलाभेजा कि हमारातुम्हारा अकेला धर्म्मयुद्धहो यहबात बैकुण्ठ-नाथ ने मानकर इसतरहपर एकएक मनुष्यकायुद्ध दोनोंओरसे ठहराया श्यामसुन्दर व भोलानाथ व बाणासुर व सात्यकी से युद्ध होनेलगा ॥

दो० स्वामि कार्त्तिक अतिबली जिनको जगमें नाम ।
तिनसों औ प्रद्युम्न सों होन लग्यो संग्राम ॥

बलरामजी व कुम्भाण्ड मन्त्री व स्कन्द बेटा बाणासुर व चारुदेष्ण पुत्र मुरली-मनोहर व कुम्भकर्ण दूसरे मन्त्री बाणासुर व साम्ब से युद्ध हुआ जब इसीतरह सब शूरबीर अपनी २ जोड़ीसे अनेकशस्त्रलेकर लड़नेलगे व दोनोंसेनामें मारूबाजा बजने लगा व ब्रह्मादिक देवता अपने २ बिमानोंपर बैठकरयुद्धदेखनेकेवास्ते आये तब शिवजीने जैसे पिनाक धनुषपर ब्रह्मबाणरखकर चलाया वैसेद्वारकानाथने शार्ङ्गधर कमानसे तीरमारकर उनकाबाणकाटडाला जब शिवजीने बाणचलाकर बड़ी आंधी प्रकटकी तबबृन्दाबन बिहारीने अपनीमहिमासे उसआंधीको मिटादिया फिर कैलाश-पतिने यादवबंशियोंकी सेनामें अग्निबाणचलाया तो श्यामसुन्दरने जलवर्षाकर उस बाणकी अग्निबुझादी व एकबाण अग्निसमान ऐसा छोड़ा कि महादेवकी सेनामें सब का शरीर मूंछदाढ़ीसमेत जलनेलगा तब भोलानाथने अपनीमहिमासे पानीबर्षाकर जले व अधजले भूत व प्रेतोंकोठण्ढाकिया व क्रोधितहोकर नारायणी बाणचलानेवास्ते तरकससे बाहरनिकाला फिर कुछ शोचबिचारकरके रखदिया उससमय दैत्यसंहारण आलस्यबाणछोड़कर शत्रुकीसेनाको इसतरह काटनेलगे जिसतरह किसानलोग जुआर का खेत काटडालतेहैं यहदशा देखकर जब महादेवजीने तीनबाण श्यामसुन्दरपरचलाये तबलक्ष्मीपतिने उनतीरोंकोभी काटकर एकतीर ऐसामारा जिसके लगनेसे शिवजी गिरपड़े व जमुहाई लेनेलगे ॥

दो० बाणासुर के काजशिव कीन्ह्यो बहुत उपाय ।
माखनप्रभु भगवानसे केहिविधि जीतो जाय ॥

जबस्वामिकार्त्तिकने बड़ाभारीयुद्ध प्रद्युम्नसे किया तबप्रद्युम्नजीने तीनबाण उस मुरैलेके जिसपर स्वामिकार्त्तिकचढ़ेथे ऐसेमारे कि वहमुरैला रणभूमिछोड़कर आकाशमें

उड़गया जबस्वामिकार्त्तिक आकाशसे यदुबंशियोंको तीरमारनेलगे तबप्रद्युम्नजीने मुरलीमनोहरसे आज्ञालेकर मारेतीरोंके उसमुरैलेको स्वामिकार्त्तिक समेत पृथ्वीपरगिराकर अचेतकरदिया व बलरामजी व साम्बने दोनोंमंत्री बाणासुरके मारडाले यहदशा देखतेही बाणासुर सात्यकीसे लड़नाछोड़कर केशवमूर्त्तिके सामनेआया व पांचसौकमान जो अपने हाथमें लियेथा दो दो बाण एक एक धनुषपररखकर सावन भादोंकी बूंदसमान श्यामसुन्दरपर बरसानेलगा उससमय बैकुण्ठनाथने अपनेतीरसे सबबाण उसकेकाटकर एकतीर ऐसामारा कि पांचसौकमान बाणासुरकेकटकर पृथ्वीपरगिरपड़े व उसकासारथी घोड़ोंसमेतमरगया यहदशादेखतेही जबबाणासुररणभूमि छोड़कर पैदलभागचला व दैत्य संहारणने रथअपनाउसके पीछेदौड़ाकर पांचजन्य शंखविजयकाबजाया तबकोटरानाम माताबाणासुरकी हालभागने बेटेकासुनकर अपनेपुत्रको बचानेवास्ते राजमन्दिरसे नंगे पैर दौड़तीहुई रणभूमिमें आई ॥

दो० तुरतआइ ठाढ़ीभई माखनप्रभु के तीर।
पुत्रहेतु व्याकुलमहा कीन्हे नग्नशरीर॥

देखना नंगी स्त्रीका मनाहोकर धर्मशास्त्रमें ऐसालिखाहै कि एकबेर परस्त्रीको नंगी देखकर जबतक तीनबेर कड़ुवेतेल से आंखें न धोवे तबतक दोषउसका नहीं छूटता इस लिये श्रीकृष्णजीने कोटराको नंगीदेखना उचित न जानकर शिरअपनानीचे करके आंखबन्दकरलिया तबबाणासुर भागकर नगरमेंचलाआया व फिर एक अक्षौहिणी सेना लेकर बसुदेवनन्दनके सामने लड़नेगया जबकोटराअपनेबेटेको सेनासमेतदेखकर राज मंदिरपर चलीगई व दैत्यसंहारणने एकक्षणमें वह सेनाभी बाणासुरकीमारडाली तब बाणासुरभागकर शिवजीकी शरणमेंगया व भोलानाथने अपनेभक्तको अतिव्याकुल व आरतदेखा व क्रोधितहोकर बिषमज्वर कालारंग जिसके तीनशिर व तीनपैर व तीन आंखें छःहाथथे श्यामसुन्दरकी सेनामेंछोड़ा जबवह तप बड़ेतेजसे द्वारकानाथकी सेनामें आनकर सबको जलानेलगा तब प्रद्युम्न व सात्यकीआदिक यदुबंशीलोग उसकेभयसे थरथरकांपते व जलतेहुये सांवलीसूरतिके पासजाकर बोले महाराज शिवजी के तपने हम लोगोंको जलाकर मरण तुल्यकरदिया इसकेहाथसे प्राणबचाइये नहीं तो क्षणभर में सबलोग मरनेचाहतेहैं यहदशा देखकर श्यामसुन्दरने शीतज्वरको अग्नितपकेसामने जैसेछोड़दिया वैसेदोनोंतप आपसमेंलड़नेलगे जबशीतज्वरको अग्नितपउठाने नहींसका तबअपने प्राणकेभयसे भागाहुआ महादेवके पासजाकर बोला हे दीनानाथ मुझेअपनी शरणमें रखिये नहीं तो शीतज्वर मेराप्राणलिया चाहताहै यहसुनकर भोलानाथनेकहा सिवाय श्यामसुन्दरके दूसराकोई ऐसात्रिभुवनमें नहीं है जो इसतपसे तेराप्राणबचाने सके इसलिये उन्हींकी शरणमें जा वहीभक्तहितकारी दयालुहोकर तुझेबचावैंगे यहबचन

सुनतेही अग्नितपजाकर ऊपरचरण श्रीकृष्णजीकेगिरपड़ा व आधीनताईसे बिनयकिया हे कृपासिंधु पतितपावन मेराअपराधक्षमाकरके अपनेतपकेहाथसे प्राणबचाइये आपका आदि व अन्तकोई नहींजानता व तुम्हारानाशकभी नहींहोता व तुमने ब्रह्मा व महादेव आदिक सबदेवतोंके ईश्वरहोकर अपनीइच्छासे वास्ते सुखदेने हरिभक्त व मारनेअधर्मी व बोझाउतारने पृथ्वीके अवतारलियाहै व बिनाचर्चा व स्मरण तुम्हारेनाम व लीला के जो अक्षर मनुष्य अपनेमुखसे निकालतेहैं उनको वृथासमझनाचाहिये ऋषीश्वर व योगीलोग तुम्हारेस्मरण व ध्यानकेप्रतापसे जो कुछ शुभ व अशुभ किसीकोकहतेहैं वह बात उसीसमयहोजातीहै पर वे लोगभी तुम्हाराभेदनहींजानते व आपसबलीला संसारी जीवोंको भवसागर पार उतारनेवास्तेकरतेहैं व आपलक्ष्मीपति व सबसेउत्तमहोकर तीनों लोकके उत्पत्ति व पालन व नाशकरनेवाले हैं ॥

दो० माखनप्रभु भगवानकी अस्तुति कही न जाय ।
सर्वरूप सर्वातमा सबघटरह्यो समाय ॥

हे दीनानाथ आपजिसतरह शरणआये पर दयालुहोकर अपराध उसकाक्षमाकरते हैं उसीतरह मुझे बड़ादुःखी व दीनजानकर शीतज्वरके हाथसे मेराप्राणबचाइये तीनों लोकमें तुम्हारेसिवाय कोई दूसरा मुझे अपनीरक्षाकरनेवाला दिखलाई नहींदेता ॥

दो० माखनप्रभु करतारकी महिमा अमितअपार ।
तपशीत व्यापैतहां जहां न नामतुम्हार ॥

यहदीनबचनसुनकर बसुदेवनन्दननेकहा अबमेरीशरणआनेसे तेराप्राण बचा व तेरा अपराध मैंने क्षमाकिया पर आजसे हमारेसेवक व हरिभक्तोंकोकभी दुःख न दीजियो व जोकोई यहकथा मेरी व तेरीअपने सच्चेमनसेकहै व सुनैगा उसको किसीतरह का तपहो तो छूटजायगा अब महादेवजी के पास चलाजा यहबात सुनतेही अग्निज्वर श्यामसुन्दर से बिदाहोकर भोलानाथ के यहां चलाआया तब यदुबंशी लोग अच्छे होगये और बाणासुर जो भागगयाथा फिर अनेकशस्त्र अपने हजारहाथमें लेकरश्याम-सुन्दरके सन्मुखआया व ललकारकर कहनेलगा अभीतकयुद्धकरने से मेरामन नहींभरा तुमसावधान होकर मेरे साथलड़ो जबवह अभिमानी ऐसाकहकर मुरलीमनोहर पर शस्त्रचलानेलगा तबदैत्यसंहारणने क्रोधितहोकर सुदर्शनचक्रसेकहा कि चारहाथ बाणा-सुरके छोड़कर और सबभुजाकाटडालो यहआज्ञापातेही सुदर्शनचक्र इसतरह भुजा बाणासुरकी काटकर गिरानेलगा जिसतरह कोई मनुष्य क्षणभरमें पतलीपतली डाली वृक्षकी काटडालताहै जब बाणासुरकी यहदशा होकरलोहू उसकेअंगसे नदीरूपी बहने लगा तबउसने लज्जितहोकर शिवजीसे विनयकी हे भोलानाथ मैंने अपने अभि-

मानका दण्डपाया अबसिवाय तुम्हारे कोई दूसरा मेराप्राण बचानेनहींसक्ता यहदीन बचन सुनकर महादेवजीने बिचारा अबगर्व्व इसकाटूटगया इसलिये अपने भक्तका प्राणबचाना चाहिये ऐसा बिचारतेही कैलासपति बाणासुरको साथलेकर वेदस्तुति करतेहुये द्वारकानाथके पासचलेगये व बाणासुरको उनकेचरणों पर गिरादिया ॥

दो० हाथ जोड़ ठाढ़ेभये हरिके सन्मुख जाय।
बाणासुरके काजशिव अस्तुतिकरैं सुनाय॥

हे दीनदयालु त्रिलोकीनाथ तुम जड़ व चैतन्यके मालिकहोकर सबजीवोंकी उत्पत्ति व पालन व नाशकरतेहौ व तुम्हारी लीला व कामोंकी कोईगिनती नहीं करनेसक्ता आपकेवलपृथ्वीका भारउतारने व हरिभक्तोंको सुखदेने व अधर्मियों को मारनेके वास्तेअपनी इच्छासे सगुणअवतार लेतेहौ और नहींतो तुम्हारे विराट्रूपमें चौदहों लोकका व्यवहार रहताहै सो मैं उसरूपको दण्डवत् करताहूं ॥

दो० तुम्हरी शक्ति अनन्त है अन्त न पाया जाय।
प्रकट गुप्त देखत सदा रह्यो बिश्वभरि छाय॥

जिसने संसारमें मनुष्य तनु पाकर तुम्हारा स्मरण नहीं किया उसने अमृत छोड़ कर बिषपिया जिसतरह सूर्य्य बदलीमें छिपे रहते हैं उसीतरह तुम अपने को संसार में छिपाकर मनुष्यके समान लीला करतेहो जो मनुष्य तुम्हारा ध्यान छोड़कर संसारी जाल में फँसता है उसे बड़ा मूर्ख समझना चाहिये हम व ब्रह्मा व इन्द्रादिक देवता तुम्हारे दासहोकर आपका भेद नहीं जानसक्ते संसारी मनुष्यको क्या सामर्थ्य है जो तुम्हें पहिचानने सकै जिसपर तुम दयालुहोकर अपने ध्यान व पूजाकी राह दिखलाते हो वह तुम्हारी महिमा कुछ जानकर सत्संग करने से भवसागरपार उतरने सक्ताहै ॥

दो० जैसे बूड़त जल बिषे शीश निकालै कोय।
श्वास लेतहीं एक क्षण महाचैन सुख होय॥

हे महाप्रभु जिसतरह डूबताहुआ मनुष्य श्वास लेने से सुख पाताहै उससे अधिक आनन्द हरिभजनमें समझना चाहिये परन्तु हरिभजनमें चित्त लगाना बहुत कठिन है संसारी जीव झूंठी मायामोहमें ऐसे फँसरहे हैं कि उनका मन तुम्हारी ओर एक क्षण नहीं लगता उनमें जो कोई संसारी सुख चाहने वास्ते तुम्हारा भजन व ध्यान करताहै उसे हम व ब्रह्मा बरदान देते हैं पर उसका मनोरथ पूर्ण होना व हमारा बचन सच्च करना तुम्हारे आधीन रहताहै हे कृपासिन्धु किसी को ऐसी सामर्थ्य नहीं है जो तुम्हारी महिमा अपरम्पारका गुण वर्णन करनेसकै बाणासुर अज्ञानकी राह मुझे परमे-

श्वर जानकर मेरा पूजन करताथा अब यह तुम्हारा द्रोही होकर मुझे आपके पास सिफ़ारिश करनेवास्ते लेआयाहै सो मुझपर दयालु होकर इसका अपराध क्षमाकीजिये व इसको प्रह्लाद अपने भक्तके कुलमें जानकर अभयदान दीजिये ॥

दो० आज्ञा कीजै चक्रको माखनप्रभु व्रजनाथ ।
और भुजा सब काटिकै राखै चारों हाथ ॥

जब महादेवजी ने इसतरह बिनयपूर्बक स्तुति श्यामसुन्दरकी की तब वसुदेवनन्दन हँसकर बोले हे भोलानाथ मेरे तुम्हारे में भेद समझनेवाला मनुष्य अवश्य नरक भोगेगा व तुम्हारा ध्यान करनेवाला अन्तसमय मुझे पावेगा व तुम्हारे कहने से हमने बाणासुरको चतुर्भुजी रूप बनाया जिसको तुमने बरदान दिया उसका निर्बाह मैंने किया व सदाकरूंगा ॥

दो० आयसु दीन्ही चक्रको ऐसी बिधि हरिनाथ ।
बाणासुर भुज काटिकै राखो चारों हाथ ॥

हे कैलासपति मैंने प्रह्लादभक्त बाणासुरके परदादासे यह प्रतिज्ञाकी थी कि तेरे बंशको अभयदान किया इसलिये तुम न कहते तोभी इसका प्राण न लेता पर बाणासुर अति अभिमान करके किसीको अपने तुल्य नहीं समझताथा इसवास्ते मैंने सब भुजा उसकी काटकर उसे चतुर्भुजी बनादिया व सब अपराध उसके क्षमाकरके तुम्हारा पार्षद उसे किया यह बचन सुनतेही शिवजी प्रसन्नहोकर कैलासपर्वत पर चले गये तब बाणासुर ने हाथ जोड़कर बिनयकी हे बैकुण्ठनाथ जिसतरह आपने कृपाकरके दर्शन अपना दिया उसीतरह अपने चरणों से मेरा घर पवित्र कीजिये व अनिरुद्धको ऊषासे बिवाह कर अपने साथ लेजाइये यह बात सुनकर जब वृन्दाबनबिहारी भक्त हितकारी प्रद्युम्न समेत बाणासुरके घरचले तब वह बड़े हर्ष से पीताम्बर राहमें बिछवाता हुआ द्वारकानाथको राजमन्दिर पर लेजाकर जड़ाऊ सिंहासन पर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृत लिया व हाथ जोड़कर बिनयकी हे दीनानाथ जिन चरणों का दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता व सनकादिक ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता उन चरणों के धोने से आज मैं अपने कुल परिवारसमेत कृतार्थ हुआ हे महाप्रभु इन्हीं चरणोंको धोकर ब्रह्माने वह जल अपने कमण्डलुमें रक्खा व महादेवजी ने वही जल अपने शिरपर चढ़ाया व भगीरथने बड़ी तपस्यासे अपने पुरुषों को तारने वास्ते मर्त्यलोक में लेजाकर संसारी जीवों का उद्धार किया व संसार में वही जल गंगाजी प्रकटहुआ जिनका दर्शन व स्नान व जलपान करने से अनेक जन्मके पाप छूटकर संसारी मनुष्य मुक्ति पाते हैं यह स्तुति कहकर बाणासुरने

ऊषाको राजमन्दिरसे बुलाभेजा व अनिरुद्धकी बेड़ी व हथकड़ी काटकर उसे स्नान कराया व अच्छा २ भूषण व वस्त्र पहिनाकर विधिपूर्वक अनिरुद्धसे बिवाह दिया व बहुतसा जवाहिर व सोना व चांदी व कपड़ा व बरतन व गहना व गौ व रथ व हाथी व घोड़ा जिसकी कुछ गिनती नहीं होसक्ती दहेज में देकर द्वारकानाथको ऊषा व अनिरुद्धसमेत बिदाकिया तब श्यामसुन्दर ने बाणासुरको धैर्य्य देकर अपनी ओरसे राजगद्दीपर बैठादिया व दुल्हह व दुलहिनको साथ लिये आनन्द मचाते हुये द्वारकाको चले उनका समाचार पातेही यदुबंशीलोग आगे से जाकर मंगलाचार मनाते हुये राजमन्दिर पर लिवालाये व रुक्मिणीजी अपने कुलानुसार रीति व रस्मकरके अनिरुद्धको दुलहिन समेत महलमें लेगई व सब द्वारकाबासियोंने घर २ मंगलाचार मनाया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जो कोई नित्य प्रातसमय इस अध्यायका ध्यान व स्मरण कियाकरे वह युद्धमें अपने शत्रुसे कभी नहीं हारैगा ॥

दो० यह लीला अद्भुत महा कहै सुनै जो कोय ।
लहै सदासुख सम्पदा ज्वरकी व्यथा न होय ॥

चौंसठवां अध्याय ॥

नृगराजा की कथा ॥

शुकदेवजीबोले हे परीक्षित नागकुल में नृगनामराजा बड़ाप्रतापी व धर्मात्माहोकर असंख्यगौ बिधिपूर्व्वक ब्राह्मणोंको दानदेताथा कदाचित् कोईचाहै तो गंगाकी रेणुका व बर्षाकी बूंदैं व आकाशकेतारे गिनलेवे पर उसके गोदानकियेहुयों को गिनतीकरना बहुतकठिनहै सो ऐसाधर्मात्मा राजा थोड़ापाप अनजानमें करनेसे गिरगिटान होगया था उसको श्यामसुन्दरने अपना दर्शनदेकर कृतार्थ किया इतनीकथासुनकर परीक्षित ने बिनयकिया हे मुनिनाथ ऐसाधर्मात्मा राजा कौनअपराध करनेसे इसदशाको पहुँचा उसकी कथा कहिये शुकदेवजी बोले हे राजन् राजानृग नित्य नियमकरके प्रति दिन हजारोंगौ विधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदेकर भोजनकरता था सो एकदिन कोईगौ उस-की दानदीहुई भागकर बिनादानकीहुई गौवोंमें मिलगई सो राजाने अनजानमें वहगौ दूसरेब्राह्मणको दानकरदिया और वहब्राह्मण गौलेकर अपनेघरचला व प्रथम दानलने वाले ब्राह्मण ने अपनी गौ पहिंचानकर उसे राहमें रोंका तब दोनों आपसमें झगड़ा करते हुये गौ समेत राजा के पास आये राजानृग ने दोनों ब्राह्मणों से हाथजोड़कर बिनयपूर्व्वक कहा ॥

चौ० कोऊ लाख रुपैया लेव । गैया इक काहू को देव ॥

यहबचनसुनतेही वहब्राह्मण क्रोधितहोकर राजासेबोला जो गौ स्वस्तिबोलकर हमने

दानलिया उसको करोड़रुपया पानेसेभी न देवैंगे यहगौ हमारेप्राणकेसाथहै यहसुनकर राजाने बिनयपूर्वक उनसेकहा महाराज यहअपराध मुझसे अनजानमें हुआहै एकगौ के बदले लाखगौलेकर क्रोधअपना क्षमाकरो जब लाखगौ व लाखरुपयेदेने पर भी दोनोंब्राह्मणोंने नहींमाना और वह गौ छोड़कर अपनेघर चलेगये तब राजाने बहुत उदासहोकर कहा देखो अनजान में मुझसे यहपाप होगया सो कैसेछूटैगा ऐसाबिचार कर राजाने उस अधर्मके छुड़ानेकेवास्ते और बहुतसादान ब्राह्मणोंकोदिया पर उसका संदेह न छूटकर कुछदिनबीते जब राजामरगया व यमदूत उसे धर्म्मराज के पास ले गये तबधर्म्मराजने उसकोआदरपूर्वक अपनेपास सिंहासनपर बैठाकरकहा हे राजन् तुम्हारापुण्य बहुत होकर थोड़ासा पापभी है सोतुमप्रथम अपने पुण्यकाफल भोगोगे या पापकादुःख यह सुनकर राजा बोला महाराज पहिले अपने अपराध का दण्डभोग कर पीछे से पुण्यका फल भोगूंगा यह सुनकर धर्म्मराजने कहा तुमने अनजान में जो दानकीहुई गौ फिरदूसरे ब्राह्मणको संकल्पदिया था उसी पापसे तुमको गिर-गिटान होकर कुछ दिन अँधियारे कुयें में रहना पड़ैगा जब द्वापर के अन्त में श्रीकृष्णजी अवतार लेकर तुमको अपना दर्शनदेंगे तब तुम्हारी मुक्ति होगी यह बचन धर्मराज के मुखसे निकलतेही राजा गिरगिट होकर गिरपड़ा व समुद्र के निकट अँधियारे कुयें में रहनेलगा जिन दिनों में श्रीकृष्णजी बाणासुरको जीतकर द्वारकामें पहुँचे उन्हीं दिनों में प्रद्युम्न व शाम्बआदिक यदुबंशी उसी कुयें की ओर अहेर खेलने गये सो एक बालक प्यासा होकर उसी कुयेंपर पानी भरनेगया तो क्या देखा कि एक गिरगिटान से कुआं भराहै यह आश्चर्य्य देखकर उस बालकने अपने साथी लड़कों को बुलाकर वह गिरगिट दिखलाया ॥

दो० दयावान हरिपुत्र सब कीन्ही यही बिचार ।
या गिरगिटको कूपते हम काढ़ैं इकबार ॥

जब लड़कोंके अनेक उपाय करने परभी वह गिरगिट कूपसे नहीं निकला तब उन्हों ने आनकर श्रीकृष्णजी से यह हाल कहके बिनय किया महाराज आप दयाकी राह चलकर उसे निकालिये श्यामसुन्दर अन्तर्यामी ने यह बचन सुनतेही उस कुयें पर जाकर जैसे अपना चरण गिरगिटको छुआदिया वैसे वह गिरगिट भूषण व बस्त्र पहिनेहुये दिब्यरूप राजोंकेसमान होगया ॥

दो० ताके माथे मुकुटकी शोभा कही न जाय ।
मानो आभा सूर्यकी रही चहूँदिशि छाय ॥

और वह कुयेंसे निकलकर हरिचरणों पर गिरपड़ा व हाथ जोड़कर बोला हे

बैकुण्ठनाथ आपने मुझे महाबिपत्तिमें दर्शन देकर कृतार्थकिया सिवाय तुम्हारे मुझ ऐसे अधर्म्मी को सुख देनेवाला तीनोंलोक में कोई नहीं है जब इसीतरह राजा नृग श्यामसुन्दरकी बहुत स्तुति करनेलगा तब प्रद्युम्न आदिक लड़कोंने यह अचम्भा देखकर मुरलीमनोहर से पूछा हे महाप्रभु यह कौनहै व किस अपराधसे गिरगिटहुआ था इसका भेद कहिये जिसमें हमारा संदेह छूटजाय यह बचन वृन्दाबनबिहारीने सुना तब आप उसकी कथा कहने को न जानकर राजानृगसे पूंछा तुम कोई देवता व किसी देशके राजा होकर गिरगिटतनुमें क्यों पड़े थे नृगने हाथ जोड़कर बिनयकिया हे अन्तर्यामी तुमसे कुछ छिपा नहीं है पर तुम्हारी आज्ञासे अपना वृत्तान्त कहताहूं सुनिये मैं पूर्वजन्ममें राजा इक्ष्वाकुका बेटा नृगनाम बड़ाप्रतापी होकर नित्य दशहजार गौ बिधिपूर्वक गृहस्थ व वेदपाठी ब्राह्मणोंको दान देताथा सिवाय गौके और बहुतसे मकान बनवाकर सब बस्तु संयुक्त संकल्प देके ब्राह्मणोंकी कन्याओं का बिवाह करा दिया करताथा व बड़े २ ढेर अन्न व मिठाई के ब्राह्मणों को दान देकर बहुतसे देव-स्थान व जलाशय संसारी जीवों को पानी पीनेके वास्ते बनवादिये थे जगत्में मेरे दान व शुभकर्म करने की ऐसीकीर्ति फैली जिसका बर्णन नहीं करसक्ता एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि एकगौ मेरी दान दीहुई ब्राह्मण के यहां से भाग आई व जो गौवें मैंने दूसरे दिन दानदेने को मँगवाई थीं उनमें मिलगई जब प्रातसमय अनजान से वह गौ मैंने दूसरे ब्राह्मणको संकल्प करदिया व प्रथम दान लेनेवाले ब्राह्मण ने राहमें उसगौ को पहिंचाना तब दोनों ब्राह्मण झगड़तेहुये गौ समेत मेरेपास आये मैंने उनसे हाथ जोड़कर कहा मुझसे लाख रुपैया या लाख गौ उसके बदले लेकर अपना झगड़ा छोड़देव पर दोनोंने नहीं माना और गौ छोड़कर अपने घर चलेगये व जातेसमय मुझे शापदिया कि तू गिरगिटके समान मूड़ी हिलाता है इसलिये गिर-गिटान होजा जब कुछ दिनबीते मैं मरगया तब उसी शापसे धर्म्मराजने मुझे गिरगिट तनु देकर इस कुयेंमें डालदिया व बिनय करनेपर यहकहा कि श्रीकृष्णजी के दर्शन पानेसे तेरी मुक्तिहोगी उसीदिन से तुम्हारे दर्शनोंकी अभिलाषा रखताथा सो आज आपने कमलरूपी चरणोंका दर्शन देकर मेरा उद्धार किया जिस तरह आपने मुझ ऐसे अधर्म्मी को अपना दर्शन देकर कृतार्थ किया उसीतरह दयालु होकर ऐसा बरदान दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणोंकी भक्ति मुझे बनीरहे जब द्वारकानाथने राजा नृगको इच्छापूर्व्वक बरदान देकर बिदाकिया और वह उत्तम बिमान पर बैठकर देव-लोकको चलागया तब श्यामसुन्दर ने अपने सन्तान व यदुबंशियों से जो वहां पर खड़ेथे उनसे कहा देखो ब्राह्मणोंकी महिमा इतनी बड़ीहै कि बिना अपराध भी ब्राह्मण किसी पर क्रोधकरैं तो उसके वास्ते अच्छा नहीं होता ज्ञानी को चाहिये कि किसी ब्राह्मण का धन न लेवे जिसतरह अग्निके खानेसे मुख जलताहै उसीतरह ब्रह्म अंश

लेनेवाले की गति समझना चाहिये बिषखाने से एकमनुष्य मरता व ब्रह्मअंश लेने वालेके कुलपरिवारका पतानहीं लगता बिषखानेवाला औषध करने से अच्छा भी हो जाताहै पर ब्रह्मअंश लेनेवाले का दुःखछूटने के वास्ते कोई औषध काम नहीं करती जो मनुष्य अनजानमें भी ब्राह्मण का धन या पृथ्वी लेताहै उसके तीन पुरुषा नरक में पड़ते हैं और जो कोई ब्राह्मणकी बस्तु बरजोरी छीनलेताहै उसके दश पुरुषा माता व पिताको नरक भोगना पड़ताहै व जोलोग दानदिया हुआ अपना ब्राह्मण से फेर लेते हैं उनको साठहजार बर्ष नरक का कीड़ा होकर फिर नीचजातिमें जन्ममिलता है पर उनका कईबार गर्भपात होकर जब उत्पन्न होते हैं तब कंगाल व रोगी रहकर जन्म उनका बीतताहै राजा नृगकी दशा जिसमें अजानसे अधर्म्म हुआथा वह देख कर यहबात सत्य समझना चाहिये ॥

दो० दानदेत द्विजराज को बिघ्नकरै जो कोय ।
सो होवै अति पातकी नरकबास तिहि होय ॥

कदाचित् ब्राह्मण तलवार खींचकर मारनेआवे तो शिर अपना उसके चरणों पर रखदेना उचितहै व सिवाय अधीनताईके उन्हें कठोरबचन कहना न चाहिये मेरेऊपर क्रोधकरै या दुर्बचनकहै तो मैं कुछबुरा न मानकर और उसकी सेवा करताहूं तुम लोगोंने सुनाहोगा कि भृगुऋषीश्वरने बिनाअपराध सोतेसमय मेरी छाती में लातमारी थी तब मैं पैर उनका यह समझकर दाबनेलगा कि मेरीछातीकी चोट उनके न लगी हो यह समझकर ब्राह्मणका सन्मान करना उचितहै व ब्राह्मण के प्रसन्न होनेसे लोक व परलोक दोनों बनताहै और ब्राह्मणसे झूंठबोलना व ब्याजलेना न चाहिये जोलोग ब्राह्मणको मेरेसमान न जानकर उसमें कुछभेद समझतेहैं उन्हें अवश्य नरक भोगना पड़ताहै व ब्राह्मणोंको माननेवाले मेरेचरणों की भक्तिपाकर परमपदको पहुंचतेहैं इस लिये तुमलोग मेरे कहनेका प्रमाण कियाकरो ॥

दो० ऐसी बिधि समझायके माखनप्रभु यदुराय ।
यदुवंशिन को साथ ले मन्दिर पहुंचे आय ॥

जब श्यामसुन्दरने राजा उग्रसेनसे यहसब हालकहा तब उन्होंने ब्राह्मणोंको बहुत उत्तमजानकर दण्डवत् किया इतनीकथा सुनकर परीक्षितने पूंछा हे मुनिनाथ राजा नृग ऐसे धर्म्मात्माने अनजानमें थोड़ापाप करनेसे क्यों इतना दण्डपाया शुकदेवजी बोले राजानृगको अपने दानधर्म्म करनेका अभिमान रहताथा इसलिये उसकी यह गतिहुईथी दान व धर्म्ममें गर्व्वकरना न चाहिये ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

बलरामजी का वृन्दावनमें जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकदिन श्याम व बलरामजी दोनोंभाई राजमन्दिर में बैठेथे उससमय बलभद्रजीने वृन्दाबन व गोकुलका सुख व आनन्द व यशोदाका प्रेम बर्णनकरके श्रीकृष्णजी से कहा कि वृन्दावनसे आतेसमय हम दोनों भाइयों ने यशोदा व गोपियों से करारकिया था कि फिर आनकर तुमसे मिलैंगे सो वहां जाने का संयोग नहीं हुआ और हमलोग द्वारकामें आनबसे सब ब्रजबासी हमारे बिरह में चिन्ता करते होंगे आप आज्ञा दीजिये तो हम वहां जाकर सबको धीर्य्य देआवैं केशवमूर्त्ति बोले बहुत अच्छा यह वचन सुनतेही बलरामजी ने मुरलीमनोहर व अपने माता व पितासे बिदाहोकर हल व मूशल अपना शस्त्र उठालिया व रथपर बैठकर वृन्दाबनको चले जिस २ देश व नगरमें बलदाऊजी पहुंचतेथे वहांके राजा आगे से आनकर सन्मान पूर्वक उन्हें अपने घर लेजातेथे व छत्तीस व्यंजन खिला कर अनेकतरह की वस्तु उन्हें भेंटदेते थे इसीतरह रेवतीरमण सब राजाओं से भेंट करते व उनको सुख देतेहुये उज्जैनमें अपने सांदीपन गुरूके स्थानपर पहुंचे तबगुरू नारायण व उनकी स्त्रीको साष्टांगदण्डवत् करके उनका आशीर्व्वाद लिया जब दश दिन वहां रहकर फिर वृन्दाबनमें आये तो क्या देखा कि जिनगायों को श्यामसुन्दर आप चरायाकरते थे वे सबगौ ध्यान श्यामसुन्दर का करके बनमें चारोंओर बिड़री फिरती हैं व मुंहबायबायकर सिवायचिल्लानेके घासचरनेपर कुछचाहना नहींरखतीं व उनके पीछे २ ग्वालबाल श्यामसुन्दरका यशगाते व प्रेमरंगराते चलेजाते हैं व ठौर २ ब्रजबासीलोग बालचरित्र मोहनप्यारेका आपसमेंकहकर व सुनकर उसीचर्चा में जन्म अपना काटते हैं जब बलरामजी ने यहदशादेखतेही आंखों में आंशूभरके रथअपना खड़ाकिया तब नन्द व यशोदाआदिक सबगोपियां व ग्वाल उनकेआनेका समाचार सुनकर बड़ेप्रेमसे मिलनेकेवास्ते दौड़े व बलरामजीको देखकर अतिप्रसन्नहुये ॥

दो० नन्द तात देखे तभी और यशोदा माय ।
बलदाऊ अति प्रेम सों गिरे चरण पर धाय ॥

नन्द व यशोदाने बलरामजीको अपने चरणोंपरसे उठाकर छातीमें लगालिया व मुखचूमकर प्यारकिया जब बलरामजीने ग्वालबालोंके गलेमिलकर उनकी कुशलपूंछी तब ब्रजबासीलोगोंने श्याम व बलरामका बालचरित्र यादकरके आंखोंमें प्रेमके आंशू भरलिये फिर नन्द व यशोदाने बलदाऊजी को बड़ेप्रेमसे घरलेजाकर कहा अयबेटा हमलोगों को तुम्हारेबिरहमें एकक्षण बर्षकेसमान बीतताहै तुम अपना हाल बतलाओ

हमारे बिना इतनेदिन वहांक्योंकररहे तुमधन्यहो जो इतनेदिनपर आनकर हमारीसुधिली व अपना चन्द्रमुख दिखलाकर हमारीआत्मा ठण्ढीकीकहो मोहनप्यारे व राजाउग्रसेन व वसुदेवआदिक यदुबंशी कभीहमको यादकरते हैं या नहीं बलरामजीबोले हे नन्दबाबा तुम्हारी कृपासे मुरलीमनोहर सबयदुबंशियोंसमेत प्रसन्नहोकर दिनरात आपकायशगाते हैं यहसुनकर यशोदाबोली हे बलरामजी जबसे मोहनप्यारे हमलोगों की प्रीति छोड़कर मथुरामें चलेगये तबसे हमारीआंखोंकेसामने अँधेरासा छायारहकर आठोंपहर उन्हींकी याद व चर्चा में दिनबीतताहै कदाचित् मथुरामेंरहते तो कभी कभी उनको देखआती इतनीदूर द्वारकामें जाने नहींसक्ती ॥

चौ० कहिये कहा कृष्णकी बाता । जिनको हम चाहैं दिनराता ॥
वे हमको चाहत कछु नाहीं । ऐसे निठुर भये मन माहीं ॥

हे बलदाऊजी वह ऐसानिर्मोही है कि कभी अपनासँदेशाभी नहींभेजता सचपूंछो तो अब वे द्वारकापुरीके राजाहोकर हम गरीबोंको क्यों यादकरैंगे ॥

दो० अब तो महा धनी भये सब राजन के राज ।
ग्वालनकी सुधि करतहीं उनको आवत लाज ॥

हे बलरामजी भला यहबतलाओ कन्हैया कभी मेरी व राधाआदिक गोपियों की सुधिकरताहै यानहीं मेरेनिकट वह यहांसे वहां अधिकसुखपाताहै पर हमलोगोंको उस के देखेबिना चैननहींपड़ती देखो रोहिणीनेभी हमारीप्रीति छोड़कर श्यामसुन्दरको ऐसा वशकरलिया कि उसनेकभी अपनादर्शन नहींदिया जब यशोदा इसीतरह अनेकबातें कहकर रोनेलगी तब बलदाऊजी ने उसको समझाकर धैर्य्य दिया जब बलभद्रजी संध्यासमय वृन्दाबनगांव में निकले तो क्यादेखा कि राधाआदिक सबब्रजबाला तनु क्षीण मनमलीन श्यामसुन्दर के ध्यानमें जिधर तिधर फिरती हैं व सिवाय जिकर व चर्चा बालचरित्र मोहनप्यारे के दूसरा कुछप्रयोजन उनको नहीं है जैसे राधाआदिक गोपियोंने बलदाऊजीको अकेले में देखा वैसे झुण्डकाझुण्ड उनकेपास आनकर दण्डवत्करके पूंछनेलगीं कहो बलरामजी तुमकबआये हमारे प्राणनाथ कभी हमलोगों को यादकरते हैं यानहीं जबसेहमैं वृन्दाबनछोड़कर आप मथुरागये तबसे एकबेर उद्धवके हाथ योगसाधने का संदेशा हमको भेजाथा फिर कुछ सुधिनहींलिया अबसुना है कि समुद्रकेटापूमें द्वारकापुरी बसाकर वहांरहते हैं अब हमगरीबिनियों को क्यों यादकरैंगे यहसुनकर दूसरीसखीबोली अयप्यारी अबउन्हैं क्याप्रयोजन है जो राजगद्दी छोड़कर यहां आवैं ॥

चौ० वह काहू के नाहीं मीत । मात पिता की छोड़ी प्रीत ॥

राधा बिन नहिं रहते घड़ी । सो वह है बरसाने पड़ी ॥

दो० सखी एक या बिधि कहै सुनो कृष्ण के भाय ।
जब लौं तुम ब्रज में हते रहे चरावत गाय ॥

दूसरी ब्रजबालानेकहा अयप्यारियो हमलोगोंने लोकलाज व कुलपरिवार छोड़कर उससे प्रीतिलगाकर क्यासुखपाया उससे कोई अपनी भलाई की आशा मतरक्खो व दूसरीगोपीबोली द्वारकाकी स्त्रियां उनकाविश्वास किसतरह करतीहोंगी दूसरी ने कहा मैं ऐसासुनतीहूं कि उन्होंने द्वारकापुरी में जाकर सोलहहजार एकसौआठ महासुन्दरी राजकन्याओं से अपना बिवाहकियाहै व उनकेसाथ आठोंपहर प्रीतिकरते हैं अबउन्हें छोड़कर हम गँवारियों के पास क्यों आवेंगे ॥

दो० सोरह सहस कुमारिका सुन्दर रूप निधान ।
दश दश सुत जिनके भये श्रीयदुनाथ समान ॥

दूसरीगोपीबोली अयसखी अब श्यामसुन्दरका पछितावाकरना उचितनहीं है और उद्धवजी जो कि निर्गुणरूपका ध्यान बतलागये हैं उसीपर बिश्वासरखकर धीर्यधरो दूसरीसखी ठण्ढीश्वासलेकर बोली अयप्यारी मुझे वह सांवलीसूरति व मुरलीकी धुनि नहींभूलती किसतरह धीर्यधरूं ॥

दो० नहिं जानों सखि ज्ञान को कौन देश की रीति ।
मानहुँ कबहूँ नहिं हती ब्रजबासिन सों प्रीति ॥

दूसरीसखी बिरहकी मातीहुई बोली अयबलदाऊजी देखो मोहनप्यारे ने इतनेदिन बीतनेपरभी यहनहींबिचारा कि हमारेबिरहमें गोपियों की क्यादशा होतीहोगी संसारमें जोकोई पशुपक्षी पालताहै उसकोभी इसतरह नहींभूलता यह कठोरताई उनकी देखकर मैंनेजाना कि उनका अन्तःकरणभी उन्हींके समान कालाहै नहींतो वहदीनदयालु व गोपीनाथ कहलाकर ऐसाकठोरपन न करते जब गोपियां इसीतरहपर अनेकबातें कह-कर रोतेरोते अचेतहोगईं तब रेवतीरमणने उन्हें बहुतसा धीर्यदेकर कहा क्यों इतना रुदनकरतीहो श्यामसुन्दर तुम्हारी अतिप्रीतिरखकर तुमको आठोंपहर याद कियाकरते हैं यहबचन सुनतेही सबब्रजबाला चैतन्यहोकर उनमें से एकसखीबोली अयप्यारियो रोनाछोड़कर जो कहूं सो करो ॥

चौ० हलधर जू के परसो पांव । सदा रहो इनहीं की छांव ॥
यह हैं गौर श्याम नहिं गाता । करिहैं नहीं कपट की बाता ॥

सुनि संकर्षण उत्तर दियो । तुम्हरे हेतु गमन हम कियो ॥
आवन हम तुमसे कहि गये । ता कारण हम आवत भये ॥
रहि दो मास करैंगे रासा । पुरवैंगे सब तुम्हरी आसा ॥

जब बलरामजी गोपियों से प्रेमपूर्बक बातैं कहकर मन उनका बहलानेलगे तब एक ब्रजबालाने कहा हे बलभद्रजी तुम्हारा भाई बड़ाकठोर है हमलोग ऐसा जानतीं तो कभी उससे प्रीति न करतीं दूसरीबोली अय बलदाऊजी वह चित्तचोर यहां सिवाय गाय चराने व मक्खन व दही चुराकर खाने के दूसरा प्रयोजन नहीं रखताथा अब वहां द्वारकापुरी का राजाहुआ हम गरीबिनियोंकी याद क्यों करेगा हमारा नाम लेने से उसे लज्जा आतीहोगी दूसरी सखी जो बिरहमें ब्याकुलथी वह झुंझलाकर बोली अब मैंने मन अपना श्रीकृष्णजी के समान कठोर करलिया उन्हें धन व स्त्री प्रति दिन अधिक मिलैं मैं इसी दुःखसागरमें प्रसन्नहूं दूसरी गोपी ने कहा मैं सुनतीहूं कि श्यामसुन्दरका प्रद्युम्न बेटा अपने पिताके समान सुन्दर व बलवान् हुआ है व सोलह हज़ार एकसौ आठ उनकी स्त्रियां व सब सन्तान चिरंजीव रहैं दूसरी ने कहा अक्रूर निर्द्दयी जो यहां आनकर हमारे प्राणनाथको लेगया व उद्धव जो हमलोगों से योग सधवाने आयाथा वे दोनों अच्छीतरह हैं दूसरी गोपी बोली अय बलराम जो तुम हमारी बातोंको हँसी न मानकर सचसच बतलाओ कि श्यामसुन्दरकी स्त्रियां उनकी बातका बिश्वास करती हैं या नहीं दूसरी ब्रजबालाने कहा उनमें जो बुद्धिमान् होंगी वह कभी उनकी बातका बिश्वास न करेंगी दूसरी सखी ने कहा हे बलदाऊजी कभी नन्दलालजी उन स्त्रियों के सन्मुख हमारी भी चर्चा व याद करते हैं या नहीं भला तुम्हीं न्यावकरो जिसके वास्ते हमलोग लाज छोड़कर इतना दुःख पाती हैं उसने हमैं इसतरह छोड़दिया है कि जिसतरह सर्प केचुल तजकर फिर उससे कुछ वास्ता नहीं रखता उस निर्द्दयीकी बात कहतेहुये मेरी छाती फटजाती है जब इसीतरह सब ब्रज-बाला अनेक बातोंको कहकर ठण्ढी २ श्वास लेनेलगीं तब बलदाऊजी ने उन्हें धीर्य देकर कहा आज पौर्णमासी की चांदनीरातमें तुमलोग अपना २ शृङ्गार करआवो तो हम तुम्हारे साथ रासलीलाकरैं यह बात सुनतेही सब ब्रजबालों ने अपने २ घरजाकर शृङ्गारकिया जब सन्ध्यासमय बलभद्रजी अतिउत्तम भूषण व बस्त्र पहिनकर वृंदाबनकी कुंजों में गये तब राधाआदिक गोपियांभी पहुँचीं ॥

चौ० ठाढ़ी भईं सबै शिरनाय । हलधर छबि बरणी नहिं जाय ॥
कनकबरण नीलाम्बर धरे । शशिमुख कमलनयन मनहरे ॥
अंग अंग सब भूषण साजैं । देखत कामदेव अति लाजैं ॥

रेवतीरमणकी छवि देखतेही सब ब्रजबालों ने उनके चरणों पर गिरकर बिनय किया हे दीनानाथ अपने बचनके प्रमाण रासलीला कीजिये यह सुनतेही जैसे वल-रामजी ने हूँकिया वैसे स्थान रासलीला का यमुना किनारे तैयार होकर शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहनेलगी व अनेक रंगके बाजे व भूषण व बस्त्रादिक वहां प्रकट होगये तब सब ब्रजबालों ने लाज छोंड़कर मृदङ्ग व करताल आदिक बाजा उठा लिया व गति नाचकर अपने गाने व बजाने व भाव बतलाने से बलदाऊजी को रिझाने लगीं जब रेवतीरमणभी उनका सच्चा प्रेम देखकर उनके साथ गाने व नाचने लगे तब बरुणदेवताने उत्तम बारुणी उनके पीने के वास्ते भेजदी सो बलदाऊजी गोपियों समेत पीकर आनन्द मचानेलगे उससमय देवतों ने अपने २ बिमानोंपरसे बलदाऊजी पर फूल बरसाये व चन्द्रमा ने तारागण समेत रासमण्डलका सुख देखकर उनपर अमृतकी बर्षाकी व जितने जीव जड़ व चैतन्य वहांपर थे वे परमानन्द देखकर अतिप्रसन्न हुये व रासलीला देखने के वास्ते यमुनाजल बहने से थम्हिकर चलना हवाका बन्दहोगया उसीआनन्दमें रेवतीरमणने जलबिहार करना विचारकर यमुनाजी को पुकारके कहा तुम हमारे निकट आनकर हमैं स्नान कराओ व जब यमुनाजी ने उनकी आज्ञा नहीं मानी तब बलरामजी ने क्रोधसे हल अपना यमुनाजी में डालकर पानी उसका अपने पास खींचलिया व उसमें जलबिहार करके मांदगी जागने की मिटाई उससमय यमुनाजी ने स्त्रीरूप डरती व कांपती हुई हलधरजी के पास आनकर बिनयकिया हे महाप्रभु मैंने तुमको नहीं पहिंचाना कि आप शेषजी का अवतार हैं मेरा अपराध आप क्षमाकरके अभयदान दीजिये जब इसीतरह यमुनाजी ने बहुत स्तुति बलदाऊजी की की तब वह अपराध उसका क्षमाकरके गोपियोंसमेत इसतरह यमुनाजलमें बिहार करते रहे जिसतरह हाथी पानी में हथिनियों के साथ नहाकर प्रसन्न होताहै ॥

दो० कबहूँ निर्मल जलबिषे कबहूँ यमुनातीर।
गोपिन संग क्रीड़ाकरैं श्रीबलराम सुधीर॥

जब रेवतीरमण जलबिहारकरके गोपियोंसमेत बाहरआये तब बरुणआदिक देवतों ने उत्तम २ भूषण व बस्त्र व मोतियोंकी मालाका वहां ढेर लगादिया सो बलरामजी व गोपियों ने मनमाना भूषण व बस्त्र पहिनलिया व गले में फूलोंके गजरे डालकर बनबिहारकिया उसीदिनसे वहांपर यमुनाजल टेढ़ा बहताहै जब इसीतरह बलदाऊजी ने दो महीने चैत्र व बैशाख वृन्दाबन में रहकर नित्य ब्रजबालों के साथ रासविलास व जलविहारकरके उन्हैं सुखदिया व दिनभर नन्द व यशोदा आदिकको श्यामसुन्दर की चर्चासे सुख देकर द्वारका जानेकी इच्छाकी तब नन्दादिक अनेक तरहकीबिस्तु

श्यामसुन्दरके वास्ते देकर रेवतीरमणको बिदा किया उससमय गोपियां रोकर कहने लगीं हे बलदाऊजी हमैं भी अपने साथ लेचलो रेवतीरमण उनलोगोंको धीर्य्य देकर द्वारकाको चले व थोड़े दिनों में आनन्दपूर्व्वक द्वारका पहुँचकर सब हाल वहां का केशवमूर्त्तिसे कहदिया ॥

छासठवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का राजापुण्डरीक मिथ्या बासुदेवको मारना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित उन्हीं दिनों पुण्डरीक नाम कन्तितदेश का राजा बड़ा प्रतापी होकर काशीपुरी में रहता था जब उसे यह इच्छाहुई कि मैं अपने को बासुदेवनाम चतुर्भुजी रूप बनाकर संसारी जीवों से अपनी पूजा कराऊं तब उसने दो भुजा काठकी अपने अंगमें लगालिया और पीताम्बर व बैजयन्ती माला व कुण्डल व बनमाला श्यामसुन्दर के समान पहिरने लगा व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म उनके शस्त्रबांधकर काठका गरुड़ चढ़नेकेवास्ते बनवाया व जो राजा व प्रजा पुंडरीक का डरमानकर उसे बासुदेवकेसमान पूजतेथे उनपर वह प्रसन्नहोताथा व जो लोग अपनाधर्म बिचारकर उसकी पूजा नहींकरते थे उनको दुःखदेताथा यहदशा उसकी देखकर संसारीलोग आपसमें यहचर्चाकरतेथे देखो एकबासुदेव तो श्रीकृष्णनाम यदुकुलमें अवतारलेकर बीचद्वारकापुरीके बिराजते हैं दूसरे यहराजा अपने को बासुदेव रूपबनाकर पुजवाने चाहता है इनदोनों में हमलोग किसे सच्चासमझैं किसेझूंठा जब राजापुण्डरीकको अपनी पूजाकरानेसे अभिमान उत्पन्नहुआ तब एकदिन अपनीसभा में बैठकरबोला श्रीकृष्णनाम कौन द्वारकामेंरहताहै जिसे लोग बासुदेव कहते हैं देखो मैं पृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अवतारलेकर लीलाकरताहूं और बासुदेव यादवका बेटा मेराविषबनाकर संसारीजीवोंसे अपनी पूजाकराताहै इसलिये उसके साथ लड़नाचाहिये ऐसाकहकर राजापुण्डरीकने एकब्राह्मण को बुलाकरकहा तुमद्वारकामेंजाकर श्रीकृष्णजी से कहदो कि मेरावेष छोड़कर हमारी आज्ञापालनकरैं नहीं तो हमारेसाथ आनकरलड़ैं जब यह संदेशालेकर वह ब्राह्मण द्वारकामें पहुँचा व राजाउग्रसेनकेसामने खड़ाहुआ तब द्वारकानाथने उसब्राह्मणको दण्डवत्करके पूंछा कहो द्विजराज कहांसेआये अपने समाचार बतलाओ यहबचनसुनतेही उसब्राह्मण ने हाथजोड़करकहा हे महाप्रभु मैं राजापुण्डरीकका कुछ सन्देशाकहनेवास्ते काशीसे आयाहूं परन्तु कहतहुये लज्जामालूम होती है व दूतको संदेशा छिपाना न चाहिये इसलिये अपनेप्राणकी रक्षापाऊं तो कहूं श्यामसुंदरबोले तुम निस्संदेहकहो इसमेंतुम्हारा कुछअपराध नहीं है यहबचन सुनकर ब्राह्मणदेवताने कहा हे दीनानाथ राजापुंडरीकने आपको यह संदेशा कहलाभेजा है

कि त्रिभुवनपति जगत्का उत्पत्तिकरनेवाला मैं होकर आठपटरानी से भोग व विलास करताहूं और पृथ्वीका भारउतारनेवास्ते मैंने अवतार लियाहै शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म मेरेपास रहकर गरुड़जीपर मैं चढ़ताहूं तुम मेरावेष बनायेरहकर अपनेको बासुदेवनाम क्योंप्रकट करतेहौ और तुम त्रिभुवनपतिहोते तो राजा जरासन्धकेडरसे भाग कर द्वारकामें क्योंरहते अब तुमको उचितहै कि शङ्ख व चक्र व गदा व पद्मादिक शस्त्र बांधना व बासुदेवनाम अपना प्रकटकरना छोड़कर मेरीआज्ञामें रहो नहीं तो यदुबंशियोंसमेत तुम्हें मारकर पृथ्वीकाभार उतारूंगा तब तुमजानोगे कि सच्चाबासुदेव कौनहोकर झूंठावेष किसने बनायाहै तुम आजतक नहीं जानते कि अलख अगोचर निरंजनकारूप त्रिलोकीनाथमैंहूं सबऋषि व मुनि मेरेनामपर यज्ञ व दान जप वतप करके बड़ाई पाते हैं व मैं ब्रह्मारूपहोकर उत्पत्ति व विष्णुरूपसे पालन व महादेवरूप होकर जगत्का नाशकरताहूं व हमने मच्छरूपहोकर वेदको समुद्रसे बाहरनिकाला व कच्छपरूपसे मन्दराचलपर्व्वत अपनी पीठपरउठाया व बाराहरूपधरकर पृथ्वी को पाताल से निकाललाये व नरसिंहअवतारलेकर हिरण्यकशिपु दैत्यकोमारा व बामन रूपधरकर राजाबलिसे पृथ्वीदानलिया व रामअवतार लेकर रावणका बधकिया मेरा यहीकामहै जब जब दैत्य व अधर्मीराजा हरिभक्तों को दुःखदेते हैं तब तब मैं अवतारलेकर पृथ्वीका भारउतारताहूं इसीवास्ते अब भी अवतारलियाहै कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द बड़ेहर्षसे उसका संदेशासुनतेथे पर दूसरे यादवबंशी यह मिथ्यावचनसुनकर उस ब्राह्मणको हँसनेलगे व एक यादवबंशी क्रोधितहोकर बोला हे ब्राह्मणदेवता तुम क्या मिथ्या कहतेहो कोई दूसरा यह झूंठीबात आनकर कहता तो बिनामारे न छोड़ते यहसुनकर श्रीकृष्णजीने यादवबंशियोंसेकहा सुनोभाई दूतपर क्रोधकरना न चाहिये॥

दो० राजसभा में बैठकर कबहूं हँसिये नाहिं।
या समान अवगुणनहीं लिख्यो पुराणन माहिं॥

यदुबंशियोंसे ऐसाकहकर श्यामसुन्दर उसब्राह्मण से बोले हे द्विजराज तुम अपने राजासे जाकर कहदेव कि हमतुम्हारा संदेशा सुनकर अतिप्रसन्नहुये वह अपने यहां युद्धकी तैयारीकरैं मैं आनकर अपना वेष छोड़दूंगा या उससे बासुदेववेष छुड़ाकर उसकामांस कौवे व कुत्तोंको खिलाऊंगा यहबचनसुनतेही ब्राह्मणने काशीमें आनकर सबहाल राजापुण्डरीकसे कहा जब कुछ दिनबीते श्यामसुन्दर ने यदुबंशियों समेत काशीपुरी के निकटपहुँचकर पाञ्चजन्य शङ्खअपना बजाया तब राजापुण्डरीक वहशब्द सुनतेही दो अक्षौहिणीदल संगलेकर दैत्य संहारण के सामनेआया जब पारसंग्रह भौमासुर के भाई व मित्र काशीनरेशने जो प्रयागमें राजाथा यहहालसुना तब वह भी तीन अक्षौहिणी सेनासाथ लेकर उसकी सहायता करनेवास्ते काशीजी में आनपहुँचा

जिससमय दोनोंदल में मारूबाजा बजकर तीर व तलवार आदिक अनेकतरह का शस्त्रचलनेलगा उससमय शूरबीर मारमार कहकर अपनाप्राणदेते व कायरलोग पीछे को भागकर गिरपड़ते थे जबरणभूमिमें राजापुण्डरीकने चतुर्भुजी रूपबनायेहुये श्यामसुन्दरकेसामने आनकर उन्हें ललकारा तब बैकुण्ठनाथ ने हँसतेहुये उसकामुकुट उतारकरकहा अबसच्चबतलावो किसका पाखण्डीरूपहै हे राजन् जो संदेशा हमको तुमने कहला भेजाथा वह यादहोगा उसीप्रमाण हम तुम्हारेपासआये हैं अब भी मेरा भेष अपनेअंगसे उतारकर तुम यहबातकहो कि हमसे अपराधहुआ जो ऐसा संदेशा भेजा तो प्राणतुम्हारा छुड़ादेवैंगे नहीं तो तुम्हारा शिरकाटलूंगा जब उसअज्ञानराजा ने श्यामसुन्दरका कहना नहींमाना तब दैत्यसंहारणने सुदर्शनचक्रसे कहा तुम अभी जाकर अपनीज्वाला से सब हाथी व घोड़े व रथ व सवार व पैदल आदिक जो दोनों राजोंकी सेनामें हैं जलादेव यह आज्ञापातेही सुदर्शनचक्र ने दोनोंराजों की सेनामें जाकर इसतरह अपनी अग्निसे सबमनुष्य व हाथी आदिकको जलादिया जिसतरह प्रलयकालकी अग्नि सबजगह को भस्मकरडालती है जब केवल पुण्डरीक व भौमासुरका भाई दोनों राजारहिगये तब यदुबंशियों ने कहा हे द्वारकानाथ पुण्डरीक को इसरूपसे हमलोग नहीं मारसक्ते यह बचन सुनकर मुरलीमनोहर बोले तुम लोग धीर्य रक्खो यह अभी अपने दण्डको पहुँचता है जब ऐसा कहकर दैत्यसंहारण ने सुदर्शनचक्रको उनदोनों राजोंके शिर काटने वास्ते आज्ञादी तब सुदर्शनचक्रनेजाकर पहिले दोनोंभुजा काठकी जो पुण्डरीक लगायेथा उखाड़ डालीं यह दशा देखतेही जैसे पुण्डरीक अपना प्राण लेकर भागा वैसे सुदर्शनचक्रने दोनों राजोंका शिर काट लिया सो मुरलीमनोहरकी इच्छानुसार शिर काशीनरेशका नगरके द्वारपर आन गिरा व चैतन्यआत्माने मुक्तिपदवी पाई ॥

दो० बैरकियो हरिनाथ सों रहो सदा चितलाय ।
दीनी तेहि सायुज्यगति दयासिन्धु यदुराय ॥

जब नगरबासियों ने शिर राजापुण्डरीक का पहिंचानकर राजमन्दिर में यह हाल कहा तब रानियां अति बिलापसे रोकर कहनेलगीं तुम तो अपने को अजर अमर कहते थे सो क्षणभरमें किसतरह तुम्हारा प्राण निकलगया जब सब रानियां उसी शिरके साथ सतीहोगईं तब सुदक्षिण बेटा पुण्डरीकका क्रोधित होकर बोला जिसने मेरे पिताको बधकियाहै उसे बिनामारे नहीं छोड़ूंगा इसीइच्छासे राजकुमार महादेवजी का तप करनेलगा और श्यामसुन्दर विजयकरके यदुबंशियोंसमेत आनन्दपूर्वक द्वारका चलेआये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित जब कुछ दिनोंतक सुदक्षिण ने प्रेमपूर्बक तप व ध्यान शिवशङ्करका किया तब भोलानाथ उसे दर्शन देकर बोले

तू क्या चाहताहै राजकुमारने शिवजीको दण्डवत्करके बिनयकिया हे दीनानाथ मैं अपने पिता के मारनेवाले से बदला लिया चाहताहूं यह सुनकर महादेवजी बोले पुण्डरीकका पलटा लिया चाहताहै तो वेदकेमन्त्र उलटे पढ़कर दक्षिणाग्निमें होमकर उस अग्निकुण्डसे एक राक्षसी निकलकर तेरी आज्ञा पालन करेगी पर जो लोग परमेश्वर व ब्राह्मण की भक्ति नहीं रखते उनपर तेराबल चलेगा व हरिभक्त व महात्मा से बिरोध करने में तेराप्राण जातारहैगा जब ऐसा कहकर शिवजी अन्तर्द्धान होगये तब सुदक्षिण यज्ञकरानेलगा जब यज्ञ उसका उनकी आज्ञानुसार पूर्णहुआ तब कृत्यानाम राक्षसी काले २ व बड़े २ दांतवाली त्रिशूल हाथमें लिये डरावनी सूरति बनाये ओठ चाटतीहुई अग्निकुण्डसे निकलकर बोली हे सुदक्षिण तेरा शत्रु कहां है बताव यहसुनकर राजकुमारनेकहा मेरा बैरी बासुदेवनाम द्वारकापुरीमें है तू अभी जाकर उसे मारडाल यह बचन सुनतेही कृत्या उसीसमय चलकर राहमें नगर व बन जलातीहुई द्वारका पहुँची जब वह अपने तेजसे द्वारकापुरी को जलानेलगी तब द्वारकाबासियों ने घबड़ाकर बसुदेवनन्दन के पास जो चौपड़ खेलरहे थे जाकर बिनयकिया हे दैत्यसंहारण एक राक्षसी न मालूम कहां से आनकर नगरको जलाती है इसके हाथसे हमारा प्राण बचाइये यह सुनकर द्वारकानाथ बोले तुमलोग मत घबड़ाव अभी इसराक्षसी को जो काशी से आई है निकाले देताहूं इसतरह उन्हें धीर्य्य देकर श्यामसुन्दर ने सुदर्शन चक्रसे कहा तुम कृत्याको मारकर यहां से भगादेव और काशिपुरी को जलाकर चले आवो यह बचन सुनतेही जब सुदर्शनने कोटिसूर्य्यके समान तेज बढ़ाकर उसराक्षसी को खेदा तब कृत्या वहांसे भागी व उसने काशी में आनकर सुदक्षिण व सबब्राह्मणों समेत जो यज्ञकराते थे मारडाला व सुदर्शनचक्रनेभी पहुँचकर अपने तेजसे काशिपुरी को जलादिया जब उससमय सब प्रजा दुःखी होकर सुदक्षिणको गालियां देने लगी व सुदर्शनचक्र अपनी ज्वाला मणिकर्णिकाकुण्डमें ठंढीकरके द्वारकापुरीको चलेआये व सबहाल वहांका बैकुण्ठनाथसे कहदिया ॥

दो० यह प्रसंग चितलायकै कहै सुनै जो कोय।
रहै सदा सुखचैनसों लहै नहीं दुख सोय ॥

सरसठवां अध्याय ॥

बलरामजीका द्विविदबांदर को मारना ॥

परीक्षितने इतनी कथा सुनकर बिनयकिया हे मुनिनाथ कुछ लीला बलरामजी की और बर्णन कीजिये शुकदेवजी बोले हे राजन् जिसतरह बलदाऊजी ने द्विविद बांदरको माराथा वह कथा कहते हैं सुनो द्विविदनाम बांदर सुग्रीवका मित्र किष्किन्धा

पुरमें रहकर दशहजार हाथी का बल रखताथा जब उसने भौमासुर अपने मित्रके मारेजाने का समाचार पाया तब वह उसका बदला लेनेवास्ते बड़े क्रोधसे द्वारकापुरी को चला जो नगर व गांव राहमें उसे मिलते थे उन्हें उजाड़ता व स्त्रियों से बरजोरी भोग करता व पहाड़ व वृक्षोंको उखाड़कर बस्ती आदिकपर फेंकताहुआ चलाजाता था कभी अपने मन्त्र व मायासे आग व पानी व पत्थर बरसाकर अनेक तरहका दुःख देता व कभी छोटे २ लड़कोंको कन्दरामें छिपाकर भारी पत्थर उसके मुखपर रखआता व कभी वृक्षों को उखाड़कर उससे संसारी जीवों को वधकरता कभी लोगों को उठा लेजाकर समुद्रमें डालदेता व जहां ऋषि व हरिभक्तोंको बैठादेखता वहां मल व मूत्र लोहू व पीव बरसाकर उन्हें सतातात्था ॥

चौ० कबहूँ नारिनको लै आवै । आन पुरुषके संग सुलावै ॥
कबहूँ लै पत्थर अतिभारी । धरै ल्यायकर द्वार मँझारी ॥

दो० कबहूँ पैठि समुद्र में जलडारै झकझोर ।
बूड़ि जात तिहि नीरसों बहुत लोग चहुँओर ॥

जब वह इसीतरह लोगोंको दुःख देताहुआ द्वारकामें पहुँचा व छोटारूप बनाकर श्यामसुन्दरके महलपर जाबैठा तब उसके डरसे सब रानियां मुरलीमनोहरकी अपना २ द्वार बन्दकरके भीतर छिपगईं उन दिनों बलरामजी रैवतपर्व्वत पर गन्धर्व्व व गन्धर्बिनियों के साथ क्रीड़ा व बिहार करनेगये थे द्विविद बांदरने यह हाल सुनकर बिचार किया कि पहिले हलधरको मारकर पीछे से श्रीकृष्णका प्राणलूंगा ऐसा बिचारतेही उसने रैवतपहाड़पर जाकर क्या देखा कि बलदाऊजी गन्धर्बिनियों के साथ मदिरा पीकर एक तालाबमें जलविहार व गानविद्याकररहे हैं सो द्विविद बांदर छोटारूप बनाकर एक वृक्षपर जो तालावके किनारे था चढ़गया व किलकारियां मारकर एकडाली से दूसरी डालीपर कूदनेलगा व मल व मूत्रसे गन्धर्बिनियोंके बस्त्र जो तालाबकिनारे रक्खे थे नष्ट करदिये ॥

दो० कबहूँ शाखा तोड़के डारत चारों ओर ।
कबहुँ भूमिपर उतरके करै शब्द अति घोर ॥

जब उसबांदर ने पत्थरमारकर मदिराकाघड़ा जो रक्खाथा तोड़डाला तब स्त्रियों ने पुकारकर बलरामजीसे सबहाल उसकाकहा यहबचनसुनतेही रेवतीरमणने तालाब में से निकलकर एकढेला उसबांदरपर चलाया तब उसने वृक्षके नीचे आनकर सब चीर स्त्रियोंके फारडाले व जिधर तिधर फेंकदिये यहहाल देखतेही बलदाऊजीने दौड़कर उसबांदरको हाथ से पकड़लिया तबवह अपनाछोटारूप बनाकर हाथसे बाहर

निकलगया व फिर पहाड़केसमान रूपधरकर बलदाऊजीसे लड़नेवास्ते सन्मुखआया व बड़े २ वृक्ष व पब्बत पृथ्वी से उखाड़कर उनको मारनेलगा जब रेवतीरमण बड़े क्रोधसे हलमुसल अपना उठाकर मारनेदौड़े तब द्विविदने एकवृक्ष बहुतबड़ा जड़से उखाड़कर संकर्षणपर चलाया सो बलदाऊजी ने बचाकर एकमुसल बांदरके शिरपर मारा उसका शिर फटकर इसतरह लोहू बहनेलगा जिसतरह बरसातमें गेरूके पहाड़ से लालपानी बहताहै पर उसबांदरने शिरफटनेपर भी दूसरावृक्ष उखाड़कर बलदाऊ जीकोमारा तो रेवतीरमण ने अपना मुसलमारकर वहवृक्ष तोड़डाला जब इसी तरह लड़ते २ कोईवृक्ष या पत्थर वहांनहींरहा तब दोनोंआदमी इसतरह बेधड़कहोकर आपसमें कुश्ती व मुक्कासे लड़ने लगे कि देखनेवाले डरगये जब बहुत देरतक द्विविद बांदरने बलरामजीसे युद्धकरके दोचारमुक्का उन्हेंमारा तब बलरामजीने सबस्त्रियोंको उदास व घबड़ाईहुई देखकरके द्विविदके गलेका हँसवा ऐसादबादिया कि उसकेनाक व आंख व कानसे लोहूबहकर वह मरगया जब उसकी लोथ गिरनेसे पृथ्वी कांपने लगी तब देवतोंने बलरामजीके ऊपर पुष्पवर्षाये व उनकी स्तुति व बड़ाई करतेहुए अपने २ लोक को चलेगये ॥

दो० आनँद सों श्रीद्वारका हलधर पहुँचे आय।
पुरबासी प्रफुलित भये ज्यों निर्धन धन पाय ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित द्विविदबांदर त्रेतायुगसे किष्किन्धा में रहता था सो रेवतीरमण ने मारकर उसका उद्धार किया ॥

अरसठवां अध्याय ॥

साम्ब का लक्ष्मणासे बिवाह होना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह बेटासाम्ब श्रीकृष्णजी का लक्ष्मणा नाम कन्या राजादुर्योधनकी हस्तिनापुरसे बिवाहलाया था वह कथा कहते हैं सुनो लक्ष्मणा नाम कन्या राजादुर्योधनकी बिबाहने योग्यहुई तब दुर्योधन ने स्वयम्बर उसका रचकर अनेकराजोंको अपनेयहां इकट्ठाकिया जब साम्बबेटा मुरलीमनोहरका भी यह हाल सुनकर हस्तिनापुर में गया तो वहां क्यादेखा कि अनेकराजा उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिने व शस्त्रलिये राजादुर्योधनकी सभामें बैठेहैं व अनेकप्रकारका मंगलाचार वहां होरहाहै उसीसमय राजकन्या अतिसुन्दरी व चन्द्रमुखी रत्नजटित भूषण व बस्त्र पहिने जयमाल हाथमेंलिये सबराजोंको देखतीहुई हंसरूपीचालसे साम्बकेनिकट पहुँची तब उसकारूप देखतेही साम्बने मोहितहोकर बिचार किया कि ईश्वरजाने यहकन्या किसकेगलेमें जयमाल डालदे तो फिर इसका हाथआना कठिनहोगा इसलिये बरजोरी

इसको रथपर बैठाकर द्वारका लेचलनाचाहिये ऐसाबिचारतेही साम्बने लज्जा व भय छोड़कर लक्ष्मणाका हाथपकड़लिया व तुरन्तउसे रथपरबैठाकर द्वारकाकोचले यहहाल देखकर सबराजा जो स्वयम्बरमें आये थे लज्जितहोगये व दुर्योधन धृतराष्ट्र आदिक कौरव लज्जितहोकर बड़ेक्रोधसे आपसमें कहनेलगे देखो साम्बने हमलोगोंका कुछभय न मानकर एसाअंधेरकिया कि राजकन्याको स्वयम्बरमेंसे बरजोरी लेगया कदाचित् इन तिलकधारी राजों में से कोई ऐसाकरता तो कुछसंदेहनहीं था यादवलोग सदासे अपनीकन्या हमारेघराने में देतेआये हैं यह बड़ीलज्जाकी बातहै कि उनका बेटा जो माल्लूकानाती है हमलोगोंके सामने से राजदुलारीको उठालेजावे यह अपयश हमारा कभी न छूटेगा और हमारीजानमें श्रीकृष्णजी अपनेपुत्रका अपराध समझकर उसकी सहायता नहीं करैंगे कदाचित् अधर्म की राह लड़नेभी आवैं तो इसतरह हारजावैंगे जिसतरह कामीपुरुष रोग उत्पन्नहोने से तुरन्त मरजाते हैं जब हमलोग श्यामसुन्दर को लड़तेसमय पकड़लेवैंगे तब दूसरे यादववंशी हमारा क्याकरसक्ते हैं यहबात सुनकर कर्ण बोला यदुवंशियों का सदा से यह चलन है कि दूसरी जगह शुभकार्य में जाकर विघ्न करते हैं ॥

चौ० जाति हीन अबहीं यह बढ़े । राज पाय माथे पर चढ़े ॥

जब धृतराष्ट्रने यहबात सुनकर बड़ेक्रोधसे दुर्योधनको साम्ब के पकड़लानेवास्ते कहा तब वह कर्ण व बिकर्ण व शल्य व भूरिश्रवा व यज्ञकेतु महाशूरबीर व सेनाको साथ लेकर चढ़दौड़े व आपसमेंकहा देखो वह कैसाबली है जो हमें जीतकर राजकन्याको लेजायगा जब दुर्योधनआदिक ने अपना २ रथ दौड़ाकर साम्बको चारोंओरसे घेर-लिया तब साम्ब अपनारथ खड़ाकरके धनुषबाणलेकर दुर्योधन व कर्णसेबोला तुमलोग मेरेमाताके कुलपर जातिहीन मतसमझो मैं श्रीकृष्णजी बैकुण्ठनाथ के वीर्यसे उत्पन्न हुआहूं इसलिये युद्धमें तुमसे नहींहारूंगा चाहो तुमलोग अकेली अकेला मुझसे लड़ाई करलेव चाहो सबकोई मिलकर लड़ो ॥

दो० यद्यपि तुम्हरो तेजबल प्रकट भयो जग माहिं ।
तद्यपि हमको या समय पकड़सकोगे नाहिं ॥

यहबचन सुनतेही कर्णने साम्बकेसन्मुख जाकरकहा मैं जानताहूं कि तू जल्दी हम से नहींहारेगा पर हमलोगों से जीतकर तुझे द्वारकाजाना कठिनहै चैतन्यरह हमतुझ बाणमारते हैं जब ऐसाकहकर कर्ण साम्बपर बाणचलाने लगा तब साम्ब ने उसका वार बचाकर अपनेबाणों से चारोंघोड़ा व सारथी कर्ण के रथके मारडाले व दश २ बाण दुर्योधनादिक सेनापतियोंको मारे सो वहलोग अपनीबिद्यासे उसकेबाण बचाकर

साम्बकी बड़ाईकरनेलगे जब दुर्योधनादिकने देखा कि साम्ब अकेलीअकेला हमलोगों से नहींमाराजायगा तब छओंशूरबीर एकसाथ साम्बपर अपने अपने शस्त्र चलानेलगे उससमय साम्बने मुरलीमनोहरके चरणों का ध्यानधरकर ऐसे बाणचलाये कि छओं महारथियों को घबड़ादिया व उनके रथकाघोड़ा सारथी समेत मारडाला जब दुर्योधनादिकने यहदशा अपनी देखी तब छओं महारथियों ने एकीबर अधर्मकी राह तीर मारकर एक ने चारों घोड़ा व दूसरे ने सारथी साम्बका मारडाला व तीसरे ने धनुष काटकर चौथे ने ध्वजा रथपरसे गिरादी जब सारथी व घोड़ों के मारेजाने से साम्ब रथपरसे कूदकर पैदल लड़नेलगा तब कर्ण ने पहुँचकर साम्बको पकड़लिया व अपने रथपर बैठाकर हस्तिनापुरको लेआया व दुर्योधनने साम्बको अपनी सभामें खड़ाकरके कहा हे यादव तेरा वह पराक्रम क्या हुआ जिसघमण्डसे तू राजकन्याको बरजोरी उठा लेगयाथा जब यह सुनकर साम्ब लज्जासे चुपहोरहा तब भीष्मपितामह ने दुर्य्योधनसे कहा इसका ब्याह लक्ष्मणासेकरके बिदा करदेना चाहिये जब दुर्योधन ने भीष्मपितामहका कहना न मानकर साम्बको कैदकिया तब नारदजीने हस्तिनापुर में आनकर दुर्य्योधन व कर्णआदिक से कहा साम्ब द्वारकानाथ के पुत्रसे तो चूकहुई थी पर तुमलोगोंको उसे कैद करना उचित नहींथा इसका समाचार सुनकर बलरामजी यहां आवैंगे तब तुमलोग अपना अपना बल उनके सामने प्रकट करना जो कुछ होनाथा सो हुआ पर साम्बको किसीबातका दुःख मतदेना जब नारदमुनि के कहने परभी दुर्योधनने साम्बको नहीं छोड़ा तब नारदजी द्वारकामें गये और साम्बकी दशा कहकर राजाउग्रसेन से बोले दुर्योधनादिक कौरव साम्बको अपने यहां कैदकर बड़ा दुःख देते हैं जल्दीजाकर उनकी सुधिलेव नहीं तो साम्बका प्राणबचना कठिनहै ॥

चौ० गर्व भयो कौरव को भारी । लाजसँकोच न करी तुम्हारी ॥
बालकको उन बांध्यो ऐसे । शत्रुनको बांधै कोउ जैसे ॥

यहबात सुनतेही राजाउग्रसेन ने श्यामसुन्दर व यदुबंशियों को बुलाकरकहा तुम लोग अभी मेरीसेना साथलेकर हस्तिनापुर में चढ़जाव व कौरवोंकोमारकर साम्बको छुड़ालाओ जब उग्रसेन की आज्ञानुसार दैत्यसंहारण सेनासमेत हस्तिनापुरजानेको तैयारहुये तब बलरामजीने जो दुर्योधनकेसाथ मित्रतारखते थे मुरलीमनोहरसे बिनय की हे महाप्रभु कौरव हमारे पुराने सम्बन्धी हैं थोड़ीबातके वास्ते सेनालेजाकर उनसे बिरोधकरना न चाहिये मुझेआज्ञादीजिये तो वहांजाकर सहजमें साम्बको छुड़ालाऊं कदाचित् वहलोग मेरे समझाने से न मानैंगे तो मैं अकेला उनको दण्डदेने योग्य बहुतहूं जब श्रीकृष्णजीने यहबात मानकर उन्हें जानेकी आज्ञादी तब बलभद्रजी व उद्धव व अक्रूरादिक कई यदुबंशी व ब्राह्मण व ज्ञानियोंको अपनेसाथलेकर द्वारकासे

चले व कुछदिनबीते हस्तिनापुरके निकटपहुँचकर एकबागमें डेराकिया व अपने आने का समाचार अक्रूरसे दुर्योधनादिकको कहलाभेजा जब अक्रूर ने राजाधृतराष्ट्र की सभामेंजाकर वलभद्रजीके आनेकाहालकहा तब दुर्योधन जो बलरामजीका चेलाथा बड़ेहर्षसे भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य व धृतराष्ट्र व युधिष्ठिरआदिकको साथलेकर उन्हें अपने मन्दिरपर लानेवास्ते बागमेंगया व रेवतीरमण के चरणोंपर गिरकर बिनयकी हे महाप्रभु जिसतरह आपने दयालुहोकर दर्शनदिया उसीतरह आनेकाकारण कहि-कर अपनेचरणों से मेराघर पवित्रकीजिये यहसुनकर बलदाऊजीबोले मैं राजाउग्रसेन का संदेशा कहनेवास्ते यहांआयाहूं सुनो जब समाचार कैदकरने साम्बका द्वारकापुरी में पहुँचा तब महाराज उग्रसेनकी आज्ञासे कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द ने सेनासमेत तु-म्हारेऊपर चढ़ाईकी तैयारीकी तब मैंने यहहालसुनकर मुरलीमनोहरसे कहा महाराज कौरवलोग हमारे सम्बन्धी हैं इसलिये उनसे अभी लड़नेवास्ते जाना उचितनहीं है मैं अकेलाजाकर साम्बको छुड़ालाताहूं सो हे दुर्योधन व धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह राजा उग्रसेन ने तुमलोगोंको यह संदेशा भेजाहै कि जिसबालकको छः महारथियोंने मिल कर अधर्म्मकीराह पकड़लिया जब उस अकेलेकुँवरने छहों आदमियोंको युद्ध में घ-बड़ादिया तब तुमने यह नहींसमझा कि उसके सब घरवाले पहुँचकर हमारी क्या गतिकरैंगे हे धृतराष्ट्र यद्यपि उसबालकअज्ञानसे अपराधहुआ कि राजकन्याको स्व-यम्बरमेंसे उठालेगया पर तुमलोगों को सम्बन्धी होकर उसे कैदकरना उचित नहीं था लड़कियोंको अपनी नातेदारीमें देनाचाहिये इससे क्या उत्तमहै जो पुराने सम्ब-न्धियों को दीजावैं अब भी उचितहै कि साम्बको कैदसे छोड़कर लक्ष्मणाका विवाह उसकेसाथ करदेव ॥

दो० यद्यपि उस अज्ञानने कीन्हों काज असाधि ।
तद्यपि तुम पुरुषाहुते करते नहीं उपाधि ॥

यह बचन बलरामजीका सुनतेही दुर्योधन सब कौरवोंके सम्मतसे क्रोधितहोकर बोला हे बलरामजी आपचुपरहिये अब अधिकबड़ाई उग्रसेनकी न कीजिये हमलोगों से यह नहीं सुनाजाता अभी चारदिनकी बातहै कि उग्रसेनको संसारमें कोई नहीं जानता था जबसे उसने हमारेसाथ नातेदारीकी तबसे उसकी पदवीबढ़ी देखो उग्र-सेनने हमारेआधीनहोने पर भी अभिमान से इसतरह हमको संदेशा कहलाभेजा है जिसतरह कोईराजा अपनेप्रजापर आज्ञाकरै बड़ा आश्चर्य है जो पांवकीजूती शिरपर चढ़नेलगीं यादवबंशियोंको हमनें चँवर व छत्रदेकर राजाबनायाथा सो उनको ऐसी बात कहतेहुये लज्जा नहींआती द्वारकापुरीका राज्यपाकर पिछलीबात अपनीभूलगये जो मथुरामें ग्वाल व अहीरोंकेसाथ रहते थे जब हमने उनको अपनेसाथ खिलाकर

राजगद्दीदिलवाई तब उनकी गिनती राजोंमेंहुई जैसीभलाई हमने उनसेकी वैसाफल पाया किसी दूसरेकेसाथ ऐसा करते तो जन्मभर हमारा यशमानता बड़ेलाजकीबात है कि यादवलोग सदासे हमारेआधीन रहकर अब हमारी बेटी ब्याहने चाहते हैं ॥

दो० तिनको यह पदवी भई हमसों करत बिवाह ।
कालिहपरों मांगतहते आज भये हैं साह ॥

आकाशसे पानीकीजगह पत्थर बरसने नहींसक्ता यह सब हमारी नातेदारीकरने का कारण है जो दूसरे राजालोग हमारेनामपर उनकाआदर करते हैं नहीं तो उन्हें कौन पूंछताथा निर्लज्जता व ढिठाई साम्बकी देखो जिसने स्वयम्बरमेंसे मेरीकन्या लेजाने की इच्छाकी हमें उचितथा कि साम्बको मारडालते जिसमें फिर कोई ऐसा न करता नातेदारी होने से ऐसा नहीं किया इसी वास्ते बलदाऊजी उसकी सिफारिश लेकर हमारे यहां आये हैं आज राजा इन्द्रभी ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो मेरे व भीष्मपितामह व द्रोणाचार्य्य के सन्मुख आनकर लड़ने सके जब कालयवन व जरासन्ध के घेरलेने से मथुरा छोड़कर भागगये थे तब यह सब घमण्ड व बल उनका कहां गयाथा जो आज हमारे ऊपर आज्ञा चलाते हैं यह सब दोष भीष्म-पितामह व धृतराष्ट्र हमारे पुरुषोंका है जिन्होंने यादवबंशियों का सन्मानकरके उन्हें इतना ढीठकिया नहीं तो ऐसा क्यों कहला भेजते दुर्योधन यह कठोरबचन उग्रसेन आदिकको कहकर सभामें से उठगया ॥

दो० तब जान्यो बलरामजी निश्चय करि मनमाहिं ।
सूधी बातन कुटिल जन कबहूँ समझत नाहिं ॥

ऐसा बिचारतेही बलदाऊजी हँसकर उद्धव आदिक अपने साथियों से बोले देखो कौरवों को अपने राज्यका इतना अभिमान हुआ जो हमलोगों को चरणकी जूती जानकर अपने को शिर समझते हैं जब श्यामसुन्दर बैकुण्ठनाथ ब्रह्मा व महादेव आदिक देवतों के मालिक होकर राजा उग्रसेनको दण्डवत् करते हैं तब उनको महा-राज होने में क्या सन्देह है आज मुरलीमनोहरकी दयासे इन्द्रादिक देवतों की यह सामर्थ्य नहीं है जो राजाउग्रसेनको दुर्बचन कहनेसकें सो उन्हींको दुर्य्योधनने हमारे सामने ऐसी बातकही तो मेरानाम बलदाऊजी कि अभी नगरसमेत इन लोगों को यमुनाजलमें डुबाकर नाश करडालूं नहीं तो आजसे अपनानाम बलराम न रक्खूं यह बात अपने साथियों से कहकर रेवतीरमण ने क्रोधमें भरहुये भीष्मपितामह व धृतराष्ट्रसे कहा दुर्योधन अज्ञानको यहां बुलावो तो अपनी बातोंका उत्तर हमसे सुनै मैंने जाना कि अब प्रीति नातेदारीकी छूटकर युद्धकरना पड़ैगा जब भीष्मपितामह

के बुला भेजने से दुर्योधन फिर सभामें आनकर बैठा तब रेवतीरमण ने कहा हे दुर्योधन ज्ञानी व अज्ञानमनुष्य इसतरह पहिचानाजाता है कि ज्ञानीलोग सबबातका आगम बिचारकर वहकाम करते हैं जिसमें लज्जितहोना न पड़े व मूर्ख मनुष्य बिन समझे काम करने से पीछे अपने दण्डको पहुँचते हैं ॥

दो० ज्ञानी जो कारज करै समझ लेत मनमाहिं ।
कारज बिनसमझे करै ताहि ज्ञान कछु नाहिं ॥

जिसतरह नया घोड़ा जबतक सवारके हाथका कोड़ा नहीं खाता तबतक सीधा नहीं चलता सो तुमने अभिमानभरी बातैं कहकर यह बिचार नहीं किया कि कैसा बचन कहताहूं यह सब बात तुमको कहना उचित नहीं था किसवास्ते कि मैंने प्रेम व प्रीति भरीहुई बातैं तुमसे कहीथीं उनका उत्तर तुमने ऐसादिया जैसा कोई सेवक को भी नहीं कहता मैं चाहताथा कि हमारे तुम्हारे में युद्ध न हो सो तुमने दुर्ब्बचन कहकर हमको क्रोधदिलाया व भलमन्सीका कहना मेरा तुमको अच्छा नहीं मालूम हुआ इस लिये तुम अपने कर्त्तब का दण्डपाकर लज्जित होगे तुमने नहीं समझा कि अपनी स्तुति व दूसरे की निन्दा करना अच्छा नहीं होता तुझे अपनी कन्या श्रीकृष्णजी के बेटे को देनेसे लज्जा मालूम होती है तू उन बैकुण्ठनाथकी पदवी नहीं जानता जिनके चरणों की धूरि इन्द्रादिक देवता शिर चढ़ाने से अपनी बड़ाई समझते हैं ॥

दो० जिनका ध्यान धरैं सदा शिव बिरञ्चि चितलाय ।
चरणकमल सेवतरहैं श्रीकमला सुखपाय ॥

हे दुर्योधन भला तू बतला यह पदवी तेरे कुलमें किसको प्राप्तहै जो तैंने अभिमानभरी बातैं कहीं ऐसा कहकर बलदाऊजी ने क्रोधसे अपना हल पृथ्वी में गड़ादिया व हस्तिनापुर को पृथ्वीसमेत हलसे उठाकर जैसे यमुनाजल में डुबाने चाहा वैसे एक कोना पृथ्वीका उठाहुआ देखकर भीष्मपितामह व धृतराष्ट्र ब्राह्मण व ऋषीश्वरादिक जो उस सभामें बैठे थे उठखड़े हुये व हाथ जोड़कर बिनयपूर्ब्बक रेवतीरमण से कहा हे दीनानाथ आप ईश्वररूप व धर्म्म की वृद्धि करनेवाले होकर अपना क्रोध क्षमा कीजिये व दुर्योधन अज्ञान एक मनुष्यके दुर्ब्बचन कहने पर हस्तिनापुरको डुबा कर बिना अपराध करोड़ोंका प्राण न लीजिये आजसे हमलोग सदा राजाउग्रसेनकी आज्ञा पालन करैंगे ॥

दो० सब हममिलि बहुभांतिसों बिनतीकरी सुनाय ।
दयावन्त बलरामजी दीन्ही रिस बिसराय ॥

जब बलदाऊजी ने भीष्मपितामह आदिकके बिनयकरने से क्रोध क्षमाकरके हल अपना जो हस्तिनापुर उलटने वास्ते पृथ्वी में धँसायाथा निकाललिया तब दुर्य्योधन साम्बको बहुतअच्छा गहना व कपड़ा पहिनाकर लक्ष्मणा अपनी कन्यासमेत बलराम्जी के पास लेआया व हाथजोड़कर बोला ॥

चौ० तुमहौ अलख शेष अवतारा । धरतशीश धरणीका भारा ॥
हम असाधु अतिहैं अज्ञानी । तुम्हरी गति अगाधनहिंजानी॥
इतनोदण्ड जो हमकोदीन्हों । सो तुम बहुत अनुग्रहकीन्हों ॥
दो० अपनी शक्ति जनायके कीन्हों हमैं सनाथ ।
हम दासनके दासहैं तुम नाथनके नाथ ॥

इसीतरह दुर्य्योधनने बहुत स्तुतिकरके मंगलाचार मनाया व बिधिपूर्व्वक लक्ष्मणा का बिवाह साम्बसे करदिया व बारहहज़ार हाथी व दशहज़ार घोड़े व छःहज़ार जड़ाऊ रथ व हज़ार दासी अतिसुन्दरी भूषण व बस्त्रसंयुक्त व अनेक बस्तु दहेजमें देकर जब दुल्लह व दुलहिनको बिदा किया तब बलरामजी साम्बको लक्ष्मणासमेत अपने साथ लेकर हर्षपूर्व्वक द्वारकामें पहुँचे व सबहाल वहांका राजा उग्रसेन व श्यामसुन्दर से कहदिया कौरवों के गर्व टूटनेका हाल सुनकर सब कोई आनन्दहुये इतनी कथा सुना कर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित तुम देखो अभीतक हस्तिनापुर दक्षिण ऊंचाहोकर उत्तर नीचा दिखलाई देताहै ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

नारदमुनिको श्रीकृष्णजी के सब महलों में रहनेका संदेह करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एकदिन नारदजी ने अमरावतीपुरी में क्या देखा कि राजाइन्द्रकी दोनों स्त्रियां आपस में झगड़ा कररही हैं तब उन्होंने बिचार किया कि दो सवति होनेसे यह दशाहै श्रीकृष्णजी के सोलहहज़ार एकसौ आठ स्त्री हैं उन में किसतरह बनती होगी न मालूम गोपीनाथ उनको इकट्ठे बुलाते हैं या पारी बांध कर उनके पास जाते हैं यह हाल देखना चाहिये ऐसा बिचारकर नारदजी द्वारका में आये तो क्यादेखा कि वहां अच्छे२ बाग उत्तमउत्तम पुष्प व फललगे होकर उन में अनेकपक्षी बोलते हैं व अनगिनती तड़ाग व बावली में कमलफूले होकर उनपर भौंरोंकागूंजना बहुतशोभादेताहै व सुनहुले किलेकेचारोंओर समुद्र लहरभरकर माली लोग मीठे २ स्वरों से गातेहुये क्यारियांसींचरहे हैं व पनिघटपर झुण्डकी झुण्ड महा-सुन्दरीस्त्रियां अच्छा २ गहना व कपड़ापहिने दिखलाईदीं जब नारदमुनि यह सबशोभा

देखतेहुये नगरमें गये तो क्यादेखा कि महल व मकान रत्नजटितहोकर उनपर अनेक रंगकी कलशियां लगी हैं ॥

दो० तिनमें मन्दिर मध्य की महिमा कही न जाय ।
मानों रत्न जड़ाव में माणिक धरो बनाय ॥

और सबदुकान व सड़क उसनगरकी उत्तमहोकर घर २ कथा व हरिचर्चाहोरही है व यदुबंशीलोग अनेकजगह राजाइन्द्रकेसमान आपसमें बैठेहुये श्यामसुन्दरका यश गातेहैं व सब छोटेबड़ोंके द्वारेपर अम्बर व अरगजे जलनेकी सुगन्धउड़रही है व द्वारका-बासी अपने २ घर होम व यज्ञादिक शुभकर्म्मकरके अच्छा२ पदार्थ बड़ेप्रेमसे ब्राह्मणों को खिलाते हैं जब नारदमुनि यह आनन्द देखतेहुये रुक्मिणीजी के महलमें गये तो वहां ऐसारत्नजटित स्थानदेखा जिसकेसामने आंखनहींठहरसक्ती थी व उसमहलमें तास की ध्वजालगीहोकर छज्जोंपर कबूतरआदिक पक्षियोंकारूप ऐसाबनाहुआ था जिनके पास जंगलीपक्षी आनबैठतेथे व अरगजे व अम्बरके धुयेंको मोरलोग बादलसमझकर बड़ेहर्षसे नाचतेथे मोतियोंकी झालर द्वारपर लटकाईहोकर पारिजातक फूलकीसुगन्ध चारों ओर उड़ती थी ॥

चौ० सुन्दर बालक खेलत डोलैं । मधुर मनोहर बाणी बोलैं ॥
रूपवन्ति दासी मन हरैं । निज स्वामी की सेवा करैं ॥
दो० यह शोभा ऋषि देखिकै भूलिगये सब ज्ञान ।
दासी औ ठकुरानिन नहीं सके पहिचान ॥

सो नारदमुनिने वहां क्यादेखा कि श्यामसुन्दर उत्तमशय्यापर मुकुटजड़ाऊ पहिने जर्दपीताम्बर बांधे व उपरना रेशमी ओढ़े घूंघरवाली जुल्फैंछोड़े माथे पर केसरि का तिलकलगाये कुण्डलजड़ाऊ कानोंमेंडाले व बनमाला व बैजयन्तीमाला व मोतियोंका हारपहिने नटवररूपबनाये हुये बैठे हँसते हैं व हजारों दासी रहनेपरभी रुक्मिणी जी आप खड़ीहुई पंखाहांकती हैं जैसे द्वारकानाथने नारदमुनिको आतेहुयेदेखा वैसे उठ-कर उन्हें दण्डवत्करके जड़ाऊसिंहासनपर बैठाला व अपनेहाथ उनका चरणधोया व चरणोदकलेकर बिधिपूर्व्वक उनका पूजनकिया व हाथजोड़कर बोले हे मुनिनाथ आपने दयालुहोकर मुझे दर्शनदिया नहीं तो संसारीमनुष्योंको तुम्हारा दर्शनमिलना दुर्लभ है हम क्या सेवा तुम्हारी करैं जिसमैं हमारा कल्याणहो ॥

चौ० जा घर चरण साधु के जावैं । वे नर सुखसम्पति सब पावैं ॥

यहबचनसुनकर नारदमुनिने बिनयकिया हे आदिपुरुष भगवान् मैं तुम्हारादर्शन

करने आयाहूं बिनादया व कृपातुम्हारी संसारीमनुष्य भवसागरपार नहीं उतरनेसक्ता गंगाजी तुम्हारेचरणका धोवनहोकर सबजीवों को सुखदेती हैं मैं कंगालब्राह्मण कौन गिनती में हूं जो तुम्हारी स्तुति करनेसकूं मुझपर दयालुहोकर ऐसा बरदान दीजिये जिसमें तुम्हारास्मरण व ज्ञान मुझसे न छूटे ॥

चौ० मैं सेवक तुम सब के राजा। मोहिं प्रणामकियो किहिकाजा॥
जगमें लियोमनुजअवतारा। याते करत जगत ब्यवहारा॥
नातो तुम चरणनकी रेना। शिवबिरंचि चाहैं दिनरैना॥
मैं उनकी पदवी कहँ पावों। दासन में यक दास कहावों॥
तुम्हरो नाम जपै जन कोई। तापर कृपा तुम्हारी होई॥
यह तुम्हरे मनमें जिन आवै। नारद हमसे पांव धुवावै॥
याहीबिधि हम पुत्र तुम्हारे। कृपावन्त तुम तात हमारे॥
जा पर कृपा तुम्हारी होई। अन्धकूप सों निकसै सोई॥
दो० भक्तन के दुख हरण को धरणि उतारन भार।
लीन्ह्यो तुम अवतार है माखन प्रभु करतार॥

जब इसतरह स्तुतिकरके नारदमुनि वहांसे बिदाहोकर सत्यभामाके घरगये तो क्या देखा कि उद्धवजी वहांपर मुरलीमनोहर से चौपड़ खेलते हैं ॥

चौ० ऋषिको देखि उठे घनश्याम। वाही भांति करो परनाम॥
कह्यो धन्य हैं भाग्य हमारे। जो तुमसे ऋषिराजपधारे॥
कृपाकरो द्विजराज गुसाईं। केतिक दिवस रहे यहिठाईं॥

यहबचन सुनतेही नारदमुनि वहांसे भी श्यामसुन्दरको आशीर्बाददेकर जाम्बवती के यहां गये तब बैकुण्ठनाथको अंगमेंउबटन व फुलेल मलवातेदेखकर बिना भेंटकिये फिर आये किसवास्ते कि शास्त्रमें तेललगावतीसमय दण्डवत्करना व आशीर्बाददेना बर्जितहै फिर नारदजीने कालिन्दी के महलमेंजाकर देखा तो श्यामसुन्दरको पलँगपर सोयेहुयेपाया जब कालिन्दी ने नारदमुनिको देखतेही मुरलीमनोहर का चरणदबाकर जगादिया तब त्रिभुवनपति दण्डवत्करकेबोले हे मुनिनाथ तीर्थरूपी साधुओं के चरण आने से संसारीजीवों का घर पवित्रहोजाताहै सो आपने दयाकरके अपनेदर्शनसे मुझे कृतार्थकिया जब नारदमुनि वहां से आशीर्बाददेकर मित्रबिन्दाके महलमेंगये तो क्या देखा कि श्यामसुन्दर ब्राह्मणोंको जिवांते हैं नारदमुनि को देखतेही हाथजोड़कर बोले

हे द्विजराज आपने बड़ीदयाकी जो इससमयआये आपभी भोजनकरके अपनीजूठन मुझेदीजिये तो उसेखाकर पवित्रहोजाऊं नारदमुनिनेकहा हे महाप्रभु आप ब्राह्मणोंको भोजनकराइये मैं फिर आनकर प्रसादपाऊंगा यहबचन कहकर नारदमुनि सत्या के महलमेंगये तो क्यादेखा कि वृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारी आनन्दपूर्वक बिहारकररहे हैं यहकौतुकदेखतेही वहांसे उलटेपांव फिरकर भद्राकेमन्दिर में आये तो द्वारकानाथ को भोजनकरते पाया वहां से लक्ष्मणाके घर जाकर बैकुण्ठनाथको स्नानकरते देखा इसीतरह नारदमुनि अनेकमहलों में बैकुण्ठनाथकी परीक्षा लेनेवास्ते गये तो उन को कहीं पूजा व ध्यानकरते व किसीजगह होमपरबैठे व कहीं स्त्रियों के साथ फूल बरसाकर खेलते व किसीजगह तड़ागादिक में स्त्रियों के साथ नहाते व कहीं घोड़े रथोंपरबैठे व किसीमहलमें कथा व पुराणसुनते व कहीं गौ ब्राह्मणको दान देते व किसीजगह हाथियोंका युद्धदेखते व कहीं द्रव्यादिक गिनवाते व किसीमहलमें सन्तानके बिवाहकी चर्चाकरते व कहीं लड़का खिलाते व कहीं बलरामजी के पास बैठेहुये अधर्मियोंके मारनेका सम्मतकरते व किसीजगह बावलीव तड़ागादिक खोदने वास्ते रुपया देते व किसीजगह बसुदेव व देवकी के पास बैठेहुये भोजन करानेवास्ते आज्ञापूंछते व कहीं लड़कियोंको ससुरारसे बिदाकरते व किसीमहलमें भाटोंसे कबित्त सुनते व कहीं अहेर खेलनेवास्ते बैठे देखा ॥

चौ० कहुँनारिनको कौतुक देखैं । कहुंनारिनसों खेलतपेखैं ॥
कहुंनारिनसों करत ठिठोली । बोलतबिबिधभांतिकीबोली ॥
कहुँनारिनमें कलह करावैं । कहूंअनमनीनारि मनावैं ॥

दो० कहूं पुत्रको ब्याहके लाये बहूसमेत ।
तहांकरत उत्सवबहुत लोगनको धनदेत ॥
या बिधिजिसजिस महलमें नारदपहुँचेजाय ।
प्रियासहित देखेतहां माखनप्रभु यदुराय ॥

चौ० नारद के संशयमनमाहीं । श्यामबिनाकोऊ गृहनाहीं ॥
जिसघरजाऊं तहांबिहारी । ऐसी प्रभु लीला बिस्तारी ॥

नारदजी ने यहमहिमा श्यामसुन्दरकी देखतेही लज्जितहोकर कहा देखो त्रिभुवन पतिने मेराचरणधोकर चरणामृत लिया व मैंने अपनेअज्ञानसे उनकी परीक्षालेने की इच्छाकी सो मुझसे बड़ाअपराधहुआ जब ऐसा बिचारकर नारदमुनि भयसेकांपने लगे तब मुरलीमनोहर हँसकरबोले हे मुनिनाथ आजतुम्हारी क्यादशाहै जैसे यह

बचन नारदजी ने सुना वैसे हरिचरणोंपर गिरपड़े व हाथजोड़कर बिनय किया हे दीनानाथ मैं अज्ञानतासेतुम्हारी परीक्षालेने चाहताथा सो लज्जितहोकर उसकाफल पाया अबमुझदीनपर दयालुहोकर मेराअपराध क्षमाकीजिये ॥

चौ० मैं तुम्हरो भिक्षुक यदुनाथा। गावौं सदा नामगुणगाथा॥
तुम्हरीमाया सब जग जानी। तिहिसों मेरीमति भरमानी॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई। परमधाम पावत है सोई॥
कृपाकरो मेरो भ्रम टारो। भवसागर से पार उतारो॥

यह स्तुतिसुनकर बैकुण्ठनाथबोले हेमुनिनाथ तुम कुछ संदेह अपनेमनमें न लाकर मेरीमायाको अतिबलवान् समझा जब वहमाया सबजगत्को मोहकर मुझे भी नहीं छोड़ती तो दूसरेको क्यासामर्थ्य है जो संसार में उत्पन्नहोकर उसकेबश्य न होवै हे नारदमुनि मेरेभेद व कामों को पहुँचना बहुत कठिनहोकर व कोईस्थान मुझसे खाली नहीं रहता सबजीवों के उत्पन्न व रक्षाकरने धर्म चारोंबर्ण व चारोंआश्रमका रखने वाला मैंहूं व सगुणअवतारलेना मेराकेवल इसवास्ते है जिसमें संसारीजीव मुझे शुभ कर्मकरते देखकर उसीतरह अच्छाकाम कियाकरैं व तुम मेरेभेद व कामोंकी परीक्षा लेने में न रहकर हरिभजन कियाकरो ॥

दो० केहिकारण भ्रममें परे करो आपनो काज।
लोगनके पातक हरो दर्शनदे ऋषिराज॥

यह सुनतेही नारदमुनि बसुदेवनन्दन से अपना अपराध क्षमाकराके बोले हे महाप्रभु आप दयालुहोकर ऐसा बरदान मुझे दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणोंकी भक्ति सदा बनी रहकर संसारीमाया मेरे ऊपर न ब्यापे जब केशवमूर्त्ति ने नारदमुनि को इच्छापूर्व्वक बरदान देकर बिदाकिया तब वह दण्डवत्करके बीणा बजाते व हरिगुण गाते हुये सत्यभामा के पास जाकर बोले सत्यभामा तू पृथ्वी का अवतार है तुमसे मुरलीमनोहर रुक्मिणी को अधिक प्यार करते हैं इसलिये तुम श्यामसुन्दर को मुझे दान देकर मोललेलो तो वह तेरेआधीन रहैंगे यह बचन सुनतेही सत्यभामाने प्राणनाथसे आज्ञा लेकर उन्हें पारिजातक समेत नारदजी को संकल्पदिया जब नारदमुनि मुरलीमनोहरको अपने साथ लेचले तब सत्यभामा उनके बराबर सोना देनेलगी सो नारदजी ने सोनेके बदले तुलसीदल लेकर मुरलीमनोहरको फेरदिया व आपआनन्द पूर्व्वक ब्रह्मलोकको चलगये व श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द उसीदिन से सत्यभामा पर अधिकप्रीति करनेलगे ॥

चौ० श्रीभगवान महासुखकारी । रहैं सदा जैसे गृहचारी ॥
सकल पुत्र दारा सब रहई । और कुटुम्ब कहांलौं कहई ॥
रक्षाकरि सबको दुख हरैं । इच्छा उनकी पूरण करैं ॥
कृष्णनारि यों मनमें जानैं । मोसों बहुत प्रीति हरिमानैं ॥
यह लीला अद्भुत सुखदाई । जो जनकहै सुनै चितलाई ॥
दो० लहै महासुख सम्पदा दुखपावै कछु नाहिं ।
निर्म्मल यश प्रकटै सदा रहै वंश जगमाहिं ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

कथा मुरलीमनोहरकी कि किससमय कौनकर्म्म करते थे ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर संसारीजीवोंको राह दिखलानेवास्ते जिस समय जो कामकरते थे उसकाहाल कहताहूं सुनो जब दोघरीरातरहे पक्षी बोलनेलगते थे उसीसमय बसुदेवनन्दन सब महलोंमेंसे उठकर दिशाफिरने व दातून करनेउपरांत स्नान करके संसारीमनुष्योंकीतरह अपनी आत्माका ध्यान करते थे ॥

दो० जबै उठैं हरिसेजते होहिंविकल सबनारि ।
पत्निन दोष बिचारिकै देहिंसबन मिलिगारि ॥

जब सूर्य्य निकलनेउपरांत बसुदेवनन्दन सब महलोंमें जाकर जड़ाऊचौकीपर बैठते थे व उनके अंगपर स्त्रियां फुलेल व उबटन मलकर गरमपानी से स्नान करातीथीं तब वह तुलसीचौरेके पास बैठकर सन्ध्या व तर्प्पणकरके गायत्री जपते थे जब चारघड़ी दिन चढ़ताथा तब नित्य एक २ महलमें चौदह २ हजार गौ दूधदेनेवाली बिधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दान देकर उनका आशीर्वाद लेके भोजन करते थे ॥

दो० खानपान भूषण बसन बिबिध सुगन्ध लगाय ।
पहिले बिप्रनअर्पिकै आपलेत यदुराय ॥
यद्यपि श्रीभगवान को कर्म लगै कछुनाहिं ।
तद्यपि कर्मकियो चहैं लियोजन्म जगमाहिं ॥

जब मुरलीमनोहर अनेकरूपों से एकरूप होकर उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनकर द्वारेपरआते और बन्दीगणों से स्तुतिसुनकर सन्मानपूर्व्वक उन्हें बिदाकरते थे तब दारुक रथवान् द्वारेपर जड़ाऊरथ लेजाकर खड़ा करताथा ॥

दो० दर्शपाय हर्षें सबै तभी झुकावैं माथ।
कृपादृष्टि तिनपर करैं माखनप्रभु यदुनाथ॥

जब द्वारकानाथ उसरथपरउद्धवसमेत बैठकरफिरनेघूमनेजातेथे तबसात्यकी यादव पीछेबैठकरपंखा व चवँर मोहनीमूर्त्तिके हिलाताथा जबश्यामसुन्दरकारथ धीरे२ राजसी विभवसे चलताथा तबउनकी स्त्रियां अपने २ महलकी खिड़कियोंमें से उनकी छबि देखकर अपने २ भाग्यकी बड़ाईकरतीथीं जबथोड़ीदेर उपरान्तकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सुधर्म्मासभामें आतेथे उससमय सबयादवबंशी खड़ेहोकर सन्मानपूर्वक रत्नसिंहासन पर उनको बैठातेथे कुछबेर केशवमूर्त्ति राजाउग्रसेनके पास बैठकरकथा व पुराणसुनते थे व कभी २ नट व भानुमती आदिकको कौतुकदेखकर प्रसन्नहोतेथे व बैकुण्ठनाथकी दयासे द्वारकापुरीमें कुछ रोग व काल किसीको नहीं ब्यापताथा इसलिये सबछोटेबड़े परमानन्दरहतेथे जबबसुदेवनन्दन सुधर्म्मासभासे उठकर अनेकरूप धारणकरके सब महलोंमें जातेथे तब छत्तीसप्रकार के ब्यञ्जन भोजन करतेथे और उसमें अच्छा २ पदार्थ उद्धव व अक्रूर आदिक हरिभक्तोंको भी मिलताथा इतनीकथासुनाकर शुक-देवजीबोले हे परीक्षित देखो श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति गृहस्थाश्रम होनेपर भी बिरक्त रहकर संसारीजीवोंको राह दिखलानेवास्ते ये सबकर्म्म करतेथे एकदिन बैकुण्ठनाथ सुधर्म्मासभामें रत्नसिंहासनपर बैठेहुये यदुबंशियोंके साथ बातेंकरते थे उसीसमय एक ब्राह्मण द्वारकापुरीमेंआया व द्वारपालकोंसे कहा तुम श्रीकृष्ण से जाकरकहिदेव एक ब्राह्मण तुम्हारे दर्शनकी इच्छासे द्वारेपरखड़ाहै आज्ञाहो तो भीतरआनकर अपनामनो-रथ पूर्णकरे जैसे द्वारकानाथने यह संदेशा द्वारपालकसे सुनकर उसब्राह्मणको बुला भेजा और वहब्राह्मण उनकेसामने भीतरगया वैसे त्रिभुवनपतिने नीचेउतरकर उस ब्राह्मणको दण्डवत्किया व अपनेपास सिंहासनपर बैठाकर कोमलबचनसे पूंछा महा-राज आपकहांसे किसकारण यहां आये यहमधुरबचन सुनतेही वह ब्राह्मण हाथजोड़ कर बोला हेमहाप्रभो राजाजरासन्ध जो अपनेबल व प्रतापका घमण्डरखताहै दिग्बि-जयवास्ते निकलाथा सो जिन राजोंने उसकी आज्ञापालनकी उनकादेश उसने छोड़ दिया और जो राजा अपने अभिमानसे उनकेपास नहींआये उनको युद्धमें जीतकर अपने यहां कैदकिया सो बीसहजार आठसौराजा जो उसके यहां कैदहैं उनकासंदेशा लेकरआयाहूं श्यामसुन्दर बोले कहो तब उसब्राह्मणने कहा महाराज उन सबराजों ने दण्डवत्करके यह बिनयकियाहै हे बैकुण्ठनाथ आपका सदासे यह प्रणहै जब २ दैत्य व अधर्मीराजा हरिभक्तों को दुःख देते हैं तब तब आप सगुणअवतारसे अध-र्मियोंको मारकर अपनेभक्तोंकी रक्षाकरते हैं जिसतरह आपने हिरण्यकशिपुको मार कर प्रह्लादका प्राणबचाया और ग्राहसे गजेंद्रको छुड़ाया उसीतरह हमलोगों को भी

महादुःखी व दीनजानकर हमाराकष्ट छुड़ाइये जैसे कर्मरूपी फांसीमें साराजगत् बँधा रहिकर नष्टहोताहै वैसे जरासन्धकी कैदमें हमलोग फँसकर बड़ादुःखपाते हैं इसलिये दिनरात तुम्हारे दर्शनोंकी इच्छा बनी रहती है ॥

चौ० दुष्टदलन है नाम तुम्हारो । तुमहीं सबको कष्ट निवारो ॥
हमकोपरो दुःखअतिभारी । बेगआय सुधि लेव हमारी ॥
जैसे कृपा जननपर करो । तैसे कष्ट हमारो हरो ॥
दो० रैन दिवसहैं बन्दिमें परे नहीं क्षण चैन ।
हमको आय छुड़ाइये माखनप्रभु सुखदैन ॥

हे महाप्रभो राजाजरासन्ध अज्ञान अपने राज्यके घमण्डसे ऐसा मतवाला व अन्धा होरहाहै कि सत्रहबेर तुम्हारे सामने से भागने परभी लज्जित न होकर एक बेर तुमसबका मनोरथ पूर्णकरनेवास्ते जोभागेथे बड़ाअहंकार करके अपनी बराबर किसीको नहीं समझता सो आपने पृथ्वीकाबोझउतारने वास्ते अवतार लियाहै इस लिये उसकाघमण्ड तोड़करहमारा दुःखछुड़ाना चाहिये किसवास्ते कि हमलोग किसी दूसरेका भरोसा नहींरखते ॥

दो० तिहिकारण हमसबनकी है तुमहींको लाज ।
तुमबिनको रक्षाकरै माखनप्रभु यदुराज ॥

चौ० हम जो महाअधमअज्ञानी । धर्मकर्मकी बात न जानी ॥
दयासिंधुहै नाम तुम्हारो । हमदीननकी ओर निहारो ॥
जबलों तुम्हरी कृपा न होई । तबलों ज्ञान न पावतकोई ॥
विषय भोगलोगन अतिभावै । तुम्हें छोड़उनसों मनलावै ॥
संकट आनपरै जिहि काला । तुम्हरो नामजपै नँदलाला ॥
जबतनमें कछुव्यथा जनावै । तातमातकी सुधितबआवै ॥
ताहीबिधितुमको हमजानैं । सबके तातमात पहिचानैं ॥
दीनबन्धुबिनती सुनिलीजै । जीवदान दीननको दीजै ॥
दो० यद्यपि सुन्दरबदनको दर्शनपायों नाहिं ।
तद्यपि चरणसरोज को ध्यानधरत मनमाहिं ॥

यह दीन वचन सुनतेही दुःखभञ्जन ने दयापूर्वक उसब्राह्मण से कहा तुम धैर्य्य रक्खो मैं सबराजों का दुःखछुड़ादूंगा ॥

चौ० धीरजबिनु कारज नहिं होई । यह निश्चयजानो सबकोई ॥

यहवचनसुनतेही वहब्राह्मण प्रसन्नहोकर वसुदेवनन्दनको आशीर्वाद देनेलगा उसीसमय नारदमुनि वीणबजाते व हरिगुणगातेहुये द्वारकापुरीमें पहुँचे तबश्यामसुन्दर ने दण्डवत्करके उनको बड़ेसन्मानसे अपनेपास सिंहासनपर बैठालकर पूंछा हेमुनिनाथ कुछ नईबात हो तो सुनावो और राजायुधिष्ठिर आदिक पाण्डव हमारे भाइयोंका कुछहाल तुम्हें मालूमहो तो बतलावो इनदिनों वहलोगक्याकरते हैं बहुतदिनोंसे हमने उनकासमाचार नहींपाया यहबातसुनकर नारदजीबोले हे महाप्रभो अन्तर्यामिन् आप सबजगत्काहाल जानकर दयाकीराह मुझसे पूछतेहैं तो सुनिये मैं अभीपाण्डवोंके पास होकर चलाआताहूं राजायुधिष्ठिरआदिक पांचोभाई रातदिन तुम्हारेयाद व ध्यानमेंरहकर इनदिनों राजसूययज्ञकरनेकी इच्छारखतेहैं पर सम्पूर्णहोना उसका तुम्हारेआधीन समझकर आठोंपहर उनको यहअभिलाषा बनीरहती है कि द्वारकानाथ दयालुहोकर आवैं तो हमारामनोरथपूर्णहो ॥

दो० याते विलँब न कीजिये अबहीं पहुँचो जाय ।
भक्तनको कारजकरो माखनप्रभु यदुराय ॥

उसीसमय राजायुधिष्ठिरके नेवताकी चिट्ठी इससमाचारसे मुरलीमनोहर के पास पहुँची कि हे महाप्रभो ब्राह्मणोंने मुझसे राजसूययज्ञका संकल्प तो करादिया पर विना आने आपके मेरामनोरथपूर्ण नहींहोनेसक्ता सो मेरीलज्जा तुम्हारेहाथ है जबश्याम सुन्दरने पाण्डवोंका संदेशा नारदमुनिसे सुनकर उनकी चिट्ठीपढ़ी तबयदुवंशियोंसे जो वहां बैठेथे पूंछा सुनोभाई जरासन्धके क़ैदीराजोंने अपने छुड़ानेका सन्देशा मुझे कहला भेजा है और नारदजी पांडवोंके यहां जानेवास्ते कहतेहैं इनदोनों बातमें पहिले क्या करना चाहिये उनमें कोई यदुवंशीबोला महाराज पहिले राजोंकी बंदीछुड़ाना उचित है दूसरेनेकहा प्रथम पाण्डवोंके मकान पर जाकर उनका यहयज्ञसम्पूर्णकिया चाहिये यह बचन सुनतेही वसुदेवनन्दन ने उद्धवसे कहा ॥

चौ० उद्धव तुमहौ सखाहमारे । मनआंखिन से नहीं नियारे ॥
दोउ ओरकी भारीभीर । पहिले कहांचलें कहुबीर ॥
उतराजा संकटमें भारी । दुखपावत हैं आशहमारी ॥
इतपांडव मिलियज्ञ रचायो । ऐसेही प्रभु वचन सुनायो ॥

यहबात सुनतेही उद्धवने श्यामसुन्दरसे हाथजोड़कर विनयकिया हे महाप्रभो मेरा बड़ाभाग्यहै जो आप अन्तर्यामीहोकर दयाकीराह मुझसे पूंछते हैं ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका पांडवों के स्थान पर जाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित उद्धव भक्त तीनों काल के जानने वाले बोले हे दीनानाथ मेरेनिकट पहिले पांडवोंकेपास चलकर उन्हें धैर्य्यदेना उचितहै फिर वहांसे भीमसेन व अर्जुनको साथलेकर जरासन्धके मारनेवास्ते जानाचाहिये किसवास्ते कि जरासन्ध दशहजारहाथीका बल रखताहै इसलिये अपनेबराबर किसीको नहींसमझता सो भीमसेन जरासन्धके साथ कुश्तीलड़कर तुम्हारीकृपासे उसे मारडालेगा मेरीसमझ में जरासन्धकी मृत्यु भीमसेन के हाथ है ॥

दो० जरासन्ध को मारके राजन लेहु छुड़ाय ।
पांडु सुतन के यज्ञ को दूजो नहीं उपाय ॥

हे वैकुण्ठनाथ जब कैदीराजोंके बालकरोकर अपनेबापको यादकरते हैं तब उनकी माता धैर्य्य देकर उनसे कहती हैं अय बेटा तुम मतरुदनकरो श्रीकृष्णजी आदिपुरुष भगवान्ने पृथ्वीका भार उतारनेवास्ते अवतारलियाहै जिसतरह उन्होंने रामावतार में जानकी माताको रावण अधर्मी के यहां से छुड़ालिया था उसीतरह जरासन्ध पापीको मारकर तुम्हारे पिताको छुड़ावेंगे यह वही वैकुंठनाथ हैं जो गजेन्द्रहाथी को ग्राह से बचाकर शंखचूड़से गोपियों को छुड़ालाये थे ॥

चौ० कंसभूप उनहीं पुनि मार्‍यो । तातमात को कष्ट निवार्‍यो ॥
वे प्रभु हैं सब के सुखकारी । उनहीं को है लाज हमारी ॥

दो० कष्ट सकल संसार को दूर करत क्षण माहिं ।
तिन्हैं तुम्हारो दुख हरत बार लागिहै नाहिं ॥

चौ० जो तुमको ऐसीविधि ध्यावैं । रैनदिवस तुम्हरो गुणगावैं ॥
तिन्हपर कृपा वेगि प्रभुकीजै । तहांजाय उनकी सुधिलीजै ॥

दो० रक्षपाल सब जगत के तुमहीं हौ गोपाल ।
मैंहूं तुम्हरे शरण हूं माखन प्रभु नँदलाल ॥

हे दीनदयालो उन सबराजों को जरासन्धकी बन्दी से छुड़ाना चाहिये पर राजा युधिष्ठिरने केवल तुम्हारेभरोसे पर राजसूययज्ञ करनेकी इच्छाकी है नहीं तो पहिले

वह अपने पराक्रमसे सबराजोंको आधीनकरलेते तब ऐसे कठिनयज्ञका संकल्पकरते॥

चौ० तदपि उनपर कृपा तुम्हारी। वह हैं परम भक्त हितकारी॥
त्यहिकारण निश्चयमनआनै। कारजकठिन सहजकरमानै॥

दो० याते वेगि सिधारिकै कीजै उनको काज।
तुमहीं को सब लाज है माखन प्रभु ब्रजराज॥

जबतक जरासन्ध मारा न जावै या हार न माने तबतक राजसूययज्ञ नहींहोसक्ता उसके मारेजाने में दो अर्थ समझिये एकतो राजायुधिष्ठिरका यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्ण होगा दूसरे बीसहजार आठसौराजा बन्दीसे छूटकर तुम्हारी कृपासे सुखपावैंगे यहदोनों काम होनेसे तुम्हारायश संसारमें स्थिररहैगा और राजसूययज्ञमें सबकाम सिवायराजों के दूसराकोईनहीं करने सक्ता सो वही राजालोग छूटकर बड़े प्रेमसे यज्ञकाकामकरेंगे इतनेराजा इकट्ठे दूसरीजगह मिलना बहुतकठिनहै व कोई मनुष्य लड़कर दशोंदिशा जीतआवै तौभी इतनेराजा इकट्ठे नहींहोसक्ते इसलिये पहिले इन्द्रप्रस्थ में चलिये व पाण्डवों से भेंटकरके जैसाजानिये वैसाकीजिये व राजाजरासन्ध ऐसा गौ व ब्राह्मणका भक्त व दाता है कि उसके द्वारेपरसे कोई विमुख नहीं फिरता व जो बात कहता है उसे नहीं छोड़ता॥

चौ० याकारण तुम वेगि सिधारो। शुभकारज में विलँबनडारो॥

दो० जरासन्ध यह जानि है अपने मन में भाय।
पांडव सुत के काज को आये श्रीयदुराय॥

जब यह सम्मत उद्धवकासुनकर श्यामसुन्दर व नारदजी व यदुवंशियों ने पसंद किया तब मुरलीमनोहर ने नारदमुनि से कहा महाराज तुम हमारी तरफ़ से जाकर पांडवों को कहदेना कि हम तुम्हारे यहां आते हैं व उसब्राह्मणको विदाकरती समय कहा तुम सबराजों से कहिदेव वह लोग धैर्य्य रक्खें हम जल्दी वहां पहुँचकर उन्हें बन्दी से छुड़ादेवेंगे॥

दो० ऐसे अमृत बैन सुनि मन में भये हुलास।
आयसु ले तबहीं चले निज राजन के पास॥

जब उसब्राह्मणने सबराजोंके पास पहुँचकर मुरलीमनोहरकासँदेशा कहदिया तब वह सब प्रसन्नहोकर चरणोंका ध्यानकरनेलगे व नारदजीने इन्द्रप्रस्थमें जाकर सँदेशा मुरलीमनोहरका युधिष्ठिरसे कहा व केशवमूर्त्तिने राजाउग्रसेनके पासजाकर पाण्डवों के यहां जानकी उनसेआज्ञाली व द्वारकाकी रक्षावास्ते बलरामजीको वहां छोड़दिया

और आप बहुत से यदुवंशी शूरवीर व सेनासाथलेकर इन्द्रप्रस्थको कूचकिया पहले आठों पटरानियों को उत्तमउत्तम नालकी व झप्पानपर बैठाकर व कई हज़ार हाथी जड़ाऊहौदा व अम्बारी कसेहुये साथमें लेलिये और आप द्वारकानाथ जड़ाऊरथपर जिसमें अतिउत्तम घोड़े जुतेहुये थे बैठकर चले हे परीक्षित उससमय कईहज़ार घोड़े जड़ाऊसाज पहिने व अनेकसिंहासन व जड़ाऊरथ कोतल उनके साथ चलेजाते थे उनकीशोभा कहांतक वर्णनकरूं राहमें जहां वह टिकतेथे वहां बहुतअच्छा बाजार उन के साथका लगिजाताथा व उसदेशके राजा व प्रजा मोहनीमूर्त्तिका दर्शन मिलने से अपने अपने लोचनों का फलपाते थे जब वहलोग अनेकतरहकी वस्तु मुरलीमनोहर को भेंटदेते तब केशवमूर्त्ति उनलोगों को सन्मानपूर्व्वक बिदाकरते थे जब इसी तरह श्यामसुन्दर सब छोटेबड़ों को सुखदेते हुये बन्दर व सूरतकी राह से तीसरेदिन राजा युधिष्ठिरके सिवाने में पहुँचे तब किसीने राजायुधिष्ठिरसे आनकर कहा महाराज कोई राजा सेनालेकर तुम्हारेऊपर चढ़ाआता है यहबात सुनतेही राजायुधिष्ठिरने नकुल व सहदेव अपने भाइयों को समाचार लानेवास्ते भेजा जब नकुल व सहदेवको श्याम-सुन्दरके आनेका हाल माल्रूमहुआ व उन्होंने बड़े हर्ष से फिरकर यहसमाचार राजा-युधिष्ठिर को दिया तब वह बड़े आनन्द से अर्जुन व भीमसेन आदिक अपने चारों भाई व ब्राह्मण व ऋषीश्वर वेद पढ़ने वाले व अनेक वस्तु भेंटदेने वास्ते साथ ले-कर आगे से गये ॥

चौ० श्रीमुखदेखि महासुखपायो । तिहिसुखसेसबदुखबिसरायो ॥
हरि दर्शन की शीतलताई । तासों मन की तपन बुझाई ॥
दो० रोम रोम हर्षित भये कहत युधिष्ठिर राज ।
सुफल भयो संसारमें जन्म हमारो आज ॥

जैसे राजायुधिष्ठिर ने निकट पहुँचकर मुरलीमनोहरके चरणोंपर गिरने चाहा वैसे द्वारकानाथने उनको अपने गले लगालिया व श्यामसुन्दर राजायुधिष्ठिर को अपना बड़ा जानकर उनके चरणों पर गिरपड़े ऐसी कृपा त्रिभुवनपति की देखतेही राजा युधिष्ठिर बड़े प्रेमसे मोहनप्यारेको गोदमें उठाकर प्यारकरने लगे व बड़े हर्षसे विधि पूर्वक पूजा उनकी की ॥

दो० रूप अनूपम देखिकै मुदित भये मनमाहिं ।
नयन निमिष लागे नहीं तनकी सुधि कछुनाहिं ॥

वसुदेवनन्दन ने भीमसेन व अर्जुनसे गले मिलकर उन्हैं सुखदिया व नकुल व सहदेवजी मुरलीमनोहर के चरणोंपर गिरे उन्हैं उठाकर छाती से लगालिया ॥

चौ० पुनि विप्रनको माथ नवायो । कुशल पूंछके हर्ष बढ़ायो ॥

व दूसरे क्षत्रीआदिक राजायुधिष्ठिर के साथ हस्तिनापुरसे वास्ते देखने वैकुण्ठनाथ के आगे सब किसीका सन्मान यथायोग्य किया जब राजायुधिष्ठिर पीताम्बर बिछवाते चन्दन व गुलाब छिड़कवाते व सोने व चांदी के फूललुटाते व अनेक तरहकेबाजन बजातेहुये बड़े हर्षसे श्यामसुन्दरको नगरमें लिवा लेगये तब स्त्री व पुरुष वहांके रहने वाले अपने २ द्वारे व खिड़की व कोठोंपर बैठेहुये श्यामसुन्दर के दर्शनवास्ते अभिलाषारखते थे उन्हों ने मोहनीमूर्त्ति की छवि देखकर अपने लोचनों का फलपाया व सुगन्धितपुष्प व रत्नादिक द्वारकानाथ पर नेवछावरकरके एक स्त्री दूसरी से कहने लगी देखो बड़ाभाग्य श्यामसुन्दरकी स्त्रियोंकाहै जो रातदिन इनके साथ भोगविलास करके अपना जन्म स्वार्थकरती हैं व ब्राह्मणों ने यज्ञोपवीत वैकुण्ठनाथको आशीर्वाद के साथ देकर दूसरे नगरवासियों ने अपने अपने वित्तानुसार रत्नादिक उनको भेंट दिया व वसुदेवनन्दन ने यथायोग्य सबका सन्मानकिया जब त्रिभुवनपति सब छोटे व बड़ोंको आनन्द देतेहुये राजायुधिष्ठिर के रत्नजटित महलमें गये तब कुन्ती प्रेमसे उनको देखनेवास्ते दौड़ी व मोहनीमूर्त्तिका चन्द्रमुख देखतेही आनन्द होगई जब श्यामसुन्दरने शिर अपना कुन्तीके चरणोंपररखकर दण्डवत्की तब उसने शिरउनका उठाकर छातीसे लगालिया व उन्हें गोदमें बैठाकर प्रेमकाआंशू बहानेलगी जब द्रौपदी ने आनकर द्वारकानाथके चरणोंपर शिररक्खा तब मुरलीमनोहर ने अपना हाथ उसके शिरपर रखकर उसे व सुभद्रा अपनी बहिनको अशीश दिया जब रुक्मिणी आदिक आठौ पटरानियों ने कुन्तीके चरणोंपर शिर अपना रक्खा तब कुन्तीमाताने उनको बड़ी प्रीतिसे छाती में लगाकर अपने पास बैठाला ॥

चौ० बड़ी देरलौं भेंटत रहे । बहुत नीर नयननते बहे ॥
वारंवार धरैं जगदीशा । कुन्तीके चरणनपर शीशा ॥
वह उठायके कण्ठ लगावैं । रोम रोम बहु आनँदपावैं ॥
द्रोण कृपाचार्य्य की नारी । परमपुनीत महा शुभकारी ॥
हरिजू तिन्हैं नवायो शीशा । ह्वै प्रसन्न उन दई अशीशा ॥

जब सब कोई श्यामसुन्दर व रुक्मिणीआदिकसे भेंटकरचुके तब कुन्तीने द्रौपदी व सुभद्रासे कहा तुमलोग आदरपूर्व्वक नित्य आठों पटरानियों का शिष्टाचार कियाकरो व राजायुधिष्ठिर आदिक पांचोभाई अन्तःकरणमें वसुदेवनन्दनकी भक्ति रखतेथे प्रेमसे उनका सन्मानकरने लगे व उन पांचों में अर्जुन बड़ी मित्रता व प्रीति कृष्णचन्द्र से रखकर सदा उनकेसाथ एक रथपर अहेर खेलने जाया करताथा हे परीक्षित इन्द्रप्रस्थ

में वसुदेवनन्दनके आनेसे ऐसासुख व आनन्द वहांके लोगोंको प्राप्तहुआ जिसकाहाल मुझसे वर्णन नहीं होसक्ता जिसतरह चन्द्रमाका प्रकाश राजा व कंगाल दोनोंके घरमें एकसा रहताहै उसीतरह इन्द्रप्रस्थमें श्यामसुन्दरकी दयासे छोटे बड़ोंके घरमें प्रतिदिन नये नये सुख व आनन्द होनेलगे ॥

दो० या विधि परम हुलाससों कीन्हों तहां निवास ।
पाण्डु सुतनके काजको माखनप्रभु सुखरास ॥

बहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका जरासन्धके मारनेवास्ते जाना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब इसीतरह कईमहीने श्यामसुन्दरको आनन्द पूर्व्वक वहां बीतगये व कुछ चर्चा यज्ञकी नहीं आई तब एकदिन राजायुधिष्ठिर अपनी सभामें जहांपर बहुत से क्षत्री व ऋषीश्वर व ब्राह्मण बैठे थे उठकर श्यामसुन्दर के सन्मुख खड़े होगये व विनयपूर्व्वक हाथ जोड़कर उनसे कहा हे त्रिभुवनपते ब्रह्मा व महादेव आदिक सब देवताओं के मालिक तुम्हारे चरणोंका दर्शन बड़े २ योगी व ऋषीश्वरों को जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने मुझे अपना दास जानकर घर बैठे दर्शन दिया ॥

चौ० तुम ऐसी प्रभुलीला करो । काहूसे नहिं जाने परो ॥
माया में भूला संसार । तुमसे करत लोकव्यवहार ॥
जो तुमको सुमिरत जगदीश । उसको जानो अपना ईश ॥

हे दीनानाथ तुम्हारी दयासे जगत् में सब इच्छा मेरी पूर्णहुई पर एक अभिलाषा और रखताहूं आज्ञाहो तो विनय करूं श्यामसुन्दर बोले हे राजन् जो इच्छा तुमको हो सो बतलाओ वह भी पूरी होजावेगी यह वचन सुनतेही राजायुधिष्ठिर प्रसन्न होकर बोले हे द्वारकानाथ राजसूययज्ञ करनेकी इच्छा रखताहूं व सब मुनि व ऋषीश्वरों को भी इसमें प्रसन्नता है पर विना कृपा तुम्हारी यह कठिन यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होसक्ता जिस तरह आपने कईबेर महा विपत्ति में हमारी सुधिलेकर मेरा मनोरथ पूर्ण किया उसी तरह अबभी अपनी दयासे यज्ञ अच्छी तरह सम्पूर्ण करादीजिये तो उसका फल तुम्हारे अर्पणकरके भवसागर पार उतरजाऊं किसवास्ते कि संसार में हम पांचो भाई तुम्हारे दास कहलाते हैं इसलिये संसारी लोग ऐसा कहैंगे कि श्यामसुन्दरकी दयासे पांडवों ने राजसूययज्ञ कियाथा और यह भी तुम्हारे चरणों का प्रताप है जो इच्छा मुझे हुई मैं इस बातका विश्वास रखताहूं कि जो तुम्हारे शरण में आया उसका कोई मनोरथ बाकी नहीं रहता ॥

चौ० जा विधि मन्त्र देहु यदुराजा । आयसुमानिकरौंस्वइकाजा ॥
दो० तुमहीं सब काजन विषे हमको होत सहाय ।
और हमारे कौनहै माखनप्रभु यदुराय ॥

यह आधीन वचन सुनतेही लक्ष्मीपतिने हँसकर कहा हे राजन् तुम्हारा कहना मैंने मानलिया यह बात उत्तम होकर सब देवता व पितर व ऋषीश्वर व मुनि तुमसे इस यज्ञकरानेकी चाहनारखते हैं जिसमें अपना अपना भाग पावैं जब तुमने अपने प्रेमसे मुझे बश्यकरलिया तब तुमको राजसूययज्ञ या कोई इससे भी बड़ाकामकरना कौनकठिनहै जिसके आधीन मैं हुआ उसकी कुछइच्छा बाकी नहींरहती अर्जुनादिक तुम्हारे चारोंभाई ऐसेबलवान् हैं जिनसे कोई दूसराराजा युद्ध नहींकरनेसक्ता व लोक पालों को भी ऐसीसामर्थ्य नहीं है जो मेरेसामने उनसे लड़नेसकैं इसलिये तुमअपने भाइयोंको आज्ञादेव कि चारोंदिशामें जाकर सब राजों को जीतनेउपरांत बहुतसाद्रव्य लेआवें तब तुम आनन्दसे यज्ञकरो यहबचनसुनतेही राजायुधिष्ठिरने बहुतसी सेना साथलेकर अर्जुनको उत्तर व भीमसेनको पूर्ब्ब व सहदेवको दक्षिण व नकुल को पश्चिमदिशा जानेवास्ते आज्ञादी सो वह लोग उनकीआज्ञानुसार चारोंदिशा में गये जब चारोंभाई कुछदिनमें बैकुण्ठनाथके प्रतापसे सातोंद्वीप व नवखण्ड व दशोंदिशा के राजोंको जीतकर बहुतसाद्रव्य लेआये तबराजायुधिष्ठिरने हाथजोड़कर बसुदेवनन्दनसे बिनयकिया हे महाप्रभो यहकार्य्य तो तुम्हारीकृपासे पूर्णहुआ अब क्याआज्ञा होती है यहबचनसुनकर उद्धवभक्तने राजायुधिष्ठिर से कहा महाराज सबदेशकेराजों को तुम्हारेभाई जीतआये पर जबतक राजाजरासन्ध मगधपति आपके आधीन नहीं होगा तबतक तुम्हारा यज्ञसम्पूर्ण नहीं होसक्ता और वह ऐसाबलवान् व धर्मात्मा है जिसे कोई संसार में जीतनहीं सक्ता ॥

चौ० जो तुम युद्धकरो रणमाहीं । वासों जीतिसकोगे नाहीं ॥
एक बात अपने मनल्याऊं । सोअबतुमसेकहिसमझाऊं ॥
बिप्रबेष धरिकै हरिजाहीं । अर्जुन भीमसंग तिहिपाहीं ॥
जरासन्धदाता अतिभारी । जाकोयश तिहुंलोकमंझारी ॥
वासे जो मांगे कछु भिक्षा । देतवही जो मनकीइच्छा ॥
यद्यपि शीशहु मांगैकोई । देतबार लाइहि नहिं सोई ॥
बिप्ररूप जब वापै जैहैं । युद्धदान ताही क्षण पैहैं ॥
दो० राजन इससंसारमें स्थिर है कछुनाहिं ।

तद्यपि दाता पुरुषको नामरहै जगमाहिं ॥

जब यहबचन सुनकर राजायुधिष्ठिर उदासहोगये तब त्रिभुवनपति उन्हैंधैर्य्यदेकर बोले हे राजन् तुम किसीबातकी चिन्तामतकरो उद्धवके कहने प्रमाण भीमसेन व अर्जुन अपने दोनोंभाइयोंको हमारेसाथकरदेव किसीतरह बलव छलसे हमलोग राजा जरासन्धको मारआवैंगे जब यहबातसुनकर युधिष्ठिरने भीमसेन व अर्जुनको साथलेकर मुरलीमनोहर के साथजानेवास्ते आज्ञादी तब लक्ष्मीपति उनदोनोंको साथलेकर ब्राह्मणबेष में मगधदेशको गये वह तीनों ब्राह्मणरूप अतिसुन्दर ऐसे तेजवान् मालूम देतेथे जैसे सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण अपनातन धारणकियेहों जब कईदिन में वहलोग मध्याह्नसमय ब्राह्मणरूप से जो अतिथिके भोजनकरानेका समयहै राजाजरासन्धके द्वारेपरजाकर खड़ेहुये तब एकद्वारपालकने उनको देखतेही राजाकेपासजाकर कहा महाराज तीनब्राह्मण अतितेजवान् आपसे भेंटकरनेवास्ते आनकर द्वारेपरखड़े हैं आज्ञादेव तो भीतरआवैं यहबचनसुनतेही जरासन्ध जो उससमय रसोईखाने जाया चाहताथा बहुत प्रसन्नहोकर आपद्वारेपर चलाआया व श्यामसुन्दर आदिक ब्राह्मणरूपको दण्डवत्करके भीतरलेगया व सन्मानपूर्व्वक अपने सिंहासनपर बैठाकर उसने कहा महाराज जिसतरह आपलोगोंने दयाकीराह यहांआनकर मुझे कृतार्थकिया उसी तरह चलकर भोजन कीजिये तो तुम्हारा चरणधोकर अपना परलोक बनाऊं ॥

चौ० बिप्रनकी सेवा जो करै। भवसागरसे जल्दी तरै ॥

यहबात जरासन्धकी सुनकर श्यामसुन्दरबोले हे राजन् हमलोग बहुतदूरसेतुम्हारा यशसुनकर यहांआयेहैं जो हमको इच्छाहै सोदेव किसवास्ते कि शूरबीरोंको शिर व दानियोंको अपना प्राणतक देडालनेमें कुछलोभ नहीं रहता देखो एककबूतर व्याधा के वास्ते इसतरह अपना प्राणदेकर तरगया था कि एकव्याधा माघ महीनेमें पक्षी बझाने बनमेंगया सो पानीबर्षने व आंधीचलने से कोईपक्षी उसको नहीं मिला जब सरदी व भूखसे अतिब्याकुलहोकर अपनेघर आनेलगा तब उसने एक कबूतरी को जो सरदीसे अचेतहोकर पृथ्वीपर पड़ीथी उठालिया व रातहोजानेसे अपनेघर नहीं पहुँचकर एकबरगद के नीचे बैठरहा जब आधीरातको उसकबूतरीका पति जो उसी बृक्षपर रहताथा अपनी स्त्रीको यादकरके पुकारनेलगा तब उस कबूतरीने चैतन्यहोकर कहा हे स्वामिन् अब तुमको मेरेवास्ते शोचकरना उचित न होकर अतिथिका दुःख जो सरदी व भूखसे व्याकुलहै धर्मकीराह छोड़ाना चाहिये जब यह सुनकर कबूतर को ज्ञान उत्पन्नहुआ तब वह कहींसे अग्नि अपनी चोंचमें लेआया व लकड़ी अपने खोंतेसे गिराकर वहां आगलगादी तो उसव्याधाकी सरदी छूटगई फिर वह कबूतर अपनी इच्छासे आगमें गिरपड़ा व बहेलियेने उसको खालिया तब वह कबूतरी

बहेलियेसे बोली अब मुझे भी भूंजकर खालेव बिना पुरुषकीस्त्रीका जीना अच्छा नहीं होता जब बहेलियेने कबूतरीको भी खाकर अपनी भूखमिटाई तब परमेश्वरने उन दोनों पक्षियोंका ऐसाधर्म देखकर उनको वैकुण्ठमें बुलानेवास्ते बिमान भेजदिया सो वह दोनों पक्षी पार्षदोंसे बिनयकरके उस बहेलियेको भी अपने विमानपर बैठाकर परमपदको लेगये सिवायइसके तुमने सुनाहोगा कि राजाहरिश्चन्द्र ऐसा धर्मात्माहुआ जिसने सबराज्य व धनअपना नारायणजीकेनामपर ब्राह्मणों को देडालाथा सो आज तक कीर्त्ति उसकीसंसारमें छारही है बिस्तारपूर्वक उसकीकथा कहते हैं सुनो एकसमय राजाहरिश्चन्द्रके नगरमें कालपड़नेसे प्रजालोग भूखोंमरनेलगे तब उसने भूषण व वस्त्रादिकबस्तु अपनी बेंचकर प्रजाका पालनकिया उन्हीं दिनों राजाहरिश्चन्द्र संध्या समय अपनीस्त्रीसमेत भूखेबैठे थे उसीसमय बिश्वामित्र ऋषीश्वरने राजाके धर्मकी परीक्षालेनेवास्ते वहांआनकर कहा हे राजन् मुझे इच्छापूर्व्वक द्रव्यदेकर कन्यादानका फललेव यहबातसुनतेही हरिश्चन्द्रने घरमेंढूंढ़ा सो जो कुछ भूषण व वस्त्रादिक उनके स्त्री व पुत्रका बचाथा वह लाकर ऋषीश्वरको देदिया उसेदेखकर बिश्वामित्र बोले महाराज इतनेमें मेरा काम नहींहोगा यहसुनतेही राजाने अपनेदासी व दास जो कुछ बचेथे उन्हें भी बेचकर जब रुपया उसका ऋषीश्वरकेपास लेआये व केवल एक २ धोती अपनी स्त्री व पुत्रकेपास रखलिया तब फिर बिश्वामित्रबोले इतने द्रव्यसे मेरा अर्थ नहींहोगा व मुझे कोईदूसरा तेरेसमान धर्मात्मा संसारमें दिखलाईनहींदेता जिसके पास जाकरमांगूं पर एकडोम धर्मपात्र है आज्ञादेव तो उससेजाकर मांगूं पर वहांजाते मुझे लज्जामालूमहोती है कि तुमसमान ऐसेदानी राजाकोछोड़कर उससे क्यामांगूं यह बातसुनकर हरिश्चन्द्रने ऋषीश्वरको अपनेसाथ लिवालिया व उसडोम चांडालके घर जाकरकहा हे भाई तुमहमको अपने यहां गिरों रक्खो व इन ऋषीश्वरको इच्छापूर्वक द्रव्यदेव यहबात सुनकर वह डोम बोला ॥

चौ० कैसे टहल हमारी करिहौ । राजस तामस मनसे हरिहौ ॥
तुमहो नृपति तेजबलधारी । महा नीच है टहल हमारी ॥

हे राजन् तुमको श्मशानपररहकर मुर्द्दाजलानेवालों से पैसालेके हमारेघर पहुँचाना होगा व हमारेमकानकी चौकीदारी करनीपड़ेगी तुमसे यह दोनोंकाम होनेसकैं तो हम इसब्राह्मणको मुंहमांगा द्रव्यदेकर तुम्हैं गिरों रक्खैं यहबचनसुनकर राजाहरिश्चन्द्र ने कहा बहुतअच्छा हम बर्षदिनतक यह दोनों काम तुम्हारे करदेवैंगे यहबचनसुनतेही उस डोमने इच्छापूर्वक बिश्वामित्रको द्रव्यदेकर बिदा किया तब राजाहरिश्चन्द्र वहां रहकर दोनोंकाम उसके करनेलगे व उनकीरानी पुत्रसमेत उसी नगरमें किसीगृहस्थ के यहां रहकर सेवकाई से अपनादिन बितानेलगी परमेश्वरकी इच्छासे कुछ दिनबीते

राजाहरिश्चन्द्रका बेटा मरगया व रानीने उसकी लोथ गङ्गाकिनारे लेजाकर जलाने की इच्छाकी तब हरिश्चन्द्रने आनकर अपनीस्त्रीसे कहा तुम इसमुर्देका पैसादेदेव तो लोथजलाओ यहबचन सुनतेही रानीरोकरबोली महाराज यहतुम्हारे पुत्रकी लोथजलाने को लाईहूं व मेरेपास सिवाय एकधोती के और कुछनहीं है यहबातसुनकर राजाहरिश्चन्द्र बोले हे प्रिया मैं पैसा न लूं तो मेराधर्म्म जातारहै इसलिये अपने पुत्रको भी बिना पैसालिये नहींजलानेदूंगा यह धर्म्मरूपी बातसुनतेही जैसे रानी ने अपना अंचल फाड़कर पैसाकेबदले देनाचाहा वैसे नारायणजी करुणानिधान ने ऐसा धर्म्म व सत्य राजाहरिश्चन्द्रका देखकर एक बिमान जड़ाऊ उसकेवास्ते श्मशानपर भेज दिया व पीछेसे आपभी वहांगये व राजाको दर्शनदेकर रोहिताश्व उसके बेटेको अपनीमहिमा से जिलादिया व राजाहरिश्चन्द्रको उसकी रानीसमेत बिमानपर बैठाकरकहा बैकुण्ठमें चलो तब हरिश्चन्द्रने त्रिभुवनपति से हाथजोड़ बिनयकिया हे महाप्रभु पतितपावन जिसतरह आपने मुझे अपनादास जानकर दर्शनदिया उसीतरह मेरेस्वामी डोमकोभी बैकुण्ठमें लेचलिये तो मेरामनोरथ पूर्णहो यहबचन अपनेभक्तका सुनतेही लक्ष्मीपति उसचाण्डाल डोमको भी परिवारसमेत उसीबिमानपर बैठाकर निस्सन्देह बैकुण्ठमें ले चले व राजाहरिश्चन्द्रको अमरपदवी दी व राजारन्तिदेव ऐसाधर्म्मात्मा हुआ जिसने अड़तालीसवें दिन कुछअनाज भोजनकरनेवास्ते पायाथा वहभी ब्राह्मणको खिलाकर आप भूखारहगया उसीधर्म्म से मुक्तपदवीपर पहुँचा व राजाबलि जब बामनमहाराज को सबराज्य व धन अपना देकर शरीर देनेवास्ते तैयारहुआ तब उसने राज्यसुतल लोकका पाया जिसकायश आजतक संसारमें छारहाहै व राजाशिविने कबूतरके बदले अपनेशरीरका मांसकाटकर देडाला व उद्दालक ऋषीश्वरने जो छठवें महीने भोजन करते थे आप न खाकर वहभोजन अतिथिको खिलादिया व आप भूखे रहगये उस अन्नदानके प्रतापसे बिमानपर बैठकर बैकुंठधामको पहुँचे व दधीचिऋषीश्वरने अपना हाड़ इन्द्रादिक देवताओं को देडाला था ॥

चौ० ऐसे दाता भये अपार । जिनका यश गावत संसार ॥

हे राजन् सिवाय इनलोगोंके और बहुत ऐसेदानीहुये जिन्होंने अपनाधन व प्राण देने में कुछ लोभनहींकिया उनकाहाल कहांतक तुमसे बर्णनकरूं जिसतरह पिछले युगों में वहलोग धर्म्मात्माहोते आये हैं उसीतरह तुमभी इसयुग में दानी उत्पन्नहुये व हमारीइच्छा पूर्णकरोगे तो तुम्हारायश भी संसारमें स्थिररहेगा यहबचन सुनने व चन्द्रमुख उनका देखने से जरासन्धने समझा कि यहलोग ब्राह्मण न होकर राजकुँवर दिखलाई देते हैं इसलिये प्राणभी मांगैं तो देनाचाहिये जिसमें मेराधर्म्म बनारहे देखो राजाबलिने शुक्रपुरोहितके बर्जनेपर भी बामनजीको तीनोंलोकों का राज्यदेडाला था

सो आजतक उसकायश छारहाहै अपनाशरीर पालनकरने में बड़ाई न मिलकर परोपकारकरने से यशप्राप्तहोता है ऐसा विचारकर जरासन्ध श्यामसुन्दरसेबोला ऐ द्विजराज पहिले तुमलोग अपनानाम निष्कपट बतलाकर जिसबस्तुकी इच्छारखते हो सो मांगो अपना प्राणतक देने में भी लोभनहींकरूंगा यहबचनसुनकर श्रीकृष्णजी बोले हे राजन् तुम सच्चपूंछतेहो तो मैं श्रीकृष्णयदुबंशी होकर यहदोनों भीमसेन व अर्ज्जुन हमारेफूफाके बेटेहैं व मेरी व तुम्हारीपहिलेभी मथुरामें भेंटहुईथी तुम मुझको पहिंचानते होगे मैं तुम्हारेयहां भिक्षालेने नहींआया अकेलीअकेला युद्धदान मांगनेआयाहूं सिवायइसके और कुछनहींचाहता यहसुनते ही जरासन्ध प्रसन्नहोकरबोला बहुतअच्छा मैंने तुम्हारा कहनामाना पर मेरेसामने से भागकर द्वारकाजाबसेहो इसलिये तुमसे लड़ते हुये मुझे लज्जाआती है व अर्ज्जुनकी अवस्था छोटी है और यह वर्ष दिनतक हिजड़ा बनकर राजाबिराट् के यहां रहाथा उससे क्यालडूं पर भीमसेन के साथ जो मेरेबराबरका है लडूंगा पहिलेआपलोग मेरेयहां भोजनकरके पीछेसे धर्मयुद्धकीजिये जब श्यामसुन्दरने भीमसेन व अर्ज्जुनसमेत राजा जरासन्धके यहां छत्तीसव्यञ्जन भोजनकिया तब राजा जरासन्धने दोगदा लोहेकी मँगवाई और भीमसेनको ब्राह्मणका वेष छुड़ाकर एकगदा उसकोदी और एकआपली जब दोनों शूरबीर जो दश २ हज़ारहाथीका बल रखतेथे नगरकेबाहर जाकर अखाड़े में खड़ेहुये तब जरासन्धने कहा हे भीमसेन तुम मेरेमकान पर ब्राह्मणरूपसे आयेथे इसलिये पहिले अपनी गदाचलाओ यहसुनकर भीमसेनबोला हे राजन् अब धर्मयुद्धमें ज्ञानचर्चा उचित न होकर जोचाहै सो गदाचलावै जब ऐसा कहकर दोनों बीर आपसमें गदायुद्ध करनेलगे तब एक दूसरेका वार गदापर रोंककर अपना अंग बचालेताथा व लड़तेसमय भीमसेनका श्वास पवनके पुत्र होने से नहीं फूलताथा पर जरासन्ध उससे गदायुद्ध अच्छा जानकर फुरती रखताथा जब इसीतरह युद्ध करतेहुये सन्ध्या होगई और कोई नहीं हारा तब दोनों बीर राजमन्दिरपर चले आये व एकसाथ भोजनकरके सोरहे और प्रातसमय फिर उठकर उसीतरह गदायुद्ध किया जब लड़ते २ दोनों गदा टूटकर चूर होजाती थीं तब वह दूसरी गदा मँगाकर आपस में लड़ते थे ॥

दो० दिनमें काज करैं नहीं बिनायुद्ध कछु और ।
रैनिसमय मिल बैठकर खानपान इकठौर ॥

जब इसीतरह लड़ते २ सब गदा टूटगई तब आपसमें मल्लयुद्ध करनेलगे छब्बीसवेंदिन जरासन्धने एकमुक्का भीमसेनकी छाती में ऐसामारा कि वहव्याकुल होगया तब उसने रातको कृष्णचन्द्रसे बिनय किया महाराज जरासन्ध बड़ा बलवान् है इसलिये अब मैं उससे लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखता कल्ह भागजाऊंगा नहीं तो मेरी लज्जा

तुम्हारे हाथहै यह बचन सुनतेही जैसे द्वारकानाथ ने अपना हाथ भीमसेनकी छाती पर फेरदिया वैसे सब पीड़ा उसकी छूटगई व पवनसुत को छाती में लगालिया और कुछ बल अपना उसे देकर कहा लड़तेसमय तुम मेरी सैन समझकर जरासन्धको मारडालना जब सत्ताईसवें दिन फिर दोनों शूरबीर लड़नेलगे उससमय दैत्यसंहारण ने भीमसेनको एक तिनका दिखलाकर बीचमें से चीरडाला तब पवनसुतने उसका भेद समझतेही श्यामसुन्दरके बल देने से जरासन्धको उठाकर पटकदिया व एकजंघा उसकी पैरसे दबाकर दूसरी जंघा पकड़के चीरडाला सो शरीर मगधपतिका जो बीचमें जोड़ाहुआ था आधोआध होकर वह मरगया जरासन्धके मरतेही देवताओं ने प्रसन्न होकर भीमसेन आदिक पर फूल बर्षाये व अनेक बाजन बजाकर जयजयकार करने लगे व श्यामसुन्दर व अर्जुनने भीमसेनकी भुजा पूजकर उसकी बड़ाई की ॥

दो० जरासन्ध याविधि हत्यो भीमसेन के हाथ ।
सब लोगनको सुख दियो माखनप्रभु यदुनाथ ॥

जब जरासन्धके मरनेका समाचार नगरमें पहुँचा तब उसकी रानी रोती व पीटती हुई आनकर श्यामसुन्दर से बोली महाराज तुम धन्यहो जो ऐसा कर्म्म आपने किया जिसने तुमको सर्व्वस्व दिया उसका प्राण तुमने लिया जो कोई अपनातनु व धन तुम्हारे भेंट करताहै उसके साथ तुम ऐसी भलाई करतेहो जैसे राजाबलि से कियाथा जब रानी ने अपने पतिवास्ते अतिबिलाप किया तब श्यामसुन्दर ने उसे धैर्य्य देकर बिदा करदिया जब सहदेवबेटा मगधपतिका बसुदेवनन्दनको परमेश्वर जानकर उनकी शरण में आया तब द्वारकानाथ ने जरासन्धकी क्रियाकर्म्म होने उपरान्त सहदेवको राज्यगद्दीपर बैठाकर अपने हाथसे तिलक लगाया व धैर्य्य देकर बोले हे बेटा तुम धर्म्म पूर्वक राज्यकरके गौ व ब्राह्मण व प्रजाका पालनकरो ॥

दो० जो नरेश हैं बन्दि में ते सब देव छुड़ाय ।
आनँद सों निज देश में राज्यकरो चितलाय ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका बीसहज़ार आठसौ राजाओंका छुड़ाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर सहदेवको राज्यगद्दी देकर उसे अपने साथ लियेहुये जहांपर सब राजा क़ैद थे आये तो क्या देखा कि एक गड़हा पहाड़की खोहसमान खोदेहुये में सब राजा बन्दहैं व एक भारी पत्थर उसके द्वारपर रक्खाहै जब सहदेवने मुरलीमनोहरकी आज्ञानुसार सब राजाओं को खोहसे बाहर

निकलवाकर उनके सामने खड़ाकिया तब वह लोग पहिरने बेड़ी व हथकड़ी व बढ़ने नख व बालसे बहुत दुःखी थे नयाजन्म पाकर हरिचरणों पर गिरपड़े व मोहनीमूर्त्ति का दर्शन पातेही सब दुःख अपना भूलगये व आनन्द होगये व बड़े प्रेमसे हाथजोड़ कर बिनयकिया हे दीनानाथ आपने दयालु होकर बड़ी कृपाकी जो यहां आनकर हमारी सुधिली नहीं तो इस कैदसे छूटना बहुत कठिनथा अब तुम्हारे दर्शन पाने से हम लोगोंका पिछला दुःख सब भूलगया ॥

दो० ऐसी बिधि राजासबै बारबार बलिजाहिं।
माखनप्रभुकी लाजसे शीश उठावैं नाहिं॥

वृन्दाबनबिहारी यह दशा उन राजाओं की देखतेही दयालु होकर जैसे सैनमें बतलाया वैसे सहदेवने उन लोगोंकी हथकड़ी व बेड़ी कटवाकर क्षौरकर्म्म कराके स्नानकराया व छत्तीसव्यंजन खिलाकर उत्तम २ भूषण व बस्त्र पहिनाये अनेकतरह के हथियार बँधवाकर श्यामसुन्दर के पास लेआया उससमय द्वारकानाथ ने अपने चतुर्भुजीरूपसे शङ्ख चक्र गदा पद्म लियेहुये जैसे उनलोगों को दर्शन दिया वैसे उन लोगोंके हृदयमें ज्ञानका प्रकाश होगया तब उन राजाओं ने बैकुण्ठनाथके सामने हाथ जोड़कर बड़े प्रेमसे आंशू बहातेहुये बिनयकिया हे दीनानाथ त्रिभुवनपति सबजीवों के उत्पत्ति व पालन करनेवाले तुम्हारे आदि व अन्तको कोई नहीं जानता हमलोग संसारी जीवोंका जो भवजालमें फँसरहे हैं सिवाय तुम्हारे कोई दूसरा इसफन्दे से बाहर निकालनेवाला नहीं है आप चाहते तो द्वारकामें बैठेहुये अपनी इच्छासे राजाजरासंध को मारकर हमें छुड़ादेते केवल तुमने अपनी कृपासे यहां आनकर हमैं कृतार्थकिया नहीं तो तुम्हारे चरणोंका दर्शन बड़े २ देवता व ऋषीश्वरों को तप व जप करनेपर भी जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता हे महाप्रभु आपको हमारी दण्डवत् पहुँचे अब हम लोगोंका मन राज्य करनेवास्ते न चाहकर यह इच्छा रखते हैं कि आठोंपहर आपके नामका स्मरण व चरणोंका ध्यानकरके तुम्हारी लीला व कथा सुनाकरैं जिसमें इस अँधियारे कुयें माया व मोह व स्त्री व पुत्रसे बाहर निकलकर भवसागर पार उतरजावें जरासन्धने हमारेसाथ बड़ा सलूककरके अपने यहां कैदकियाथा जिसकारण हमलोगों को तप व योगका फल मिलकर तुम्हारे चरणोंका दर्शन प्राप्तहुआ ॥

दो० परब्रह्म तुम ब्रह्महौ बासुदेव घनश्याम।
माखनप्रभु गोबिन्दको हितसों करैं प्रणाम॥

यह ज्ञान भराहुआ बचन सुनकर लक्ष्मीपति बोले अभिमानी राजाओं को इसी तरह दुख मिलताहै जिसतरह तुमनेपाया सुनो जिसकेमनमें दया व धर्म व मेरेचरणों

की भक्ति रहती है वहलोग संसारमें यशपाकर अन्तसमय मुक्तहोते हैं बन्ध व मोक्ष अपनेकर्मानुसार मिलताहै जो कोई क्रोध लोभ मोहको अपनेबश रखकर कुकर्म्म न करे उसेघर व बन दोनों जगहका रहना बराबर है देखो पिछलेयुगों में अभिमानने राजा नहुष व बेणु व रावण आदिकको राज्यगद्दीसे खोदिया व जिन्होंने अहंकार छोड़कर मेरी शरणपकड़ी वह लोग बिभीषण व हनुमान् व अम्बरीष व प्रह्लादके समान अपनी मनोकामनाको पहुंचकर मेरेपास बनेरहतेहैं अभिमानी मनुष्य बहुत नहींजीता राजा सहस्राबाहुको अपनेबल व हजारभुजाका अभिमान हुआथा सो परशुरामजीने उसकीभुजा फरसेसे काटकर मारडाला व भौमासुर व बाणासुर व कंसादिक अनेक राजा अभिमानी नष्टहुये हैं ।

चौ० सो अति गर्बकरो जनि कोई । छूटैगर्ब तो निर्भय होई ॥

इसलिये तुमलोग दुःख व सुखको समान समझकर सदा मेरेस्मरण व ध्यान में मग्नरहो तो तुम्हें दुःख नहीं होगा ॥

चौ० जो जन चितलावै मनमाहीं । हमहूं सदारहैं त्यहि पाहीं ॥
जो सब जन्म पापमें रहै । फिर वह शरण हमारीगहै ॥

दो० ताको मैं अतिप्रीतिकरि देत आपनो धाम ।
यामें दुखव्यापैनहीं रहैसदा बिश्राम ॥

यह सुनकर सबराजाओं ने बिनयकिया कि आपदयालुहोकर हमें अपने जप व पूजाकीबिधि बतलादीजिये तो उसीतरह तुम्हारेस्मरण व ध्यानमें लीनरहकर भवसागर पार उतरजावें यहसुनकर बसुदेवनन्दनने कहा सब वेद व शास्त्रका मुख्यज्ञान यहहै कि किसीक्षण मुझे न भूलकर मेरीकथा व लीला सुनाकरो व संसार ब्यवहार स्वप्नवत् समझकर मेरेनामपर यज्ञ व होम कियाकरो व प्रजापालन व ब्राह्मण व साधु व महात्मोंकीसेवा करना झूंठमतबोलो व काम क्रोध मोह लोभ को अपनेबश रखकर कुकर्मसे रहितरहो तो तुमलोगोंको राज्यभोगनेपर भी किसीतरहका दुःख न होकर अन्तसमय बैकुण्ठधाम मिलैगा ॥

चौ० जगमें बुद्धिमानहै सोई । जाके मोह लोभ नहिं होई ॥

दो० ज्ञानीजन न्यारो रहै ऐसीबिधि जगमाहिं ।
ज्योंअम्बुज जलमें बसै जल को परशतनाहिं ॥

सो अब तुम लोग अपने २ घरजाकर बालबच्चों का सुखदेखो राजायुधिष्ठिर ने राजसूययज्ञका आरम्भकरके तुम लोगोंको नेवता दियाहै सो हमारे पहुँचनेसे पहिले

हस्तिनापुर में जाव जब उनकी आज्ञानुसार सब राजालोग अपने २ घरजानेवास्ते तैयारहुये तब सहदेवने रथ व घोड़े व डेरे व सेवकादिक अपने यहां से उनके सङ्ग करदिये व बैकुण्ठनाथने सबकेगलेमें एक एक माला मोतियोंकी अपनेहाथसे पहिनाई जब वह सबराजा बड़ेहर्ष से श्यामसुन्दरका यशगातेहुये अपने देशको गये व सहदेवने त्रिभुवनपति व भीमसेन व अर्जुनका पूजन विधिपूर्वककिया तब श्रीकृष्णजी सहदेवको साथलेकर मगधदेशसे इन्द्रप्रस्थकोचले जब हस्तिनापुरके निकटपहुंचकर बसुदेवनन्दनने पाञ्चजन्य व भीमसेन ने पुण्डरीक व अर्जुनने देवदत्तशंख अपना २ बजाया तब उस शंखका शब्दसुनतेही राजायुधिष्ठिर बड़ेहर्षसे नकुल व सहदेव अपने भाई व सेनापतियोंसमेत आगेसे आनकर लक्ष्मीपतिको सन्मानपूर्वक अपनेघरलिवालेगये पर राजादुर्योधन शंखका शब्दसुनकर बहुत उदासहोगया जब बसुदेवनन्दन व अर्जुन व भीमसेन राजायुधिष्ठिर के चरणोंपर गिरे तब उन्होंने उनको अपनीछाती से लगाकर प्रेमका आंशूबहाया व जरासन्ध के मारेजाने का समाचार सुनकर अति प्रसन्न हुये ॥

चौहत्तरवां अध्याय ॥

राजायुधिष्ठिर के यज्ञमें सब राजाओंका आना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित राजायुधिष्ठिर ने ज्ञानकीराह श्यामसुन्दरके सामने हाथजोड़ बिनयकिया हे त्रिभुवनपति आपने ब्रह्मा व महादेव आदि सब देवतों के मालिकहोकर मेरेवास्ते ब्राह्मणरूप धरके भीखमांगना अंगीकारकिया इसलिये मैंअपने बराबर किसी दूसरेकी भाग्य नहींसमझता देखो जिनचरणोंका दर्शन बड़े २ योगी व ऋषीश्वर व देवतोंको जप व तप करने से भी जल्दीध्यानमें नहीं मिलता उन्हींचरणों से तुमने मुझे अपनाभक्त जानकर मेराघर पवित्रकिया जिनके चरणोंका धोवन गंगाजी होकर तीनोंलोकों को तारती हैं वही परब्रह्मपरमेश्वर तुम होकर मेरी आज्ञापालनकरते हो यह सब तुम्हारी दया भक्तवत्सलताकी राहसे है नहीं तो ब्रह्मा व महादेवआदिक ऐसीसामर्थ्य नहीं रखते जो तुम्हारे ऊपर आज्ञाकरैं देखो संसारी मनुष्य राज्य व धन के पानेसे किसी को अपनेबराबर नहीं समझता सो आप त्रिभुवनपति होकर मेरेयहां कोई काम छोटा या बड़ा करनेमें कुछ अभिमान नहीं रखते ॥

दो० तुम्हरे सुमिरण ध्यान में पावनहोत शरीर ।
याते सुमिरतहौं सदा माखन प्रभु बलबीर ॥

और कुन्तीने जरासन्धका मारना सुनकर श्यामसुन्दर से बिनयकियां हे महाप्रभु अब तुम्हारी कृपासे राजसूययज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्णहोगा यहबचन सुनतेही भीमसेन

हँसकर बोले हे माता तुम झूठीस्तुति मुरलीमनोहर की क्या करती हो जरासन्ध को मैंने मारा है ॥

दो० एकओर बैठेरहे आँनदसों घनश्याम ।
जरासन्ध बलवान सों मैं कीन्हों संग्राम ॥

यहबात सुनकर केशवमूर्त्ति बोले हे माता भीमसेन सत्य कहते हैं पर मैंने इसको सैनसे बतलादिया था कि जरासन्धकी दोनोंटांगें चीरकर मारडालो उसी उपाय से वहमारागया यहसुनकर युधिष्ठिर आदिक सब कोई हँसनेलगे तबसातोंद्वीप नवोंखण्ड के चन्द्रबंशी व सूर्यबंशीराजा अपनी २ स्त्रियोंसमेत द्रव्य व रत्नादिक भेंटदेनेवास्ते साथलेकर हस्तिनापुरमेंआये तब राजायुधिष्ठिरने भेंट उनकी लेकर नगरकेचारोंतरफ उनलोगोंको डेरादिया व यथायोग्य सबका सन्मानकिया व उनमें जो राजाजरासन्ध की कैदसे छूटकर आयेथे वह लोग बड़ेहर्षसे यज्ञका सबकाम करनेलगे व सब नेवतहारी राजाओंने श्यामसुन्दर व रुक्मिणीआदिक आठोंपटरानियोंका दर्शन प्रेमसेकरके लोचनों का फलपाया व नकुल जाकर भीष्मपितामह व दुर्योधनआदिक कौरवों को अपने यहां लिवालाया व शुकदेव व वेदव्यास व नारदमुनि व कश्यप व बशिष्ठ व बामदेव व अत्रि व परशुराम व धूम्र व भरद्वाज व च्यवन व कण्व व मैत्रेयआदिक बहुत से ऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व गन्धर्व्व व किन्नर व यक्ष व लोकपालादिक सबदेवता व महात्मालोग अपनी २ स्त्रियोंसमेत राजायुधिष्ठिरका नेवता व बैकुण्ठनाथके दर्शन करनेवास्ते उसयज्ञमें आये व उन्होंने त्रिभुवनपतिका दर्शनकरके अपना २ जन्म स्वार्थकिया तब राजायुधिष्ठिरने देवता व ऋषीश्वरोंका पूजन बिधिपूर्व्वककरके उन्हें जड़ाऊसिंहासन पर बैठाला व सिवायउनके और बहुतसे अनगिनत चारोंवर्ण जो अनेकदेशसे वहां आये उनलोगोंका सन्मान यथायोग्य किया व श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार एक २ काम यज्ञका सबराजों को बांटदिया जब यज्ञकरने का मुहूर्त्तआया तब द्वारकानाथ ने हँसकर राजायुधिष्ठिर से कहा अबतुम यज्ञकरनेवास्ते बैठो हम व अर्जुनआदिक सबलोगोंका सन्मानकरैंगे यहसुनतेही राजायुधिष्ठिरने सब कपड़े उतारकर नईधोतीपहिनली व शुभलग्नमें सुवर्णकेहलसे अपनेहाथ यज्ञकरनेवास्ते पृथ्वीजोतकर तैयारकी व साकल्यआदिक सबवस्तु यज्ञकी सुवर्ण के बर्त्तनों में मँगाकर ऋषीश्वरोंके पास रखवादी जब ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने वेदी व अग्निकुण्ड बनाकर वेद मंत्रपढ़ना आरम्भकिया तब राजायुधिष्ठिर द्रौपदी से गांठजोड़कर यज्ञशाला में आये व आसनपर बैठकर अग्निकुण्ड में आहुति देनेलगे उससमय देवतोंने बैकुण्ठनाथकी आज्ञानुसार प्रत्यक्ष अपना २ हाथ फैलाकर यज्ञकाभाग लिया व राजायुधिष्ठिरने सब ब्राह्मणों के हाथमें सोनेकास्रुवा होमकरनेवास्ते दियाथा और सब सुनहलेबर्त्तन यज्ञके

देखकर नेवतेवाले आश्चर्यमानके कहते थे देखो इतनाद्रव्य राजाने कहांसे पाया जो ऐसीतय्यारी की उनमें ज्ञानीलोग उत्तरदेतेथे जिसपर लक्ष्मीपति आप सहायकहैं उन को क्याकमी है यहबचन उनलोगोंका सुनतेही राजायुधिष्ठिरहँसकर श्यामसुन्दरसे बोले ॥

दो० कहत तुम्हारे नाम ते सिद्धि होत सब काज।
नमस्कार तुमको करौं यज्ञपुरुष यदुराज॥

जब राजसूययज्ञ राजायुधिष्ठिरका अच्छीतरह सम्पूर्णहुआ तब सब देवता व गन्धर्वादिक बड़ाई राजायुधिष्ठिरके भाग्यकी करनेलगे व दुन्दुभी बजाकर उनपर पुष्पोंकी वर्षा की उससमय राजायुधिष्ठिर ने भीष्मपितामह व दूसरे छत्रधारी राजाओं से जो वहां बैठे थे पूछा ॥

चौ० जग में जो कुछ कारज कीजै। निज पुरुषन से आज्ञालीजै॥
तो वह काज सदा शुभ होय। यह निश्चयजानो सबकोय॥
याते हमैं मंत्र यक दीजै। पूजा प्रथम कौन की कीजै॥
कौन बड़े देवन के ईश। ताही पूजि नवावैं शीश॥

यहबातसुनकर अभीतक किसीने उत्तर नहींदियाथा कि सहदेव जरासन्धके पुत्रने उठकर राजायुधिष्ठिर से बिनयकिया महाराज आप जानबूझकर क्यापूंछते हैं सिवाय द्वारकानाथ त्रिभुवनपतिके दूसरा कौन पूजनेयोग्यहै जिसका पूजनकरोगे श्यामसुन्दर ने सबजगत्‌की उत्पत्ति व पालन व नाश करनेवाले होकर पृथ्वी का भारउतारने व अधर्मियोंको मारनेवास्ते अपनीइच्छासे अवतारलिया है इसलिये उन्हींको अग्निरूप व यज्ञपुरुषजानना चाहिये जिसतरह वृक्षकीजड़में पानीदेने से सबडाली व पत्तोंको वह जल गुणकरताहै उसीतरह कृष्णचन्द्रकी पूजाकरनेसे सबदेवता तृप्तहोंगे बसुदेवनन्दन का भेद कोईनहींजानता जितनीबस्तु संसारमें देखतेहो सब उन्हींकी उत्पत्तिकीहुई हैं व गंगाजी इनकेचरणोंका धोवनहोकर तीनोंलोकोंको तारती हैं इनकास्मरण व ध्यान करने व कथासुननेसे सबपाप छूटकर मुक्तिमिलती है जिसजगह आप साक्षात् परब्रह्म परमेश्वर बिराजते हैं वहां दूसरेकीपूजा नहींहोसक्ती और वहसब परमेश्वरकी माया है जो हमलोग अपना भाई बन्धु व यदुबंशी इनको समझते हैं ॥

चौ० सब संसार शरीर समाना। प्राण रूप हैं यह भगवाना॥
सर्व आतमा इन को जानो। पूरण शांत रूप पहिचानो॥
दो० हरि जू की पूजा करै मन चित दै जो कोय।
मानो पूजे देव सब सुफल कामना होय॥

यहबचन सहदेवका सुनकर श्यामसुन्दर उसे सैनसे बर्जने लगे तुम मतकुछकहो पर जितने देवता व ऋषीश्वर व ज्ञानी राजा जो उसयज्ञमें बैठेथे यहबात सुनते ही बोलउठे हे सहदेव तेरीबुद्धि व माता व तेरेपिता व गुरूको धन्य है जिन्हों ने तुझको ऐसा ज्ञानसिखाया तुम्हारे पुरुषा इसीतरहके धर्मात्मा व ज्ञानी होतेआये हैं जब राजा युधिष्ठिर ने यहबात सहदेव व ज्ञानीराजाओं की अपनी इच्छानुसार सुनी तब बड़ेहर्ष से जड़ाऊसिंहासन मँगवाकर द्वारकानाथको रुक्मिणी आदिक आठों पटरानी समेत उसपर बैठाला व चरणउनका धोकर चरणामृत लिया और वहजल अपने परिवार समेत शिर व आंखों में लगाया व सबदेवता व राजाओंने वह चरणामृतपीकर अपना २ जन्म सुफल किया व राजायुधिष्ठिर ने बैकुण्ठनाथको पीताम्बरपहिनाया व केसरि व रक्तचन्दन का तिलकलगाकर रेशमीउपर्ना ओढ़ाया व रत्नजटित उत्तम २ भूषण अंग २ में पहिनाकर जड़ाऊ किरीट व मुकुट शिरपरबांधा व रत्न व मोतियों का हार व सुगन्धित पुष्पोंकी माला गले में पहिनादी व बिधिपूर्वक पूजाकरके बहुतसारत्न व द्रव्यादिक उनकेआगे भेंटरखकर बिनयकी हे लक्ष्मीपति आप तीनोंलोक व सबबस्तुके मालिक हैं इसलिये मुझे तुमको भेंटते हुये लज्जा आती है यह आनन्द देखते ही देवताओं ने श्यामसुन्दर को दण्डवत् करके उन पर फूल बरसाये व बसुदेवनन्दन की बड़ाई करने लगे ॥

दो० ऐसी बिधि पूजे जभी माखनप्रभु जगदीश ।
भये लोग आनन्द सब राजहि देत अशीश ॥

उससमय द्वारकानाथ ऐसेसुन्दर मालूमदेते थे जिनकी उपमा कही नहीं जाती व कोई राजा अच्छीतरह आंखउठाकर इसकारण उनकी ओर देखनहींसक्ता था जिसमें उन्हें दृष्टि न लगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर की पूजाकरने से जितने छोटे व बड़े वहांपरथे सबप्रसन्नहुये पर शिशुपाल चंदेली के राजा को यहबात अच्छी नहीं मालूमहुई इसलिये वह थोड़ी देर नहीं बोला फिर कुछशोच बिचारकरके अपनीमृत्यु निकटपहुँचने से उठखड़ाहुआ व क्रोधसे सभामें हाथउठाकर बोला हे राजायुधिष्ठिर व धृतराष्ट्र व भीष्मपितामह व दुर्योधनआदिक तुमलोग बड़े २ ज्ञानी व धर्मात्माहोकर ऐसे मूर्खहोगये कि एकबालकके कहनेसे पूजा श्रीकृष्णजी की इसतरहपरकी जिसतरह कोईमनुष्य यज्ञ व होमकरनेकी खीर काकको खिलादेवै तुम लोग नहींजानते कि बसुदेवनन्दनने बहुत दिनतक बनमें गोचराकर अहीरों के संग रोटीखाई व परस्त्रियों के साथ रासलीलाकरके भोग व बिलास किया जबसे आज तक यहबात अच्छीतरह नहींमालूमहुई कि ये बसुदेव यादवकेबेटे हैं या नन्द के तब इनका कौनबर्ण व किसकाबालक कहाजावे यह बड़ाआश्चर्य है जो तुमलोग ऐसे

आदमीको जिसके माता पिताका ठिकानानहींलगता अलखअगोचर समझते हो इन्हीं श्रीकृष्णने राजाइन्द्रकी पूजाछुड़ाकर गोबर्द्धनपहाड़को पुजवायाथा ये शास्त्रकेअनुसार न चलकर जो कुछ इनकेमनमें आताहै सो करते हैं सिवाय दूध व दहीआदिक चुराने व अधर्मकरने के कोई शुभकाम इन्होंने नहींकिया देखो ये शत्रुके भय से जन्मभूमि अपनी छोड़कर समुद्रकेकिनारे जाबसे हैं इसलिये ब्रजबासियोंको इनके बिरहमें अति दुःखहोताहै जिसपरभी ये कुछ ध्याननहींकरते व वृन्दाबनमेंरहकर इन्होंने गोपियोंका चीर चुरायाथा और यदुबंशीलोग राजाययाति के शापसे तिलकधारी राजा न होकर थोड़ेदिनों से बढ़गये हैं फिर तुमलोगों ने क्यासमझकर इनकीपूजाकी मैं परमेश्वरकी सौगन्दखाकर कहताहूं ये सबबातें कहनेसे मुझे कुछ अपनी पूजाकराने की इच्छानहीं है जो सचथा सो कहदिया देखो जहांपर बेदव्यास व नारदमुनि व पराशरआदिक बड़ेबड़े ऋषीश्वर व ब्रह्मा व महादेव व इन्द्रआदिक सबदेवता बैठे हैं वहांपर श्रीकृष्ण की पूजाकरना इसतरह समझनाचाहिये जिसतरह होमकीसामग्री कोई कुत्तेको खिला-देवै व राजायुधिष्ठिर श्यामसुन्दरकी बड़ाई जो करते हैं तो इसका यहकारण है जिस तरह कुन्ती ने अपनेपतिको छोड़के दूसरों के बीर्य से युधिष्ठिरआदिकको उत्पन्नकिया उसीतरह श्रीकृष्णजी के बापकाठिकाना नहींलगता अपनेबराबरवालों की सबचाहना करते हैं केशवमूर्त्ति शिशुपालकी बातका कुछउत्तर न देकर एकएक दुर्बचन कहनेपर रेखा खींचते जाते थे ॥

दो० मथुरा गया प्रयाग तजि गयो औरही देश ।
खारी जल ऊपर बस्यो किये ठगनको भेश ॥

जब इसीतरह अनेक दुर्बचन शिशुपाल द्वारकानाथको कहनेलगा तब ज्ञानीलोग परमेश्वरकी निन्दा सुनने में अधर्म समझकर वहांसे उठगये व भीमसेन व द्रोणाचार्य व अर्ज्जुन ने क्रोधित होकर शिशुपाल से कहा हे मूर्ख अभिमानी तू हमारे सन्मुख त्रिभुवनपति की निन्दा करता है चुपरह नहीं तो अभी तुझे मारडालते हैं जब ऐसा कहकर भीमसेन शिशुपालके मारने वास्ते दौड़ा तब शिशुपालभी उसके सन्मुख जाकर ऐसा ललकारा कि सभावाले डरगये उससमय श्यामसुन्दर ने सिंहासन से उतरकर भीमसेन आदिकको समझाया कि तुमलोग शिशुपाल पर शस्त्र मतचलाओ व दुर्बचन कहनेसे मतबर्जो जो यहचाहै सो कहै देखो क्षणभरमें यह आप माराजायगा ॥

दो० भीमादिक सबसे कह्यो क्रोध न कीजै आज ।
निजभ्राताके यज्ञमें बिघ्नकरो क्यहि काज ॥

जब बैकुण्ठनाथके बर्जने से भीमसेन ने शिशुपालको नहीं मारा तब राजायुधिष्ठिर

शोचित होकर बोले देखो शिशुपाल मेरी सभामें बैकुण्ठनाथको ऐसा दुर्बचन कहता है क्या करूं बिना आज्ञा त्रिभुवनपतिकी कुछ कहने नहीं सक्ता जब इसीतरह शिशुपालने एकसौएक कठोरबचन श्यामसुन्दरको कहे व युधिष्ठिर उनके भक्तकोभी दुर्बचन सुनाया तब बसुदेवनन्दन ने क्रोधवश होकर पूजाकी थालीको अपने मन्त्रसे सुदर्शन चक्र बनाकर शिशुपालका शिर काटडाला तो उसके धड़से एक ज्योति निकल के पहले आकाशमें जाकर फिर श्रीकृष्णजी के मुखमें समागई यह चरित्र देखकर देवताओं ने श्यामसुन्दर पर फूल बरसाये व ऋषीश्वरलोग उनकी स्तुति करने लगे व दूसरे राजाओं ने शिशुपाल ऐसे अधर्मीकी मुक्ति देखकर बहुत आश्चर्य माना इतनी कथासुनकर परीक्षित ने पूँछा हे मुनिनाथ श्रीकृष्णजीने शिशुपालको ऐसे कठोर बचन कहने पर किसतरह मुक्तिदी व एकसौएक रेखा खींचकर उसे मारनेका क्या कारण था शुकदेवजी बोले हे राजा यह हाल इसतरह परहै कि जय व विजयने सनकादिक के शाप देने से तीनबेर संसारमें जन्मलिया और तीनबेर परमेश्वर से शत्रुताई करके मुक्तिपाई जब पहिले उन दोनों ने हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु होकर देवतों को दुःख दिया तब नारायणजी ने बाराह व नृसिंहअवतार लेकर उनका बधकिया दूसरी बेर जब वे रावण व कुम्भकर्णका जन्म पाकर गो व ब्राह्मणोंको दुःख देनेलगे तब बैकुण्ठनाथने श्रीरामचन्द्रका अवतार लेकर उनको मारडाला ॥

दो० अब यह तीजे जन्ममें भयो एक शिशुपाल।
दन्तबक्र है दूसरो असुरन को भूपाल॥

हे राजन् शिशुपाल व दन्तबक्र मुरलीमनोहर को अपना शत्रु जानकर दिन रात ध्यान उनका करते थे इसीवास्ते श्रीकृष्णजी परब्रह्म अवतारने शापकी अवधि बीतने पर शिशुपाल व दन्तबक्रका शिर सुदर्शनचक्रसे काटकर उनको बैकुण्ठमें भेजदिया व सौरेखा खींचनेका कारण यहहै कि महादेवी नाम बहिन बसुदेवजी की दमघोषराजा चन्देलीको ब्याहीगईथी जब उसकेपेटसे शिशुपाल जिसके तीनआंखें व चार भुजायें थीं उत्पन्नहुआ व राजाने ज्योतिषियोंको बुलाकर उसकी जन्मकुण्डलीका फल पूंछा तब ब्राह्मणों ने बिचारकरकहा महाराज यहबालक अतिबलवान् व प्रतापी होकर उस मनुष्यके हाथसे माराजायगा जिसके गलेमिलने से एकआंख व दो भुजा इसकी गुप्त होजावेंगी दूसराकोई संसार में इसको मारने नहींसक्ता जब यहबचन ज्योतिषियों का महादेवीने सुना तब वह इसबातकी परीक्षा लेनेवास्ते शिशुपाल अपनेबेटे को सबकी गोदमें देकर गलेलगानेलगी एकबेर महादेवी शिशुपालसमेत द्वारकामें शूरसेन अपने बापके यहांजाकर थोड़ेदिन रही जबउसने ज्योतिषियोंका बचन यादकरके अपनेबेटे को यदुबंशियों के साथ गलेमिलवाया तब श्यामसुन्दरसे गलेमिलतेही दोभुजा व एक

आंख शिशुपालकी लोपहोगई यहदशा देखते ही महादेवी ने बिनयपूर्वक कहा हे द्वारकानाथ मैं तुमसे यह भीखमांगती हूं कि अपनी फुआ के बेटा शिशुपालको भाई समझकर कभीमतमारना यहबचन सुनकर त्रिभुवनपति बोले हे फुआ मैं तेरे बेटे के सौ अपराध क्षमाकरूंगा अधिक अपराध करेगा तो बिनामारे न छोडूंगा इसबातका बचन महादेवी लक्ष्मीपतिसे लेकर अपनेघर चलीगई व उसने यह बिचारकर अपने मनको धैर्य्यदिया कि मेराबालक किसवास्ते सौ अपराध बसुदेवनन्दन के करैगा इसी वास्ते श्यामसुन्दरने सौ कठोरबचन शिशुपाल के सहकर उसे मारा और वही गुप्त बात द्वारकानाथ ने राजसूययज्ञमें कहकर सब राजाओं का सन्देह छुड़ायाथा यह सुन कर परीक्षितने कहा हे मुनिनाथ अब आगे कथा सुनाइये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब राजायुधिष्ठिरका यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्णहुआ तब उन्हों ने न्योतहारी राजाओं को उनकी स्त्रियोंसमेत यथायोग्य उत्तम २ भूषण व बस्त्र देकर बिदाकिया औरवे लोग आनन्दपूर्व्वक अपने २ घरको गये व जितने छोटे बड़े उस यज्ञमें आयेथे वे लोग राजा युधिष्ठिरसे ऐसे प्रसन्न हुये कि किसीका मन घर जानेवास्ते नहीं चाहताथा पर राजादुर्योधन को धर्मपुत्रकी बड़ाई सुनने व प्रताप देखनेसे ऐसी डाहहुई कि क्रोधित होकर अपने घर चलागया ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

राजा युधिष्ठिर का शोभास्थान वर्णन करना ॥

राजा परीक्षित इतनी कथा सुनकर बोले हे मुनिनाथ जहां सबराजा उस यज्ञ करने से प्रसन्नहुये थे वहां दुर्योधन ने क्यों खेद किया व यज्ञका काम किसतरह सब को बांटा गया था यह कथा कहिये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित तुम धन्यहौ जो हरिकथा सुनने से तृप्त नहीं होते सुनो अर्जुन आदिक चारोभाई राजा युधिष्ठिर की आज्ञा आनन्दपूर्वक मानकर किसी छोटेबड़े काम करने में लज्जा नहीं रखते थे पर सबबातों के मालिक श्यामसुन्दर थे इसलिये उन्हों ने यथायोग्य सब काम राजाओं को सौंप दिया भीमसेन को भोजन कराने का काम सौंपकर बांटदेना उसका धृष्टद्युम्न के अधीन किया कोष द्रव्यादिक का राजा दुर्योधनको सौंपकर खर्च करना उसका कर्ण के जिम्मे किया था जिसका दान आजतक संसारमें प्रकटहै व सन्मान करना व सुधि लेना न्योतेवाले राजाओं का अर्जुन को सौंपकर अलंकृत करना स्थान सभा का बिदुरके अधीन हुआथा व देवता व ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंकी पूजा व सेवा करना सहदेव को सौंपा और इकट्ठीकरलाना द्रव्यादिक सब बस्तु का नकुलके जिम्मे किया व श्रीकृष्णजी ने ब्राह्मणों का पैर धोना और जूठी पत्तल उनकी उठावना अपने जिम्मे रक्खाथा व द्रौपदी रुक्मिणी आदिक का शिष्टाचार अन्तःकरण से करतीथीं इसीतरह

पर राजा युधिष्ठिर ने मुरलीमनोहरकी आज्ञानुसार जो काम यज्ञका जिस राजा को सौंपदियाथा वे लोग उसकामको बड़े प्रेमसे करते थे पर राजादुर्योधन कपटकी राह एक रुपयेकी जगह दशरुपया राजायुधिष्ठिरका इसकारण लोगोंको देडालाथा जिसमें द्रव्य बँटिजावे तो राजायुधिष्ठिर की हँसी हो सो बैकुण्ठनाथकी दयासे इसतरह बहुत देने में अधिकयश व धर्म राजाका होताथा व दुर्योधनके हाथमें चक्ररहनेसे ऐसाप्रभाव था कि जिसभंडारे से वह एकरुपया खर्चकरै उसमें दशगुणा बढ़जावे इसकारण द्वारकानाथ अन्तर्यामीने उसे कोषद्रव्यादिकका सौंपाथा पर दुर्योधनको यह महिमा नहीं मालूमथी हे परीक्षित जब अच्छी तरह यशपूर्वक यज्ञ राजायुधिष्ठिरका सम्पूर्णहुआ तब धर्मराज ने असंख्यद्रव्य व रत्न व भूषण व वस्त्रादिक ब्राह्मण व ऋषीश्वर यज्ञकरने वाले व उनकी स्त्रियों को इच्छापूर्वक देकर प्रसन्न किया व सब छोटे बड़ोंको साथलिये हुये गंगाकिनारे जाकर वहां द्रौपदीसमेत बिधिपूर्वक स्नान किया उससमय ब्राह्मण व ऋषीश्वरोंने वेदपढ़ा व देवतोंने राजायुधिष्ठिरपर फूलबर्षाये और कहा धन्यभाग्य धर्मराजकाहै जिसने ऐसा कठिनयज्ञ सम्पूर्णकिया व अप्सरोंने अपने २ बिमानोंपर नाच कर गन्धर्बोंने गानासुनाया ॥

चौ० या बिधिसकल स्वर्गके बासी। देखि यज्ञबिधिभये हुलासी ॥

दो० नरनारी छोटे बड़े कहत धन्य यदुराज ।
जिनकी कृपा सुदृष्टि से भयो यज्ञको काज ॥

उससमय सब हस्तिनापुरबासी उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनेहुये शोभादेखनेवास्ते अपने २ कोठे व खिड़कियों पर बैठकर बड़ाई भाग्य राजायुधिष्ठिरकी करते थे उनका रूप व नगरकी शोभादेखकर सब यदुबंशी आपसमें कहनेलगे हमलोग जानते थे कि द्वारकापुरीके बराबर दूसरानगर संसार में न होगा सो हस्तिनापुर उससे भी उत्तम दिखलाईदिया जब राजायुधिष्ठिर स्नानकरके अपनेस्थानपर आये तब जितनेब्राह्मण व याचक व भिखारी वहांइकट्ठे हुये थे उनको मुंहमांगा दान व दक्षिणादेकर आनन्द पूर्व्वक बिदाकिया जब ऐसी दातव्य युधिष्ठिरकी देखकर सब छोटे बड़े उनका यश गानेलगे तब दुर्योधनको युधिष्ठिरकी बड़ाई सुनने व सब राजाओं को उनकेसामने दण्डवत् करते देखनेसे बहुत बहुत डाह उत्पन्न हुई ॥

दो० यज्ञकथा शिशुपालबध कहै सुनै जो कोय ।
पावतफल वह यज्ञको लहै मुक्तिफल सोय ॥

श्यामसुन्दर अपनी पटरानियोंको नित्यसमझाया करते थे कि तुमलोग सेवा कुन्ती व द्रौपदीकी अच्छीतरह करना जिसमें वे किसीबातका खेद न पावैं व पटरानियोंकी

सुन्दरताई व भूषण व वस्त्रकी तय्यारी देखने व घुंघुरूकाशब्द सुननेसे देवताओं का चित्त ठिकाने नहीं रहताथा मनुष्य कौन गिनतीमें है जब राजायुधिष्ठिर अपने उत्तम स्थानमें जो मयनामदानवने बनादियाथा जड़ाऊ सिंहासनपर द्रौपदीसमेत बैठे तब द्वारकानाथकी इच्छानुसार अप्सरा व गन्धर्बों ने देवलोक से आनकर वहां नाचना व गाना आरम्भ कियाथा उससमय शोभा धर्मराजकी ऐसी मालूम देतीथी जैसे इन्द्र अमरावतीपुरी में अपनी स्त्रीको साथ लेकर इन्द्रासन पर बैठें पर राजायुधिष्ठिर ऐसे सुख व यश मिलनेपर भी कुछ अभिमान न लाकर यह समझते थे कि श्यामसुन्दरके प्रतापसे मेरा यज्ञ सम्पूर्ण होकर यह यश मिलता है जिससमय राजायुधिष्ठिर इन्द्रके समान राजसभामें बैठेहुये अप्सराओंका नाच देखरहे थे उसीसमय राजादुर्योधन बहुत सेना साथ लिये अभिमानपूर्वक वहां आनकर स्थान देखनेचला उसमें बिल्लौर व रत्नादिक जड़े होकर कईजगह कुण्ड बिल्लौर के ऐसे बनेथे जिसमें पानी भराहुआ मालूम होताथा व कई जगह जल भरेहुये कुण्ड सूखे दिखलाई देते थे जब दुर्योधन ने धोखे से सूखे आंगनमें पानी समझकर अपना जामा उठाया व दूसरी जगह सूखा स्थान जानकर पानी में कपड़ोंसमेत चलागया तब रुक्मिणी व द्रौपदी आदिक स्त्रियां खिड़कियों में से यह दशा देखकर हँसनेलगीं व भीमसेन खिलखिलाकर बोला हे धृतराष्ट्र के बेटा आगे चलो यह दशा दुर्योधनकी देखकर राजायुधिष्ठिर ने भीमसेनको हँसने से बहुतबर्जा पर वह उनके बर्जनेपर भी खिलखिलाकर हँसतारहा तब दुर्योधन अति लज्जित होकर मनमें कहनेलगा देखो ये लोग मुझे अन्धा बनाकर मेरी हँसी करते हैं जब ऐसा बिचारकर दुर्योधन क्रोधबश बिना स्थान देखे उसी जगहसे अपने घर फिरगया तब राजायुधिष्ठिर बहुत शोच करनेलगे पर भीमसेन व श्यामसुन्दर प्रसन्न हुये व दुर्योधन अपनी सभामें बैठकर मंत्रियों से बोला देखो श्रीकृष्णका बल पाकर युधिष्ठिरको ऐसा अभिमान होगया कि आज सभामें भीमसेन ने मेरी हँसीकी इसबात का बदला उनसे न लूं तो आजसे अपना नाम दुर्योधन न रक्खूं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित दुर्योधन से अधिक शत्रुताई होने का यही कारणथा उसी दिनसे दुर्योधनने युधिष्ठिर आदिकके पीछे पड़कर उन्हें बनबास दिया बिस्तारपूर्व्वक हाल उसका महाभारतमें लिखाहै श्रीकृष्णजी परब्रह्मपरमेश्वर महाभारतकराके बड़े २ शूरबीरों का नाश कराना चाहते थे इसलिये उनकी इच्छानुसार कौरवों व पाण्डवों में शत्रुताई हुई थी ॥

दो० जो प्रकटे संसार में भार उतारन काज ।
भारत चाहत हैं करन माखन प्रभु यदुराज ॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

राजाशाल्वका द्वारकामें युद्ध करना ॥

शुकदेवजीनेकहा हे परीक्षित जिसदिन राजाशाल्व जो शिशुपालकी बरातमें कुंडिनपुर जाकर श्याम व बलरामसे हारमानके भागआयाथा उसीदिन उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि मैं यदुवंशियोंका बंश संसारमें जीताछोडूं तो आजसे क्षत्रिय न कहलाऊं ॥

दो० माख्यो जब शिशुपालको माखन प्रभु गोपाल ।
शाल्वनृपतिअतिदुखितभोसुनतमित्रकोकाल ॥

शिशुपालका मरना सुनतेही राजाशाल्वने बिचारकिया कि यदुवंशियों को जो बड़े बलिष्ठ हैं बिना बरदान पाये किसी देवताका जीतना कठिन है जब ऐसा बिचारकर राजाशाल्व शिशुपालका बदला लेनेवास्ते तप व ध्यान महादेवजीका सच्चेमनसे करने लगा व बर्षदिनतक बराबर केवल मुट्ठीभर राख सन्ध्यासमय खाकर रहा तब शिवजीने प्रसन्नहोकर अपनादर्शन उसे दिया और कहा तुझ जो इच्छाहो सो बरदान मांग ॥

दो० महामुदित करजोरिकै बोल्यो शाल्वनरेश ।
शत्रु बैर मोहिं दीजिये भोलानाथ महेश ॥

हे महाप्रभु मुझे ऐसा बिमान आकाशमें उड़नेवाला देव जिसे देखकर यदुबंशी लोग डरजावें व कोईशस्त्र देवता व दैत्यकाभी उस बिमानपर न लगै यह बचन सुनते ही शिवजीने मयनाम दानव को बुलाकर कहा तू एकबिमान बहुतबड़ा व चौड़ा राजाशाल्वकेवास्ते ऐसा बनादे जिसमें कोईशस्त्र न लगै व जहांचाहै वहां उड़ाताहुआ क्षणभरमें लेजावै जब मयदानवने महादेवजीकी आज्ञानुसार एक बिमान अष्टधाती बहुतलम्बा व चौड़ा अपनी मायासे तैयार करदिया तब राजाशाल्व अपने शूरबीर व सेना को शस्त्रसमेत उस बिमानमें बैठाकर द्वारकाकीओर गया उनदिनों श्यामसुन्दर प्रद्युम्नआदिक को यज्ञ होने उपरान्त द्वारकामें भेजकर आप राजायुधिष्ठिरके प्रेमसे बलरामसमेत इन्द्रप्रस्थमें रहगयेथे जब उनके पीछे राजाशाल्वने पहुँचकर द्वारकापुरी को चारोंओरसे घेरलिया व वहांके वृक्ष व स्थानों को जड़से उखाड़कर गिरानेलगा व उसकी मायासे द्वारकापुरीमें प्रलयकालकी आंधी चलकर आगि व पत्थर बरसने लगे तब द्वारकाबासियोंने घबड़ाकर राजाउग्रसेनसे यह हाल कहा राजाने प्रद्युम्न व साम्ब को बुलाकर आज्ञादी कि श्याम व बलरामका न रहना सुनकर राजाशाल्व हम लोगों को दुःख देने आया है इसलिये तुम दोनोंभाई हमारी सब सेना साथ लेकर उससे युद्धकरो यह बचन सुनतेही जब प्रद्युम्नजीने द्वारकाबासियों को धैर्य्यदिया और

साम्ब व सात्यकी व कृतवर्म्मादिक शूरबीर व बहुतसेना अपने साथ लेकर नगरके बाहर लड़नेआये तब राजाशाल्वने प्रद्युम्न को देखकर ऐसे बाणचलाये कि चारोंतरफ घटारूपी अँधियारा छागया उस समय प्रद्युम्नने जैसे द्युतिवन्तशस्त्र अपना छोड़ा वैसे अँधियारा छूटकर इसतरह उजियाला होगया जिसतरह सूर्य्य निकलने से कुहिरा नहीं रहजाता जब शाल्वका रथ सन्मुख आया तब प्रद्युम्नने एक तीरसे रथकी ध्वजा काट कर दूसरे बाणसे सारथीको मारडाला व तीसरे तीरसे रथके घोड़ोंको मारकर पृथ्वीपर गिरा दिया व बहुत शूरबीर उसके साथियों को अपने बाणसे घायल करडाला जब राजाशाल्व ऐसी शूरताई प्रद्युम्नकी देखकर घबड़ागया तब सन्मुख लड़नेकी सामर्थ्य न रखकर मायायुद्ध करनेलगा कभी बड़ास्वरूप बनाकर सामने आता व कभी छोटा रूप बनाकर आकाशसे आगि व पत्थर बरसाता था ॥

दो० ऐसी बिधि माया बहुत करी मूढ़ रणमाहिं ।
श्रीप्रद्युम्न प्रतापसे दूरहोत क्षणमाहिं ॥

इधर तो शाल्व अपने मायायुद्धसे यदुबंशियोंको दुःखदेरहाथा उधरदेवमान उसके मन्त्रीने प्रद्युम्नपर बाणचलाना आरम्भकिया उससमय कामरूपने अपने तीरोंसेउसका बाण काटकर एकतीर ऐसा उसकेमारा कि देवमान अचेत होगया जब थोड़ीदेर में देवमानका चित्त ठिकानेहुआ तब उसने क्रोधितहोकर एकगदा ऐसे जोरसे प्रद्युम्नके शिरपरमारी कि वे मूर्च्छाखाकर रथमें गिरपड़े तब देवमान चिल्लाकर बोला कि मैंने कामरूपको मारडाला जब यह बचनसुनकर सब यदुबंशी घबड़ागये तो धर्म्मपति रथवान् पुत्रदारुक सारथीने कृष्णकुमारको बहुत अचेतदेखा तब वह रथ उनका रण-भूमि से अलगलेगया जब थोड़ीदेर बीते प्रद्युम्न चैतन्यहुये तब उन्होंने रथ अपना रणभूमिमें न देखकर बड़े क्रोधसे सारथीसे कहा तैंने बहुत बुराकिया जो मुझेरणभूमि से अलग लेआया ॥

चौ० ऐसो नहीं उचितहै तोहिं । जानि अचेत भगायो मोहिं ॥
यदुकुलमें ऐसो नहिं कोई । खेत छोड़ि जो भागा होई ॥

हे धर्म्मपति तैंने मुझे कभी युद्धसे भागते देखाथा जो आज रणभूमिसे भगाकरमेरे माथेपर कलंकका तिलकलगाया अबमैं श्याम व बलरामको अपनामुँह क्या दिख-लाऊंगा संसारीलोग मेरीहँसी करके भाईलोग मुझे नपुंसक कहैंगे व रुक्मिणीमाता मेरे उत्पन्नहोनेका दुःखमानकर भौजाइयांमुझे लज्जितकरैंगी कि तैंने यहकामकरके अपने बापका नामधराया व जगत्में मेरी हँसी कराई ॥

चौ० रणमें मरे परमपद पावै । जीतहोय तौ शूर कहावै ॥

दो० रामकृष्ण सुनिहैं जबै पछितैहैं मनमाहिं ।
कहिहैं प्रकस्यो प्रद्युमन महाकपूतनमाहिं ॥

जबधर्म्मपति ने यहसबबात प्रद्युम्नकीसुनी तब रथसे उतरहाथजोड़कर बिनय की हे दीनदयालु आपसे कुछहाल राजनीतिका छिपा न होकर मेरेगुरुने ऐसा बतलाया है कि जबमहारथी लड़तेसमय अचेत होजावे तब उसके सारथीको चाहिये कि रथ उसका रणभूमिसे अलग लेकर खड़ारक्खे व सारथीघायल होजावे तो महारथीको उस की रक्षाकरनीउचितहै इसलिये जबतुम गदालगनेसे अचेत होगये तबमैंने रथतुम्हारा रणभूमिसे बिलग लाकर खड़ा करदिया ॥

दो० गुरुकी आज्ञा जानकर मैं कीन्ह्यों यहकाज ।
मोहिं दोषलागैनहीं यदुकुल के शिरताज ॥

हे महाप्रभु दौड़ातेसमय रथमेरापीछे रहकर रस्सी या पहिया उसकाटूटजाता तो मैं दोषी होता बिनाअपराध सेवकपर क्रोधकरना न चाहिये थोड़ीदेर आरामकरचुके अबचलकर संग्रामकीजिये यहबचनसुनकर प्रद्युम्न बोले हे धर्मपति तुमने तो अपने गुरुकी आज्ञानुसार यहकामकिया पर इसमें मेरीनाम धराईहुई इसलिये तुमसौगन्दखाव कि यहहाल किसीसे हमनहींकहेंगे जबधर्मपतिने सौगन्दखाकर प्रद्युम्नका शोचछुड़ाया तब उन्होंने हाथमुँह धोकर धनुर्बाण अपनाउठालिया व रथ अपना रणभूमिमें लिवालेगये॥

सतहत्तरवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका द्वारकामें आना व राजाशाल्वको मारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जो यदुबंशी प्रद्युम्नको अचेत देखकर उदासहोगये थे वे लोग कामरूपका रथदेखतेही ऐसे आनन्द होगये जैसे मुर्देकेतनुमें प्राणआजावे उससमय कृष्णकुमारने अपने साथियोंको धैर्य्यदेकर धर्मपतिसे कहा तुमजल्दीरथमेरा देवमान के पास जहांवह यदुबंशियों को माररहा है ले चलो जब यह बात सुनकर सारथीने रथ प्रद्युम्नका देवमानमन्त्रीके सन्मुख पहुँचादिया तबकृष्णकुमारने उसेलल-कारकरकहा तू इधरउधर ग़रीबोंको क्यामारता है हमसे आनकर युद्धकर यहबचन सुनतेही देवमान यदुबंशियोंसे लड़नाछोड़कर प्रद्युम्नपर बाणचलानेलगा तबकामरूपने चारतीरसे चारोंघोड़े उसके रथके मारकर एकबाणसे सारथीको मारडाला व दोतीरसे ध्वजा व छत्र व एकबाणसे धनुषकाटकर तीनतीरसे देवमानको मारागिराया उससमय साम्बभी इसतरह शाल्वकी सेना मारकर गिरानेलगा जिसतरह किसानलोग जुआरका खेत काटडालते हैं जब ऐसायुद्ध प्रद्युम्न व साम्बकादेखकर बहुतसाथी राजाशाल्व के भागचले तब अनेकमनुष्य भागती समय समुद्र में डूबकर मरगये जब इसी तरह

सत्ताईस दिन बराबर राजाशाल्व प्रद्युम्न आदिकसे लड़तारहा तब यदुबंशियोंने ऐसी सामर्थ्य व बीरता उसकी देखकर आपसमेंकहा यह कोई बड़ाशूरवीर है जो इतनेदिन हमारेसामने युद्धमेंठहरा नहीं तो श्यामसुन्दरकी दयासे आजतक कोईशूरवीर पांच-दिनसे अधिक हमारे सन्मुखनहींलड़ा हे परीक्षित जब इसीतरह राजाशाल्व मायायुद्ध करके यदुबंशियों को दुःखदेनेलगा तब इन्द्रप्रस्थमें बासुदेवने क्यास्वप्नादेखा कि द्वारकापुरीको किसीने जलाकर समुद्रमें डुबादिया व यदुबंशीलोग रणभूमिमें मरेपड़े हैं तब उन्होंने युधिष्ठिरसे कहा महाराज अशुभस्वप्ना देखनेसे मुझे ऐसामालूम होता है कि शिशुपालके सार्थीदैत्य द्वारकामें यदुबंशियोंको मारकर नाशकिया चाहते हैं आज्ञा देव तो वहांजाकर उनकी रक्षाकरैं राजायुधिष्ठिर ने हाथजोड़कर बिनयकी हे महाप्रभु मुझे आपका कहना टालनानहीं है यहबचनसुनतेही जब श्याम व बलराम रथ पर बैठकर द्वारकाकोचले तब नगरकेबाहर आनकर क्या देखा कि एकहरिणी बाईं ओरसे निकलगई और कुत्तासन्मुखखड़ाहुआ शिर अपनाझाड़ता है ये दोनों अशकुन देखते ही मुरलीमनोहर अन्तर्यामी सबदशा द्वारकाकीजानकर सारथी से बोले रथ जल्दीलेचलो ॥

दो० दारुक रथहांक्यो तभी हरिकी आज्ञापाय।
बाणरूप दूजेदिवस रणमें पहुँचे जाय॥

केशवमूर्तिनेयुद्ध राजाशाल्वका देखकर बलदाऊजीसेकहा हे भाई तुमद्वारका में जाकर राजाउग्रसेन व प्रजाकी रक्षाकरो मैं शाल्वकोमारकर वहांआऊंगा जब रेवतीरमण यह आज्ञापाकर द्वारकाको गये तब दैत्यसंहारणने दारुक से कहा जल्दी मेरारथ शाल्वके सन्मुखलेचल जैसे वह रथ मुरलीमनोहर का दौड़ाकर उसके सामने पहुँचा वैसे राजाशाल्वने ध्वजा रथ बैकुण्ठनाथकी पहिंचानकर एक सांग दारुक रथवान् पर चलाई तब लक्ष्मीपति ने तीरसेसांग उसकी काटकर सोलह बाण ऐसे मारे कि बिमान राजाशाल्व का कुम्हार के चाकके समान घूमने लगा उससमय राजाशाल्वने एकभाला बड़े वेगसे श्यामसुन्दर पर चलाया तब द्वारकानाथ उसको भी अपने तीरसे काटकर इसतरह बाणमारनेलगे कि राजा शाल्व घबड़ागया पर उसने फुरती करके ऐसा बाण श्यामसुन्दरकी बाईं भुजामें मारा कि शार्ङ्गधनुष उनके हाथसे गिरपड़ा जब उसके गिरनेका शब्द तीनोंलोकोंमें पहुँचा तब देवता व यदुबंशी लोग डर कर उदासहोगये व राजाशाल्व अज्ञानी ने अपनी जीतसमझकर चिल्ला के कहा हे कृष्णचन्द्र तुम रुक्मिणीको जिसकी मंगनी शिशुपाल मेरेमित्रसे हुईथी बरजोरी उठालेगये व राजा युधिष्ठिरके यज्ञमें तुमने शिशुपालको मारडाला दोघड़ी मेरेसन्मुख खड़ेरहकर भाग न जावोगे तो आज अपने मित्रका बदला तुमसे लूंगा मुझे भौमासुर

व शकटासुर आदिक दैत्य जिनको बल व छल से तुमने मारडाला था मतसमझना यहबचन सुनकर दैत्यसंहारण बोले हे शाल्व शूरबीरलोग अपनी बड़ाई आप नहीं करते संसार में अपनायश गावनेवालेको कोई अच्छा नहीं कहता इसलिये जो कुछ बलरखताहो सो दिखलाव जिसकी मृत्यु निकट पहुंचती है उसको भलीबुरी बात कहनेका कुछ बिचार नहीं रहता जिसतरह शिशुपाल मारागया उसीतरह एकक्षणमें तेरी भी वही दशाहोगी ऐसा कहकर मुरलीमनोहर ने एकगदा शाल्वके शिरपर इस वेगसेमारी कि लोहू मुहँसेगिरकर अङ्गउसका कांपउठा पर वह अन्तर्द्धानहोकर माया युद्धकरके अग्निबर्षाने लगा तब बसुदेवनन्दन ने ऐसे बाणमारे कि सबमायाछूटकर राजाशाल्व बिमानसमेत पृथ्वीपर गिरपड़ा जब फिर उठकर उसने एकगदा श्याम-सुन्दरपरचलाई तब लक्ष्मीपतिने वह गदा काटकर एकगदा उसको ऐसीमारी कि वह अचेतहोगया जब थोड़ीदेरमें वह चैतन्यहुआ तब मन्त्रके बलसे अपनेको दूतबनाकर शिर व मुंहमें धूरलपेटे पसीना बहाताहुआ श्यामसुन्दरके सन्मुखआया व रुदनकरके बोला अयत्रिभुवनपति मुझे देवकी तुम्हारी माताने भेजकर कहा है कि राजाशाल्व बसुदेव तुम्हारे पिताको मारनेवास्ते पकड़लेगया तुम उनकी सुधि क्यों नहीं लेते यह बचन दूतका सुनतेही एकक्षण मुरलीमनोहरने शोचितहोकर फिर बिचारकिया कि बलरामजीके सामनेसे जिनको कोई देवता भी जीतने नहीं सक्ता राजाशाल्व बसुदेवको किसतरह पकड़लेगयाहोगा जिससमय केशवमूर्त्ति इसीतरहका शोच व विचार कररहेथे उसीसमय राजाशाल्व मायारूपी बसुदेवबनाकर उनके बालपकड़ेहुये श्रीकृष्णजीके सन्मुखलेआया तब मायारूपी बसुदेव तड़फताहुआ श्यामसुन्दर से बोला हे बेटा हम तुमको उत्पन्न व पालन व रक्षाकरनेवाला संसारका जानतेहैं सो राजाशाल्व मुझे तुम्हारे सामनेलाकर प्राणलेना चाहता है इसके हाथसे जल्दी छुटाओ यह बड़े लज्जाकी बात समझनाचाहिये जो मैं तुम्हारे ऐसा बेटा त्रिभुवनपति रखकर इतना दुःखपाऊं जिससमय मायारूपीबसुदेव इसतरह बिलापकररहाथा उसीसमय शाल्वने ललकारकर फिर श्यामसुन्दरसे कहा देखो हम बसुदेवको पकड़कर तुम्हारे सामने मारतेहैं तुम्हैं बलहो तो छुड़ालेव ऐसा कहनेउपरांत राजाशाल्वने मायारूपी बसुदेव का शिर तलवारसे काटकर बरछीकी नोकपर उठालिया व सब लोगोंको दिखलाकर बोला हे श्रीकृष्ण तुमनेदेखा जिसतरह तुम्हारेबापको मैंने मारडाला उसीतरह यदुबंशियों को मारकर समुद्र में डालदूंगा यह हाल देखकर एकक्षण मुरलीमनोहरको मूर्च्छाआगई फिर उन्होंने ध्यानधरकरदेखा तो मालूमहुआ कि यह मायारूपी बसुदेव बनाहै इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे राजन् जिससमय मायारूपी दूतने आनकर देवकीका संदेशाकहा व शाल्वने मायारूपी बसुदेव का शिरकाटलिया उस समय लक्ष्मीपतिको कुछ संदेहहुआथा यहहाल सुनकर ऋषीश्वर व ज्ञानीलोग ऐसा

कहतेहैं कि जिन परमेश्वरका नाम लेनेसे संदेह छूटकर मन शुद्धहोजाता है उनके कामोंमें संदेह करना न चाहिये ॥

चौ० जो प्रभु केवल ब्रह्म कहावें । केहि कारण इतनो भ्रमपावें ॥
जग में मनुष देहधरि आये । तेहि कारण इतनो भ्रम पाये ॥

दो० माखनप्रभु भगवान को कबहूं भ्रम कछु नाहिं ।
तद्यपि यह लीलाकरी जानिलेहु मनमाहिं ॥

जब केशवमूर्त्तिने समझा कि शाल्वने मायारूपी बसुदेव बनाकर शिरकाटाहै तब पाञ्चजन्यशंखबजाकर बड़े क्रोधसे रथ अपना उसके पीछे दौड़ाया व एकगदा ऐसी मारी कि बिमान राजाशाल्व का सौ टुकड़ेहोकर समुद्रमें गिरपड़ा उससमय शाल्वने बिमानपरसे कूदकर एकगदा बसुदेवनन्दनपर चलाई सो दैत्यसंहारणने अपनीगदासे उसकी गदा तोड़डाली ॥

चौ० सोई गदा बज्रसम भारी । केतिकबार शाल्व पर मारी ॥

दो० वाको बल कहिये कहा युद्धकरै अति घोर ।
श्रीमाखनप्रभु की गदा क्षण में डारै तोर ॥

जब इसीतरह देरतक राजाशाल्व द्वारकानाथसे गदायुद्ध करतारहा तब वृन्दा-बनबिहारीने बाणसे भुजा उसकी काटकर गदासमेत गिरादिया व सुदर्शनचक्रमारकर इसतरह शिर उसका काटलिया जिसतरह इन्द्रने वृत्रासुर दैत्यको माराथा जब शाल्वके धड़से एकज्योति निकलकर बसुदेवनन्दनके मुखमें समागई तब देवताओंनेमरना राजा शाल्वका देखकर दुन्दुभीबजाई व दैत्यसंहारण पर फूलबर्षाकर उनकी स्तुति करनेलगे ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

राजा दन्तवक्त्र व बिदूरथ दोनों भाइयोंका श्यामसुन्दरसे लड़नेवास्ते आवना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह दन्तवक्त्र व बिदूरथ दोनोंभाई शिशुपाल के मारेगयेथे उनकाहाल कहते हैं सुनो जिसदिन राजाशिशुपाल युधिष्ठिर के यज्ञमें मारागया उसीदिनसे वे दोनों कृष्णजीसे शिशुपाल अपनेभाईका बदला लेनेवास्ते बिचार कियाकरतेथे जबउन्होंने सुना कि राजाशाल्व हमारे भाईकामित्र द्वारकामेंजाकर लड़रहाहै तब उनदोनोंने भी बहुतसेना साथलेकर द्वारकापुरीपर लड़नेवास्ते चढ़ाईकी ॥

दो० गज रथ पैदल तुरँग की सेन लिये निज साथ ।
चले द्वारका ओर को सब असुरन के नाथ ॥

श्यामसुन्दर राजाशिशुपालको मारकर अभीतक द्वारकापुरी में नहीं पहुँचे थे कि उसीसमय दन्तबक्क व बिदूरथ दोनों भाइयों ने अपनी सेनासमेत वहां पहुँचकर मुरली-मनोहरको घेरलिया जब उन्हें देखकर सब यदुबंशी घबड़ागये तब दन्तबक्क बासुदेवके सन्मुख जाकर अभिमानसे बोला तुमने मेरेभाई व मित्रकोमारा इसलिये आज तुमको यदुबंशियोंसमेत यमपुरी भेजकर उनका बदलालूंगा पहिले तुम अपना शस्त्र मेरेऊपर चलालेव पीछे हम तुमको मारेंगे जिसमें तुमको यह अभिलाषा न रहजावे कि हमने दन्तबक्क पर शस्त्र नहीं चलाया तुमने बड़े २ शूरबीर युद्धमें मारे हैं पर आज मेरे हाथसे जीते बचकर तुमको अपने घरजाना बहुत कठिनहै ॥

चौ० कहत सुनो मोहन गोपाला । धनि भ्राता मेरो शिशुपाला ॥
जेहिके बैर काज ह्यां आयो । दर्शन महाराज को पायो ॥
जाको दरश तुम्हारो होई । भवसागर से उतरत सोई ॥
अब मोको चिन्ता कछु नाहीं । दुहूँ भांति निर्भय मनमाहीं ॥
जो मैं मरौं तुम्हारे हाथा । होइहौं स्वर्गलोककोनाथा ॥

दो० अरु जो तुमको मारकर जियत रहौं जगमाहिं ।
तौ राजनको राजहौं यामें संशय नाहिं ॥

जब इसीतरह अनेक बातें कहकर दन्तबक्क ने एकगदा श्रीकृष्णपर चलाई तब दैत्यसंहारण अपनी गदासे उसकी गदा गिराकर बोले हे दन्तबक्क जितना बल तेरे अंगमेंथा वह सब तैंने गदा चलाकर पूराकिया अब चैतन्यहो हमारी पारी है यह कह कर द्वारकानाथ ने कौमोदकीनाम गदा अपनी इसबेगसे दन्तबक्ककी छातीपर मारी कि वह रक्तबमनकरके उसीक्षण मरगया ॥

दो० प्राणज्योति वाकी निकसि चढ़ी स्वर्गकी छाहँ ।
फेर समानी आनकर माखन प्रभुमुख माहँ ॥

यह दशा देखकर बिदूरथभाई दन्तबक्कका ढाल तलवार लियेहुये मुरलीमनोहर के सन्मुख आया तब लक्ष्मीपतिने उसका शिर सुदर्शनचक्रसे काटकर मुकुट व कुण्डल समेत पृथ्वी पर गिरादिया जब उन दोनों के मरतेही सब सेना उनकी भागगई तब तीनोंलोकोंमें हर्षहोकर देवताओंने श्यामसुन्दरपर फूलबर्षाये व दुन्दुभी बजाकर सब देवता व ऋषीश्वर स्तुतिकरकेबोले हे दीनानाथ तुम्हारी लीलाअपरम्पार होकर कोई उसकाभेद जाननेनहींसक्ता जय व बिजय आपके द्वारपालक सनकादिकके शापदेनेसे प्रथमहिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपु व दूसरीबेर रावण व कुम्भकर्ण व तीसरेजन्म शिशुपाल व

दन्तवक्रहुये वे शत्रुताबश तुम्हाराभजन व स्मरणकरतेथे आपने उनकाउद्धारकरने वास्ते तीनबेरसगुणअवतारधारण किया व अपनेहाथ से उनकोमारकर फिर बैकुण्ठमें भेजदिया ऐसादीनदयालु व अपनेभक्तकी रक्षाकरनेवाला दूसराकौनहोगा जब सब देवता यहस्तुतिकहकर श्यामसुन्दरको दण्डवत्करके अपने २ लोकमें चलेगये तब वृन्दाबनबिहारी भक्तहितकारीने जैसे घायल व मरेहुये यदुबंशियोंको अमृतरूपीदृष्टिसे देखा वैसेमरेहुयेजीकर घायल लोग अच्छेहोगये जबयहमहिमा बैकुण्ठनाथकी देखकर सबछोटेबड़े उनकायश गानेलगे तबलक्ष्मीपति सबयदुबंशियोंको साथलेकर आनन्द पूर्व्वक दुन्दुभीबजातेहुये द्वारकाआये व राजाशाल्वआदिककी जोबस्तुलूटलायेथे वहसब उग्रसेनकोदी उनको देखतेही सबछोटेबड़ोंने प्रसन्नहोकर अपने २ घर मंगलाचारमनाया व बैकुण्ठनाथकीआज्ञासे बिश्वकर्माने जो स्थानदैत्यों ने तोड़डालेथे क्षणभर में ज्योंके त्यों बनादिये व श्रीकृष्णजीने उसीदिन युद्धकरनाछोड़कर यह प्रतिज्ञाकी कि अब शस्त्रधारण न करूंगा इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जबकुछ दिन बीते राजायुधिष्ठिर आदिक पाण्डवों व दुर्य्योधन आदिक कौरवों से महाभारतकी तैयारीहुई तब श्यामसुन्दर राजाउग्रसेन से यह समाचार कहकर बलरामजी से बोले हे भाई इस महाभारतमें मुझे क्या करना चाहिये यह बात सुनकर बलदाऊजी ने मनमें बिचारा कि मुरलीमनोहर पाण्डवोंकी इच्छा पूर्णकरने वास्ते महाभारत कराया चाहते हैं मैं वहां रहकर दुर्य्योधन अपने चेलेकी सहायता करूंगा तो केशवमूर्त्ति खेद मानेंगे व श्यामसुन्दरकी आज्ञा पालन करने में दुर्य्योधन बुरा मानैगा इसलिये हस्ति-नापुर न जाकर तीर्थयात्रा करने चलाजाता हूं आगे जो इच्छा बैकुण्ठनाथकी होगी वैसा करैंगे यह बात बिचारकर रेवतीरमणने श्रीकृष्णजी से बिनयकिया हे महाप्रभु आप हस्तिनापुर में जाकर जैसा उचितहो वैसा कीजिये मैं भी तीर्थयात्रा करता हुआ वहां आनकर पहुँचूंगा यह बचन सुनकर केशवमूर्त्तिने महाभारत करानेकी इच्छा से बलदाऊजी को बर्जना उचित नहीं जाना जब बसुदेवनन्दन कुरुक्षेत्र में जहां अठारह अक्षौहिणी दल महाभारत करने वास्ते इकट्ठा हुआथा गये तब बलदाऊजी भी प्रभास क्षेत्र व सरस्वती व गंगा व यमुनाआदिक बहुत तीर्थों पर स्नान व दान व यात्रा करतेहुये नीमषार व मिश्रिखमें पहुँचे वहां पर उन्हों ने क्या देखा कि एक स्थानपर बहुतसे ऋषीश्वर व मुनि इकट्ठे होकर यज्ञ करते हैं व दूसरीजगह रोमहर्षण सूतपौरा-णिक चेला वेदव्यासजी का सिंहासनपर बैठाहुआ शौनकादिक ऋषीश्वरों को कथा सुनाताहै बलदाऊजी को देखतेही शौनकादिक सब ऋषीश्वर सन्मानकरने वास्ते उठ खड़ेहुये पर रोमहर्षण बिद्याके अभिमानसे नहीं उठा तब रेवतीरमण क्रोधित होकर बोले इस मूर्खको किसने व्यासगद्दीदी है हरिकथा बांचने वास्ते ऐसा ज्ञानी व हरिभक्त चाहिये जिसके लोभ व अहंकार न हो आप ऋषीश्वरलोग देखते हैं यह पौराणिक

विद्या पढ़ने परभी शास्त्रानुसार न चलकर अभिमानके मदमें अन्धा होरहाहै जिस तरह कलियुग के ब्राह्मण दूसरोंको उपदेश देकर आप मर्य्यादपूर्वक नहीं चलते उसी तरह यह काम क्रोध मोह लोभके बश होकर छोटे बड़ोंको नहीं पहिचानता व हमारा अवतार केवल अधर्मी व कुचालियों के मारने वास्ते हुआहै इसलिये जो कोई हमारे सामने कुमार्ग चले उसका अपराध हम क्षमा नहीं करसक्ते ऐसा कहने उपरान्त शेषावतार ने एक कुशा मन्त्र पढ़कर क्रोधसे सूतकी तरफ फेंका तो वह कुशा लगतेही शिर रोमहर्षणका कटकर गिरपड़ा यह हाल देखतेही शौनकादिक ऋषीश्वरोंने चिल्लाकर बलभद्रजी से कहा महाराज यह सूत हरिचरित्र सुनाकर अपने व सुननेवालों को कृतार्थ करताथा उसे व्यासगद्दीपर बैठेहुये तुमने मारडाला सो अच्छा नहींकिया हम लोग जानते हैं कि आपने अपनी इच्छासे अवतार लियाहै पर इसको जो वैश्य व ब्राह्मणसे उत्पन्न होकर हमारी आज्ञानुसार व्यासगद्दीपर बैठाथा तुमने जो मारा इसलिये तुमको ब्रह्महत्या लगी अब तुमको प्रायश्चित्त करना चाहिये कदाचित् तुम ऐसा नहींकरोगे तो दूसरा कोई ब्रह्महत्यासे किसवास्ते डरेगा वेद व शास्त्रमें जो आदि पुरुषकी श्वासाहै ब्राह्मणोंको अतिउत्तम लिखते हैं देखो जब श्यामसुन्दर तुम्हारे छोटे भाई परब्रह्मपरमेश्वरको भृगुऋषीश्वरने बिना अपराध लातमारी थी तब उन्होंने पांव ऋषीश्वरका हाथसे दबाकर कहाथा कि मेरे कठोर हृदयसे आपके कोमल चरणों पर चोट न लगीहो इससे ब्राह्मणोंकी पदवी समझना चाहिये यह ज्ञानरूपी बचन सुनकर क्रोध बलरामजी का शान्तहुआ तब उन्होंने ऋषीश्वरों से कहा महाराज आपलोग सच्च कहते हैं मुझसे अपराध हुआ जो मैंने क्रोधबश ब्राह्मणको मारडाला आप कोई प्रायश्चित्त इसका बतलाइये जिसमें हमारा शरीर शुद्ध होजावे व कोई पुत्र इससूतका हो तो बुलाओ उसे हम व्यासगद्दीपर बैठालदेवें ॥

दो० हमहूं को दूषण लगे जो कछु करैं अनीति ।
औरनकी कहियेकहा कठिनकर्मकी रीति ॥

यह सुनकर ऋषीश्वर बोले तीर्थों के स्नानकरने से तुम्हारापाप छूटजावेगा जब शौनकादिकोंने उग्रशर्माबेटा रोमहर्षण को वहांबुलाभेजा तब शेषावतारने उग्रशर्माको उसकेबापकी जगह व्यासगद्दीपर बैठाकर ऐसाबरदान दिया कि तुझे बिनापढ़े सब विद्या यादहोजावें जैसे यहबचन रेवतीरमणके मुखसे निकला वैसेसूतपुत्रको छहोंशास्त्र व अठारहोंपुराण बिनापढ़े कण्ठहोगये तब वह व्यासगद्दी पर बैठकर कथाबांचनेलगा यह महिमा बलरामजीकी देखतेही सब ऋषीश्वर प्रसन्नहोकर बोले महाराज तुम्हारी दयासे सूतकेमरनेका शोच तो छूटा परबिल्वलदैत्य बांदररूपसे पूर्णमासी व अमावास्या व द्वादशी को आनकर हमारे यज्ञ व होममें पीब व रक्त व हड्डीफेंकदेताहै इसलिये

हमलोग बड़ादुःखपाते हैं आपतीर्थवासियोंपर दयालुहोकर उसबांदरको मारडालिये तो हमलोग निर्भयहोकर यज्ञव होमकियाकरें यहबचनसुनकर बलरामजीबोले बहुतअच्छा हम उसबांदरको मारकर तुम्हारा दुःखछुड़ावेंगे ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

बलरामजीका बांदररूप बिल्वल दैत्यको मारना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित रेवतीरमण ऋषीश्वरोंके कहने से बिल्वलदैत्यकोमारने वास्ते कईदिनतक नीमषारमिश्रिखमें टिकेरहे तब पूर्णमासीकेदिन बड़ीआंधीचलकर पानी व रक्त व पीब बरसनेलगा उससमय ऋषीश्वरोंने बलरामजीसे कहा महाराज ये सबलक्षण उसबांदरके आवनेकेहैं यह बचनसुनकर बलदाऊजीने जैसे हल व मूसल अपनेशस्त्रोंको यादकिया वैसे वे दोनों उनकेपास आनपहुँचे जब वह बांदररूपीदैत्य श्यामरङ्ग पहाड़ ऐसालम्बा व चौड़ा बड़े २ दांत व लाल २ आंखें निकाले डरावनी सूरतबनाये त्रिशूललिये बादलकेसमान गर्जताहुआ वहांआया तब बलदाऊजी अपना हल व मूसलउठाकर उसकी तरफचले ॥

दो० उनहूं रामहिं देखिकै जानिलियो मनमाहिं ।
इनसमान योधाबली तिहूंलोकमें नाहिं ॥

जब उसबांदरने बलरामजीको अपनेसे बलवान् देखा तब वह मंत्रकेबलसे अंतर्द्धानहोकर मल व मूत्र बरसानेलगा यहदशा देखतेही रेवतीरमणने उसबांदरको हलकी नोकसे उठाकर पृथ्वीपर पटकदिया व एकमूसल ऐसा उसके शिरपरमारा कि प्राण उसका निकलगया उसदैत्यका मरनादेखकर सब ऋषीश्वर इसतरह प्रसन्नहोगये जिस तरह वृत्रासुरदैत्यके मरनेसे देवता आनन्दितहुये थे व उसीसमय ऋषीश्वरोंने रेवतीरमणको आशीर्बाददेकर ऐसीसुगन्धित पुष्पोंकीमाला गलेमें पहिनादी जिसकाफूल कभी न कुम्हिलावे व देवताओंने बलदाऊजीपर फूलबर्षाकर दुन्दुभी बजाई ॥

दो० तहँलाये सब देवता भूषण बसनबनाय ।
पहिराये बलरामको शोभाकही न जाय ॥

जब ऋषीश्वरोंने दैत्यकेमारेजानेसे निर्भयहोकर बलदाऊजीको बिदा किया तब रेवतीरमणगढ़मुक्तेश्वर व गोमती व गण्डक व गंगा व व्यासा व कौशिकी व सरयू व पुलहाश्रम व शोणभद्र व प्रयाग व काशीआदिक तीर्थोंमें गये और वहांपरस्नान व दानकिया फिर वहांसे गयाजी व गंगासागर व गोदावरी व भागीरथी व सिंहलद्वीप व भीमरथी व सेतुबन्धरामेश्वर व विंध्यक्षेत्र व श्रीशैल आदिक तीर्थोंमेंजाकर स्नानकरके

दश २ हजारगौ बिधिपूर्वक ब्राह्मणोंको दानदिया फिर वहांसे स्वामिकार्तिक व अगस्त्यमुनि व परशुरामजी व अर्जुनबालाका दर्शनकरते व राहमें सबलोगोंको सुखदेते हुये वर्षवेंदिन पृथ्वीकी परिक्रमाकरके हरद्वारमें आये ॥

दो० तहां सुनी बलरामजू लोगनसे यहबात ।
पाण्डुसुतन अरु कौरवन युद्धहोत दिनरात ॥

यहहाल सुनतेही रेवतीरमण कुरुक्षेत्रको चले और जिससमय राजादुर्योधन व भीमसेन महाभारतके अठारहवेंदिन आपसमें गदायुद्ध कररहेथे उसीसमय वहांपहुंचे जब उनको देखकर युधिष्ठिर आदि पांचौभाई व दुर्योधनने दण्डवत् किया तब बलदाऊजी उनलोगों को आशीर्व्वाद देकरबोले बड़ेशोचकी बातहै कि श्यामसुन्दर त्रिभुवनपतिके रहनेपर भी कौरवों व पांडवोंने रजोगुण व तमोगुणके बशहोकर अपने भाई बन्धु आदिक लाखोंमनुष्यों का नाशकिया व भीमसेन व दुर्योधन दोनोंमनुष्य बलमें बराबरहैं पर भीमसेनका श्वासा लड़तीसमय नहीं फूलता व दुर्योधन उससे गदायुद्ध अच्छा जानताहै यहदशा उनकी देखकर बलदाऊजीने भीमसेन व दुर्योधन से कहा तुमलोग लड़नाछोड़देव जिसमेंतुम्हारा बंशरहे देखो महाभारतकरनेमें इतना कुल व परिवार तुम्हारा मारागया तिसपर भी तुमको अपना भला व बुरा नहीं सूझ पड़ता यहबचन सुनतेही परमेश्वरकी इच्छानुसार दोनोंबीरोंने बलदाऊजीसे हाथजोड़कर बिनयकी महाराज अब रणपर चढ़कर हम लोगोंसे उतरा नहींजाता ॥

दो० यद्यपि बरजैं रामजू युद्धकरो मतिकोय ।
तद्यपि उन मान्यो नहीं भावी परबलहोय ॥

जब रेवतीरमणके समझानेपरभी उन दोनोंने लड़ना नहीं छोड़ा तब बलदाऊजी इच्छा बैकुण्ठनाथकी इसीतरह समझकर चुपहोरहे व उसीसमय भीमसेनने एक गदा दुर्योधनकी जंघामें ऐसीमारी कि जंघा उसकी टूटगई और वह पृथ्वीपर गिरपड़ा तब दुर्योधनने बलरामजीसे रोकरकहा हे महाप्रभु आपमेरेगुरू हैं मैं तुमसे झूंठ नहीं कहता इस महाभारतमें सब मनुष्य श्रीकृष्ण तुम्हारेभाईके सम्मतसे मारेगये व पाण्डवलोग उन्हींके बलसे लड़ते हैं नहीं तो उनको क्या सामर्थ्यथी जो कौरवोंसे लड़ते युधिष्ठिर आदिक पांचौभाई इसतरह श्यामसुन्दरके बशहोरहे हैं जिसतरह काठकी पुतली को नट अपने आधीन रखकर जिधरचाहै उधर नचावै द्वारकानाथ को ऐसा उचित नहीं था जो पाण्डवोंकी सहायता करके हमारेसाथ शत्रुताईकरैं देखो भीमसेनने दुश्शासन की भुजा उखाड़कर उसे मारडाला व हमलोगोंके सन्मुख उसका रक्त पिया व अधर्म की राह मेरीजंघामें गदामारकर मुझे पृथ्वीपर गिरादिया और मैं इससे अधिक पांडवों

के अधर्मका हाल आपसे कहांतक वर्णनकरूं जो कुछ मेरेभाग्यमें लिखाथा सो हुआ जिसतरह इस महादुःखमें आपने दयालुहोकर दर्शनदिया उसीतरह मेरेवास्ते जो उचित हो सो कीजिये जब यह आधीन वचन दुर्योधनसे बलदाऊजीने सुना तब श्रीकृष्णजी के पास जाकर बोले हे भाई तुमने यह कैसी अपनी माया फैलाई जो इतने मनुष्य महाभारतमें तुम्हारेसामने मारेगये व दुश्शासनकी भुजा उखड़वाकर दुर्योधनकी जंघा तोड़वाई यह धर्मयुद्धकी बात नहीं है कि कोई बलवान् मनुष्य किसीकी भुजा उखाड़ कर कमरके नीचे गदा चलावै धर्मयुद्धमें एक२ मनुष्य अपने बराबरवाले को लल-कारकर लड़ते हैं यह सुनकर बसुदेवनन्दन बोले हे भाई तुम नहीं जानते कौरवलोग बड़ेअधर्मी व पापी हैं उनकाहाल कुछ कहा नहीं जाता देखो पहिले दुर्योधनने दुश्शासन व शकुनीके कहनेसे कपट जुआ खेलकर सब देश व धन युधिष्ठिर आदिकका जीत लिया व उनको तेरहवर्ष बनबास दिया फिर दुश्शासनने शिरकेबाल पकड़ेहुये द्रौपदी को राजसभामें लाकर नंगी करनेचाहा जिससमय दुर्योधनने द्रौपदी ऐसी पतिव्रता को अपनी जंघापर बैठानेवास्ते कहा उसीसमय भीमसेनने सौगन्दखाकर यह प्रतिज्ञा की थी कि दुश्शासनकी भुजा उखाड़कर दुर्योधनकी जंघा अपने गदासे तोडूंगा वही प्रण भीमसेनने अपना पूरा किया सिवाय इसके और जो २ अधर्म्म व पाप कौरवोंने युधिष्ठिर आदिकसे किये हैं उसका हाल कहांतक तुमसेकहूं यह महाभारतकी आग जो प्रज्वलित होरही है किसीतरह बुझने नहीं सक्ती तुम इस बातका कुछ शोच मतकरो जब बलदाऊजीने यह बचन मुरलीमनोहरके मुखसे सुना तब इच्छा उनकी इसीतरह पर जानकर कुरुक्षेत्रसे द्वारकापुरी में चलेआये और वहांसे रेवती अपनी स्त्री व कई यदुबंशियों को साथलेकर फिर नीमषारमिश्रिख में इस इच्छासे गये जिसमें ब्रह्महत्या का पाप जो तीर्थ स्नानकरनेसे छूटगयाथा वह ऋषीश्वरों को दिखलावैं जैसे शौन-कादिक ऋषीश्वरोंने बलदाऊजी को देखा वैसे अतिप्रसन्नतासे आशिष देकर कहा अब तुम्हारी ब्रह्महत्या छूटगई जब यह बचन बलदाऊजीने सुना तब बड़ेहर्षसे वहां स्नान व दान व यज्ञादिक शुभकर्म किया व ऋषीश्वरों को ज्ञानउपदेश देकर यदु-बंशियों समेत द्वारकापुरीमें चलेआये व अपने जाति भाइयोंका सन्मान किया ।

दो० रामकथा पावन सदा कहै सुनै जो कोय ।
ताको श्रीभगवान सों प्रेम प्रीति अतिहोय ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

सुदामा ब्राह्मणकी कथा ॥

राजापरीक्षितने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजीसे विनयकी महाराज आप समझते

होंगे कि परमेश्वरकी कथा व लीलासुनकर इसे सन्तोष हुआहोगा सो मेरामन अभी तक हरिकथा सुननेसे नहीं भरा सत्संग बिना भाग्यके नहीं मिलता इससे मैंजानताहूं कि मेरे पिछले जन्मका पुण्य सहाय हुआ जो मैंने अन्त समय गंगाकिनारे आनकर तुम्हारा दर्शन पाया जिसजगह परमेश्वरकी कथाहोकर सत्संग रहताहै वहांपर देवता स्वर्गसे आते हैं देखो जो नारदमुनि दिन रात फिरते रहकर कहीं नहीं ठहरते वेभी सत्संगमें आनकर बैठते हैं हमारे पितरोंने अपने कर्मानुसार बैकुण्ठसेभी उत्तमस्थान पाया होगा पर तुम्हारे मुखारबिन्द से जो मैंने श्रीमद्भागवत सुना है इसलिये हमारे पितरलोग उत्तमसेभी उत्तम स्थान रहनेवास्ते पावैंगे जिस मनुष्यके मुखसे परमेश्वरका नाम नहीं निकलता उसको पशुसेभी निषिद्ध समझना चाहिये जो कानसे स्तुति व कथा भगवान्की नहीं सुनता वह कान सर्प्प व बिच्छूके बिल समानहै जो शिर हरिमंदिर व देवस्थानपर साधु व ब्राह्मणके सन्मुख दण्डवत् नहीं करता वह मस्तक अंगपर बोझेकेसमान समझना उचितहै जो आंख दर्शन श्यामसुन्दरका प्रकट व ध्यानमें नहीं करती वह आंख मोरपंखकेसमान समझनी चाहिये जो गृहस्थ प्रेम बैकुण्ठनाथ का रखकर अपने वर्णका धर्म्म करते हैं उनको योगी व संन्यासी व परमहंसोंसे उत्तम जानना चाहिये इसलिये मनुष्य को उचितहै कि मनुष्यतनु पाकर हरिभजन व सत्संग में जन्म अपना बितावै हे शुकदेवस्वामी तुम्हारेऊपर भगवान्की बड़ी कृपाहै इसलिये चाहताहूं कि मुझे कुछ और हरिचरित्र सुनाइये शुकदेवजी बोले हे राजन् तेरीबुद्धि धन्यहै जो तुम हरिकथा सुननेसे ऐसी प्रीति रखतेहो ॥

दो० जो याबिधि चितदै सुनै हरिकी कथा पुरान ।
कृपा करत हैं ताहिपर माखनप्रभु भगवान ॥

हे परीक्षित अब हम कथा सुदामा ब्राह्मण जिसका दरिद्र श्यामसुन्दरने छुड़ाया व उसे कुबेरदेवताकेसमान द्रव्य व इन्द्रका ऐसा सुखदियाथा कहते हैं सुनो दक्षिणदिशा द्राविड़देशमें विदर्भनाम एक नगरथा वहांके राजा व प्रजा अपने कर्म व धर्मसे रहकर साधु व ब्राह्मणकी सेवा किया करतेथे उसी नगरमें सुदामा ब्राह्मण वेद व शास्त्रका पढ़ाहुआ गुरुभाई श्रीकृष्णजीका रहकर इस गरीबीसे अपना जन्म काटताथा कि उसे तनुभर कपड़ा व पेटभर भोजन नहीं मिलकर कभी २ उपास होजातेथे तिसपरभी वह मन अपना बिरक्त रखकर आठोंपहर मग्न रहताथा व सुशीला उसकी स्त्री भोजन व वस्त्रका दुःखपानेपरभी प्रेमपूर्वक अपने पतिकी सेवा करतीथी और वे दोनों स्त्री पुरुष संसारीसुख स्वप्नवत् समझकर दिनरात स्मरण व ध्यान परमेश्वरका कियाकरते थे व बिना मांगे जो कुछ मिलताथा उसे खाकर प्रसन्न रहते थे एकबेर ऐसा संयोग हुआ कि सुदामा ब्राह्मणको स्त्री व चारों बेटोंसमेत दो उपास बीतगये जब तीसरेदिन

दो बालक भूखसे अतिव्याकुल होकर रोनेलगे व सुशीलासे बेटोंका कलपना देखा नहीं गया तब उसने डरती व कांपती हुई अपने स्वामी से हाथ जोड़कर बिनयकी महाराज मैंने सुनाहै कि श्रीकृष्णजी लक्ष्मीपति तुम्हारे मित्र व गुरुभाई हैं व उन्हों ने केवल ब्राह्मणोंकी रक्षा करने व हरिभक्तोंका दुःख छुड़ानेवास्ते अवतार लियाहै आप उनके पास क्यों नहीं जाते जिसमें तुम्हारा दुःख व दरिद्र छूटजावै तुमको गृहस्थ ब्राह्मण समझकर वे इतना द्रव्य देवैंगे कि फिर तुम्हें कुछ संसारी इच्छा न रहैगी यह सुनकर सुदामा ने कहा अयप्रिया तेराज्ञान कहां जातारहा जो तुझे इतनी तृष्णा उत्पन्न हुई ब्राह्मणों को लालच करना अच्छा न होकर तृष्णा रखने में ब्रह्मतेज नहीं रहता जिसतरह तीनपन हमारे बीतगये उसीतरह चौथापनभी परमेश्वरकीदयासे बीतजायगा इससमय लालच रखकर वहांजाऊँ कहीं रास्ते में बुढ़ाई से गिरपरूं तो संसारी लोग कहैंगे कि सुदामा ने बुढ़ौतीसमय लालचबश होकर अपना हाथ पैर तोड़ा यह बात सुनकर सुशीला बोली हे महाप्रभु मैं आपको लालचकी राह वहां जानेवास्ते सम्मत न देकर इसलिये कहतीहूँ कि महात्मा व बड़े लोगोंका दर्शन करनेसे सब दुःख छूट कर सुख प्राप्त होताहै श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति ब्राह्मणोंपर बड़ी दया रखते हैं वहां जाने से तुमको सिवाय सुखके कुछ दुःख प्राप्त न होगा ॥

दो० तिहिकारण बिनतीकरत चितदे सुनिये कन्त।
उनपै क्यों नहिं जातहौ जिनकी कृपाअनन्त ॥

यह सुनकर सुदामाने कहा हे प्राणप्यारी सचहै मैं श्रीकृष्णजी से मित्रता व जान पहिचान रखकर अपने को उनका सेवक समझताहूं जब मैं उनके पास भेंट करने जाऊँगा तब वे मुझे कंगाल जानकर द्रव्यादिक संसारी सुख भोगने वास्ते देवैंगे इस· लिये मेरे निकट उन त्रिभुवनपतिसे जो अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंपदार्थों के देनेवाले हैं द्रव्यादिक जो सदास्थिर नहीं रहता लेना उचित नहीं है किसवास्ते कि जब उनकी दयासे मुझे धन मिलैगा तब हमसे ध्यान व स्मरण उनका जैसा गरीबी में बनपड़ता है वैसा नहीं होसकेगा व संसारी सुखमें लपट जानेसे परलोकका शोच भूलजायगा मैंने पूर्बजन्म किसीको कुछ दान दिया होता तो इसजन्ममें मुझे मिलता बिना दिये कोई नहीं पाता इसबातमें तुम मुझे कुछ दुःख मतदेव हमारे दिन बहुत अच्छे बीतते हैं यह सुनकर जब सुशीलाने जाना कि मेरे स्वामी संसारीसुख स्वप्नवत् समझकर कुछ इच्छा नहीं रखते तब फिर हाथ जोड़कर बोली हे महाप्रभु मैं कुछ धनकी इच्छा न रखकर इसकारण कहतीहूं कि उन परब्रह्मपरमेश्वर का दर्शन करने से तुम्हारी मुक्ति होगी यह सुनकर सुदामा बोले अयप्राणप्यारी गुरू व महात्माके यहां बिना कुछ भेंट लिये जाना उचित नहीं है और मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो कुछ बस्तु

उनके वास्ते लेजाऊं यह बात सुनतेही सुशीला प्रसन्न होकर चारमूठी चावल अपने चार परोसियों से मांगलेआई व पुरानी धोतीके लत्ते में बांधकर अपने स्वामी को देके कहा महाराज हम कंगालों की थोड़ीसी भेंट त्रिभुवनपति बड़ी प्रसन्नतासे लेवैंगे जब सुदामाने चावल भेंट देनेवास्ते पाया तब वह पोटली कांख में दबाकर लोटा डोरी कांधेपर धरली व गणेशजी को मनाकर लाठी लिये राहमें यह बिचार करता द्वारकाको चला देखो मेरे भाग्यमें द्रव्य मिलना तो नहीं लिखाहै पर कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दका दर्शन पाकर अपना जन्म स्वार्थ करूंगा परन्तु एक बात की चिन्ता मुझे है कि श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति सोलहहज़ार एकसौ आठमहलमें रानियों के पास रहते हैं जहांपर बड़े २ राजाओंका पहुँचना कठिनहै वहां मुझ कंगालमनुष्य को कौन जानेदेगा व मेरी खबर उनको किसतरह पहुँचैगी ॥

दो० यह मनमें शोचत चल्यो मैं तो दीन अनाथ ।
कैसे म्वहिं पहिचानि हैं वे त्रिभुवन के नाथ ॥

अब मैं लज्जाबश अपने घरभी फिरजाने नहीं सक्ता देखो बड़े शोचकी बातहै जो अपनी झोपड़ी को जिसमें भीखमांगकर आनन्दपूर्व्वक दिन काटताथा हाथसे खोई व श्यामसुन्दरके पास पहुँचना भी कठिन दिखलाई देताहै जब सुदामा ब्राह्मण इसीतरह शोचबिचार करताहुआ तीनपहरमें द्वारकापुरी के निकट पहुँचा तब उसने क्या देखा कि चारोंओर उस पुरीके समुद्र लहर मारकर उत्तम २ रत्नजटित स्थानबने हैं व सब छोटे बड़ोंके घर मंगलाचार व हरिचर्चा होरही है जब सुदामा ब्राह्मण यह सब आनंद देखताहुआ श्यामसुन्दरकी ड्योढ़ीपर पहुँचा तब इसभयसे कि मुझको कोई भीतरजाने से रोक न देवे बारम्बार पीछे देखताहुआ आगे को चला वृन्दाबनबिहारी की आज्ञानुसार ब्राह्मणों को किसीसमय महलमें जाने वास्ते मनहाई नहीं थी इसलिये किसी द्वारपालकने उसको भीतर जानेसे नहीं बर्जा जब सुदामा ब्राह्मण तीन ड्योढ़ी नांघ कर चौथे द्वारे पर जहां द्वारकानाथ जड़ाऊ सिंहासन पर बैठे हुये रुक्मिणी के साथ चौपड़ खेलते थे पहुँचा तब द्वारपालकने उसका हाल पूछने उपरान्त मुरलीमनोहरके पास जाकर बिनयकी ॥

क० शीशपगा न झँगा तनुमें नहिं जानिको आहि बसै केहि ग्रामा । धोती फटीसी लटी दुपटी अरु पांव उपानहकी नहिं सामा ॥ द्वारखड़ो द्विज दुर्ब्बल देखिरह्यो चकिसो बसुधा अभिरामा । पूछत दीनदयालुको धाम बतावत आपन नाम सुदामा ॥

यह बचन सुनतेही केशवमूर्त्ति चौपड़ खेलना छोड़कर सिंहासनसे उतरपड़े व

आंखोंमें आंशू भरकर मिलनेवास्ते दौड़े जब सुदामाने श्रीकृष्णचन्द्रको आते देखा तो दौड़कर उनके चरणों पर गिरपड़ा तब श्यामसुन्दर ने सुदामाको बड़े प्रेमसे उठाकर अपनी छाती में लगा लिया इतनी कृपा द्वारकानाथकी अपने ऊपर देखकर सुदामा मनमें कहने लगा हे परमेश्वर मैं यहहाल प्रकट देखताहूं या स्वप्न में द्वारकानाथ ने सुदामाका हाथ पकड़ेहुये उसे सिंहासनपर लेजाकर बैठाला व अपने हाथसे उसकी धूरि झाड़कर पैरके कांटे निकाले व उसका चरण धोनेवास्ते रुक्मिणी से जलमांगा व सुदामासे कहा ॥

क० काहे बिहाल बिवाइनते पगकंटक जाल गड़े पुनि जोये। हाय महादुखपायो सखा तुमआये इतै न कितै दिनखोये ॥ देखि सुदामा की दीनदशा करुणाकरिकै करुणामयरोये। पानी परात को हाथछुयो नहिं नयननके जलसे पगधोये ॥

जब चरण धोतीसमय सुदामा अतिलज्जा से ज्यों २ पैर अपना सिकोरेलेताथा त्यों २ बैकुण्ठनाथ उसपर अधिक दयालुहोकर अपनेहाथ उसका चरणधोते थे यह बातदेखकर रुक्मिणी आदिक आठोंपटरानी चाहती थीं कि सुदामाकी सेवा हमलोग अपनेहाथसे करैं जिसमें हमारे प्राणपतिको श्रम न हो पर त्रिभुवनपतिने यह बात न मानकर अपने हाथसे सुदामाके अंगपर चन्दनलगाया व देवताकेसमान बिधिपूर्व्वक उसका पूजनकिया व छत्तीसव्यञ्जन खिलाकर पान व इलायचीदेने व अतरलगाने उपरांत फूलोंका गजरा उसे पहिनाया व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियोंसेकहा तुमलोग जितनी सेवा सुदामा हमारेमित्रकी प्रेमपूर्व्वक करौगी उतना हम तुम लोगों से प्रसन्नहोंगे जिससमय रुक्मिणीजी सुदामाके चँवर हिलानेलगीं उससमय देवता लोग अपने २ बिमानों परसे यहहाल देखकर बड़ाई भाग्य सुदामाकी करनेलगे ॥

दो० याबिधि बिप्रहिपूजिकै माखन प्रभुयदुराय।
कुशल क्षेम पूछनलगे अमृतबैन सुनाय ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित यह चरित्र देखतेही रुक्मिणी व सत्यभामा आदिक सब स्त्रियां द्वारकानाथकी व जो यदुबंशी वहांपर थे अचम्भामानकर आपस में कहनेलगे देखोरूपवान् व धनपात्रका सब कोईआदरकरते हैं इस दरिद्री बूढ़ेब्राह्मणने न मालूम पिछलेजन्म कौन ऐसाभारी तप किया था व क्या गुण इसमेंभराहै जिसके कारण त्रिभुवनपति अपनेहाथ से इतनी सेवा इसकी करते हैं ॥

चौ० याहि कृष्ण पूजतहैं जैसे। निजपूरुष मानत हैं तैसे ॥

दो० या बिरंचि सनकादिहैं या नारदऋषि आहि ।
या शिवगौरीनाथहैं हरिपूजतहैं ताहि ॥

उससमय सत्यभामाने जो बड़ी बोलनेवाली थी दूसरी स्त्रियों से कहा श्रीकृष्णजी सदा हमलोगोंकेसाथ अभिमान भरीहुई बातें कियाकरते हैं अब उनके मित्रको देखो जिसने जन्मभर नयाकपड़ा कभी स्वप्नमें भी नहीं देखा पहिरनेवास्ते कौनकहै न मालूम यह ब्राह्मण देवता किसनगरमें रहते हैं जिनपर ऐसा दरिद्र छारहाहै पर इसका बड़ाभाग्य समझना चाहिये जिसने बैकुण्ठनाथ को ऐसा बशकरलिया पहिले मैंने नन्द व यशोदा इनकेमाता व पिताके गौचरानेका हालसुनाथा व आप दही मक्खन चुराकर खायाकरते थे अब इनके मित्रको देखकर मुझे बहुत बिश्वासहुआ कि वे सब बातें सत्यहैं जब सुदामाने ऐसी कृपा श्यामसुन्दरकी अपने ऊपर देखी तब उसनेमन में समझा कि केशवमूर्त्तिने मुझे नहीं पहिंचाना किसी दूसरेके धोखेसे मेरी टहलकरते हैं मैं इस योग्य नहींहूं बैकुण्ठनाथ अन्तर्यामीने यहहाल जानकर उसकासंदेह छुड़ाने वास्ते कहा हे मित्र तुमको यादहोगा जब हम व तुम दोनों मनुष्य एकसाथ सांदीपन गुरूके यहां बिद्यापढ़ते थे और उन्हींदिनों तुम्हारा बिवाह हुआथा सो बतलाओ हमारी भौजाई अच्छीतरह हैं व तुमराहमें क्षेमकुशल से यहांतक आये मुझको तुम्हारे देखनेकी बहुत चाहना लगीथी तुमने बड़ी दयाकी जो अपने चरणों से मेरास्थान पवित्रकरके मुझेदर्शनदिया मैं अच्छीतरह जानताहूं कि तुम उन दिनोंमें भीमनअपना बिरक्तरखते थे अब बतलाओ किसतरह बीतती है देखो जिसतरह सोलहहजार एकसौ आठ स्त्री रहने पर भी मैं किसीके आधीन नहीं रहता उसीतरह ज्ञानीलोग संसार में रहकर मन अपना बिरक्त रखते हैं ॥

दो० सकल बस्तु संसारकी कबहूं सुस्थिरनाहिं ।
त्यहिकारण ज्ञानीपुरुष चित न धरतधनमाहिं ॥

हे सुदामा! जैसीप्रीति व दयासे सांदीपनगुरू महात्मापुरुष ने सब बिद्या हम को पढ़ाईथी उसमें से एकअक्षर पढ़ने के बदले हम जन्मभर उऋण नहींहोसक्ते जोकोई गुरूको परमेश्वर समान जानकर सेवता है जितना हम उससे प्रसन्नहोते हैं उतना यज्ञ व तप व दान करनेवालों से खुशनहीं होते ॥

दो० गुरुसेवा दुर्लभ महा चितदे करै जुकोय ।
जो मनमें इच्छाकरै सो सब पूरण होय ॥

हे सुदामा तुमने भी पढ़ने लिखनेमें हमारी बड़ी सहायताकीथी व मेरेबदले गुरू

की सेवा करते थे और यहबात तुमको यादहोगी कि जब एकदिन गुरूकी स्त्रीने हमैं व तुम्हैं बनमें लकड़ी लेआनेवास्ते भेजा तब तुमने हमारे बदले भी लकड़ी तोड़कर कहा था कि तुम्हारे हाथ कोमलहैं लकड़ी तोड़ने में दुःखहोगा जब लकड़ीका बोझा शिरपर लेकर दोनोंआदमी घरकोचले तब ऐसीआंधी चलकर पानीबर्षने लगा कि दशपग रास्ताचलना कठिनहुआ ॥

दो० पवनझकोरै तेजसों शीतभयो दुखदाय।
काठभार मस्तकधरे हमको लियो छिपाय॥
बहुत भांति रक्षाकरी आपरहे दुखमांहि।
तुम्हरी प्रीति अनन्त है उऋणहोत मैं नाहिं॥

जब उसदिन हम व तुम आंधीचलने व पानीबर्षने से घरतक नहींपहुंचकर रात को बनमें रहगये तब गुरूजी अपनी स्त्रीपर बहुत क्रोधित होकर प्रातसमय हम दोनों को बनमें ढूंढ़ने आये व ब्याकुलता से हमारा व तुम्हारानाम पुकारकर कहनेलगे तुम लोग जहांपरहो वहांसे बोलो जिसमें मुझे धैर्य्यहो नहीं तो तुम्हारे शोच में मेराप्राण निकलने चाहताहै जब गुरूजीने रोते व चिल्लाते हमारेपास पहुँचकर हमको सर्दीसे कांपते हुये देखा तब दौड़कर प्रेमसे उठालिया व शिर व मुंह हमारा चूमकर बोले तुम लोगोंने अपनीसेवासे मुझे बहुत प्रसन्नकिया इसलिये तुमको आशीर्व्वाद देताहूं कि सब बिद्या तुमको यादहोकर कभी न भूलै व गुरूकेचरणों में तुम्हारी निष्कपट प्रीति बनीरहै हे सुदामा जबसे बिद्यापढ़कर हम व तुम बिलगहुये तबसे आज तुमको देखकर मुझे ऐसा आनन्द प्राप्तहुआ मानो सांदीपन गुरूका दर्शनपाया जब यहसुन कर सुदामाका संदेह छूटगया तब उसने नम्रतासे हाथ जोड़कर बिनयकी हे स्वामी तुम त्रिभुवनपति होकर मुझे क्यों इतना लज्जितकरतेहो जहां चारोंवेद आपकेश्वासा होकर तीनोंलोकके जीव तुम्हारा पूजन करते हैं वहां आपने केवल संसारीजीवों को राह दिखलाने वास्ते गुरूसे बिद्यापढ़ी है व आपके आदि व अन्त व भेद को कोई पहुंचने नहीं सक्ता तुम सब जगत् के माता व पिता अविनाशी पुरुषहोकर संसारी व्यवहार अपनीइच्छासे करतेहौ औ तुम्हारानाश कभी नहीं होता जो लोग प्रेमपूर्वक आपकानाम जपकर तुम्हारीकथा व कीर्त्तन सुनतेहैं उनको संसार में यश प्राप्तहोकर अन्तसमय मुक्ति मिलती है जब शेषनाग हजारमुखसे दिनरात आपकी चर्चारखनेपर भी तुम्हारे भेदको नहीं पहुंचसक्ते तब देवता व संसारीजीवों की क्यासामर्थ्य है जो तुम्हाराआदि व अन्त जाननेसकैं आप पलकभांजते भर में चौदहोंभुवन उत्पन्न व नाशकरनेकी सामर्थ्य रखकर सब जीवोंका पालनकरते हैं व आप सदा एकरस रहकर

घटने बढ़ने से कुछ प्रयोजन नहींरखते व तुम्हारा चमत्कार सब जीवों में होकर आप अपने तेजसे प्रकाशित रहते हैं तुम अपनी इच्छासे मनुष्य तनुधरकर जो काम मनुष्यों को करना चाहिये वहबात संसारीजीवों को राहदिखलानेवास्ते करतेहो नहीं तो आप जन्ममरणसे रहितहैं तुम्हारेकाम व अवतारकी गिन्ती कोई करने नहीं सक्ता हे दीनानाथ जिस चतुर्भुजीमूर्त्ति से आप जर्दपीताम्बर व बैजयन्तीमाला पहिने शंख चक्र गदा पद्म धारणकिये गरुड़पर बैठते हैं उसरूपको मैं हजारों दण्डवत् करताहूं व सब छोटे बड़ोंको अपना बालकसमझकर आपगरीबोंपर अधिक दयाकरते हैं व तीनोंलोक में किसीकाडर न रखकर अभिमानियोंका अहंकार तोड़देते हैं श्यामबर्ण अंगतुम्हारा ऐसासुन्दर व कोमल होकर कमलरूपी आंखें हँसतेहुये मुखारबिन्दपर ऐसी शोभादेती हैं जिनकाबर्णन मुझसे नहीं होसक्ता मेरापूर्बजन्मका पुण्य सहायहुआ जो तुम्हारेचरणोंका दर्शनपाया अब मैं कुछ इच्छा न रखकर यही चाहताहूं कि आठोंपहर तुम्हारे स्मरण व ध्यानमें लीन रहकर संसारी ब्यवहार स्वप्नकेसमान समझूं ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

सुदामा ब्राह्मणका श्रीकृष्णजी से बिदा होना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब सुदामाने इसीतरह बहुत स्तुति श्यामसुन्दर की प्रेमपूर्वककी तब द्वारकानाथ अन्तर्यामीने हँसकर कहा हे मित्र हम तुम्हारी अमृतरूपी बातोंसे बहुत प्रसन्नहुये अब जो सौगात हमारी भौजाईने भेजी है सो देव यह बचन सुनतेही सुदामाने पछिताकर मनमें कहा देखो बड़ेशोचकी बातहै जो मूठीभर तण्डुल त्रिभुवनपति को भेटदेऊं जब ऐसा बिचारकर सुदामा लज्जासे चावलकी पोटली कांख में छिपानेलगा और मुख उसका मलीन होगया तब बसुदेवनन्दनने मनमें कहा देखो एकबेर हमारा कलेवा छिपाकर सुदामा इस दरिद्रता को पहुँचा तिसपरभी वही बात करताहै फिर केशवमूर्त्तिने वह पोटरी उसकी बगलमें से खींचकर खोलडाली व बड़े प्रेमसे भूसीमिलाहुआ दोमुट्ठी चावल खाकर बोले हे सुदामा जितना प्रीतिसहित एक फूल व तुलसीदल चढ़ानेसे मैं प्रसन्न होताहूं उतना बिनाभक्ति लाखोंमन मिठाई व जड़ाऊ भूषणसे खुशी नहीं होता ॥

चौ० दुर्योधन बहुपाक बनाये । प्रीति बिना मोको नहिं भाये ॥
बिदुर भक्तकी प्रीति जुजानी । बासी साग बहुत रुचिमानी ॥
विविधभांति मिष्टान्न जुलावै । बिना प्रीति कछु काज न आवै ॥
जो कुछ तुम लाये हमपाहीं । थोड़ो मतिजानो मनमाहीं ॥

दो० साग पातभो प्रीतिसों हमको देय जु कोय ।
त्यहिसमान सब सृष्टिमें कछुक स्वाद नहिंहोय ॥
तण्डुलकी महिमा कहत माखनप्रभु यदुराज ।
सुर नर मुनि तिहुंलोकके तृप्तभये हैं आज ॥

पोटली खोलती समय थोड़े से चावल पृथ्वीपर गिरपड़े सो उसे मुरलीमनोहर अपनेहाथ उठानेलगे व रुक्मिणी आदिक आठों पटरानियों से कहा एक एकदाना चावलका चुनकर मुझे उठादेव जिसमें कोईदाना पैरकेनीचे न आवे व चावल खाती समय द्वारकानाथ बोले जैसा स्वाद इस तण्डुलमें मिलताहै वैसा भोजन आज तक यशोदा व देवकीने मुझे नहीं खिलायाथा ऐसा कहकर जैसे श्यामसुन्दरने तीसरी मुट्ठी चावल उठाके खानेचाहा वैसे रुक्मिणीजी उनका हाथ पकड़कर बोलीं बसकीजिये हम लोगभी तुम्हारेचरणोंके अधीन हैं कुछ हमारे खानेवास्तेभी रक्खोगे या नहीं ॥

क० हाथगहे प्रभुको कमला कह नाथ कहा तुमने चितधारी । तण्डुल खाय मुठी दुइ दीन कियो तुमने दुइलोक बिहारी ॥ खाय मुठी तिसरी अब नाथ कहां निजबास किआस बिचारी । रंकहि आपसमान कियो तुम चाहत आपहि होन भिखारी ॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजीने कहा ॥

क० क्योंरसमें बिष बाम कियो अब और न खान दियो यक फंका । बिप्रहि लोक तृतीयक देत करीतुम क्योंअपने मनशंका ॥ भामिनि मोहिं जिवांइ भलीविधि कौनरह्यो जगमें नर रंका । लोग कहैं हरिमित्र दुखी हमसे न सह्यो यह जात कलंका ॥

यह सुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

क० भार्गवह्वै तुम जीति धरा दै बिप्रनको अतिही सुखमानो । बिप्रन काढ़िदियो तुमको निशि तादिनको बिसरो खिसियानो ॥ सिन्धु हटायकरी तुम ठौर द्विजन्म सुभाव भलीबिधि जानो । सो तुम देत द्विजै सब लोक कियो तुमने अब कौन ठिकानो ॥

यह सुनकर श्रीकृष्णजीने उत्तर दिया ॥

क० भामिनि देउँ द्विजै सब लोक तजो हठ मोरे यही मनभाई। लोक चतुर्दशकी सुख सम्पति लागत बिप्रबिना दुखदाई ॥ जाय बसों उनके गृहमें करिहौं द्विज दम्पतिकी सेवकाई । तब मनमांह रुचै न रुचै सो रुचै हमको यहिठौर सुहाई ॥

यह बचन सुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

क० नेक न कानिकरैं द्विज ये नृगसे नृपको निरयी करिडाख्यो । शापदियो पुनि शंकरको अबलौं मखते शिव भाग बिसाख्यो ॥ बिप्रन फेरि बिजय जयको तुम देखत घोर कुयोनिमें डाख्यो। सो तुम जानि सबै गुण दोष करौ फिरहू द्विजको पतियाख्यो ॥

यह सुनकर श्यामसुन्दरने कहा ॥

क० बिप्रनके मुखते सुर जेंवत बिप्र रची अतिरीति सुहाई । बिप्रबिना जगअन्ध पशू बिन बिप्र नहीं गुण दोष लखाई ॥ बिप्रहि मोहिं रुचै निशिबासर बिप्रनही ममशाक चलाई । बिप्रनते नहिं उऋण कभूं हठ छोड़ि प्रिया करु बिप्र भलाई ॥

यह सुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

क० तातहैछार कलंक भरा मम नाथ हत्यो उर लात प्रहारी । शालत सो अजहूँ उरमें हमसंग कुरीति सदा द्विजपारी ॥ ब्राह्मण ह्वै तुमहूँ बलिपै पिय जातिस्वभाव दया परिहारी । सो तुम जानि सबै गुण दोष पड़ो द्विजहाथ न श्याममुरारी ॥

यह सुनकर मुरलीमनोहरने उत्तर दिया ॥

क० भामिनि क्यों बिसरी अबहीं निज ब्याहसमय द्विजकी हितुआई । शोच लिजो द्विजकी करनी जिसके करसों पतिया पठवाई ॥ बिप्र सहाय भयो तिहि अवसर को द्विजके समहै सुख दाई । योग्य नहीं अर्द्धांगिनिहै तुमको द्विजहेत इती निठुराई ॥

जब त्रिभुवनपतिने देखा कि तीसरी मुट्ठी खाने से रुक्मिणी उदास होजायगी तब

वह न खाकर रुक्मिणी से कहा हे प्राणप्यारी यह ब्राह्मण मेरा बड़ा मित्र होकर संसार में सुख व दुःखको बराबर जानताहै व आठोंपहर मेरे स्मरण व ध्यानमें रहकर संसारी सुखकी कुछ चाहना नहीं रखता जब मुरलीमनोहर ने इसीतरह अनेक बातें समझाकर रुक्मिणीका बोधकिया तब बसुदेव व देवकी व उद्धव आदिक यदुबंशी जो वहां बैठे थे यह हाल देखकर आपसमें हँसी से कहनेलगे देखो इस ब्राह्मणके समान कोई दूसरा गरीब संसार में न होगा जो इतनी दूरसे मुट्ठीभर तंडुल सौगात लाया है व कृष्णचन्द्रको ब्राह्मणसे भी अधिक कंगाल समझना चाहिये जो अकेले उस चावलको खाकर उसकी बड़ाई करते हैं व दूसरे को नहीं देते उनकी बात सुनकर वसुदेवनन्दन ने उत्तरदिया तुमलोग इस तंडुलका स्वाद क्या जानो तुम्हाराभाग्य उदयहुआ जो इस ब्राह्मणके चरणोंका दर्शन पाया ॥

दो० इन तण्डुलके स्वादको जानत है नहिं कोय ।
हम बिनु ऐसो कौनहै जाको प्रापत होय ॥

जब पहररात बीते द्वारकानाथने सुदामाको महलमें लेजाकर अपने पलँगके पास दूसरे छपरखट पर सुलाया तब मुरलीमनोहरकी आज्ञानुसार रुक्मिणीजी ने सुदामा का पैरदाबा व श्यामसुन्दर आधीराततक अपने मित्रसे लड़कपनकी बातें करते रहे जब सुदामाजी सोगये तब केशवमूर्त्ति अन्तर्यामी ने बिचारा कि यह ब्राह्मण द्रव्यकी चाहना नहीं रखता पर इसकी स्त्री ने संसारीसुख व लक्ष्मी मिलनेवास्ते इच्छा रखकर इसे बरजोरी मेरेपास भेजाहै इसलिये सुदामाको इतना धन देना चाहिये जो देवताओं कोभी प्राप्त न हो ऐसा बिचारतेही बैकुण्ठनाथ ने उसीसमय बिश्वकर्मा को बुलाकर आज्ञादी कि तुम अभी सुदामापुरी में जाकर उसके रहनेवास्ते ऐसा रत्नजटित स्थान बनादेव जिसके बराबर चौदहोंभुवन में दिखलाई न देवे आठोंसिद्धि व नवोंनिधि वहां बनीरहैं जिसमें कोई कामना सुदामाकी बाकी न रहै ॥

दो० तबहिं बिश्वकर्म्मा चल्यो प्रभुकी आज्ञा पाय ।
मन्दिर रत्नजड़ाव के क्षणमें दिये बनाय ॥

जब सुदामा निद्रामें एक करवँटसे दूसरी करवँट लेताथा तब बसुदेवनन्दन प्रेमसे उसके अंगपर हाथ फेरकर बड़ाई करते थे जब तीसरे दिन सुदामा प्रातसमय नित्य नियमकरके श्यामसुन्दरसे बिदा होनेगया तब देवकीनन्दन ने ड्योढ़ीतक सुदामाके साथ जाकर आंशूभरके कहा हे भाइ तुमने बड़ीदयाकी जो अपना दर्शन मुझे दिया मैं तुमसे यही मांगताहूं कि हमको भूल मतजाना जब सुदामा मोहनीमूर्त्तिको दंडवत् करके अपने घरचला तब वह आंखोंकी राह स्वरूप वृन्दाबनबिहारीका हृदयमें रखकर

कहने लगा देखो श्रीकृष्णजी ने मेरे ऊपर इतनी दयाकी जिसका पलटा मैं कईजन्म तक नहीं देसक्ता पर कुछ द्रव्य मुझे नहीं दिया जिससे दरिद्र मेरा छूटजाता जिस तरह कंगालरूप अपने घरसे आयाथा उसीतरह खालीहाथ फिरचला ॥

चौ० फिर वह द्विज समभ्यो मनमाहीं । विघ्नअनेक होतधनमाहीं ॥

दो० याही कारण कृपाकरि मित्र आपनो जान ।
मोहिं द्रव्य दीन्ह्यो नहीं माखनप्रभु भगवान ॥

मेरेवास्ते यह गरीबी बहुत अच्छी समझनी चाहिये जिसमें परमेश्वरका भजन आनन्दसे बनपड़ताहै धन रखनेवाले सदा खटके में रहते हैं इससे अधिक क्या धन होगा जो त्रिभुवनपतिके चरणोंका दर्शन मुझे प्राप्तहुआ बहुत अच्छी बात मैंने की जो द्वारकानाथसे कुछ नहीं मांगा मांगने से धन तो मिलता पर मुझे लोभी समझते अब मैं अपने घर जाकर ब्राह्मणी को समझालूंगा जब सुदामा इसीतरह शोचबिचार करता हुआ अपने गांवके निकट पहुँचा तब उसने वहां अपनी झोपड़ीका पता न पाकर क्या देखा कि उसजगह एक स्थान रत्नजटित बनाहै और उसके चारोंओर अनेक तरहके फल व फूल बागों में लगेहोकर वृक्षोंपर तूती व कोकिला व मोरआदिक सुंदर पक्षी बैठेहुये मीठी २ बोली बोलरहे हैं व पुष्पों पर भँवरे रस चूसने वास्ते गूंजते व महलके द्वारेपर चोपदार व सिपाही लोग बैठेहोकर अनेक दासी व दास अपना २ काम करतेहैं सुदामा यह आश्चर्य्य देखतेही शोचित होकर कहने लगा हे परमेश्वर थोड़े दिनमें ऐसा सुन्दरस्थान यहां किसने बनाया या मैं राह भूलकर कहीं दूसरी जगह चलाआया व मुझे यह हाल प्रकट दिखलाई देताहै या स्वप्ने में न मालूम पुरानी झोपड़ी मेरी क्या होकर वह पतिव्रता स्त्री कहां चलीगई बड़े शोचकी बातहै जो मैंने लोभवश बाहर निकलकर अपने घर व स्त्रीकोभी हाथसे खोया हे नारायण अब मैं क्या करूं व कहांजावँ एक तो गरीबी के दुःखमें पड़ाथा दूसरे स्त्री खोजनेका शोच और अधिक हुआ अब मैं उसे कहां जाकर ढूंढूं जिससमय सुदामा इसी शोच व बिचार में वहां खड़ाथा उसीसमय सुशीला अपने स्वामीको देखनेवास्ते कोठेपर चढ़ी जैसे उसने सुदामाको द्वारेपर खड़े देखा वैसे दासियोंको आज्ञादी कि हमारे पति जो द्वारे पर खड़े हैं उनको सन्मानपूर्वक भीतर लिवालाओ तब द्वारपालक व दासियों ने यह आज्ञा पातेही सुदामाके पास जाकर दण्डवत् करके उनको भीतर चलनेवास्ते कहा व कोई शरीरकी धूरि झाड़कर पंखा हिलाने लगा तब सुदामा उनके आदरभाव करने से घबड़ाकर बोला मुझ गरीब ब्राह्मणको राजाओं के घरमें क्यों लियेजाते हो यह सुनकर द्वारपालकों ने बिनयकी महाराज यहस्थान आपकाहै निस्संदेह भीतर चलिये जब सुदामा उनकी बातका बिश्वास न मानकर डरसे कांपनेलगा तब सुशीला सोरहों

शृंगार किये सखियोंको साथलिये आरती करनेवास्ते द्वारेपर आई व सुदामाके चरणों पर गिरकर परिक्रमा लिया व आरतीकरके हाथ जोड़कर बिनयकी ॥

चौ० ठाढ़े क्यों मंदिर पगधारो । मनते शोच करो तुम न्यारो ॥
तुमपाछे विश्वकर्मा आये । तिन मंदिर पलमाहिं बनाये ॥

भूषण व वस्त्र पहिरनेसे सुशीलाकारूप बदलगयाथा इसलिये कुछ क्षण बीते उसे पहिचानकर ध्यानमें श्रीकृष्णजीकी दण्डवत्की व उसकेसाथ भीतर जाकर क्यादेखा कि मखमली परदे मोतियोंकी झालर लगाकर सब द्वारोंमें लटकाये हैं व रत्नजटित चौकी व शय्या बिछी होकर सब स्थानोंमें अगर व चन्दन आदिक जलनेसे सुगन्ध उड़रही है व ऐसी मणि व रत्नादिक वहां रक्खेथे जिनके प्रकाशसे रातको उजियाला रहकर दीपक जलानेका प्रयोजन नहीं पड़ताथा ॥

दो० रत्नजटित घर देखिकै चकितभयो मनमाहिं ।
ज्यहिसमान तिहुंलोकमें और ठौर कहुं नाहिं ॥

यह सब राजसी बिभव देखकर जब सुदामाकामुख मलीन होगया तब सुशीलाने आश्चर्यमानकर पूछा हे स्वामी धन मिलनेसे संसारीलोग प्रसन्नहोते हैं आप यह सब इन्द्रपुरीका सुख व इतना धनपाकर क्योंउदास होगये इसकाभेद बतलाइये यह सुनकर सुदामा बोले हे प्राणप्यारी यहधन जड़रूपीमाया परमेश्वरकी बहुतबलवान्होकर सबजगत् को मोहलेती है इसलिये जैसा गरीबीमें मुझसे हरिभजन बन पड़ताथा वैसा धन सुख पानेसे नहीं होसकेगा यही समझकर मेरामुख मलीन होगया देखो श्यामसुन्दरने बिना मांगे इतनाधन मुझको दिया पर थोड़ासमझकर मुखसे कुछ नहींकहा इसलिये मैं यह सब बिभव मिलनेका हाल कुछ न जानकर अपनी टूटीझोपड़ीवास्ते पछिताताथा सच्च है बड़ेलोग किसीको कोईबस्तु देते हैं तो मुखसे नहीं कहते मुझे इसबातका बड़ाशोच है जो इतनेदिनतक दर्शन त्रिभुवनपतिका न करके अवस्था अपनी वृथाखोई हे प्रिया तुम इस धनको अपना न जानकर आठोंपहर यह समझती रहना कि सब सुख व धन मुझे द्वारकानाथकी कृपासे मिलाहै जिसमें तुझे अभिमान न होवै और मैं त्रिभुवन-पतिसे दिनरात यही मांगताहूं कि जन्म जन्मान्तर परमेश्वरका दास व सेवकहोकर उनकी सेवा व टहलमें बनारहूं ॥

दो० जबलौं सुमिरे ना हरी जो सन्तनके मीत ।
वे दिन गिनतीमें नहीं गये वृथा सब बीत ॥

यह बात सुनकर सुशीलाने मनमेंकहा देखो श्यामसुन्दर अन्तर्यामीने बिना मांगे

इच्छामेरी पूर्णकी फिर वह बोली हे स्वामी अब तुम निश्चिन्तहोकर हरिभजन किया करो ऐसा समझकर सुशीलाने सुदामा को उत्तम २ भूषण व वस्त्र पहिनाये व सुगन्धादिक उनके अंगमें लगाकर हरिभजनसंयुक्त उनकेसाथ संसारी सुख भोगनेलगी और तनछोड़ने उपरान्त बैकुण्ठमें जाकर लक्ष्मीनारायणके दासी व दासहुये इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित देखो चारमुट्ठी चावल परमेश्वर को देनेसे सुदामा ऐसी सुन्दरगति को पहुंचा जो लोग सदाप्रेमपूर्वक छत्तीसव्यंजन नारायणजी को भोगलगाते हैं उनको न मालूम कैसा सुख मिलेगा व सुदामाका स्थान ऐसाउत्तम विश्वकर्माने बनायाथा जिसे देखकर इन्द्रादिक देवते मोहिजाते थे ॥

दो० यह चरित्र अद्भुतमहा चितदे सुनै जु कोय ।
रहैसदा सुखचैन सों अन्त मुक्तिफल होय ॥

बयासीवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका सूर्यग्रहण स्नान करनेवास्ते कुरुक्षेत्रमें जाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित अब हम श्रीकृष्णजीके कुरुक्षेत्रयात्राकी कथा कहते हैं सुनो एकबेर सूर्यग्रहण लगनेमें श्यामसुन्दर व बलरामजीने राजा उग्रसेनसे कहा महाराज कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहण स्नानका बड़ामाहात्म्यहोकर जो वस्तु वहां दानकरै उसका हजारगुणा फल मिलताहै यह सुनकर यदुबंशियोंने पूंछा हे महाप्रभु ऐसा माहात्म्य वहांका किसतरह हुआ केशवमूर्त्तिने कहा वह स्थान बहुतपुराना व पवित्रहोकर पहिले उसका नाम स्यमन्तकक्षेत्रथा जबसे परशुरामजीने क्षत्रियों को मारकर वहां रक्तकी नदी बहाई व उसी रुधिरसे पितरोंका तर्प्पणकिया व ऋषीश्वरोंने उस स्थानपर तप व ध्यान परमेश्वरका किया तबसे वहांकानाम कुरुक्षेत्र प्रकटहोकर सूर्यग्रहण नहानेका बड़ामाहात्म्य हुआ यह बचन सुनतेही जब राजा उग्रसेन व यदुवंशीलोग प्रसन्नहोकर वहां चलनेवास्ते तैयारहुये तब मुरलीमनोहरने अपने माता व पिता व रुक्मिणी आदिक सब स्त्रियों को साथ लेलिया बड़ेबिभवसे राजाउग्रसेन व यदुबंशियों समेत कुरुक्षेत्रको कूचकिया व अनिरुद्ध अपने पोता व कृतबर्मायादवको द्वारकापुरीमें छोड़ दिया जब यदुबंशीलोग अनगिन्ती हाथी व घोंड़े व रथोंपर बैठकरचले व रानियोंके चंडोल व नालकी आदिक नगरसे बाहरनिकलीं उस समय ऐसीशोभा मनहरणप्यारे की मालूम होतीथी जैसे ताराओंमें चन्द्रमा शोभादेते हैं ॥

दो० चले कटक सब साजिकै माखनप्रभु यदुराज ।
बिबिध भांति बाजेबजे सुखको भयो समाज ॥

जब श्यामसुन्दर यदुबंशियोंसमेत कुरुक्षेत्रके निकट पहुँचे व तीर्थ वहांसे दिखलाई देनेलगा तब सब छोटे बड़े सवारियोंपरसे उतरकर पैदलचले किसवास्ते कि वेद व शास्त्रमें ऐसालिखाहै कि तीर्थ जातीसमय सम्पूर्ण रास्ता पैदल न चलसकै तो जहांसे तीर्थका स्थान दिखलाईदे वहांसे अवश्य पैदल चलना चाहिये इसलिये द्वारकानाथने सबको साथ लियेहुये पहिले ब्रह्मकुण्डपर जिसमेंसे वेद निकलाथा जाकर स्नानकिया फिर बहुतसी गौ बिधिपूर्वक व सुबर्ण व द्रव्य व हाथी व घोड़ेआदिक अनेकतरहकी वस्तु तीर्थबासी ब्राह्मणोंको दानदिया व उत्तम २ डेरोंमें टिककर अपने साथियोंसे कहा तुमलोग यहां तीर्थमें ब्राह्मणोंका सन्मान करके किसीको दुर्वचन मतकहना व श्याममुन्दरने जिसजगह ऋषीश्वर व महापुरुषोंके आने व रहनेका समाचारपाया वहां आप जाकर उनका दर्शन किया व अपने सेवकों को आज्ञादी ॥

दो० तात हमारे नन्दजू और यशोदा माय।
उनकी सुधि जो कुछ मिलै हमसों कहियो आय॥

जब दुर्योधनआदिक अनेक देशके राजाओंने जो ग्रहण स्नानकरने वहां आयेथे मुरलीमनोहरके यहां आनकर उनका दर्शनकरके अपनाजन्म सुफलजाना तब धृतराष्ट्र आदिक बड़े २ नृपति व भीष्मपितामह ने राजाउग्रसेन की बहुतस्तुति करके उनसे बिनयकी महाराज तुम्हारा बड़ाभाग्यहै देखो जिसपरब्रह्मपरमेश्वरका दर्शन ब्रह्मा व महादेव आदिक देवताओंको जल्दी ध्यान में नहींमिलता वही त्रिभुवनपति दिनरात तुम्हारीआज्ञामें रहकर बिनापूंछे कोईकाम नहींकरते व सब जगहके ईश्वरहोकर तुम्हें दंडवत्करते हैं ऐसी पदवी किसी देवताको नहीं मिलसक्ती यहबचनसुनकर जब राजा उग्रसेनने सन्मानपूर्वक उनको बिदाकिया तब राजाभीष्मक व नग्नजित् आदिक ब-सुदेवनंदनके श्वशुर व सालोंकाहाल जो वहां ग्रहण स्नानकरनेआये थे सुनकर मुरली-मनोहरकी स्त्रियां उनसे भेंटकरनेवास्ते गईं तब वे लोग उन्हें देखकर अतिप्रसन्नहुये व उन्होंने बहुतसी सौगात अपने २ देशकी मुरलीमनोहरको भेंटदेकर उनकादर्शन प्रेमपूर्बक किया व कुन्तीने श्रीकृष्णजीसे कहा मैं जानतीथी कि मेरे बेटोंपर तुमदया रखतेहो सो तुम्हारे भाइयोंने दुर्योधनके हाथसे इतना दुःखउठाया पर तुमने कुछसुधि नहींली इसबातका मुझे बड़ा पछतावाहै यहबचन सुनकर लक्ष्मीपतिने कहा हे फूआ इसमें कुछ मेरा दोष न होकर सबदुःख सुख अपने प्रारब्ध से मिलता है जिसतरह आंधीचलनेसे कोई तिनुका बिनाउड़े नहीं रहसक्ता उसीतरह सब जीव परमेश्वर के आधीन रहकर अपने २ कर्मोंकाफल भोगते हैं उसमें तिलभर घटने बढ़ने नहींसक्ता यहसुनकर कुन्तीने बसुदेवजीसे कहा हे भाई जबसे तुमने मेराबिवाह करदिया तबसे कुछसुधि नहींली वमैंने जैसादुःख दुर्योधनके हाथसेपाया उसकाहाल परमेश्वरजानता

है देखो श्याम व बलरामने भी हरिभक्तोंका दुःखछुड़ानेवास्ते संसारमें अवतार लेकर मेरेऊपर कुछ दया नहीं की इसमें कुछ तुम्हारा भी दोष न होकर यहबात सच्चहै कि जब खोंटेदिन आनेसे परमेश्वर बिमुखहोते हैं तब बाप व भाई आदिक किसीकी सहायता कुछकाम नहीं करती यह सुनतेही वसुदेवजीने रोकरकहा हे बहिन हरिइच्छा बलवान् होकर कर्मकीगति जानी नहीं जाती जिससमय दुर्योधनने तुमको दुःखदिया था उन्हींदिनों में कंसने मुझे कैदरखकर मेरे बेटोंके मारनेवास्ते जो २ उपायकिये थे उनको तुमने सुनाहोगा जब परमेश्वरकी दयासे दोनोंबालक किसीतरहबचे तब राजा जरासन्ध आनकर ऐसालड़ा जिसकेडरसे अपनादेश छोड़कर टापूमें जाबसे इसीकारण तुम्हारी कुछसुधि नहीं लेसके इसीतरह अनेक बातैं कहकर बसुदेवजीने कुन्तीका बोध किया जब नन्द व यशोदा आदिकने कि वे भी ग्रहणस्नान करने वहांजाकर श्यामसुन्दरके डेरेसे तीनकोशपर टिकेथे यहहालसुना कि मोहनप्यारे अपने कुटुम्बसमेत यहां आये हैं तब वेलोग उनसे भेंटकरनेवास्ते ब्याकुलहोकर आपसमें कहनेलगे अबवृन्दाबनबिहारी सबराजाओं के शिरताजहुये हैं इसलिये उनको हमारीतरफ देखते लज्जा मालूमहोगी जहां अनेक ड्योढ़ीदार रहनेसे राजाओंका पहुँचना कठिन है वहां हम गवांरोंको कौनजाने देगा ॥

दो० जिस जागह नरपतिधनी बैठनपावत नाहिं ।
हमसब ग्वाल गवांरजन कैसे अबतहँ जाहिं ॥

जब नन्द व यशोदा आदिक ब्रजबासियों से बिनादेखे मुरलीमनोहर के नहींरहागया तब वे लोग घबड़ाकर श्यामसुन्दरका डेरा पूछतेहुये वहांसे दौड़े व उसीसमय किसीने आनकर श्रीकृष्णजीसेकहा कि नन्द व यशोदा आदिकभी ग्रहणनहाने वास्ते यहांआनकर टिके हैं यहबचन सुनतेही मोहनप्यारे उनकेप्रेमसे रोनेलगे यहदशा उनकी देखकर देवकीमाता घबड़ागई व अपने अंचलसे उनका आंशुपोंछकर बोलीं हे लालन जहांतुम्हारा नामलेनेसे जगत्का दुःख छूटजाताहै वहां तुम्हें कौन ऐसादुःख प्राप्तहुआ जो इतनारोतेहो यहसुनकर त्रिभुवनपतिने कहा हे माता जबसे मैंने नन्द व यशोदा के आनेका समाचार सुना है तबसे मेरामन उनकेचरण देखनेवास्ते ब्याकुल होकर मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता सो तुम जल्दी रथ आदिक भेजकर उनको यहां बुलवावो तो मुझे उनके दर्शन मिलनेसे धैर्य्यहो हम बहुतअच्छी शुभसायतमें द्वारका से चलेथे जो तीर्थ स्नानकरने का फलपाकर ब्रजबासियों से भेंटहुई यहबचन सुनतेही बसुदेवजीने रथ व पालकी व हाथी व घोड़े आदिक बाहन ब्रजबासियोंकेलाने वास्ते भेजकर कहा हे बेटा आज बड़ीखुशी का दिनहै इसलिये तुमसे कुछलेकर तब नन्द व यशोदा को तुम्हारेपास आनेदेंगे यहसुनकर वृन्दाबनबिहारीने कहा हे पिता

संसारमें कोईबस्तु ऐसी नहीं है जो मैं तुम्हारे भेंटकरूं मेराशरीर तुम्हारे ऊपर न्योछावरहै ॥

दो० यह सुनकर बसुदेवजी मुदित कहत सुखपाय ।
तुमसे पूत सपूतकी महिमा कही न जाय ॥

जब एकसखी ने श्रीकृष्णचन्द्रको रोतेहुये देखकर रुक्मिणी आदिक पटरानियों से यह हाल कहा तब वे सब घबड़ाकर बैकुण्ठनाथ के पास चलीआई व मुँह ढांपकर देवकी से उनके रोनेका कारण पूंछनेलगीं ॥

चौ० यह सुनि कहत देवकीमाता । श्रीयदुनाथ प्रेमकी बाता ॥
नन्द यशोदा ब्रजते आये । जिन याको है लाड़ लड़ाये ॥
याते इनकी यह गति भई । सुधिबुधि सकलभूलितनुगई ॥

दो० कंस कुटिल के त्रासते वास कियो जिनपास ।
उनके गुण नहिं कहिसकैं जो मुखहोयँ पचास ॥

यह बचन सुनतेही रुक्मिणी आदिक पटरानियां हँसकर आपसमें कहनेलगीं देखो आज हमारे प्राणनाथ राधाआदिक गोपियों से भेंटकरके अपना कलेजा ठंढाकरैंगे व बालापनकी प्रीति समझकर ब्रजबालाओंको भी बहुत सुख मिलेगा व हमलोग राधा प्यारीकी सुन्दरताई जो सुनाकरती थीं अब उसे देखकर मालूम होगा कि वह कैसी सुन्दरी है जब ग्वालबालोंकी संगतिमें नन्दलालजी मोरपंख शिरपर रखकर नाचैं व गावैंगे तब वह आनन्द देखकर हमलोगोंकोभी बड़ासुख प्राप्तहोगा ॥

दो० धन्य यशोदा नन्द धनि धन्य नन्दके नन्द ।
धनि हम सब जो देखिहैं ब्रजजन आनँदकन्द ॥

यह बचन रुक्मिणी आदिकका सुनकर श्यामसुन्दर ने रोते २ मुसुकरा दिया व घबड़ाकर नन्द व यशोदा आदिकको आगेसे लेनेवास्ते चले जब यशोदा ने वृन्दाबनबिहारी को आतेहुये देखा व अपना जन्म सुफल जानकर उनको उठाने वास्ते दौड़ी तब मोहनप्यारे गोपियों के गोलमें घुसकर जैसे यशोदा माताके चरणोंपर गिरपड़े वैसे नन्दरानीने उनको उठाकर छातीसे लगालिया व बारम्बार उनका मुँह चूमकर बलायें लेने लगी ॥

दो० माखनप्रभुहि निहारिकै मुदित यशोमति माय ।
राजचिह्न सब देखिकै फूली अँग न समाय ॥

जब केशवमूर्त्ति नन्दबाबा को देखकर बड़ेप्रेमसे रोतेहुये उनके चरणोंपर गिरपड़े

तब नन्दरायने आंशूभरके उन्हें गोदमें उठालिया व अपने लालका आंशू पोंछकर बहुतसा प्यारकिया फिर श्यामसुन्दरने श्रीदामा ग्वाल बालोंके गले मिलकर उत्तम २ भूषण व वस्त्र उनको दिया व सौगात वेलोग जो इनकेवास्ते लेआयेथे उसको बड़े प्रेमसे लिया ॥

दो० हेमवर्ण पीताम्बर ग्वाल बाल सब लेहिं ।
ताके पलटे कान्हको कारीकामरि देहिं ॥

जब ललिता आदिक सखियां व वृषभानुदुलारी को देखतेही जैसे आंखोंमें आंशू भरकर उनके निकट पहुँचे वैसे श्यामा उनको देखतेही प्रेमबश रोते २ व्याकुल होगई ॥

दो० अंग अंग व्याकुलमहा परी धरणि मुरझाय ।
यहगति देखत कुँवरिकी लीन्हीं धाय उठाय ॥

जब यह दशा लाड़िलीकी देखकर ललिता आदिकने उनको बहुत समझाया तब राधाप्यारीने सचेतहोकर घूंघट निकाललिया उससमय श्यामसुन्दरका मुखारबिन्द देखनेसे ब्रजबासियों को जैसा आनन्द हुआ वह मुझसे बर्णन नहीं होसक्ता फिर बसुदेवजीने नन्दरायसे गले मिलकर कुशल पूंछनेउपरान्त कहा तुम्हारी दयासे यह सब सुख मुझे मिलाहै जैसे ब्रजकी गौवोंने जो नन्दरायके साथ आईथीं श्यामसुन्दर को देखा वैसे आंखोंमें आंशू भरकर पूंछ उठायेहुये मुरलीमनोहरके पास दौड़ी चली आईं तब केशवमूर्त्तिने बड़ेप्रेमसे उनकी पीठपर हाथ फेरकर प्यारकिया व ग्वालबालों से सब गायोंका हाल नाम लेलेकर पूंछनेलगे ॥

दो० गायनकी बातैं कहत माखनप्रभु यदुराय ।
त्यों त्यों हर्षितहोत सब आनँदउर न समाय ॥

जब श्याम व बलराम बड़ेप्रेमसे नन्द व यशोदाआदिक ब्रजबासियों को साथ लेकर अपने डेरेमें आये तब देवकी व रोहिणीने यशोदाके गलेमिलकर कुशल पूछने उपरान्त कहा हे नन्दरानीजी हमलोग जन्मभर तुम्हारी सेवाकरें तोभी तुमसे उऋण नहीं होसक्तीं किसवास्ते कि हमारे लड़कोंका प्राण तुम्हारी कृपासे बचाहै नहीं तो कंस पापीके हाथसे इनका बचना कठिनथा यह सुनकर यशोदा बोलीं मैंतो अपनेको मोहनप्यारेकी धाय समझतीहूं कन्हैयाने अपना बालचरित्र दिखलाकर जैसासुख मुझे दियाहै वह आनन्द दूसरे को स्वप्नेमेंभी नहीं मिलनेसक्ता व उसके बियोगमें जितना दुःख मैंने उठाया उसकाहाल परमेश्वर जानताहै आज तुम्हारीकृपासे कान्हर को देख कर सब शोच मेराछूटगया जब राधाआदिक गोपियोंने देवकी माताके चरणोंपर शिर

रखकर दण्डवत्की तब देवकीने उन्हें आशिषदेकर श्यामा को गलेमें लगालिया व उसकारूप जो पटरानियोंसेभी अधिक सुन्दरीथी देखकर मनमें कहा ऐसी महासुन्दरी स्त्री मेरे प्राणप्यारेसे किसतरह छोड़ीगई जब रुक्मिणीआदिक स्त्रियोंने यशोदासे मिलने वास्ते आनकर श्यामाकारूप देखा तब अपनी २ सुन्दरताईका अभिमान भूलगईं उस समय रुक्मिणीने बसुदेवनन्दनसे हाथजोड़के बिनयकी हे ब्रजनाथ तुम्हारीआज्ञा पाऊं तो आज राधाप्यारी को अपने यहां लेजाकर शिष्टाचार करूं ॥

दो० माखनप्रभु आज्ञादई लेजाइय निजधाम।
राधा कुँवरि जेंवाइकै पूरणकीजै काम ॥

यह बचन सुनतेही रुक्मिणीने श्यामाके पास आनकर उसकाहाथ पकड़लिया व बड़े प्रेमसे अपनेयहां लेजाकर छत्तीसब्यंजन खिलाया व अपनेयहांसे उत्तम २ भूषण व बस्त्रादिक उसे पहिनाकर सोरहों शृङ्गारकरके बैठादिया तब सत्यभामा आदिक स्त्रियां श्यामाकारूप जो चन्द्रमासेभी अधिकसुन्दरीथी देखकर मोहित होगईं व सबोंने लज्जा से आंखैं अपनी नीचेकरलीं उस समय बृन्दाबनबिहारीने जाकर बृषभानुदुलारी की शोभा देखी तो रुक्मिणी आदिक से कहा ॥

दो० जो चाहै मोहिं बशकरन तिहूंलोकमें कोय।
श्री बृषभानुकुमारिको हितसों सेवै सोय ॥

यह बात मुरलीमनोहरकी सुनतेही राधा प्रसन्नहोकर मुसुकरानेलगी व रुक्मिणी आदिकने समझा कि बैकुण्ठनाथ बृषभानुदुलारीका हम सबसे अधिक प्यार करते हैं जिस समय द्वारकानाथने नन्द व यशोदाआदिक ब्रजबासियों को एकओर बैठाकर बड़ेप्रेम से सुनहुलीथालियोंमें छत्तीसब्यञ्जन उनकेसामने परोसदिये व दूसरीओर आप यदुबंशियोंसमेत बैठकर भोजन करनेलगे उस समय सब छोटे बड़े वह आनन्ददेखकरप्रसन्न होगये इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित श्यामसुन्दर जितनाप्रेम ब्रजबासियोंकेसाथ रखतेथे उसकाहाल मुझसे कहा नहीं जाता जब सबकोई भोजन करके सुचित्तहुये तब बसुदेवनन्दनने ब्रजबासियों को पान इलायची व इत्रदेकर नन्दजीसे बिनय किया हे बाबा मेरीभक्ति करनेवाले भवसागर पारउतरिजाते हैं सो तुमलोगोंने अपना तन मन धन मेरेऊपर न्योछावर करके मुझसे प्रीतिलगाई इसलिये तुम्हारेबराबर कोई दूसरा भाग्यवान् नहीं है देखो जहां ब्रह्मादिक देवता व बड़े २ ऋषीश्वर जल्दी मेरादर्शन ध्यानमें नहीं पाते वहां मैं तुमलोगों की भक्ति व प्रीति देखकर दिन रात तुम्हारेपास बनारहताहूं इसलिये मेराप्रकाश घटघट व्यापक समझकर तुम्हें मेरेबियोग का शोच न करनाचाहिये जब कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दने इसीतरह नन्द व यशोदा आदिक को बहुत समझाकर धैर्य्यदिया तब वे लोग आपसमें बैठकर बालचरित्र व

यश मोहनप्यारेका कहनेलगे फिर केशवमूर्त्ति सब गोपियों को जो उनसे बहुत प्रीति रखतीथीं एकान्तमें बैठाकर जब प्रेमकीबातें उनसे करनेलगे तब ब्रजबासियोंने छबि मोहनीमूर्त्तिकी देखकर अपनी अपनी आंखें ठंढीकीं उस समय एकगोपी बालापनकी प्रीति समझकर निर्भयहोके बोली हे नन्दलाल तुमने इतनाधन व बिभव कहांसे पाया और सब हाथी व घोड़े किसीके मँगनी लेआयेहो कि तुम्हारे हैं तुमको यह बात याद होगी कि हम सब ब्रजबाला तुम्हारे एक बिवाहहोनेवास्ते हँसा करतीथीं सो अब तुम सोलहहजार एकसौ आठ स्त्री से बिवाहकरके उनके साथ भोग व बिलास करतेहो भला यह तो बतलाओ तुमको हमारा दूध दही चुराकर खाना व ऊखलसे अपना बांधेजाना व बनमें गोपियों को रोंककर दधिदान लेना सुधिहै या नहीं हमलोगों को तुम्हारे बियोगमें एकदिन बर्षसमान बीतताथा तुमने इतनेदिन हमारे बिना किसतरह काटा जैसी कठोरता तुमने हमारे साथकी ऐसा निर्मोही संसारमें कोई न होगा जब वृन्दाबनबिहारी ने ऐसी २ अनेक बातें गोपियोंकी सुनी तब बिनयपूर्वक उनसे बोले हे प्राणप्यारियो जो सुख व बिलास मैंने तुम्हारेसाथ कियाहै वह आनन्द यह सब बिभव रहने परभी नहीं मिलता जो कोई प्रेमपूर्वक मेराध्यान व स्मरण किया करताहै उससे मैं क्षणभरभी बिलग नहीं रहता मैं ग्रहण स्नानकरने के बहाने केवल तुमलोगों से भेंट करनेवास्ते यहां आयाहूं ॥

चौ० हमकोतुम सुमिरौ मनमाहीं । हमहूँ सदारहैं तुमपाहीं ॥
सर्व आतमा हमको जानो । सब जीवनके जीवबखानो ॥
आतमही सों आतम देखो । यह अध्यातमज्ञान बिशेखो ॥
राजन ऐसी बिधि बहिठाई । हरिजू सब गोपिनसमुझाई ॥
सफलजन्म ताको जगमाहीं । जाकोमन हरिचरणनपाहीं ॥

यह सुनकर गोपियों ने कहा हे प्रभु ज्ञानउपदेश करतीसमय हम लोगोंको उद्धव का कहना अच्छा नहीं मालूम हुआथा पर अब उस ज्ञानका गुण जानकर हमलोग अपने को तुमसे बिलग नहीं समझतीं तुम्हारा ध्यान रखने से अर्थ धर्म काम मोक्ष चारोंपदार्थ मिलकर जो सुख हमें प्राप्त होताहै वह आनन्द बड़े २ योगीश्वरोंको भी जल्दी मिलने नहीं सक्ता व हमलोगोंका आवना तुम्हारे दर्शनोंकी इच्छासे यहांहुआ है सो दयालुहोकर ऐसा बरदानदेव जिसमें दिनरात तुम्हारे कमलरूपी चरणोंकाध्यान हमारे हृदयमें बना रहकर प्रतिदिन तुमसे अधिक प्रीतिहो श्यामसुन्दर उन्हें इच्छा पूर्वक बरदान देकर बहुत देरतक उनसे लड़कपनकी बातें करतेरहे फिर वहांसे उठकर राधाप्यारी के पास चलेगये ॥

दो० श्रीवृषभानु कुमारि सँग लागे करन हुलास।
भूलिगये रनिवास सब माखनप्रभु सुखरास॥

एक दिन रुक्मिणी आदिक पटरानियां आपसमें बैठकर अभिमान से कहनेलगीं जितनी प्रीति श्यामसुन्दरकी हमलोग करती हैं उतना प्रेम गोपियों को होना कठिन है मुरलीमनोहर अन्तर्यामी ने यह हाल जानकर उनका गर्व तोड़ने वास्ते अपनी स्त्रियों व ब्रजबालों को एकजगह बैठाकर कहा तुमलोगों में जिनको मेरी अधिकप्रीति होगी उनके हृदयमें मेरावास रहता होगा यह बचन सुनतेही सब ब्रजबाला व स्त्रियों ने अपना २ अंचल उठाकर देखा तो रुक्मिणी आदिकको अपने तनुमें कुछ चिह्न नहीं दिखलाई दिया व गोपियोंके हृदयमें श्यामरंग छोटासा नटवरवेष त्रिभुवनपति का देखपड़ा यह महिमा ब्रजबालोंकी देखतेही वे लोग अपने प्रेमका घमण्ड भूलकर मनमें कहने लगीं जितनी प्रीति गोपियां श्यामसुन्दरकी रखती हैं उतना प्रेम हमें होना बड़ा दुर्लभ है॥

दो० गोपरूप भगवानको देखत अति सुख पाय।
हरि चरणनपर गिरपड़ीं मनमें बहुत लजाय॥

जब केशवमूर्त्ति लोकाचार करनेवास्ते दूसरे राजाओं के डेरेपर जो वहां टिकेथेगये तब उन्हों ने आगे से आनकर साष्टांगदण्डवत् किया व सन्मानपूर्वक लेजाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व अनेक तरहकी बस्तु भेंट देकर बिनयकी हे महाप्रभु हमलोग सदा तुम्हारी स्तुति सुनकर दर्शनों की इच्छा रखतेथे सो अब आपका चरण देखने से अपने समान किसी का भाग्य नहीं समझते जिसतरह आपने दयालुहोकर हमें कृतार्थ किया उसीतरह कृपाकरके ऐसा बरदान दीजिये जिसमें तुम्हारे चरणोंकीभक्ति व प्रीति सदा हमारे हृदय में बनीरहै बैकुण्ठनाथ उन्हें बरदान व धैर्य्य देकर अपने स्थानपर चले आये॥

तिरासीवां अध्याय॥

द्रौपदी व रुक्मिणी आदिकका आपसमें बातचीत करना॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जिसतरह द्रौपदी व रुक्मिणी आदिकने आपसमें अपने २ बिवाहकी बातचीतकीथी वह कथा कहते हैं सुनो एकदिन युधिष्ठिरआदिक पांचो भाई व कौरव बहुत राजाओं समेत त्रिभुवनपति की सभा में बैठेहुये इसतरह उनकी स्तुति करनेलगे॥

चौ० परमहंस है नाम तुम्हारो। तुमसे प्रकट वेदहैं चारो॥

बिप्र धेनु रक्षाके काजा । तुम अवतारलियो यदुराजा ॥
आदि अन्त तुम पूरणकामा । तुमको हितसे करैं प्रणामा ॥
दो० ऐसी बिधि अस्तुति करी सब राजनसुखपाय ।
पातक तजि पावन भये परसत प्रभुके पाय ॥

उसीदिन कुन्ती व द्रौपदी जिनकी महिमा सब जगत् जानताहै रुक्मिणीआदिक पटरानियों के पास बैठकर इधर उधरकी बातें करनेलगीं तब कुन्ती ने रुक्मिणी से हँसकर कहा तुमने अभीतक अपने बिवाहका नेग मुझे नहीं दिया सो देना चाहिये रुक्मिणी हाथ जोड़कर बोली हे माता मेरातनु व धन सबतुम्हारी भेंटहै फिर द्रौपदीबोली हे रुक्मिणी बहिन जिसतरह श्यामसुन्दर तुमलोगोंको बिवाह लाये थे वहहाल सुनने की मैं बहुत इच्छा रखतीहूं सो दयाकरके अपने २ बिवाह होनेकी कथा सुनावो यह बात सुनकर रुक्मिणीजी बोलीं ॥

चौ० जो तुम हँसो नहीं गुणज्ञाता । तौ हम कहैं ब्याहकी बाता ॥
देश चँदेली सब जग जानो । तहँ शिशुपालनरेश बखानो ॥
पहिले तिहिसों भई सगाई । सकल बिवाहकिसोजमँगाई ॥
दो० सो नरेश आयो तभी बहु राजालै साथ ।
रीति भांति कुलकी करी कङ्कण बांध्यो हाथ ॥

मुझे मनसा बाचा कर्म्मणा से यह चाहनाथी कि द्वारकानाथकी दासी होकर रहूं इसलिये त्रिभुवनपति अन्तर्य्यामी कुण्डिनपुर में आये और सब राजाओं को जीत कर मुझे हरलेगये सो उनकी सेवा में रहकर अपना जन्म स्वार्थ करती हूं फिर सत्यभामाने अपने बिवाह होनेका हाल बर्णन किया व जाम्बवतीने अपने बिवाह का वृत्तान्त कहसुनाया ॥

चौ० फिर बोली कालिन्दी रानी । चितदे सुनु द्रौपदी सयानी ॥
मैंधरिहरिचरणनकीआसा । बहुदिनजलमेंकियो निवासा ॥
दो० एक दिवस अर्ज्जुन सहित आये श्रीभगवान ।
हाथ पकड़ म्वहिं लायके दीन्हो पदनिर्बान ॥

मित्रबिन्दाने कहा हे द्रौपदी रानी श्यामसुन्दरकी स्तुति सुनकर मुझे यह अभिलाषा हुई कि सिवाय मोहनप्यारे के दूसरे से अपना बिवाह न करूंगी सो मेरे भाइयोंने यह हाल जानकर मेराबिवाह त्रिभुवनपतिके साथ करदिया अब मुझे दिन रात यही

इच्छारहती है कि जन्म जन्मान्तर बैकुण्ठनाथकी दासीहोकर रहूं फिर सत्याने अपना हाल जिसतरह द्वारकानाथ उसे ब्याहलायेथे कहदिया ॥

चौ० भद्रा कहत सुनो तुम बानी। लोगन अस्तुति श्याम बखानी ॥
तबते नेम कियो मनमाहीं। उन बिन और भजौं मैं नाहीं ॥
याते पिता कृष्णको दीन्हीं। मम इच्छा सब पूरण कीन्हीं ॥
दो० चरण कमल श्रीकृष्णके जो सेवै चितलाय।
सुभग भाग्य तिहिनारिकी कासों बरणी जाय ॥
चौ० बोली बहुरि लक्ष्मणारानी। निजबिवाह की कथा बखानी ॥
मेरोपिता स्वयम्बर कीनो। मेरो मन हरिके रसभीनो ॥
तहां आय मोहन सुखदाई। पाणिग्रहण करि दया जनाई ॥
तबते भई कृष्णकी दासी। रैनि दिवस नित रहत हुलासी ॥
अबतुम मोको देउअशीशा। जन्म जन्म सेऊं जगदीशा ॥

जब आठों पटरानी अपने २ बिवाहका हाल कहचुकीं तब सोलहहज़ार एकसौ राजकन्या बोलीं हे द्रौपदी हमलोगों को भौमासुर दैत्यने बरजोरी उठालाकर अपना बिवाह करनेवास्ते एक स्थानमें रक्खाथा ॥

चौ० जबहमशरणकृष्णकी आई। बिनती बहुत करी उनपाई ॥
हरि अंतर्य्यामी सुखदानी। अपनी समझ दया मन आनी ॥
दो० तुरत आय पहुंचे तहां माखनप्रभु यदुराय।
भौमासुरको मारकर लीन्ह्यो हमैं छुड़ाय ॥

उसीदिनसे हमलोग मुरलीमनोहरकी सेवामें रहकर अपनेको पटरानियोंकी दासी समझती हैं सो हे द्रौपदी तुम हमैं ऐसा आशीर्वाद देव जिसमें सदा श्यामसुन्दरकी सेवामें बनीरहैं जब द्रौपदी व गांधारी व कुन्ती व यशोदा आदिक ने श्यामसुन्दर के सब बिवाहों का हाल सुना तब प्रसन्नतासे उन्हें आशीर्व्वाद देकर बड़ाई भाग्य रुक्मिणी आदिक की करनेलगीं ॥

चौ० फिर सतभामा पूंछनलागी। सुनौ द्रौपदी परम सुभागी ॥
हमअपनी सबकथासुनाई। अब तुम हमसों कहौ जनाई ॥
दो० पांच जननसे कौनबिधि तुम्हरो भयो बिवाह।

अद्भुत लीला सुननकी मनमें बड़ी उछाह ॥

यह बात सुनकर द्रौपदी बोली हे प्यारियो हमारे पिताने मेरा स्वयम्बर रचकर यह प्रण कियाथा जो कोई तेलके कराह में परछाहीं देखकर अपने बाणसे मत्स्यबेधे उसीको अपनी कन्या बिवाहदूंगा जब दुर्योधन व जरासन्ध आदिक बहुत राजाओं ने आनकर मत्स्यबेधनेमें लज्जाउठाई व अर्जुनने वह मत्स्यबेधकर मेरे पिताकाप्रण पूराकिया तब मैंने उन के गले में जयमाला डालदी यह हाल देखकर सब छोटे व बड़े प्रसन्नहुये पर दुर्योधन आदिक अधर्मी राजाओंने लज्जितहोकर पांचोभाइयों से युद्धकिया सो हारमानकर भागगये जब अर्जुनने मुझे घरलेजाकर अपनीमातासे कहा हम एक सौगात लेआयेहैं तब कुन्तीजी खानेकी बस्तु समझकर बोलीं कि पांचोभाई आपसमें बांटलेव ॥

दो० याते पांचो पाण्डवन लीन्हों मोहिं बिवाहि ।
प्रकट देहसे पांच हैं जीव एकही आहि ॥

यह बात सुनकर रुक्मिणी आदिक द्रौपदीकी बड़ाई करनेलगीं इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एक दिन श्यामसुन्दर की सभा में युधिष्ठिर आदिक पाण्डव व सब यदुबंशी व बहुतसे राजा बैठेहुयेथे उसीसमय नारदमुनि व वेदव्यास व बिश्वामित्र व देवल व च्यवन व सतानन्द व भरद्वाज व गौतम व बशिष्ठ व भृगु व अत्रि व मार्कण्डेय व अगस्त्य व बामदेव व पराशर व परशुराम आदिक बहुतसे ऋषीश्वर बैकुण्ठनाथके दर्शनवास्ते वहां आये उनको देखतेही श्यामसुन्दर ने सब राजाओं समेत खड़ेहोकर सन्मानपूर्वक सब ऋषीश्वरोंको आसनपर बैठाला व चरण उनका धोकर चरणामृतलिया व बिधिपूर्व्वक पूजन उनका करके हाथजोड़कर यह स्तुति की ॥

चौ० ऋषि दर्शन दुर्लभ जगमाहीं । देवनहूंको प्रापत नाहीं ॥
आज सुफल है जन्म हमारो । जो हमपायो दरशतुम्हारो ॥
दो० हरिभक्तन के दरश की महिमा कही न जाय ।
जन्म जन्म के पाप सब क्षण में जात नशाय ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

वसुदेवजी को यज्ञकरना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जब श्यामसुन्दर ऋषीश्वरोंकी पूजा व स्तुतिकरचुके तब उन्होंने कौरव व पाण्डव आदिक राजाओंसे जो वहांपरथे कहा हमलोगोंका बड़ा

भाग्य समझना चाहिये जो इन ऋषीश्वरों ने दयालुहोकर घरबैठे अपना दर्शन दिया बिरक्तसाधुओंके चरण देखनेसे गंगास्नानकाफल प्राप्तहोकर मरनेउपरांत ऐसा उत्तम स्थान रहनेवास्ते मिलता है जहां पर बड़े योगी व ज्ञानी नहीं पहुंचसक्ते इसलिये ऋषीश्वरोंका सत्संग मिलन सब तीर्थ नहाने व देवस्थानदर्शन से उत्तमहोकर इनकी पूजा परमेश्वर समान जानना चाहिये जो लोग ऋषीश्वर व मुनि नहीं मानते उन्हें गदहे व बैलोंके समान समझना उचित है ॥

दो० चरण साधु के प्रीतिकरि पूजत है जो कोय।
संसारी सुख भोगकरि अन्त मुक्तपद होय॥

जब ऋषीश्वरलोग यह बचन त्रिभुवनपतिका सुनकर लज्जितहोगये तबनारदमुनि द्वारकानाथ से हाथजोड़कर बोले हे महाप्रभु हमलोग इसयोग्यनहीं हैं जैसा आपने अपने मुखारबिन्दसे कहा आपने केवल संसारीजीवोंको उपदेशकरनेवास्ते इतनीबड़ाई हमारीकी जिसमें वे लोग ब्राह्मणोंको बड़ाजानकर उनका सन्मानकरैं नहीं तो हम लोग कौन गिनतीमें हैं हमारा कल्याण इसीमें है जो तुम्हारेचरणोंकाध्यान किसीसमय हमैं न भूलै देखिये यदुबंशीलोग जिसकुलमें आपने अवतारलियाहै वे आपको न पहिं- चानकर अपनानातेदार समझते हैं तबदूसरेको क्यासामर्थ्य है जो तुम्हारेभेदको पहुँचने सकै केवल आप हरिभक्तोंको सुखदेने व दुष्टोंको मारनेवास्ते बारम्बार अवतारलेते हैं नहीं तो जन्ममरण से तुमरहित हो ॥

चौ० तुम जगजीवन जगतनिवासा। हमतुम्हरे दासनके दासा॥
तुम जो अस्तुति करत हमारी। हमको भरमहोतहै भारी॥
जगत गुरू जगदीश गुसाईं। तुमसे सृष्टिहोत सब ठाईं॥
तुमहीं सब देवनके देवा। तुम्हरो हम नहिं जानैंभेवा॥
तुम्हरी माया सब जग छाई। लोगनकीसुधिबुधिबिसराई॥
ताते विविध भांति भ्रममानैं। तुम्हरोभेद कौनविधिजानैं॥

दो० तुम्हरी अद्भुत शक्ति है घट घट रही समाय।
फिर सबते न्यारे रहौ माखनप्रभु यदुराय॥

चौ० कोऊ तुम्हैं पिताकरि जानै। कोऊ पुत्रभाव मन आनै॥
तुमहीं सबके पालनहारे। को कहिसकै चरित्रतुम्हारे॥
तुम्हरो दर्शन बहुसुखदाता। तिहि प्रताप जानै यहबाता॥

धरती भार उतारन काजा । भक्तनहित प्रकटे यदुराजा ॥
बेदकहतहैं तुम्हरी बानी । तुम्हरीगति उनहूंनहिंजानी ॥
तुम्हरीभक्ति सकलसुखराशा । कोऊजननहिंहोत निराशा ॥
तुमदयालु प्रभु पूरणकामा । तुमकोहमसब करत प्रणामा ॥
दो० तुमतौ पूरणब्रह्महौ सकलधर्म के धाम ।
बिप्रनकीअस्तुतिकरत तिहिकारण घनश्याम ॥

हे बैकुण्ठनाथ हमलोग तुम्हारी कृपासे यहचाहनारखते हैं कि आठोंपहर आप के चरणोंकाध्यान हमारेहृदयमें बनारहकर हरिकथासुननेसे कभी प्रीति न घटै जबऋषीश्वरलोग यहस्तुतिकरके अपनी २ कुटीपरजानेलगे तब बसुदेवजीने उनकेसामनेहाथ जोड़कर बिनयकी महाराज कोई ऐसाउपाय बतलाइये जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागरपार उतरजाऊं यहबचनसुनकर जैसे सबऋषीश्वरोंने नारदजीकी ओरदेखा वैसे नारदमुनि हँसकरबोले हे ऋषीश्वरो बैकुण्ठनाथकीमाया ऐसीप्रबल है जिसने सब संसारको मोहकर अपने बशमें करलिया जिसतरह गंगाकिनारेके रहनेवाले उनका माहात्म्य न जानकर कूपजलसे स्नानकरतेहैं उसीतरह बसुदेवजी संसारीमायामें लपटनेसे श्यामसुन्दर त्रिभुवनपति जगत्कर्त्ताको अपनापुत्रजानकर मुक्तहोनेकीराह हमलोगोंसे पूंछते हैं वही गति सबयदुवंशियोंकी होकर अपनेअज्ञानसे कोई उनको नहीं पहिंचानता यहबात ऋषीश्वरोंसे कहकर नारदमुनि बोले ॥

चौ० कहतसुनो बसुदेव सुजाना । तुम्हरे घरमें श्रीभगवाना ।
तिन्हैंछांड़ि तुमसे गुणज्ञाता । हमसेकह पूँछतहौ बाता ॥

हे बसुदेवजी अभीतुम्हारेसामने सबऋषीश्वरोंने श्यामसुन्दरकी स्तुतिकी तिसपर भी तुमने उनकोनहींपहिंचाना इसबातका हमें बड़ाआश्चर्य मालूमहोताहै जोतुम्हारे ऐसाज्ञानी होकर ईश्वरको न पहिंचाने पर इसमें तुम्हारा कुछदोष न होकर यहबात सचसमझनाचाहिये कि बिनाकृपा त्रिभुवनपतिकी देवताआदिकभी उनको नहींपहिंचानसक्ते संसारीमनुष्य कौन गिनतीमें हैं जोउनके भेदको पहिंचानसकें ॥

दो० कोऊजन जानै नहीं माखन प्रभु के भेव ।
इनगति अगम अपारहै सब देवन के देव ॥

इसलिये वेदानुसार एकबात कहताहूं कि तुम कुरुक्षेत्रमें बिधिपूर्व्वक यज्ञकरके उसकाफल श्रीकृष्णजीको अर्प्पणकरदेव तो तुम्हारेहृदयसे अज्ञानताकी काटि छूटकर मुक्ति मिलैगी ॥

चौ० पापनाश बिनधर्म्म न होई । यह जानै निश्चय सबकोई ॥
जो हरिसेवा में चित धरै । मन में कछु इच्छा नहिं करै ॥
तिहिको पापकटैत्तणमाहीं । मुक्तहोय कछु संशय नाहीं ॥
दो० श्रीमाखनप्रभु पूजिकै फलचाहै जो कोय ।
तिनको कर्म कटै नहीं मुक्ति कौनबिधि होय ॥
चौ० हरिके काम कर्म्म शुभकीजै । ताको फल उनहीं को दीजै ॥
या बिधि कर्म्मकरै जोकोई । भवसागर से उतरै सोई ॥
जोतुमकहो कि हमगृहचारी । योगरीतिकेनहिं अधिकारी ॥
तो तुमको यकबात जनाऊं । कर्म्मयोगकी राह बताऊं ॥
जोकछु पुण्यदान तुम करो । नेम धर्म्म ब्रत मनमें धरो ॥
उसका फल हरिजू को दीजै । मनमें कछु इच्छा नहिं कीजै ॥
वे हरि तुमसे न्यारे नाहीं । सदा बसैं तुम्हरे घरमाहीं ॥
दो० या बिधि नारदका बचन सुनकरश्रीबसुदेव ।
महामुदित मनमें भये जब जान्यो यह भेव ॥

यहबचनसुनतेही बसुदेवजीने नारदमुनिआदिक ऋषीश्वरोंसे हाथजोड़कर बिनय की महाराज आपलोग दयालुहोकर ऐसायज्ञकरादीजिये जिसमें मेरामनोरथ पूर्णहो यह सुनकर नारदजीबोले बहुतअच्छा तुम तैयारीकरो हमलोग तुमको सोमयज्ञ करादेंगे यहसुनतेही बसुदेवजीने सबसामग्री मँगाकर जो स्थान कुरुक्षेत्रमें बहुत पवित्रथा वहां यज्ञकीतैयारीकी जब यज्ञशालामें सबऋषीश्वर व यदुबंशी व राजालोग आनकर इकट्ठे हुये तब बसुदेवजी शुभसायत में ब्रह्मचर्य्य से मृगछाला पहिनकर देवकीआदिक अठारहों रानियोंसमेत यज्ञकरनेवास्ते जा बैठे उससमय अनेकराजा व यदुबंशीलोग अपनी २ स्त्रियोंसमेत बड़े प्रेमसे यज्ञकी टहल करनेलगे तब बसुदेवजीने नारदमुनि आदिक ऋषीश्वरोंको बरणदेकर कुण्डमें आहुतिडालना आरम्भकिया तब श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार देवतालोग अग्निकुण्डसे प्रत्यक्ष निकलकर अपना २ भाग लेने लगे उससमय उर्वशीआदिक अप्सराओंने आनकर अपना २ नाच दिखलाया व गन्धर्व्वोंने गानासुनाया व देवताओंने दुन्दुभीबजाकर आकाशसे फूलबर्षाये व सब छोटे बड़े जो वहांपर थे उन्हों ने गायबजायकर मंगलाचार मनाया व ब्राह्मणों ने वेद उच्चारणकिया व भाटोंने कवित्तसुनाये इतनीकथासुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परी-

चित उससमय जैसा आनन्द वहांपरहुआथा वहमुझसे बर्णन नहीं होसक्ता जब बैकुण्ठनाथकी दयासे यज्ञ अच्छीतरह सम्पूर्णहुआ तब बसुदेवजीने फलउसका मुरलीमनोहरको संकल्पदेकर बिधिपूर्व्वक उनका पूजनकिया व यज्ञकरानेवाले ऋषीश्वरोंको पीताम्बर व सोना व गौ व रत्नादिक दान व दक्षिणादी सिवाय ऋषीश्वरों के और जितने ब्राह्मण व याचक व मंगन वहांपरथे उनको इतना मुँहमांगा द्रव्यादिक दिया कि फिर उनको कुछइच्छा न रही जब ऋषीश्वर व ब्राह्मणलोग बसुदेवजी आदिकको आशीर्व्वाददेकर अपने २ स्थानपर चलेगये तब श्यामसुन्दर ने कौरव व पाण्डव व दूसरे राजाओं को यथायोग्य भूषण व वस्त्र देकर सन्मानपूर्व्वक बिदाकिया उससमय वसुदेवजीने रोकर नन्दरायसे कहा हे भाई तुमने श्याम व बलरामको पालकर उनकी रक्षाकी है इसलिये मैं जन्मभर तुमसे उऋण नहीं होसक्ता व मुझसे आजतक कोईटहल तुम्हारी नहीं बनपड़ी जो उससे उऋणहोता इसलिये चाहताहूं कि थोड़े दिन आपयहां ब्रजबासियोंसमेत रहते तो मैं भी तुम्हारीसेवा व टहलकरके उऋणहोता जब नन्दराय यह सुनकर बड़ेहर्षसे चारमहीने ब्रजबासियोंसमेत कुरुक्षेत्रमें टिकेरहे तब बसुदेवजीने प्रतिदिन उनका नयाशिष्टाचार व श्याम व बलरामने सेवा उनकी प्रेमपूर्वक की ॥

दो० महिमा त्रिभुवननाथ की कासों बरणी जाय ।
ब्रजबासिन अतिसुखदियो आनँद उरनसमाय ॥

जब चारमहीने कुरुक्षेत्रमें रहकर राजाउग्रसेनने द्वारकापुरी चलने की तैयारी की तब श्यामसुन्दरने नन्द व यशोदा से रोकर कहा मुझसे तुम्हाराचरण छोड़ानहींजाता पर लाचारी से बिनयकरताहूँ कि आपभी वृन्दाबनजाकर गायों की सुधिलीजिये यह बचन सुनतेही नन्द व यशोदा ब्याकुलहोकर पृथ्वीपर गिरपड़े व ग्वालबाल व गोपियों ने रुदनकरके कहा हे नन्दकिशोर हमलोग तुम्हारा चरणछोड़कर वृन्दाबन न जावैंगी हमकोभी अपने साथ द्वारकापुरी लेचलो जैसी कठोरताई तुमने पहिले मथुरा में रहकरकीथी वहीबात अबभी करनेचाहतेहो यशोदा अतिबिलापकरकेबोली हे देवकी बहिन तुम मुझे श्यामसुन्दरकी दूध पिलानेवाली समझकर अपने साथ लेचलो सिवाय दर्शनकरने मोहनीमूर्त्तिके तुमसे भोजन व बस्त्र न लेऊंगी ॥

दो० मेरे घर गोधन सबै जो चाहो सो लेव ।
मनमोहन को नयनभरि प्रतिदिन देखन देव ॥

जब राधाप्यारीने सुना कि श्यामसुन्दर हमलोगोंको बिदाकरके आप द्वारका जाया चाहते हैं तब वह अतिबिलापकरके मुरलीमनोहर से बोली एकबेर तुम मुझे वृन्दाबन छोड़कर मथुराचलेगये थे सो मेरी यहदशाहुई अब फिर उसी तरह मेराप्राण लिया

चाहतेहो इसलिये अब मैं तुम्हाराचरण नहीं छोड़ूंगी दूधकाजलाहुआ छाकफूंककर पीता है जिसतरह सोलहहजार एकसौआठ स्त्रियां तुम्हारी सेवाकरती हैं उसीतरह मुझकोभी दासीसमझकर अपनीटहलमें रक्खो जब त्रिभुवनपतिने यहदशा ब्रजबासियोंकी देखकर समझा कि येलोग मेरापीछा नहीं छोड़कर द्वारका चलाचाहते हैं तब अपनीमाया फैलाकर उनलोगों का मन इसतरह फेरदिया कि समझानेबुझाने से वृन्दावन जानेवास्ते माना उससमय श्यामसुन्दर नन्द व यशोदा आदिक सब छोटेबड़ों को अनेक तरह का भूषण व बस्त्र व रत्नादिक देकर बिदाकिया ॥

चौ० श्रीबसुदेव महासुर ज्ञानी । ब्रजबासिन से बोलत बानी ॥
तुम तो प्राण समान हमारे । तुम से कैसे होहुँ नियारे ॥
याबिधि कहत प्रेम की बाता । नयन नीर भीजे सब गाता ॥
दो० ब्रजबासी ब्रजको चले सब गोधन ले साथ ।
गृह आये आनन्द सों माखनप्रभु यदुनाथ ॥

इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित बिदाहोतीसमय जैसा बिलाप नन्द व यशोदा व राधाआदिकने कियाथा वह मुझसे कहानहींजाता जब केशवमूर्त्ति द्वारकापुरी में पहुँचे तब सब छोटेबड़ोंने प्रसन्नहोकर मंगलाचारमनाया व देवतोंने आकाश से द्वारकापुरी पर फूलबर्षाये ॥

पचासीवां अध्याय ॥

बसुदेवजीको श्यामसुन्दरकी स्तुति करना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह श्याम व बलराम अपने मरेहुयेभाइयोंको लिवालायेथे वहकथा कहतेहैं सुनो एकदिन राम व कृष्ण दोनोंभाई प्रातःकाल उठकर जैसे माता व पिताकेचरणोंको दण्डवत् करनेगये वैसेही बसुदेवजीने अपना शिर श्यामसुन्दर के चरणों पर धरदिया यहहाल देखकर मुरलीमनोहरबोले हे पिता आप मेरेचरणोंपर गिरके मुझे क्यों दोषलगाते हौ तब बसुदेवजी ने हाथजोड़कर बिनयकी कि हे कृष्ण तुम परब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहोकर जन्म व मरणसे कुछप्रयोजन नहीं रखते व तुम्हारे आदि व अन्तको कोई पहुँचने नहींसक्ता आजतक मैं तुम्हारीमहिमा नहींजानताथा अब ऋषीश्वरोंके कहनेसे मुझे बिश्वासहुआ कि आप त्रिलोकीनाथ हैं व सबजीवों में तुम्हाराप्रकाश रहताहै देखो सूर्यदेवता तुम्हारे तेज से प्रकाशितरहकर सबजगहमें उजियालाकरते हैं जिस जलसे सब जड़ व चैतन्यजीवों का पालनहोता है उसे तुम्हारारूप समझनाचाहिये व चन्द्रमा जो अपनीकिरणसे अमृतबर्षाकर संसारी

जीव व वृक्षोंको सुखदेते हैं व बायु चलने से जीवोंको आराममिलताहै व पर्वत अपने बोझसे पृथ्वीकोदबाये रहकर हिलने नहींदेते व गङ्गा व समुद्रादिक सदाबहकर कभी नहीं सूखते सो उनकोभी केवल तुम्हारीकृपासे यहसामर्थ्य हुई है व जितनेजीव जड़ व चैतन्य संसारमें दिखलाईदेते हैं उनसबको तुम्हारीआज्ञा व इच्छासे ब्रह्माने उत्पन्न किया है व बिष्णुभगवान् पालनकरके महादेवजी उनकानाशकरते हैं व आप आदि-पुरुष भगवान्का अवतार ब्रह्मा व बिष्णु व महेशसे भी श्रेष्ठहैं व आपकी माया ऐसी बलवान् है जिसने सबजगत्को मोहिलिया इसलिये तुमको कोई पहिंचानने नहींसक्ता बिनातुम्हारी शरणआये मनुष्यको संसारीमाया जालसे छूटनाकठिनहै जिसतरह बाजा बजानेवाला अपनेमनमाना उसमेंसे राग व रागिनीनिकालताहै उसीतरह आप संसारी जीवोंकी बुद्धि अपने अधीनरखकर जैसाचाहतेहौ वैसाकर्म उनसे करातेहौ व तुम्हारे एक २ रोममें हजारोंब्रह्माण्ड बँधेहोकर तुम्हारे भेदको कोई जाननेनहींसक्ता आजतक मैं अपनेअज्ञानसे तुमको पुत्रसमझता था अब नारदमुनिके कहनेसे मुझे बिश्वासहुआ कि आप किसीकेपुत्र व पिता व भाई व मित्र नहीं हैं केवल पृथ्वीकाबोझा उतारने व दैत्य व अधर्मी राजाओं को मारने व हरिभक्तों को सुख देनेवास्ते यदुकुल में अव-तार लियाहै सो मुझे ऐसा ज्ञान देव जिसमें तुमको अपनापुत्र न जानकर आदिपुरुष समझूं व जिसतरह आपने अजामिलऐसे बहुतपापियोंको तारकर मुक्तिदी है उसीतरह मुझपरभी दयालुहोकर भवसागर पारउतारदीजिये व जबतक संसारमें जीतारहूं तबतक सिवाय ध्यान व स्मरण तुम्हारे के मायाजाल में न फँसूं ॥

चौ० तुमहीं सबके सिरजनहारे । पांच तत्त्व हैं अंश तुम्हारे ॥

दो० जन्म समय जान्यों हत्यों ब्रह्मरूप मनमाहिं ।
सो मायाके मोहमें ज्ञान रह्यो कछु नाहिं ॥

जब श्यामसुन्दरने यहस्तुति अपनीसुनी तब हँसकरबोले हे पिता तुमको जो बात जाननीउचितथी वहतुमने समझकरकही अब अपने कहनेपर स्थिररहकर मेराप्रकाश सबजीवों में एकसा समझाकरो तो मेरीमाया तुमपर नहींव्यापैगी यहबात सुनकर बसु-देवजीको ऐसा ज्ञानहुआ कि उसीदिनसे श्याम व बलरामको पुत्रभाव छोड़करईश्वर रूप समझने लगे व हरिचरणोंमें लीनहोकर जीवन्मुक्तहोगये फिर एक दिन मुरली-मनोहरने देवकी से कहा हे माता तुम्हाराऋण मेरेऊपर बड़ा है इसलिये जोकुछमांगो सो देवैं यहबचन सुनतेही देवकीने रोकरकहा हे बेटा तुम परब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहौ जिसतरहतुमने अपने गुरूका मराहुआ बेटालादियाथा उसीतरह मेरे छवोंबालक जो कंसअधर्मीने मारडालेहैं लादेव तो मेराशोच छूटजावै ॥

दो० तिहिकारण जान्यों तुम्हैं अपने मन बिश्वास।
कर्त्ताहौ सबसृष्टिके माखनप्रभु सुखरास॥
चौ० यह सुनिबोले कृष्णमुरारी। सुनो मातु तुम बात हमारी॥
जो इच्छा तुम्हरे मनमाहीं। प्रभु पूरणकरिहैं च्रणमाहीं॥

ऐसाकहकर श्याम व बलराम सुतललोकमें गये उनको देखतेही राजाबलिआगेसे जाकर दोनोंभाइयोंके चरणोंपरगिरपड़ा व पीताम्बर राहमें बिछवाताहुआ बड़े आदर-भावसे अपनेघरलेजाकर जड़ाऊ सिंहासनपर बैठाला व दोनोंभाइयों के चरणधोकर चरणामृतलिया और जल अपने शिर व आंखोंमें लगाकर सबघरवालोंपर छिड़कदिया॥

दो० बलिराजा चाहतहतो हरिचरणनकी रैन।
श्रीमाखनप्रभु दर्शते तन मन पायो चैन॥

राजा बलिने बिधिपूर्व्वकपूजा श्याम व बलरामकीकरके सुगन्धादिक उनके अंग पर लगाया व पुष्पोंकागजरा व मोतियोंकीमाला गलेमें पहिनाकर छत्तीस प्रकारके ब्यञ्जन भोजनकराया व बड़ेहर्ष से राम व कृष्ण के चँवर हिलानेलगा व हाथजोड़ कर इसतरहपर स्तुतिकी हे दीनानाथ जिनचरणोंका दर्शन ब्रह्मादिकदेवता व बड़े २ योगी व ऋषीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहीं मिलता सो आपने दयालुहोकर उन्हींचरणों से मुझगरीबकी झोपड़ी पवित्रकी इसलिये अपने बराबर दूसरेका भाग्य नहीं समझता जब प्रह्लाद मेरादादा व शेषनागजी तुम्हारे भेदको नहीं पहुँचसक्ते तब मुझअज्ञान को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमा व स्तुति बर्णन करनेसकूं जिसतरह आपने दयालुहोकर घरबैठे अपने चरणोंका दर्शनदिया उसीतरह मेरी स्त्री व लड़केबालोंको घर व धनसमेत जो मैं भेंट करताहूं लीजिये व मुझे अपनादास समझकर अपनेआने का कारण बर्णन कीजिये यह आधीनबचन सुनकर केशवमूर्तिने कहा हे राजाबलि एकदिन मरीचि ऋषीश्वर के छवों पुत्रोंने तरुणाईके गर्बसे ब्रह्माजीकी हँसीकीथी इस लिये ब्रह्माने क्रोधित होकर उनको ऐसा शापादिया कि तुमलोग दैत्ययोनिमें जन्मलेव उसीकारण उनछवों बालकों ने पहिले हिरण्याक्ष व हिरण्यकशिपुके यहां उत्पन्नहोकर फिर मेरी माताके पेटसे जन्मपाया जब राजाकंसने उनछवों बालकोंको मारडाला तब वह तुम्हारे घरआनकर उत्पन्नहुये अब देवकीमाता हमारेभाइयोंके वास्ते बहुत शोच करती है इसलिये मैं उनको लेनेआयाहूं यहबचन सुनतेही राजाबलिने बड़े हर्ष से जैसे उनछवों बालकोंको लादिया वैसे त्रिभुवनपति उन्हें अपनेसाथ लेकर द्वारका में चलेआये जब देवकी ने छवों बेटोंको देखा तब बड़ेप्रेमसे उठाकर दूध पिलानेलगी॥

चौ० बारबार निज कंठलगावै । राम कृष्णको हांसी आवै ॥

उस समय बसुदेवजी व देवकीको बिश्वासहुआ कि श्याम व बलराम परब्रह्मपरमेश्वरका अवतारहैं यहसमझकर उन्हें बड़ाहर्षहुआ व श्यामसुन्दरकी इच्छानुसार उन छवों बालकोंको ज्ञान उत्पन्नहोकर अपने पूर्बजन्मकी सुधिआई तब वह अपनी माता व श्याम व बलरामको दण्डवत् करके उसी समय देवलोकमें चलेगये यह दशादेख कर देवकी को बड़ा शोचहुआ पर श्याम व बलरामके समझानेसे संसारी व्यवहार झूंठा समझकर मनको धैर्यदिया व हरिचरणों में ध्यान लगाकर मन अपना संसारी माया से बिरक्त करलिया ॥

दो० यह चरित्र चितलायकै कहै सुनै जो कोय ।
श्रीमाखनप्रभु चरणसे कभूं बिलग नहिं होय ॥

छियासीवां अध्याय ॥

अर्जुनका सुभद्राको बरजोरी से उठालेजाना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जिसतरह अर्जुनका बिवाह सुभद्रा श्यामसुन्दरकी बहिनसे हुआथा वहहाल कहते हैं सुनो जब द्रौपदी कुन्ती माताकी आज्ञासे युधिष्ठिर आदिक पांचोंभाई की स्त्रीहोकर रहनेलगी तब नारदमुनिने आनकर युधिष्ठिरआदिक से कहा कि स्त्री व धनकेवास्ते बाप बेटा व भाई २ में सदा से झगड़ा होताआया है इसलिये एकउपाय बतलाये देताहूं उसके करनेसे तुम पांचोंभाइयों में द्रौपदीकेवास्ते बिरोध न होगा यहसुनकर युधिष्ठिर आदिकने कहा हे मुनिनाथ जो आपकहैं सो करैं यहसुनकर नारदमुनि बोले एकबर्ष में तीनसौसाठ दिनहोते हैं सो तुमपांचोंभाई बहत्तर २ दिनकी पारीबांधकर इसप्रणसे द्रौपदीको अपनेपास रक्खाकरो कि जब एक भाईकी पारीमें दूसराभाई बीचमहल द्रौपदीकेजावे तो बारहबर्षतक बनबासकरै यह बचन नारदमुनिका पांचोंभाई मानकर उसीतरह द्रौपदीको अपनेपास रखते थे सो एकदिन ऐसा संयोग हुआ कि द्रौपदी आधीरातको राजायुधिष्ठिरके मन्दिरमें थी व उसदिन धनुषबाण अर्जुनका राजायुधिष्ठिरके स्थान में रक्खाथा उसीसमय एकब्राह्मण ने आनकर अर्जुनसे कहा कि मेरी गौ चोरचुराकर लियेजाताहै सो दिलादीजिये यह सुनकर अर्जुनने बिचारकिया कि इससमय राजायुधिष्ठिरके महलमें अपना धनुषबाण लेनेजाताहूं तो बारहबर्षतक बनमें रहनापड़ेगा व चोरकोमारकर ब्राह्मणकीगौ नहीं लादेता तो क्षत्रियकाधर्म नहीं रहता इसलिये धर्मछोड़नेसे बनमेंरहना उत्तम है ऐसा बिचारतेही अर्जुन उसीसमय राजायुधिष्ठिरके महलमेंजाकर अपना धनुषबाणलेआया व चोरकोमारकर ब्राह्मणकी गौ दिलवादी व प्रातःसमय अपने बचनप्रमाण संन्यासी

रूपधरकर बनमें चलागया व उसने तीर्थयात्रा करतेहुये द्वारकापहुँचकर क्यासुना कि सुभद्रा बसुदेवजीकी कन्या महासुन्दरी जो बिवाहने योग्यहुई है उसका बिवाह रेवती-रमण दुर्योधनसे करना चाहते हैं व श्यामसुन्दरकी इच्छा मुझे देनेवास्ते है यहसुनकर अर्जुनने चाहा कि मेराबिवाह उसकेसाथ होता तो बहुत अच्छीबात थी जब अर्जुन इसीइच्छासे चारमहीना बर्षाऋतु में अपने को संन्यासीवेष में छिपाकर राजमन्दिर के निकट मृगछाला बिछाकर बैठा तब द्वारकाबासी उसे महापुरुष जानकर अपने घर रसोई खिलानेवास्ते लेजाने लगे यहसुनकर एकदिन बलरामजीने उसको राजमन्दिर में बुला भेजा व चरण धोकर बड़े प्रेमसे छत्तीस व्यंजन खिलाये जैसे अर्ज्जुन ने सुभद्रा मृगनयनी को देखा वैसे चन्द्रमुखी पर मोहित होकर उसके मिलने वास्ते देवता व पितर मनाने लगा व सुभद्रा भी उसके रूपपर मोहित होकर मनमें कहने लगी यह संन्यासी न होकर कोई राजकुमार मालूम होताहै परमेश्वर इसको मेरापति बनाते तो अच्छा होता ॥

दो० अर्जुन भोजन करि चलो मन तो रह्यो लुभाय ।
कुँवरि सुभद्रा मिलनको लाग्यो करन उपाय ॥

श्यामसुन्दर अन्तर्यामी को अर्जुन अपने भक्त व सुभद्राके मनका हाल जानकर यह इच्छाथी जिसमें हमारी बहिन अर्ज्जुनसे बिवाहीजावे पर उन्होंने रेवतीरमण के डरसे यह बात प्रकट करनी उचित नहीं जानी जब एकदिन कथा सुनने के बहाने से अर्जुन के पासगये तब उसने त्रिभुवनपतिको बड़े आदरभाव से बैठाकर बिनय की हे दीनानाथ मुझे सुभद्रासे बिवाह करनेकी बड़ी इच्छाहै जिसतरह आप सब मनोरथ मेरे पूर्ण करते आये हैं उसीतरह दयालु होकर यह कामनाभी पूरी कीजिये यह सुनकर द्वारकानाथ ने कहा हे अर्जुन तुम थोड़ेदिन यहां टिको शिवरात्रि को सब छोटे बड़े द्वारकाबासी सुभद्रासमेत रेवतपहाड़ पर महादेवजी की पूजा करने जावेंगे उसदिन तुमभी मेरे रथपर बैठकर वहां जाना जब अवसर मिलै तब सुभद्राको उठाकर अपने रथपर बैठालेना व रथ दौड़ाकर हस्तिनापुरको चलेजाना कदाचित् कोई सामना करै तो तुमभी उसके साथ लड़ना इसमें कुछ मेरे खेदकाभय न करना यह सुनतेही अर्जुन प्रसन्न होकर वहां टिकारहा जब शिवरात्रिको सब स्त्री व पुरुष द्वारकाबासी सुभद्रा समेत रेवतपहाड़ पर पूजा करने गये तब संन्यासीरूप अर्जुन भी मुरलीमनोहर के रथ पर बैठकर वहां चलागया व धनुषबाण लेकर रास्ते में खड़ाहुआ जैसे सुभद्रा पूजा करके अपनी सहेलियोंको साथ लियेहुई फिरी वैसे अर्जुनने लाज व संकोच छोड़कर सुभद्राका हाथ पकड़लिया व रथपर बैठाकर हस्तिनापुरको चला जब यह बात यदुबं-शियों ने सुनकर रेवती रमणसे कहा तब बलरामजी क्रोधित होकर बोले ॥

चौ० अभीजाय परलय मैं करिहौं । भूमि उठाय माथपर धरिहौं ॥
मेरी बहिन सुभद्रा प्यारी । ताको कैसे हरै भिखारी ॥
महादण्ड अर्जुन को देहौं । कुँवरि सुभद्राको लै ऐहौं ॥

बलरामजी बड़े क्रोधसे बहुत यदुबंशियों को साथ लेकर अर्जुनके पीछे जानेवास्ते तैयारहुये तब श्यामसुन्दर ने रेवतीरमण के पास जाकर समझाया कि सुनोभाई अर्जुन हमारी फुआका बेटा परममित्र जाति व कुलमें उत्तम होकर बाणविद्या अच्छी जानता है यदुबंशियों में मुझे कोई ऐसा नहीं दिखलाई देता जो उसका सामना करसके सच है अर्जुनने अनुचित किया पर हमको उसके साथ लड़ना उचित नहीं है किसवास्ते कि बेटी अपनी जातिको देनी चाहिये इससे क्या उत्तमहै जो अर्जुन पुराने नातेदारको दीजावे इसलिये आप दयालुहोकर क्रोध अपना क्षमा कीजिये व अब इसबात की चर्चा करनी उचित न होकर सामग्री दहेजकी हस्तिनापुर में भेज देनी चाहिये यह सुनतेही बलदाऊजी ने झुंझलाकर हल व मूसल अपना पटकदिया व यदुबंशियों से कहा यह सबकाम मुरलीमनोहर का है जो आग लगाकर पानीको दौड़ते हैं इनको अपने भक्तोंकी प्रसन्नताके सामने लाजका बिचार नहीं रहता इन्हों ने सिखला दिया होगा तब अर्जुन सुभद्राको उठा लेगया नहीं तो उसको क्या सामर्थ्य थी जो ऐसा अनुचित करता मैं अपने भाईकी आज्ञा टालने नहीं सक्ता इसलिये जैसा यह कहते हैं वैसा करो यह कहकर बलरामजी ने बहुतसा द्रव्य व भूषण व बस्त्र व हाथी व घोड़ा व रथ व दासी व दासादिकको संकल्प करके दहेज हस्तिनापुरमें भेजदिया व अर्जुन अपने घर पहुँचकर वेदानुसार सुभद्रासे बिवाहकरके संसारी सुख उठानेलगा इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो नारायणजी अपने भक्तोंका ऐसा मान रखते हैं इतनी क्षमा संसारी मनुष्यभी नहीं करसक्ता अब मैं दूसरा हाल उनकी महिमाका कहताहूं सुनो मिथिलानगरीमें बहुलाश्वनाम राजा परमभक्त मनसा बाचा कर्मणासे अपने को दास लक्ष्मीपतिका समझताथा व उसीनगरमें श्रुतदेवनाम ब्राह्मण हरिभक्त रहकर आठोंपहर उनके स्मरण व ध्यानमें मग्न रहताथा बिनामांगे जो कुछ मिलता उसी में संतोष रखकर किसी से कुछ नहीं मांगताथा सो नित्य रात को दोनों परमभक्त आपसमें बैठकर यह बिचार किया करते थे कि कल्ह बैकुण्ठनाथ के दर्शन वास्ते द्वारका चलकर अपनाजन्म स्वार्थ करैंगे प्रातसमय वहां न जाकर कहते थे कि श्यामसुन्दर अन्तर्यामी दीनदयालु आप यहां आनकर दर्शन देते तो बहुत अच्छा होता जब उन दोनोंकी सच्चीभक्ति त्रिभुवनपति ने देखी तब वह मुझे व नारदमुनि व वेदव्यास व बशिष्ठ व अगस्त्य व देवल व बामदेव व अत्रि व परशुरामजी आदिक ऋषीश्वरोंको अपनेसाथ रथपर बैठाकर मिथिलानगरी को चले रास्ते

में जो देश व नगर मिलताथा वहांके राजा आगे से आनकर अनेक तरहकीसौगात देते व उनके दर्शनसे अपना २ जन्म स्वार्थ करते थे ॥

दो० माड़वार पंचाल है माखनप्रभु यदुराय ।
पहुँचे अति आनन्द सों मिथिला नगरी जाय ॥

जब श्यामसुन्दरके आनेका समाचार राजा बहुलाश्व व श्रुतदेव ब्राह्मण ने सुना तब आगे जाकर उन्हें दण्डवत्‌की जिस स्थानपर चरण केशवमूर्त्तिका पड़ताथा वहां की धूर उठाकर वह दोनों परमभक्त अपने शिर व आंखों में लगाते थे हे परीक्षित उसदिन कृष्णचन्द्र आनन्दकन्दका दर्शन पाकर सब छोटे बड़े मिथिलापुर बासियोंको ऐसासुख मिला जिसकाहाल मुझसे कहा नहीं जाता फिर राजा व ब्राह्मण ने लक्ष्मीपति के सामने हाथ जोड़कर बिनय किया हे महाप्रभु जिसतरह आपने दयालु होकर अपना दर्शन दिया उसीतरह अपने चरणों से हमारा घर पवित्र कीजिये यह सुन कर मुरलीमनोहरने बिचारा कि राजा व ब्राह्मण दोनों मेरे भक्तहैं व इन्हींकी प्रसन्नता वास्ते यहां आयाहूं इसलिये दोनोंके घर जाकर इनका मान रखना चाहिये पहिले राजा के घर जानेसे ब्राह्मण कहैगा मुझे कंगाल जानकर मेरेघर नहीं आये राजाधनपात्रको मुझसे अच्छाजाना व ब्राह्मणके घर प्रथमजाताहूं तो राजा खेदमानकर कहैंगे श्याम-सुन्दर मेरा अपमानकरके प्रथम ब्राह्मणकेघर चलेगये इसलिये वहबात करनाचाहिये जिसमें दोनों प्रसन्नरहैं ऐसाबिचारतेही त्रिभुवनपति दोस्वरूप अपने रथ व ऋषीश्वरों समेत बनाकर राजा व ब्राह्मण दोनोंके स्थानपर चलेगये व श्यामसुन्दरकी माया स बहुलाश्व राजाने समझा कि केवलमेरेघर द्वारकानाथ आयेहैं व ब्राह्मणने जाना कि मुरलीमनोहरने राजमन्दिर न जाकर हमारेयहां कृपाकी है जब केशवमूर्त्ति राजमन्दिर पर पहुंचे तबउसने द्वारकानाथको जड़ाऊसिंहासनपर बैठाकर चरणउनका अपनेहाथ से धोया व चरणामृतलेकर वह जल शिर व आंखों में लगाया और अपनेघरवालोंपर छिड़क दिया व सब ऋषीश्वरों को बिलग २ सिंहासनपर बैठाकर बिधिपूर्व्वक पूजा श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरोंकी की व बहुतसे रत्नादिक लक्ष्मीपतिको भेंटदेकर चरणउनका प्रेमपूर्वक दाबनेलगा व बड़ेहर्षसेबोला आज मैं अपनेबराबर किसी दूसरेका भाग्यनहीं समझता देखो जिनचरणोंकादर्शन महादेवआदिक देवताओं व बड़े २ योगीश्वरोंको जल्दी ध्यानमें नहींमिलता वहीचरण आज मेरी गोदमें बिराजतेहैं व बैकुण्ठनाथ ने मुझे अपनादास समझकर अपनेचरणोंसे मेराघर पवित्रकिया इसीतरह बहुतस्तुतिकरके राजाबहुलाश्वने श्यामसुन्दर व ऋषीश्वरोंको छत्तीसव्यंजन खिलाया व बसुदेवनन्दनको उत्तम २ भूषण व बस्त्रपहिनाकर चँवर हिलातेसमय उनसे बिनयकी ॥

चौ० मोहिं सनाथकियो यदुनाथा । दर्शनदियो ऋषिनके साथा ॥

दो० तुम तो जगत निवास हौ माखनप्रभु सुखरास ।
निज दासनके घर बिषे कछुदिन करोनिवास ॥

यह दीनबचन सुनकर त्रिभुवनपति अपने भक्तका मनोरथ पूर्णकरने के वास्ते इक्कीसदिन वहांरहे उसे ब्रह्मज्ञान उपदेशकिया जब श्यामसुन्दर उस कंगालब्राह्मण के घरगये तब श्रुतदेवने कुशाकेआसनपर अँगवछाबिछाकर मुरलीमनोहरको बैठा दिया व अपनीस्त्रीसमेत उनकेप्रेममें डूबकर बड़ेहर्षसे नाचनेलगा व चरणमुरलीमनोहरका धोकर चरणामृतलिया व गंगाजीकी मिट्टीकातिलक बसुदेवनंदनके लगाकर तुलसीदल उनपर चढ़ाया व इमिली व बड़हर व आंवलाआदिक फल जो खट्टमीठे हैं व मोटा चावल खेतमेंका बिनाहुआ व सागपात लेआकर बड़ेप्रेमसे त्रिभुवनपति व ऋषीश्वरों के सामने रखदिया व खसकीमिट्टीसे गंगाजल सुगंधितबनाकर पीनेको लेआया तब बैकुण्ठनाथ ने ऋषीश्वरों समेत आनन्दपूर्व्वक भोजनकिया जब श्रुतदेव हाथ व मुँह वृन्दाबनबिहारी व ऋषीश्वरोंका धुलाकर सुचित्तहुआ तब मुरलीमनोहरके सामने हाथ जोड़कर बिनय किया हे महाप्रभु जबसे बालअवस्था भोगकर सयाना हुआ तब से सिवाय स्मरण व ध्यान तुम्हारेचरणों के दूसराउद्यम नहींरखता आजआपने कमलरूपी चरणोंका दर्शनदेकर मुझकंगालकी इच्छापूर्णकी जोलोग संसारीजालमें फँसेरहकर धन व परिवारका अभिमानरखते हैं उनको तुम्हारेचरणोंका दर्शन स्वप्नेमें भी नहींमिलता व जो तुम्हारे स्मरण व ध्यान व पूजा व हरिचर्चा व कथासुननेमें प्रीतिरखते हैं वह संसारमें अपनी कामनापाकर अन्तसमय मुक्तहोते हैं इसलिये आपको हज़ारोंदण्डवत् करताहूं जो आज्ञा देव सो करूं ॥

दो० हाथ जोड़ बिनती करों धरों चरण पर माथ ।
म्वहिं अनाथको दरशदे कीन्ह्यों नाथ सनाथ ॥

ऐसी प्रीति व भक्ति उसब्राह्मणकी देखकर श्यामसुन्दर ने कहा हे द्विजराज हम तुमको अपना निजभक्त व मित्रजानकर बहुत प्यारासमझते हैं व जो मनुष्य वेद व शास्त्र पढ़ेहुये ब्राह्मणों की पूजाकरता है उसकामनोरथ हम तुरन्त पूर्ण करदेते हैं सब ऋषीश्वर तुमपर दयालुहोकर अपनादर्शन देने यहांआये हैं जिसतरह तीर्थ नहाने व देवस्थानका दर्शनकरने से मनुष्य पवित्रहोजाताहै उसीतरह इन ऋषीश्वरों का चरण देखने से शरीरमें पापनहींरहता सो तुम इनकीसेवा अच्छीतरह करो मैं अपनेतनुसे भी ब्राह्मणको अधिकप्यारा जानताहूं जो मनुष्य ब्राह्मणकी सेवानहींकरता उसे मूर्खसमझ-नाचाहिये ज्ञानीलोग ब्राह्मणको परमेश्वरतुल्य जानते हैं व मनुष्यतनु में जो शुभकाम बनपड़े उसीको उत्तम समझनाचाहिये नहीं तो यहशरीर एकदिन नाशहोकर कुछकाम

नहींआता इसलिये तुमको बेदानुसार हमारे स्मरण व पूजनमें रहनाचाहिये त्रिभुवन पति इक्कीसदिन श्रुतदेव ब्राह्मणके घरमें ऋषीश्वरोंसमेत रहकर ज्ञानसमझाने उपरान्त द्वारकापुरीको चले व राहमेंसे सब ऋषीश्वरोंको बिदा करदिया ॥

दो० निज गृह पहुँचे आनकर माखनप्रभु यदुराय।
पुरबासी प्रफुलित भये दरश परस सुख पाय ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

त्रिभुवनपति की स्तुति ॥

राजापरीक्षित ने इतनी कथासुनकर पूंछा हे शुकदेवस्वामी द्वारकानाथ ने श्रुतदेव ब्राह्मण से कहा कि तुम शास्त्रानुसार मेरा ध्यान व पूजनकियाकरो सो मुझे यह बड़ा सन्देहहै कि परब्रह्म निराकाररूपकी स्तुति जो कुछरूप व रेख न रहकर देखनेमें नहीं आते बेदने किसतरह कीहोगी बिस्तारपूर्व्वक कहकर मेरासन्देह छुड़ादीजिये यहबात सुनकर शुकदेवजीबोले हे परीक्षित वेदमें स्तुति बैकुण्ठनाथकी बहुत लिखी है मैं इतनी सामर्थ्य नहीं रखता जो सबगुणउनका बर्णनकरसकूं पर थोड़ासाहाल जो मुझे मालूम है सो कहताहूं सुनो जिस आदि निराकार ज्योतिने बुद्धि व इन्द्री व प्राण व धर्म्म व अर्थ व काम व मोक्षको बनायाहै वह महाप्रभु सदा निर्गुणरूपरहकर ब्रह्माण्ड रचती समय बिराट्रूप धारणकरके शेषनागपर शयनकरते हैं उनकीकथा इसतरहपर है कि सनक व सनन्दन व सनातन व सनत्कुमार चारोंभाई परमेश्वरका अवतार सृष्टिहोने से पहिले ब्रह्माकी इच्छानुसार उत्पन्नहुये हैं सो उनके स्वभाव में राजस व तामस का प्रवेश न होकर सदा वह सतोगुणरूप रहते हैं व उनमें सदा एकलीला व कथा परमेश्वर की कहताहै व तीनभाई सुनतेहैं जो कुछ स्तुति आदिज्योति भगवान्की उन्हों ने की है वहीबात नरनारायण ने नारदमुनि से सतयुगमें कीथी वही कथा हम तुमसे कहते हैं सुनो जिसतरह मकड़ी अपने मुखसे जाला निकालकर फिर उसे खाजाती है उसी तरह सबजीव जड़ व चैतन्य तीनोंलोक के परमेश्वरकी इच्छासे पलक भांजनेभर में उत्पन्न होकर फिर उन्हीं के रूपमें समाजाते हैं उससमय महाप्रलय होनेसे चारोंओर पानी दिखलाई देकर केवल आदिज्योति भगवान् रहिजाते हैं जब उनको संसाररचने की फिर इच्छा होती है तब उनकी श्वासासे चारोंवेद उत्पन्न होकर जिसतरह प्रात समय बन्दीगण राजाओंकी स्तुतिकरके जगाते हैं उसीतरह वहवेद दिव्यरूप चतुर्भुजी स्वरूपके सामने हाथ जोड़कर जगानेवास्ते बिनयकरते हैं ॥

दो० त्यागो निद्रा योगकी जागो हरी मुरार।
निजमाया बिस्तारिकै सिरजो पुनि संसार ॥

रोम में हजारों ब्रह्माण्ड बँधेरहकर किसीजीव का हाल तुमसे छिपा नहीं रहता जिस तरह सोने का अनेक गहना बनानेसे बिलग २ नाम होकर सब गहना गलाने पर केवल सोना रहजाता है उसीतरह तुम्हारा प्रकाश सबकेतनु में रहकर देवतादिक जो पूजते हैं वह पूजाभी आपको पहुँचती है इसलिये जो लोग ज्ञान की दृष्टि से जड़ व चैतन्यमें तुम्हारा रूप एकसा देखकर संसारी तृष्णा छोड़देते हैं उन्हीं का कल्याण होता है ॥

दो० यद्यपि ज्ञानप्रकाश ते बहुबिधि करै बखान।
भक्ति बिना पावै नहीं कबहूं पद निर्बान ॥

हे दीनानाथ ब्रह्माभी बिना शक्ति व आज्ञा तुम्हारी संसार रचनेकी सामर्थ्य नहीं रखते जगत्में सब व्यवहार झूठा होकर केवल तुम्हारा नाम सचाहै जिसतरह अग्नि का ढेर एकजगह रहकर उसमेंसे चिनगारियां उड़ती हैं उसीतरह अग्निरूपी ढेर आप होकर सबजीवों को चिनगारीके समान समझना चाहिये जैसे एक चिनगारी आग सुलगानेसे बहुत होजाती है वैसे चिनगारीरूप जीव आपकी भक्तिकरनेसे तुम्हारे तुल्य होजाता है ॥

चौ० योगेश्वर जो तुमको ध्यावैं। श्वासरोंकि ब्रह्मांड चढ़ावैं ॥
हृदयकमल में तुमको देखैं। अद्भुत रूप अनूपम पखैं ॥
भक्त तुम्हारे पढ़त पुराना। वे तुमको पावत भगवाना ॥
तुम्हरी भक्ति धरैं मनमाहीं। चार पदारथ चाहत नाहीं ॥

दो० हँसत तुम्हारे ध्यानमें रोम रोम हर्षाय।
देखि दशा संसार की रुदन करत पछिताय ॥

चौ० जो तुमकहो सन्त हितकारी। हमसे उतपति भई तुम्हारी ॥
तुम हमको कैसीबिधिजानो। जो अस्तुति यहि भांतिबखानो॥
अहो नाथ यह कृपा तुम्हारी। नातो केतिक बुद्धि हमारी ॥
हमहूं यद्यपि वेद कहावैं। तदपि तुम्हारो भेद न पावैं ॥
तुम्हरो रूप न देखो जाई। पन्थ तुम्हारो देत बताई ॥
ज्ञान भक्ति वैराग जु होय। तब तुमको पहिचानत कोय ॥
जो जन विषयभोग परिहरै। भक्तियोग निज मनमें धरै ॥

दो० तुम चरणनके ध्यानमें मगन रहै दिनरैन ।
तुम्हरी अमृत कथा सुनि लहै सदा सुखचैन ॥

हे बैकुण्ठनाथ जो मनुष्य संसारमें मनुष्य तनु पाकर इन्द्रियोंके बशरहताहै व स्त्री व पुत्रके प्रेममें लपटकर तुम्हारीभक्ति नहीं करता उसे अभागी व मुर्देके समान समझना चाहिये वह मनुष्य चौरासीलाख योनिमें जन्मपाकर बड़ादुःख पाताहै व सबजीव पुराने होकर अपने कर्मानुसार अनेकतनुमें दुःख व सुख भोगते हैं जिसतरह तालाब का पानी प्रतिदिन कमहोताजाता है उसीतरह गृहस्थी करनेवाले की बुद्धि व सामर्थ्य घटती जाती है ॥

दो० याही विधि प्राणी सबै बूड़त माया माहिं ।
नाहीं तो वह आपसे काहू ब्यापत नाहिं ॥

चौ० मनुष जन्म दुर्लभ जग माहीं । देवनहूं को प्रापत नाहीं ॥
सकल देव यह मनसा करैं । मानुष ह्वै भवसागर तरैं ॥
नर शरीर नौका सम जानो । वेद पुराण डांडही मानो ॥
केवटरूप गुरू है सोई । नौका पार लगावत जोई ॥
या बिधिसों जो पार न होई । आतमघाती समझो सोई ॥
जबतक भक्तिकरै नहिंकोई । भवसागर से पार न होई ॥

दो० याते कीजै शुभ करम यही धर्म्मकी रीति ।
माखनप्रभु करतारसों जबलौं उपजै प्रीति ॥
अष्ट सिद्धिको देखिकै लोभ करै जो कोय ।
ताहि पदारथ भक्तिको कैसे प्रापत होय ॥
यह अस्तुति वेदन कही अपनी बुद्धि प्रमान ।
निर्गुणरूप अनूपको कैसे करै बखान ॥

इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित यही स्तुति कहकर चारोंवेद चतुर्भुजी भगवान्को सृष्टि रचने वास्ते जगाते हैं व सनकादिक आठोंपहर यहीचर्चा आपसमें रखते हैं व यही बात नरनारायण ने नारदजी से कहीथी व नारदमुनि ने वेदव्यास हमारे पितासे कही व उन्हों ने विस्तारपूर्वक मुझे पढ़ाई व मैंने वही हाल

जो सब वेद व शास्त्रका सारहै तुमको सुनाया और यही ज्ञान श्यामसुन्दर ने राजा बहुलाश्व व श्रुतदेव ब्राह्मणको बतलाया था ॥

दो० यह अस्तुति जो रैन दिन कहै सुनै चितलाय।
ताके पाप रहैं नहीं विष्णुलोक वह जाय॥

अट्ठासीवां अध्याय॥

भस्मासुर दैत्यकी कथा॥

राजा परीक्षित ने इतनी कथा सुनकर शुकदेवजी से बिनयकी हे मुनिनाथ मुझे संसारमें यह बात उलटी दिखलाई देती है कि नारायण बैकुण्ठनाथ लक्ष्मीपति होकर अपने भक्तोंको ऐसा कंगाल रखते हैं कि उनको अच्छी तरह भोजन व वस्त्र भी नहीं मिलता व महादेवजी अवघड़ों की तरह अपना वेष रखकर सर्पोंकी सेल्ही व मुंडमाला गले में पहिने रहते हैं और उनके भक्त व सेवक धनपात्र होकर बड़े आनन्दसे अपना जन्म बिताते हैं इसका क्या कारणहै यह सन्देह मेरा छुड़ादीजिये यह बात सुनकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित यह तुमने बहुत अच्छी बात पूछी इसका हाल सुनो॥

दो० सदा तीनपन बसत हैं शिवकी मूरति माहिं।
सकल कामना देतहैं एक मुक्तिको नाहिं॥

हे राजन् त्रिभुवनपति भगवान् विरक्त रहकर संसारी किसी बस्तुकी चाहना नहीं रखते इसलिये उनके भक्तलोग भी नाश होनेवाली संसारी बस्तुको नहीं चाहते व लक्ष्मीपति ऐसी इच्छा नहीं करते कि हमारे भक्त संसारी मायाजालमें लपटकर नष्ट होवैं तुमने सुनाहोगा कि कई मनुष्य महादेवके भक्तों ने उनसे बरदान पाकर उन्हीं के साथ शत्रुताकीथी इसीकारण परब्रह्मपरमेश्वर मायारूपी धन जिसके मदमें मनुष्य अन्धा होकर अनेक कुकर्म करताहै अपने भक्तोंको नहीं देते हे राजन् जो प्रश्न तुमने हमसे कियाहै यही बात एकबेर राजायुधिष्ठिर तुम्हारे दादाने श्रीकृष्णजी से पूंछी थी तब श्यामसुन्दर ने कहा हे राजन् मायारूपी लक्ष्मी मिलने से जिसमें बहुत बिकार भराहै मनुष्य संसारी सुखमें लपटजाते हैं व जबतक मुझे याद नहीं करते तबतक आवागमन से नहीं छूटते इसलिये अपने भक्तोंको नहीं देता जिसमें वेलोग संसारी सुखमें लपटकर परलोकका शोच भूल न जावें इसवास्ते जो मनुष्य मेरी शरण पकड़ता है उसका धन व अभिमान कृपाकी राह हरलेताहूं जब निर्द्धन होने से स्त्री व पुत्र व भाई आदिक सब परिवारवाले उसका निरादर करते हैं तब वह उनका प्रेम छोड़ कर आनन्द से साधु व बैष्णवका सत्संग करताहै जब महापुरुषों की संगति से ज्ञान

पाकर मेरे भजन व स्मरण में ध्यान लगाता है तब हम उसको मुक्तिपदवी देते हैं व ब्रह्मादिक दूसरे देवताओं की पूजा करने से जो लोग स्वर्गादिक में जाते हैं वह सुख सदा स्थिर नहीं रहता व मेरीभक्ति व पूजा करनेवाले बिभीषण व अर्जुन व सुग्रीव व प्रह्लाद व अम्बरीष आदिक संसारीसुख भोगकर अटलपदवी पाते हैं इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित महादेव आदिक दूसरे देवता अपनी पूजा करने से प्रसन्नहोकर छोड़देने में खेद मानते हैं व बैकुण्ठनाथ सदासे सात्विकीस्वभाव रहकर किसीको शाप नहीं देते ॥

दो० बहु असुरन को रुद्रजू दिये तुरत बरदान ।
तिन सन्तन सों आपही पायो कष्ट निदान ॥

हे परीक्षित बाणासुर की कथा तुम सुनचुकेहौ कि शिवशङ्कर से वरदान पाकर उन्हीं के साथ लड़ने आयाथा अब हम दूसरे दैत्यका हाल कहते हैं सुनो एक दिन बृकासुरदैत्य महामूर्ख शकुनीका बेटा तप करनेकी इच्छा रखकर घरसे बाहर निकला जब उसने राहमें नारदमुनिको आते देखा तब दण्डवत् करके पूछा हे मुनिनाथ मुझे तपकरने की इच्छाहै सो तुम दयालुहोकर बतलाओ कि ब्रह्मा व बिष्णु व महेश तीनों देवताओं में जो तुरन्त प्रसन्न होकर बरदान देतेहों उनका तप करूं यह बात सुनकर नारदजी बोले हे बृकासुर इन तीनों देवताओं में महादेवजी तुरन्त बरदान देते हैं व थोड़ासा अपराध करने में अपना क्रोध क्षमा नहीं करते देखो उन्हों ने सहस्रार्जुनके तप करने से प्रसन्नहोकर उनको हज़ार भुजादी थीं इसलिये तुम शिवजीका तपकरो तो जल्दी फल मिलैगा जब नारदमुनि यह बात कहकर चलेगये तब बृकासुर उसीसमय केदारेश्वरकी ओरगया ॥

दो० शिवकी मूरति थापिकरि अग्निकुण्डके तीर ।
बैठ्यो आसन मारके होमन लग्यो शरीर ॥

जब सातदिन व रातमें उसने अपने अंगका सब मांस छुरीसे काटकर हवन करदिया व आठवें दिन स्नानकरके अपना शिर काटनेचाहा तब भोलानाथ ने अग्निकुण्डसे निकलकर उसका हाथ पकड़लिया व अपने कमण्डलुका जल उसपर छिड़क दिया जब उसके प्रतापसे बृकासुरका अंग दिव्यरूप होकर कुन्दनके समान चमकने लगा तब शिवजी ने कहा हे बृकासुर हम तेरी पूजासे प्रसन्न हुये अब तुझे जो इच्छाहो बरदान मांग यह बचन सुनतेही बृकासुर ने हाथ जोड़कर बिनयकी हे महाप्रभु मुझे ऐसा बरदान दीजिये कि जिसके शिरपर अपना हाथ रखदूं वह उसी समय जलकर राख होजावै यह बात सुनकर शिवजी ने बिचारा कि यह अधर्मी दैत्य ऐसाबरदान

मांगकर संसारी जीवोंको दुःख देने चाहता है पर क्या करूं बचन देचुका यह समझ कर महादेवजी बोले बहुत अच्छा हमने मुँहमांगा बरदान तुमको दिया जब वहदैत्य यह बरदान पाकर प्रसन्नहुआ तब उस अधर्मी ने पार्वतीजीका रूप देखकर बिचार किया इससे दूसरीबात उत्तम नहीं जो मैं अपना हाथ भोलानाथ के शिर परधरकर उन्हें जलादूं व पार्वतीको अपनेघर लेजाऊं जब वहपापी ऐसाबिचारकर शिवजी के मस्तकपर हाथरखनेवास्ते चला तब महादेवजी अन्तर्यामी वहां से भागकर सबलोक व दशोंदिशामें गये पर उस दैत्यने उनकापीछा नहींछोड़ा जब ब्रह्मादिक कोई देवता शिवजीकी रक्षा नहींकरसके तब वे ब्याकुलहोकर बैकुण्ठनाथके सामने दौड़े चलेगये व दण्डवत्करके हाथजोड़कर विनयकी हे त्रिभुवनपति मैंने यह दुःख अपने ऊपर आपउठाया है जिसमें इसदैत्य पापी के हाथसे मेरा प्राणबचै वह उपायकीजिये यह दीनबचन सुनतेही नारायणजी भक्तहितकारीने महादेवजीसे कहा तुम धैर्य्यरक्खो मैं इसका यत्नकरताहूं ऐसाकहकर बैकुण्ठनाथने उसीसमय अपनेको ब्राह्मणरूप बनालिया व ऋषीश्वरोंकीतरह कमण्डलु व मृगछाला लियेहुये जहांवृकासुर दौड़ा चलाआताथा वहांजाकर उससेकहा हे वृकासुर तू इतनाघबड़ाकर कहां भागाजाता है अपना समाचार हमसेतो बतलाव जब उसदैत्यने बरदानपाने व अपनी इच्छाकाहाल त्रिभुवनपति से कहा तब बैकुण्ठनाथ ऋषीश्वररूप बोले तू बड़ाअज्ञान है कि महादेवजीकी बात जो विष व धतूराखाये व भूतों को साथलिये नंगे फिराकरते हैं मुण्डमाल व सर्पोंका हार पहिनकर शास्त्रानुसार नहींचलते व श्मशानपर बैठेहुये बौड़होंकीतरह हँसते हैं व नाचतेहैं सच्चामानकर इतना दुःखउठाताहै जबसे दक्षप्रजापतिने महादेवको शापदिया तबसे सबबातें उनकी सच्चीनहींहोतीं इसलिये तुम अपने शिरपर हाथ रखकर पहिले उस बरदानकी परीक्षाकरलेव जब तुम्हारे निकट उनकाबचन सचठहरजावै तब जो चाहनाहो सो उनकेसाथ करना यहसुनतेही वृकासुरने परमेश्वरकीमाया से वह बचन सच्चा मानकर जैसे अपने शिरपर हाथरक्खा वैसे जलकर राखकी ढेरी होगया यह चरित्रदेखतेही भोलानाथ प्रसन्नहोकर नाचनेलगे व देवताओंने आकाशसे त्रिभुवनपतिपर फूलबर्षाये व अप्सराओं ने नाचकर गन्धर्वों ने गाना सुनाया तब उससमय आदिपुरुष भगवान्ने महादेवजीसे कहा ऐसेअधर्मी दैत्यको इसतरहका वरदान देना उचित नहीं है जगत्गुरुका अपराधकरने से वह अपनेदण्डको पहुंचा यहबात सुनकर शिवजीने बिनयकी हे महाप्रभु तुम हमारी रक्षाकरनेवाले बनेहो इसलिये हमसे अपराधभी होजाता है जब भोलानाथ इसी तरह बहुत स्तुति बैकुण्ठनाथकी करचुके तब त्रिभुवनपतिने उनको धैर्य्यदेकर बिदाकिया इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीबोले॥

चौ० रुद्रमोक्ष लीला सुखदाई। जो जन कहै सुनै चितलाई॥

दो० रहै सदा सुख चैन से दुख पावै वह नाहिं ।
सब पापन से छूट कर मुक्त होत क्षण माहिं ॥

नवासीवां अध्याय ॥

भृगुऋषीश्वर का लक्ष्मीपति की छातीपर लातमारना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित एकसमय भृगुआदिक सातोंऋषीश्वर सरस्वतीकिनारे बैठेहुये आपसमें ज्ञानचर्चा कररहेथे उससमय कई ऋषीश्वरोंने भृगुजीसे पूंछा कि ब्रह्मा व बिष्णु व महेश तीनों देवताओं में कौन बड़ाहै जब यहबातसुनकर किसीने महादेव किसीने बिष्णु किसीने ब्रह्माको बतलाया तब भृगुऋषीश्वरने कहा इनतीनों देवताओं में जो क्रोधअपना क्षमाकरके बुराईकेबदले भलाईकरै उसीको उत्तम समझनाचाहिये सो मैं जाकर उनकी परीक्षा लेआताहूं ऐसाकहकर भृगुऋषीश्वर ब्रह्माजी की सभा में चलेगये व बिनादण्डवत्‌किये उनकेसामने जाबैठे यह देखकर सबऋषीश्वर व ब्राह्मणों ने जो वहां बैठेथे अचम्भामाना व ब्रह्माने क्रोधसे भृगुकीओर देखकर शापदेनेचाहा पर बेटाजानकर कुछनहीं बोले ॥

दो० पुत्र आपनो जानकर भये कोप ते शांति ।
प्रथम परीक्षा पिता की सुत लीन्ही यहिभांति ॥

जब भृगुऋषीश्वरने रजोगुणबश ब्रह्माको अपनेऊपर क्रोधितदेखा तब वहांसे उठकर कैलासपर्वतपर जहां गौरीशंकर बिराजते थे गये जैसे भोलानाथ ने भृगुऋषीश्वर अपनेभाईको आतेदेखा वैसे खड़ेहोगये व हाथपसारकर गलेमिलनेचाहा तब ऋषीश्वर ने महादेवजी से कहा तुमअपना कर्म व धर्म छोड़कर श्मशानपर बैठेरहतेहो इसलिये मुझे मतछुओ यह अभिमानपूर्व्वक बचनसुनते ही जब गौरीपति ने क्रोध से त्रिशूल उठाकर भृगुऋषीश्वरको मारनेचाहा तब पार्वती ने शिवजी से हाथजोड़कर बिनयकी महाराज यहऋषीश्वर तुम्हाराछोटाभाई है इसकाअपराध क्षमाकीजिये जब पार्व्वती के कहनेसे भृगुऋषीश्वरका प्राणबचा तब भोलानाथको तमोगुणबश देखकर वहांसे विष्णु भगवान्‌की परीक्षालेनेवास्ते बैकुण्ठकोगये वह बैकुण्ठ कैसाहै जहां सूर्य व चन्द्रमा का प्रकाशहोनेपरभी दिनरात बराबर उजियालाबनारहताहै और वहां सबपृथ्वी सोनहुली व रत्नजटितहोकर बारहोंमहीने तुलसी के वृक्ष व सुगन्धित फूल व उत्तम २ फललगे रहतेहैं व अच्छे २ तड़ाग व बावली आदिक बनेहोकर उसकेकिनारे अनेकरंगकेपक्षी बोलते हैं जब भृगुऋषीश्वरने बेधड़क बीचमहलके जहां वे जड़ाऊपलँगपर सोगये थे व लक्ष्मीजी उनकापैरदाबतीथीं घुसकर एकलातबाईओर छातीमेंमारी तब बैकुण्ठनाथ नींदसेचौंककर ऋषीश्वरको देखतेही उनकापैरदाबनेलगे व चरणोंपर गिरकर बिनय

पूर्वकबोले हे द्विजराज मेराअपराध क्षमाकीजिये मेरीछाती बड़ीकड़ी है इसलिये आपके कोमलचरणपर अवश्य दुःखपहुंचाहोगा मुझे तुम्हारेआनेका समाचार मालूमहोता तो आगे से पहुँचता और आपने दयाकीराह मेरालोक पवित्रकरके यह जो लातमारी है इसलिये सदा इसचरणका चिह्न अपनी छातीपर बनारहने दूंगा इसमें मुझे कुछलज्जा नहीं है जब भृगुऋषीश्वरने ऐसी क्षमा त्रिभुवनपति में देखकर मीठा बचन सुना तब लज्जित होकर उनकी स्तुति करने लगे व लक्ष्मी जी ने लातमारती समय मन में क्रोध कियाथा पर बैकुण्ठनाथ के डर से ऋषीश्वरको कुछशाप नहीं दिया जब त्रि· भुवनपति ने भृगुऋषीश्वर का पूजन करके उन्हें बिदा किया तब उन्हों ने सरस्वती किनारे जाकर तीनों देवताओंका हाल अपने साथियोंसे कहदिया यहसमाचार पातेही सब ऋषीश्वर दूसरे देवताओं का पूजन छोड़कर स्मरण व ध्यान बिष्णु भगवान् का सच्चे मनसे करनेलगे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित एक दूसरी महिमा श्यामसुन्दर की कहते हैं सुनो द्वारकापुरीमें एक ब्राह्मण बहुत शीलवान् अपने कर्म व धर्मसे रहताथा जब उस ब्राह्मणके यहां एकपुत्र उत्पन्न होकर मरगया तब वह लोथ अपने बालककी राजा उग्रसेनके पास लेजाकर कहनेलगा तुम्हारे अधर्म करने से मेरापुत्र पिताके सामने मरगया व प्रजालोग दुःख पाते हैं द्वापरमें कलियुग का लक्षण राजाके पापसे होताहै वह ब्राह्मण अनेक दुर्बचन कहने उपरांत मराहुआ बेटा उग्रसेनके द्वारेपर रखकर अपनेघर चलाआया इसीतरह सात बालक और उसब्राह्मण के घर उत्पन्न होकर मरगये सो वह ब्राह्मण उनकी लोथ उसीतरह राजाके यहां रख आया जब नवईबेर उसकी स्त्रीके गर्भरहा तब उस ब्राह्मणने राजसभामें जाकर श्याम व बलरामके सामने अतिबिलाप करके कहा हे दीनानाथ पहिले राजा उग्रसेन पापी को धिक्कारहै जिसके राज्यमें प्रजा दुःख पाते हैं दूसरे उन लोगोंको धिक्कारहै जो इस अधर्मीकी सेवामें रहते हैं तीसरे मुझे धिक्कारहै जो ऐसे पापियों के देशमें रहताहूं जिन के अधर्मसे मेरेपुत्र नहीं जीते और तुम क्षत्रिय होकर ब्राह्मण का दुःख नहीं छुड़ाते जब उस ब्राह्मणने राजसभामें खड़ेहोकर अनेक बातैं इसीतरहपर कहीं व श्याम व बलराम व प्रद्युम्न आदिक किसी यदुबंशीने उसको उत्तर नहींदिया तब अर्जुन जो उस समय वहां बैठाथा बाणबिद्या का घमण्ड रखकर अभिमानपूर्वक बोला बड़े लज्जाकी बातहै जो उग्रसेन महाराज कहलाकर ब्राह्मणका दुःख निवारण नहींकरते जिस राजा के देशमें गो व ब्राह्मण कष्टपाते हैं उसकायश व धर्म नहीं रहता ऐसा कहकर अर्जुन उस ब्राह्मणसे बोला हे द्विजराज तुम किसवास्ते इतनारोकर दुःख उठातेहो इनदिनों राजा आप स्वार्थी होकर गो व ब्राह्मणकी रक्षा नहीं करते ॥

चौ० तुम्हरे पुत्र जन्मते मरैं । पुरके लोग यत्न नहिं करैं ॥

दो० यद्यपि बहुयोधा बसैं नगर द्वारका माहिं ।
तद्यपि विद्या धनुष की जानत कोऊ नाहिं ॥

हे ब्राह्मण देवता अब तुम धैर्यधरकर अपने घरबैठो जब तुम्हारी स्त्रीके बालक उत्पन्नहोने का समयआवे तब तुम मुझसे आनकर कहदेना मैं उसबालक की रक्षा करूंगा यहसुनकर उस ब्राह्मणने अर्जुनसे कहा जहां श्याम व बलराम व प्रद्युम्न ऐसे शूरबीर बैठेहोकर कुछनहीं बोलते वहां ऐसे अभिमानपूर्वक बचनकहतेहौ तुम्हारी क्या सामर्थ्यहै जो मेरेबालकको मरनेसे बचाओगे यहबचन सुनकर अर्जुन बोले मुझे श्री कृष्ण व बलभद्र व प्रद्युम्न मत समझो मैं अर्जुन गाण्डीवधनुष का बांधनेवालाहूं मेरे सामने मृत्युकी सामर्थ्य नहीं है जो तेरापुत्र मारने सकै ॥

चौ० शिव से युद्ध कियो यकबारी । महाप्रसन्न भये त्रिपुरारी ॥
मेरो बचन सांच तुम जानो । कछु सन्देह न मनमें आनो ॥
तुम्हरे सुतकी रक्षा करिहौं । ना तो अग्निमाहँ मैं जरिहौं ॥

यहबात सुनकर ब्राह्मण अपने घर चलागया जब उसब्राह्मण की स्त्री के बालक उत्पन्नहोने का समय पहुंचा व उसने अर्जुनके पास जाकर यहहाल कहदिया तब अर्जुन महादेवको नमस्कार करके धनुर्बाण लियेहुये ब्राह्मणके घर चलागया व बाणों का ऐसाकोट चारोंओर बनादिया कि जिसमें हवाभी ब्राह्मणके घरमें जाने न सकै व आप धनुर्बाण लेकर उसबालक का प्राण बचानेवास्ते चारोंओर फिरने लगा जबउस ब्राह्मण का बालक उत्पन्न होकर बिनारोये न मालूम कहां अन्तर्द्धान होगया तब उस की स्त्री अपने स्वामी से बोली महाराज तुमने अर्जुनकी बहुत बड़ाई कीथी कि वह मेरे बालककी रक्षाकरैगा पहिले पुत्रको तो क्षण दो क्षण रोतेहुये भी देखतीथी इसबेर तो मैंने उसको अच्छीतरह आंखोंसे भी नहीं देखा न मालूम कहां लोथ उसकी गुप्त होगई यहबचन अपनी स्त्रीका सुनतेही उस ब्राह्मणने अर्जुनके पास जाकर ऐसा दुर्बचन उसे सुनाया कि वह अतिलज्जित होकर राजा उग्रसेनकी सभामें चलागया व उसके पीछे ब्राह्मणने भी वहां पहुंचकर सभावालोंके सामने कहा हे अर्जुन तैंने मेरा पुत्र बचानेवास्ते प्रणकिया था सो तेरा अभिमान क्या हुआ जो तू मेरेपुत्र का प्राण बचाने नहीं सका इसलिये तुझे धिक्कार है कुछ लज्जा रखताहो तो चुल्लूभर पानीमें डूबमर व किसीको अपना मुख मत दिखला और आजसे धनुर्बाण रखना व झूठबोलना छोड़कर बनमें चलाजा तैंने राजा बिराटके यहां हिजड़ाबनकर बर्षरोज अपना दिन काटाहै तुझसे क्या शूरताई होगी जब इसीतरह उस ब्राह्मणने अनेक दुर्बचन राजसभामें अर्जुनको कहा तब वह बहुत लज्जित होकर बोला हे द्विजराज तुम ये

बातें सच्च कहतेहो अब तुमसे यह प्रतिज्ञा करताहूं कि तीनोंलोकमें से तुम्हारे मरेहुये बालक ढूंढ़कर लादूंगा नहीं तो धनुर्बाण समेत अग्निमें जलकर मरजाऊंगा यह बात ब्राह्मणसे कहकर अर्जुनने स्नान किया व धनुर्बाण उठाकर उन लड़कोंको ढूंढ़नेवास्ते स्वर्ग व पातालमें चलागया जब अर्जुनने चौदहोंलोक व यमपुरी व स्थान धर्मराज व आठोंलोकपालमें खोजने पर भी उनकापता नहीं पाया तब शोचकरता हुआ द्वारका पुरी में आनकर अपने सेवकोंसे बोला ॥

चौ० बहुत काठ लावो यहि ठाईं । अग्नि लगाय देव चौठाईं ॥

दो० करिहौं अग्नि प्रवेश मैं जरिहौं धनुष समेत ।
बचन हारि संसार में पतिधरिहौं केहि हेत ॥

जब अर्जुन चिता तैयारकरके अग्निमें कूदनेलगा तब श्यामसुन्दर गर्व्वप्रहारी भक्तहितकारी ने अर्जुनके पास जाकर कहा हे भाई तुम्हारी शूरताई में कुछ सन्देह नहीं है अभी तुम किसवास्ते जलतेहो हमारेसाथ चलो जहां ब्राह्मणके पुत्रहोंगे वहांसे ढूंढ़लाकर तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरीकरूंगा ऐसाकहकर त्रिभुवनपति अर्जुनसमेत अपनेरथ पर चढ़े व पूर्व्वओर सातोंद्वीप व सातोंसमुद्र व लोकालोक पर्वतके पार जाकर ऐसी जगह पहुंचे जहां सिवाय अँधेरेके कुछ दिखलाई नहीं देताथा तब श्रीकृष्णजी ने सु-दर्शनचक्र को आज्ञादी कि तुम अपने प्रकाश से रास्ता दिखलाते चलो यह बचन सुनतेही सुदर्शनचक्र हज़ार सूर्य्य से अधिक अपना तेज बढ़ाकर आगे आगे चला ॥

दो० तेज सुदर्शनचक्रको रह्यो चहूंदिशि छाय ।
अर्जुन देखिसके नहीं राख्यो नयन छिपाय ॥

जब इसीतरह बहुत दूरतक वह रथ चलागया तब वहांपर इस बेगसे पानी लहर मारताहुआ दिखलाई दिया जिसतरह दो पर्वत आपसमें लड़ते हों जब श्यामसुन्दर ने अपना रथ पानी में डाल दिया तब अर्जुन ने आंखखोली तो उसे वहांपर एक महल रत्नजटित बहुत लम्बा व चौड़ा चमकताहुआ दिखलाई दिया जब रथसे उतर कर दोनों भीतर गये तब उस मकान में क्या देखा कि शेषनागजी अपने कोमल अंगपर नीलाम्बर पहिने व हज़ार मुकुट व दोहज़ार कुण्डल जड़ाऊ धारणकिये लेटे हैं सिवाय लेने नये २ नाम परमेश्वरके दोनोंहज़ार जिह्वाओं से दूसरा कुछ प्रयोजन नहीं रखते व शेषनागकी छातीपर बिष्णुभगवान् मोहनीमूर्त्ति कमलनयन अष्टभुजी स्वरूपसे मुकुट व जड़ाऊ गहना अङ्गअङ्ग पर साजे जनेऊका जोड़ा व बैजयन्ती माला व कौस्तुभमणि गलेमें डाले पीताम्बर पहिने व उपरना रेशमीओढ़े इससुंदरताई से बिराजते हैं जिनकारूप देखकर एक २ अंग महासुन्दर पर तीनोंलोक के जीव

मोहित होजावैं व शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म चारों शस्त्र अपना २ रूप धारणकिये नन्द व सुनन्द व पुण्य व शील व सुशील व गरुड़ व बिशुक व सेन व सनाभ व नवोमंत्री उनके चारोंओर बैठे हैं व ब्रह्मा व महादेव आदिक देवता सामने खड़ेहुये स्तुति करते हैं जब अर्जुन यह चरित्र देखकर सब अभिमान अपना भूलगया तब श्यामसुन्दर ने अर्जुनसमेत अष्टभुजी स्वरूपके सामने जाकर इसतरह उन्हें नमस्कार किया जिसतरह कोई अपनी परछाहीं को दण्डवत् करै उस स्वरूपने श्यामसुन्दर को देखतेही हँसकर कहा तुमने एकसौपच्चीस बर्ष मर्त्यलोकमें रहकर पृथ्वीका बोझाउतारा व मेरी शक्तिसे अवतार लेकर बहुत दैत्य व अधर्मियों को मारा व देवता व ब्राह्मण व हरिभक्तों को सुख देकर मुझे प्रसन्न किया इनदिनों मेरामन तुम्हें देखनेवास्ते बहुत चाहताथा इसलिये मैंने ब्राह्मणके बालक यहां मँगाकर अर्जुनसे अभिमानपूर्वक बचन कहलादिया कि उसकी प्रतिज्ञा रखने वास्ते तुम अवश्य यहां आवोगे वे सब बालक यहांपर हैं उनको लेजाव ऐसा कहकर जब अष्टभुजी स्वरूप भगवान् ने श्यामसुन्दर को बिदाकिया तब वे आपसमें नमस्कार करके ब्राह्मण के लड़कों को लेकर अर्ज्जुन समेत द्वारकापुरी में आये व अर्ज्जुन ने वे सब बालक उस ब्राह्मणको देकर अपनी लज्जा छुड़ाई व शिर अपना मुरलीमनोहर के चरणोंपर रखकर समझा कि बसुदेव नन्दनकी दयासे मैंने महाभारत कियाथा नहीं तो मुझे क्या सामर्थ्य है जो कर्ण व भीष्मपितामह आदिक वीरोंको जीतने सक्ता इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा॥

चौ० जो यह कथा सुनै धरि ध्यान । उसके पुत्र रहैं कल्यान ॥

नब्बेवां अध्याय ॥

त्रिभुवनपति के सन्तानोंकी कथा ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो श्यामसुन्दर का सब गुण वर्णन करने सकै पर मैं उन ज्योतिस्वरूप को हज़ारों दण्डवत् करता हूं जिनकी दयासे हम व तुम इस अमृतरूप कहने व सुनने से मुक्तिपदवी पावैंगे इस लिये थोड़ीसी महिमा उनकी और कहते हैं सुनो बैकुण्ठनाथने केवल पृथ्वीका बोझा उतारने वास्ते यदुकुलमें सगुणअवतार लेकर ये सब लीलाकी थीं व उनकी इच्छासे द्वारका कंचनपुरी में सब स्थान व बाग जड़ाऊ तैयार होकर अनेक रंगके सुगन्धित पुष्प व फल बारहों महीने लगे रहते थे व तालाब व बावली के किनारे अनेक भांति के पक्षी मीठी २ बोलियों में स्तुति द्वारकानाथकी करते थे व कईहज़ार हाथी द्वारपर बांधे होकर अनेक पहलवान चाणूर व मुष्टिक ऐसे मल्लयुद्ध करने वास्ते सदा वहां

बने रहते थे व सब सड़क व गली व चौरहोंपर चन्दन व गुलाब जलसे छिड़काव होकर अनेक देशके व्यापारी सब तरहकी बस्तु वहां बेंचने वास्ते लेआते थे व यदु-बंशियों के घर ऋद्धि व सिद्धि बनी रहकर उनकी स्त्रियां जड़ाऊ गहना व कपड़ा पहिने इत्र व फुलेल लगाये हुये नित्य मंगलाचार मनाया करती थीं व सब छोटेबड़े द्वारकाबासी हरिकथा सुनने व साधु व ब्राह्मणकी सेवा में प्रीति रखकर अपने कर्म्म व धर्म्म से रहते थे ॥

दो० तहां नारि सब यादवन अति सुन्दर सुकुमारि ।
जिनको रूप निहारि के सकुचावें सुरनारि ॥

और सोलहहज़ार एकसौ आठ स्त्रियां श्यामसुन्दरकी अपने २ जड़ाऊ महल व बागों में अलग २ त्रिभुवनपति के साथ भोग व बिलासकरके अपना अपना जन्म स्वार्थ करती थीं व इन्द्रपुरी से अप्सरालोग अपना नाच दिखलाने वास्ते द्वारका में आनकर गन्धर्व्वलोग गाना सुनाते थे व श्यामसुन्दर अपने सोलहहज़ार एकसौआठ स्वरूपसे सब स्त्रियों के पास रहकर उनकी इच्छा पूर्ण करते थे और वे स्त्रियां आठों पहर द्वारकानाथकी सेवा में रहकर ऐसा उनपर मोहितथीं कि एकक्षण उनको बिना देखे श्यामसुन्दर के चैन नहीं पड़ताथा किसीसमय मोहनप्यारे के रहनेपरभी व्याकुल होकर पक्षियों से पूंछतींथीं कि हमारे प्राणनाथ कहां चलेगये फिर चैतन्यहोकर उनको देखने से अपने बराबर किसी दूसरेका भाग्य नहीं समझती थीं एकदिन मुरलीमनोहर ने सब स्त्रियोंके साथ जलक्रीड़ा करना बिचारकर जैसे समुद्रको आज्ञादी वैसे घुटने भर पानी वहां होगया ॥

दो० पूरणमासी रातको सब नारिन के साथ ।
जलबिहार लागे करन माखनप्रभु यदुनाथ ॥

जिससमय श्यामसुन्दर ने चांदनीरात में सोलहहज़ार एकसौआठ स्त्रियों के साथ बिलग बिलग रूप धरकर बिहारकिया उससमय समुद्रमें ऐसी शोभा मालूम होती थी जिसकाहाल वर्णन नहीं होसक्ता ॥

चौ० तबै टिटिहिरी बोली बानी । तासों कहन लगी यक रानी ॥
कारण कौन शब्द तू करै । हरि संयोग बियोग मन धरै ॥
चकई बोलिउठी तेहिकाला । ऐसी बिधि बोली यक बाला ॥
तेरो भेव जानि हम लीन्हों । पतिबियोगतेअतिदुखकीन्हों ॥

क्यों हरिकाज शब्द तू करै । सगरी रैन चैन नहिं परै ॥
फिर उनसुनी सिंधुकीबानी । तेहि अवसर बोली यकरानी ॥
कहै एक श्रीकृष्ण मुरारी । शयन करत हैं सिंधु मँझारी ॥
तेही काज शब्द अति करै । श्रीब्रजराज प्रीति उर धरै ॥
फिर उनदेखि चन्द्रकीकांति । सखी एक बोली यहि भांति ॥
तोहिं कृष्ण को दरशनभयो । तेरो क्षयी रोग सब गयो ॥
रेवतगिरि देखा तिहिकाला । याबिधि बोलिउठी यकबाला ॥
तू दिन रैन तपस्या करै । मन में ध्यान कृष्ण को धरै ॥
राजन ऐसीविधि सबबाला । कहैं मनोहर बचन रसाला ॥

दो० अष्ट नायका आदि दै सब नारिन के साथ ।
ऐसी बिधि क्रीड़ाकरैं माखनप्रभु यदुनाथ ॥

श्यामसुन्दरकी सन्तान इतनी बढ़ी थी कि तीनकरोड़ अड़तालीसहज़ार तीनसौ ब्राह्मण उनलड़कोंको विद्यापढ़ानेकेवास्ते रहतेथे इसलिये यदुबंशियों की गिन्ती नहीं होसक्ती देखो जो श्यामसुन्दर अपनेवंशकी रक्षावास्ते नित्य असंख्य द्रव्य व गौ ब्राह्मणों को दानदियाकरतेथे वही त्रिभुवनपति इतना प्रेमरखनेपरभी दुर्बासाऋषीश्वरके शापसे सबयदुबंशियोंका नाशकराके बैकुण्ठमें चलेगये श्रीकृष्णजी के बंशमें केवल बज्रनाभ अनिरुद्धकाबेटा जीताबचाथा सो मथुरा व इन्द्रप्रस्थका राजाहुआ उसकेकुलमें व्रतबाहु व सत्यसेनआदिक सबराजा बड़ेप्रतापी व हरिभक्त व धर्मात्माहुयेथे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जो मनुष्य दशमस्कन्धकी कथा सच्चेमन व प्रीतिसे कहता व सुनताहै उसको बड़ाभाग्यमान समझनाचाहिये वहमनुष्य संसारमें मनोकामना पाकर अन्तसमय मुक्तहोताहै ॥

ग्यारहवां स्कन्ध ॥

नारदमुनिका बसुदेवजीको ज्ञान समुझाना ॥

पहिला अध्याय ॥

दुर्बासाआदिक ऋषीश्वरोंका द्वारकामें आवना ॥

राजापरीक्षित ने दशमस्कन्धकी कथासुनकर शुकदेवजी से विनयकी हे मुनिनाथ यादवलोग धर्मात्मा व हरिभक्तथे उनको दुर्बासाऋषिश्वरने किसवास्ते शापदिया यह सुनकर शुकदेवजी बोले हे राजन् इसकाहाल इसतरहपरहै कि एकदिन श्यामसुन्दर ने मनमेंबिचारा कि हमने पृथ्वीकाभार उतारने व हरिभक्तों की रक्षाकरनेवास्ते अवतार लियाथा जिसमें संसारीजीव मेरीकथा व लीलाकह व सुनकर भवसागरपार उतरजावैं सो बड़ेबड़े दैत्य व कंस व जरासन्धआदिक अधर्मीराजाओं को मारा और कौरव व पाण्डवों से महाभारतकराके पृथ्वी का भारउतारा पर छप्पनकरोड़ यदुबंशी जो बड़े बलिष्ठ व धनपात्रहैं उनकाभार अभी बनाहै और सब मेरी सन्तान व भाईबन्धुहोकर मुझसे पालनहुयेहैं इसवास्ते इनको अपनेहाथसे मारनेमें पापहोगा किसीब्राह्मणसे शाप दिलवाकर मरवाडालना चाहिये ऐसाबिचारतेही उनकी इच्छानुसार दुर्बासा ब बशिष्ठ आदिक बहुतसेऋषीश्वर तीर्थयात्राकरतेहुये द्वारकापुरी में आये तब जगत्पतिने उनका पूजन व आदरभावकरके हाथजोड़कर विनयकी जिसतरह आपलोगों ने दयालुहोकर अपनादर्शनदिया उसीतरह थोड़ेदिन यहां रहकर हमारी इच्छा पूर्णकीजिये यहबचन सुनकर ऋषीश्वरों ने कहा महाराज यहां बिधिपूर्बक हमारातप व जप नहीं बनपड़ता केशवमूर्त्तिबोले तुमलोग पिण्डारकक्षेत्रमें जो यहांसे निकटहै रहकर स्मरण व ध्यानकरो यहबातमानकर सबऋषीश्वर पिण्डारकक्षेत्र में चलेगये व वहां परमेश्वरका तप बिधि पूर्वक करनेलगे सो एकदिन श्यामसुन्दरकी मायासे प्रद्युम्न व साम्बआदिक उसीओर अहेरखेलनेवास्ते गये तब उन्होंने ऋषीश्वरोंको तपवस्मरणकरतेहुये देखकर आपस में कहा ये सबब्राह्मण संसारीलोगों को ठगनेवास्ते झूठी समाधिलगाये बैठे हैं येलोग सच्चे महापुरुषहोंगे तो इनको भूत व भविष्य व बर्त्तमान तीनोंकालकीबात मालूमहोगी यह बचनसुनकर साम्बने प्रद्युम्नआदिक अपनेसाथियों से कहा तुमलोग मुझे जो मूछ व दाढ़ी नहींरखता स्त्रियोंका बस्त्रपहिनाकर कुछबस्तुमेरेपेटमें बांधदेव व मुझे इनऋषीश्वरों के पास लेजाकरपूछो इसगर्भवती स्त्री के पुत्रहोगा या कन्या देखो वेलोग क्याकहते हैं जब होनहारकी बश्य होकर प्रद्युम्नआदिकने उसीतरह ऋषीश्वरों से पूछा तब उन्हों

ने कहा तुमलोगों को श्यामसुन्दरके पुत्र व पोताहोकर ब्राह्मणों से ठट्ठा करना उचित नहीं है जब उन लड़कों ने ऋषीश्वरों के बर्जनेपरभी उस बातका उत्तर देने वास्ते बहुत हठकिया तब दुर्वासा ऋषीश्वरने हरिइच्छासे क्रोधित होकर ऐसा शापदिया कि इसके पेटसे एक मूसल उत्पन्न होकर सिवाय श्याम व बलराम तुम्हारे सब कुलका नाश करेगा यह बचन सुनतेही प्रद्युम्नआदिक उदास होकर आपसमें कहने लगे देखो हमलोगों ने बहुतबुरा कामकिया जो ब्राह्मणों को दुःख देकर उनका शाप अपने ऊपरलिया जब यह बात कहकर प्रद्युम्नने साम्बके पेटमें कपड़ा जो बांधाथा खोला तो उस कपड़े के भीतरसे एक मूसल लोहेका छोटासा निकला यह अचम्भा देखतेही वे सब घबड़ाकर चलेआये व राजाउग्रसेनकी सभामें जहां श्याम व बलराम यदुबं-शियोंसमेत बैठे थे चलेगये व वह मूसल दिखलाकर शाप होनेका समाचार कहदिया यह बात सुनतेही राजाउग्रसेन व यदुबंशियों ने शोचित होकर आपसमें सम्मतकिया कि मूसलको लुहारों से सोहनकराके इसका चूर समुद्रमें डालदेना चाहिये जिसमें इसशापकी जड़ न रहे यह बात ठहराकर राजाउग्रसेनने श्यामसुन्दरसे पूछा इसमें तुम क्या कहतेहौ जगतपति आगमजानी ने शापका हाल सुनतेही मनमें प्रसन्नहोकर कहा बहुतअच्छा जैसा यदुबंशीलोग कहते हैं वैसाकरो इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित बैकुण्ठनाथको वह शाप छुड़ादेना कुछ कठिन नहीं था पर उनकी इच्छासे यह बात हुईथी इसलिये उन्हों ने कुछ उपाय उसका नहीं किया व यदुबंशियों ने उस मूसलको समुद्रकिनारे लेजाकर सोहनकराके उसका चूर समुद्रमें डाल दिया व एक टुकड़ा छोटासा सोहन करतीसमय जो बचगयाथा उसको समुद्रमें फेंककर अपने घर चलेआये व श्यामसुन्दरकी इच्छासे वह टुकड़ा एक मछली निगलगई व उस मछलीको एक केवटने जालमें फँसाकर जब उसका पेट चीरते समय वह टुकड़ा पाया तब उसे तीरकी गांसी बनाकर अपने पास रक्खा व जिसजगह लुहारों ने उस मूसलका सोहन कियाथा वहांपर समुद्र किनारे एक घास सरपत जिसकी चटाई बनाते हैं उत्पन्न हुई ॥

दूसरा अध्याय ॥

बसुदेवजीको नारदमुनिका ज्ञान सिखलाना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब दुर्वासा ऋषीश्वरके शाप देने से द्वारकापुरी में अनेक अशकुन होनेलगे तब श्रीकृष्णजी ने बिचारा कि ये सब यादव दुर्वासा ऋषीश्वरके शापसे थोड़े दिनों में मारेजावैंगे इसलिये चाहिये कि बसुदेव व देवकी अपने माता व पिताको ज्ञान समझाकर मुक्तकरूं पर वे लोग मुझे अपना बेटा जान कर मेरे कहने से बिश्वास नहीं करैंगे नारदजी आनकर उपदेश करते तो उनकेवास्ते

उत्तम होता जब ऐसा विचारकर त्रिभुवनपति नारदमुनिको याद किया और वह उसीसमय उनके पास आये तब द्वारकानाथने दण्डवत् करके कहा हे मुनिनाथ तुम थोड़ेदिन यहां रहते तो बहुत अच्छाथा नारदमुनि ने बिनयकी हे दीनानाथ आपको मालूम है कि दक्षप्रजापति के शाप देने से मैं सिवाय दोघड़ी के अधिक एकजगह ठहर नहीं सक्ता श्रीकृष्णजी ने कहा तुम द्वारका में निस्सन्देह रहो यहां शाप नहीं ब्यापैगा यह बरदान पाकर नारदजी बड़ी प्रसन्नता से वहां रहे जब एकदिन नारद मुनि बीन बजाते व हरिगुणगाते हुये बसुदेवको देखने वास्ते गये तब बसुदेवजी ने आदरपूर्वक उन्हें बैठाया व वेदानुसार पूजनकरके हाथ जोड़कर बिनयकी हे मुनिनाथ मेरा बड़ाभाग्यहै जो आपके चरण यहां आये व हमलोग संसारी मनुष्य मायारूपी अँधियारे कुयें स्त्री लड़कों में पड़े रहते हैं सिवाय मिलने ज्ञानरूपी रस्सी के उस कुयें से बाहर निकलना कठिनहै कदाचित् आप ऐसा कहैं कि तुम बड़े भाग्यवान्हो जो परब्रह्म परमेश्वरने तुम्हारे घर अवतार लिया सो हे नारदमुनि मुझसे बड़ी भूलहुई जो पूर्बजन्म मैंने तप करतीसमय परमेश्वरका दर्शन पाकर उनसे यह बरदान मांगा कि तुम मेरेपुत्रहो मुझे अपनी मुक्ति मांगना उचित था इसलिये अब चाहताहूं कि तुम्हारे मुखारबिन्दसे भागवतधर्म सुनकर भवसागरपार उतरजाऊं यह सुनकर नारद मुनि ने कहा हे बसुदेवजी भागवतधर्म्म नवो योगीश्वरों ने राजाजनकको सुनायाथा वही पुरानाइतिहास कहते हैं सुनो ऋषभदेवजी के सौ पुत्र जयन्तीनाम स्त्री से उत्पन्न होकर उनमें नवबालक नवखण्डके राजाहुये व इक्यासी बेटों ने वेद व शास्त्रपढ़ा व भरतनाम बड़ापुत्र उनका अपने बापकी जगह सिंहासन पर बैठा व नवो बेटे उनके जो नवयोगीश्वर कहलाते हैं परमज्ञानी व बालयती व महात्माहोकर जहांमन उनका चाहताथा वहां फिराकरते थे व हरिभजनके प्रतापसे उनको ऐसी सामर्थ्य थी जहां चाहैं वहां क्षणभरमें चलेजावैं सो एकदिन ये नवो योगीश्वर घूमतेहुये राजाजनककी सभामें जहांपर बहुतसे पण्डित व ज्ञानीलोग बैठे थे चलेगये उनके मुखारबिन्द का प्रकाश जो सूर्य से अधिक चमकताथा देखतेही राजाजनकने सभावालों समेत उठकर एकसाथ नवो योगीश्वरोंको दण्डवत्की व परिक्रमा लेकर हाथ जोड़कर बोले आप लोग बैकुण्ठसे आते हैं इसलिये मैं तुमको बिष्णुभगवान्का पार्षद समझताहूं मेरे पूर्व जन्मके पुण्य सहायहुये जो तुम्हारा दर्शन पाया व संसारी मनुष्यकी मृत्युका ठिकाना नहीं रहता यही समझकर मैंने आपको एकसाथ दण्डवत्की जिसतरह आपने दयालु होकर अपने चरणों से मेराघर पवित्र किया उसीतरह जो बात मैं पूछूं उसका सन्देह छुड़ा दीजिये यह सुनकर वे योगीश्वर बोले हे राजन् जो कुछ तुम्हें इच्छाहो सो पूछो राजाजनक ने कहा महाराज संसारमें कौन ऐसी बस्तुहै जो सदा स्थिर रहकर उसका बियोग नहीं होता कदाचित् यह कहाजावे कि जो कोई अपने घरमें बहुत

धन व स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी रखता है उसे कुछ शोच नहीं होता सो मेरे जान में उसे सदासुख नहीं रहता किसवास्ते कि जब उसघरमें कुछ हानि होकर स्त्री व लड़के मरजाते हैं तब वह बहुत शोच करताहै सुख उसे कहना चाहिये जो सदा स्थिररहे व प्रतिदिन अधिक होकर उसमें कभी न घटे सो आपलोग बतलाइये कि वह कौन बस्तुहै जिसका नाश नहीं होता यहसुनकर योगीश्वरोंमें से कश्यपनाम बड़ेभाई ने कहा हे राजन् सुख उन्हींको प्राप्तहै जो आठोंपहर मन अपना बीचस्मरण व ध्यान आदिपुरुष भगवान्के लगाये रहते हैं व धन व स्त्री व पुत्रादिक नाशहोनेवाली बस्तु से कुछ प्रीति नहींरखते पर संसारी जीवोंकी यहप्रकृति है कि धन मिलने व स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी होनेसे समझते हैं कि हमारेबराबर दूसरा कोई सुखी न होगा जब उन का धन कुछहानि होकर कोई मनुष्य घरवाला मरजाता है तब उसके शोचमें ऐसे व्याकुल होजाते हैं कि उनकाचित्त ठिकाने नहीं रहता इसलिये संसारी मनुष्यसे जो कोई पूछै तुम्हें धीर्य है व नहीं तो उन दोनोंको मूर्ख समझना चाहिये किसवास्ते कि जो सुख सदा स्थिरनहीं रहता उसका होना व न होना दोनों बराबर हैं हे राजन् तुम इस बात का बिश्वास मानो कि जो मनुष्य परमेश्वर से बिमुखरहकर अपने परलोक का शोच नहींकरता उसे कभीसुख नहीं मिलता व धर्म वही समझना चाहिये जो श्री-कृष्णजीने अपने मुखारबिन्द से गीतामें अर्जुनसे कहाथा सारांश उस ज्ञानका यह है कि मनुष्य आठोंपहर अपना मन बीच याद व स्मरण नारायणजीके लगाये रखकर किसी कामको ऐसा न समझै कि यह मैंने किया व दिनरात यह जानतारहै कि सब काम परमेश्वर की इच्छासे होते हैं व नारायणजी तप व स्मरण व ध्यान व भजन किये बिना जिसको भक्त कहतेहैं मिलने नहींसक्ते इसलिये उनका प्रेम उत्पन्न होने वास्ते पहिलीराह जो सहजहै बतलाते हैं सुनो जिसमें संसारीजीव वह रास्ताचलकर अपने सुख स्थानपर पहुँचजावें जिसतरह परब्रह्म परमेश्वरने कृष्णावतार लेकर गो-वर्द्धन पहाड़ अपनी अंगुलीपर उठालिया व कंस व जरासन्ध आदिक अधर्मी राजाओं को मारकर गोपियोंके साथ रासमण्डल किया व रामचन्द्र व बामन आदिक अनेक अवतार धरकर जो लीला संसारमें की हैं वहकथा सच्चे मनसे कह व सुनकर इसबात का अभिमान न रक्खे कि एकबेर यह कथा सुनचुके हैं फिर सुनकरके क्याकरेंगे व वह मनुष्य हरिचरित्र कहने व सुननेके प्रतापसे बिरक्तहोकर अन्तसमय परमेश्वर के चरणोंमें पहुँचताहै व ज्ञानीको चाहिये कि सब स्थानपर नारायणजी को एकसा देख कर यह समझतारहै कि आदिपुरुष भगवान् केवल इसीवास्ते सगुण अवतार धारण करते हैं जिससे संसारी मनुष्य उनकी लीला व कथा सुनकर भवसागर पार उतर जावैं इसलिये मनुष्य तनुपाकर उनके ध्यान व स्मरण से क्षणभर भी बिमुख रहना न चाहिये कदाचित् मनचंचल मनुष्यका एकबेर परमेश्वरके चरणोंमें न लगे तो

थोड़ा २ प्रेम उनसे नित्य बढ़ावे जिसतरह संसारी मनुष्य इच्छाजाने किसी नगर व देशकी रखकर नित्य एक २ पग भी उस राहपर चले तो कुछदिनों में उस स्थान पर पहुँचसक्ता है उसीतरह सूर्यरूपी हरिचरणों का ध्यान व प्रेमधीरे २ बढ़ानेसे उस के हृदयमें ज्ञानका दीपक प्रज्वलितहोकर अज्ञान का अँधियारा छूटजाता है व जो कोई अपने घरसे नहीं चलता उसको दूसरे स्थानपर पहुँचना बहुत कठिन है जिस तरह तीनदिनके भूखे मनुष्यको भोजन देखने से धैर्य्यहोकर ज्यों ज्यों वह ग्रासउठा कर खाताहै त्यों त्यों उसे सामर्थ्य होतीजाती है उसीतरह परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करते २ मनुष्यके मनसे प्रतिदिन संसारीमाया छूटकर हरिचरणोंमें अधिक प्रेम बढ़ता जाताहै जब वे योगीश्वर यहसब ज्ञान कहचुके तब राजा जनक उठ खड़ेहुये व फिर दण्डवत् करके उनसे पूंछा महाराज जो मनुष्य भागवतधर्म से रहकर उसीतरह सबकाम करते हैं उनकारूप किसतरह का होताहै व कौन लक्षणसे उनको पहिंचानना चाहिये यहसुनकर हरिनाम दूसरेभाई ने कहा हे राजन् परमधर्म रखनेवाले मनुष्य कभी हँसते कभी रोदेते हैं उनके हँसनेका यहकारण है कि किसीसमय प्रसन्नहोकर कहते हैं हे परमेश्वर तुम्हारा निराकाररूप किसीको दिखलाई नहींदेता इसलिये आप हरिभक्तोंपर दयालु होकर सगुणअवतार धारण करते हैं जिसमें संसारीजीव तुम्हारा स्मरण व ध्यानकरके मुक्त पदवीपावैं और यहबात समझकर वे लोग रोदेते हैं कि इतनी अवस्था हमारी बिनायाद व चर्चा परमेश्वरके बृथा व्यतीतहुई व भक्तनारायणजी के तीनतरहपर उत्तम मध्यम निकृष्टहोकर उत्तम भक्तके ये लक्षण हैं कि वे सबजीव जड़ व चैतन्यमें परमेश्वरकी शक्ति बराबर समझकर किसीसे मित्रता व शत्रुता नहीं रखते व आठोंपहर हरिचरणों के ध्यान व स्मरणमें लीन व मग्नरहते हैं व जिसतरह मदपिये हुये मनुष्य अचेतहोकर अपने तनु व बस्त्रकी सुधिनहीं रखते उसीतरह उत्तम भक्त अपने शरीरकी सुधि न रखकर ईश्वरके ध्यानमें मग्नरहते हैं व परमेश्वरके बिराट्रूप में सब संसारीजीवोंको एकसा देखकर हरिभक्त व महात्मा लोगोंसे प्रीति रखते हैं व अपने व दूसरेमें कुछभेद न जानकर स्त्री व पुत्र व धन आदिक संसारी सुख से कुछ प्रीति नहींरखते व तीनोंलोक का राज्य सत्संग व भक्तिके समान नहीं समझते व लक्षण मध्यम भक्तके ये हैं कि वे लोग साधु व महात्माओंसे प्रीतिरखकर कुसङ्गति में नहीं बैठते न किसीका बुरा न चाहकर संसारीजीवों पर दयारखते हैं पर ज्ञानी होने से परमेश्वर की शक्ति सबजीवों में बराबर नहीं समझते व लक्षण निकृष्टभक्तके सुनो कि वे लोग संसारी मायामोह में फँसेरहकर किसी समय पूजा व स्मरण परमेश्वर का भी करलेते हैं जबतक मनुष्य तृष्णा नहीं छोड़ता तबतक मन उसका संसारी मायासे बिरक्त नहीं होता ॥

तीसरा अध्याय ॥

तीन योगीश्वरोंका राजाजनकको ज्ञान उपदेशकरना ॥

शुकदेवजी बोले हे परीक्षित राजाजनक ने तीनोंतरहके भक्तोंका हालसुनकर उन योगीश्वरों से पूछा महाराज माया परमेश्वरसे अलगहै या नारायणजी में मिली है सो वर्णन कीजिये यहसुनकर अन्तरिक्षनाम तीसरे भाईने कहा हे राजन् उत्पन्न होना व मरना सबजीवों का परमेश्वरकी मायासे होताहै व उस मायाको हरिइच्छा समझनी चाहिये व मायाके तीनगुण सात्त्विक व राजस व तामस से उत्पत्ति व पालन व नाश संसारीजीवों का होकर अपने कर्मानुसार सबजीव फलपाते हैं व संसारी मनुष्य मायावशहोकर सदा काम क्रोध लोभ मोह में फँसारहताहै व परमेश्वरका स्मरण व ध्यान नहींकरता जिसमें आवागमन से छूटकर भवसागर पार उतरजावे बिनादया व कृपा नारायणजीकी कोईमनुष्य मायारूपी जालसे छूटनहींसक्ता जब आदिपुरुष भगवान्को महाप्रलयहोने उपरान्त फिर संसाररचनेकी इच्छाहोती है तब वे मायाकी ओर आंख उठाकर देखतेहैं उसीसमय मायासे महत्तत्त्व प्रकटहोकर वही सबजगत्को उत्पन्नकरता है व जब त्रिभुवनपति संसारका नाशकरनाचाहतेहैं तब उनकीइच्छानुसार उसीमाया से महाप्रलयहोकर ऐसा मूसलधार पानीबर्षता है कि सिवायजलके पृथ्वीपर कुछनहीं रहता इसलिये ज्ञानीमनुष्यको उत्पन्न व नाशहोना जगत्का मायारूपी खिलौनासमझ कर आठोंपहर अपने भवसागरपार उतरने का उपाय करनाचाहिये यहसुनकर राजा जनकनेपूछा जब आपलोग मायाको परमेश्वरकी इच्छा बतलाते हैं तब संसारी मनुष्य उस मायाजालसे किसतरह छूटनेसक्ताहै कोईउपाय इसकाबतलाइये यहबचन सुनकर प्रबुद्धनाम चौथे योगीश्वर ने कहा हे राजन् जब इसबातका बिश्वासहुआ कि माया नारायणजीकी इच्छाहै व बिनाआज्ञा परमेश्वरकी कोईकाम पूरानहींहोता तब मनुष्यको उचितहै कि सबकाममें त्रिभुवनपतिको कर्त्ता व धर्त्ता जानकर अपनेको उसमायाका खिलौना समझे व जो कर्म आरम्भकरै उसे ऊपर इच्छा परमेश्वरके छोड़कर मन में यह बिश्वासरक्खै कि बैकुण्ठनाथ चाहैंगे तो यहकाम पूराहोगा अपने को वह कामकरने वाला न जानै व किसीके गालीदेनेसे खेद न मानकर बिनाप्रयोजन अधिक न बोले व सबजीव जड़ व चैतन्यमें परमेश्वरका चमत्कार बराबरसमझकर उनपर दयारक्खै व किसीजीवको दुःख न देवे व दूसरेकीस्त्री मातासमान जानकर थोड़ा या बहुत जो कुछ अपने भाग्यसे मिलै उसपर सन्तोषरखकर अधिक मिलनेकी चाहना न करै व अकेलेमें बैठकर हरिचरणोंका स्मरण व ध्यान करतारहै व जब दूसरोंकेपास बैठे तब सिवायचर्चा व कथापरमेश्वरकी वृथाबात न करै इसतरह अभ्यासरखनेसे संसारीमाया छूटकर मनउसका हरिचरणों में लगजाता है कदाचित् कोई ऐसाकहै कि बहुतमनुष्य

उपाय व उद्यमकरनेवाले अपनीकामनाको पहुँचकर सदा प्रसन्नरहते हैं सो हे राजन् तुम इसबातका बिश्वासमानो कि बिनाइच्छा परमेश्वरकी किसीका मनोरथ नहींमिलता व सबतरहकी हानि व लाभ त्रिभुवनपति की इच्छानुसार होता है देखो जे संसार में उत्पन्नहुये हैं वे एकदिन अवश्यमरैंगे सो मरतीसमय कोई उनसे यहबात नहीं कहैगा कि तुम स्त्री व पुत्र व हाथी व घोड़ाआदिकका नामलेव सब इष्ट व मित्र यही कहैंगे कि इससमय परमेश्वरका नामलेकर उन्हें यादकरो जिसमें तुम्हारापरलोक बनै फिर किसवास्ते पहिलेसे उसपरमेश्वरको यादनहींकरता कि अन्तसमय उसी के साथ काम रहताहै दूसराकोई सहायता करने नहींसक्ता कदाचित् तुम ऐसाकहो कि अब संसारी सुखउठाकर मरती समय परमेश्वरको यादकरलेवैंगे सो तुम बिश्वासकरके जानो कि जब मनतुम्हारा पहिलेसे बीच प्रेम स्त्री व पुत्र व द्रव्यादिकमें लगारहैगा तब मरती समय परमेश्वरमें मनलगना बहुतकठिनहै इसलियेमनुष्यका तनुपाकर पहिलेसे उनके स्मरण व ध्यानमें चित्तलगानाचाहिये जो अन्तसमय कामआवै जिसतरह द्रव्य गाड़ कर रखने से आठोंपहर उसजगहका ध्यान मनमें बनारहताहै व चोरआदिकके डरसे कभी २ जाकर उसस्थानको देखआताहै व किसी दूसरे से द्रव्यगाड़ने का हाल नहीं कहता उसीतरह उसे दिनरात बैकुण्ठनाथको यादरखकर प्रेमरखने का हाल किसी से कहना न चाहिये यहज्ञान सुनकर राजाजनकने बिनयकी आपने कहा कि परमेश्वर की लीला व कथासुनने व ध्यानकरनेसे संसारीमाया छूटजाती है इसलिये थोड़ीस्तुति नारायणजी की सुनाचाहता हूं सो दयालुहोकर कहिये यहसुनकर पिप्पलायन पांचवें भाईने कहा हे राजन् उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाले तीनोंलोक के वही बैकुण्ठ-नाथहैं उन्हींकाप्रकाश चौरासीलाखयोनि में रहताहै पर किसीजीव के मरने से उनका नाशनहींहोता व किसीजीव के उत्पन्नहोनेसे वे जन्मभी नहीं लेते वे अबिनाशी पुरुष अपनेतेजसे प्रकाशितरहकर सदा एकतरहपर सबवस्तुमें मिले व सबसेबिलग रहते हैं व सबजीवों में चलने व फिरने की सामर्थ्य व मनुष्यको भली व बुरी बातका ज्ञान उन्हींकीशक्तिसे होताहै और उनकाप्रकाश किसीको दिखलाई नहींदेता व हाथसे पक-ड़ाई न देकर इसतरह बीच हृदयके छिपेरहते हैं जिसतरह पत्थर व लकड़ी में अग्नि दिखलाई नहीं देती जैसे उपायकरके पत्थर व लकड़ी में से अग्नि निकलती है वैसे ज्ञानकीराह उनकीशक्तिकोभी शरीर में देखनाचाहिये जिसतरह गूलरकेवृक्ष में हजारों फललगेहोकर उनकेभीतर मच्छड़ भरेरहतेहैं उसीतरह करोड़ोंब्रह्माण्ड परमेश्वरके रोम २ में बँधेरहकर सबजीवों को वे पालनकरते हैं ऐसे त्रिभुवनपति का पहिंचानना बहुत कठिनहै व उनकी भक्ति व प्रीति सच्चेमनसे करै तब उनकी महिमा जानसक्ता है व मनुष्यकीदशा चारतरहपर जाग्रत् व स्वप्न व सुषुप्ति व तुरीय होती हैं जाग्रत् जागने व स्वप्ननींदको कहते हैं सुषुप्ति उसे समझनाचाहिये जिसतरह किसीसमय मनुष्य नींदसे

उठकर कहताहै हम ऐसासोये कि न जागतेथे न नींदमें अचेतहोकर सोयेरहे व तुरीय उसको कहतेहैं जैसे कोई परमेश्वरके ध्यानमें लीनहोकर बैठारहै व अपने तनु व वस्त्र की कुछसुधि न रक्खै व चारोंअवस्थामें परमेश्वरका प्रकाश बीचशरीर के रहता है व उन्हींकीशक्तिसे मनुष्य सबकर्म शुभ व अशुभ करतेहैं और यहबात इसतरह समझना चाहिये कि जब परमेश्वर अपनाचमत्कार अंगमेंसे खींचलेतेहैं तब वह मरजाताहै व उससे कोईकाम नहींहोसक्ता कदाचित् कोई ऐसाकहै कि परमेश्वर सबजगह वर्त्तमान हैं तो दिखलाई क्यों नहींदेते उसे यह उत्तरदेनाचाहिये कि मूर्खको दिखलाई नहीं देते व ज्ञानी से वे छिपे नहीं रहते ॥

चौथा अध्याय ॥

अवतारों की कथा ॥

नारदमुनि ने कहा हे बसुदेव इतनी कथा सुनकर राजा जनकजी बोले हे ऋषि राज जिनदिनों मैं बालकथा उन दिनों एकबेर सनकादिक मेरे पिताके पास आयेथे जब मैंने हाथजोड़कर उनसे पूछा महाराज परमेश्वरकी भक्ति व तपस्या किसतरह करनीचाहिये तब उन्होंने कुछ उत्तर न देकर हँसदिया और मुझे वह ज्ञान सुननेयोग्य नहींसमझा यहवचन राजा जनकका सुनकर उपबिरहोत्र नाम छठयें योगीश्वरने कहा हे राजन् तुम ज्ञान सुननेयोग्यहो पर उन दिनों अज्ञान बालकथे इसलिये सनत्कुमार आदिक ने तुमसे कुछ ज्ञान नहीं बतलाया अब हम कहते हैं सुनो कर्म तीनतरह पर कर्म विकर्म अकर्म होताहै व कर्म उसे कहना चाहिये कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य व शूद्र चारोंबर्ण अपने २ धर्मपर जैसा उनके वास्ते वेद व शास्त्रमें लिखाहै स्थिररहैं व विकर्म वह है कि एकवर्ण का धर्म दूसरा बर्णकरै व अकर्म उसे समझना चाहिये कि जानबूझकर चोरी व कुकर्म आदिक करके संसारी जीवोंको दुःख देवै इसलिये मनुष्य को उचित है कि नित्यपूजा व ध्यान रामचन्द्र व श्रीकृष्ण व नृसिंहजी आ-दिक किसी अवतारका अपने गुरूकी आज्ञानुसार कियाकरै व स्मरण व ध्यान करना परमेश्वर का केवल एक अवतार पर होकर चौबीसों अवतारों में जिसपर मन उसका चाहै उसीतरह स्वरूपकी पूजा व भक्तिसाधन करे यहसुनकर राजा जनक बोले महा-राज जिसतरह आपने पूजाकरने वास्ते कहा उसीतरह दयालु होकर अवतारों की कथा बर्णन कीजिये दुर्मिलनाम सातवें योगीश्वरने कहा हे राजन् कोई ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो परमेश्वरके सब अवतार बर्णन करसकै जो ऐसा बिचारकरै उसेमूर्ख समझनाचाहिये कदाचित् कोई चाहै तो आकाशकेतारे व बालूकीरेणुका व बर्षते पानी की बूंदें गिनलेवे पर बैकुण्ठनाथके अवतार नहीं गिनसक्ता पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व दशोंदिशा व चौदहोंभुवन व चौरासीलाखयोनि आदिक बीच बिराट्रूप

परमेश्वर के होकर सब संसारी बस्तुके मालिक व उत्पन्न करनेवाले वही हैं जब बि-राट्रूप की नाभिसे कमलका फूल निकलता है तब उसफूलसे ब्रह्मा उत्पन्न होकर तीनों लोककी रचना करते हैं व नरनारायण का अवतार लेकर बदरीकेदारमें बैठेहुये केवल इसवास्ते तपस्याकरते हैं जिसमें संसारीलोग उनको तपकरते देखकर परमेश्वर का स्मरण व ध्यान करके भवसागर पार उतरजावैं जब इन्द्रको त्रिभुवनपति की महिमा न जाननेसे यह भय हुआ कि मेरा इन्द्रासन लेनेवास्ते ये तपस्या करतेहैं तब उसने उनका तप भंग करने की इच्छा से कामदेव व बसन्तऋतु व दश अप्सरा व मन्द सुगन्ध शीतल हवाको वहां भेजा जैसे वे सब बीच स्थान तपस्या करने नर नारायणके पहुँचे वैसे बसन्तऋतु ने एक बगीचा उत्तम उत्तम फूल व फल लगाहुआ सब सामग्री व भोग व बिलास समेत वहां प्रकटकरदिया व मन्द सुगन्ध शीतल हवा चलकर उस बागमें अप्सरा नाचने लगीं व कामदेव कोकिलारूप से वृक्षपर बैठकर जब काम बढ़ानेवाली बोली बोलने लगा तब नरनारायणने जिनका मुखारबिन्द सूर्य से अधिक चमकता था जैसे आंख उठाकर उन लोगोंकी तरफदेखा वैसे कामदेव आदिक मारेडरके सूखगये व मनमेंकहनेलगे ऐसा न हो जो ये महापुरुष शापदेकर हमैं भस्म करदेवें यहदशा उनकी देखतेही त्रिभुवनपति अन्तर्यामी ने हँसकर कामदेवादि से कहा तुमलोग मतडरो इसमें तुम्हारा कुछ अपराध न होकर इन्द्रने तुमको अपना राज्य छूटनेके डरसे यहां भेजाहै सो मैं इन्द्रलोक की कुछ चाहना नहीं रखता यह बचन सुनतेही कामदेव व बसन्तऋतु आदिक ने नरनारायणके सामने हाथ जोड़कर बिनयकी हे बैकुण्ठनाथ संसारीजीव कोई ऐसा नहीं है जो हमारेफन्दे में न आवै पर हमलोग आपको जो आदिपुरुष का अवतार हैं कुछ धोखा नहीं देसके जब तुम्हारा भजन व स्मरण करनेवाले अपने बलसे हमारे शिरपर लात धरकर सीधे बैकुण्ठको चले जाते हैं तब आपपर किसका बश चल सक्ताहै संसारमें बहुत मनुष्य भूख व प्यास व कामदेवको अपने बश रखकर संसारी सुखकी चाहना नहीं करते पर क्रोध ऐसा बलवान्है कि उसके अधीन होकर वेलोग भी अपने शुभकर्म व तपस्या का फल क्षण भर में खोदेते हैं सो आपमें क्रोधका प्रवेश न होकर तुम्हारी भक्ति व प्रीतिकरनेवाले भी काम व क्रोधके बश नहीं होते इसलिये हजारों दण्डवत् हमारी आपको पहुंचें यह बचन सुनतेही नरनारायणने उसीसमय अपनी मायासे हज़ार सुन्दरी जिनके सामने रम्भा आदि अप्सरा कुछ बस्तु नहीं हैं व कोशोंतक उनके अंगकी सुगन्ध उड़ती थी वहां प्रकट करदिया और वे सब लक्ष्मीपति की सेवाकरने वास्ते हाथजोड़कर चारोंतरफ खड़ीहोगई उनका रूप देखतेही कामदेवादिक लज्जित होकर अपना २ अभिमान भूलगये उन स्त्रियों पर मोहित होकर आपसमें कहनेलगे हमलोगों ने ऐसी रूपवती स्त्रियां कभी इन्द्रलोक में भी नहीं देखीथीं यह सुनकर त्रिभुवनपति ने

कामदेवादिक से कहा तुमलोग इनसब स्त्रियोंको इन्द्रपुरी में लेजावो कामदेवने बिनय की महाराज इनको इसीजगह रहनेदीजिये नहींतो वहां लेजाने में सब देवता आपस में लड़कर मरजावैंगे यहबात सुनकर नरनारायणने कहा इनसबमें तुम्हारे निकट जो कुरूपहो उसे लेजाव जब कामदेवादिक उर्व्वशी नाम को नरनारायण की आज्ञानुसार अपने साथ लेकर वहांसे बिदाहुये व उन्होंने इन्द्रलोक में पहुंचकर सब महिमा नरनारायणकी कही तब इन्द्र उन्हें पूर्णब्रह्म जानकर उनकी स्तुतिकरनेलगे व उर्वशी का रंग व रूप देखतेही अतिप्रसन्न होकर उसे सब अप्सराओं का मालिक बनाया फिर हंसरूपी पक्षीका अवतार लेकर सनत्कुमार को उत्तर दिया व हयग्रीव अवतार धरकर मधुकैटभ दैत्यका बध किया व पातालसे बेदलाकर ब्रह्माको दिया व मत्स्य अवतार लेकर राजा सत्यव्रतको ज्ञान सिखलाया व कच्छप अवतार धरकर मन्दराचल पहाड़ अपनी पीठपर उठाया व मोहनी अवतार लेकर देवताओंको अमृतपिलाया व बाराह अवतार धरकर पृथ्वीको पातालसे निकाललाये व बामन अवतारहोकर राजा बलिसे पृथ्वी दानली व कपिलदेव अवतार धरकर देवहूती अपनी माता को सांख्ययोग ज्ञान उपदेश किया व परशुराम अवतार होकर सहस्रबाहु आदिक अनेक क्षत्रियों का बधकिया व रामचन्द्र अवतार धरकर लङ्कापति रावणको मारा व नृसिंह अवतार होकर प्रह्लादभक्तकी रक्षाकी व श्रीकृष्ण अवतार धरकर कंसादिक राजा व अनेक दैत्योंको मारडाला व कौरवों व पांडवों से महाभारत कराके पृथ्वी का भार उतारा व बौद्ध अवतार धरकर दैत्यों को यज्ञकरनेसे बरजा व जब कलियुगके अन्तमें कुछधर्म नहीं रहेगा तब कल्की अवतार लेकर सत्ययुग का धर्म व कर्म चलावेंगे इन अवतारोंमें जिसपर मनचाहे उसी स्वरूपका पूजन व ध्यान करनेसे मनोकामना मिलकर अन्तसमय मुक्ति होती है ॥

पांचवां अध्याय ॥

आठवें व नवें योगीश्वरोंका ज्ञान कहना ॥

राजाजनकने इतनी कथा सुनकर पूछा महाराज जो लोग परमेश्वरके स्मरण व ध्यानसे बिमुख रहते हैं उनकी मरनेउपरान्त क्या दशा होती है च्यमसनाम आठवें योगीश्वरने कहा हे राजन् चौरासीलाख जीव जड़ व चैतन्य नारायणजी की इच्छासे उत्पन्नहोकर मरने उपरान्त जीवात्मा सब किसीका फिर परमेश्वरके रूपमें मिलजाता है व सब जीवोंका पालन करने व सुखदेनेवाले वही आदिपुरुष भगवान् हैं जो कोई उनको उत्पन्न व पालन व नाश करनेवाला तीनोंलोकका जानकर दिनरात उनके स्मरण व ध्यान में लीन रहकर कहता है हे बैकुण्ठनाथ महादेव व ब्रह्मादिक देवता तुम्हारे भजन व स्मरणके प्रतापसे जो कुछ आशीर्वाद व शाप किसी को देते हैं वह

बात सचहोकर हरिभक्तोंका सब दुःख आपकी दयासे छूटजाताहै इसलिये संसाररूपी समुद्रपार उतरने वास्ते तुम्हारे चरणोंका ध्यान जहाजके समान समझना चाहिये हे राजन् इसतरह का ज्ञान व ध्यान रखनेवाले मनुष्य मुक्तिपदवी पर पहुँचते हैं व जो लोग मनुष्य तनुपाकर चारोंवर्ण व चारों आश्रममें परमेश्वर का भजन व स्मरण नहीं करते व हरिकथा सुनने में प्रीति न रखकर संसारीमाया में फँसेरहते हैं व अधर्म की कमाई से अपनाकुटुम्ब व शरीर पालनकरके परमेश्वर का चमत्कार सबजीवों में बराबर नहीं समझते व बिना प्रयोजन दूसरोंके साथ शत्रुता व परस्त्री व धनलेने वास्ते इच्छा रखकर जीवहिंसा करते हैं उनका कभी कल्याण नहीं होता वे मनुष्य बहुतदिन तक नरक भोगने उपरान्त चौरासीलाख योनिमें जन्मपाकर अनेक तरह का दुःख पातेहैं व जो मनुष्य अपने उत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाले को नहीं मानता उसे अधर्मी समझना चाहिये जिसतरह मल व मूत्र पेटसे बिलग होकर अशुद्ध होजाता है उसीतरह परमेश्वर से विमुख रहनेवाले मनुष्य स्थान भ्रष्टहोकर नरकमें जाते हैं व जो ब्राह्मण अपने लाभ वास्ते दूसरोंको बशीकरण व मारण व उच्चाटन बतलाकर मुक्त होनेकी राह नहीं सिखलाते उनको पाखण्डी व अधर्मी समझना उचित है व जो लोग सन्त व महात्मा व हरिभक्तों को तुच्छ जानकर सबजीवों में परमेश्वर का रूप बराबर नहीं देखते व वेदानुसार राह न चलकर केवल अपना स्वार्थ समझते हैं व धन पाकर धर्म नहीं करते उन्हें अभागी व पापी समझना चाहिये किसवास्ते धर्म्म करने से ज्ञान प्राप्तहोकर तृष्णा छूटजाती है व विरक्तहोने से मुक्तिपदवी पाते हैं देखो जब मरतीसमय अपना शरीर व स्त्री व पुत्र व सेवक आदिक कोई रक्षानहीं करसक्ते तब उनके प्रेममें फँसकर नष्टहोना वृथाहै जिसतरह मनुष्य अपना शरीर पुष्टकरने वास्ते पशु व पक्षी आदिक मारकर खाता है उसीतरह दूसरे जन्म में वह पशु व पक्षी उसे मारकर अपना बदला लेते हैं व मदिरा पीने व साधु व ब्राह्मण व परमेश्वरसे विमुख रहने वालों को यमदूत बर्जोरी नरकमें डालकर बड़ादुःख देते हैं इतनी कथा सुनकर राजा जनकने पूछा महाराज सबयुगोंमें अवतार आदिपुरुष भगवान् का किसतरह पर था करभाजन नाम नवेंयोगीश्वर ने कहा सतयुगमें अवतार परमेश्वर का चतुर्भुजी चन्द्रमाके समान श्वेत होकर सतयुगमें सब मनुष्य धर्म्मात्मा व सच्चे व हरिभक्त थे व धर्मके चारोंपैर बने रहकर अन्तसमय सबको बैकुण्ठधाम मिलताथा व त्रेतायुग में अवतार परमेश्वर का अग्निरूपी लालहोकर तौर अपना ब्रह्मचारी के समान रखतेथे व धर्मके तीनपावँ रहकर बासुदेव नाम का चर्चा रहताथा व द्वापरयुग में अवतार नारायणजी का श्यामरङ्ग नीलमणि के समान चमकता होकर धर्मके दोपावँथे व मुकुट जड़ाऊ शिरपर रखकर पूजा परमेश्वरकी होतीथी व कलियुगमें अवतार लक्ष्मीपतिका श्यामरङ्ग सूर्यके समान चमकता होकर धर्मका एकचरण रहजाताहै व कलियुग के

मनुष्य निर्द्धन रहते हैं व धनपात्र भी सूमहोकर जैसा चाहिये वैसा दान व धर्म नहीं करते इसवास्ते कलियुग बासी मनुष्य केवल परमेश्वर का नाम जपने व हरिचरणोंमें ध्यान लगाने व उनकी कथा व लीला सुननेसे भवसागर पार उतरजाते हैं परमेश्वर के शरण जानेवाले किसी देवताका डर न रखकर देवऋण पितृऋण ऋषिऋण से उऋण होजाते हैं व हरिभक्तों पर परमेश्वर की छाया रहनेमें कोई उनको कुछ दुःख दे नहीं सक्ता व नारायणजी अपने भक्तोंपर दयालु होकर उनको कुकर्म करने से बचाये रहते हैं व हे राजन् कलियुग में जो कोई नित्य यह श्लोक पढ़कर परमेश्वर की दण्डवत् करैगा उसे नारायणजी वांछितफल देकर अन्तसमय उसका उद्धार करैंगे व अर्थ उस श्लोकका यह है हे श्रीनारायणजी महाराज मैं तुम्हारे कमलरूपी चरणों का ध्यान जो फूलसे भी अधिक कोमल हैं हृदयमें रखताहूं तुम्हारे चरण छोड़कर दूसरा कोई ध्यान करने योग्य नहीं है जो कोई उन चरणों का स्मरण करता है वह भाग्यवान् होकर उसको किसी देवता व दैत्य व मनुष्य व पशु आदिक का कुछ भय नहीं रहता व तुम्हारे चरणोंके ध्यान करने के प्रतापसे मनमेरा काम क्रोध लोभ मोह में कि वह अधर्म की जड़ हैं नहींफँसता जिससमय तुम्हारे कमलरूपी चरणोंको याद व ध्यान करताहूं उससमय मेरा सबमनोरथ पूर्णहोकर कोई इच्छा नहीं रहती व गङ्गा व यमुना व नर्मदा व सरस्वती आदिक सबतीर्थ आपके चरणोंमें रहकर चरण तुम्हारे सबदुःख अपने भक्तोंका दूर करदेते हैं मैं आपको उत्पन्न व पालन व नाश करने वाला तीनोंलोक का जानकर दण्डवत् करताहूं यहसुनाकर नवें योगीश्वरने कहा हे राजन् सतयुगमें दशहज़ार बर्ष तप करनेसे परमेश्वर प्रसन्नहोते थे व बीच त्रेता के हजारबर्ष तप करने से मनुष्य फल पाताथा व द्वापरमें सौबर्ष पूजा व ध्यान करनेसे मनुष्य का मनोरथ पूर्ण होताथा व कलियुगमें एकदिन रात मनुष्य परमेश्वर को सच्चे मनसे एकचित्त होकर याद व ध्यानकरै तो नारायणजी प्रसन्नहोकर उसकी इच्छा पूर्ण करदेतेहैं इसलिये सबयोगी व मुनि तप व जप करनेवालों को यह इच्छारहती है कि एकबेर हमारा जन्म भी बीच कलियुगके भरतखण्ड में होता तो थोड़ा परिश्रम करने में परमेश्वर का दर्शन पाते सो हे राजन् हमको इसबात का बड़ा पछितावा है कि कलियुग बासी ऐसे सहजमें मिलनेवाले परमेश्वर को नहीं याद करते व बैकुण्ठ-नाथ ने गीतामें अपने मुखारबिन्द से कहाहै कि जो कोई अपने को मनसा बाचा कर्मणा से मुझे सौंपिदेवै उसको संसारमें किसीतरह का दुःख व भयनहीं होता इतनी कथा सुनाकर नारदमुनिने कहा हे बसुदेव जब योगीश्वरोंने यहसब ज्ञान राजाजनक से कहा तब राजाने विधिपूर्वक उन योगीश्वरोंकी पूजा व परिक्रमा करके बिदाकिया व अपने मनसे राज्य व परिवार व धनकी प्रीति छोड़कर उसीज्ञान के प्रतापसे सदेह बैकुण्ठमें गया सो तुम भी इसी ज्ञानपर विश्वास रखकर हरिचरणों का ध्यान करो

तुम्हारी मुक्ति होजावेगी हे बसुदेव जब बैकुण्ठनाथने तुम्हारे घर पुत्रहोकर अवतार लिया व तुम अपने प्राणसे अधिक उनको चाहतेहो तब तुम्हारे भवसागर पारउतरने में क्या सन्देहहै पर उनको अपना बेटा जानना छोड़कर आदिपुरुष भगवान् समझो उन्होंने केवल पृथ्वीका भार उतारने व हरिभक्तों को सुखदेने वास्ते संसारमें अवतार लियाहै व मैं उन्हींका दर्शन करनेवास्ते सदा यहां आताहूं जब यहज्ञान नारदमुनिसे सुनकर बसुदेव व देवकी को बिश्वास हुआ कि श्रीकृष्णजी परब्रह्म परमेश्वरका अवतार हैं तब दोनोंमनुष्य उनके चरणोंपर गिरपड़े व पुत्रभाव छोड़कर परमेश्वरसमान उनको समझनेलगे व नारदमुनि बैकुण्ठनाथसे बिदाहोकर ब्रह्मलोकको चलेगये शुकदेवजी बोले हे परीक्षित जो कोई इस अध्यायको बिधिपूर्बक कहै व सुनैगा वह सब पापोंसे छूटकर मुक्तिपदवी पर पहुंचैगा ॥

छठवां अध्याय ॥

ब्रह्मादिक देवताओंका श्रीकृष्णजी के पास आना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित नारदमुनि के जाने उपरान्त एकदिन श्रीकृष्णजी सुधर्मा सभामें बैठेथे उससमय ब्रह्मा व महादेव व इन्द्र व कुबेर व बरुण व दक्षप्रजापति आदिक देवता व ऋषीश्वर श्यामसुन्दर सगुणरूप का दर्शनकरने वास्ते आकाश मार्ग से द्वारकामें आये व नन्दनबागके फूल उनपर बर्षाये व दण्डवत् करके हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजी से बिनयकी हे महाप्रभु जिन चरणोंका ध्यान बड़े २ योगी व ऋषीश्वर आठोंपहर अपनेहृदयमें रखकर मुक्तिपदवी पाते हैं उन्हीं तीर्थरूपी चरणोंका दर्शनकरनेवास्ते हमलोग आनकर भवसागर पारउतरना चाहते हैं हे निर्गुणनिराकार आप सबजगत्के उत्पन्न व पालन व नाशकरनेवाले हैं व संसारीलोग यज्ञ व तप व ध्यान व तीर्थकरनेपरभी हरिचरणोंकीभक्ति किये बिना संसार व परलोककासुख नहीं पाते व जबतक तुम्हारीदयासे पूर्बजन्मकापुण्य सहायनहींहोता तबतक तुम्हारेचरणों में प्रीति न होकर हरिकथामें चित्त नहींलगता व हमलोगोंके बिनयकरनेसे आपने मर्त्यलोक में सगुणअवतारलेकर पृथ्वीका भार उतारा व एकसौपच्चीसबर्ष संसार में रहकर साधु व बैष्णवोंको सुखदिया व अधर्मी व दुःखदायी राजाओंकामारकर धर्मकीरक्षाकी हे त्रिभुवनपति अब दुर्बासाऋषीश्वर के शापसे छप्पनकरोड़ यदुवंशी इसतरह जलरहे हैं जिसतरह वृक्षसूखकर भीतरसे खुखलाहोजाताहै आप सबजीवों के मालिकहैं जैसा उचितहोवै वैसाकीजिये यहसुनकर श्यामसुन्दरबोले हे ब्रह्मा मैंने तुम्हारीइच्छा जानली कंस व जरासन्ध व कालयवनआदिक अधर्मीराजा व दैत्योंकोमारकर कौरवोंव पाण्डवोंसे महाभारतकराके पृथ्वीकाभार उतारचुकाहूं केवल यदुबंशियों का नाशकरना और रहगयाहै सो थोड़े दिनमें उनकाभी नाशकराके बैकुण्ठ में आन पहुँचता हूं तुमलोग

अपने २ स्थानपर चलो यहसुनकर ब्रह्मादिकदेवता उनसे बिदाहोकर अपने २ लोक को चलेगये व त्रिभुवनपति ने गोलोकको जाना बिचारकर एकदिन राजाउग्रसेनकी सभामें यदुबंशियों से कहा इनदिनों ब्राह्मणके शापदेने से द्वारकापुरी में नित्य नये २ अशकुनहोते हैं इसलिये सब किसीको प्रभासक्षेत्र में चलकर स्नान व दान व यज्ञ व होम वहांपरकरके यहदोष छुड़ानाचाहिये जिसतरह समुद्र में रहनेसे चन्द्रमाका क्षयी रोग छूटगयाथा उसीतरह प्रभासक्षेत्रमें नहाने व दानकरनेसे तुम्हारादोषभी छूटजायगा जब राजाउग्रसेनआदिक सबयदुबंशी श्यामसुन्दरकी आज्ञानुसार प्रभासक्षेत्र में जाने वास्ते तैयारीकरनेलगे तब उद्धवभक्तने जो लड़कपनसे उनकामित्र व सेवकथा दण्डवत् करने व परिक्रमालेने उपरान्त आंखोंमें आंसूभरकर त्रिभुवनपतिसे बिनयकी कि हे महाप्रभु यदुबंशियोंको प्रभासक्षेत्रमें जानेसे मैं जानताहूं कि आपउनका वहां नाश कराके बैकुण्ठको पधारैंगे नहींतो तुम्हारे तीर्थरूपीचरणोंका ध्यानकरनेसे हजारों शाप छूटजाते हैं उनको वहां भेजनेका क्याप्रयोजन है जिसतरह बालापन से मैं आजतक तुम्हारी सेवामेंरहा उसीतरह मुझे अपनेचरणोंसे बिलग न करके साथ लेचलो व ऐसा बरदानदेव कि किसीयोनि में मेरा जन्महो पर तुम्हारे कमलरूपी चरणोंकी भक्ति व प्रीति मेरे हृदय में बनी रहै ॥

सातवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का उद्धव से ज्ञान कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जब उद्धव ने श्यामसुन्दरके साथ चलनेवास्ते बहुत बिनती की तब जगतपालने उसे अपनाभक्त व मित्र जानकर कहा हे उद्धव सचहै यदुबंशीलोग दुर्वासा ऋषीश्वर के शापसे जलरहे हैं आजके सातवें दिन सब यदुबंशियोंका नाशहोकर द्वारका समुद्रमें डूबजावैगी व ब्रह्मादिक देवता मुझे बुलानेआये थे इसलिये मैंभी साथ योगाभ्यासके तनु अपना त्यागकर बैकुण्ठको चलाजाऊंगा सो तुमको भी उचित है कि पहिले से विरक्त होकर मेरे चरणों में ध्यान लगावो मैंने ब्राह्मणके शापसे तुम्हें छुड़ादिया व हे उद्धव मेरे जाने उपरान्त धर्म्म संसारसे उठजायगा यह बचन सुनतेही उद्धव रोकर बोला हे त्रिभुवनपति मैंने विना ज्ञानपाये संसारी मोह छोड़दिया तो विरक्त होने से क्या लाभहोगा इसलिये दयालुहोकर ऐसा ज्ञान उपदेश कीजिये जो मरतेसमयतक न भूले यह सुनकर द्वारकानाथने कहा हे उद्धव संसारमें जो तुम देखते व सुनतेहो सबको झूठा व्यवहार समझकर मन अपना हमारे चरणों में लगावो जब तुम संसारी बस्तु नाश होनेवाली से प्रेम तोड़कर मेरे अबिनाशीरूपका ध्यान सच्चेमनसे करोगे तब तुम्हें मेरीमाया नहीं व्यापैगी और तुम मुझे आठोंपहर अपने पास देखोगे जिसतरह पौशालपर अनेक मनुष्य इकट्ठे होकर पानी

पीने उपरान्त बिलग २ होजाते हैं उसीतरह माता व पिता व स्त्री व पुत्र थोड़े दिन साथ रहकर अन्तसमय चारपगभी मरनेवालेके साथ नहीं जाते अपने स्वार्थ व जगत् को दिखलानेवास्ते चारदिन रोलेते हैं इसलिये उनका प्रेम स्वप्नकेसमान झूठा समझना चाहिये केवल ज्ञान व वैराग्य व पाप व पुण्य अपने साथ जाकर उसीसे दुःख व सुख प्राप्त होताहै इसलिये मनुष्यको चाहिये कि अपना मरना आठोंपहर याद रखकर कुकर्मों से डरतारहै व सब जड़ व चैतन्यमें मेरा प्रकाश बराबर समझकर किसीजीव को दुःख न देवै जिसतरह दिनरात बदला करते हैं उसीतरह संसारमें उत्पन्न होने व मरने की गति होकर यह बात कोई नहीं जानता कि मरने उपरान्त कौन योनि में हमारा जन्महोगा यह ज्ञान सुनकर उद्धवने बिनयकी कि हे वैकुण्ठनाथ अन्तर्यामी स्त्री व पुत्रका मोह छोड़कर विरक्तहोना बहुत कठिन है मुझ अज्ञानपर दयालुहोकर कोई ऐसा सहजउपाय बतलाइये जिसमें संसारी माया छूटकर तुम्हारे चरणों में भक्ति उत्पन्नहोवे मुझे ज्ञानरूपी नौकापर बैठाकर भवसागर पार उतार दीजिये यह सुनकर श्यामसुन्दर बोले हे उद्धव जिसतरह हवा किसी बस्तुसे मिलावट न रखकर बिलग रहती है उसीतरह तुमभी सब बस्तु भली व बुरी को इस शरीरसे अलग समझकर संसारीमाया छोड़देव देखो जैसे चन्द्रमाकी कला नित्य घटती बढ़ती है वैसे यह शरीर बालापन व तरुणाई व बुढ़ापा भोगकर सदा एकतरह पर नहीं रहता जिसतरह सूर्य देवता अपना प्रकाश पृथ्वी व पहाड़ व पानी पर बराबर रखकर किसीके साथ कुछ प्रेम नहीं रखते उसीतरह तुमभी सबकी प्रीति छोड़कर मन अपना विरक्त करलेव जैसे कबूतर व कबूतरी अपने बच्चोंकी प्रीति में फँसकर नष्टहुये थे वैसे संसारी लोग भी स्त्री व पुत्रका प्रेम रखने से दुःख उठाते हैं यह सुनकर उद्धवने बिनयकी महाराज उनदोनों पक्षियोंकी कथा बिस्तारपूर्बक कहिये केशवमूर्त्तिने कहा हे उद्धव एक कबूतर अपनीमादी व बच्चोंसमेत वृक्षपर रहकर जिसतरह राजाइन्द्र इन्द्राणीसे बिलासकरता है उसीतरह वहभी अपनी मादीसे खोते में भोगकरके सुखउठाताथा जबएकदिन वह कबूतर अपनेबच्चे अकेले छोड़कर मादीसमेत चारालेनेवास्ते चलागया तब बहेलिये ने वहांआयकर उनबच्चोंको जालमें फँसालिया जब वह कबूतर व कबूतरी यहहाल बच्चोंकादेखकर प्रेमबश आप उसजालमें कूदपड़े तब वह बहेलिया सबको फँसाकर अपनेघर लेगया देखो जिसतरह उनदोनों ने बच्चोंकी प्रीतिसे जालमें कूदकर अपना प्राणदिया व बच्चोंने कुछसहायता उनकीनहींकी उसीतरह संसारीलोग स्त्री व पुत्रके मोहमें फँसकरनरक भोगते हैं तब वहांपर कोईउनकी सहायता नहींकरता इसलिये उनलोगोंकेवास्ते जो दुःखमें कुछकामनहींआते दुःखउठाना व अपनापरलोक बिगाड़ना उचितनहीं है हे उद्धव पिछलेयुगमें यदुनामराजा ज्ञानसीखनेकी अभिलाषा रखकर अनेकयोगी व ऋषीश्वरोंके पास जायाकरताथा एकदिन उसीचाहनामें गोदा-

वरीके किनारेचलागया सो वहांपर दत्तात्रेयनाम ब्राह्मण अतितेजवान्‌रूपको बैठेदेखकर सुखपालसे उतरपड़ा व दण्डवत्‌करने व परिक्रमालेने उपरांत हाथजोड़कर बिनय की हे ईश्वरको पहुँचेहुये महात्मापुरुष इसतरुणाईमें इतनीपदवी तुमने कहांसे पाई तुम्हारातेज देखनेसे मालूमहोता है कि आपबड़ेज्ञानी होकर अपनेगुणको छिपाये हैं व संसारमें रहनेपरभी कुछवस्तु अपने पास न रखकर इसतरह संसारसे विरक्त दिखलाई देतेहो जिसतरह कमलकाफूल पानीमें उत्पन्नहोकर जलसे बिलगरहता है व संसारी मनुष्यों को देखताहूं कि काम क्रोध मोह लोभकी अग्निमें जलकरएकक्षण सुखसे नहीं रहते व आप इसतरह आनन्द मूर्त्तिदिखलाई देते हैं जिसतरह हाथी ज्येष्ठ महीनेकी धूपका माराहुआ जलमेंजाकर ठण्ढा व मग्नहोजाता है इसलिये तुमसे बिनयकरताहूं कि जोकुछज्ञान व परमेश्वरकी महिमाआपको मालूमहो सो दयालुहोकर मुझेबतलाइये यहबचन सुनतेही दत्तात्रेयने उसकीओर देखा व हँसकर कहा हे राजन् मैंने चौबीसगुरू अपनेसमझकर जो कुछज्ञान उनसे सीखा है वह कहताहूं सुनो व पच्चीसवां गुरू मेरा यहशरीर है जबमैंने अपनेशरीरको बिचारकर देखा तब मालूम हुआ कि इसतनु में मल व मूत्र व रक्त व मांस अशुद्धवस्तु भरीहोकर सिवाय लेनेनाम परमेश्वर व करने शुभ कर्म्म के दूसरीवस्तु उत्तमनहीं है किसवास्ते संसारी मायामें फँसकर जन्मअपना वृथाबिताऊं जब यह समझकर परमेश्वरकाभजन व स्मरण करनेवास्ते अकेलाअपने घरसेबाहर निकला व बौड़होंके समान चारोंओर फिरनेलगा तब लड़कोंने मुझेबौड़हा समझकर पीछे २ फिरना व पत्थरमारना व गालीदेना आरम्भकिया व सिवाय चौबीस गुरुके जिसने मुझे गायत्रीमंत्र उपदेश कियाथा उसे बिलग समझनाचाहिये सो पहला गुरूमेरा पृथ्वीहोकर उससे तीनबातें मैंने सीखीहैं मैंने एकपहाड़कोदेखा कि धरती से ऊंचारहकर अनगिनत मनुष्य व पशु पक्षीआदिक जीवोंको अपने ऊपररहने व चलने आंधी व बर्षनेपानीके वह अपने स्थानसे नहींहिलता तब मैंने बिचारा कि ज्ञानी कोभी संसारीमाया व चाहनामें जो हवा व पानीकेसमान है लपटकर अपनीजगह से हिलना न चाहिये किसवास्ते कि तनु मनुष्यका मूठीभर मिट्टीकाबनकर आयुर्दा हवा के समान बीतीजाती है दूसरेवृक्षोंको देखा तो पृथ्वी में उत्पन्नहोकर अपनीछाया व फल व फूलसे सबजीवोंको सुखदेतेहैं व एक पैरसे खड़े रहकर बर्षाऋतु व गर्मी व सर्दीका दुःख उठानेपरभी अपने स्थानसे नहींहिलते एकदिन मैंने घरसे निकलकर क्यादेखा कि बहुतमनुष्य वृक्षकीछायामें बैठेथे जब वहांसे ठंढेहोकर जानेलगे तब किसी ने उस की डाली व किसीने पत्ता व फलतोड़लिया पर वहवृक्ष कुछनहींबोला यहहाल उसका देखकर मैंने अपनेमनमेंकहा कि ज्ञानीमनुष्योंको अपनातनु व धन परोपकार के वास्ते समझकर अपना प्राणतकदेने में मुकरना न चाहिये किसवास्ते कि यहशरीर मिट्टीका पुतला सदा बनता व बिगड़ता रहताहै इससे क्याउत्तम जो दूसरे के कामआवे तीसरे

हमने पृथ्वीको देखा कि संसारीलोग उसकीछातीपर लातरखते हैं परवह किसीको भला व बुरा नहींकहती सो हमनेबिचारा कि ज्ञानी मनुष्यको भी किसी की स्तुतिकरने से प्रसन्नहोना व दुर्बचनकहने में खेदमानना न चाहिये दूसरागुरू मेरा हवाहै मैंने हवा का सुगन्धितफूल व लहसुन आदिक दुर्गन्धदोनों में बहतेहुये देखकर अपनेमनमें कहा ज्ञानीमनुष्यको भी जो कुछ मीठा व कडुवा कर्म्मानुसार मिले वह खाकर आनन्दपूर्बक स्मरण व ध्यान परमेश्वर का करै व कुछस्तुति व निन्दा उसकी न करै तीसरा गुरू मेरा आकाश है जिसतरह गूलरका फल भीतरसे खुखला होकर उसमें छोटे २ मच्छड़ भरेरहते हैं उसीतरह पृथ्वी व आकाश गोल होकर उसके भीतर सबजीव जड़ व चैतन्य बासकरते हैं सो हमने इस ब्रह्माण्डमें क्या देखा कि प्रकाशसूर्य्य का बीच बर्त्तन चांदी व सोना व मिट्टी पानी भरेहुये में बराबर पड़कर उसको किसीसे मिला-वट व आश्रय नहीं रहता व बर्त्तन तोड़ने व पानी गिरानेसे वह प्रकाश फिर सूर्य्यमें मिलजाता है व बर्त्तनों में छाया पड़नेसे कुछ तेज उनका घट नहीं जाता यह हाल देखकर हमने जाना कि परमात्मा पुरुषको जिनकी शक्ति चौरासीलाख योनि में रहती है आकाशके प्रमाण समझना चाहिये इसलिये जीवोंके मरने में उनकी कुछ हानि न होकर वे अपने तेजसे एकजगह प्रकाशित रहते हैं व उनकी शक्ति सबजीवों में रहने से कुछ उनका तेज कम नहीं होजाता चौथागुरू मेरा पानी मोतीके समान उज्ज्वल होकर किसीजगह मैला जो दिखाई देताहै वह कारण मिट्टी व राखादिक मिलने का समझना चाहिये नहीं तो वह उज्ज्वल व पवित्र होकर सब जगत्को शुद्ध करदेताहै उसे हमने देखकर समझा कि ज्ञानीको भी पानीके समान शुद्ध रहकर अपने पास बैठनेवालों को ज्ञान उपदेशकरके पवित्र करदेना चाहिये जिसमें सबछोटे बड़े उसको अच्छा कहैं पांचवां गुरू मेरा अग्नि है जिसमें सबबस्तु डालनेसे जल जाती हैं व दूसरेदिन के वास्ते कुछनहीं रहतीं व जोलोग अग्निमें यज्ञ व होमकरते हैं उनका पाप जलकर छूटजाता है उसीतरह ज्ञानीको भी चाहिये कि जो कुछ उसको मिले उसी दिन सबखर्च करडाले दूसरे दिनके वास्ते कुछ न रक्खै व जो कोई उसे खिलादे वह खाकर अपने आशीर्बाद से खिलानेवाले का पाप छुड़ादेवे छठवांगुरू मेरा चंद्रमा है जिसतरह चन्द्रमा सदा एकरूप रहकर सूर्यके समीप व दूरहोनेसे उसका तेज घटता व बढ़ताहै उसीतरह जन्मलेना व मरना संसारमें होकर वह परमात्मा पुरुष जिसका प्रकाश चौरासीलाख योनिमें रहताहै सबसे बिलग व सदा एकरस रहता है इसलिये हमने अपना गुरू परमात्मा को भी समझा व सातवांगुरू अपना सूर्यको मानकर उन से दोबस्तु मैंने पाई एकतो जिसतरह आठमहीने तक सूर्यदेवता समुद्र व नदी आ-दिक का पानी सुखाकर चारमहीने बर्षाऋतु में वह पानी बर्षादेते हैं उसीतरह ज्ञानी को चाहिये कि जो कुछ मिलै उस बस्तुपर तृष्णा न रखकर किसीको देडालै दूसरे

यह कि बहुतसे बर्त्तन पानी भरकर धूपमें धरदे तो सूर्यरूपी परछाहीं बीच उनबर्त्तनों के दिखलाई देती है पर अनेक सूर्य दिखलाई देनेसे सूर्यदेवता बहुत नहीं होजाते इस लिये मैंने जाना कि परमात्मापुरुष एक होकर केवल उनकी छाया सबजीवोंमें रहती है आठवांगुरू मेरा कपोतनाम पक्षी है जब वह अपने बच्चोंके पालनेवास्ते जाल में दाना चुगनेगया व बहेलिया वह जाल उठाकर अपनेघर चलाआया तब हमने मन में कहा देखो जिसतरह यह पक्षी अपने बच्चोंके वास्ते जालमें फँसकर नष्टहुआ उसी तरह ज्ञानी मनुष्य संसारी प्रीतिरखनेसे दुःख पावेगा जितनाकष्ट उसपक्षीने एकदिन में उठाया उतनासुख हजारबर्षमें भी उसको प्राप्तनहीं होता इसलिये मैं स्त्री व पुत्रका प्रेम छोड़कर अकेला बहुत प्रसन्न रहताहूं ॥

आठवां अध्याय ॥

दत्तात्रेयका राजायदु से ज्ञानकहना ॥

दत्तात्रेयने कहा हे राजन् नवांगुरू मेरा अजदहासर्प है कि जबसे उसने जन्मपाया तब से उसी जगह रहकर कहींभोजन ढूंढ़ने नहींगया जब हरिणादिक पशु आनकर अपना सींग उसके अङ्गमें चुभावते थे तब वह एकदो को उठाकर निगलजाता था इसीतरह नित्य विष्णुभगवान् उसका पालन करते थे और वह सांप किसी दिन भूखे रहजाने पर भी सन्तोष रखता था उसे देखकर मैंने समझा कि ज्ञानीको भी गृहस्थों के द्वारे मांगने वास्ते जाना अपनी पतिखोना है उसी दिनसे मैं किसी के घरपर भोजन मांगने वास्ते नहीं जाता जोकुछ परमेश्वर बिनामांगे भेजदेते हैं उसे खाकर प्रसन्न रहताहूं व उत्तम व मध्यम भोजनका स्वाद जिह्वातक रहकर पेटमें जानेसे मल होजाता है दशवां गुरू मेरा समुद्र है जो बर्षाऋतु में अनेक नदियों के मिलने से कुछ न बढ़कर गर्मी व जाड़ेमें भी नहीं सूखता सदा एकरूप रहकर उसके आदि व अन्तको कोई नहीं देखता उसे देखकर मैंने बिचारा कि ज्ञानी को भी समुद्र की तरह निश्चिन्त रहना उचित है लाभ व हानि होने में कुछ हर्ष व खेदकरना न चाहिये ग्यारहवां गुरू मेरा पतंग है जिसतरह वह दीपकपर मोहित होकर उससे मिलने वास्ते बेधड़क जलमरता है उसी तरह संसारी जीव अपनी स्त्री व पुत्र व धनके मोह में फँसकर अन्तसमय नरकभोगते हैं इसलिये ज्ञानी को स्त्रीसे प्रीति न रखकर पतंगके समान परमेश्वर से प्रेमकरके अपना प्राणदेना चाहिये जिस में मुक्ति पदार्थ मिले जब स्त्री से प्रीतिकरने में दोनोंपंख ज्ञान व बैराग्यके जलजाते हैं तबवह पंगुलहोजाने से बैकुण्ठमें नहीं पहुंचसक्ता नरकमें पड़कर अनेकतरह का दुःखभोगता है इसवास्ते मायारूपी स्त्री से अलगरहकर कभी उसकेपास अकेले में बैठना न चाहिये स्त्री व धन से सुखचाहने वालेलोग पतंग के समानजलकर नष्ट होजाते हैं व स्त्री

के पास बैठने में ज्ञानीमनुष्य ऐसे अन्धे व बहिरेहोजाते हैं कि उनको अपनाभला व बुरा न सूझकर किसीकी लज्जा नहींरहती यही बातसमझकर मैंने स्त्रीकी संगति छोड़ दी बारहवां गुरूमेरा शहदकी मक्खी है एकबेर मैंने क्या देखा कि उसने बड़े परिश्रम से जो शहदछत्ते में इकट्ठा किया व कृपणतासे आप उसे न खाकर किसी दूसरेको भी नहीं दियाथा वह शहद एकमुसहर सबमक्खियों को जलाकर छत्तेसे निकालकर लेगया यहहाल देखकर मैंने बिचारकिया कि द्रव्यबटोरनेवालों की यही दशा होतीहै उसदिनसे दूसरेरोजके वास्ते कुछ न रखकर सबखर्च करडालताहूं सो ज्ञानीमनुष्यको अपने भोजनप्रमाण मांगकर अधिकलेना न चाहिये धनबटोरने से मक्खियों की तरह दुःखप्राप्त होताहै तेरहवांगुरूमेरा हाथीहै मैंने देखा कि हाथी फांसनेवालों ने बन में गड़हाखोदकर उसको सरहरीसे पाटा व कालेकागजका हाथी व हथिनी बनाकर उसपर खड़ाकर दिया जब एक जंगली हाथी उसे सच्चीहथिनी समझकर कामवश वहीं दौड़ताहुआ जाकर गड़हे में गिरपड़ा तब हाथी फांसनेवालोंने रस्सासे बांधकर उसको पकड़लिया यह दशा हाथीकी देखकर मैंने बिचारकिया कि ज्ञानीको स्त्री की चाहना करनी उचित न होकर कठपुतली से भी प्रीति रखना न चाहिये जिसतरह हाथीने हथिनीके वास्ते गड़हे में गिरकर दुःखउठाया था उसीतरह परस्त्रीगमन करनेवाले नरक में पड़कर बहुतकष्ट पातेहैं चौदहवांगुरू मेरा मधुहामक्खी के छत्तेसे शहदनिकालनेवाला है जो शहद भँवरे बहुतदिनों में इकट्ठा करते हैं उसकोवह एकबेर निकालकर लेजाता है उसे देखकर मैंने बिचारा कि भँवरे उसशहदको खाजाते तो वह किसतरह लेनेपाता इकट्ठा करनेवालों को सिवाय दुःखके कुछ सुख नहींहोता इसलिये ज्ञानी को चाहिये कि जो गृहस्थ बहुत लड़के बाले रखकर अपनेयहां द्रव्यबटोरेहो उसके यहांसे अपने प्रयोजनभर मांगलाकर भोजनकरलेवे झोलीबांधकर लेचलने से राह में कोई छीनलेगा पन्द्रहवांगुरू मेरा हरिण है जिसतरह वह राग सुननेवास्ते जाकर बाण लगने से घायल होताहै उसीतरह संसारी मनुष्य मायारूपी स्त्री का गाना व बचन सुनकर उसकेबश होजाते हैं इसलिये ज्ञानीको अपनेस्थानसे उठकर दूसरीजगह जाना व स्त्री का गाना सुनना उचितनहीं है सोलहवांगुरू मेरा मछली है कि वास्ते लालच थोड़ेसे मांसादिक के जो कटियामें लगाकर अहेर खेलते हैं अपना प्राण देती है सो एकमछलीको कटियामें फँसेहुये देखकर मैंने समझा कि ज्ञानी मनुष्यको भी उत्तम भोजन ढूंढ़ना उचित न होकर जो कुछ भला बुरा परमेश्वरकी इच्छासे मिलजावे उसे खाकर पंचभूतात्मा व अपनी जिह्वाको वश्य में रक्खे जिसमें उसको बड़ाई मिलै सत्रहवांगुरू मेरा पिंगलानाम वेश्या है एकदिन हमने राजाजनकके नगरमें जाकर क्या देखा कि पिंगलावेश्या सोलहों शृङ्गार करके सन्ध्यासमय में बीचइच्छा आवने किसी ब्यसनी के आधीराततक अपने द्वारे पर बैठीरही परकोई चाहनेवाला उसका नहीं

आया तब वह बहुतउदासीसे अपने भीतर जाकर शय्यापर लेटरही पर कामरूपी मदमें उसको नींद न आकर ऐसा ज्ञान उत्पन्नहुआ जैसा किसी को दशहजार बर्ष तक ध्यान करनेसे भी नहीं मिलता उस वेश्याने मनमें बिचारा देखो बड़े शोचकी बातहै कि मैंने जन्मअपना वृथाखोकर स्मरण व ध्यान त्रिभुवनपति जगत्पालकका नहींकिया व परमात्मापुरुष सच्चेमित्रका प्रेमछोड़कर संसारी मनुष्य झूठेचाहनेवालों से प्रीतिलगाई मेरेबराबर कोई दूसरामूर्ख न होगा जैसा मैंने अपने साथ किया वैसाकोई अन्धाभी नहीं करता कि अपने मालिकको जो शरीरमें वर्त्तमानहै भूलकर नहीं देखा जिसतरह यहशरीर हवा व पानी व मिट्टी व हड्डी व मांससेबनकर नाशरूपी रस्सियों से बँधाहै उसीतरह चरखा काठका डोरासे बँधारहकर घूमता है जैसे मकानमें अनेक द्वारे रहते हैं वैसे शरीर में भी नवद्वारे नाक व कानादिक रहकर हरएक द्वारेसे अशुद्धवस्तु निकलती है सो मैंनेचाहा कि इसघरमें प्रसन्नरहूं अब मैंने जाना कि इस झूठ संसारमें सिवाय दुःखके कुछ सुख प्राप्तनहींहोता और केवल परमेश्वरका स्मरण व ध्यानकरने व कथासुनने से लोक व परलोक बनता है जितना मैं रुपया लेने वास्ते जो मरने उपरांत कामनहींआता अपने व्यसनी को रिझातीथी उतनाशृंगार करके त्रिभुवनपतिको लोभाती तो मेरापरलोक बनजाता देखो जो लोग मायारूपी रस्सीसे बँधेहोकर अपने दुःखमें आप व्याकुल हैं उनसे मूर्खताई की राह अपनासुख चाहकर ज्ञान व बैराग्य संसारीबन्धन काटनेवालों से प्रीति नहींलगाई इसलिये आज मैंने संसारीमाया छोड़कर यहप्रणकिया कि आदिपुरुष भगवान्से जो बैकुण्ठका सुखदेनेवाले हैं प्रीतिलगाकर उनकेसाथ बिहारकरूं व संसारी मनुष्यकी ओर जो बिपत्तिमें काम नहींआते आंखउठाकर न देखूं व सिवाय परमेश्वर के और किसी से कुछवस्तु न मांगूं किसवास्ते कि महात्मालोगोंने ऐसाकहा है कि मनुष्य जिसबस्तुकी इच्छारखता हो नारायणजीसे मांगे और दूसरे किसीसे कुछइच्छा न करे परमेश्वर सबबस्तु अपने यहांरखकर यहचाहते हैं कि कोईहमसे कुछमांगे व संसारी मनुष्य ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो सबकी इच्छापूर्ण करसकै कदाचित् ऐसाकहूं कि कोई व्यसनी न आने व द्रव्य न मिलने से यहज्ञान मुझे प्राप्तहुआ सो इसतरह कईबेर मेरेस्थानपर व्यसनी न आनकर मुझेउपास होगयाथा न मालूम कौन जन्मका पुण्य सहायहोने से आज यह ज्ञान मेरे मनमें आया हे राजन् वह वेश्या तीनपहर रात बीते तक ज्ञान भरी बात बिचार करतीहुई शय्यापर सोरही व उसीदिन से अपना उद्यमछोड़कर हरिचरणोंका स्मरण व ध्यान करनेलगी इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित यहसब ज्ञान उस वेश्याको दत्तात्रेयके दर्शन मिलने से प्राप्त हुआथा पर वह यहबात नहीं जानती थी दत्तात्रेयने कहा हे राजन् यहहाल पिंगलाका देखतेही मैं भी उसीदिन से संसारी माया छोड़कर बीच स्मरण व ध्यान परमेश्वरके मग्न रहताहूं संसारी बस्तु

की चाहना रखनेमें बड़ा दुःख होकर तृष्णाछोड़देने व हरिभजन करने से इसतरह सुख व मुक्तिपदार्थ मिलता जिसतरह वह बेश्या अपने व्यसनीकी प्रीतिछोड़कर भव-सागरपार उतरगई ॥

नवां अध्याय ॥

राजायदुसे दत्तात्रेयका ज्ञान कहना ॥

दत्तात्रेयने कहा अठारहवां गुरू मेरा चील्ह है एक दिन हमने देखा कि एकचील्ह मांस का टुकड़ा अपने चंगुलमें लियेहुये उड़ी जातीथी जब दूसरी कईचील्हैं वास्ते छीनने टुकड़ा मांसके उसको चोंच व चंगुलसे मारनेलगीं तब उसचील्हने मनमें कहा देखो मुझे इन चील्होंसे कुछ शत्रुता नहीं है केवल मांसके टुकड़ेके वास्ते यहसब मुझे मारती हैं जब ऐसा समझकर उसने वह टुकड़ा गिरादिया तब दूसरीचील्हैं जो मारतीथीं चलीगईं और वहचील्ह आनन्दसे एकवृक्ष पर बैठरही उसे देख हमने विचार किया कि धनादिक रखनेसे परिवारवाले व चोर व ठग मेरे साथ शत्रुता करेंगे इसलिये कोई बस्तु अपने पास न रखकर आनन्दपूर्वक परमेश्वर का भजन करता रहूं व उन्नीसवां गुरू मेरा अज्ञान बालक है जो काम व क्रोध व मोह व लोभके बश न होकर इतना बिरक्त रहताहै कि मणिहाथ में रखताहो और कोई मनुष्य मेवा व मिठाईके बदले उससे वह रत्न मांगे तो देडाले व सिवाय खेलनेके दूसरा उद्यम नहीं रखता व अपने घरद्वार से कुछप्रीति न रखकर ज्ञानियोंकी तरह बिरक्तरहता है उस को देखकर मैंने समझा कि ज्ञानीको भी निर्लोभ रहिकर कुछ तृष्णा रखनी न चाहिये संसारमें दोमनुष्य एक बालक अज्ञान व दूसरा ब्रह्मज्ञानी प्रसन्न होकर और सब कोई दुःख न सुखमें फँसेरहते हैं बीसवां गुरू मेरा कुमारीकन्याहै एकदिन मैंने गृहस्थ ब्राह्मणके घर भीख मांगनेवास्ते जाकर क्यादेखा कि अकेली कुमारीकन्या वहांहोकर और सब घरवाले कहीं बाहरगये थे उसीसमय तीन मनुष्य दूसरे नगरसे उसके बिवाह का संदेशा लेकर वहांपर आये सो उस छोकरीने सबको बड़े सन्मानसे बैठाला व चावल न तैयार रहनेसे आप कोठरी में जाकर मेहमानोंके वास्ते धान कूटनेलगी जब उससमय चूड़ियां उसकी बोलीं तब उसने बिचारा कि ये लोग चूड़ियों का बोलना सुनकर कहैंगे कि इनके घर एकदिनके खानेवास्ते भी चावल नहीं हैं इसबात में लज्जा समझकर उसने दो २ चूड़ी हाथमें रखलीं और सबचूड़ी एक एक करके तोड़डालीं तिसपर भी बोलना उनका बन्द नहीं हुआ जब उसने एक एक और तोड़कर अकेली चूड़ी रहनदी तब बोलना चूड़ीका बन्दहोनेसे धान कूटकर मेहमानोंको भोजन खिलाया यहहाल देखकर मैंने समझा कि बहुतलोगों की सङ्गति करने से आपसमें झगड़ा होता है दोमनुष्य साथ रहने से भी अनेक वार्ताहोकर हरिभजन

नहीं बनपड़ता इसलिये ज्ञानीको किसीसे सङ्गति व प्रीति करनी उचित न होकर अकेले हरिभजन करनाचाहिये इक्कीसवां गुरू मेरा तीर बनानेवाला है एकदिन हमने बाजारमें तीर बनानेवाले की दूकानपर खड़े होकर क्या देखा कि वह तीर बनारहा था उसीसमय राजाकी सवारी बड़ी धूमधाम से उस दूकानके सामने होकर दूसरी ओर चलीगई थोड़ीदेर उपरान्त राजाके एकनौकर ने जो पीछे रहगया था आनकर तीर बनानेवाले से पूछा कि राजाकी सवारी किधरगई है उसने उत्तरदिया कि मैंने राजाकी सवारी नहीं देखी यहबात सुनकर हमने तीर बनानेवाले से कहा अभी सवारी राजाकी धूमधामसे तुम्हारे सामने होकर चलीगई है किसवास्ते झूठबोलतेहो तब वह बोला हम तीर बनाने में लगेथे इसलिये कुछ ध्यान सवारी का नहीं किया उस समय हमने अपने मनमें कहा कि तुझे भी सब इन्द्रियोंको वशमें रखकर इसी तरह नारायणजी का ध्यान करना चाहिये बाईसवांगुरू मेरा सांप है जो अपने रहनेवास्ते घर नहीं बनाकर चूहों के बिलमें रहजाता है उसे देखकर मैंने बिचार किया कि ज्ञानी साधुको भी घर बनाना उचित न होकर जहां रात होजावै वहां स्थान अपना समझना चाहिये तेईसवां गुरू मेरा मकड़ी है जो सूतके समान तार अपने मुखसे निकालकर फिर उसे खाजाती है उसको देखकर मैंने बिचार किया कि परमेश्वर को भी इसीतरह जानना चाहिये कि चौरासीलाख योनि उनसे उत्पन्न व पालन होकर अन्तसमय जीवात्मा सबका उनके रूपमें समाजाता है इसलिये ज्ञानीको मनसावाचा कर्मणा से बीचस्मरण व ध्यान घटघट व्यापक भगवान् के लीन रहना उचित है व चौबीसवांगुरू मेरा भृङ्गी कीड़ाहै जिसके डरसे दूसरे कीड़े उसीका रूप होजाते हैं उसको देखकर मैंने कहा कि ज्ञानी को भी चाहिये कि परमेश्वर में इसतरह मन लगावै जिसमें उन्हींका स्वरूप होजावै यहसब ज्ञान कहकर दत्तात्रेय बोले जो कुछ ज्ञान इन चौबीसों गुरुओंसे हमने सीखाथा वह तुमको सुना दिया इस ज्ञान को तुम समझकर नारायणजी का स्मरण व ध्यान करो तुम्हारी मुक्ति होजावेगी हे राजन् चौरासीलाख योनिमें बहुतसा शोच व दुःख उठाकर बड़ी कठिनतासे मनुष्य का तनु मिलताहै इसलिये यह तनुपाकर संसारी मायामोह में फँसना उचित नहीं है केवल परमेश्वर का तप व ध्यान करनेवास्ते मनुष्य का तनु मिलता है सिवाय इस चोले के दूसरीयोनि में परमेश्वर नहीं मिलसक्ते जो कोई मनुष्य तनु पाकर हरिभजन नहीं करता वहफिर चौरासीलाख योनिमें जन्मलेकर बड़ादुःख पाता है जब इसजीव ने मनुष्य तनु पाया तो ऐसा समझना चाहिये कि वह एकपैर अपना भवसागरपार उतरनेकी नौका पर रखचुका जिसने इस शरीरमें शुभकर्म्म किया वह दूसरापांव भी उस नौका पर रखकर भवसागरपार उतरजाता है नहीं तो उसनावसे चौरासीलाख योनिमें गिरकर बहुत दुःख पावेगा यहशरीर कभी दुबलारहकर कभीमोटा होजाता है इसलिये नाशहोने

वाले तनुका कुछमोह करना न चाहिये जोलोग स्त्री व पुत्र व द्रव्य व हाथी व घोड़ा आदिकको अपना जानकर यहसमझते हैं कि अन्तसमय ये सब मेरी सहायता करैंगे उनको अवश्य नरकभोगना पड़ता है यहमन चंचल जो अपनेबश नहींरहता इसे अवश्य अपने आधीन रखनाचाहिये नहीं तो जिसतरह छः चोरोंने एकरत्न चुराकर भाग न लगनेसे आपसमें झगड़ाकरके फांसीपाई उसीतरह सबइन्द्रियां अपना २ सुख भोगनेवास्ते मनको अपनीओर खींचकर उसे नरकमें डालदेती हैं व अज्ञान मनुष्य उनके बशहोकर बहुत दुःखपाता है जिसतरह संसार में कोईस्त्री रखनेवाले नष्टहोते हैं उसीतरह मनचंचल व नाक व जिह्वा व लिंगादिक इन्द्रियों के बशहोकर दुःखपाता है पहिले परमेश्वर ने पशु व पक्षी व वृक्षादिक उत्पन्नकरने से सन्तुष्ट न होकर जब मनुष्य का तनुबनाया तब आनन्दहोकर कहा कि इसशरीरमें ज्ञानप्राप्त होने से जीव-न्मुक्त पदवीपर पहुँचैगा इसलिये मनुष्यतनु केवल भगवत्भजन करनेवास्ते होकर मनुष्य को संसारीमाया में लपटना न चाहिये पेटभरना व भोगकरना दूसरीयोनि में भी प्राप्तहोसक्ता है पहिले से पानीभराहुआ आगबुझावने के काम आनकर आगलगने के समय कुआंखोदने व पानीभरने में वहबुझने नहींसक्ती हे राजन् मैं परमेश्वरका चमत्कार सबजीवोंमें बराबरसमझकर प्रसन्नरहताहूं सो तुम्हें व सबसंसारीजीवों को भी इसतनुमें मुक्तिमिलनेवास्ते उपायकरना उचित है नहीं तो पीछे सिवाय पछिताने के कुछहाथनहीं लगेगा हे उद्धव दत्तात्रेय यह सबज्ञान राजासे कहकर तीर्थयात्राकरने चलेगये व राजायदु उसीज्ञानके प्रतापसे मुक्तपदवीपर पहुँचा सो तुमभी वहीज्ञान मनमें दृढ़रखकर संसारी प्रीति छोंड़देव ॥

दशवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का उद्धवको ज्ञान सिखलाना ॥

श्रीकृष्णजीने कहा हे उद्धव संसारी मनुष्यको चाहिये कि अपनेबर्ण व आश्रमका धर्मशास्त्रानुसार रखकर किसीबातकी चाहना न करे यज्ञ व श्राद्धादिक देवकर्म व पितृकर्मकरके गुरूकी सेवामें प्रीतिरखकर गुरूकावचन सच्चामाने जबतुम मनअपना संसारी मायासे बटोरकर एकचित्तकरोगे तबगुरूका उपदेश तुम्हारेहृदयमें प्रवेशकरेगा देखो यहशरीर शुभ व अशुभकर्म करके अनेक जन्मपाताहै इसलिये मनुष्यतनुमें आत्माको शरीरसे अलगसमझकर संसारीसुख व ब्यवहारको झूंठासमझना चाहिये बिनाहरिभक्ति किये व आत्माको अंगसे बिलगजाने मुक्तिनहीं होनेसक्ती बालापन व तरुणाई व बुढ़ापा तीनोंअवस्था शरीरमें होकर आत्मासदा एकरूपरहताहै व मनुष्य अपने अज्ञानसे दुःखमानकर सुखप्राप्तहोने का उपायनहीं करता यज्ञ व तीर्थआदिक शुभकर्म्म करनेके फलसे संसारीजीव देवलोकमें जाकर सुखभोगते हैं अवधिबीतने

उपरान्त फिर मृत्युलोकमें जन्मपाकर अधर्म करनेके बदले नरकभोगना पड़ता है जबतक मुक्तिप्राप्तनहींहोती तबतक वह जीव आवागमनमें फँसारहनेसे अनेकतरहका दुःखपावताहै इसलिये भवसागरपार उतरनेवास्ते सिवायहरिभजन व सत्सङ्गके दूसरा उपाय. उत्तमनहीं होता और जो तुमकहतेहो कि हमको अपने साथलेचलो जिसमें तुमसेबिलग न हों हे उद्धवज्ञानप्राप्त होनेसे बियोगका दुःखनहींहोता व तुम संसारमें इनजीवोंको जो देखतेहो ब्रह्मासे लेकर चींटीतक येसबमृत्युकाग्रास हैं व मैं जन्म व मरणसे रहितहोकर जबपृथ्वीकाभार उतारनेवास्ते अवतार लेताहूं तबमुझेभी निर्गुण रूपत्याग करना पड़ता है इसलिये तुम्हें चाहिये कि सदामनअपना मेरेभजन व स्मरणमें लगायेरहकर बीचध्यान हरिचरणोंके लीनरहो तो बियोगकादुःख तुम्हारे हृदय में नहींरहेगा हेउद्धव जगत्में ज्ञान व अज्ञान दोबातप्रकटहोकर जोलोग ज्ञानी हैं वे इसशरीरको वृक्षकेसमान जानकर उसपरदोपक्षी बैठेहुये समझते हैं उनमेंएक पक्षी थोड़ाभोजनकरके सामर्थ्य अधिकरखताहै उसेपरमात्मा समझना चाहिये जो काम व क्रोध व मोह व इन्द्रियोंकेसुखसे कुछप्रयोजन नहींरखता व दूसरापक्षी बहुतखानेपर भी निर्बलरहकर संसारीसुख में प्रसन्नरहता है उसेजीवात्मा समझना चाहिये व स्त्री व द्रव्य व सुखमिलनेसे प्रसन्नहोकर उसके बियोगमें दुःखपाता है और यहनहीं समझता कि हानि व लाभ व दुःख व सुख परमेश्वरकी इच्छानुसार होकर उसमें दूसरे का कुछवश नहींचलता हे उद्धव संसारी मनुष्यके भवसागरपार उतरनेवास्ते जो उपायकरना चाहिये सो कहते हैं सुनो मनमें किसीबातका अभिमानरखना व दुर्बचन कहना व दूसरेको धनपात्रदेखकर डाहकरना व बिनाप्रयोजन अधिकबोलना व स्त्री व पुत्रोंसे बहुतप्रीति करनीउचित न होकर परमात्माको शरीरसे अलग समझना न चाहिये जिसतरह काठमें आग छिपीरहकर उपाय करने से प्रकटहोती है और काठ जलादेने से वह अग्नि उससे बिलगहोकर फिर उसके साथ नहीं रहती उसीतरह प्रकाशपरमेश्वरका सबजीवोंमें रहकर जबवे अपनी शक्ति शरीरसे खींचलेते हैं तब मर जाता है वहलोथ जलादेने से आत्माको कुछदुःख नहीं पहुँचता व परमात्माकाप्रकाश सबजीवों के तनमें एकसादेखने से कुछडर न होकर भेदसमझने में अनेकतरहका भय लगारहता है इसलिये आत्माको सबजगह बराबर जानकर संसारीमाया से छूटनेवास्ते आठोंपहर उपाय करनाचाहिये हे उद्धव इसतरहका ज्ञान रखनेवाला मनुष्य अवश्य मुक्त होता है ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का उद्धव को ज्ञान सिखलाना ॥

केशवमूर्त्तिने कहा हे उद्धव संसारमें दुःख व सुख मायाके गुणोंसे होकर मुझे वह

माया नहींब्यापनेसक्ती जिसतरह स्वप्नमें कोईमनुष्य अनेकतरहका हर्ष व बिषाद देख-
कर जागने उपरान्त सबझूठा समझता है उसीतरह संसारीब्यवहार झूठा होकर पर-
मेश्वरकी माया से सच्चमालूम होता है व जीवात्मा सबके तनुमें मेरीशक्ति होकर जब
तक वहजीव मुझेनहीं पहिंचानता तबतक मुझसेबिलग रहता है व मेराभेद जानने
वाले इसतरह मेरेस्वरूप में लीनहोजाते हैं जिसतरह शीशेमें अपनी परछाहीं दिखलाई
देकर उसको उलटनेसे फिरवहरूप नहींदेखपड़ता व मूर्खमनुष्य शीशा अज्ञानके हाथ
में रखकर अपनेको मुझसेबिलग समझते हैं ज्ञानीलोग गृहस्थाश्रम रहने व सबजगत्
का काम करनेपरभी मनअपना बिरक्तरखकर संसारीजालमें नहींफँसते ज्ञान व बैराग्य
दोनों मुक्तिदेनेवाले होकर अज्ञानीमनुष्य को सिवाय दुःखके कुछसुख नहीं मिलता
परमेश्वरके शरणजानेमें ज्ञानप्राप्त होकर उनसे बिमुख रहनेवाले ज्ञान नहींपाते जिस
तरह हवा सुगन्ध व दुर्गन्ध दोनोंतरहकी बस्तुमें होकर बहती है परदोनों से बिलगरह
कर कुछसुगन्ध व दुर्गन्धका प्रवेश उसमें नहींहोता उसीतरह ज्ञानीकोभी किसीकी ब-
ड़ाई करनेमें प्रसन्नहोना व दुर्बचन कहनेसे खेदमानना न चाहिये जो लोग अपनी स्त्री
व पुत्र व हाथी व घोड़ा आदिकका रोगदेखकर मेरीमाया लपटने से शोचकरते हैं उन
को मूर्ख समझनाउचित है किसवास्ते कि उनके शोचकरने से कुछगुण नहींनिकलता
सबको अपने कर्मानुसार दुःख व सुख मिलताहै इसलिये ज्ञानी को चाहिये कि हानि
व लाभ व दुःख व सुख परमेश्वर की इच्छापर जानकर अपनेको किसी बातमें अगु-
आ न समझै जो कोई वेद व शास्त्र पढ़कर नारायणजी की भक्ति नहीं रखता उसका
पढ़ना व्यर्थ है बूढ़ी व बांझगाय का रखना व कर्कशास्त्री व अधर्मी सन्तानका पालन
करना धर्मकी राहहै किसवास्ते कि उनसे कुछ प्राप्त नहीं होता व जो लोग धनपाकर
दान व धर्म आदिक शुभकर्म में खर्च नहीं करते व उसको अपना समझकर रखछो-
ड़ते हैं उस द्रव्यका होना व न होना दोनों बराबर होकर उन्हें कुछ सुख नहीं मिलता
इसलिये ज्ञानीको धनपाकर यज्ञ व तीर्थ व दान व धर्ममें खर्चकरके उसकाफल परमे-
श्वर को अर्पण करदेना चाहिये जिसमें लोक व परलोक दोनों बनपड़ें इतना ज्ञान
सुनकर उद्धवने बिनयकी महाराज आपने त्रिभुवनपति होकर केवल हरिभक्तों को
भवसागरपार उतारने वास्ते नरतनु धारणकिया है सो दयालु होकर मुक्ति होने का
उपाय बतलाइये यहबचन सुनकर बैकुण्ठनाथने कहा हे उद्धव जो गृहस्थ संसारीकाम
करनेपर भी मन अपना मेरीतरफ लगाये रहकर मुझे अपना मालिक व उत्पन्नकरने
वाला समझै व किसीका बुरा न चाहकर अधिक तृष्णा न रक्खै व अपने शरीर के
समान मुझे प्यारा जानकर गुरूका बतायाहुआ मंत्र जपै व हर्ष व शोच को बराबर
समझकर काम व क्रोध व मोह व लोभ व भूख व प्यासके बश न होवै व सि-
वाय हरिभक्ति के दूसरी चाहना न रखकर ठाकुरपूजा व भजनमें प्रीतिकरै व किसीके

गालीदेने से खेद न मानकर मेरीशक्ति सबजीवोंमें बराबर समझै व अपनी सामर्थ्यभर परोपकारकरके परमेश्वर की लीला व कथा सुनने में मग्नरहै व सिवाय स्मरण व ध्यान सगुणरूप मेरेके दूसरा कुछ उद्यम न रक्खे देवस्थान उत्तम बनवाकर ठाकुरके पुष्प चढ़ानेवास्ते बाटिका लगवादेवे व जो कुछ धन घरमेंहो उसे परमेश्वर का जान कर अपना न कहे व जो कुछ अच्छीबस्तु भोजन वास्ते मिले वह पहिले ठाकुर को भोग लगावै फिर उसमें ब्राह्मण आदिक चारोंबर्ण व अपने कुल परिवारवालों को थोड़ा २ देने उपरान्त आपखावे व प्रतिदिन सूर्यको दण्डवत् और अग्निमें होमकरके ब्राह्मणको इच्छाभोजन खिलावे व अपने सामर्थ्यभर दान व दक्षिणा दियाकरै व गौकी सेवा आप करके सबजगह बीचजल व पृथ्वी व आकाश आदिकके हमारा चतुर्भुजी स्वरूप ध्यानमें देखै व प्रतिदिन देवताओं के नाम होम व पितरोंके नाम तर्पण करके तालाब व बावली व कुयें व धर्मशालाआदिक जीवोंके सुखपावनेवास्ते बनवादेवे व गरीब मनुष्य व ब्राह्मणोंका स्थान बनवाकर उनकी कन्या बिवाहनेवास्ते आप द्रव्यदेवै और साधु व महात्माओं की सुधि खाने व पहिरनेसे लेकर इसबात का अभिमान मनमें न लेआवै कि यह शुभकर्म हमने किया व दूसरेके सामने भी इसकी चर्चा व अपनी बड़ाई न करे जो लोग शुभकर्म करके अपने मुखसे कहते हैं जिह्वामें अग्निदेवता का वासरहनेसे उनका पुण्यजलजाताहै हे उद्धव इसतरहका धर्म व कर्म रखनेवाले मनुष्य से मैं बहुत प्रसन्न रहताहूं पर बिना सत्सङ्ग किये यहसब ज्ञान प्राप्त नहीं होता साधु व महात्माकी संगति करने व मेरे ध्यान धरनेसे मनुष्य ज्ञान पाकर भवसागर पार उतर जाता है ॥

बारहवां अध्याय ॥

बैकुण्ठनाथका उद्धवसे सत्सङ्गका माहात्म्य कहना ॥

श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव मैंने यज्ञ व तप व दान व धर्म व बैराग्य आदिकका हाल तुमको सुनाया अब सत्सङ्गकी महिमा जिससे भक्ति उत्पन्न होतीहै कहताहूं सुनो जैसा हमैं सत्सङ्ग प्याराहोकर भक्तिकरनेमें जल्दी प्रसन्नहोताहूं वैसा वेद पढ़ने व योगाभ्यास साधने व व्रत आदिक रखनेवालों से सुख नहीं पाता केवल सत्सङ्ग करनेसे मेरे चरणों में भक्ति उत्पन्न होकर संसारी जीव मुझे पहिचानते हैं और वे लोग जगत् में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय आवागमन से छूटजाते हैं देखो राजाबलि व बाणासुर व सुग्रीव व हनुमान् व जाम्बवन्त व जटायु व कुब्जा व ब्रजबासी आदिक अनेक जीव मेरीभक्ति व दर्शन करने से भवसागरपार उतरगये व शबरी व निषाद आदिक अनेक जीव नीच ऊंचजाति भक्तिकरने से मुक्तिपदवी पर पहुँचे व गोपियों ने कुछ वेद व शास्त्र न पढ़ने व तीर्थ व्रत न करने व मेरी महिमा न जानने पर भी

मुझे पतिभाव समझकर ऐसीप्रीति मेरेसाथकी कि हमारे वियोगमें उनको क्षणभर एक कल्पकेसमान मालूम होकर मेरेसंग रास करती समय छःमहीनेकी रात एक पलभर जानपड़ी थी सो उन्होंने उसीप्रीति व भक्तिके प्रतापसे लक्ष्मीरूप होकर बैकुण्ठबास पाया जिस तरह कोई जान व अनजान में अमृत पीनेसे अमर होकर उत्तम औषध खानेसे सदा तरुण बना रहताहै उसीतरह जाने व बिनाजाने मेरीभक्ति व प्रीति करने वाले मनुष्य संसारमें सुख पाकर जन्म व मरणसे छूटजाते हैं जैसे तागेमें दाने काठ व रुद्राक्ष व सोने आदिकके पिरोकर माला बनती है उसी तरह संसारीजीव मेरे स्वरूपमें रहतेहैं पर यहबात बिनाबतलाने गुरू व सुनने कथा व करनेसत्सङ्गके मालूम नहीं होती इसलिये संसारी मनुष्यको गुरूकी सेवा व भक्तिकरनी व ज्ञानरूपी तलवारसे मायारूपी संदेह काटकर सबजीवोंमें परमेश्वरकी शक्ति बराबर समझनीचाहिये यह सब ज्ञानसुनकर उद्धवने बिनयकी हे दीनानाथ जब भक्तिकी इतनी बड़ी पदवी है तब आपने यज्ञ व तप आदिक अनेकतरह के धर्म क्यों बनाये हैं श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव यज्ञ व तप आदिक कर्मकरने से भी गुण निकलताहै जिसमें हरिचरणोंकी भक्ति उत्पन्नहो जिसने भक्ति पदार्थपाया उसे दूसरा धर्म व कर्म करना न चाहिये ॥

तेरहवां अध्याय ।

श्यामसुन्दरका उद्धवको ज्ञानबतलाना ॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव सात्विक व राजस व तामस तीनगुण मायाके होकर परमात्मा इनतीनों से बिलग रहताहै जिससमय सात्विक शरीरमें अधिक होताहै उस समय धर्म व शुभकर्म की ओर मनुष्यकामन लगता है व सात्विकी स्वभाववाले को संसारमें सबलोग अच्छा कहते हैं जो मनुष्य क्रोध अधिक रखकर कुछकर्म कियाकरै उसेतामसी समझना चाहिये व जिनके शरीरमें राजस अधिक होताहै वे लोग सुख की चाहना बहुतरखतेहैं इसलिये ज्ञानी मनुष्यको उचितहै कि आठोंपहर मनअपना सात्विककी ओर लगाये रखकर ऐसाकर्म व धर्म करतारहै जिसमें मेरीयाद उसको न भूले यहसुनकर उद्धवने बिनयकी हे महाप्रभु जब मनुष्यने जाना कि यहकर्मबुराहै व इसके करने से मुझे दुःखहोगा तब वह जानबूझकर कष्ट देनेवाला कामकरके गर्भ व नरकमें सदा क्यों दुःखउठाताहै वैसाकर्म किसवास्ते नहीं करता जिसमें जन्म व मरणसे छूटजावै कौनमनुष्य ज्ञान उसका फेरकर कुकर्मकीओर लगादेताहै यहसुनकर त्रिभुवनपतिने कहा हे उद्धव उसकी बुद्धि नष्टकरनेवाली दो बस्तुहोकर उनमें एक तृष्णाहै जब मनुष्यको किसीबस्तुकेलेनेवास्ते चाहनाहुई व दूसरा कोई उसमें बाधक हुआ तब क्रोध उत्पन्नहोताहै और यही दोनों तृष्णा व क्रोध सब जीवोंसे अशुभकर्म

कराते हैं व मुझसे बिमुखरखकर उनका परलोक बनने नहीं देते जिसतरह चोर व लम्पट द्रव्यलेने व परस्त्री गमनकरनेवास्ते दूसरेके घरजाकर पकड़ेजाते हैं उसीतरह जबतक मनुष्य मुक्तिपदवीपर नहीं पहुंचता तबतक चाहना व क्रोधके बशमें रहकर जन्म व मरणकादुःख उठावताहै जिसने काम व क्रोधको जीतकर मुझे अपनामालिक व उत्पन्न करनेवाला जाना उसको ज्ञानी व मेराभक्त समझना चाहिये यहसुनकर उद्धवने विनयकी महाराज आपने सब यदुबंशियोंको किसवास्ते मुक्ति नहींदी एक पर दयाकरना व दूसरेको अभागी छोड़ना क्या कारणहै श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव हम पहिले तुझसे कहचुके हैं कि ज्ञान व अज्ञानके दोमार्गहैं कदाचित् एक होता तो किसी मनुष्यको शोच व डर पूजा व भजन शुभ व अशुभ नरक व स्वर्गका न रहता हे उद्धव संसारमें दोतरहके मनुष्य एक आत्माराम व दूसरे दयारामहोकर आत्माराम उसको कहना चाहिये जो आठोंपहर परमेश्वरके स्मरण व ध्यानमें लीनरहकर धन व संसारीसुख मिलनेमें हर्ष व उसकी हानिहोनेसे कुछ बिषाद नहीं करता व दयाराम उसको समझना उचितहै जो संसारमें द्रव्य व सुन्दर स्त्री व पुत्र आज्ञाकारी मिलने से प्रसन्नरहकर उन सबके बियोगहोनेमें शोचउठाते हैं इसलिये ज्ञानी मनुष्य को चाहिये कि अपने बर्ण व आश्रमके धर्मानुसार चलनरखकर अपनीक्रिया कभी न छोड़े अपनेधर्मसे फिरने में ब्रह्महत्याकेसमान पापहोताहै हे उद्धव एकबेर सनत्कुमारआदिक ने ज्ञानका अभिमान अपनेमनमें उत्पन्नकरके ब्रह्मासे यहबात पूछीथी कि संसारी मनुष्यका मन पंचभूत आत्मासे क्योंकर बिलगहोताहै हमने सबतीर्थोंका स्नानकिया व आठोंपहर कथा व लीलापरमेश्वरकी आपसमें कहते व सुनते रहते हैं तिसपर भी मन हमारा आजतक संसारी चाहना से बिरक्त नहींहुआ इसका क्या कारण है जब ब्रह्मा उसका उत्तर नहींदेसके व दूसरेदेवता जो वहां बैठेथे ब्रह्माको हँसनेलगे तब ब्रह्माने बहुतलज्जित होकर मुझे यादकिया उससमय मैं उनकीबात रखनेवास्ते वहां चलागया व बीचतनु हंसपक्षी श्वेतवर्ण बाहन ब्रह्मा जो सभासे बाहर बैठाथा प्रवेश करके सनकादिक के निकट चलागया व उनलोगोंका अभिमान तोड़नेवास्ते बोला तुम क्यापूछतेहो यहबातसुनकर सनत्कुमारने कहा तुम कौनहो तब मैंने उत्तर दिया हम व तुम बिलग न होकर शरीर के अलग रहनेपर भी पंचभूतआत्मा जिसको प्राणकहते हैं हमारे तुम्हारे अङ्गमें एकहै इसलिये पूछनातुम्हारा बृथाहै जब तुमअज्ञान बालककी तरह प्रश्नकरतेहो तब ब्रह्माजी तीनोंलोकों की रचनाकरनेवाले तुमको क्या उत्तरदेवें हे सनत्कुमार जिसतरह अज्ञानी मनुष्य मनमें मनसूबा बिचारकर संसार के सब सुख भोगलेते हैं परवहसुख उनको प्राप्त नहींहोता उसीतरह संसारी ब्यवहार व यह शरीर झूठहोकर परमेश्वरकी मायासे चार दिनवास्ते सच्चामालूम होताहै जैसे अँधेरेमें रस्सीपड़ीहुई देखकर सांपका संदेह होजाता है वैसे अनेक शरीर नाशहोने

वाले बिलग बिलग दिखलाई देकर जीवात्मा चौरासीलाखयोनि में मेरा प्रकाशरहताहै इसलिये शरीरको रस्सीरूपी झूठासांप समझकर इस अंगनाश होनेवाली बस्तुसे प्रीति रखनी न चाहिये मेरीशक्ति निकलजानेसे यह शरीर कुछकाम नहीं आवता जिसतरह बादल समुद्रकाजल सोखकर बरसाते हैं तो फिर वह पानी नदी व नालेकी राहबहकर समुद्रमें मिलजाता है उसीतरह जितने जीव जड़ व चैतन्य संसार में दिखलाई देतेहैं वे सब मेरीइच्छासे उत्पन्नहोकर मरने उपरांत जीवात्मा सबका फिर मेरेरूपमें समाजाताहै जो लोग संसारीव्यवहार झूठासमझकर मायारूपी जालमें नहीं फँसते व बिरक्तहोकर हरिचरणोंमें सच्चीप्रीति करते हैं उन्हें तुरन्त मेरा दर्शनहोकर बैकुण्ठ का सुख मिलताहै जिसतरह मदिराकेनशेमें मनुष्य मतवालाहोकर अपने तनु व बस्त्रकी सुधि नहीं लेता उसीतरह हरिभक्तलोग भी मेरेध्यानमें लीन रहकर अपने शरीर की सुधि नहीं रखते व मैं यज्ञ व तप आदिक शुभकर्म्मों का फल देनेवाला होकर सब किसीको उसके कर्मानुसार जन्मभर भोजन व बस्त्र देताहूं हे सनत्कुमार मन चाहना से कभी नहीं बिलगहोता इसवास्ते हमने मत्स्यावतार धारणकरके राजा सत्यब्रतको ज्ञान उपदेश कियाथा जिसमें संसारीमनुष्य हमारी कथा व लीला सुनकर उसीज्ञान के प्रमाण मेरा स्मरण व ध्यानकरैं व संसारीतृष्णा छोड़कर हरिचरणों में प्रीतिलगावैं व जिसतरह संसारमें पूर्ब व पश्चिम आदिक चारोंओर जानेकी राहैं बनी हैं उसीतरह यज्ञ व तप दान व धर्म तीर्थ व ब्रत सत्संग व भक्ति आदिक मेरेपास पहुँचने वास्ते रास्ते बने हैं जो मनुष्य जिस मार्गपरचाहै उसपर सच्चेमनसे चलै मेरे निकट पहुँच जायगा सनत्कुमारआदिक यह ज्ञान सुनतेही बहुत लज्जितहोकर अभिमान अपना भूलगये व अपने मनका सन्देह छोड़कर हंसरूपी भगवान्‌को दण्डवत्‌की व बहुतसी स्तुति करने उपरान्त उनसे बिदाहोकर अपने स्थानपर चलेगये और हम अभिमान उनका तोड़कर बैकुण्ठमें चलेआये ॥

चौदहवां अध्याय ॥

उद्धवको वेद व शास्त्रका हाल श्रीकृष्णजी से पूछना ॥

उद्धव ने इतनी कथा सुनकर श्यामसुन्दरसे बिनयकी हे दीनानाथ अनेक मुनि व योगीश्वरों ने वेद व शास्त्रमें आपके मिलने वास्ते यज्ञ व तप आदिक अनेक राहैं लिखी हैं सो तुम्हारे निकट पहुँचनेका जो रास्ता सहजहो वह बतलाइये श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव जब ब्रह्मा कमलके फूलसे उत्पन्नहुये तब उन्हों ने वेद जो मेरेश्वासा हैं हमारी इच्छासे पाकर भृगु ऋषीश्वरआदिक अपने पुत्रोंको पढ़ाया व ऋषीश्वरों ने अर्थ उसका देवता व दैत्य व गन्धर्ब्ब व बिद्याधर व यक्ष व किन्नर आदिकोंको सिखलाया उनमें जिनको जितना ज्ञानथा उसने वह समझकर संसार में फैलाया पर उस

वेदके निजअर्थ को कोई नहीं पहुँचा व बाजे मनुष्य काम व क्रोध व स्त्री व पुत्र व कोई यज्ञ व तप व बाजे तीर्थ व व्रत व कोईदान व धर्मको उत्तम मानते हैं पर इन सब कर्मों से मनुष्य भवसागर पार उतरने नहीं सक्ता व जितनी बस्तु संसार में दिखलाई देती हैं एकदिन इन सबका नाश अवश्यहोगा जो लोग परमेश्वरका स्मरण व ध्यान उत्तम समझकर उसमें अपना मन लगाये रहते हैं व संसारी बस्तुकी कुछ चाहना न रखकर इन्द्रलोक आदिकका सुखभी कुछ माल नहीं समझते व सिवाय भक्ति हरि-चरणोंकी मुक्तिपदार्थ भी नहीं चाहते जो मनुष्य बिना इच्छासे मेरीभक्ति व सेवाकरते हैं व सबको अपना मित्र जानकर किसीके साथ शत्रुता नहीं रखते उन भक्तोंके लक्षण कहते हैं सुनो वेलोग आठों सिद्धियां प्राप्त रहनेपरभी उनकी ओर न देखकर आठों पहर मन अपना मेरीओर लगाये रहते हैं व मैं उनको सातोंद्वीप व तीनोंलोकों का राज्य व मुक्तिपदार्थ देताहूं सोभी नहीं लेते इसलिये उनसे लज्जित रहकर उनके पीछे पीछे फिरनेउपरान्त दिनरात यहीबिचारकरताहूं कि कौनबस्तु इन्हें देकर इनकी सेवासे उऋणहोजाऊं जिसजगह वे भक्त चरण अपना रखते हैं वहांकीधूरि उठाकर इसकारण अपने अंगपर मललेत'हूं जिसमें करोड़ों ब्रह्माण्डके जीव जो मेरेशरीरमें रहते हैं उसके लगने से पवित्र होजावे हे उद्धव उन भक्तों के बराबर मैं अपने शरीर व लक्ष्मी व महादेवजी को प्यारा न जानकर सबसे उनको उत्तम समझताहूं जब मेरा कोईभक्त संसारीमायामें लपटकर नष्टहोने चाहता है तब मैं उसके हृदय में ज्ञान प्रकाशकरके कुकर्म करने से बचालेताहूं व जो हरिकथावार्त्ता सुनतेसमय मेरे प्रेममें डूबकर रोदेते हैं उनका पाप आंशूकी राह बहकर अन्तःकरण शुद्ध होजाताहै व मच्छड़ आदिक अन-जानमें मरजानेका दोष उनको नहीं लगता जैसा भक्तिकरने से मैं तुरन्त मिलताहूं वैसी दूसरीराह सहज मेरे निकट पहुँचने वास्ते नहीं है जिसतरह आगमें डालदेने से सोनेका सब मैल छूटजाताहै उसीतरह भक्तिकरने से शरीरमें पाप नहीं रहता पर यह सब बात चित्तके आधीन होकर यही मन संसारी मायामें लपटने से नष्ट होताहै व मेरीओर ध्यान लगावनेवाले मनुष्य संसारमें अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय बैकुण्ठबास पाते हैं इसलिये मनुष्यको स्त्री व लम्पटपुरुषकी संगति से अलग रहकर मेरीओर मन लगाना चाहिये जैसा उनकी संगति करने से तुरन्त मनुष्यका ज्ञान छूट जाताहै वैसा दूसरीतरह नहीं बिगड़ता अब हम तुमको परमेश्वरकी ओर मन लगाने की रास्ता बतलाते हैं सुनो अकेले बैठकर पहिले मन अपना एकाग्रकरै फिर अपने कमलरूपी हृदयमें मेरे चतुर्भुजी स्वरूपका ध्यान लगावे जिसतरह आमकी गुठली बोते हैं तो उसके फुनगाको बकरी आदिकके खानेका भय लगारहताहै जब रक्षाकरने से वह बृक्ष तैयार होजाताहै तब हाथीभी उसको उखाड़ने नहीं सक्ता उसीतरह जब प्रतिदिन मेराध्यान व स्मरण करने से संसारीमाया छूटकर जब बृक्षरूपी भक्ति हृदयमें

जड़ पकड़लेती है तब फिर कम नहीं होती व योगाभ्यास साधने व इन्द्रियों को बश करने से अष्टसिद्धियां बनी रहती हैं सो हे उद्धव तुम हरिभक्तोंकी बड़ीपदवी समझकर मेरी भक्ति सच्चेमनसे कियाकरो तुम्हारा मनोरथ पूर्ण होजायगा ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी को उद्धवसे अष्टसिद्धियोंका हाल कहना ॥

इतनी कथा सुनकर उद्धव ने बिनयकी हे महाप्रभु आपने कहा कि योगसाधने व इन्द्रियों को बश करने से अष्टसिद्धियां बनी रहती हैं सो उनमें क्या गुणहै श्याम-सुन्दरबोले हे उद्धव आठसिद्धि बड़ी व दशसिद्धि छोटीहोकर उनमें एकसिद्धि ऐसा गुण रखती है कि बूढ़ामनुष्य चाहे तौ अपनेको लड़का बनालेवे व दूसरी छोटे शरीर को बड़ा बनाकर तीसरी ऐसी सामर्थ्य रखती है कि अपना शरीर रूईकेसमान हलका बनाकर जहां चाहै वहां उड़ताहुआ चलाजावे चौथी हलके से भारी बनाने की सामर्थ्य रखकर पांचवीं में ऐसा गुण है कि हज़ारों कोशका हाल बैठाहुआ देखलेवे छठी सिद्धिसे हज़ारों कोशकी बात सुनकर सातवीं में ऐसागुणहै जो बस्तु जहांसे चाहै मँगवालेवे आठवीं से सब देवता बशहोजाते हैं यह सामर्थ्य आठों बड़ी सिद्धिमें है नवीं सिद्धिसे अंगपर बुढ़ापा प्राप्त न होकर दशवीं में यह सामर्थ्य है कि जिसजगह मन दौड़ावे वहां एकक्षणमें पहुँचजावे ग्यारहवीं से दूसरेका स्वरूप आप बनाकर बारहवीं में यह सामर्थ्य है कि अपने प्राण को दूसरे तनुमें प्रवेश करदेवे तेरहवीं सिद्धिसे जब चाहै तब मरै चौदहवीं सिद्धिमें यह सामर्थ्य है जिसकेवास्ते मनचाहै वहां जाकर उसके संगमें बिहारकरै पन्द्रहवीं सिद्धिसे जिसबस्तुकी चाहना मनमें उत्पन्नहो वह उसीसमय आनकर प्राप्त होजावे सोलहवींसे जिसको जो आज्ञादे वह मानकर भूत व भविष्यत् वर्त्तमान तीनोंकालका हाल जानलेवे व सत्रहवीं सिद्धिसे दूसरेके मनकीबात जानकर कुछ गर्मी व सर्दी उसको न व्यापै अठारहवींसे जलतीहुई आग व बढ़ताहुआ पानी रोककर जिसेचाहै उसको विषकी गर्मी प्रवेश करने न देवे सिवाय इन अठारह सिद्धि के जन्म व औषध व तप व मन्त्रचारसिद्धि और योग साधने से मिलती है जन्म सिद्धिवाला जहांचाहै वहां जन्मलेवे व औषध सिद्धिवाला जिसे जो औषध देवे वह अमृतकेसमान गुणकरै व मन्त्र सिद्धिवाला मन्त्र पढ़कर जो बात कहै वह सचहोजावे व तप सिद्धिवालेका तप कोई बिघ्न नहीं करनेसक्ता हे उद्धव ये सब सिद्धियां एक२ गुण रखती हैं व मैं सब सिद्धियोंका फल देनेवालाहूं व उन सिद्धियोंके बश करनेका यह उपायहै सुनो अग्निमें गर्मी व बीच जलके सर्दी व पृथ्वीपर कड़ाई व हवा को स्पर्श व आकाशमें शब्द ये पांचोंबातें मेरीकृपासे हैं जो कोई इन पांचों बस्तुओंमें मेरा ध्यान लगाकर सच्चेमनसे मेरीमहिमा समझै उसको पहिलीसिद्धि मिलती है व पांचों

भूतात्मा व आकाश व अग्निआदिकका जो ध्यानकरै वह दूसरी सिद्धिपावै व मेरे बिराट्रूपका ध्यानकरने से तीसरीसिद्धि व चतुर्भुजी व छोटेरूपका ध्यानरखने में चौथीसिद्धि व महत्तत्त्वरूपका ध्यानकरनेसे पांचवींसिद्धि व अहङ्काररूपका ध्यानरखने में छठीसिद्धि व विष्णुरूपका ध्यान लगानेसे सातवींसिद्धि व वासुदेवरूपका ध्यान धरनेमें आठवींसिद्धि व निराकार रूपका ध्यानकरनेवाले संसारीचाहना छोड़कर परम आनन्दरहते हैं व परमेश्वरका श्वेतरूप ध्यान धरनेमें कभीबूढ़ा नहींहोता व अपने शरीरमें परमात्माका ध्यानकरनेसे दूसरीबात सुनाईदेकर सूर्यरूपी परमेश्वरमें ध्यान लगानेसे हजारोंकोशकी बस्तु दिखलाई देती है व बायुरूपी परमेश्वरका ध्यानकरनेसे एकक्षणमें जहांचाहै वहांपर चलाजावै व योगाभ्यास करके अग्निमें मनलगावै तो अपनारूप जैसाचाहै वैसा बनालेवे व अपने हृदय में आत्माका ध्यानरखनेसे दूसरे तनु में अपनाजीव प्रवेश करनेकी सामर्थ्य होजाती है व सतोगुणका ध्यानकरनेसे जिसके संगचाहै उसके साथ बिहारकरताफिरै व मनुष्य आठोंपहर अपने मनमें यह बिचार करता रहै कि सब बात परमेश्वरकी आज्ञासे होती है उसको सबछोटे बड़े मानते हैं व साथ योगाभ्यास के अपनाश्वास ब्रह्माण्डमें चढ़ानेसेभूत व भविष्यत् वर्त्तमानतीनों कालकीबातैं मालूमहोती हैं व अग्नि व जलआदिक पांचोंतत्त्वके ध्यान करनेवाले जलतीहुई आग व बढ़ताहुआपानी रोकदेने सक्ते हैं व जो मनुष्य इन्द्रियों को अपनेबशमें रखकर सच्चेमनसे मेरेचरणोंका ध्यान करता है उसके सामने अठारहोंसिद्धियां हाथजोड़े खड़ीरहती हैं पर उन सिद्धियों के सुखमें फँसनेवाला मनुष्य नष्टहोकर मुझे नहीं पावता व जो लोग मेरेचरणों में ध्यानलगाये रहकर उस सुखको कुछमाल नहीं समझते वह संसार में अपनी मनोकामना पाकर अन्तसमय चतुर्भुजी रूपसे बैकुण्ठ बास करते हैं ॥

सोलहवां अध्याय ॥

उद्धवजी से श्रीकृष्णजी को मुख्यज्ञान भगवद्गीताका कहना ॥

उद्धव ने अठारहों सिद्धियों का हालसुनकर त्रिभुवनपतिसे पूंछा हे दीनानाथ आप देवता व वृक्षादिक में कहां २ बिराजते हैं श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जिससमय महाभारत होनेवास्ते अठारह अक्षौहिणीदल कुरुक्षेत्रमें इकट्ठाहुआ व अर्जुनने द्रोणाचार्य व भीष्मपितामह आदिक अपनेगुरू व परिवारवालों को दुर्योधनकीओर देखकर युद्धकरना अंगीकार नहींकिया उससमय मैंने थोड़ीसी महिमा अपनी अर्जुन से कहकर बिराट्रूप अपना उसे दिखलाया और उसका मोह छुड़ाकर महाभारत करायाथा वही हाल तुमसे कहताहूं सुनो जो मनुष्य अज्ञानवश सबजीवों में मेरा प्रकाश देखने न सकै तौ इन सबजगह जो नाम हमसुनाते हैं अवश्य मेरा चमत्कार

समझै सबजीवों में आत्मा बोलतापुरुष मैं होकर आदि व मध्य व अन्त सबको मुझे जानना चाहिये व सूर्य्यदेवताकी बारहकला होकर हरमहीने में वह अपने नये स्व-रूपसे प्रकाशकरते हैं उसमें बिष्णुनाम स्वरूप व उञ्चासपवन में मरीचिनाम बायु व तारागणों में चन्द्रमा चारोंवेदों में सामवेद व देवताओं में ब्रह्मा व इन्द्र व बरुण व कुबेर व स्वामिकार्त्तिक व यमराज व ग्यारहोंरुद्रों में शंकरनाम महादेव व पांचों तत्त्वों में अग्नि व पहाड़ोंमें सुमेरु व गौवों में कामधेनु दिव्यपितरों में अर्यमा नाम पितर व प्रजापतियों में दक्ष व चारोंवर्णों में ब्राह्मण व चारोंआश्रमों में संन्यासी व नदियों में गंगा व रागों में दीपक व धातुओं में सुवर्ण व हाथियों में ऐरावत व घोड़ों में उच्चैःश्रवा व यज्ञों में ज्ञानयज्ञ व पुरोहितों में वशिष्ठ व स्त्रियोंमें शतरूपा व राज-ऋषीश्वरों में स्वायम्भुवमनु व युगों में सतयुग व सेवकों में हनुमान् व कथा बांचने-वालोंमें वेदव्यास व दानियोंमें राजाबलि व रत्नों में कौस्तुभमणि व घासों में कुशा व पंचगव्यों में घृत व दशोंइन्द्रियों में ग्यारहवांमन व नवग्रहोंमें बृहस्पति व ऋषी-श्वरों में भृगु व मंत्रों में ॐकार व वृक्षों में पीपल व देवऋषीश्वरों में नारदमुनि व सनत्कुमार व वैष्णवों में कपिलदेव व सातोंसमुद्रोंमें क्षीरसागर व मनुष्यतनु में राजा व सर्पोंमें वासुकि व नागोंमें शेषनाग व दैत्यों में प्रहलादभक्त व पशुओं में सिंह व पक्षियों में गरुड़ व शूरबीरों में परशुराम व वेद व शास्त्र में गायत्री व बारहोंमास में अगहन व ऋतुओं में बसन्तऋतु व पुष्पों में गुलाब व सच्च बोलनेवालों में सचाई व गन्धर्व्वों में बिश्वाबसुनाम गन्धर्ब व अप्सरों में पूर्व्वचित्ती नाम अप्सरा व पांचोंभाइ पांडवों में अर्जुन व विद्याजाननेवालोंमें शुक्राचार्य व यदुबंशियोंमें वासुदेव मैं हूं और वहकाम जिसमें मनुष्य सन्तान उत्पन्न होनेवास्ते इच्छा रखकर अपनीस्त्रीसे भोगकरता है मुझे समझनाचाहिये व जो लोग अपनी बड़ाईकी चाहना रखकर ज्ञानसे शुभकर्म करते हैं वहइच्छा व ज्ञान मैं हूं व जितनीबातें छलकी हैं उनमें श्रेष्ठजुआ व मायारूपीलक्ष्मी मैं हूं व जड़ सबजीवोंकी मैं होकर बिनाशक्ति मेरेकोई जीव चलने व हिलनेकी सामर्थ्य नहींरखता कदाचित् कोईचाहे तो रेणुका व तारे व बर्षाकीबूंदें गिनलेवैपर मेरीबिभूतियों की गिनती नहीं करसक्ता है उद्धव संसारकी उत्पत्ति व पालन व नाश मेरीबिभूतियों से होता है व तुम जितनीबस्तु संसार में देखतेहो सबमें मैं हूं इसलिये मेरेभेद व म-हिमाको पहुंचना बहुत कठिन है देखो संसारीमनुष्य बहुतसा अन्न व घृत आदिक जो अग्नि में यज्ञ व होम करते हैं उसके करने से यहउत्तम है कि अपनी चाहना कोजो काम व क्रोध व मोह व लोभके बशहोकर कुकर्म्मोंकी ओरदौड़ती है ज्ञानरूपीअग्नि में जलादेवै व ज्ञानी उसको कहनाचाहिये जो अपनेगुणको आदरपूर्व्वक एक जगह लिये बैठारहै द्वारे २ फिरकर अपना अपमान न करावे व बहुतद्रव्य रखनेवालोंको धनीपात्र जानना उचित न होकर जो मेरीभक्ति व प्रीतिरखता हो उसे धनवान् सम-

झनाचाहिये व जोलोग अपनीस्त्री को ओटमें रखते हैं उनको लज्जावान् न जानकर कुकर्म से रहित रहनेवाले को श्रेष्ठसमझना उचित है व जो मनुष्य रणभूमिमें बाण व खड्गादिकघाव उठाकर बहुतयुद्ध करते हैं उनको शूरबीर समझना वृथाहोकर रणधीर उसे जानना चाहिये जो अपने काम व क्रोध व मोह व लोभ व इन्द्रिय व मन अति बलवान् शत्रुओं को जीतकर उनकेबश न होवे हे उद्धव मैंने तुझे अपनाभक्त जानकर थोड़ासाहाल सुनादिया तुम अपनेमन व इन्द्रियों को बशमेंरखकर मेराध्यानकरो अठारहों सिद्धियां तुम्हारेपास बनीरहैंगी ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे चारोंयुगोंका हाल कहना ॥

उद्धवने यह सब महिमा त्रिभुवनपतिकी सुनकर पूछा हे दीनानाथ चारोंयुगों में कौनधर्म बड़ा होकर किसतरह लोग रहते थे श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव सत्ययुगमें श्वेतबर्ण व एक वेद होकर ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य व शूद्र चारोंबर्ण उसी रूपका ध्यान व वेदानुसार सबकाम करते थे व त्रेता में यज्ञावतारका ध्यान लगाकर यज्ञ होताथा व एक वेदसे चारवेद ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेद व अथर्वणवेद तय्यार होकर ऋग्वेद व यजुर्वेद व सामवेदकी क्रियानुसार यज्ञ करते थे व अथर्वणवेद केवल मंत्र व शस्त्रबिद्या जानने के वास्ते है व ब्रह्माने अपने मुखसे ब्राह्मण व भुजासे क्षत्रिय व जंघासे बैश्य पांवसे शूद्र चारोंबर्ण उत्पन्नकिये थे व संन्यासी मेरे शिर व ब्रह्मचारी हृदय व बानप्रस्थ पशुली व गृहस्थ जंघासे प्रकट होकर ब्राह्मणका यह धर्म्म है कि अपने मन व इन्द्रियोंको बश रखकर आचारसे पवित्ररहै व जो कुछ थोड़ा या बहुत धर्मकी कमाई से मिलै उसपर सन्तोष रखकर मेरा तप व ध्यान कियाकरै व किसीके दुर्बचन कहने से खेद न मानकर अधिक तृष्णा न रक्खे व हरिभक्त होकर झूंठ न बोले जिसमें इतने लक्षणहों उस ब्राह्मणको अपने कर्म्म व धर्म्मपर स्थिर समझना चाहिये व क्षत्रियके लक्षण यहहैं मुखारबिन्द उसका तेजवान् व शरीर बलवान्होकर मनमें धीर्यरक्खे व शूरताई ऐसी रखताहो कि घाव लगनेसे घबड़ा न जानै व चाकरी व ज़मींदारीसे अपना कुटुम्ब पालकर सामर्थ्यभर दान व दक्षिणा देवै व साधु व ब्राह्मण की भक्तिरखकर सच्चेमनसे उनकीसेवा व टहलकरै व बैश्यका धर्म्म यहहै कि व्यापार व खेती व महाजनीसे अपना परिवारपालै व द्रव्य उत्पन्नकरनेकी चाहना आठोंपहरमनमें रक्खे व सामर्थ्यभर दान व दक्षिणादेकर साधु व ब्राह्मणकी सेवा कियाकरै व शूद्रका धर्म्म यहहै कि ब्राह्मण व क्षत्रिय व बैश्य तीनोंबर्णकी सेवाकरनेसे जो कुछ मिले उसमें अपने दिनकाटकर अधिकतृष्णा न बढ़ावे चारोंबर्णोंको उचितहै कि जीवहिंसा व चोरी व कुकर्म्म आदिकसे रहित रहकर झूंठ न बोलैं व काम व क्रोध व मोह व लोभको अपने बशरखकर

ऐसाकाम करें जिसमें संसारी जीव उनसे प्रसन्नर हैं व कोई उनको बुरा न कहै व चारों आश्रमका धर्म्म यहहै कि ब्रह्मचारीको चाहिये कि गुरूके घररहकर मनसाबाचा कर्मणा से उनकी सेवा व आज्ञा पालनकरै व गुरूको मनुष्य न जानकर परमेश्वरभाव समझै व स्त्रीका अंग न छूकर उसकेपास न बैठे क्षौर न बनवावै व जो कुछ भीख मांग लेआवे सब गुरूके सामने धरकर उनका दियाहुआ खावे कदाचित् गुरू भोजन न देवै तो मांगना उचित नहीं है कामदेवको ऐसा अपने बशरक्खै जिसमें बीर्य्य न गिरै व कभी स्वप्न में बीर्य्य गिरजावे तो स्नानकरके दशहज़ार गायत्री मंत्रजपै व अपना तनु मन धन गुरूपर नेवछावर समझै और कोई अशुद्धबस्तु न खावे बिद्या पढ़ने व गुरुदक्षिणा देने उपरान्त गुरूसे बिदाहोवै व गृहस्थी करना चाहै तो अच्छे कुलमें अपने से छोटी अवस्थाकी कन्या बिवाहै और जब वह महीनेभर उपरान्त स्त्रीधर्म्म से होवे तब चौथे दिन एकबेर उससे प्रसंग कियाकरै व गृहस्थधर्म्म रखकर जो अभ्यागत व संन्यासी द्वारेपर आवे उसको कुछ भोजन व बस्त्र देकर प्रसन्न करना चाहिये खाली फेरदेना अच्छा नहीं होता गृहस्थाश्रम ब्राह्मणका उत्तम धर्म सुनो जो दाना अनाज काटने उपरान्त खेतमें पड़ा रहजाता है उसी को चुनकर भोजन करै या दूधभिक्षा जो कोई प्रसन्नतासे देवे उसे मांग लेआकर अपना कुटुम्ब पालै व मध्यमधर्म यहहै कि बिद्या पढ़ाने व कथा बांचने व यज्ञ कराने से अपनी जीविका रक्खे जब ब्राह्मणपर बिपत्ति पड़े तब हारमानकर खेती व व्यापार व चाकरीकरके अपना कुटुम्ब पालै व ब्राह्मण को अपने से छोटेबर्णकी सेवा करना न चाहिये व ब्रह्मचारीको बिद्या पढ़ने उपरान्त गृहस्थीकी चाहना न होवे तो बनमें जाकर परमेश्वरका तप व भजन करे जो क्षत्रिय व बैश्य गरीब ब्राह्मण मेरे प्राणरूपी को भोजन व बस्त्र देकर सच्चेमनसे उनकी सेवा करते हैं उनपर मैं बहुत प्रसन्नहो मुँहमांगा द्रव्य सन्तान देताहूं व क्षत्रिय राजा अपनी प्रजाको पुत्रके समान पालन करने व उनका दुःख छुड़ाने से संसार में यश पाकर मरने उपरान्त भवसागरपार उतर जाते हैं जब क्षत्रियको बिपत्ति पड़े तब वहव्यापार करके या बनमें अहेरखेलकर अपनी जीविकारक्खे व लाचारीसे भीखमांगकर अपना पेटपाले व बैश्यवर्ण बिपत्तिपड़नेसे शूद्रकाकामकरै व शूद्रको बिपत्तिपड़ैतो चटाईआदिक बनाकर अपनेदिन काटै ब्राह्मणको वेदानुसार अपनेधर्म से रहकर प्रतिदिन संध्या व तर्पण व ठाकुरपूजन व श्राद्धकरना व अतिथि व संन्यासी को भोजन व बस्त्रदेना उचित है व स्त्री व पुत्रोंसे अधिकप्रीति न रक्खे व मेरेचरणोंका ध्यान करतारहै इस तरह कर्म व धर्म रखनेवाले चारोंबर्ण व चारोंआश्रमको मैं उद्धार करदेताहूं व जो लोग संसारीमाया में लपटकर धर्म व अधर्म का बिचारनहीं करते उनको अवश्य नरक भोगना पड़ता है ॥

अठारहवां अध्याय ॥

उद्धवसे श्रीकृष्णजीका बानप्रस्थ आदिकका धर्म्मकहना ॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव बानप्रस्थका धर्म्म यह है जब पचास बर्ष से अधिक अवस्थाहोकर मनउसका बैराग्यकरनेवास्ते चाहै तो अपनीस्त्रीसमेत या अकेला बन में जाकर परमेश्वर का भजन व स्मरण करै व शिरपर जटाबढ़ाकर केलेके पत्तेसे कोपीन बनावै प्रात व मध्याह्न व सन्ध्या तीनोंकाल स्नानकरके पृथ्वीपर सोवे व गर्मीमें पञ्चाग्नि तापे व बीचजाड़ेके गलेभरपानीमें खड़ारहै व बरसातमें बीच मैदान के बैठकर तपकरै व पृथ्वीका बोयाहुआ अनाज न खावै जब इसतरह तपकरने से शरीर निर्बलहोकर बुढ़ाई आजावे तब संन्यासलेकर सिवाय दण्ड व कमण्डलु व कोपीनके और कुछ वस्तु अपनेपास न रक्खै व सात घरसे अपनेखानेभरको भोजन मांगलेआवै व राहचलतेसमय पृथ्वीकी ओर देखतारहै जिसमें चिउँटी आदिक कोई छोटा जीव पांवके नीचे दब नजावे व अपने मन व इन्द्रियोंको बशमें रखकर चित्त अपना किसी स्त्रीको व अच्छीबस्तुकी ओर न दौड़ावे व स्वादादिक भोजनकी चाहना न रखकर जहांसे अच्छाभोजन मिलै वहां फिर न जावै व कभी झूंठ न बोलै व संसारीसुखको स्वप्नकेसमान झूंठासमझै व आठोंपहर अकेलेमें परमात्माका ध्यान करतारहै व एकजगह अधिक न रहकर तीर्थोंमें फिराकरै व पाखण्डी मनुष्यों की संगति न रखकर किसीकाडर न मानै व सदा प्रसन्न चित्त रहै और अपने सुखके वास्ते किसी के साथ शत्रुता व मित्रता न रक्खै अपनास्वभाव कोमल बनायेरहकर ऐसा मीठा बचनबोलै जिसमें कोई दूसरा उससे न डरे व हानि व लाभ होने का कुछ हर्ष व बिषाद न करै केवल भिक्षालेनेवास्ते नगर व गांव में जावै व बस्ती से बाहर रहकर जिसतरह गुरूने बतलायाहो उसीतरह आठोंपहर परमेश्वरका स्मरण व ध्यानकरतारहै जबतक मेरे निर्गुणरूप का ध्यान उसके मनमें न आवै तबतक सगुणरूपकी उपासना कियाकरै जब निर्गुणरूप ध्यानमें आजावै तब सगुणरूपका स्मरण छोड़कर सब जीवोंमें मेराप्रकाश एकसा समझै इसतरह के कर्म व धर्मरखने वाले को संन्यासी जानना चाहिये केवल दण्ड व कमण्डलु धारणकरने से संन्यास धर्म का फल नहीं मिलता हरिभजनकरने में इन्द्रादिक देवता विघ्नकरते हैं इस-लिये तप व स्मरण करतेसमय मन को स्थिर रखना उचित है जो लोग अपने धर्म व कर्म से रहते हैं उन्हें निस्सन्देह मुक्ति मिलती है अपना धर्म छोड़देनेवाले को चोर व ठगकी तरह नरकमें दण्ड मिलता है इसलिये मेरी भक्ति चारोंबर्ण व चारों आश्रम को करनी चाहिये ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका उद्धवसे चारतरहके भक्तोंकी कथाकहना ॥

उद्धव ने इतना ज्ञान सुनकर पूंछा हे दीनानाथ जिसतरह संसारी मनुष्य काल-रूपी सांपके मुखमें पड़ेरहकर प्रतिदिन अपना सुख चाहते हैं उसी तरह मुझे भी समझकर कोई सहज राह भवसागरपार उतरनेवास्ते वर्णन कीजिये श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जो ज्ञान भीष्मपितामहने राजायुधिष्ठिर से कहाथा वही तुमसे कहते हैं सुनो संसारी मनुष्य को चारतरहपर एककथा पुराणसुनने व दूसरे लोगों का मरना देखकर अपनी मृत्यु बिचारने व तीसरे साधु व महात्मा विरक्तपुरुषों की संगतिकरने व चौथे संसारी व्यवहार झूटासमझनेसे ज्ञान प्राप्त होताहै परन्तु कथाको प्रेमपूर्व्वक सुनकर उसमें विश्वास रखना चाहिये ऐ उद्धव मेरे निर्गुणरूपका ध्यानकरनेवालों को जीवन्मुक्त समझो और उनका लक्षणसुनो वह लोग जिस धर्म्मकरनेसे मुझेपाते हैं उस कर्म्म का फल मुझे देकर कुछचाहना नहीं रखते व संसार में चारतरह के भक्त होतेहैं एक बिपत्तिपड़ने व रोगीहोनेसे मेरी भक्तिकरता है व दूसरे ज्ञानप्राप्त करने व भवसागरपारउतरने की इच्छारखकर व तीसरे द्रव्य व सन्तान व संसारी सुख मिलनेवास्ते मेराध्यान करतेहैं व चौथे ज्ञानी जो मुझे परमेश्वर जानकर भक्ति करते हैं व उसके बदले कुछ इच्छानहीं रखते उनको मैं उनतीनों से अधिकप्यारा जा-नताहूं हे उद्धव यज्ञ व तप व दान व धर्म्म व तीर्थ व व्रत आदिक सब शुभकर्म्म अच्छे होते हैं परन्तु भक्ति व ज्ञानके बराबर जिससे मुझे उत्पन्न करनेवाला व मालिक जानता है यज्ञादिक नहीं होते सो तुमभी ज्ञानकी राह संसारीचाहना छोड़कर मेरी भक्ति रखतेहो इसलिये अपनी मुक्तिहोने में कुछसन्देह मतसमझो सिवाय इसके थोड़ा सा मुख्यज्ञान और कहते हैं सुनो मनुष्य को अपनी बड़ाई करना उचित न होकर अहङ्कार छोड़देना चाहिये देखो नाक व कान व जिह्वा व आंख व त्वचा पांच ज्ञान इन्द्रिय व हाथ व पांव व वाक् व लिंग व गुदा पांच कर्म्म इन्द्रिय व ग्यारहवां मन होकर जो मनुष्य उनको संसारीसुखकी ओर लगाताहै उसे अज्ञानसमझना चाहिये व ज्ञानीको उचितहै कि अपने मन व इन्द्रियोंको संसारीमाया से विरक्तरखकर मेरीओर व ठाकुरपूजने में लगावे व संसारके आदि व मध्य व अन्त में परमेश्वरका चरित्र जा-नकर मेरी कथा व लीला प्रेमसे सुने जो बस्तु खाने व पहिरने वास्ते किसी तरहकी मिले उसको पहिले मेरेनामपर अर्पणकरके पीछे आप खाय व पहिने व जो तड़ाग व बावली व कुआं व बागआदि धर्म्मकी राह बनवावे सबकाफल मुझे देकर अपने मनमें इसबातका अभिमान न रक्खे कि यह शुभकर्म्म मैंने किया है इतनी कथा सुनकर उद्धवने पूंछा हे बैकुण्ठनाथ तप व दान व नियम व संयमका हाल वर्णन

कीजिये व ज्ञानी किसको कहते हैं व मूर्ख कौन कहलाता है शुभ व अशुभ कर्म्म करने व स्वर्ग्ग जानेवाले व नरक व धनीपात्र व कंगाल व दाता व सूमका हाल बतलाइये श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जीवहिंसा व चोरी आदिक कुकर्मों से बचे रहकर सच्च बोलना व गुरू व भगवान् में प्रीति रखकर वेद व शास्त्रका बचन सच्च जानना व बिना प्रयोजन अधिक न बोलकर सब जीवोंपर दया रखना यह संयम है व हाथ पांव मिट्टीसे मलकर धोना व स्नान व सन्ध्या व पूजा व यज्ञ व तप व श्राद्ध व तीर्थ व व्रतकरना यह नियम समझना चाहिये व दान उसका नामहै कि विरक्त मनुष्यको कर्म छोड़कर मनसावाचा कर्मणासे किसीका बुरा न चाहै व गृहस्थाश्रम भोजन व वस्त्र व पृथ्वी व सोना आदिक वस्तु ब्राह्मणोंको दानकर व तप यहहै कि स्त्रीभोग करनेका सुख छोड़ देवै व ज्ञानी वह है जो शास्त्रानुसार राह चलकर अपनी मुक्तिका शोचरक्खै व जो कोई परमेश्वरको भूलकर अपना शरीर पालन करता है उसे मूर्ख समझना चाहिये व मेरे बचन प्रमाण सब काम करना उत्तम राह होकर उसके विपरीत चलना कुमार्ग्ग जानो व जो मनुष्य संसारमें किसी वस्तु की चाहना नहीं रखते व प्रेमपूर्वक मेरे चरणोंका ध्यान करते हैं उन्हें स्वर्ग पहुँचने वाला समझो और संसारी प्रीति रखनेवाले व लोभी व झूंठे मनुष्यों को नरक जाने वाला जानना चाहिये व जो लोग ज्ञानीहोकर मेरी भक्ति सच्चेमनसे करते हैं उनको धनीपात्र व जिसको सन्तोष न होवै उसे दरिद्री जानना उचित है व जो कोई मूर्ख मनुष्य को सिखलाकर उसके भवसागरपार उतरनेका शोचरक्खै उसे दाता समझो व जो लोग अपने मन व इन्द्रियों को नहीं जीतकर उनके बशहोरहे हैं उनको सूम जानना चाहिये हे उद्धव जो २ बात तुमने पूंछी सबका उत्तर हमने कह दिया जो कोई हमारा बचन सच्च जानकर उसीका प्रमाण करैगा उसके वास्ते संसार व परलोकमें दोनों जगह अच्छा है ॥

बीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका उद्धवजी से माया छूटनेका उपाय कहना ॥

उद्धवने बिनयकी हे यदुनाथ आपसे सब ज्ञान सुनकर उसका अर्थ मैंने यह समझा कि संसारी माया मोहमें फँसना बुरा होकर विरक्त रहना उत्तम है सो कोई उपाय ऐसा बतलाइये जिसमें मनुष्य बीच संसारी मायाके न फँसे यह बात सुनकर श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव हमने तीन तरहकी राह वास्ते भवसागर पार उतरने संसारी जीवोंके तुमसे कही एक ज्ञान दूसरा कर्म्म तीसरी भक्ति जिसको ज्ञान प्राप्त हुआ वह संसारी मायामें नहीं लपटता व संसारकी प्रीति में जो फँसाहै उसको शुभ कर्म्मकरना चाहिये व जो लोग मन अपना ज्ञानकीओर कुछ लगाये रहकर संसारीमाया

मेंभी लपटे हैं उनको भक्तिकरनी उचितहै जबतक मेरी कथा सुननेमें प्रीति न होकर मन उसका संसारीमायासे विरक्त न होय तबतक शास्त्रानुसार कर्म्म करतारहै व जो धर्म्म स्वर्ग जाने वास्ते शास्त्रों में लिखे हैं वे कर्म्म करै व संसारी सुख व स्वर्गजाने की कुछ चाहना न रक्खै तब कर्म्म करने से बिना इच्छाभी वह सुख मिलैगा इस लिये मनुष्यको आठोंपहर परमेश्वरका ध्यान रखकर पहिले शुभकर्म्म करना चाहिये जबतक हाथ व पांव व नाक व कान व आंखआदिक सब इन्द्रियों में सामर्थ्य रहती है तबतक सब कर्म्म अच्छीतरह बनपड़ते हैं व बुढ़ापे के समय इन्द्रियों की सामर्थ्य घटजाने से कोई कर्म्म विधिपूर्वक नहीं बनपड़ता इसलिये कभी ऐसा बिचार करना न चाहिये कि अभी तरुणाईमें संसारीसुख उठालेवैं बुढ़ापेके समय परलोकका शोच करलेवैंगे किसवास्ते कि शरीर मनुष्यका वृक्षके समान होकर कालरूपी लुहार वह वृक्ष काटनेवास्ते दिनरात उसपर कुल्हाड़ा चलावताहै न मालूम किससमय यह शरीर-रूपी वृक्ष गिरपड़ेगा इसलिये मनुष्यको संसारी प्रीतिसे बिरक्त रहकर दिनरात अपनी मृत्यु याद रखनी व मेरे चरणोंका ध्यान करना चाहिये जिसमें उसकी मुक्तिहो दूसरा ज्ञान सुनो एक वृक्षपर दो पक्षी खोता लगाकर रहते थे जब उस वृक्षको लुहार काटने लगा तब एक पक्षी ने कहा यहांसे उड़चलो दूसरा पक्षी बोला बैठेरहो जिसतरह उड़ जानेवाला पक्षी जीता बचकर बैठे रहने में दुःख पावताहै उसीतरह संसारीमाया छोड़ देने से मुक्ति प्राप्तहोकर उसके साथ लिपटे रहने में आवागमनसे नहीं छूटता तीसरे मनुष्यतनु नौकारूपी जानकर गुरूको मांझीके समान समझना चाहिये सो वह नाव समुद्र में पड़ी रहकर हवारूपी मेरे चरणों का ध्यान उसे किनारे पहुँचानेवाला है जो कोई नौकारूपी मनुष्य तनुपाकर भवसागरपार उतरनेका उपाय नहीं करता उसे बड़ा मूर्ख व आत्मघाती जानना उचितहै जबतक मनुष्य ज्ञानकी राह अपने मनको कुमार्ग में चलने से नहीं रोकता तबतक उसको अनेक तरहके दुःख प्राप्त होते हैं इसलिये मन चञ्चलको कुमार्ग करने से धीरे २ रोंकै तो कुछदिन ऐसा साधन करने से चित्त उसका बिरक्त होजाता है जब मन मनुष्यका बिरक्तहोकर मेरी ओर लगा तब फिर संसारीमायामें नहीं लपटता और प्रतिदिन उसे मेरीभक्ति अधिक उत्पन्न होती है जो कोई अपने बर्ण व आश्रमका धर्म्म व मेरे चरणों में प्रीति रखकर मनमें इसबातका बिश्वास जानै कि हरिचरणों का ध्यान करने के प्रतापसे संसारीमाया छूटजावेगी वह मनुष्य अवश्य मुक्तहोताहै हे उद्धव भवसागर पार उतरनेवास्ते भक्तिके बराबर दूसरा कुछ उपाय उत्तम नहीं है व मेरे भक्त मुक्तिकीभी चाहना नहीं रखते व चारोंतरहकी मुक्ति मुझसे न लेकर भक्तिको उससे अच्छा जानते हैं जिसपर मैं बड़ी कृपा करताहूं उसे भक्ति प्राप्तहोती है व ब्रह्मादिक देवता उसके दर्शनवास्ते चाहना रखते हैं ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दरका उद्धवजी से भक्ति उत्पन्नहोनेका ज्ञान कहना ॥

श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जो मनुष्य यह सब सुमार्ग भक्ति व ज्ञानका जो हमने तुमसे कहाहै छोड़कर दूसरीओर मन अपना लगाता है वह कुकर्म्म करने से चौरासीलाख योनि व नरक में बहुत दुःख पाकर आवागमनसे नहीं छूटता जो लोग मनुष्य तनुपाकर परमेश्वर का भजन व स्मरण नहीं करते उनको बड़ा अभागी व मूर्ख समझना चाहिये व जो मनुष्य आठोंपहर अपनामरना यादरखकर शास्त्रानुसार अपने बर्णका धर्म्मरखतेहैं संसारमें उन्हींका जन्मलेना सुफलहै व अपनाधर्म्म छोड़ने के बराबर दूसरापाप अधिक नहीं होता जैसा धर्म्म चारोंबर्ण चारों आश्रम के वास्ते वेदमें लिखा है वैसा कर्म्मकरके अपने आचार व चलनसे रहै तो प्रतिदिन ज्ञान व धर्म्मबढ़कर उसको मेरे मिलने की राह दिखलाई देतीहै व नियम व आचार धनी व कङ्गाल दोनोंसे निबहसक्ताहै सामर्थ्यवाला मल व मूत्रकरने उपरांत दूसरीधोती पहिन लेवे व कङ्गालमनुष्य जिसके पास दूसरावस्त्र न हो वह गीलीधोती पहिनकर अपना नियम रक्खे व सूखाअन्न हवालगनेसे पवित्ररहताहै वह चाण्डाल के छूनेसे भी अशुद्ध नहीं होता व सूतीकपड़ा धोनेसे पवित्रहोकर रेशमी बस्त्रको जबतक पहिनकर दिशा फिरने न जावे व भोजनकरतीसमय व सूतकमें न पहिने तबतक शुद्धरहताहै उसे धोनेका प्रयोजन नहीं होता व तांबे व पीतलका बर्तन खटाई व राखके मांजने व चांदीधोने व सोना हवालगनेसे पवित्रहोताहै कदाचित् किसी बर्तन या कपड़े में मल व मूत्रलगजावे तो जबतक कि दुर्गन्ध व रङ्ग न छूटै तबतक वह पवित्र नहीं होता व शरीर मनुष्यका प्रतिदिन स्नान व सन्ध्या व तर्पण व होमकरने से शुद्धरहता है व ज्ञानी मनुष्यको सब बस्तु ठाकुरको भोगलगाकर भोजनकरना चाहिये बिना भोग लगाये कोई बस्तु खाना अपने मांसके बराबर होताहै व मनुष्यको भोजन बनावती समय अपनानामलेना उचित न होकर यह बात कहनी चाहिये कि ठाकुरजीके भोग लगानेवास्ते रसोई तय्यारकरो इसतरहका अभ्यास रखनेसे सब पापोंकीजड़ व अहङ्कार छूटजाताहै व अज्ञान बालकको नियम व आचाररखना उचित न होकर पांच वर्षकी अवस्थातक कुछ पाप व पुण्य किसी बात का उसे नहीं लगता व छठेंवर्षसे लेकर बारहबर्षकी अवस्थातक कुछ हत्या आदिक होजावे तो उसका प्रायश्चित्त पिता को करना चाहिये उसके उपरांत जो कुछ पापकरे तो उसका प्रायश्चित्त आपकरना उचित है व बिपत्तिपड़ने से कोई अधर्म्म करके भी अपना पेटपाले तो दोष नहीं लगता व सामर्थ्यरखकर धर्म्म छोड़देने में पापहोता है जिसतरह सबधर्म्मों का बिचार करना ब्राह्मण व क्षत्रिय व वैश्य उत्तमबर्ण को उचित होकर नीचजाति के वास्ते

कुछ आचार विचार नहीं रहता उसीतरह कोठेपर सोनेवाले मनुष्यको नीचे गिरनेका डर होकर पृथ्वीपर सोनेवाला गिरनेसे नहीं डरता इसलिये जहांतक बनपड़े वहांतक अपनेको अधर्म्मकरनेसे बचायेरहै जितना पाप कम करैगा उतना प्रतिदिन उसके वास्ते अच्छाहोगा जो लोग सुन्दर स्त्री देखने व अतर आदिक सूंघने व अच्छाभोजन खाने व कोमल शय्यापर सोनेसे प्रसन्नहोकर सबतरहका सुख चाहतेहैं उनको सिवाय दुःखके कुछ सुख नहीं मिलता व संसारी चाहना जो सब दुःखकीजड़है छोड़देनेवाले बहुतप्रसन्न रहते हैं जिसतरह संसार में चाहना सबको दुःखदेती है उसीतरह स्वर्गमें भी तीनबस्तु एक दूसरोंको अपने से ऊँचे सिंहासनपर बैठे देखकर डाहकरना दूसरे अपने बराबर बैठनेवाले से बिरोध उठावना तीसरे नीचे बैठनेवालोंको अभिमान की राह छोटा समझना दुःखदेनेवालाहै इसलिये स्वर्गकी भी इच्छा न रखनी चाहिये जो मनुष्य संसारी सुख व स्वर्गकी चाहना न रखकर हरिचरणोंमें ध्यानलगाये रहता है वह महाप्रलय तक मेरेसाथ बैकुण्ठमें सुख भोगकर दूसराजन्म नहीं पावता हे उद्धव जो लोग मुझे ईश्वर जानकर एकबेर भी सच्चे मनसे मेरास्मरण व ध्यान करते हैं वे मुझको कभी नहीं भूलते इसलिये मनुष्यको उचितहै कि शास्त्रानुसार अपना धर्म्म रखकर मेरे चरणों में प्रीति लगाये रहै॥

बाईसवां अध्याय॥

श्रीकृष्णजी का तत्त्वोंका हाल बर्णन करना॥

उद्धव ने इतनीकथा सुनकर बिनयकी हे बैकुण्ठनाथ मैंने चौबीस तत्त्वोंकाहाल सुना पर बाजे ऋषीश्वर तीन व कोई छः व बाजे नव व कोई ग्यारह तत्त्व कहते हैं इसकाभेद बर्णनकीजिये जिसमें मेरासन्देह छूटजावे श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव संसाररूपी मायासे योगी व ऋषीश्वर कोई नहींबचकर जो बात कहते हैं वह सचमानो मेरी मायाव्यापने से योगी व ऋषीश्वरों को भी अनेक राहदिखलाई देकर जबतक वे मेरेभेदको नहीं पहुँचते तबतक मनउनका एकबातपर स्थिर नहीं रहता जिसनेज्ञान की राहमुझे पहिंचाना उसके मनसे सबभेद छूटजाता है जबतक मेरीमायाके तीन-गुण सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण बराबर रहतेहैं तबतक संसारकी रचनाहोकर उन तीनों के घटने बढ़नेसे जगत्की उत्पत्तिहोती है और नवतत्त्व जो तुमने सुनेथे उनके नाम ये हैं पुरुष महत्तत्त्व अहंकार आकाश बायु अग्नि जल पृथ्वी माया व ग्यारह तत्त्व जो सुने हैं उनको त्वचा व आंख नाक कान जिह्वा पांच ज्ञानइंद्रिय हाथ व पांव व लिंग व गुदा और वाक् पांच कर्म्मइन्द्रिय व ग्यारहवां मन समझनाचाहिये अंग को त्वचासे ठण्ढा व गर्म व कोमल व कड़ाई बिचारना आंखोंसे देखना नाकसे सूंघना कानसे सुनना जिह्वासे खट्टे मीठेका स्वादचखना हाथसे शुभ अशुभकर्म्म करना

पांवसे चलना लिंगसे स्त्री का सुखभोगना गुदासे मलत्यागना वाक्से बोलना मनकी इच्छानुसार सबकर्म्म होते हैं हे उद्धव इनसब इन्द्रिय व अहंकार व महत्तत्त्व से संसार उत्पन्न होता है व छः तत्त्व जो कहते हैं उनसे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश पंच-भूतात्मा छठवां परमात्मापुरुषको जानो जबतक मनुष्य मेरी मायामें फँसारहता है तब तक उसे लाखोंतरह के भ्रमलगे रहते हैं जबउसने मेरी मायासे बिलगहोकर मुझे अ-पना स्वामीजानलिया तब फिरमन उसका दूसरीओर नहींलगता वह सबजीवोंमें मेरा प्रकाश बराबर देखता है यह सबबखेड़ा मनकाहोकर मनुष्य संसारीमाया में लपटने से मुझेनहीं पहिंचानता व इसीमनको मेरीओर लगाने से भवसागरपार उतरजाता है हे उद्धव मनुष्य मरतीसमय जिसओर अपना मनलगावतेहैं मरने उपरांत वहीतनु उनको मिलता है व हरिचरणोंका ध्यान करने से अन्तःकरण शुद्धहोकर बैकुण्ठमें पहुंचते हैं जो लोग अपनाशरीर पुष्टकरनेवास्ते जीवहिंसा करते हैं उनको अवश्य नरकबास हो-कर चौरासीलाख योनि भोगनी पड़ती हैं देखो सोतीसमय शरीर एकजगह पड़ारहकर मनकईजगह घूमने से अनेकतरहका स्वप्नादेखता है व जागनेमें भी मनहज़ारोंकोशों पर दौड़जाता है इसलिये मनको शरीर से बिलग समझना चाहिये जिसने मायारूपी ब्रह्मांड बनायाहुआ समझकर अपनामन बशमेंकिया उसने इन्द्रियादिक सबको जीत लिया व अपने मनके बशरहनेवाले संसारीमाया में लपटकर नष्टहोते हैं व आत्मामें मेराप्रकाश शुद्धरहकर कुछनहीं करता पर उसको भी मायाके साथफँसकर संसार उत्पन्न करना पड़ता है व मैं सतोगुणके साथहोकर ऋषीश्वर देवता व रजोगुणसे मिलकर दैत्य व मनुष्य व तमोगुण में मिश्रित होकर भूत प्रेत व पशुआदिकको उत्पन्नकरता हूं जिसतरह मकड़ी अपने मुखसे जालानिकालकर फिर खालेतीहै उसीतरह हम भी अपनी शक्ति सब के तनु में रखकर मरने उपरांत खींचलेते हैं जैसे बहतीः नौकापर चढ़ने से किनारे के वृक्ष चलतेहुये दिखलाई देते हैं व घूमतीसमय पृथ्वी व आकाश घूमताहुआ मालूम पड़ताहै वैसे सब कर्म शुभ व अशुभसंसारके मेरीमाया व इच्छा से होकर मनुष्यऐसा जानते हैं कि यहकाम हमनेकिया इसलिये ज्ञानी मनुष्य को अपना परलोक बनाने वास्ते काम व क्रोध व मनआदिक को अपने बशरखकर किसी के गाली देने से खेदमानना न चाहिये ॥

तेईसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का उद्धवसे एक ब्राह्मणका इतिहास वर्णनकरना ॥

उद्धव ने यह सबज्ञान सुनकर बिनयकी हे महाप्रभु यहबात बहुतकठिन है जो गाली व कठोरबचन सुनकर क्षमाकरै श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव तुमसच्च कहतेहो तीर व तलवारके घाव मलहम लगाने से अच्छे होजाते हैं पर कठोरबात कहने से जो

घाव कलेजेमें पड़जाता है वह किसीतरह नहीं मिटता पर ये सबबातें मनकेकारणसे होती हैं जिसनेअपने मन व अहंकारको बशकरलिया उसे इनबातोंका खेद नहींहोता वह सबजीवों में परमेश्वरका चमत्कार एकसा देखकर सबबातको ऊपरइच्छा परमेश्वरके समझता है व जो लोग अपनेइन्द्रिय व मनके बशहोरहे हैं उनको दुर्बचन कहने से क्रोध उत्पन्नहोताहै इसबातका एक इतिहास तुमसेकहते हैं मनलगाकर सुनो उज्जैननगर में एकब्राह्मण बड़ाधनपात्र व्यापार करनेवाला रहकर ऐसासूम व लोभी व क्रोधी व कामीथा कि उसनेकभी अपने जातिभाई व ब्राह्मणादिकको मुखसे भोजन करनेवास्ते नहींकहा एककौड़ीवास्ते मित्रकाशत्रुहोकर अपने खाने पहिरने में भी सूमपन रखताथा इसलिये बहुतधन उसनेबटोरा पर सूमहोने से सबपरिवारवाले व स्त्री व पुत्र उससे शत्रुताई रखतेथे संसारीमनुष्यके पास द्रव्यहोने से आत्मा व परिवार व देवता व पितर व अतिथिको गुप्तप्राप्तहोताहै सो ये पांचों उसब्राह्मणके शत्रुथे जब वह ब्राह्मण बूढ़ाहोगया व सामर्थ्य व्यापारकरनेकी उसमेंनहीं रही तब उन्हीं पांचों के शाप से आगिलगने व चोरचुरालेजाने व लूटनेराजा व पचालेने देनदारों के सबधन उसका जातारहा व जो द्रव्य पृथ्वीमेंगाड़ाथा वहभी टलगया जबवह ब्राह्मण सबधन अपनाखोकर खानेबिना दुःखीहुआ व जाति भाईलोग उसका निरादर करनेलगे तब एकदिन बैठेहुये उसने मनमें बिचारा देखो मैंने इतना द्रव्यबटोरकर कोईधर्म व कर्म परलोक बनानेवास्ते नहीं किया और न खर्चकरके संसारी सुखउठाया सूमकाधन इसीतरह व्यर्थजाता है व तृष्णारखने से सबगुण मनुष्यका नष्टहोकर यशनहीं रहता जिसतरह सुन्दरमनुष्य के मुखपर कोढ़कादाग रहने से सुन्दरताई उसकी नष्टहोजाती है उसीतरह लोभी मनुष्य तजहीनरहकर उसे कोई अच्छानहीं कहता देखो जिसधन को लोग उत्तम जानते हैं वह ऐसाबुरा होता है कि पहिले व्यापार करतीसमय अपने व बिराने के साथ शत्रुताकरने व झूंठबोलने से मिलता है व रात्रिदिन उसकी रक्षाकरने में चोर व डाकू व राजा व जाति भाइयों का भय लगारहनेसे अच्छीतरह निद्रानहीं आती जिसमें कोई ले न जावे व द्रव्यप्राप्त होने से बेश्यागमन व जुआ व जीवहिंसा व जातिभाइयों से अभिमान उत्पन्नहोकर अनेकतरह के पापकरने में आवते हैं जिसकारण संसार में अपयशउठाकर मरने उपरान्त नरकभोगना पड़ता है परमेश्वर ने बहुतअच्छा किया जो मेरा सबधन जातारहा जिसद्रव्यमें इतने अवगुण भरे हैं उसे पाकर शुभकर्म में खर्चकरडालना चाहिये द्रव्य इकट्ठीकरने से सिवायदुःख के कुछसुख नहींमिलता चारदिनके जीनेमें मायारूपीद्रव्य व स्त्री के वास्ते बहुतमनुष्यों से शत्रुताकरनी उचितनहीं है जो लोग भरतखण्डमें मनुष्य तनुपाकर बीचप्रीतिद्रव्य व स्त्री पुत्रोंके फँसकर नष्टहोते हैं उनकासंसार में जन्मलेना व्यर्थ है और उन्हें बड़ा मूर्ख समझनाचाहिये देवतालोग यहइच्छा रखते हैं कि भरतखण्ड में हमाराजन्म बीच

तनु मनुष्य के होताती इसशरीर से जितनीबड़ी पदवीको चाहते हैं पहुँचजाते सो अब बुढ़ाईआने व इन्द्रियोंकी सामर्थ्य घटने से मैं कुछशुभकर्म नहीं करसक्ता इसलिये अब जितने दिनमेरे जीने में हैं उतनेरोज अपनेआत्माको कुछदुःखदेकर बीचस्मरण व ध्यान परमेश्वर के मग्नरहूं ऐसाबिचारतेही उसने विरक्तहोकर संन्यास धारणकरलिया व एक जगह बैठकर परमेश्वरकाभजन व स्मरण करनेलगा जबवह ब्राह्मण नगर में भिक्षा करने जाताथा तब पुरबासी उसको पहिंचानकर पिछलीबात यादकरके बहुतदुःख देते थे कोई गालीदेकर उसपर थूकदेता व कोईदण्ड व कमण्डलु छीनकर उसको रस्सी से बांधने उपरान्त कहताथा यह बड़ासूम व कपटीहोकर अब बकुलाभक्त बना है हे उद्धव इसीतरह वह ब्राह्मण अनेकदुःख पानेपरभी किसीसे कुछखेद न मानकर अपने मनमें समझताथा कि मुझेकोई देवता व मनुष्य व नवग्रह व जाड़ा व बरसात व गर्मी कुछ दुःखनहीं देते सबदुःख अपनेप्रारब्ध व मनसे होताहै संसारी मनुष्य अपना मन चलायमान होने से शुभ व अशुभकर्म जैसाकरते हैं वैसे दुःख व सुख उनको भोगना पड़ता है जिसने अपनामन बशमेंकिया उसे कुछदुःख नहीं होता और यज्ञ व तप आदिक करने का प्रयोजन नहीं रहता पर यह मन चञ्चल बलवान् शत्रु जल्दी बशमें नहीं होता मनके कारणसे सदा शत्रु व मित्रहोते आये हैं व मनको रोंकलेने से कोई शत्रुताई व मित्रताई नहीं रखता मनका बिचार सब होकर शरीरका किया कुछ नहीं होसक्ता किसवास्ते कि मनुष्य अपनी स्त्रीको अंगसे लपटाकर कन्याकोभी गले लगावता है पर मनके कारण स्त्रीको लपटावती समय कामदेव सतावता है व कन्याके गले लगावने में नहीं जागता जिसने अपना मन बशमें नहीं किया उसका धर्म्म व कर्म्म करना वृथा है इसलिये मनको संसारी मायासे रोंककर हरिचरणों में लगाना चाहिये ॥

दो० मनके हारे हारि है मनके जीते जीत।
परब्रह्मको पाइये मनहीं की परतीत ॥

हे उद्धव वह ब्राह्मण अपने मनको रोंककर ऐसा ज्ञानी होगया कि शत्रु व मित्र को बराबर समझकर किसी के गाली देने व मारपीट करने से क्रोध नहीं करता था इसीतरहका ज्ञान मनमें रखकर मरनेउपरान्त मुक्तिपदवी पर पहुँचा इस अध्याय को सच्चेमनसे कहने व सुननेवाला अपने मन व काम व क्रोधादिक के बश न होकर भवसागर पार उतरजायगा ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका आदिपुरुष व मायाका हाल कहना ॥

श्रीकृष्णजी ने कहा हे उद्धव आत्मा पुरुष व मायाका हाल बिलगकरके कहते हैं सुनो जहां आत्मापुरुष निरङ्कार रूपहै वहां बाणी व मन पहुँचनेकी सामर्थ्य नहीं रखते जब उस पुरुषको संसार उत्पन्न करनेकी इच्छा होती है तब वह पहिले अपनी मायाको जिसे प्रकृतिभी कहाजाताहै उत्पन्न करते हैं उसी मायासे सात्त्विक व राजस व तामस तीनगुण प्रकट होते हैं जबतक तीनोंगुण बराबर रहते हैं तबतक कोईजीव उत्पन्न नहीं होता व उनके घटने व बढ़ने से संसारकी चाहना होती है व मेरा प्रकाश मायामें मिश्रित होने से महत्तत्त्व प्रकट होकर उसमें अहङ्कार उत्पन्न होता है व अहङ्कार से वैकारिक व तामस व तेजस प्रकटहोते हैं वैकारिक से पञ्चभूत व तामस से ग्यारह इन्द्रियां व तेजससे ग्यारह देवता इन्द्रियों के मालिक उत्पन्न होकर जबतक ये सब अलग रहते हैं तबतक ब्रह्माण्डपुरुष प्रकट नहीं होता जब मेरी शक्तिसे ये सब वस्तु इकट्ठी होजाती हैं सो वह ब्रह्माण्डरूप मेराहोकर उस स्वरूपकी नाभि से एक फूल कमलका तब ब्रह्माण्डपुरुष उत्पन्नहोकर बहुत दिनतक जलमें शेषनागपर शयनकरते हैं निकलताहै उस फूलकी डारसे ब्रह्मा उत्पन्न होकर तप करने उपरान्त रजोगुणसे सब जीव उत्पन्न करके तीनोंलोककी रचना करते हैं सो देवता स्वर्गलोक व दैत्य व दानव आदिक पाताललोक व मनुष्य आदिक मर्त्यलोकमें रहकर अपने कर्मानुसार स्वर्ग व नरकका दुःख व सुख भोगते हैं व ब्रह्माके एकदिन में चौदह इन्द्र बदलजाते हैं जब ब्रह्माका एकदिन बीतकर सन्ध्यासमय वह सोरहते हैं तब कोईलोक नहींरहता जब ब्रह्मा प्रातःकाल उठकर रचना करते हैं तब फिर सब लोक व संसार प्रकट होजाते हैं व ब्रह्माके मरने उपरान्त सिवाय पानी के कुछ नहीं रहता पृथ्वी पानी में व पानी अग्निमें व अग्नि बायुमें व पवन आकाशमें व आकाश अहङ्कार में व अहङ्कार महत्तत्त्वमें व महत्तत्त्व मायामें मिलकर वह माया मेरे निरङ्काररूपमें समाजाती है ॥

पचीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजीका उद्धवसे रजोगुण व तमोगुण व सतोगुणका लक्षण बर्णन करना ॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव अब हम सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणका लक्षण बर्णन करते हैं सुनो जो मनुष्य मनमें दया रखकर अपनी इन्द्रियों के बश न होवे शुभ व अशुभकर्म्म करनेका बिचार कियाकरै व किसीके गाली देने से खेद न मान कर परमेश्वरका स्मरण व ध्यान करताहै व सच बोलकर स्वभाव में धैर्य्य रख व सब बातोंकी याद व मनमें सन्तोष रखकर किसीवस्तुकी चाहना न करै व ठाकुरजी

की पूजा व सेवामें मन लगायेरहै ये लक्षण सतोगुणके हैं व कोई जो सुन्दरी स्त्री व उत्तम भूषण व वस्त्र व स्थान व बाग आदिक संसारीसुखकी चाहना रहकर अभिमानसे किसीका कहना न मानै व जो शुभकर्म्म करै उसमें अपना यशचाहै व सदा सामर्थ्य व द्रव्य बढ़ानेका उपाय करतारहै उसे रजोगुणी समझना चाहिये व जो मनुष्य अधिक क्रोध व लोभरक्खै व झूंठ बोलकर जीवहिंसा करै व कुकर्म्म करने व मांगने से निर्लज्ज होकर लोगोंके साथ झगड़ा करतारहै व आठोंपहर आलस्यमें भरा रहकर अधिक सोवै ये लक्षण तमोगुणके हैं व सब बस्तुको अपना समझना व मेरा तेरा विचारना व अपने को मैं जानना यह बात तीनोंगुण मिलने से होती है पर मेरा भजन व ध्यान करनेवाले को सतोगुणके प्रताप से कुछ चाहना नहीं रहती व तीनों गुण आठपहर बराबर न रहकर घटा बढ़ा करते हैं व सतोगुण अधिक होने से मनमें हर्ष व ज्ञान उत्पन्न होताहै व रजोगुण बढ़ने से संसारीसुखकी चाहना होती है व तमोगुण अधिक होनेसे चिन्ता व क्रोध व नींद व आलस्य बढ़कर जीवहिंसा व अधर्म्म करने को मनचाहता है जागना सतोगुण व सोना व स्वप्न देखना रजोगुण व उदास होकर चिन्तामें बैठरहना तमोगुणके लक्षण समझना चाहिये थोड़ा खाना सात्त्विकी व अच्छा पदार्थ भोजन करने वास्ते ढूंढ़ना राजसी व भूखसे अधिक खाना जिसमें अजीर्ण उत्पन्नहो तामसी जानना उचित है व आत्मा तीनों में मिश्रित व सबसे बिलग रहताहै व सतोगुण स्वभाववाले स्वर्ग्ग का सुख भोगते हैं व रजोगुणी मनुष्य अपने कर्मानुसार दुःख व सुख भोगकर जन्म व मरणसे नहीं छूटते व तमोगुणीलोग पशुआदिक चौरासीलाख योनिमें उत्पन्न होकर अपने कर्म्मानुसार नरक में बड़ा दुःख पाते हैं व संसार से बिरक्तहोने व मेरे चरणोंका ध्यान व भक्तिकरनेवाले हमारे पास बैकुण्ठमें पहुँचते हैं व गृहस्थी छोड़कर बनमें रहना सतोगुण व नगर व गृहस्थी में रहकर संसारीसुख चाहना रजोगुण व मद पीना व जुआ खेलना व परस्त्री गमन करना व कुसंगत बैठना तमोगुण व देवस्थान पूजा करना तीर्थयात्रामें रहना निर्गुणका लक्षण है व ज्ञानचर्चा रखना सात्त्विक व श्राद्धआदिक संसारी कर्म्मकरना राजसी व जीवहिंसा व पापआदिक तामसी व मेरी पूजा व जपमें लीन रहना निर्गुण धर्म्म समझना चाहिये हे उद्धव इसीतरह सब बातों में सतोगुण व रजोगुण व तमोगुणके लक्षण होकर कोई जीव तीनोंगुणों से बाहर नहीं है इनतीनों से बिरक्त होकर निर्गुणभक्ति व पूजा करनेवाले मेरे निकट पहुँचते हैं ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी को उद्धव से जो ज्ञान राजापुरूरवाको गन्धर्वलोक मे हुआ वह बर्णन करना ॥

श्यामसुन्दर ने कहा हे उद्धव जिसे मेरे मिलनेकी चाहनाहो वह मनुष्य कभी लम्पट व लोभी व जुआरी व संसारीप्रीति रखनेवाले व अपनाशरीर पालनकरनेवाले व अधर्मियों से सङ्गत व प्रीति न रक्खे ऐसेलोगों की सङ्गतकरनेसे भी नरकभोगना पड़ता है इसलिये साधु व महात्माओंका सत्सङ्गकरना चाहिये जिससे हरिचरणों में प्रीति उत्पन्नहो जिसतरह राजापुरूरवा उर्वशी अप्सराकी प्रीतिमें फँसकर नष्टहुआथा उसीतरह संसारीलोग स्त्री व लम्पट के पास बैठकर अपना परलोक बिगाड़देते हैं सो हे उद्धव तुम उनलोगोंकी संगत कभीमतकरना इतनीकथा सुनकर उद्धव ने पूछा हे त्रिभुवनपति राजापुरूरवाका हाल किसतरहपर है यह बचन सुनकर मुरलीमनोहरने कहा हे उद्धव जिसतरह राजापुरूरवा इलानाम स्त्री से उत्पन्न होकर उर्वशी अप्सराके वास्ते गन्धर्वलोकमें जाबसाथा वह सब कथा नवमस्कन्धमें लिखी है अब उसके ज्ञान प्राप्तहोने का हाल सुनो जब राजापुरूरवाने गन्धर्व्वलोकमें रहकर हज़ारोंवर्ष उर्वशी के साथ भोग व बिलास किया व मन उसका नहीं भरा तब मेरी इच्छानुसार एक दिन उसने ज्ञानकी राह मनमें विचारा कि इतने दिन कामदेव के बशहोकर मैंने संसारीसुख उठाया पर मेरी इन्द्रियोंकी चाहना पूरी नहीं हुई जिसतरह अग्नि में घी डालने से ज्वाला बढ़तीजाती है उसीतरह इन्द्रियको जितना अधिक सुख देवै उतनी चाहना बढ़कर कभी सन्तोष नहीं होता देखो मैं बुधकाबेटा ऐसाज्ञानी व प्रतापी राजा होकर उर्वशी के जातीसमय उसके पीछे इसतरह नंगा उठदौड़ा जिसतरह गदहा कामातुरहोकर गदही को खेरेदे चलाजाता है व उसने मुझे ऐसा बश करलिया जैसे नटलोग बानरको अपने आधीन करलेते हैं व मैं उसके भोग व बिलासमें लपटकर ऐसा अन्धा होगया कि मुझे छोटे व बड़ोंकी लज्जा न रहकर दिनरात बीतने की सुधि जातीरही व हज़ारों राजा सातोंद्वीपके जो मेरे आधीन थे हमारे अज्ञानपर हँसने लगे सच्चहै जो कामीपुरुष स्त्रीके बशहोजाते हैं उन्हें अपना भला व बुरा दिखलाई न देकर उनका तेज व बल व ज्ञान व धर्म्म कुछ नहीं रहता देखो मांसकी पुतली पर जिसमें मल मूत्र व लोहूआदिक भराहकर सब द्वारों से अशुद्ध बस्तु निकलती है मैं ऐसा बौड़हा होगया कि जहां इन्द्रादिक देवता मेरेसाथ लड़नेकी सामर्थ्य नहीं रखते थे वहां एक स्त्रीने जीतकर अभिमान मेरा तोड़दिया व उसकी प्रीति में फँसकर ऐसा अपने को भूलगया कि उर्वशी के समझाने परभी मुझे कुछ ज्ञान नहीं हुआ देखो जिस शरीरको माता व पिता व स्त्री व भोजन देनेवाला व कालचक्र मृत्यु व मालिक

अपना समझते हैं वह शरीर मरने उपरान्त कुछ काम नहींआता और फिर उसे कोई एकदिन घरमें नहीं रखसक्ता इसलिये मनुष्यको उचितहै कि पहिले से संसारी माया छोड़कर हरिचरणों में प्रीति लगावै ऐसा बिचारतेही राजापुरूरवा उर्वशीका प्रेम छोड़ कर गन्धर्वलोकसे पृथ्वीपर गिरपड़ा व हरिचरणों में ध्यान लगाकर मुक्तिपदवी पाई हे उद्धव स्त्री के ध्यान लगाये रहने से यज्ञ व तप व तीर्थ व ब्रत व दान व धर्म्म आदिकर्म करना कुछ गुण नहीं करता व बिना सत्संग ज्ञान प्राप्त नहीं होता व जो लोग अपने अज्ञानसे समुद्ररूपी सागरमें गोता खारहे हैं उनको भवसागरपार उतरने के वास्ते सत्संग नौका समझना चाहिये अन्धको सत्संग आंखके समान होकर जिस तरह माता व पिता अपने पुत्रका भला चाहते हैं उसीतरह संसारीमनुष्यके कल्याण वास्ते सत्संग होताहै जब मनुष्यको सत्संग करने से ज्ञान प्राप्तहोकर अपने शरीर व स्त्रीआदिककी प्रीति छूटजाती है तब वह बिरक्तहोकर हरिचरणों में ध्यान लगाने से मुक्ति पाताहै जबतक मायारूपी स्त्री व द्रव्यकी तृष्णा नहीं छोड़ता तबतक स्वप्नमेंभी ज्ञान नहीं प्राप्तहोता संसारी मनुष्यका दुःख छोड़ानेवाली केवल मेरीभक्ति व शरण होकर इससे उत्तम दूसरा उपाय नहीं है इसलिये धन चाहनेवाले को धर्म्म करना उचितहै व जो नरक जाने से डरता है वह सत्संग में बैठे तो उसको ज्ञान प्राप्तहोकर मुक्तिमिलैगी बिरक्तपुरुष व सन्त व महात्माको मेरा स्वरूप समझना चाहिये ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी को उद्धवसे पूजादिककी बिधि कहना ॥

उद्धवने इतनी कथा सुनकर बिनयकी हे दीनानाथ धर्म्म ब्रह्मचारी व बानप्रस्थ व योग व तपआदिका बहुत कठिनहै व बिना पूजा तुम्हारी शरीर पवित्र नहीं होता ब्रह्मा व नारद व बृहस्पति व ब्यासजी ने वेद व शास्त्रमें अनेक उपाय लिखे हैं सो दयाकरके अपनी पूजाकीबिधि जिसके करने से संसारी लोग भवसागरपार उतरजाते हैं बर्णन कीजिये श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव मेरी पूजाका अन्त नहीं है पर संक्षेपसे थोड़ासा हाल उसका कहताहूं सुनो एकबिधि हमारी पूजाकी वेदमें दूसरी तंत्रशास्त्रमें लिखी है सो मनुष्यको चाहिये कि प्रातसमय उठकर मेरे व अपने गुरुके चरणों का ध्यानकरै फिर उसको दिशा व दतुइनि व स्नान व सन्ध्या व तर्प्पण व जप करनेसे सुचित्तहोकर मेरा सगुणरूप पूजना चाहिये व मेरी मूर्त्ति आठतरह से एक पत्थर व दूसरी काठ व तीसरी सोना व चौथी चांदी व पांचवीं पीतल व छठवीं तांबा व सातवीं पृथ्वीपर चबूतरा आदिक व आठवीं मिट्टीका स्वरूप बनाकर पूजा व ध्यानकरै सिवाय इसके मूर्त्तिरत्न व चित्रकारी कागज व दीवार व शीशेपर खींचकर जिसतरह होनेसके पूजा करना उचित है व दो तरहपर मूर्त्ति मेरी होती है एक चल व दूसरी

अचलमूर्त्ति ठाकुरजी आदिक जो सिंहासनपरसे उठाकर स्नान करानेउपरान्त सिंहासन पर बैठालके पूजते हैं उसे चल समझना चाहिये व जो मूर्त्ति शिवालय व मंदिर आदिक में स्थापन करदेते हैं और फिर वह उठने नहीं सक्ती उसको अचल जानना उचितहै सो दोनों मूर्त्ति चल व अचलको स्नान कराने व चन्दन लगाने उपरान्त भूषण व बस्त्र पहिनाकर धूप व दीप व माला फूल व तुलसीदल नैवेद्यसे पूजनकरके अतर मलदेना व शीशा दिखलाना चाहिये व चित्रकारी की मूर्त्तिको स्नान कराना उचित न होकर कपड़े पोछने उपरान्त पूजन करना उचित है व पृथ्वीपर चबूतरा आदिक बनायेहो उसमें पहिले भगवान्का ध्यानकरके विधिपूर्बक पूजना चाहिये व जो कोई मानसी पूजा कियाचाहै वह अपने मनमें नारायणजी के स्वरूपका ध्यान लगाकर जिसतरह मूर्त्तिको पूजते हैं उसीतरह धूपदीप नैवेद्य आदिकसे ध्यानमें पूजन करे और हमारे पूजन करती समय ध्यान सुदर्शनचक्र व पाञ्चजन्य शङ्ख व गदा व पद्म व धनुबाण व हल व मूशल मेरे शस्त्र व बैजयन्तीमाला व नन्द व सुनन्द व पुण्य व सुशील व गरुड़ व बिशुक व सेन व सुनाम नवोपार्षद व दुर्गादेवी व गणेश व वेद-ब्यास व इन्द्रादिक देवताओं का करना चाहिये व जितनी बस्तु भोजनकी अपने को बहुतप्यारी हो उसे बनवाकर ठाकुरजी का भोग लगावै कदाचित् नित्य सब तरहका भोजन तैयार न होसकै तो अन्नकूट आदिक पर्बके दिन ठाकुरजीका भोग लगानेवास्ते अवश्य छत्तीसब्यंजन बनवाना उचित है व जो मनुष्य प्रतिदिन मिट्टी की मूर्त्ति बनाकर पूजाकरै उसे आवाहन व विसर्जनका मंत्र अवश्य पढ़नाचाहिये व ठाकुर पूजनेवाले को वह मन्त्रपढ़ना न चाहिये व होम करनेवालेको अग्निमें मेराध्यान लगाना व जल व सूर्यको भी हमारारूप समझना उचित है व पूजाकरतीसमय मेरे चरणों में मनलगाये रहै और पूजाकरने उपरांत साष्टांग दण्डवत्करके ठाकुरजीसे हाथ जोड़कर कहै हे महाप्रभु मैं तुम्हारे शरणपड़ता हूं मुझे अपनादास जानकर उद्धार कीजिये इसीतरह नित्य पूजन के उपरान्त चरणामृतलेकर प्रसाद ठाकुरजीका भोजन करे व विष्णुसहस्रनाम का पाठपढ़कर मेरी कथा व लीलासुने व भजन व स्मरण करने में दिनरात लीनरहै व जिसे परमेश्वर धन देवे वह ठाकुरमन्दिरके खर्चवास्ते गांव व जागीरदेकर बागलगवादे जिसमें अच्छीतरह ठाकुरपूजाहो व अनेकरंगकेफूल सुगन्धित उनमें चढ़ाकरै पर उसबाग व गांवकोबेचने या पोत व किरायालेनेकी इच्छा न रक्खे हे उद्धव मैं भक्ति व प्रीतिकीराह जितना केवल जलचढ़ावनेसे प्रसन्नहोता हूं उतना बिनाभक्ति करोड़ों रुपया हरिमन्दिर में लगाने व दानदेने से राजीनहीं होता जो मनुष्य सच्चेमनसे प्रतिदिन इसतरह मेरा पूजन व सेवाकरता है उसके सामने अठारहों सिद्धियां बनी रहती हैं व जितनाफल पूजाकरने व देवस्थान बनवानेवालों को प्राप्त होता उतनापुण्य उनको भी समझनाचाहिये जो लोग पूजाकरने व देवस्थान बनाने

का सन्मत देकर उसकाम में लगादेते हैं व जो लोग अपने व दूसरे की दानदी हुई पृथ्वी ब्राह्मणसे या देवस्थान आदिकका चढ़ायाहुआ बाग़ बर्जोरी छीनलेतेहैं व ऐसा सम्मत देनेवालों को साठिहजार बर्षतक कीड़ाहोकर विष्ठा में रहना पड़ता है ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी को उद्धव से ज्ञान विरक्त होनेका वर्णनकरना ॥

श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव ज्ञानीको किसीकी स्तुति व निन्दाकरना उचित न होकर सबजीवों में परमेश्वरका चमत्कार एकसा समझनाचाहिये दूसरेकी निन्दाकरने वाले अवश्य नरकभोगते हैं इसलिये मनुष्य को उचित है कि मनअपना एकओर लगायेरखकर ठाकुरकीपूजा करतीसमय दूसरीओर ध्यान न लगावे व शरीरमें एक आत्मा जो शुद्धहै उसकाध्यान आठोंपहर करतारहै व यहबात मनमें बिश्वासजाने कि नारायणजी माया के गुणोंको साथलेकर सबसंसार उत्पन्न व पालन व नाश करते हैं जब मनुष्य ने ऐसाबिचारकर एक परमेश्वरको सच व संसारी व्यवहार झूंठास- मझा तब मनउसका बिरक्तहोकर मेरीओर लगजाता है व जब आत्मामन इन्द्रियोंके साथ मिलगया तब वह संसारीप्रीति में फँसकर मायाजाल से नहीं छूटता जिसतरह मनुष्य स्वप्नमें अनेकवस्तु देखकर जागनेउपरान्त उसे झूंठासमझता है उसीतरह सं- सारीब्यवहार मिथ्याहोकर केवल परमेश्वरकानाम सच्चजानना चाहिये हर्ष व शोच व क्रोध व लोभ व अहङ्कार व भय व प्रीति व शत्रुताई व जन्म व मरण यहसब गुण माया के होकर आत्मा उनसे बिलगरहता है और यहसंसार नट व भानमती के खेलसमान झूंठाहोकर न आदिमें था न महाप्रलय में रहैगा इसलिये मनुष्यको ज्ञान रूपीतलवार से संसारीप्रीति व मन इन्द्रियों की तृष्णा काटडालना चाहिये जब उसने संसारीमाया छोड़कर अपने मन व इन्द्रियों को बशमें किया तब उसको घर व बनका रहना दोनों बराबर हैं जिसतरह सोनेका अनेक गहना बनवाने से नामउनका पृथक् पृथक् होता है और वह सबगहना गलवाडाले तो केवल सोना कहलाता है उसीतरह संसारके आदि व अन्त व मध्य में कांचनरूपी नारायणजी रहते हैं व उनकी इच्छा से अनेकजीव उत्पन्नहोकर बिलग २ नामउनका होता है व महाप्रलय होनेमें सारा जगत् नाशहोकर जीवात्मा सबजड़ व चैतन्य का परमेश्वरके रूपमें समाजाताहै जैसे सड़क में सीपका टुकड़ा चांदी के समान चमकताहुआ देखकर कोईलोभी उठालेवे और उठातीसमय सीपसमझकर लज्जितहोजावै वैसे संसारीगति झूंठी समझनाचाहिये जिसतरह उड़तेहुये बादलसे आकाश कुछमिलावट नहींरखता उसीतरह आत्मा चौ- रासीलाख योनिमें व्यापक रहनेपरभी सबसेबिलग रहताहै इसलिये मनुष्य को चा- हिये कि मनअपना मायाके गुणोंसे बिरक्तरखकर ऐसा हरिचरणों में ध्यानलगावै कि

संसारीबस्तुकी कुछचाहना व प्रीति न रहै जिसतरह औषधखाने से रोगशरीर में नहीं रहता उसीतरह अपनेमन व इन्द्रियों को बशरखने से संसारीतृष्णा व प्रीति छूटजाती है जिसने मन व इन्द्रियों को अपनेवशमें नहीं किया उसका तप व स्मरण करना वृथा है जब मन मनुष्य का बीचध्यान चरण परमेश्वरके लीनहोगया तब उसे अपने शरीर व संसारकी प्रीति नहींरहती इसलिये मनुष्य चलते फिरते सोते जागते खाते पीते मनअपना आठोंपहर नारायणकी ओर लगायेरहै जिसतरह सूर्य्य निकलने से अँधियारा रातका छूटजाता है उसीतरह मेरीभक्ति करने से अज्ञान नहींरहता योग व तप भंगहोने से जल्दीगति नहीं होती व मेरेभक्तसे कुछ अपराधभी होजाता है तो दूसरेजन्ममें उसकाउद्धार करदेताहूं व आत्माशरीर में रहने से सब इन्द्रियों को चलने व फिरने व बोलने की सामर्थ्य रहती है व जितने देवता प्रकाश अपना इन्द्रियोंमें रखते हैं सबदेवताओंकोभी वही आत्मासामर्थ्य देखकर उनसे बिलगरहता है इसवास्ते ज्ञानी व योगियों को चाहिये कि आत्माकी ओर ध्यानलगाकर संसारीमाया व मोह में न फंसें ऐसे मनुष्योंपर पिछलेजन्मके अधर्म्म करने से कोईदुःखभी पड़जाता है तो मैं उनकाकष्ट निवारण करदेता हूं यह बचनमेरा सच्चामानकर नाश होनेवाले शरीर से प्रीति न रखना व इन्द्रियों को सुखदेना उचित नहीं है ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

श्रीकृष्णजी का उद्धव से मनके रोकनेका ज्ञान कहना ॥

उद्धवने इतनी कथा सुनकर बिनयकी हे दीनानाथ आपने कहा कि मनको रोकना चाहिये सो हवासे भी अधिक बेगरखनेवाले मनको रोकना बहुत कठिन है कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिसमें मन रोकाजावे व हरिचरणों में प्रीति उत्पन्न हो सिवाय तुम्हारे दूसरा कोई इसकायत्न बतलाने नहीं सक्ता व आपकी मायाने संसारी जीवोंको ऐसा भुला रक्खाहै कि बिनादया व कृपा तुम्हारी कोई इसमायारूपी जाल से नहीं छूटता जहां ब्रह्मादिक देवताओं को तुम्हारा भेद जानना कठिन है वहां संसारी मनुष्य हरिचरित्र समझनेकी कहां सामर्थ्य रखते हैं यहबात सुनकर श्यामसुन्दरने कहा हे उद्धव जो कोई संसार में जन्मलेकर मेरे चरणों का ध्यान व स्मरण करता है तो उसको धीरे २ संसारी प्रीति छूटकर प्रतिदिन हरिचरणोंमें प्रेमबढ़ता है जहां तीर्थपर मेरेभक्त व ज्ञानीलोग रहतेहैं वहां उनकी संगतमें रहकर मेरा भजन व स्मरण कियाकरै व सब जीवोंपर दयारखकर चौरासीलाखयोनिमें मेरा प्रकाश बराबर समझै व किसी जीवको दुःख न देकर जहांतक बनिपड़ै वहांतक मनसावाचा कर्मणा से दूसरे का उपकारकरै व मन में यह अभिमान न रक्खै कि उत्तम जाति व

बड़ा मनुष्यहोकर कंगाल व शूद्रको किसतरह पानीपिलाऊं व उसे छूकर भोजन दूं जबतक मनुष्य प्रकाश परमेश्वर का बीचतनु ब्राह्मण व चाण्डाल के एकसा नहीं समझता तबतक वह अज्ञान है व जिसने देवता व दैत्य व मनुष्य व पशु व पक्षी आदिक चौरासीलाखयोनि में परमेश्वरका रूप बराबर जाना उसे कोई दुःखदेनेकी सामर्थ्य नहीं रखता वह अवश्य मुक्तहोताहै हे उद्धव यह सबगुप्त ज्ञान हमने आज-तक किसीसे नहीं कहाथा सो तुझे सुनाया इसको यादरखनेसे तेरीमुक्ति होजावेगी व तुम भी यह ज्ञान हरिभक्त व साधु व महात्मा लोगों को सुनाना और जो मनुष्य चोर व लम्पट व पाखण्डी व लोभी व जुआरी व मद्यप व झूठेहों व जीवहिंसाकरके पराया उपकार नहीं मानें उनसे मत कहना जिसतरह अमृत पीनेवाले को दूसरी औषधखाने का प्रयोजन नहीं रहता उसीतरह यहज्ञान समझनेवालों को अपने भव सागरपार उतरनेवास्ते दूसरा कुछ उपाय करना न चाहिये जो कोई यहज्ञान व हरि कथा सच्चेमनसे सुनकर दूसरेको उपदेशकरेगा उसको हम यमराजकीफांसीसे छुड़ाकर परमपद देवेंगे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी बोले हे परीक्षित उद्धवने यहसब ज्ञान सुनकर आंखों में आंशू भरलिया व श्रीकृष्णजी के सामने हाथजोड़कर बिनयकी हे महाप्रभु आपने दयाकीराह ज्ञानकादीपक मेरे हृदयमें प्रकाशितकरके इसतरह माया-रूपी अँधेरा छुड़ादिया जिसतरह सूर्य निकलनेसे कुहिरा नहीं रहता व तुम्हारीकृपा से मन मेरा बिरक्तहोकर स्त्री व पुत्रोंका प्रेम छूटगया आपको दयाका पलटा कोई दियाचाहै तो किसीतरह उऋण नहीं होसक्ता इसलिये कमलरूपी चरणों को बार २ दण्डवत् करके यह बरदान मांगताहूं जिसमें तुम्हाराचरण छोड़कर मन मेरा दूसरी ओर न जावै यहबचन सुनकर श्रीकृष्णजी आनन्दमूर्त्तिने अपनीखड़ाऊं देकर कहा हे उद्धव तुम यहां से बदरीकेदार जाकर नित्य गंगास्नान कियाकरो व कन्दमूल खाकर मेरेचरणोंका ध्यान लगावो तुम्हारी मुक्ति होजावैगी और अब मैं भी कलयुग बासियोंके उद्धार होनेवास्ते भागवतरूपी मूर्त्ति अपनी संसार में छोड़कर गोलोकको जाऊंगा उस कथाके पढ़ने व सुननेसे संसारीमनुष्य भवसागरपार उतरजावैंगे उद्ध-वजी यहबचन सुनतेही श्यामसुन्दरका बियोग समझकर अतिदुःखीहोगये पर उनकी आज्ञा टालना उचित न जानकर खड़ाऊं का जोड़ा शिरपरधरलिया व दण्डवत्करने व परिक्रमालेने उपरान्त मोहनीमूर्त्तिका स्वरूप आंखोंकी राह हृदयमें रखकर उनसे बिदाहुआ व बदरिकाश्रम में जाकर त्रिभुवनपतिकी आज्ञानुसार स्नान व ध्यानकरने लगा सो उसी ज्ञानके प्रतापसे कुछदिन बीते तनुअपना साथ योगाभ्यासके छोड़कर मुक्तिपदवीपर पहुँचा इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने श्यामसुन्दरको ध्यानमें दण्डवत् किया और परीक्षितसे बोले हे राजन् देखो त्रिभुवनपतिने सब वेदोंकासार अमृतरूपी ज्ञान व भक्ति निकालकर ग्यारहवेंस्कन्ध में उद्धवको पिलायदिया जिसतरह देवता

व दैत्योंने समुद्र मथनकरके चौदहरत्न निकाले थे उसीतरह वेदव्यासजी ने सब वेद व शास्त्र देखकर उसकासार श्रीमद्भागवत बनाया है ॥

तीसवां अध्याय ॥

सब यदुवंशियों का आपस में लड़कर नाशहोना व श्रीकृष्णजी के पांव में जरा नाम केवट को बाण मारना ॥

राजा परीक्षितने इतनीकथा सुनकर बिनयकी हे मुनिनाथ श्यामसुन्दर को शाप छुड़ाने की सामर्थ्यथी फिर किसवास्ते उन्होंने यदुवंशियोंपर दया नहीं की शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित बसुदेवनन्दन परब्रह्मपरमेश्वरके अवतारको जो संसारीमायासे रहितथे यदुवंशियोंका नाश करनाथा पर आपने उनकी पालनाकीथी इसलिये अपने हाथ मारना उचित न जानकर ब्राह्मण से शाप दिलवादिया जब उद्धव बद्रीकेदार की ओर चलेगये तब श्रीकृष्णजीने ऐसा विचारा कि द्वारकापुरी में शाप नहीं व्यापैगा इसकारण यदुवंशियों को प्रभासक्षेत्र में चलनेवास्ते कहा सो त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार सिवाय राजा उग्रसेन व बसुदेवजी के सब यदुवंशी हाथी व घोड़े व रथोंपर चढ़कर प्रभासक्षेत्र में पहुँचे व स्नान व दान करने उपरांत उस दिन तीर्थ ब्रतरखकर वहां टिकरहे दूसरेदिन परमेश्वर की इच्छानुसार सब यदुवंशी मदिरापान करके मतवालेहोगये व समुद्र किनारे बैठकर अपनी अपनी बड़ाई करनेलगे व इसी बातपर स्नानकरती समय पहिले पानीके छींटोंसे लड़नेलगे फिर आपस में बाण व तलवार व गदा आदिक अनेकशस्त्र चलनेलगे जिसतरह अधर्म करनेवाले वेद व शास्त्रकावचन झूंठाजानकर अपने मनमाना पापकरते हैं उसीतरह ब्राह्मण के शापसे यदुवंशीलोग श्याम व बलरामका समझाना न मानकर जब बलभद्रजी से लड़ने वास्ते दौड़े तब दोनोंभाई अलग बैठकर कौतुक उनका देखनेलगे जब लड़ते २ शस्त्र सब किसी के टूटकर हाथी घोड़े मारेगये तब उसी पतलीको जो मूशलके चूर से समुद्रकिनारे जमीथी उखाड़कर एक दूसरेको मारनेलगा सो दुर्वासा ऋषीश्वरके शापसे वह पतली मारती समय तलवाररूपी घावहोकर सब यदुवंशी मरनेलगे जैसे कुलवंती स्त्री दूसरेपुरुषको देखकर छिपजाती है वैसे क्रोध उत्पन्न होनेसे सब यदुवंशियों का सतोगुण व ज्ञान शरीरसे जातारहा जिसतरह बांसका बन आगिलगने से जलजाता है उसीतरह दुर्बुद्धि उत्पन्न होनेसे बाप बेटा व भाई २ आपस में लड़कर छप्पनकरोड़ यदुवंशी नाशहोगये जब सिवाय श्याम व बलरामके और कोई जीता नहीं बचा तब श्यामसुन्दरने बलभद्रजी से कहा अब भार पृथ्वीका उतरगया इसलिये हम व तुम दोनों भाइयों को भी बैकुण्ठ में जानाचाहिये यह सुनतेही बलभद्रजीने सब बस्त्र अपना उतारिडाला व कोपीनबांधने उपरांत सिंधुके तीर बैठकर साथ

योगाभ्यासके अन्तर्द्धानहोगये तब श्यामसुन्दर चतुर्भुजी स्वरूप धारणकरके शङ्ख व चक्र व गदा व पद्म समेत समुद्रकिनारे नीचे वृक्ष पीपलके जाबैठे जिससमय त्रिभुवनपति वृक्षसे उठङ्गेहुये दहिनापैर अपनेबायें घुटनेपर रखकर बैकुण्ठजानेकी इच्छारखतेथे उसीसमय वसुदेवनन्दन की इच्छानुसार जरा नाम केवट जो बलिवानर का अवतार था धनुषबाणलेकर वहां आन पहुंचा व उसने पैर मुरलीमनोहर का दूरसे चमकताहुआ देखकर हरिणके धोखेसे बाणमारा तो वही तीर जिसमें मछलीके पेटसे निकलेहुये लोहेका फलबनाथा आनकर ऊपर चरण त्रिभुवनपति के लगा जब वह केवट अपना सौजा उठानेवास्ते निकटआया तब श्यामसुन्दर के पांवमें घाव देखकर पीलाहोगया व डरकेमारे कांपताहुआ हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मेरे बराबर दूसरा कोई अपराधी संसारमें न होगा जिसने लक्ष्मीपति को तीरमारकर दुःखदिया इस पापकरनेसे मेराउद्धार किसीतरह नहीं होसक्ता इसलिये तुम मुझे अपने हाथ से मारडालो जिसमें मेरे दण्डपावने का हाल सुनकर कोई दूसरा सन्त व महात्माका अपराध न करै व हे महाप्रभु जब तुम्हारी मायाको ब्रह्मादिक देवता नहीं जानसक्ते तब मुझ अधर्मी व अज्ञानी को क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी महिमाको पहुंचनेसकूं जब वह केवट बहुत बिलापकरके ऊपर चरण मुरलीमनोहर के लोटनेलगा तब श्यामसुन्दरने हँसकर कहा तू कुछ उदास मतहो मेरी इच्छानुसार तुझसे अनजान में यह अपराधहुआ है जिसमें ब्राह्मण का शाप झूंठा नहो तू धैर्यरख तेरेवास्ते बैकुण्ठ से बिमान आताहै यह बचन मुरलीमनोहर के मुखसे निकलतेही एक बिमान जड़ाऊ वहां आनपहुँचा सो त्रिभुवनपति की आज्ञानुसार वह केवट दिव्यरूप होने उपरांत बिमानपर बैठकर बैकुण्ठ में चलागया इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित देखो जो कोई ऐसे दीनदयालु परमेश्वरकी शरण छोड़कर दूसरे का भरोसा रखता है उसे बड़ामूर्ख समझना चाहिये उस केवट के जाने उपरांत दारुक नाम सारथीने ढूंढ़तेहुये वहां पहुंचकर जैसे मुरलीमनोहर को दण्डवत् किया वैसे त्रिभुवनपति की इच्छानुसार वह रथ घोड़ोंसमेत उड़कर आकाश में चलागया व श्रीकृष्णजीने दारुकसारथीसे कहा तुम द्वारकामें जाकर बसुदेवजी आदिक से यदुबंशियोंका हालकहके उन्हें समझादेना कि अब द्वारकापुरी समुद्र में डूबजावैगी इसलिये सब लोग अपनी २ वस्तु समेत अर्जुन के साथ हस्तिनापुर चलजावैं व हमारी ओर से अर्जुन को कहिदीजियो कि मेरे बैकुण्ठ जाने का कुछ शोच न मानकर सब स्त्री व बूढ़े व लड़कों को अपनेसङ्ग लेजावैं व हमने जो ज्ञान उसको गीतामें समझाया है वही बात सच्चजानकर मेरेचरणोंका ध्यानकरतारहै व हे दारुक मेराभजन व स्मरण करने व अपनाधर्म रखनेसे तेरी भी गति होजावैगी यहबचन सुनतेही दारुकसारथी उनसे बिदाहोकर रोता व पीटता द्वारका की ओर चला ॥

इकतीसवां अध्याय ॥

श्यामसुन्दर का बैकुण्ठधामको जाना व बसुदेव आदिकका उनके शोच में मरना ॥

शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित जब देवताओंने उस केवट को बिमानपर चढ़हुये बैकुण्ठकी ओर जाते देखा तब ब्रह्मा व इन्द्र व कुबेर व बरुण व गन्धर्व्व व बिद्याधर व चारण व किन्नर आदिक सब देवता अप्सरोंको साथलेकर अपने २ बिमानों पर गाते व बजाते व फूलबर्षातेहुये जहांपर श्यामसुन्दर बैठेथे वहां आकाश में आनकर इस इच्छासे इकट्ठेहुये कि अब द्वारकानाथ बैकुण्ठमें आते हैं चलकर मोहनीमूर्त्ति की छबि देखलेवैं नहीं तो फिर उस अद्भुतरूपका दर्शन कहां मिलैगा सो हम लोग भी उनको अपने स्थानपर लेजाकर दो चार दिन उनकी सेवा करैंगे ऐसा बिचारकर वे लोग मुरलीमनोहर के चढ़नेवास्ते अपने २ लोक से दिव्यबिमान लेआये थे जब श्यामसुन्दरने देवताओं को आकाश में देखा तब अपने शरीर में परमात्मा का ध्यान लगाकर आंखैं बन्दकरलीं व उसीशरीर से बिजुलीके समानचमककर इसतरह बैकुण्ठ को चलेगये कि ब्रह्मादिक देवताओं को भी अच्छीतरह उनकास्वरूप दिखलाई नहीं दिया इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित बैकुण्ठनाथकी महिमा व भेद को पहुंचना बहुतकठिन है पर सबकोई अपनीसामर्थ्यभर उनकागुण गाते हैं देखो जो आदिपुरुष भगवान् कैसे २ बीरों को मारकर गुरूका मराहुआबेटा यमपुरी से ले आये थे वही त्रिभुवनपति मनुष्यतनु धरने के कारण जरानाम केवटके बाणमारनेसे बैकुण्ठको चलेगये जब श्रीकृष्णजीका बंश जगत्में नहींरहा तब संसार में जन्मपाकर कोईजीता न बचैगा इतनीकथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब दारुकसारथी ने द्वारका में पहुंचकर हालमरने सब यदुबंशी व जाने श्याम व बल-रामका बैकुण्ठधाम में वसुदेव व उग्रसेन आदिक से कहा तब सब स्त्री व पुरुष छोटे बड़े जो वहां पर थे रोते २ व्याकुलहोकर प्रभासक्षेत्रको दौड़े जब उन्होंने रणभूमि में पहुंचकर समुद्रकिनारे सबयदुबंशियों की लोथैं पड़ीहुई देखीं व श्याम व बलराम का दर्शन नहींपाया तब बसुदेव व देवकी व राजा उग्रसेन हायमारकर उसीजगह मर गये व रुक्मिणी व सत्यभामाआदिक आठोंपटरानी मुरलीमनोहर व रेवती बलरामजी की

स्त्री चिताबनाकर जलमरीं व प्रद्युम्नआदिक सबबीरों की स्त्रियां अपने २ पतियों के साथ सतीहोगईं जब उससमय अर्जुन ने भी वहां पहुँचकर यह दशा देखी व दारुकके मुखसे श्यामसुन्दरका उपदेश सुना तब उसने ऐसाशोचकिया जिसका बर्णन नहीं होसक्ता पर श्यामसुन्दर ने जो ज्ञान अर्जुनको गीता में कहाथा वह समझकर अपनेमनको धैर्य्यदिया व सबकिसी ने अपने २ घरवालों की लोथ जलाकर शास्त्रा-नुसार क्रिया व कर्म किया व जिनके कुल में कोईनहीं बचाथा उनका अर्जुन ने दाह किया जब त्रिरात्री वहांपर होचुकी तब अर्जुनबज्रनाभ अनिरुद्धके बेटा व स्त्री व बूढ़े व बालकों को जो बचगये थे अपनेसाथ लेकर हस्तिनापुर को चला उससमय सिवाय स्थान रहने श्रीकृष्णजीके और सबद्वारका समुद्रमें डूबगई अबतक वहां कभी २ मन्दिर श्यामसुन्दरका बिजुलीकी तरह चमकताहुआ दिखलाई पड़ता है जब अर्जुनने हस्ति-नापुर पहुंचकर यह सबसमाचार कहा तब युधिष्ठिर आदिक पांचोंभाइयों ने राजगद्दी हस्तिनापुरकी परीक्षितको व राज्य इन्द्रप्रस्थ व मथुराका बज्रनाभको जो श्रीकृष्णजी के कुलमें बचाथा देदिया व आप पांचों भाई बिरक्तहोकर उत्तरदिशा में चलेगये व हिमालय में गलकर मुक्तपदवी पर पहुंचे इतनीकथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे राजन् जिसदिन श्रीकृष्णजी बैकुण्ठको पधारे उसीदिन सत्य व धर्म संसार से उठकर उनके साथ चलागया पर जो कोई इसस्कन्धको मनलगाकर पढ़े व सुनेगा वहअनेक जन्मके पापों से छूटकर मुक्ति पावैगा ॥

बारहवां स्कन्ध ॥

कलियुगबासी मनुष्यों व राजाओं का हाल कहना व तक्षक सांपका राजापरीक्षितको काटना व मार्कण्डेय ऋषीश्वरकी कथा ॥

पहिला अध्याय ॥

शुकदेवजीको कलियुगबासी राजाओं का हाल परीक्षित से बर्णनकरना ॥

राजा परीक्षित ने इतनीकथा सुनकर बिनयकी हे मुनिनाथ आपने कहा जिसदिन श्रीकृष्णजी बैकुण्ठको गये उसीदिन सत्य व धर्म संसारसे उठगया क्या उनके पीछे कोई ऐसाधर्मात्मा राजा नहींहुआ जो धर्मको स्थिररखता अब यह बतलाइये कि फिर किसके बंशमें राजगद्दी रहीथी शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित श्यामसुन्दरके रहनेतक द्वापर युगथा उनकेपीछे कलियुग में जो राजाहुये उन्होंने सच्चाई व धर्म छोड़दिया व थोड़ी आयुर्बलरहने से कुछ शुभकर्म भी नहीं करसक्ते थे जब श्रीकृष्णजी महाराज बैकुण्ठधामको गये तब पांडवों के बंशमें तुमचक्रवर्ती राजाहुये व तुम्हारे उपरान्त बज्र-नाभ व जन्मेजय चक्रवर्ती राजाहोंगे व जरासन्धकाबेटा जो सहदेवथा उसके बंश में पुरुजित्नाम राजाहोगा उसेचाणकमंत्री मारकर प्रदेवत् अपनेपुत्रको राज्यदेगा उसके बंशमें तीनसौ अड़तीस बर्षतक राजगद्दीरहैगी फिर शिशुनागनाम राजाहोगा उसके कुल में काकौरन व क्षेमधर्मा आदिक उत्पन्नहोकर तीनसौ साठबर्ष राज्यकरैंगे फिर महानन्दी राजाके बिन्दनामबेटा शूद्रीसे उत्पन्नहोकर बरजोरी सब क्षत्रियोंका धर्म नष्ट करैगा व उसके डर से सबकुलीन क्षत्री भागकर पंजाब में जा बसैंगे व पर्व्वत के रहनेवाले क्षत्री शूद्रधर्मरक्खैंगे व राजा बिन्दके आठ बेटे राज्यकरैंगे व उन आठोंको चन्द्रगुप्तनामदास मारकर आप राजगद्दी पर बैठजायगा व उसके बंशमें बारीचारी व देवहूती आदिक उत्पन्नहोकर हजारबर्षतक वहराजा रहैंगे फिर कण्वनाम मंत्रीदेवहूती अपने राजाको स्त्री के विषय में फँसेरहने से मारकर आपराज्यकरैगा उसीकुलमें बसु-देव व बहुमित्र व नारायणनाम आदिक उत्पन्नहोकर उनके बंशमें तीनसौ पैंतालीस बर्षतक राज्य रहैगा फिर कनलनामशूद्र नारायणनाम अपने राजाको मारकर आप राजगद्दी पर बैठजायगा उसके बंशमें कृष्ण व पूर्णमासआदिक उत्पन्नहोकर तीसपीढ़ी

साढ़े आठसौ वर्षतक राज्यकरैंगे फिर उगरतीशहरके रहनेवाले सातअहीर राजाहोकर उन्हें मारने उपरान्त कावोंका राज्यहोगा व उनके पीछे चौदहपीढ़ीतक मुसल्मानराजा होकर बादशाह कहलावैंगे व एकहजार निन्नानबे वर्ष उनका राज्य रहैगा व मुसल्मानों को जीतकर दशपीढ़ी गोरण्ड राज्य करैंगे उनके पीछे ग्यारहपीढ़ी निन्नानबे वर्षतक मौनका राज्य होगा इतने लोग कलियुगमें नामी राजाहोकर फिर अहीर व शूद्र व म्लेच्छ राजाहोंगे व कलियुगवासी राजा अपना कर्म्म व धर्म्म छोड़कर स्त्री व बालक व गौका बधकरैंगे व दूसरे का धन व स्त्री व पृथ्वी बरजोरी छीनकर काम व क्रोध व लोभ अधिक रक्खैंगे उनकी दशा देखने से प्रजालोग अपने कर्म्म व धर्म से न रहकर बहुत पापकरैंगे ॥

दूसरा अध्याय ॥

शुकदेवजी को कलियुगबासियोंका लक्षण कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित कलियुगमें प्रतिदिन संसारी मनुष्य दया व सच्चाई छोड़देने से सामर्थ्यहीन होजावैंगे और आयुर्बल थोड़ी होने में कुछ शुभकर्म्म उनसे नहीं बनपड़ेगा व राजालोग प्रजाको दुःख देकर चारोंभाग अन्नका लेलेवैंगे व बर्षा थोड़ी होकर अन्न कम उत्पन्नहोगा व महँगा पड़ने से सब मनुष्य खाने बिना दुःख पाकर अपने २ बर्ण व आश्रमका धर्म्म छोड़देवैंगे व कलियुगमें आयुर्बल मनुष्यकी एकसौबीसबर्षकी लिखी है पर अधर्म्म करने से पूरी आयुर्दाय न भोगकर उसके भीतर मरजावैंगे व कलियुगके अन्तमें बहुत पाप करने के कारण बीस बाईस बर्ष से अधिक कोई नहीं जीवेगा व ऐसा चक्रवर्त्ती व प्रतापीराजाभी कोई नहीं रहैगा जिसकी आज्ञा सातोंद्वीपके राजा पालन करैं जिनके पास थोड़ासाभी राज्य व देशहोगा वे अपने को बड़ा प्रतापी समझैंगे व थोड़ीआयुर्दाय होनेपरभी पृथ्वी व धन लेनेवास्ते आपसमें झगड़ा करैंगे व अपना धर्म्म व न्याय छोड़कर जो मनुष्य उनको द्रव्यदेगा उसका पक्ष करैंगे व पाप व पुण्यका बिचार न रक्खैंगे व चोरी व कुकर्म्म करने व झूंठ बोलने में अवस्था अपनी बिताकर दमड़ीकी कौड़ीवास्ते मित्रसे शत्रु होजावैंगे व गायोंका दूध बकरी के समान थोड़ाहोकर ब्राह्मणों में कोई ऐसा लक्षण नहीं रहैगा जिसे देखकर मनुष्य पहिचानसकै कि यह ब्राह्मण है पूछने से उनकी जाति मालूम होगी व धनपात्रकी सेवा सबलोग करैंगे व उत्तम मध्यम बर्णका कुछ बिचार नहीं रहैगा व ब्यापारमें छल अधिकहोगा व स्त्री पुरुषका चित्त मिलने से ऊंच नीचजाति आपस में भोग बिलास करैंगे व ब्राह्मणलोग अपना धर्म्म व कर्म्म छोड़कर जनेऊ पहिरने से ब्राह्मण कहलावैंगे व ब्रह्मचारी व बानप्रस्थ जटा शिरपर बढ़ाकर आचार व बिचार अपने आश्रमका छोड़देवैंगे व कङ्गाल उत्तम बर्णसे धनपात्र मध्यम बर्णको

अच्छा समझेंगे व मूर्खमनुष्य झूंठी बात बनानेवाला सच्चा व ज्ञानी कहलावेगा व तीनोंबर्ण के मनुष्य जप व तप व सन्ध्या व तर्प्पण करना छोड़कर नहाने उपरान्त भोजन करलेवैंगे व केवल स्नानकरना बड़ा आचार समझकर वहबात करैंगे जिसमें बीच संसार के यशहो व अपनी सुन्दरताई वास्ते शिरपर बाल रखकर परलोकका शोच न करैंगे व चोर व डाकू बहुत उत्पन्न होकर सबको दुःख देवैंगे व राजालोग चोर व डाकूसे मेलकर प्रजाका धन चुरवालेवैंगे व दशबर्षकी कन्या बालक जनैगी और कुलीन स्त्रियां दूसरे पुरुषपर चाहना रक्खैंगी व अपना कुटुम्ब पालनेवाले को सबलोग अच्छा जानकर केवल अपनेपेट भरनेसे सब छोटे बड़े प्रसन्न रहैंगे व बहुत लोग अन्न व बस्त्रका दुःख उठावैंगे व बृक्ष छोटे होकर औषधों में गुण नहीं रहैगा व शूद्रके समान चारोंबर्णका धर्म्म होकर राजालोग थोड़ीसी सामर्थ्य रखनेपर सब पृथ्वी लेनेवास्ते इच्छा रक्खैंगे व गृहस्थलोग माता व पिताको छोड़कर ससुर व साले व स्त्रीकी आज्ञामें रहैंगे व निकटके तीर्थों पर बिश्वास न रखकर दूरके तीर्थों में जावैंगे पर तीर्थ नहाने व दर्शन करनेसे जो फल मिलते हैं उसपर उनको निश्चय न होगा व होम व यज्ञआदिक संसारमें कमहोकर गृहस्थलोग दो चार ब्राह्मण खिलादेने का बड़ाधर्म्म समझैंगे व सब कोई धर्म्म व दया छोड़कर ऐसे सूम होजावैंगे कि उनसे अतिथिको भी भोजन व बस्त्र नहीं दियाजायगा व संन्यासीलोग अपना कर्म्म व धर्म छोड़कर गेरुआ बस्त्र पहिरने से दण्डी मालूमहोंगे इतनी कथा सुनाकर शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जब अन्त कलियुगमें इसीतरह घोरपाप होगा तब नारायणजी धर्म्म की रक्षा करनेवास्ते सम्भलदेश में गौड़ब्राह्मणके घर कल्कीअवतार लेवैंगे व नीले घोड़ेपर चढ़कर हजारों राजा व अधर्मी व पापियों को खड्गसे मारडालैंगे जब उनके दर्शन मिलने से बचेहुये मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त होजावैगा तब वह लोग पाप करना छोड़कर अपने धर्म्म से चलैंगे उसके आठसौबर्ष उपरान्त सतयुगहोकर सब छोटे बड़े अपना धर्म्म करैंगे हे राजन् इसीतरह ब्राह्मण व क्षत्री व बैश्य व शूद्र चारोंबर्णका बंश बराबर चलाआताहै सतयुगके आदिमें राजा देवापी चन्द्रबंशी जो बद्रिकाश्रममें व राजामरु सूर्य्यबंशी जो मन्दराचल पहाड़पर बैठेहुये तपकररहे हैं सूर्य्यबंशीकुलको उत्पन्न करैंगे व सतयुगके प्रवेश करनेसे कलियुगकाधर्म जातारहैगा देखो इतने बड़े २ राजा पृथ्वीपर होकर मिट्टीमें मिलगये व सिवाय भलाई व बुराई के कुछ उनकेसाथ नहीं गया और यह शरीर मरने उपरान्त कुछ काम न आनकर पड़ा रहने से इसको कौवे व कुत्ते खाजाते हैं व कीड़े पड़ने व दुर्गन्ध आवने से कोई उसके पास खड़ा नहीं होता व जलादेने से राख होजाताहै जो लोग नाश होनेवाले शरीरको पुष्टकरने वास्ते जीवहिंसा करते हैं उनको बड़ा मूर्ख समझना चाहिये जब ऐसे प्रतापी राजा नाशहोकर केवल यश व अयश उनका रहगया तब वह शरीर लाखों यत्नकरने पर

भी किसीतरह स्थिर नहीं रहता इसलिये मनुष्यको उचितहै कि अपने शरीर व संसार की प्रीति व अहङ्कार छोड़कर हरिचरणों में ध्यान लगावे व परमेश्वरका भजन व स्मरणकरके भवसागर पार उतरजावे मनुष्य तनु पानेका यही फलहै नहीं तो पीछेसे बहुत पछतावेगा व हे परीक्षित तुम बड़े भाग्यवान्हो जो अन्तसमय परमेश्वरकी कथा व लीला सुनने में तुम्हारा मन लगाहै ॥

तीसरा अध्याय ॥

शुकदेवजीको राजा परीक्षितसे पिछले राजोंका हाल कहना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित जो नृपति दूसरेका राज्य व धनलेनेवास्ते इच्छा रखकर पिता व पुत्र व भाई भाई में लड़मरते हैं ऐसे राजोंपर पृथ्वी हँसकर कहती है देखो यह सब मृत्युका कलेवाहोकर मेरे मालिक हुआचाहते हैं व अपने बाप व दादा का मरना देखनेपर भी संसारीतृष्णा नहीं छोड़ते व जितना परिश्रम दूसरे की पृथ्वी व द्रव्य व स्त्री लेनेवास्ते उठाकर अपने व बिराने को मारडालते हैं उतना उपाय काम व क्रोध व मोह व लोभ बलवान् शत्रुओं को जीतने व अपना परलोक बनावनेवास्ते नहीं करते जब राजापृथु व पुरूरवा व गाधि व नहुष व सहस्रार्जुन व मांधाता व सगर व खट्वांग व धुन्धमार व रघु व तृणबिन्दु व ययाति व सर्याति व कुबलयाश्व व बलि व नृग व हिरण्यकशिपु व हिरण्याक्ष व वृत्रासुर व रावण व भौमासुर आदिक ऐसे २ प्रतापी व शूरबीर राजा सबगुण व योगाभ्यास जाननेवाले मेरे ऊपर रहकर मुझे अपना कहते २ मरगये पर मैं किसी के साथ न जाकर अब केवल कहानी उन लोगों की रहगई तब कलियुगबासी छोटे २ राजा जो कुछ धर्म व पराक्रम नहीं रखते वृथा मुझे अपनाजानकर आपसमें लड़तेमरते हैं इसलिये मनुष्यतनु पाकर यह चाहिये कि मन अपना संसारसे बिरक्त रखकर परमेश्वरकी लीला व कथासुनै व हरिचरणोंमें प्रीति उत्पन्नकरै हे राजन् तुमको कुछ संसारी चाहना रह गई हो तो इन राजोंकी गति समझकर बिरक्तहोने उपरान्त हरिचरणोंमें ध्यानलगावो व संसारी व्यवहार झूंठाहोकर सिवाय फल हरिभजनके और कुछ साथ नहीं जाता इतनीकथा सुनकर राजा परीक्षितने बिनयकी हे मुनिनाथ चारोंयुगोंके कौन २ धर्म हैं व बीच कलियुगके कौन उपाय करनेसे हरिचरणों में प्रीति उत्पन्नहोती है शुकदेवजीने कहा हे परीक्षित सतयुगमें धर्मके चारों पैर सत्य व दया व तप व दान बने थे व सब छोटे बड़े अपने २ धर्म व कर्म से रहतेथे व सबलोग आपसमें प्रीतिरखकर कोई किसी से शत्रुता नहीं रखताथा व त्रेतामें ब्राह्मण व क्षत्री व बैश्य व शूद्र अपना २ धर्म्म रखकर यज्ञ आदिक करतेथे परन्तु दूसरे की स्त्रीगमन करनेसे धर्म का एक पैर टूटजाता है व द्वापर में संसारीमनुष्य अपने यश मिलनेवास्ते यज्ञ व

पूजाकरते हैं परन्तु दूसरेका धनलेने व परस्त्रीगमनकरनेसे धर्म के दो चरण टूटजाते हैं व कलियुग में तीनअंश पाप व एकभाग पुण्यहोने से धर्मका एक चरण रहकर तीन पैर टूटजाते हैं व कलियुगवासी मनुष्य केवल थोड़ासा दानदेना व कुछसच्चाई रखकर अन्त कलियुगमें वह भी छोड़देवेंगे इसलिये बीच कलियुग के संसारीमनुष्य लोभी व कुरूप व अभागी अधिक उत्पन्न होकर एक दोरुपयेवास्ते मनुष्य का प्राण मारडालेंगे व कुलीन स्त्रियां अपनेपतिकी प्रीति छोड़कर दूसरेपुरुषसे प्रेम रक्खेंगी व जबतक पति धनपात्ररहैगा तबतक स्त्री उसकी आज्ञामें रहकर विपत्तिपड़ने से दूसरे पुरुषके पास चलीजावेंगी व सबलोग अच्छेभोजन व सुन्दरी स्त्रीकी चाहना रखकर संन्यासी आदिक गृहस्थहोजावेंगे व विपत्तिपड़नेसे सेवक अपने स्वामी को छोड़कर दूसरीजगह चाकरीकरेगा व सब कोई अपने स्वार्थ की प्रीति रखकर बुढ़ौतीसमय राजालोग अपने दासों को छोड़ा देवैंगे व बहुत मनुष्य द्रव्य व संतानकी अधिक चाहनारखकर भूत व प्रेतोंकोपूजेंगे व धनलेनेवास्ते बेटा मा व बापको दुःखदेगा माता व पिता भी खानेके लोभ से अपना बेटा बेचडालैंगे व शूद्रलोग बैरागी व संन्यासी आदिकका बेषबनाकर दानलेने उपरान्त ब्राह्मणों को मंत्र उपदेश करेंगे व आपकथा बांचनेवास्ते ऊंचे सिंहासन पर बैठकर ब्राह्मणोंको नीचे बैठालैंगे व इसीतरह अनेक पाप संसारमें होकर हरिभजन व स्मरण कम होजायगा व चारोंयुग का फल प्रति दिन मनुष्यके शरीरमें प्रकटहोता है जिससमय मन जप व ज्ञान व धर्मकी ओर लगै उससमय धर्म सतयुगका समझना चाहिये व जब लोभ व तृष्णा मन में अधिक उत्पन्नहो तब धर्म त्रेतायुगका जानो जिससमय अभिमान व कामदेव व प्रेम मनमें प्रकटहो उससमय धर्म द्वापरका समझो व जब झूंठ व जीवहिंसा व क्रोध मनमें अधिक उत्पन्नहो वह धर्म कलियुगका जानना उचित है राजा परीक्षितने कलियुग का लक्षण सुनतेही बहुत डरकर पूंछा हे मुनिनाथ जब कलियुग का ऐसा धर्म है तो संसारी जीव किसतरह उद्धारहोंगे शुकदेवजीने कहा हे राजन् कलियुगमें यज्ञ व तप व योगाभ्यास आदिक कुछ नहीं बनपड़ता परन्तु एकबात बहुत अच्छीहै दूसरेयुगोंमें संसारीमनुष्य सच्चे व धर्मात्मा व दयावान् होने पर भी बहुत दिनोंतक यज्ञ व तप व पूजा नारायणजी की व तीर्थस्नानकरनेसे मुक्तहोतेथे सो कलियुगमें केवल परमेश्वर का नाम जपने व उनकी लीला व कथासुनने व गंगानहाने से भवसागरपार उतर जातेहैं जिसतरह अजामिल ब्राह्मण महापापी मरतेसमय नारायणनाम अपने बेटेको पुकारनेसे वैकुण्ठ में चलागयाथा उसीतरह कलियुगबासी परमेश्वर का नाम लेतेही सब पापोंसे छूटकर पवित्रहोजाते हैं दूसरेयुगमें अधर्मकमहोकर जब किसीसे कुछपाप होजाताथा तब वह प्रायश्चित्त उसका करडालतेथे कलियुगमें बहुतअधर्म होनेसे कोई प्रायश्चित्त नहीं करसक्ता इसलिये दीनदयालु परमेश्वर केवल भगवान् का नामलेनेसे

सबपाप छुड़ाकर सहज में मुक्तकर देते हैं तिसपर भी कलियुगवासी अज्ञानी मनुष्य दिनरात संसारीसुखमें लपटेरहकर एकक्षण नारायणजी को याद नहीं करते व जिह्वा से वृथाबककर परमेश्वर का नाम नहीं लेते कलियुग में केवल भगवान् का नामलेने व पूजा व ध्यान व भजनकरने व उनकी कथा व लीला सुनने व भक्तिरखने से संसारीमनुष्यों का सबदुःख व पाप व अज्ञान छूटजाता है और जब उनके हृदय में नारायणजी की कृपा से ज्ञानरूपी दीपक प्रकाशित होताहै तब वह मायारूपी अँधियारेसे बाहर निकलकर मुक्तिपावते हैं व मनुष्य सतयुगमें तप व त्रेतामें यज्ञ व द्वापर में पूजा व कलियुग में भजन व स्मरण करने से कृतार्थ होता है सो हे राजन् तुम भी श्रीकृष्णजी सांवलीसूरतका ध्यान हृदय में लगावो तो चतुर्भुजी स्वरूप होजावोगे व तुमने कलियुगवासियोंके उद्धारहोनेका धर्म जो पूछाथा सो संसाररूपी समुद्र से पार उतरनेवास्ते परमेश्वरकी लीला व कथासुनना व पढ़ना सहज समझनाचाहिये इससे उत्तम कोई दूसरा उपाय नहीं है और यह श्रीमद्भागवत पुराण जो ब्रह्माजीसे नारदमुनिने सुनकर वेदव्यासजी को बतलाया व मैंने उनसे पढ़कर तुमको सुनाया जब यही कथा सूतजी नैमिषार मिश्रिष में शौनकआदिक अट्ठासीहजार ऋषीश्वरोंको सुनावेंगे तब यह अमृतरूपीकथा कलियुगमें प्रकटहोकर संसारी मनुष्य को भवसागर पारउतारेगी ॥

चौथा अध्याय ॥

शुकदेवजीको अग्नि व जल व बायु आदिकका हाल राजापरीक्षित से बर्णन करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे परीक्षित ब्रह्माके एकदिन में चौदहइन्द्र राज्यभोगते हैं सन्ध्या समय दिनप्रलय होने से तीनोंलोकों में सबजीवों का नाशहोजाता है व उनके दिन के प्रमाण रातभी होकर रैनिसमय ब्रह्मासोरहते हैं और जबब्रह्माकी आयुर्बल पूरी होकर महाप्रलय होता है तब सैकड़ोंबर्ष पहिले से अबर्षणहोकर काल पड़ता है सो अन्न न उत्पन्नहोनेसे सबजीव मारेभूखके मरजाते हैं व पाताल में शेषनागजी बिषउगलकर व आकाशमें सूर्य्यदेवता अपनातेज प्रकटकरके चौदहोंलोकों को जलादेते हैं फिर मेघपतिके पानीबरसानेसे पृथ्वीपर सिवायजलके और कुछ दिखलाई नहीं देता व जल व अग्नि व बायु आकाशमें व आकाशशब्दमें व यहपांचतत्त्व अहङ्कारमें व अहङ्कार महत्तत्त्वमें व महत्तत्त्व मायामें व माया ईश्वरके रूपमें समाजातीहै केवल नारायणजी अबिनाशीपुरुष जिनकाआदि व अन्त कोईनहींजानता और उनकेपास मन व शब्द व सतोगुण व रजोगुण व तमोगुण आदिक पहुंचने नहींसक्ते बर्त्तमानरहकर जाते हैं ये लक्षण महा

प्रलय के हैं व जागना व सोना व सुषुप्ति व संसारीउत्पत्ति मायाके गुणों से समझनी चाहिये व आदि पुरुषभगवान् को ज्ञानरूपी आंखके देखने से मायारूपी संसार झूंठा माल्मूहोता है जिसतरह कपड़े में सूतकेतार होते हैं उसीतरह सबजीवों में परमेश्वर की शक्ति व्यापकरहती है जिसने सूर्य्यरूपी ज्ञानसमझा उसके हृदय में काम व क्रोध व मोह व लोभका अँधियारा नहीं रहता और वह देवता व मनुष्य व दैत्य व पशु आदिक चौरासीलाखयोनि को बराबर समझकर किसीकेसाथ शत्रुता व मित्रता नहीं रखता जिसतरह बत्तीजलने से दीपकका तेल कमहोकर तेलचुकजाने उपरान्त दिया बुझजाता है व जलना तेलका कुछमाल्म नहीं होता उसीतरह कालपुरुष प्रतिदिन तेज व बल व आयुर्दाक्षीण करते २ मृत्युपहुँचने से सबजीवों को मारडालता है व अज्ञानी मनुष्य मरना अपना यादनहींरखता इसलिये जो कोई कालरूपी मुँहसे छूटना चाहै वह हरिभजन व स्मरण करके भवसागरपार उतरजावै ॥

पांचवां अध्याय ॥

शुकदेवजी का राजापरीक्षित से परमेश्वरकी स्तुति वर्णन करना ॥

शुकदेवजी ने कहा हे राजन् श्रीमद्भागवत में सबलीला व चरित्र परमेश्वर का लिखा है व भागवत पुराणको उन परब्रह्मका स्वरूप समझनाचाहिये जिनके नाभिसे कमलकाफूल निकलने से ब्रह्मा ने उत्पन्नहोकर महादेवको उत्पन्न कियाथा सो तुम तक्षकसांपके काटने व अपने मरनेका कुछडर न रखकर सबजगह परमात्मापुरुष को बर्त्तमान देखो व आदि व अन्त व मध्य में केवलपरब्रह्म अविनाशीपुरुष को जो उ-त्पन्नहोने व मरने से रहित हैं सचजानो व सब व्यवहार संसारका झूंठा समझो तब तुमको माल्मूहोगा कि कौन किसको काटता है अपने अज्ञान व परमेश्वरकी मायासे संसारीलोग उत्पन्नहोना व मरना मनुष्यका माल्मूकरते हैं सच पूंछोतो आत्मासदा अमररहकर कभीनहीं मरता और यह शरीर मायाकेगुणों से बनता व बिगड़तारहता है जिसतरह पानी भरेहुये बर्त्तनमें छायापड़नेसे दूसरे सूर्य्य दिखलाई देते हैं व बर्त्तन तोड़डालने से फिर वह छाया सूर्य्य में मिलजाती है व बर्त्तनके तोड़ने से सूर्य्य का नाश नहीं होता उसीतरह शरीर उत्पन्नहोने से जन्मलेना व उसकेनाशहोने उपरान्त मरनाकहाजाता है इसलिये परमात्माको सूर्य्यरूपी जानकर शरीर बर्त्तनके समान समझनाचाहिये और यह शरीर पांचकर्मइन्द्री व पांचज्ञानइन्द्री व पांचतत्त्व व मन बुद्धि सत्रहवस्तु मिलकर तैयारहोता है बुद्धि को रथरूपी व मन घोड़ा उसरथका जानना चाहिये व उसमनमें परब्रह्मका प्रकाश मिलने से शरीरको चलने व फिरने व खाने व पहिरने की सामर्थ्य होती है जबवह प्रकाश शरीर से निकलकर बिलगहोजाता है तब शरीर मुर्दाहोकर सिवाय गल व सड़जाने के कुछकाम नहींआता व चौरासीलाख

योनि में नारायणकी शक्ति होकर बाहरभी वही परमेश्वर कालरूप से रहते हैं सोतुम अपनाशरीर मायाकाबनाया हुआ समझकर परमात्माको तनसे अलग जानो ब्राह्मणके शापानुसार तक्षकसांपके काटने से आजशरीर तुम्हारानाश होजायगा व जीवात्मा जो शरीर से बिलग रहता है वहनहींमरेगा और अबतुम्हारे मरनेकासमय निकटआपहुँचा इसलिये बीचध्यान चरण व स्मरणनाम परमेश्वरके मनलगाकर इसबातका विश्वास जानो कि अनेकजन्म के पाप नारायणनामलेने से छूटजाते हैं व भागवतपुराण सुनने से अब तुम्हारी मुक्तिहोने में सन्देहनहींरहा जबतुम श्यामसुन्दरकाध्यान जिनकीकथा हमने सुनाई है करोगे तब उनकी ज्योति में लीनहोने से इसशरीर छूटनेका ज्ञान याद नहीं रहेगा ऐसामूलमन्त्र जिसमें सबगुणपरमेश्वरके लिखे हैं हमने तुमको सुनादिया इससे उत्तम कौनबस्तु चाहते हो इस अमृतरूपीकथा के सच्चमनसे पढ़ने व सुननेवाले अवश्य मुक्तिपदवी पर पहुंचते हैं ॥

छठवां अध्याय ॥

राजापरीक्षितको तक्षक सांपका काटना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब श्रीमद्भागवत् सात दिनमें सुनकर राजापरीक्षितका अज्ञान जातारहा व परमात्मा को शरीर से अलग व सब जगह बर्त्तमान देखने में प्रीति शरीरकी छूटगई तब उसने बिधिपूर्व्वक शुकदेवजी की पूजा करने व चरणपर गिरने उपरान्त हाथ जोड़कर बिनयकी हे मुनिनाथ आपने मेरा सन्देह व शोच छुड़ाकर मुझे उद्धार किया महात्मा व परोपकारी लोग सदासे अज्ञानी मनुष्यको जो बीच अँधियारे कुवां माया मोह स्त्री व लड़कों के पड़ा रहता है ज्ञान रूपी रस्सी थँभाकर निकालने उपरान्त भवसागरपार उतार देते हैं और यह भागवत पुराण जिसके आदि व मध्य व अन्तमें श्रीकृष्णजीका माहात्म्य लिखाहै सुनकर मेरा मन हरिचरणों में लीन होगया इसलिये अब मुझे तक्षक सांपके काटने व अपने मरने का कुछ डर नहीं रहा आज सातवेंदिन तक्षकके काटने से मैं यह शरीर त्याग करूंगा आप आज्ञादीजिये तो बोलना छोड़कर श्यामसुन्दरके स्वरूपका ध्यान लगाऊं शुकदेवजी ने कहा इससमय तुमको हरिचरणोंका ध्यान अवश्य करना चाहिये जब यह बचन सुनकर परीक्षित आंखें बन्दकरके श्रीकृष्णजीका ध्यान करनेलगा व शुकदेवजी व सब ऋषीश्वर वहांसे उठकर अपने २ स्थानपर चलेगये तब तक्षकसांप पहर दिन रहे अपने स्थानसे ब्राह्मणकारूप धरकर परीक्षितको काटनेचला उसीसमय कश्यपजी की आज्ञासे धन्वन्तरि बैद्य तुमड़ी आदिक सब औषध झोली में लेकर परीक्षितको अच्छा करने वास्ते घरसे निकले जब राहमें ब्राह्मणरूपी तक्षकने धन्वन्तरिको देखकर पूंछा तुम कहां जातेहो तब उसने उत्तर दिया आज हस्तिनापुरमें तक्षकसर्प्प राजा

परीक्षितको काटैगा इसलिये मैं उसका बिष उतारने जाताहूं यह बात सुनकर माया रूपी ब्राह्मणने कहा तुम तक्षक सांपके काटेहुये को अच्छा करसक्तेहो धन्वन्तरिबोले तक्षक क्या मालहै किसीतरहका सांपकाटै तो मैं अच्छा करदेसक्ताहूं यह बचन सुन कर उसने कहा तक्षकसांप मैं हूं हम यहां एक बृक्षको काटते हैं तुम फेर उसे हरा करदेव तो मुझे बिश्वासहो कि परीक्षितका बिष उतारसकोगे धन्वन्तरिने कहा बहुत अच्छा जैसे तक्षकने उसीजगह बरगदके बृक्ष में काटा वैसे वह बृक्ष एक लोहारसमेत जो उसपर चढ़ाहुआ लकड़ी काटताथा तक्षकके बिषसे जलकर राखहोगया धन्वन्तरि ब्राह्मणने आचमन करने उपरान्त संजीवनी मंत्र पढ़कर जैसे उस राखपर पानी का छीटा मारा वैसे राखसे डाली व पत्ता निकलकर दोघड़ी में फिर वह बृक्ष ज्योंकात्यों तैयार होगया व लोहार लकड़ी काटनेवाला भी जीउठा यहहाल देखतेही तक्षकसांप घबड़ाकर धन्वन्तरिसे बोला हे द्विजराज तुम किसबस्तुके वास्ते चाहना रखकर परीक्षितका बिष उतारने जातेहो धन्वन्तरि ने उत्तर दिया हम ऐसे धर्म्मात्मा राजाको जिससे बहुत लोगोंका भलाहोताहै जिलाकर मुँहमांगा धन पावेंगे तक्षकबोला महाराज तुम केवल बिष उतारने का मंत्र जानकर औरभी कुछ ज्ञान रखते हो या नहीं धन्वन्तरिने कहा मैं भूत भविष्यत् बर्त्तमान तीनोंकालकी बात जानसक्ताहूं यह बात सुनकर तक्षकने पूंछा हे द्विजराज पहिले तुम बिचारो कि राजापरीक्षितकी आयुर्बल पूरी होचुकी या कुछ औरभी है धन्वन्तरिने अपनी बिद्यासे बिचारकर कहा परीक्षित की आयुर्बल पूरीहोकर अब थोड़ा बिलम्ब उसके मरने में रहगया है यह बात सुन कर तक्षकबोला महाराज जब ऐसाहै तब तुम्हारा मंत्र उसको गुण न करैगा कदाचित् कुछ उसकी आयुर्बल और होती तो तुम अवश्य उसे जिलादेते और तुम्हें द्रव्यकी चाहनाहै तो मुझसे लेकर अपने घर चलेजाव धन्वन्तरि ने कहा बहुत अच्छा फिर तक्षकने एक बृक्षके नीचे उसको द्रव्य बतला दिया सो धन्वन्तरि वहां खोदकर जितना उससे उठसका उतना द्रव्य लेकर अपने घर चलागया व तक्षक हस्तिनापुरमें जाकर कीड़ारूपसे एक फूलमें बैठरहा जब ब्राह्मणों ने वह फूल उठाकर राजापरीक्षित को दिया तब कीड़ारूपी तक्षकने फूलसे निकलकर जैसे परीक्षितको काटलिया वैसे शरीर राजाका जल कर राख होगया व चैतन्यआत्मा दिव्य बिमानपर बैठकर बैकुण्ठ में पहुँचा व तक्षक सांप वहांसे उड़कर इन्द्रलोकमें चलागया यह हाल देखकर जितने लोग उसजगह बैठे थे रोनेलगे व सब स्त्री व पुरुष नगरवालों ने यह समाचार सुन कर बड़ाशोच किया व जनमेजयने परीक्षित अपने पिताको दाह देकर शास्त्रानुसार क्रिया व कर्म्म उसका किया व मंत्रियों की इच्छानुसार राजसिंहासन पर बैठा व जो लोहार बृक्षके साथ जलकर फिर जीउठाथा उसने हस्तिनापुर में आनकर सब हाल वहांका जो २ बात तक्षकसांप व धन्वन्तरि ब्राह्मणसे हुईथी ज्योंकी त्यों सब लोगों से

कही यह समाचार परीक्षितके मन्त्रियों ने सुनकर तक्षकसे बहुत बुरा माना जब जनमेजयको बारहबर्ष राजगद्दीपर बैठेहोचुके तब उसने भी मंत्रियों से हाल मरने अपने पिता व भेंटहोने तक्षक व धन्वन्तरिका सुनकर बहुत क्रोधकरके कहा देखो तक्षक ने शृङ्गीऋषिके शाप देने से मेरे पिताको काटा तो उसका दोष नहींथा पर उसने धन्वन्तरि बैद्यको राहमें द्रव्य देकर हस्तिनापुर आने से बर्जा इसलिये मैं उसे अपना शत्रु समझकर इसतरह सब सांपोंको अपने पिताके बदले जलाडालूंगा जिसमें उनका बीर्य संसारमें न रहै यह बात बिचारतेही जनमेजय ने ब्राह्मण व ऋषीश्वरों को बुलाकर उनसे बिनयकी आपलोग कोई ऐसा यज्ञकराइये जिसमें सब सांप जलकर मरजावें ब्राह्मणों ने कहा बहुत अच्छा सर्पसत्रयज्ञ करने में सबसांप आपसे आनकर जलजाते हैं वही करो जब जनमेजयने सारस्वत ब्राह्मणको आचार्य्य बनाकर वह यज्ञ करना आरम्भ किया तब मंत्रके प्रभावसे हजारों सांप अपनी जगह छोड़कर दौड़ेहुये वहां चलेआये व अपनी इच्छासे श्रुवामें बैठकर आहुति देतेसमय अग्निकुण्डमें गिरने व जलनेलगे जब इसीतरह करोड़ों सर्प्प उस यज्ञमें जलकर मरगये व तक्षक अपनेप्राण के डरसे इन्द्रके शरणमें जाछिपा इसलिये यज्ञशालामें नहीं पहुँचा तब जनमेजय ने ब्राह्मणों से पूंछा महाराज सब सांप जलकर मरेजाते हैं पर तक्षक मेरा शत्रु अभीतक क्यों नहीं आया ब्राह्मणों ने उत्तर दिया तक्षक सांप इन्द्रकी रक्षा करने से अबतक यहां आनकर नहीं जला यहबात सुनकर जनमेजयने यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणोंसे कहा महाराज हमारे शत्रुकी रक्षा करने से इन्द्रभी मेरा बैरी ठहरा सो तुम्हारा मन्त्र ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जिसमें तक्षक इन्द्रसमेत यहां आनकर जलजावे ऋषीश्वरों ने उत्तर दिया परमेश्वरकी दयासे मन्त्रमें सब सामर्थ्य है अब हमलोग तुम्हारे कहने से वैसाही मन्त्र पढ़ेंगे जैसे ब्राह्मणों ने वही मन्त्र पढ़कर अग्निकुण्डमें आहुति डाली वैसे सिंहासन राजाइन्द्रका जिसके नीचे वह सर्प्प बैठाथा तक्षकसमेत उड़ा यह हाल देखकर आस्तीकनाती वासुकिनागने बृहस्पति पुरोहितसे कहा इससमय आप कुछ सहायता इन्द्र व तक्षककी नहीं करते तो वहदोनों अग्निकुण्ड में जलकर मरजावेंगे तब बृहस्पति गुरुने आस्तीकको साथ लियेहुये यज्ञशाला में जाकर अङ्गिरसगोत्री ब्राह्मण यज्ञकरानेवालों से जो उनके कुलमें थे कहा तुमलोग आहुति देने में थोड़ी देर लगाकर यही पूर्णाहुति जनमेजय से दक्षिणा मांगलेव जिसमें इन्द्र व तक्षकका प्राण बच जावै जब मन्त्र के प्रभाव से इन्द्रका सिंहासन तक्षक समेत उड़ताहुआ यज्ञशाला में आन पहुँचा तब बृहस्पतिगुरु व आस्तीकने बहुत स्तुति करनेउपरान्त जनमेजय से कहा हे राजन् परीक्षित को ब्राह्मण के शाप से मरना लिखाथा इसमें तक्षक का कुछ दोष नहीं है व तक्षक सब सर्पों का राजा होकर अमृत पीनेसे वह मरने नहीं सक्ता और तुम यह जो समझते हो कि तक्षक के काटने से हमारा बाप मरा सो यह

बात ज्ञानके बाहरहोकर मरना व जीना दुःख व सुख हानि व लाभ परमेश्वर की इच्छा व अपने प्रारब्ध से होता है देखो जिसतरह संसारी लोग आगि से जलने व पानी से डूबने व शस्त्रसे मारने व सांपके काटने व बाघके खाने व स्थानके गिरने व बिषके देने व अनेक रोगादिकसे जैसा जिसके प्रारब्धमें लिखा रहता है मरजाते हैं पर एक बहाना होकर मृत्युका नाम कोई नहीं लेता उसीतरह तुम्हारा पिताभी अपने प्रारब्धानुसार तक्षक सांपके काटनेसे मरकर मुक्तिपदवीपर पहुँचा व तुमने एक तक्षक के बदले करोड़ों सर्प्प बिना अपराध जलाकर मारडाले ज्ञानी व धर्म्मात्माको ऐसा न चाहिये अब क्रोध अपना क्षमाकरके यह यज्ञ मतकरो व मरना परीक्षितका अपने प्रारब्धसे समझकर और सर्प्पोंको न जलाओ व किसी के मारने से कोई नहीं मरता व उन परमेश्वरको दण्डवत् करनी चाहिये जिनकी मायासे लोगोंको यह अभिमान उत्पन्न होताहै कि हमने अपने शत्रुको मारकर जीतलिया नारायणजी केवल यह बात कहने वास्ते बनाकर मारना व जिलाना सबका अपने आधीन रखते हैं दूसरे किसी को यह सामर्थ्य नहीं है जो उसमें दममारसकै जब यह बात बृहस्पतिगुरु व आस्तीक नागसे सुनकर जनमेजयको ज्ञान उत्पन्नहुआ तब उसने ब्राह्मणों से कहा पूर्णाहुति अग्निमें मतडालो उससमय तक्षकने जनमेजय को ऐसा बरदान दिया कि जो लोग हमारा व तुम्हारा नाम स्मरण करेंगे उनको कोई सर्प्प न काटेगा जब जनमेजय ने ऋषीश्वरों व ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर बिदाकिया तब बृहस्पतिगुरु जिनकी दयासे इन्द्र व तक्षकका प्राणबचाथा उनको अपने साथ लेकर चलेगये व इतनी कथा सुना कर सूतजी ने श्यामसुन्दरको ध्यानमें दण्डवत्करके शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा हमने अमृतरूपी भागवतपुराण तुम लोगोंको सुनादिया इसके प्रतापसे सब पाप छूट कर तुम्हारी मुक्ति होजावैगी ॥

सातवां अध्याय ॥

सूतजीका शौनकादिक ऋषीश्वरों से शुभाशुभ कर्मोंका फल कहना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा इन्द्रादिक देवताओंको परमेश्वर की यह आज्ञा है कि जो मनुष्य जैसा पुण्य व यज्ञ व तप आदिक करे उसको वैसा स्वर्ग देना चाहिये व पाप करनेवालोंको धर्मराज उनके कर्मानुसार नरकमें भेजदेवें व जो लोग केवल परमेश्वर का भजन व स्मरणकरते हैं उनको इन्द्रपुरीसे ऊपर ब्रह्मलोक में जगह मिलती है व नारायणजी की निर्गुणपूजा व भजन करनेवाले बैकुण्ठ में जाकर महाप्रलयतक वहां का सुखभोगते हैं सो राजा परीक्षित भी भागवतपुराण सुनने से श्यामसुन्दर के प्रेममें लीनहोकर बैकुण्ठको चलागया जितना यज्ञ व तप व भजन व स्मरण संसारीलोग करते हैं उसमें एक वास्ते चाहने किसी अर्थ व दूसरा

बिना रखने इच्छाके होताहै सो हमने दोनों तरहकाहाल इस भागवत में तुमलोगों को सुनादिया अठारहों पुराण में श्रीमद्भागवत उत्तम है यह बात सुनकर शौनकादिक ऋषीश्वरोंने नाम अठारहोंपुराणोंका पूंछा तब सूतजीने कहा ब्रह्मपुराण पद्मपुराण बिष्णुपुराण शिवपुराण लिंगपुराण गरुड़पुराण नारदपुराण अग्निपुराण स्कन्दपुराण भविष्यपुराण ब्रह्मबैवर्त्तपुराण मार्कण्डेयपुराण मत्स्यपुराण कूर्मपुराण बाराहपुराण नृसिंहपुराण ब्रह्माण्डपुराण भागवतपुराणहैं इन सब पुराणोंमें परमेश्वरका गुण व चरित्र बर्णनकिया है व किसी पुराणमें सात्विकी व किसी में राजसी व किसीमें तामसीधर्म लिखा है व श्रीमद्भागवत में केवल सात्विकीधर्म व भगवद्गुण वेदव्यासजीने बर्णन किये हैं सो हमने तुमको सुनाया अब और क्या सुना चाहतेहो ॥

आठवां अध्याय ॥

मार्कण्डेय ऋषीश्वर की उत्पत्तिको सूतजी का कहना ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनीकथा सुनकर पूंछा हे सूतजी आपने परमेश्वर का गुण व चरित्र हमलोगों को सुनाकर कृतार्थ किया सो तुम बहुतदिन चिरंजीव रहो और हमलोग अब यह सुनाचाहते हैं कि हमारे कुलमें मार्कण्डेय ऋषीश्वरने परमेश्वरकी माया किसतरह देखकर बैकुण्ठनाथका दर्शन पाया व ब्यासजी ने सब वेदों को किसतरह अलग अलग वर्णनकिया सूतपौराणिक ने कहा जब ब्रह्माने देखा कि कलियुगबासी मनुष्य थोड़ी आयुर्दायहोने से सब वेद पढ़ नहीं सकैंगे तब ब्रह्मा के बिनयकरने से नारायणजीने वेदव्यासका अवतार धारणकरके वेदों का सार निकाल लिया व उसका नाम बिलग २ रखकर वह सब अपने चेलोंको पढ़ाया व जो पुराण वेदोंमें से निकाला था उसका नाम मार्कण्डेयपुराण रक्खा यह सुनकर ऋषीश्वरोंने पूंछा पहिले यह बतलाइये कि मार्कण्डेयने इतनीबड़ी आयुर्बल किसतरह पाईथी सूतजीने कहा मृकण्डनाम एक ऋषीश्वर होकर उसके कोई पुत्र नहीं था जब उस ऋषीश्वरने सन्तान उत्पन्न होनेवास्ते देवताओंके नामपर बहुत तप व होमकिया तब देवताओं ने दर्शनदेकर कहा हे ऋषीश्वर तेरेभाग्यमें बेटा नहीं लिखा है पर तप व होमकरने के प्रतापसे तेरे एक पुत्र उत्पन्नहोकर बारहबर्षकी अवस्था में मरजायगा यह सुनकर ऋषीश्वरने बिनयकी मैं सन्तानहोने की इच्छारखताहूं बारहबर्षका होकर मरजायगा तो मैं सन्तोषकरलूंगा जब देवताओं के आशीर्बाद से मृकण्डके पुत्र उत्पन्नहुआ तब ऋषीश्वरने मार्कण्डेय उसका नाम रखकर बड़ा हर्ष मनाया जब वह बालक बारह बर्षका हुआ तब उसके माता व पिता रोनेलगे मार्कण्डेयने उनको रोतेदेखकर पूंछा तुमलोग किसवास्ते इतना बिलाप करतेहो उन्होंने कहा अयबेटा अब तुम्हारे मरने का दिन निकट आनपहुँचा यही समझकर हमलोग रोदेते हैं यह सुनकर मार्कण्डेय

बोले संसारमें कोई ऐसा उपाय भी है जिसके करनेसे हम जीते रहैं उसके माता पिताने कहा अय बेटा नारायणजी की दयासे सब मनोरथ मनुष्यके पूर्णहोते हैं यह बचनसुनतेही मार्कण्डेय बनमें जाकर परमेश्वर का तप व ध्यानकरनेलगा जब उसे छः मन्वन्तर तपकरते बीतगये तब राजाइन्द्रने डरकर बिचारा कि यह ब्राह्मण तप करके मेरा इन्द्रासन छीनलेगा ऐसा बिचारतेही इन्द्रने कामदेव व बसन्तऋतु व गन्धर्ब व अप्सरोंको मार्कण्डेय की तपस्याभङ्गकरनेवास्ते भेजा सो उन्होंने हिमालय पहाड़से उत्तर ओर भद्रानदीके किनारे जहां मार्कण्डेय शिलापर बैठाहुआ तपकरताथा पहुँचकर क्या देखा कि वहां घने २ वृक्षोंकी छायाहोकर अनेकरङ्गके सुगन्धित फूल व फललगे हैं व कोकिला व मोरआदिक अनेकपक्षी वहां बैठेहुये अपनी सुहावनी बोली बोलरहे हैं यह शोभा देखकर कामदेव आदिक मोहितहोगये व जब प्रातःकाल मार्कण्डेय अग्निहोत्रकरके वहां पर बैठे उसीसमय अप्सरा उनके सामने नाचकर भावबतलाने लगीं व गन्धर्वों ने अनेकबाजा बजाकर छः राग व छत्तीस रागिनी गाये व कामदेव ने कोकिलारूप होकर कामरूपी बाणचलाया व बसन्तऋतु की महिमासे बहुत उत्तमबाग वहां तैयारहोकर शीतल मन्द सुगन्ध हवा बहनेलगी जब नाचतीसमय एक अप्सरा का कपड़ा हवासे उड़गया तब वह नंगेबदन गेंद उछालतीहुई मार्कण्डेय के निकट चलीआई पर मार्कण्डेयका चित्त कुछ चलायमान नहीं हुआ जब अनेक उपायकरने पर भी कामदेव व अप्सरा आदिकका कुछ बश उनपर नहीं चला तब वह लोग शापदेनेके डरसे भागकर कांपतेहुये इन्द्रकेपास फिर आये व बहुत लज्जितहोकर कहा महाराज हमारा पराक्रम मार्कण्डेय पर कुछ नहीं चलता यह हाल सुनकर इन्द्रादिक देवताओंने बहुत आश्चर्यमाना व देवतालोग मार्कण्डेयके दर्शन वास्ते आप वहां जाकर उनकी स्तुति करने उपरान्त चले आये जब इसीतरह कुछदिन और मार्कण्डेयको तपकरते बीते तब नारायणजी गरुड़ पर बैठकर वहांगये व अपने चतुर्भुजी स्वरूपका दर्शन मार्कण्डेय को देकरकहा जो कुछ तुझे इच्छाहो सो बरदानमांग मार्कण्डेयने बैकुण्ठनाथको देखतेही दण्डवत् की व परिक्रमा लेने व स्तुति करने उपरान्त हाथ जोड़कर बोला हे दीनानाथ मैं अपनी आयुर्बल अधिक चाहताहूं त्रिभुवनपति ने कहा तू एक कल्पांत तक जीतारहैगा ऐसा कहकर लक्ष्मीपति बैकुण्ठको चलेगये ॥

नवां अध्याय ॥

नारायणजी का मार्कण्डेय ऋषीश्वरको महाप्रलयका कौतुक दिखलाना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जब मार्कण्डेय ब्रह्माके एक दिन प्रमाण आयुर्बल पावनेपरभी उसीतरह तप व ध्यान करतारहा तब कुछदिन उपरान्त नारा-

यणजी ने मार्कण्डेयको फिर दर्शन देकर कहा अब तू क्या चाहताहै मार्कण्डेय हाथ जोड़कर बोला हे महाप्रभु अब मुझे किसी बस्तुकी चाहना नहीं है पर तुम्हारी माया का थोड़ासा कौतुक देखना चाहताहूं जिस मायासे आप सब जीवोंको उत्पन्न करके फिर नाश करदेते हैं बैकुण्ठनाथने कहा बहुत अच्छा आजके सातवें दिन हम तुझे अपनी माया दिखलावेंगे पर तुम चैतन्य रहकर मुझे भूलमतजाना भूलने से तुम्हारा पता नहीं लगेगा मार्कण्डेयने बिनयकी हे त्रिभुवनपति मैं आपको कभी न भूलूंगा जब यह बात सुनकर नारायणजी बैकुण्ठको चलेगये तब मार्कण्डेयभी वहांसे अपने स्थानपर चलाआया जब सातवें दिन मार्कण्डेयने नदी किनारे बैठकर तप करतेसमय महाप्रलयको देखना चाहा तब क्या दिखलाई दिया कि एकओरसे बड़ी आंधी उठ कर मारे धूरके अँधियारा छागया यह हाल देखकर मार्कण्डेय ने मनमें कहा हमने आजतक ऐसी आंधी कभी नहीं देखी फिर चारोंओरसे पानी उमड़ाहुआ आनकर जहां वह बैठाथा वहां अथाह जल होगया व उस पानी में वह गोता खानेलगा व कभी गोता खाकर जलमें डूबजाता व कभी पानी के बेगसे ऊपर निकल आताथा व कभी घड़ियाल आदि जलचर उसको निगलजाते व कभी अपने मुखसे उगिल देते थे जब मार्कण्डेयकी समझमें हज़ारोंबर्षतक उसका यह हालहुआ तब वह अपनेमन में बहुत लज्जित होकर कहनेलगा देखो मुझसे बड़ी चूकहुई जो ऐसा बरदान मांग कर इसदशाको पहुँचा अब परमेश्वरसे यह इच्छा रखताहूं कि नारायणजी दयाकरके मुझको इस पानी से जीताबाहर निकालें मार्कण्डेयको भगवान्जी का ध्यान करतेही जब मायारूपी जलमें एकटापू व बरगदका बृक्ष दिखलाई दिया तब उसने प्रसन्न होकर मनमें कहा हे परमेश्वर मुझे किसीतरह इसटापूतक पहुँचादे तो बरगदकीडाली पकड़कर अपना प्राण बचालेऊं जब मार्कण्डेय भगवान्की दयासे उस बृक्षके पास पहुँचगया तो उसने क्या देखा कि एकपत्ता बरगदका दोने के समान बनाहोकर उसमें एक बालक बारह तेरह दिनकी अवस्थाका श्यामरङ्ग चन्द्रमुख कमलनयन अतिसुन्दर सोताहुआ अपने पैरका अँगूठा हाथमें पकड़े मुँहमें डाले चूसता है जब मार्कण्डेय निकट जाकर उस बालककी छबि देखने लगे तब बालकरूपी भगवान् ने अपनाश्वास खींचा तो मार्कण्डेय मच्छड़कीतरह उसकी नाक में घुसगया और वहां पर पृथ्वी व आकाश व सूर्य व चन्द्रमा व सातोंद्वीप व नवोंखण्ड व दशोंदिशा व आठोंलोकपाल व तालाब व वृक्ष व नगर व ग्राम व समुद्र व पहाड़ व खानिचांदी व सोना व कुटी ऋषीश्वर व मुनीश्वर व अपना स्थान आदिक सब संसारीबस्तुओं को उस स्वरूप में देखकर आश्चर्यमाना जब श्वासछोड़ते समय नाक के बाहर निकलआया तब उसने फेर उस बालकको उसीतरह देखकर चाहा कि उसे गोद में उठाकर प्यारकरैं ऐसा बिचारकर मार्कण्डेय ने जैसे उस बालक को उठाने चाहा

वैसे बालक रूप भगवान् मायारूप पानी व वृक्ष समेत अन्तर्द्धान होगये व मार्कण्डेय अपने समक्ष में करोड़ोंबर्षतक मायाका कौतुक देखकर जब चैतन्यहोगया तब उसने अपने को ज्योंका त्यों नदी किनारे बैठापाया और बिचारा तो दो घड़ी से अधिक बिलम्ब नहीं हुआ था ॥

दशवां अध्याय ॥

महादेव व पार्वतीजी का मार्कण्डेय के पास आना ॥

सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा मार्कण्डेयने मायारूपी महाप्रलयका कौतुक देखकर ध्यान में नारायणजी से विनयकी हे त्रिभुवनपति मुझसे बड़ा अपराधहुआ जो आपकी माया देखनेवास्ते बरदानमांगा जहां तुम्हारी मायाको ब्रह्मादिक देवता न जानकर बड़े २ ऋषीश्वर व मुनि व ज्ञानी उस माया में फँसे रहते हैं वहां मेरी क्या सामर्थ्य है जो तुम्हारी मायाका भेदजानसकूं जिसतरह मच्छड़ पहाड़ उठावने की इच्छा रखकर वह काम नहीं करसक्ता उसीतरह मैं यह बरदान मांगकर लज्जित हुआ मुझे अपने शरणागत जानकर अपराध मेरा क्षमाकीजिये मार्कण्डेयजी ऐसा कहकर बीच ध्यान परमेश्वरके लीनहोगये इतनी कथा सुनाकर सूतजी बोले हे ऋषीश्वर परमेश्वर की महिमा जाननेवास्ते सब छोटे बड़े अपने सामर्थ्यभर परिश्रम करते हैं पर उनके भेदको पहुंच नहीं सक्ते जिसने भेद जाननेवास्ते गोतामारा उसका आजतक पता नहीं लगा अब हम मार्कण्डेय ऋषीश्वरका एकहाल और कहते हैं सुनो एक दिन महादेव व पार्व्वती दोनों मनुष्य बैलपर चढ़े बहुतसे गणोंको अपने साथ लियेहुये चले जातेथे राहमें पार्व्वतीजीने मार्कण्डेय को इसतरह बीचध्यान परमेश्वरके लीन बैठे देखा जिसतरह समुद्रका पानी गंभीर रहकर विना चलने हवा के नहीं हिलता तब पार्व्वतीने महादेवजी से हाथजोड़कर बिनयकी हे महाप्रभु इस ऋषीश्वरको तपस्या का कुछ फल दीजिये महादेवजी ने कहा इसे किसी वस्तु की चाहना नहीं है हम इसको क्या देवैं सिवाय भक्ति व ध्यान हरिचरणों के यह मुझ को भी कुछ माल नहीं समझता पर तेरे कहनेसे हम चलकर इसके साथ दो बातें करते हैं साधु व महात्माकी संगतिकरनेमें बड़ा गुणहोता है जब महादेवजी पार्व्वती समेत मार्कण्डयजी के पासगये तब उनको परमेश्वर के ध्यानमें ऐसा लीनदेखा कि इनके जाने का हाल उसे कुछ मालूम नहीं हुआ इसलिये शिवजीने उसके हृदय में प्रवेशकरके जिस चतुर्भुजी मूर्त्ति श्यामसुन्दर का ध्यान वह करताथा उस स्वरूपको वहां से अन्तर्द्धान करके अपना प्रकाश उसजगह प्रकटकिया जब मार्कण्डेयको अपने हृदयमें चतुर्भुजीरूप दिखलाई न देकर एकपुरुष श्वेतवर्ण दशभुजा व तीन आंखवाला शेरकीखाल व मुण्डमाला पहिने त्रिशूल व डमरू लियेहुये ध्यानमें देख

पड़ा तब उसने घबराकर आंखखोलदी तो महादेव को उसीरूप से पार्व्वती समेत बहुतगण साथलियेहुये जैसे अपने सामने खड़ेदेखा वैसे उठखड़ाहुआ व दण्डवत् करने उपरांत परिक्रमा लेकर उनको बड़े आदरभावसे आसनपर बैठाला व बिधि-पूर्वक उनकी पूजनकरके हाथजोड़कर बिनयकी हे दीनानाथ आप सब देवताओं के मालिकहोकर सब गुणोंसे भरेहैं मैं ऐसी सामर्थ्य नहीं रखता जो तुम्हारी स्तुतिकरने सकूं जिसतरह आपने दयालुहोकर मुझे अपना दर्शन दिया उसीतरह मेरी हजारों दण्डवत् लीजिये औ अपने आनेका कारण बतलाइये यह बात सुनतेही भोलानाथ ने हँसकरकहा हे ऋषीश्वर जिस महाप्रलय में चौदहोंलोक नाशहोकर कोई जीव नहीं रहता उसमहाप्रलयको तुमने देखा इसलिये मैं तुम्हारे दर्शनकरनेआयाहूं जितना ब्राह्मण व हरिभक्त व साधु मुझे प्यारेहैं उतना इन्द्रादिक देवताओंसे प्रीति नहीं रखता जिसतरह मुझे अपनाभक्त प्यारा मालूम होताहै उसीतरह नारायणजी के सेवकों को भी जानताहूं ज्ञानी मनुष्य को हमारे व बिष्णु भगवान्के बीचमें कुछ भेद समझना न चाहिये जितना तुम्हारे ऐसे हरिभक्तों का दर्शन पाकर संसारीमनुष्य शुद्धहोजाते हैं उतना तीर्थ स्नानकरने व देवताओंके दर्शन से पवित्र नहीं होते तुमको जो कुछ इच्छाहो वह बरदान हम से मांगलेव हमारादर्शन निष्फल नहीं होता यहबचन सुन-कर मार्कण्डेय ऋषीश्वरने महादेव व पार्व्वतीजी को साष्टांग दण्डवत्करके बिनयकी हे महाप्रभु आपसाक्षात् ईश्वरहोकर मुझ अज्ञानी को इतनी बड़ाई देते हैं जिसतरह कल्पवृक्षके नीचे जाकर मनुष्यका सब मनोरथ पूर्णहोजाताहै उसीतरह तुम्हारा दर्शन पानेसे कुछ इच्छा न रहकर केवल यही बरदान मांगताहूं जिसमें सदा बीच चरण बैकुण्ठनाथ व आपके मेरी भक्ति बनीरहै यहबात सुनकर शिवजीने कहा तुम एक कल्पतक चिरंजीव रहकर कभी बूढ़े न होगे व तुमको सदा मेरी व नारायणजी की भक्ति बनीरहैगी व अठारहों पुराणमें एक तुम्हारे नामसे प्रकटहोगा यहबरदान देने उपरान्त शिवजी वहां से अन्तर्द्धान होकर कैलास पर्व्वतपर चलेगये व सब हाल उत्पन्नहोने व तपस्याकरने व बरदानपावने मार्कण्डेय ऋषीश्वरका पार्व्वतीजीसे बर्णन किया इतनीकथा सुनाकर सूतजीने शौनकादिक ऋषीश्वरोंसे कहा तुमने मार्कण्डेय ऋषीश्वरका हाल जो पूंछा सो हमने सुनादिया ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरों का सूतजी से शंख चक्र गदा व पद्म आदिक का हाल पूंछना ॥

शौनकादिक ऋषीश्वरोंने इतनी कथा सुनकर पूंछा हे सूतजी परमेश्वर के पूजन करने की बिधि बर्णनकीजिये और यह बतलाइये कि शंख व चक्र व गदा व पद्म

शस्त्र व बैजयन्तीमाला व पीताम्बर जो आठोंपहर नारायणजी धारण किये रहते हैं ये सब कौनवस्तु हैं सूतजी ने कहा तुमलोग बड़ीगुप्तबात पूंछते हो इसलिये मैं वेद- व्यास अपने गुरूको दण्डवत्करके कहताहूं सुनो यह ब्रह्माण्ड भगवान्कारूप है पृथ्वी पैर आकाश शिर आंखें सूर्य्य बायु नाक दशोंदिशाकान लोकपाल भुजा चन्द्रमा मन यमराजदांत वृक्षशरीर के रोयें मेघघटा शिरकेबाल पहाड़तनुकी हड्डी समुद्र पेट नदियां शरीरकी नसें होकर सबब्यवहार संसारका बिराटरूप में समझना चाहिये जो मनुष्य उसरूपकाध्यान लगाकर सबजीवों में परमेश्वरकी शक्ति बराबर देखता है व कामव क्रोध व मोह व लोभआदिक के बश न होकर किसीसे शत्रुता व मित्रतानहीं रखता व कौस्तुभमणि नारायणजीकी ज्योति व बैजयन्तीमाला माया व पीताम्बर चारोंवेद व जनेऊकाजोड़ा ओंकार व कानोंकाकुण्डल सांख्य शास्त्र व योगशास्त्र व मुकुटब्रह्म लोक व शेषनाग उनकेबैठनेका सिंहासन व पद्म सतोगुण व गदापराक्रम व शंख जलतत्त्व व सुदर्शनचक्र अग्नितत्त्व व खड्ग आकाशतत्त्व व शार्ङ्गधनुष कालरूपहो- कर परमेश्वर के तरकसमें सबजीवों का कर्म भराहता है व बैकुण्ठपरमेश्वरका छत्र व गरुड़वेदरूप व लक्ष्मीजी शक्ति व नन्द व सुनन्दादिक पार्षद उनकी बिभूति हैं इसलिये नारायणजी अपने भक्तोंपर प्रसन्नहोकर अपनाभूषण व बस्त्रपहिने व शंख लियेहुये दर्शनदेते हैं व उनका चरित्र कोईनहींजानसक्ता हमने गुरूकी कृपा से यह सबकथा तुमकोसुनाई जो मनुष्य प्रातःकाल उठकर नारायणजी का ध्यान शंख व चक्र व गदा आदिक समेत करता है तुरन्तउसपर प्रसन्नहोकर उसेकृतार्थ करदेते हैं इतनी कथासुनकर ऋषीश्वरोंने पूंछा बारहोंमहीने में सूर्य्यभगवान् नये २ रूपपृथक् २ नाम से जो प्रकाश करते हैं उनका क्याकारण है सूतजी बोले सूर्यदेवता एकस्वरूप भगवान्जीका है सो क्षण व घड़ी व पहरके पहिचानकरने का ज्ञान उनके प्रकाश से मालूम होता है चैत के महीने में सूर्य धातानाम सेप्रकाशकरते हैं व कृतस्थली अप्सरा उनके आगे नाचकर तुम्बुरुगन्धर्ब्ब गाना सुनावता है व हेतीराक्षस उनकारथ पीछे ढकेलता है व बासुकिनाग उसरथमें सर्प्पोंकी रस्सीबांधने व कृतयक्ष उसकी मरम्मत करनेवास्ते बनेरहते हैं व पुलस्त्यनाम ऋषीश्वर उनकेसाथ रहकर स्तुति करतेजाते हैं व बैशाखमें सूर्यकानाम अर्यमाहोकर पुलहनाम ऋषीश्वर उरजानाम यक्ष प्रहेती राक्षस व पुंजकस्थलीअप्सरा व नारदगंधर्ब व कृष्णनीरनाग व ज्येष्ठ में सूर्यकानाम मित्रहोकर अत्रि ऋषीश्वर व पौरुषेय राक्षस व तक्षकनाग व मेनका अप्सरा व हाहा गन्धर्ब व रथस्वयक्ष व आषाढ़में बरुणनाम सूर्यकाहोकर वशिष्ठ ऋषीश्वर रम्भाअप्सरा हूहूगन्धर्ब सहजन्ययक्ष सर्वज्ञनाग चित्रसेन राक्षस व सावनमें इन्द्रनाम सूर्य्यकाहोकर बिश्वाबसुगन्धर्ब परमलोचाअप्सरा श्रोता यक्ष बर्य्यनामराक्षस भादों में बिवश्वाननाम सूर्यकाहोकर उग्रसेन गन्धर्ब व ब्याघ्र नाम राक्षस असारन यक्ष भृगुऋषीश्वर निम्लोचा

अप्सरा शंखपालनाग व कुवार में त्वष्टानाम सूर्यकाहोकर जमदग्निऋषीश्वर कामल नाग तिलोत्तमा अप्सरा धृतराष्ट्रगन्धर्ब बृहद्धतीराक्षस सत्यजित्यक्ष व कार्तिक में बिष्णुनामसूर्यकाहोकर अश्वतरनाग व रम्भाअप्सरा सुरबर्चागन्धर्ब सत्यजित् यक्ष व बिश्वामित्र ऋषीश्वर घृतापीराक्षस व अगहनमें अंशुमाननाम सूर्यकाहोकर कश्यप ऋषीश्वरतार्क्ष्ययक्ष ऋतुसेनगन्धर्ब उर्बशीअप्सरा बिन्दाछत्रराक्षस महाशंखनाग व पूसमें भगनाम सूर्यकाहोकर सुबर्च्चनाम राक्षस अरिष्टनेमिगन्धर्ब परणयक्ष ऋषीश्वर व करकोटकनाम नाग पूर्बचित्ती अप्सरा व माघ में पुरुषनाम सूर्यकाहोकर धनञ्जयनाग व बातनाम राक्षस सुखेनगन्धर्ब सुरुचियक्ष घृताची अप्सरा गौतम ऋषीश्वर व फागुन में पर्जन्यनाम सूर्यकाहोकर क्रतुनामयक्ष सुबर्चाराक्षस व बिश्वगन्धर्ब व ऐरावतनाम सेनजिता अप्सरा सूर्य के साथ रहकर सबमहीनों में अपना २ काम करते हैं इतनीकथा सुनाकर सूतजीने कहा हे ऋषीश्वरो जो मनुष्य प्रातःकाल व सन्ध्यासमय सूर्यभगवान्का स्मरण करके इनसब ऋषीश्वर आदिक का नामलेवे वह अनेक जन्मके पापों से छूटकर परमगति को पावता है ॥

बारहवां अध्याय ॥

सूतजी का श्रीमद्भागवतकी संपूर्ण कथा कहना ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जो कथा श्रीमद्भागवत अमृतरूपी हमने तुमको सुनाई उसकेआदि से अन्ततक सबलीला व चरित्र परमेश्वरका लिखा है पहिले व्यासजी व नारदकासंवाद फिर राजापरीक्षितकी कथा जिसतरह उनको शृङ्गीऋषि ने शापदियाथा व हाल आवने शुकदेवजीका राजा परीक्षित के पास व फिर बातचीत होना नारद व ब्रह्माजी से व कथा अवतारोंकी व भेंटहोना बिदुर व उद्धव से व मुख्य ज्ञान सुनाना मैत्रेयजीका बिदुरको व बर्णनकरना उत्पत्ति ब्रह्माण्डकी व परमेश्वरका बाराह अवतारधरकर मारनाहिरण्याक्षका व कपिलदेव अवतारलेकर सांख्ययोग ज्ञान सिखलावना देवहूती अपनीमाताको व हाल तनुत्यागकरने सतीजी व यज्ञविध्वंसहोने दक्षप्रजापति का व कथा राजाध्रुव व पृथु व प्राचीन बर्हिष व पुरंजन व प्रियब्रतकी व हाल सातोंद्वीप व सातोंसमुद्र व नवोंखण्ड व मारना वृत्रासुरदैत्य व लेने नरसिंह अवतार व रक्षाकरनी प्रह्लादभक्त व कथा गजेन्द्रमोक्ष व लेना कच्छपअवतार वास्ते निकालने चौदहोंरत्न व मथने समुद्र व राजाबलि व बामनअवतारकी व हाल राजा पुरूरवा व उर्बशी अप्सरा व सूर्यबंशी व चन्द्रबंशी व परशुराम व रामचन्द्रअवतार व राजा दुष्यन्त व रानी शकुन्तला व राजाययाति व देवयानी व यदु जिनके बंशमें श्यामसुन्दर त्रिभुवनपतिने बसुदेवजीके घर अवतारधारणकिया व जाना श्यामसुन्दरका गोकुल में व अनेकलीला करके सुखदेना नन्द व यशोदा आदिक सबब्रजबासियों को व

फिर मथुरा में आनकर मारना राजाकंसको व युद्ध करना जरासन्ध आदिकसे व
बसावना द्वारकापुरी व हाल बिवाहने रुक्मिणी आदिक आठों पटरानी व मारने
भौमासुर व लेआवना सोलहहजार एकसौकन्या उनके यहां से व बिवाहकरना अपना
उनके साथ व मारना बड़े २ दैत्य व अधर्मी राजाओं को व कौरव व पाण्डवों से
महाभारतकराके भार उतारना पृथ्वीका व नाश करना छप्पनकरोड़ यदुवंशियों का
दुर्बासा ऋषीश्वरके शापसे व चलेजाना बैकुण्ठमें हे ऋषीश्वरो हमने सम्पूर्ण कथा
श्रीमद्भागवत व हाल मार्कण्डेय ऋषीश्वर व कथा सूर्य्यभगवान् की तुम लोगों को
सुनादी संसारीमनुष्यों को उचित है कि जिह्वासे आठोंपहर परमेश्वरका नाम लेकर
कानों से उनकी कथा व लीलासुनें व नारायणजीके गुण व महिमाकी चर्चा आपस
में रखकर थोड़ा या बहुत जहांतक बनिपड़ै हरिचरणों में ध्यान लगावैं व सबजीवों
पर दया रखकर अपनी सामर्थ्य भर मनसा बाचा कर्मणासे उपकार करतेरहैं मनुष्य
तनु पानेका यही फल समझना चाहिये जैसा व्यासजी ने भागवतपुराणमें परमेश्वर
का निर्मलयश लिखाहै वैसा दूसरे पुराणों में बर्णन नहीं किया जिन शुकदेवजी महा-
राजकी दयासे हमने अमृतरूपी कथा तुमको सुनाई उन्हैं बारम्बार दण्डवत् करताहूं
जितना फल ब्राह्मणको चारोंवेद पढ़ने से प्राप्त होताहै उतना फल एक श्रीमद्भाग-
वत पढ़ने व सुनने में जानना चाहिये क्षत्रियको इसके पढ़ने व सुनने से बिजय व
बैश्यको ब्यापार में लाभहोकर मरने उपरान्त मुक्तिपदवी मिलती है व शूद्रके सब
पाप छूटजाते हैं ॥

तेरहवां अध्याय ॥

अठारहों पुराणोंका हाल ॥

सूतजी ने शौनकादिक ऋषीश्वरों से कहा जिन भगवान् के चरणोंका ध्यान ब्रह्मा
व महादेव व इन्द्र व उन्चास मरुद्गण व कुबेरआदिक देवता व ऋषीश्वर व योगी
व मुनि अपने हृदय में रखकर दिनरात उनका स्मरण व भजन करते हैं व उनके
आदि व अन्तको किसी ने नहीं पाया उनको बारम्बार नमस्कार करताहूं जिन्हों ने
वास्ते रक्षाकरने देवता व निकालने अमृतादिक चौदहोंरत्नके कच्छपरूप धारणकिया
था उनको मेरी हजारों दण्डवत् पहुँचें हे ऋषीश्वरो अठारहों पुराणमें जितने २ श्लोक
हैं उनके हाल सुनो ब्रह्मपुराण दशहजार व पद्मपुराण पचपनहज़ार व बिष्णुपुराण
तीसहजार व शिवपुराण चौबीसहजार व श्रीमद्भागवत पुराण अठारहहज़ार व नारद
पुराण पचीसहजार व मार्कण्डेयपुराण नवहज़ार व अग्निपुराण पन्द्रहहज़ार चारसौ
व भविष्यपुराण चौदहहज़ार पांचसौ व ब्रह्मवैवर्त्तपुराण अठारहहज़ार व लिंगपुराण
ग्यारहहज़ार व बाराहपुराण चौबीसहज़ार व स्कन्दपुराण इक्यासीहज़ार एकसौ व

बामनपुराण दशहज़ार व कूर्मपुराण सत्रहहज़ार व मत्स्यपुराण चौदहहज़ार व गरुड़ पुराण उन्नीसहज़ार व ब्रह्माण्डपुराण बारहहज़ार श्लोकहैं व श्रीमद्भागवतकासार चार श्लोक नारायणजी ने ब्रह्माजी से कहा व ब्रह्माजी ने उसका हाल नारदसे बतलाया व नारदने व्यासजी को उपदेश किया व वेदव्यासने अठारहहज़ार श्लोकमें यह सब हाल बिस्तारपूर्ब्बक लिखकर भागवतपुराण उसका नामरक्खा इसपुराणके आदि व मध्य व अन्तमें सब नारायणजीका चरित्र बर्णनकियाहै जो लोग इस पुराणको भादों सुदी पूर्णमासी के दिन सुनहुले सिंहासन पर धरकर वेद व पुराण जाननेवाले ब्राह्मणों को दान करते हैं उनको परमपद मिलताहै श्रीमद्भागवत महापुराण सत्रहों पुराण से उत्तमहोकर चारोंवेदकासार इसमें लिखाहै जिसतरह नदियों में गङ्गा व देवतोंमें नारायण तपस्या करनेवालों में महादेवजी बड़े हैं उसीतरह सब पुराणों में भागवतपुराण उत्तम है इस पुराण के पढ़ने व सुनने से हमारी व तुम्हारी दोनोंकी गति होजावेगी जिनके नामलेने व दण्डवत् करने से सब पाप व दुःख छूटजाते हैं उन परमेश्वर व वेदव्यास व शुकदेव महाराजको दण्डवत् करताहूं जिसतरह देवतालोग स्वर्गमें रह कर अमृत पीने से नहीं मरते उसीतरह संसारमें जो लोग अमृतरूपी भागवतपुराणको सच्चेमनसे पढ़ व सुनकर उसपर बिश्वास रक्खैंगे उनको संसारमें रोगादिकका दुःख न होगा व भूत प्रेतआदिकका भय छूटकर अशुभग्रहों का फल नहीं ब्यापैगा ॥

दो० चूहामल सुत बिमल मति गज्जनलाल कुमार ।
गोब्राह्मण हरिचरणरत माखनलाल उदार ॥
सो० बिरच्यो माखनलाल श्रीमद्भाषा भागवत ।
सुनत कटै भवजाल अन्तसमय हरिपुर बसै ॥
जेजन परमसुजान भूली लेव सुधारि मम ।
बालबुद्धि अज्ञान वेद शास्त्र जानौं नहीं ॥

इति श्रीक्षत्रियबंशावतंस काशीबासी श्रीकृष्णदास मक्खनलालकृत श्रीमद्भागवत भाषा सुखसागरे द्वादशस्कन्धः समाप्तः ॥ शुभम्भूयात् ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥

पहिले उल्था इसपोथीका सम्बत् १९११ में श्रीकृष्णदास मक्खनलालने काशीपुरी में बनाकर छपवायाथा परन्तु उस उल्थामें यामिनीभाषा अधिक लिखीगईथी इसकारण साधु व महात्मालोग उसे अच्छीतरह नहीं पढ़सक्तेथे इसलिये फिरसे उसपोथीको पण्डित जोखूराम रहनेवाले दरबांसा व जगन्नाथप्रसाद खत्री रहनेवाले काशीजी के सम्मतकरके यामिनीभाषा निकालदी व इसदेशकी बोली में जो समझसक्ते हैं लिखी ॥

हे परब्रह्म अबिनाशी पुरुष तुम जन्म लेने व मरने व जागने व सोने से रहित निर्दोष रहकर आठों पहर चैतन्य रहते हो व चौदहों भुवन तुम्हारी माया से उत्पन्न होकर वह माया आपको नहीं ब्यापती तुम्हारा आदि व अन्त व मध्य न रहकर आपकी महिमाको कोई पहुँच नहीं सक्ता व तीनों लोकोंमें तुम्हारे समान कोई सुन्दर न होकर आप सदा प्रसन्न रहते हैं व सबजीवों की उत्पत्ति व पालन व नाश तुम्हारी इच्छासे होताहै और जितनी दया तुम अपने भक्तोंपर रखतेहो उतनी प्रीति व रक्षा कोई देवता अपने भक्तकी नहीं करनेसक्ता व तुम सबमें संयुक्त व सबबस्तु से अलग रहकर रजोगुण व तमोगुण व सतोगुण से कुछ प्रयोजन नहीं रखते केवल तुम्हारे स्मरण व ध्यानकरनेसे संसारीजीव मुक्तपदवीपर पहुँचते हैं व तुम्हारा नाम जपनेके तुल्य यज्ञ व तीर्थ व दान व जप व तप व आचार कोई धर्म्म नहीं होता व ब्रह्मा व महादेव आदिक सबदेवता तुम्हारे कमलरूपी चरणके ध्यानमें आठोंपहर लीन रहतेहैं इसीकारण उन्होंने ऐसी पदवीपाई चौदहोंलोक में तुम्हारे समान कोई नहीं है व आप की बिनाकृपा संसारी मायाजालसे कोई छूटनहीं सक्ता जब बड़े २ योगी व ऋषीश्वर सब इन्द्रियोंको अपने बशरखकर तुम्हारा स्मरण व ध्यान सच्चे मनसे करते हैं तब आपकी दयासे उनकी मुक्ति होती है ॥

दो० आदि अन्त सब जगतके तुमहीं पुरुष अनन्त ।
सदा एकरस रहतहौ माखन प्रभु भगवन्त ॥

हे दीनानाथ अनेकजीव शिशुपाल व कंस व रावण व हिरण्यकशिपु आदिक ने तुम्हारे साथ शत्रुताकी थी सो वहलोग अपने प्राणके डरसे तुम्हारा ध्यान करने में भवसागर पार उतरगये व बहुतजीव तुम्हारी कथा व कीर्त्तन की चर्चा आपस में रखकर अपना जन्म स्वार्थकरते हैं उनमें उत्तम उसीको समझना चाहिये जो आठों पहर तुम्हारे चरणकमल का ध्यान रखकर संसारी मायासे बिरक्त रहता है व सिवाय भक्तिके मुक्तिकी भी चाहना नहीं रखता व सत्सङ्गके बराबर दूसरी बस्तु अच्छी नहीं समझता व साधु बैष्णवकी सेवा व सत्सङ्ग प्रेमपूर्व्वक करता है वह मनुष्य तुम्हारी माया का कुछडर न रखकर सीधाबैकुण्ठमें जहां सूर्य्य व चन्द्रमाका प्रवेश नहीं रहता बिमानपर बैठकर चलाजाता है ॥

दो० वह जन परमपुनीत है पावत पद निर्बान ।
अंतकाल तुमको मिलत माखन प्रभु भगवान ॥

हे बैकुण्ठनाथ जो मनुष्य अपने अज्ञानसे तुम्हारास्मरण व ध्यान छोड़कर दूसरे देवताको पूजताहै वह आवागमनमें फँसारहकर मुक्तिपदवी नहीं पाता व आपके राम